5

080257

080257

080257

हाय निजामी गाड़ी रुक गयी !

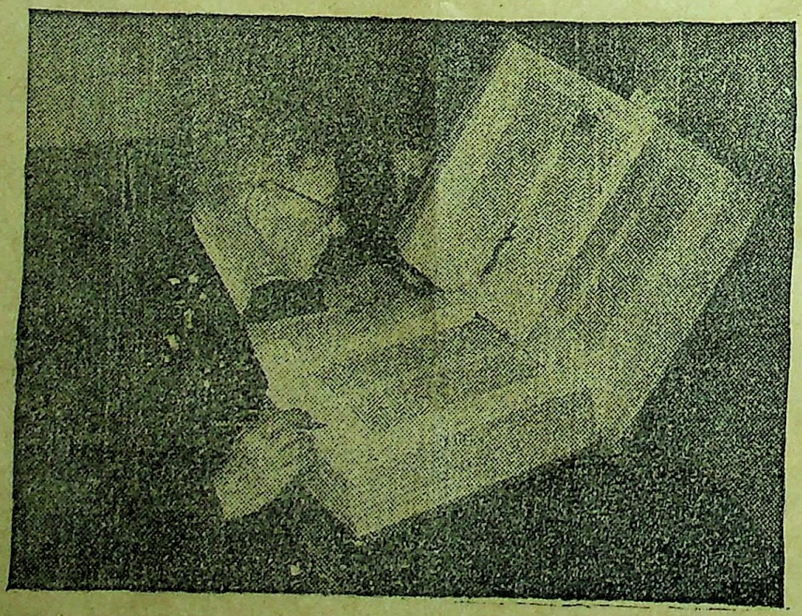

बाइबिलकी यह सबसे प्राचीन प्रति, जो सन् १४६२में छपी है, मेंज (जर्मनी) में मिली है। लन्दनके एक पुस्तक-विक्रेताने इसे १९८७५०) में खरीदा है।

विश्वमित्र

सम्पादक—प्रदीप

३१—३० CALCUTTA, SEPTEMBER 12, 1948. कलकत्ता १२ सितम्बर १९४८ मूल्य =) वार्षिक ६)

उद्गार

श्री कुमार बी० ए०

घटाओंसे कह दो, घमड़ती न आयें,
कि मधु-गान मेरे गले जा रहे हैं
चमक चंचलाकी रही हर घड़ी है
कि मझधार पर नाव मेरी खड़ी है
लगी नैन से आंसुओं की झड़ी है
कि पतवार मेरी किनारे पड़ी है
कदम हर कदम पर नये लड़खड़ायें
चरण हर चरण पर नये डगमगायें
त-पंख वाला विहग-बालिकाके
सजल पंख कोमल, न फिर फड़फड़ायें
घटाओं से कह दो घहरता न आयें —
कि जलयान मेरे गले जा रहे हैं
घटाओं से कह दो घुमड़ती न आयें
कि मधुगान मेरे गले जा रहे हैं
बड़ी साध से ये लिखे गीत हमने
कि खुदको मिटा कर सिखे गीत हमने
किसी से लिये शब्द स्वर स्वन किसी से
नहीं स्वत्व मेरा है इन पर इसीसे
कलित कामनाएं, कुचलने न पायें
ललित कल्पनाएं मचलने न पायें
विकल वेदना की, तिमिरमय निशा में
चरण साधना के फिसलने न पायें
व्यथाओंसे कह दो उमड़ती न आयें—
कि अरमान मेरे जले जा रहे हैं
घटाओंसे कह दो घुमड़ती न आयें कि मधुगान मेरे गले जा रहे हैं

हैदराबाद कभी स्वतन्त्र नहीं रहा है। खासकर आजकी परिस्थितियोंमें यह स्वतन्त्र नहीं हो सकता।" सिकन्दराबादको फिर भारतीय सेना भेजनेका निश्चय हमारी सरकारको इसलिये करना पड़ा है कि हैदराबाद रियासतके भीतर हिंसा और अराजकताका दौर-दौरा है। गांवोंपर शैतान रजाकारों द्वारा और निजामकी पुलिस एवं सेनाकी सहायतासे जैसे-जैसे अमानुषिक अत्याचार किये जा रहे हैं, उनके दृष्टान्त उपस्थित करते हुए नेहरूजीने कहा है कि, "हिंसाकाण्डोंके आरम्भसे अबतक हमारे पास पहुंची हुई सूचनाके अनुसार रियासतके भीतर सत्तर गांवोंपर आक्रमण किये गये, डेढ़ सौ आक्रमण हमारी सीमाके भीतर हुए, सैकड़ों आदमियोंकी हत्या की गयी, बहुतसे घायल किये गये और बहुतसी स्त्रियोंपर बलात्कार किया गया या वे चुरायी गयीं, बारह ट्रेनोंपर आक्रमण हुए तथा एक करोड़ रुपयेसे अधिक मूल्यकी सम्पत्ति लूटी गयी है।.... हैदराबादके भीतर हत्या, अग्निकाण्ड, बलात्कार और लूटके काण्डोंसे भारतके भीतर साम्प्रदायिक उत्तेजना पैदा होनी निश्चित है, जिससे उपनिवेशकी शान्ति खतरेमें पड़ जायेगी।" यही सब सोचकर हमारी सरकारको हैदराबादके भीतर शांति और कानूनकी पुनः स्थापनाके लिये इतनी चिन्ता हो रही है। हैदराबादके निजाम और उसकी सरकारकी ओरसे जिस प्रकार स्वतन्त्रताका दावा किया जाता रहा है उससे तो यही प्रतीत होगा कि हमारी सरकारकी मांग पूरी करनेको वे लोग तैयार नहीं होंगे। उस अवस्थामें हमें अपनी सेना रियासतके भीतर भेजनेके लिये निजामकी उन सारी सैनिक तैयारियोंका सामना करना पड़ेगा, जिनकी चर्चा जैसे लायक अलीने सगर्व की थी, वैसे ही हमारे प्रधान मन्त्री नेहरूजीने भी की है। तब संघर्ष छिड़ना अनिवार्य होगा और हैदराबादकी शैतान-मण्डली भारतके भीतर उपद्रव करानेकी अपनी धमकियोंको पूरा कर दिखानेको सचेष्ट होगी। यही सोच नेहरूजीने यह भी कह दिया है—"हमें शान्तिरक्षार्थ चाहे जो भी दण्डात्मक या अन्य प्रकारकी काररवाइयां करनी पड़ें, हमारा यह निश्चित विचार है कि किसी भी ओरसे जो भी साम्प्रदायिक उपद्रव होगा, उसका बड़ी कठोरतासे दमन किया जायेगा।"

कोरी डींग—

द्वितीय महायुद्ध छिड़नेके पहले और उसके मध्य भी हिटलर और उसके प्रधान प्रचारक गोएबेल्सने अपनी कोरी धमकियोंसे ही सारे संसारको इस तरह आतंक-ग्रस्त बना दिया था कि युद्धकालमें जर्मन सेनाओंके विरुद्ध सहसा आक्रमण करनेका साहस मित्रराष्ट्रोंकी सेनाओंको नहीं होता था। जब मार्शल स्टेलिन ब्रिटेन और अमरीकासे पश्चिममें दूसरा मोर्चा बनानेकी मांग करते थे, तब उनके इन मित्रोंको उसके लिये बहुत समयतक जो साहस ही नहीं होता था, उसका एक प्रधान कारण यही था कि उन्हें हिटलरकी शक्ति और सेनाकी तैयारियोंका ठीक ठीक पता ही नहीं था। परन्तु युद्धकी समाप्तिपर स्वयं हिटलरके विश्वासपात्रोंने यह कहा है कि कोरे भय-प्रदर्शन और धमकी भरे प्रचार द्वारा हिटलरने अपनी शक्तिका ऐसा आतंक पैदा कर दिया था कि उसे सफलतापर सफलता मिलती गयी, यद्यपि युद्ध छिड़नेके समय उसकी सैनिक तैयारियां अपर्याप्त और अपूर्ण ही थीं। यही अवस्था हैदराबादी शैतानों और उनके प्रभावके भीतर वहांकी वर्तमान सरकारकी शक्तिकी भी दिखाई दे रही है। अबतक जब कभी और जहां कहीं रजाकारों और निजामकी पुलिस औ सेनाका भारतीय जवानोंसे सामना पड़ा हमारे वीर सदा ही विजयी होते देखे गये। किसान दलोंके सामने भी रजाकार शायद ही कहीं ठहरते दिखाई पड़े हों। इससे तो निजाम और रजाकारोंकी शक्तिके संबंधमें कविकी यह उक्ति ही चरितार्थ होती देखी जाती है—'बहुत शोर सुनते थे पहलूमें दिलका, जो चीरा तो एक कतरए खून निकला। अभी ६ सितम्बरकी रिपोर्ट है कि उस दिन प्रातःकाल भारत संघकी पुलिसकी प्रार्थनापर बेजवाड़ासे कोई पैंतालीस मील उत्तर-पश्चिम सीमाके निकट स्थित तक्कल पलाद नामक भारतके गांवमें भारतीय सेनाका एक दल भेजा गया, जहां गांवपर रजाकार लोग बराबर फैरें किया करते थे। जब हमारे सैनिक कोडार गांवके पाससे जा रहे थे, रियासतकी फौजने उनपर फैरें कीं और दोनों फौजोंमें मुठभेड़ हो गयी। उसमें टैंकका भी प्रयोग हुआ और दस मिनटकी ही लड़ाईमें रियासती फौज और रजाकारोंको मुंहकी खानी पड़ी। हैदराबाद सेनाके नब्बे सैनिकोंने अपने अफसरके साथ भारतीय सेनाको आत्म-समर्पण कर दिया। इस अवसरपर हमें हैदराबादके प्रधान मंत्री लायक-अलीके इस कथनकी याद आ जाती है कि "हैदराबाद बहुत-सी अग्नि-परीक्षाओंसे होकर अधिक आशावान्, अधिक आत्मावलम्बी, अधिक विश्वासी और दृढ़, नैतिक और भौतिक दृष्टिसे अधिक मजबूत और कहीं अधिक सुसंगठित होकर निकला है, और यह भविष्यको और सबकी अपेक्षा अधिक आशावादी होकर देख रहा है।" क्या हैदराबादके अधिकारियों और शैतानकी सारी डींगें कोरी गीदड़भभकी ही सिद्ध होती नहीं देखी गयी हैं?

कोई सुविधा नहीं—

यूनाइटेड प्रेसके हैदराबादी संवाददाताको विश्वस्त सूत्रसे मालूम हुआ है कि भारत सरकारने हैदराबादके उन प्रतिनिधियोंको सुविधाएं देनेसे इनकार कर दिया है, जो संयुक्त राष्ट्रसंघमें सम्मिलित होनेके लिये भारतकी सीमाके भीतरसे होकर जायेंगे और यह कह दिया है कि वे साधारण यात्रीकी

हैदराबादपर हमला उचित है
प्रमुख मुसलमानोंके विचार

रजाकार अतताइयों एवं निजामके अन्य हिंसा पोषकोंकी भयावह रक्तलोलुपता से रियासतके नागरिकोंके जीवन और संपत्तिकी रक्षा करनेके निमित्त भारत सरकारने निजाम सरकारके विरुद्ध जो सैनिक कार्रवाई प्रारम्भ करदी है", उसके संबंधमें देशके अनेक प्रमुखतम मुसलमानोंके वक्तव्यों एवं मतोंमेंसे कुछ उल्लेखनीय वक्तव्य और मत निम्न-लिखित हैं :-

बेगम एजाज रसूल

लखनऊ १५ सितंबर। विधान परिषदकी सदस्या बेगम एजाज रसूल ने हैदराबादमें भारतीय सेनाओंके प्रविष्ट होनेका समर्थन करते हुए एक वक्तव्य दिया है, जिसमें आपने कहा है - निजामकी आत्म हत्याकी प्रवृत्ति और अदूर दर्शिता के परिणाम स्वरूप ही आज भारतीय सेनाएं हैदराबादमें प्रविष्ट हुई हैं। समय एवं आवश्यकता के अनुसार, भारतकी ओरसे विवश होकर यह कार्रवाई की गयी है। निजामको गैर जबाबदेह गुमराह और अशांतिकारक लोगोंने अपने बुरे प्रभावमें लाकर गलत राहपर लगा दिया है और रियासतमें ऐसी भयंकर परिस्थितियां पैदा करदी हैं कि वहांके नागरिकोंकी जान और माल संकटमें है। इन बुरे लोगोंकी हरकतोंसे वहांकी निरीह प्रजाजनोंको अकथनीय बर्बादीका शिकार होना पड़ा है जब दशा एकदम बिगड़ गई तब भारत सरकारने विवश होकर हैदराबाद पर सैनिक कार्रवाई प्रारम्भ की है। सरकारने उचित कार्य किया है। रियासतकी उत्तरोत्तर बिगडती हुई दशा एवं निजाम सरकार और उसके समर्थकोंकी हिंसात्मक कार्रवाइयोंने रियासतमें आंतरिक अराजकता, संहार और कानून की उपेक्षा की स्थितियां पैदा करदी थीं। इस लिये भारत सरकारको सेना भेजनेकी आवश्यकता पड़ी। हजार चेष्टा की जानेपर भी निजामने भारत सरकारसे समझौता तरह ज्ञात है कि भारत सरकारने सभी प्रमुख प्रश्नोंपर निजामके साथ सद्भावना पूर्ण समझौता करनेकी पर्याप्त चेष्टा की थी। हम यह महसूस करते हैं कि समझौतेकी दिशामें सफलता प्राप्त करनेके लिये भारत सरकारने काफी अर्से तक अत्यंत धैर्यसे काम लिया है और बहुत दिनोंतक सफलताकी प्रतीक्षा की है। मैं यह भी जानती हूं कि सारे भारतके मुसलमान मेरे दृष्टिकोणके समर्थक हैं और यही उनका भी मत है। मैं जानती हूं कि गवर्नर जेनरल श्री सी राजगोपालाचारी मुसलमानोंकी भावनाओं और दृष्टिकोणके प्रति क्या भाव रखते हैं। मैं उनके भावोंका पूर्णरूपेण समर्थन करती हूं। इस परिस्थितिमें हममेंसे प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह देशमें पूर्ण शांती और सुव्यवस्था बनाये रखनेकी चेष्टा करे और देशकी रक्षाके लिये तत्पर रहे

सर अब्दुल हलीम गजनवी

कलकत्ता १५ सितंबर। भारतीय विधान परिषदके सदस्य सर अब्दुल हलीम गजनवीने भारतीय सैनिकोंके हैदराबादमें मार्च करनेके संबंधमें निम्न लिखित वक्तव्य दिया है।

जिसकाहोनासर्वथानिश्चितथा वह हो चुका है। भारतीयसेनायें हैदराबादमें प्रवेश कर गयी हैं। ऐसी परिस्थिती में देशके सभी संप्रदायों, राजनीतिक दलों धर्मों आदि के लोगोंका भी कुछ कर्तव्य है। किन्तु वह कर्तव्य अत्यंत सीधा साधा और स्पष्ट है। जिन्हें भारतमेंही रहना है, उन्हें भारत संघका एक देश भक्त नागरिक बन कर ही रहना है। उन्हें भारत सरकारके साथ पूर्ण विश्वास और सहयोग का भाव रखना होगा। आज सारे देशमें खतरेकी स्थिति पैदा होगयी है और सरकार तरह तरह की कठिनाइयोंका सामना कर रही है। इस संकटकी घड़ीमें प्रत्येक देशवासीको अपनी आत्माभावना और हृदयसे सरकारका साथ देना चाहिये। हैदराबादके साथ समझौता करनेके लिये

सर मोहम्मद उस्मान

मद्रास १५ सितंबर। भारत सरकारके भूत पूर्व सदस्य सर मोहम्मद उस्मानने कल एक पत्र - प्रतिनिधि द्वारा मुलाकात की जाने पर कहा - आजजो हैदराबादमें भारतीय सेना एं घुस आयी हैं, उसकी पूरी जवाबदेही निजाम एवं उनकी सरकार पर है। आजकी सारी बुरी परिस्थितियोंके लिये एक मात्र निजाम सरकारकी आलोचना होनी चाहिये। इस संकटकी घड़ीमें भारतके सभी मुसलमानोंको अपने देश एवं राष्ट्रीय सरकारका साथ देना चाहिये। प्रत्येक मुसलमान अपनेको पूर्ण राष्ट्र भक्त साबित करे और राष्ट्रीय सरकारको अधकतम सहयोग दे।

मेढकके रोनेकी आवाज यों साधारणतः सुनायी नहीं पड़ती। वह सुन पड़ती है जब उसे सांप पकड़ लेते हैं। उस समय तो वह हर आने जाने वालेको अपना दर्दभरा तराना सुनाया करता है।

हैदराबादके निजामने मैनके पास अपनी फर्याद भेजी है, मगर उसने नहीं सुनी।

मेढकका रुदन सुन कर कोई उसकी मदद को नहीं दौड़ता क्योंकि कि अपनी बारी मेढक भी तो हजारों चीटियोंको चट करता रहता है। निजामकी आवाज भी कहीं नहीं सुनी जायगी क्योंकि रजाकारों द्वारा प्रजाका खून करानेका दोष

साहित्य-कलाका प्रयोजन

श्री लक्ष्मण सिंह 'निर्मम'

कलाकारके हृदयमें अपनी अन्तरानुभूतियोंको व्यक्त करनेकी प्रबल प्रेरणा के फलस्वरूप एक ऐसी विकल विवशता उत्पन्न हो जाती है कि बरबस ही उसकी वाणी संसारके समक्ष संसारकी समवेदना एवं सहानुभूतिके संग एक समन्वय एवं सामंजस्य स्थापित कर साहित्यका एक स्थायी अंग बन जाती है। जिस समय कलाकारके हृदयमें भावनाओंका यह अन्तर्द्वन्द्व, विचारोंका यह आलोड़न विलोड़न, अनुभूतियोंका यह आंतरिक संघर्ष-विघर्ष प्रत्यक्षमें शांति तथा परोक्ष में अपनी प्रलयंकरी क्रियाओं-प्रतिक्रियाओंमें संलग्न रहता है, उस समय चाहे उसके मनमें अपने रचना-कार्यका कोई उद्देश्य निहित न रहता हो और और न चाहे उसके समक्ष भी कोई ध्येय रहता हो, उसकी रचना स्वयं ही अपनी आत्मामें किसी न किसी रूपमें एक विशेष ध्येय प्राणोंसे स्पंदित होती रहती है। इन प्राणोंके उद्गमसे परिचित होनेके लिए अत्यन्त आवश्यक है कि हम कलाकारके जीवन और उसके जीवनकी घटनाओंसे पूर्ण परिचय करें, क्योंकि कलाकारकी दृष्टि और उसकी सृष्टि कितनी ही व्यापकता और महानताको लेकर क्यों न चले, देश और कालका प्रभाव उस पर पड़े बिना रह ही नहीं सकता! हां, इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि सच्चे कलाकारकी रचना देश और कालके बन्धनोंमें बंधी हुई रहती है। कलाकारकी प्रतिभा तो देश और कालकी परिस्थितियोंकी विषमतासे सदा ही विद्रोह करनेकी आदी रही है, पर यह विद्रोह भी तो उन परिस्थिति विशेषके प्रभावसे ही उद्भूत है-इसे विस्मृत न करना चाहिए। परिस्थितिके विरुद्ध क्रांति करके उसकी प्रतिभा अपनी विजय की आकांक्षाको एक सबल एवं क्रियात्मक साधनामें रत कर देती है...और तबतक इसमें लगी रहती है जबतक कि उसे पूर्णतया यह विश्वास नहीं हो जाता कि उसे सफलता प्राप्त हो गयी।

कलाकारकी विद्रोहिणी प्रतिभा अपनी विद्रोह-वृत्तिका जन्म देश और कालकी परिस्थितियोंसे पाती अवश्य है, परन्तु वह अपनी इन विमल वृत्तियोंका कार्य क्षेत्र इतना व्यापक बना देती है कि उसको देश तो क्या, कालका भी बन्धन बांधनेमें असमर्थ रहता है। देशकी सीमाको लांघकर यह प्रतिभा अपनी प्रभाके प्रबल वेगसे निखिल सृष्टिको चकित एवं हतप्रभ कर देती है और युग-युगों तक, अनन्त काल तक, उसकी यह उद्दाम सामर्थ्य शक्ति क्षीण होना तो दूरकी बात उत्तरोत्तर वृद्धि एवं विकास पाती जाती है।

जीवनके लघुतम क्षणमें कलाकार जो अनुभव करता है, उसे वह अपनी कृति में व्यक्त करता है। यह अभिव्यंजना समस्त जीवनमें समा जाती है, क्योंकि उसका समस्त जीवन ही तो उस लघुतम क्षण विशेषमें समाया हुआ रहता है... इसलिए जन-जीवन भी इस अनुभूतिकी कलात्मक अभिव्यंजनामें अपने ही अन्तरकी अनुभूतियोंकी अभिव्यंजनाका अनुभव करता है, उसमें अपनेही प्राणोंकी पीड़ाको पाता है अपनेही अन्तरात्माकी पुकार उसमें सुनता है,अपनी ही वेदनाको व्यक्त हुआ समझता है और अपने ही हर्षोन्मादको उसमें नर्तन करते हुए देखता है। व्यक्ति और समाज अथवा व्यष्टि एवं समष्टिका यह विचित्र सम्बन्ध हमें इस बातसे परिचित कराता है कि कलाकारका जीवन कितना ही एकाकी क्यों न हो, वह अपने अनुभवोंको ग्रहण करनेमें एवं व्यक्त करनेमें समष्टिके प्रतिनिधिके रूपमें ही रहता है उसका यह पद उससे कभी विलग नहीं होता! अपनी साधना हेतु कलाकारका उसका अपना जीवन विशेष ही यथेष्ट है वह जैसा भी हो क्योंकि उसका मानसिक बल, इच्छा-शक्ति एवं पारलौकिक शक्ति तत्व कुछ इस प्रकारके रहते हैं कि वह जलमें रह कर भी जलसे अछूते रहनेवाले जलजके सदृश समष्टिमें सम्मिलित रह कर भी उससे अलग भी अपना एक स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है! मैं एक वास्तविक कलाकारकी बात कह रहा हूं-उसका जिसकी रचनामें स्थायित्व रहता है अमरता रहती है! वैसे तो इस धरती पर अनेक दीपक जलते हैं और उनमेंसे कई अपने प्रकाशसे अन्धकार पीड़ितोंको प्रकाश भी प्रदान करते हैं पथ भी प्रदर्शित करते हैं और अन्तमें अनन्तमें विलीन हो जाते हैं, किन्तु सतत अपने तेजसे जगतको आलोकित करनेवाला सबको पुष्प प्रकाश और पावन प्राण प्रदान करनेवाला प्रकाश-पुंज प्रभाकर एक ही होता है! हां, परिस्थिति विशेषके कारण उसकी प्रतिभाको लोक-मतकी सुरुचि अथवा सुरुचि-हीनता अथवा भ्रम-भावनाकी मेघमाला भले ही कुछ कालके लिए अपने आवरण द्वारा अच्छादित कर उसे आंखोंसे ओझल कर दें, किन्तु सत्यकी राह और अमरताकी आभा जगतको पुनः प्रत्यक्ष कर देगी. और जगतको पुनः प्रकाश पुनः प्राण प्राप्त होंगे और उस समय वही संसार अपनी श्रद्धा और अपनी पूजा भावना उस अमर कलाकारके चरणोंमें अर्पित करनेके लिए आतुर हो उठेगा।

सचमच मर गये !

७

पं० मातासेवक पाठक
सम्पादक दैनिक 'विश्वमित्र' कलकत्ता)

पाकिस्तानके कायदे आजम मि० मुहम्मद अली जिन्नाकी मृत्युका समाचार अन्तमें पाकिस्तान सरकारको भी देना ही पड़ा। कराचीके १३ सितम्बरके तारमें बताया गया है कि वे अपनी बहिन मिस जिन्नाके साथ ११ सितम्बर शनिवारकी संध्याको जियारतसे कराची पहुंचे थे और रात्रिमें साढ़े दस बजेके लगभग चल बसे। मि० जिन्नाकी मृत्यु हृदयकी धड़कनकी अचानक बन्द हो जानेसे हुई, यह भी बताया गया है। इसीसे हम कहते हैं कि मि० जिन्ना सचमुच मर गये और उनकी मृत्युसे पाकिस्तानका बच्चा राज्य एकदम अनाथ हो गया है। किसीकी मृत्यु हो जानेपर उसके प्रति जो विरोध-भाव रहता है, उसे भुला देनेके शिष्टाचारके अनुसार अब हम भी उनके विरुद्ध कुछ नहीं कहना चाहते। परन्तु हम अपनी आंखोंसे देख रहे हैं कि जिन मि० जिन्नाके संकेतमात्रसे इधर कुछ समयसे भारतके अधिकांश मुसलमान सब कुछ कर डालनेको तैयार देखे जाते थे, वे ही आज उनकी मृत्यका समाचार पत्रोंमें पढ़ लेनेके पश्चात फिर अपने साधारण कामकाजमें लगे दिखाई दे रहे हैं और उनकी मृत्यके शोकमें एक भी मुसलमानकी दूकान हमने कलकत्तेमें बन्द होती नहीं देखी है। यदि १५ अगस्त १९४६ यानी पाकिस्तानकी प्राप्तिके लिये मि० जिन्नाके आदेशपर प्रत्यक्ष संघर्ष दिवस मनाये जानेके पहले उनकी मृत्य हो गयी होती, तो समस्त कलकत्तेकी दूकानें बन्द कर दी गयी होतीं और यहांके गवर्नमेंट हाउसपर फहरानेवाला झंडा भी तुरंत ही झुका दिया गया होता। यही बात सभी प्रान्तोंमें देखनेमें आती और मुसलिम बहुसंख्यावाले प्रान्तोंमें तो सर्वत्र मातम ही मातम दिखाई देता। क्या इससे यही प्रत्यक्ष परिणाम नहीं निकलता कि मि० जिन्नाने भारतके दो टुकड़े कराके अपने लिये पाकिस्तानकी गवर्नर जनरली तो निश्चित बना ही ली, किन्तु वे पाकिस्तानकी प्राप्तिके लिये स्वयं पाकिस्तानी अधिकारियोंके कथनानुसार एक पूर्वी पंजाबमें ही पांच लाख मुसलमानोंका वध कराके और कितने लाखों मुसलमानोंको बेघरबारका बना कमसेकम भारतके मुसलमानोंकी दृष्टिसे तो एकदम गिर गये थे? अवश्य, जबतक पाकिस्तानका ढ़ड्ढा किसी रूपमें खड़ा है, तबतक वहां तो अपनी मृत्युके उपरांत भी वे कायदे आजम ही कहे जाते रहेंगे।

किंवदन्तियोंके अनुसार तो पाकिस्तानके नरव्याघ्र मि० जिन्नाकी मृत्यु अबसे अनेक सप्ताह पहले ही हो चुकी थी। कहा जाता है कि मि० जिन्ना गत ३ मईसे बीमार होकर इतने अशक्त हो गये थे कि कराचीमें उनका स्वास्थ्य सुधरनेकी कोई आशा नहीं देखी गयी, यद्यपि इसी कराची शहरके भीतर सन १८७६ ई० में २५ दिसम्बरको उनका जन्म हुआ था, इसलिये जन्मभूमि होनेके कारण वहांका हवा-पानी उनके अनुकूल होना चाहिये था। वे १९ मईको वहांसे बलूचिस्तानके एक पहाड़ी स्थान जियारतको भेजे गये, जहां विशेषज्ञ डाक्टरोंकी चिकित्साने उन्हें इतना लाभ पहुंचाया कि ३१ जुलाईको वे पुनः कराची लौट आये। कहते हैं कि कराचीका वातावरण उन्हें कष्टदायक सिद्ध हुआ, इसलिये चौबीस घंटेमें ही फिर उन्हें जियारत चले जाना पड़ा। उनके जियारत जानेके बाद किंवदन्तियोंकी भरमार हो गयी और पाकिस्तानी अधिकारियोंको एकाधिक बार उनका खंडन करनेकी आवश्यकता प्रतीत हुई। कई सप्ताह पहले तो यहांतक अफवाह उड़ी कि जिन्ना मियांकी मृत्यु कभी हो चुकी है पर पाकिस्तानमें विद्रोह न खड़ा हो जाये, इस विचारसे वहांकी सरकार अभी उसे छिपा रही है। मि० जिन्ना बीमार होकर जियारत स्वास्थ्य सुधारनेके लिये ही गये थे, तो भी पाकिस्तानके अधिकारी किंवदन्तियोंका खंडन करते समय उनकी बीमारीके समाचारको ही इस तरह नितांत निराधार बताया करते थे कि मानो पाकिस्तानका विधाता होनेके कारण वे अजर अमर हो गये हैं और उनके मुट्ठीभर हड्डियोंपर चढ़ी हुई सूखी सी चमड़ी कयामतके दिनतक इसी तरह जिन्दा बनी रहेगी। देखते हैं कि पाकिस्तानी अधिकारी जितना ही अधिक प्रयत्न आटा उड़ानेके स्थानपर चक्की ही उड़ा देनेके लिये करते थे, मि० जिन्नाकी गहरी बीमारी और मृत्युतककी अफवाहोंका जोर भी उतना ही अधिक बढ़ता जाता था। अन्तमें अब उन्हीं लोगोंको यही सोचनेको विवश होना पड़ा है—

'उलटी हो गयीं सब तदबीरें, कुछ न दवाने काम किया। देखो इस बीमारी दिलने, आखिर काम तमाम किया।'

अफवाहोंका कुछ-न-कुछ आधार होता ही है, यह समझदारोंका कहना है। मि० जिन्नाके विषयमें भी इतने दिनोंसे उड़नेवाली अफवाहें सर्वथा निराधार नहीं थीं, यह अब सिद्ध हो गया है, यद्यपि असत्य देवके अनन्य उपासक पाकिस्तानी अधिकारी उन्हें नितांत निराधार बतलानेमें ही अपनी शक्ति लगाते देखे जाते थे। सबसे अन्तिम किंवदन्ती चार ही दिन पहले मि० जिन्नाके राजनीतिक उत्तराधिकारीके संबंधमें फैली थी, जिसके अनुसार सर मडी, मियां लियाकत अली, जफरुल्ल

मेय और स्वयं मि० जिन्नाकी बहिन मिस फातिमाके गवर्नर-जेनरल पदके लिये प्रयत्नशील होनेकी बात थी और यह भी कि स्वयं जिन्ना मियांने सरमडीको अपना राजनीतिक उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया है। पाकिस्तानके सभी प्रान्तोंमें मि० जिन्नाके जीवनकालमें ही पदोंको लेकर भारी अशांति पैदा हो चुकी है, यह तो सभीको मालूम है। वैसे ही यह भी एक प्रकट रहस्य है कि मुसलिम लीगियोंमें मि० जिन्नाका व्यक्तित्व ही खुले विद्रोहके मार्गमें बाधक था और उन्हींकी दोहाई देते हुए विरोधियोंकी जबान बन्द की जाती रही है। अब मि० जिन्नाके उठ जानेसे सारे पाकिस्तानमें एक भी ऐसा नेता नहीं रहा है, जो वहांके उस व्याघ्रका स्थान ग्रहण करनेकी योग्यता रखता हो। यह सोचकर पाकिस्तानियोंका शोक निश्चय ही पराकाष्ठाको पहुंचेगा। मि० जिन्नाके दो राष्ट्रके सिद्धांतके कारण भारतके ऊपर जैसा भयंकर वज्रपात हो चुका है, उसके विचारसे उनकी मृत्युपर किसी भी देशभक्त भारतीयकी आंखोंमें आज आंसू नहीं आ सकता, हमारा तो यही विश्वास है। फिर भी कांग्रेसके पुराने सेवकोंको इस अवसरपर उन दिनोंका स्मरण आ जाना स्वाभाविक है, जब पाकिस्तानका यही व्याघ्र हमारी राष्ट्रीय कांग्रेसका एक सच्चा सेवक बन कर काम करता था और वह उस अवस्थामें १९२० ई० नागपुर कांग्रेसतक बना रहा। जब कांग्रेसने अपने उस अधिवेशनमें महात्मा गांधीके असहयोगका कार्यक्रम स्वीकार कर लिया, तब विलासिताकी गोदमें पले हुए नवाबी स्वभाववाले मि० जिन्नाके लिये कांग्रेसके भीतर रहना असंभव हो गया, क्योंकि सामने जेल जाने और यंत्रणाएं सहन करनेकी संभावना स्पष्ट थी। फिर भी वे पक्के पाकिस्तानी तो मुसलिम लीगके १९४० ई० वाले अधिवेशनमें ही बन थे जब उन्हींकी अध्यक्षतामें पाकिस्तानका प्रस्ताव लीगने स्वीकार किया। उसके पश्चात्‌के उनके कार्यकलापसे सभी सुपरिचित हैं। जो हो, यह तो सभीको स्वीकार ही करना पड़ेगा कि मि० जिन्नाके इस समय उठ जानेसे मुसलिम लीग विधवा हो गयी, पाकिस्तान अनाथ हो गया और पाकिस्तानकी सरकारका एकमात्र शेष रह गया है। किसीकी मृत्युपर भगवान्‌का मरण सभीको आता है, इसलिये इस अवसरपर पाकिस्तानी भाइयोंको भी 'ईश्वर अल्ला तेरा नाम। सबको सुमति देभगवान्' का चिंतवन करना चाहिये।

देशकी नदियोंमें इस साल बड़ी भयंकर बाढ़ आयी है।

शायद नदियां इस लिए क्रुद्ध हैं कि कोशी दामोदर आदिको बांधकर उनकी निरंकुशताको चुनौती देनेकी जुरत की जा रही है।

यह अफवाह सुन कर कि सौ सौ रुपयेके नोट भी रद्द कर दिये जायंगे अहमदाबादके सेठोंने एक ही दिनमें एक करोड़के सौ टंकिया नोट भुनवाये।

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

अगर आपने दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां है

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

दमा और पुरानी खांसीके रोगियो! नोट कर लो

(अब चूके तो फिर सालभर तक पछताना पड़ेगा)

हर सालकी तरह इस साल भी हमारी जगत विख्यात "चित्रकूटी बूटी" के दो हजार कोट आश्रममें मुफ्त बांटे जावेंगे, जो (शरद पूर्णमासी) ता० १८ अक्तूबरको एक ही खुराक खीरमें खानेसे सदाके लिये इस दुष्ट रोगसे छुटकारा मिल जाता है। जो रोगी समयपर आश्रममें न आ सकें, वह सदाकी तरहसे २।=) विज्ञापन रजिस्टरी आदि खर्च मनीआर्डर से भेजकर तुरत मंगालें, जिसमें ठीक समयपर सेवन करके पूरा लाभ उठा सकें। देर करने से गत वर्षकी तरह सैकड़ोंको निराश होना पड़ेगा। नोट करलें कि वी० पी० किसीको नहीं भेजी जाती है। धर्मार्थ बांटनेके लिये कमसे कम २५ आदमियोंके लिये ४०) रु० भेजना चाहिये।

पता- रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस आश्रम (६०) "जगाधरी" (पूर्व पंजाब)

एक मनोरंजक लेख —

पं० धुरन्धर शर्मा

— श्री हर्षनाथ

पं० धुरंधर शास्त्रीकी बुद्धिके विषयमें सन्देह करना अपनी बुद्धिका दिवालापन साबित करना है। उनके विषयमें केवल इतना ही बता देना पर्याप्त है कि वे मेरे मित्रोंमेंसे हैं।

बेकारीसे और कुछ लाभ हो या न हो परन्तु इतना लाभ तो है ही कि पुराने मित्रोंकी मित्रता ताजा होजाती है, जिनसे वर्षोंसे भेंट नहीं हुई होती, उनके घर तो जैसे धरना देनेका अवसर मिल जाता है। साथ ही इस बेकारीमें, लगे हाथों कुछ नये मित्र बनानेका अवसर भी मिल जाता है। बेकार आदमी भगवानके दिये हुए बारह घण्टे का दिन बितानेके लिये कुछ न कुछ तो करेगा ही — दो चार घण्टे खाने सोने में, दो चार घण्टे पुराने दोस्तोंसे गप लड़ानेमें व्यतीत होजाने पर भी दिन द्रौपदीकी साड़ीसे प्रतिद्वन्द्विता करने लगे, तो इधर उधर पार्कोंमें, सिनेमा एवं होटलों में बिताना आवश्यक हो जाता है। मेरी बेकारीके ऐसे ही फुरसतके समयके बनाये हुए मित्र पं० धुरंधर शास्त्री हैं।

पं० धुरंधर शास्त्री एक महान पुरुष हैं कार्य रूपमें उन्होंने चाहे भलेही कुछ न किया हो, परंतु मेरा दृढ विश्वास है कि कल्पना क्षेत्रमें उनका कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं हो सकता। ऐसी कोई भी योजना नहीं, जिसे बनानेमें वे असमर्थ हों। वास्तवमें सत्य यह है कि योजनाएं बनानेसे उन्हें अवकाश ही नहीं मिलता और इसीलिये उन्हें कार्य-रूपमें परिणत करनेका अवसर ही नहीं मिल सका उनकी नोटबुकमें, सड़कके फुट पाथ पर बैठकर जूता बांधनेसे लेकर बाटा शू फेक्टरी जैसा जूतोंका विशाल कारखाना खोलने तक, सड़क पर घूम घूम कर मोचेसे लेकर जोर गरम या कचालुओंका खोमचा लगानेसे लेकर ताज महल होटल खोलनेकी योजना पड़ी हुई है। इसी तरह किसी गांवमें बैठकर लोहारकी भौंकनी वाली दुकानसे लेकर डाटास्टील अपरन वर्कशाप सरीखा विशाल कारखाना खोलने एवं मुर्गी पालने से लेकर हाथी पालने तककी योजनाएं बना रक्खी हैं; परन्तु पता नहीं उनके या देशके दुर्भाग्यसे, योजनाएं बनानेसे ही उन्हें फुरसत नहीं मिली, फिर कार्य रूपमें परिणत हो कैसे!

अपनी योजनाएं कार्यरूपमें परिणत करनेका भले ही उन्हें अवकाश न मिला, पर इतना तो निर्विवाद सत्य है कि कल्पनामें कोई उनका पीछा नहीं कर सकता। जब कभी अपनी किसी योजना पर उन्होंने अमल किया है, उन्हें पूर्णरूपेण सफलता मिली है।

जीवनकी अन्य महत्वपूर्ण बातोंकी तरह उनका ध्यान जूतोंकी तरफ भी गया। यद्यपि सभा समितियोंमें, जूतोंके खुलकर आदान प्रदानके समर्थक नहीं, तो विरोधी भी नहीं हैं, किन्तु सभा-समितियोंमें उपस्थित होनेवालोंको अपने जूतोंसे जो हाथ धोना पड़ता है, इस प्रदान-रहित आदानके वे घोर विरोधी हैं। इससे निस्तार पाने के लिये उन्होंने साधन ढूंढ़ लिया है और इस की उपयोगिता मुझे तब मालूम हुई, जब एक दिन उनके साथ मुझे एक सभामें जाने का अवसर मिला। सभा-मण्डपके पास द्वार पर जूतोंका जैसे प्रदर्शन हो रहा था। पं० धुरंधर शास्त्रीने अपने एक पैरका जूता सभा-मण्डपके एक द्वार पर उतार दिया और मुझे भी ऐसा ही करनेका आदेश-सा दिया। मैं भी अपनी बुद्धि पर पूरा भरोसा रखता हूं और [illegible] मैंने [illegible]-

आखिर आप यह कर क्या रहे हैं? आपको कुछ यह भी ध्यान है कि ये जो हजारों सभ्य-असभ्य, मूर्ख-बुद्धिमान स्त्री-पुरुषोंकी भीड़ आपके इस अद्भुत कार्यको देख रही है, वह आपको जानवरों और पक्षियों की किस कोटिमें रखेगी?

पं० धुरंधर शास्त्री मेरी बातसे किंचित रोषमें आ गये। उन्होंने कुछ तीव्र स्वरमें कहा—मुझे अपने प्रयोगकी सफलता देखनी है। यदि तुम सभा-समितियोंमें जूतेकी रक्षा करना चाहते हो तो मेरा अनुकरण करो। यह कहकर एक पैरका जूता पहने हुए वे आगे बढ़ गये। मुझे ऐसा लगा, मानों इनकी बुद्धिने इस समय इनका साथ देनेसे अस्वीकार कर दिया है। फिर भी कौतूहल-वश मैंने उनका अनुकरण किया और उनके साथ ही एक जूतेको फाटकके दूसरे किनारे पर उतार दिया।

सभा समाप्त होने पर एक विचित्र दृश्य उपस्थित हुआ। नये जूते पहननेवालों में ऐसे बहुत कम सौभाग्यशाली थे, जिन्हें उनके जूते सही सलामत वापस मिल गये, किन्तु हम लोगोंके जूते नये और चमकीले होते हुए भी सुरक्षित थे। ऐसा कौन नीति विशारद था जो एक जूतेको पण्डालके उत्तर तरफ ढूंढ़े और एकको दक्षिण तरफ-उस समय पं० धुरंधर शास्त्रीकी योजनाकी व्यावहारिकता पर मेरा पूर्ण विश्वास हो गया।

उनकी एक योजनाका मुझे हालमें ही पता चला है,। बल्कि यों कहा जा सकता है कि उन्होंने स्वयं बतलानेकी कृपा की और थोड़ी बहुत सहायता मुझसे भी ली।

समयका सदुपयोग करनेके लिये सिनेमा देखनेका प्रस्ताव लेकर मैं उनके यहां पहुंचा तो उनकी कार्यव्यस्तता देखकर मैं अवाक हो गया। जो उपस्थित दिनके दिन और रातकी रात चारपाई पर पड़ा हुआ योजनाएं ही बनाया करता है, वह आज इतना कार्यव्यस्त कैसे हो उठा! चारों तरफ

कागज, रजिस्टर, पुस्तकें, सूचीपत्र आदि बिखरे हुए थे और पं० धुरंधर शास्त्री कुछ लिखनेमें व्यस्त थे। मुझे देखते ही कुछ राहत पाकर कहा—बड़े मौकेसे तुम आये भाई, इस समय तुम्हारी ही आवश्यकता थी। मैंने सम्पन्न होनेकी एक योजना बना ली है और प्रायः सभी साधन इकट्ठा कर लेना है। तुम कुछ चापलूसोंके नाम बताओ। धनी होने पर सबसे पहिले मुझे उन्हींकी जरूरत पड़ेगी।

मैं आश्चर्यचकित रह गया। यह व्यक्ति, जो मित्रोंकी दावत पर दिन गुजारता है, काम न करके योजनाएं बना बना पड़े रहनेसे धनके अभावके कारण अपनी स्त्रीकी गालियां और हलकेझाड़- प्रहारका सैकड़ों बार आनन्द उठा चुका है, फिर भी धनी बननेकी कल्पना कर रहा है।

मेरी चुप्पी उन्हें अखर उठी। "आखिर तुम हो पूरे गावदी" इन सुन्दर शब्दोंमें उन्होंने मेरी तारीफ की। "अरे महाशय! मैंने सम्पन्न होनेकी जो योजना बनायी है, उसे पूरी हो जाने पर पैसोंकी मुझे क्या कमी रहेगी। फिर धनियोंकी शोभा चापलूसोंसे ही है। अतः कमसे कम दस-पांच चापलूस मेरी तारीफ करनेके लिये अवश्य चाहिये। और देखो लगे हाथों शहरमें पांच सात बंगले तो देख डालो, दो चार मोटरोंके लिये आर्डर लिखकर तैयार कर लो एवं दो एक दर्जन नौकरोंकी सूची भी बना लो"।

उनकी बातोंसे मुझे ऐसा लगा, जैसे उनके मस्तिष्ककी नसें अपने स्थानसे अलग हो गयी हों। मैंने पूछा—आखिर इन सबकी जड़ रुपया!

वे हंसे। उस हंसीका भाव कुछ ऐसा ही था, जैसे कोई परम बुद्धिमान आदमी बच्चोंकी बातें सुनकर हंसता है। परम विश्वासके साथ उन्होंने कहा—तुम बहुत भोले हो। मैं ये सभी चीजें पहिलेसे ही इकट्ठी कर लेना चाहता हूं। एक रुपये की कमी रह जाती है जिसके लिये मैंने वह कारगर योजना बनायी है जो व्यर्थ हो ही नहीं सकती।

परन्तु संसारमें कोई ऐसा नहीं है जो उनको यह समझा सके कि रुपया पहिले चाहिये, योजना बादमें बनती है। इधर कुछ दिनोंसे पण्डित धुरंधर शास्त्री स्वास्थ्य सुधारकी योजना बना रहे हैं। इसका भेद मुझे तब मालूम हुआ, जब मैं उनके यहां समयका सदुपयोग करने पहुंचा। पण्डितजीके आंगनमें एक तरफ कहीं केलेके छिलकेका ढेर, कहीं कटहलके छिलकेका, कहीं आमका छिलका और उसकी गुठलियां, कहीं भूसा, कहीं पेड़ोंकी छालें और पत्ते विभिन्न प्रकारकी चीजें पड़ी हुई थीं। पण्डितजीके इन चीजोंको संग्रहालयमें देख कर मैं आश्चर्य चकित हो गया। जिज्ञासा करनेका लोभ मैं संवरण न कर सका। पूछ बैठा—भाई, यह क्या दूकान लगा रहे हो?

'दूकान! 'उन्होंने कहा 'मैं विटामिनों की खोजमें हूं। इन विटामिनोंकी खोज हो जाने पर कोई अस्वस्थ नहीं रहेगा।

मैंने कहा—हो, विटामिन है तो अच्छी चीज; परन्तु आप यह घास, भूसा और छालें क्यों इकट्ठा कर रहे हैं?

तुम्हें मालूम नहीं 'जो विटामिन इन छिलकों और घास, भूसोंमें है- वह अन्य चीजोंमें नहीं! यह तो निर्विवाद सत्य है कि गेहूंके आटेसे अधिक गेहूंके चोकरमें पौष्टिक तत्व हैं और जब एक बार यह तय हो गया तो फिर उसी सिद्धान्तके अनुसार जो शक्ति आमके रसमें नहीं है वह आमके छाल, पत्ते और गुठलियोंमें है। गेहूं और उसके चोकरमें जो शक्ति नहीं, वह उसके भूसेमें है। प्रमाण की आवश्यकता नहीं। प्रत्यक्ष सामने है कि मनुष्य गेहूं खाता है और बैल भूसा। यदि भूसेमें गेहूंसे अधिक शक्ति नहीं रहती तो बैल मनुष्यसे अधिक शक्तिशाली क्यों होता? गदहा कितना कष्टसहिष्णु है, इसका कारण यही है कि दाना और भूसा कौन कहे वह ज्वे ठकी सूखी घास ही अधिक पसन्द करता है।

उनका व्याख्यान कुछ देर और चलता रहा, परन्तु बीचमें टोककर मैंने कहा—एक क्षण रुकिये। मुझे सन्देह है कि आपके मस्तिष्कका सन्तुलन नष्ट हो गया है।

मेरी इस बातको सुनकर उन्होंने जिन शब्दोंमें मेरा स्वागत किया। उसका उल्लेख न करना ही बुद्धिमानी है।

रियायती दामोंपर

उच्चतम क्वालिटीकी लीवर घड़ियां

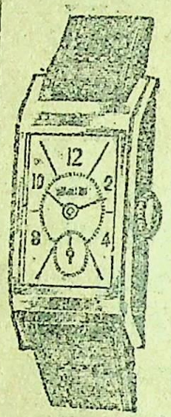

अत्यधिक सस्ती कीमतों पर स्विट्जरलैण्डकी बनी हुई, नई डिजाइन की निहायत सुन्दर ठीक समय देनेवाली। हर घड़ी की गारंटी साढ़े तीन साल। क्रोमियम केस की गोल या चौकोर १८) सुपीरियर फैन्सी शायलकी २०) बेस्ट सेन्टर सेकण्ड गोल २४)। रेक्टेंगुलर और टोनियो आकार की चित्र जैसी घड़ियां उज्वल क्रोमियम केसकी, ५ ज्वेल ३७) रोल्ड गोल्ड ५ ज्वेल की ५०) बेस्ट क्रोमियम केस ४२ रोल्ड गोल्ड ५०) क्रोमियम केस १५ ज्वेल ६५)। फ्लैट शेप ४०) रोल्ड गोल्ड ६०) बेस्ट टोनियो शेपकी ७८) पैकिंग पोस्टेज माफ। हर घड़ीके साथ एक फीता फैन्सी डिजाइन का दिया जाता है।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V. C.)
एशबाग रोड लखनऊ

काफू (रजि०)

हैजे

का रामबाण दवा है

डाबर लिमिटेड, कल.

रियासतोंकी रक्तहीन क्रान्ति

श्रीसहदेव चक्रवर्ती विद्यालंकार

गत वर्ष स्वाधीनताकी प्राप्तिके समय से अब तक भारतकी राष्ट्रीय सरकारने जो कार्य किये हैं, उनमें सबसे महत्व-पूर्ण कार्य भारतीय रियासतोंमें रक्तहीन राज्य-क्रान्तिकी प्रतिष्ठा है। ५ जुलाई १९४७ को भारतीय सरकारके रियासती मन्त्रिमंडलके स्थापना कालसे देशकी रियासतोंमें तीन प्रकारके परिवर्तन हुए।

(१) भारतसंघकी अधिकांश रियासतोंमें उत्तरदायी शासनकी स्थापना हो चुकी है। रियासती विभागके मन्त्री सरदार पटेलके शब्दोंमें "रियासतोंमें उत्तरदायी शासनकी स्थापनासे विदेशी सार्वभौमिकताका स्थान सार्वजनिक हित और कल्याणने ग्रहण कर लिया है।"

(२) अधिकांश अर्ध--अधिकारप्राप्त अथवा अधिकारशून्य रियासतें अपनी भौगोलिक स्थितिको अनुकूल बनाने और आर्थिक तथा शासनात्मक आवश्यकताओं की पूर्तिके लिए अपने प्रतिवेशी प्रांतोंमें मिल गईं।

(३) कुछ रियासतों ने, जिनकी ऐतिहासिक तथा भौगोलिक पृष्ठभूमि समान थीं, अपनी स्वतन्त्रताके कुछ अंशका परित्याग करके संघ बना लिये।

तीन जूनकी ऐतिहासिक योजना, जिसके अन्तर्गत देशका विभाजन हो कर भारतको ब्रिटिश सरकारसे सत्ता हस्तान्तरित होनी थी, केवल ब्रिटिश भारतकी समस्यासे ही सम्बद्ध थी। इस योजना में भारतकी ६०० रियासतोंके सम्बन्धमें केवल इतना ही संकेत किया गया था कि सत्ता हस्तान्तरणके बाद रियासतें स्वतन्त्र हो जायंगी और राजाओंके ब्रिटिश सम्राटकी सरकारके साथ हुई संधियां तथा समझौते समाप्त हो जायंगे। इससे देश के लिए एक भारी समस्या उत्पन्न होनेकी सम्भवना हो गयी। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह था कि स्वतन्त्र भारत देश को अविच्छिन्न एकताको अक्षुण्ण नहीं रख सकेगा और भारत संघमें एक सङ्गठित केन्द्रीय होने की अपेक्षा रियासतोंका ६०० पृथक सरकारें स्थापित हो जायंगी।

प्रवेशकी प्रक्रिया

भारतीय राष्ट्रके लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेलकी नीति-निपुणता, राजनीतिक दूरदर्शिता एवं बुद्धिमत्ताके कारण रियासतोंकी समस्या स्वयमेव हल हो गई। उन्होंने राजाओंको स्मरण दिलाया कि सर्वभौम सत्ताकी समाप्ति का यह अभिप्राय नहीं कि गत शताब्दीसे ब्रिटिश भारत तथा देशी राज्योंके पारस्परिक उपयोगी सम्बन्ध विच्छिन्न हो जायंगे कुछ ऐसे विषय भी हैं जिनसे भारत संघ तथा देशी रियासतें दोनोंका सम्बन्ध है। अतः उनकी स्थिरता एवं अक्षुण्णताके लिये राजाओंको भारत संघमें प्रविष्ट हो जाना चाहिए। इसी चीजको दृष्टिमें रखते हुए सरदार पटेलके तत्वावधानमें रियासती मन्त्रिमंडलने राजाओंके लिये भारत संघमें मिलनेके सम्बन्धमें एक उद्देश्य-पत्र तैयार किया, जिस पर हस्ताक्षर करके राजाओं ने अपनी रियासतोंके तीन विषयों—रक्षा यातायात और विदेशी मामलातपर भारत संघकी केन्द्रीय सरकारका नियन्त्रण स्वीकार कर लिया। यह कार्य तीन सप्ताहोंसे भी कम समयमें सु-सम्पन्न हो गया। परिणामतः भारतके ३० करोड़ नर-नारियों के एक विशाल राष्ट्रके नवनिर्माणका सूत्र सम्पूर्ण हुआ और इसके साथ ही भारत सरकारके नेताओंका सिरदर्द भी कम हो

श्री यादवेन्द्रनाथ पंजा कृषि मंत्री, पं० बंगाल सरकारने शान्ति निकेतनके पाल अधिवेशन श्री निकेतनके "हलकर्षण" उत्सवमें भाग लिया।

गया। केवल हैदराबाद काश्मीर और जूनागढ़की रियसतें ही अभी भारत संघमें सम्मिलित नहीं हुई थीं। जूनागढ़का नवाब पहले तो भारतमें सम्मिलित हो गया था किन्तु पाकिस्तानी शरारतियोंके बहकावेमें आकर वह पाकिस्तानके पक्षमें हो गया। किन्तु फरवरी १९४८ में हुए स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष जनमत संग्रहके निमित्त उसकी रियासतको फिर भारत में सम्मिलित होना पड़ा और वह भयभीत होकर पाकिस्तान भाग गया। काश्मीर नरेशको भी भीषण परिस्थितियोंसे बाध्य होकर २४ अक्तूबर १९४७ को भारतमें सम्मिलित होना पड़ा। हैदराबाद का निजाम भी २९ नवम्बर १९४७ को प्रवेश पत्र पर हस्ताक्षर करके एक वर्षकी अवधिके लिए भारत संघमें सम्मिलित हो गया। निस्सन्देह काश्मीर तथा हैदराबाद की समस्याएं अभी हल ही हो पायीं। कब होगी यह तो भविष्यके गर्भमें निहित है। यदि यह हल हो जातीं तो भारत सरकारके रियासती विभागकी प्रतिष्ठामें चार चांद लग जाते। अस्तु—

समाचार और संघ

कुछ रियासतोंके प्रतिवेशी प्रांतोंमें सम्मिलित और कुछका मिलकर संघ बना लेनेसे यह स्पष्ट हो गया कि अब भारत में छोटी रियासतोंका युग नहीं रहा। भारतकी छोटी रियासतोंको पड़ोसी प्रांतों में समाहार आवश्यक था। राजाओंको रियासतों में उत्तरदायी शासनकी स्थापना के लिये चल रहे सार्वजनिक आन्दोलनों की गतिसे यह अनुमान हो गया कि अब वे यथापूर्व निरंकुश एवं स्वतन्त्र नहीं रह सकते। यदि स्वतन्त्र रहे तो कई प्रकार शासनात्मक तथा आर्थिक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा। केवल बड़ी रियासतोंमें ही जनताके संघर्षका दमन करनेकी सामर्थ्य थीं। किन्तु अन्ततो गत्वा उन्हीं रियासतोंके राजा जनताकी मांगों को दृष्टिमें रखते हुए उनसे सत्ता हस्तान्तरण करनेके आधार पर नये विधान निर्माणके लिए प्रस्तुत हो गये पर जनताके संघर्षका दमन करना छोटी रियासतोंके राजाओंके बशकी बात नहीं थी।

पूर्वी रियासतोंमें नीलगिरिके राजा को अपनी प्राणरक्षाके लिये रियासत छोड़नेके लिए बाधित होना पड़ा। इसी प्रकार एक अन्य पूर्वी रियासतके राजाको जनताने राजधानीमें अन्तिम समय तक प्रविष्ट न होने दिया। भारत सरकारके रियासती विभागके तात्कालिक हस्तक्षेप से दोनों रियासतोंके राजाओं और जनतामें समझौता हुआ। दोनों राजाओं को शासनात्मक एवं आर्थिक आवश्यकताओंसे बाधित होकर अपने प्रतिवेशी प्रान्त उड़ीसामें मिलना पड़ा।

रियासतोंकी भारत संघमें प्रविष्ट होनेकी समस्याके समाधानके बाद राजाओंके परम्परागत विशेषाधिकारोंके यथापूर्व संरक्षण लिये उनसे समझौता किया गया। इस समझौतेके अनुसार उनके परम्परागत गौरवकी प्रतिष्ठा की गई और उन्हें अस्थायीरूपसे नियमित मासिक भत्ता दिया गया। कई रियासतोंका शासन सूत्र प्रांतोंने ग्रहण किया। कुछ बड़ी रियासतें स्वतन्त्र हो रहीं। वे न किसी प्रांतसे मिली और न किसी रियासती संघमें सम्मिलित हुई। रियासतोंके प्रांतोंमें सम्मिलित होनेकी योजनाके अनुसार २३ रियासतें उड़ीसा प्रांतमें जा मिलीं। इनका कुल क्षेत्रफल २३६५३ वर्ग मील जनसंख्या ४७०५ अरब और कुल वार्षिक आय १०० – ८३ लाख रुपये हैं बिहारमें मिली रियासतों कुल क्षेत्रफल ६२३ वर्गमील, कुल जन संख्या २ लाख और कुल वार्षिक आय ४३६ लाख रुपये हैं। १५ रियासतें मध्यप्रांत और बरारमें मिलीं जिनका कुल क्षेत्रफल २३८७३ वर्ग मील, कुल जन संख्या ३८.३४ लाख और कुल वार्षिक आय ८८.३१ लाख रुपये हैं। २ रियासतें मद्रासमें मिलीं। इनका कुल क्षेत्रफल १४४४ वर्गमील, कुल जनसंख्या ४.८३ लाख और कुल वार्षिक आय ३०.८१ लाख रुपये हैं। ३ रियासतें पूर्वी पंजाबमें जा मिलीं। इनका कुल क्षेत्रफल ३७० वर्ग मील कुल जनसंख्या ८.६७ लाख और कुल आय ८००५ लाख रुपये हैं। ३०५ रियासतें बम्बई प्रांतमें सम्मिलित हुईं, जिनका कुल क्षेत्रफल ३४८९४ वर्ग मील, कुल जनसंख्या ४३-१७ लाख और कुल वार्षिक आय ३०७ १५ लाख रुपये हैं। छोटी रियासतोंके पड़ोसी प्रांतोंमें मिल जानेसे देशका समस्त वातावरण निश्चिन्त एवं शान्त हो गया। जनता ने भी स्वीकार किया कि उसकी आर्थिक कठिनाइयोंका एकमात्र हल पड़ोसी प्रांतोंमें मिल जानेमें है। राजाओंका हित भी इसी समाहार प्रक्रियामें था। उनके परम्परागत विशेषाधिकार यथा पूर्व बने रहें। उनका गौरव प्रतिष्ठित रहा और वार्षिक भत्ता भी स्थायी रूपसे मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त उनको शासनप्रबंध की कठिनाइयोंसे भी आराम रहेगा। जिन रियासतों ने प्रांतोंमें मिलना उचित नहीं समझा, उनके संघ बन गये। इन संघोंमें सबसे बड़ा सौराष्ट्र संघ हैं। यह काठियावाड़ की रियासतोंसे मिलकर बना है। नवानगरके राजा इस संघके राज प्रमुख हैं। निस्सन्देह भारतीय रियासतोंमें हुई रक्तहीन क्रान्ति संसारके राजनीतिक इतिहासकी एक महत्वपूर्ण घटना है। इस क्रांतिके सूत्रपातके समय फ्रांसकी राज्य क्रांतियां रूसकी बोलशेविक क्रान्तिकी तरह किसी राजाने प्रजाका दमन नहीं किया और न प्रजाने ही किसी निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी राजाकी हत्या की। यह इतिहासकी एक सफल क्रांति है। इसकी सफलता का सारा श्रेय राजाओंकी उदारता, इस क्रान्तिके सूत्रधार भारतीय राष्ट्रके लोहपुरुष सरदार पटेलकी दूरदर्शिता और नीतिमत्ता तथा उनके सहयोगी श्री मेननकी क्रियाशीलताको प्राप्त हैं।

चिपटी नाकसे नफरत

जापानमें एक नया प्रयोग

आदमी जो न करे, थोड़ा है। विज्ञानका एक-से-एक नया आविष्कार हम आये दिन अखबारोंमें पढ़ते रहते हैं। पढ़ते ही नहीं, देखते भी हैं। वैज्ञानिकोंकी बुद्धि पर ताज्जुब होता है, क्योंकि वे खुदा मियां की भी गलतियां दुरुस्त करनेका दावा करते हैं। कोरा दावा ही नहीं करते, करके दिखा भी देते हैं। एक ऐसे ही अजीबो-गरीब आविष्कारकी चर्चा यहां करना चाहता हूं, जिसने जापानके लोगोंमें—खासकर युवकों और युवतियोंमें—एक गजबकी लहर पैदा कर दी है।

उस दिन एक अखबारमें पढ़ा कि जापानी अपनी शक्लें बदल देना चाहते हैं। एकाएक समझमें नहीं आया कि आखिर शक्लें क्यों और कैसे बदली जा सकती हैं। लेकिन बादमें मालूम हुआ कि जापानी युवक-युवतियां अब अपनी चपटी नाक पसन्द नहीं करते, इसलिए एक तरहके 'आपरेशन' से वे अपनी नाक ऊंची और नुकीली बनवाने लगे हैं। यह नया और हैरत में डालनेवाला प्रयोग बड़ी तेजीसे जापान में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है।

पश्चिमकी नकल करनेमें जापान बहुत पहलेसे एशियाके देशोंमें सबसे आगे रहा है। दूसरे युद्धसे पहले तक यह नकल मुख्यतः व्यावसायिक क्षेत्र तक ही सीमित थी। लेकिन युद्धकी समाप्तिके बाद, जब पस्त और पराजित जापानकी छाती पर विदेशी सैनिक पहुंचे, तो उनके आकर्षक व्यक्तित्वने जापानियों को विशेष रूपमें आकृष्ट करना शुरू किया और तभीसे चिपटी नाक लम्बी और नुकीली बनानेकी चाह पैदा हुई है। कहते हैं कि इस बीच हजारों आदमियोंने अपनी नाक बदलवा ली है और, सिर्फ नाक ही ही नहीं बदलवायी जाती, बल्कि चेहरेके गठनमें भी परिवर्तन लाया जाता है। इस प्रयोगके लिए जापानमें कई केन्द्र खुले हुए हैं, लेकिन ओसाकामें डा० केण्टारो ओडाका अस्पताल सर्वाधिक प्रसिद्ध है। डा० ओडाकी उम्र ४४ सालकी है। वे क्यूशू विश्वविद्यालयके ग्रेजुएट हैं और ५ वर्षसे ओसाकामें यह अस्पताल खोले हुए हैं।

डा० ओडा एक दुबले-पतले और लम्बे व्यक्ति हैं। स्वयं तो उनकी नाक चिपटी है, लेकिन हजारों व्यक्तियोंकी चिपटी नाकको वे ऊंची और नुकीली बना चुके हैं। और, एक मजेकी बात देखिये। ओडा-परिवारके किसी भी व्यक्तिने अपना चेहरा नहीं बदलवाया है। पता नहीं, समूचे जापान भरको आकृष्ट करनेवाला यह प्रयोग ओडा-परिवारको प्रभावित क्यों नहीं कर सका। गत वर्ष एक हजार से अधिक स्त्री-पुरुषोंने डा० ओडाके अस्पतालमें अपनी नाक ऊंची बनवायी। इस संख्यामें युवतियां अधिक रहीं और युवक कम। वर्तमानमें नाकके इस आपरेशनका चार्ज लगभग ४०-४५ रुपये हैं। समय लगता है दो सप्ताह। आम तौर पर युवक-युवतियां अपने चेहरे बदलवाना चाहते हैं, जिनकी औसत उम्र २० वर्ष है। बहुत-सी माताएं भी अपने बच्चोंके चेहरे बदलवानेके लिए पहुंचती हैं। आपरेशनमें कोई विशेष तकलीफ नहीं होती। आम तौर पर डा० ओडाका तरीका सर्वोत्तम माना जाता है, लेकिन वे अपना 'तरीका' किसीको बताते नहीं।

कहते हैं कि लड़कियां अपनी किसी प्रिय अभिनेत्रीका चित्र लेकर डा० ओडाके पास जाती हैं और उस अभिनेत्रीकी तरह ही अपनी नाक बना देनेका अनुरोध करती हैं। अभिनेत्री मारलेन डिट्रिचकी नाक सबसे अधिक पसन्द की जाती है। कोई कोई लड़की तो सिर्फ इतना कहती है कि "विदेशियोंकी तरह मेरी नाक बना दी जाय।"

दरअसल बात यह है कि अमेरिकन फौजी दफ्तरोंमें काम करनेवाली जापानी लड़कियां अपनी चिपटी नाकके कारण बहुत झेंपती हैं और इसलिए चाहती हैं कि उनकी नाक भी अमेरिकनोंकी तरह ही ऊंची हो।

ऊंची नाकके प्रति जापानी युवक युवतियोंके आकर्षण और चिपटी नाकके प्रति नफरतका अन्दाज तो इसीसे लगाया जा सकता है कि बहुत-से युवक-युवती विवाहके पूर्व अपनी नाक और चेहरेका रूप बदलवा देने पर अत्यन्त जोर देते हैं। एक बार एक युवकने डा० ओडाके अस्पतालमें आकर कहा—"मेरा विवाह एक सप्ताहके भीतर ही होनेवाला है। क्या इसके पहले मेरी नाक बदल दी जा सकती है? इसपर डा० ओडाने कहा कि दो सप्ताह से से कम समय नहीं लगेगा। तब युवकने अपने माता-पिताको दो सप्ताहके लिए विवाह स्थगित रखनेके लिए राजी कर लिया। इसी प्रकार बहुत सी लड़कियोंने भी चेहरे बदलवानेके लिए अपने विवाह स्थगित करा दिये। मतलब यह कि जापानी लड़के लड़कियां अब खुले आम चिपटी शक्ल और चिपटी नाकसे नफरत करते हैं। इस तरह आज जापानमें सौन्दर्य बढ़ानेके आन्दोलनने एक नया रूप धारण कर लिया है। परतंत्र जापान आज पश्चिमी प्रभावमें अंधाधुन्ध बहता जा रहा है। पुरानी रूढ़ियोंको छोड़ने और आधुनिकता को अपनाने पर जोर दिया जा रहा है।

जापानी युवतियां अब अपने केश पश्चिमी देशोंकी महिलाओंकी तरह ही संवारना पसन्द करती हैं। इस तरह स्पष्ट है कि आज जापानी युवक-युवतियां सौन्दर्य बढ़ाने और पश्चिमी देशोंकी तरह चमक-दमकके साथ रहनेकी ओर अग्रसर हो रहे हैं। जापानके उज्ज्वल भविष्य के लिए यह प्रवृत्ति सहायक होगी या बाधक, यह तो समय ही बतायेगा; लेकिन इतना तो सर्वविदित है कि इस महायुद्धसे पूर्व जापानी राष्ट्रने चन्द वर्षोंमें ही जो असाधारण उन्नति की थी, उसका एक कारण सादगीका जीवन ही था। जापानी मजदूर—चाहे स्त्री हो या पुरुष—बड़ा ही मिहनती होता था और राष्ट्रका उत्पादन बढ़ानेमें निरन्तर लगा रहता था। लेकिन द्वितीय महायुद्धकी पराजयने जापानी आदर्शों पर भयंकर कुठाराघात किया है। आज आधुनिकताको अपनानेके नाम पर, जापानियोंको जिस वातावरणका अभ्यस्त बनाया जा रहा है, उसमें कुछ वर्षों तक रह चुकनेके बाद जापानी अपने अतीतकालीन गौरव और अटूट देशभक्ति को कहां तक कायम रख सकेंगे, यह कहना बड़ा ही कठिन है। आज आर्थिक संकट ने जापानको अत्यन्त तबाह कर रखा है और, यह आर्थिक तबाही वहां की नैतिकताको उत्तरोत्तर कमजोर बनाती जा रही है।

एक जमाना था, जब कि जापानकी उन्नतिकी गोदमें समस्त एशिया अपनी उन्नति देख रहा था और आज अभागा जापान शेष एशियाकी गतिमें ही अपनी मुक्ति देख रहा है।

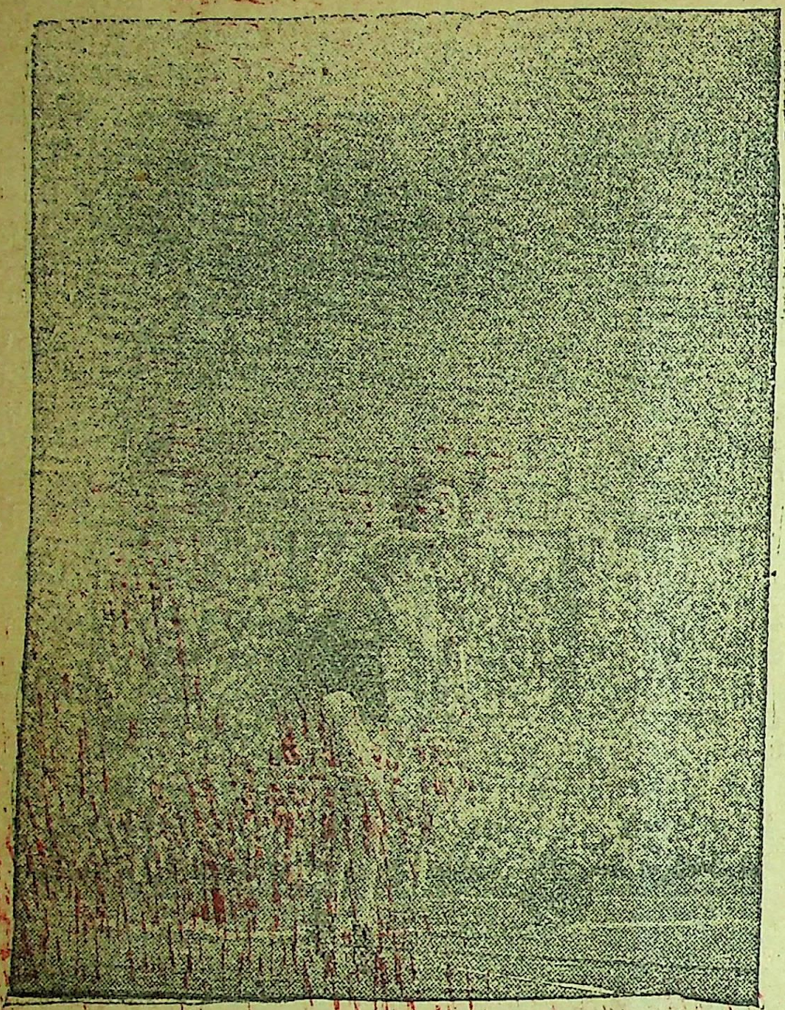

लन्दनमें होनेवाले ओलिम्पिकमें एक ब्रिटिश युवती कौशल दिखा रही है।

लन्दनके ओलिम्पिक खेलोंमें अमेरिकन खेलाड़ी भाग ले रहे हैं।

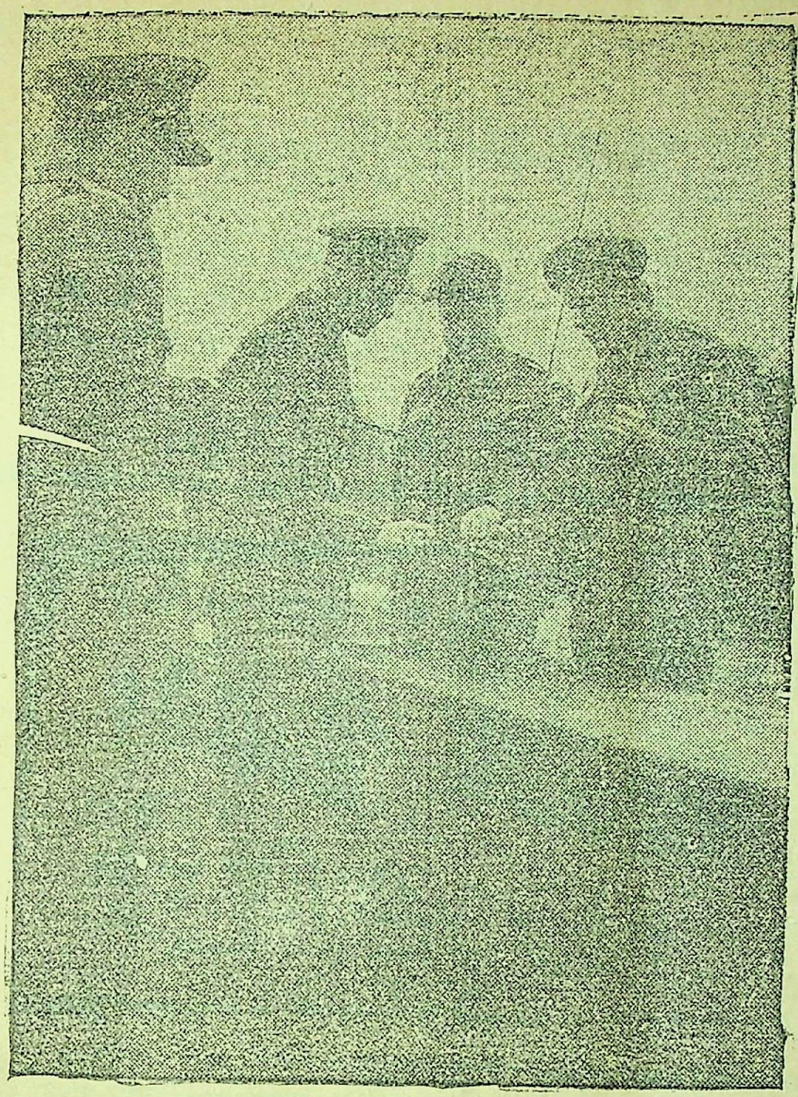

ब्रिटेनके राजा जार्ज फौजी अफसरोंके शिक्षण-केन्द्रका निरीक्षण कर रहे हैं।

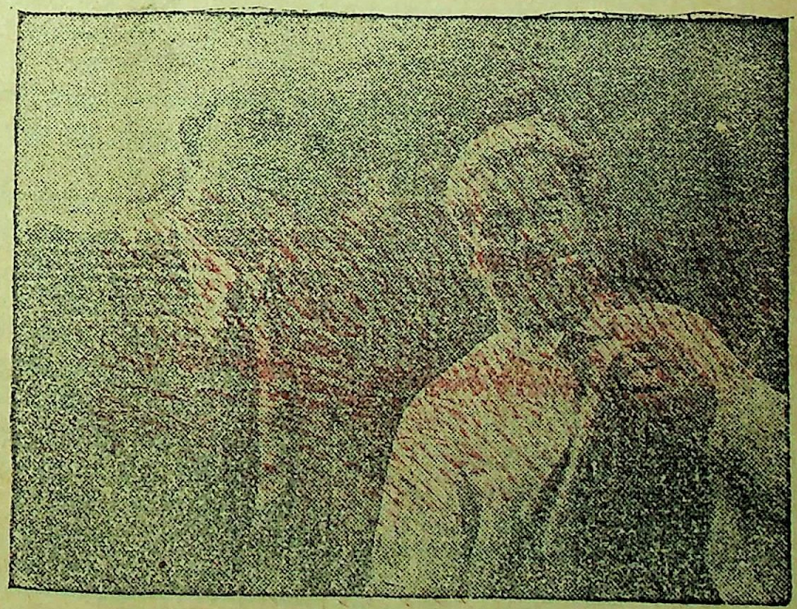

ब्रिटेनके नव-निर्मित दो इंजनवाले विमानके दो सफल चालक। इस विमानने लन्दन तथा पेरिस की दूरी ३६.५ सेकण्डमें तय कर ली।

२ ॥] में ज्वेल वाला रिष्ट वाच

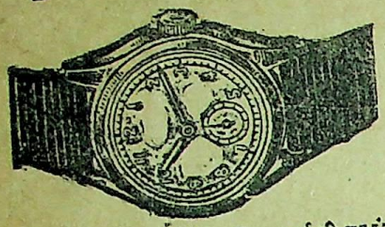

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी
गोल या स्क्वायर शेप २०॥) सुपिरियर २२॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस—३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड ७५)

रेक्टेंगुलर कर्भ या टोनो शेप

क्रोमियम केस—४२) सुपिरियर —४५)
रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्डगोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०)
अलार्म टाइम पीस १८) २२) बीग साइज
२५) पोस्टेज अलग । कोई दो घड़ी लेने
माफ

एच० डेभीड एण्ड कं० (V.)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

नाटक—रामलीला का सामान

परदा, ड्रापसीन, झालर, पलपाई, जटा, दाढ़ी, मूंछ, जनाना—मर्दाने बाल, क्राट- मुकुट, कुण्डल, अलकीहार, पोशाक, चेहरे, तबला, हारमोनियम, सारंगी, सितार, इत्यादि सामान का सचित्र सूचीपत्र मुफ्त मगाइये ।

कमला मार्ट, मथुरा

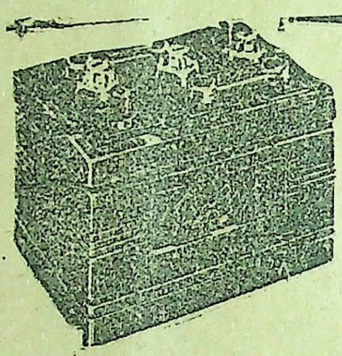

अन्त तक अच्छा काम देनेके लिये
बनायी गई

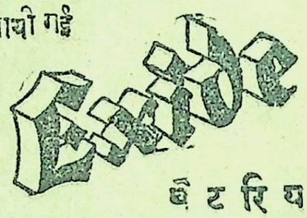

बैटरियां

कार, ट्रक और बसोंके लिये

Local Dealers :—Messrs. F. & C. OSLER Ltd.
12, Old Court House Street, Calcutta.

T. B. ही थी "तपेदिक" चाहे फेफड़ोंका हो या अंतड़ियोंका भयंकर रोग है

(१) पहला स्टेज	(२) दूसरा स्टेज	(३) तीसरा स्टेज	(४) चौथा स्टेज	अन्तिम स्टेज
मामूली ज्वर खांसी	ज्वर, खांसीकी अधिकता	शरीर सुखना, ज्वर खांसी की भयंकरता	सब ही बातोंकी भयंकरता शरीरपर वर्म दस्त आदि का शुरू होना	रोगकी मौत और भयंकर जर्मोंका इधर उधर फैलना

जबरी —— (JABRI) —— (जबरी) —— (JABRI)

भारतके कोने-कोनेसे सैकड़ों रोगियोंके प्रशंसा पत्र पहले आप इन ही कालमोंमें देख चुके हैं । अब अधिक लिखनेकी जरूरत नहीं । जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है ।

लोगोंने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोगसे रोगीकी जान बचाने वाली यदि कोई औषधि है तो वह एक मात्र "जबरी" ही है । "जबरी" के नाममें ही भारतके पूज्य ऋषियोंके आत्मिक बलका कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिनसे ही इस दुष्ट रोगके जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं । यदि—आप इस तरफसे हताश हो चुके हों तो भी परमात्माका नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें । परीक्षार्थ ही हमने १० दिनका नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके । बस—आज ही आर्डर दें । अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताए क्या होता है—जब चिड़िया चुग गयी खेत । सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं । हमारा तारका पता केवल "जबरी" जगाधरी काफी है । तारमें अपना पूरा पता दें । मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नम्बर १ जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ानेके लिये मोती, सोना, अभ्रक आदि मूल्य-वान् भस्में भी पड़ती हैं । पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रु० नमूना १० दिन २०) रु० । जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०), नमूना १० दिन ६) रु०, महसूल अलग है । आर्डर देते समय नं० १ या नं० २ तथा पत्रका हवाला जरूर दें । पार्सल जल्द प्राप्त करनेके लिये मूल्य मनीआर्डरसे भेजें जिसमें देर न हो ।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (६०) "जगाधरी" (पूर्व पंजाब) ई० पी०

कायदेआजमकी मृत्यु पर शोकप्रकाश

गत ११ सितम्बर की रातको १० बज कर २५ मिनट पर कायदे आजम मोहम्मद अली जिन्नाकी मृत्यु हृदयकी गति रुक जानके कारण हो गयी। कायदे आजमका जन्म १८७६ ई० में हुआ था। उनकी शिक्षा कराची और इंगलैण्डमें हुई तथा १८९६ में वे बैरिस्टर हुए। १८९७ में इन्होंने बम्बई हाईकोर्टमें वकालत प्रारंभ की, १९१० में वे इंम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिलके सदस्य थे। १९१६ में वे अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के अध्यक्ष निर्वाचित किये गये और १९२० के विशेष अधिवेशनमें पुनः अध्यक्ष हुए। १९३४ के बादके प्रत्यक वर्ष लीगके अध्यक्ष चुने गये और उक्त पद पर तबतक बने रहे जबतक लीग में दो भाग नहीं हो गये। १९२९-३० में इन्होंने गोल मेज सम्मेलनमें भाग लिया। भारतके विभाजनके पूर्व केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभाके लीग दलके वे नेता थे। गत १५ अगस्तको पाकिस्तान बननेके बाद वे उसके गवर्नर जेनरल तथा पाकिस्तान विधान परिषदके अध्यक्ष बने।

कायदे आजमके संबन्धियोंमें उनकी एक लौती पुत्री तथा उनकी बहन कुमारी फातिमा जिन्ना हैं, गत शनिवारको संध्या समय मियां जिन्ना अपनी बहनके साथ विमान द्वारा क्वेटा से कराची आये। मियां जिन्नाका अन्तिम संस्कार आज तीसरे पहर होगा और आपके शवका सैनिक अभिवादन होगा।

मियां जिन्नाकी मृत्युके संबंधमें एक प्रमुख पाकिस्तानीने कहा—राष्ट्रपता और पाकिस्तानके शिल्पी तथा संस्थापिक अब नहीं रहे। उनके साथ ही उनकी पूर्णता और इमानदारी भी चली गयी। कायदे आजम अपने लिये कुछ नहीं चाहते थे। पद या प्रतिष्ठाके लिये उनमें प्रलोभमन नहीं था। राजनीतिक समस्याओंको सुलझानेमें एक ही दृष्टिकोण रखते थे और वह था भारतीय मुसलमानों और पाकिस्तानके अपनी राजनीतिक योग्यता कूटनीति उनकादृढ़ विश्वासज्ञान और सर्वसम्पन्नताके कारण वे मुसलमानोंके कायदे आजम हो गये। वे बुद्धि तर्क,विचार विमर्श तथा दृढ़तासे प्रत्येक समस्याको हल करते थे। ड़अपने समर्थकोंको तर्कोंसे सन्तुष्ट कर देते थे। फिर इस में आश्चार्य की बात नहीं यदि उनके अनुयायियोंने उन पर पूर्ण विश्वास किया। उन्होंने अपने आरामके जीवनको त्याग कर अपना सारा जीवन जनताकी सेवा में लगा दिया।

यह सभी स्वीकार करते हैं कि पाकिस्तान बन जानेसे कायदे आजमको कोई आराम नहीं मिला। पाकिस्तानमें सबसे अधिक काम करनेवाले व्यक्ति वे ही थे। वे दिनरात संसारके महानतम किंतु नवजात मुस्लिम राष्ट्रके निर्माणमें तलीन रहते थे। उनका जीवन मुस्लिम राष्ट्र अभिलाषाओं और सफलताओंका इतिहास है। एवं जब नयी दिल्ली भारतके विभाजन का प्रस्ताव स्वीकृत हो गया तब उन्होंने कहा—"मेरा काम समाप्त हो गया। अब पाकिस्तान अपना काम समझे-संभाले।"

कराचीसे दो माह तक बाहर रहनेके के पश्चात मियां जिन्ना गत शनिवारको दिन के ४॥ बजे विशेष विमान द्वारा क्वेटासे वापस आये। वे ४ जुलाई को क्वेटा तथा ६ जुलाई को जियरत गये और५–६ दिनों बाद उन्हें जुखाम होगया जिससेवेअच्छे हो गये। किंतु बीमारी पुनः हो गयी और इस बार फेफड़े पर कफका प्रभाव हो गया। उसके बाद वे कभी कभी चंगे भी हो जाते थे। गत १३ अगस्त को क्वेटा आकर उन्होंने कराची लौट जानेका निश्चय किया। १३ अगस्त एवं ११ सितम्बर के बीच कभी वेबीमार होते और कभी हालत सुधर जाती थी किन्तु वे आवश्यक सरकारी काम कर लेते थे। उनका विमान मौरीपुरमें ४॥ बजे पहुंचा। वहांसे वेअपने भवन पहुंचे जहां उनकी हालत खराब होने लगी और रातको १० बज कर २५ मिनट पर उनके हृदयकी गति रुक गयी। उनके अन्तिम क्षणों में उनकी बहन कुमारी फातिमा जिन्ना, तीन डाक्टर तथा उनके व्यक्तिगत स्टाफके कुछ व्यक्ति उनके पास थे। मृत्युके पश्चात अविलम्ब प्रधान मंत्री, बेगम लियाकत अली सेक्रेटरी जेनरल मियां मोहम्मद अली, उनकी पत्नी अन्य मंत्री, सिंधके गवर्नर तथा बेगम हिमायतुल्लाका आगमन हुआ।

रातको पौने १ बजे मंत्रिमंडल की एक आवश्यक बैठक बुलायी गयी जो प्रातःकाल ४ बजे तक चलती रही। विश्वास किया जाता है कि मंत्रि मंडल ने इस प्रश्न पर विचार किया कि पाकिस्तानी राष्ट्रपिताके अंतिम संस्कार तथा उनके प्रति उचित श्रद्धांजलि अर्पित करनेके संबंधमें विचार किया। कराची भवनों पर झंडे आधे झुके हुए हैं। नगरमें उर्वत्र उदासी छायी हुई है। समाचार पत्रोंमें मोटे काले बार्डर तथा कायदे आजमके विशालकाय चित्रके साथ समाचार प्रकाशित हुआ। कायदे आजम द्वारा स्थापित 'डान' ने अपने अग्रलेखका शीर्षक दिया है—"पाकिस्तान दीर्घजीवी हो।"

नयी दिल्ली, १२ सितम्बर भारतकी राजधानी में आयदे आजमकी मृत्यु पर सर्वत्र शोक प्रकाश किया गया। गवर्नमेंट भवन का झण्डा आधा झुका दिया गया है और गवर्नर जेनरल वैदेशिक दूतोंका अभिवादन करनेके लिये जो समारोह आयोजित करने वाले थे वह रद्द कर दिया गया।

कराची स्थित भारतीय हाई कमिश्नर श्री श्रीप्रकाशने एक शोक संवादमें कहा है—कायदे आजमकी मृत्युसे नाजुक समयमें एक अनुपम एवंआवश्यक व्यक्तित्व चला गया। उनकी मृत्यु से संसारकी क्षति हुई है इसे

देखते हुए सभी विवाद बन्द कर दिये जाने चाहिए। इस विपत्तिके कारण पाकिस्तान अनाथ हो गया है। मैं पाकिस्तानकी जनता तथा कायदे आजमकी बहन कुमारी फतिमा जिन्नाके प्रति संवेदना प्रकाश करता हूं। कायदे आजमकी आत्मा शांति लाभ करे।

पूर्वी बंगाल कांग्रेस व्यवस्थापक दल के प्रधान बेतकने शोक प्रकाश करते हुए कहा है—भारतका एक दूसरा महान पुत्र चला गया। कायदे आजम अब नहीं रहे। किन्तु हम उनके इस आदर्शका पालन करके उन्हें जीवित रख सकते हैं कि राज्यके सामने हिंदू और मुसलमानमें कोई अन्तर नहीं। उनका चरित्र लौहनिर्मित था और इच्छा शक्ति दृढ़ थी।

कराचीसे पाकिस्तानके प्रधान मंत्री पाकिस्तानी राष्ट्रके प्रति संदेश देते हुए कहा है—इस कठिन समयमें जब हमें कायदे आजमके नेतृत्वकी अत्यंत आवश्यकता थी, तब ईश्वरको यही अच्छा लगा कि उन्हें हमारे बीचसे उठा ले। जनताको दुःखके सामने घुटने नहीं टेकना है, अपितु पाकिस्तानकी सेवामें पुनः लग जाना है। हम और हमारे साथी प्रतिज्ञा करते हैं कि हम उस काममें दृढ़ताके साथ लगे रहेंगे, जिसे कायदे आजमने पाकिस्तानकी स्थापनाके पश्चात प्रारंभ किया था, और वह काम है पाकिस्तानको एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाना। पाकिस्तानके लिये किया जाने वाला प्रत्येक कार्य कायदे आजमका योग्य स्मारक होगा।

पाकिस्तान सरकारके गजटके एक अतिरिक्त अंकमें कायदे आजमकी मृत्युपर शोक प्रकट किया गया है।

लंदन, १२ सितम्बर ब्रिटिश सरकारी मंडलोंमें कायदे आजमकी मृत्यु से गहरा धक्का अनुभव किया गया। राजस्व सचिव मिस्टर नोएल बेकर ने कराची स्थित ब्रिटिश हाई कमिश्नर की मार्फत निम्नांकित एक संदेश भेजा है—कुमारी जिन्ना तथा प्रधान मंत्रीको मेरी संवेदना सूचित करें। गवर्नर जेनरलकी मृत्युसे उनकी जो क्षति हुई है, उससे अत्यंत दुःखी हूं।

वाशिंगटन से एक सरकारी प्रवक्ताने मियां जिन्नाकी मृत्यु पर दुःख प्रकट करते हुए कहा—भारतसे पाकिस्तानके बिगड़े हुए संबंधोंके ध्यानमें रखते हुए यह क्षति पूरी न होने लायक है।

वाशिंगटनके इंडियालीगके अध्यक्ष श्री जे० सिंहने आशा व्यक्तकी है कि कायदे आजमकी मृत्यु हो जानेके पश्चात भारत तथा पाकिस्तानके संबंधको किसी प्रकार बिगड़ने न दिया जायगा।

अमेरिका स्थित पाकिस्तानी राजदूत मियां इस्पहानीने शोक व्यक्त करते हुए कहा—मेरे लिये यह क्षति अपूरणीय है। मैं अपने जीवनमें उन महान उदाहरणोंका अनुसरण करूंगा जिन्हें उन्होंने मेरे सम्मुख मुझे अपना मित्र और शिष्य मान कर रखा।

लाहौर, १२ सितम्बर पंजाब के प्रधान मंत्रीने शोक प्रकाश करते हुए कहा है—पाकिस्तानके जन्मदाता चले गये किन्तु वे पाकिस्तानी राष्ट्र को छोड़ गये हैं, जिसे एक व्यक्ति द्वारा प्राप्त की गयी सबसे बड़ी सफलता कहा जा सकता है। कायदे आजमकी मृत्यु मुस्लिम राष्ट्रके लिये सबसे बड़ी विपत्ति है।

पश्चिमी पंजाब में स्वास्थ्य मंत्री अब्दुल हमीद रस्ती समाचारको सुन कर बच्चों की तरह रो पड़े। आय मंत्री मेजर मुबारक अली शाहने संवाद सुनकर अल्लाहसे हाथ उठा कर दुआ मांगी कि वह पाकिस्तानको यह विपत्ति सहनकी शक्ति दे। शिक्षा मंत्री शेख करामत अलीने कहा कि कायदे आजम की मृत्युसे जो विपत्ति आ गयी है वह बड़ी है किंतु पाकिस्तानी संघटित रह कर प्रत्येक स्थितिका सामना करेंगे।

नयी दिल्ली, १२ सितम्बर। भारत सरकारके एक अतिरिक्त गजटमें कहा गया है—भारत सरकारको यह जान कर दुःख हुआ कि कल रातको माननीय कायदे आजम जिन्नाकी मृत्यु हो गयी। उनकी स्मृतिमें अपनी श्रद्धा व्यक्त करनेके लिये यह आज्ञा दी जाती है कि सभी सरकारी इमारतें तथा फौजी केन्द्रों पर राष्ट्रीय ध्वजा आधा झुका दिया जायगा।

प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूने पाकिस्तानके प्रधान मंत्री मियां लियाकत अली खांको निम्नाशय शोक संदेश भेजा है—भारतकी जनता तथा अपने साथियोंकी ओरसे तथा अपनी तरफसे मैं पाकिस्तानकी जनता एवं सरकार से माननीय कायदे आजम जिन्ना की मृत्युसे हुई पाकिस्तानकी अपूरणीय क्षति के लिये, संवेदना प्रकाश करता हूं। कृपया कुमारी जिन्नासे भी हमारी संवेदना सूचित करें।

गवर्नर जेनरल महाभाग्य चक्रवर्ती राजगोपालाचारीने पाकिस्तानके प्रधान मंत्री को निम्नाशयका तार भेजा है—प्रिय मित्र, इस गंभीर अवसर पर मैं अपनी, अपने सरकारकी और अपनी जनताकी ओरसे मैं आपको, आपकी सरकारको और आपकी जनतासे हार्दिक सहानुभूति प्रकाश करता हूं। ईश्वर हमें प्रत्येक परीक्षा और प्रत्येक विपत्तिको उचित ढंगसे पार करनेकी शक्ति प्रदान करे।

मियां जिन्नाके अन्तिम संस्कारके समय कराची स्थित भारतीय हाई कमिश्नर भारतीय गवर्नर जेनरलका प्रतिनिधित्व करेंगे। गवर्नर जेनरलके सेक्रेटरी तथा मिलिटरी सेक्रेटरीने भारत स्थित पाकिस्तान हाई कमिश्नरसे मिल कर गवर्नर जेनरलकी ओरसे संवेदना प्रकाशित की, गवर्नर जेनरलने निम्नाशयका शोक संदेश कुमारी फातिमा जिन्नाको भेजा है—प्रिय बहन, मेरी तथा भारतीय जनताकी हार्दिक सहानुभूति तुमसे तथा पाकिस्तानकी जनता से है, इस अवसर पर ईश्वर करे कि भारत एवं पाकिस्तानके नरनारियोंका मस्तिष्क श्रद्धासे ऊपरकी ओर उठे। सर्वशक्तिमान हमें सभी विपत्तियों और परीक्षाओंको पार करनेकी शक्ति प्रदान करें।

कलकत्ता, १२ सितम्बर। बंगालके भूतपूर्व प्रधान मंत्री जनाब सुहरावर्दीने कहा—"कायदे आजम की मृत्युसे एक आकर्षक और महान व्यक्तित्व उठ गया। उनकी मृत्युके पश्चात उनका कोई ऐसा उत्तराधिकारी नहीं जो उनके ऐसा महान हो सके।"

080257

ये राजप्रमुख

श्री बालकृष्ण गुप्त

हिन्दकी आजादीकी एक अनोखी उपज 'राजप्रमुख' नामक एक अद्भुत राजनीतिक जीव है। गवर्नर जनरल राजाजी से भी कई गुना अधिक वेतन ही नहीं, बल्कि पांच हजार करोड़ रुपयेके बजटवाले ब्रिटेनके बादशाह से भी बड़ा एलाउन्स, राजप्रमुखोंमें अन्यतम ग्वालियर नरेशका है। २५ लाख रुपया वार्षिक उनका प्रीवी पर्स (व्यक्तिगत खर्च) और पांच लाख रुपया राजप्रमुख-पदका भारी बोझ सम्हालनेका एलाउन्स है। इसके अलावा सिंधिया-परिवारके इस नौजवानको तीस लाख रुपया सालानाकी आमदनी पैदा करनेवाली एक बड़ी जागीर है। मिलोंके शेयर, शहरी जायदाद और व्यक्तिगत सम्पत्तिका तो अन्दाज लगाना ही मुश्किल है। सोना और चांदी तो साधारण धातुएं हैं। हीरे और मोती, पन्ना और माणिकके जबरदस्त जखीरे इनके महलोंमें मौजूद हैं। यह सब धन प्रजाके करसे वसूल किया हुआ, सैकड़ों वर्षोंका संग्रह है, व्यापार व उद्योग धंधोंसे एकत्र नहीं है।

ग्वालियर महाराज पहिले ३६ लाखकी आबादीवाली रियासतके स्वामी थे, पर नवीन राजनीतिक परिवर्तनने उन्हें मालवाकी दूनी आबादीका महाप्रभु बना दिया है। स्वाधीनताकी मुक्त वायु राजप्रमुख पदवीधारी राज्यवंशोंके इन सिरमौरोंके लिए बड़ी लाभदायक सिद्ध हुई है।

ये राजप्रमुख आजीवन पदारूढ़ रहेंगे। मन्त्रिमण्डल वर्षके पानीकी तरह बदलते रहेंगे, उनके जाने और आने का क्रम जारी रहेगा, पर मुगलोंकी तरह अपनी गद्दीको राजप्रमुख बैठे गरम रखे रहेंगे। मन्त्रिमण्डल राजप्रमुखके खिलौने हैं। पटियालाके राजप्रमुख ने लोक सेवक संघजैसे जनप्रिय नामके पीछे अपनी पार्टी खड़ी कर, प्रजामंडल और अकाली दलके पुराने नेताओंको निकम्मा और निरर्थक कर दिया है। उदयपुरके अर्द्धांग राणाने जनताको त्रस्त कर डाला है। दिल्लीसे से दूर, विन्ध्य प्रदेशके पहाड़ी वनोंमें जागीरदारोंका मन्त्रिमण्डल बना कर युवक राजप्रमुख मार्तण्डसिंह सुखकी नींद सो रहे हैं। जूनागढ़की विजय प्राप्त कर, सौराष्ट्रके जामसाहबने एक अलभ्य राजनीतिकमहत्ता प्राप्त कर ली है।

भारत सरकारके रियासती विभाग ने कुछ दिनों पूर्व जो श्वेत-पत्र प्रकाशित किया था, उसके अनुसार मन्त्रिमण्डलका कर्तव्य 'राजप्रमुख'को सलाह व सहायता देना निर्धारित किया गया है। मन्त्रिमण्डल का चुनाव भी राजप्रमुख की मरजी पर ही रखा गया है, और किसीको मन्त्री रखना राजप्रमुखकी मिहरबानी पर ही निर्भर है। रियासती जनताको यह उम्मीद थी कि देशमें स्वराज्य कायम होते ही रियासतोंको मिला कर प्रान्त बना दिये जायेंगे और इन नये प्रान्तोंका विधान भी भारतकी सर्वोच्च सत्ता प्राप्त विधान परिषद पुराने प्रतिष्ठित प्रान्तोंके अनुरूप ही बनायेगी, अलग अलग रियासतोंका भौगोलिक लिहाजसे नये या पुराने प्रान्तोंमें विलय हो जायेगा, त्रावंकोर, कोचीन और मलाबारको मिला कर नवीन केरलकी रचना होगी, सारा मैसूर, बम्बई, मद्रास व हैदराबाद के कन्नड़ भाषा भाषी टुकड़े इकट्ठे कर कर्नाटककी सृष्टि होगी, बम्बई और मध्य प्रान्त व हैदराबादके मराठी हिस्सोंको एकत्र कर महाराष्ट्रकी स्थापना होगी, काठियावाड़, कच्छ, बड़ौदा व गुजरातकी रियासतों और जिलोंको मिला कर गुर्जर देशकी कल्पना फलीभूत होगी, भूपालसे भरतपुर और गुजरातकी सीमासे जमुनातट तकके इलाकेको एकीभूत कर मालवा प्रान्त बनेगा, विन्ध्य प्रदेशकी लम्बी लकीरके कुछ हिस्सोंका मध्य एवं कुछका संयुक्त प्रान्तमें मिलना ही श्रेयस्कर है। इसी तरह राजस्थान, मत्स्यराज्य एवं जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेरको एक कर राजपूतानेकी गौरवगाथा फिर जीवित की जायेगी। परन्तु 'राजा' नामधारी मृतप्राय राजनीतिक जीवोंको जगा कर और जनताके मतके विरुद्ध उनसे समझौता कर इन कृत्रिम रियासती संघोंका संगठन हुआ है। पंजाबकी बिखरी हुई, अलग अलग टुकड़ोंवाली रियासतोंका संघ न बना कर, पटियालाको फुलकियां कही जानेवाली इन रियासतोंको पूर्वी पंजाबके नवीन प्रांतमें मिला देनेसे ही जनताका कल्याण होता और भारतकी सीमापर अवस्थित पंजाबी भूभागकी राजनीतिमें भविष्यके लिये भयंकर पटियाला और तारासिंहके सपने जीवित होनेसे पहले ही विलीन हो जाते।

जब दुनियाके किसी संघमें भी संघकी इकाइयोंको सेना रखनेका अधिकार नहीं, और भारतमें भी ६ करोड़ आबादीवाले संयुक्त प्रान्त व मद्रासको सेना भरती करनेका हक नहीं, तो करोड़से भी कम आबादी वाले इन पिछड़े हुए इलाकोंके गरीबोंपर फौजी खर्चका फिजूल भार डालनेसे क्या लाभ? इन रियासतोंके सेनापति तो राजप्रमुख हैं ही, इनके सारे अफसर भी राजप्रमुखके प्रियपात्र, विश्वासभाजन, स्वजातीय संबंधी आदि हैं। ये फौजें जनताको दबानेके सिवा और किसी कामकी नहीं हैं। विश्वके सब

देशोंमें एक राष्ट्रीय सेना होती है। हिन्दका रियासती विभाग इन अलग अलग दकियानूसी फौजोंको बनाये रखनेमें किसका क्या हित समझकर कौन-सी नवीन राजनीतिक प्रणालीकी रचना कर रहा है, यह इतिहास एवं विधानके विद्यार्थियोंकी समझके बाहरकी बात है।

राजप्रमुखों द्वारा संचालित ये पृथक सेनाएं किसी समय जनमत एवं प्रजातंत्रके दमनके सिवा और क्या काम कर सकती हैं? राजप्रमुख विधान द्वारा सीमित वैधानिक बाधाओंसे जकड़े हुए गवर्नर नहीं हैं, वे निरंकुश प्रणालीके नये नमूने हैं; नया जामा पहनकर वे जवाहरलालजी, सरदार पटेल और दूसरे भारतीय नेताओंके साथ संबंध स्थापित करनेको तैयार हैं। किन्तु जिस तरह हौलकर और सिंधिया मुगल-पतनकालके समय दिल्लीकी तरफ झपटे थे, उसी तरह स्वामिभक्त सेनाओंके ये सरदार भी किसी कमजोर अवसरपर प्रतिक्रियावादी शक्तियोंका साथ दे सकते हैं। बाघके बच्चेकी तरह निरंकुशताका खून राजप्रमुखोंके मुंहसे लगा हुआ है।

अंग्रेजोंने रियासती और प्रान्तीय इलाकोंमें जिस भेदको स्थापित कर अपनी जड़ें मजबूत कर रखी थीं, वह भेद आज जन-समूहका समर्थन प्राप्त कर भी रियासती विभाग एक कलमसे क्यों नहीं मिटा डालता? इस भेदको कायम रखनेमें देशके किन वर्गों और विशेषाधिकार-प्राप्त व्यक्तियोंको लाभ है, यह राजनीतिके ज्ञाताओंसे अपरिचित नहीं। प्रजातंत्रके मुठे अचकन पहनकर रियासतोंमें गण-विरोधिनी ताकतोंका संगठन शुरू हो गया है। देशके विकास और उन्नतिमें कब ये संगठन बाधा देने लगेंगे, यह भविष्यकी बात है। 'राजप्रमुख' के प्रियपात्रोंसे इन संघोंकी सरकारोंका संचालन हो रहा है। प्रजामंडलोंके दो-चार नेता मंत्रिमंडलोंकी शोभा अवश्य बढ़ा रहे हैं, लेकिन ढांचा सामन्तशाहीके पत्थरोंसे बना हुआ उसीका त्यों खड़ा है।

जब यूरोपमें राज्यसत्ताओंका राजनीतिक अन्त होनेपर भी, उन्हें अनावश्यक समझकर दूर किया जा रहा है, तो कलतक कांग्रेसके कट्टर दुश्मन और आज भी स्वार्थी और शक्तिलोलुप इन मरे हुओंको राजनीतिक दया देकर क्यों गणतंत्रको कमजोर किया जा रहा है? क्या हमारा भारत स्वाधीनता प्राप्त करके भी प्रजा-राज्यके लायक साबित नहीं हुआ है? देश, काल, इतिहास और भूगोल सब रियासतोंके विरुद्ध हैं, राजाओंका अन्त रियासतोंके अन्तके साथ ही होना चाहिये था, प्रजाका प्रबल आन्दोलन सुधार-विरोधी इन सामन्तोंका अन्त कर देता, पर जनान्दोलनको छुट्टी दे रियासती विभागने राजशाहीको पुनर्जीवन प्रदान कर दिया। जो रियासतें प्रान्तोंमें शामिल हो गयीं, उनके नागरिकोंका भविष्य तो उज्ज्वल हो गया, पर राजप्रमुखोंके शासनबलोंमें स्वायत्तशासन प्राप्त प्रदेशोंसे बड़ा भेद बना रहा, जो लार्ड कैनिंगने कायम किया था।

रियासतोंमें अलग अलग विधान परिषदें बनाकर फिजूलखर्च करनेकी क्या जरूरत थी, जब भारतीय विधान परिषदमें रियासतोंके प्रतिनिधि वर्तमान ही थे? जब सारे भारतके बड़े बड़े प्रान्तोंके विधान एक ही रंग-रूप के दिल्लीमें बन रहे थे, तो लिखित राजाओंकी पेंशनके रियासती प्रश्न ऐसे क्या रोचीले थे कि उनके लिए पिछड़े हुए प्रतिक्रियावादियोंसे लदी छोटी छोटी विधान परिषदें बनाई गईं? भारतीय विधान परिषदकी सर्वोच्च सत्तामें ऐसी कौन-सी अड़चनी बाधा उपस्थित थी, कि भारत सरकारके रियासती विभागने राजाओंसे बन्द कमरोंमें मंत्रणा कर एक अलग खिचड़ी पकानी शुरू की? आखिर देशकी भारतीय विधानसभाका काम कर इन अलग राज्योंको भारतके प्रान्तोंकी तरह एक अभिन्न अंग बना डालना था। निस्संदेह रियासती जनता इस स्थितिपर गंभीरतापूर्वक विचार कर रही है।

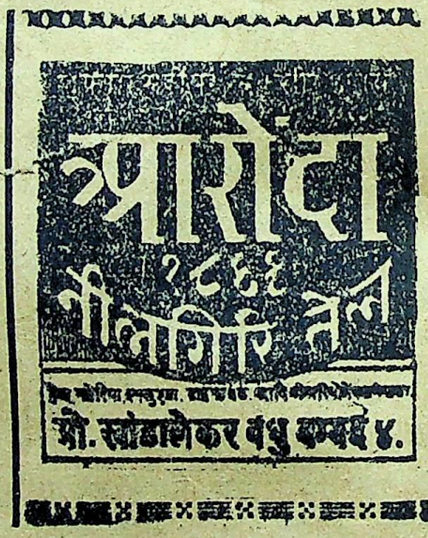

सावधान:--

हैजा का प्रतिकार

"कर्पुरारिष्ट"

एक मात्र महौषध

१ शीशी १) डाक मा० ।।≡)

कविराज

एन० एन० सेन एण्ड कं० लि०

१८।१ लोअर चितपुर रोड, कलकत्ता।

हमारी आर्थिक क्रान्ति

श्री राघवेन्द्र

अपने देशके प्रति त्याग और बलिदान भावना मानव-जीवनकी एक बेजोड़ चीज है। इसी पवित्र भावनासे अनुप्राणित होकर, मनुष्य जननी जन्मभूमिके लिये हंसते-हंसते फांसीके तख्ते पर झूल जाता है। और सारा संसार उसकी कीर्ति-कौमुदीसे अपने पथको आलोकित करता है।

लेकिन पूंजीवादी समाज-व्यवस्था इस उच्चादर्शको विकासका पूरा-पूरा अवसर नहीं देती। जिस देशकी सामाजिक व्यवस्था पूंजीवादी आधार पर अवलम्बित है, वहां जनता स्वतः दो वर्गोंमें विभक्त हो जाती है—शोषक और शोषित। और तब इन दोनों वर्गोंके हित तो एक दूसरेसे सर्वथा भिन्न हो ही जाते हैं, उनकी 'देशभक्ति' का रूप भी अलग-अलग हो जाता है। शोषकवर्गके लोगोंकी देशभक्ति कदापि उचित, सुदृढ़ और पूर्ण नहीं होती, क्योंकि जब कभी देशके हितोंसे उनके अपने हितोंका मुकाबला होता है, वे देशके हितोंको ताक पर रख देते हैं, उन्हें अपने और अपने वर्गके हितोंकी ही चिन्ता विशेष रहती है। उदाहरणके लिये अपने देशकी वर्तमान परिस्थितिको ही लीजिये। आज पाकिस्तानसे भारी तनातनी चल रही है। भारत सरकार अपने देशकी बहुत-सी चीजोंको वहां जाने देना नहीं चाहती, लेकिन बहुत-से भारतीय व्यापारी देश-हितकी तनिक भी परवाह न कर उन चीजोंको गुप्त रूपसे वहां भेजते या भेजनेकी चेष्टा करते हैं। धनके लोभमें वे देशका भारी-से-भारी अहित करनेमें तनिक भी नहीं हिचकते। लेकिन शोषितवर्गके लोगोंका हृदय इतना नीचे नहीं गिर सकता। चूंकि उनका हित मुख्यतः अन्न और वस्त्रकी अपनी आवश्यकता तक ही सीमित रहता है, इसलिये उनके अपने हितों और राष्ट्रके हितोंमें विशेष अन्तर ही नहीं होता। हां, अगर शासकवर्ग पर शोषकवर्गका विशेष प्रभाव है और उस प्रभावमें पड़कर अगर सरकार कोई ऐसा राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाती है, जिसके चलते शोषकवर्ग अपने शोषणके जारी रहनेका खतरा देखता है, तो अवश्य ही वह उस 'राष्ट्रीय कार्यक्रम' के खिलाफ भी आवाज बुलन्द करना अपना कर्त्तव्य समझता है। फिर भी इतना तो मानना ही पड़ेगा कि शोषकवर्गकी देशभक्ति शोषितोंकी अपेक्षा अधिक निखरी हुई और बलवती होती है। इतिहास इसका ज्वलन्त प्रमाण है। रूस और फ्रांसकी क्रांतियां तथा उन क्रांतियोंके बादकी घटनाएं बताती हैं कि देश-निर्माण और देशोत्थानमें शोषितवर्गने कितना महत्वपूर्ण पार्ट अदा किया है। जहां तक क्रांतियोंका सम्बन्ध है, सभी देशोंमें इसी वर्गके लोगोंने प्रारम्भिक कार्य किया। और, दूरकी बात जाने दीजिये, अपने देशको ही लीजिये। स्वतन्त्रताके आन्दोलनमें किस वर्गके लोगोंने अपना सत्यानाश कराया? सन १९२१ से लेकर सन १९४२ तक डंडे और गोले-गोलियां खाने तथा जेलकी कठिन यातनाएं सहनेके लिये किन लोगोंने अपनेको आगे रखा? न जाने कितने घर लूटे और जलाये गये, कितने परिवारोंकी जमीन-जायदादें नष्ट अथवा जब्त हो गयीं और न जाने कितने परिवार अनाथ हो गये। आखिर किन लोगोंको ये मुसीबतें झेलनी पड़ीं? मुख्यतः उसी शोषितवर्गको। लेकिन स्वराज्य मिल जाने पर, हम देखते हैं कि, उस शोषितवर्गकी स्थितिमें कोई खास परिवर्तन नहीं आया है, बल्कि जैसे पहले से भी अधिक मुसीबतोंका सामना करना पड़ रहा है। लेकिन दूसरी ओर उस शोषकवर्गका हाल क्या है, जिसमें अधिकांश व्यक्ति स्वतन्त्रताके संग्राममें भाग लेनेसे निरन्तर कन्नी काटते रहे? यह नग्न सत्य है कि इस वर्गने अतीतकी तरह ही बल्कि उससे अधिक ही, शासनाधिकारियोंको अपने प्रभावमें रखा है। अतीतमें तो यह शोषक वर्ग विदेशी शासकोंके एक एजेंटके रूपमें था, लेकिन आज तो वह स्वराज्यकी सरकारका एक प्रमुख और प्रभावशाली अंग बन गया है। इस तरह, शासन और व्यवसायके क्षेत्रों पर वह पहलेसे भी कई गुना प्रभाव रखता है। निस्संदेह कांग्रेसके हमारे दूरदर्शी राजनीतिज्ञ एवं शासनाधिकारी इस स्थितिको भलीभांति महसूस करते हैं और जानते हैं कि इसके कारण आम जनतामें असन्तोषकी भावना फैल रही है। वे यह भी जानते हैं कि यह असन्तोष तब तक नहीं मिट सकता, जब तक राजनीतिक स्वराज्यके बाद जनताको अब आर्थिक स्वराज्य न मिल जाय—

लेकिन यह आर्थिक स्वराज्य मिलेगा कैसे? यही एक सवाल है, जिसे हल करनेके लिये विभिन्न विचारोंके लोग अपने-अपने ढंगसे सोच रहे हैं। वामपंथियों—खासकर उग्र वामपंथियोंका—खयाल है कि बिना खून-खराबीके यह आर्थिक क्रांति नहीं हो सकेगी। इसके प्रतिकूल कांग्रेसी नेताओं या कांग्रेसी सरकारोंकी ओर से, इतिहाससे सबक लेकर, यह कोशिश की जा रही है कि यह आर्थिक क्रांति शांतिपूर्ण ढंगसे सम्पन्न हो जाय। कांग्रेसी सरकारें इसके लिये तरह-तरहके कानून-कायदे बना रही हैं, जिससे शोषितवर्गकी आर्थिक हालतमें सुधार हो और उत्पादनकी वृद्धिके साथ-साथ वितरणकी त्रुटियां दूर हों। लेकिन इन कानून-कायदोंसे आम जनताको, शोषितों और पीड़ितोंको उतना लाभ नहीं मिल पाता, जितना आजकी परिस्थितिमें सर्वथा आवश्यक है। यही कारण

है कि देहातोंकी कोटि-कोटि जनता आज अपने लिये 'स्वराज्य' का कोई खास अर्थ समझ नहीं पा रही है।

जिन दिनों स्वराज्यका आन्दोलन चल रहा था, आम जनताके सामने बड़े आकर्षक नारे थे। अब जनता उन नारों का क्रियात्मक रूप देखना चाहती है। वह देखती है कि जो लोग गुलामीके दिनोंमें गरीबोंका खून चूस-चूस कर मस्त बने हुए थे, वे आज भी अपनी रफ्तार ज्योंकी त्यों रखे हुए हैं। उल्टे उनकी आमदनी पहलेसे कई गुनी बढ़ी ही नजर आती है, जब कि दूसरी ओर बेचारे गरीब बिना मौत मर रहे हैं। सिद्धांतवाद अथवा आदर्शवाद की लम्बी चौड़ी बातोंसे ही गरीबोंको संतोष नहीं हो सकता। कृषि और उद्योग सम्बन्धी बड़ी-बड़ी योजनाओं से ही शांति नहीं मिल सकती। केन्द्र और प्रांतोंके अधिकारी आये दिन अपनी एक-न-एक योजना सुनाते या प्रकाशित करते रहते हैं, जिसको कार्य-रूपमें परिणत करनेमें आवश्यकतासे अधिक कमजोरी या शिथिलता दिखायी जाती है।

गंभीरतापूर्वक विचार करने पर मालूम होगा कि इन सारी कमजोरियों या त्रुटियोंकी जड़ हमारी वर्तमान समाज-व्यवस्था है। जब तक इस व्यवस्थामें आमूल परिवर्तन कर नये समाजकी रचना न होगी, तब तक शोषितोंके साथ न्यायकी आशा नहीं की जा सकती, और तब तक देशोत्थान या देशके नव-निर्माणकी कोई भी योजना सफल नहीं हो सकती।

स्वराज्य शांतिपूर्वक हमारे हाथोंमें आ गया है। यही कारण है कि राजनीतिक स्वराज्यके बाद हमें आर्थिक स्वराज्य के लिये रोना पड़ रहा है। यदि रक्त-क्रांतिके परिणामस्वरूप हमें स्वराज्य मिला होता तो देशका आर्थिक ढांचा बहुत-कुछ अपने-आप बदल गया होता। अब देखना है, यह आर्थिक क्रांति हमारे देशमें किस प्रकार होती है—शांतिपूर्वक या रक्तपात के द्वारा।

निजामका इतिहास पराजयोंसे भरा हुआ है

हैदराबाद और भारतके वर्तमान झगड़ेमें इतिहास भारतके साथ है। यह झगड़ा इस लिये है कि निजाम सर्वतंत्र स्वाधीन होनेका दावा करने लगा था पर इतिहाससे सिद्ध है कि वह कभी ऐसा नहीं रहा। केवल पिछले अगस्त १९४७को उसे स्वाधीनताका दावा करनेका अवसर मिला जबकी ब्रिटेनने कह दिया कि उसने अपनी मंडलेश्वरता उठालीहै। हैदराबादका आशफजाही वंश २२४ सालकी अपनी जिंदगीमें पहले तो मुगलोंके, फिर मरहटोंके अन्तमें ब्रिटिशके आधीन रहा।

हैदराबादका पहला निजाम मुगल राज्यका सूबेदार था। उसके वंशजोंको पेशवाओंने चार बार पराजित किया और उससे कर वसूल किये। तब अंतमें सहायक संधिके अनुसार मराठोंसे अपनी जान बचानेके लिये भारती नरेशोंमें सबसे पहले निजमनेही ईष्ट इंडिया कम्पनीके जालमें अपना गला फसाया और अपनी सुरक्षा और विदेश नीतिका भार उसने ईष्ट इंडिया कम्पनीको सौंपा।

निजामका अर्थ गवर्नर

निजाम शब्दका स्पष्ट अर्थ गवर्नर होता है, राजा या बादशाह नहीं। १७२४ में दक्षिणमें अपनी जड़ जमाकर तत्कालीन नवाब आशफजाहने अपनेको निजामुल मुल्क घोषित किया किंतु उस समय भी उसे अपनेको बादशाह कहनेकी हिम्मत नहीं हुई। वह अपनेको राथाये दक्कन कहा करता था जिसका अर्थ दक्षिणका प्रमुख होता है पर न कभी उसने अपनेको सुल्तान या शाह नहीं कहा जैसा कि वह कहसकता था अगर उसने स्वाधीनता पाली थी। सिंहासन या तख्त पर नहीं बैठता था। इस्लामी रीतिके अनुसार बादशाहोंके

निजामके कमांडर साहब

नाम में जो जुम्माकी नवाजमें खुतबा पढा जाता है, वह भी निजामके लिये कभी नहीं पढा गया। निजामके नामका सिक्का भी है। एक बार जब खुशामदी ज्योतिषीने आशफजाहसे कहा कि "हजूरके भाग्यमें बादशाह होना लिखा है तो उसने नम्रतासे जवाब दिया था," मेरा राज सिंहासन और छत्र उनके लिये है जो उनके अधिकारी हैं। मैं केवल आबरूसे रहना चाहता हूं और अगर मेरी मान प्रतिष्ठा सुरक्षित है तो हमें तख्ती ताजसे क्या काम। वह जिन मुगल बादशाहोंके हैं उनके ही रहें।"

किंतु इन सब नम्रताओं और निरीहताके होते हुए भी इस यक्तिमें बदगाबाजीके कुछ तत्व भी थे और यह जग जाहिर था। यह बात इससे भी सिद्ध होती है कि जब

नादिरशाहने तत्कालीन मुगल बादशाह को फिरसे दिल्लीके गद्दी पर बैठाया था तो उसे सलाह दी थी कि निजामसे होशियार रहना ।

निजामकी पराजयें

निजाम मरहटोंसे चार बार हारा है । पहली हार पालखडेकी लड़ाई१७२८ दूसरी हार भोपालमें १७३७ में अन्तमें कर्दाकी लड़ाईमें १७९५ में वह बुरी तरह हारकर भागा है । कुर्दाकी लड़ाई के समय निजामके दीवान मशीरुलमुल्कईमें इतना घमंड था कि उसने कहा था कि पेशवाको धोती और लोटा लेकर काशी बास करादेंगे "। पर जब निजामी फौज हार गयी तो निजामने उसी मसीरुलमुल्कको

खलीफा बननेका स्वप्न....

पकड़कर पेशवाके हवाले कर दिया । उस लड़ाईमें ३ करोड़ खर्चा भी देना पड़ा था। जब मुगल सम्राट शाह आलमने मरहठा सरदार महादजी सिंधिया को अपना संरक्षक बनाया था उस समय १७९५ में उसी निजामने दरख्वास्तके साथ अपने आदमी भेज कर सिंधियासे यह प्रार्थना की थी कि उसेही दक्षिणका गवर्नर रहने दियाजाय हटाया न जाय ।

निजामकी नीति अपनी सेनामें पठानों और अरबोंको भर्ती करनेकी पहले से ही रही है । निजामकी इस नीति पर १८६७ में सर रिचर्ड टेम्बुलने लिखा था "हैदराबाद कई बार इसी बिदेशी फौजके द्वारा उजड़नेसे बचा है । अगर लार्ड डलहाउसीने रोका नहोता तो अरब सिपाहियोंने १८५५ में निजामको खतम करदिया होता । १८५७ में भी इन्होंने निजामको हटानेका षड़यंत्र किया था जिसे भारत सरकारकी सहायतासे दबाया गया ।

अंग्रेजोंने स्वयंही निजामकी स्वाधीनता और सर्वोच्च सत्ताधिकार कभी नही माना । निजामके ऐसेही दावे पर एक बार तत्कालीन वाइसराय लार्ड रिडिंगने टकासा जवाब दे दिया था और मजाक करते हुए कहा था कि "सबसे ऊपर रहनेका अधिकार आपसे ऊपर है "। सन १९१८ तक निजाम अन्य भारतीय राजओंकी तरह केवल हिजहाईनेस कहलाता था केवल १९१८ से प्रथम योरोपीय महा युद्धमें उससे बहुत रुपया लेनेके ध्येयसे एक्साल्टेड हाईनेसकी नयी पदवी दी गयी ।

हैदराबादकी यही कहानी है और निजामके सर्वोच्च सत्ताधिकारके दावेका यही आधार । इससे समझा जाता है कि निजामका दावा कितना झूठा और बे बुनियाद है ।

अबतो भारतीय सेना हैदराबाद पर चढ़ही गयी है । यह अभियान ठीक उसी दिन हुआ है जिस दिन पहली बार आजसे २१३ साल पहले पहला मरहठा अक्रमण निजाम पर हुआ था जिसमें निजामकी शेखी चूर करदी गयी थी । १३ सितंबर १७९३ को ही मरहठा सेना निजामको मजा चखानेके लिये चली थी । इस बार भी भारतीय सेनाने उसी दिन - शायद उसी क्षण हैदराबाद पर अभियान किया है नतीजा वही होगा जो उसबार हुआ था ।

अभी आगे बढ़ना है

(श्री शंकरराव देव)

अब भारतवर्षको विदेशियोंके शासन से मुक्ति मिल चुकी है । किन्तु हमारी स्वाधीनता-प्राप्तिने हमें केवल जन-राज्य की स्थापनाकी पहली सीढ़ी पर पहुंचाया मात्रहै । विगत सन १९२० ई० में स्वर्गीय महात्मा गांधीके नतृत्वमें हमने इस उद्देश्य की प्राप्तिके लिये संघर्ष प्रारम्भ किया था । किन्तु अभी तक हमको पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त हो सकी है । स्वाधीनता-प्राप्ति तो एक कदमकी पैमाइश है । हम और आगे बढ़ने वाले हैं । कुछ लोग यह कहने लगे हैं कि अब कांग्रेस वह कांग्रेस नहीं रही, उसने जनताका, मजलूमोंका हाथ छोड़ दिया । पर यह सही नहीं है । कांग्रेस-जनोंको हमारी बुनियाद सदा याद रखनी चाहिये । जिस नींव पर कांग्रेस और हम टिके हुए हैं वह है जन-हितार्थ-क्रांति । कांग्रेस-जन यह कभी नहीं भूलें कि कांग्रेस जनताकी एक क्रांतिकारिणी संस्था है और वे लोगोंको कदापि यह कहनेका अवसर नहीं दें कि कांग्रेस 'जनता और क्रांति' से दूर चली गयी । कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओंको चाहिये कि वे जनतासे निकटतम सम्पर्क स्थापित करें और रचनात्मक कार्योंका शीघ्रता और सफलताके साथ सम्पादन करें। जन-राज्य अथवा प्रजातन्त्रकी स्थापनाके लिये भी उन्हें अपनेको और जनताको अहिंसाके आधार पर सामाजिक और आर्थिक क्रांति करनेके लिये तैयार करना है । किन्तु ऐसी क्रांतियोंमें जनताके बहुमत का सहयोग होना आवश्यक है । जब तक बहुमत इसको समर्थित नहीं करेगा तब तक हिंसा के प्रयुक्त होनेकी आशंका बनी रहेगी यह कांग्रेस-जनोंका कर्त्तव्य है कि वे जनता को समझावें कि किस प्रकार इस दिशामें आगे बढ़ना चाहिये । कुछ लोग महात्मा गांधीके नामका सहारा लेकर ऐसे कार्य करते हैं, जो महात्माजीके सिद्धांतोंके सर्वथा विरुद्ध हैं । यह महात्मा गांधीके प्रति

बड़े बड़ी बेईमानी। स्वर्गीय बापू जो स्वप्न देखा करते थे, वह अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है। किन्तु उसकी प्राप्ति के लिये निःस्वार्थ सेवा-भाव और महत बलिदानोंकी आवश्यकता है। कांग्रेसजनोंको इस पथ पर अग्रसर होनेके पहले आत्मोत्सर्गके लिये सन्नद्ध होना पड़ेगा। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि आज भारतको जो स्वाधीनता प्राप्त हुई है, वह कांग्रेसके अनवरत बलिदानोंका प्रतिफल है। कोटि-कोटि भारतीयजनोंके सहयोगसे कांग्रेस ने देशको स्वाधीनता दिलायी है। फलतः आज कांग्रेस शक्ति-प्राप्त है। उसके हाथ में भारतका शासनसूत्र है। यह बुरा नहीं है। शक्ति की परम आवश्यकता है। राष्ट्र की आवश्यक सेवा करने के लिये, शासन-शक्ति ही कांग्रेस को उपयुक्त माध्यमका पद प्रदान करेगी। किन्तु एकाकी सरकार ही सभी वर्तमान समस्याओंका समाधान नहीं कर सकेगी। वैसे सरकारको भी अपने सारे प्रसाधनोंको इस कार्यमें लगा देना चाहिये। फिर भी जनता सर्वोपरि है। प्रत्येक नागरिकका एक निश्चित कर्त्तव्य है। अतः अपने महत्व और कर्त्तव्यके कारण, प्रत्येक नागरिक इस दिशामें एक निश्चित समाधान लेकर बढ़े। प्रजातन्त्रका अर्थ ही यही है कि प्रत्येक नागरिक सोचे और अमल करे। राष्ट्रीय संकट-कालमें देशके प्रत्येक स्त्री-पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह कुछ-न-कुछ जरूर करे। जब तक समग्र राष्ट्र सेवा-शक्ति एवं कार्य-शक्ति नहीं अपनायेगा तब तक राष्ट्रीय संकट का सामना कैसे किया जा सकता है? प्रजातन्त्रमें इसी का प्रबल महत्व है और इसीकी आवश्यकता है। हैदराबादके निजामने हमारी शांति भंग कर दी है। भारत सरकारने निजामसे समझौता करनेकी सभी संभव चेष्टायें कर डालीं। कितने दिन तक इधरसे समझौता वार्त्ता चलाया गया। शांति और सहयोगसे मिलकर रहनेके लिये भारतीय नेताओंने निजामको बार-बार परामर्श दिया। पर सभी व्यर्थ। आज जो हैदराबादमें भारतीय सेनाएं भेजी गयी हैं, सो रजाकारोंकी साम्प्रदायिक भयंकरताने हैदराबादकी जनताको बर्बाद कर डाला है। उस रक्तलोलुप और लोमहर्षक महानीचताके शिकार हजारों निरीह बाशिन्दे हो चुके हैं। लूट, हत्या, बलात्कार और अग्निकाण्ड इत्तिहादुलमुसलमीन और रजाकारोंकी आराइश बन चुकी है। अतः भारत सरकारने देखा कि यदि उसने हैदराबाद पर कड़ी नजर नहीं डाली तो, मामला हाथसे निकल जायेगा और रियासतके एक-एक नागरिकको अकारण मौतके हवाले होना पड़ेगा। इन्हीं मजबूरियोंसे प्रेरित होकर भारत सरकारने हैदराबादमें अपनी सेनाओंका मार्च करा दिया है। इसके पीछे केवल एकमात्र यही उद्देश्य है कि रियासत में शांति, सुरक्षा और सुव्यवस्था कायम हो। जब तक हैदराबाद और काश्मीर की समस्याओंका समाधान नहीं हो जाता, तब तक कहा नहीं जा सकता है कि भारत और पाकिस्तानका सम्बन्ध कैसा रहेगा। कांग्रेसने प्रारम्भसे ही अविभक्त भारतकी स्वाधीनताके लिये अंगरेजोंसे संघर्ष करना शुरू किया था। भारतकी अविछिन्नता कांग्रेसको सदासे प्रिय रही है। किन्तु परिस्थितियोंसे विवश होकर कांग्रेसको भारत का विभाजन स्वीकृत करना पड़ा। कांग्रेस ने यही सोचा कि चाहे जैसे भी हो, जनता को शांतिपूर्वक जीवन-यापनका मौका मिले। यह कदापि नहीं सोचा गया था कि हिंदुस्थानमें केवल हिन्दू रहेंगे और पाकिस्तानमें केवल मुसलमान। किन्तु होना कुछ दूसरा था। शांति नहीं आयी हैदराबादमें रजाकारोंकी साम्प्रदायिक संस्था ने और काश्मीरमें कबाइली और पाकिस्तानी आक्रमणकारियोंने विनाशलीला मचा रखी है। काश्मीरमें तो एक प्रकारसे युद्धकी अघोषित स्थिति पैदा हो गयी है। कबाइलियोंकी इतनी शक्ति नहीं थी कि वे बिना पाकिस्तानकी सहायताके ऐसा उत्पात मचाते। अतः हमने जो यह सोचा था कि देशके विभाजनके बाद शांतिका आगमन होगा सो नहीं हो सका। इसके अतिरिक्त और भी दूसरी समस्याएं हमारे सामने उपस्थित हैं। इनमें शरणार्थी, खाद्यान्न वस्त्र, उत्तम निवास स्थान डाक्टरी और शिक्षा-सम्बन्धी सुविधायें प्रमुख हैं। जब तक इन समस्याओंका संतोषप्रद समाधान नहीं हो जाता और लोग सुखी नहीं हो जाते तब तक हम देशमें किसान-मजदूर और प्रजा-राज्य की स्थापनाकी बात सोच भी नहीं सकते हैं। जब कारोंके प्रति पूर्णरूपेण जागरूक नहीं हो जाती तब तक केवल मुट्ठी भर स्वार्थी लोग उसे मूर्ख बना कर शोषण करते ही जायेंगे। कुछ लोग किसानों और मजदूरोंकी भलाई करने के नाम पर धोखेबाजी करते हैं और अपनी डिक्टेटरशिप कायम करते हैं? स्वर्गीय महात्मा गांधी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा दूसरे कांग्रेस नेता वास्तविक प्रजातन्त्रके समर्थक हैं। जब नेताओंके विचारानुसार प्रजातन्त्र स्थापित हो जायेगा तभी देशमें शांतिका आगमन होगा। अतः प्रत्येक नागरिकको प्रजातन्त्रीय दृष्टिकोणोंसे ही समस्याओं पर सोचना चाहिये। एक और भयंकरता हमारा विनाश कर रही है। वह है भ्रष्टाचार। चोरबाजारी नफाखोरी और घसखोरीके भीषण शिकंजेने गरीब जनता का गला दबा दिया है। इसकी विभीषिका पराकाष्ठाको पहुंच चुकी। अतः इस महारोग भ्रष्टाचारको उन्मूलित करनेके लिये जनतामें सर्वत्र सहयोग स्थापित होना चाहिये। यदि और अधिक दिनों तक उन्हें हाथ-पैर पसारने दिया गया तो न सरकार और न कांग्रेस ही इनके महानाशक कुप्रभावको रोक सकेंगी। अतः जनता और सरकार दोनों ही इस दिशामें एक साथ आगे बढ़ें। अन्तमें एक और आवश्यक और नैतिक कर्त्तव्यकी ओर ध्यान देनेकी आवश्यकता है। वह 'गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधि' के लिये शीघ्र और पर्याप्त अर्थ-संग्रह करना। आगामी अक्तूबर मास में "गांधी जयंती सप्ताह" मनाया जायगा। उस समय यह कार्य अवश्य होना चाहिये। यह अतीव दुखका विषय है कि 'गांधी-कोष' के लिये ३० करोड़ रुपया निश्चित किया गया था, किन्तु अब तक केवल ८० लाख रुपया ही मिला है। यदि हम महात्मा गांधीको राष्ट्र-पिता कहते हैं, तो उदारतापूर्वक गांधी-कोषमें दान दें।

फैंसी सिल्क साड़ी
२) पेशगी आर्डर के साथ
बाकी वी·पी·से थोक
व्यापारियों को
खास सुभीता
आकर्षक
व कलापूर्ण डिजाइन
४ इंच चौड़ा बार्डर
कीमत नं० ७ - ८ - ९
रु० १८) २३) २८
रमाकांत इंडस्ट्रीज · जूही कानपुर

बर्मा का गृह-युद्ध

श्री राघवेन्द्र

बर्माके सशस्त्र विद्रोहको अब विद्रोह न कह कर 'गृह युद्ध' कहना चाहिए, क्यों कि बर्मा-सरकारकी जल, थल और हवाई सेनाओंके बहुतसे सैनिक विद्रोहियों से जा मिले हैं और दोनों पक्षोंके बीच विभिन्न मोर्चों पर खूब जम कर लड़ाई हो रही है। और, जिन प्रदेशों पर विद्रोहियोंने कब्जा कर लिया है, पता चलता है कि, वहांकी जनता भी विद्रोहमें सक्रिय सहयोग दे रही है। इस तरह स्पष्ट है कि स्वतंत्रता मिलते ही अभागा बर्मा दूसरा चीन बन गया है।

आखिर स्वराज्य मिल जाने पर, यह 'गृह-युद्ध' क्यों और कैसे छिड़ गया। इस प्रश्नका उत्तर पाने अथवा यों कहें कि वहांकी वर्तमान स्थितिकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए बर्मी राजनीतिकी पृष्ठ भूमि पर कुछ प्रकाश डालना आवश्यक होगा। वर्तमानमें बर्मा-सरकारके जो सदस्य हैं, उनमेंसे अधिकांश युवक सोशलिस्ट हैं, जो युद्धके पूर्व परस्पर इस प्रश्न पर मतभेद रखते थे कि जापानियोंके साथ सहयोग किया जाय या नहीं। लेकिन इन सोशलिस्टोंमें कुछने यदि आरम्भ में जापानियोंकी मदद की थी, तो साथही यह भी सच है कि बादमें जापानियोंको निकाल बाहर करनेमें भी उन्होंने मदद की। लेकिन आज जो विद्रोह किये हुए हैं, वे आदिसे अन्ततक जापानियों से लड़ते ही रहे।

हां, तो जापानियोंके खिलाफ लड़ते समय तो विभिन्न वाम पंथी दलोंमें एकता हो गयी थी, लेकिन जापानियोंके पराजित हो जाने और युद्ध बन्द हो जानेपर फिर धीरे-धीरे मतभेद जाग्रत होने लगा इस सवाल पर कि अंग्रेज शासकोंको किस तरह हटाया जाय। लाल-झंडावाले कम्यूनिस्ट, जो ट्राटस्कीके अनुयायी हैं इस बात पर जोर देते थे कि अंग्रेजी हुकूमतके खिलाफ तत्काल सशस्त्र विद्रोह छेड़ दिया जाय। चूंकि जापानी काफी शस्त्रास्त्र छोड़ गये थे, इस लिए अंग्रेजोंके खिलाफ लड़नेके लिए अपने पास शस्त्रास्त्रों की कमी भी नहीं देख रहे थे। और, अराकानके अंचलमें उन्होंने विद्रोह शुरू भी कर दिया था। लेकिन सफेद झंडा कम्यूनिस्ट, फासिस्ट-विरोधीजन-स्वतंत्र संघ (एण्टी-फासिस्ट पीपुल्स फ्रीडम लीग) और उसके नेता जनरल अंग सानके सहयोगसे ही अंग्रेजोंके खिलाफ यह विद्रोह करना चाहते थे। इस तरह स्पष्ट है कि उस समय युवक नेता अंग सान दो ओरके खिचावमें पड़े हुए थे— एक ओर सफेद-झंडा वाले कम्यूनिस्ट और दूसरी ओर अंग्रेज। कहना नहीं होगा, ब्रिटिश कूटनीतिज्ञोंके खतरको

श्रीमती विजय लक्ष्मीका गत रविवारको दिल्ली हवाई अड्डेपर पहुंचनेपर इंदिरा गांधीके द्वितीय पुत्रने स्वागत किया।

भली भांति पहचान लिया। उन्होंने महसूस किया कि यदि अंगसान और कम्यूनिस्टोंमें कोई समझौता होगा, तो भावी महायुद्धमें पश्चिमी राष्ट्रोंका मोर्चा बहुत कमजोर पड़ जायेगा और तब समस्त दक्षिण-पूर्वी एशिया सोवियट रूसका प्रभाव क्षेत्र बन जायेगा। इसीसे, ब्रिटिश सरकारने बर्माको तुरंत स्वतंत्रता देना स्वीकार कर लिया। लेकिन इसके बदले में ब्रिटेनने कुछ आर्थिक और फौजी सुविधाएं भी ली, क्योंकि भय था कि ऐसा न होने पर स्वतंत्र बर्माके विभिन्न विरोधी दल अपने विरोध मिटा लेंगे और तब बर्मा ब्रिटिश-अमेरिकन गुटमें न रह कर सोवियट रूससे हाथ मिलाने लगेगा।

ब्रिटेनमें आर्थिक सुविधाएं इस आधार पर कि बर्माकी चीजोंका निर्यात मुख्यतः पश्चिमी यूरोपके देशोंको ही होता है और फौजी सुविधाओंका आधार यह था कि दक्षिण-पूर्वी एशियामें ब्रिटेन और अमेरिकाके जो हित हैं, उनकी रक्षाके लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि बर्माके साथ फौजी संधि रहे। इस संधिके अनुसार तय हुआ कि बर्माकी फौजोंकी ट्रेनिंग अंग्रेज अफसरोंकी देख-भालमें होगी। लेकिन कम्यूनिस्टों पर इस संधिका बड़ा ही बुरा असर पड़ा। उन्होंने यह अनुभव किया कि इनसुविधाओंका यह स्पष्ट अर्थ है कि यदि तीसरा महायुद्ध छिड़ा तो बर्माको ब्रिटिश अमेरिकन गुटमें शामिल होकर सोवियट रूसके खिलाफ लड़नेके लिए मजबूर होना पड़ेगा। बस, उन्होंने यह जोरदार प्रचार शुरू किया कि यह 'स्वराज्य मिल जाने' पर भी बर्माकी स्थिति एक ब्रिटिश उपनिवेशमें अधिक कुछ भी नहीं है। जनरल अंग-बढ़ते हुए प्रभावको देख कर थाकिन नू की सरकारने बहुत कोशिश की कि सभी वामपक्षी दलोंमें एकता कायम हो जाय और स्वतंत्र बर्मा शांति पूर्वक अपनी विविध रचनात्मक और विकासात्मक योजनाओंको अग्रसर करे। सरकारकी ओरसे भी जमींदारी प्रथा तोड़ देनेकी भी घोषणा की गयी और इसके लिए एक बिल सितम्बरमें पेश करनेका निश्चय किया गया। लेकिन कम्यूनिस्टों पर इसका कोई खास असर नहीं पड़ा और धीरे-धीरे लाल झंडावाले और सफेद झंडावाले दोनोंही विद्रोहके सम्बन्ध में परस्पर निकट होते गये। ऐसे समय कलकत्तेमें भारतकी कम्यूनिस्ट पार्टीका अधिवेशन हुआ, जिसमें कम्यूनिस्ट पार्टीका नेतृत्व श्री पी० सी० जोशी के हाथसे निकल श्री रणदिवेके हाथोंमें चला गया। यहां यह बता देना उचित है कि उक्त अधिवेशनमें श्री जोशीके नरम विचारोंकी कटु आलोचनाएं की गयीं और यह निश्चय किया गया कि दक्षिण-पूर्वी एशियामें ब्रिटिश अमेरिकन प्रभावको नष्ट करनेके लिए एक मजबूत योजना बनानी चाहिए। अधिवेशनमें बर्मा एवं कुछ अन्य देशोंके प्रतिनिधि थे। बर्मी प्रतिनिधियोंको साफ कहा गया कि सोशलिस्टोंसे सहयोग करके उन्होंने बड़ी गलती की है। निस्सन्देह बर्माके कम्यूनिस्टों पर कलकत्ता-अधिवेशनका का काफी असर पड़ा और बर्मी कम्यूनिस्टोंने सशस्त्र विद्रोह छेड़नेका निश्चय किया। सौभाग्यसे इसके लिए उन्हें अनुकूल मौका भी मिल गया। चीनमें कम्यूनिस्टोंकी निरन्तर विजयने उन्हें अत्यधिक उत्साह दिया। उधर भी विद्रोहकी आग धधक उठी। फिर ऐसी स्थितिसे लाभ न उठानेकी गलती भला बर्माके कम्यूनिस्ट क्यों करते। यही इस गृह-युद्धकी पृष्ठभूमि है।

अब इस गृह-युद्धकी स्थिति यह है कि कई महत्वपूर्ण शहरों पर विद्रोहियोंने अधिकार जमा लिया है, जिनमें एक थोंगवा है, जो इरावदी डेल्टा पर बर्माकी राजधानी रंगूनसे कुल ३० मीलकी दूरी पर है। थाटन और मौलमीन नामक नगरों पर भी उनका कब्जा हो गया है। ये दोनों नगर रंगूनके पूर्वमें हैं, पिछले चन्द दिनोंके भीतर जो खबरें मिलीं हैं, उनसे यह स्पष्ट हो जाता है बर्मा सरकारकी फौजोंको विद्रोहियोंका दमन करनेमें बड़ी कठिनाइयां हो रही हैं और अबतकके परिणामोंसे यह आसार नजर यह नहीं आता कि यह गृह-युद्ध निकट भविष्यमें समाप्त होने जा रहा है।

कहना नहीं होगा कि ब्रिटिश अधिकारी बड़ी गंभीरता पूर्वक बर्माकी स्थिति देख रहे हैं। और, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि स्थिति अधिक बिगड़नेके पूर्व ब्रिटेन आवश्यक फौजी सहायता पहुंचानेमें विलम्ब नहीं करेगा, क्योंकि, इसमें स्वयं उसका ही हित है। लेकिन जो हो, मलायाके बाद बर्माका यह गृह युद्ध ब्रिटेन और अमेरिका के लिए अत्यन्त चिन्ताका कारण बन गया है। उधर चीनकी भी हालत अच्छी नहीं है। खबर है कि उत्तर-पश्चिमी चीन के सिंकि आंग प्रांत पर एक रूसी फौजी दस्तेने आक्रमण कर दिया है। अधिकारी तौर पर इस रिपोर्टकी पुष्टि नहीं हुई है। लेकिन यह तो सर्वविदित है कि चीनमें कम्यूनिस्टकी विजयने राष्ट्री सरकारकी स्थिति अत्यन्त डांवाडोल बना दी है। इस तरह हम देखते हैं कि सुदूरपूर्वमें तीसरे महायुद्धकी पृष्ठभूमिमें बड़ी तेजीसे तैयार हो रही है। चूंकि ये सारी घटनाएं भारतकी सरहद पर हो रही हैं और सुदूरपूर्वके देशोंमें राजनीतिक और भौगोलिक, दोनोंही दृष्टियोंसे भारतका एक महत्व पूर्ण स्थान है, इस लिए निस्सन्देह भारत चीनके बाद अपने पड़ोसी बर्माके इस गृह-युद्धको बड़ी गंभीर दृष्टिसे देखता है, क्योंकि भारत और भारतीय राजनीति पर इसकी प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया हुए बिना नहीं रह सकती।

बीकानेर कांग्रेस कमेटीके विरुद्ध षडयंत्र

(हमारे विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

बीकानेर जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा चुनाव का बहिष्कार कर देने पर अबतक समस्त प्रगतिशील संस्थाओंने चुनावका बहिष्कार कर दिया है और कांग्रेसी मंत्रियोंने त्यागपत्र दे दिए लेकिन एक सप्ताह बीत जाने पर भी अबतक इस्तीफे स्वीकार नहीं किए गए हैं। अगर चुनाव हुआ तो हालतको देखते हुए सिर्फ जागीरदारों, सरकारी गुर्गों व मुसलमानोंके ही वोट पड़ेंगे लेकिन कांग्रेस भी इस अवसर पर पोलिंग स्टेशनों पर धरना देनेकी तैयारी कर रही है। इन चुनावोंको ध्यानमें रखकर प्रजा परिषद (कांग्रेस) की ताकतको घटानेके लिए बीकानेर राज्यमें २१ जून ४८ को 'लोकपरिषद' नामक एक संस्था स्थापित की गई थी जिसे राज घरानेसे हर तरहकी सहायता प्राप्त बताई जाती है। इस 'लोकपरिषद' के अकेले गंगानगर के एक बैंकमें पचास हजार रुपए जमा है तथा इसके सदस्य बनाते समय चवन्नी भी नहीं ली जाती। इसके पर्चे भी सरकारी प्रेसमें बिना प्रेस लाइसेंसके छपते हैं तथा इसमें सरकारी कर्मचारी खुला भाग लेते हैं और इसकी सभाएं पुलिसके सख्त पहरेमें होती हैं। लेकिन इनकी रियासत भरमें कोई भी सभा सफलतासे नहीं हुई। १५ अगस्तकी सभामें सिर्फ ३६ आदमी थे और उसके बादकी गई सभामें किसी वकील द्वारा राष्ट्रध्वजका अपमान कर दिए जानेसे सभा भंग हो गई और फिर उनके स्टेज छोड़ कर भाग जाने पर छात्रोंने सभा की। परसों चौतीने कुए के पास एक सभा हुई। उपस्थिति १५००–२००० थी जिसमें ९९ प्रतिशत मुसलमान आए थे जो सशस्त्र थे और पुलिस का सख्त पहरा था तथा सभामें एक प्रमुख लीगी ख्यालातके फौजी के लिए दारू (शराब) भी लाई गई। सभामें कई मुसलमानोंके भी भाषण हुए जिसमें कांग्रेस राष्ट्रीय नेताओं व बीकानेरके कांग्रेसी मंत्रियोंको ओछे शब्दोंमें गालियां और निंदा की गई। राष्ट्रध्वजका भी अपमान किया गया और एक मुसलमान ने तो यहांतक कहा कि दुनियामें बहुत-से झंडे हैं जिनमें सबसे श्रेष्ठ झंडा राज्यका है इससे ऊपर कोई झंडा है तो उस पर 'मस्तान' का 'डंडा' है। शहरमें इसकी सर्वत्र चर्चा है।

राष्ट्रीय पताकाका अपमान करनेवालेको २० सालकी सजा होगी

स्मरण रहे कि परसों रातको लोकपरिषदकी सभा हुई और उसी दिन दोपहर में सरकारी लारी पर ऐलान किया कि अब राष्ट्रीय त्योहारोंमें सरकारी भवनों पर भी राष्ट्र पताका बीकानेरके झंडेके साथ लगाया जायगा। तथा राष्ट्रपताका अपमान करने वालेको २० सालकी कैद व जुर्मानेकी सजा दी जायगा।

समाजवादी पार्टी द्वारा 'लोकपरिषद' को गैर कानूनी करार देनेकी मांग

कल रातको गांधी चौकमें समाजवादी पार्टीकी एक आम सभा हुई जिसमें चुनावके बहिष्कारका समर्थन करते हुए उसे सफल बनाने पर जोर दिया गया तथा श्री सत्यनारायण पारीक व श्री बगरहट्टाने भाषण देते हुए मांग की कि 'लोक परिषद' जैसी अशांति पैदा करनेवाली संस्थाको गैरकानूनी करार दी जाये और राष्ट्र पताका का अपमान करने वाले मुसलमानको २० सालकी सजा दी जाये।

कांग्रेस वालोंको रियासत छोड़नी पड़ेगी

कांग्रेसको कुचलने व उसे शक्तिहीन बनानेके लिए खड़ी की गई 'लोक परिषद' का बड़ा जहरीला प्रचार चल रहा है। जहां 'लोक परिषद' के पास पैसेकी कमी नहीं है वहां पैसेकी कमी से कांग्रेसका प्रचार विभाग नहींके बराबर है। लोकपरिषद, जो जागीरदारों, कुछ ब्राह्मणों व १०० प्रतिशत मुसलमानोंका एक गुट है जिसका कार्यक्रम कांग्रेस व राष्ट्रके नेताओंकी खुले आम निन्दा तथा मुसलमानोंके मुहल्लों व मस्जिदोंमें जाकर राष्ट्र विरोधी प्रचार करना है। यही कारण है कि आज पाकिस्तान की सीमावर्ती रियासत बीकानेरकी राजधानी में ही खुले आम यह सुननेको मिलता है कि हम कांग्रेस व दिल्ली फिल्लीको नहीं जानते, अब तो कांग्रेसवालोंको रियासत छोड़ कर जाना पड़ेगा। इस प्रचार के असरकी प्रतिप्रतिक्रिया बहुत बुरी हो रही है। मुसलमान को कांग्रेस विरोधी बनानेमें एक राजपूत उच्च पुलिस अफसर व फौजका एक उच्च लीगी विचारोंका अफसर खूब भाग ले रहे हैं। पता चला है कि फौजके उस मुस्लिम अफसरको तनख्वाह फौजसे मिलती है लेकिन वह डेयूटी पर नहीं रहता। हालहीमें वह पाकिस्तान होकर आया है और यहां की अबलाओंकी इज्जत पर उसने सेरआम हमला किया है लेकिन अदालत भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकी। उस मुस्लिम फौजीकी बाबत जब एक फौजी अफसर ने शिकायत की तो। उसे दबा दी गई बताते हैं। यहां आम धारणा है कि अगर भारत सरकार व रियासती विभागने ध्यान नहीं दिया तो यह रियासत पांचवे कालम वालोंका एक मजबूत अड्डा बन जाएगी।

महाराजा बीकानेरकी रहस्यमय मुलाकातें

महाराजा बीकानेरने ३१ अगस्त को यहां आनेके बाद किसी कांग्रेसीसे कोई मुलाकात नहींकी सिर्फ ४ सितम्बरकी शामको तीन चार मिनिटके लिए कांग्रेसी मन्त्रियोंसे मिले तो उनसे भी गर्मागरम बात की। ५ सितम्बर को महाराजा साहब सरदार पटेल से मिलने के

लिए अपनी पत्नी व पुत्र सहित हवाई जहाजसे दिल्ली चले गये ज्ञात हुआ है कि महाराजा साहब सरदार पटेलके सामने बीकानेर का मसला रखेंगे ३१ अगस्तसे ४ सितम्बरके अपनी व कांग्रेसके पक्षको साफ करनेके लिए चौधरी कुमोराम वहरदत सिंह भी दिल्ली बीच महाराजा साहब जागीरदारों, कुछ कथितराजभक्त ब्राह्मणों व मुसलमानों व लोकपरिषद नेताओं तथा अकाली सिखों से मिले और उनकी महत्वपूर्ण व रहस्यमयी मुलाकात प्रजा परिषदके भूतपूर्व अध्यक्ष स्वामी कर्मानन्द, जो आजकल समाजवादी पार्टीमें हो गए हैं, से हुई। स्वामीजी आजकल शहरमें एक नई अफवाह फैल गई है कि महाराजा बीकानेर योरपसे वापिस बीकानेर लौटते हुए यह लिखा लाए हैं कि बीकानेर रियासतमें महाराजा साहब तीन साल तक जो भी काम करेंगे उसमें कोई अड़चन या हस्तक्षेप नहीं किया जायगा।

कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्डमें दो सदस्य बढ़ाये गये

जिन दिनों यहां प्रजापरिषद में फूट थी उन दिनों श्री गोकुल भाई भट्टके आगमनके अवसर पर कलकत्तेसे श्री तुलसी रामजी सरावगी भी यहां पधारे थे और उन्होंने इस तरफ काफी कार्य किया था तबसे अबतक निरन्तर ने कांग्रेसको मजबूत बनाने में तत्पर रहे। अबतक बीकानेर रियासतका व्यापारी वर्ग कांग्रेसके साथ नहीं था लेकिन श्री सरबा गीजी के प्रयत्नोंसे वह कमी भी दूर हो गई है और कांग्रेसको अब व्यापारियोंका सहयोग भी प्राप्त हो गया है। कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड जो संचालन समितिका भी कार्य करता है में अब दो आदमी बढ़ा कर उसकी संख्या सात कर दी गई है। अब पुराने पांच सदस्य सर्वश्री चौधरी रामचन्द्र (प्रधान) चन्दनमल बैद (मंत्री), श्री रघुवरदयाल गोइल, चौधरी कुंभराय चौधरी हरिश्चन्द्रके अलावा कलकत्तेके प्रसिद्ध व्यापारी व स्माल कोर्टके वकील श्री छोगमलजी चोपड़ा और सरदार मस्तान सिंहजी पार्लियामेंटरी बोर्डमें शामिल कर लिए गये हैं।

गवर्नर जेनरल निजी पत्र-व्यवहार

गवर्नर जेनरलके पास भेजा गया तार :—

योर एक्सिलेंसी,

गत १५ सितंबरको मैंने आपके पास जो तार भेजा था, उसके सिलसिलेमें मैं पुनः आपको तार भेजकर निवेदन करता हूं कि आप कृपया वर्तमान गलत फहमीको दूर करने, दोनो देशोंमें (भारत और हैदराबादमें) सद्भावना पूर्ण वातावरण की सृष्टि करने और गत जूनमें हुए वार्तालाप के अवसर पर मेरे द्वारा पेश कीगयी शर्तोंको स्वीकृत करनेके लिये अपनी सरकारको अपने व्यक्तित्वसे प्रभावित करें। आप ऐसी चेष्टा करें जिसमें हैदराबादके दृष्टि कोणोंको भारत सरकार गुंजाइशके लिये स्थान दे सके और इस पुकारमें आप मिलकर अपनी शक्ति भर अपने - अपने देशोंकी जनताकी भलाई करनेकी चेष्टा करेंगे। मैं हृदयसे विश्वासे करता हूं कि आप मेरी प्रार्थना पर गंभीरता के साथ विचार करेंगे और हमारी तथा भारतकी सरकारोंके बीच पुराने सद्भावना पूर्ण संबंधमें किसी प्रकारकी कटुता नहीं आने देंगे और अवांछनीय घटनाओंको भी नहीं जन्म लेने देंगे।

आपका
निजाम

हिजएक्सिलेंसी गवर्नर जेनरलने १० सितंबरको उपरोक्त तारका उत्तर भेज दिया, जिसकी नकल नीचे है :—

योर हाइनेस

गत ९ सितंबरको जो आपने तार भेजा, उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं। तारमें आपने पुनः मुझे राय दी है कि सद्भावना पूर्ण एवं समझौतेका वातावरण तैयार करने की यथा शक्ति चेष्टा करूं जिसमें मैं और आप मिलकर व्यक्तिगत रूपसे भारत एवं हैदराबादकी का कल्याण करें। मैं ३१ अगस्तको मैंने आपको जो पत्र भेजा था, उसमें मैंने आपको स्पष्ट बतादिया था कि आज हैदराबादकी सारी कठिनाइयोंकी जड़ में जो सबसे बड़ा और भयंकर कारण बैठा हुआ है, वह है वहांके नागरिकोंकी जान और मालका भयंकर खतरोंसे घिर जाना। जनता अपनेको क्षण - क्षणमें अरक्षित महसूस कररही है। मैंने आपको परामर्श भी दिया था कि आप अपनी ओरसे निजी तौर पर रजाकारों पर रोकलगा दें और रियासतकी शांति सुरक्षाके लिये पर्याप्त भारतीय सैनिक दस्तोंको अपने यहां निमंत्रित करें और उन्हें सिकंदराबादमें तैनात होने दें। इससे हैदराबादके बाहर भीतर के लोगोंके मनमें विश्वास होजाता कि रियासतमें पुनः जान मालकी रक्षा एवं शांति वापस आगयी। इस प्रकार हमारी आपकी मित्रताका श्री गणेश भी होजाता। इसके अतिरिक्त वहांकी जनताकी रक्षाका दूसरा उपाय नहीं देख रहा हूं। किंतु आपकी नजर कुछ दूसरी दिखायी देरही है। आप समझते हैं कि मैं आपको बर्बाद होनेकी राय देरहा हूं। गत ५ सितंबरको आपने लिखा है कि हैदराबादकी नागरिकता को कोई खतरा नहीं है तथा सिकंदराबादमें भारतीय सेनाओंको जाने देनेका प्रश्न व्यर्थ है। इसका उत्तर आपको पहलेही मिलचुका है। मैं बता चुका हूं कि यदि आप मेरी बात नहीं मानेंगे तो शायदआप जनताकी भलाईवाले कार्य में सफल नहीं होंगे। मैं पुनः कहता हूं कि जनताकी जान और मालकी रक्षा जरूरी है। अतः सिकंदराबादमें भारतीय सेनायें जायंगी। यदि आप मजबूर करेंगे तो बुरे परिणाम पैदा होंगे।

आपका

गवर्नर जनरल

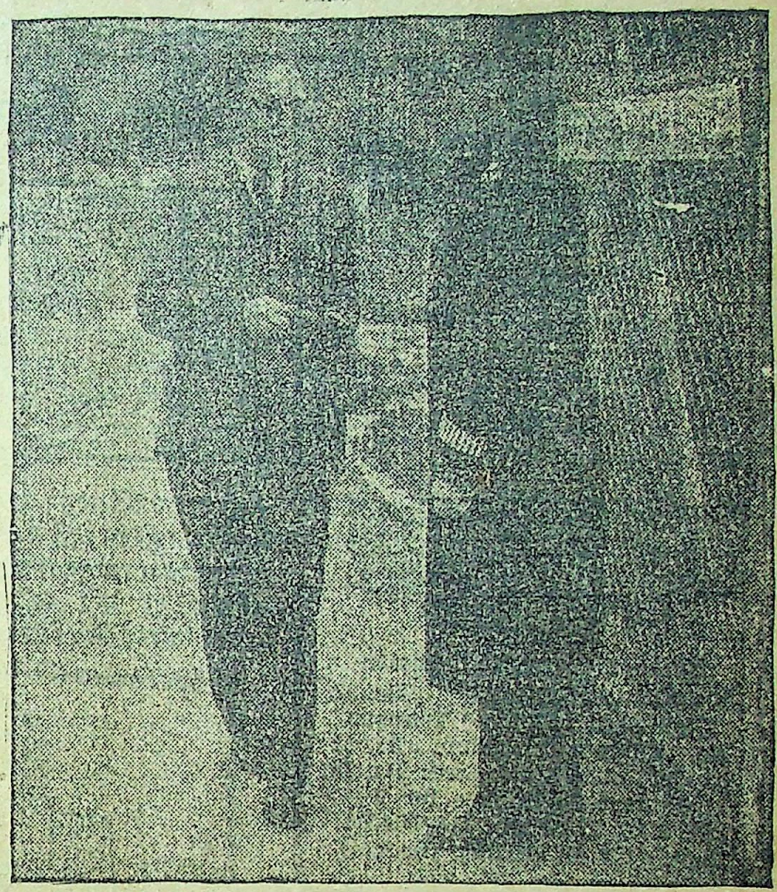

ब्रिटेनके अणु-विशेषज्ञ सर जॉन काकक्रॉफ्ट हारवेलके परमाणु-अनुसन्धानशाला के प्रवेशद्वारपर अपना परिचय-पत्र दिखा रहे हैं।

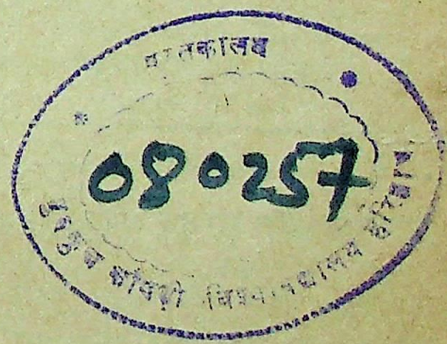

ब्रिटेनके एयर-मार्शल सर आर्थर टेडर फील्ड-मार्शल मान्टगोमरी से

Regd. No. C 2229.

Orient's Quality Watches
EACH GUARANTEED 3 YEARS

Roskopf 'LEVER' Round
No. 31 Nickel Silver Rs. 26
No. 33 White Chromium Rs. 29
High Class 'LEVER' Round
No. 43 White Chromium Rs. 55
No. 45 Rolled Gold Case Rs. 75

Roskopf 'LEVER' Tonneau
No. 39 Nickel Silver Rs. 38
High Class 'LEVER' Tonneau
No. 47 White Chromium Rs. 57
No. 50 Rolled Gold Case Rs. 72
Postage Re. 1 free for 2
ORIENT WATCH SYNDICATE
Dept. (14) DUMDUM, (Bengal)

मुफ्त सरल सर्प विष चिकित्सा। साँप, बिच्छू, कुत्ता, सियार, चूहा, कीट-पतंग, संखिया, अफीम, पारा आदि की सरल चिकित्सा की पुस्तक सिर्फ तीन माह तक मुफ्त बाँटी जायगी। दो आने के डाक टिकट साथ में भेजें।

हिमालिया केमिकल वर्क्स
पोष्ट ब० नं० ११४०५ कलकत्ता, ६।

सस्ती और सुन्दर पुस्तकें—

सिलाई कटाई विज्ञान—हर प्रकार के कपड़े काटना और सीना सिखाया गया है। मूल्य १।।।=)

फिल्मी जलतरंग—नए एवं पुराने फिल्मोंके चुने हुए गानोंका संग्रह मूल्य १।=)

फिल्मी अप्सरायें—५० फिल्मी अभिनेत्रियोंके मनोहर चित्र एवं जीवनी : मूल्य २।=)

चित्रमय रजतपट—३६ प्रमुख अभिनेत्रियोंके तिरंगे चित्रोंका एलबम मूल्य ३।।)

अनिल कम्पनी, फुलट्टी, आगरा

वह व्यक्ति जिसका चेहरा भाग्य निर्णायक था।

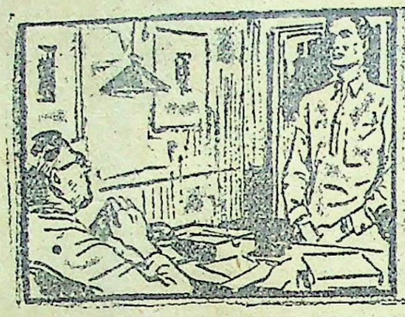

(१) एक पत्र-संपादकने एक नये संवाददाताकी नियुक्तिके लिये अनेक प्रार्थियोंसे साक्षात किया। मोहनको जो एक सुदृढ़ युवक था, दो अन्य व्यक्तियोंके साथ अन्तिम निर्णयके लिये फिर बुलाया गया

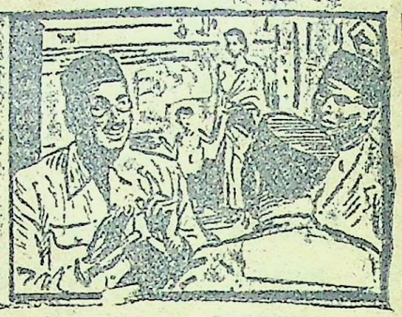

(२) संपादकने तीनोंकी योग्यताका पुनः विचार किया और मोहनकी बेलकर विशेषरूपसे प्रभावित हुआ। उसने कहा, "मुझको उसकी आकृति पसन्द है और मुझे आश्चर्य है..."

(३) संपादकको इसी बातपर आश्चर्य हुआ कि मोहन कैसे इतनी साफ हजामत बनवा सकता है। उसने अपने मनमें कहा "मैं कल उससे जरूर पूछूंगा।"

(४) मोहनने सम्पादकको 'सेवन ओ क्लाक' ब्लेडोंके बारेमें बताया। उसने कहा कि मैं इनसे कई सप्ताहोंतक अच्छी हजामत बना लेता हूं। संपादकने इसपर कहा 'तुमको काम भी मिल गया। तुम बहाल कर लिये गये।'

* मोहनकी सफलताका रहस्य "सेवन ओ क्लाक" ब्लेड्स थे। "सेवन ओ क्लाक" ब्लेडोंसे हजामत बनाकर आप प्रभाव डाल सकते हैं। ये अत्यन्त तीक्ष्ण धारवाले और बाजारमें सर्वोत्तम हैं।

'सेवन ओ क्लाक' ब्लेडसे नित्य हजामत बनायें

7 o'clock

SLOTTED BLADES

कम खर्चमें अधिकाधिक हजामत देनेवाले ब्लेड्स
१२ थानेमें १० पैकेट

७४ धरमतल्ला स्ट्रीट इलेस्ट्रेटेड इंडिया प्रेसमें गोविन्द चन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

रह और उस दिन उनके पण्डित जवा- साम्प्रदायिकताकी आड़से पू जीवाद सबको डकार जायेगा।

गांधीजीका

वज्रपात

श्री दिनकर

टूटा पहाड़-सा विषम वज्र, सब तरह हमारा ह्रास हुआ,
रोने दो, हम मर मिटे, हाय, रोने दो सत्यानाश हुआ।
है तरी भंवरके बीच, और पतवार हाथसे छूट गयी,
रोने दो हाय, अनाथ हुए, रोने दो किस्मत फूट गयी।
कैसा अभाग्य ! अपने हाथों ही हाय स्वयं हम छले गये,
यह भी न पूछ सकते, बापू ! क्यों हमें छोड़ तुम चले गये ?
पापी ! तूने क्या किया, हाय? किसपर यह दारुण वार किया
यह वज्र गिराया कहां ? हाय,किसका अकरुण संहार किया
यह देख फटी किसकी छाती? पहचान, कौन निश्चेत गिरा
किसकी किस्मतमें आग लगी?किसका उगता सौभाग्य फिरा
यह लाश मनुजकी नहीं, मनुजताके सौभाग्य-विधाता की
बापूकी अरथी नहीं, चली अरथी यह भारत माता की।
तपसे पवित्र वह देह और वह हंसी अमृत देनेवाली
चालीस कोटिकी नौका को वह एक मूर्त्ति खेनेवाली
अब नहीं मिलेगी कहीं, नयन ! दर्शनकी व्यर्थ न आस करो
बापू सचमुच ही चले गये, भोली श्रुतियो ! विश्वास करो।
बापू सचमुच ही गये, निखिल भूमण्डलका शृङ्गार गया,
बापू सचमुच ही गये, विकल मानवताका आधार गया।
बापू सचमुच ही गये जगतसे अद्भुत एक प्रकाश गया,
बापू सचमुच ही गये मृत्तिपरसे हरिका आभास गया।
किरणें समेट फिर नबी एक भूतलको कर श्री हीन चला,
फिर एक बार मोहन यसुदाको सभी भांति कर दीन चला
यह अवधपुरीके राम चले, वृन्दावनके घनश्याम चले,
सूलीपर चढ़कर चले ख्रीष्ट, गौतम प्रबुद्ध, निष्काम चले
प्यासेको शोणित पिला, तोड़ कोई अपनी जञ्जीर चला,
दानवके दंशोंपर हंसता यह स्वर्ग देशका वीर चला।
धरतीको आकुल छोड़ मनुजताको करके म्रियमाण चले
बापू दे अन्तिम बार जगतको हृदय—विदारक दान चले।
आकाश विभासित हुआ, भूमिसे हरिका लो ! अवतार चला
पृथ्वीको प्यासी छोड़ हाय, करुणाका पारावार चला।
चालीस कोटिके पिता चले, चालीस कोटिके प्राण चले,
चालीस कोटि हतभागोंकी आशा, भुजबल, अभिमान चले

यह रूह देश की चली अरे, मां की आंखों का नूर चला,
दौड़ो, दौड़ो, तज हमें हमारा बापू हम से दूर चला।
रोको, रोको, नगराज ! पन्थ, भारत माता चिल्लाती है
है जुल्म ! देश को छोड़ देश की किस्मत भागी जाती है।
अम्बर की रोको राह, बढ़ो नगराज, शून्य में जा ठहरो,
बापू यह भागे जाते हैं, चरणों को बढ़ पकड़ो—पकड़ो।
पकड़ो वे दोनों चरण, पकड़कर जिन्हें हमें सौभाग्य मिला,
पकड़ो वे दोनों चरण,जिन्हें छूकर जीवनका कुसुम खिला।
पकड़ो वे दोनों चरण, दासता जिनके सेवनसे छूटी,
पकड़ो वे दोनों पद, जिनसे आजादी की गङ्गा फूटी।
जल रहा देशका अङ्ग-अङ्ग शीतल घनको पकड़ो-पकड़ो;
भारत माता कङ्गाल हुई, जीवन धन को पकड़ो-पकड़ो।
है खड़ा चतुर्दिक काल, दासता-मोचन को पकड़ो पकड़ो,
माता खा गिरी पछाड़, भागते मोहन को पकड़ो-पकड़ो।
है बीच धार में नाव, खबर है प्रलय वायु के आने की,
थी यही घड़ी क्या हाय हमारे कर्णधार के जाने की।
दौड़ो, कोई जा कहो, नाव किस्मत की डूबी जाती है,
बापू ! लौटो, आंचल पसार भारत माता गुहराती है।
किस्मत का पट है तार-तार, हा इसे कौन सी पायेगा ?
बापू ! लौटो, यह देश तुम्हारे बिना नहीं जी पायेगा ?
अपनी विपन्नता को गाथा यह रो-रो किसे सुनायेगी ?
बापू ! लौटो, भारतमाता रो विलख-विलख मर जायेगी ?
दुनिया पूछेगी कुशल हाय, किससे क्या बात कहेंगे हम ?
बापू ! लौटो, सिर झुका ग्लानि का कैसे दाह सहेंगे हम ?
लौटो अनाथ के नाथ, देश की ईति-भीति हरनेवाले !
लौटो, हे दयानिकेत देव ! शत पाप क्षमा करनेवाले !
लौटो दुखियोंके प्राण ! निःस्वके धन ! लौटो निर्बल हम !
लौटो, वसुधा के अमृतकोष ! लौटो, भारतके गङ्गाजल !
लौटो, बापू ! हम तुम्हें मृत्यु का वरण नहीं करने देंगे
जीवनमणि का इस तरह काल को हरण नहीं करने देंगे।
लौटो, छूने दो एक बार फिर अपना चरण अभयकारी।
रोने दो पकड़ वही छाती जिसमें हमने गोली मारी।

करुणाकी सुनो पुकार, फिरो, या अपनी बांह दिये जाओ,
सन्तप्त देशको राम-सदृश हे बापू ! साथ लिये जाओ।

गाल की श्रद्धांजलि

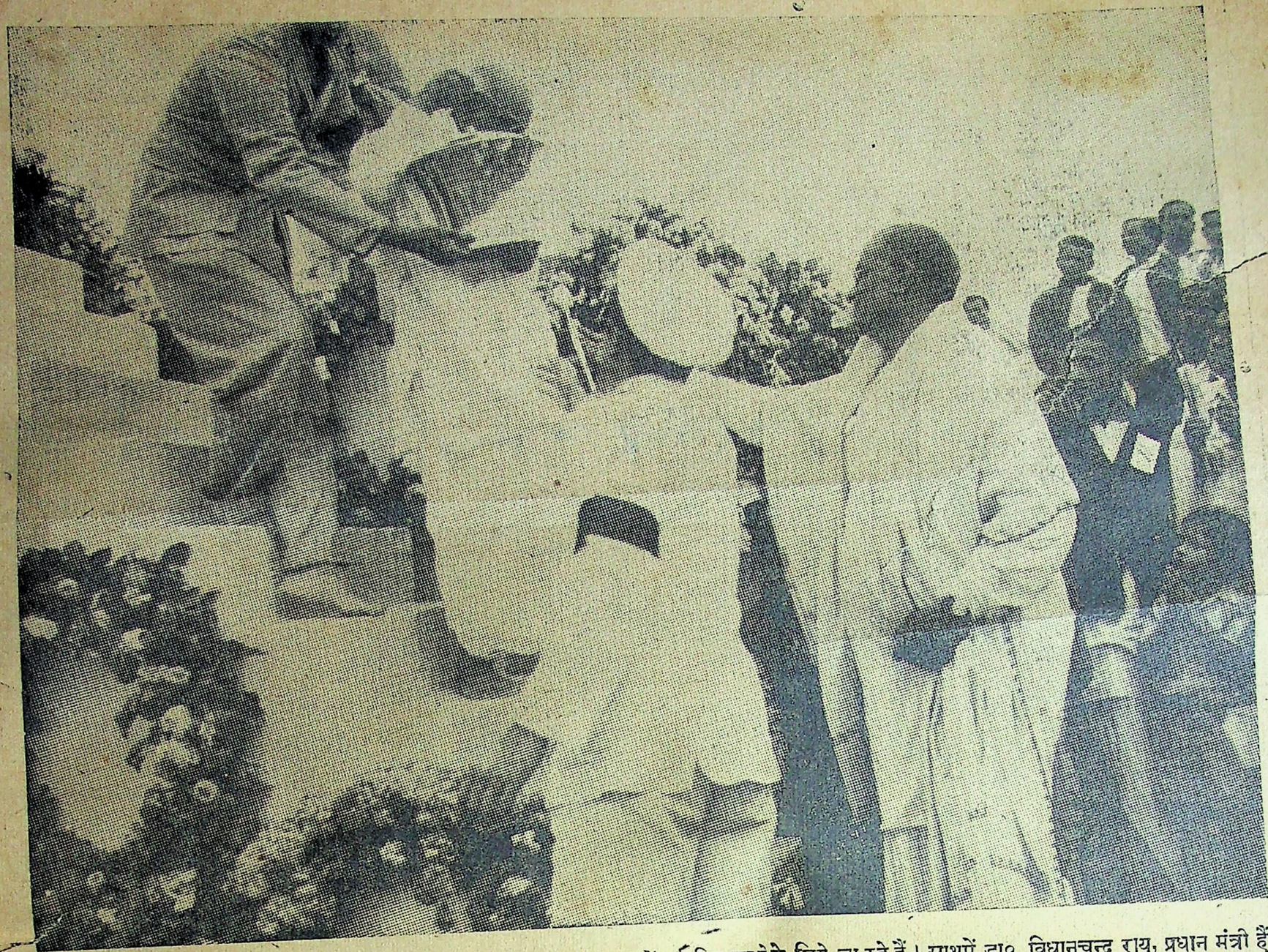

संस्कारके उपरान्त बङ्गालके गवर्नर चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य भस्मपात्रको गङ्गामें प्रवाहित करनेके लिये जा रहे हैं। साथमें डा० विधानचन्द्र राय, प्रधान मंत्री हैं।

तिन कह जग दुलभ कछु नाहीं ॥

विश्वमित्र

सम्मान और स्मारक

'पवित्र गंगा और यमुना युग युगान्तरसे अपनी गोदमें असंख्य नर नारियों की चिताभस्मको स्थान देती आ रही हैं, किन्तु भारतके इतिहास कालमें कभी पहले इतने दिव्य और गौरवशाली मानवकी चिताभस्म प्राप्त करनेका सौभाग्य गङ्गा और यमुनाको भी नहीं प्राप्त हुआ था, जिसका जीवन और मृत्यु दोनों ही श्रद्धा और अनुकरणके लिये एक अविनाशी उदाहरण हैं।' महात्मा गांधीके फूलगत १२फरवरीको त्रिवेणीके संगम पर वैदिक रीतिसे राजकीय, मानवीय और दिव्य सम्मानके साथ प्रवाहित किये गये। जो सम्मान और श्रद्धा सम्पूर्ण संसारने बापूके निधन पर प्रदर्शित की है, वह अपूर्व है। संसार में भारतका भाल हिमालयके समान उन्नत करनेवाले महात्मा गांधीके देश, उनके अनुयायियोंका यह कर्त्तव्य है कि संसारने हमारे नेताका जो सम्मान किया है उसे हम अपने कार्योंसे अक्षुण्ण रखें और यह सिद्ध करें कि हम अपने नेताका वास्तविक सम्मान करना जानते हैं। यह सिद्ध करनेके लिये उनके सम्मान और स्मृतिमें हम चाहे जितने बड़े बड़े स्मारक या स्मृति सौध खड़ा करें उनसे हम अपनेको भले ही सन्तोष दे लें किन्तु उस दिवंगत आत्माको इन मन्दिरों और भवनोंसे संतोष नहीं होगा क्योंकि ये भवन और मन्दिर गांधीजीके दिव्य संदेशके वैसे ही स्मारक मात्र रह जायंगे जैसे देशमें अन्य प्रसिद्ध से प्रसिद्ध देव स्थान, तीर्थ स्थान हैं।

हम सचमुच यदि महात्माजीकी स्मृतिको पवित्र और अक्षुण्ण रखना चाहते हैं तो उनकी जय जयकार और ईंट पत्थरोंसे बने स्मारकोंके अतिरिक्त हमें उस पथपर चलनेको अपनेको तैयार करना चाहिये और उस दिन उनके एकमात्र राज-उत्तराधिकारी पण्डित जवाहरलाल नेहरूने जिसका स्मरण कराया है। आज हमारे सामने सबसे पहला काम यह है कि हम भारतके राजनीतिक जीवनमें सहिष्णुता और सहयोगसे काम करें और जो शक्तियां भारतको महान तथा प्रगतिशील राष्ट्र बनाना चाहती हैं वे सब मिल कर काम करें। साम्प्रदायिकता और उससे भी सङ्कीर्ण प्रांतीयताका विष राष्ट्र-शरीर से तभी निकाला जा सकता है जब इसकी आड़में शिकार खेलनेवाली शक्तियोंको धराशायी किया जाये। किन्तु यह तभी सम्भव हो सकता है जब देशकी सभी शक्तियां मिलकर यमज राक्षस बंधु—साम्प्रदायिकता और पूंजीवाद—का सामना करनेको एक मोर्चा कायम करें।

गांधीजीकी मृत्यु अहमसे ऊपर उठ कर, पक्षपातसे बचकर, दूसरोंमें जो अच्छाई है उसे विशाल हृदयसे देखने और ग्रहण करनेका तथा सहिष्णुता और एकता का प्रतीक आदर्श हमारे सामने उपस्थित करती है। हमने मृत्युसे कुछ ही दिन पहले उनको एक बचन दिया था। आज केबल गांधीजीकी इच्छाको पूर्ण करनेका ही प्रश्न हमारे सामने नहीं है, राष्ट्रके वचन की मर्यादा रखनेका पवित्र उत्तरदायित्व भी हम पर है। गांधीजीके अनशनके समय देशने जो बचन दिया था उसे पूरा करना ही बापूका सबसे बड़ा सम्मान और स्मारक खड़ा करना है।

यह काम सहज नहीं है। प्रगतिविरोधी शक्तियां संगठित हो रही हैं और देशको गांधीजीके बताये मार्गसे विपथगामी करनेके लिये जबर्दस्त तैयारियोंमें लगी हैं। इस अभिशापका सामना हमारी संगठित सम्मिलित शक्ति ही कर सकती है। जिस साम्प्रदायिकता और पूंजीवादके सम्मिलित घृणित षड़यन्त्रने हमारे युगके सर्वश्रेष्ठ मानवकी हत्या की है उन्हें आज कुचल डालनेकी आवश्यकता है। वह दानव आज हर्षोन्मत्त हो रहा है, ताण्डव कर रहा है, खुशीमें मिठाइयां बाट रहा है, दान दक्षिणा दे रहा है। यदि हमारी शक्तियां अलग अलग साम्प्रदायिकताकी आड़से पूंजीवाद सबको डकार जायेगा। अतः देश सच्चे अर्थोंमें गांधीजीका सम्मान करना चाहता हैं, उनका स्मारक चिरस्थायी रखना चाहता है तो इस राष्ट्रीय संकटके समय अपने अपने तमाम सैद्धान्तिक मतभेदोंको दूर रखकर हमें पण्डित नेहरूके नेतृत्वको इतना तगड़ा बनाना होगा कि प्रतिगामी और प्रतिक्रियाशील शक्तियां सर न उठा सकें। गांधीजीके न रह जानेके बाद अब हमारी रही सही आशाएं पण्डित नेहरूपर ही हैं। समाजवादी नेता श्रीमती अरुणा आसफ अलीकी इस बातका हम पूर्णतया समर्थन करते हैं कि साम्प्रदायिकता और पूंजीवादके यमज दानव बंधुका सामना नहीं किया जा सकता, यदि तमाम प्रगतिशील शक्तियां एक सूत्रमें संगठित होकर पण्डित नेहरूका नेतृत्व मजबूत करनेको प्रस्तुत न होंगी। पण्डितजीने देशकी तमाम प्रगतिशील शक्तियोंका सहयोग आमंत्रित करते हुए यह बात स्पष्ट कर दी है कि 'गांधीजीके दिव्य संदेशके अनुसार काम करनेके लिये साम्प्रदायिकता और सब प्रकारकी संकीर्णताका सामना करना जितना आवश्यक है उतना ही महत्वपूर्ण भारतके साधारण जनकी सेवा है,—जिसके कष्ट सहन और उत्पीड़नकी अतीतकी कहानियां अकथनीय हैं—उसका स्वत्व सर्वोपरि है और उसकी उन्नतिमें बाधक अन्य प्रत्येक बातका स्थान इसके बाद आता है। नैतिक और मानवीय दृष्टिसे ही नहीं राजनीतिक हिताहित विवेककी दृष्टिसे भी साधारण जनका स्तर ऊपर उठाना और उसे प्रगतिकी तमाम सुविधाएं देना अवश्यक और वांछनीय है। जो सामाजिक व्यवस्था उसे यह सुविधा नहीं दे सकती वह स्वतः निन्दनीय है और उसे बदलना परमावश्यक है।" अतः यह स्पष्ट है कि उनके अदर्शोंसे सहमत तमाम शक्तियोंका सहयोग मिलनेसे पण्डित नेहरू नवीन भारतका निर्माण करके हमारे स्वप्नोंको सच्चा कर सकते हैं और यही बापूकी देनका सबसे बड़ा सम्मान, सबसे महान और चिरस्थायी स्मारक होगा।

हा ! सुभद्रा कुमारी—

हिन्दी जगतपर अनभ्र वज्रपात हो गया। मृत्युने नहीं अकाल मृत्युके क्रूर झोंकेने हिन्दी साहित्यके एक उज्वल प्रकाशमान दीपको बुझा दिया। कराल कालने कविता काननके सौरभ बिखेरने वाले सुन्दर सुवासित, प्रस्फुटित पुष्पको निर्दयताके साथ कुचल डाला। मोटर दुर्घटनाने श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान जैसी उच्च कोटिकी कलाकार, कवियित्री और राष्ट्रसेविकाके समाज, साहित्य और देशके लिये समर्पित जीवनको असमयमें ही समाप्त कर दिया। कितना मर्मान्तक हृदय विदारक अन्त है भावना और कल्पनाके साथ साथ त्याग और तपस्याके कर्मठ जीवनका। वे अपनी मोटरसे जबलपुरसे नागपुर जा रही थीं। सिवनी से प्रायः १२ मील दूर उनकी मोटर एक काल रूपी दरख्तसे टकरायी। गाड़ी चूर चूर हो गयी और उसके साथ साथ भारतकी— — कवियित्री जिसने हजारों लाखोंमें स्फूर्ति और चेतना, उत्साह और प्रेरणा पैदा की, स्वयं सदाके लिये सो गयीं। श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान मृत्युके समय ४३ वर्षकी थीं। वे उन कतिपय स्वनामधन्य कलाकारों और साहित्य स्रष्टाओंमें थीं जिन्होंने देशके स्वातन्त्र्य युद्धमें शामिल होनेके लिये राष्ट्र नेताके आह्वानमें सत्य, शिव और सुन्दरको देखा। १९२३ में उन्होंने झण्डा सत्याग्रहमें भाग लिया और बन्दिनी नहीं हिन्दी जगतकी वन्दनीया बनीं। तबसे प्रत्येक राष्ट्रीय आन्दोलनमें हमेशा वे आगेकी कतारमें देखी गयीं। अन्तिम स्वातन्त्र्य युद्ध १९४२ में भी वे और उनके पति ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान दोनों कारगारमें नजरबन्द रखे गये। इस तरह समाज और साहित्य की मनसा, वाचा, कर्मणा सेवा करनेवाली श्रीमती सुभद्रा कुमारीको हिन्दी साहित्यका सबसे बड़ा सम्मान—मङ्गला प्रसाद पारितोषिकके रूपमें—आजसे १२ वर्ष पूर्व महात्मा गांधीके हाथोंसे इन्दौर सम्मेलन में प्राप्त हुआ था। समाजने भी आपकी सेवाओंसे प्रभावित होकर दो बार मध्य प्रान्तकी व्यवस्थापिका परिषदकी सदस्या निर्विरोध चुना। इस प्रकारके अमूल्य जीवनका इतना मर्मान्तक अन्त ? हा हन्त ! तूने यह क्या किया !

सरदार और जयप्रकाश—

महात्मा गांधीकी मृत्यु भारतको इस बातकी चुनौती है कि वह इस राष्ट्रीय सङ्कटका सामना मानवोचित साहस, धैर्य, संयम और सहिष्णुताके साथ कर सकता है या नहीं ? बापूकी मृत्यु साम्प्रदायिकता की चुनौती है राष्ट्रीयताको, पूंजीवादकी चुनौती है देशकी तमाम प्रगतिशील शक्तियोंको। हर्षकी बात है कि देशके भाग्यकी बागडोर उस व्यक्तिके हाथोंमें है जिसका साहस और धैर्य संयम और सहिष्णुता असीम है। पण्डित जवाहरलाल नेहरूके नेतृत्वमें हम साहस और शक्तिके साथ तमाम प्रतिगामी शक्तियोंका सामना डटकर सफलतापूर्वक कर सकते हैं, यह हमारा विश्वास है। पण्डितजीने सार्वजनिक जीवनमें सहिष्णुता और सहयोगकी आवश्यकता बताते हुए इस सङ्कटके समय उन सभी शक्तियोंसे एक साथ मिलकर काम करनेकी अपील की है जो भारतको महान और समुन्नत राष्ट्र बनाना चाहती हैं। देशको इस समय सरदार पटेल और जयप्रकाश दोनोंकी शक्तियोंकी आवश्यकता है। खेदकी बात है कि हमारे कुछ सुविधावादी नेता इन सब शक्तियोंको छिन्न-भिन्न करनेका घृणित षड़यन्त्र कर रहे हैं और वे नहीं चाहते कि पण्डित नेहरूके नेतृत्वके नीचे देशकी सारी शक्तियां सङ्गठित हों। उन लोगोंने नेहरूजीके नेतृत्वको दुर्बल बनाने के लिये फट नीतिका ही सहारा लिया है—उसी घृणित उपायका अवलम्बन किया है जिसने देशमें इतने दिनोंतक विदेशी शासनको आश्रय दिया और अन्तमें देश को दो खण्डोंमें विभक्त करवाया। यह दल सरदार पटेल और जयप्रकाश दोनों को नेहरूजीसे अलग करनेके इरादेसे बड़ा कुत्सित प्रचार कर रहा है। पण्डितजीने गत सप्ताह राष्ट्रके नाम ब्राडकास्ट करते हुए इस तरहके प्रयास पर खेद प्रकट किया है और बताया है कि देशको इस तरहकी फूट डालनेवाली अफवाहों पर विश्वास न करना चाहिये। स्वभावगत या सैद्धान्तिक मतभेद गांधीजी और पण्डितजीके बीचमें कम नहीं थे। जिस तरह उन मतभेदोंके बावजूद दोनों की शक्तियां एक साथ मिलकर काम करती रहीं, उसी तरह सरदार और पण्डितके बीचमें भी मतभेद आज नहीं हमेशा ही रहे हैं फिर भी दोनों की शक्तियां एक ही दिशामें लगी रही हैं और उसीका परिणाम है कि हम आज स्वतन्त्र हो सके। किन्तु स्वार्थी, सुविधावादी और प्रतिक्रियाशील शक्तियां राष्ट्रीय सङ्कटकालको अपने लिये स्वर्ण सुयोग समझती हैं और आज यदि वे सरदार और नेहरू तथा नेहरू और जयप्रकाशके बीच संघर्ष उत्पन्न करके पण्डितजीकी शक्तिको क्षीण बनानेका प्रयत्न कर रही हों तो कोई आश्चर्य नहीं है। देशकी प्रगतिशील और खास कर समाजवादी शक्तियां इनकी चालमें न आयें और ऐसा कोई काम न करें, जिससे पण्डित नेहरूका नेतृत्व कमजोर पड़े, यही समयका तकाजा है। श्रीमती अरुणा आसफअलीका वक्तव्य बहुत ही सामयिक और दूरदर्शितापूर्ण है और हमें आशा है कि प्रतिगामी शक्तियोंकी चालों को व्यर्थ बनानेके लिये तमाम प्रगतिशील शक्तियां नेहरूजीके नेतृत्वको निस्संकोच सहयोग देना अपना कर्त्तव्य समझेंगी तभी आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समानताके आधारपर ऐसे समाजका निर्माण सम्भव होगा जिसमें मानवका मानव द्वारा शोषण असम्भव हो सकेगा।

न्यायका नाटक—

हमने सिक्यूरिटी कौंसिलके सम्बन्धमें अपने ४ फरवरीके अंकमें कहा था कि "जो होनेवाली घटनाओं और वास्तवि-

कताओंपर केवल अपने निजी स्वार्थोंको दृष्टिगत रखकर विचार करता है वह हमारी या किसीकी समस्या हल नहीं कर सकता।...मौजूदा संयुक्त राष्ट्र संघके सम्बन्धमें भी यही बात कही जा सकती है।" काश्मीरके मामलेने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया कि 'न्यायका प्रहसन' से अधिक संयुक्त राष्ट्र संघ और कुछ नहीं है। यह गोरख धन्धा है जिसे संसारके बड़े-बड़े राष्ट्रोंने अपने स्वार्थ साधनके लिये खड़ा कर रखा है। सिक्यूरिटी कौंसिलमें भारतके मामलेकी पैरवी करनेके लिये जो प्रतिनिधिमण्डल गया था वह भारत वापस आ गया है। मण्डलके नेता श्री गोपाल स्वामी आयंगरका कहना है कि कौंसिलमें काश्मीरके प्रश्नपर विचार आरम्भ होनेके समय दोनों पक्ष जहां थे आज भी वे वहीं हैं और आगे जरा भी बढ़ सकेंगे, इसकी सम्भावना नहीं है। जिस ढंगसे सिक्यूरिटी कौंसिल चल रही है उससे शीघ्र किसी परिणामकी सम्भावना नहीं है।" हमें श्री आयंगरके इस वक्तव्यसे जरा भी आश्चर्य नहीं है। आश्चर्य होता यदि उनका वक्तव्य इससे विपरीत होता। भारतीय प्रतिनिधिमण्डल भारत सरकारसे विचार परामर्श करने वापस आया है। पण्डितजीको सिक्यूरिटी कौंसिलके इस न्यायके नाटकसे बड़ी निराशा हुई है। आज वे कहते हैं कि सिक्यूरिटी कौंसिलमें बैठनेवाले राष्ट्र पावर पालिटिक्स कर रहे हैं। शेख अब्दुल्ला भी निराश होकर लौटे हैं। वे कहते हैं कि वहां तर्कके लिये कोई स्थान नहीं है। केवल अपनी अपनी शक्ति और प्रभाव बढ़ानेके दांव पेच खेलनेमें सिक्यूरिटी कौंसिलके सदस्य लगे हैं। मि० जिन्ना स्वभावतः इस स्थितिसे प्रसन्न हैं। अपनी प्रसन्नताको छिपाये रखकर वे कहते हैं कि 'काश्मीरके मामलेमें मैं कुछ नहीं कह सकता क्योंकि यह सवाल संयुक्तराष्ट्र संघके सामने है। ऐसी हालतमें कुछ कहनेसे मामला बिगड़ सकता है। बहर हाल पाकिस्तानी प्रतिनिधिमण्डल वापस नहीं आ रहा।" संयुक्तराष्ट्र संघके प्रधान स्तम्भ अमेरिका और ब्रिटेनकी नीयत इस मामलेमें साफ नहीं है। पाकिस्तान इनकी शहसे काश्मीरको हड़पना चाहता है। ब्रिटेन और अमेरिका पाकिस्तानका समर्थन इसलिये कर रहे हैं कि पाकिस्तान रूसके विरुद्ध उनका साथ देगा जब कि संघर्ष उपस्थित होनेपर भारत तटस्थ रह जा सकता है। बहरहाल काश्मीरके मामलेमें सिक्यूरिटी कौंसिलकी कार्यवाही से यह स्पष्ट है कि न्यायका नाटक दिखानेवालोंसे वास्तविक न्यायकी आशा करना व्यर्थ है। भारत सरकार इस तथ्यको समझकर अपने पैरोंपर खड़ी हो काश्मीरकी समस्या हल करनेकी शक्ति संगठित करे तभी हम पाकिस्तानके साथ साथ साम्राज्यवादी शक्तियोंके मनसूबोंको व्यर्थ कर सकेंगे। संघके कर्त्ताधर्ता स्वार्थान्धताके कारण यह नहीं समझ पा रहे हैं कि हिन्देशिया, हिन्द चीन और काश्मीरके मामले संघके कफनमें कील ठोंकनेका काम करेंगे।

हिन्दू महासभा—

हिन्दू महासभाकी कार्यसमितिने राजनीतिसे अलग रहनेका निश्चय किया है। यदि यह विवेक पहले आया होता और महासभा राजनीतिक क्षेत्रमें प्रवेश न करके सङ्गठन तथा हिन्दू जातिकी विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक समस्याओंके समाधानमें अपनी शक्ति लगाती और समानताके आधारपर हिन्दू समाजका सुदृढ़ सङ्गठन करती तो शायद आज स्वतन्त्र भारतका नकशा कुछ दूसरा ही हुआ होता। पाकिस्तानकी हिन्दू महासभाओंको इस बातकी स्वतन्त्रता दी गयी है कि वे वहांकी स्थितिके अनुकूल अपना मार्ग निर्धारित करें। भारतके स्वातन्त्र्य युद्धके इतिहास में हिन्दू महासभाने बराबर वही काम किया है जो एक प्रतिक्रियावादी स्वार्थी और सुविधावादी जमात कर सकती है। इसने बराबर कांग्रेसके मार्गमें रोड़े अटकाये और जघन्य जघन्यसे कार्य करनेमें इसने कभी संकोच या द्विधा नहीं की। इसने जो विष बीज बोया था उसका फल कितना घातक सिद्ध हुआ है, यह महात्मा गांधीकी हत्यासे स्पष्ट है। अब इस तरहके संगठनोंकी आवश्यकता नहीं रह गयी। इसे किसी रूप में बनाये रखनेका अर्थ ही है प्रतिक्रियाके गढ़को सुरक्षित रखना। जनसाधारणमें आज महासभाके प्रति जो घृणा और ग्लानिका भाव पैदा हुआ है उससे बचे रहकर किसी रूपमें उसे जीवित रखनेकी यह चाल है। वर्तमान रोषका भाव धीरे धीरे समय कम कर देगा। उस समय ढक रखा गया यह सांप फिर फनफनाता हुआ निकलेगा। इसलिये हिन्दू महासभाको किसी रूपमें जीवित रहने देना वांछनीय नहीं है और सरकार यदि इस समय अगर मगरमें पड़ी रही तो आज तो हमने गांधीजीको खोया है कल हम उनके वरदान स्वतन्त्रतासे भी हाथ धोयेंगे। इसलिये भारत सरकारको चाहिये कि वह अविलम्ब हिन्दू महासभा, मुस्लिम लीग जैसे साम्प्रदायिक सङ्गठनों को सदाके लिये अवैध करार देकर इन जीते जागते पापोंको दफना दे, इसीमें देशका हित है।

सौराष्ट्र—

काठियावाड़के प्रायः ४४० राज्य सौराष्ट्रके नामसे एक राज्यान्तर्गत समाविष्ट हो गये। भारत सरकारके राज्य सचिव सर्दार पटेलने इस नवीन राज्यका गत सप्ताह उद्घाटन किया। दर असल उन्हींके प्रयासका फल है कि काठियावाड़की ये रियासतें एक शासनसूत्रमें बंध सकीं। इन रियासतोंमें १३ बड़े राज्य थे, जिनको ब्रिटिश भारतमें सलामी वाले राज्य कहा जाता था। १०७ रियासतें ऐसी थीं जिनके शासकोंके अधिकार सीमित थे। अवशिष्ट नाममात्रके लिये ही रियासतें थीं। इस नवसंगठित राज्य सौराष्ट्रके वैधानिक प्रमुख नवानगरके जाम साहब होंगे। अब ये राज प्रमुखके नामसे परिचित होंगे। सौराष्ट्रके अन्तर्गत आनेवाला समस्त प्रदेश—जिसकी आबादी प्रायः ४० लाख है—पूर्ण उत्तरदायी सरकार द्वारा शासित होगा। राज्य भारतीय संघका सदस्य होगा और उसका विधान तैयार करनेके लिये एक विधान परिषद्का संगठन होगा। काठियावाड़के बहुसंख्यक राज्योंका एक शासनसूत्रमें वेच्छासे आबद्ध होना स्वतः एक [illegible] घटना है। आशा है कि यह नवीन [illegible] भारतकी भावी प्रगतिमें बहुत बड़ा भाग लेगा।

महात्माजीके फूल विसर्जन

महात्मा गांधीके फूल (चिताभस्म) गत सप्ताह बृहस्पतिवारको हिन्दुस्तान भरमें पवित्र समारोहके साथ सभी पवित्र नदियोंमें प्रवाहित किये गये। भारतके प्रायः सभी प्रमुख नगरों और शहरोंमें यह समारोह विधि पूर्वक सम्पन्न किया गया। फूल प्रवाहका मुख्य संस्कार तीर्थ-राज प्रयागमें हुआ जहां त्रिवेणीके संगम पर गांधीजीके तृतीय पुत्र श्री रामदास गांधी द्वारा फूल प्रवाहित किये गये। प्रायः तीस लाख नर नारी कतार बांधकर जुलूसके रास्तेमें खड़े थे और प्रवाहित करनेके समय हजारों लाखों आदमियोंने जलमें प्रवेश कर अन्तिम संस्कारको देखा। सम्पूर्ण देशमें उस दिन सब काम काज बन्द रहे। इतिहासमें ऐसी पूर्ण बन्दी पहले कभी नहीं हुई। इसदिन हिन्दुस्तान और पाकिस्तानके सब अखबार भी बन्द रहे।

सभी स्थानोंमें प्रवाहके पूर्व वैदिक रीतिका पालन किया गया। वेदमंत्रोच्चार हुआ और महात्माजीके प्रिय गीत गाये गये। सभी स्थानोंमें फूल जुलूसके साथ लाखोंकी तादादमें, सभी जातियों, धर्मों और वर्गोंके लोग शामिल हुए। सभी जगह समारोहमें लोगोंने बड़े अनुशासन और संयमके साथ काम लिया!

प्रयागमें विसर्जन संस्कार पूर्ण होनेके बाद पण्डित जवाहर लाल नेहरूने उपस्थित विराट जन समूहको सम्बोधन करते हुए कहा कि महात्मा गांधी जीवन भर जिस हिन्दू मुस्लिम एकताके लिये प्रयास करते रहे और अन्तमें जिसके लिये उन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया उसे पूरा करना हमारा आपका सबका कर्त्तव्य है।

यह भी एक अपूर्व दृश्य था। प्रवाह के पूर्व एक विशेष प्रार्थना की गयी जिसमें पण्डित जवाहर लाल नेहरू, सर्दार पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, जयराम दास दौलत राम, गोविन्द वल्लभ पन्त, डा० जीवराज मेहता और प्रान्तके अन्य मंत्री उपस्थित थे।

पश्चिम बङ्गालके गवर्नर राजाजी हुगलीमें गांधीजीकी चिताभस्म प्रवाहित कर रहे हैं

तुम्हारी इच्छाएं

(प्रो० सत्यनारायण शर्मा)

तुम्हारी इच्छा हुई, मैं अपनी अन्तर्वीणाके दो-एक तार तोड़कर भी ऐसी झङ्कार निकालूं कि रूठा हुआ प्रणय किसी की यादमें बावला हो उठे!

तुम्हारी इस इच्छाकी पूर्त्ति हुई!

तुम्हारी इच्छा हुई, मेरा अन्तर्शतदल अपनी कोमलतम पंखड़ियोंसे विलग होकर भी और ग्रीष्म-मध्याह्नका प्रचण्ड रौद्र सह कर भी अपने अस्तित्वसे पथिकोंको ऐसी सुवास प्रदान करे कि उनकी पथ-श्रान्ति क्षणोंमें तिरोहित हो जाय।

तुम्हारी इस कामनाकी भी पूर्त्ति हो गयी!

चुक जाय और प्रचण्ड झंझावात उसके अस्तित्वको सदैव विपन्न करता रहे, फिर भी संसारके मोह-तममें किसीका उसके द्वारा आलोककी प्राप्ति हो!

तुम्हारी यह चाह भी पूरी हुई!

लेकिन इन समस्त कामनाओंकी निष्ठुरता उस समय सिहर उठी जब तुमने चाहा कि तुम मुझसे बिछुड़ जाओ और तुम्हारे श्रीचरणोंके आलोकसे दूर किसी तिमिर-देशमें जा बसूं, फिर भी मेरे अन्तर्खगके पंखोंमें इतना बल रहे कि उसकी उड़ान देख-देख कर माया-मरुस्थल के विहंगम विस्मयान्वित होते रहें!

शिरीष-सुकुमार अन्तर्देवता, तुम्हारी इस निष्ठुर इच्छाकी भी पूर्त्ति होकर ही रही!

बापूका व्यक्तित्व

पण्डित जवाहर लाल नेहरू

दुर्बल काय इस छोटेसे मालीके भीतर कुछ फौलाद सी, महान ताकत थी जो किसीकी ताकतके सामने नहीं झुकती वह कितना ही बड़ा क्यों न हो। बावजूद इसके कि उनके शरीरकी बनावट में कोई आकर्षण नहीं था, टांगतक ऊपर चढ़ी धोती बांधते थे और नंगे बदन रहते थे, उनके अन्दर राजसी रोब इतना था कि दूसरे उनके सामने नतमस्तक हो जाते थे! स्वभाव और विवेक दोनों ही दृष्टियों से वे शान्त और विनम्र थे किन्तु वे शक्ति और अधिकारसे परिपूर्ण थे और यह वे जानते थे और कभी-कभी ऐसा समय भी आता था जब वे राजसी ठाटसे हुक्म जारी करते थे और उनकी तामील करनी ही पड़ती थी। उनकी शांत गम्भीर आंखें लोगोंको गिरफ्तार करके सौम्यभाव से उनके अन्तस्तलतक प्रवेश कर जाती थीं। उनकी वाणी, स्पष्ट और निर्मल सीधे हृदयतक पहुंचती थी और तत्काल वैसी ही प्रतिध्वनि हृदयसे निकल पड़ती थी। उनका स्रोता एक हो या सहस्र, वक्ता का सौन्दर्य और आकर्षण सबपर एक समान पड़ता था और प्रत्येक उपस्थित व्यक्ति उनके साथ तादात्म्यका अनुभव करता था। मन इस भावसे अलग रहता था लेकिन मनपर उनकी अपीलका असर बिलकुल न पड़ता हो, यह भी नहीं है। लेकिन मन और विवेक, यह स्पष्ट है, दूसरे नम्बरमें आते थे।

मन्त्र-मुग्ध वचन मुग्ध करनेकी यह गति और क्षमता उन्होंने वक्तृत्व अथवा लच्छेदार बाकजाल द्वारा नहीं प्राप्त की थी। वे सदा सरल भाषा बोलते थे, मर्यादा के भीतर, कभी एक शब्द अनावश्यक नहीं बोलते थे। यह उनकी केवल सचाई और व्यक्तित्व था जो सुननेवालेको प्रभावित करता था, उनमें आत्म शक्तिका जबर्दस्त कभी न खाली होनेवाला स्रोत था। शायद, उनके चारों तरफ परम्परा-गत जो ऐतिह्य बढ़ा फला और फूला वह भी अनुकूल वातावरणकी सृष्टि करने में सहायक होता था। इस परम्परासे अपरिचित, आस पासके वातावरणसे भिन्न विदेशीपर हो सकता है इस जादूका असर न पड़ता अथवा कमसे कम उस हदतक न पड़ता, तथापि गांधीजीकी अनेक विशेषताओंमें एक अत्यन्त उल्लेखनीय विशेषता यह थी कि वे विरोधियोंको जीतने या कमसे कम निरस्त्र कर देनेकी अद्भुत क्षमता रखते थे।

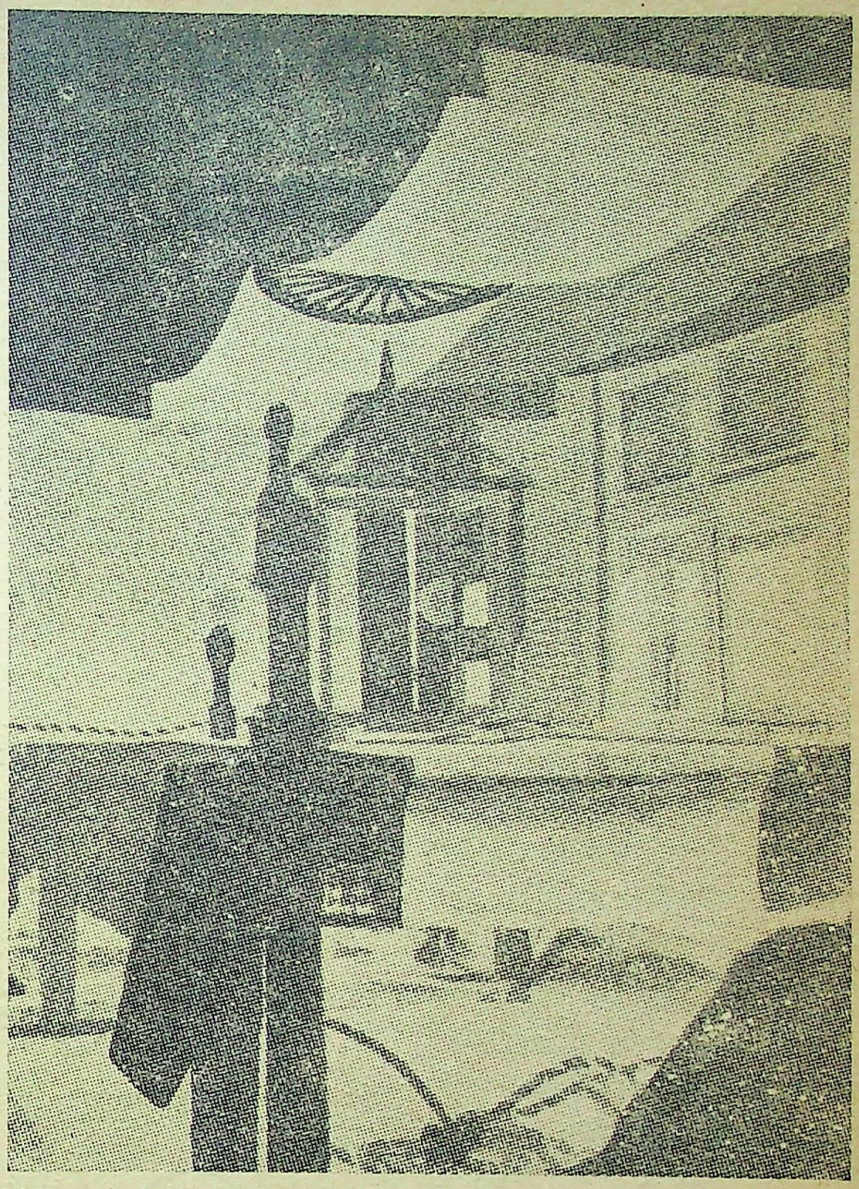

अस्थि स्पेशल का चित्र जिसे अब संग्रहालयमें सदा सुरक्षित रखा जायेगा

मानवकृत पदार्थ या पात्रोंमें सौंदर्य पहचाननेकी शक्ति कम ही थी, किन्तु प्राकृतिक सौंदर्यके वे बड़े प्रशंसक थे ताजमहल बेगारके प्रतीकसे अधिक उनकी दृष्टिमें नहीं था। उनकी घ्राण शक्ति क्षीण थी। तथापि अपने ढंगसे उन्होंने रहन सहनकी कलाका आविष्कार किया और अपने जीवनको उन्होंने कलाका प्रतीक बना दिया था। उनके प्रत्येक हाव भावका कुछ अर्थ होता था, बाहरी आडम्बरसे शून्य होते हुए भी उसमें माधुर्य और सौन्दर्य रहता था। रूक्षता, रूढ़ता, तीक्ष्णता उनमें छू न गयी थी। अशिष्टता अथवा प्रगल्भता, जिसमें अभाग्यवश हमारा मध्यमवर्ग सबसे आगे बढ़ा हुआ है, उनमें लेशमात्र नहीं थी। आत्मिक शांति प्राप्त करनेके बाद उन्होंने दूसरोंके लिये भी उसका मार्ग सुगम कर दिया और जीवन भर कण्टका-कीर्ण मार्गसे दृढ़ता और संकल्पके साथ निर्भय चलते रहे।

—o—

कारागारमें गांधीजी कब और कहां

दक्षिण अफ्रीकामें

१० जनवरी १९०८ जोहांसवर्ग—दो महीनेकी सादी कैदकी सजा। ३० जनवरी १९०८ को छोड़ दिये गये।

१५ अक्तूबर १९०८ वोल्कस्ट्रस्ट और प्रिटोरिया—प्रायः दो महीने विभिन्न जेलोंमें।

६ नवम्बर १९१३ पायफोर्ड—गिरफ्तार कर जमानतपर छोड़ दिये गये।

८ नवम्बर १९१३ स्टैण्डर्टन—गिरफ्तार कर जमानत पर छोड़ दिये गये।

९ नवम्बर १९१३ टीकवर्थ—गिरफ्तार कर विचारके लिये डण्डी पहुंचाये गये।

११ नवम्बर १९१३ डण्डी—नौ महीनेकी कड़ी कैदकी सजा।

१७ नवम्बर १९१३ वोल्कस्ट्रस्ट—तीन महीनेकी कड़ी कैद। कुछ दिन जेल में रखे गये।

नवम्बर १९१३ ब्लोमफोण्टीन—बोल्कस्ट्रस्टसे बदल कर आये और १८ दिसम्बर १९१३ को छोड़ दिये गये।

भारतमें

१७ अप्रैल १९१४ मोतिहारी—जिला छोड़ देनेकी नोटिस तामील की गयी पर गिरफ्तार नहीं किये गये।

१० अप्रैल १९१९ कोसी—गिरफ्तार कर पुलिसके पहरेमें बम्बई पहुंचा दिये गये

१० मार्च १९२२ साबरमती—राजद्रोहके अभियोगमें गिरफ्तार।

१८ मार्च १९२२ यरवदा—छै साल की कड़ी कैदकी सजा दी गयी और यरवदा जेलमें रखे गये। ७ फरवरी १९२४ को छोड़ दिये गये।

६ मई १९३० यरवदा—कवाडीमें गिरफ्तार कर यरवदा लाये गये और २६ जनवरी १९३१ को छोड़े गये।

४ जनवरी १९३२ यरवदा—बम्बई में गिरफ्तार हुए, यरवदा लाये गये, ८मई १९३३ को छोड़े गये।

३१ जुलाई १९३३ यरवदा—गिरफ्तार कर नजरबन्द रखे गये। ४ अगस्त १९३३ को छोड़े गये पर रोक लगा रखी गयी।

४ अगस्त १९३३ पूना—एक साल की सजा दी गयी। २३ अगस्त १९३३ को छोड़ दिये गये।

९ अगस्त १९४२ आगाखां राजभवन—नजरबन्द रखे गये और बीमारीके कारण ६ मई १९४४ को छोड़े गये थे।

उच्चतम क्वालिटीकी लीवर घड़ियां

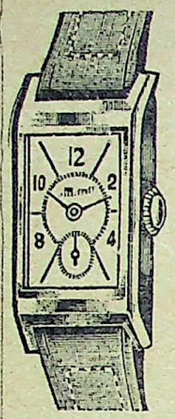

अत्यधिक सस्ती कीमतोंपर स्विटजरलैण्ड का बनी हुई, निहायत सुन्दर और आधुनिक आकार ठीक समय देने वाली हर एक घड़ीकी गारण्टी ३ साल। क्रोमियम केस गोल या चौकोर साइज का १८) सुपीरियर २०) बेस्ट २५) रेक्टंगुलर और टोनिओ आकारका चित्र जैसी घड़ियां उज्वल क्रोमियम केस, ५ ज्वेल ३८) रोल्डगोल्ड ७ ज्वेल ५८) क्रोमियम केस १५ ज्वेल ६५) रोल्ड गोल्ड १० साल की गारंटीका केस ८३)। लास्टिक पट्टे सहित। डाक खर्च और पैकिंग माफ।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V.C.)
ऐशबाग — लखनऊ

पांच सौ रुपया इनाम

(एक आश्चर्यजनक अद्भुत जादूई)

मैस्मरेज़िम और जादू की शक्ति से तैयार की हुई यह अंगूठी अनिष्टकारी ग्रहों का प्रभाव दूर करने में अलौकिक शक्ति का परिचय देती है। इस अंगूठी को पहनने वाला अपनी हर प्रकार की कामना पूरी करने में सफल हो जाता है। प्रेम और मुकदमे में सफलता स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा कीर्त्ति उसके पांव चूमती है। एक ही रात में इस अद्भुत अंगूठी के गुणों और करामात से प्रभावित होना ही पड़ता है।

एक अंगूठी का मूल्य सिर्फ २)।
एक साथ तीन अंगूठी मंगाने पर ५)।
पेकिङ्ग और डाक खर्च अलग।

—: पता :—
महाकाली आश्रम नं० २४७ कानपुर

एक उत्तम दवाई

टाटाका ओडी कोलोन घरमें रखनेकी एक उपयोगी वस्तु है। बीमारोंमें प्रयोग करने पर इसकी ठण्डक सुखदाई ज्ञात होगी और अगर रोगीको साफ करते समय इसके थोड़े ही बिन्दु प्रयोगमें लाये जायें तो उसको प्रसन्नता होगी। उसके कमरेमें छिड़के जानेसे चारों ओर सुगन्धि फैल जायेगी।

यह कोलोन चक्कर मूर्च्छा, सिर दर्द आदि के हटानेमें सहायता देगा।

अरक के स्वच्छ होनेके कारण इस कोलोन के लगानेसे घाव, रगड़, चोट, चीलन, डंक से कटे हुए घाव सड़नेसे बच जाते हैं।

इसलिये टाटाके ओडी कोलोनको हर किसी घरमें होना लाभदायक है।

टाटा का
ओ डी कोलन

दी टाटा आईल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

आज एक युग समाप्त होता है

श्री कनैयालाल माणिक मुंशी

गांधीजीके बारेमें कुछ कहनेकी इच्छा नहीं होती । गांधीजीको उनके अन्तिम क्षिणोंमें देखकर मुझको प्रथम आघात पहुंचा। उसके बादसे मैंने अपनेमें उसे सहन करनेकी शक्ति पैदा कर ली है। मुझे अबतक उनकी मृत्युपर विश्वास नहीं होता। मैं जानता हूं कि वे मर गये हैं लेकिन फिर भी मैं यह अनुभव नहीं कर सकता कि वे अब नहीं रहे। मुझे रह रह कर निरन्तर यही ख्याल आता है कि अगर अब भी मैं बिड़ला भवनकी छतसे अपने कमरेमेंसे निकल कर बापूके कमरेमें जाऊं तो मुझे उनकी वही प्रिय मुस्कान मिलेगी जिसे मैंने बृहस्पतिवारकी सन्ध्याको उनके कमरेमें देखा था। कभी कभी उन्होंने मुझे सत्य और अहिंसाके बारेमें अपने विचार प्रकट करनेका गौरव प्रदान किया क्योंकि मेरी यह धारणा बन गयी थी कि उनका जीवन योगसूत्र और भगवद्गीताका सजीव भाष्य है। इस अवसरपर मैंने गांधीजीसे उस प्रश्नपर फिरसे विचार विमर्श करनेका लाभ उठाया, जिसे मैंने १९४५ में अधूरा छोड़ दिया था।

मैंने कहा, 'बापू, मैं अपनी तुच्छ बधाई अर्पित करना चाहता हूं।'

उन्होंने कहा, 'बधाई किस लिये।'

तब मैंने उन्हें योगसूत्र और टालस्टाय के विचारोंके प्रकाशमें अहिंसाके सम्बन्ध में हम दोनोंके मध्य हुए विचार विनिमय का स्मरण दिलाया। मैंने उन्हें १९४५ में प्रकट किये गये अपने इन विचारोंका स्मरण दिलाया कि १९४२ का अहिंसात्मक आन्दोलन अहिंसाकी शास्त्रीय कसौटीपर पूरा नहीं उतरा, क्योंकि उससे शत्रुमें प्रेमकी बजाय रोष का प्रादुर्भाव हुआ। पातंजलिने कहा है कि जब कोई व्यक्ति अहिंसाकी कसौटी पर पूरा उतर जाता है तो दूसरे व्यक्ति स्वयं ही उसके पास प्रेमपूर्वक आने लगते हैं।

मैंने कहा, 'इस बार यह कसौटी पूरी हो गयी है। जब आपने उपवास किया तो मुसलमान जो पिछले कितने ही वर्षोंसे आपसे घृणा करते आये हैं, स्वयं आपसे प्रेम करने आये। हिन्दुओंने जो आपसे प्रेम करते हैं, आपसे आत्म संयमका पाठ सीखा।' इसके बाद मैंने उन्हें हैदराबादकी परिस्थितिका कुछ आभास दिया। इस बीच राजकुमारी भी हमारी बातचीत में सम्मिलित हो गयी।

मैंने सायंकाल ५ बजे उनसे बिदाई ली और मुझे आशा थी कि मैं अगले दिन उनसे मिलूंगा। लेकिन अगले दिन सायंकाल ५—२५ पर जब मैं भारत सरकारके रियासती विभागमें था तो बिड़लाजीके एक ड्राइवरने आकर यह समाचार दिया कि गांधीजी गोलीके शिकार हुए हैं। मुझे इस पर विश्वास न हुआ। शान्तिके इस देवताको मारनेका साहस कौन कर सकता था ?

मैं तुरन्त टेलीफोन करने दौड़ा। समाचारकी पुष्टि हो गई। मैं सन्न रह गया। कारमें बैठकर मैं एकदम बिड़ला भवनकी ओर भागा। मेरा सिर चकरा रहा था।

मैं झटसे उनके कमरेके भीतर पहुंच गया। वे अपनी सदाकी शय्या पर लेटे हुए थे। उनके पीले चहरे पर मृत्युकी शान्ति छाई हुई थी। मनु, आभा और दूसरी लड़कियां उनके सिरहानेके पास थीं। सरदार शोकग्रस्त मुद्रामें लेकिन धैर्य पूर्वक बैठे थे और उनकी एक बांह पंडित जी की कमरमें जो सुबक रहे थे, पड़ी हुई थी। मैंने कर्नल भार्गव की ओर देखा जो वहां खड़े थे। उन्होंने मूकवत् सिर हिलाकर जबाब दिया। मृत्यु वहां खड़ी थी, भयंकर और निष्ठुर मुद्रामें और गांधीजी उसके निर्मम चंगुल में फंसे हुए थे। गांधीजी अब नहीं रहे। मैं अनाथ हो गया। एक और डाकर आया। उसने गांधी जीके सीने पर अपना स्टेथ स्कोप लगाया और उनके ऊपरसे कपड़ा हटाया। मैंने तीन घाव देखे, जिनमें से खून बह रहा था। मेरी व्य आत्मा सिसकने लगी।

एक-एक अक्षर पर उनका गला भर आता था। मणिबेन प्यारेलाल और मैं, सभी मिलकर मनुके साथ गीता पढ़ने लगे। जब हम गीताके श्लोक पढ़ रहे थे तो मेरी आंखोंके सामने एक चित्र खिंच गया। श्री कृष्णकी मृत्यु बाणसे हुई। सुकरातको जहर दिया गया। ईसाको सूली पर लटकाया गया। गांधीजी गोलीके शिकार हुए। इन चारों महापुरुषोंकी मृत्यु अस्वाभाविक रूपसे हुई। परन्तु शायद एक महान जीवनका यह उचित पटाक्षेप था। इनमें से सुक्रात और ईसाके प्रति अपराधियों जैसा व्यवहार किया गया और उनकी मृत्यु समाजके हाथ हुई। श्री कृष्णकी मृत्यु अज्ञात व्याधाके हाथ हुई। गांधी जीकी मृत्यु शान्तिके एक शत्रुके हाथों हुई और इसलिए हम कह सकते हैं कि वह मानवके भविष्यका भी शत्रु था।

उन्होंने भारतको एक राष्ट्रके रूपमें सङ्गठित किया। उन्होंने उसे एक राष्ट्र भाषा दी। उन्होंने उसे एक नयी परम्परा दी। उन्होंने एक नयी शासन प्रणालीकी नींव रखी। उन्होंने स्वाधीनता संग्राममें राष्ट्रका नेतृत्व किया। उसकी स्वाधीनता प्राप्तिके समय भी उन्होंने उसका नेतृत्व किया। जब उनका स्वर्गारोहण हुआ तो उन्हें देशका पूर्ण सम्मान प्राप्त हुआ। जब उनका देहावसान हुआ तो वे एक सम्राट के समान थे। उनके एक ही शब्दसे भारत की शक्तिशाली सरकार कांप उठती थी। उन्हे यह सब सफलता एक सच्चे प्रजातन्त्रवादीके रूपमें प्राप्त हुई। उनकी सफलताका रहस्य उनकी वाणी और लेख हैं। और यह सफलता उन्हें अपने शत्रु का बाल बांका किये बिना ही मिल गयी।

लेकिन यद्यपि इन राजनीतिक सफलताओंके कारण उन्हें संसारके राजनीतिक उद्धारकोंमें अग्रणी कहा जाता है, फिर भी उनकी नैतिक सफलताकी तुलना में इनका कोई मूल्य नहीं। उन्होंने परतन्त्रताकी शृंखलाओंमें जकड़े हुए मानवकी आत्माको मुक्ति दिलायी। उन्होंने भारत के नारी समाजको स्वतन्त्रता दिलायी। उन्होंने अस्पृश्यताको दूर किया। उन्होंने

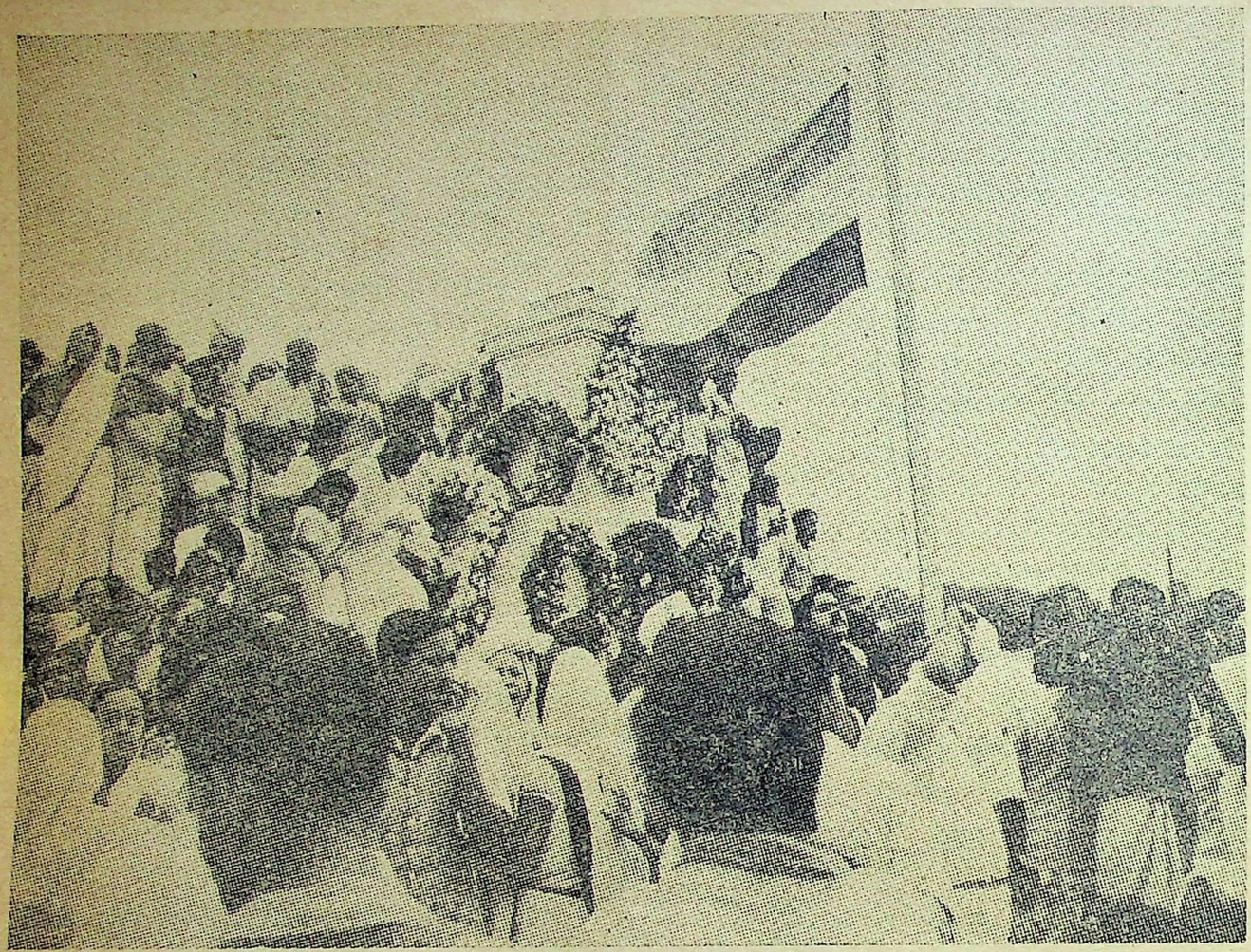

कलकत्तेमें वेदी पर विदेशी राजदूतों द्वारा पुष्पहार प्रदान

लौह शृंखलाओंसे जकड़े हुए हमारे समाज को मुक्ति दिलायी। उन्होंने परलोकके मायाजालमें फंसे हुए भारतका उद्धार किया। पिछले नौ सौ वर्षके विदेशी प्रभुत्वके कारण हमारे अन्दर जो हीनभाव आ गया था उसके अभिशापसे उन्होंने हमें मुक्त कराया। उन्होंने भारतीयोंको फिरसे अपनी संस्कृतिपर गौरव अनुभव करना और अपनी शक्तिमें विश्वास रखना सिखलाया, जिसे वे खो चुके थे। इतना ही नहीं, उन्होंने भारतीयोंकी सोयी हुई आत्मामें फिरसे नवजीवनका संचार किया। उन्होंने भारतकी अमर संस्कृति के बिखरे हुए मोतियोंको पुनः एक लड़ीमें पिरोकर उसे विश्व विजयके पथपर अग्रसर किया। वे एक नवजीवनके सन्देश वाहक थे।

लेकिन इतना ही नहीं। उन्होंने अपने जीवनमें आर्य संस्कृतिके मूलभूत सिद्धान्तोंको कार्यान्वित करनेकी चेष्टा की और उन्हें पुनरुज्जीवित किया। उन्होंने अपने दीर्घकालीन जीवनमें मोह, माया, भय और क्रोध पर विजय प्राप्त करनेकी चेष्टा की। उनका जीवन नैतिक शक्तिका सजीव चित्र था। उन्होंने अपनेको अहिंसाकी कसौटी पर पूरा उतारा जिससे शत्रु स्वयं ही उनके पास प्रेमपूर्वक खिंच आये। उन्होंने सत्यकी खोजमें ही अपना सारा जीवन लगा दिया और उन्हें इसमें सफलता भी मिली। उन्होंने आसक्ति से अपना कोई सम्बन्ध न रखा। वे विरक्त हो गये। वे जीवन भर पूरी शक्ति के साथ अपने काममें जुटे रहे। उन्हें ऐश्वर्यका मोह न था और वे जिस उद्देश्यसे प्रेरित होकर अपना काम कर रहे थे, उसके लिये उन्हें बिना मांगे धन दौलत मिल जाती थी। उन्हें धन-धान्य और ऐश्वर्यसे मोह न था और वे जीवनका वास्तविक अर्थ और उद्देश्य खूब समझते थे। वे ईश्वरमें लीन रहते और उनमें परमात्माका वास था।

जन्मसे लेकर अन्तिम क्षण तक जितना समय भी वे जीवित रहे, केवल ईश्वरकी साधनाके रूपमें ही। उनके जीवन का एक-एक क्षण ईश्वरकी पूजा और उपासनासे परिपूर्ण रहा और जब वे अपने कार्य कर चुके तो ईश्वरकी इच्छासे ही उनकी इहलोक लीला भी समाप्त हो गई। उनका अन्त भी बड़ा चमत्कारपूर्ण और महान था क्योंकि समस्त राष्ट्र घोर निराशा सागरमें डूब गया। संसार शोक और व्यथासे स्तब्ध रह गया तथा समयकी गति भी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करनेके लिये रुक गयी।

वे सम्राट, देवता और योगी थे। मेरे लिये तो वे पिता और पथप्रदर्शक थे। हजारों ही दूसरे व्यक्तियों की भांति उनके बिना मुझे जीवन नीरस और अभावपूर्ण प्रतीत होता है।

वह क्रांतिकारी युग निर्माता

लेखक—श्री रामनारायण उपाध्याय

महात्मा गांधीके विषयमें क्या कहा जाय जो हमारे और हमारे राष्ट्र के जीवनमें ओत प्रोत हो चुके थे। विश्व की सर्वश्रेष्ठ विचारधाराके जो आचार्य ही नहीं प्रवर्त्तक थे। पत्थर पर खींची गयी लकीरकी तरह वे जो कुछ भी बोल दें साहित्य उनके पीछे अपने आप बनता चलता था। निर्जीव कलाके वे उपासक तो नहीं थे किन्तु मनुष्यके शरीरमें चार बूंदें खूनकी बढ़ाकर उसके चेहरे पर सुर्खी ला देनेवाले जीवनके कलाकार थे। रस्किनकी भांति सौंदर्योपासकके नामसे प्रसिद्ध नहीं, किन्तु आकाशसे गिरनेवाले पानी, गांवके एक कोनेमें बसी हुई झोपड़ी और खेतमें हल चलाते हुए या करघेपर कपड़ा बुनते हुए आदमीमें वे वास्तविकताका दर्शन करते थे। जिनका जीवन स्वयं भव्य था। दर्शन जिनके शब्दोंसे झरता था और धर्म जिनकी वाणीसे समृद्ध होता था। उस आदमीके विषयमें क्या कहा जाय।

सघर्ष कालमें जिसका नेतृत्व तरुणाईके लिये हंसते हंसते 'मौत' से खेल का त्यौहार बन जाता था और शांति कालमें जिसके 'प्रवचन' सुननेके लिये मन्दिर मस्जिद और गिरजेसे दलके दल बिना किसी भेद भावके प्रार्थना स्थलकी ओर दौड़ पड़ते थे।

जिसकी एक आंखमें सम्राटका सिंहासन डोलने लगता था और दूसरी आंख में राह चलता सड़कका आदमी भी जीने का वरदान पाता था, जो अपने एक हाथसे साम्राज्योंको मिटाता चलता था और दूसरे हाथसे स्वराज्यका निर्माण करता था।

जो स्वयं धर्म प्रवर्त्तक नहीं किन्तु संसारके सब धर्मोंके अनुयायी जिसमें अवतार या पैगम्बरके दर्शन करते थे और जो अपने आपको राजनैतिक नेता कहे जानेसे इन्कार करता था, किन्तु जिसने ४५ करोड़के देशको अहिंसात्मक साधनोंसे आजादी दिलायी। यह वही था, ऐसा दुनिया एक मतसे कहती है और जब देशने एक क्षण निश्चिन्तताको महसूस करते सांस ली कि चलो अब तो स्वराज्य हो गया तो दूसरे क्षण गांधीने बेचैनी महसूस करते हुए कहा था, "नहीं अभी हमें स्वराज्यका निर्माण करना है।" जिस दिन देश अंग्रेजों द्वारा छोड़ी हुई अराजकतामें राज्य पाकर अभूतपूर्व खुशी मना रहा था उस दिन लम्बी साधनाके बाद अपने जीवनके चौथे चरणमें पाये गये नवजात स्वराज्य शिशु को देखकर गांधीकी आंखोंमें आंसू छल-छला आये थे। लगा कि जैसे उनमें नया जीवन उतर आया हो और वे अपनी सारी शक्तिसे जो कलतक स्वराज्यको खींच लानेमें लगायी थी, उसीसे वे अब स्वराज्यको सींचना चाहते थे।

पर..... वही हुआ जो ऐसे समयमें सर्वत्र होता है। देखते देखते देशके एक कोनेसे दूसरे कोने तक साम्प्रदायिकताकी आग भड़क उठी। बङ्गाल जलने लगा, बिहार जल उठा, पंजाबने लौ पकड़ी और दिल्ली तक जा फैली। लोग एक क्षण सोच भी न पाये कि अब क्या हो। अभी कल तक अहिंसाकी दुहाई देनेवाले भी प्रतिहिंसाकी बात सोचने लगे, कि लोगोंने देखा राज्य और स्वराज्यसे परे, देशके एक एकान्त कोने सेवाग्रामकी कुटियासे एक आदमी उठा। कांधेपर चादर डाली, हाथमें लकुटी ली और नंगे सिर नंगे पांव, बिना अस्त्र-शस्त्र, साथी, मित्र, लाग-दुरावके शांत, स्वस्थ गम्भीर, आत्मस्थ, स्थितप्रज्ञ सा धू-धू कर जलती हुई आग की ओर बढ़ चला। धरती कांप उठी। मनुष्यके हृदयकी धड़कन बढ़ गयी। आस्था और विश्वास डगमगाने लगे कि लोगोंने देखा कि जहां जहां भी वे दो डग पड़े उसके आसपासकी धरित्री, घने अन्धकार और कुहरेपर सूर्यकी किरणें पड़नेकी तरह, स्वच्छ और शांत होती गयी। बङ्गालमें एक दूसरेका गला घोंटनेके लिये

(शेष २० वें पृष्ठ पर)

भारतका शुक्रतारा

लेखक—श्री विनायक नानेकर

इस संसारका चक्र विचित्र है। जो अनाचारसे रहता है, जो व्यभिचार करता है, जो अन्यायसे बर्तता है वह चैन करता है और जो सदाचारसे रहनेका प्रयत्न करता है, आचार विचारका ख्याल करता है वह दुःख उठाता है, भूखों मरता है। जो अधिक जोरसे चिल्लाता है उसकी पूछ परछ होती है और जो शांतिसे रहता है वह बे मौत मरता है।

इतिहास इस बातका सबूत हैं कि जिन्होंने अच्छे कार्यका बीड़ा उठाया वे उन्होंने सबसे अधिक दुःख उठाया और अपने ही लोगोंके हाथोंसे प्राण गंवाये। ईसा मसीहाने जीवोंके कल्याणके लिये अवतार लिया, मगर नाना प्रकारकी मुसीबतोंका उन्हें सामना करना पड़ा और अन्तमें लोगोंने उन्हें सूलीपर चढ़ा दिया। जो काम जीवित रहते ईसा पूर्ण न कर सके, जो ख्याति ईसा अपने जीवित कालमें प्राप्त न कर सके, जितने अनुयायी ईसा अपनी जिन्दगीमें न बना सके, उससे कहीं अधिक ख्याति, अनुयायी और काम उनकी मृत्युके बाद भरामर होने लगे।

अब्राहम लींकन सरीखे महान अमेरिकन नेता, जिन्होंने काले लोगोंकी स्वतन्त्रताके लिये अपने जीवन कालमें आप्राण चेष्टा की नाना तरह के उत्पातोंसेउनके काममें बाधा डाली गयी और अंतमें अपने ही लोगों के हाथों वे गोलीके निशान बना दिये गये। मरनेके बाद ही लिंकनके महत्वका लोगों को स्मरण हुआ आज भी लींकन एक महापुरुषकी तरह अमेरिकन जनतामें सम्मानित हैं।

पल्टू साहबने लोगोंको सच्ची राह बतानेके लिये इस असार संसारमें जन्म लिया मगर पागल और गुमराह लोगोंने उनके जीते जी एक न सुनी और अन्तमें उन्हें जीते जी जला दिया मगर अन्तमें वे ही लोग पल्टू साहबके गुण गाने लगे। भारतमें कबीर, नानककी तरह पल्टू साहबका भी नाम अमर है। वही हाल 'अनहलक' कहनेवाले मंसूरका लोगोंने किया।

कहनेका तात्पर्य यही कि जिन महात्माओंने लोगोंके कल्याणके लिये तप किया वे आखिर अपने ही लोगोंके हाथों बुरी तरह मृत्युको प्राप्त हुए।

गांधीजीका जीवन दूसरोंके भलेके लिये ही था। उन्होंने कभी अपने स्वार्थ का ख्याल भी न किया। जो कुछ उन्होंने किया वह काफी सोच विचार कर किया और अन्तरात्माके मार्ग प्रदर्शनानुसार किया। मगर आम जनता अभी इतना जाग्रत नहीं हुई थी ताकि उनके कदमोंपर चल सके,—उनकी बातें समझ सकें। गांधीजी दस साल आगेकी बातें ध्यानमें रखते हुए कदम उठाते रहे, मगर लोग वर्तमानकी ही सोचते रहे और सहनशीलता तथा धीरज खो कर अंडबन्ड बकते रहे और अमानुषिक कर्म करते रहे। उन्हींमेंसे एकने गांधीजीके खूनसे अपने हाथ रंग लिये—'अपने ही बापके खनसे अपनी जातिको कलङ्कित किया।' वह एक पागलपन था,—नशा था। उसने अपनी समझ-शक्ति खोकर यह काम किया। मेरा तो ख्याल है कि उसकी हालत जिन्दा रहते हुए भी मुर्देसे बदतर है। उसे संसारमें मुंह निकालने को स्थान नहीं और यदि उसे गांधीजीके तत्वोंके आधारपर छोड़ दिया गया तो जनता उसपर थूके बगैर न मानेगी।

गांधीजी बार बार कहते रहे कि भारतकी एकताके लिये यदि मेरी जान भी चली जाय तो मैं उसे अपना अहोभाग्य समझूंगा और आखिर उसी ध्येय को प्राप्त करनेके लिये वे चल बसे। गांधीजी उसी एकताके तत्वके लिये कुरबान हो गये—शहीद हो गये। उनकी कामना पूर्ण हुई या उनकी भविष्यवाणी सत्य हुई—लोग जैसा चाहें वैसा समझें।

गांधीजीको कोई राजनीतिक नेता कहता है, कोई धार्मिक पुरुष कहता है, तो कोई अद्वितीय अवतार कहता है परन्तु मेरे विचारमें गांधीजीमें इन तीनोंका सुन्दर मिलन था। जो कर्म कुशल राजनीतिज्ञोंसे होना असम्भव था उसे गांधीजीने बिना रक्तपातके पूरा किया, जिस मेल-एकताको प्राप्त करनेमें कबीर और रैदास भी असफल रहे उसे गांधीजीने उपवाससे प्राप्त किया, जो मानसिक रद्दोबदल गांधीजीने भारतमें कर दिया है शायद ही पहले किसी अवतारने ऐसा किया हो।

अलौकिक पुरुष जीनियस (प्रतिभा) के नामसे संबोधे जाते हैं। गांधीजी उनमें ही थे। जीनियसोंकी तरह वे जीवन कालमें बदनाम हुए और उनके देहान्त बाद ही और जीनियसोंकी तरह उनकी कीर्ति बढ़ेगी। जो कार्य गांधीजीके जीवन कालमें पूर्ण होनेसे रह गये वे उनकी अनुपस्थितिमें जल्द पूरे होंगे यह इतिहासके सिद्धान्तोंके आधार पर हम कह सकते हैं।

परन्तु आज सारे विश्वमें गांधी जीके इस संसारसे उठ जानेके कारण मृत्युकी काली घटा छाई हुई है। लोग नाना तरह के विचार प्रकट करते सुनाई पड़ते हैं। गांधीजी भारतके पिता थे और पिताके रहते जिस तरह सब कुटुम्ब एक रहता है और पिताके मरते ही सब बारह बाट हो जाते हैं उसी प्रकार की शंका लोगोंके हृदयमें उठ रही है। मगर मेरा तो विश्वास है कि जो अच्छे कार्यके लिये मरता है उसके अंतका बुरा प्रभाव नहीं पड़ता बरन फल अच्छा ही निकलता है। अच्छेका नतीजा अच्छा ही होता है।

रोने वाले रोवें हंसने वाले हंसे और बकने वाले बकबक करें, मगर हम सिर्फ श्रद्धान्जलि अर्पित करते हैं, क्योंकि संत मरे क्या रोईये, वे सत्तलोकको जायें। जिस बुरे और भले विचारोंके मेलके लिये गांधीजी प्रयत्न करते रहे उसी तरह के दो विचारोंमें हम भी उलझे हुए हैं हंसे या रोवें? ऐसे महान पुरुषकी आत्माकी शांतिके लिये हम क्या ईश्वरसे प्रार्थना करें? यदि ऐसे शुद्ध और सत्य

(शेष २० वें पृष्ठ पर)

बापू...बापू! तुम कहां हो?

(अ० भिक्षु स्वामी)

भूकम्पके प्राणघातक आघातकी तरह ही करोड़ों मानव हृदयको आघात लगा। चारों तरफ इसी वज्रपात की चर्चा मातमी वातावरण और उथले-गहरे निःश्वास.....। जीवनकी समस्त स्मृतियां नष्ट होकर केवल इतना ही याद आना—बापूका बलिदान.....बलिदान.....भयङ्कर बलिदान.....।

३० जनवरीकी वह शाम, हत्यारी शाम थी।.....खूनी शुक्रवार। उसी शामको हमारे परम पूज्य बापू महाप्रयाण कर गये। वे बापू, जो हमारे त्राता थे, राष्ट्रके परमपिता थे, विश्वके शास्ता थे।

प्रार्थना मञ्चकी ओर आतुरतासे उठे हुए चरण, हृदयकी धड़कनके साथ रास्तेमें ही रुक गये। फिर वे कभी नहीं उठे, कभी नहीं.....।

....घावोंसे बहता हुआ रक्त और रक्तके साथ उस विराटका महान हृदय, भारत माताके अञ्चलपर गिरा। भारत माताने अपने इस सपूत सन्तको अङ्कमें भर लिया और वे सुध हो गयी..... पथरा गयी.....!

एक नराधम फासिस्टने बापूपर खूनी आक्रमण कर दिया था। फ्रेंच बनावटके पी बेरेटा आटोमेटिक पिस्तौलसे चार गोलियां दाग दी थी।....और हमने सुना—बापू....हमारे बापू....हमारे बीच नहीं रहे।

* * *

खूनके आंसू और मौन सिसकियां भर-भर कर रोना ही हमारे लिये शेष रह गया। बापूके योग्य शिष्य पं० जवाहरलाल और सरदार पटेल आज हिमालयका साहस बटोर कर अपने करुण हाथोंसे हमारे आंसू पोंछ रहे हैं— शायद फुसला रहे हैं—और ढाढ़स बंधा रहे हैं कि बापू कहीं नहीं गये सिर्फ हमारे और तुम्हारे हृदयमें छुप गये हैं.....।

ओ हृदयकी चट्टानों! टूटो, तुम अभी टूटो, हम अपने बापूको देखना चाहते हैं। हम....अभी....सब....।

आज हम एक क्षणके लिये भी यह माननेके लिये तैयार नहीं कि वह बापूका हत्यारा, पागल है। नहीं मित्रो, वह पागल नहीं। वह व्यवस्थित हत्याकांड के षड्यन्त्र रखनेवाले नर-पिशाचोंमेंसे एक है। उन नर-पिशाचोंमेंसे जिन्होंने बापू की मृत्युपर मिठाइयां बांटी है—पेड़े बाटे हैं। घीके दीप जलाये हैं और खुशियां मनाई हैं।

हमारी धरती सूनी हो गयी है और सन्तका हत्यारा कहता है—मुझे इस

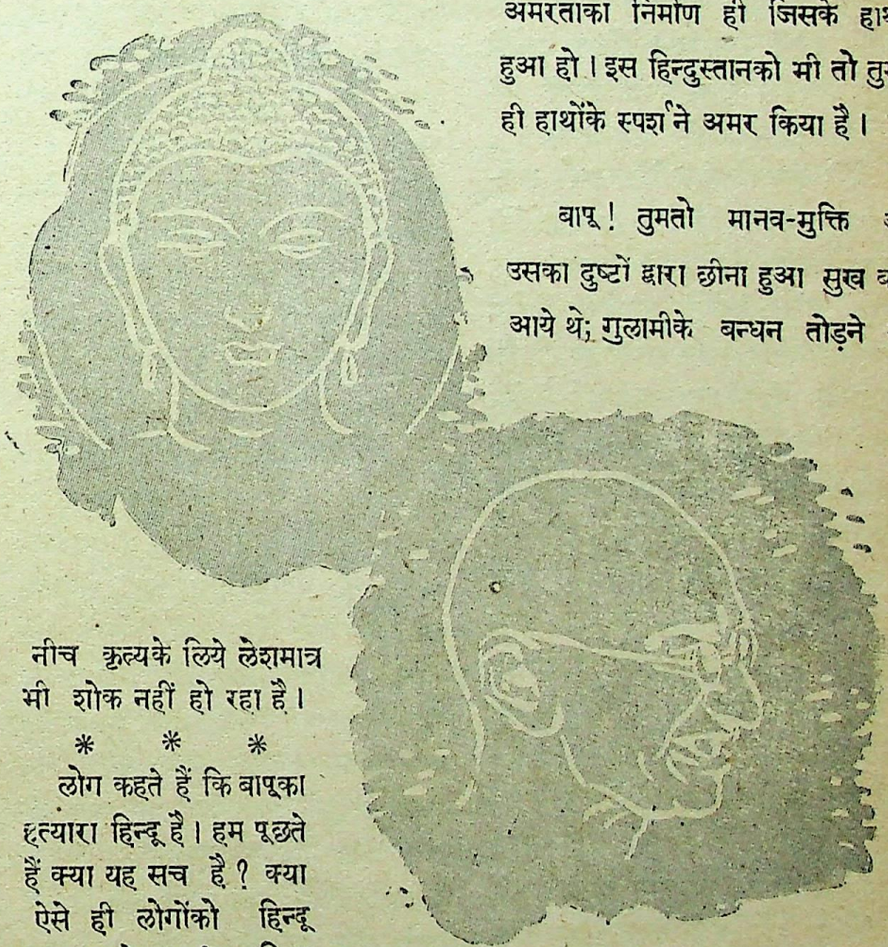

नीच कृत्यके लिये लेशमात्र भी शोक नहीं हो रहा है।

* * *

लोग कहते हैं कि बापूका हत्यारा हिन्दू है। हम पूछते हैं क्या यह सच है? क्या ऐसे ही लोगोंको हिन्दू कहा जायेगा न?....हिन्दू....और.... हिन्दुत्व.....!

.....लेकिन बापू क्या थे? जिनमें अनन्त ऋषियोंकी आत्मा थी, अनन्त बुद्ध और महावीरका जीवन तेज था, ईसाके प्रेम और करुणाका सागर था, महम्मदकी समता थी गुरु नानक और कबीर साहबका दर्शन था मार्क्स और लेनिनके स्वप्न थे, तोलस्तोयकी छाया थी और मानवकी श्रेष्ठ मर्यादाके साथ जुड़ी हुई राम तथा कृष्णकी अभिन्न मर्यादा थी। वे बापू कौन थे?

* * *

मानवताके वरद पुत्र, धरतीकी आशा, बीसवीं सदीके सन्त और अपने प्राणोंकी ज्वालासे आजादीका आलोक जगानेवाले बापू। क्या सचमुच तुम शहीद हो गये? क्या अमर हो गये? लेकिन बापू, तुम तुम किस दिन मृत थे जो अमर होते? तुम तो सदासे अमर हो। ऐसे अमर की अमरताका निर्माण ही जिसके हाथोंसे हुआ हो। इस हिन्दुस्तानको भी तो तुम्हारे ही हाथोंके स्पर्शने अमर किया है।

बापू! तुमतो मानव-मुक्ति और उसका दुष्टों द्वारा छीना हुआ सुख बांटने आये थे; गुलामीके बन्धन तोड़ने आये थे। तुमने मुक्त जीवन और उसका सुख दिया; हमारी गुलामीके बन्धन तोड़े। पर बापू.....बापू.....!

—*—

जिन्होंने शांतिके लिये दुःख उठाया है

श्री हॉरेस ऐलेक्ज़ेण्डर

कुछ महीने पहले मैं गांधीजीसे शांतिवादी लोगोंके बारेमें चर्चा कर रहा था, जिन्होंने अपने उसूलोंसे समझौता करनेके बजाय दुःख दर्द सहनेकी, जेलों में सड़नेकी और मौतका सामना करनेकी तैयारी दिखायी है। गांधीजीने मुझसे पूछा क्या हमारे जमानेमें कोई ऐसे लोग हुए हैं, जो दर असल अपने शांतिवादी विश्वासोंके कारण मौतके घाट उतारे गये हों? गांधीजीने १८ वीं सदीके अन्तमें और १८६१-६५ की अमेरिकन घरेलू लड़ाईके बीच अमेरिकाके दक्षिणी राज्यों में शांतिवादी विचारोंके लिये मौतका सामना करनेवाले क्वेकरों और दूसरे लोगोंके बारेमें सुना था। लेकिन उन्होंने मुझसे कहा कि मैं और भी हालके ऐसे लोगोंका पता लगानेकी कोशिश करूं।

मैंने लन्दनके 'वार रेजिस्टर्स इन्टरनेशनल' लड़ाईका विरोध करनेवालोंकी अन्तर-राष्ट्रीय संस्था) को लिखा। यह संस्था अनेक देशोंमें लड़ाईका विरोध करनेवाले लोगोंको एक सम्बन्धमे जोड़ती है। उसके पत्रोंमें हर साल कई देशोंमें ऐसे लोगोंके हिम्मत भरे कामोंकी अनोखी कहानियां छपती हैं, जो फौजी तालीमके लिये अपना नाम लिखानेसे इन्कार करने के कारण बरसों जेलके सीखचोंमें बन्द रहे हैं। 'वार रेजिस्टर्स इन्टरनेशनल' ने मेरे पास 'मांडर्न मार्टियर्स' (आजके शहीद) नामका एक पेंफ्लेट भेजा है, जो करीब १९३० का छपा मालूम होता है। उसमें ऐसे लोगोंकी प्रेरणा देनेवाली कहानियां दी गयी हैं, जो जेलकी कड़ी सजा भोगकर भी अपने उसूलपर अडिग रहे हैं। लेकिन इस पेंफ्लेटका नाम ठीक नहीं है। अगर शहीद होनेका मतलब है दुःख सहते सहते मर जाना, तो उनमेंसे एक ही शांतिवादी वीरको शहीद कहा जा सकता है। लेकिन अगर किसी तरह उसका मतलब अन्तरात्मा या जमीरकी पुकार सुननेके लिये तकलीफें उठाना किया जाय, तो बहुत सी मिसालोंमेंसे कुछ चुनकर यहां दी जाती हैं।

उसमें मौतकी अकेली मिसाल एक रूसी नौजवान वास्सिलिज ऐगोरोविख ताराकिनकी मिलती है, जिसे जुलाई १९१९ में इस लिये गोलीसे उड़ा दिया गया था कि उसने अपने मजहबी विश्वासोंके कारण फौजमें भर्ती होने और मोर्चेपर जानेसे इन्कार कर दिया था। ये शब्द उस अदालतकी रिपोर्टमें दिये गये हैं जिसने उसपर मुकदमा चलाया और उसे मौतकी सजा दी थी। सिपाहियोंने ऐगोरोविखपर गोली चलानेसे इन्कार कर दिया। इस लिये कमीशनके प्रेसिडेण्ट श्रामीफको खुद उसे गोली मारनी पड़ी। देखनेवालोंके कहे मुताबिक ऐगोरोविखके आखिरी शब्द थे: 'भाइयो, इस बातको समझो और याद रखो कि मेरे शरीरको मारकर आप अपनी आत्माकी हत्या कर रहे हैं। मेरा शरीर खत्म हो जायगा, लेकिन मेरी आत्मा अमर रहेगी, क्योंकि मैं प्यार और भाईचारेके खातिर मरता हूं।' अपने मां बापको उसने जो आखिरी खत लिखा था, उसके शब्द थे: 'हम प्यारके जरिये ही सच्चे जीवनको समझ सकते हैं।'

पेंफ्लेटमें दूसरी कहानी लिथुआनिया के जे० पी० नामके एक आदमीके दुःखों की दी गयी है, जिसने रिपोर्टके मुताबिक १९२७ में 'अदालती जांचकी भयानक तकलीफें' सही थीं। 'उन्होंने उसके कंधों से फौजी हथियार बांध दिये और उसपर फौजी कसरत करनेका दबाव डाला। उसने ऐसा करनेसे इन्कार कर दिया। इसपर उन्होंने उसे पीटा, उसे गाड़ीसे बांध दिया और मैदानोंमें बेरहमीसे घसीटा। इसके बाद उसे एक अन्धेरे, ठण्ढे, सील भरे तहखानेमें फेंक दिया। वहां उसे ८-१० दिन रखा गया और खाने-पीनेके लिये सिर्फ रोटी, पानी और थोड़ा शोरवा ही दिया गया।

युगोस्लावियामें नजारिन नामके सम्प्रदायके कुछ लोगोंको ५ बरससे ऊपर की कैदकी सजा दी गयी। उसके बाद वे कुछ ही समय घरपर रहे होंगे कि फिर उन्हें फौजी तालीमके लिये बुलाया गया। उन्हें साढ़े ग्यारह बरसकी कैदकी सजा दी गयी।

सिर्फ पूर्वी यूरोपने ही अपने यहां के शांतिवादियोंको इस तरह नहीं सताया। लोकशाहीका पुजारी स्विटजरलैण्ड भी उन लोगोंको बार बार जेलकी सजा देता है, जो फौजी तालीमके लिये भर्ती होनेसे इन्कार करते हैं। और जैसा कि मार्था स्टीनिज इस पेंफ्लेटकी अपनी प्रस्तावनामें लिखती है, 'इटली, स्पेन और फ्रांसमें भी जो आदमी फौजी नौकरीसे इन्कार करता है, उसे ऐसी लम्बी और भयानक यातनायें और तकलीफें दी जाती हैं— ज्यादातर अनुशासन सिखानेवाली सेनाओं में जो लोग फौजमें नौकरी करनेके लिये अपनी अन्तरात्मासे समझौता नहीं कर सकते, उनमेंसे बहुतसे अपना वतन छोड़ देते हैं या अपने आपको फौजसे छिपाकर रखते हैं।' दूसरे लोग किसी तरह कैदकी लम्बी लम्बी सजायें भोगते हैं। कई फ्रांसीसियोंने अपने उसूलोंके लिये 'शैतानके द्वीप' गियानामें, जहां सबसे खतरनाक अपराधी भेजे जाते हैं लम्बे लम्बे बरसोंकी सख्त कैदकी सजा भोगी।

जे० डब्ल्यू ग्रांहमकी किताब 'कांन्स्क्रिप्शन ऐण्ड कान्शिअन्स' (फौजी भर्ती और अन्तरात्मा) के पढ़नेवालोंको पता चलेगा कि इंगलैण्डमें, १९१४ और १९१८ के बीच, अपनी अन्तरात्माकी पुकार सुनकर ईमानदारीसे फौजी नौकरी का विरोध करनेवालोंको छूट देनेसे इनकार किया गया, फौजमें भर्ती किया गया और उनकी भावनाको कुचलनेके लिये कड़ी सजायें दी गयीं। उनमेंसे बहुतसे बेरहमीका बरताव करनेसे जेलमें ही मर गये।

जब पिछली लड़ाईके बारेमें सारी बातें मालूम होंगी, तो शायद यह पता चलेगा कि उस लड़ाईके दरमियान-यूरोप के कई देशोंमें ऐसे लोगोंको गोली मार दी गयी, जिन्होंने फौजमें नौकरी करने से इन्कार कर दिया था।

(शेष २० वें पृष्ठ पर)

टुकड़ाकी दुनिया

कहानी

श्रीमती उषा देवी मित्रा

देवत्व और पशुत्वकी होड़में उस दिन संसार बीचमें फंसा क्षत विक्षत भले ही हो रहा हो, किन्तु जीवनकी स्फूर्ति नवीनत्व, कोमलता एकदम मर मिटी थी। ऐसा कहना तो शायद झूठ होगा, तब भी वह नीलाम्बरी पहने मन्दिरकी पूत पुजारिनी-सी जासौनके दीपकके उजियारेमें विश्वमें अपना एक निजत्व आंक रही थी।

उस जीवनकी स्फूर्ति, स्फुलिंग सी मन्दिरा अपने जीवनमें, गृहप्राङ्गणमें, आनन्दको, मुट्ठीमें बन्द किये नहीं, किन्तु बिखेरे, अपने चहुंओर आनन्दकी बाढ़ सी उछालती प्रातःसे सन्ध्यातक कामकाज में जुटी रहती, वृद्धामाता तथा अपनी दोनो छोटी बहनोंको सुख आरामसे रख सकनेकी चेष्टा करती।

"बी जी, कापी आदिके बिलके रुपये आज देने ही पड़ेंगे वरना फाईन होगा।" लीलाने कहा।

मेरी फीस आज न पहुंचेगी तो नाम कट जायेगा" छोटी नीता बोली।

रसोई बना रही थी मन्दिरा। आलूमें नमक डालकर फिर शान्त स्वरसे कहा—अच्छा।'

माता सरस्वती दरवाजेके पास बैठी साग काटती हुई सब कुछ देख सुन रही थीं। गंभीर दीर्घ श्वांस हृदयको चीरती हुई निकली। चौकेमें आकर बोलीं—'क्यों उसकी जान घेरे हुए हो तुम दोनों?" तब मन्दिराको सम्बोधन कर बोली—तू उपास करके कबतक जी सकेगी बेटी? इन दोनोंकी पढ़ाई बन्द कर दो गरीबोंके लिये यह कैसा सपना है? मैं सब कुछ देख समझ रही हूं मन्दिरा। रात जागकर तुम पुराने कपड़ोंसे गुड़िया बनाकर बेचा करती हो बहनोंको भरपेट भोजन और कपड़े देकर खुद भूखी रहती हो। इसपर दोनोंकी पढ़ाईका खर्च कैसे चला सकती हो? पढ़ाई बन्द कर दो। आजकी शिक्षित दुनियांमें अपढ़ोंकी जगह कहां है मां? सब कुछ ठीक हो जायगा कई जगह मैं दरखास्त बामके लिये भेज चुकी हूं कहीं न कहीं जगह मिल ही जायंगी। नरेश भैया स्वयं मेरे लिये चेष्टा कर रहे हैं।"

माता उदास हंसी—"पागल लड़की, आज एक वर्ष हो रहा है तुम्हारा स्कूलका काम छूटे। कितनी जगह मिली अबतक? हजारों दरखास्तें भेज चुकी हो। झूठी आशामें मत भूलो।"

मन्दिरा अविश्वाससे हंसी—'क्या कह रही हो मां? पार्टी बन्दी? दलबन्दी का युग है? परन्तु संसार ऐसा संकीर्ण नहीं हो गया है। शिक्षाका क्षेत्र ही यदि संकीर्णता सिखलाये तो आदमी जी भी कबतक सकेंगे? स्वतन्त्र भारतके यह सुधारके दिन हैं चहुं ओर उन्नति हो रही है। पचासों स्कूल कालेज़ खुल रहे हैं और मुझे जगह न मिलेगी?' उस आशासे आश्वस्त मुखके प्रति देखकर माता कुछ कहने जाकर भी कह न सकीं।

पड़ोसका हंसमुख किशोर पहुंचा—'मन्दिरा जीजी आज तुम्हारी गुड़िया खूब बिकीं और फिर गांधी मूर्ति बुद्ध मूर्ति, शिव मूर्त्ति तो तीन तीन रुपयेमें। अब तुम नृत्यदासी मेम आदि न बनाकर शिव, बुद्ध महात्मा आदि ही बनाओ। समझी? लो यह पूरे पन्द्रह।"

मन्दिराने रुपये लेकर फिर पूछा—और मिट्टीके खिलौनेको किसीने पसन्द किया?"

हां हां, वह तो कहना ही भूल गया उन्हें दूकानपर रख आया हूं, दूकानदारने खूब पसन्द किये। वे बिक जायंगे मैं अब चलूं जी जी।"

खुशी भरे मनसे मन्दिराने बहनोंको फीस आदिके लिये रुपये पैसे दिये।

(२

दो पहरकी कड़ी धूप, मुहल्ला नीरव था। तब मन्दिरा दालानमें बैठी सुई तागा और फटे कपड़ोंसे गुड़िया बना रही थी। उसकी नरम उङ्गलियां सुईसे क्षत-विक्षत हो रही थीं। लूकी लपटोंसे गोरा रंग लाल पड़ रहा था, किन्तु उसके सदा प्रफुल्ल मुखपर क्लान्तिकी छाया तक नहीं थी।

सो तब गम्भीर मुखसे पहुंच गया नरेश। मोढ़ा जरा सरकाकर मन्दिरा बोली—बैठो भैया, फिर ऐसी धूपमें क्यों निकले?" उसके बाद जरा रुक कर बोलीं—"मेरी दरखास्तोंका कोई जवाब मिला?" उसने अपनी उत्सुकता यद्यपि प्राणपणसे दबानी चाही किन्तु शायद वह नहीं दब सकी। जिस स्वरको सुनकर नरेशका मन जाने कैसा कर उठा परन्तु तो भी सत्यको, हां कटु सत्यको कहना ही था न। एक उल्लसित आशाको चूर्ण विचूर्ण करना ही था न रही हो कदाचित वही उस तरुणीकी भाग्यलिपि।

'कहीं कुछ भी नहीं हुआ।

'नहीं हुआ?"—जैसे इस बातको मन्दिरा विश्वास ही नहीं कर रही थी।

ऐसे बड़े प्रान्तमें इतने ढेरसे स्कूल कालेजोंमें विदुषी वह, सम्मानके साथ एम० ए० उत्तीर्ण वह, उस जैसीके लिये नहीं, परन्तु उसकी जैसी सर्वतोमुखी प्रतिभाके लिये भी कहीं काम नहीं है? तो फिर वह जाय कहां? करे क्या? इस तरह गुड़िया आदि बनाकर अनिश्चित आयपर गृहस्थी कबतक चल सकेगी? और जगह उसके लिये है भी क्यों नहीं?

"क्यों? हठात् वह पूछ उठी—'क्यों'

क्यों?'—नरेश खिन्न हंसा—'क्योंकि तुम गुजराती हो। मातृभाषा तुम्हारी गुजराती है।"

'फिर इससे क्या ?

यह उड़ीसा प्रान्त है। तुम उड़ियाके घर क्यों नहीं जनमी, यही है तुम्हारा अपराध। समझीं ?'

अवाक-विस्मयसे मन्दिरा चुप रही।

'आश्चर्यकी बात है। शिक्षा क्षेत्र एक पवित्र स्थान है। मनुष्यको मनुष्यत्व-का पाठ देना उसका ध्येय, उसका धर्म है, वहां तो संकीर्णताका स्थान नहीं है। यदि ऐसी संकीर्ण मनोवृत्ति लेकर हम चलेंगे तो हमारी भावी सन्तान स्वाधीन देशकी भावी सन्तान क्यासे क्या बनेगी ? जाति-से क्या मतलब है ?

"भूलती हो, यह दलबन्दीका युग है और है अधिकार की स्वेच्छाचारिता, हुकूमतका दुरुपयोग, समझी ? हरएक प्रान्तमें हरएक प्रान्तकी भाषा रहेंगी मद्रासमें मद्रासी, बङ्गालमें बङ्गाली, बरारमें मराठी आदि।"

'क्या कह रहे हो ? राष्ट्रभाषा तो हमारी हिन्दी ही है न ?

"किन्तु हुकूमत तो प्रान्तोंमें जाति-विशेषों की है न ? वह अपने जातिगत ममत्व महत्वको यदि न भूलें ?'

"ओछा विचार।"—विस्मयसे मन्दिराकी आंखें विस्फारित थीं। मन्दिरा उत्तेजनासे भरकर कहने लगी। 'इसका यह अर्थ है कि अब प्रान्तोंके टुकड़े भी होंगे। अखण्ड हिन्दुस्तान तो खण्ड खण्ड हो चुका, अब होंगे प्रान्तोंके टुकड़े भाषाके टुकड़े, आदमीके टुकड़े, घरोंके टुकड़े गाय भैंसोंके टुकड़े सब सबके टुकड़े।' कहते कहते वह कांपने लगी।

किस दारुण आघात निराशाने उस जैसी सदा हास्यमुखी संयत शान्त प्रकृतिकी मन्दिराको इस प्रकार असंयत कर दिया है। इस बातको समझकर नरेश इस दुःखी लड़कीके लिये शङ्कित हो उठा —बैठो मन्दिरा शान्त हो, यही है जिन्दगी।" कहते कहते नरेशने परम स्नेहसे उसका हाथ पकड़कर बठाना चाहा।

उसी पलमें पहुंच गयीं पड़ोसकी विमला बुआ। तीक्ष्ण दृष्टिसे उन दोनों को देखा, बोली—"राम-राम, दिन दोप-हरीमें, बापरे कैसा अन्धेर है।"

दुर्निवार विस्मयसे मन्दिराने यह शब्द सुने, शायद ही कुछ समझ सकी हो, बोली— आखिर बात क्या हो गयी, बैठो न बुआ ?

'बैठूं ? दिन दोपहरीमें यह प्रेम लीला देखनेके लिये ?'

आवाज सुनकर सरस्वती निकल आयी और तब एक क्षुद्र प्रलय-सा हो गया।

रक्तनेत्रोंसे नरेश अड़कर खड़ा कह उठा—जबान संभाल कर बोलो बुआ, किसे क्या कह रही हो ? उस लड़कीके सामने खड़े होनेकी योग्यता पहले कर लो, तब करना उसकी आलोचना।

'अच्छा—अच्छा' कहती हुई बुआ चल दीं।

मन्दिराके नेत्रोंके सामनेसे विश्वका रूप, माधुर्य अन्तर्ध्यान हो गया, लगा उसे दुर्गन्ध कदर्यता आदिके सिवा विश्व में और कुछ भी अवशेष नहीं बच पाया है।

(३)

उस दिन गृहमें प्रवेश कर नरेश विस्मय से विमूढ़ हो गया। उसके चौकेमें बैठी मन्दिरा भोजन बना रही थी।

"तुम-तुम मन्दिरा ? किन्तु इस घर की महाराजिन कहां गयी ?

सहज स्वरसे वह बोली—उसे मैंने छुट्टी दे दी है।

"क्यों ?"

"मैंही अब भोजन बनाया करूंगी।'

पतिके कण्ठस्वरको सुनकर रानी आकर खड़ी हो गयी—मैंने इन्हें बहुत रोका, परन्तु मन्दिरा मानती ही नहीं।

"उठो मन्दिरा क्या कर रही हो?"

दाल चलाती हुई निश्चिन्ततासे वह बोली—अबसे मैं ही इस घरमें भोजन बनाया करूंगी। फिर जरा हंसकर बोली— "परन्तु निःस्वार्थ नहीं, बदलेमें पेटकी रोटी लेकर, समझे न ?"

भयानक आश्चर्यके साथ नरेशने कहा—"हर वक्त मजाक। और गुड़िया, मिट्टीके खिलौने कब बनाओगी ?"

"गुड़िया ? परन्तु बनाकर क्या करूं? कौन लेगा ?"

"क्यों ?"

"पतिताके हाथसे बने खिलौने आदि गांधी, बुद्ध, कृष्ण आदि सब पतित, छत हो जाते हैं न ? कोई नहीं अब लेता।"

मर्माहत पति-पत्नी चुप हो रहे।

"मैं थोड़ेसे दिन यहां रह रही हूं, भाभीने कह दिया है। बहनकी शादी है न।"—तब जरासा सविषाद हंस कर बोली -"बूढ़ा वर मिला, कई बाल-बच्चे। शादीके बाद मैं जाऊंगी।"

"क्यों ?"

"मेरे उस घरमें रहते हुए शादी कैसे होती ? पतिता जो हूं।"

रानीने दृढ़तासे कहा—"तुम हमेशा यहां रहो मन्दिरा, यह तो मेरे लिये खुशी की बात है, किन्तु भोजन महाराजिन ही बनायेगी। हां यों तुम मानने की नहीं, तुम्हारी हठ मैं जानती हूं। तुम राधाकृष्ण जीकी सेवाका भार लो बहन। पुजारीजी के मरनेके बाद कोई नहीं मिला और मुझ से संभलता नहीं। लोगी बहन ? दोगी मुझे छुट्टी ?"

विस्मयका प्रथम तेज संभालनेके बाद मन्दिरा बोली—"मैं मैं ? मुझे दोगी भाभी मन्दिर प्रवेशका अधिकार ? मुझ भ्रष्टाको ?

धमकाकर रानीने उत्तर दिया— "क्या कह रही हो ? बार-बार अकारण अपनेको अपमानित कर क्यों स्वयं अपनी दृष्टिमें छोटी बन रही हो ? और सुनो। मैं अपने पतिको जितना जानती हूं उतना ही तुम्हें भी। चलो उठो। आजसे मन्दिर की पुजारिनी तुम हो। यदि हम किसीको सम्मान नहीं दे सकते हैं, तो उसे मौतके मुंहमें ढकेलनेका भी अधिकार हमें नहीं है। दुनियांमें जी सकनेका अधिकार हर एकको है। कलसे तुम्हीं पूजा करोगी।

(४)

उस प्रातःकालमें नरेशके विख्यात प्रकाण्ड राधाकृष्णके मन्दिरमें भीड़ लगी

हुई थी। शहरके दानी मानी व्यक्तिगण एकत्रित थे। राधाकृष्ण मूर्तिके टुकड़े-टुकड़े होकर धरतीपर पड़े हुए थे। और मन्दिरके बीचमें खड़ी मन्दिरा निर्निमेष लोचनसे उन टुकड़ोंको देख रही थी।

"मूर्ति किसने तोड़ी ?"—नरेशने क्षुब्ध स्वरसे पूछा।

भ्रान्तसी दृष्टि उठाकर मन्दिराने प्रश्नकर्ताको देखा, फिर वैसे ही उद्भ्रान्त स्वरसे कहने लगी—"आदमीकी गलतीने किया हिन्दुस्तानके टुकड़े, पशुत्वने किया आदमीके टुकड़े, हुकूमतने किया विवेकके टुकड़े, स्वार्थने किया भाषाके टुकड़े और मन्दिराने किया राधाकृष्णके टुकड़े। क्या आँखें फाड़कर देख रहे हो ? यदि संसार और जन मन, धन जाति तथा भाषाके टुकड़े-टुकड़े किये जा सकते हैं, करनेकी जरूरत है तो देवताके भी टुकड़े क्यों न हों ?"—फिर मूर्तिके हाथ पैर उठाकर कहने लगी— 'यह है हाथका टुकड़ा, यह है पैरका टुकड़ा, खण्ड-खण्ड, टुकड़े-टुकड़े।" इसके बाद वह पड़ी हुई कटारको उठाकर अपने ही हाथ विद्ध करनेको उद्यत कहने लगी—"और यह है मेरे हाथ का टुकड़ा।"

नरेशने कटार छीन ली।

"एक भ्रष्टा कुलत्यागिनीको जब मन्दिरकी पुजारिनी बनाया तभी हम जानते थे कि ऐसा कुछ होगा ही।"—कोई बोला।

तब धीर गतिसे पहुंची रानी, मन्दिराको गलेसे लगाकर बोली—"मन्दिरा मैं तेरी भाभी ही नहीं किन्तु नारी हूं। नारीके आत्मसम्मानसे मैं परिचित हूं,। इस मन्दिरकी पूजा इस घरकी बहू ही कर सकती है, दूसरी कोई नहीं और इसीलिये मैंने अपने हाथों तुझे यह भार सौंपा था।"

नरेश गुनगुनाया—"रानी रानी—"

मन्दिराकी चेतना लौटी सी, उसने आकुल दृष्टिसे एक बार जनता नरेश, मूर्तिके भग्नांशके प्रति देखा, फिर दोनों हाथसे मुंह ढापकर रो उठी।

"चुप रहो बहन, आदमी किस आघात, किस मनोवृत्तिसे ऐसा कर सकता है, करता है, उसे मैं जानती हूं, इस घरकी बधू हो तुम –"

"भाभी भाभी, असम्भव आदेश मत दो।"

रानी मुस्कराई—"असम्भव ?" फिर मृदुस्वरसे बोली—"सम्भव है या असम्भव इस बातको जरा अपने मनसे पूछो।"

वे दोनों चल पड़ीं। अभिभूत सा नरेश खड़ा रह गया।

———

प्रभावशाली व्यक्ति

जीलेट से हजामत बनाते हैं।

प्रभावशाली व्यक्ति इस बातको महसूस करते हैं कि अच्छा प्रभाव डालनेके लिए ताजे और अच्छी तरहसे हजामत बनाये हुये चेहरेका कितना महत्व होता है। अतएव यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वे जिलेट ब्लेडोंका उपयोग करते है। वे जानते हैं कि जिलेट सभी बाल बनाने की प्रणालियों में सर्वोत्तम एवं सबसे सस्ती होती है।

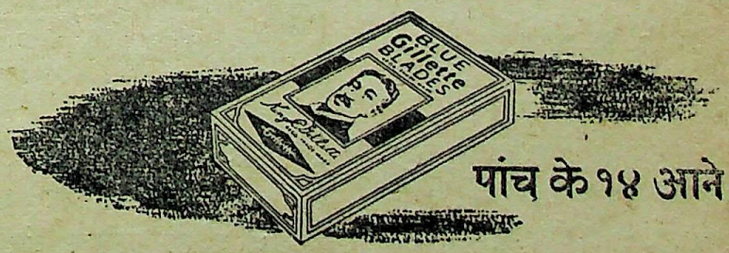

पांच के १४ आने

Blue Gillette Blades

ब्ल्यू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये!

भारतका शुक्रतारा

(१४ वें पृष्ठका शेषांश)

पुरुषकी आत्माकी शांति हमारी प्रार्थना पर मुनहस्सर है तो संसारमें किसी भी व्यक्तिकी आत्माको शांति मिल ही नहीं सकती।

सूर्य अस्ताचलके समीप पहूंच रहा है और गांधीजी ईश्वरके चरणोंमें अपनी प्रार्थना करने जा रहे हैं। सूर्य अस्त हुआ और गांधीजी ईश्वरके चरणोंमें बिलीन हो गये। भारतका सूर्य अस्त हो गया। दिन और रातके सुन्दर मिलापके समय गांधीजी चले गये। जिस अंधकार और प्रकाशके मेलके लिये वे प्रयत्न करते रहे अंत समय भी उसे मिलाकर ही वे गये।

शुक्रवारका दिन बड़े महत्वका है। ईसा मसीह भी शुक्रवार ही को सूली पर चढ़ाये गये थे। अब्राहम लिंकन भी शुक्रवारको ही गोलीके निशान बने थे। और गांधीजी भी शुक्रवारको ही परलोकको सिधारे। ग्रहोंमें शुक्रतारा सबसे अधिक तेजस्वी होता है। आशा है कि आगे चल कर गांधीजीकी हिदायतें और नसीहतें हमें शुक्रतारेकी तरह नये दिनकी सूचना देंगी-नये भारतको सुदृढ़ बनानेके लिये हमारा मार्ग प्रदर्शन करेंगी।

मेरा एक सुझाव यह भी है कि जगह जगह छोटी छोटी मूर्तियां बनानेकी बजाय एक ऐसा विशाल मूर्ति किसी योग्य स्थल पर (खासकर समुद्रके किनारे) बनाई जाय जो संसारमें अपने दर्जेकी एक हो जिसे बाहरसे आने वालोंको देख कर ही भारत पिताको श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनेकी प्रेरणा मिले।

जिन्होंने शांतिके लिये दुख उठाया

(१६ वें पृष्ठका शेषांश)

जबतक किसी भी देशमें भर्ती चालू रहेगी, ऐसी बातें होती ही रहेंगी। मार्था स्टीनिज पूछती है: 'हम ऐसी सरकारोंकी ईमानदारीमें कैसे विश्वास करें, जो शांति की हिमायत करनेका दावा करती हैं, लेकिन शांतिके लिये कुरबानियां करनेवालोंको जंगली जानवरोंकी तरह लोहेके सीखचोंमें बन्द रखती है ?'

वह क्रान्तिकारी युग निर्माता

(१३वें पृष्ठका शेषांश)

उठे हुए हाथ एक दूसरेका आलिङ्गन करनेके लिये झुक गये। पागल हुए बिहार ने गांधीमें बुद्धका दर्शन किया। पंजाब उनके आनेकी बात सुनकर पीला पड़ गया और दिल्लीमें शांति स्थापनाके लिये रात-दिन एक कर देने वाले जवाहरने भी बापूको पाकर सन्तोषकी सांस ली।

पर शैतान यह देख न सका, सह न सका। देशकी समस्त प्रतिक्रियावादी, स्वार्थरत शक्तियां उस महात्माके रास्तेमें आड़ी लकीर बनकर खड़ी हो गयीं।

और सबसे आगे उनके था साम्प्रदायिकताका दानव हाथमें सन्तहन्ता रिवालवर लिये और सबसे पीछे था पूंजीवादका शैतान दोनों हाथोंमें थैली लिये। पर वह महात्मा रुकना क्या जाने। वह बढ़ा ही चला जा रहा था कि पीछे से शैतानने ललकारा और सामने खड़े दानवने तलवारके साम्राज्यके स्थान पर अध्यात्मके साम्राज्यकी रचना करने वाले बापूको अपने रिवालवरका निशाना बनाया। उसे धराशायी दिया, मानवता चीख उठी। उसका आर्तनाद शैतान और दानवके अट्टहासको भेदकर भूमण्डलपर व्याप्त हो गया। वह स्वयं सिसकियां भर रही है पर दृढ़ताके साथ कहती है—क्षमा साहसको ढाढ़स बंधाती है—भूल जाओ अतीतको, उनके कार्य और कीर्ति अनन्त काल तक जीवित प्रतिध्वनित और प्रतिभासित रहेंगे और संकेत देते रहेंगे उठो और बनाओ अपने भविष्यको !!

—०—

"जुल्फे कश्मीर" हेअर आयल

स्त्रीकी विजय सौन्दर्यमें है और सौन्दर्यका भेद है उसके बाल। **जुल्फे काश्मीर हेयर आईल** स्त्रीके बालोंको घने, लम्बे मजबूत और चमकीले बनानेमें अद्वितीय है। बाजारी तेलों पर धन नष्ट करने की बजाय जुल्फे काश्मीर हेअर आईल सेवन करें। यह एक शताब्दी से भी अधिक ख्याति प्राप्त है, आप सदैव इसे ही पसन्द करेंगे।

काश्मीर परफ्यूमरी वर्क्स
कटरा बरोड, दिल्ली

विश्वधर्म प्रवर्तक बापू

प्रो० बजनाथ पुरी

महात्मा [illegible] राष्ट्रपिता तो अवश्य ही रहेगा किन्तु विश्व इतिहासमें उनको शान्ति दूत के स्थान पर विश्व धर्म प्रवर्तक कह देना अनुपयुक्त न होगा। प्रार्थना सभामें भाषण देते समय उन्होंने कई बार कहा है कि यदि हिन्दू धर्मकी कोई रक्षा कर सकता है तो मैं हूं। उस हिन्दू धर्मको बापूने संस्कृति और सभ्यताको दृष्टिमें रख कर, भारतीय एकताकी कसौटी पर कसकर एक उज्ज्वल पथ प्रदर्शकके रूप में प्रस्तुत किया है जिसमें ऊंच नीच, छोटे बड़े और भिन्न-भिन्न सम्प्रदायोंकी भोंड़ी भिन्नताका अभाव है। ईश्वरको एक मान कर, उसको अपनी आत्माका स्वरूप, जगद ब्रह्म, सर्वव्यापी रूप देकर बापूने अपनी प्रार्थना सभाका महत्व एक नियमित समय पर सब धर्मावलम्बियोंको एकत्रित कर उसीके प्रति श्रद्धांजलि तथा उसके गुण गाकर प्रदर्शित किया है। क्या उस ईश्वरको केवल मीरा, गुरु नानक और सन्त तुकारामके भजनोंमें ही पुकारा जा सकता है? यह बात नहीं है। बापूके लिये तो सब धर्म उसी एक ईश्वरकी आराधना करते थे, तो यदि उसीकी स्तुति कर अपने हृदयकी शुद्धि करना है तो फिर धार्मिक रूढ़ियोंका ढोंग कैसा? उसे यदि भिन्न भिन्न नामोंसे पुकारा जा सकता है तो उसकी स्तुतिमें भेदभाव कैसा? यदि सब मिलकर भिन्न भिन्न प्रकार से उसकी स्तुति करें तो हृदय शुद्धि और ज्ञान प्रकाश प्रदर्शनके लिये वह कैसे मुंह मोड़ सकता है? बापूकी प्रार्थनामें भजन वैदिक ध्वनिके साथ ही साथ कुरानकी आयतों और गुरुग्रन्थ साहबके शब्दों [illegible] कहना था कि ईश्वरकी स्तुतिमें धार्मिक भिन्नता कैसी? क्या वदिक रूपसे पुकारनेमें वह आ जायगा और कुरानोंकी आयतसे वह दूर भागेगा? यदि ईश्वरके लिये दोनों ही समान हैं तो उसीके अंश पुरुषमें यह भेद भाव कैसा? यह सामाजिक आडम्बर भले ही हो पर ईश्वरके सामने साम्प्रदायिक और ऊंचनीचका भाव कोई महत्व नहीं रखता। बापू द्वारा धार्मिक एकताको क्रियात्मक रूपमें परिणत करना, भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में उस विश्व धार्मिक मन्दिरमें एक और सोपानका निर्माण करना था, जिसकी नीव आजसे सहस्रों वर्ष पहिले वैदिक मंत्रोंमें डाली गयी थी और जिसके निर्माता क्रमशः वैदिक ऋषि, अशोक, कनिष्क तथा अकबर इत्यादि भारतीय विभूतियां रह चुकी हैं, जिनके इस विश्व धर्म प्रवर्तक कार्यकी चर्चा भले ही कहीं छिपी हुई मिले अथवा न भी मिले किन्तु अन्वेषण कर खोज निकालना कठिन नहीं है। बापू का अवतरण भारतको स्वतंत्रता दिलाने के लिये अवश्य हुआ पर साथ ही साथ यह स्वतंत्रता धार्मिक एकताके साथ बंधी हुई थी, अस्तु इस युगमें गीताके अनुसार 'धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे' को दृष्टिकोणमें रखते हुए यह भलीभांति विदित है कि पथ प्रदर्शकके रूपमें बापूने धार्मिक एकता और विश्व धर्मका मार्ग दिखाया है। उनके जीवनके इस अङ्गका महत्व समझनेके लिये ऐतिहासिक दृष्टिकोणसे इस विषयपर प्रकाश डालना आवश्यक है।

[illegible] धार्मिक और साम्प्रदायिक एकता की भावनाका विकास हुआ। रिग्वेदमें एक रिक है:—

'इन्द्रं मित्रं वरुणामाग्निमाहु रथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान।

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वाननाहुः॥"

अर्थात 'उसे इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि और सुन्दर पङ्खोंवाला गरुण कहते हैं, मुनिजन भिन्न २ नामोंसे उस विभूतिको पुकारते हैं किन्तु वह एक है।' ईश्वरका एक स्वरूप और महात्माओंका उसे भिन्न भिन्न नामोंसे पुकारना (एकं सद विप्रा बहुधा वदन्ति) इसने भारतीय सांस्कृतिक क्षेत्रमें बड़ा कार्य किया और इसी एकता की चट्टान पर बह कर धार्मिक प्रवाहोंने अपना अस्तित्व स्थापित रखा। अन्य विभूतियोंके साथ ही साथ ऐतिहासिक युगमें तीन महान आत्माओंने इस चट्टान को और सुदृढ़ बनानेमें सहायता दी। वे थे अशोक, कनिष्क और अकबर। इनके कार्योंको व्यक्तिगत रूपमें प्रदर्शित करना उचित होगा। उन्हींको दृष्टिकोणमें रख कर बापूकी क्रियात्मक नीतिका दिग्दर्शन करना होगा और उसे समझना भी सरल होगा।

अशोकके विषयमें यह कहना भूल होगी कि वह बौद्ध धर्म प्रवर्तक था और अपने राज्यपदका दुरुपयोग कर उसने चट्टानों और शिलालेखों द्वारा बौद्ध धर्म का प्रचार किया। इसमें सन्देह नहीं कि वह स्वयं बौद्ध था पर जिसकी शरण लेकर उसने रावलपिण्डी जिलेके शाहबाज गढ़ी और ऐबटाबादके मनसेरासे मैसूर के ब्रह्मगिरि तथा सिद्धपुर और पूर्वमें

उड़ीसाके धौली और जौगड़से, पश्चिममें जूनागढ़के गिरनार तथा बम्बई प्रान्तके सोपाराके लेखोंमें जो कुछ लिखवाया, वह बौद्ध धर्मकी शिक्षाएं न थीं वरन विश्व-धर्मके कुछ सूत्र थे जिनका प्रयोग गृह तथा वाह्य जीवनमें किया जा सकता था। यह सूत्र ऐसे थे जिनका निषेध कोई भी धर्म नहीं कर सकता और आज भी दो सहस्र वर्षोंके पश्चात् बापू उनका प्रयोग केवल अपने आत्मिक जीवनमें ही नहीं प्रत्युत सम्पूर्ण जगत्के सम्मुख प्रदर्शित करते रहे। अशोकने प्रत्येक व्यक्तिके लिये यह करना अनिवार्य रखा कि सबसे पहिले वह अपने घरको इस ढंगसे रचे कि उसमें शांतिके अतिरिक्त ऊंच नीचका भेद भाव न रहे। दानकी भांति धर्म भी गृहसे आरम्भ होना चाहिये। इसलिये उसने चार गुणों पर विशेष अनुरोध किया—दया दान, सत्य और शौच (अथवा आन्तरिक और वाह्य शुद्धता)। इनमेंसे प्रथम दो का प्रयोग पशुओं और चाकरोंके प्रति होना आवश्यक है। बाहरके क्षेत्रमें उसका बारहवां शिलालेख, जिसे सहिष्णुता लेख कहते हैं, सबसे प्रमुख है। इसमें लिखा है कि यदि किसी धर्मने इस बातका प्रयत्न किया कि वह दूसरे धर्मको नष्ट करदे तो नष्टा स्वयम् नष्ट हो जायगा। प्रत्येक व्यक्तिके लिये यह मान लेना अनिवार्य है कि हर एक धर्ममें सत्यता अवश्य है। मार्ग चाहे भिन्न भिन्न हो पर उनका ध्येय एक ही है। इसका परिणाम यह होगा कि आपसी वादाविवादोंका अन्त हो जायेगा, किन्तु सब धर्मोंके सारकी वृद्धिके लिये यह आवश्यक है कि यथा समय और कालमें सामाजिक दिग्दर्शनों के स्थान पर धर्म सभाएं हो जिनमें पारस्परिक धार्मिक विचारोंको प्रस्तुत किया जा सके। इसके फलस्वरूप श्रोताओंके ज्ञानकी वृद्धि होगी। वातावरण और दृष्टिकोण भी संकुचित न रह कर वृहत् और सार्व लौकिक स्वरूप धारण कर लेंगे। विचारोंके परिवर्तनसे मनुष्य की प्रवृत्तिमें भी परिवर्तन होना अनिवार्य है और आपसका परिवर्तन भ्रातृभावको स्थान देगा।

बापूके विचारोंमें उनकी प्रार्थना सभामें जो अशोकके धर्म-मंगलसे कम महत्वकी न थी, और उनके क्रियात्मक कार्योंमें विश्व धर्मकी मात्रा लेशमात्र भी कम न थी। अशोककी भांति उन्होंने भी अपनी प्रार्थना सभामें दिये गये भाषणोंमें अनेकानेक बार हिन्दू और मुसलमानोंसे अनुरोध किया था कि यदि किसी धर्मावलम्बीने इस बातका प्रयत्न किया कि बल प्रयोगसे वह विपक्षी-धर्मको नष्ट कर देगा तो इसका विपरीत प्रभाव पड़ेगा और वह धर्म स्वयम् ही नष्ट हो जायगा। यह बात हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों ही के लिये लागू होती है। 'हिन्दुस्तान केवल हिंदुओंका देश' की नीति का खण्डन करते हुए उन्होंने सदैव ही चिन्ता प्रकट की और कहा कि ऐसा करना भारतके राजनीतिक अस्तित्वको नष्ट करना तो होगा ही पर इससे स्वयम हिन्दू धर्म की सत्ता नष्ट हो जायगी। सत्यके मार्गका अन्वेषण कर दया और दानका सहारा लेकर और आन्तरिक तथा वाह्य शुद्धिकी चादरमें बापूने संसार के सामने यह प्रस्तुत कर दिया कि सत्य एक धर्म है जिसके आधारपर संसारकी बड़ीसे बड़ी लड़ाई जीती जा सकती है। अहिंसा, जिसका उल्लेख अशोकने अपने शिला लेखोंमें किया है, बापूकी लाठी थी जिसके आधारपर उन्होंने रूढ़िवादियों से लोहा लिया और विजय प्राप्त की थी। सहनशीलताका इससे अधिक क्या प्रमाण हो सकता है कि मुसलमानोंके हितके लिये उन्होंने अपने प्राणोंकी बाजी लगा कर संसारके सम्मुख अपने धार्मिक दृष्टिकोणको प्रदर्शित कर दिया। प्रार्थना सभामें भिन्न भिन्न सम्प्रदायों द्वारा की हुई भगवानकी स्तुति उनकी धार्मिक एकताका जीवित चित्र प्रदर्शित करती है। बापूका ईश्वर केवल हिन्दू धर्म तक सीमित नहीं था। उन्हें अपने सनातन धर्मपर गर्व था और इसे उन्होंने कई बार कहा भी था। गीता उनकी आशा थी, अन्धकारके समय प्रकाश प्रदर्शित करने का एकमात्र साधन थी, पर उनका धर्म विश्व और सार्वजनिक था, जिसमें साम्प्रदायिकता और ऊंच नीचका भाव न था। यदि अशोकने पशुओं और चाकरोंके प्रति दान शीलता घोषित कर अपने धर्मकी महानता प्रकट की तो बापू ने स्वयम अपने हाथोंसे कुष्ट रोग पीड़ितों की शुश्रूषा कर यह दिखा दिया कि मनुष्य ही ईश्वरका रूप है और मनुष्यकी सेवा ही ईश्वरके प्रति प्रीति प्रदर्शित करने का सबसे बड़ा साधन है। आन्तरिक शुद्धिके सम्मुख शत्रुके प्रति भी भेदभाव की भावना नहीं रहती। किसी 'बहके हुए' नवयुवकने उनपर बम फेंका पर उनके हृदयमें उस व्यक्तिके प्रति घृणाका स्थान दयाके भावोंने ही लिया। यहांतक कि जब एक नराधमने उनपर गोलियोंके वार किये तब भी गिरनेसे पहले बापूने अपने उस हत्यारेको हाथ जोरकर प्रणाम ही किया। घायल और अचेत बापूके मुखपर सौम्यता और दयाके ही भाव अंकित थे। बापूका नश्वर शरीर जब कि उनकी परमपवित्र आत्मा महाप्रयाण कर चुकी थी, पुकार पुकार कर यही कहती सी प्रतीत होती थी कि सभी दयाके पात्र हैं, अस्तु, मेरा हत्यारा भी है।

जिस विश्व धर्मको अशोकने अपने लेखों द्वारा प्रदर्शित किया, बापूके प्रार्थना सभामें दिये गये भाषणोंमें उसके एक एक अंशको क्रियात्मक रूप प्रदान किया गया। इससे बढ़कर विश्वधर्म प्रवर्तक कौन हो सकता है? जिस प्रकार अशोक का विश्वधर्म ताम्रपर्णी (सिलोन) के अतिरिक्त यवन राजा अलिकसुन्दर मिस्रके टालमी, अंतिगानस और अंतिआकसके यहां तक पहुंच गया था, बापूकी वाणीका प्रभाव विश्वके कोने कोनेमें पहुंच चुका है, और इस विश्वविभूतिको केवल

शान्तिका पुजारी ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्वको एक सूत्रमें बांधनेवाला कहा गया है।

कनिष्कने ऋग्वेदके ऋक्को क्रियात्मक रूपमें परिणत किया। उसने सब धर्मों के देवताओं के चित्र अपने सिक्के पर खुदवाये। यदि एक ओर यूनानी देवी अथवा देवताकी मूर्ति थी तो दूसरी ओर भारतीय देवता महेश्वर अथवा बुद्धजीवी मूर्ति थी। इससे यह प्रतीत होता है कि उस समय यह पूर्ण रूपसे विदित था कि भिन्न भिन्न रूप होते हुए भी, वे सब केवल एक ही आत्मा अथवा परमात्माके रूप थे। बापू यद्यपि साकारकी श्रेणी पारकर निराकार अथवा अक्षर ब्रह्मकी अनुभूतिमें लीन थे, पर वह मूर्त्ति पूजाके विरोधी न थे। उनके अक्षर ब्रह्ममें तो भेदभावको कोई स्थान ही प्राप्त न था। ईश्वर, परमात्मा, खुदा और गाड सब तो एक ही स्वरूपके भिन्न भिन्न नाम हैं और यदि उसीका आश्रय सर्व धर्मावलम्बी लेते हैं तो फिर आपसका वैमनस्य कैसा? जिसकी प्राप्तके लिये मार्ग तो सबके पृथक पृथक हैं पर लक्ष्य एक है तो फिर ये विभिन्न पन्थानुगामी पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष और घृणाके शिकार क्यों? अकबरकी दीन इलाही' चलानेकी नीति भी एक सर्वजन सम्मत अथवा विश्वधर्म प्रस्थापना की योजना थी। इसके कारण भेदभाव जाता रहा पर उसके प्रपौत्र औरंगजेबकी पक्षपातयुक्त नीतिने मुगल साम्राज्यका ह्रास किया।

जिस दिन बापूपर बम फेंका गया उसके दूसरे दिनकी प्रार्थना सभामें हुए उनके भाषणसे एक बात प्रत्यक्ष रूपसे प्रतीत होती है। बापूने इसके पहले अपने अवतरणका उद्देश्य सर्वथा गोपनीय ही रखा था पर उस दिन उनके मुंहसे सहसा निकल ही गया कि यदि ईश्वर हिन्दूधर्म की रक्षाके लिये किसीको भेज सकता है तो वह मैं हूं। गीतामें भगवानने कहा है 'यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानाय धर्माय तदात्मनं सृजाम्यहम्।' इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं कि 'धर्मसंस्थापनार्थाय' ही उस गीताके भगवानने बापूके रूपमें अवतार लिया था। इस दृष्टिकोणसे अपना कर्तव्य, जैसा भगवान् श्रीकृष्णने गीताके अन्तमें कहा है :—

सर्व धर्मानपरित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच।

यह है कि केवल बापूमें सब धर्मको छोड़कर श्रद्धासे मन लगायें। बौद्ध धर्ममें भी अन्तमें भक्तिकी भावनाने पदार्पण किया और यही भाव ललित विस्तार नामक पुस्तकमें लिखे हैं :—

येकेयिन्मम श्रद्धास्यान्ति तानहमुपाददामि,
मित्राणीवयम तानि (ते) मम शरणातः।

भगवान श्रीकृष्णने गीतामें अर्जुनसे कहा है कि हे पार्थ मैं एक विशेष उद्देश्यको लेकर इस मृत्यु लोकमें पदार्पण करता हूं और अपना कार्य सम्पन्नकर अपनी लीला संवरण कर लेता हूं। मेरे ऐसे अनेक जन्म हुए हैं। बादमें मेरे भक्तजन मेरी उन्हीं लीलाओंका स्मरण करते हुए मुझ द्वारा निर्दिष्ट मार्गपर चल मोक्ष लाभ करते हैं। भगवानने कहा है कि मेरे ऐसे जन्म आगे भी होते रहेंगे। बापूकी अलौकिक लीलाओंपर मनन करनेसे हमें ज्ञात होता है कि वह भगवानकी एक महान विभूति थे। सम्भव है अपना कार्य पूर्ण जान कर ही उन्होंने अपनी लीला संवरण की हो। आज वह अपने परमधामको पधार गये हैं पर वह हमारी आशा है, और उन्हींके व्यापक दृष्टिकोण धार्मिक क्षेत्र समदर्शी भाव तथा ईश्वरी शिक्षाओंका सम्बल ग्रहण कर हम आत्मिक शुद्धता और स्थिर भक्तिभावके बीज बो सकते हैं। बापूके रूपमें प्रकट हुई ईश्वरीय महाविभूतिने भारतको ही नहीं प्रत्युत समस्तसंसारको जिसअलौकिक छटासे आलोकित किया था उसका वास्तविक महत्व केवल भावी इतिहासकार ही आंक सकेंगे। प्रेसोवा)

साप्ताहिक विश्वामित्र
—: की :—
एजेन्सी
लेकर लाभ उठाइये।

मनुष्यके पास समृद्ध बनाने के लिये अनेकों सुख सामग्री और अगाध सम्पत्ति भले ही हो परन्तु सुन्दर स्वास्थ्य और सम्पूर्ण शक्ति के बिना उसका जीवन दुखमय और कठिन हो जाता है। जीन सीन गोल्ड टानिक पिल्स पुरुष जातिको निर्बलता से बचाकर शुद्ध वीर्य का विकास कर उसमें नवीन शक्तिका संचार कर उन्हें पुष्ट बनाती है। आठ दिन के लिये ४८ गोली की एक शीशीका मूल्य ५) वी० पी० खर्च अलग। परहेजकी आवश्यकता नहीं होती और प्रत्येक मौसम में सेवन किया जा सकता है।

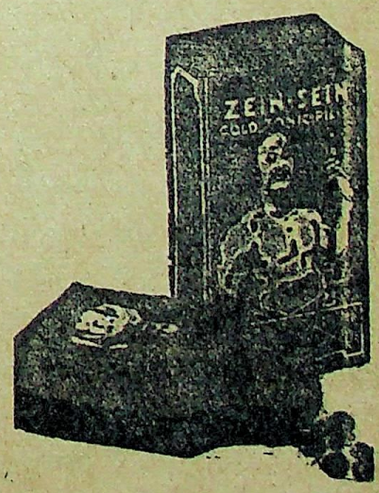

चाईनीज मेडिकल स्टोर स्थापना १९३०
हेड आफिस—२८ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट बंबई
शाखायें—चार रास्ता, अहमदाबाद १२, डेलहौसी स्क्वायर कलकत्ता, नया बाजार, दिल्ली

निर्मोही बापू

ले०—श्रीमती विद्या देवी विद्याविनोदिनी

मेरे बापू! तुम तो सदा निर्मोही रहे हो, न जाने इस निठुरतामें तुमको क्या मजा मिलता है। वादा करते हो और भूल जाते हो। सहारा देते हो और लापता हो जाते हो, अपना चमत्कार दिखा कर हृदय ले चुराते हो और फिर दर्शनतक नहीं देते। इस निठुरता और विस्मृतिने गजब ढा दिया है, कोई उलाहना दे कोई लाख सर पटके लेकिन तुम को क्या परवाह? तुम तो पक्के निर्मोही हो न?

उसी सेवाग्राममें आश्रमके बालकोंके साथ तुम क्रीडा किया करते थे। प्रातःकाल उनके साथ दौड़ लगाते थे और दौड़में उनके आगे बढ़ जानेपर कितने हंसते थे उन्हें खिजाते थे, चिढाते थे, और फिर प्यार करके उन्हें हंसाते थे।

राष्ट्रपिता बापू?—सेवाग्रामका सन्त गांधी एक दिन अपनी बेवफाईका परिचय दे ही तो गया। चल दिया शांति दूत होकर शांतिका पाठ पढ़ाने और हिन्दू मुसलमानको मिलाने पूर्वी बंगाल को। लाख समझाया पर कौन माने! सब रोते रह गये, आह भरते रह गये, हाथ मलते रह गये। लेकिन निर्मोही चले ही गये। न कोई समाचार न कोई चिन्ता। बाद मुद्दतके आप कलकत्ते आये। यों कहिये कि एक नया वियोग साथ लाये। वियोग विह्वल प्रिय जनोंको सान्त्वना देना तो अलग रहा उलटे अनशन कर बैठे। जले पर नमक छिड़का। खूब निवाहा प्रेम और अच्छा रास्ता बतलाया तुम तो संसारके झंझटोंसे मुक्त होनेकी तैयारी कर बैठे और हम लोगोंके सिर आजाद भारतकी रक्षाका भार दे डाला। भला जरा सोचो, यह तुम्हारी कितनी बड़ी निठुरता है? इस बेवफाईका भी कोई ठिकाना है? बापू, तुम छलिया हो, कपटी हो, और पक्के निर्मोही।

लो तुम कितने बड़े पक्षपाती हो यह भी सुन लो। शायद यह बात तुमने नहीं हूं, बापू! तुम्हारे पक्षपातका हिसाब आज भी मेरे पास है। तुम बड़े हो, भूल भी जा सकते हो, परन्तु मैं कैसे भूलूं? उस दिन जब नोआखालीमें मनुष्य मनुष्यताको भूल कर पशु हो रहे थे, मनुष्यका जीवन तथा स्त्रियोंका सतीत्व खेलवाड़ हो रहा था, तब तुम उन असहायोंकी पुकार पर रामके अमोघ बाणकी तरह चल कर उस भयानक दावानलमें कूद पड़े, केवल एक जिलेके असहायोंकी सहायता करनेके लिये और आ जब कि सम्पूर्ण भारतवर्षपर विपत्तिके बादल मण्डरा रहे हैं, भाई भाई आपसमें एक दूसरेका खून बहानेका अवसर खोज रहे हैं, अबलाएं हैं, भारतकी आजाद नौका डगमग डगमग डूबना चाहती है, गुण्डोंके खूनी तूफान ने ऐसी अशांति उत्पन्न कर दी है कि लोग मौतको कलेजेसे दबाये, किं कर्तव्य विमूढ़ हो गये हैं, तुम हमें मझधारमें छोड़ कर चिर शांतिकी नींद सोने चले गये। मानो यहां कुछ हो ही नहीं रहा है। क्या इससे भी अधिक भारतकी दुर्दशा देखने की अभिलाषा बाकी है बापू? तुम हमें छोड़कर चले गये, किन्तु जरा आंखें खोलकर देखो तो सही कि तुम्हारे जवाहरका क्या हाल हो रहा है? आंखें रोते रोते लाल हो गयी हैं, सुबकियां ले लेकर रो रहा है बेचारा। आजाद को देखो, किसीके भी आंसू तो रोके नहीं रुक रहे हैं, भारतकी उलझी गुत्थियां सुलझाते सुलझाते जब और भी उलझती ही जाती थी तब जवाहर दौड़कर जाता था तुम्हारे श्री चरणोंमें। कौन करेगा उसका पथ प्रदर्शन? कौन उसे सहारा देगा?

वापस कर दो हमारी थाती को, बंगालको यह थाती दी थी उसने वापस कर दी। किन्तु ओ जालिम राजधानी तुम हमारे बापूको हड़प ही गयी। तुमने यह क्या किया? किस धातुकी वह गोली थी? कौनसे लोहेका वह पिस्तौल था? जिसने हमारे राष्ट्रपिता और जनताके सर्वाधिक प्रिय और श्रद्धास्पद नेता, अहिंसाके प्रतीक शान्तिके ईश्वरीय दूत और सन्त, स्वाधीनताके महान सैनिक, दीन हीन और पीड़ितोंके सर्वश्रेष्ट कृपालु बापूको हर लिया। किन्तु नहीं किसी मानबमें ऐसी शक्ति कहां है कि बापू कोहर ले सके, बापू खुद ही संसार छोड़कर चले गये, रात दिनके नर संहार से, भाई भाईकी दुश्मनीसे, मां बहिनोंके अपहरणसे, बापूने दुखी होकर अपना शरीर त्याग दिया। बापू चला गया! बापू हमें छोड़कर चला गया!! निर्मोही बापू!!!

दुनिया रोती है

मानवताका दीप बुझ गया, दुनिया रोती है।
कंठ रुद्ध है, कैसे गाये
कलम रुकी कैसे लिख पाये,
सजल नयन हैं मूक भावना,
शब्द नहीं, कैसे कह पाये?
आंसूकी बून्दोंमें कविकी, कविता रोती है।
दलितों का उपवन मुरझाया,
शेष सहारा, आज छिन गया,
नभ के तो फिर चांद खिलेंगे,
मगर जमीं का चांद छिप गया।
अरमानोंकी राख लपेटे कलियां सोती हैं।
दुख के बादल, युग पर छाये
महल झोपड़ी, नीर बहाये,
मन्दिर मसजिद के पत्थर भी,
प्रथम बार पिघले पछताये,
नर-नारी भू क्या? अम्बरकी छाती फटती है।
उच्च हिमालय व्यथित रो रहा,
गंगा की आकुल, धारों में,
खोज रहा, सागर चुपके कुछ,
नीली यमुना की लहरों में,
किसने कहो लुटाया कैसे जगका मोती है?
तुम तो मिटे, नहीं मिट सकता
बापू यह बलिदान तुम्हारा,
ज्योति जलेगी युग युग जग में
जबतक हिन्दुस्तान तुम्हारा।
दीप बुझाया दानवने पर, बाती जलती है।

—रणधीर साहित्यालंकार

बुनियादी तालीम

(लेखक—श्री बाबूराव जोशी 'साहित्यरत्न)

शिक्षाका जीवनमें बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा शास्त्रियोंका कहना है कि मनुष्यके ईश्वर प्रदत्त गुणों और शक्तियोंका विकास करना ही शिक्षाका उद्देश्य है। शिक्षा मनुष्यको जीवनकी कला सिखाती है। वह मनुष्यको भावी जीवनके लिये तैयार करती है। अतः शिक्षाका ध्येय है मनुष्यको स्वावलम्बी, जितेन्द्रिय, निर्भय और योग्य बनाना। जो शिक्षा यह नहीं करत, वह शिक्षा शिक्षा नहीं है। शिक्षा एक ओर सद् असद् विवेक जाग्रत करती है तो दूसरी ओर ज्ञानको कार्य रूपमें परिणत करना सिखाती है। संक्षेपमें कहें तो कह सकते हैं कि वह उसे मुक्तिके योग्य बनाती है। साविद्या या विमुक्तये।' वह अंतः करण को शुद्ध करती है, मन और इन्द्रियोंको वशमें रखना सिखाती है और निर्वाहका साधन भी बताती है।

लेकिन अंग्रेजके आगमनके बाद जिस प्रकार की शिक्षा प्रारम्भ हुई वह अपने मूल उद्देश्यसे बहुत कुछ गिर गयी। मेकालेकी योजना थी कि शिक्षा देकर क्लर्क तैयार किये जांय। अतः यह शिक्षा प्रणाली क्लर्कोंको ढालनेका एक सांचा बन गयी। इसने जीवनको पंगु बना दिया। इस शिक्षा प्रणालीने हमारे जीवनके दो टुकड़े कर दिये। एक तो २०-२५ वर्ष तककी आयुका, दूसरा शेष जीवन का। जितने दिनों तक शिक्षा चलती रहती है विद्यार्थी जीवनसे दूर, उसके प्रति गैर जिम्मेदार रहता है और शिक्षा समाप्त होते ही जीवनका सारा बोझ उसपर आ पड़ता है। जीवनकी कला सिखाना तो दूर, अपनी जिम्मेदारीकी गाड़ी भी ठीक तरह चलाना उसके लिये कठिन हो जाता है। हमारी सारी शिक्षा जीवनसे दूर रह कर होती है। जो आगे के जीवनमें सहायक होनेके बजाय बाधक ही होती है।

इस शिक्षा प्रणालीने हमारे देशमें शिक्षित और अशिक्षितको अलग करके उनके बीचकी खाईको गहरी करते रहने का ही प्रयत्न किया है। जिन विद्वानों और शिक्षित कहे जानेवाले लोगोंको जनताके पास पहुंचना चाहिये, उनका पथ प्रदर्शन करना चाहिये और उनके जीवनमें रस लेना चाहिये वे ही उनसे दूर भागते हैं। इतना ही नहीं उनसे नफरत करते हैं। इतनी निम्न कोटिकी होनेपर भी यह शिक्षा इतनी मंहगी है कि इसे खरीदने के लिये काफी पैसे खर्च करने पड़ते हैं। जिनके पास पैसा नहीं उन्हें निराश होकर चुप बैठना पड़ता है या कर्जमें डूबनेके लिये विवश होना पड़ता है। जहां लाखों करोड़ों व्यक्त आधे पेट खाना खाकर अपना समय बिताते हैं वहां इतनी मंहगी शिक्षा कुछ लोगोंके लिये ही हो सकती है, सर्वसाधारणके लिये नहीं।

इसके अतिरिक्त इस शिक्षा प्रणालीने हमको अपने धर्म, जातीयता, संस्कृति एवं सभ्यतासे विमुख किया है और हमारे उच्चादर्शोंको मिटानेका प्रयत्न किया है। एक और महत्वपूर्ण दोष इस शिक्षाप्रणालीमें यह है कि इसका माध्यम एक विदेशी भाषा है जिसका ज्ञान प्राप्त करते करते ही विद्यार्थियोंकी बहुत सी शक्ति नष्ट हो जाती है। इसका दुष्परिणाम तो यहांतक हुआ है कि हमारे शिक्षित कहे जानेवाले लोग सोच विचार भी अंग्रेजीमें ही करते हैं। यह कितनी लज्जाकी बात है!

इस प्रकार यह शिक्षा प्रणाली एक ओर तो निकम्मी और हलकी सिद्ध हुई और दूसरी ओर खर्चीली एवं कठिन। यही कारण है कि इतने वर्षोंके प्रचारके बाद भी हमारे देशके १०—१५ प्रतिशत व्यक्ति ही शिक्षित हो सके हैं। लेकिन अब हमें इसी प्रवाहमें नहीं बहते रहना है। हमें ऐसी शिक्षा प्रणाली प्रारम्भ करना चाहिये जो देशके ग्रामोंमें पहुंच सके। हमारे देश के प्रत्येक व्यक्तिको जीवनकी कला सिखा सके, उनमें जीवनके प्रति प्रेम पैदा कर सके। हिन्दुस्तान कृषि प्रधान देश है। यहांके ८५ फीसदी लोग खेतीपर निर्भर रहते हैं। अतः खेती तथा उससे सम्बन्धित उद्योग धन्धोंका ज्ञान हमारी शिक्षाका महत्वपूर्ण अङ्ग होना चाहिये। उद्योगधंधों से दूर कोरी पुस्तकी शिक्षाके दुष्परिणाम हम काफी देख चुके हैं। अब हमें अपनी शिक्षा प्रणालीमें उद्योगको प्रधानता देनी होगी। देशके सब लोग न तो नौकरी कर सकते हैं न सबको नौकरी मिल ही सकती है। सर्वसाधारणके निर्वाहके प्रश्नको हल करनेके लिये उद्योग धंधोंकी शिक्षा अनिवार्य करनी होगी। हमें ऐसी शिक्षा देनी होगी जिसके द्वारा जनता चरित्र निर्माण-स्वधर्म और स्वसंस्कृति प्रेम एवं मानवता की ओर आकर्षित हो। जिससे उसके जीवनका सर्वाङ्गीण विकास हो। इसके साथ साथ हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि हमारी शिक्षा मंहगी न हो। वह पुस्तकोंपर कमसे कम अवलम्बित हो।

गांधीजीने शिक्षाकी इस दिशा भूलको बहुत पहिले समझ लिया था। उन्होंने उसे सही दिशामें ले जानेके लिये बहुत

सोच विचारके बाद बुनियादी तालीमकी नींव डाली। बुनियादी तालीम उनके रचनात्मक कार्यक्रमका एक महत्वपूर्ण अङ्ग है। यह प्रणाली वर्तमान शिक्षा प्रणालीके उपर्युक्त दोषोंसे मुक्त है। वह आजकी आवश्यकता पूरी करती है। उसकी विशेषता यह है कि उसमें उद्योगोंके द्वारा तालीम दी जाती है। आजकल तालीम देनेके लिये कताईका उद्योग अपना लिया गया है और तकलीके द्वारा शिक्षाका प्रारम्भ किया गया है। तकलीसे जहां एक उद्योगकी शिक्षा दी जाती है वहां उसकी इन्द्रियोंका भी विकास किया जाता है और उसे साहित्य, इतिहास भूगोल गणित आदि विषयोंका भी ज्ञान कराया जाता है। उसके द्वारा बालक सूत का निर्माण करता है। अतः वह उसके लिये हर्षका विषय भी होता है। उद्योग सीखते सीखते ही वह इंद्रियोंका विकास तथा विविध विषयोंका ज्ञान प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार गांधीजीने उद्योगको केवल जीवन निर्वाह ही नहीं बल्कि मानस विकासका साधन भी बना दिया है। उन्होंने उपयोगिताके प्रश्नकी भी अवहेलना नहीं की। वे पाठशालाकी उन्नतिको आर्थिक आयसे भी मापते थे। वे चाहते थे कि विद्यार्थियोंकी कताई तथा अन्य उद्योग धंधोंसे इतना पैसा तो अवश्य आजाना चाहिये जिससे पाठशालाका खर्च निकल सके। खेती और वस्त्र उत्पादन हमारे देशके बहुत बड़े धन्धे हैं। हमारे जीवनमें सबसे ज्यादा आवश्यकता भी इन्हीं दो चीजोंकी रहती है। अतः गांधीजी चाहते थे कि प्रत्येक पाठशालामें ये दोनों उद्योग प्रारम्भ किये जांय। इसके साथ ही इनकी सहायताके लिये जिन उद्योगोंकी जरूरत होती है। उनका भी ज्ञान बालकोंको कराया जाय। उदाहरणार्थ बढ़ईका काम, लोहारका काम, कपड़े रंगने या छापनेका काम आदि।

शिक्षामें यह क्रान्तिकारी परिवर्तन गांधीजी जैसे युग द्रष्टा द्वारा ही संभव था। वे इस कार्य की कठिनताको समझते थे। वे इसके लिए योग्य अध्यापकोंकी आवश्यकता पर जोर देते थे। वर्धामें शिक्षकोंको बुनियादी तालीम सिखाना बताया जाता है। वे चाहते थे कि अब पहिलेकी तरह कोई अध्यापक क्रियाशीलतासे शून्य न हो। उसमें न आलस्य हो न कोरा पुस्तकी ज्ञान। वह उत्साह, जीवन और जागृतिसे भर पूर हो। उसका सच्चानाम है 'आचार्य'। अर्थात वह स्वयं आदर्श जीवनका आचरण करता है और दूसरोंसे भी करवाता है। वे मानते थे कि ऐसे आचरणवान शिक्षकोंके द्वारा ही राष्ट्र निर्माणका महत्व पूर्ण काम हो सकता है। आज हमारे देशके शिक्षित कहे जाने वाले लोगोंमें निष्क्रियता और अनुत्साह की जो लहर फैल रही है उससे बुनियादी तालीम ही हमारी भावी पीढ़ीको बचा सकेगी।

कुछ लोग शिक्षामें उद्योगकी प्रधानता की आलोचना करते हैं और कहते हैं कि जहां तक उद्योगको शिक्षाकी दृष्टिसे अपनाते है वहां तक तो ठीक है लेकिन जहां वह पेट भरनेकी दृष्टिसे भी देखा जाने लगता है वहां ठीक नहीं है। उनका यह कहना बहुत कुछ सत्य भी है लेकिन आज तो पेट भरनेकी सीधी सी बात भी टेढ़ी हो गयी है। हमें अपने पेट भरनेकी इतनी चिन्ता है कि उसके लिये हम न्याय नीति, अहिंसा, धर्म और प्राणियोंका भी खून करके उसे भरनेमें ही लगे रहते हैं। यदि हम अपना पेट भरते समय दूसरोंके पेटका भी ख्याल रखें और उसे इमानदारी सेही भरना सीखलें तो देश और विश्वका कितना बड़ा कल्याण हो।

बुनियादी तालीम गांधी जीकी बहुत बड़ी देन है उसने शिक्षाके क्षेत्रमें अहिंसक क्रान्ति की है। युगकी मांग तो वह पूरी करती ही है समाज और देशका नव निर्माण भी उसके द्वारा होगा।

———

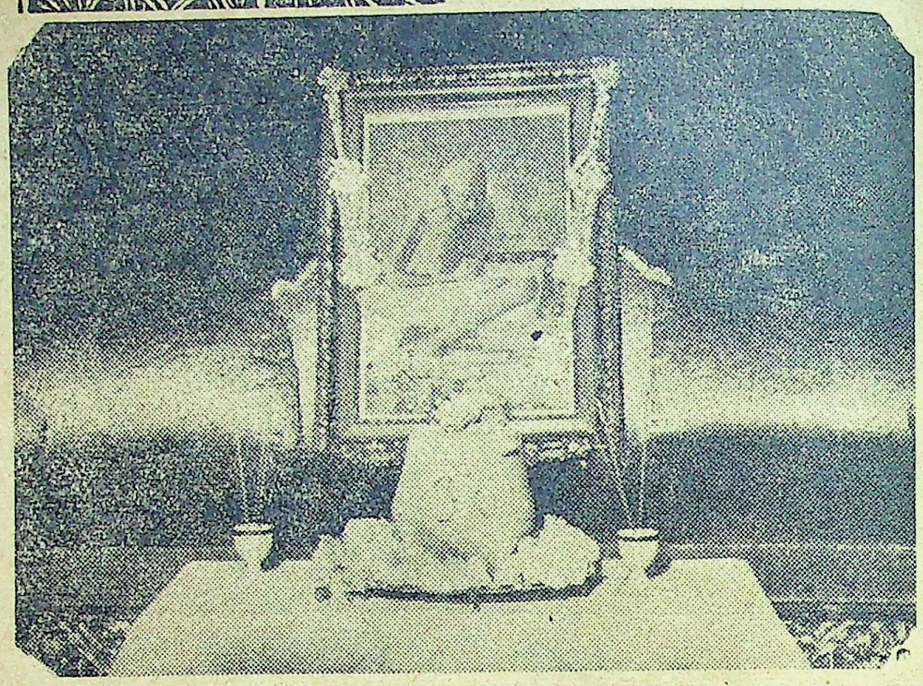

महात्मा गांधीके पवित्र चिताभस्म से परिपूर्ण ताम्र पात्र, जिसको पश्चिम बंगालके गवर्नर श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य दिल्लीसे लाये थे। पीछेकी तरफ गवर्नमेण्ट हाउसके सिंहासनपर महात्माजीका सुसज्जित चित्र दिखायी दे रहा है।

श्री मीरा बहन

२२ साल पहले मुझे, जो गुमराह होकर भटक रही थी, अपनी आत्माका घर हिन्दुस्तानमें फिरसे मिल गया—वह हिन्दुस्तान जिनके इतिहासकी सदियां आध्यात्मिक वैभव भरे पुरुषार्थोंमें अपने आपको फिरसे दोहरा रही थीं। कैसी अपार प्रेरणा और उत्साहसे मैं उजेले और आशाके महान नाटकमें रम गयी थी, जो लड़ाईसे जर्जर और निराश बनी दुनियांके सामने अपने-आपको प्रकट कर रहा था! बापूमें मुझे अपना रहनुमा मिला, हिन्दू धर्ममें सत्यका पवित्र शब्द और हिन्दुस्तानमें अपनी मां। मुझे सपनेमें भी इस बातका खयाल नहीं था कि २२ साल बादमुझे, इस मांकी चीरी हुई छाती देखनी पड़ेगी, जिससे उसके अपने ही बच्चों द्वारा किये हुए गहरे घावोंके कारण खूनकी धार बह रही है। उस समय मुझे यह भी खयाल नहीं था कि २२ साल बाद अपनेको हिन्दू कहनेवाले लोग ही सत्यके शब्दको अपने पावों तले कुचल देंगे।

क्या इसीके लिए हमने आजादी ली है? क्या हमने इसलिए आजादी ली है कि हमारा हिन्दुस्तान प्रकाशका देश बननेके बजाय अंधेरेका देश बने?

हम अंधेरेके इस देशके भविष्य पर एक नजर डालें, जिस तरफ आज कम-से-कम उत्तरी हिन्दुस्तानके आम लोग शायद बढ़ रहे हैं।

उस देशमें अपने-आपको खुद ही दूसरोंसे बड़ी कहनेवाली जाति बसेगी, जिसकी आध्यात्मिक या रूहानी गैर-रवादारी सच्चे हिन्दू धर्मको ही मिटा देगी। सारे मुसलमान बेरहमीसे अपने बाप दादोंके घरोंसे निकाल दिये जायेंगे, और ऐसी हालतमें अगर दूसरे गैर-हिन्दूओंको भी मुसलमानों जैसे ही दिन न देखने पड़े तो यह अचरजकी बात होगी। तब क्या नामधारी अछूतोंको भी उसी तरह हिन्दू समझा जायगा, जैसे कि देशके ऊंचे-से-ऊंचे आदमीको? या तब आजाद हिन्दुस्तान फिरसे कट्टर जात-पातका शिकार हो जायगा?

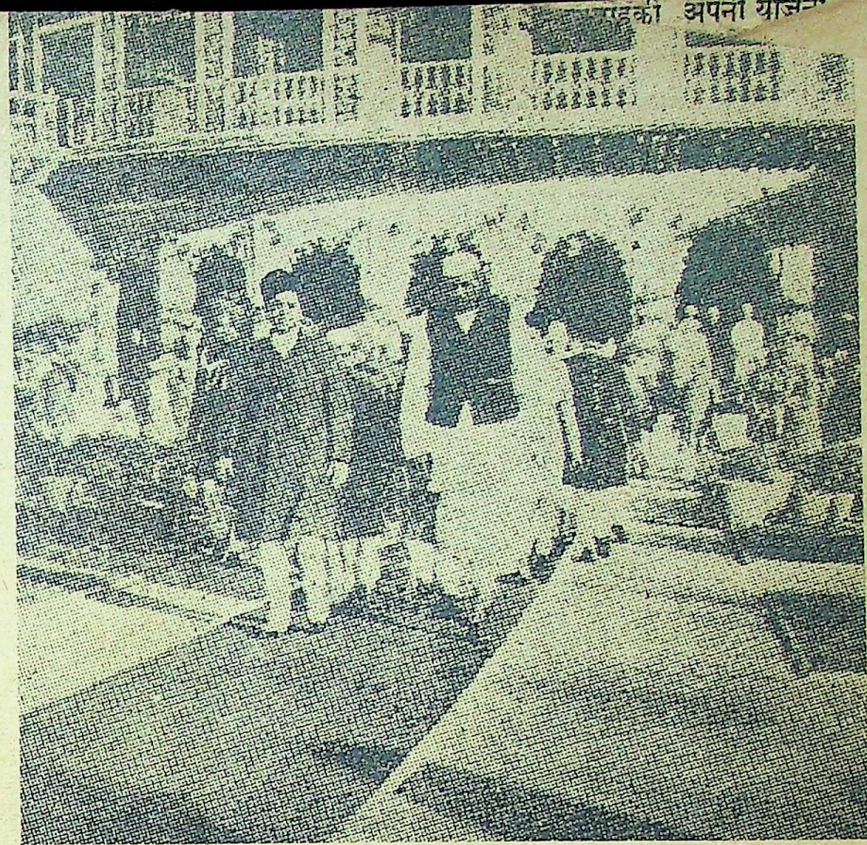

ग्वालियरके महाराज अपने नवगठित लोकप्रिय मन्त्रिमण्डलके साथ

अपने देशमें इस तरहकी व्यवस्था कायम करके जब "हिन्दू" अपने आसपास देखेंगे, तो उन्हें पता चलेगा कि हिन्दुस्तानको हिन्दुओंका देश बनाकर उन्होंने जिस आनन्द, बड़प्पन और सम्मानकी आशाकी थी, वह गलत निकली। यह सच है कि मुसलमानोंको हिन्दुस्तानसे निकाल कर वे हिन्दुस्तानको हिन्दुओंके लिए जीत लेंगे, लेकिन साथ ही वे हिन्दुओंको हिन्दुस्तानके लिए ही महदूद भी रखेंगे—यानी बाकीकी सारी दुनिया हिन्दुओंसे नफरत करेगी, उनसे किनारा कर लेगी। तब फिर हिन्दुस्तान जातीय समानताका नारा बुलन्द न कर सकेगा। ऐसा होनेके बाद, समान बरतावकी बात तो दूर रही, हिन्दुस्तान दुनियांके किसी हिस्सेमें न्यायके बरतावकी भी आशा नहीं कर सकेगा। दुनियांसे ऐसे बरतावकी आशा करनेका उसके पास कोई कारण नहीं रह जायगा। तब ऐशियाका आदरणीय नेता बननेके बजाय वह दुनियांमें अछूत बन जायगा।

आज हिन्दू पनके नशेमें चूर सनातनी हिन्दू इस बातको भूल जाते हैं कि दुनियां में सिर्फ हिन्दुस्तान ही एक हिन्दू देश है। एक बार बिलकुल पासका मकसद हासिल कर लेने पर उन्हें पता चलेगा कि वे अपनी ही 'श्रेष्ठता' के जालमें फस गये हैं और अपने ही नादानी भरे कामोंसे लाचार बन गये हैं।

लेकिन मेरे दिल और दिमाग हिन्दुस्तानकी इस नफरत भरी तसवीरको लाजमी माननेसे इन्कार करते हैं। पहले हिन्दू जनता फिरसे समतोल बनेगी और फिरसे महसूस करेगी कि धर्मके नसेमें पागल बने कुछ लोग उसे उजेलेसे अंधेरेकी तरफ ले गये, जो खुद उसी भावनासे जहरीले बन गये हैं जिससे वे नफरत करते हैं। बुराईको बुराईसे जीतनेकी कोशिश करना बेकार है। जनताको रुक कर यह सोचना चाहिये कि उसे क्या हो रहा है, वह किधर जा रही है? मजहबी पागलपनके शिकार बने लोगोंके प्रचारमें फंसकर वह बिना सोचे-समझे अपने बड़े नेताओंको गाली दे रही है और कोस रही है, उन्होंने उसे निराशाके दलदलसे निकाल कर आजादीकी ऊंचाई पर पहुंचाया है। अगर आज जनता उन नेताओंकी बात नहीं मानती, तो वह आजादीकी ऊंचाईसे गुलामीकी गहरी अंधेरी खाईमें गिर पड़ेगी।

आंधी

श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय एम०ए०

[सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्लीके मन्त्री और आर्यसमाजके एक प्रमुख नेता श्री गंगाप्रसाद उपाध्यायने नीचे लिखे वक्तव्यमें आर्यसमाजों और आर्यसमाजियोंका ध्यान आकर्षित करते हुए जो सामयिक चेतावनी दी है, मैं आशा है कि आर्यजगत उसे मानेगा और उसीके अनुसार चलेगा। यही समयकी मांग है। सं० वि०]

जब कभी किसी देशमें शासन परिवर्तन होता है तो सम्भवतः आंधी सी आ जाया करती है। भारत वर्षमें भी वर्तमान राज्य परिवर्तनके उषाकालसे ही आंधी सी आ रही है और अनेकानेक भावनाओंकी विभिन्न तरंगे गुप्त और प्रकट रूपसे भारतीय वायुमण्डलको क्षुब्ध कर रही हैं। एक हिन्दू युवक द्वारा संसार के सबसे बड़े आत्मा तथा भारतीय प्राचीन संस्कृतिके महान पुजारी महात्मा गांधीकी नृशंस हत्याने भारतवर्षकी आखें खोल दी हैं। जो किसीको स्वप्नमें नहीं सूझता था वह हो गया। इससे स्पष्ट है कि वायुमण्डल कितना विषैला है। महात्मा गांधीने राजनैतिक आतङ्कवादका आयु भर खण्डन किया और उन्हींके प्रभावसे पाश्चात्य नैतिक आतङ्कवादका भारतमें दमन हुआ। शोकका स्थान है कि उसी आतङ्कवादने महात्माजीके जीवनको समाप्त किया।

भारतके कल्याण चाहनेवालोंको यत्न करना चाहिये कि यह विषैला वायुमण्डल शीघ्र से शीघ्र दूर हो और देश शक्ति और उन्नतिके पथपर चल सके। इसके लिये समस्त भारतको अनिवार्य रूपसे प्रयत्न करना होगा।

मैं इस विषयमें आर्य समाजका ध्यान एक बातकी ओर विशेष रूपसे आकर्षित करना चाहता हूं। जब हैजेका प्रकोप होता है तो रोटी भी हानि पहुंचाया करती है। आर्य समाजके प्रेस और प्लेट फार्म को सावधानीसे काम करना चाहिये जिससे अनार्य और अधर्म युक्त बातोंको वाचिक या कायिक रूपमें प्रचार करनेवाले व्यक्ति या व्यक्ति समूह आर्य समाजके प्लेटफार्म को दुरुपयोग करनेकी चेष्टा करनेका अवसर प्राप्त न कर सकें। जो उत्तरदायित्व शून्य व्यक्ति हैं उनके व्याख्यान न होने देना चाहिये।

आर्यसमाज स्वयं अन्य मतावलम्बी आतङ्कवादका शिकार रहा है और उसने धार्मिक और नैतिक [illegible] आतङ्कवादका प्रतिरोध किया है।

पं० लेखराम और स्वामी दयानन्दकी हत्यापर आर्य समाजने बदला लेनेकी चेष्टा नहीं की। और न विषैले वायु मंडलको उत्पन्न होने दिया। आर्य समाज अब भी उसी नीतिका पालन कर रहा है और करेगा। परन्तु आर्य समाज के कार्य कर्त्ताओंको इसलिये सावधानीकी आवश्यकता है कि आर्य समाजको प्रगतिशील संस्था समझनेके कारण बाहरके आदमी उससे लाभ उठानेका प्रयत्न कर सकते हैं और आर्य समाजके युवकों और सर्व साधारणके विचारोंको विषयुक्त बना सकते हैं।

आज जब भारतको स्वतंत्रता प्राप्त हुई है और आर्य समाजके नर नारियोंने अपना धर्म समझ कर इसमें अनेक प्रकारके आत्मत्याग किये हैं आर्य समाज अपनी समस्त शक्तिसे भारतमें शान्ति स्थापन करने और भारतीय शासनको सुदृढ़ बनानेमें सहायक होगा।

आर्य समाजका विश्वास है कि आतंक वाद अत्यन्त घृणित चीज है। और उसका दमन होना चाहिये क्योंकि आर्य समाज इस प्रकारके नृशंस मार्ग को भारतीय संस्कृतिका विघातक समझता है विकासक नहीं समझता है।—

कुंवर आयुर्वेदिक फार्मेसी - कानपुर

गांधी तो मरा, पर गांधीवाद अमर हो गया

डा० पट्टाभि सीतारमैया

मनुष्य मरनेके लिये ही पैदा होता है और शेष सृष्टिकी भांति महापुरुष भी अपने समयपर मरते हैं किन्तु वास्तविकता यह है कि महापुरुष अपने जीवनमें जो कार्य कर जाते हैं मृत्युके पश्चात् भी वे उसके द्वारा सदैव जीवित रहते हैं। उनका यह कार्य समयकी गतिके साथ अधिकाधिक शक्ति एवं व्यापकत्व संग्रह करते हुए, चिरकालतक अक्षुण्ण रहता है। इस कार्यके आधारभूत सूक्ष्म सिद्धान्त चिरस्थायी होते और परिवर्तनशील अवस्थामें स्वयं परिवर्तित होते रहते हैं; इस प्रकार परिवर्तित होकर, वे बदले हुए वातावरणके ही अनुरूप बन जाते हैं। यदि आज नहीं, तो आगे कभी, गांधी इस संसारकी २५ शताब्दियोंके सारे महापुरुषों में सर्वश्रेष्ठ माने जा सकेंगे। इसका कारण यह है कि जीवनकी कार्यवाहियों एवं पक्षोंको विभिन्न विभागोंमें पृथक् न करके उन्होंने जीवनकी धाराको एक और अविभाज्य समझा है। जिन्हें हम सामाजिक, आर्थिक तथा नैतिक पक्ष समझते अथवा कहते हैं, गांधीकी दृष्टिमें वे एक ही धाराकी सहायक सरितायें और एक ही ढांचेके विभिन्न पहलू हैं। गांधीजीने जीवनके इस नवीन दृष्टिकोणकी व्याख्या किसी आन्दोलक गीत या दार्शनिक महाकाव्यके रूपमें नहीं की, वरन् मनुष्यकी आत्मामें एक ओर अपने बहुरूपी स्वार्थों और दूसरी ओर न्यायके प्रतिनिष्ठा, सत पक्षकी सेवा तथा आदर्शके प्रति सत्यताके बीच निरन्तर चलनेवाले द्वन्द्वके रूपमें उसे प्रतिपादित किया है।

राजनीतिका परिष्कार

यदि हम बहुश्रुत शब्द "राजनीति"को कुछ व्यापक अर्थोंमें लें, तो इन सभी कार्यवाहियों एवं द्वन्द्वोंको हम उसमें समा सकते हैं। राजनीति और कुछ नहीं, केवल मानव कल्याण सम्बन्धी वह विज्ञान एवं कला है, जिसमें मानवताके सामाजिक नैतिक तथा आर्थिक उत्थानका समन्वय रहता है। ये विभाजन उसी प्रकार सांयोगिक है, जिस प्रकार विभिन्न देशों एवं राष्ट्रताओंमें विभाजित संसारका विद्यमान पार्थक्य। स्वाभाविक ही था कि शासन सत्ता प्राप्त करनेकी अभिलाषा, राजनीतिसे उत्पन्न हो। यद्यपि यह नितांत सत्य है कि हर सत्ता हमें पूर्णतया दुराचारी बनाती है, किन्तु साथ ही, सत्ताको इस दुराचरणसे मुक्त करनेकी उसी प्रकार अत्यावश्यकता है, जिस प्रकार कांचनको तपाकर मैल दूर कर देनेकी। हमारी राजनीतिमें गांधीने यही दुष्कर कार्य सम्पन्न किया है, और वह भी, अपने जीवन एवं चरित्रको विशुद्धताके द्वारा। निःसन्देह, राजनीतिसे मलिनता हटाकर और उसका परिष्कार करके, उन्होंने उसे धार्मिक पवित्रता प्रदान की और सर्वाङ्गीण नैतिकताका जामा पहनाया। सत्य और अहिंसाके मार्गपर बढ़ते हुए, धर्मराजकी भांति, गांधीजीने कभी मुड़कर नहीं देखा कि उनके इस महान् स्वर्गारोहण प्रस्थानमें कौन उनके पीछे चल रहा है अथवा कौन गिर चुका है। दृढ़संकल्पी मानवकी भांति, वे अपने चुने हुए पथपर अविचलित रूपसे आगे ही बढ़ते गये।

स्वाभिमानी एवं स्वावलम्बी समाजका स्वप्न

दक्षिण अफ्रिकासे लौट कर उन्होंने देखा कि राष्ट्रीय जीवन किस प्रकार उद्विग्न है, आर्थिक शोषणसे गांव किस प्रकार तबाह है, सामाजिक असमानताओं से किस प्रकार मनुष्य-मनुष्यके बीच न्याय एवं औचित्य दुर्लभ हो रहा है और सरकारकी पापपूर्ण आमदनीसे देश का कितना नैतिक पतन हो चुका है। यही सब देखकर उन्होंने खद्दर तथा ग्रामोद्योगों द्वारा स्वावलम्बी समाजकी स्थापना की आवाज उठायी—ऐसा समाज' अस्पृश्यता निवारण और मद्य, अफीम, भंग आदि मादक द्रव्योंके निषेध द्वारा जो स्वाभाविक एवं आत्मशुद्ध बन सके। इस रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा उन्होंने भारतके पुनर्निर्माणका प्रयत्न किया और साथ ही, सत्य एवं अहिंसा पर आधारित सत्याग्रहकी अपनी योजना द्वारा विदेशियोंकी दासतासे उसे मुक्त कराया। इस प्रकार उन्होंने अपने दोहरे उद्देश्यकी पूर्ति की, एक तो भारतकी दासता हटायी और दूसरे, सत्य एवं सुन्दर रूपमें भारतीय राष्ट्रीयताकी नींव डाली।

दसवें अवतार

यद्यपि गांधी एक महामानव है, किन्तु अन्तिम विश्लेषणमें वह केवल मानव ही निकला, जिसमें, मनुष्योंमें पाये जानेवाले मस्तिष्क एवं हृदय सम्बन्धी गुण मौजूद थे। १९३१ में पंचम जार्जसे हुई उनकी भेंटके सिलसिलेमें, बालकोंसे उनके अत्यन्त प्रेमकी भी चर्चा हुई थी। उनकी परिहास प्रियताने ही, जीवनकी अनेक परीक्षाओं और पीड़ाओंके बोझसे दबकर नष्ट हो जानेसे उन्हें बचाया। आदर्शकी अपेक्षा वास्तविकके प्रति उनका काफी ख्याल था और इसलिये गांवोंके पुनरुद्धार का मुख्य साधन, उन्होंने चरखेको माना। तुच्छसे तुच्छ हरिजनके लिये उनका आशीर्वाद सरलतासे सुलभ हो सकता और उच्चसे उच्च नरेशकी भी वे भर्त्सना कर सकते थे। वाइसराय उनके शब्दसे दहल उठते शासक उनकी कार्य कुशलता पर मन्त्र मुग्ध रह जाते और राजनीतिज्ञ उनकी साधन सम्पन्नताका विचार करके थर्रा उठते थे। उनकी उंगलीके उठते ही करोड़ो मनुष्य मौन होकर उनकी आज्ञा का पालन करते, लाखों जेलोंमें धंस जाते, सैकड़ों अपना सब कुछ निछावर कर देते और बीसियों उनके उपदेशोंपर आचरण करते हुए प्राण त्याग देते। इस प्रकार वास्तविकताके क्षेत्रमें उन्होंने आदर्शके लिये स्थान उत्पन्न किया और वास्तविकताको आदर्शके उच्च शिखर तक पहुंचा दिया। उन्होंने, ऊपर स्वर्ग और नीचे पृथ्वीके बीचकी एक कड़ीके रूपमें काम किया है। वे दसवें अवतार हैं, जो इस कलियुगमें धर्म स्थापनार्थ संसार में अवतीर्ण हुए।

कार्यकी समाप्ति पर निर्वाण

उन्होंने अपना कार्य पूरा किया और हमें छोड़ कर चले गये। यद्यपि इह लोकके हम लोगोंको उनके निधन पर ऐहिक शोक है, किन्तु हमें समझना चाहिये कि कोई भी

अवतार अपना कार्य समाप्त करनेके बाद उस क्षेत्रमें नहीं रुकता। निश्चय ही, पिछले जूनके महीनेसे, ऐसा विश्वास करनेके लिये उनके पास कारण मौजूद थे कि उनकी आवश्यकता अब नहीं रही और समाज एवं नीति सम्बन्धी उनके विचारों और उनके चतुर्दिक प्रचलित तत्सम्बन्धी अन्य विचारोंके बीचकी खाई अधिकाधिक चौड़ी होती जा रही है। निर्वाणसे ठीक पहले, अवतारों पर ऐसी ही बीती है।

कुरुक्षेत्रके रण-प्रांगणमें पांडवोंकी सफलताके बाद श्री कृष्णका भी ऐसा ही हुआ था। द्वारिका लौटने पर उन्होंने देखा कि उनकी जनता भी पान तथा व्यभिचारमें लीन हो चुकी है। इसीलिये उन्होंने वनको प्रस्थान किया और वहां, हिरणके धोखेमें, एक बहेलियेके तीरसे मारे गये। अपना कार्य पूरा कर लेनेके बाद, श्री रामचंद्र ने भी पवित्र सरयू नदीमें जल-समाधि लेकर अपनी इह लीला समाप्त की। पश्चिमी देशोंमें भी ब्रुनों जला दिया गया, सुकरातने विष-पान किया, गेलीलियोकी बंदीगृहमें मृत्यु हुई और अब्राहम गोलीके शिकार हुए। गांधी भी गोलीके शिकार हुए, किन्तु दसवें अवतार बनकर चिरंजीवी रहेंगे। अपने अंतिम अनशनमें ही वे समाप्त हो चुके होते, किन्तु इसीलिए बच गये, क्योंकि उन्हें एक हत्यारेके हाथोंसे मरना था। उनके निधन पर शोक मनाना भी निरर्थक ही है, क्योंकि अपने जीवन पर्यन्त उन्होंने हम लोगोंको यही शिक्षा दी थी कि इस संसारके लिए कोई भी व्यक्ति अनिवार्य नहीं है कि उनके बिना काम ही न चल सके, क्योंकि उनके जीवनकी पुस्तक एक खुली पुस्तक है और चिरकाल तक कायम रहेगी। उनका सर्वोत्तम उपदेश यह था कि भारत अभी स्वतंत्र नहीं है, केवल स्वाधीन हुआ है। हिन्दू-मुस्लिम एकताका कार्य उन तीन महान् कार्यों में से था, जिन्हें लेकर उन्होंने राष्ट्रका नायकत्व आरम्भ किया और जो कार्य शेष रह गया, उनके लिए उन्होंने अपनी जान दे दी। क्या हम आशा नहीं कर सकते कि उनके परिश्रमके फलस्वरूप, उनके अनुयायियोंको सफलता प्राप्त हो और पहलेसे अधिक विचारवान् बन कर वे अपनेको सुधार सकें।

कलकत्तेके विसर्जन समारोहमें उपस्थित विदेशी महिलाएं और राजदूत।

यह विश्व-विख्यात मानव, जिसके उपदेशोंका प्रभाव निश्चय ही दोनों गोलार्द्धोंके अनेक राष्ट्रोंके भविष्य-निर्माण पर पड़ेगा—अपने वैराग्यके लिए बुद्ध, कष्ट-सहनके लिए इसा, सत्यताके लिए हरिश्चन्द्र, ईमानदारीके लिए श्री राम और नीति-नैपुण्यके लिए श्री कृष्णके यशोपूर्ण उदाहरण, हमारे मस्तिष्कमें पुनः जाग्रत कर देता है। स्वदेशकी मुक्तिके लिए अवतरित तपोदूत गांधीने, पहिले लिप्सा एवं भय पर विजय पायी और अपनेको ही मुक्त किया। यह वह संत है, जो जीवनमें नायक और मृत्युमें शहीद बना। युद्ध एवं अहिंसासे त्रस्त इस संसारका, वह, आधुनिक मसीहा है। यदि किसी का यह कथन सच है कि 'ईसायी तो केवल एक ही था जो सूली पर मारा गया, तो उतनी ही सचाईके साथ यह भी कहा जा सकता है कि 'ईसायी तो एक ही था, जो गोलीसे मारा गया। संसारकी सेवा, गांधीने अर्द्ध सताब्दी तक की और अपने कार्य क्षेत्रसे बिदा होते समय भावी संतानके लिए दोहरा कर्तव्य बता गये, एक अपने लिए और दूसरा राष्ट्रके लिए। मृत्युके बाद स्मारक-वाक्य लिख सकनेका यश किसी को प्राप्त नहीं हुआ। किन्तु ३० मार्च १९३१ को कराचीमें अनजाने ही वे कह गये कि 'गांधी मरेगा किंतु गांधीवाद सदैव ही जीवित रहेगा।" वस्तुतः गांधीवाद क्या है और कहां वास करता है? न जिह्वापर, न परिधानोंमें और न परिष्कृत अथवा गंवारू उन अल्पकालीन सामाजिक रूपोंमें जिनसे कि मानव जीवनका स्तर चित्रित है। गांधीवाद जीवनकी एक प्रणाली है। न तो उसपर 'आश्रम'का ही एकाधिकार है, और न कांग्रेसके स्तम्भाश्रित राजसी मण्डप के न उसका स्थान बीहड़ बनोंके वृक्षोंके बीच है और न प्रवाहित जलाशयोंके तटोंपर। उसका स्थान है, हृदयमें। गांधीवाद जीवनकी एक प्रणाली है। वह बीसियों भाषाएं बोलता है, पर एक ही जबानसे और एक ही आदर्शमें निष्ठा रखकर भी वह सहस्रों प्रकारसे सेवाएं करता हैं।

———

काश्मीरकी समस्या

श्री मोहन सिंह सेंगर

(१)

अभी थोड़े दिन हुए भारत सरकारने कुछ लेखकों और पत्रकारोंको काश्मीरकी वस्तु-स्थिति देखनेके लिए वहां जानेकी सुविधा दी थी। वहां जाकर हम लोगोंने जो-कुछ देखा-सुना और आज देश-विदेश के पत्रोंमें काश्मीरके संबंधमें जो-कुछ निकल रहा है, उसमें उतना ही अन्तर है जितना कि अंधेरे और उजालेमें या सत्य और असत्यमें। दुर्भाग्यवश पिछले १२-१४ महीनोंसे हमारे देशमें साम्प्रदायिकताका जहर राजनीतिक और सामाजिक जीवनके हर क्षेत्रमें इस तेजी और गहराईके साथ फैल गया है कि आज काश्मीरके मसलेको हमारे अनेक राजनेता अथवा पत्रकार सांप्रदायिकतासे ऊपर उठकर देख ही नहीं सकते। पर दरअसल काश्मीरकी समस्या किसी भी रूपमें सांप्रदायिक कदापि नहीं है। काश्मीरका राजनीतिक और सामाजिक वातावरण आज भी इस जहरसे एकदम प्लावित नहीं हो गया है। वहां की असली समस्या है गरीबी और गुलामीमें सड़नेवाले ४० लाख काश्मीरियोंकी मुक्ति, डोगरा-सामन्त शाहीसे मुक्त होकर उत्तरदायी शासन की स्थापना। काश्मीरकी समस्याके सही हलपर न केवल भारत या एशिया ही बल्कि समूचे यूरेशियाकी शान्ति निर्भर करती है। इस लिए यह परमावश्यक है कि हम इस पर राजनीतिक तथा अर्थनीतिक दृष्टि से ही विचार करें, साम्प्रदायिक दृष्टि कोणसे नहीं। काश्मीर आज भारत ही नहीं, विश्वकी महत्व पूर्ण समस्या बन गया है।

श्रीनगरकी ओर

दिल्लीके हवाई-अड्डेसे हमें काश्मीरकी राजधानी श्रीनर लेजानेको जो हवाई-जहाज रवाना हुआ, वह था तो २६ यात्रियोंको ले जाने लायक, पर थे उसमें हम सिर्फ तीन ही यात्री। बाकी सारी सीटोंके बीचमें काश्मीरी जनता और वहां लड़नेवाली भारतीय सेनाके लिए भेजी जानेवाली रसदके बोरे जमा थे। पूछनेपर ज्ञात हुआ कि भारतके बंटवारेसे पहले काश्मीर में अधिक सामान पेशावर और रावलपिंडी से श्रीनगर जानेवाली सड़कोंके मार्गसे जाता था और जम्मूमें स्यालकोटसे जम्मू तक गई मीटर-गेज़ रेल द्वारा। पर गत १५ अगस्तके बादसे पेशावर रावलपिंडी और स्यालकोटके पाकिस्तानमें चले जानेके कारण ये मार्ग बन्द हो गये हैं। यद्यपि काश्मीर कृषि-प्रधान प्रदेश है, फिर भी आबादीके लिये वर्ष-भरका खाद्य वहां नहीं होता। इसकी कमी पंजाब और सिन्धके गेहूं तथा बंगाल बिहारके चावल ही पूरी करते थे! इनके बदलेमें काश्मीर अपने ऊनी और रेशमीन कपड़े, चांदी और लकड़ीकी खुदाई एवं नक्काशीकी चीजें, फल, मेवे आदि भारत भेजता था। विभाजनके बाद उपर्युक्त मार्गोंके रुक जानेसे यह लेन-देनभी नाम- मात्रको ही रह गया है और काश्मीरियोंको बड़े कष्टका सामना

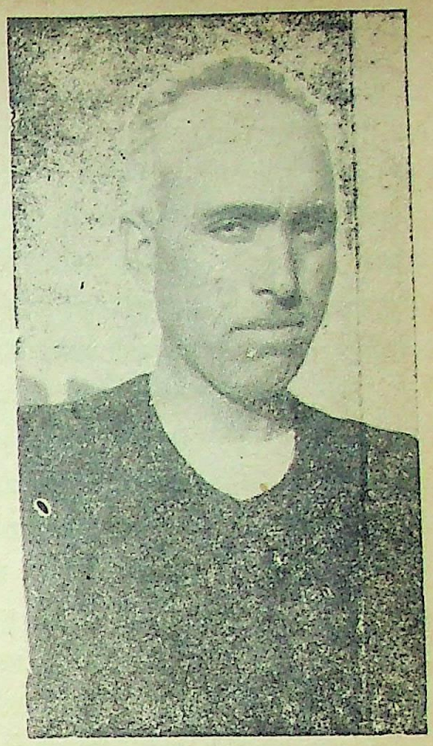

शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्ला

करना पड़ रहा है। हवाई-मार्गसे यह यातायात न तो विशेष सम्भव है और न सस्ता ही। फिर भी इधर कुछ समयसे भारत-सरकारकी ओरसे काश्मीरियोंके लिये आटा, चावल, चीनी, नमक और सिगरेंटे (जिनकी काश्मीरमें बड़ी सख्त मांग है) आदि हवाई-मार्गसे ही भेजनेकी व्यवस्था-की गई है। पर काश्मीरकी चीजोंको हवाई मार्गसे भारत भेजना सिर्फ महंगा ही नहीं काफी कठिन भी है। इस वजहसे काश्मीर की चीजोंके दाम बेहद गिर गये हैं, जब कि बाहरसे जाकर काश्मीरमें बिकने वाली चीजें असाधारण रूपसे मंहगी हो गई हैं।

दिल्लीकी सीमा छोड़ कर हमारा हवाई जहाज पूर्वी पंजाबमें दाखिल हुआ। ऊपर से तेज धूपमें स्पष्ट दिखाने वाले पूर्वी

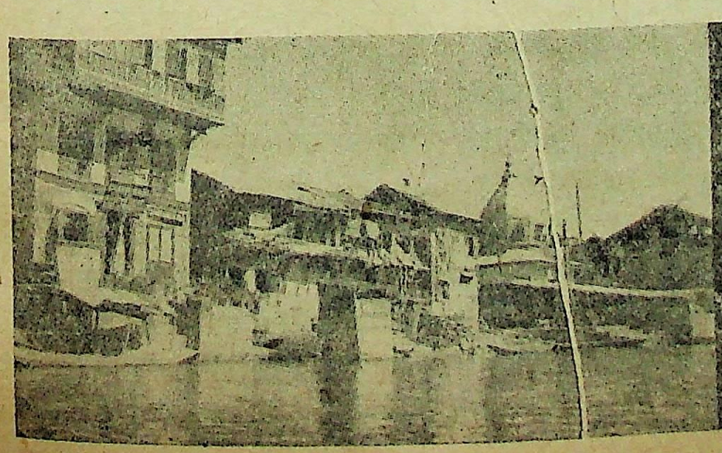

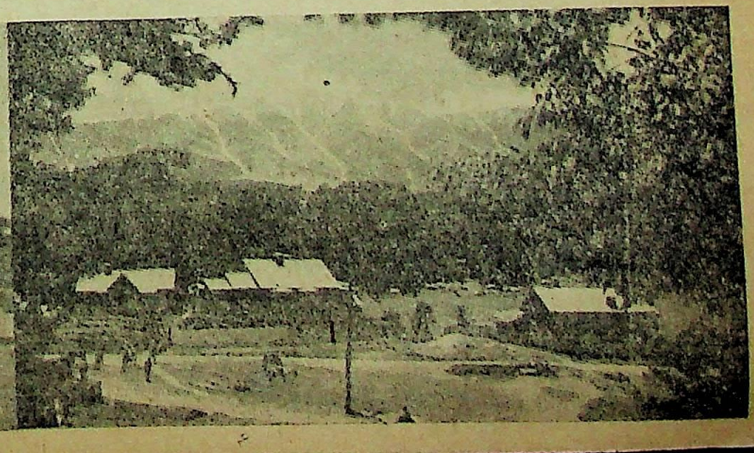

पंजाबके समानान्तर चतुर्भुज से लहलहाते खेतों और पक्के मकानोंवाले गांवोंको देख कर इस तन्हाईके जमानेमें भी उनकी खुशहालीका कुछ अन्दाज लगाया जा सकता था। इसके बाद जब हम जम्मूकी सीमामें दाखिल हुए, तो छोटे छोटे बेतरतीब खेत, झोंपड़े अथवा कच्चे मकान अपनी दास्तां स्वयं कहते से नजर आ रहे थे। पीर पंजालकी १२००० फीट ऊंची पर्वत श्रेणीको पारकर जब हमारा यान काश्मीरकी सीमामें दाखिल हुआ तो चिनार और सफेदेके वृक्षों, चमकते हुए झरनों एवं नालों तथा झोपड़ोंके इर्द गिर्द बिखरे छोटे छोटे खेत सामन्ती शासनके अभिशापको स्पष्ट बता रहे थे। पंजाबसे कहीं अधिक उपजाऊ जमीन होने पर भी जैसे तरक्कीका पहला चरण भी अभी यहां नहीं पहुंच पाया था। एक व्यक्तिका निरंकुश स्वेच्छा चारिता पूर्ण शासन किस तरह लाखों व्यक्तियोंके विकास मार्गको रोक सकता है, यह इस बातका प्रत्यक्ष प्रमाण था।

धीरे-धीरे उत्तर पश्चिमकी ओर जमीन ऊपर उठती जा रही थी और उसके ढलावपर सीढ़ियोंसे ऊपर उठते गये छोटे बड़े और टेढ़े-मेढ़े खेत बड़े सुहावने मालूम हो रहे थे। दोनों ओर जाते बर्फसे ढंकी पहाड़की चोटियां ऐसी लग रही थीं, मानों कोई अज्ञात हाथ अजस्र रूपसे, उनपर पिघली हुई चांदी छिड़क रहा है! आंखें इस दृश्यको देखतीं मानो अघाती ही न थीं। पहाड़ोंकी चोटियोंसे ऊपर बादलोंके टुकड़े राह भूले पथिकोंकी तरह इधर उधर भटक रहे थे। सूर्यकी किरणोंकी दिशामें आनेपर अचानक उनमें बीसियों इन्द्र धनुष कौंध उठते थे। कहीं कहीं पृथ्वीपर उनकी परछाईं भी पड़ रही थी। हरी भरी और भूरी जमींनकी पृष्ठभूमिमें ये ऐसे जान पड़ते थे मानो सफेद रुई या बर्फके गाले किसी विशाल समुद्रमें तैर रहे हों।

'वह सामने श्रीनगरका हवाई अड्डा है'—एक साथीने ध्यान भंग करते हुए कहा। फिर घड़ी देखकर बोला—'दिल्लीसे यहां पहुंचनेमें पूरे २॥ घण्टे लगे।'

काश्मीरकी रक्षाके लिये शस्त्र धारण करने वाली महिलाएं।

हमने उचककर देखा—उत्तर पश्चिम में पहाड़ियोंके बीचमें एक चबूतरे-सा उठा समतल भूमिका टुकड़ा नजर आ रहा है जिसके एक कोनेपर कुछ तम्बू और टीनकी छतवाले अस्थायी मकान दिखायी पड़ रहे थे। हवाई जहाजकी भर्राहट कुछ कम हुई और चक्कर लगाकर वह नीचे उतरनेका उपक्रम करने लगा। चन्द मिनटोंमें ही वह जमींनपर आ लगा।

यद्यपि धूप काफी तेज थी, पर सर्दी यहां काफी थी—दिल्लीसे कहीं अधिक। वातावरणमें ठिठुरन-सी थी। हवा सर्दी को और बढ़ा रही थी। हवाई जहाजसे उतरनेपर सबसे पहले हमने जो काश्मीरी स्त्री, पुरुष और बच्चे देखे, वे मुजफ्फराबाद, उड़ी और बारामूलासे आये हुए शरणार्थी थे। हमें यह जानकर सखेद आश्चर्य हुआ कि ये लोग कई दिनोंसे जम्मू दिल्ली अथवा पूर्वी पञ्जाबके स्थानों को जानेकी प्रतीक्षामें इसी खुले मैदानमें पड़े थे। भारत सरकार इतने हवाई जहाज नहीं जुटा पायी थी कि उन्हें एक साथ या शीघ्र ही बाहर ले जा सकती। यद्यपि काश्मीरका प्रकृत सौंदर्य इनमेंसे अधिकांश के शरीरसे फूटा पड़ रहा था, तथापि इनके मुरझाये चेहरोंसे इनकी मनोवेदना और असहायावस्थाका आभास भी स्पष्ट मिल रहा था। हवाई अड्डे और भारतीय सेनाके अदना-से-अदना अधिकारीतककी मिन्नत खुशामद उन्होंने की, पर सबने कुछ करनेसे अपनी विवशता प्रकट कर जैसे तैसे अपना पिंड छुड़ा लिया। इस देशमें अधिकारी जनताके सेवक नहीं मालिक हैं, यह यहांके शरणार्थियोंकी स्थितिसे एक बार फिर महसूस हुआ। कुछ अधिकारियोंको हमने यह कहते भी सुना कि 'दो-चार, दस-पांच हों, तो सहानुभूति या सहायता भी की जाय, पर इनका तो कोई शुमार ही नहीं।' परिस्थितियां आदमीको कितना कटु और कठोर बना देती हैं।

शरणार्थियोंमेंसे अधिकांश गरीब और निम्न मध्य श्रेणीके ही जान पड़ते थे। बहुतोंके पास शरीरपरके कपड़ों और एकाध कम्बलके सिवा कुछ भी न था। किसी दिन ये भी सम्पन्न और सुखी

थे। इनसे ज्ञात हुआ कि जो शरणार्थी पैसे वाले थे, वे पैसेके सहारे पहले ही चले गये थे! हमारे देशमें भ्रष्टता किस सीमा तक पहुंच गयी है, इसका कुछ अनुमान शरणार्थियोंसे ली जानेवाली घूससे किया जा सकता है। शरणार्थियोंकी यह दुरवस्था हवाई अड्डे पर ही हो, ऐसी बात न थी। हमने श्रीनगरके अस्पतालों, राशनिंगके दफ्तरों और शरणार्थी कैंपोंमें भी इनकी कम उपेक्षा नहीं देखी। अनाथ और असहायावस्थामें उन्हें जगह-जगह अपने शिकवे-शिकायतें दोहराते देखकर हमें कुछ क्षोभ सा होता था।

हवाई अड्डेसे श्रीनगर ७ मील दूर है। फौजी ट्रकों और तांगोंके सिवा इस समय कोई सवारी उपलब्ध नहीं थी, क्योंकि अधिकांश टैक्सियां और लारियां पेट्रोल नियन्त्रणके कारण बेकार हो गयी थीं और कुछ सरकारने फौजी यातायातके लिये ले ली थीं। अतः हमें तांगा ही करना पड़ा। सड़कका अधिकांश भाग बड़ा ऊबड़ खाबड़ है। इतनी महत्वपूर्ण सड़कका पक्का न होना हमारे लिये एक आश्चर्य की ही बात थी। ज्यों-ज्यों हम शहरकी ओर बढ़ते गये, सड़कके दोनों ओर कई बड़े बड़े मकान सूने पड़े दिखायी दिये। कारण पूछनेपर ज्ञात हुआ कि जब कबाइली हवाई अड्डेसे ३-४ मील दूर रह गये थे, तो इन मकानोंके सिख और हिन्दू निवासी डरके मारे भाग गये थे। कुछ तो कई-कई दिन पहले ही अपना सब कुछ लेकर भाग खड़े हुए थे! सहसा हमें ख्याल आया—खतरेके सामने जो लोग प्राणों और सम्पत्तिके मोहसे ग्रस्त होकर केवल भागना ही जानते हैं, क्या कभी कहीं उनके पांव टिक भी सकेंगे? काश, जीवित रहनेके लिये हम साहस और शौर्यके साथ मरना जानते!

पर इन बेचारे असहाय लोगोंको दोष भी क्यों दें? उन्होंने वही किया, जो उनके महाराजाने किया। श्रीनगर पहुंचनेपर हमने सुना कि जब तोपों, हथगोलों, बन्दूकों और सशस्त्र मोटरोंकी सहायतासे आगे बढ़नेवाले कबाइली श्रीनगरसे सिर्फ तीन मीलकी दूरीपर रह गये थे तो महाराजा बहादुर सरकारी मोटरों और लारियोंमें अपने मित्र परिजनों और सारे साज-सामानके साथ लदकर भाग खड़े हुए और श्रीनगरकी गरीब गुलाम और पिछड़ी निहत्थी जनताको छोड़ गये उसके भाग्यके भरोसे! उनके पीछे कई अन्य मन्त्रियों और अधिकारियोंने भी बड़ी वफादारीके साथ उनका पदानुसरण किया। इसका परिणाम हुआ श्रीनगर में शासनका ध्वज भङ्ग। महाराजा और मन्त्रियोंके इस कायरतापूर्ण पलायनके बाद जो लोग साधन-सम्पन्न थे, वे तो भाग खड़े हुए; पर अधिकांश जनता कबाइलियोंके आगमन और अपने दारुण अन्त की प्रतीक्षामें तीन दिन और तीन रात सांस रोके बैठी रही। यदि शासनके इस अप्रिय भङ्गके बाद नेशनल-कानफरेंसके स्वयं सेवकोंने पुलिस, नगर-रक्षा और शासनको बदस्तूर जारी रखनेकी जिम्मेदारी अपने हाथमें न ले ली होती और भारतीय सेनाने पहुंचकर कबाइलियोंको पीछे न खदेड़ दिया होता, तो श्रीनगर और सुतरां सारे काश्मीरका—विशेषतः वहांके हिन्दू और सिख अल्पसंख्यकोंका—क्या हश्र होता, इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। जिस राजाको जनताने न केवल माई बाप ही बल्कि ईश्वरका अवतार समझा, जिसपर उसकी रक्षाकी प्राथमिक जिम्मेदारी थी; उसके इस कायरतापूर्ण पलायनसे जनतामें उसके प्रति जो थोड़ी बहुत आस्था सद्भावना थी, उसका भी अन्त हो गया। श्रीनगरमें हमने न सिर्फ पढ़े-लिखोंको, बल्कि कुलियों, तांगेवालों और बच्चों तकको राजाके इस विचारहीन एवं कायरतापूर्ण पलायनका मजाक उड़ाते सुना।

और डोगरा सेना? उसकी बहादुरी का कुछ न पूछिये। श्रीनगरमें हमने सबके मुंहसे यह प्रशंसा जरूर सुनी कि ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंहकी अध्यक्षतामें लगभग १५० डोगरा सैनिक उड़ीमें असाधारण वीरताके साथ लड़ते हुए काम आये। जानपर खेलकर भी इन्होंने भारतीय सेना के आनेतक लगभग ३००० कबाइलियों को आगे बढ़नेसे रोके रखा। पर इसके सिवा इसने वीरता तो दूर रही, कई स्थानों पर सिखों और हिन्दुओंकी मौतका बदला लेनेके लिये निर्दोष और निरीह काश्मीरी मुसलमानोंके—पुरुषों, स्त्रियों और बच्चोंको—अपनी गोलियोंका निशाना बनाया। इस काण्डसे काश्मीरी मुसलमानोंमें बड़ी अप्रिय और अवांछनीय प्रतिक्रिया हुई। हमने कई मुसलमानोंको, जिनका कहना था कि इस कार्यवाहीके पीछे महाराजा और उच्च राज्याधिकारियोंका हाथ है, यह कहते सुना—'ऐसे राजा और सेनाके प्रति मुसलमानोंमें कैसे सद्भाव और विश्वास रह सकता है?' बात माकूल थी और चूंकि इसके कहनेवाले उस जातिके नहीं थे, जिसके राजा या डोगरा सेना थी; इसे साम्प्रदायिकता की ओट लेकर नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। राजा और शासनके ऐसे ही न जाने कितने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष आचरणोंसे काश्मीरके अनेक निष्पक्ष और भले मुसलमानोंको मजबूरन आज साम्प्रदायिकताकी शरण लेनी पड़ी है।

आजतक हमने भू-स्वर्गके रूपमें ही काश्मीरको जाना था और उसके वनों, झीलों, झरनों, बर्फसे ढंके पहाड़ों, फलों, मेवों, फूलों केसर रेशम और ऊनके सामान काठ और चांदीके काम तथा प्राकृतिक एवं मानवीय सौंदर्यकी ही तारीफ सुनी थी। पर श्रीनगर पहुंचकर हमने देखा कि इस भू-स्वर्गके अधिकांश निवासी गरीबी और गुलामीके पटोंके बीच पिस कर नरकसे भी बदतर जीवन बिताते हैं। जीवनमें पहली बार हमने हल और गाड़ीमें पशुकी जगह आदमीको जुता देखा। जिस काश्मीरकी मिट्टीमें सोना और पहाड़ोंपर चांदी बिखरी पड़ी है, जिन निवासियोंने इसे भू-स्वर्ग बनाया,

(शेष ३६ वें पृष्ठ पर)

महामानव गांधी

लेखक - श्री नन्दलाल शर्मा

हृदय बुद्धिके परामर्शको मानता नहीं। यह चाहता है उस विभूतिको जिसने कथनी और करनीको एकाकार कर विश्व कल्याणमें ही अपना कल्याण समझा, मानवकृत जातिकी रूढ़ीसे जिसे प्यार न था, जिसने शत्रु मित्रकी भावनाको जय पराजयके विचारको, शारीरिक मानसिक यन्त्रणाको, राजा-रंकको मन्दिर मस्जिदको, हरिजन ब्राह्मणको, काले गोरेको, महा चिन्ताकालमें भी देखा और एक समझा। द्वैतभावका समन्वय करने वाले महामानव, विश्वने बहुत कम देखे। क्या हम अढ़ाई हजार वर्ष पूर्वके महान आत्मा बुद्धका स्मरण करें जिनकी मानसिक विकलता एक आहत हंसको देख, चरम सीमापर पहुंच जाती है या तर्ककी कसौटीपर सिद्ध सिद्धान्तके लिये प्राणोत्सर्ग करनेवाले सुकरातको या सरल शिशुभावमय क्राइस्टको या प्रेमके अवतार घर घरमें नाम संकीर्त्तनके प्रचारक चैतन्य महा प्रभुको या,अन्य प्राचीन या अर्वाचीन सिद्ध पुरुषको, बुद्धि साथ नहीं देती। विश्वका कोना हमें सान्त्वना देता है - उन्हींको श्रद्धा अर्पित करता है जिनको हमने युगोंसे हृदय आसनपर विराजमान कर रखा है। हम उन्हें बापू कहकर अधिकार नहीं जता सकते क्योंकि वे सभीके लिये समान प्रेम रखते थे। लोग आत्माकी अमरता, देहकी, नश्वरताका हमें उपदेश दे रहे हैं—मृत्यु अनिवार्य है हमें समझाते हैं—उनके आदर्शकी ओर संकेत करते हैं और अनेक ऐसी बातें कहते हैं जिनका उल्लेख शोक संतप्त हृदयको ढाढ़स बंधानेके लिये किया जाता है किन्तु यह अशान्त व्याकुल हृदय तत्काल ही कब उसे स्वीकार करता है। हां, समय अवश्य उसे स्मृतिकी निधिके रूपमें रखा, 'आगे बढ़ो' का महामन्त्र सुनायेगा। किन्तु अभी जो बेचैनी है—छटपटाहट है इसे शान्त कौन करे? समयकी अपेक्षा, बुद्धिका परामर्श हृदय कब सुनता है? उसे चाहिये उसका हृदय सम्राट जिसके वियोगमें मानवजाति के कर्णधार शोक प्रकाश करनेमें शब्दोंका अभाव अनुभव करते हैं। गीता पढ़ी, कुरानका अवलोकन किया, बाइबिल का अध्ययन किया, ग्रन्थ साहबका मनन किया सत्य और सत्याग्रहका प्रचार किया, संसारको नवीन ज्योति दी जिसने, प्राचीन संस्कारोंको झकझोर दिया, प्रेम और अहिंसाका पाठ पढ़ा और पढ़ाया, भ्रातृप्रेमकी निर्मल गङ्गा बहाई, कभी वह कार्य न किया जो अन्तः प्रेरणासे अनुमोदित न हुआ हो। किन्तु हे मानवताकी साकार मूर्ति—हम आज शोक विह्वल हैं कैसे आपका आह्वाहन करें? हमने आपकी हत्या की आपके विचारोंको कुचला है। विक्षुब्धावस्थामें आपके नामपर अपने ही प्रतिवासियोंको हत्या की है—इस उद्देश्यसे कि आपकी आत्माको शांति प्राप्त होगी—कैसी विडम्बना है? जीवनकी अन्तिम घड़ियों तक आपने सहनशीलताका उच्च आदर्श हमें दिया आज हम उसे भूल बैठें तो हम कैसे आपके पुजारी और कैसे आपके भक्त? जीवित अवस्थामें आपने दिलकी सफाईके लिये हमें अनेक उपदेश दिये किन्तु हमने कहां अपना अन्तःकरण टटोला? वहां तो हमने आपके जयघोष ही में कर्त्तव्य की इति श्री समझी।

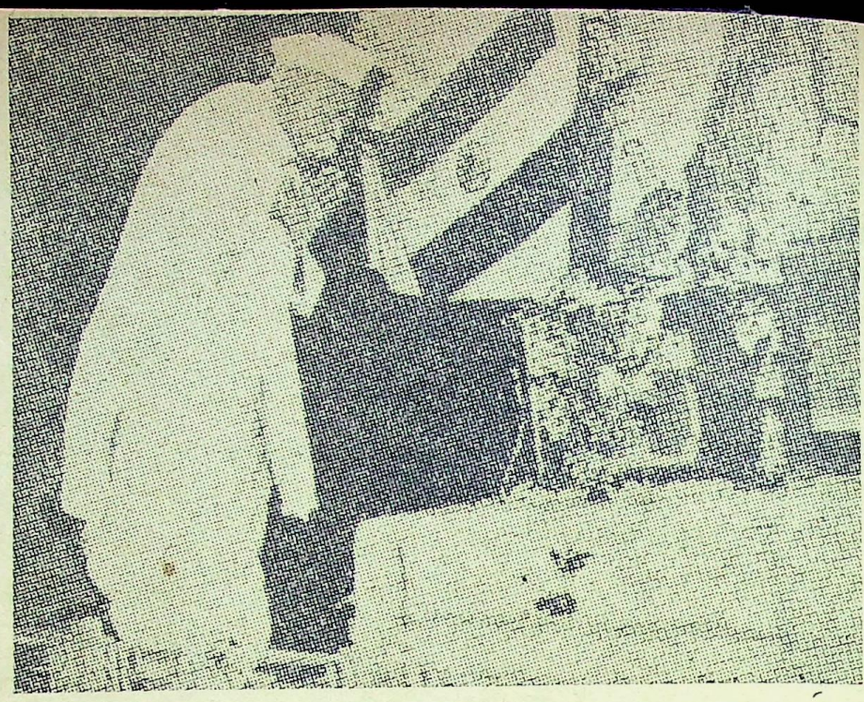

मध्यप्रान्तके प्रीमियर पण्डित रविशङ्कर शुक्ल राष्ट्रपिताके फूलोंको प्रमाण कर रहे हैं

जीवनरूपी दीपकके निर्वाणसे ज्योति की अमरताका अन्त नहीं—अन्तर केवल स्थूलता और सूक्ष्मता का है। जो प्रकाश हमें आपके जीवनसे प्राप्त होता था अब वह जीवनीसे होगा। अबतक उसका स्थूल दृष्टिसे लाभ उठाना चाहते थे अब वह सूक्ष्म होकर हमारे मानसको आवेष्टित कर हमें शांतिका अग्रदूत बनायेगा। ये बातें तो बुद्धिके दायरे की हैं किन्तु हृदयकी आंधी हमें बेचैन कर रही है। हमारा हृदय सम्राट कहां? हा बापू—हा महात्माजी कहकर भी हम शांत नहीं हो पाते। आपको हम कैसे भुलायें। आपने हमें "आजादी" दी है—स्वतन्त्र राष्ट्रका सम्मान प्रदान किया है। देशके पिताके लिये हम जो कुछ भी कहें—थोड़ा है।

बापू जीवित हैं

डा० सुशीला नैय्यर

"गांधीजी हम लोगोंके यहां कब आ रहे हैं ?" ३० जनवरीको तीसरे पहर ४ बजे मुलतानके डिप्टी कमिश्नरकी स्त्रीसे मैं मिलने गयी थी। उन्होंने उक्त प्रश्न मुझसे किया था। उन्होंने तथा अन्योंने बड़े सौजन्यके साथ गांधीजीके स्वास्थ्यके कुशल समाचार पूछे। उनके हालके अनशनों और कलकत्ते तथा दिल्लीमें उनका जो चमत्कारी प्रभाव हुआ उससे अन्यत्र की तरह पाकिस्तानके मुसलमान भी बहुत द्रवित और प्रभावित हुए। यह प्रसन्नताकी बात थी कि अभी उस दिनतक "इसलामका दुश्मन नम्बर औवल" भारत और पाकिस्तान दोनों जगह मुसलमानों का मित्र समझा जाने लगा। मैं अपने मन ही मन सोचने और गुनगुनाने लगी कि मेरी रिपोर्ट सुनकर बापू कितना प्रसन्न होंगे। और अचानक सवा ६ बजे कमिश्नरकी स्त्री घबड़ायी हुई भागती मेरे पास आयीं। "दुनियाको क्या हो गया है ?' वे चीख उठीं।" मैंने सुना है गांधीजी गोलीसे मार डाले गये।" मैं सन्न पड़ गयी और कांपने लगी। किसी दूसरेने कहा "नहीं नहीं यह हो नहीं सकता, अफवाह होगी। दिल्लीसे फोनकर अभी मालूम करती हूं कि माजरा क्या है। लेकिन इन्तजार नहीं मै कर सकती थी। सच हो या झूठ मैं फौरन लाहौर और वहांसे शीघ्र शीघ्र दिल्ली वापस जाना चाहती थी। डिप्टी कमिश्नरने अपनी गाड़ी मुझे दी और रातहीमें हम लोग लाहौर पहुंचीं। निर्जन सड़कपर कार तेजसे तेज रफ्तारमें भागी जा रही थी, उपर सुन्दर चांदनी थी और नीचे चारो तरफ परम शान्ति विराज रही थी। मन ही मन मैं कह रही थी। "नहीं नहीं अफवाह झूठी निकलेगी। बापू मरे नहीं। वे जीवित हैं, वे जीवित हैं।" और हृदय से प्रतिध्वनि आयी "बापू जीवित हैं" और मुझे बड़ी राहत मालूम हुई।

सवेरे ६ बजे हम लाहोर पहुंची। और रात भर जिस मृग मरीचिकाके पीछे मैं दौड़ी जा रही थी वह लाहोर पहुंचते ही विलीन हो गयी। एक मित्र आकर ढाढ़स बंधाने और समवेदना प्रकट करने लगे। शायद उन्होंने यह महसूस भी नहीं किया कि राहत देनेके लिये उनके शब्द उस समय बाणसे लग रहे थे। थोड़ी देर बाद पण्डितजीकी परिचित आवाज रेडियोमें सुनायी पड़ी जो अत्यन्त शोक विह्वल और व्यथातुर थी। अब आशाके प्रतिकूल आशाके लिये कोई गुञ्जायश नहीं रह गयी। हम अनाथ बन गये।

मैं अधीरताके साथ दिल्ली ले जानेवाले विमानकी प्रतीक्षामें इधरसे उधर टहल रही थी। सवेरे ९ बजे उसके आनेकी बात थी। यह कुछ देर पीछे ९॥ बजे आया। मुसलमान हो या हिन्दू सबके बदन पर विषाद की छाया थी। एयरो ड्रोमके कर्मचारियों और अफसरों पर भी। वे बहुत ही बिनम्र थे। उन्होंने कहा समय नहीं है अन्यथा पेशावरसे स्पेशल विमान मंगा देते। विमान आते ही शीघ्रसे शीघ्र उसके प्रस्थानके लिये उनलोगोंने पूरी कोशिश की और चालक विमान लाहोरसे दिल्ली १ घंटा २० मिनिटमें ले आया।

हिन्दुत्व पर कलंक

एयरो ड्रोमसे मैं एक कारमें बिरला भवनको आयी, सामान मि० क्रासके पास छोड़ आयी जिनके साथ गांधीजीने मुझे बहावल पुर भेजा था। उस समय तक मैं अर्ध स्तम्भित अवस्थामें थी। मियां इफ्तिखारुद्दीन मेरे साथ आये। आखोंमें आंसू भरे उन्होंने कारमें मुझसे कहा 'हममेंसे गांधीजीकी हत्याके लिये प्रत्येक जिम्मेदार हैं।" किसी न किसी समय हम सबने हिंसाको प्रोत्साहन दिया है और साम्प्रदायिकताके पुटको अपने मनमें आश्रय दिया है। मैं स्वयं अपनेको टटोलने लगी। 'कुछ लोग गैर जिम्मेदारीसे बोलते हैं पर दूसरे वही कर गुजरते हैं। मेरे दिलमें हलचल उठी "इस पागल आदमीने जिसने हिन्दुत्व पर कलंक कालिमा पोत दी है, जो कुछ किया है हम सब जिस बात के कभी न कभी अपराधी हो चुके हैं उसीका स्वाभाविक परिणाम है।" और मैं अपनी नारी जातिकी बात सोचने लगी। वे भी इस जहरसे नहीं बचीं। गांधीजी कहां तक और कैसे हम सबको चारो तरफ फैले हुए इस दलदलसे निकालते। उन्होंने अनशन किया और अब तो चरम परिणति हो गयी। उनकी कुर्बानी कर डाली गयी और वह उनकी ही एक संतान के द्वारा।

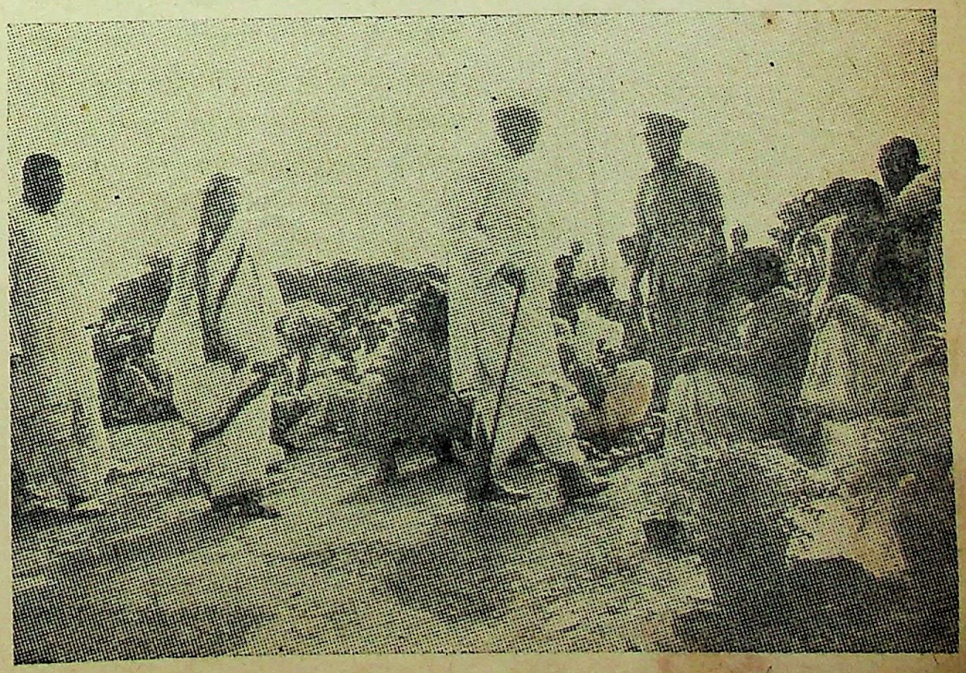

अलवर और भरतपुर नरेश राज्यच्युत

लीग नेशनल गार्ड और खाकसार भी गैर कानूनी घोषित

भारत सरकारने मुस्लिम नेशनल गार्ड और खाकसार सङ्गठनों को चीफ कमिश्नरके प्रान्तोंमें और गवर्नरोंके प्रान्तोंमें गैर कानूनी घोषित कर दिया है। इस आशयकी घोषणा करते हुए भारत सरकार द्वारा प्रेषित विज्ञप्तिमें कहा गया है कि मुस्लिम लीग नेशनल गार्ड देशमें विषाक्त वातावरण पैदा करनेके लिये जिम्मेदार है। सरकार इस वातावरणका अन्त करनेको कृत संकल्प है। यह सङ्गठन साम्प्रदायिक और अर्द्ध-सैनिक है और हिंसाकी ओर इसकी प्रवृत्ति है। भारतकी स्वतन्त्रताके साथ यह आशा की जाती थी कि इस सङ्गठन के सदस्य देशके भक्त और शान्त नागरिककी भांति रहेंगे, पर खेद है कि यह आशा निराधार साबित हुई। अब भी ये साम्प्रदायिक घृणा ओर हिंसा फैला रहे हैं। भीतर ही भीतर ये लोग भारत के मुसलमान नागरिकोंके भीतर इस देश के विरुद्ध किसी दूसरेके प्रति—देशमें फूट उत्पन्न करनेके इरादेसे—राजभक्तिका भाव फैला रहे हैं। अपने इस कामके लिये भीतर ही भीतर हथियार इकट्ठा कर रहे हैं और हमारी सरहदके उस पारके इस सङ्गठनके लोगोंके सहयोगसे देशके विरुद्ध आन्दोलन कर रहे हैं।

सरकारनेइस सङ्गठनको गैर कानूनी घोषित करते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि यह कार्यवाही भारतके मुस्लिम समाजके खिलाफ नहीं की गयी। देशके सभी वर्गोंकी रक्षाके लिये, जीवन, सम्पत्ति और नागरिक अधिकारकी रक्षाके लिये राज्यकी शक्तियोंपर भरोसा रखना चाहिये, किसी गैर सरकारी प्राइवेट सेना पर नहीं।

खाकसारोंसे खतरा

खाकसार सङ्गठन भी साम्प्रदायिक घृणा और हिंसा फैलानेके कामोंमें लगा है। कई मौकोंपर इसके सदस्य हिंसाके काम करते अपराधी पाये गये हैं। संस्थापक द्वारा सङ्गठनको भङ्ग कर देनेकी घोषणाकी अवज्ञा करके भी दिल्लीमें गत वर्ष इस सङ्गठनने एक अ०भा० प्रदर्शन करने का ऐलान किया। विभिन्न स्थानोंमें ये बहुत बड़ी तादादमें इकट्ठा हुए और यह बात स्पष्ट कर दी कि देशमें ये लोग अशान्ति मचाना चाहते हैं। दिल्ली प्रान्तमें परिणाम स्वरूप सङ्गठन गैर कानूनी करार दिया गया, पर मुस्लिम नेशनल गार्डकी तरह ये भी गुप्त प्रचार करते रहे। देशके कतिपय हिस्सोंको कांग्रेससे स्वतन्त्र करने और जेहादकी तैयारी करनेके लिये शस्त्रास्त्र संग्रह करनेकी अपीलें, पोस्टरों का वितरण करके, मुसलमानोंसे कर रहे हैं।

फलस्वरूप दोनों सङ्गठन गैर कानूनी घोषित कर दिये गये और तलाशियोंमें बहुतसे लोग पकड़े गये। हथियार और अन्य आपत्तिजनक वस्तुएं मिली हैं।

अलवर और भरतपुर

गांधी हत्याके पीछे कतिपय देशी राज्योंका भी बहुत बड़ा हाथ रहा है और अलवर और भरतपुरके विरुद्ध तो कुछ ऐसे प्रमाण मिले हैं जिनके कारण भारत सरकारने दोनों राज्योंका शासनसूत्र अपने हाथमें ले लिया है और शासकोंको आदेश दिया है कि जबतक जांच न हो जाये वे लोग राज्यसे बाहर रहें। अलवर के प्रधान मन्त्री डा० एन० वी० खरेको यह आदेश भी दिया गया है कि वे एक महीनेतक दिल्ली प्रांतके बाहर न जायं। अलवर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघका बहुत मजबूत गढ़ था। दोनों राज्योंका शासन सूत्र भारत सरकारने संभाल लिया है।

भयानक षड़यन्त्र

हत्याके सम्बन्धमें पकड़े गये मदन लाल और गोडसेने, कहते हैं कि, पुलिस को जो बयान दिये हैं उनसे सभी उच्च पदस्थ कांग्रेस नेताओंकी हत्या करके भारतमें मराठा राज कायम करनेके एक विषद षडयन्त्रका पता चला है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, मुस्लिम नेशनल गार्ड और खाकसार सङ्गठनोंको गैर कानूनी घोषित करनेके बाद विभिन्न स्थानोंकी तलाशियोंमें ढेरके ढेर शस्त्रास्त्र मिले हैं। कई जगह गुप्त अस्त्रागार भी पाये गये हैं।

—०—

काश्मीरकी समस्या

(३३वें पृष्ठ का शेषांश)

वे ही इतने गरीब, इतने परवश, इतने निरीह। नागरिक स्वतन्त्रता या राजनीतिक अधिकारोंके नामतकसे इनका कोई दूर दराजका रिश्ता नहीं जान पड़ा। कुछ तो जलवायु और भौगोलिक परिस्थितियोंने ही इन्हें घर-घुस्सा और स्वल्पतोषी बनाया है, फिर प्रतिगामी शासनके अभिशाप और बाहरी दुनियांके सम्पर्कसे वंचित रहनेके कारण भी इनका सामाजिक एवं राजनीतिक विकास नहीं हो पाया है। इन्हें देखकर साफ जान पड़ता था कि कितने लाख मानवोंके सर्वतोमुखी विकास का रास्ता वर्षोंसे एक उत्तरदायित्वशून्य निरंकुश स्वेच्छाचारी व्यक्ति रोके खड़ा है। और दुनिया जनतन्त्रके मार्गपर दौड़ी जा रही है। सौन्दर्यमें स्वर्गसे स्पर्धा करनेवाले काश्मीरकी यह कुरूपता कम दुखद और भयावह नहीं।

———

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

सचित्र

विश्वमित्र

काम-वाणसे वेधित होकर, बुढ़ऊका मन फड़क उठा
उधर ऊंट-सी शकल देखकर, बिटियाका दिल धड़क उठा
इधर पाँवके नीचे अजगर, हिन्दू कोड भयंकर है
अरे मैतके मुँहमें मत जा, फन फैलाये भड़क उठा

विश्वमित्र

सम्पादक— प्रदीप

३१— ३१CALCUTTA, SEPTEMBER 19, 1948 कलकत्ता १९ सितम्बर १९४८ मूल्य =) आना वार्षिक ६)

प्रलय-पावस

श्री 'ओश'

आज प्रलय पावसके नीचे छिपा आह-क्रन्दन है
जगतीके कोने-कोनेमें सागरका बन्धन है।
हरी-हरी खेतीके ऊपर जलचर घूम रहे हैं
सुन्दर भवनोंकी चोटीको रह-रह चूम रहे हैं
देव, हमारे जले हृदय पर यह कैसा चन्दन है
वैभवका सर्वस्व आज पानीके ऊपर बहता
विधि विधान है यही मेघके साथ अनिल है कहता
जीवनके सम्पुटमें जगका जीवन दीप जला रे,
कांटोंकी गोदीमें शत दलका संसार भला रे
नश्वर जगतीके प्रान्तरका यही मृत्यु जीवन है
विकल विश्वमें प्रलयंकरका ताण्डव नृत्य दिखाता
ज्वालामें तो नहीं किन्तु पानीमें विश्व नहाता
मृदु कम्पनके साथ भवन, जीवनमें सो जाते हैं
पंचतत्वके एक अंशमें मानव खो जाते हैं
रक्षाकी कातर पुकार अब तो अरण्य रोदन है
रक्षक दल धीरे तरणी पर जा रक्षा कर पाते
जलते दीपककी गणनामें बुझा अधिक ही पाते
कभी-कभी जलके प्रवाहमें लिपट मृत्यु अपनाते
रक्षकत्व जैसी उपाधिको फिर भी त्याग न पाते
जीवनका इतिहास, स्वयं मिट जाता यह बंधन है
आज प्रलय पावसके नीचे छिपा आह क्रन्दन है

उद्बोधन

श्री हरिशंकर द्विवेदी बी० ए०

नये समाजके लिए नवीन चेतना भी हो
नवीन राष्ट्रके लिए नवीन कल्पना करो

जो जोतता है हड्डियों से देश की जमीन को
जो दे रहा है रक्त कि नमीकी भी कमी न हो
वही मरा कफन बिना है जा रहा श्मशान को
नजर उठाके देख लो मरे हुए किसान को
वह मर गया कि देशमें अनाजकी कमी न हो
नवीन राष्ट्रके लिए नवीन कल्पना करो

है चिमनियोंका क्षार जिसकी सांस सांस खींचती
है निष्ट तपमें, जानते हो कौन वह महा यती
है बख्श दे रहा तुम्हें, बना रहा है सेठ जी
उसी मजूरका कभी भरा नहीं है पेट भी
जो जल रहा चितामें तुम उसीकी अब भभूति लो
नवीन राष्ट्रके लिए नवीन कल्पना करो

जो लिख रहा है रक्त से नयी नयी कहानियां
जो वृद्ध हो गया है और गढ़ रहा जवानियां
जो दीपको जला रहा है कामनाके स्नेह से
है ले रहा विदा शहीद अब मनुष्य देह से
करो प्रणाम, जा रहा है आज स्वर्गधामको
नवीन राष्ट्रके लिए नवीन कल्पना करो

सड़ी हुई है लाश जिसकी गंदगीकी ढेर में
था मन्त्रका असर उसीकी बांसुरी सी टेरमें
हो जानते कि कौन है, नहीं रहा जो अब यहां ?
सुकवि, जिसे कि भूल भी न पायगा कभी जहां
मनुष्यके समाजमें मनुष्यका यह हाल हो ?
नवीन राष्ट्रके लिए नवीन कल्पना करो।

श्री

परहित बस जिनके मन माहीं ।
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

विश्वमित्र

करम गति..

कहावत है कि 'होनी होकर ही रहती है,' और 'कर्मकी गति टाले नहीं टलती ।' हम देखते हैं कि हैदराबादके मामलेमें ये दोनों ही बातें सोलहो आने सच उतरी हैं। निजामकी शान और प्रतिष्ठा बचाने के लिए भारत सरकारने जितनी सहिष्णुतासे काम लिया, शायद संसारकी कोई भी दूसरी शक्ति उतनी सहिष्णुता नहीं दिखाती । दुर्भाग्यवश निजामके नादान दोस्त उस सहिष्णुताको 'कमजोरी' समझते थे, लेकिन समय आने पर संसारने अच्छी तरह देख लिया कि भारत सरकारकी हस्ती क्या है ।

निजाम सरकारपर जिस व्यक्तिने सबसे अधिक रोब गालिब कर रखा था और जिसका रजाकार-दल निरपराध जनता पर जोर-जुल्म करनेमें हिटलरके नाजी-दलको भी मात कर रहा था, वह इन्सानके रूपमें शैतान कासिम रजवी आज भारतीय सेनाकी कैदमें अपनी करनीका फल भोग रहा है । दिल्लीके लाल-किले पर वह निजामका आसफजाही झंडा फहराने और भारतीय सेना को पस्त करनेका सुनहरा स्वप्न देख रहा था। लेकिन कुल चार-पांच दिनोंमें ही निजामी सेना और रजाकार-दलके होश ठिकाने आ गये। भारतीय सेनाकी अपरिमित शक्तिने उन्हें चकाचौंध कर दिया। उस समय रजवीका तो कहीं पता भी न चला। हां, पता तब चला, जब निजामके आत्मसमर्पणके बाद वह कैद कर लिया गया ।

निस्सन्देह हैदराबादकी इस घटनाने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें भारतकी प्रतिष्ठा बढ़ा दी है और दूसरी ओर पाकिस्तान को इससे गहरी क्षति हुई है । पाकिस्तान यह खयाली पुलाव पका रहा था कि जब भारतीय सेना हैदराबादमें प्रवेश करेगी तो समस्त भारतके मुसलमान विद्रोह कर देंगे और सर्वत्र साम्प्रदायिक दंगे-फसाद होने लगेंगे । कहना नहीं होगा कि पाकिस्तान सरकार और उसके कर्णधारों ने यह मजहबी आग भड़कानेके लिए कम कोशिशें नहीं कीं, लेकिन उन्हें बुरी तरह निराश होना पड़ा । विद्रोह अथवा दंगे-फसाद करना तो दूर रहे, भारतीय मुसलमानोंने—चाहे वे लीगी हों अथवा अन्य किसी भी दलके—एक स्वरसे हैदराबादके सम्बन्धमें भारत सरकारकी नीतिका समर्थन किया और यह जोरदार आवाज बुलन्द की कि मुसलमान हर हालतमें निजामके खिलाफ भारत सरकारका साथ देंगे । इस तरह दुनियाकी आंखें खुल गयीं कि स्वतन्त्र भारतकी बुनियाद कितनी मजबूत है और पाकिस्तानी आदर्श के सर्वथा प्रतिकूल वह एक असाम्प्रदायिक राष्ट्र है ।

देशमें मजहबी उपद्रव फैला कर ही पाकिस्तानने अपना अस्तित्व पाया है, और स्वभावतः वह उसी तरीकेमें अब भी विश्वास करता है। लेकिन नये जमाने में वह पुराना तरीका अब कारगर नहीं हो सकता। अंग्रेज महाप्रभु अब यहां नहीं रहे, जो अपने लाभके लिए मजहबी दंगे करानेमें मदद करते थे । पाकिस्तान बन जानेकेबाद,भारतकेमुसलमानोंको भीअसली हालत समझनेमें देर न लगी और बेशक उन्होंने अपनी पिछली गलतियोंसे सबक लिया है । और, जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं, उनके इस रुखको देखकर पाकिस्तान अत्यन्त चिन्तित-सा हो रहा है । कायदे आजम भी अब नहीं रहे । हैदराबाद का मोर्चा भी अब खत्म हो गया । सारा भारतीय राष्ट्र आज पूर्ण सुसंगठित दिखायी देता है । सामने काश्मीरका मोर्चा अभी बाकी है । ऐसी हालतमें पाकिस्तानकी घबड़ाहटका अन्दाज हम आसानीसे लगा सकते हैं ।

जहां तक भारतका सम्बन्ध है, वह प्रारम्भसे ही पाकिस्तानके साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखनेके लिए निरन्तर चेष्टा करता है । इसके प्रतिकूल पाकिस्तानने,काश्मीर, हैदराबाद, जूनागढ़ आदि का एक-न-एक झगड़ा खड़ाकर शुरूसे ही भारतको अब तक सांस लेनेकी भी फुरसत नहीं लेने दी । लेकिन सौभाग्यसे भारतीय नेताओंकी दूरदर्शितापूर्ण नीति से मामला अब बहुत कुछ सुलझ चुका है । हैदराबादका निरंकुश शासन अब नहीं रहा । फिलहाल भारतके फौजी गवर्नर के हाथोंमें हुकूमतकी बागडोर है । लेकिन आशा की जाती है कि शीघ्र ही वहां जिम्मेदार सरकार कायम हो जायेगी । रियासती कांग्रेसके अध्यक्ष स्वामी रामानन्द तीर्थ एवं अन्य नेता जेल-मुक्त होकर हैदराबादके भविष्य पर विचार कर रहे हैं। आरम्भमें तो हमें भय था कि निजाम सरकारकी मूर्खतासे हैदराबादमें जान-मालकी भयंकर बर्बादी होगी । लेकिन खुशी इस बातकी रही कि मामला अधिक बिगड़नेसे पहले ही निजामको सुबुद्धि आ गयी ।

अब काश्मीरकी ओर—

हैदराबादका संघर्ष तो खत्म हो गया । लेकिन भारत और पाकिस्तानके बीचका मुख्य संघर्ष—काश्मीरका युद्ध—अभी हमारी चिन्ताका कारण ज्यों-का-त्यों बना हुआ है । काश्मीर-कमीशनने समझौतेके लिए लड़ाई बन्द रखनेका जो प्रस्ताव रखा था, उसे पाकिस्तानने ठुकरा दिया है, यद्यपि भारतने उसे स्वीकार कर लिया था । अब काश्मीर-कमीशन यहांकी रिपोर्ट राष्ट्र संघके सामने पेश करनेके लिए चला गया है और लगभग ६ सप्ताह बाद

फिर शायद लौटेगा। लेकिन हम तो देखते हैं कि राष्ट्र-संघ अथवा उसके कमीशनसे कुछ भी नहीं होने का। इसलिए भारत सरकारको हैदराबादके बाद अब अपनी शक्ति काश्मीरकी ओर केन्द्रित करनी चाहिए और इस बातकी कोशिश करनी चाहिए कि काश्मीर-कमीशनके पुनः लौटनेके पूर्व वहांकी स्थिति बहुत-कुछ हमारे अनुकूल हो चुकी रहे। हैदराबाद-काण्डकी सफल समाप्तिके परिणाम स्वरूप आज समस्त देशमें जैसा वातावरण उत्पन्न हुआ है तथा हिन्दुओं और मुसलमानोंके पारस्परिक सम्बन्धमें जो एक नया अध्याय जुड़ा है, उसका लाभ उठाते हुए भारत सरकारको काश्मीरका मोर्चा अधिक-से-अधिक मजबूत बनाना चाहिए। हमें पूर्ण विश्वास है कि जिस तरह निजामकी ताकत मकड़ीके जालेकी तरह बिलकुल खोखली साबित हुई है, उसी तरह यदि भारतीय फौजें अपनी पूरी ताकतके साथ एक बार काश्मीरके आक्रमणकारियोंके साथ भिड़ जायेंगी, तो निस्सन्देह वहां भी हैदराबादकी घटनाकी पुनरावृत्ति होकर रहेगी। भारतकी ३० करोड़ जनता अब बड़ी व्यग्रतासे इस कदमका इन्तजार कर रही है।

खुदाई खिदमतगारोंपर कोप—

सीमा प्रांतके प्रधान मंत्री अब्दुल कयूम अपने राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वियोंके विरुद्ध कड़ीसे कड़ी काररवाई करनेमें कुछ भी नहीं उठा रखना चाहते। उन्होंने लोकप्रिय नेता खां-बंधुओंको तो पहले ही जेलमें बंद कर दिया है और उनके परिवारके अन्य कई प्रमुख पुरुष भी पकड़े जा चुके हैं। साथ ही कईकी संपत्ति भी जब्त की जा चुकी है। उतनेहीसे कयूमको संतोष नहीं हुआ, इसलिये अब उन्होंने खां अब्दुल गफ्फारखांकी भी सारी सम्पत्ति जब्त कर लेनेका हुक्म निकाल दिया है और खुदाई खिदमतगारों या लालकुर्तीवालोंके संगठनको गैरकानूनी घोषित कर दिया है। उनकी ऐसी काररवाइयोंसे ही बाह्य जगतको यह मालूम होता रहता है कि उस प्रांतके भीतर अब्दुल कयूमकी मिनिस्ट्री शासन कर रही है, नहीं तो वहां सर्वत्र उसके विरुद्ध घोर असंतोष फैला हुआ है। खास वहांकी मुसलिम लीगके भीतर भी एक ऐसा प्रबल दल पैदा हो चुका है, जो लालकुर्तीवालोंके साथ मिलकर चारसद्दामें कयूम-मिनिस्ट्रीके विरुद्ध प्रदर्शन करता देखा गया है। मानकी शरीफके जिस फकीरकी सहायताके बलपर ही कयूम-मिनिस्ट्रीका बनना संभव हुआ था, वह भी अब इसके विरुद्ध खड्गहस्त हो रहा है और जिन मि० जिन्नाकी सहायताका कयूम मियांको सदा भरोसा रहता था, मियांजीके दुर्भाग्यसे वे भी पंचत्वको प्राप्त हो चुके। ऐसी अवस्थामें देखना तो यह है कि कयूम-मिनिस्ट्रीका ताजिया कब ठंडा होता है। आज जो पाकिस्तानके भीतर इतना सन्नाटा छाया हुआ है, इसका प्रधान कारण तो यही जान पड़ता है कि मि० जिन्नाकी जगह लेनेवाला वहां दूसरा कोई नहीं है और जो ख्वाजा-नजीमुद्दीन उसपर प्रतिष्ठित किये गये हैं, वे अभी स्थानापन्न गवर्नर-जनरल ही हैं, स्थायित्व उनके लिये भी नहीं है। हमलोगोंका तो दृढ़ विश्वास है कि 'धर्मएव हतो हंति धर्मो रक्षति रक्षितः' और सत्यमेव जयते नाऽनृतम्' इसलिये अधर्म और असत्यके आधारपर टिका हुआ पाकिस्तान अधिक समयतक टिका नहीं रह सकता और यदि उसने अपना रास्ता नहीं बदला, तो उसका विनाश अपने ही कुकर्मोंकेकारण निश्चित है।

सरपर चढ़ा जादू—

जब भारत सरकारने राष्ट्रसंघकी सुरक्षा-कौंसिलके सामने पाकिस्तानके विरुद्ध अभियोग उपस्थित किया था, तब पाकिस्तान सरकारके प्रतिनिधिने साफ शब्दोंमें कह दिया था कि काश्मीरपर जंगली कबीलेवालों द्वारा होनेवाले आक्रमणसे हमारा कुछ भी संबंध नहीं है और न हम उन्हें किसी प्रकारकी सहायता ही देते हैं। इतनेपर भी यह तो सभी देख रहे हैं कि काश्मीरके झगड़ेके संबंधमें भारतके मुकाबले पाकिस्तानही दूसरा पक्ष समझा जाता रहा है। जब संघ द्वारा नियुक्त काश्मीर-कमीशन सारी अवस्थाएं अपनी आंखोंसे देखनेके लिये यहां आ गया और पाकिस्तानी अधिकारियोंने यह देख लिया कि न तो काश्मीरमें लड़नेवाली पाकिस्तानी सेनाही हटायी जा सकती है और न कमीशनसे ही अब वास्तविकता किसी प्रकार छिपायी जा सकती है, तब चेकमीशनके कराची पहुंचनेपर उन्होंने काश्मीरके भीतर पाकिस्तानी सेना भेजे जानकी बात स्वीकार कर ली। इस तरह जब पाकिस्तान सरकारकी सारी कलई खुल गयी और लड़ाई बंद करने सुझावमें कमीशनने सर्वप्रथम पाकिस्तानी सेनाको काश्मीरसे हटा लेनेका सुझाव रखा, तो उसके सुझावोंको पाकिस्तानने बिना किसी शर्तके स्वीकार करनेसे अनिच्छा प्रकट कर दी। इस तरह संसारको पता चल गया कि भारत द्वारा पाकिस्तानपर लगाया हुआ अभियोग असत्य नहीं है और जैसे पाकिस्तानकी सहायतासे जंगली कबीलियोंने काश्मीरपर आक्रमण करनेके साहस किया था, वैसे ही अब वहां लड़ाईका जारी रहना भी पाकिस्तानके कारण ही संभव है। सच तो यह कि अधिकांश कबीली लोग तो जाड़ेकी समाप्तिके बाद और लड़ाईमें बुरी तरह क्षति उठाकर अपने घरोंको लौट गये और पीछे मुख्यतः पाकिस्तानी सेना ही मोर्चा थामे हुए है। उनके हटनेसे सारा खेलही खतम हो जाता, इसलिये तो पाकिस्तानने पहले अपनी सेना नहीं हटायी और पीछे एक असत्यको छिपानेके लिये कमीशनके सामने दूसरा असत्य गढ़ डाला और उसी विचारसे वह अब भी सेना हटानेको तैयार नहीं। अब काश्मीर-कमीशनके सदस्य अपनी रिपोर्ट सुरक्षा-कौंसिलमें पेश करनेके लिये जल्दीही प्रस्थान करनेवाले हैं, इसलिये काश्मीर और जम्मू रियासतके उप-प्रधान मंत्री मि० गुलाम मुहम्मद बख्शीने १८ सितम्बरको श्रीनगरमें उनके सम्मानमें भोजका आयोजन किया था। उस अवसरपर स्वयं शेख अब्दुल्लाने संयुक्त राष्ट्रसंघ और विश्व-शांतिकी शुभ कामना प्रकट की और कमीशनके एक मेम्बरने उत्तरमें शेख अब्दुल्लाके स्वास्थ्यकी कामना प्रकट करते हुए यह कहा—"आपने ही काश्मीरको बर्बादीसे बचा लिया।" सच है—'जादू वह जो सिर पर चढ़के बोले'। हम आशा करते हैं कि कमीशन जो रिपोर्ट कौंसिलको देगा, उससे पाकिस्तान सरकारका पाप और पोल अच्छी तरह खुल जायेगी

हवाई किले खतम

("विश्वामित्र" संचालककी कलमसे)

रिजवीकी गिरफ्तारीसे उसके सब हवाई किले खतम हो गये। मालूम होता है कि पूर्व जन्ममें वह किसी विसातीका लड़का होगा जिसने बहुतसे हवाई किले बांध रखे होंगे। उसने सोचा होगा कि चार आनेकी चूड़ियां बेच कर मैं मकान बनाऊंगा और शादी कर एक खूबसूरत बीबी लाऊंगा। उस बीबीसे जो बच्चे होंगे उन्हें नवाब बनाऊंगा वे बचपनमें ऊधम करेंगे तो लात मार कर दुरूस्त करुंगा। लात चलाते ही चूडियां चूर चूर हो गयीं। न महल बना न बीबी आयी और चूड़ियोंसे हाथ धोना पड़ा। आज कैदखानेकी हवा खाते हुए उसे पता चला होगा कि जिस नेहरू सरकारके विरुद्ध रात दिन विष उगलता था, वह कितनी मेहरबान है कि उसे जिन्दा रखे हुए हैं, हिटलर सरकार तो गिरफ्तारीके समय ही उसे खतम कर देती। जनरल राजेन्द्र सिंहने ठीकही कहा है कि सारी शैतानीकी जड़ यह रिजवी ही है। इसने निजामको अपने हाथका कठपुतला बना कर हैदराबादमें हिन्दुओं पर गजब ढा दिया और हमारी राष्ट्रीय सरकारको इस तरह धमकियां दीं, मानो जिन्नाने इसे सर्वस्व सौंप दिया है इस शैतानने यह नहीं सोचा कि एक संगठित सरकारके विरुद्ध मोर्चा लेना कितना खतरनाक है। वकालत न चलने पर इसने उपद्रवी नेता बनना पसंद किया और हैदराबाद में मौका पाकर रजाकारोंका सरदार बन गया। न्यायका तकाजा तो यही है कि हजारों को तबाह करने वाला गोलीसे उड़ा दिया जाये।

इस शैतानने न जाने कितने हिन्दू परिवारोंका सर्वनाश कराया, कितनी बहू बेटियों की इज्जत पर हमला कराया और अपने विरोधी मुसलमानोंको भी गोलीके घाट उतराया। इसको जिन्ना पर बड़ा नाज था और यह समझता था कि काश्मीरके समान हैदराबादमें भी हम अपनी शैतानीसे कुछ दिन निकाल ले जायेंगे, परंतु उसके अनुयायी एक हफ्ते तक भी मुकाबला न कर सके। रजाकार अपनी बर्दियां जलाकर हथियार इधर उधर फेंक कर फिर जुलाहे या कूंजड़े का काम करने लगे और इक्के चलाने लगे। कूंजड़ोंकी सेना अगर विजय प्राप्तकर सकती तो लखनऊके हिजड़े भी दिल्लीमें राज शासन करते होते। निजामका दुर्भाग्य है कि उसे ऐसे मददगार मिले। निजामने हिन्दुस्तानमें जितनी खुराफातकी उतनी तो जिन्नाकी भी नहीं मानी जा सकती। इसने हिंदू प्रजाको बुरी तरह चूस कर अपने खजाने यहां तक भरे कि सारे संसारमें यह सबसे धनीमाना गया और उस दौलत को मजहबी प्रचारमें पानीकी तरह बहाया जिससे अंग्रेजी सल्तनतमें मुसलमानोंने हिंदुओंको तबाह किया। हर जगह निजामका रुपया हिंदुओं के विरुद्ध लगा और हिंदुओंका धन हिंदुओंके काम न आ सका। जनरल राजेन्द्र सिंह इसे शासकका सम्मान देनेकी बात कहते हैं, यह हिंदू धर्मकी उदारता ही कही जायेगी।

निजाम खतम न होता तो हमारे राष्ट्र संघमें एक बड़ा जबर्दस्त कोढ़ लगा रहता और निजामकी थैलियां पाकिस्तान पहुंच कर हमें परेशान करती रहती। अब उसके खजानेका पूरा हिसाब हो जाना चाहिये और जो रकमें उसने नाजायज कामोंमें लगायी उसके लिये यह दोषी और अपराधी ठहराया जाना चाहिये। निजामकी निजामी खतम होने पर हम शांतिकी सांस ले सकते हैं। हिंदुस्तानमें इस रियासतने बड़ा भारी अनर्थ कया। दो करोड़की आबादी रखने वाली हिंदुस्तानकी सबसे बड़ी रियासतने हमेशा हमारे साथ विश्वासघात ही किया। पचासी, प्रति सैकड़ा हिंदुओंका खून निकाल कर पंद्रह सैकड़ा मुसलमानोंको मोटा बनाती रही और शैतानोंको अपने यहां पनाह देती रही। आज इस रियासतको भारतीय राष्ट्र संघके तिरंगे झंडेके नीचे देख कर प्रत्येक भारतवासीका हर्षोन्मत्त होना स्वाभाविक है और आगामी २६ सितम्बर रविवारको भारत के गवर्नर जनरलके आदेश पर देश व्यापक हर्ष मनाया जाना जरूरी है जिसमें भारतीय राष्ट्रसंघके मुसलमान भी पूरा योग दें।

हमारी सेनाके बारह सैनिक इस युद्ध में वीरगतिको प्राप्त हुए। इन बारहों वीरों का देशवासी यथोचित सम्मान करना अपना प्रधान कर्तव्य मानेंगे क्योंकि आजाद हिंदुस्तानका यह पहला मोर्चा था जिस पर हमने विजय पायी है हमारा दूसरा मोर्चा काश्मीर है। पाकिस्तानी गुण्डे अभीसे सशंक होने लगे हैं और कहने लगे हैं कि भारत सरकार अब काश्मीरमें जबर्दस्त कदम उठाने की तैयारी करेगी। इसकी संभावनाने शायद पाकिस्तानमें यह घोषणा करायी है कि अब सेनासे किसीको छुट्टी नहीं मिलेगी और जो लोग छुट्टी पर गये हुए हैं, वे तुरंत अपनी ड्यूटी पर वापस आ जायें। जादू वही है, जो शिर पर चढ़ कर बोले। पाकिस्तानी प्रचारक दिल मसोस कर मगर ऊपरसे हंस कर कहते हैं कि निजामसे मिल कर नेहरू सरकारने फतेह पायी है।

कुछ गुण्डे यह भी कहते हैं कि जिन्नाके कब्रस्तानमें पहुंचते ही हैदराबादपर चढ़ाई की गयी। वे यह बात भूल जाते हैं कि जिन्नाकी मृत्युकी बात छिपानेपर भी भारत सरकार उसकी जरा भी परवा न कर दिनदहाड़े अपनी सैनिक योजनाओंपर पूर्ण प्रकाश डाल रही थी। हिन्दुस्तानमें रहनेवाले मुसलमानोंने इतिहासमें पहली बार राष्ट्रीय सरकारका समर्थन मधुर शब्दोंसे करते हुए अपनी सहधर्मी रियासतके खिलाफ आवाज उठायी और जिन्नाके मरनेपर कहीं आंसू बहानेका नक्शा पेश नहीं किया। अभी उनसे इतनी ही आशा की जा सकती है, क्योंकि शताब्दियोंसे गुमराह होनेवाले एक दिनमें ठीक रास्तेपर कैसे दिखायी

(पृष्ठ १ का शेषांश)

देने लगें। अभी उनसे यह आशा नहीं की जा सकती कि वे लाखोंकी तादादमें सामने आकर अपनी राष्ट्रीय सरकारसे कहें कि काश्मीरके मोर्चेपर हम जाकर भारत सरकारको विजयी बनायेंगे।

हैदराबादकी प्रजाके घरोंमें घीके चिराग जलना स्वाभाविक है। रिजवीकी मेहरबानीसे कई हजार रजाकार हताहत हुए और बहुतसे गिरफ्तार किये गये हैं। वे युद्धके कैदी कैसे माने जा सकते हैं। वे तो डाकुओंके दलके हैं और चोर डाकुओं और हत्यारोंके समान कैदी माने जायेंगे। उन्हें पता लगना चाहिये कि देशद्रोहकी क्या सजा होती है? हैदराबादमें अमनचैन कायम हो गया है और सैनिक गवर्नरकी नियुक्तिसे उपद्रवी रजाकार बातकी बातमें होशमें आ जायेंगे। जनता भी अब इनकी अच्छी तरह मरम्मत कर दिखायेगी।

हैदराबादके भावी शासनका निश्चय करनेके लिये दिल्लीमें कानफरेंस हो रही है और रियासतमें अब कहींपर निजामी शासन नहीं है। निजामको अकड़ देखकर जो राजा महाराज दुखी थे कि हमने क्यों आत्म-समर्पण किया, वे अब अनुभव कर रहे होंगे

भारतीय राष्ट्र संघमें मिलकर उन्होंने किस तरह बुद्धिमानी दिखायी और आत्म-प्रतिष्ठाकी रक्षा की।

मुफ्त सरल सर्प विष चिकित्सा।

साँप, बिच्छू, कुत्ता, सियार, चूहा, कीट-पतंग, संखिया, अफीम, पारा आदि की सरल चिकित्सा की पुस्तक सिर्फ तीन मास तक मुफ्त बांटी जायगी। दो आने के डाक टिकट सह पत्र भेजें।

हिमालिया केमिकल वर्क्स

पोष्ट बा० नं० ११४०५ कलकत्ता, ६।

सस्ती और सुन्दर पुस्तकें

सिलाई कटाई विज्ञान-हर प्रकार के कपड़ा काटना और सीना सिखाया गया है। मूल्य १।=)

फिल्मी जलतरंग-नये एवं पुराने फिल्मोंके चुने हुए गानोंका संग्रह। मूल्य १।=)

फिल्मी अप्सरायें-५० फिल्मी अभिनेत्रियोंके मनोहर चित्र एवं जीवनी: मूल्य २।=)

चित्रमय रजतपट-३६ प्रमुख अभिनेत्रियोंके तिरंगे चित्रोंका एलबम मूल्य ३।।)

अनिल कम्पनी, फुलकट्टी, आगरा

२।।]में ज्वेल वाली रिष्ट वाच

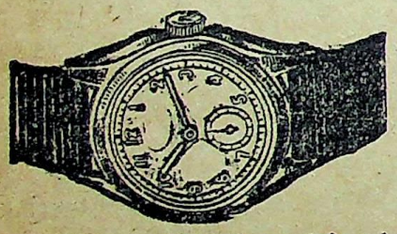

खीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी, गोल या स्क्वायर शेप २०।।) सुपिरियर २२।।)

फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)

फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)

फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस—३८)

फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड ७५)

रेक्टेंगुलर कर्व या टोनो शेप

क्रोमियम केस—४२) सुपिरियर —४५)

रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०)

अलार्म टाइम पीस १८) २२) बीग साइज २५) [illegible] अलग। कोई दो घड़ी लेने पर [illegible]

एच० डेभीड एण्ड कं० (V)

पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

नाटक—रामलीला का सामान

परदा, ड्रापसीन, झालर, पखपाई, जटा, दाढ़ी, मूंछ, जनाने-मर्दाने बाल, क्रीट, मुकुट, कुण्डल, अलकीहार, पोशाक, चेहरे, तबला, हारमोनियम, सारंगी, सितार, इत्यादि सामान का सचित्र सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

कमला मार्ट, मथुरा

दमा और पुरानी खांसीके रोगियो! नोट कर लो

(अब चके तो फिर सालभर तक पछताना पड़ेगा)

हर सालकी तरह इस साल भी हमारी जगत विख्यात "चित्रकूटी बूटी" के दो हजार केट आश्रममें मुफ्त बांटे जावेंगे, जो (शरद पूर्णमासी) ता० १८ अक्तूबरको एक ही खुराक खीरमें खानेसे सदाके लिये इस दुष्ट रोगसे छुटकारा मिल जाता है। जो रोगी समयपर आश्रममें न आ सकें, वह सदाकी तरहसे २।=) विज्ञापन रजिस्टरी आदि खर्च मनीआर्डर से भेजकर तुरत मंगालें, जिसमें ठीक समयपर सेवन करके पूरा लाभ उठा सकें। देर करने से गत वर्षकी तरह सैकड़ोंको निराश होना पड़ेगा। नोट करलें कि वी० पी० किसीको नहीं भेजी जाती है। धर्मार्थ बांटनेके लिये कमसे कम २५ आदमियोंके लिये ४०) रु० भेजना चाहिये।

पता- रायसाहब कं० एल० शर्मा, रईस आश्रम (६०) "जगाधरी" (पूर्व पंजाब)

शिक्षक : रूस और भारत

श्री अम्बिकाप्रसाद पांडेय बी० ए०

"हमारे देशमें शिक्षकका स्थान इतना उच्च बनाना होगा, जितना पहले कभी नहीं था और जितना बुर्जुआ समाजमें कभी हो ही नहीं सकता।"—ये उद्गार सोवियत रूसके विधाता महात्मा लेनिनके हैं, जिनकी प्रेरणासे सोवियत सरकार, सत्ता ग्रहण करनेके आरम्भ-कालसे ही, शिक्षकका स्तर ऊंचा उठानेके लिये निरन्तर प्रयत्नशील रही और आज भी इस दिशामें वह जितनी दिलचस्पी दिखा रही है, उतनी दिलचस्पी पूंजीवादी देशोंकी सरकारें नहीं दिखातीं। यही कारण है कि शिक्षकका पेशा जितना प्रिय आज रूसमें माना जाता है, उतना दूसरे देशोंमें नहीं। और तो और, संसारके सबसे धनी और समृद्ध देश अमेरिकामें भी शिक्षक अपनी आर्थिक स्थितिसे सन्तुष्ट नहीं हैं। कुछ दिनों पूर्व एक रूसी पत्रमें यह रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी कि "एक अमेरिकन शिक्षकने, गरीबीसे मुक्ति पानेके लिये, अपना पेशा छोड़ देनेका निश्चय किया है।" यह रिपोर्ट कहां तक सच है, यह कहना तो कठिन है। लेकिन इतना तो सभी जानते हैं कि यूरोप और अमेरिकामें भी शिक्षकको वह 'राष्ट्रीय सम्मान' प्राप्त नहीं है, जो रूसमें प्राप्त है। इस स्थल पर यह उल्लेखनीय है कि सोवियत सरकारने शिक्षण-क्षेत्रमें स्त्री-पुरुष दोनोंको समान सुविधाएं दी हैं। बराबर योग्यताकी स्त्री-शिक्षिका उतना ही वेतन पाती है, जितना पुरुष-शिक्षक। इतना ही नहीं, बल्कि शिक्षण कार्यमें महिलाओंकी ही प्रधानता है। रूसमें शिक्षकोंकी संख्या १० लाखसे ऊपर है, जिसमें महिलाएं लगभग ७॥ लाख हैं। खासकर प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओंमें शिक्षण कार्य महिलाओंके ही सिपुर्द है, क्योंकि कोमलमति बालकोंको उत्साह और लगनके साथ पढ़ानेके लिये उन्हें पुरुषकी अपेक्षा अधिक उपयुक्त समझा जाता है।

तात्पर्य यह कि सोवियत सरकार शिक्षाके क्षेत्रमें पूरी दिलचस्पी लेती है और इसलिये शिक्षकका स्तर ऊंचा उठानेकी चिन्ता रखती है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं समझ लेना चाहिये कि रूसी शिक्षक अपने देशके डाक्टरों या इंजिनियरोंसे अधिक कमाते हैं। पर एक बात जरूर है, वह यह कि मूल वेतनके अलावा, बोनस और प्रीमियमके रूपमें शिक्षकोंको जितना मिलता है, उतना दूसरे पेशेवालोंको नहीं।

सरकारकी तरफसे शिक्षकोंको सब तरहकी संभव सुविधाएं दी जाती हैं, जिससे कि शिक्षक तन्मयताके साथ अपने कर्त्तव्योंका पालन करे। रहनेके लिये मुफ्तका निवासस्थान मिलता है और साथ ही कुछ जमीन भी दी जाती है, जिसे अपने लिये वह जोत बो सके। देहाती शिक्षकको तो और भी अधिक सुविधाएं दी जाती हैं। यदि वह चाहे तो स्कूलके पास ही उसे निवासस्थानके लिए मुफ्तमें जमीन दी जाती है और साथ ही मकान बनानेका व्यय संभालनेके लिये सरकारी कर्ज भी दिया जाता है, जो छोटी-छोटी किश्तोंमें एक लम्बे अरसेमें अदा किया जाता है। इससे सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि शिक्षक जिस बस्तीके स्कूलमें पढ़ाता है, वहीं बस जानेके कारण स्वभावतः वहांका एक मान्य नागरिक बन जाता है और इस तरह वहांके सामाजिक जीवनमें भी अपना एक विशिष्ट स्थान बना लेता है।

ऊपर जिस 'राष्ट्रीय सम्मान' का उल्लेख किया गया है, उस पर विशेष रूपसे प्रकाश डालना अत्यन्त आवश्यक है। चूंकि शिक्षण कार्य राष्ट्रीय उत्थानका एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है, इसलिये सोवियत सरकार शिक्षकोंको, उनकी सेवाओंके अनुसार, 'राष्ट्रीय सम्मान' देना भी अपना कर्त्तव्य समझती है। यह 'राष्ट्रीय सम्मान' पदक और पदवियोंके रूपमें दिया जाता है। जिस तरह फौजी कार्योंमें असाधारण सफलता हासिल करने पर सैनिकों और उनके अफसरोंको पुरस्कृत और अभिनन्दित किया जाता है, उसी तरह जो शिक्षक अपने कार्योंमें कुछ विशेषता दिखाते हैं, वे विविध तरहसे पुरस्कृत होते हैं। फलतः जनताकी दृष्टिमें उनके सम्मानमें चार चांद लग जाते हैं।

लेकिन पदों या पदवियों तक ही 'राष्ट्रीय सम्मान' सीमित नहीं रहता, बल्कि नगर और जिला सोवियटोंके डिप्टी (सभासद) के पदों पर भी बहुतेरे शिक्षकोंको निर्वाचित कर उनका गौरव बढ़ाया जाता है। इस तरह, सामाजिक जीवनमें सोवियत शिक्षक अपना प्रमुख स्थान रखता है। देहातोंके शिक्षकका तो और भी अधिक महत्व है। क्योंकि, गांवोंका सांस्कृतिक नेता एक तरहसे शिक्षक ही होता है। कोई भी सांस्कृतिक कार्य उसीकी देख-रेखमें सम्पन्न होता है।

इतना ही शिक्षकोंको ज्ञानार्जन करनेकी भी सुविधाएं दी जाती हैं। जब कभी लम्बी छुट्टियोंका अवसर आता है तो पहले उन्हें अग्रिम वेतन दे दिया जाता है, जिससे कि वे अपनी छुट्टियां सुखपूर्वक बिता सकें। यहां बता देना भी जरूरी है कि लम्बी छुट्टियोंमें रूसी शिक्षक खास तौरसे देशाटन करते और देशके प्रमुख स्थानोंका निरीक्षण करते हैं। विभिन्न स्थानोंमें शिक्षकोंके ठहरने और छुट्टीके दिन बितानेके लिये सेनिटोरियम अथवा विश्राम-केन्द्र बने हुए हैं। इन केन्द्रोंका संचालन और देखभाल शिक्षकोंकी ट्रेड-यूनियन करती है और इस यूनियनकी ओरसे शिक्षकोंको कई तरहकी सुविधाएं प्राप्त होती हैं।

यह तो हुई सोवियत रूसकी बात; अब जरा अपने देशमें शिक्षकोंकी स्थिति पर नजर डालिये और गंभीरतापूर्वक विचार कीजिये कि जब तक वर्तमान स्थिति बनी रहेगी, तब तक इन शिक्षकोंसे कोई क्या उम्मीद कर सकता है। अभी हाल तक हमारा देश पराधीन था और इसलिये विदेशी सरकारने यहांकी शिक्षा व्यवस्था ऐसी बना रखी थी, जो उसकी हुकूमत चलाने और बनाये रखनेमें सहायक हो। ऐसी हालतमें वह शिक्षकोंके 'राष्ट्रीय सम्मान' की बात व्यर्थ ही क्यों सोचती! लेकिन सौभाग्यवश वह विदेशी सरकार अब नहीं रही और देशकी बागडोर लोकप्रिय प्रतिनिधियोंके हाथोंमें है, जो शिक्षा प्रचारके लिये नयी-नयी योजनाएं बना रहे हैं। लेकिन हम देखते हैं कि हमारी लोकप्रिय सरकार या सरकारोंका ध्यान भी शिक्षकोंकी स्थिति सुधारनेकी ओर ही कम है। प्रांतोंमें कांग्रेसी सरकारें एक लम्बे अर्सेसे काम कर रही हैं, लेकिन शिक्षकोंकी स्थिति सुधारनेके सम्बन्धमें अभी तक उन्होंने कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया है। 'राष्ट्रीय सम्मान' मिलनेकी बात तो दूर रही, यहां तो जीने भरका वेतन मिलना भी मुश्किल है और उसीके लिये हड़तालका आश्रय लेना पड़ता है।

आम तौर पर देखा गया है कि शिक्षा समाप्त करने पर जो लोग कोई अन्य अच्छी नौकरियां पानेमें असमर्थ रहते हैं वे शिक्षकके पेशेमें चले आते हैं। और, तब आसानीसे अनुमान किया जा सकता है कि ये शिक्षक अपने पेशेके प्रति कितनी सच्चाई और ईमानदारीसे काम लेते हैं। लें भी कैसे! हम देखते हैं कि विश्वविद्यालयोंकी ऊंची-ऊंची डिग्रियां प्राप्त करनेके बाद भी स्कूलों या कालेजोंके ये शिक्षक व्यावसायिक प्रतिष्ठानोंके साधारण मुनीम-गुमाश्तोंसे भी कम ही वेतन पाते हैं। बोनस आदिके रूपमें भी किसी तरहकी सरकारी सुविधा उन्हें प्राप्त नहीं है। यह तो ऊंचे दर्जेके शिक्षकोंकी बात है। देहातोंके प्राथमिक स्कूलोंके शिक्षकोंकी हालत तो और भी दयनीय है। आजकी असाधारण मंहगीमें भी उनका औसत वेतन ३०-३५ रुपये मासिकसे अधिक नहीं। फिर कितनी मुसीबतमें वे अपनी जिन्दगीके दिन काटते होंगे, इसका अनुमान आसानीसे लगाया जा सकता है। इसलिये आवश्यकता इस बात की है कि हमारी केन्द्रीय और प्रांतीय लोकप्रिय सरकारें शिक्षा-प्रचारकी योजनाओंको भलीभांति कार्यान्वित करनेके पूर्व शिक्षकोंकी स्थिति और उनके स्तरमें उचित सुधार करनेकी योजना बनायें। जब तक शिक्षकोंकी स्थिति उन्नत नहीं होगी, जब तक उनका आर्थिक स्तर उच्च न बन जायगा, तब तक अपने पेशेके प्रति उनसे उचित न्याय पानेकी आशा नहीं की जा सकती।

चूंकि राष्ट्रके भावी नागरिकोंका भविष्य शिक्षकोंके ही हाथोंमें रहता है, इसलिये राष्ट्रोत्थानकी दृष्टिसे ही शिक्षा और शिक्षकोंकी समस्याको हाथमें लेना चाहिये। सिर्फ पेशेकी उच्चता अथवा श्रेष्ठताकी बखान करके शिक्षकोंको संतुष्ट नहीं किया जा सकता। एक कहावत है कि स्वस्थ शरीरमें ही स्वस्थ विचार रहते हैं। लेकिन सुबहसे शाम तक जो शिक्षक नोन-तेल-लकड़ीके जुगाड़में ही घुलता रहता है, उसके शरीरके स्वस्थ रहनेकी आशा कैसे की जाय। इसलिये यथाशीघ्र इस स्थितिका अन्त हो जाना चाहिये।

बीड़ी-सिगरेट

शराबकी तरह बीड़ी सिगरेटसे भी मुझे डर लगता है। तम्बाकू पीनेको मैं बुरा मानता हूं। जिससे मनुष्यकी अन्तरात्मा मर जाती है। तम्बाकू पीना अक्सर शराब पीनेसे भी बुरा है, क्योंकि उसका असर दिखायी नहीं देता। यह एक खर्चीला दुर्गुण है। उससे सांस बदबू देती है, दांतोंका रंग बिगड़ जाता है और कभी कभी केन्सर भी होजाता है। वह बड़ा गन्दा व्यसन है।

मैंने हमेसा यह माना है कि तम्बाकू पीनेकी आदत जंगली गन्दी और नुकसान देह है। . . . रेलके जिस डिब्बेमें लोग बीड़ी पीते हों, वहां बैठना मेरेलिये मुश्किल होजाता है और उसके धुएसे मेरा दम घुटने लगता है। (आत्म कथा – चोरी और प्रायश्चित्त ')

...सिगरेट और चाय-काफी पीना जीवनके लिये जरूरी नहीं है। .....कुछ लोग.... दिनभरमें दस प्याले काफी पी जातेहैं। क्या कामके लिये खुदको जागते रखनेके वास्ते ऐसा करना जरूरी है? अगर यह जरूरी हो, तो चाय या काफी पीनेके बजाय सो जाना अच्छा है। हमें इन चीजोंके गुलाम नहीं बनना चाहिये। हमें देशी या विदेशी सिगार, सिगरेट वगैरासे दूर रहना चाहिये। बीड़ी सिगरेट नींद लानेवाली अफीम मिली दवाकी तरह है, और जो सिगार आप पीते हैं, उसमें अफीमकी बास रहती है। अपने मुंहको धुएंकी चिमनी बनाकर आप क्यों बिगाड़ते हैं?

.....टाल्स्टायकी कहानीमें एक शराबी जबतक सिगार नहीं पीता, तबतक खून करनेमें हिचकता है। लेकिन सिगार पीनेके बाद वह मुस्कराता हुआ उठता है, और कहता है,: 'मैं कितना बुजदिल हूं', और छुरा लेकर खून कर डालता है। टाल्स्टायने अनुभवसे यह बात कही है। खुद अनुभव किये बिना उन्होंने कुछ भी नहीं लिखा है। वह शराबके बनिस्बत बीड़ी-सिगरेटका ज्यादा विरोध करते हैं। लेकिन आप यह माननेकी गलती न करें कि तम्बाखू और शराबमें शराब कम बुरी है। ऐसा नहीं है। अगर बीड़ी-सिगरेट रावण है, तो शराब कुम्भकर्ण है

(अंग्रेजीसे)

अभाव और मंहगी

श्री कर्मशील

राष्ट्रके नेताओंके सामने चाहे बड़ी बड़ी समस्यएं हों, साधारण जनताके समने ऐसी कोई बड़ी समस्या नहीं है जिसके कारण उसे परेशान होना पड़े। हम प्रचलित धारणा और भावनाके विरुद्ध एक बड़ीसी बात कह रहे हैं। किंतु हम देखते हैं कि यह कोई बड़ी बात नहीं है। अपनी कठिनाइयों और उलझनों को साधारण जन अपनी सुस्ती और विश्वास दौर्बल्यके कारण अगर गंभीर बनकर रखे तो और क्या कहा जा सकता है? दरअसल साधारणजन आजभी भेंड़ प्रवृत्ति से ऊपर नहीं उठा। वह अपने आपमें अगर आजाय, जिसका अर्थ व्यक्तिगत प्रयत्न होता है, तो राष्ट्रके भीतर उठनेवाली इतनी हाय हायकी आवाज न सुनाई पड़े। हमारे समाचार पत्रोंको अगर दुनिया पढ़ती हो तो उसे यही ज्ञात होगा कि भारतमें दुखोंका पहाड़ही टूट पड़ा है। संसारका जनमत इसबातसे निरंतर हमारे प्रति खराबही होता जायगा जिसके कारण हम अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिजमें दुर्बल तरिकाके सामने ही दीखते रहेंगे किसीको हमारे ऊपर भरोसा न रहेगा।

देशमें, कहते हैं कि, अन्नाभाव है। गणितके जोड़ घटावकी प्रक्रिया द्वारा उपज और खपतके आंकड़ोंके मिलानसे अभावका जो परिणाम निकाला जाता है उसपर हमारी बड़ी आस्था नहीं है। हिसाबियोंपर हमारी श्रद्धा है, तो भी हम उनके निष्कर्षों का अभ्रान्त मानकर तदनुसार चलनेकी राय नहीं देना चाहते क्योंकि हिसाबियोंके हिसाब सही होनेके लिये जितने सही सही तथ्योंकी आवश्यकता है इस देशमें उपलब्ध नहीं है। जो कुछ हिसाब या आंकड़े हमारे सामने आते हैं उनमें आंशिक सत्यताही होती है और गणितमें या तो सम्पूर्ण सत्य होना चाहिये नहीं तो कुछ भी नहीं। आंशिक सत्य नामक कोई चीज उसमें नहीं होता। देशमें अन्नकी महगी है, वस्त्रकी मंहगी है- जीवनोपयोगी सभी पदर्थ अपेक्षाकृत मंहगे है। आयके अनुपातसे यह मंहगी बहुत बढगयी है। इस मंहगीका उपाय तो सरकारके कुछ किये बिना होनेका नहीं, पर हम जानते हैं कि यदि हममें अदम्य इच्छा शक्ति हो और आलस्य, काहिली अथवा निष्क्रियताका त्याग करनेको हम कटिबद्ध होजांय तो देश की जनताके कमसे कम एक बड़े अंशको सम्पूर्ण भार झेलनी न पड़े। हम खुद आज उसके आघातोंकी भरपूर चोट सिर पात करलेते हैं।

वस्त्रके अभावके युगमें हमभी रह रहे हैं, पर हमें कभी वस्त्रकी समस्याने अधिक चिन्तित नहीं किया। वस्त्र नियंत्रण और अभावके ६ वर्षोंके इस लंबे युगमें भी, हमें स्मरण नहीं कि कभी हमने वस्त्र बिक्रेता या नियंत्रण अफिसरकी खुशामद की हो। वस्त्र हम पहनते ही हैं, परिवारके सदस्योंकी संख्या वृद्धिके कारण उसका खर्च बढ़ गया है। तब हम क्या करते हैं? हमने सीधीसी बात अपना ली है - हम वस्त्र-दुखके सीधे मूलकारण तक पहुच गये हैं। हमने परिवारके सदस्योंको तकली और चर्खाका आश्रय लेनेको कह दिया है। उससे सूत बनता है और गांवके बुनकरसे हम उसके वस्त्र तैयार करा लेते हैं। महीन वस्त्रकी आवश्यकतापर हम कभी मोटे सूतको ही महीनसे बदलकर काम चला लेते हैं, कभी निजके सूत सेही बारीक किस्मके सूत निकालकर उसका वस्त्र बनवा लेते हैं। हमारे परिवारमें सेन गुप्ता धोती और अरबिंदके बोझल पहनने वाले भी थे। हमलोग सूतके लिये रूई बजारसे लेते थे। अब अपने खेतमेंही बंगा बोया गया है जिसको ओंटकर रूई प्राप्त करलेनेका उपाय भी हम लोगोंने करलिया है। इसतरह मोटे कपड़ेकी समस्या हमारी हल होगयी है। यह सूत हमारे परिवारमें भार दायित्व या जिम्मेदारी की भावनाके साथ तैयार नहीं होता। खेल खेलमें छोटे छोटे बच्चोंसे लेकर बड़े लोगभी एवं स्त्रियां तफरीहन सूत बनाने लगजाती हैं और दस दिनमेंहीं हमारे एक भतीजेने स्कूलसे आकर अपराहन बेलामें घण्टा आध घण्टा, प्रातः कालके अध्ययन और स्कूल जानेके बीच में थोड़ा समय निकालकर २॥ तोलेसे अधिक सूत निकाला है। यह काम उसके लिये मनोरंजक भी है और इस काण उसपर इसका किंचित भी बोझ नहीं है। दस दिनकी कताईमें ही उसने अपने लिये एक धोती जितना सूत बनाकर रखलिया है।

किरासन तेल और चीनी की कवाहत भी हमने इसी उपायसे दूरकरली है। हमारे खेतमें रेंड़ी लगायी जाती है और उसका तेल उतरवाकर हम उससे दिया जलाकर प्रकाशकी आवश्यकता पूरी करलेते है।

इस तरह महात्मा गांधीके उद्योगोंके विकेन्द्रीयकरणके सिद्धांतको अपनाकर हमने अपनी कठिनाइयां हल करली हैं। हमने कहा, इनके लिये हमें बहुत अधिक मिहनत नहीं करनी पड़ी – अधिक क्या, मिहनतही नहीं लगी। सूत कातनेका काम परिवारमें धड़ल्लेसे होता है और उसमें परिवारके सदस्योंका कुछ भी अतिरिक्त समय नहीं लगता। दैनिक काम काजके अवान्तर जो समय मिलता है उसीमें चर्खेपर दस पांच मिनट बिता दिये जाते हैं और उसीसे इतनी सुबिधा प्राप्त होरही है। और चर्खाके सिद्धांतमें सबसे भारी बात यही है कि इसमें लगे समयका वह मोल परिश्रमका वह मोल नहीं, जो केन्द्रित उद्योग धंधों में देना पड़जाता है। अपने जिन क्षणोंको हम बथा गवां देते हैं उनमें

हम करोड़ोंका सूत तैयार करसकते हैं इसी कारण महात्माजी खादीके लिये सस्ती मंहगीका कोई सवाल नहीं उठाते थे।

इसपरसे उद्योग धंधोंके विकेन्द्रीकरण के सवालका विवादग्रस्त विषय उठ पड़ता है। आज देश मंहगीके कारण तबाह है। अर्थ शास्त्री इसका कुछ इलाज बताते हैं, उद्योग पति कुछ बताते हैं, समाजवादी तीसरा उपाय बता रहे हैं। किसीका मत किसीसे नहीं मिलता क्योंकि बताये हुए उपायसे उनके अपने वर्गको कोई क्षति न हो ऐसी सावधानी रखकर उपाय बताये गये हैं। बहुधा अपनी विद्वत्ता और बहुताके प्रदर्शन लिये भी अर्थ शास्त्रके सिद्धांतों परसे उपाय ढूंढे जारहे हैं। हम कहते हैं कि सभी प्रयत्न गलत हैं। उद्योग धंधोंका विकेन्द्री करण ही एक ऐसा सुझाव होसकता है जिससे यह मंहगी की समस्या दूर होगी

आप होटिलवालेसे पूछेंतो आपको वह बता देगा कि उसके यहां भोजनकी लागत कीमत आपके घरकी लागत कीमतसे अधिक पड़ती है। क्योंकि उसमें पाचक तथा बर्तन साफ सुथरा करनेवालेका वेतन भी जुड़ता है। घरके बने भोजनमें वह पैसा बचता है। खाने पहननेकी सामग्रियों का उत्पादन अगर इस प्रकार विकेन्द्रित करदिया जाय तो उसकी मंहगाईका कोई सवाल नहीं उठेगा। वस्त्र सूतसे बनते हैं, सूत रूईसे तैयार होता है रूई बांगमें निकलती हैं और बंगा किसान उपजाते हैं। इस सम्पूर्ण प्रक्रियाके दो भाग हैं जिनमें बंगा उत्पादन तक एक भाग है जो किसानके जिम्मे है, और रूईकी तैयारीसे लेकर वस्त्रके निर्माण तकका काम कारीगर करते हैं। अब यदि विचारा जायतो वस्त्रकी कीमतमें तीन चौथाई अंश तो पारिश्रमिकका होता है। आपजो धोती पहनते हैं उसमें शायद रुपयेमें दोसे चार आनेकी रूई ही तो होगी। मंहगीसे मंहगी रूई भी हो तो भी अगर हमें उसपरका परिश्रमके लिये मूल्य न देना पड़े तो वह हमें रुपयेमें चार आनेकी ही पड़ेगी। और अगर अपनी धोतीके लिये हमने अपने खेतमेंही बंगा उपजा लिया तो वह धोती एकतरहसे बिना मूल्य अथवा नाम मात्रके मूल्य परही हम पा जांयगे। वस्त्रकी समस्या इसप्रकार हल होसकती है। विकेन्द्री करणके द्वारा हम खाद्य पदार्थों का मूल्य भी योंहीं अपने लिये घटा सकते हैं।

यह अचूक इलाज गांव वालोंके लिये तो बहुतही लाभ प्रद है, हां, शहरके रहने वालोंके लिये इसमेंसे अन्नोत्पादन वाला अंश कठिन पड़ेगा। मगर फिर शहर और गांवका कुछ बटा हुआ दायरा नहीं है। इस हिसाबसे जिनके पास भूमि है उन्हें अन्न, वस्त्र किरासन तैल और चीनी की मंहगीका रोना तो नहीं होना चाहिये अगर उन्हें अपना भार अपने ही वहन करनेका दायित्व लेनेसे इन्कार न हो। ५ सालसे हम इन अभावोंका रोना रोते आये हैं मगर कभी हमने इस इलाजका सहारा नहीं लिया जिसे गांधीजी भविष्य-द्रष्टाकी भांति बहुत पहले से बताते आते थे। हमलोग गांवोंके रहने वाले अपने समयका बहुतसा अंश व्यर्थ गवां देते हैं और यह सीधासा रचनात्मक उपाय अपने अभावोंका नहीं करते! यह हमारी बिगड़ी हुई चलनका परिणाम है। यह उस राष्ट्रीय कार्य शक्तिका दुरुपयोग है जिसके कारण हमारे मस्तक पर गुलामी की बोझ आयी। यह उस विदेशी वातावरणके ह्रास करनेवाले प्रभावके कारण संभव हुआ जिसमें पिछले सौ दो सौ साल हमने गजारे हैं।

जीवनोपयोगी पदार्थों की मंहगाईको हम तो इस दृष्टिसे स्तुत्य समझते आये हैं कि उससे हमें स्वयं-निर्माणकी प्रेरणा मिलती है महात्मा गांधीने यही चीज सिखानेमें अपने जीवनके ३५ साल व्यतीत किये, पर हमने सीखा कहां, हमने उनकी सीख अपनाई नहीं। अब सरकारका 'उत्पादन बढाओ' वाला आंदोलन भी यही संदेश हमें देता है। प्रधान मंत्री नेहरूजी तथा सरदार पटेल एवं अन्य नेता गण भी हमें यही संदेश दे रहे हैं। हमको उचित है कि उनके नारेके इस रहस्यको समझकर हम अपनी कठिनाई दूरकरें। हम इमानदारीसे अपने समयको उत्पादनमें लगायें तो कैसा अभाव और कैसी मंहगी?

मां की सहायता

बेटी का कलंकी अपने ऊपर लिया

इंगलैण्डके डरहम नामक स्थानकी ३७ वर्षीया स्त्री मिनी ब्राउनने, जो ५ बच्चोंकी मां है, अदालतमें जजके सामने कहा कि मेरी १६ वर्षीया पुत्रीको, कुमारी की अवस्थामें ही अनुचित गर्भ रह गया, अतः उसके विवाहमें कठिनाई उपस्थित हुई और मेरा पति अपनी उस पुत्रीकी शादीके लिये स्वीकृति नहीं दे सकता था। फलस्वरूप मेरा अपने पतिसे पृथक हो जाना आवश्यक हो गया। यह इसलिये हुआ कि जिसमें पुत्रीकी शादी में पिताकी स्वीकृतिकी आवश्यकता नहीं पड़े और न शादी रुके। अनुचित गर्भ वाली कुमारी पुत्रीकी शादीमें पिता स्वीकृति दे ही नहीं सकता है, जैसा कि साधारण विवाहोंमें कन्याके पिता स्वीकृति देते हैं। अतः हम दोनों पति-पत्नी ने अपनी पुत्रीके कल्याण के लिये तलाक देना तय किया और इसके लिये मेरे पतिने परामर्श दिया कि मैं अदालतमें कहूं कि मैं भ्रष्टाचारिणी हूं और दूसरे व्यक्तिसे मुझे प्रेम और गुप्त सम्बन्ध हो गया है, अतः मैं अपने पतिका साथ छोड़ रही हूं। मैंने इसे मान लिया और इसीके अनुसार एक बयान देकर उस पर अपना हस्ताक्षर कर दिया।

नौकर चाहिए

श्री 'प्रदीप'

उस दिन सारी रात जब खटमल मारते बीती, तो तय किया कि अगले रविवारकी छुट्टी खटमलोंकी अन्त्येष्टि-क्रियामें ही बिताऊंगा। सोचा, बड़ी-बड़ी बाल्टियोंमें पानी उबाल कर, उन्हें गर्म स्नान करा, इस लोकसे बिदा करूंगा। लेकिन यह लो! पानी भरनेवाला झूरी कहार रविवारके दिन काम करनेसे साफ इन्कार कर दिया। तड़के ही सूचना दे गया—"अब समस्त कहारोंने रविवारके दिन छुट्टी मनानेका निश्चय किया है। जो कहार रविवारको काम करेगा, उस पर हमारी कमेटी जुर्माना कर देगी। इसलिये, बाबू आज मैं न पानी भरूंगा और न बर्तन ही धोऊंगा।"

झूरीकी बातें सुनकर पहले तो काठ मार गया। अरे राम, अब इन खटमलोंकी अन्त्येष्टि कैसे होगी! आज तो हर रोजसे भी अधिक पानी चाहिये था और आज ही इसने.....। लेकिन मन कह रहा था कि आखिर इन बेचारोंको भी तो एक दिन छुट्टी मिलनी ही चाहिये, और रविवार को अपनी छुट्टी रखनेका निश्चय कर इन लोगों ने ठीक ही किया है, क्योंकि इसदिन अधिकांश लोगोंकी छुट्टी रहती है। फिर, छुट्टीके दिन यदि हर आदमी अपने घरेलू काम-काज स्वयं कर ले, तो बेचारे घरेलू-नौकरोंको भी एक दिन सांस लेनेका मौका मिल जाय।

कहना नहीं होगा कि आफिसों और कल-कारखानोंमें काम करनेवाले नौकरों की अपेक्षा इन घरेलू नौकरोंको बहुत अधिक काम करना पड़ता है। सुबह ५ बजेसे लेकर रातके ११-१२ बजे तक उन्हें एक न एक काममें लगा रहना पड़ता है। टब-के-टब पानी भरना, बर्तन धोना, मालिक मालकिन और परिवारके अन्य लोगोंके कपड़े धोना। इतना ही नहीं, सब कामोंसे छुट्टी पाकर मालिकको तेल की मालिश करना भी उनके कर्त्तव्यका एक मुख्य भाग है। जिस घरमें नौकर रहता है, उस घरके लोग एक गिलास पानी भी स्वयं लेकर पीना अपनी शानके खिलाफ समझते हैं। फिर, घरेलू-नौकरकी कठिनाइयोंका अन्दाज आसानीसे लगाया जा सकता है। सच बात तो यह है कि मालिक आम तौर पर अपने घरेलू नौकरको हाड़-मांसका पुतला नहीं, बल्कि शायद लोहेका बना मानता है। तभी तो उसे क्षणमात्र भी आराम करनेका अधिकारी नहीं माना जाता। एक ओर इस तरह कसकर काम लिया जाता है और दूसरी ओर कम-से-कम वेतन। यही कारण है कि आजकल घरेलू नौकरोंका बड़ा अभाव रहता है। घरकी अपेक्षा, कल-कारखानों या दफ्तरों की नौकरी ज्यादा पसन्द की जाती है, क्योंकि वहां समय कम लगता है और आराम अधिक मिलता है।

घरेलू-नौकर रखनेका चलन आज विदेशोंमें बहुत कम है। कुछ थोड़ेसे अत्यन्त उच्च और अमीर लोगोंको छोड़कर, शेष बड़े-बड़े धनी और शिक्षित परिवारों में भी घरेलू काम स्वयं ही कर लेना ज्यादा पसन्द किया जाता है। रसोई बनाना और बर्तन आदि साफ करना गृहिणी अपना परम कर्त्तव्य समझती है। साथ ही, घरके पुरुष भी घरेलू कार्योंमें योग देते हैं। अगर किसी परिवारमें ५ पुरुष हैं, जिनमें २ शिक्षित और शेष ३ अशिक्षित अथवा अर्द्ध-शिक्षित हैं, तो इसका मतलब यह नहीं कि शिक्षित व्यक्तियोंको घरेलू कार्योंमें किसी तरहकी रियायत दी जायेगी। दरअसल, घरके बाहर हर व्यक्ति अपनी योग्यताके अनुरूप कार्य करता है, लेकिन घर लौटने पर सभी बिना किसी हिचकके घरेलू काम-काजमें बराबर दिलचस्पी लेते हैं। और, चूंकि समाजमें अधिकांश व्यक्ति इस आदर्शका पालन करते हैं, इस लिये किसीको इसमें शर्म या संकोचका बोध नहींहोता। इसका एक मुख्यकारण यह भी है कि पश्चिमी देशोंमें उद्योगधंधोंके अत्यधिक विस्तारके कारण घरेलू कामोंके लिये नौकर मिलते ही नहीं, और यदि मिलते भी हैं, तो बहुत महंगे पड़ते हैं, जिससे सबके लिये रखना बड़ा मुश्किल होता है। लेकिन हम तो कहेंगे कि सामाजिक और घरेलू व्यवस्थाओं पर इस विवशताका अच्छा ही असर पड़ा है। मनुष्य को अपने व्यक्तिगत और शारीरिक कार्यों के लिये यदि दूसरे आदमियों पर निर्भर रहना पड़े तो यह कलंककी ही बात है। हम एक ग्लास पानीके लिये नौकरके नाम पर प्यासे तड़पते रहें, तो यह अकर्मण्यता नहीं तो और क्या है?

यदि सभी घरेलू कार्योंका विभाजन परिवारके स्त्री-पुरुष सदस्योंमें, उनकी शक्ति और सुविधाके अनुरूप, कर दिया जाय तो इससे समाज और देशका बड़ा ही कल्याण होगा। एक ओर तो लोगोंमें व्यर्थका आलस्य दूर होकर स्वावलम्बनकी भावना उत्पन्न होगी और दूसरे घरेलू नौकरियोंमें लगे हुए हजारों लाखों व्यक्ति दूसरे-दूसरे उद्योग-धंधोंमें काम करेंगे, जिससे देशके उत्पादनमें वृद्धि होगी। इस स्थल पर यह उल्लेख कर देना भी उचित होगा कि व्यक्तिगत सेवाओंमें लीन रहने के कारण घरेलू-नौकरोंका मानसिक स्तर बहुत ही नीचा हो जाता है, जिससे वे अपने को बहुत ही तुच्छ समझने लगते हैं। इसके विपरीत कल-कारखानोंमें काम करने वाले मजदूरोंमें हीनताकी यह भावना नहीं आती। आज तो कल-कारखानोंके मजदूर अपनेको भी प्रतिष्ठानका उतना ही महत्वपूर्ण अंग समझते हैं, जितना महत्व ऊपरके लोगोंका समझा जाता है, बल्कि सच बात तो यह है कि उच्च कर्मचारियोंकी अपेक्षा मजदूर अपनी महत्ता अधिक समझते हैं।

तात्पर्य यह कि घरेलू नौकर रखने की प्रणाली सामाजिक व्यवस्थाकी दृष्टि से बहुत अच्छी नहीं है। समस्त संसारके लोगोंकी भावनाओं और विचारोंमें बहुत कुछ साम्य रहा करता है। एक देशका व्यक्ति व्यक्तिगत सम्मान और सुविधाके लिये जो-कुछ सोचता-समझता है, दूसरे देशके व्यक्तियोंमें भी वैसी ही भावना होती है और, यह तो मानना ही पड़ेगा कि यूरोप और अमेरिकाके देश हमारे देशकी अपेक्षा अधिक शिक्षित और उन्नत हैं। ऐसी हालत में जब उन देशोंके अधिकांश घरेलू नौकरों के बिना अपना काम चला लेते हैं, तो कोई वजह नहीं कि हमारे देशमें ऐसा न हो।

हालमें शहरोंके इन घरेलू-नौकरोंका संगठन ट्रेड यूनियनके आधार पर आरंभ किया गया है, ताकि मालिक कामके घण्टे, वेतन और छुट्टियों आदिके संबंधमें उनके प्रति न्याय कर सकें। लेकिन हमारा तो खयाल है कि घरेलू-नौकरोंको सुविधाएं दिलानेके बजाय यदि घरेलू नौकर न रखने का आन्दोलन चलाया जाय, तो ज्यादा लाभदायक होगा—नैतिक और आर्थिक दोनों ही दृष्टियोंसे। आज हर आदमी अपने घरेलू कामोंके लिये नौकर चाहिए २ की रट लगाता रहता है। निस्सन्देह, यह हमारी अकर्मण्यताका द्योतक है। इसलिये हमें इस घृणित और हानिकारक प्रथाका अन्त करनेमें ही लाभ है। 'नौकर चाहिए, नौकर चाहिये' की रट लगाकर हम अपने स्वावलम्बन को कमजोर बनाते हैं। इसलिए हम अपनी कमजोरी जितनी शीघ्र छोड़ सकें, उतना हमारे लिये लाभदायक होगा।

कहानी–

फूलडाली

श्री विजय कुमार मुंशी साहित्य रत्न, बी० ए० एल-एल० बी०

नयी दुलहिनको लेकर जैसे ही जोगेन घर लौटा, उसे पत्र मिला कि नयी दिल्लीकी एक बड़ी फर्ममें वह नौकर हो गया है। रोमांटिक रंगीनी में डूबी उसकी अभिनवी पलकें जैसे इस हर्ष संवादको सुनकर प्यारके भारसे भारी होकर, फूल-सी झुक गयीं। उसे लगा जैसे उसकी नवविवाहित पत्नी विश्वासका यह सौभाग्य है कि घरमें पैर पड़ते ही उसे यह आनन्द सूचक संवाद मिला। बूढ़ी मांकी झुकी कमरमें पुत्रवधूको देखकर जो एक बल आ गया था, वह इस संवादसे और भी अधिक हो गया। उसकी मांकी आंखोंमें हर्षातिरेकसे आनन्दाश्रु बह निकले और अपने पोपले मुंहमें बूढ़े हृदयका सारा स्नेह उड़ेलकाबह बोली,–'बेटा जोगेन तू भाग्यवान है। ईश्वर तेरी जुगलजोड़ीको चिरंजीवी करे। जीवनमें हमेशा ईमानदारी और सतर्कतासे कदम बढ़ाना। यही जीवनमें विजयका रहस्य है।' जोगेनने मांके चरण छुए और उस धूमिल सांझमें अपनी पत्नीको लेकर वह दिल्लीके लिए रवाना हो गया।

* * *

नयी दिल्लीकी खिली कलीकी सुवास-सी मस्ती इस दम्पतिके जीवनमें रसकी वर्षा करने लगी। रोज संध्या समय शहरकी सीमाओंको पारकर सघन वृक्षोंकी छायामें, जहां स्वच्छ सड़कोंपर सूखे पत्ते उड़ा करते, जोगेन विश्वासको लेकर संध्या समय घूमने जाया करता। विश्वास बार बार जोगेनको मांकी याद दिलाती और प्रायः कहा करती कि मांको भी यहीं ले आना चाहिए, घरको किरायेसे उठा देंगे। जब जमीन जायदाद ही चली गयी तो दस बीघा जमीनके टुकड़ेसे चिपट कर बैठ रहनमें कौन-सा गौरव है?' जोगेनकी भी यही इच्छा थी किन्तु मांजी थीं कि खानदानकी स्मृतिसे चिपटकर रहना चाहती थी। वह ऐसा समझती थीं कि खानदानकी इस पुरानी यादगारसे दूर होना खानदानकी इज्जत को मिट्टीमें मिलाना है। जिस जायदादको प्राप्त करनेमें जोगेनके दादा परदादा ने खून पसीना एक कर दिया था, उसे यों छोड़ कर चले जाना घरमें गरीबीको निमंत्रण देना है। खानदानके दादा परदादा जैसे नभमण्डलमें चमकते तारोंसे, संकेत कर उसे कहा करते थे कि यदि उसने गांवको छोड़ा तो उनकी आत्माको दुख पहुंचेगा। यही सब रुढ़िके कारण थे कि मांजी गांव में रहती थी। इस तरह बातचीत और विचारोंमें डूबे वे करीब एक शहरसे मील राह तय कर गये। दूर गरीबोंकी बस्ती दिखायी दे रही थी, उनके टूटे फूटे बांसके घरोंमें जलते मिट्टीके दिये किसी गरीबकी महत्वाकांक्षाओंसे चमक रहे थे। सहसा उन दोनोंने एक मधुर स्वर सुना, 'फूलडाली।' जोगेनने पीछे घूम कर देखा– एक नवजवान लड़की दोनों हाथोंमें दो फूलोंकी डाली लिये आ रही थी। सम्भवतः, वह कुछ डालियोंको बेच लेनेके बाद अपने घरका जा रही थी और इस दम्पतिको देख इस विश्वाससे उसने यह आवाज लगायी थी कि शायद उसकी एकाध डाली और बिक जाय। इस बीच वह फूलडाली वाली आगे आकर बोली, 'डाली चाहिये बाबू जी!'

'नहीं!'

'बहुत मजबूत है!'

'सब बेचने वाले यही कहते हैं!'

'कौन अपनी चीजकी तारीफ नहीं करता?"

'कह दिया न, कि हमें नहीं चाहिए।'

'आपके कामकी चीज है, बाई जी जी!

जोगेनने हंस कर कहा, 'तुम समझती हो कि बाई जी के कहनेसे तुम्हारी फूलडाली बिक जायगी!'

'हां,' मुस्करा कर उसने जवाब दिया। 'प्रायः इस शहरमें ऐसा ही होता है। साहब झिड़की देता है, किन्तु मेम साहेब का इशारा होते ही सौदा एकदम बिना भाव किये खरीद लिया जाता है!' विश्वास यह सुन कर हंस पड़ी।

उसने उत्सुक नयनोंसे एक बार अपने पतिकी ओर निहारा, इस निहारनेमें एक मौन आग्रह था, जिसे समझ कर जोगेन बोला–

'क्यों, केवल फूलडाली बेचती हो?'

'नहीं, नहीं टोकरा टोकरी भी बनाते हैं!'

'यहां कितने दिनोंसे रहती हो?'

'दो साल से!'

'अकेली हो?'

नहीं, सब हैं। उसने नीची नजर किये जवाब दिया।

बच्चा भी है?

'बाबू जी!' उसकी आंखोंमें शरबतकी रंगीनी भर उठी!–'ब्याहके साल भर तो हुआ है!'

अच्छा लो! जोगेन ने मुंहमांगे दाम देकर फूलडाली खरीद ली।

दिल्लीमें नौकरी करते करते जोगेन को छः महीने हो गये। शांतिकी सांस लेनेवाला शहर खतरेका घर बन गया। 'आज यहां गोली चली!' 'कल वहां अश्रुगैसका प्रयोग हुआ' अखबारोंके शीर्षक बन कर जनताके हृदयको कम्पित करने लगे। जोगेनने अपनी पत्नीको लेकर घूमने जाना प्रायः बंद कर दिया। फर्म पर अपना काम समाप्त कर लेनेके पश्चात वह बाहर आंगनमें कुर्सी पर हिन्दीके अखबार पढ़ा करता। कभी

प्रान्तोंको फिरसे बांटनेकी समस्या

आचार्य श्री मन्नारायण अग्रवाल

राजनैतिक आजादी पा लेनेके बाद कांग्रेस हिंदुस्तानके प्रांतोंको भाषाके आधार पर फिरसे बांटनेके बचनसे बंधी हुई है। कांग्रेसकी सारी कार्रवाइयां भी आज तक उसी आधार पर हुई हैं। लेकिन दुर्भाग्यसे प्रांतोंको फिरसे बांटनेका सवाल सही ढंगसे हाथमें नहीं लिया जारहा दीखता है। नतीजा यह है कि कांग्रेस जनों और आम जनताके मनमें क्रोध और भ्रम और के भाव पैदा होगये हैं। कुछ कांग्रेसी नेता पूरी तरह प्रांतोंको भाषाके आधार पर बांटनेके पक्षमें हैं और अपने अपने क्षेत्रोंमें इसके लिये जोरोंसे काम भी कर रहे हैं। कुछ दूसरे भाषावार प्रान्तोंका जोरदार विरोध कर रहे हैं और यह भविष्य बाणी करते हैं कि 'प्रान्तवाद' हिन्दी संघकी एकताको खतम करदेगा कांग्रेस नेताओंका एक तीसरा दल ऐसा भी है जो इस सवालको पांच या सात साल तक स्थगित रखनेकी सिफारिश करता है, क्योंकि उसका यह खयाल है कि इसके बजाय दूसरे ज्यादा महत्वके सवाल हमारे सामने हैं, जिनको तुरत हल करना जरूरी है। फिरभी मालूम होता है कि वे प्रान्तका अलग प्रान्त बनानेका बचन देचुके हैं, जिससे वहां बरसोंसे चलने वाला कटु और उग्र अन्दोलन शांत होजाय। लेकिन ऐसा करनेका मतलब दूसरे भाषावार हिस्सोंको अलग प्रान्त बनानेके लिये आन्ध्र जैसा शोरगुल मचानेका न्योता देना ही हो सकता है।

कमीशनका स्वागत

इस लिये मुझे यह कहनेके लिये माफ किया जाय कि प्रान्तोंको फिरसे बांटनेका सवाल अभी तक गड़बड़ीमें जाया हुआ है, और हमें आशा है कि हमारे नेता इस सवालको पूरा महत्व देंगे और गहराईसे दूर पर बिचार करेंगे। इस मामलेमें अनिश्चित या ढुलमुल नीतिसे काम नहीं चलेगा। ऐसा करनेसे राष्ट्रीय एकताको बहुत बड़ा खतरा और नुकसान पहुच सकता है। दूसरी बड़ी बड़ी समस्याओंके होते भी राष्ट्रीय सरकार देशी रियासतोंके पेचीदा सवालको बड़ी होसियारीसे हल करनेमें सफल हुई है। मै सच्चे दिलसे यह महसूस करता हूं कि हमारे नेताओंको प्रान्तोंकी समस्याओंको भी उसी बुद्धिमानी और समझ बूझसे हल करनेकी कोशिश करनी चाहिये। यह बात समझ लेनी चाहिये कि प्रान्तोंका सवाल रियासतोंके सवालसे किसी तरह कम महत्व नहीं रखता। इसलिये हिम्मतसे और व्यवहारिक दृष्टिसे उसका सामना करना चाहिये। अगर कांग्रेस वर्किंग कमेटी इस सवालपर पूरी तरह चर्चा करनेके बाद यह महसूस करे कि प्रान्तोंके भाषावार बटवारेके उसूलमें सुधार करनेकी जरूरत है, तो उसे एक बिस्तत बयान निकालना चाहिये और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीको अपना अखिरी फैसला देनेके लिये बुलाना चाहिये। अगर नेताओंको यह पूरा विश्वास होजाय कि भाषावार प्रान्त बनाना ठीकहै, तो उन्हें जल्दीसे जल्दी कांग्रेसके बचन पर अमल करनेकी कोशिश करनी चाहिये। अच्छी बातमें जरूरतसे ज्यादा देरकरनेसे बुरे नतीजे निकल सकते हैं। उसका हम सचमुच स्वागत करते हैं। विधान सभाके प्रेसीडेंटने इस कामके लिये जो कमीशन बैठाया है, उसका हम सचमुच स्वागत करते हैं। लेकिन जब कांग्रेस नेता आपसमें बैठकर इस सवालपर फिरसे सावधानी पूर्वक विचार नहीं करते और देशको साफ और समझदारी भरा रास्ता नहीं दिखाते, तब तक कमीशन बहुत ज्यादा आगे नहीं बढ सकता। निश्चित नीतिके अभावमें कमीशनके सामने बेशुमार सुझाव रखेजायंगे, और संभव है, एकताको भंग करनेवाली प्रतिगामी ताकतें समय पाकर हावी होजांय।

मैं खुदतो भाषावार प्रान्तोंके उसूलमें कोई बुनियादी दोष नहीं देखता। ऐसे बंदोबस्तसे शासन संबंधी और अदालती काम काज के लिये किसी देशी भाषा के उपयोगमें बड़ा सुभीता होगा, मातभाषाको शिक्षाकामाध्यम बनानेका कामभी बहुत आसान होजायगा। लेकिन भाषावार प्रान्तोंकी हिमायत करनेमें अलग संस्कृतियोंकी बात करना बिल्कुल गलत है। यह अफसोसकी बात है कि कुछ समयसे प्रान्तीय नेताओंने भाषावार प्रान्तोंके अन्दोलनमें क्रोध और नफरतकी भावनाओंको बहुत ज्यादा मिला दिया है। उन्होंने सत्याग्रहकी और खून बहानेकी बातें भी की है। अगर 'भाषावाद' के इस नये बखेड़ेको आगे बढने दिया जायगा, तो हमारा भविष्य जरूर खतरेमें पड़ेगा और बरबाद होजायगा। लेकिन अगर भाषाके आधार पर प्रान्तोंका फिरसे बटवारा करनेके सवालको सिर्फ सुभीतेकी नजरसे देखा जाय, तो हमारे राष्ट्रके संगठन और जरूरी सांस्कृति एकताको कोई हानी पहुचना संभव नहीं है।

कुछ सुझाव

फिर भी मैं एक बिचला रास्ता सुझाता हूं। ओछे भाषावादके खतरे को दूर करनेके लिये हम आजके बहुत भाषी प्रान्तोंके अन्दर भाषावार उप प्रान्त बना सकते हैं। मिसालके लिये, मध्य

प्रान्त और बरारमें महाविदर्भ और महा कौशल नामके दो उप प्रान्त बनाये जा सकते हैं, हलां कि मैं इन बड़े बड़े नामोंको पसंद नहीं करता। इसकी अलग धारा सभायें और मंत्रि मंडल हों। इन मंत्रि मंडलके हांथमें कानून और व्यवस्था, रेविन्यू, शिक्षा स्वास्थ्य, आबकारी और खेती जैसे विशेष उप - प्रान्तीय बिषयोंका शासन होगा। लेकिन सारे प्रान्तकी भी एक छोटी धारा सभा होनी चाहिये, जो दो उप - प्रान्तीय धारा सभाओं द्वारा सीधी चुनी जाय। प्रान्तीय धारा सभाको सिर्फ आर्थिक योजना, यातायात और ज्यादा ऊची टेक्निकल शिक्षा जैसे कुछ प्रान्तीय बिषयोंके बारेमेंही कानून बनाने चाहिये। उसकी सारी कार्रवाइयांराष्ट्र भाषामें होनी चाहिये। दोनो उप - प्रान्तोंके मंत्री प्रातीय धारा सभाके प्रति जिम्मेदार होनी चाहिये। पूरे प्रान्तके लिये एकही हाई कोर्ट और एकही पब्लिक सर्विस कमीशन होसकता है। उसी तरह बंबई प्रान्तमें कर्नाटक, महाराष्ट्र और गुजरातकी तीन उप प्रान्तीय धारा सभायें हो सकती हैं। प्रान्तीय सरकारकी राजधानी बम्बई रहे। मद्रास प्रान्तमें इसीतरह किया जा सकता है। ऐसा प्रान्तीय संगठन करनेका फायदा यह होगा कि एक तरफ सुभीतेकी ष्टिसे उप - प्रान्तीय इकाइयां समान भाषावली हो जांयगी और दूसरी तरफ अलगांवकी बत्ति पैदा करनेवाले नुकसानदेह बढती भी अपने आप बहुत कुछ रुक जायगी। इसके अलावा, ज्यादातर प्रान्तोंमें फिरसे हदें बांधनेकी भी जरूरत नहीं होगी, आजकी हदोंसे हमारा काम चल जायगा। भाषावार उप प्रान्तकी योजनाका मेल राजनीतिक सत्ताके विकेन्द्रीकरण के उसूलके साथ भी बैठ जायगा। नये खर्चके डरसे इस योजनामें रुकावट नहीं आनी चाहिये। क्यों कि उप- प्रान्तोंके मंत्रियोंकी कुल तादाद लगभग उतनीही होनी चाहिये, जितनी कि आज पूरे प्रान्त मंत्रियोंकी है। अगर हमें अवैतनिक गवर्नर मिल सके, और बहुतसे पेन्सिनर राजा महाराजाओंके होते हुए यह मुस्किल नहीं होनी चाहिये – तो प्रान्तोंको आज जितनी आमदनी होती है, उनमें दो या तीन उप - प्रान्तोंका खर्च चल जायगा और कर दाताओंपर नया बोझ नहीं पड़ेगा

मेरा यह दावा है कि आजकी हालतोंमें ऊपर बतायी हुई योजनाही प्रान्तोंको फिरसे बांटनेका सबसे अच्छा तरीका है। फिर भी मुझे आशा है कि जो लोग इस पेचीदा सवालको हल करनेमें दिलचस्पी रखते है वे सब इसपर पूरा ध्यान देंगे।

फैंसी सिल्क साड़ी

२) पेशगी आर्डर के साथ बाकी वी-पी-से थोक व्यौपारियों को खास सुभीता

आकर्षक व कलापूर्ण डिजाइन ४ इंच चौड़ा बार्डर

कीमत नं० ७ - ८ - ९ रु० १८) २३) २८

रमाको इंडस्ट्रीज - जुही - कानपुर

कुंवर आयुर्वेदिक फार्मेसी - कानपुर

स्वाधीन भारतमें प्रौढ़-शिक्षा

श्रीमती कृष्णाकुमारी नाग एम० ए० साहित्यरत्न

जो मनष्य प्रौढ़-शिक्षाका अर्थ यह निकालते हैं कि केवल दूसरे मनुष्योंको पढ़ना लिखना सिखा देना है, वे भूल करते हैं। वस्तुतः इससे हमारा उद्देश्य यह है कि देशका प्रत्येक नागरिक इतना ज्ञान प्राप्त कर ले, कि उसके क्या अधिकार हैं तथा साथ ही किन-किन कर्त्तव्योंका पालन करना होगा। प्रौढ़ शिक्षा उस समय तक अधूरी कहलायेगी, जब तक प्रत्येक व्यक्तिको देशकी राजनीतिक सामाजिक और धार्मिक हलचलोंका पूरा-पूरा ज्ञान न हो जाये, और वह अपना सहयोग देनेके योग्य न बन जाये। समाज जागरण भी इसीका दूसरा नाम है। जनताको स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करनेकी शिक्षा देनी होगी। आत्मसम्मानपूर्वक उसको रोटीकी समस्याको हल करना सिखाना होगा। इन सब बातोंके लिये साक्षरताका प्रसार करना अत्यन्त आवश्यक है। चूंकि भारतवर्षमें ८५ प्रतिशत से भी अधिक जनता अपढ़ है, इसलिये ऐसे स्थान पर प्रौढ़ शिक्षाका महत्व तो बहुत ही अधिक बढ़ जाता है।

दिसम्बर १९३८ में प्रौढ़-शिक्षाका ध्यानपूर्वक अध्ययन करनेके लिये एक विशेष कमेटीकी स्थापना शिक्षा बोर्डके अन्तर्गत की गयी थी। इसका नाम ही प्रौढ़ शिक्षा कमेटी" रखा गया था। उस समय जान सारजेंट भारत सरकारके शिक्षा-सलाहकार थे। उन्होंने देशकी राजनीतिक तथा बौद्धिक स्थितिका गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि प्रत्येक व्यक्तिको राज्यका योग्य नागरिक बनानेके लिये तथा देशमें प्रजातन्त्रवाद कायम रखनेके लिये, प्रौढ़ मनुष्योंमें शिक्षा का प्रचार करना अत्यन्त आवश्यक है। जब तक प्राथमिक शिक्षाको मनुष्य मात्र के लिये अनिवार्य न बना दिया जाय तब तक प्रौढ़ शिक्षाका प्रश्न हल करना कठिन रहेगा। प्रौढ़-शिक्षा मानव-जीवनके प्रत्यक्ष कार्य कलापोंसे अधिक सम्बन्धित रहनी चाहिये। बौद्धिक शिक्षाकी तुलनामें कला-कौशलकी निपुणता अधिक करायी जाय, जिससे प्रौढ़ व्यक्तियोंका ध्यान एक स्थान पर केन्द्रित हो सके। शारीरिक श्रम करनेके लिये उन्हें हस्तकलामें कुशल होना होगा। संसारके उतार-चढ़ावमें बहनेके कारण उन की बुद्धि भी बालकोंकी अपेक्षा जड़ हो जाती है। अतः धीरे धीरे उनमें लगन पैदा करनी होगी।

प्रौढ़ मनुष्योंके रहन-सहनके दरजेमें भी जब तक सुधार नहीं होगा, तब तक साक्षरताका महत्व भी उनकी समझमें नहीं आ सकता। शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक स्वस्थताका प्रत्येक नागरिकको ज्ञान कराना आवश्यक है। प्रौढ़ मनुष्योंको शिक्षित बनानेके लिये शीघ्रता तथा डांट-फटकार से काम नहीं लेना चाहिये। उनकी उम्रको हमेशा ध्यानमें रखकर ही उनसे बातचीत करनी चाहिये। उम्रकी औसत एक प्रांतसे दूसरे प्रांतमें और एक देशसे दूसरे देशमें बदल जाती है।

उदाहरणके लिये १० से ४० तक बंगालमें (जैसा कि बंगालकी प्रौढ़-शिक्षा कमेटीने सिफारिश की है,) १५ से ४० बिहारमें, १५ से ४० बम्बईमें (जैसा कि बम्बईकी प्रौढ़ शिक्षा कमेटीने १९३८ में सिफारिश की है) और चीनमें तो १६ से ५० वर्ष प्रौढ़-शिक्षणकी उम्र मानी गयी है। उम्रकी ठीक-ठीक नाप तौल करनेके लिये नीचे लिखी कुछ बातोंको ध्यानमें रखना चाहिये। दस वर्षसे लेकर १२ वर्ष तकके प्राणीके लिये, चाहे वह किसी भी लिंगका हो, शिक्षण केन्द्रसे पृथक होना चाहिये। शहरोंकी अपेक्षा देहातोंमें विशेषकर शिक्षाका अधिक अभाव पाया जाता है। प्रत्यक्ष परीक्षणोंके फलस्वरूप हमारा निष्कर्ष है कि चालीस वर्षकी आयुके बाद प्रौढ व्यक्तियोंको शिक्षित बनाना बड़ा कठिन काम है। अतः १० वर्षकी आयु ही प्रौढ़ शिक्षाके लिये उचित अवसर है। इस समय मनुष्य मात्रकी बुद्धि विकसित होती रहती है। प्रौढ़-शिक्षण कमेटी ने इस बात पर सदासे जोर दिया है कि वास्तवमें प्रौढ़-शिक्षा प्रचारके लिये नियमित रूपसे स्थान-स्थान पर वर्ग खोलना और उनको व्यवस्थित रूपसे चलाना आवश्यक है।

कभी घरके काम काजसे फुर्सत पाकर विश्वास भी उसके पास आकर बैठ जाती!

'फूलडाली!' एक जोरकी आवाज उसे सुनाई दी। विश्वास जैसे इस परिचित स्वरको सुन कर विचलित हो उठी। वह हाथ धो रसोईके बाहर आ गयी।

'इधर आना।' विश्वासने पुकारा। फूलडालीवाली आकर बोली 'बाई जी, फूलडाली लोगी?' उसके स्वरमें एक अवसादमय कम्पन था। जोगेनने पूछा 'उदास हो?'

उदास? बाबूजी! कौन करे और कौन मरे! उस दिन जो शहरमें गोली चली तो मेरा आदमी मर गया। वह तो कामसे लौट रहा था! बाबूजी! मेरा सुहाग लुट गया। ये लोग क्यों लड़ते हैं?

धीरज रखो। जो होना था, हो चुका! आदमी आज पशु बन गया है।'

विश्वासने एक फूलडाली और खरीद ली। फूलडाली वाली चुपचाप पैसे लेकर चली गयी।

रसोई-घरमें दोनों फूलडालियां टंगी हैं। दोनों रंगीन हैं। किन्तु एक जैसे सुहागका सौभाग्य है और दूसरी जैसे वैधव्य का विधान?

इस उच्च कार्यके लिये योग्य ट्रेंड शिक्षकों की आवश्यकता पड़ेगी, जो अनुभवी हों, तथा शिक्षाके क्षेत्रमें कई वर्षोंसे प्रत्यक्ष कार्य कर रहे हों। जहां तक हो सके, १० वर्ष से १६ वर्ष तकके लड़कोंके वर्ग पृथक रूपसे चलाये जायें और १६ से ४० वर्ष वाले पुरुषोंके वर्ग अलग रहें।

उसी प्रकार १० से १६ वर्षकी लड़कियोंके वर्ग अलग रहें तथा १६ से ४० वर्ष तक की स्त्रियोंके वर्ग अलग। प्रौढ़-शिक्षाका आन्दोलन देशभरमें शीघ्र प्रचारित करनेके लिये प्रचारकों तथा संस्थापकोंकी आवश्यकता पड़ेगी। पहले यह समय २५ वर्षका रखा गया था, जब कि प्रत्येक प्रौढ़को शिक्षित बनाया जाये, पर अब यह समय घटाकर १० वर्ष कर दिया गया है। केन्द्रीय सरकार प्रौढ़-शिक्षाके कार्यमें पूरी तरह सहयोग दे रही है। दस वर्षके समयमें सरकार प्रत्येक मनुष्यको पूर्ण शिक्षा देना चाहती है, जिसमें वह अपना जीविकोपार्जन भलीभांति कर सके। इस प्रकारकी शिक्षाके लिये कोई निश्चित शिक्षण पद्धति निर्धारित करनी होगी। शिक्षकोंके प्रश्नको हल करनेके लिये जो शिक्षक प्राइमरी, हाईस्कूल आदि संस्थाओं में काम करते हैं अथवा जो शिक्षित पुरुष अथवा स्त्रियां रात्रि-पाठशालाओं, पुस्तकालयों तथा दफ्तरोंमें काम करते हैं, उनकी सुविधाका समय उनसे ले लिया जाय तथा उसके बदले उन्हें शक्तिके अनुसार पारिश्रमिक अवश्य दिया जाय। जब वह शिक्षक अपना समय तथा शक्ति शिक्षण-कार्यमें लगायेगा, तब उसे अपनी आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिये अधिक द्रव्य की भी आवश्यकता पड़ेगी। प्रारम्भमें इस प्रकार के शिक्षकोंके सामने सुन्दर भविष्यकी कल्पना रखनी होगी, उनका दीन-हीन जीवन दूर करना होगा।

आज सबसे दयनीय दशा केवल शिक्षक वर्ग की ही पायी जाती है। मनोरंजन तथा देशाटनकी बातें तो वे स्वप्नमें भी नहीं सोच सकते। जब शिक्षकोंमें मानसिक मलीनता रहेगी, तब वे प्रौढ़ वर्गके व्यक्तियोंमें किस प्रकार शिक्षा-प्रसार करेंगे? शिक्षकके रहन-सहनका ढंग तथा उसका व्यक्तिगत जीवन प्रौढ़-शिक्षामें विशेष महत्व रखता है। शिक्षा को अधिक-से-अधिक प्रत्यक्ष जीवनके लिये उपयोगी बनानेके लिये उत्साह तथा प्रेम आदि गुणोंको प्रौढ़ व्यक्तियोंमें भरना होगा। अतः शिक्षक तथा प्रौढ़ विद्यार्थीमें हमेशा प्रेम तथा सहानुभूतिसे भरा हुआ सम्बन्ध होना चाहिये।

प्रौढ़-शिक्षा प्रसार करनेके लिये नीचे लिखी कुछ बातें अवश्य सहायक होंगी:—नृत्य तथा संगीत, ये दोनों कलाएं प्रचारके कार्यमें अपना प्रथम स्थान रखती हैं। संगीत द्वारा जनताका मन बहुत सरलतासे आकर्षित कर लिया जा सकता है। अजायबघर तथा पुरानी वस्तुओंके संग्रहालयोंके द्वारा भी प्रौढ़ शिक्षाका उत्तम प्रदर्शन किया जा सकता है। सुन्दर बड़े-बड़े तैल चित्रोंके द्वारा शिक्षा-सम्बन्धी बातें लोगोंको बतलाना चाहिये। प्रत्येक मुहल्लेमें जाकर मैजिक लैनटर्नके द्वारा फिल्मके सिनेमा रील्स, ग्रामोफोन, रिकार्ड और लाउड स्पीकरके द्वारा प्रौढ़ शिक्षाका प्रचार बड़ी सरलतासे देशके चारों ओर हो सकता है। प्रांतीय सरकारोंको चाहिये कि समय-समय पर बड़ी-बड़ी प्रदर्शनियोंकी भी आयोजना करती रहें। इन सब बातोंके बाद इस शिक्षा योजनाके प्रचारके लिये स्थान-स्थान पर स्थायी पुस्तकालयों, चलते-फिरते पुस्तकालयों तथा वाचनालयोंकी भी योजना अवश्य होनी चाहिये। प्रत्येक प्रौढ़ शिक्षण-शिविर अथवा विद्यालयके साथ एक छोटा सा पुस्तकालय अवश्य ही चाहिये। समाज-शिक्षा इसी प्रौढ़-शिक्षा योजनाका एक आवश्यक अंग है। समाज व्यवस्थाको सुचारु रूपसे चलाने के लिये भी इनकी अत्यन्त आवश्यकता है।

प्रौढ़-शिक्षा योजनामें किसी प्रकार पुरुषोंकी पढ़ाईका प्रबन्ध तो हो सकता है, पर प्रौढ़ स्त्रियोंको तो शिक्षित बनाना बड़ा कठिन कार्य लगता है। हमारे नित के जीवनकी बात है कि स्त्रियों पर घर-गृहस्थीका भार इतना अधिक होता है तथा बच्चोंके भारके कारण उनका सारा समय काममें ही निकल जाता है; यहां तक कि आर्थिक अवस्था ठीक न होनेके कारण उनको सारा काम स्वयं करना पड़ता है। अतः जिस प्रकार हो सके उनके दैनिक जीवनमें सुविधानुसार कुछ समय निकाल कर उनके लिये शिक्षाका प्रबन्ध अवश्य ही प्रत्येक मुहल्लेमें होना चाहिये। जब तक स्त्री शिक्षकाएं न मिलें तब तक पुरुषोंके द्वारा ही शिक्षण कार्य चलाना चाहिये।

प्रौढ़-शिक्षाका आन्दोलन केवल बड़े-बड़े शहरों तक ही सीमित न रहे। इसका प्रचार देहातों, जिलों तथा छोटे-छोटे गांवोंमें भी होना चाहिये। बूढ़े-बूढ़े अनुभवी व्यक्तियोंकी तथा शिक्षा-शास्त्रियों की एक कमेटी बना दी जाय।

समाज शास्त्रका ज्ञान देना भी आज स्वाधीन भारतमें अत्यन्त आवश्यक हो गया है। यही प्रौढ़ शिक्षा है। इसीसे देशका राजनीतिक विकास प्रगति पा सकेगा।

—०—

आधुनिक स्टाइलकी रिस्टवाच १८रु

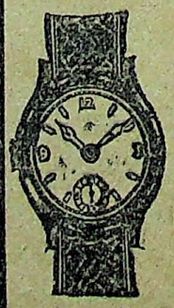

यह आधुनिक डिजाइनकी घड़ी १३", स इजकी जूएल लगी हुई मजबूत लीवरकी ठीक वक्त देनेवाली घड़ी है। क्रोमियम केस गोल या चौकोर आकार। मूल्य १८) रु० डाक खर्च ।) ३ वर्ष की गारन्टी। नाम पता अंग्रेजी में लिखें। ब्रिटानिया वाच कं० (C.V.) पोस्ट बक्स ११४०३ कलकत्ता

मकानकी समस्या

श्री धीरेन्द्र मजूमदार

गांधीजीके सिद्धांतके अनुसार रचनात्मक कार्य करनेवालोंको आज चौतरफा दृष्टि रखनी होगी। संसारमें आज किस तरह विभिन्न नामोंसे तानाशाहीका प्रसार हो रहा है उसको देखते हुए रचनात्मक कार्यकर्ता को जिस केन्द्रवादके कारण अधिनायकवादका प्रसार होता जा रहा है, उसके विरोधमें एक प्रबल क्रांति करनी होगी। हमेशा जिस शक्तिके खिलाफ क्रांति की जाती है उस शक्तिकी चेष्टा एक ओरसे क्रांतिका दमन और दूसरी ओरसे दिशा भ्रष्ट होती है। यह दिशाभ्रष्ट मुख्यतः सहूलियतके मोहमें हीं फंस कर होती है। रचनात्मक कार्यकर्ताओंको यदि लड़ना है तो वह लड़ाई केन्द्रवादसे सर्वतोमुखी होगी। उनको अपने ध्येयको साफ और कार्यक्रमको सुव्यवस्थित करना होगा। मौलिक आवश्यकताके लिये अगर जनताको स्वतंत्र करना है तो अश्रयके लिये भी आजादी अनिवार्य है।

इन्हीं सब बातोंको सोचकर आजके अर्थशास्त्री और अन्य नेता बहुत अधिक प्रवृत्ति और उत्साह न रहते हुए भी चर्खा और ग्राम उद्योगकी बातें सोचते रहते हैं। किंतु आज जब स्वावलंबनकी दिशामें सोचते हैं तो हमारा ध्यान अधिकांश रूपमें अन्न और वस्त्र परही जाता है। हमारी सारी प्रवृत्ति और चेष्टा इसी दिशामें लगी रहती है। कृषि, गोपालन, कताई, बुनाई आदिके प्रयोग पर हम काफी ध्यान देते रहे हैं। स्वावलंबनके आधार पर अन्न और वस्त्रकी दिशामें हमने अच्छी प्रगति भी की है। लेकिन जिंदगीकी आवश्यकताओंमें आश्रय यानी मकान भी एक बड़ी आवश्यकता है। किंतु इस दिशामें आज तक हम गम्भीर विचार नहीं कर पाये हैं। आजकी हालतमें स्वावलंबनको छोड़कर भी मकानकी समस्या एक बड़ी समस्या हो गई है। शहरमें ही नहीं कस्बे और गांवोंमें भी पहली मुश्किल मकानकी ही पड़ती है। पिछली गर्मीमें दिल्ली, कुरुक्षेत्रमें शरणार्थी-शिविरोंमें विशाल जन समूहको जिस बड़ी मुसीबतका सामना करना पड़ा था उसे सभी जानते हैं। केन्द्रीय और प्रांतीय सरकारें अपनी सारी शक्ति लगाकर शरणार्थियोंकी एक एकी समस्या हल करना चाहती हैं। लेकिन उनकी सारी शक्ति के बावजूद और देश विदेशके विशेषज्ञ इंजीनियरोंके रहते हुए भी सब किंकर्तव्य विमूढ हैं। इसलिये कि उनके पास साधन नहीं। यही हालत दूसरे स्थानोंकी भी है। पैसे उनके पास रहते हुए भी वे साधनके बिना मकान बना नहीं पाते।

अतएव आवश्यकता इस बातकी है कि भारतके रचनात्मक कार्यकर्ता जिस प्रकार वस्त्र और अन्नकी समस्या पर अपना ध्यान लगाते हैं उसी प्रकार मकानोंकी समस्यापर भी विचार करें। जब तक जनता अन्न-वस्त्रकी तरह मकानके लिये स्वावलंबी नहीं होगी तब तक वह उसी तरह केन्द्रीय व्यवस्थापककी मुट्ठीमें होगी। आजतो स्वावलंबी समाज की दिशामें पहिला कदम रखनेवाली संस्थाएं यानी बुनियादी शालाएं भी उसी ढंगसे बनती हैं जिस ढंगसे शहरकी कोई भी इमारत बनती है, स्वावलंबन के सिद्धांत और कार्यकी जड़ गांव गांवमें जमनेवाली संस्थाएं भी बाहरसे ईंट, सिमेण्ट, लोहेकी चद्दर टीन आदि मंगा कर अपने मकान बनानेका काम करने पर अवलंबित रहती है। उनकी दलील है कि इसमें सहूलियत और किफायत है। अगर खादी, ग्रामोद्योग और नयी तालीम के कार्यक्रमको चलनेकी इमारतके लिये सहूलियत चाहिये और इसमें किफायत ढूंढेंगे तो जनता अन्न, वस्त्र तथा अन्य आवश्यकताके लिये सहूलियत और कम खर्च क्यों न ढूंढे?

इसलिये रचनात्मक कार्यकर्ताओंको आज सोचना होगा कि वे किस तरह ग्रामीण साधनके आधार पर आजकी समस्या हल करें। चर्खेके सूतके प्रयोगमें हम इसकी खोज करते थे कि हमारा चर्खा कैसा हो और कातनेका ढंग कैसा हो, जिससे सूत मजबूत और टिकाऊ हो सके। उसी प्रकार आज हमें सोचना होगा कि गांवमें मिट्टी और लकड़ीसे किस प्रकार मकान बनायें कि वह टिकाऊ और सुन्दर हो सके। इस प्रयोगमें हमें यह भी देखना होगा कि रहने इसके लिए किस तरीकेसे अपना मकान बना सकें। जो लोग देहातमें पक्के मकानकी बात करते हैं उनका कहना है कि कच्चे मकानमें झंझट बहुत है और मरम्मतका खर्च भी काफी पड़ता है। झंझट और खर्चकी बात तो तब होगी जब सारा क्रम ही केन्द्रीय ढंगसे चलता हो। अगर स्वावलंबन के ढंगसे चलेगा तो मरम्मतमें केवल श्रम ही लगेगा और श्रम शक्ति हमारे देशमें कितनी इफरात और बेकार है, यह बात किसी अर्थ शास्त्रीसे छिपी नहीं है। अतः झंझट और खर्चकी बात केन्द्रीय व्यवस्था की है स्वावलंबनकी नहीं। हमारे कार्यकर्त्ताओंको इन बातों पर विचार करके मकानकी समस्यामें लगना है।

जो-लोग भावी समाज व्यवस्थाके बारेमें विकेन्द्रीयकरण और स्वावलंबन को पूर्ण रूपसे मानते हैं उनके सामने भी मकानकी समस्या कम कठिन नहीं है। आजकी परिस्थितिमें गांधीजीकी बतायी हुई मौलिक समाज-व्यवस्था पर पूर्ण रूपसे विश्वास न करनेवाले भी परेशान हैं। शरणार्थियोंके लिये मकान जल्दी नहीं बन सकता, ऐसी पंडितोंकी राय रही। और उस दिशामें केन्द्रीय सरकार की गाड़ी

रुक-सी गई थी। जैसा कि हमने जिक्र किया है हालमें श्री विनोबाजीके नेतृत्वमें चर्खा संघके कुछ नौजवानोंने दिल्लीमें कच्चा मकानका नमूना बनाकर शरणार्थीके आश्रयके लिये सरल मार्गका दर्शन कराया तो बहुतसे लोग तो परेशान थे सोचने लगे कि इस दिशामें भी कोई मार्ग है। आजकी प्रान्तीय सरकारें अनिवार्य शिक्षाकी ओर तेजीसे बढ़ना चाहती हैं। किंतु विद्यालयकी की कठिनाई सामने खड़ी है। उसको दूर करनेके लिये उनके पास साधन नहीं हैं। अनिवार्य शिक्षा शुरूकरने पर एक समस्या इससे भी बड़ी खड़ी होने वाली है। आज देहातमें संयुक्त कुटुंब प्रथा नष्ट-सी होगयी है। प्रत्येक परिवारमें एक या दो स्त्रियां होती हैं, उन्हें घर गृहस्थीका सारा काम करना पड़ता है, अतः वे अनिवार्यतः बड़े बच्चेके जिम्मे छोटे बच्चे करके अपने काममें लगती हैं। अनिवार्य शिक्षाके कारण जब पढ़नेकी अवस्थावाले (लगभग ७ सालके) बालक पाठशालाओंमें चलीजांयगे तो छोटे बच्चेको कौन संभालेगा? अतः राष्ट्रीय सरकारको प्रत्येक गांवमें बाल-मंदिर खोलनेकी आवश्यकता होगी। अगर प्राथमिक शिक्षाके लिये एक हजार या दो हजा आबादी पर एक विद्यालय खोलनेकी आवश्यकता है तो छोटे बच्चोंके लिये लगभग २५० की आबादीमें एक बाल मंदिरकी आवश्यकता होगी। क्योंकि चाहे जितनी भी कोशिश की जाय, बच्चोंको माताओंसे अधिक दूर नहीं कर सकते। इस तरह सिर्फ प्राथमिक शिक्षा और बाल मंदिरके लिये असंख्य इमारतोंकी आवश्यकता होगी। इसके अलावा राष्ट्र निर्माणके लिये दूसरे काम भी हैं, जिन्हें गांव-गांवमें फैलाना है। युक्त प्रान्त जैसे बड़े प्रांत की सरकार सींचाईके लिये सिर्फ ६००० कुआं नहीं बनवा सकी। साधन नमिलनेसे निराश होकर तालाब खोदनेका कार्यक्रम बनाना पड़ा।

ऐसी हालतमें सिद्धांत और व्यवहार दोनों दृष्टियोंसे राष्ट्रीय सरकार और रचनात्मक कार्यकर्ताओंको मकान बनानेका स्वावलंबी तरीका ढूंढ निकालना होगा। केन्द्रीय साधन मुहय्या करके भारतके राष्ट्र निर्माणकी बात सोचना दिवास्वप्न ही है। आशा है आज राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता और जन-नायक इस समस्यापर गम्भीर विचार करेंगे।

शीघ्र पदोन्नति

किशन कैसे अफसर पद पर पहुंचा

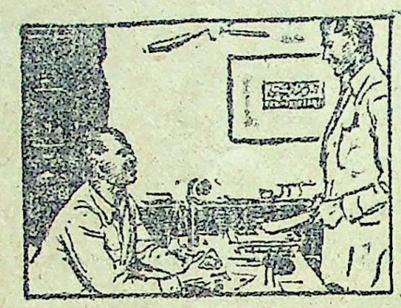

(१) "अबसे तुम मुश्किलोंसे भला करोगे" बैंक मैनेजरने कहा। "तुम्हारा काम अच्छा है और सबसे बड़ी बात यह है कि तुम हमेशा स्वच्छ और खुश मिजाज रहते हो।

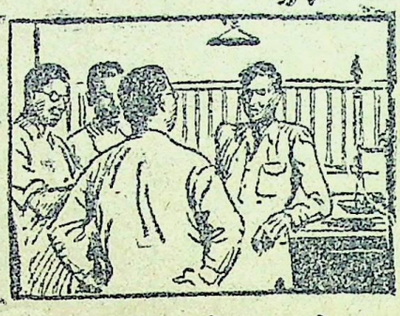

(२) किशनकी तरक्की पर सभी कर्मचारियोंमें चर्चा होने लगी और एक क्लर्कने सभीसे पूछा "किशन को तरक्की क्यों मिली, जबकि हम लोग उससे अधिक अनुभवी हैं?"

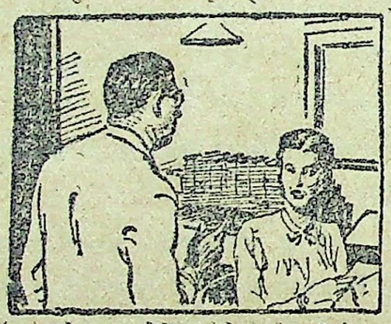

(३) हेड क्लर्कने मैनेजरके सेक्रेटरीसे किशनकी तरक्कीके बारेमें पूछा। उसने बताया "उसके अच्छे कामके ही कारण नहीं, वरन् उसकी स्वाभाविक स्वच्छताके कारण उसे तरक्की मिली है।"

(४) "तुम रोजाना किस तरह हजामत बनवा लेते हो?" हेड क्लर्क ने पूछा। किशनने उत्तर दिया "मैं सेवन ओ क्लाक ब्लेडससे स्वयं हजामत बना लेता हूं। ६ आनेका एक पैकेट कई सप्ताहों तक चलता है।"

* अच्छी वेषभूषाही सफलताका रहस्य है। यदि आप "सेवन ओ क्लाक" ब्लेड्स का उपयोग करें तो किशनके समान स्वच्छ हो सकते हैं। वे सर्वोत्तम इस्पात से निर्मित अति तीक्ष्ण धार युक्त और बाजारमें सबसे अच्छे हैं।

'सेवन ओ'क्लाक से रोज स्वयं हजामत बनायें

7 o'clock

SLOTTED BLADES

कम खर्च में अधिकाधिक हजामत देनेवाले ब्लेड्स

६ आने में ५ का पैकट

गीति-काव्य

श्री बैजनाथप्रसाद खेतान

गीतोंकी परम्परा कोई अर्वाचीन परम्परा नहीं, अपितु इनके मूलमें वैदिक ऋचाएं संश्लिष्ट हैं, जिन ऋचाओंमें आर्यावर्त की संस्कृति पल्लवित हुई है। इस प्रार्थना और उपासनामें संगीतके आरोह-अवरोहका ऐसा सामञ्जस्य है, जैसाकि सौन्दर्यमें आसक्तिका प्रेममें अनुराग और लहरोंमें चंचलताका सामञ्जस्य हुआ करता है। परन्तु आजके गीत जहां तन्मयताको लक्ष्य मानते हैं वहां प्राचीन वैदिक गीतोंसे मुक्तिकी साधना परिलक्षित होती है। तत्वमें अन्तर नहीं आया, अगर प्राचीन और अर्वाचीन गीतोंके बीच कोई सीमांत-रेखा आयी भी तो उसने मूल प्रेरणा ही पृथक पृथक धाराएं कर दीं। एकको मुक्तिकी अकांक्षा रही, दूसरेको अपने सुख-दुखसेही मुक्ति कहां?

अस्तु, इन गीतोंकी भी एक क्रमबद्ध श्रृंखला है। इनके आदिमें भाव योग की वही साधना परिव्याप्त है जिसका उल्लेख आचार्य रामचन्द्र शुक्लने चिंतामणि में कर्मयोग और भाव योगके समक्ष किया है। यह उस स्थितिका नैसर्गिक उद्रेक है जबकि अभ्यांतरिक अनुभूति एक निश्चित प्रौढ़ बिंदु पर केंद्रित होजाती है। आरम्भके विषयमें यही कहा जा सकता है कि जहांसे उसे आरम्भ होना है, वहांसे आरंभ होगाही और जहां इसे अन्त होना, होगा वहीं इसकी इति हो जायगी। बीचमें जहां रुकावट आयी कि वह कला मारी जायगी, जिससे नैसर्गिकता और मार्मिकताको बल मिलता है। अगर स्वाभाविक गति रही तो उसमें क्रमशः तीव्रता तो आप ही आयेगी, इसके लिये उद्योग या चेष्टा करनेकी आवश्यकता नहीं। यही तीव्रता जब अन्तमें चरम सीमा तक पहुंच जाती है तो कलाकी पराकाष्ठासे उसे अभिनीत किया जाता है। पर ऐसी पराकाष्ठाके लिये भावोंमें एकता हो, यह निश्चयात्मक है। चित्र माध्यमसे भी अगर भावोंकी अभिव्यक्ति हो रही है, तो एकही चित्रमें भावोंका उत्तरोत्तर विकास होता रहे। अगर कोई चित्र भी आवे तो एकही भाव विशेषकी अभिव्यक्ति के लिये, ऐसी दशामें विभिन्नताएं भी एकताकी ओर जायगी।

गुप्तजीका गीत 'रुदनका हंसना ही तो गाने' (यशोधरासे) चित्रोपमत्त के लिये विशेष प्रसिद्ध है। इसमें कई चित्रोंकी योजना की गई है जैसे वीणाकी, लताकी, बिजलीकी, निर्झरणी और चन्द्रमाकी, पर इन सभी चित्रोंमेंसे एक ही भावकी अभिव्यक्ति होती है — दुखोंकी उपेक्षा करनेसे ही गीतोंकी उपेक्षा होती है और यह भावना अन्तमें जा अपनी परिणति को पहुच जाती है। मालूम पड़ता है जैसे काव्यमें लोक-मंगलकी भावना की ओर गुप्तजी इन पंक्तियोंसे संकेत कर रहे हों। शुक्लजीके शब्दोंमें लोकमें फैली दुखकी छाया को हटानेमें ब्रह्मकी आनन्द-कला, जो शक्तिमय रूप धारण करती है उसकी भीषणतामें भी अद्भुत मनोहरता, कटुतामें भी अपूर्व मधुरता, प्रचंडतामें भी गहरी आर्द्रता साथ रहती है। विरुद्धोंका यही सामञ्जस्य कर्म-क्षेत्रका सौन्दर्य है जिसकी ओर आकर्षित हुए बिना मनुष्यका हृदय नहीं रह सकता। भीषणता और सरसता, कोमलता और कठोरता, कटुता और मधुरता, प्रचण्डता और मृदुताका सामञ्जस्य ही लोक धर्मका सौन्दर्य है।' (काव्यमें लोक मंगलकी साधनावस्थासे) ऐसे सौन्दर्यकी ही अभिव्यक्ति गुप्तजीने चित्रोंकी विभिन्नताके बीच एकताको प्रतिष्ठित करते हुए की है। पर चित्रोपमत्ता में इस ओर सचेष्ट रहना चाहिये कि भावानुकूल पृष्ठ भूमि है या नहीं। एक अस्थिपिञ्जर जर्जरित कुटियाके सामने बाग खड़ा कर हम उसका उपहास भलेही करलें, इससे कोई उसकी करुणा उद्दीप्त नहीं होगी। महादेवीके काव्यमें इन चित्रों और रंगोंकी विशेष महत्ता है। ये चित्र और रंग भी सगुण और निर्गुण कवियोंके साथ साथ बदलते रहते हैं। मीरा और महा देवीके काव्यमें यही सूक्ष्म अन्तर है क्योंकि एक अपने अराध्य देवके मूर्त रूपकी उपासिका है, दूसरी उसके अमूर्त रूपकी। कहीं-कहीं मीराके काव्य में निर्गुण पद्धतिका भी निरुपण हुआ है पर वहां वह अपनी सगुण कविताओंसे भिन्न व्यक्तित्व में है। इससे संगीतात्मकता में कोई अन्तर नहीं आता। केवल निर्गुण गीतोंके साथ साथ यह देखा जाता है कि उसमें बुद्धि प्रधान रहती है, फिर भी रागात्मक वृत्तिकी उपेक्षा नहीं हुआ करती, क्योंकि अगर यह हुआ तो काव्यत्व ही कहां रह जायगा।

रागात्मक वृत्ति और ज्ञेयता तो सभी गीतोंके लिये अपेक्षित है ही, पर साथही अगर वे स्वानभूतिव्यञ्जक भी हों तो उसे हम प्रगीत कहेंगे अन्य पर फिरवे गीतही कहे जा सकते हैं, प्रगीत नहीं। प्रगीतकी सबसे बड़ी विशिष्टता आभ्यातरिकभावनाओंकी अभिव्यक्तिमें है। संभव है, लोग कहें कि ऐसी स्वानुभूतिव्यञ्जकता प्रत्येक कोटिके काव्यमें मिलती है। बाल्मीकि रामायण और मानस-रामायणमें क्या अन्तर नहीं है? माना कि ऐसा होता है पर इस स्वानुभूतिव्यञ्जकतामें और प्रगीतकीस्वानुभूतिव्यञ्जकतामें अन्तर है। एकमें दृष्टि बाल और विशेष रहती है, दूसरेमें अन्तरकी ओर। पर इसमें अतिरिक्त भावनाकी सुन्दरता और सुकुमारता, कोमलकांत-पदावली और भावानुरूपिणी भाषा, मार्मिकता और तीव्रतर आदि गुणतो गीत और प्रगीत दोनोंके लिये अपेक्षित हैं।

ऐतिहासिक दृष्टिसे देखा जाय तो गीताका उद्गम वेद से हुआ, वीरकालमें कुछ मंद गति रही, भक्ति कालमें परिणति

हुई, फिर रीति कालमें एक बार उतार आया पर आधुनिक युगमें इसे एक बार पूर्णता और मिली। वीरकालमें वस्तुतः गीति काव्य नहींके बराबर था। केवल पृथ्वी राज रासो और आल्हा खंडमें कुछ गीतोंकी योजना मिलती है। संत युगमें तो इसका स्वर्ण युग ही रहा। कबीरने तंबूरे पर अपने 'सबद' और साखियों को सुनाया सूर बालक कृष्णके रूपमें मुग्धहो आप बालक होगये, उनकी विरहिणी गोपिकाओंकी मर्मव्यथाएं मीराकी व्यथाओंसे मेल खाने लगीं, तुलसीने स्वामी रामके सामने अपनी भक्तिभावनाओंको अभिव्यक्त किया। रीति युगमें फिर गीतोंकी परम्परा कुछ जातीसी रही। आधुनिक युगमें प्रसाद और पंत, निराला और महादेवीने इस परम्पराको प्रशस्त किया। प्रगतिवादके युगमें जाकर अनुभूमिकी वह कमी दीखने लगी जिससे भावोंकी प्रेरणा मिलती है। संभवतः अभी तक प्रगतिवादकी नींवपर प्रशस्त प्रसाद का सृजना नहीं हुई है।

रसकी दृष्टिसे देखा जायतो जितनी सफलता श्रृंगार, शांत, वात्सल्य और करुण रसमें गीतोंको मिल सकती है उतनी दूसरे रसोंमें गीतोंमें नहीं। श्रृंगारमें विप्रलंभ इसके लिये विशेष उपयुक्त है।

इधर कुछ दिनोंसे लोक संग्रह की प्रवृत्तिविशेष परिलक्षितहोती है। वस्तुतः देखा जाय तो गीतमें भी दो कोटि हैं— साहित्यिक गीत और लोक गीत। लोक गीतमें जितनी स्वभाविकता रहा करती है, मैं समझता हूं उतनी स्वभाविकता साहित्यिक गीतमें हो ही नहीं सकती। किन्हें पता है कि यह गीत कबसे चले आरहे हैं, कितने इन्हें लिपिबद्ध किया होगा। सोहर, झूमर, जंतवार, बिरहा, कहरवा, बारहमासा, न जाने कितने रागोंसे होकर इनकी परम्परा चली आ रही है।

आज लोकगीतका भविष्य तो उज्जवल है पर साहित्यिकगीतोंके विषयमें संदेह होता है क्योंकि आभ्यंतरिक अनुभूतिकी कमी उनमें विशेष रूपसे खटकती है। पाश्चात्य देशोंमें इन गीतोंके विरुद्ध प्रचंड अन्दोलन हुआ था, तदनुकूल इनकी गति अवरुद्ध हुई। संभव है, भविष्यमें जाकर यहांके गीतोंके प्रति भी अन्दोलन हो।

चलती चक्की.

छटीं गालियां बकनेवाला हैदराबादका रेडियो गत शुक्रवारको ऐसा बोल रहा था, मानों फूल झड़ रहे हों।

जिनको न जमीं पर,
कभी भी चलते देखा।
उनको ही उसी पर,
नाक रगड़ते देखा॥

* * *

हर्षका संवाद है कि हैदराबादमें रजाकारोंके संगठनको गैरकानूनी घोषित कर दिया गया है।

पेटके टुकड़ोंके लिए,
शमशीर पकड़नेवाले।
नेस्त रजाकार हुए,
जानू पै उखड़नेवाले॥

* * *

निजामसे हैदराबादके शासनाधिकार छीन लिए गये।

उनके पास वे थे ही कब? जिन रजाकारोंके पास थे वे आज जेलोंमे डब्बू भर दाल और तीन रोटियों भर के अधिकारी हैं।

* * *

यह सन्तोषजनक सूचना है कि निजामने रजाकारोंकी संगत छोड़ दी है।

या रजाकारोंके प्रेतने खुद अपना साया हटा लिया है और हिन्दके जनजंगलमें लापता हो गया है निजामको फंसा कर।

* * *

हैदराबादके संग्राममें सहायता देनेवाले नरों और नरेशोंको अलग-अलग सरदार पटेलने समान धन्यबाद दिया है।

'नरेश शायद सरदारजीके शब्द कोषमें नर नहीं होता। तभी तो उसको अलग धन्यबाद देते हैं?

गोवाकी राष्ट्रीय कांग्रेसने भारतीय सरकारसे आतंक तथा अपमान के शासनका अन्त करनेके लिए फौजें तत्काल भेजनेकी अपील की है।

ताते रकत यह गन्दी प्याली भी साफ करके रख देना चाहिए।

* * *

गोवामें खादी पहनने, गांधी टोपी लगाने, गांधी या नेहरूका चित्र रखने वालोंकी आम गिरफ्तारी जारी है।

पुर्त्तगाल, फ्रांस और ब्रिटेनके कुछ व्यक्तियोंके भी विध्वंसक तैयार खड़े हैं भारतीय फौजोंसे मोर्चा लेनेके लिए। वे चैलेंज दे रहे हैं, मगर नेहरू अभी कुछ दिन सोचेंगे तब कुछ करेंगे।

* * *

फांसी और कैद झेलनेके भय से बहुत नामी रजाकार कराची या गोवा को चले गये हैं।

गोवाकी गोरी सरकार पर इन अण्डर-ग्राउण्ड रजाकारोंकी काली पल्टन नमदा कस चुकी है शायद?

* * *

निजाम कहते हैं कि 'मैं आशा और बनती करता हूं कि पारस्परिक सम्मान जारी रहेंगे।'

नेहरूजी सोच रहे हैं कि हिटलर की नकल उतारने वाला नकली कोहेनूर कहां पाऊं जो निजामकी नजर करके उनका उचित सम्मान किया जाय।

* * *

बिना डाकखानेकी मोहर लगी चिट्ठियां रखने वाले यात्रियोंकी तलाशी ली जाया करेगी।

मोहब्बतही इस नय कानून पर शहीद होगी क्यों कि उसकी चिट्ठियां अक्सर बे डाक मोहरकी ही होती हैं।

* * *

आज का अमेरिका

स्वतंत्रताके शत्रुओंके विरुद्ध अमेरिकाका संगठन

रिपब्लिकन सेनिटर आर्थर एच० वैंडिनबर्गने एक समाचारमें कहा कि विदेशके लोगोंको यह जानना चाहिए कि अमेरिकाकी दोनों बड़ी राजनीतिक पार्टियां घरेलू मतभेद होते हुए भी आक्रमण और स्वतंत्रता के शत्रुओंके विरुद्ध एक हैं।

गवर्नर थाम्स ई० डियुई जो कि अमेरिकाके होनेवाले चुनावोंमें रिपब्लिकन पार्टीकी ओरसे राष्ट्रपति पदके उम्मीदवार है और जान फासटर डलस जो कि डियुईके विश्वकारके सलाहकार है, दोनोंने इस समाचारकी पुष्टि की।

समाचारमें कहा गया है कि अमेरिका हर जगह अपने अधिकारोंकी रक्षा करने और न्याय पर स्थिर रहते हुए हर शांति चाहनेवाले संसारमें लोगों और अपने लिए न्यायके साथ शांति प्राप्त करनेके लिए एक मुठ है।

समाचार में यह भी कहा गया कि दूसरी जातियोंके लिए जो कि हमारी राजनीतिक बनतर को नहीं समझते, यह अवश्य है कि वह हमारी घरेलू राजनीति रचनासे किसी गलत फहमीमें न आयें। राजनीतिक पालिसीके बहुतसे विषयों पर हम आपसमें झगड़ेंगे, परन्तु सच तो यह है कि जहां तक अमेरिकाका सम्बन्ध स्वतंत्रताके शत्रुओं और आक्रमणके विरुद्ध एक मूठ होनेका होगा हममें कभी तकरार न होगी।

अलबानियाके विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र कमेटीके कई और दोष

लेक सक्सेस—संयुक्त राष्ट्रकी खास कमेटीने जिसकी बैठक अब एथन्स में बालकानके बारेमें हो रही है, अपनी सब कमेटीके एक सर्व सम्मत परिणाम की पुष्टि की है। सब-कमेटीका कहना है कि अलबेनिया सरकारने उन छापामार दस्तोंको अलबेनियासे सहायता की आज्ञा दी जो कि यूनान सरकारके विरुद्ध यूनानकी ग्रामोसकी पहड़ियोंमें लड़ रहे है।

सब कमेटी ने यह भी कहा कि इन छापामार दस्तोंने जंगी हरकतों, तोपकी चौकियों, आराम और यातायातके लिए १ से २४ अगस्त तक अलबानिया ईलाके से काम लिया था।

यह परिणाम ग्रामोसका रण देखने वालोंकी रिपोर्ट पर निर्भर है।

यह विशेष कमेटी एक परिशिष्ट रिपोर्ट, पेरिसमें होनेवाली संयुक्त राष्ट्रकी जेनरल असेम्बलीकी बैठक में पेश कर रही है।

कोरियन प्रजातंत्रका भविष्य उज्वल है

वाशिंगटन, कोरियामें अमेरिकाकी सेनाके पहले कमांडर लेफ्टिनेंट जेनरल जान आर० हाजने कहा कि यदि बाहरकी शक्तिने नष्ट न किया तो नवीन कोरियन प्रजातंत्रका भविष्य उज्वल होगा।

जेनरल हाज कोरियासे अभी आये है। आपने कहा कि अमेरिका कोरिया को पूरे तौरसे स्वतंत्र देखना चाहता है। आपने संकेत किया कि कोरियो की यह प्रबल इच्छा है कि वह हर प्रकारके विदेशी अधिकारसे सर्वथा मुक्त हो।

हाजने जोर देते हुए कहा कि अमेरिकन सेनाओंका उसी हालतमें निकालना हो सकता है जब अमेरिका संयुक्त राष्ट्र तथा कोरियन सरकार एक साथ बैठ कर सलाह कर ले। आप ने कहा कि मैं निश्चयसे नहीं कह सकता कि क्या अमेरिकन सेनाओंके निकलने पर उत्तरी कोरियाके कम्यूनिष्ट समस्त देश पर अधिकार कर सकेंगे।

जेनरलने यह भी कहा कि मेरे दक्षिणी कोरियासे चलते समय कम्यूनिस्ट प्रभाव बहुत कम था। १५ अगस्तको २५००० आदमी कोरियाकी पुलिस सेनामें थे। आपने कहा कि मुझे पता नहीं कि उसके बाद यह कितनी बढ़ गयी है।

आपने यह भी कहा कि अमेरिकन शिक्षा अमेरिकन बचे हुए अस्त्र शस्त्रों और कुछ छीने हुए जापानी शस्त्रास्त्रों से कोरियन अपने आपकी रक्षा कर सकते हैं।

पेरिसमें इस मासके अन्तमें संयुक्त राष्ट्रोंकी जेनरल असेम्बलीकी होने वाली बैठकमें कोरिया पर विचार होगा।

अमेरिकाके प्रतिनिधि संयुक्त राष्ट्रकी असेम्बलीमें भाग लेनेके लिए चल पड़े

संयुक्त राष्ट्रकी जनरल असेम्बलीमें भाग लेनेवाले अमेरिकन डेलिगेशनके ११ सदस्योंकी बहु गिनती समुद्री जहाज अमेरिका द्वारा पेरिसकी ओर चल पड़ी है। असेम्बलीका अधिवेशन २१ सितम्बरको प्रारम्भ होगा। इस डेलीगेशनके नेता वार्न आस्टन है, और इसमें मिसेज एलिनोर रूजवेल्ट भी है। अमेरिकाके विदेश मन्त्री जार्ज सी० मार्शल, जो कि अमेरिकन डेलीगेशनके सीनियर सदस्य है, १९ सितम्बर को वायुयान द्वारा पेरिस गये हैं।

अमेरिकन उत्पादन

अमेरिकामें १८९० के लगभग सबसे पहली कार बनी, तबसे १४ अगस्त १९४८ तक अमरीकी करखानोंने १०, करोड़ मोटर गाड़ियां बनाई, अगस्त ७ से १४ सप्ताहमें १०,००,००,००० कार बनी केवल उसी सप्ताहमें कुल १,०५,९१६ गाड़ियां बनी, जिनमें २५,५४६ लारियां थीं।

कारखानोंमें काम करने वाले

अमेरिकन लेबर फिड्रेशनकी १९४७ का रिपोर्टसे पता चला है कि अमरीकामें काम करने वालोंको ४० घण्टे हर हफ्तेमें काम करना पड़ा, उनको १ २।४ डालर (रु० ४-२-०)) प्रति घण्टा मजदूरी मिलती थी। इससे अधिक घण्टे काम करने वालोंको आम मजदूरीसे डेढ गुना मजदूरी मिलती थी।

डालर उत्पादन

१९४८ की दूसरी सहमाईमें अमेरिकाकी समस्त पैदावार बढ़कर २४,६०० करोड़ डालरके सालाना हिसाब तक पहुच गई। यह आकड़े पिछले वर्ष के अन्तमें लगाये गये अनुमानसे ४०० करोड़ डालर अधिक है।

फौलाद

आज कल फिर हर वर्ष १३,६५,००,००० टन संसारमें फौलाद निकाला जारहा है। यह १९३७ की निकासके बराबर है। अमरीका जो जंगसे पहले कुलका ३९ प्रतिशत निकालता था अब ५६ प्रतिशत निकालता है।

प्राकृतिक चिकित्सा

श्री धर्मचन्द सरावगी

महात्मा गांधीके आशीर्वाद और श्री महावीरप्रसादजी पोद्दारकी रायसे मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी कलकत्तामें प्राकृतिक चिकित्सा विभाग जब सर्वप्रथम खोलनेका प्रस्ताव रखा गया, उस समय कुछ मित्रोंको इस प्रणाली पर बिल्कुल विश्वास ही नहीं होता था। वे सोचते थे किजहांइतने बड़े-बड़े डिग्रीधारीइतनेकेसरंजाम साथ रोगोंसे लड़कर उन्हें दबा पाते हैं वहां ये बिना औषधिके रोगोंसे रोगियोंको किस प्रकार मुक्ति दिला सकेंगे। परन्तु महात्माजीके आशीर्वादके कारण किसीने भी उसका विरोध नहीं किया। विभाग खुल गया। कुछ मित्रोंको संतोष हुआ कि जहां एलोपेथिक,आयुर्वेदिक और होमियोपेथिक चिकित्सा होती है, वहां नेचरोपेथिक भी खुल गयी। कुछ लोगोंने कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा और औसधी उपचारमें तो एक दूसरेमें पूर्व पश्चिमका अन्तर है, इसलिये यहां नहीं खुलना चाहिये। परन्तु काम अच्छा चल निकला, सोसाइटीको बाध्य होकर संध्याके समय भी विभाग खोल देना पड़ा और एक ही जगह दो डाक्टर नियुक्त किये गये। इसी बीच दो चार मनोरंजक घटनाएं इस प्रकार हुईं :-

(१) -एक बार आदरणीय जानकी देवी बजाज कलकत्ते आयीं तो उन्हें सोसाइटीका निरीक्षण करनेके लिये आमंत्रित किया गया। सोसाइटीके विभिन्न विभाग दिखाते समय जब उन्हें नाक-कान विभागके विशेषज्ञके पास लेगये तो उससे बातें करते समय उनसे नहीं रहा गया और कह ही दिया कि भाई यह तो सारी दुकानदारी है, रोगियोंको पेट ठीक करनेके लिये क्यों नहीं कहते, जिससे सारी बीमारियां हीं दूर हो जांय, रोग तो सारेके सारे पेटकी गड़बड़ी से ही उठते हैं।

(२) - एक बार हमारे जैन तीर्थके मुनीमजी चंदा एकत्र करनेके लिये बाल बच्चे सहित कलकत्ता आये हुए थे। चंदेके साथ साथ निमंत्रण भी मिला करते थे। वे स्वयं तो कुछ होशियार थे, पर साथके बच्चे तो बच्चे ही ठहरे, निमंत्रणमें खानेका कोई भी नियंत्रण नहीं रखते थे, प्रकृतिको अपना काम करना ही था; उनके मझले बच्चेकी नाक फूल गयी। वे दौड़ें दौड़े मेरे पास सोसाइटीमें आये। मेरी इच्छा उन्हें किसी प्रकारकी औषधि न दिलानेकी होते हुए भी, मैंने उनसे उनकी राय पूछी। उन्होंने बड़ी बिनतीके साथ कहा कि किसी अच्छे डाक्टरका प्रबन्ध करदें। मैंने सोसाइटीके नाक-कानके विशेषज्ञके पास स्लिप लिखकर भेज दिया। छै सात दिन इलाज करानेके पश्चात एक दिन वे मेरे पास घबड़ाये हुए आये। उनका कहना था कि बच्चा अबतक ठीक नहीं हुआ, डाक्टर उसकी जानका खतराबतलाताहै और खून टट्टीऔर पेशाब जांच करनेके लिये और एक्सरे लेनेके लिये कहता है। मैं गरीब आदमी इतना खर्च किस प्रकार बरदास्त कर सकूंगा। असलमें मुनीमजी सत्तर अस्सी रुपये माहवारके पानेवाले थे। परन्तु पुराने ढंगके होनेके कारण पगड़ीके साथ साथ कानमें दो लौंग भी थे। हाथमें एक अंगूठी थी, कुर्तेमें सोनेकी बटन था, जो बेचारे डाक्टरके हृदयमें गलत फहमी पैदा कर रहे थे कि यह कोई पैसे वाला व्यक्ति है। मैं भी डाक्टरसे मिला, उसने रोगका नाम इतना बड़ा बताया, जिसका उच्चारण करना मेरे लिये कठिन है। मैंने मुनीमजीको अलग ले जाकर अब प्रकृति चिकित्साकी शरणमें जानेके लिये राय दी। डाक्टरका नुक्सा अपनी शक्तिके बाहर समझ लाचार हो वे प्रकृतिकी शरणमें जानेको तैयार हो गये। वहां केवल तीन दिनके उपचारसे लड़का ठीक होकर उनके साथ चला गया।

(३) - सोसाइटीके एसिस्टेंट मैनेजर श्री गयाप्रसाद सिंह पहले प्राकृतिक चिकित्साके संबंधमें विशेष दिलचस्पी नहीं लिया करते थे। लेकिन एक दिन जब मैंने प्रकृतिक चिकित्सा संबंधी कुछ कार्य करनेके लिये उनसे कहा तो उनकी दिलचस्पी देख कर मुझे कौतुहल हुआ। पता लगाने पर मालूम हुआ कि उनका बड़ा लड़का जो कई महीनेसे एलोपेथिक इलाज कराकर हार गया था, अंतमें प्राकृतिक चिकित्सासे स्वस्थ हुआ है। उन्होंने बतलाया कि जब यह इलाज शुरू किया गया तो उस समय मेरे पिताजी बराबर कहा करते थे कि तुम पागल होगये हो, इतने बड़े लड़केको भूखों मार डालोगे। जब यह चंगा होगया तब लोगोंको कुछ विश्वास होता है।

(४) -एक बार मेरे निकटतम मित्रको सर्दी हुई। वे कई दिनोंसे तकलीफ भोग रहे थे। मैंने उन्हें छातीपर ठंडी लेनेके लिये कहा। इसपर वे हंसकर बोले - क्या निमोनिया लेकर मरना है। मेरे आग्रह और डाक्टर साहबके कहने से उन्होंने छाती पर ठंडी पट्टीका लपेट घंटे भर किया। दूसरे दिन मिलने पर उन्होंने बताया कि जुकाम तुरत गायब होगया।

(५) - श्री नन्दलाल जी सरावगी (फर्म - रामजीवनदास सरावगी) के लड़के शांतिप्रसाद एक दिन सोसाइटीमें आये। पूछनेपर मालूम हुआ कि उनके दांतमें दर्द है। कई बार डाक्टरसे इलाज करवाया, ठीक होजाता है और फिर होजाता है। आज दर्द अधिक है, इस वजहसे दांतके डाक्टरसे सलाह करने आये हैं। मैंने कहा कि

बिना पैसेका सीधा-सा इलाज है, पर आप पैसेवालोंको इसपर विश्वास थोड़ेही होगा, जाइये डाक्टरसे इलाज करवा लीजिये। मेरे इस व्यंगपर उन्होंने कहा कि आप क्या बताते हैं, बतायें। मैं अवश्य करूंगा। मैंने कहा कि इलाज तो बड़ा सीधा है और मैं बतला भी देता हूं, पर मुझे बहुत कम विश्वास है कि आपको वह जंचेगा और आप उसे करेंगे। इसमें तो केवल गरम पानीके कुल्ले तीन मिनट तक और उसके बाद ठंढे पानीके कुल्ले तीन मिनट तक, दुबारा गरम पानीके कुल्ले तीन मिनट तक और फिर ठंढे पानीके कुल्ले तीन मिनट, तीसरी बार गरम पानीके तीन मिनट और अन्तमें ठंढे पानीके कुल्ले तीन मिनट करके छोड़ दें। इस प्रकार सुबह, दोपहर, संध्या, अठारह अठारह मिनटका समय खर्च करें। किसी प्रकारकी दवाकी दरकार नहीं है। पानी मुफ्तका है ही, कई दिन तक करेंगेतो अवश्य आराम होजायगा। मैं सोसाइटीके अनेक कामोंमें व्यस्त था। मुझे बिल्कुल ही आशा न थी कि वे इन बातों पर कोई ध्यान देंगे। बिना उनके उत्तरकी प्रतीक्षा किये मैं अपने अन्य कामोंमें लग गया। ये बातें मुझे स्मरण भी न रहीं। तीन चार महीने बाद नन्दलालजी एक वैवाहिक समारोहमें मिले। वहां सोसाइटीके प्राकृतिक चिकित्सा विभागकी चर्चा कुछ मित्रोंसे होरही थी। उस समय नन्दलालजीने कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा बड़ी अच्छी चीज है। मेरा लड़का शांतिप्रसाद कई महीनोंसे दांतके दर्दसे कष्ट पा रहा था। उसदिन धर्मचन्दके बताने पर ठंढे गरम पानीके कुल्ले कई दिन तक किये, बिल्कुल आराम होगया।

(६)—श्री केदारप्रसादजी सरावगी कटनीवाले, हमारी ही गद्दीके पास जिनकी गद्दी है, प्राकृतिक चिकित्साकी बातें बराबर सुना करते थे और लोगोंको आराम होते भी देखा करते थे। उन्हें लगभग पंद्रह बीस वर्षसे दमेकी शिकायत थी। वे भी कौतूहलवश पूछा करते थे कि क्या मैं प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा दमेसे मुक्ति पा सकता हूं। मैं और डाक्टर कुलरंजन मुखर्जी कहा करते थे कि यदि आप डटकर इलाज करायें तो अवश्य अच्छे हो जायेंगे। गत जनवरी महीनेमें इलाज करानेका विचार करके वे कलकत्तेके लिये रवाना हुए। रास्तेमें महात्माजीकी हत्याका समाचार सुनकर दिलपर ऐसा असर पड़ा कि दमेका प्रकोप बढ़ गया। हवड़ा स्टेशन पर जब वे पहुंचे तो टैक्सी लारी आदि सब बंद थीं। पैदल चलनेकी शक्ति उनमें न थी। बाध्य होकर उनकी गद्दीवालोंको उन्हें ठेलागाड़ी पर सुलाकर लाना पड़ा। लोग उन्हें डाक्टरी इलाजके लिये कहने लगे, पर वे कटनीसे सोच समझ कर ही प्राकृतिक चिकित्सा कराने आये थे। सोसाइटीके डाक्टर मुखर्जीका इलाज शुरू हुआ। लगभग दो महीने तक इलाज होता रहा। प्राकृतिक चिकित्सामें उपवास और फलाहार कराया जाता है, जिससे कि शरीरके जितने दोष और विकार हों, निकल जांय। साधारण लोग जो इस इलाजसे परिचित नहीं है, रोगीको बाह्य रूपसे कमजोर होते देख घबड़ा जाते हैं। केदारप्रसादजीके सगे संबंधी और मित्रोंने बड़े बड़े डाक्टर और कविराजके नाम लेने आरम्भ कर दिये, परन्तु केदारप्रसादजी काफी मजबूत रहे और कभी कभी मुझसे सलाह लेते थे। मैं उन्हें इसी इलाज पर निश्चित रहनेके लिये कहता था। इसी बीच श्रीमहाबीर प्रसादजी पोद्दार भी निजी कार्यसे कलकत्ता आये। उन्हें भी लेजाकर केदारप्रसादजीको दिखाया। उन्होंने उन्हें बड़ा धीरज दिया। यहांका वातावरण नेचरोपैथिक के अनुकूल न था: क्यों कि जितने बंधु बांधव और मित्र थे, वे सब औषधि-उपचारके भक्त थे, केवल केदारप्रसादही अपने आत्म बलके कारण उसपर डटे हुए थे। मैंभी उन्हें इसी इलाजपर दृढ़ रहनेके लिये कहता था। अन्तमें महाबीर प्रसादजी उन्हें अपने साथ साथ ही गोरखपुर लेगये। लगभग एक महीनेके इलाजके बाद वे स्वस्थ हुए। अब दमा बिल्कुल छूट गया है, स्वास्थ्य पहलेसे अधिक अच्छा है।

उन्होंने लगभग एक लाख रुपया लगा कर एक प्राकृतिक चिकित्सालय कटनी में खोलनेका विचार किया है। इसके लिये एक जमीन भी खरीद ली है। अब सी० पी० सरकारकी सहायतासे उस कामको आगे बढ़ाना चाहते हैं। कटनीके कांग्रेसी कार्यकर्ता उनके साथ इस कार्यमें काफी सहयोग दे रहे हैं।

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये!

कई साइजकी शिशीयां है

सोल एजेण्ट्स:

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

मधु संचय

कसाई महिला

नेटाल, दक्षिण अफ्रिका का समाचार है कि अफ्रिकी यूनियनकी एकमात्र कसाई महिला अब अपने पुराने काम पर लौट गयी है। यह एक सुन्दरी युवती है जो विगत महासमर के पहले एक फर्मके दफ्तरमें काम करती थी। किन्तु युद्ध प्रारम्भ होने पर इसने अपनी नौकरी छोड़ दी और कसाईखानेमें काम करने वाले एक युवकको युद्धमें सहयोग देनेका अवसर प्रदान करने के निमित्त, इसने स्वयं उसकी जगह पर जानवरोंको काटनेका नया काम शुरू कर दिया। युवतीने अपनी शौकीन पोशाकोंका परित्याग कर दिया, कसाईखानेकी नीली-उजली उर्दी धारण की और हाथोंमें कसाई का छुरा लेकर जानवरोंको काटने लगी।

बेटेने बापकी तीसरी शादी रोकी

इंगलैंडके डडले नामक स्थान (वोर्चेस्टर) के सेंट जेम्स गिरजेमें जब ५२६ वर्षीय जार्ज थोमस २१ वर्षीय एलिस फिंच नामक कुमारीसे अपनी तीसरी शादी करनेके लिये पादरीके सामने खड़ा था, तो उसकी पहली पत्नीसे पैदा हुआ पुत्र चार्ल्स थोमस हठात् वहां पहुंचा और उपस्थित व्यक्तियों को यह कहकर आश्चर्यमें डाल दिया कि वह शादी नहीं होने देगा, क्योंकि एक दिन पहले उसे कनाडाकी एक स्त्रीका पत्र प्राप्त हुआ है, जिसमें उसने लिखा है कि वह उसकीअपनी मां है। यह घटनाठीक उस समय हुई जब पादरीने मन्त्रका उच्चारण प्रारम्भ कर दिया था। लेकिन बेटे द्वारा पैदा की गयी गड़बड़ीके कारण शादी रुक गयी और वर महोदयको पुलिसके जासूस अपने साथ ले गये और बधु महोदया अकेले अपने घर लौट गयीं।

ब्रिटिश राजमाता मेरीकी स्फूर्ति

ब्रिटेनके वर्त्तमान शाह जार्ज षष्ठमें की माता सामाज्ञी मेरीकी अवस्था इस समय ८२ वर्ष की है, किन्तु इस अवस्थामें भी उनमें काफी स्फूर्ति है। प्रतिदिन खूब सबेरे ही उनका दिन भरका कार्यक्रम तैयार हो जाता है। उन्हें व्यापारिक और औद्योगिक प्रदर्शिनियोंसे बहुत दिलचस्पी है और दर्शनीय एवं उत्तम सामग्रियां तैयार करनेवाले मजदूरोंकी अवस्था के सम्बन्धमें भी वे जानकारी प्राप्त करना चाहती हैं। ऐसे अवसरों पर सामाज्ञी मेरी खूब तेज चालसे चलती हैं और सभी चीजोंको घूम-घूम कर देखती हैं। सप्ताह में एक बार थियेटर देखना कभी नहीं भूलतीं। आपको पढ़नेसे भी पर्याप्त रुचि है और प्राचीन विषयोंका पूरा ज्ञान रखती हैं। प्रति दिन सबेरे उनकी चिट्ठियां उन्हें पढ़कर सुनायी जाती हैं। टेलिफोनकी चिंता कभी नहीं करतीं और शायद ही कभी उसका व्यवहार करती हैं। राज्य-समारोहोंसे आपको बड़ा ही स्नेह है। शाही परिवार एक-एक बातमें इनकी राय लेता है। यद्यपि राजमाता मेरी अपने पदके कारण राजनीतिमें भाग नहीं ले सकतीं, फिर भी वे ट्रेड यूनियनके विचारों का पूर्ण समर्थन करती हैं।

कभी ब्रिटेन वाले बर्बर थे

डर्बीशायरके वाहूले नामक स्थानमें सैकड़ों टन वजनी चट्टानोंके नीचे बने एक कंदरेमें ३५ हजार वर्ष पुरानी एक स्त्रीकी खोपड़ी मिली है, जिस पर भाले-बर्छोंके कई घावोंके निशान हैं। यह कंकाल खूब इज्जत और विधियोंसे दफनाया गया प्रतीत होता है। अनुसंधान करनेवालोंका कथन है कि इस खोपड़ीकी मानवी कोई महत्व-पूर्ण महिला थी, जिसकी भाले-बर्छोंसे नृशंस हत्या कर दी गयी थी। किन्तु हत्या का कारण पूजा और समारोहका अनुष्ठान प्रतीत होता है और हत्यारे उसके अपने सगे सम्बन्धी एवं प्रशंसक ज्ञात होते हैं? मि० ए० एल० आर्मस्ट्रांगने, जिन्हें खोपड़ी प्राप्त हुई थी, ब्रिटिश एसोसियेशन आफ सोइटिस्ट्सको बताया है कि पिछले हिम-युगके पहले उक्त महिला संसारमें मौजूद थी और वह कोई सरदारिन अथवा जादूगरनी थी। संभवतः उसे मार कर लोगोंने उसका मांस खा लिया था।

हवाई द्वीपमें हवाई मौतें

हवाई द्वीपमें ८५ व्यक्तियोंकी एक रहस्यमय बीमारीसे मृत्यु हुई है, जिसके कारण और निदानका पता वहांके बड़े-से-बड़े डाक्टरों तकको नहीं लग रहा है। यह बीमारी गत ११ वर्षोंसे चली आ रही है। डाक्टरों और पुलिसके अधिकारियों की अनवरत चेष्टासे भी रहस्यका कारण-सूत्र नहीं पकड़ा सका है। मनिला (फिलिपाइन्स) के प्रमुख पैथोलोजिस्ट डा० क्रिस्टोबल मानालांगने रहस्यका पता लगानेके लिये नयी चेष्टा प्रारम्भ की है। इस रोगमें मनुष्यके पेटके निचले भागमें गिल्टी (वायुगोला) निकल आती है और उसके सूजने पर मृत्यु हो जाती है। सबसे ताजी मृत्यु एक जूठे वर्तन धोने वाले ३७ वर्षीय युवक की है।

बापको लड़का वापस लेनेमें कठिनाई

सेंट अलवांस कौंसिलके आर्चिटेक्ट किरानी मि० हेनरी जुरिस गत महायुद्ध में मोर्चे पर लड़ने गये थे। जब वे घर लौटे तो कुछ दिनों तक अपनी पूर्व-विवाहिता पत्नी अन्नाके साथ रहे, किन्तु गत १९४६ में पति-पत्नी कानूनन एक दूसरेसे पृथक हो गये। थोड़े दिनोंके बाद दोनोंने पुनः शादी की, लेकिन इस बार भी कुछ ही दिनोंके बाद दोनों पुनः पृथक हो गये और अन्नाने एक दूसरे व्यक्तिसे शादी कर ली। केवल कुछ ही दिनोंके बाद मि० हेनरी जुरिसको ज्ञात हुआ कि अन्नाको एक पुत्र पैदा हुआ है, जो हिसाबन उनके औरस संतान है। गत मार्चमें उन्हें सूचना मिली कि अन्नाके नये पतिने उस शिशुको गोद ले लिया है। अब तो ये बेचैन हो गये। यद्यपि ये शिशुके औरस पिता हैं, फिर भी कानून इनके विरुद्ध है, अतः कठिनाइयां सामने खड़ी हैं। इसके लिये उन्हें अदालत से शिशुको गोद लेनेकी अनुमति लेनी पड़ेगी।

रजाकारोंका पूर्ण उन्मूलन हो

हैदराबाद और डेक्कन व्यापार-उद्योग परिषदके अध्यक्ष एवं एक प्रमुख व्यापारी श्री एम० जी० लक्ष्मीनरसूने रजाकारोंके खौफनाक दौरदौरेसे हैदराबादकी रक्षा करनेके लिए रियासतकी जनताकी ओरसे भारत सरकार और भारतीय सैनिकोंके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन किया है। आपने इस सम्बन्धमें प्रेसको निम्नलिखित वक्तव्य प्रकाशनार्थ भेजा है :—

"हैदराबाद रियासतकी शासनीय अवस्थाओंमें आमूल परिवर्तन हो जानेके फलस्वरूप, अब वहां अनेक गम्भीर समस्याएं पैदा हो गयी है। साथही नयी घटनाओंके दायरेमें निजामका पद ऐसा हो गया है कि लोग उनके सम्बन्ध में तरह तरहके अनुमान लगाने लगे है। हैदराबादके बाहर और भीतर निजामको पद-च्युत करनेकी मांग की जा रही है। यद्यपि जनता और निजामके बीच मतभेद की जबर्दस्त खाई मौजूद है, फिर भी सशक्त और विजयी जनताको अपनी सफलतामें केवल बड़प्पन और गर्वमें भूल नहीं जाना चाहिए। लोगोंको बड़े दायरेकी ओर देखना और समग्र राष्ट्रके स्वार्थोंकी चिन्ता करनी चाहिए। छोटे-छोटे स्वार्थोंसे राष्ट्रीय और बड़े स्वार्थोंका महत्व अधिक है। वर्तमान परिस्थितियोंको देखते हुए तथा हैदराबादके आर्थिक संगठन पर प्रहार करने वाले शक्तिशाली प्रभावोंको देखते हुए, यह आवश्यक है कि हैदराबादमें भी वही शासन प्रणाली कायम हो, जो दूसरी भारतीय रियासतोंमें चालू है। मेरी सिफारिश है कि निजामको राज्य-त्याग करनेके लिए विवश नहीं किया जाय और हैदराबादमें वेठीक उसी प्रकारके एक वैधानिक शासन कर्त्ताके रूपमें रहें जैसे दूसरी भारतीय रियासतोंमें राजागण है। उनका पद केवल एक वैधानिक राजाका रहे। भारतीय सेनाको हैदराबादमें प्राप्त हुई सफलताको पूर्ण बनाने और रियासतमें शांति और सुव्यवस्थाके नवयुगका प्रादुर्भाव करानेके लिए यह आवश्यक है कि मेजर जेनरल चौधरीके संरक्षण में वहां तबतक सैनिक शासन कायम रहे जबतक एक-एक रजाकार खत्म नहीं हो जाय और निजामी फौज एकदम निरस्त्र नहीं बना दी जाय। रियासतके अल्पसंख्यक, जो निजामकी जाति के हैं, शताब्दियोंसे यह समझते आ रहे है कि शासक जातिके हैं। किन्तु अब उन्हें बदलती हुई अवस्थाओंके अनुसार अपने जीवनको नियमित कर रहना सीखना होगा। इन अल्पसंख्यकोंको प्रजातंत्रके अनुकूल बनना होगा। ज्योंही ये काम पूरे हो जायेंगे त्योंही एक लोकप्रिय अंतरिम सरकारका स्थापित होना जरूरी होगा। मैं सिफारिश करूंगा कि मैसूर में जैसी सरकार कायम है, वैसीही यहां भी बने। सर मिर्जा इस्माइलको, जो पहले निजामकी एक्जिक्यूटिव कौन्सिलके अध्यक्ष थे किन्तु बुरी तरह हटा दिये गये थे, पुनः निमंत्रित करना चाहिए और पुराने पद पर बैठाना चाहिए॥ कांग्रेसके ५, व्यापारियोंके २ और मसलमानोंके २ प्रतिनिधियोंको मिला कर एक मन्त्रिमण्डल संगठित हो। एक विधान परिषद कायम हो और नये भारतीय विधानके आधार पर ही हैदराबादके लिए भी एक स्थायी विधान बने। उत्तरदायी सरकारकी शीघ्र स्थापना हो, सिकन्दराबाद और औरंगाबादमें पर्याप्त सैनिक रखे जांय, निजाम के अपरिमेय सोना-चांदीको स्टेटकी सम्पत्ति मान कर खुले बाजारमें बेंच दिया जाय और हैदराबादके मुसलमानोंकी रजाकार प्रवृत्तिको समाप्त करनेके लिए जैसे जर्मनीका गैर नाजीकरण हुआ था, वैसे ही हैदराबादका भी गैर-रजाकार करण कर दिया जाय। निजामके खास इलाकों पर भी स्टेटका अधिकार स्थापित हो। हैदराबादकी जनताका दिमाग प्रजातांत्रिक सांचेमें ढाला जाना चाहिए। हैदराबादको भारतका एक अनिवार्य अंग बनानेके लिए ही सभी कार्य हों।

बाकघम राज भवनमें शाही दावत होगी

लंदन, २२ सितम्बर। रायटरके विशेष सम्वाददाता फ्रेजर बिटनका कहना है कि आगामी ११ अक्तूबरसे लंदनमें होनेवाले ब्रिटिश राष्ट्रमंडलके प्रधान मंत्रियों के सम्मेलनमें भाग लेनेके लिये भारत, पाकिस्तान और लंकाके जो प्रधान मंत्रिगण यहां आ रहे हैं। उनके स्वागतकी जबर्दस्त तैयारियां की जा रही है। भारतके प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूके आनेके समाचारसे उनके स्वागतार्थ विशिष्ट तैयारियांकी जा रही हैं।

भारतके प्रधान मंत्री पंडित नेहरू पाकिस्तानके प्रधान मंत्री मि० लियाकत अलीखां और लंकाके प्रधान मंत्री मि० सेनानायके अपने-अपने देशोंके स्वतंत्र होनेके बाद पहले-पहल आ रहे हैं। तीनों व्यक्तियोंका सरकारी और सामजिक तौर पर काफी स्वागत सत्कार होने वाला है। ब्रिटिश राष्ट्रमंडलके एक सहयोगी उपनिवेशसंघ ब्रिटेनके प्रधान मंत्री मि० एटलीसे भी पद-ग्रहण करनेके बाद प्रथम-प्रथम मिलेंगे। शाहजार्ज षष्ठमकी ओरसे माननीय अतिथियोंके स्वातार्थ बकिंघम राजभवनमें एक प्रतिभोज आयोजित दिया जायगा। सरकारी कार्यक्रमसे अवकाश मिलने पर इनका दूसरे स्थानोंमें भी स्वागत होगा। यहां ऐसा महसूस किया जा रहा है कि पाकिस्तानके गवर्नर जेनरल मि० जिन्नाकी मृत्युसे पाकिस्तान सरकार पर तरह-तरहके गम्भीर उत्तरदायित्व एवं भारी बोझ आ पड़े है, फिर भी पाकिस्तानके प्रधान मंत्री मि० लियाकत अली खांने लंदन आनेका समय निकाल लिया है। वे यह महसूस करते हैं कि इस विषय परिस्थितिमें भी वे लंदन जा सकते हैं। इन तीनोंके अतिरिक्त दूसरे उपनिवेशोंके मंत्रिगण भी पधारेंगे। कैनाडाके प्रधान मंत्री मि० मेकेंजी किंग अधिवेशनके उद्घाटित होनेके काफी पहलेही लंदन पहुंचने वाले हैं। रायटर

भारत-हैदराबाद समस्याका उल्टा अर्थ

राष्ट्र संघके भारतीय प्रतिनिधि सर रामस्वामी मुदालियरने रायटरके प्रतिनिधिसे मिलनेपर कहा कि पश्चिमी देशोंने भारत-हैदराबाद समस्याका अत्यन्त ही भयावह और गलत अर्थ लगा लिया है।

अर्जेण्टाइनाकेप्रतिनिधि डा० जोसआर्कने सुरक्षापरिषदकी बैठकमें बोलतेहुए भारतके संबंधमें जो कुछ कहा, सररामस्वामी मुदालियरने उसके विषयमें कहा "डा० जोसआर्कने भारतके प्रति जो कुछ भी कहा है, वह बेमौके, बिना सोचे-समझे और कमीने ढंगसे कहा गया है। मुझे आशा है कि भारतमें ऐसे गैर-जबाबदेह कथनोंपर कोई भी ध्यान देना नहीं चाहेगा।"

सर रामस्वामी मुदालियरने आगे चलकर रायटरके प्रतिनिधिसे कहा, "भारतीय सेनाएं हैदराबादमें इसलिये प्रविष्ट हुईं कि वे वहां जाकर रजाकारोंसे निजामकी रक्षा करें। ये रजाकार रियासतकी शासन-व्यवस्थापर पूरा-पूरा कब्जा जमा चुके थे। हमारी फौज आक्रमणकारी फौज नहीं थी और न वहां इलाके जीतनेके लिये गयी थी। अर्जेण्टाइनाके प्रतिनिधिके भाषणसे प्रतीत होता है मानो वह फौजें केवल पुलिस फौज थी। निजाम द्वारा आत्म समर्पण किये जानेके बाद भारत सरकारने अबतक हैदराबादमें कोई मनमानी नहीं की है। हमने बार-बार कहा है और आज भी भी कह रहे हैं कि हैदराबादकी भावी सरकार वहांकी जनताकी इच्छासे संगठित होगी। यह अर्जेंटाइनाके लिये शोभाकी बात हो सकती है कि वह फौजी ताकतों और शस्त्रास्त्रोंकी बातें करे, क्योंकि जबर्दस्ती अधिकार जमानेके सिद्धांत पर उसका बहुत विश्वास है, किन्तु हम हैदराबादकी घटनाको अपनी आवश्यक सरकारी कार्रवाई मानते हैं। हम समझते हैं कि हमारे ही एक क्षेत्रमें अशांति और अव्यवस्था पैदा हो गयी थी, जिन्हें दूरकर शांति और व्यवस्थाकी स्थापनाके लिये, हमने कार्रवाई की। हैदराबादमें भारतीय सेनाओंकी कार्रवाईका अबिसीनियामें इटलीकी सेनाओंके आक्रमणसे तुलना करना सर्वथा हास्यास्पद है। अर्जेंटाइनाके प्रतिनिधिने कहा है कि भारत तो राष्ट्र संघका एक नया सदस्य है। लेकिन अर्जेंटाइना द्वारा भारतके नयापन का उपहास किया जाना तमाशे और कौतुहलकी बात है। वह अपनी बातें भूल गया है। अर्जेंटाइनावालो को याद नहीं है कि सन फ्रांसिस्कोमें उनके साथ क्या घटना घटी थी। जब अर्जेण्टाइनाने सान फ्रांसिको में राष्ट्र संघकी बैठकमें सदस्य बननेके लिय दर्खास्त दी थी, तो वह दर्खास्त ठुकरा दी गयी थी। बादमें किस प्रकार राष्ट्र संघमें अर्जेण्टाइनाने चोर-दरवाजेसे प्रवेश किया यह सर्वविदित है। डा० जोसआर्कने अल्पसंख्यकोंकी बातें भी की थीं। किन्तु भारतके विधानमें अल्पसंख्यकोंकी सुरक्षाके लिय पर्याप्त गुंजाइश रखी गयी है। हैदराबादमें अल्पसंख्यकोंके संबंधमें भी यही विधान लागू होगा। हमारे यहां अल्पसंख्यकोंको संसारके किसी भी स्थानसे अधिक रियायत और सहूलियत दी गयी है। वस्तुतः डा० जोसआर्कको न तो हैदरबादकी परिस्थितिके संबंधमें कुछ मालूम है, और वे न यही जानते हैं कि भारत और हैदराबादके बीच कैसा संबंध है। उन्हें यह तक पता नहीं है कि वस्तुतः हैदराबादके ८९ नागरिक हिन्दू हैं, और वहांके ११ प्रतिशत मुसलमानोंमेंसे अधिकांश भारतके इस विचारके समर्थक हैं। धीरे-धीरे हैदराबादपर अनुशासनहीन और हिंसक रजाकारोंकी सत्ता कायम होती जाती थी। फिर भी हैदराबादका प्रश्न हिन्दू और मुसलमानसे कोई संबंध नहीं रखता है। भारत और हैदराबादके स्वार्थ परस्पर ऐसे मिले-जुले हैं कि भविष्यमें दोनोंमें पुनः शत्रुता पैदा होनेका प्रश्नही नहीं उठ सकता है। अब हैदराबादमें शांति और उन्नतिका एक नवयुग, हालांकि कुछ देरीसे ही, प्रारंभ हुआ है। सुरक्षापरिषदके प्रति अपनी भावना प्रकट करने निमित्त हमने स्वेच्छासे यह स्वीकृत कर लिया है कि हैदराबादकी भावी सरकारके गठनके प्रश्न पर वहांकी जनताका विचार संग्रहीत करनेके प्रस्तावको सदस्योंके सामने रखेंगे। हमारे इस निर्णयकी कनाडा और संयुक्त राष्ट्रसंघने प्रशंसा की है। भारतने एशियाकी लाखों जनताके स्वार्थोंका समर्थन किया है और यह प्रस्ताव किया है कि सुरक्षा परिषदकी अस्थायी सीटोंका भौगोलिक दृष्टिसे समान वितरण किया जाय। चीनके अतिरिक्त, जिसे स्थायी सीट प्राप्त है, एशियाका दूसरा कोई भी बड़ा देश राष्ट्र संघ कार्रवाइयोंमें भाग नहीं ले सकता है।

कनल बूच प्रधान मन्त्री होंगे

(निज संवाददाता द्वारा)

विदित हुआ है कि बीकानेरके आई० सी० एस० नए प्राइम मिनिस्टर कर्नल बूच नियुक्त होकर शीघ्र बीकानेर आ रहे हैं। उनके आने पर यहां जो नई मिनिस्टरी बनेगी उसमें यहांके अच्छे व अनुभवी कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओंके लिए जानेकी संभावना है। संभावनाकी जाती है कि नया मन्त्रि मण्डल बननेसे पहले यहां प्रांतीय कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्डके सदस्य श्री गोकुलभाई भट्ट, शास्त्री जी व्यास जी व बर्मा जी आयेंगे। बीकानेरके लोक नेता श्री रघुवीर दयाल गोइल १६ को दिल्लीसे लौटे हैं। पता चला है कि १४ की शामको उन्होंने बीकानेरके मामले पर सरदार बल्लभ भाई पटेल से १५-२० मिनट तक बातचीत की।

चारों खाने चित

पं० मातासेवक पाठक
संपादक 'दैनिक विश्वमित्र' कलकत्ता

हैदराबादमें जो कुछ हुआ है, उससे हमारी वे बातें अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई हैं, जो हम पिछले दिनों इस आशयकी लिखते रहे हैं कि हमारी सेनाके सामने न तो निजामकी सेनाके पैर टिकेंगे और न रजाकार राक्षसोंके ही। कहां तो शैतान रिजवी भारतभरमें मुसलमानों द्वारा भयंकर रक्तपातकी धमकियां सुनाते हुए यह मुखस्वप्न देख रहा था कि "बंगालकी खाडीका नीला जल निजामके चरण धोयेगा और उनका आसफजाही झंडा दिल्लीके लालकिलेपर लहरायेगा," और कहां आज उसकी डींगोंके फेरमें पड़ा हुआ वही निजाम इस तरह चारों खाने चित पड़ा हुआ है। हमारी सेनाओंके हैदराबाद-प्रवेशके पांच दिनके भीतर ही निजामको अपने बलकी थाह मिल गयी और उसे दांतोंके नीचे तिनका दबाकर हमारी सरकारके सामने आत्म-समर्पण करनेको लाचार हो जाना पड़ा। इस अवसरपर हमें कविका यह कथन ही स्मरण आ रहा है—'बहुत शोर सुनते थे पहलूमें दिलका, जो चीरा तो एक कतरए खून निकला।' दस महीनेके लगभग हमारी सरकारने निजामको समझाने-बुझानेमें बिता दिये, पर उसे तो चंगपर चढ़ा रखा था पाकिस्तानके अधिकारियोंने और उसपर हावी हो रहा था रजाकारोंका सरदार शैतान रिजवी। इसीसे निजाम संसारके अन्य सभी लोगोंके चरण चुमनेमें तो अपनी मानहानि नहीं समझता था किन्तु जैसा कि उसके भूत प्रधान मंत्री लायक अलीने कहा है, सिकन्दराबादमें फिर भारतीय सेना रखनेकी हमारी सरकारकी मांगमें उसको अपनी भारी मान-हानि मालूम पड़ती थी। इसीसे तो वह हमारी सरकारकी अन्तिम दो मांगें स्वीकार करनेको तैयार नहीं हुआ, यद्यपि उससे यह साफ शब्दोंमें कह दिया गया था कि यदि वह रजाकारोंके संगठनपर तुरंत प्रतिबन्ध नहीं लगायेगा और भारतीय सेनाके सिकन्दराबादमें रहनेकी व्यवस्था नहीं कर देगा, तो हैदराबादमें सैनिक कारवाई आरंभ कर दी जायेगी। हमारी सेनाको हैदराबाद रियासतमें घुसे पूरे पांच दिन भी नहीं बीत पाये कि निजामका स्वप्न भंग हो गया और जिन शक्तियोंके बलसे उसने हैदराबादका स्वतंत्र शासक ही नहीं, शायद संसार-भरके मुसलमानोंका खलीफा और न जाने क्या-क्या बन जानेका स्वप्न देख रहा था, उनकी डींगोंके विषयमें उसे निश्चय हो गया कि 'जो कुछ कि देखा ख्वाब था, जो कुछ सुना अफसाना था'। इसीसे भारतके सामने आत्मसमर्पण कर देने और उसकी सभी बातें तुरंत स्वीकार कर लेनेमें ही उसने अपना कल्याण देखा। अब उसने भारतके किसी निश्चयकी प्रतीक्षा किये बिना ही अपनी सेनाको लड़ाई बन्द कर देनेका आदेश दे दिया है और भारतीय सेनाको बेरोकटोक सिकन्दराबादमें जाकर रहनेके लिये ही नहीं कह दिया है, रजाकार संगठनको गैरकानूनी ठहराकर उसे तुरंत भंग कर देने, लायकअलीको सरकारको निकाल बाहर करने और सर मिर्जा इस्माइलको बुलाकर उनकी सलाहके अनुसार नयी सरकार बनाने और भारतके साथ मिलकर मित्रतापूर्ण संबंध रखनेका निश्चय एक साथ ही कर डाला तथा भूत सरकारके प्रतिनिधियोंको सुरक्षा-कौंसिलके सामने पेश किये हुए मामलेकी पैरवी करनेसे रोक दिया है। इससे तो कविकी यह उक्ति बरबस याद आ जाती है—"रहिमन चाक कुम्हारको, मांगे दिया न देय। छेदमें डंडा डारिकै, घड़ा भले लै लेय।"

हैदराबादमें जो कुछ हुआ है, उससे स्पष्ट है कि नेहरू-सरकारको असाधारण एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण विजय प्राप्त हुई है। हैदराबादमें प्रवेश करनेवाली भारतीय सेनाओंका संचालन जिन जेनरल राजेन्द्र सिंहने किया है, उन्होंने अपनी व्यूह-रचना-चातुरीसे अपनी सरकारके लिये वहां जैसी व्यापक महत्ववाली विजय प्राप्त की है, उसके लिये आज सभी ओरसे उन्हें हार्दिक बधाइयां मिल रही हैं। उनके नायकत्वमें जिन वीर सैनिकोंने इतनी शीघ्रतासे अपने शत्रुओंके छक्के छुड़ा दिये उनके प्रति भारतवासीमात्र कृतज्ञता प्रकट करते और अपने ऐसे वीरोंके लिये गर्व अनुभव करते हैं। यह और भी प्रसन्नताकी बात है कि निजामके आत्मसमर्पणके पहले जेनरल राजेंद्र सिंहकी सेनाकी एक मुसलिम पलटनने प्रभानी जिलेके इंगोली नगरपर अधिकार किया था। हमारा स्पष्ट मत यह है कि हमारी सेनाओं और नेहरू-सरकारको हैदराबादमें जो असाधारण विजय प्राप्त हुई है, वह केवल निजाम और उसकी तानाशाहीपर ही नहीं, बल्कि उन सभी दकियानूसी शक्तियोंके ऊपर है, जिनके फेरमें पड़कर निजाम अपने वास्तविक रूपको एकदम भूल बैठा था। निजामके ऊपर सबसे बड़ा प्रेत जो सवार था, वह पाकिस्तानका था। उसके प्रधान जिन्ना मियांने जो प्रारंभमें इस बातपर बेहद जोर दिया था कि देशी राज्यके अधिपतिको ही यह निश्चय करनेका अधिकार है कि उसका राज्य पाकिस्तानमें सम्मिलित होगा या भारत संघमें, यह मुख्यकर निजाम हैदराबादको पाकिस्तानमें खींचनेके ही उद्देश्यसे था, क्योंकि उस समय काश्मीरके महाराजको तो वे अपनी मुट्ठीमें समझते और देखते ही थे। पाकिस्तानके दूत चर्चिलने भी जो समय समयपर निजामको भारतके विरुद्ध खड़े होनेके लिये पूरा प्रोत्साहन दिया उससे भी निजाम कुछ कम प्रभावित नहीं था। राष्ट्रसंघका दरवाजा तो चर्चिलपंथियोंके बल-बूतेपर ही

निजामने खटखटाया था। रजाकारोंकी शैतान-मंडलीपर तो निजामकी सारी आशाएं ही टिकी हुई थीं, क्योंकि रिजवी और पाकिस्तानी प्रचारकमात्र निजामको यह विश्वास दिलाये हुए थे कि भारतकी सेनाके पैर हैदराबादके भीतर पड़े नहीं कि भारतभरमें मुसलमान पंचमांगी बन सांप्रदायिक उपद्रव खड़े कर देंगे और उधरसे पाकिस्तानी सेनाएं नहीं, तो पाकिस्तानकी प्रत्यक्ष सहायता और प्रोत्साहनसे कबीली पठान भारतपर पहले धावा बोल देंगे और उनके पीछे ही पीछे अफगानिस्तान ईराक और अरबके अन्य राज्योंकी सेनाएं भारतमें आ धमकेंगी जिनके कारण भारतसंघ एकदम परेशान हो जायेगा और दिल्लीपर पाकिस्तानी या निजामी झंडा फहराने लगेगा। तब क्या इसमें भी कोई संदेह रह जाता है कि हैदराबादमें निजामकी हार होनेके साथ ही उसके सिर पर सवार इन सभी शैतानोंकी एक साथ पूरी ही हार हो गयी है? और, हम तो यह भी कहते हैं कि वह सदाके लिये।

जिस समय ये पंक्तियां लिखी जा रही हैं, केवल निजामकी ही बातें हमारे सामने हैं। निजामने यद्यपि अपनी ओरसे एक कमेटी बनानेकी बात कही है, जिसमें प्रिंस आव बरार और अपने सेनापति जेनरल एड्रूजको भी रखा है। किन्तु ये नाम हमारी सरकार और हैदराबादके कांग्रेस-नेताओंको हर्गिज स्वीकार न होंगे। फिर भी हम आशा करते हैं कि भारतको आत्मसमर्पण कर चुकनेपर निजामको हमारी सरकारके आदेशानुसार ही सब कुछ करना पड़ेगा। निजाम अपनी गद्दी बनाये रखनेके लिये संभवतः यही कहेगा कि रजाकार उसकी नहीं सुनते हैं, इसीसे वह लाचार था। पर 'मैंने माना कि तुम्हारी नहीं सुनता कोई। सुर मिलाना तुम्हें क्या फर्ज था शैतानके साथ?' यदि निजामकी यह बात मानकर उसे गद्दीपर बना रहने देंगे, तब तो कविका यह कथन ही चरितार्थ होगा न—'रातको मय पी और सुबहको तौबा कर ली। रिंदके रिंद रहे और हाथसे जन्नत न गयी।' देखते हैं कि हैदराबादकी रियासती कांग्रेसकी युद्ध-समितिने गत रविवारको एक प्रस्ताव पास कर यह मांग की है कि 'निजामको गद्दीसे हटा देना चाहिये और राज्यके भीतर पूर्ण लोकतंत्री शासन स्थापित किया जाना चाहिये।' हमारी सरकारने अपना लक्ष्य स्पष्ट शब्दोंमें घोषित कर ही रखा है, इसलिये हैदराबादके संबंधमें वह जो भी व्यवस्था करेगी, उससे सभीको संतोष होगा इसमें कोई संदेह नहीं।

अत्यधिक सस्ती कीमतों में

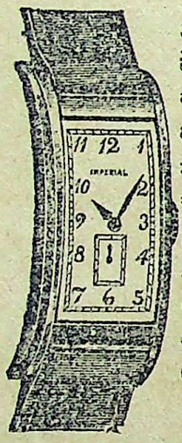

ऊंचे दर्जे की ठीक समय देने वाली, आधुनिक आकार की घड़ियां। प्रत्येक ड़ी की गारण्टी २ साल। गोल या चौकोर आकार की क्रोमियम केस १८), सुपीरियर २०), बेस्ट २२), सेंटर सेकंड २४) रेक्टेंगलर क्रोमियम केस ४०), १५ जूवेल ६०) रोल्ड गोल्ड ५५), १५ जूवेलकी ८०)। डाकखर्च माफ।

प्रेमशङ्कर एण्ड कं०
(V.C.) एशबाग, लखनऊ।

काफू (रजि०)
हैजे
का रामबाण दवा है
डाबर लिमिटेड, कल.

अत्यन्त सस्तेपर एक सीरे उपाय
आसेवा
१८६६
नीलगिरि तेल
प्रो. सांडालेकर बंधु बम्बई ४.

सावधान:—
हैजा का प्रतिकार
"कर्पूरारिष्ट"
एक मात्र महौषध
१ शीशी १) डाक मा० ।।≡)
कविराज
एन० एन० सेन एण्ड कं० लि०
१८।१ लोअर चितपुर रोड, कलकत्ता।

समयका सदुपयोग

श्री [illegible]दित मिश्र

शाश्वत, सनातन, आर्य-वैदिक धर्म के मानने वालोंके लिए सुख-सामग्री जुटाने में ऋषियोंने जो काम किये वह कई युग बीतने पर भी भुलाने योग्य नहीं हैं। दैनिक जीवन कैसे बिताना चाहिए, मानवताका उच्चादर्श कैसे प्राप्त होगा, मंगलमय वातावरण कैसे बनाया जा सकता है, इत्यादि बातोंका उत्तर वैदिक ग्रन्थों को खोल कर देख लीजिए। यह रामनवमी है, यह दशहरा है, आज नागपंचमी है, आज दीपावलीका पर्व है। इस तरहके पर्व, उत्सवकी रचना इसी आधार पर हुई है कि मानव समाज, आर्य-वंश, हिन्दू जनता सुखी रहे, आनन्द उपभोग करे। समयके अनुसार विधि- विधानका आयोजन महर्षियोंने बनाया। वही अब तक चला आ रहा है। लक्ष्मी-पूजन कीजिये तब लक्ष्मी रहेंगी। अनादर करनेसे, उनका अपव्यय करने से घर को अशुद्ध और अमंगलमय रखने से लक्ष्मी घरमें आयेंगी नहीं और यदि आ भी गयीं तो देखते देखते चली जायंगी। उनकी पूजा ही उनके रखनेकी विधि है। लक्ष्मीको पसन्द नहीं। एक ही बात ठीक है। उनका आराधन पूजन, स्तुति उनको घरमें रहनेके लिए बाध्य करेगी। अहंकार, अज्ञान एवं मूढ़ताके वश मनुष्य लक्ष्मीका दर्शन तक नहीं पाता। व्यक्तिया जाति किसीपर जब वे रूठ जाती हैं तो मुड़कर नहीं देखतीं। करोड़पति, भिक्षुक बन जाता है और गली-गलीका भिखारी लक्ष्मीकी कृपासे राजपद-प्राप्त कर लेता है। दान,योग,नाश तीन अवस्थाओंका ध्यान रखना और उन अवस्थाओंकी प्राप्ति पर संभलना लक्ष्मी-पूजन है।

सुन्दर तन परिष्कृत बुद्धि पवित्र कुटुम्ब और मंगलमुखी लक्ष्मी जिस घरमें हों फिर वहां क्या चाहिए। ऐसी दशा मनुष्य जीवनमें अनेक जनोंको प्राप्त होती है, पर समयका दुरुपयोग करने से उलट फेर हो जाना अवश्यम्भावी है।

प्रलोभन, कुत्सित मनोवृत्ति, एवंकुसंगति मनुष्यके विचारों एवं उसकी उन्नतिके पूरे बाधक हैं। लोगोंके मुंहसे यह सुनने में आता है कि बापके धनको बेटेने मिट्टीमें मिला दिया। यह बात सब जगह लागू नहीं होती। दरिद्र बापका बेटा धनी और धनीके लड़के अति धनी होते देखे जाते हैं। जिस बापने अपने पुत्रको लक्ष्मीपूजनकी विधि बतलायी है, दीपावलीके दीपक सजानेका ढंग बतलाया है, उसके लड़के दरिद्र कैसे होंगे? उदारता, सहृदयता, सुजनता इत्यादि गुण लक्ष्मीपूजनके अंग हैं। मक्कारी, मलिनता, मत्सरता इत्यादि अवगुण 'लक्ष्मी' का अनादर करते हैं।

सुरवर-नगरकी महिमा बहुत है। बैकुंठकी आकांक्षा सबको है, क्योंकि वहां लक्ष्मीपति विराजमान हैं। चाणक्यके इस श्लोक पर ध्यान दीजिये।

यदि रामा यदि चरमा,
यदि तनयो विनय गुणोपेतः।
तनयात्तनयोत्पत्तिः,
सुरवर नगरे किमाधिक्यम्॥

सुरवर नगरमें भी वह बात नहीं है जो यहां है। वह कौन-कौन चीजें यहां हों कि बैकुंठ भी हमारी सराहना करे। हमारे घरमें देवी हों, लक्ष्मी हों, लड़के सुशील आज्ञाकारी हों-नातीका कर्ण मधुर शब्द सुननेका सौभाग्य प्राप्त हो-बस इतनी ही चीजें जहां हों वहीं बैकुंठ क्या बैकुंठसे बढ़ कर आनन्द है।

विचार विभिन्नता, एकान्त स्वार्थ इस समय कौटुम्बिक सुखमें बड़ा बाधक हो रहा है। समयकी गतिका विरोध करने वाले कोई विरले ही जीव होते हैं। अधिकांश लोग तो समयके प्रवाह में बह जाते हैं।

एक एक क्षण जीवनमें अमूल्य है। समयकी रक्षा करनेवाले लक्ष्मीपात्र हैं। समयका दुरुपयोग करनेवाले परम दरिद्र और अत्यन्त मूर्ख हैं। हमको इस जीवनमें इतने अमूल्य अवसर मिलते हैं, जिनकी गिनती नहीं हो सकती, पर हम अपनी असावधानता, प्रमाद और अज्ञानतावश उनको खो देते हैं। हम अपने ही कर्मसे दुःख उठाते हैं। रोगी निर्बल दरिद्र हम स्वयं होते हैं। हमको उस सिपाहीसे विशेष सावधान रहनेकी जरूरत है—जिसके सामने से गोली आ रही हो और युद्ध स्थलमें खड़ा हो।

यह संसार समर-भूमि है। हम कालके वश में हैं। यदि हम से चूक हुई तो मृत्युके हम शिकार हुए। समय चूकना मृत्यु और समयका सदुपयोग अमरता है। भगवान करे, हम अपने समयको भले कामोंमें लगायें और आनवाली दीपावली, विजयादशमी-लक्ष्मी पूजाको सानन्द मनायें।

रियायती दामोंपर

उच्चतम क्वालिटीकी लीवर घड़ियां

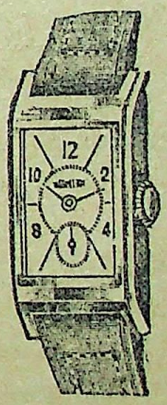

अत्यधिक सस्ती कीमतों पर स्विट्जरलैंडकी बनी हुई, नई डिजाइन की निहायत सुन्दर ठीक समय देनेवाली। हर घड़ी की गारंटी साढ़े तीन साल। क्रोमियम केस की गोल या चौकोर १८) सुपीरियर फैंसी डायलकी २०) बेस्ट सेन्टर सेकन्ड गोल २४)। रेक्टेंगुलर और टोनियो आकार की चित्र जैसी घड़ियां उज्वल क्रोमियम केसकी, ५ ज्वेल ३७) रोल्ड गोल्ड ५ ज्वेल की ५०) बेस्ट क्रोमियम केस ४२ रोल्ड गोल्ड ५०) क्रोमियम केस १५ ज्वेल ६५)। फ्लैट शेप ४०) रोल्ड गोल्ड ६०) बेस्ट टोनियो शेपकी ७८) पैकिंग पोस्टेज माफ। हर घड़ीके साथ एक फीता फैंसी डिजाइन का दिया जाता है।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V. C.)
एशबाग रोड लखनऊ

Regd. No. C 2229.

T. B. "तपेदिक" रोगकी मशहूर दवा "जबरी" पर जनताका फैसला
टी. बी.

(१) श्री तोसल हुसेन रईस मो० मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जि० पंजाबाद।
(२) श्री नागेश्वर प्रसाद तिवारी स्कूल नडुगावां पो० डालटन गंज (बिहार)।
(३) ठाकुरसिंह नेपाली मु० कटेया पो० हरलखी जि० दरभंगा।
(४) श्री रामखेलावन राम, भीखूराम पो० बाजार गुसाई जि० आजमगढ़।
(५) श्री लीला धर कापरी, आर० सी० वार्ड सेनाटोरियम भवाली, जि० नैनीताल।
(६) श्री गोविन्दराव चौधरी लायबरेरियन काटन मार्केट नागपुर (सी० पी०)।

सब ही आदमियों के पत्ते ठीक हैं, जिससे भी चाहें पूछकर तसल्ली कर सकते हैं। इनके अलावा पचासों प्रशंसापत्र भारतके कोने-कोनेसे पहले भी आप देख ही चुके हैं। 'जबरी' (JABRI) के विषयमें सबका यही कहना है कि यह दवा नहीं, बल्कि रोगीको कालके गालसे बचानेवाली "ईश्वरी शक्ति" अमृत है। फिर हमने तो १० दिनके लिये परीक्षार्थ नमूना भी रख दिया है जिसमें तसल्ली हो सके। यदि आप सब तरफसे निराश हो चुके हों पो तो भी परमात्माका नाम लेकर एक बार 'जबरी' की परीक्षा करें।

T. B. तपेदिक और पुराने ज्वर के हताश रोगियों अब भी समझो
टी. बी.

अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताए क्या होत है, जब चिड़ियां च ग गई खेत। इसलिये तुरन्त आर्डर देकर रोगीकी जान बचावें। सैकड़ों डाक्टर हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। तार आदिके लिये हमारा पता केवल 'जबरी' जगाधरी लिख देना ही काफी है। तारसे यदि आर्डर दें तो पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरोंके लिये लिये जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ानेके लिये सोना, मोती, अभ्रक आदि मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रु०) नमूना १० दिनके लिये २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिनके लिये ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डरमें पत्रका हवाला तथा नं० १ या नं० २ साफ साफ लिखें। पार्सल जल्द प्राप्त करनेके लिये मूल्य मनीआर्डरसे भेजें जिसमें देर न हो।

पता—रायसाहब के. एल. शर्मा एण्ड संस, रईस एण्ड बैंकर्स (६०) 'जगाधरी' पूर्व पंजाब (E. P.)

ORIENT'S GOLDEN WATCHES

* Golden In Colour * Golden In Beaut
* Golden In Timekeeping * Golden In Pricey

Here is a splendid selection of fine watches Suitable for gents & Ladies' wear, very strong, durable & accurate Timekeepers' Swiss Made. Roskopf lever movements, fitted with 4 or 5 Jewel,, golden case, unbreakable Glass, white enamelled dials guaranteed 3 years, each with Elastic strap & velvet Box.

Gents' (11''' Size) Rs. 31/-
Ladies' (8''' Size) Rs. 39/-
Postage Rs, 1- (Free for 2 Watches)

ORIENT WATCH SYNDICATE. Sec (14) DUM DUM, (Bengal)

होमियोपैथिक दवाइयां

प्रति डाम =) =)॥ आनाहै।
हरएक बीमारियों की दवाइयां मय सैगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी
१८ नम्बर क्लाइव स्ट्रीट, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।

धवल या श्वेत कुष्ठ—जिनका ऐसा विश्वास हो कि यह रोग चंगा नहीं होता, यदि मेरे पास आयें तो उनके एक छोटे दागको मैं चंगा कर दूंगा, कोई खर्च नहीं देना पड़ेगा। बातरक्त, एक-जिमा, श्वेत कुष्ठ, पित्त और रक्तदोष जनित विविध चर्म रोगके दूर करने के लिए २० वर्षोंके अनुभवी चर्मरोग चिकित्सक पण्डित एस. शर्मा की व्यवस्था और औषधि ग्रहण करें। (समय ३-८) २६-८ हरीसन रोड, कल०।

७८ घरमतल्ला स्ट्रीट इलेक्ट्रिक इंडिया प्रेसमें गोविन्द चन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

सचित्र

विश्वामित्र

नाई को क्यों देते हैं ?

हफ्ते में छः आने तक नाई को क्या ऐसा दिखने के लिये देते हैं? यदि आप सप्ताह में सिर्फ तीन बार ही हजामत बनाते हों तो यह निश्चित है कि सात दिनों में से चार दिन आपकी दाढ़ी खुरदरी रहेगी।

...जब "सेविन ओ'क्लाक" से हजामत बनाना पैसे की बचत करना है।

जब आप प्रतिदिन स्वयं "सेविन ओ'क्लाक" ब्लेडों से हजामत बनाते हैं तो आप पांच ब्लेड के एक पैकेट के छः आने देते हैं, लेकिन वे इतने तेज़ होते हैं कि हफ्तों तक आप उनसे सफाई के साथ हजामत बना सकते हैं।

"सेविन ओ'क्लाक" ब्लेड बाजार में सर्वश्रेष्ठ हैं। वे सर्वोत्तम इस्पात के बने होते हैं और अतिरिक्त तेज़ी के लिये तीन स्तरों में बनाये जाते हैं।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

7 o'clock

SLOTTED BLADES

"सेविन ओ'क्लाक" ब्लेडस्

ब्लेड जो ज़्यादा हजामत और कम ख़र्चा देते हैं

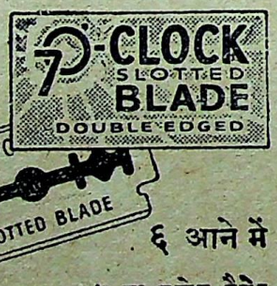

६ आने में ५ का प्रत्येक पैकेट

होमियोपैथिक दवाइयां

प्रति डाम =) =)॥ आनाहै।

हरएक बीमारियों की दवाइयां मय सेगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी

६८ नम्बर छाइब स्ट्रीट, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।

ओटो पुष्पबहार

ओटो पुष्प बहार समस्त सुगन्धियों का सम्राट है। इसको लगाते ही आपका हृदय मस्ती की लहरों में खो जायगा। जिधर से आप निकलेंगे, इसकी सुगंध पाकर सबों की नजरें आप पर केन्द्रित हो जायँगी। रूमाल में लगाने से इसकी खुशबू महीनों नहीं जाती। यह सुगंध लगा कर आप जिससे मिलेंगे वह आप से बहुत प्रभावित हो जायगा।

मूल्य प्रति शीशी ॥।) एक दर्जन का (५।) डाक खर्च १।)

एक साथ एक दर्जन शीशी मंगाने पर एक ओटो-हाथ के बटनों का सेट कम्बई लेडिज की एक चमकदार अंगूठी एक फैन्सी रूमाल, एक खूबसूरत शीशा बक्स हमारे में मुफ्त दिया जायगा।

(यह घोषणा केवल प्रचार के लिये सब से की जा रही है।)

पता—इंडिया ट्रेडिंग कम्पनी, कानपुर

नये वर्षका उपहार

केवल १६॥=)में एककलाई घड़ी

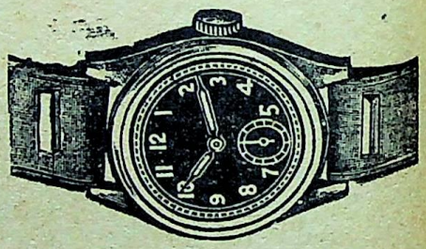

स्वीस मेड। ऊंचे दर्जेकी मशीन प्रत्येक की ३ सालकी गारन्टी चमकीला क्रोमियम केस रास्कोप १६॥=) सुपीरियर २२॥) रोल्ड गोल्ड ३ ॥) ४ जुएल बेस्ट३२।) प्लैट शेप १५ जुएल ४०) (नियन्त्रित मूल्य ४६॥) दो घड़ियां एक साथ लेनेसे एक अमेरिकन फाउन्टेन पेन मुफ्त।

यु० एस० ए० फाउन्टेन पेन गोल्ड प्लेटेड निबके साथ ३॥) सुपीरियर ४॥) बेस्ट ५॥); गोल्ड निबके साथ ८॥); सुपीरियर १०॥); बेस्ट १३॥), जर्मनमेड फाउन्टेनपेन सिलवर बाडी-२॥।; फुल, गोल्डेन बाडी ३॥); पेकिंग-पोस्टेज ॥।)। प्राइड पेन सप्लायर्स पोस्ट बाक्स नं० १७ (V.C.) कलकत्ता।

विश्वमित्र

सम्पादक—
देवदत्त मिश्र

वर्ष—३० संख्या—५४ ता० ४ फरवरी १९४८ FEBRUARY 4, 1948. मूल्य =) वार्षिक ६)

बापू के अनशन पर

प्रोफेसर —अंचल

देव ! प्रतिज्ञा देख तुम्हारी त्रिभुवन सिहर उठा है
यह कैसा विश्वास जिसे लखकर आकाश लजाया
यह कैसा संकल्प जिसे लखकर नगपति थर्राया
कैसा स्वप्न तुम्हारा जिस को लखकर जागृति हारी
यह ज्वलन्त उल्लास जिसे लखकर यौवन सकुचाया
पीड़ा—सागर मन में कैसा भीषण ज्वार उठा है
मानवता खोकर जड़ मानव निज अभिशाप बना है
फूटें घातक पाप हृदय हिंसा का ताप बना है
रक्त पी रहा है वन पशु सा फिर भाई भाईका
घर घर में पशुता का खूनी हिंस वितान तना है
भ्रान्त मनुज का सहृदयता से चिर विश्वास उठा है
आजादी मरुभूमि हो रही है जल रहा वतन है
कागज के फलों से सजता उजड़ा हुआ चमन है
सिर न कटें इसलिये देश को तुमने कटते देखा
अन्त नहीं पर प्रतिहिंसा का कैसा विकृत पतन है
कैसी भीषण आग धरा का कण कण खौल उठा है
मेघ पन्थ से आज न मानव उतर भूमि पर आता
जीवनदाता घन अंबर से अंगारे बरसाता
मानवता को तृषित चातकी एक बूंद को रोती
कौन गगन में नव स्वातीका नीरद बन कर छाता
एक जलद—भू का मन नव आशा से डोल उठा है
यह कैसा आदर्श प्राण की भेंट जिसे है प्यारी
खुली चुनौती बर्बरता को है यह लगन तुम्हारी
हिन्द महा सागर के मुख पर रहे लाज की लाली
आजादी का ताज न बन जाये तलवार दुधारी
देव ! प्रतिज्ञा देख तुम्हारी त्रिभुवन सिहर उठा है।

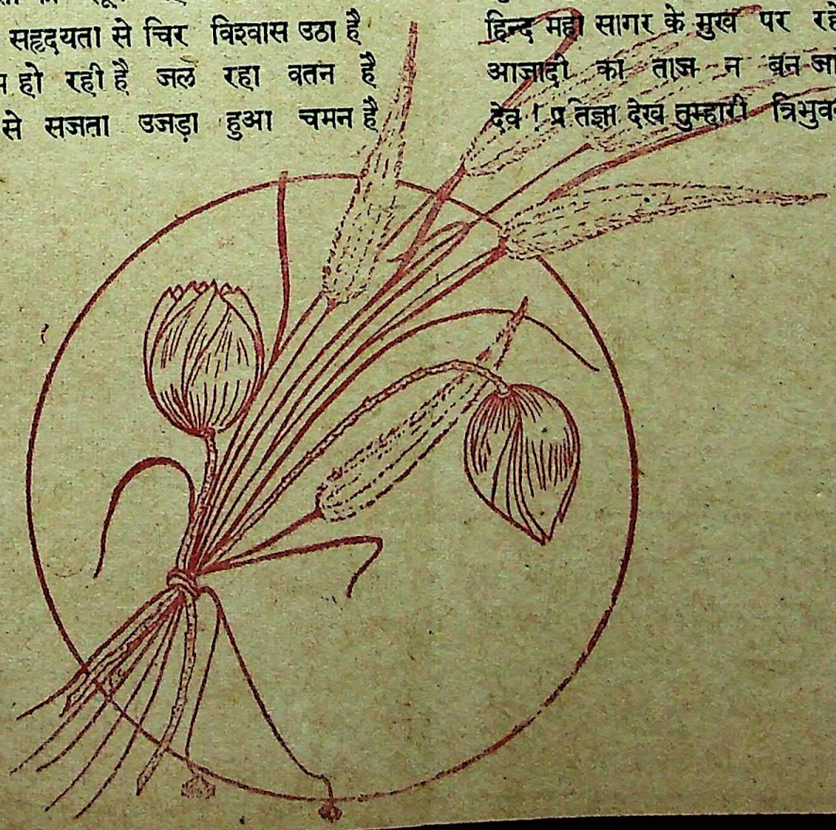

"मंगल प्रदीप"

घी के दिये जला लूं आली !!
ऊंचे धरूं गगन-दीवटपर,
नीचे सरिताके शुचि तटपर
भारत जहां सिमट हंसता है
उसी गांवके फिर पनघटपर,
जीवन-घटपर प्राण-वर्तिकाकी लौ मधुर जगा लूं आली !

दमक उठे मांका मुख-मण्डल,
चमक उठे हिमगिरिका अञ्चल,
सत-सत धाराओं में बहता
कल-कल गायें गङ्ग जमुन जल,
शुभ्र कण्ठमें मां के दीपक ज्योति माल पिन्हालूं आली !!

जगह-जगह जलते शुचि दीपक,
स्नेह-भरे हंसते मनमोहक,
ज्योति परीका नृत्य मनोहर—
गगन देखता रहता अपलक,
मुक्त हासमें शुचि प्रकाशके जगके कलुष मिटा लूं आली !

सरयू-तट लो हंसी अयोध्या,
हंसा प्रात, हंसती है सन्ध्या,
लौट राम आये भारतमें—
कहता हिमगिरि, कहती 'विन्ध्या'
पुण्य पर्वपर दिशि-दिशि दीपक बन्दनवार सजा लूं आली।

चलना सखी अभी यमुना-तट,
पथ निहारता है वंशी बट,
सघन कुञ्जमें बैठा होगा—
भारत-ब्रिजका वह बंशी-नट
मुक्त जननि जब आज हुई तब आये' खरी सुना लूं आली !

चलूं मगधसे कहूं तुम्हारा,
कहूं सुनो गङ्गाकी धारा,
आया भारत है अशोक 'पाटिली
पुत्र'ने फिर हुंकारा,
शान्ति-चक्र शोभित तिरङ्ग-ध्वज हिमगिरिपर फहरा लूं आली

पुण्य भूमि होकर स्वतन्त्र यह,
देती जगको शान्ति मन्त्र यह,
वसुधा सारी यह कुटुम्ब है—
फैले शुचितम लोकतन्त्र यह,
'देश सहोदर भ्राता जगके ! यह सन्देश सुना लूं आली।

—देवनाथ पाण्डेय 'रसाल' बी० ए०

प्रियतम-परिचय

:*:—:*:

किसीने किया प्रश्न यह आज
तुम्हारा है वह प्रियतम कौन
कि जिसके विप्रयोगमें दग्ध
तुम्हारी अन्तर्वहगी मौन
कि जिसके मिलन-पर्वकी याद
तुम्हारे जीवनमें पाथेय
कि जिससे मिलकर होना एक
तुम्हारे जप तपका है ध्येय

तुम्हें जो गया तिमिरमें छोड़
किरण-स्वामी वह निर्मम कौन
किसीने किया प्रश्न यह आज
तुम्हारा है वह प्रियतम कौन

* * *

बुद्धिने कहा, न उसके नेत्र
किन्तु वह सब कुछ सकता देख
न उसको कर सकती उद्भ्रान्त
किसी निष्ठुर विधनाकी रेख

न उसके चरण किन्तु गतिशील
रहा करता वह सबके साथ
अमर वह चिर ज्योतिर्मय देव
कोटिशः ब्रह्माण्डों का नाथ
न उसका कोई है अध्यक्ष
नियन्ता रवि-शशिका अवदात
उसीके इङ्गित से नक्षत्र
लिये मुसकाती आती रात

खिलाती उसकी ही मुसकान
पंकमें स्पर्श-सुखद जलजात
प्रकृति-बीणामें जो झङ्कार
उसीने दिया प्रथम आघात

* * *

चक्षुओं के द्वारा दो—चार
गिरा रजमें मौक्तिक अनमोल
अकिञ्चन हृदय रहा पर मौन
नहीं कुछ सका अभागा बोल

—सत्यनारायण शर्मा।

परहित बस जिनके मनमाहीं।
तिन कहं जग दुलभ कछु नाहीं ॥

विश्वमित्र

भारत अनाथ !!!

—:—:*:—:)—

यह हमारा सौभाग्य था कि हम उस युगमें पैदा हुए जिसने महात्मा गांधी जैसी विभूतिको पैदा किया। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमने अपने उस सौभाग्य पर क्रूर पदाघात किया। यह हमारा ही नहीं सम्पूर्ण संसारका दुर्भाग्य है कि विश्व-वन्द्य महात्मा गांधी एक हत्यारे मराठेकी गोलीके शिकार हुए। आज उनके इस निर्मम निधनसे हम क्षुब्ध हैं, संसार विक्षुब्ध, विस्मय—चंचल होकर हमारे साथ सहानुभूति प्रकट कर रहा है। हम शोकातुर हैं, संसार भी हमारे इस शोकमें हमें प्रबोध दे रहा है। हम किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो रहे हैं। पर, शीघ्रातिशीघ्र हमें इस दुर्बलताको दूर करना होगा। हमें दृढ़ताके साथ संकल्प और साहसके साथ, बुद्धि और विवेकके साथ अपना कर्त्तव्य स्थिर करना होगा।

हम मानते हैं कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधीको खोकर भारत आज अनाथ हो गया। भारतकी आत्मा, ज्योति, प्रकाश और आभा उनके साथ तिरोहित हो गयी है और गांधीजीको बापू कहने वाले देश, उनको महात्मा माननेवाले राष्ट्र पर आज महान उत्तरदायित्व आ गया है। आज उसके सामने कठोर अग्नि-परीक्षा है। राष्ट्रपिता जो निधि, जो विरासत छोड़ गये हैं उसकी मर्यादाकी रक्षा करनेका पवित्र उत्तरदायित्व भारतीयोंपर है। इस उत्तरदायित्वकी रक्षा करके ही हम गांधीजीको राष्ट्रपिता कहनेके योग्य अधिकारी अपनेको साबित कर सकते हैं। हम रो रोकर अपनी आंखें फोड़ सकते हैं, हम छाती पीट पीट कर शोक प्रदर्शित कर

[illegible] अधिकारी सिद्ध करनेके लिये आज हमें वज्रादपि कठोर होकर उनके बताये मार्ग पर चलनेकी आवश्यकता है। तभी हम संसारको पुष्पादपि मृदुल बना सकेंगे, तभी हम उस दुर्वृत्तकी दुरभि संधिको व्यर्थ कर सकेंगे। उस घृणित संगठनके असदुद्देश्य और दुरभिलाषाओं तथा महत्वाकांक्षाके रूपमें कुवासनाओंको विफल कर सकेंगे जो देशपर आज अत्यन्त संकीर्ण अर्थोंमें मराठा राज कायम करनेका स्वप्न देख रहा है। अतः आज हमारे शोक मनाने के दिन नहीं हैं। शोक तो संसार मना रहा है, हमें उस शोकपर विजय प्राप्त करके उन दुर्वृत्त शक्तियोंपर विजय प्राप्त करना है, जो हमारे बापूके जीवन व्यापी कार्यकी महानता, उनके आदर्श और सिद्धान्तोंकी व्यापकतापर संकीर्णताका दुरूह अन्धकार-पूर्ण पर्दा डाल कर हमारी पवित्रता और महानताको नष्ट कर डालनेके लिये उद्यत हैं। महात्मा गांधीका यह बलिदान, उनकी अपने आदर्शों सत्य और मानव प्रेमके लिये यह कुर्बानी भी यदि आज भारतीयों के हृदयमें वह शक्ति, वह शुद्धता और वह आत्मसंवरण नहीं ला सकती जो हमें उनके बताये मार्गपर चलनेकी दिव्य प्रेरणा, साहस और गति प्रदान कर सकें तो कहना होगा कि हम संसारके सामने मुंह दिखाने लायक न रहेंगे, हम यह सिद्ध कर देंगे कि हम लायक बापके नालायक बेटे हैं और ऐसा करके हम सिर्फ अपना ही नहीं अपितु उस दिव्यात्माका भी महत्व संसारकी दृष्टिमें लघु करेंगे। इसीसे हम कहते हैं कि आज हम कठोर परीक्षासे होकर गुजर रहे हैं, आज हमें वज्रादपि कठोर होकर पहले अपने भीतर घुसे बैठे हुए शत्रु—मायामोह, लोभ-लिप्साजनित दुर्बलता, अनैतिकता अनाचार—पर निर्मम प्रहार करना होगा। यदि हम यह नहीं कर सकते तो हम गांधीजीको बापू कहकर उनका सम्मान नहीं, असम्मान बढ़ाते हैं। प्रकारान्तरसे यह सिद्ध करते हैं कि उसकी महत्ता इतनी ही थी कि आपने निकटस्थ व्यक्तियोंका भी वह हृदय परिवर्तन नहीं करा सका, उनकी मक्कारी और पैशाचिकता नहीं दूर कर सका। इसलिये यदि हममें जरा भी सत्यका अंश है, असलियत का घमण्ड है तो जो काम हमने उनके जीवित रहते नहीं किया, उसे अब करके दिखाना चाहिये, तभी हम उनकी दिवंगत आत्माको शान्ति पहुंचा सकते हैं अन्यथा अपना जीवन व्यर्थ समझ उनको देवलोक में भी अशान्ति ही मिलेगी। जीवन भर तो हम उनको शान्ति प्रदान नहीं कर सके क्योंकि मक्कारी किसी साधु सन्तके हृदय को सन्तुष्ट नहीं करती, कमसे कम दिवंगत आत्माको शान्ति मिले, यह सोच कर हमें चलना चाहिये और यह आरम्भ हमें अपनेहीसे करना होगा। यदि हम अपने भीतरके शत्रुओंपर विजय नहीं प्राप्त कर सकेंगे तो समयपर बाहरी शत्रुओं के साथ मिलकर हमारा समूल विनाश कर डालेंगे, यह सुनिश्चित है।

गांधीजी पिछले २७ वर्षोंसे जो हमें सिखाते रहे हैं यदि हम आज भी उस रास्तेपर नहीं चल सकते तो इससे बढ़कर हमारी नालायकीका सबूत दूसरा नहीं हो सकता। साधारण जीवनमें देखा गया है कि पिताके वर्तमान रहते घोर उच्छृंखलता और गैर जिम्मेदारीके साथ रहने वाला व्यक्ति भी उनकी मृत्युके बाद अपने उत्तरदायित्वको समझता है और ठीक रास्तेपर आकर वह उनकी कीर्तिको हर तरह सुरक्षित, सुमर्यादित रखता है और उसमें वृद्धि करता है। तभी दुनिया उसे सपूत कहती है। अनाथ और कुपूत भारतको यदि आज सुपूत बनना है, अपने राष्ट्र-पिताकी मर्यादाकी रक्षा करनी है तो हमें उनकी शिक्षाको ग्रहण करके कोटि-कोटि भारतवासियोंके हितोंकी ईमानदारीके साथ सेवा करनेके लिये हमें अपने व्यक्तिगत स्वार्थों और महत्वाकांक्षाओंको दबाना होगा। गांधीजीकी कठोर तपस्या और साधनाके फलस्वरूप जो स्वतंत्रता हमें मिली है वह कहीं हमारी अयोग्यतासे उनके साथ ही विदा न हो जाये, इस आशंकाको हम अपने शुद्ध निर्मल आचरण द्वारा ही व्यर्थ कर सकते हैं। यह तभी हो सकता है, जब हम गांधीजीके बताये मार्गपर चलें। उन्होंने हमें बताया है कि अच्छे उद्देश्योंकी पूर्तिके साधन भी अच्छे होने चाहिये। जो साधन स्वयं

महापुरुषकी अन्तिम यात्रा

असत हैं, बुरे हैं उनके द्वारा अपने लक्ष्य तक शीघ्रतासे पहुंचनेके प्रलोभनको संवरण करनेका अभ्यास हमें करना चाहिये। हमें याद रखना होगा कि लोभका संवरण न कर सकनेके कारण ही, इस कुत्सित लोभके सामने आत्मसमर्पण कर देनेके कारण ही हमने महात्माजीको खोया है। उनको मारनेवाला एक व्यक्ति नहीं है। उसके पीछे उस भारत व्यापी संगठनकी शक्ति और प्रेरणा है जिसे हम हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघके नामसे जानते हैं। इन संगठनोंको शक्तिशाली बनानेवाला कौन है? हम और आप? किसी धर्म विशेष, या जाति विशेषका नहीं भारतीय राज्यकी प्रतिष्ठाका आदर्श सामने रखकर राष्ट्रका सूत्र संचालन करनेवाले नेताओंमें गांधीजी सर्वाग्रणी थे, अतः हिन्दू राष्ट्र और हिंदू राज्य स्थापित करनेवालोंका प्रथम प्रहार उनपर हुआ। किन्तु यह प्रहार अन्तिम नहीं है। विशुद्ध भारतीय राज्यकी योजना लेकर चलनेवाले जितने हमारे नेता हैं उन सबकी नृशंस हत्या की गुप्त योजना बन चुकी है। क्या हम इस योजनाको अपने आचरणसे सफल होने देंगे? यदि इतनी बड़ी अतुलनीय दुर्घटनाके बाद भी "हिन्दू राष्ट्रीयता" का समर्थन करते रहेंगे तो हिन्दू राज्य तो भारतमें होनेसे रहा फिर वही होगा जो जयचन्दोंके कामोंका परिणम हुआ करता है। संसारके सर्वश्रेष्ठ, बेजोड़ महामानवकी हत्याके अपराधमें उन लोगोंका भी हिस्सा है जो कांग्रेसमैन होकर भी भारतीय राज्यके बदले हिंदू राज्यका स्वप्न ही नहीं देखते थे बल्कि गांधी औरजवाहरके इस नेतृत्वको शिथिल और निष्प्राण करनेके लिये देशकी प्रतिक्रियाशील शक्तियोंको धन और जन दोनों देकर भीतर ही भीतर प्रोत्साहन दिया करते थे। देशकी दृष्टि यदि एक हत्यारेकी ही ओर सीमित और केंद्रित रहेगी तो असली अपराधी बेदाग निकल जायंगे और हत्याका निमित्त मात्र बननेवाले 'पागल' को आप फांसीके तख्तेपर लटका दें या उसे अपने पापोंके पश्चात्तापमें जलनेके लिये मुक्त कर दें, हत्याके पीछे छिपा हुआ रहस्य रहस्य ही बना रह जायेगा। तो,क्या हम आशा करें कि गांधी जी जैसे महामानवका खून राष्ट्रीयताकी सफेद चादरके नीचे पापों और कुकर्मोंका काला लबादा ओढ़े घूमनेवाले लोगोंका दामन पाक करेगा?

बहावलपुरमें कत्लेआम—

भारतीय पार्लमेण्टका बजट अधिवेशन गत सप्ताह २८ फरवरीको श्री मावलङ्करकी अध्यक्षतामें आरम्भ होनेपर शरणार्थी सहायता सचिव श्री० के० सी नियोगीने पूछे गये प्रश्नोंके उत्तरमें जिन बातोंपर प्रकाश डाला है वे अत्यन्त भयावह और रोमांचकारी हैं। आपने बताया कि बहावलपुरमें अब भी प्रायः ७० हजार हिन्दू और सिख हैं, प्रायः डेढ़ लाख भारत आ चुके हैं पर प्रायः एक लाखका कोई पता नहीं या तो वे मार डाले गये या जबर्दस्ती मुसलमान बना लिये गये। श्री नियोगीने यह भी बताया कि बहावलपुरमें रह गये हिंदू और सिख भारत आनेको आतुर हैं लेकिन उनको राज्यके अधिकारी आनेकी सुविधाएं देने-

को तैयार नहीं है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि बहावलपुरके अधिकारी नहीं चाहते कि कोई हिंदू या सिख वहांसे बचकर निकल जाये। हम यह जानना चाहते हैं कि क्या भारत सरकार जिन एक लाख हिंदू सिखोंका पता नहीं लगता और जो अभी तक वहां रह गये हैं उनके सम्बंधमें केवल कागजी कार्यवाही करके ही अपने कर्त्तव्यकी इति श्री समझती है? हम यह भी जानना चाहते हैं कि इसी तरहकी नृशंसताओंके लिये नाजियों और जापानियोंके विरुद्ध मामला चलाकर उनको दण्ड दिलाने वाले संसारके वे सभ्य चार महान राष्ट्र आज पाकिस्तानमें नाजी नृशंसताको लज्जित करने वाले घृणित काण्ड देखकर भी चुप क्यों हैं?

पाकिस्तानमें हिन्दू—

सिन्ध, पश्चिम पंजाब और उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्तमें हिन्दुओं और सिखोंके साथ दिन प्रति दिन होनेवाले अन्यायों और अत्याचारोंसे तो पाठक भली भांति परिचित हैं और गत सप्ताह भारतकी पार्लमेण्टमें इन काण्डोंपर जो प्रकाश डाला गया है उससे पश्चिम पाकिस्तानकी सच्ची तसवीर हमारे सामने आ गयी है, किन्तु पूर्वी पाकिस्तानके सम्बन्धमें साधारण पाठक अपेक्षाकृत कम परिचित हैं। पाकिस्तान विधान परिषदमें एवं पूर्व बंगाल व्यवस्थापिका परिषदमें विरोधी दलका नेतृत्व करनेवाले श्री किरण शङ्कर रायने अभी उस दिन जो वक्तव्य दिया है उससे भलीभांति समझा जा सकता है कि पूर्व पाकिस्तानमें हिन्दू किस तरह रह रहे हैं। कुछ दिन पहले पूर्व बंगालके प्रधान मन्त्रीने संसारके सामने अपनी शराफतका ढिंढोरा पीटनेके लिये एक वक्तव्य देकर यह बतानेकी चेष्टा की थी कि हमारे राज्यमें हिन्दू परम सुखी हैं और उनका यह विश्वास है कि निजामुद्दीनकी छत्र छायामें वे निर्भय रह सकते हैं। प्रचारकी दृष्टिसे इस तरहके वक्तव्योंका महत्व स्पष्ट है। पर स्थिति जैसी ख्वाजा साहब बताते हैं है नहीं। पूर्व बंगालमें हिन्दुओंकी स्थिति वैसी ही है "जिमि दशनन महं जीभ विचारी।" पूर्व बंगालमें इस समय कहीं झगड़ा या उपद्रव नहीं है इसका कारण यह है कि "किसी हिन्दूको हिम्मत नहीं होती कि वह मुसलमानकी ज्यादतिके खिलाफ जबान खोले क्योंकि वह जानता है कि कि उसकी सुनवाई तो होगी नहीं उलटे उसका और भी बुरा हाल होगा। आज वहां कायदे आजम जिन्ना फण्ड वहांके हिन्दुओंके लिये औरंगजेबी जिजिया बन गया है। हिन्दुओंके हथियारोंके लैसेंस रद्द कर दिये गये हैं। हिन्दुओंको अपने अभाव अभियोग अन्य अधिकारियोंकी कौन कहे प्रधान मन्त्रीके सामने भी नहीं रखने दिया जाता। यह बात नहीं है कि ख्वाजा साहबको इस बातका इल्म नहीं है। हिन्दुओंकी खड़ी फसलें मुसलमानोंने काट ली हैं, बङ्गालके बाहरसे आये हुए मुसलमानोंको बसानेके लिये नगरों और गांवोंमें भी हिन्दुओंके मकान खाली करा लिये गये हैं। नारीकी इज्जत मन चले मुसलमानोंके लिये खेलकी चीज हो गयी है। पाकिस्तानमें साधारण हिन्दूकी बातपर कितना ध्यान दिया जाता होगा यह इसीसे समझा जा सकता है कि प्रधान मन्त्रीकी सेवामें किरण बाबूने पिछले दो महीनेके भीतर कई पत्र भेजे पर उनका जवाब देना तो दूर उनकी पहुंचकी स्वीकृति भी नहीं दी गयी।

सिक्यूरिटी कौंसिल—

जो होनेवाली घटनाओं और वास्तविकताओंपर केवल अपने निजी स्वार्थोंको दृष्टिगत रख कर विचार करता है, वह हमारी या किसीकी समस्या हल नहीं कर सकता। उससे यह आशा नहीं की जा सकती कि भविष्य निर्माणके लिये वह न्याय के सिद्धान्तोंपर चलेगा। मौजूदा संयुक्त राष्ट्रसंघके सम्बन्धमें भी यही बात कही जा सकती है। अबतक उसके सामने जितनी समस्याएं समाधानके लिये उपस्थित की गयी हैं किसीमें दो टूक न्याय नहीं किया गया। फलतः वह किसी मामलेमें अपनी प्रतिष्ठा नहीं रख सका। यूनान, हिन्देशिया, हिन्दचीनके सम्बन्धमें सिक्यूरिटी कौंसिलके फैसलोंने स्थितिको अधिकतर जटिल बना दिया है। इस समय संयुक्तराष्ट्र संघकी सुरक्षा कौंसिलके सामने काश्मीरके मामलेपर विचार हो रहा है। कौंसिलके अध्यक्ष मो० लाङ्गे नहो कहते हैं कि यह समस्या कौंसिलके सामने इतनी कठिनाइयां उपस्थित करती है कि हम निरुत्साहित हो रहे हैं। कठिनाइयां न होतीं तो समस्या कौंसिलके सामने रखी ही क्यों जाती। हमें देखना चाहिये कि कौंसिलने अबतक क्या किया है। कौंसिलने युद्ध बन्द करनेका आदेश जारी किया है और एक कमीशनकी नियुक्ति की है, जो घटनास्थलपर जाकर मामलेकी जांच करके अपना फैसला देगा। इस बातसे इनकार नहीं किया जा सकता कि सबसे पहले आवश्यकता है युद्ध बन्द करने की। युद्ध बन्द होनेपर ही अन्य प्रश्नोंपर विचार करनेके अनुकूल वातावरण की सृष्टि की जा सकती है। पाकिस्तान यह नहीं चाहता और वह क्यों चाहे!? वह तो येनकेन प्रकारेण काश्मीरको चाहता है, इसीसे उसके इशारे और सहायतासे काश्मीरमें युद्ध हो रहा है। वह युद्ध बन्द करनेको तभी राजी होगा जब उसे विश्वास हो जायेगा कि काश्मीर पाकिस्तानका होने जा रहा है। आश्चर्यकी बात यह है कि ब्रिटेन भी इस बातका समर्थन कर रहा है कि पहले जनमत गणनाके प्रश्नपर विचार हो जाना चाहिये। सिक्यूरिटी कौंसिलका यह रवैया देखनेके बाद भारत सरकारको भलीभांति महसूस हो गया कि वह न्याय पानेकी आशा नहीं है, इसलिये अन्तमें उसे अपना मामला, जो पाकिस्तानके खिलाफ दायर किया गया था, वापस ले लेनेका फैसला करना पड़ा।

—*—

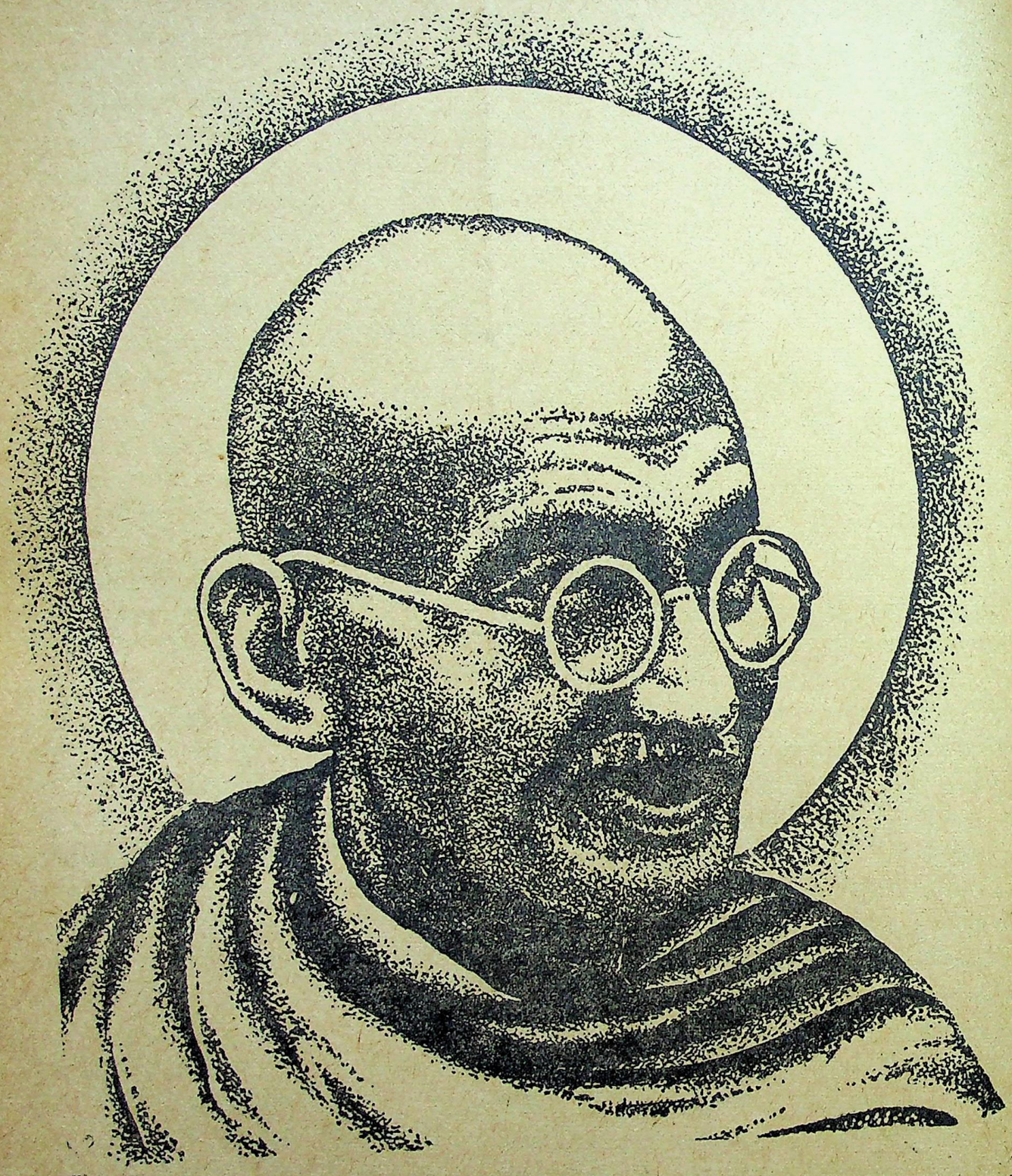

मर कर भी अमर महात्मा गांधी

गांधीजी मराठ हत्यारेकी गोलीसे मारे गये

गत शुक्रवार ३० जनवरीको महात्मा गांधी संध्याको साढ़े पांच बजे मर गये। प्रार्थना सभामें जाते समय नाथ राम (नारायण) विनायक गोडसे नामक एक मराठेने अत्यंत निकटसे घुटनेके बल बैठ गांधीजीपर लगातार तीन फायर किये। हत्यारा पूना हिंदू महासभाका मंत्री और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघका एक मुख्य कार्यकर्त्ता बताया जाता है।

हमेशाकी भांति गांधीजी अपनी दौहित्री और आभा गांधीके कंधोंपर हाथ रखे हुए सभास्थलको जा रहे थे जब यह दुर्घटना हुई। सभामंचपर चढ़कर जिस समय वे उपस्थितोंका अभिवादन हाथ जोड़ खड़े होकर स्वीकार कर रहे थे उसी समय खाकी पोशाकमें हत्यारा भीड़को चीरता हुआ आया और इस तरह घुटनेके बल झुका कि मानो वह उनकी चरण धूलि लेनेका प्रयत्न कर रहा हो और उसी समय उसने फौरन पिस्तौल निकालकर गांधीजीपर सीधे तीन शाट दागे। एक गोली उनकी छातीमें दो नाभि स्थलपर लगीं। गांधीजी धड़ामसे गिरे। उनका चश्मा और चप्पल क्या हुए पता नहीं लगा। पहली गोली लगते ही हा! राम! हा! राम! गांधीजीकेमुंहसे निकला और वे धराशायी हो गये। वहांसे मूर्छितावस्थामें उनको उठाकर घर ले गये। उस समय उनकी सांस चल रही थी पर उनकी आंख बन्द थीं। जिस समय गोलियां चल रही थी जनताने भयंकर चीत्कार किया और हत्यारेपर लोग टूट पड़े। उसने जिस पिस्तौलसे गोली चलायी वह फ्रांसीसी है और नौनली का है।

भारतीय विमान वाहिनीके सरजेण्ट डी० आर० सिंहने सबसे पहले पहुंचकर हत्यारेको पकड़ा और उसके हाथसे पिस्तौल छीना। इस चश्मदीदने यह बयान दिया है कि गोली लगते ही गांधीजीने अंतिम बिदाकी सूचना देते हुए दोनों हाथ जोड़े और धम्मसे गिर पड़े। मैं हत्यारेको गोली मार देना चाहता था पर पुलिसने उसे अपने कब्जेमें कर लिया।

ऐसा कोइ देश या राष्ट्र नहीं है जिसने गांधीजीके निधनपर शोक संदेश न भेजा हो और शोक न मनाया हो। ब्रिटिश सम्राट, प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन, मि० जिन्ना मि० एटली, मि० चर्चिल किसको किसको गिनायें। सभी देशोंने अपने झण्डे गांधीके सम्मानमें झुका दिये।

जवाहर बेहाल हैं

दुख किसको नहीं है लेकिन जवाहर लाल नेहरूको जिसने देखा बेहाल देखा। वे कहते हैं "हमारे जीवनकालमें इससे बड़ी अग्नि परीक्षाका समय दूसरा नहीं आया। हमें अपने आचरणसे यह सिद्ध करना है कि हम उस महान मानवके स्वराष्ट्रीय होनेके योग्य हैं जो अब हमारे बीचमें नहीं रह गया। "हमारे जीवनका प्रकाश चला गया और चारों तरफ अंधकार ही अंधकार है।"

अंतिम संस्कार

शनिवारको जमुना के किनारे राजघाटपर गांधीजीका दाह संस्कार वैदिक ढंगसे किया गया। राष्ट्रपिताके अंतिम दर्शनके लिये पांच मील लम्बे जुलूसमें दस लाखसे अधिक आदमी थे। पूर्ण राजकीय सम्मानके साथ उनकी अन्त्येष्टि क्रिया की गयी। उनकी अर्थी जो फौजी ट्रकपर रखी गयी थी। स्थल, गगन और जल वाहिनीके अफसरों द्वारा खींची गयी। पण्डित नेहरू, सर्दार पटेल, राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद अन्य मिनिस्टर तथा कितने ही राजेशवके साथ-साथ चल रहे थे। लार्ड मौण्ट बेटेन अपनी स्त्री और बेटियों साथ बिड़ला भवन पहुंचे वे शोक चिन्ह धारण किये हुए थे।

शेष १० वें पृष्ठ पर

खांसी से आपका फेफड़ा खराब हो सकता है। कीटाणु नाशक स्वासदायक पेप्स की टिकिया के सेवनसे ही निरापद रह सकते हैं।

मुंहमें घुलने पर पेप्ससे औषधयुक्त भाप निकलती है जो स्वांस के साथ फेफड़े तक पहुंच जाती है। खांसी दूर हो जाती है सूजा हुई झिल्लियों को आराम पहुंचाता है।

सर्दी, गलेके घाव, इनफ्लुएंजा ब्रांकाइटीज, छाती और फेफड़ेको शिकायत भी दूर हो जाता है।

लीजिये

PEPS

कीटाणु नाशक, स्वास्थदायक टिकिया

सभी औषधि विक्रेताओंसे प्राप्त

एजेण्टसः—स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट एण्ड कं० लि०,

इण्डाली, कलकत्ता

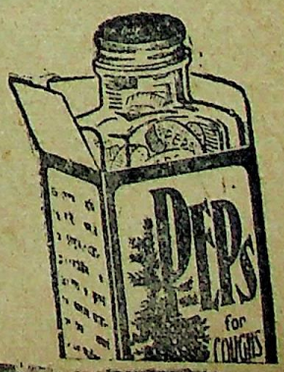

बापू

श्री विजय कुमार मुंशी

गांधीजीका जन्म २ अक्तूबर १८६९ के दिवस पोर बन्दरमें हुआ था। साधारण कद, गुजराती दुर्बल शरीर, लम्बे-लम्बे हाथ, उन्नत ललाट और गम्भीर मुस्कान—ये हैं बापू!

सितम्बर १८८७ में वे अध्ययनके लिये लन्दन रवाना हुए। चार वर्षमें अंग्रेजी वेशभूषासे सुसज्जित शरीर लिये वे भारत आये और राजकोटमें असफल वकालत करने लगे। एक महत्वपूर्ण मुकदमेमें वे दक्षिण अफ्रीका गये जहां सेवा और त्यागने उन्हें गले लगाया।

१८९६ में वे फिर जन्मभूमि लौट आये। १९२० में उन्होंने असहयोग आन्दोलनका सूत्रपात किया। विदेशी बस्तुओंको जनताने ठुकराकर उनका सच्चा मोल किया। छः मासके लिये गांधीजी यरवदा-जेलके अतिथि बना लिये गये।

जनता जागी; जनमत संगठित हुआ। सन् १९३० के बारह मार्चको साबरमतीका सन्त समुद्रकी ओर गतिमान हुआ; उसके पग-तलकी प्रत्येक चाप सात समुद्रकी ओर गतिमान हुआ; उसके पग-तलकी प्रत्येक चाप सात समुद्र पार करके यूरपके कानोंमें प्रतिध्वनित हो उठी। ६ अप्रैलको इस महानायकने समुद्र तीरे नमकका एक ढेला उठाया, शक्तियां कांप उठीं, जेलोंमें जवानी जाग उठी।

सात समुद्र पार गोलमेज कान्फ्रेंसका अभिनय हुआ। भारतीय जनताका हृदय ले बापू लन्दन गये। वैभव-विलास, चमक दमक और कृत्रिमताका दीवाना लन्दन उन्हें देख स्तम्भित हो उठा।

बापूके नयनोंमें भारतका भाग्य झांकता था। प्रताड़ित, शोषित और प्रपीड़ित मानवता उनसे विश्वासका वरदान पा मुस्करा उठती थी।

बापूको पाकर मां भारती धन्य हुई। बापू भारतका स्पदन थे। बापू भारतको जीवन थे।

उनके अनुयायी असंख्य हैं और उनका कुटुम्ब विश्व है।

विश्व वंद्य आध्यात्म-साधकः गांधी युग—पुरुष महात्मा गांधी युग-वाहक तथा विश्व बंधुत्वके एक मात्र प्रतीक थे। उनमें गीताका सच्चा कर्मयोगका आदर्श व्याप्त था। उनकी वाणीमें मानवताकी पुकार मुखरित हुई, उनकी मुस्कानमें जगको हर्षित जीवनका संदेश मुस्कराता नजर आया है। समस्त शोषित मानवताने उनसे दीक्षा ले, गति और जीवन प्राप्त किया है। वैभव-विलासके इस युगमें, संघर्ष और यंत्र-संचालित इस युगमें, बापू सत्य और अहिंसाके उच्चतम आदर्श के एकमात्र स्रोत थे। प्रखर आलोचनाकी ज्वालाओंमें उनके विशाल व्यक्तित्वने तेजोमय निखार पाया था।

राजनीति बर्त्तमान की चेरी है। बापू भावीके सुदूर प्रभात की उज्ज्वल आभासे राष्ट्र-जीवनको उद्भासित करना चाहते थे। वे वर्त्तमानके अंतरसे भावीका सुदृढ़ निर्माण करते रहे।

जब भारतकी गुलामीकी जंजीरें खनखना रही थीं, देश अपने 'स्वदेश' को भूल गया था, कृत्रिम यूरुपीय-जीवनकी भौतिक भीषणता राष्ट्रके रग-रगमें समाने जा रही थी, बापू भूले भारतको विगत-भारतके कर्मयोगके आदर्शकी याद दिलाई, बापूने आध्यात्मके चिरंतन प्रकाश के सम्मुख भौतिक जीवनके विद्युतकी क्षण-भंगुरताकी ओर निर्देश किया।

सत्यका आलोक दमका, जनमत ने अंगड़ाई ली। पराधीनताकी जंजीरें तीव्र वेगसे खनखना उठीं, राष्ट्रने देशके विगत स्वर्णिम वैभवकी ओर दृष्टिपात किया उसका चेहरा खिल उठा! उसने वर्तमान की भूमिपर पैर जमाये—दूर-सुदूर उसे स्वर्णिम प्रभात की सुनहली रेखा दिखायी दी।

राष्ट्रको बल-शक्ति और साहसके उनसे वरदान मिले। सच्ची भारतीय [illegible] उठा!

असहयोग आंदोलनकी रणभेरी बज उठी। जागरणके उद्घोषसे दिशायें कांप उठीं।

बापू क्रांतिकारी थे। महात्माजीका आचरण दर्पणकी नाईं निर्मल था। उनके शरीरमें एक दिव्य आत्माका निवास था।

महात्माजी आज नहीं हैं किन्तु वे अमर हैं, वे कभी नहीं मरेंगे। मरते जीते तो हम हैं जो मरने जीनेके तराने गाते हैं। मरते हम हैं जो एक हड्डियोंके कंकालका जनाजा निकाल सब कुछ दफना देते हैं! जीते हम हैं जो सदा सूखी रोटियोंके लिये तरस कर बदनसीब जिन्दगीके स्तूपसे चींटीसे चिपके रहते हैं।

महान विभूतियां जीती मरती नहीं, मरकर जीती हैं। उनका जीवन मुट्ठी भर वर्षोंकी परिधिमें किसी भी वक्त दम नहीं तोड़ देता बल्कि वे युग-युगके गृहमें आलोक प्रतीक बनकर प्रज्ज्वलित रहते हैं। युग उनकी बाणीमें अपना जीवन निर्माण करता है, मानवता उनसे सत्यकी शिक्षाके लिये हाथ पसारती है।

हमारे गांधी सदा अमर रहेंगे। युगोंकी पुस्तकपर उनके गीत आलोकित होंगे, जन्म-मरण-पथपर उनकी यात्रा होगी! वे मुक्तिके बन्धनमें बंधकर भी भारतके दर्शनको आयेंगे!! उनकी वह यात्रा कितनी सुखद होगी!!!

—०—

(९ वें कृष्ठका शेषांश)

चंदनकी चितापर आश्रमवासियोंने शव रखा। शवपर फूल, माले रखे गये। पहला फल चीनी राजदूत डा० लोने रखा। जिस समय चिता जल रही थी। नेताओंकी विचित्र हालत थी। नेहरूजी दस वर्ष अधिक बूढ़े लगते थे। सर्दार पटेल निष्पंद गतिहीन मूर्त्तिवत बैठे थे। लेडी माउण्ट बेटेन नेहरूजीको सान्त्वना देती देखी गयीं।

गांधीजीके भाषणोंका अध्ययन

विनायक नानेकर

उस वक्त लड़ाई नहीं थी मगर लोगों में बड़ाई मारनेकी झक जरूर सवार थी। कंट्रोल न था मगर बर्थ कंट्रोल का सबक लोग पढ़ रहे थे। कालाबाजार भी न था मगर विदेशी कपड़ोंका बाजार काफी गरम था। लोग ठंढे दिलसे जिन्दगी बसर कर रहे थे। इसी बीच एक दिन गांधीजीने भाषण किया कि लोग सादगी और मितव्ययतासे रहना सीखें क्योंकि इसीमें शान्ति और सुख है। इसीमें देशकी भलाई और उन्नति है। मगर लोगोंने कब किसका कहा सुना है जो आज सुनते। वे अपनी मनमानीपर अड़े रहे।

जर्मनीका बम फटा, पोलैण्डका भाग्य फूटा। पृथ्वी कांप उठी, संसार दहक उठा। आगकी लपटें चारों दिशाओंमें फैल गयीं। लोग व्याकुल हो उठे। आयात निर्यात बंद हो गया। चीजोंपर कंट्रोल छा गया। अनाजका रेशनिङ्ग हुआ, घरोंकी मारामारी होने लगी। मंहगाईका बोझ असह्य होने लगा। लोगोंकी रहन सहनमें आपही आप परिवर्तन आने लगा और वे धीरे धीरे मितव्ययताका पाठ सीखने लगे। अच्छे कपड़ोंके अभाव व ऊंची कीमत न दे सकनेकी लाचारीने लोगोंको सादगीसे रहने को मजबूर कर दिया।

गांधीजीका इशारा सत्य प्रतीत हुआ मगर उस वक्त किसीने ध्यान नहीं दिया और कहते रहे 'साठा बुद्धि नाठा' बढ़ेका दिमाग खप गया है। बकता है। जो जीमें आता है। खद सठिया कर सबको अपने जैसा बनाना चाहता है।" मगर दाल आटे का भाव पता लगा तो लोगोंकी बुद्धि ठिकाने आ गयी और ऊपरसे नहीं तो दिलमें ही कहने लगे कि बढ़ाने ठीक कहा था। हमने ध्यान नहीं दिया अब अपनी लापरवाहीका फल भुगत रहे हैं।'

* * *

मुद्दतसे गांधीजी मशीनोंका विरोध करते रहे और चर्खेका समर्थन करते रहे। मगर उस वक्त मशीनोंके कपड़ोंकी ही मांग अधिक होती रही। जब लड़ाईमें सरकारने मशीनोंपर अपना हक साबित किया तब लोगोंको अपनी भूल समझमें आयी। गांधीजीका उपदेश सुनते तो कम से कम ये नंगे जमात और साड़ियोंमें लपटे बहुरूपी मर्दोंका तमाशा तो नजर नहीं आता। गांधीजीका कहना न माननेके कारण ही लोगोंने अपने हाथसे अपनी लाज गंवायी। मगर ठोकर खाये बगैर कोई नहीं चेतता।

* * *

सन १९४४ की घटना है। बम्बईमें पेण्टेगुलर क्रिकेट मैच' चालू था। तमाम क्रिकेट प्रेमियोंका दृढ़ विश्वास था कि हिन्दू संघ काफी जोरदार है और उसकी विजय निश्चित है। उस मौकेपर गांधी-जिन्ना मिटिङ्गका असर काफी जोरपर था। गांधीजीने कहा, "हिन्दू संघको चाहिये कि वे अधिक रन न बनावें।" हिन्दू महासभावालोंको आग सी लग गयी। 'सभाई' पत्रोंमें आलोचनाओंपर आलोचनायें आने लगीं। भाषा भी तीसरे दर्जेकी थी। साधारण बुद्धिवाले मनुष्य भी यही कहने लगे मगर गांधीजीके इन सीधे सादे 'पागलपन' से भरे शब्दोंमें भेद था। मगर उस वर्षका 'फायनल मेच' जिसने देखा होगा वही उसका अर्थ समझ पाये होंगे। ऐसा तनातनीका मेच आज-तक दृष्टिगोचर नहीं हुआ। एक एक क्षण में प्रेक्षक उछल उठते थे। काफी उत्तेज-नात्मक दृश्य था। हिन्दू संघ इतना जोर-दार होते हुए भी बड़ी कशमकश करनेके बाद भी मुस्लिम संघसे एक विकेटसे परा जित हो गया। महात्माजीने भविष्य ही कहा था मगर एक निर्दोष बालकके शब्दों में कहा था।

* * *

मैंने देखा है और अध्ययनसे अनुभव किया है कि गांधीजी जो वस्तु नहीं चाहते वह बात कभी सफल नहीं होती और उसके फलसे वे लोगोंको चेतावनी भी दे देते हैं मगर नासमझ लोग उससे फायदा नहीं उठा सकते। लोगोंको वह घटना भी याद होगी जब सुभाषचन्द्र बोस दूसरी बार कांग्रेसके सभापतित्वके लिये खड़े हुए थे जिसके लिये महात्माजीने मना किया था। महात्माजीने पट्टाभि सीतारामैयाको उस वक्त योग्य समझा था। मगर सुभाषने नहीं माना। जनता भी नहीं मानी और सुभाष ही दुबारा सभापति चुने गये। गांधीजीने कहा 'यह पट्टाभिकी हार नहीं, मेरी हार है।' जब सुभाष गांधीजीसे हमेशा की तरह आशीर्वाद लेने गये तो गांधीजी ने उनका स्वागत नहीं किया - कोई खुशी जाहिर की। नतीजा यह हुआ कि सुभाष ऐन मौकेपर बीमार पड़ गये और सभापति का सम्मान और शानका फायदा न उठा सके।

* * *

कोई सोलह महीने पहलेकी बात है। भूला भाई देसाई आजाद हिन्द फौज ट्रायलके हरो, बिस्तरेपर पड़े थे। भूला भाईके ऊपर जनता बेहद खुश थी इसी कारण उनकी प्रकृतिकी चिंता हर भारत-वासीके हृदयको कुरेद रही थी। उनकी सेहतके शुभचिंतकोंके हजारों तार लेकर तारवाला उनके बंगलेकी रोज सीढ़ियां चढ़ा करता था। इन तारोंमें एक दिन महात्माजीका एक तार भूलाभाई देसाईके एकमात्र पुत्र धीरू भाईके पास पहुंचा। मजमून था, 'उस विश्वपिताका ध्यान करो।' अखबारोंमें यह मजमून पढ़कर मैंने समझ लिया कि अब भूला भाई आखिरी घड़ियां गिन रहे हैं। उनके स्वस्थ होनेकी कोई आशा नहीं है क्योंकि महात्माजीके उन नेताओंको, जिनके स्वस्थ होनेकी उम्मीद थी भेजे गये तारों के मजमूनसे यह भाषा दूसरी थी। महा-त्माजी अक्सर ऐसे अवसरोंपर कहते हैं, 'उनके स्वस्थ होनेके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करो।' मगर धीरू भाईको भग-वत् स्मरण करनेके लिये कह उन्होंने भूलाभाईके आत्मकल्याणका मार्ग सोचा और इस तारके दो एक दिनके पश्चात् ही वह भारतका लाल स्वर्गको सिधार गया।

शायद ही किसी राष्ट्रको ऐसा नेता मिला हो जिसने हमेशा अपनी जनताकी इतनी सेवा की हो। शिवाजीके समय रामदास थे, उसी तरह नेहरूके लिये गांधीजी थे। उन्होंने भारतको स्वतन्त्रता दिलानेकी ठान ली थी और सफल हुए।

धिक्कार सौ बार धिक्कार

सव्यसाची

पाकिस्तान बराबर ही अपने कुकृत्यों और पापोंपर पर्दा डालनेके लिये संसार-में यह प्रचार कर रहा है कि भारत पाकिस्तानको गला घोंटकर कुचल डालना चाहता है। भारत समझता है कि उसके इस प्रयासके फलस्वरूप पाकिस्तानको बाध्य होकर फिर भारतमें मिलना होगा। यद्यपि इस प्रचारको सम्पूर्ण मिथ्या बताया गया है और बतानेकी जरूरत ही क्या खद पाकिस्तान क्या नहीं जानता कि भारतका ऐसा मनसूबा नहीं है। किन्तु सवाल तो यह है कि जिस झूठ, मक्कारी और फरेबके सहारे पाकिस्तानियोंने अपना अलग इतना बड़ा राज्य बना लिया उसे यदि ये पाकिस्तानी अपना एटम बम समझने लगे हों तो आश्चर्य क्या है ?

पाकिस्तान बन जानेके बाद यह समझा जाता था कि जिन उपायोंसे मुस्लिम लीगने अतीतमें काम लिया है लक्ष्य तक पहुंच जानेपर रास्ता बदलेगा और नैतिकता एवं मनोविज्ञानको आधार बनाकर झगड़ोंको मिटानेके लिये नयी दृष्टि और नीति अख्तियार की जायेगी। किन्तु काश्मीर और हैदराबादकी घटनाओंसे यह स्पष्ट होता जा रहा है कि जिन्ना साहब आज भी अपने पुराने रास्तेपर चल रहे हैं और चले क्यों नहीं, जब न्यायके आसनपर बैठनेका नाटक करनेवाले बड़े बड़े राष्ट्रोंसे उन्हें ऐसा करनेका प्रोत्साहन मिल रहा हो। आज न्याय न्यायके लिये नहीं, बल्कियह देखकर किया जा रहा है कि किस तरहका न्याय हमारे स्वार्थमें सहायक होगा।

चित भी मेरा पट भी मेरा इस नीतिको मानने वाले पाकिस्तानने काश्मीरको सैनिक संघर्षके लिये चुना है तो हैदराबादसे भारतमें वह काम लिया जा रहा है जो सीधे हमलेके बाद लीगी सरकारसे बंगालमें, पंजाब और सीमा प्रांतमें लिया गया। स्वतंत्रता द्वारा प्रदत्त सुविधाओं और परिस्थितियोंको प्रगतिकी वेगवाली सरितामें परिणत करने की भारतकी चेष्टाओंको व्यर्थ करनेके लिये पाकिस्तानने हैदराबाद, बहावलपुर, और पूर्व बंगाल तथा सिंध और बलूचिस्तानसे भारतमें अपने लुटेरोंको भेजना शुरू कर दिया है। हैदराबादके इर्द गिर्दसे प्रति दिन जो समाचार आ रहे हैं और अभी उस दिन जैसलमेर में जिस दुस्साहसका परिचय दिया गया है, ये सब घटनायें एकही बातका संकेत कर रही हैं कि भारतको इन्साफ के लिये संयुक्त राष्ट्र संघका पल्ला छोड़कर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये। तलवारके जोरसे ही इंसाफ मिल सकता है। लन्दन सम्मेलनकी असफलता यह बात गला फाड़कर कह रही है। जो चार महान अपनी समस्याका समाधान नहीं कर सके उनसे यह आशा करना कि वे दूसरोंका मामला ईमानदारीके साथ फैसला कर देंगे अपने आपको धोखा देना है।

इधर तो हम संयुक्त राष्ट्र संघके सामने पंचायतकी बात करते हैं उधर तलवारकी ताकतसे हुए फैसलों पर विश्वास करने वाले पाकिस्तानने जैसलमेर में नया मोर्चा खोल दिया है। पाकिस्तानमें सम्मिलित बहावलपुर राज्यसे इन लूटेरोंने जाकर जैसलमेरसे उत्तर २५ मील दूरस्थ देवा नामक स्थानको लूटा, लोगोंको मारा और उनके घरों और दूकानोंमें आग लगा दी। पाकिस्तानियोंने एक नया तरीका अख्तियार किया है लूटते समय उनका ध्यान मालकी अपेक्षा स्त्रियों पर अधिक रहता है। हम भले ही तलवारके फैसलेको पाशविक और बर्बर कहते या मानते हों किन्तु हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि जो शासन व्यवस्था स्त्रियोंकी इज्जतकी रक्षा नहीं कर सकती उससे स्त्रियोंकी रक्षा करने वाली बर्बर या क्रूर प्रणाली हजार गुना अच्छी है। हमारी पचास हजारसे अधिक स्त्रियां अब पाकिस्तानियोंके कब्जेमें हों उस की हुहाई देना हमारी चरम कापुरुषता का लक्षण है। जिस देशमें एक सीताके लिये, एक द्रौपदीके अपमानके कारण पद्मिनीके लिये राम रावण युद्ध महाभारत और चित्तौड़ जैसे युद्ध लड़े गये और सर्वस्वकी आहुति दे दी गयी वही देश आज अपनी हजारों लाखों माताओं और बहनोंका अपमान चुप चाप देख रहा सह रहा है और ऐसा प्रतीत होता है कि मानों कुछ हुआ ही नहीं। आज हमारा कितना नैतिक अधःपतन हो गया है। यदि हम अन्य सब बातोंको किनारे रख दें तो भी केवल हम अबलाओंके उद्धार के प्रश्न पर ही हमारी मानवताकी परीक्षा हो जानी चाहिये। यही एक प्रश्न है जो पाकिस्तानके साथ डंकेकी चोट युद्ध घोषणा करनेके लिये पर्याप्त है। हमें देखकर आश्चर्य होता है कि भारतमें हिन्दू मुस्लिम दंगाकी स्थिति पद पद पर उत्पन्न करनेको उधार खाये बैठे दलों की वीर भुजाएं इन अबलाओंकी रक्षाके लिये क्यों नहीं फड़क उठती और क्यों नहीं वे पाकिस्तानके विरुद्ध युद्ध या जय घोष उठाकर अपनी सरकारको अपनी सैनिक सेवायें समर्पित करनेके लिये आगे आते हैं। आज भारतकी नैतिकताकी अग्नि परीक्षा है। आज उसके पौरुषको हमारी मातृ जाति पर पाकिस्तानमें होने वाला अन्याय चुनौती दे रहा है, ललकार रहा है। क्या संसारका दूसर कोई राष्ट्र भी अपनी हजारों लाखोंकी तादादमें माताओंको दुर्वृत्तियोंकी क्रूर मुट्ठीमें छट पटाते इस तरह देखता रह सकता था ? यदि हमारा नैतिक बल, यदि हमारी अध्यात्मिक शक्ति इस तरहके अन्याय और अत्याचारको शांतिके नाम पर बर्दाश्त करनेकी शिक्षा देती है तो हम कहेंगे ऐसी नैतिकताको,आध्यात्मिकताको धिक्कार शत बार धिक्कार है।

देशी भाषा शिक्षाका माध्यम बने

श्री छविनाथ पाण्डेय

अभी हालमेंही दिल्लीमें भारत भरके विश्वविद्यालयोंके कुलपतियों, शिक्षा विभाग के संचालकों (डायरेक्टर आफ पबलिक इन्स्ट्रक्शन) तथा प्रांतीय सरकारोंके शिक्षा सचिवोंका एक सम्मेलन हुआ है। अन्य बातोंके साथ साथ यह प्रश्न भी विचाराधीन था कि शिक्षाका माध्यम देशी भाषामें हो अर्थात जिस प्रांत की जो मातृभाषा हो उस प्रांतमें उसीके द्वारा शिक्षा दी जाय।

भारत सरकारके शिक्षा सचिव मौलाना अबुल कलाम आजाद इस सम्बन्ध में अपने रुखका परिचय पटनामें दे चुके थे। पटना विश्वविद्यालयके वार्षिक दीक्षा समारोहके अवसरपर अपना दीक्षान्त भाषण देते हुए आपने इस बातकी ओर इशारा कर दिया था कि अंगरेजीको शिक्षाका माध्यम बनाये रखना सम्प्रति आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है। इसलिये इस सम्मेलनके अध्यक्ष पदसे भाषण देते हुए यदि उन्होंने अपने उसी विचारको दोहराया तो कोई अचरजकी बात नहीं। उन्हें दोष भी नहीं दिया जा सकता। लेकिन वहांपर एकत्रित सभी शिक्षा विशारदोंका भी तो यही मत प्रतीत होता है। यदि सभी उसी विचारके न होते तो अकेले मौलाना आजादके कहनेसे अंग्रेजी भाषा शिक्षाके माध्यमके रूपमें कमसे कम ५ वर्षोंतक हम लोगोंके सिर पर लदी नहीं रह सकती थी और ६ ठे वर्ष भी उसे हटाकर सर्वतो रूपसे देशी भाषाको शिक्षाका माध्यम बना दिया जायगा, यह भी तो नहीं स्पष्ट कहा गया है। प्रस्ताव तो इस आशयका स्वीकृत होना चाहिये था कि देशी भाषाको शिक्षाका माध्यम बनानेके लिये धीरे धीरे अंग्रेजी का स्थान उसे इस तरह दिया जायगा कि पांच सालके अन्तमें स्कूलों और कालेजों की पूरी पढ़ाई देशी भाषाओंमें होने लगे और अंग्रेजी भाषाको यदि कोई छात्र पढ़ना चाहे तो ऐच्छिक रूपमें उसे ले सके। लेकिन ऐसा नहीं हो सका।

इस सम्बन्धमें भारतके विभिन्न विश्व विद्यालयोंने जो रुख अख्तियार किया है उसका अवलोकन कर तो हमें निराश हो जाना पड़ता है। शिक्षाके माध्यमके बारेमें विभिन्न विश्वविद्यालयोंने अपने अपने यहां जो निर्णय किया है उसका संक्षेपमें विवरण नीचे दिया जाता है—

आगरा

डिग्री कक्षाकी पढ़ाईमें शिक्षाके माध्यम के रूपमें देशी भाषा नहीं अपनायी गयी है। केवल संस्कृतकी पढ़ाई और प्रश्नोंका उत्तर देनेके लिये हिन्दी और मराठीको तथा फारसीके लिये उर्दूको स्वीकार किया गया है।

अलीगढ़

अंग्रेजी जबान, विज्ञान तथा हिसाबके प्रश्न पत्रोंको छोड़कर आई०ए० परीक्षाके सभी प्रश्नपत्रोंका उत्तर उर्दूमें देनेकी स्वतन्त्रता छात्रोंको है। देशी भाषाको शिक्षाका माध्यम बनानेके प्रश्नपर विचार करनेके लिये एक कमेटी नियुक्त कर दी गयी है।

इलाहाबाद

डिग्री कक्षाओंकी शिक्षाका माध्यम देशी भाषाको बनानेका प्रश्न विचाराधीन है। फिलहाल यूनिवरसिटीके बी० ए० बी० एस० सी० तथा बी० कामकी परीक्षामें हिन्दीका एक प्रश्न पत्र अनिवार्य कर दिया है।

आंध्र

आंध्र यूनिवर्सिटीने न तो डिग्री कक्षाओंकी शिक्षाका माध्यम देशी भाषा बनाया है और न वह बनानेकी बात सोच रहा है।

अनाकुलम

आइ० ए० कक्षामें देशी भाषा द्वारा शीघ्रसे शीघ्र शिक्षा देनेके लिये तामिल भाषामें पाठ्य पुस्तकें तैयार करायी जा रही हैं। पाठ्य पुस्तकोंकी तामिल भाषा में कमीके कारण डिग्री कक्षाकी पढ़ाई देशी भाषा द्वारा अभी नहीं सम्पन्न हो सकती।

काशी विश्वविद्यालय

देशी भाषा द्वारा डिग्री कक्षाकी पढ़ाई के प्रश्नपर सिनेटमें विचार हुआ, लेकिन कोई निर्णय नहीं हो सका। विश्वविद्यालय ने लड़कोंको यह सुविधा प्रदान कर दी है कि अडमीशन परीक्षासे लेकर बी० ए० बी० टी० परीक्षातकके सभी प्रश्नपत्रों का उत्तर किसी भी भाषामें वे दे सकते हैं।

बम्बई

डिग्री कक्षाकी पढ़ाई देशी भाषामें करनेका विचार अभी नहीं हो रहा है।

ढाका

डिग्री कक्षाओंकी पढ़ाईके लिये देशी भाषा अभीतक स्वीकार नहीं की गयी है।

दिल्ली

डिग्री कक्षाओंकी पढ़ाईके लिये न तो देशी भाषा स्वीकार की गयी है और न निकट भविष्यमें स्वीकार किये जानेकी सम्भावना है। इसकी सम्भावनाकी जांच के लिये एक कमेटी बैठा दी गयी है। जिसकी रिपोर्टकी प्रतीक्षा है।

लखनऊ

जुलाई १९४६ से ही लखनऊ विश्व विद्यालयके बी० ए० बी० काम तथा एल०एल० बी० की पढ़ाई उर्दू और हिन्दी

माध्यम द्वारा आरम्भ हो गयी है। १९४९ के बादकी परीक्षाएं इन्हीं भाषाओंके द्वारा होंगी। (केवल अखबारी सूचनाके आधार पर)

मद्रास

विधानमें ऐसा नियम है जिसके अनुसार आई ए० की पढ़ाई देशी भाषा द्वारा हो सकती है। दो कालेजोंने जूनियर इण्टरमीडियट कक्षाओंमें इतिहास तथा लाजिककी पढ़ाई तामिलमें आरम्भ कर दी है।

मैसूर

शिक्षाका माध्यम न तो देशी भाषा किया गया है और न निकट भविष्यमें इसकी सम्भावना ही है।

नागपुर

१९४७ से आई० ए०, आई० एस० सी कामर्स तथा कृषिकी पढ़ाई देशी भाषा में होने लगी है। जिन कालेजोंने पाठ्य पुस्तकोंकी आवश्यकता पूरी कर ली है। डिग्रीकी पढ़ाई भी देशी भाषामें करनेकी उन्हें आज्ञा दे दी गयी है। जैसे वार्धा और नागपुरके औद्योगिक कालेज। वैज्ञानिक शब्दों तथा हिन्दीमें पाठ्य पुस्तक तैयार करनेके लिये एक कमेटी बना दी गयी है।

उस्मानिया

यहां सभी कक्षाओंमें पढ़ाई उर्दू द्वारा होती है।

पटना

पटना विश्वविद्यालयने अपने सभी कालेजोंके संचालकोंको आदेश दिया है कि १९४७ की जुलाईसे बी० ए० बी० एस० सी तथा बी० कामकी पढ़ाई की व्यवस्था हिन्दुस्तानी भाषामें करें और जहां आवश्यक हो, बंगला में। १९५० तक प्रश्न पत्रोंका उत्तर अंग्रेजीमें देनेकी स्वतन्त्रता रहेगी।

पञ्जाब

डिग्री कक्षाओंकी पढ़ाईका माध्यम देशी भाषा करनेका कोई प्रस्ताव यूनिवर्सिटीके सामने नहीं है।

ट्रावन्कोर

ट्रावन्कोरकी सरकारने शिक्षा पुनः संगठनके लिये जो कमेटी बैठायी थी उसकी सिफारिशके अनुसार अंग्रेजी भाषाको शिक्षाका माध्यम कायम रखा गया है।

उत्कल

उत्कल विश्वविद्यालयने न तो अभी तक देशी भाषाको शिक्षाका माध्यम बनाया है और न निकट भविष्यमें ऐसा करने ही जा रही है।

इन विवरणोंसे यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारे देशके अधिकांश विश्वविद्यालयोंके संचालकोंके हृदयसे अंग्रेजी भाषाका मोह नहीं गया है। यदि वे विवश न होते तो शायद अंग्रेजी शासनका भी मोह उनसे न छूटता। यह है हमारी दिमागी गुलामीकी निशानी। हम गुलाम थे और गुलामीसे छुटकारा पाजानेपर भी हम अपनी दिमागी गुलामीसे छुटकारा नहीं पाना चाहते। यही तो हमारे देशके अधिकांश शिक्षा विशारद हमें चिल्ला चिल्लाकर बतला रहे हैं। अन्यथा अंग्रेजी भाषासे इस तरह चिपककर रहनेकी तो कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती।

कोई भी आजाद देश या आजाद कौम किसी विदेशी भाषाको कभी भी अपनाना नहीं चाहेगी। यह जानते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय जगतमें इस तरहके देश उन्नत और सभ्य देश नहीं माने जा सकते। हम संसारको यह बतला देना चाहते हैं कि हमारे देशकी भाषायें इतनी प्रौढ़ और उन्नत नहीं है कि हम उन्हें शिक्षाका माध्यम बना सकें। हमारे साहित्यमें ऐसे ग्रन्थोंका सर्वथा अभाव है जो पाठ्य पुस्तकोंका काम दे सकें और हमारे देशके विद्वानोंमें ऐसे लोगोंका अभाव है जो विद्यालयोंके काम लायक पुस्तकें तैयार कर सकें।

हम अनेक बार लिख चुके हैं कि शारीरिक गुलामीकी अपेक्षा दिमागी गुलामी कहीं ज्यादा भयंकर है और जब तक हम अपने को दिमागी गुलामीसे मुक्त नहीं कर सकते तब तक हमारा उद्धार नहीं हो सकता। यही कारण है कि एक विजेता विजित जगतकी भाषा और उसके साहित्यपर ही सबसे ज्यादा चोट करता है और इन दोनोंकी वह जड़ ही खोद डालना चाहता है। अंग्रेजोंने यहां भी वही किया और उसमें वे बहुत कुछ सफल भी हुए। जो कुछ बचा बचाया रह गया है उसे हमारे अपने महापुरुष लोग पूरा कर रहे हैं।

अन्य प्रान्तीय भाषाओंकी बात तो मैं नहीं जानता लेकिन दो प्रांतीय भाषाओंका मुझे ज्ञान है और अपनी जानकारीके बलपर हम यह जोर देकर कह सकते हैं कि बङ्गला और हिन्दीमें साहित्य में इतनी सामग्री तैयार है कि देशी भाषा द्वारा शिक्षा चलायी जा सकती है। जो कुछ कमी है वह पूरी हो रही है और शीघ्र उसकी पूर्ति हो जायगी। इस तरह हम देखते हैं कि बङ्गला द्वारा बङ्गाल और आसाम तथा उड़ीसाके एक भागमें तथा हिंदी द्वारा बिहार, संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत पूर्वी पञ्जाब और उड़ीसाके एक भागमें शिक्षाका काम मजेमें चल सकता है। पूर्वी पञ्जाबकी भाषा हिन्दी और गुरुमुखी घोषित की गयी है। बोल चाल और अदालती काममें गुरुमुखीका प्रयोग भले ही हो लेकिन गुरुमुखीमें साहित्य ग्रंथोंका सर्वथा अभाव है इसलिये वहां भी शिक्षाका माध्यम हिंदी ही होगा। क्या गुजरात, महाराष्ट्र और मद्रासके शिक्षा विशारद शिक्षाके योग्य साहित्यका तुरन्त निर्माण नहीं कर सकते? यह तो असम्भव नहीं प्रतीत होता।

ऐसी हालतमें इस काममें क्षण भरका विलम्ब या आना-कानी देशकी उन्नतिके लिये घातक है और जितना जल्दी इसमें परिवर्तन लाया जा सके उतना ही कल्याणकारी होगा।

———

हैदराबाद

"सव्यसाची"

हैदराबादमें आज वही हो रहा है जो कभी नादिरशाह, चंगेज खां और औरङ्गजेबके राज्यमें हुआ था। आज वहां पुलिस और पल्टनकी हुकूमत है। हैदराबाद में शरीयतके मुताबिक हुकूमत होगी। इस हुकूमतमें खुदाके बन्दोंके सिवा काफिरोंके लिये जगह नहीं है वे चाहें तो खदाकी बन्दगी करनेवालोंकी खिदमत कबूल करके अपनी नापाक जिन्दगीको राहे खुदामें कुर्बान करके इहलोक और परलोक दोनों सुधार सकते हैं।

६ जनवरीको कराचीमें १२ घण्टेतक दिन दहाड़े लूट सोमनाथकी लूटके दिनोंकी याद दिलाती है। जैसलमेर पर पठानोंका आक्रमण इस बातका संकेत है कि वाद-प्रतिवादका रास्ता चलना पाकिस्तान नहीं जानता। उसके पुट्ठे मजबूत न हों, उसकी कब्जीमें ताकत न हो तो वह आर्जू मिन्नत या शिकायत और फरियादका रास्ता अख्तियार करे। भारत सरकारने वाद-प्रतिवादका रास्ता अख्तियार किया है और पाकिस्तानने सीधे हमलेका। सीधे हमले की अपूर्व सफलताका कायल पाकिस्तान उसे क्यों छोड़ने लगा? मौखिक वाद प्रतिवादके रास्तेकी निस्सारता और निकम्मापन समझ कर ही आजसे २५ वर्ष पूर्व कांग्रेसने उसे छोड़ अंगरेजोंके खिलाफ युद्धनीति ग्रहण की और उसे सफलता पद पदपर मिली। इस स्वर्णिम उदाहरण के सामने रहते भी आज कांग्रेस सरकार ने इस रास्तेको क्यों त्याग दिया है। क्या उसका पौरुष क्षीण हो गया है, लड़ते लड़ते अंग शिथिल हो गये हैं और आज उसे विश्रामकी आवश्यकता है? हम मानते हैं कि जीवनमें विश्रामकी भी आवश्यकता है किन्तु उस समय नहीं जब विश्रामका अर्थ है मौत। पाकिस्तानके जितने मोर्चे हैं उन सबमें हमें उसका डटकर मुकाबला करना चाहिये, तभी हम उससे पार पा सकते हैं। समझौते और शान्तिके मोर्चे से हम कदम पीछे हटानेको नहीं कहते, वह तो हमारा मोर्चा है ही, किन्तु इसीके करना चाहिये। इतिहासके पर्लहार्बरके अध्ययसे हमें शिक्षा लेनी चाहिये।

हैदराबादमें पिछले छः महीनेसे पूर्ण शान्तिके साथ वहांकी जनता राज्य कांग्रेस के नेतृत्वमें पूर्ण उत्तरदायी शासनके लिये आन्दोलन कर रही है। निजाम सरकार इस आंदोलनको कुचलनेके लिये जिस क्रूरता और बर्बरताका परिचय दे रही है, उसे देख कर यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि इस अन्यायको कबतक बर्दाश्त किया जायगा। निजामकी सरकार केवल जनताकी ही नहीं भारतीय संघ सरकार की भी उपेक्षा कर रही है, यह पाकिस्तान सरकारको २० करोड़ रुपये ऊपर ही ऊपर कर्ज देकर उसने स्पष्ट कर दिया है। राज्यकी रक्षाके नामपर हैदराबादी पल्टन पुलिस और मुस्लिम लीगके ही दूसरे नाम इत्तिहादुल मुसलमीन मिलकर जन आंदोलन के साथ साथ जनताको कुचलनेके लिये सभी सम्भव उपायों और तरीकोंसे काम ले रहे हैं। इत्तिहादुल मुसलमीनका रङ्ग ढङ्ग और रवैया देख कर यह समझना कठिन हो रहा है कि दरअसल हैदराबाद की हुकूमत कौन कर रहा है? निजाम या इत्तिहादुल मुसलमीन? हैदराबाद कांग्रेसके नेता स्वामी रामानन्द तीर्थने निजाम बहादुरका ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए लिखा था कि इत्तिहादुल मुसलमीनके कारनामें जनताकी रक्षाके साथ साथ शासक और उनके वंशके लिये भी घातक सिद्ध हो रहे हैं। स्वामी रामानन्द तीर्थने अपने इस पत्रमें यह भी साफ साफ जाहिर कर दिया था कि यह पत्र 'राज्यके हितैषी और निजाम एवं उनके वंशके मित्रकी हैसियतसे लिख रहा हूं।"

यह बात किसीसे छिपी नहीं है कि स्वामी रामानन्द तीर्थ अभी गत ३० नवम्बरको ही जेलसे छोड़े गये थे हैदराबाद राज्य और भारतीय संघके बीचमें यथा स्थिति समझौता हो जानेके फलस्वरूप। स्वामीजीने चेष्टा की कि संघर्ष टल जाय किन्तु निजाम सरकार न तो भारतीय संघमें ईमानदारीके साथ शामिल होना चाहती है न वह राज्यमें उत्तरदायी सरकार ही कायम करना चाहती है। यह सरकार और इसके संचालक इस समय

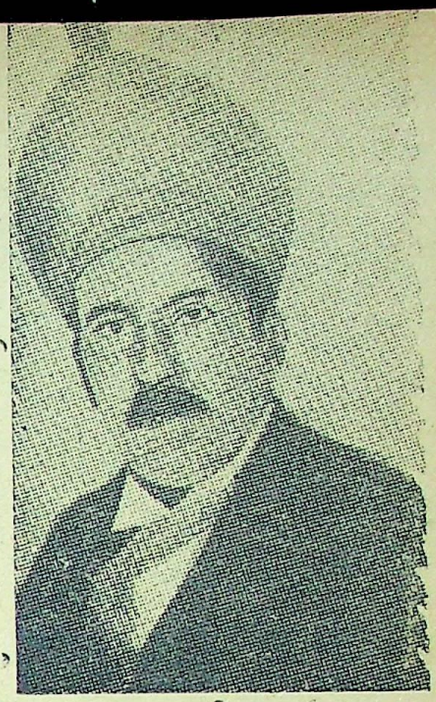

हैदराबादका निजाम

दूसरे ही घोड़ेपर सवार हैं। राज्यके मुसलमान भी उसी हवामें बह रहे हैं। समयके संकेत की प्रतीक्षामें हैं। यही कारण है कि निजाम सरकार अपना रास्ता बदल नहीं रही अन्यथा उसने स्वामी रामानन्द तीर्थके उक्त सौजन्यपूर्ण पत्रका उत्तर हैदराबाद राज्यमें उनके पैर रखते ही उनको गिरफ्तार करके न देती। जिस ढर्रेपर राज्यके मुसलमान और अधिकारी इत्तिहादुल मुसलमीन द्वारा चलाये जा रहे हैं वह सर्वनाशका रास्ता है आज शायद उनकी समझमें नहीं आ रहा। लेकिन इसमें उनका कसूर नहीं है, दोष है उनकी संस्कृति और सभ्यता का। शराफतकी आवाज आजका मुसलमान कम समझता है या यों कहना चाहिये कि उनको कम समझने दिया जाता है। वे शराफतकी आवाज न समझें, इसीलिये इत्तिहादुल मुसलमीनने राज्यमें बर्बरताका ताण्डव मचा रखा है।

हम समझते हैं कि अब समय आ गया है जब हमें ऐसी जबान बोलनी चाहिये जिसे प्रतिहिंसाके घोड़ेपर सवार मुसलमान समझ सकें। साधारण नागरिकोंपर ही नहीं जेलोंके भीतर घुसकर सत्याग्रही बंदियोंके साथ अमानुषिक व्यवहार करने वाले 'मुसलमीनोंसे' यदि अब भी हैदराबादके नागरिक उनसे सहानुभूति रखने-

(शेष १८ वें पृष्ठ पर)

"व्यक्तिगत"

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

"समम् अजन्ति जनाः अस्मिन् इति' समाज शब्दका अर्थ है जिसमें लोग मिलकर एक शरीरके अङ्ग होकर चलें। जिनके प्रयत्न और उद्देश्य एक हों, अर्थात जिनके प्रयत्न एक दूसरेके परिपूरक हों, जो इस उद्देश्य से कि संस्था के सब सदस्योंका हित हो अपनी इच्छासे समान भावसे परिचालित हों। यह तभी सम्भव है जब व्यक्तिगत हितको समाज हितके अन्तर्गत समझें। स्वार्थको समाज हितका बाधक न होने दें। इस कसौटीपर कसनेसे हमारा वर्तमान समाज ठीक नहीं उतरता है, दोषपूर्ण पाया जाता है।" (अंकशमें छपे पण्डित गुरु सेवक उपाध्याय के लेख से)।

पर मुझे यहां गुरु सेवकजीकी तरह समाज संघटनके कुछ सिद्धांत पर विचार करनेकी उतनी इच्छा नहीं है जितनी कि व्यक्तिगत जीवनके माने हुए वर्तमान अर्थपर। लेखांशके उद्धरणसे मेरा अभिप्राय केवल इतना कि हम शुरूमें ही समझ जायं कि हमारे यहां समाज के अर्थमें व्यक्तिगत जीवनका कितना कम महत्व है। समाज हितसे परे व्यक्तिगत कुछ है ही नहीं। फिर आज इस शब्दकी मान्यता इतनी महत कैसे हो गयी? समाजसे परे व्यक्ति को इतना मोटा बनाया आखिर किसने? हूणोंने? शकोंने? यूनानियों या मुसलमानोंने? अथवा खिस्तानों ने? मैं समझता हूं हमारी वर्तमान बुराइयोंकी ज्यादातर जिम्मेदारी गोरे और उनके चेले काले उन्हीं ईसाइयोंके कांधे पर है जिनके धर्म प्रवर्त्तक गुरु महात्मा मसीहा अपने कांधे पर भलाइयोंका क्रास ढो ढोकर शहीद हुए थे। अन्धेरा भरा हमारा व्यक्तिगत ईसाइयतके चिराग तलेका अन्धकार है। पुनः इसका यह अर्थ नहीं कि महात्मा ईसाने माया मोह भरे व्यक्तिगत जीवनका उपदेश अपने अनुयायियोंको दिया। इसके बिलकुल विपरीत उन्होंने बाइबिलमें कहा है। वी मस्ट कनफेस अवर सिन्स टु वन अन दर) अपने पापों को हम एक दूसरेके आगे अवश्य मंजूर करें। मगर गोरे ईसाइयोंने महात्मा ईसा और बाइबिलकी दोहाई देते हुए भी सही मानेमें अनुकरण उनका नहीं किया चन्द चमकदार अपवादोंको छोड़कर। ईसाई धर्ममें यह कमजोरी स्वयं ईसा के ही समयमें घुस पैठी थी। देश द्रोही यहूदियों और विदेशी आततायी रोमनों का कोप भाजन बननेपर मसीहाके मुख्यतम शिष्य संत पीटरतक ने मारे भयके अपनेको ईसाई माननेसे अस्वीकार कर दिया था और मशहूर कथा है नीच जुड़ाजने तो चांदीके चन्द टुकड़ोंपर अपने गुरुदेवको हत्यारोंके हाथों बेचतक दिया था। उनके बारह मुख्य शिष्योंमेंसे दो की जब यह दशा हुई तब आधी दुनियाके ईसाई बन जानेपर क्या हालत हुई होगी, कौन अन्दाजा लगा सकता है? ध्यानसे देखा जाय तो कहना मुश्किल होगा कि ईसाके बाद अधिकतर ईसाइयोंने चांदीपरस्त जुड़ाजका अनुकरण किया या सत्यधर्मके लिये क्रसपर चढ़नेवाले शहीद महात्मा का! आजतक मुझे तो जुड़ाजका ही पल्ला गुरुतर नजर आता है। सो...

मेरा दावा यह कि, 'परसनल अफेयर्स' या व्यक्तिगत बातोंके ब्लैक-ब्लैंकेटमें अपने पापोंको छिपानेकी कला हमने विदेशी विवेक विहीन विजेता अंग्रेजों या फिरंगियोंसे सीखी है जिन्होंने दुनिया की आंखोंमें धवल धूल रूपी इस 'परसनल पाउडर' की ईजाद अपने कलङ्कित मुहं पर सुफैदी चमकानेके लिये की थी। खुदा परस्त मुसलमान भी इतने खुदी परस्त कहां थे, जिनके दिव्य गायकोंने 'खुदासे जब नहीं चोरी तो फिर बन्देसे क्या चोरी' ललकार कर गाया है? इन गोरे ईसाइयोंने ही सरासर असभ्यताका प्रचार किया सभ्यता कह कर; लूटको महत्व दिया, सुशासन बना कर; दुराचरण करते रहे 'व्यक्तिगत जीवन' की आड़में। और हमने मोहान्ध होकर कुशिक्षा उनसे इस कदर ली कि गुरू गुड़ ही बने रहे पर आज चेले, चीनी चमाचम्म चमक चले हैं। हमारी अपनी आर्य सभ्यतामें जो कुछ है अलानिया, समाजकी आंखोंसे छिपा कुछ भी नहीं, 'हृदय आन मुख आन' मुतलक नहीं, मन वचन कर्मकी एकता सर्वदा, सर्वथा। भारतका सारा वाङ्मय या साहित्य प्रमाणोंसे पुर है। वह आर्य—वैदिक—साहित्य हो या जैन अथवा बौद्ध—चारों तरफ आप सत्य सविताका ही शाश्वत प्रकाश देख सकते हैं। ईश्वरको भले ही किसीने न माना हो

पर सत्यको सभीने सहर्ष स्वीकारा है। यहांतक कि ब्रह्मा, विष्णु,महादेवकी सरस्वती तुलसी, मोहनीवाली कथाएं भी उधेड़ कर रख दी हैं सत्यवादियोंने। गौतम अहिल्या और इन्द्रवाले मामलेको अच्छी तरहसे 'परसनल' कहा जा सकता है क्योंकि पतिव्रत नामकी कोई चीज तब थी ही नहीं; किन्तु उसे खोलकर आर्योंने चौड़ेमें रख दिया और छिपकर कुलिहयामें गुड़ फोड़नेके अपराधमें देवी पाषाणी बनायी गयी। देवेन्द्रके कुकर्मी तनपर न्यायके तप्त लोहेके छापेसे सहस्र भग छापे गये। पाप में सहायक द्विजराज बननेवाला चन्द्रमा भी लांछित हुए बगैर बचा नहीं।

राजा ययाति बूढ़े थे तो क्या हुआ?पुत्र के ब्लड बैंककी जमासे जवानीके मजे लूटनेका अधिकार यदि पिताको नहीं तो किसको हो सकता है ? यह तो बिलकुल घरेलू बात थी ? फिर, इसकी पब्लिसिटी जिन्होंने की ताजिरात हिन्दकी रूसे क्या दफा ५०० उन पर लागू नहीं होती ? पर, पब्लिसिटी हुई और किसी पर मुकदमा चलानेकी हिम्मत न तो बापको पड़ी और न बेटेकी। धन प्रिय वेश्या मेनका और तपोधन विश्वामित्रके सम्बंधमें गुनाह क्या था जिसके लिये ब्रह्मर्षिका सर्टिफिकेट देते देते रोक लिया गया ? आज तो कोई भी वेश्यागामी किसी भी देशका मंत्री तक बन सकता है और कोई पत्रकार घटनाको प्रकाशित करने पर जेलमें ठेला जा सकता है—कि नहीं ? प्रचण्ड विज्ञान विशारद याने साइन्सदां पराशर तो विवाहित भी नहीं थे (रहे हों, तो कृपाकर 'ब्राह्मण सावधान'के श्रद्धेय लेखक बतलाएं) उन्होंने बीच गंगामें द्वीप पैदा कर, धुआंबमसे दिन दहाड़े अंधेरा फैलाकर 'टौटेक' कुमारी योजन-गंधाका सम्भोग किया तो यह उनकी व्यक्तिगत बात थी। फिर इसकी किताब रचकर जनतामें क्यों रखी किसीने ? हम अगर किसी विधवाके सम्बंध की कहानी कहें तो वह कुरुचि पूर्ण व्यक्ति चित्रण हो जाय। बच्चा हो तो, दोगला पर चित्राङ्गद विचित्र वीर्यकी विधवाओंसे कृष्ण द्वैपायन जो रच दें सो सबके सब पुण्य श्लोक—महाराज धृतराष्ट्र महापुरुष पाण्डु महात्मा विदुर! रामके गुरु बशिष्ठ वेश्या पुत्र—लोगोंने लिखा भी—पर इससे बशिष्ठकी मान हानि कहां हुई ? और अबके किसी कुल पुरोहितकी ऐसी कलई खोल कर फल देख लीजिये। वेश्याके यजमान भले न टूटें पर पुरोधा जी लाख चान्द्रायण व्रत करने पर इस जन्ममें तो पाप मुक्त न हो पायेंगे। कर्ण ऋषि दुर्वासाकी कृपासे कुमारी कुंती के कानसे पैदा हुए, द्रोण हुए भारद्वाजके हस्तमैथुनसे,हनुमानके बारेमें पवन, केसरी, शङ्कर तीनोंके नाम गिनाये गये पर महावीरने अपनी लाङ्गूलसे कस कर किसी का गला नहीं घोंटा। यहां तक कि हम सभीको मालूम है कि विदित बापसे व्याह होनेके पूर्वही महात्मा ईसाकी माताको किसी दिव्यात्माने गर्भित कर दिया था। कहां तक कहूं—बाढ़ै कथा पार नहि लहहूं—वाला मामला है।

कहनेका तात्पर्य यह कि हमारे यहां पाप वही माना गया, जिसे छिपाना पड़े। सत्यके छिपानेकी कोशिशको भी क्षमा नहीं किया जाता था। जैसे, धर्मात्मा युधिष्ठिर वाला केस जिसमें 'अश्वत्थामा हतो' तो चिल्लाकर सुनाया गया था पर "नरो वा कुञ्जरो वा" के वक्त जान-बूझ कर शोरशराबा पैदाकर सत्यपर लेहाफ डालनेकी कोशिश की गयी थी। इसके लिये धर्मराजको भी यमराजने दण्ड दिया—नरक दर्शन! मालूम नहीं हमारे वर्तमान लुकदार जननायकोंकी खबर लेनेके लिये नरकेश्वरने कौनसा डण्डा रिजर्व कर रखा है। वही, जो किसीको पापमें फंसाकर और किसीको पापसे बचा अपनेको मालामाल बनानेमें मशगूल हैं। वही जो 'मा फलेषु—मा फलेषु' गा कर स्वराज्यकी लड़ाई जीतनेके बाद आज 'हा फलेषु! हा फलेषु!!' कलक रहे हैं। वही जिनके पापोंकी तरफ—गांधीजीको पत्र लिख—देशभक्त श्री कोण्डा वेङ्कटप्पैया गास्नेने इशारा किया था। वही, जिनके कुकर्मोंका रोना श्री जयप्रकाश नारायण रोया करते हैं। वही, जिन्हें आप और हम सभी अच्छी तरह जानते—पहचानते हैं—अपने मलमूत्रवत् पर सङ्कोचवश त्यागनेमें असमर्थ हो रहे हैं। वही जो अपनी पतित प्रवृत्तियोंके पोषणार्थ पुण्य पुरुष महात्मा गांधी तककी हत्या कर डाल सकते हैं। वही, जे जड़जीव कुटिल, कायर, खल, केवल कलिमल साने' होनेपर भी हमपर ऐसा रोब गांठे हुए हैं कि—'सूखत बदन प्रशंसत तिन्ह कहं हरि ते अधिक करि जानें।" वही, मर्म समझकर जिनके कुकर्म देखनेसे हाल चाल हेरि होति हिये घनी घिन!' वही जिनकी शैतानियतकी तरफ इशारा करते हुए उस्ताद 'गालिब'ने फर्माया हैं कि 'आदमीको भी मयस्सर नहीं इन्सां होना।' वही, जिनकी आंखोंमें घुसे बम्बको बतलाइये तो कहते हैं कि वह तो हमारी व्यक्तिगत बात है, नजर कोई न लगाये। वही, जिनको हमें अच्छी तरह समझा देना चाहिये कि हमारी संस्कृति या समाजमें 'व्यक्तिगत' या 'परसनल' नामकी कोई ऐसी चीज नहीं जिससे लोगोंकी छातीपर कोदो दला जा सके। वही, जिनकी आंखों के आगे निकट भविष्य (अगले चुनाव तक ही) 'तुलसी'की यह चौपाई वज्राक्षरोंमें नाचनेवाली है कि —'उघरे अन्त न होहि निबाहू।' वही, जिनके प्रसंगमें गोस्वामीजीने भगवान रामके मुंहसे कहलाया है—

काम, क्रोध, मद लोभ, परायन,
निर्दय, कपटी, कुटिल, मलायन।
झूठइ लेना, झूठइ देना,
झूठइ भोजन, झूठ चबेना।
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा,
खाइ महा अहि हृदय कठोरा।
लोभइ ओढ़न लोभइ डासन,
सिस्नोदर पर जमपुर त्रासन
ऐसे अधम मनुज खल,
कृतजुग त्रेता नाहिं,
द्वापर कछुक—वृन्दबहु—
होइहिं कलिजुग माहिं।

करहिं मोहबस नर अघ नाना,
स्वारथ रत परलोक नसाना।
कालरूप तिन कहं मैं भ्राता,
सुभ अरु असुभ कर्मफल दाता।

सो, वेद कह्यो, बुध कहत हैं, अरु हौंहुं कहत हौं हेरि' कि वर्त्तमान रंगकी 'व्यक्तिगत' बातें आर्य नहीं हैं, केवल माया है जिसे हमने बिरंगी विदेशियोंसे सीखी हैं। यह 'परसनल'-प्रणाली जबतक रुकेगी नहीं, तबतक रामराज्य या सुराज्य की दिल्ली 'बिसमार दूरस्त' मानिये। इस कुचालको शीघ्रातिशीघ्र तजने हीमें सबकी भलाई है। और जो शठ हठवश न छोड़ें उनसे बरबस छुड़ानेमें ही। इसी सिद्धान्त-से मेरे हाथमें जब भी कोई बिचारपत्र आता है, निर्भीक भावसे व्यक्तिगत बातों को भी जनमतकी अदालतमें पसोपेशहीन पेश कर देता हूं। क्योंकि अन्तमें व्यक्ति गत कुछ भी नहीं रह सकता। डूबकर जो निगलता है, जरूर उसके गलेमें मछली अटकती हैं। पानीमेंका हगा बड़े बेगसे ऊपर आता ही है। मेरे मनमें तो सुविधा मिलते ही 'व्यक्तिगत' नामक एक पत्र प्रकाशित करनेकी बलवती इच्छा है जिसमें 'जुबाने खलकको नक्कारए खुदा'की तरह धड़धड़ाकर धमका दिया जा सके। गा दिया जा सके ललकार कर 'काष्ठजिह्वा' स्वामीका यह पद कि :

कोई साफ न देखा दिलका
सांचा बना झिलमिल का!
कोइ बगला कोइ बिल्ली देखी
धरे फकीरी खिलका
बाहर गोरा ज्ञान छांटते
अन्दर कोरा छिलका!
पढ़े लिखे कुछ ऐसे तैसे
बड़ा घमण्ड अकिलका
जहरी-सखुनें मुखसे बोलें
मसल सांपके बिलका!
राम-भजनमें बड़े आलसी
मानो मरा मंजिलका
औरोंके पीसनेमें सुरमां
पटतर लोढ़ा-सिलका!

——

गांधी विचार धारा

(१९ वें पृष्ठका शेषांश)

को मैं छोड़ नहीं सकता। क्योंकि अंग्रेज लोग और अंग्रेजीके विद्वान हिन्दुस्तानी लोग मानते हैं कि मेरी अंग्रेजीमें कुछ खूबी है। पश्चिमके साथ मेरा सम्बन्ध भी बढ़ रहा है। मुझमें अंग्रेजोंका या दूसरे पश्चिमी लोगोंका द्वेष न कभी था न आज है। उनका कल्याण मुझे उतना ही प्रिय है जितना कि हमारे देशका। इसलिये मेरे छोटेसे ज्ञान-भण्डार में से अंग्रेजी भाषाका बहिष्कार कभी नहीं होगा।। मैं उस भाषाको भूलना नहीं चाहता न चाहता हूं कि सारे हिन्दुस्तानी अंग्रेजी भाषाको छोड़ें या भूलें। मेरा आग्रह हमेशा अंग्रेजीकी उसकी योग्य जगहसे बाहर न ले जानेका रहा है। वह कभी राष्ट्रभाषा न बन सकती और न हमारी तालीमका जरिया। ऐसा करके हमने अपनी भाषाको कंगाल बना रखा है। विद्यार्थियों पर हमने बड़ा बोझ डाला है। यह करुण दृश्य जहां तक मुझे इल्म है, सिर्फ हिन्दुस्तानमें ही देखा जाता है। इस भाषाकी गुलामीने हमारे करोड़ों लोगोंको बहुतेरे ज्ञानसे बरसों तक वंचित रखा है। इसकी हमें न समझ है, न शरम न पछतावा! यह कैसी बात? यह सब साफ साफ जानते हुए भी मैं अंग्रेजी भाषाका बहिष्कार नहीं सह सकता। जैसे तामिल आदि सूबाई भाषायें हैं और हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा ठीक इसी तरह अंग्रेजी विश्व भाषा है—जगतकी भाषा है, इसे कौन इंकार कर सकता है? अंग्रेजोंका साम्राज्य जायगा क्योंकि वह दूषित था और है, लेकिन अंग्रेजी भाषा का साम्राज्य कभी नहीं जा सकता।

मुझे ऐसा लगता है कि गुजराती भाषामें या अंग्रेजी भाषामें मैं कुछ भी लिखूं, तो भी अंग्रेजी हरिजन और गुजराती हरिजन बंधु अपने ठौरों खड़े रहेंगे।

———

हैदराबाद

(१५ वें पृष्ठका शेषांश)

बाले पड़ोसी प्रान्त तथा हमारी भारतीय सरकार उनकी परिचित भाषाका व्यवहार न करेंगे तो इन दुर्वृत्त फासिस्टोंके हौसले इतने बढ़ जायंगे कि आगे चलकर उनको पस्त करना कठिन काम हो जायेगा। कहा जा सकता है कि वह कौन सी भाषा है जो इत्तिहादुल मुसलमीन और निजामके अधिकारी समझेंगे। हमारा स्पष्ट उत्तर है कि इस तरहकी स्थितियों में हम बराबर संघर्ष अर्थात सत्याग्रह द्वारा दुर्वृत्तोंको जवाब देते आये हैं। आज समय आया है जब हम हैदराबादमें धुंआधार सत्याग्रह छेड़कर, सरकारके साथ पूरा असहयोग करके, टैक्स और लगान बंदी करके हैदराबादके जालिम शासनको पंगु बना दें। कहा जा सकता है कि सत्याग्रह चल तो रहा है और प्रतिदिन वहां सत्याग्रही गिरफ्तार किये जा रहे हैं उनके ऊपर लाठियां और गोलियां बरसायी जाती हैं। किन्तु अभी यह सत्याग्रह आन्दोलन सीमित दायरे में है। इसे व्यापक बनाना होगा। राज्यके सभी वर्गोंको अपने स्वार्थोंसे ऊपर उठकर सत्याग्रहमें भाग लेना चाहिये और राज्य के बाहरी लोगोंको भी अपनी सक्रिय सहानुभूति दिखा कर आंदोलनको व्यापक बनाना होगा। यदि हम यह नहीं कर सकते तो हैदराबादका भविष्य अच्छा नहीं है और इसका परिणाम भारतके लिये भी वांछनीय नहीं होगा।

—*

साप्ताहिक विश्वामित्र
—: की :—
एजेन्सी
लेकर लाभ उठाइये।

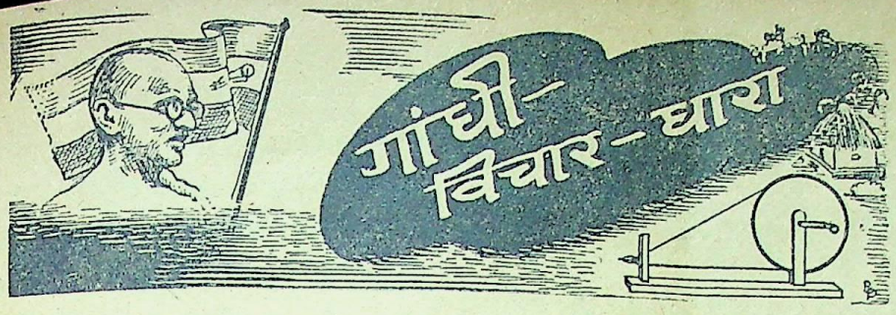

एक भाई लिखते हैं: —

"उर्दू 'हरिजनके बारेमें आपका लेख देखा। यदि वह आपका लिखा न होता, तो मैं यही समझता कि किसीने बहुत ही क्रोधमें लिखा है। जीवणजी भाई ने जो कुछ लिखा है, उससे सिर्फ यही साबित होता है कि लोगोंको उर्दू लिपि में हरिजन'की जरूरत नहीं है। पर आप उसके कारण नागरी 'हरिजनसेवक' को क्यों बन्द करें? क्या आपसमझते हैं कि पहले हिन्दी'नवजीवन निकालते थे,उर्दू नहीं) तब कोई गुनाह करते थे? उसके बाद भी नागरी 'हरिजनसेवक निकलता रहा पर आपने उर्दू हरिजन उस समय नहीं निकाला।

अगर आपने उर्दू और नागरी हरिजन केवल हिन्दुस्तानीका प्रचार रखनेके लिये निकाला होता, तो बात ठीक थी। पर नागरी हरिजनसेवक पहलेसे ही निकल रहा है। उसमें घाटा हो तो आप भले ही बन्द करें। आपने जो चेतावनी नागरी हरिजन सेवक बन्द करनेकी दी है। उसमें मुझे एक प्रकारका बलात्कार लगता है।"

जो बात वाकई सही है। वह अगर कहीं जाय तो उसे क्रोध मानना, शब्दका सही प्रयोग नहीं होगा। क्रोधमें आदमी बेतुका काम कर लेता है। अगर उर्दू हरिजन बन्द करना पड़ा तो साथ साथ नागरी भी बन्द करना लाजमी यानी आवश्यक हो जाता है। लाजमी बात करनेमें क्रोध कैसा? जिसे मैं लाजमी समझूं उसे दूसरे न भी समझें जैसे कि इस पत्रके लेखक। उससे मुझे क्या? हम जिसे लाजमी मानें वही सारा जगत भी माने ऐसा हो तो अच्छा है। लेकिन ऐसा होता नहीं है। हर चीजके कमसे-कम दो पहलू होते ही हैं।

अब यह बतानेका रहा कि एकको छोड़ें या दोनोंको। यह ठीक है कि जब मैंने नागरीमें नवजीवन निकाला और हरिजन निकालना शुरू किया, तब दोनों लिपिकी चर्चा नहीं थी। अगर थी तो मुझे उसका पता नहीं था।

बीचमें स्व० भाई जमनालालजीकी इच्छासे हिन्दुस्तानी प्रचार सभा कायम हुई। इससे उर्दू रिसाला निकालना लाजमी हो गया। अब माना कि उर्दू रिसाला बन्द हो और नागरी निकलता रहे तो यह मेरी निगाहमें बड़ा ही अनुचित होगा। क्योंकि हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके हिन्दुस्तानीके मानी यह हैं कि वह जैसी नागरी लिपिमें लिखी जाती है वैसे ही उर्दू लिपिमें भी लिखी जा सकती है।

इसलिये जो अखबार दोनों लिपिमें निकलता था। उसे ऐसे ही निकलना चाहिये। वह भी एक ऐसे मौके पर जब कि हिंदके लोग चारों ओरसे कह रहे हैं कि राष्ट्रभाषा हिन्दी ही है और वह नागरी लिपिमें ही लिखी जाय। यह विचार ठीक नहीं है। यह बताना मेरा काम हो जाता है। यह दलील अगर ठीक है। तो मेरा कर्तव्य हो जाता है कि मैं नागरी लिपिके साथ मैं उर्दू लिपि रखूं और न रखूं तो मुझे उर्दू हरिजनसेवकके साथ नागरी हरिजनसेवकका भी त्याग करना चाहिये।

लिपिमें मैं सबसे आला दरजेकी लिपि नागरीको ही मानता हूं। यह कोई छिपी बात नहीं है। यहां तककी मैंने दक्षिण अफ्रीकासे गुजराती लिपिके बदलेमें नागरी लिपिमें गुजराती खत लिखना शुरू किया था। इसे मैं समय न मिलनेके कारण आज तक पूरा न कर सका। नागरी लिपिमें भी सुधारके लिये गुंजाइश है, जैसे कि करीब करीब सब लिपिमें है। लेकिन यह दूसरा विषय हो जाता है। यह इशारा जो मैंने किया है सो यह बतानेके लिये कि नागरी लिपिका विरोध मेरे मनमें जरा भी नहीं है। लेकिन जब नागरीके पक्षपाती उर्दू लिपिका विरोध करते हैं। तब उसमें मुझे द्वेषकी और असहिष्णुता यानी तअस्सुबकी बू आती है। विरोधियोंमें इतना भी आत्म—विश्वास नहीं है कि नागरी लिपि यदि सम्पूर्ण है—दूसरी लिपियोंके मुकाबलेमें पूर्ण है तो उसी का साम्राज्य अन्तमें होगा। इस निगाहसे देखा जाय तो मेरा फैसला निर्दोष लगना चाहिये और जरूरी भी।

हिन्दुस्तानीके बारेमें मेरा पक्षपात है सही। मैं मानता हूं कि नागरी और उर्दू लिपिके बीच अन्तमें जीत नागरी लिपिकी ही होगी। इसी तरह लिपिका खयाल छोड़कर भाषाका ही खयाल करें। तो जीत हिन्दुस्तानीकी ही होगी। क्योंकि संस्कृतमयी हिन्दी बिलकुल बनावटी है और हिन्दुस्तानी बिलकुल स्वाभाविक। उसी तरह फारसीमयी उर्दू अस्वाभाविक और बनावटी है।

नामका झगड़ा मुझे बिलकुल पसंद नहीं है। नाम कुछ भी हो लेकिन काम ऐसा हो कि जिससे सारे राष्ट्रका—मुल्कका—देशका कल्याण हो। उसमें किसी भी नामका द्वेष होना ही नहीं चाहिये।

सारे जहांसे अच्छा हिन्दोस्तां हमारा इकबालके इस वचनको सुनकर किस हिंदुस्तानीका दिल नहीं उछलेगा? अगर न उछले तो मै उसे कमनसीब समझूंगा। इकबालके इस वचनको मैं हिंदी कहूं कि हिन्दुस्तानी कहूं या उर्दू? कौन कह सकता है कि इसमें राष्ट्र भाषा नहीं भरी है। इसमें मिठास नहीं है। विचारकी बुजुर्गी नहीं है? भले ही इस विचारके साथ आज मैं अकेला होऊं यह साफ है कि जीत कभी संस्कृतमयी हिंदीकी होने वाली नहीं है। न फारसी मयी उर्दूकी। जीत तो हिंदुस्तानीकी ही हो सकती है। जब हम अंदरूनी द्वेषभावको भूलेंगे तब ही हम इस बनावटी झगड़ेको भूल जायंगे। उससे शरमिंदा होंगे।

अब रही अंग्रेजी हरिजनकी बात जिसे मैं छोटी बात मानता हूं। अंग्रेजी हरिजन

हास्यरसकी कहानी—

"प्रोग्राम"

ले०—सरयू पण्डा गौड़

"अरे यार पांड़े उस मरदूदके यहां डेक्ची मलते मलते हाथोंके परतके परत चाम उड़ गये, पर मजमून वही रहा। "ढाकके तीन पातके तीन पात!" अब्दुल कम्बख्तके जिस्मपर न कभी वगैर पेवन्द के एक कुर्तातक चढ़ा न कभी पेट भरा। अब तबियत ऊब गयी है इस शैतानकी नौकरीसे।

पांड़े बोले - अरे यार अब्दुल, वही हाल तो इधर भी है। बटुलेके बटुले भात रांधते रांधते प्राण नाकपर आ गये। मिर्च से भी बदतर धुंआंके अम्बारमें आंखें फाड़ फाड़ ताकते, रोशनीने जवाब दे दिया शामको ही नहीं सूझता। फिर भी उलाहना 'पांड़े बड़ा सुस्त है।"

अब्दुल—और सुनो, हमारे व अपने दोनोंके मालिको की गद्दारी, दोनों बनते कौमपरस्त हैं। लड़ते गरीबो के लिये हैं। पर घरमें जितना जुर्म ये हम गरीबोंपर करते हैं, जिस सभामें ये लेक्चर दे रहे हों, अगर हम भी इनकी करनी सुनाने लग जायें तो फिर इतना थूक पड़े इनपर कि उसीमें डूब मरें।

पांड़े—और क्या! मगर सुनो यार, इसमें अपनी भी मूर्खता कम नहीं है। हमने अपनी उन्नतिके लिये उद्योग ही क्या किया। बराबर गुलामीकी सड़ी लाश पर गीधकी तरह नजर लगाये रहे।

अब्दुल— तो इसके सिवा तुम करते क्या? रोजगारके लिये पैसे चाहिये और पैसेके नामपर हमारे तुम्हारे—बाप विरासतमें दे गये दो मिट्टीके मटके दो पीतलके थाल और कपड़ेके नाम कुछ चिथड़े! इतनी दौलतसे तो तुम चूरण भी नहीं बेच सकते।

पांड़े—हमारे तुम्हारे मालिकके पास कौन पैसा था—जो उनके घर कंचनका मेह बरस रहा है।

अब्दुल—और लीडरीकी पूंजी! जानते हो म्यां, आजकल इस पूंजीके सामने बड़े धनकुबेर धम्मसे कदमों पर गिरते हैं।

पांड़े—तो भई हम लीडर कैसे हो सकते हैं? लीडरीको तुम वैसा सस्ता मत समझो, उन्होंने बड़ा बड़ा बलिदान किया है तब वे आज लीडर हुए हैं।

अब्दुल—[illegible] मुश्किल किस[illegible] काममें नहीं है, बताओ! तुम भात पकाते हो। मैं डेक्ची मलता हूं, इसमें कम तकलीफ है। होगा यह काम लीडरोंसे!

पांड़े हंसे—बोले—अरे लीडर भात नहीं पकाते, वे देश सेवा करते हैं। जहालतकी बात काहे करते हो।

अब्दुल गरजकर बोला—जाहिल तुम हो और तुम्हारे बाप। तुम्हारे लीडर जैसी देशसेवा करते हैं, दुनियां जानती है।

पांड़े—गालियां मत बको। बात आदमियतसे करो। अच्छा तुम बनो लीडर। कहो हमारी क्या मदद चाहिये।

* * *

सातवें दिन शहरमें हल्ला पड़ा। अखबारोंमें मोटे मोटे शीर्षक देकर संवाद छपा।

'शाही मस्जिद नापाक।
हराम मस्जिदमें फेंका गया।

दीने इस्लामका सच्चा सेवक गाजी अब्दुल गफूर सख्त घायल!

'-खबर है, यहांके एक हिन्दू नेता का रसोइया शाही मस्जिदमें मरा सुअर का बच्चा रातको ग्यारह बजे फेंक रहा था। गाजी अब्दुल गफूर साहेब उस वक्त मस्जिदमें नमाज अदा कर रहे थे। वे उसे पकड़ने दौड़े तो उसने उनपर छुरेके सत्रह वार किये। इस्लामका यह सच्चा सपूत सख्त घायल हुआ। इस वक्त जनाब गाजी साहेब अस्पताल में हैं। मुसलमानों अपना फर्ज अदा करो।"

जनरल अस्पताल भीड़से भर गया। शहरके बड़े बड़े मुसलमान उनके दर्शनको दौड़े। अस्पतालका सहनतक फूलोंसे ढंक गया। अंगूर, सेव, बेदाने, व अखरोट, पिश्ता, किसमिश टोकरेके टोकरे पहुंचने लगे। नवाब साहेबके नाती पंखा झलने लगे। शाही मस्जिदके पेशे इमाम दोनों हाथ उठाकर सेहतके लिये दोआ पढ़ने लगे। अजीब हंगामा हो गया। कोई बलायें लेता। कोई औंछ औंछ कर खैरात करता। शहरकी सारी मुस्लिम दूकानें बंद रहीं और शामको मुसलमानों की एक बड़ी विराट सभा हुई। जिसमें कहा गया—'हम जानते हैं, हमारे हिंदू भाइयोंका कैसा ख्याल हमसे है। हम वे फूटी आंखों देखना नहीं चाहते। ऊपर से वे शांति शांति रूर चिल्लाते हैं। एक जवाब देह हिंदू लीडरका महज—रसोइया ऐसी जुर्रतपर अमादा हो गया, यह जेरतजवीज है। और सबसे बड़ी ताज्जुब की बात, यह कि मुजरिम अबतक गिरफ्तार न किया गया, इसमें जरूर कुछ राज है।'

इस संवादने मुस्लिम जनतामें आग का काम किया। सारा वातावरण दूषित एवम् त्रासदायक हो गया। हरक्षण यह खटका बना रहता, अब कहींसे खबर आयी फलां मुहल्लेमें दङ्गा हो गया।" शहरकी सारी दूकानें हिन्दू मुस्लिम दोनों की सरे शाम बन्द होने लगीं। सब भयसे अगल बगल ताक झांक कर सावधानी से चलने लगे। दोनों जातियों का दोनों जातिके लोगों पर से विश्वास उठ गया। भरोसा उठ गया। दूसरे दिन सुबह वह पांड़े रसोइया गिरफ्तार कर लिया गया। पर थानेमें जो उसने अपना बयान दिया उससे सारी हिन्दू जनता विक्षुब्ध हो उठी। उसने एक पत्र दिखलाया जो परसों शामको एक अपरिचित व्यक्तिने उसे यह कह कर दिया कि 'पत्र तुम्हारे गांवका है।" पत्रमें लिखा था, तुम अपने मालिक बाबू महेश्वर प्रसादको खानेमें जहर दे दो, तुम्हें मुंहमांगा इनाम दिया जायगा नहीं—एक ऐसे-बड़े मुकदमेमें फंसा दिये जाओगे कि सात सालसे कम न जाओगे।" फिर रसोइयेने जबानी बयान-दिया—और हम घटनाके दिन यहां थे कहां, हम तो .....साहिब मिनिस्टरके घर दावतमें भात रांधने गये थे। सारा दिन सारी रात वहां रहे।

यह एक ऐसा बयान था, जिसने सारे हिन्दूओंका माथा खराब कर दिया। हिन्दू पत्रने प्रथम पृष्ठके मुख पर बहुत बड़ा टाइप लगा कर छापा—

गधेकी गठरी गौकी पीठ पर!
निर्दोष ब्राह्मण व्यर्थ गिरफ्तार!
मिनिस्टर साहिब, स्थिति स्पष्ट करें।

हम बहुत दिनोंसे कहते आ रहे हैं, हमारे प्रांतके इस्लामी भाइयोंकी मंशा ठीक नहीं है, आखिर हमारी बात सच

निकली। एक लीगी लीडरकी डेकची साफ करने वालेकी बात-पर, गौर जांच पड़ताल, हमारे मुसलिम भाई यों जामे से बाहर हो गये, मानो कहर-हो गया। यों हंगामा किया कि सारे शहरका ही नहीं प्रांतका वायुमंडल तक विषाक्त हो गया। खैर जो हो, हम हिन्दू जनतासे यही अपील करेंगे, वह शांति और धैर्यसे-अपना कर्तव्य-पालन करें। सम्प्रति उनका धर्म यह है, इस अभियोगकी पैरवी खूब जमकरकी जाय, और उस निर्दोष दीन ब्राह्मणके दुखी परिवारकी खबर-लीजिये। हमने एक "सहायता फंड" खोला है। जिसमें हमारे कार्यालयसे १०१ रुपया दिया जा चुका है। जो सज्जन इसमें दान देंगे उनके नाम हम छापा करेंगे।

और उसी दिन रातको मियां खैरू फल वालेकी दूकानकी टट्टीको एक सांढ़ ने बुरी तरह हुरपेट दिया। टट्टी बांस की थी, टुकड़े २ हो सड़क पर बिखर गई नारंगी और सेवकी टोकरियां भी सड़कों पर फैल गईं। हड़बड़ाये मियां खैरू उठे एकाएक चीख पड़े। "दौड़ो-दौड़ो बचाओ-बचाओ हमारी दकान लूट रही है।" हिन्दू तो निकले नहीं निकले मुसलमान और दौड़े कुछ पुलिसके जवान पर वहां तो आदमी था नहीं था सांड़ जो आदमियोंका काफला देखकर चलता बना। खैरूके जवान लड़के-जोश और क्रोधमें थे, उन्होंने दो लट्ठ सांड़को मार दिया। सांड़ भगा तो, सामनेकी दूकान से-चौथूमल मारवाड़ी चीख उठ—गो हत्या होय रह्यो हैं। दौड़ो-दौड़ो।

गो हत्याके नाम पर ऐसा कौन पतित हिन्दू होगा जो न जुटेगा। डंडे लाठी लिये' महावीरजीकी जय।' पुकारते हिन्दू जुट गये! लाठियां चलने को ही थी कि एक दस्ता "आर्म पुलिस" आ गई। भीड़ भाग गई। पकड़े गये मियां खैरू उनके दोनों लड़के और चौथूमल मारवाड़ी। शहरमें "कर्फ्यू" हो गया।

सुबह हिन्दू-मुस्लिम पेपरोंका रंग निराला रहा। "लूट" और" गो-हत्याका समाचार खूब रंग चढ़ाकर छापा गया।

उधर "अब्दुल व नाम पांडे" केसकी पेशीके दिन दोनों दलोंकी तैयारी व लीडर परस्ती देखने लायक थी। उधर अस्पताल खचाखच भरा हुआ था, इधर जेल द्वार का सारा मैदान। फूलका क्या पूछना। वैसा फूल-हार देवताओंको भी नसीब न हुआ होगा। मियां अब्दुल खाटपर लोटे 'कोर्ट' गये। फूलोंसे लदे "गाजी अब्दुल गफूर जिन्दाबाद" के नारोंसे ढंके। पांडे पैदल गये, मालाओंसे तुपे, 'जयकार' के स्वरोंसे फूले। दोनों लीडरोंकी गम्भीरता गम्भीर मुस्कान! गम्भीर अभिवादन स्वीकार, गम्भीर पादप्रक्षेप दर्शनीय था। कचहरीका सारा कमरा ही नहीं, वाराण्डा और मैदानतक ठसाठस भरा था। मिलिटरीका पहरा था और मुकदमेके बारेमें आपसमें बात करना सख्त मना था।

मियां अब्दुलके बयानके बाद जिरह शुरु हुई—आप तो मुद्दालेको बहुत दिनों से जानते पहचानते हैं?

अब्दुल जी नहीं, मुतलक नहीं।

जिरह—हाट बाटमें भी नहीं देखा कभी?

अब्दुल—जी कभी नहीं।

जिरह—नमाज आप पांचों वक्त पढ़ते हैं?

अब्दुल जी हां।

जिरह—कितने दिनोंसे।

अब्दुल—जबसे समझा नमाज क्या है।

जिरह—आप पढ़े लिखे भी हैं?

अब्दुल—जी नहीं।

जिरह नाम लिखने भर भी नहीं।

अब्दुल—जी नहीं।

जिरह—आप मौलवी....साहबके यहां कौन काम करते हैं?

इसपर अब्दुलके वकीलने कोर्टसे प्रार्थना की—हुजूर केसके मुतल्लिक कुछ न पूछ कर फजूल कोर्टका वक्त नुकसान किया जाता है।

जिरह—अच्छा! आप जो उस दिन शाही मस्जिदमें नमाज पढ़ने गये थे, क्या वक्त होगा?

अब्दुल—करीब ग्यारहका।

जिरह—दिन!

अब्दुल—हां।

अब्दुलका वकील घबराकर बोला—दिन! समझकर जवाब दो। वाकया दिन को हुआ?

अब्दुल घबराकर—नहीं, नहीं, रात को।

पांडेका बकील कोर्टसे बोला—हुजूर बेहतर होता "माई लर्नेड फ्रेण्ड" ही कटघरेमें आ जाते, अपने मुवक्किलकी जगह पर। हुजूर हमारे इतराजको दर्ज कर लिया जाये।

कोर्टने अब्दुलके वकीलके हस्तक्षेप को लिख लिया और आइन्दा ऐसा करने से मना कर दिया।

जिरह—हां मौलवी साहेब, वह ग्यारह बजे दिनका ही वक्त था, तभी तो आपने मुद्दालेको पहचाना। रातमें कैसे जानते कौन है। रातमें तो पहचाना हुआ आदमी भी नहीं पहचाना जा सकता।

अब्दुल—जी।

जिरह—जी क्या, वक्त तो ग्यारह बजे दिन ही था न जब मुद्दई मरा हुआ सूअरका बच्चा शाही मस्जिदमें फेंक आया। आपने इसे पकड़ा, शोर किया, पर आया कोई नहीं। यह भाग गया।

अब्दुल—जी।

जिरह खतम हो गई और जिरहके साथ 'केस' भी। सारे मुस्लिम समाजमें अब्दुलके नाम गालियां दी गईं। उर्दू पेपरने उसे गद्दार, काफिर, गुलाम दिमाग और पैसोंपर दीन बेचनेवाला कहा। पांडे की जय जयकार हुई। हिन्दू पेपरने इनका चित्र छापा और मुस्लिम समाज और 'समाचार पत्र' पर दिल खोलकर कीचड़ उछाले।

मियां खैरू और चोथूमल मारवाड़ीसे एक-एक वर्षकी नेकचलनीके लिये दो-दो हजार रुपएकी जमानत हुई।

मियां अब्दुल और पांडेने अपना अपना एक बड़ा भड़कीला 'होटल' खोल दिया। और कुछ दिनोंके बाद इन साहिबों के 'प्रोग्राम' सारी जनताको मालूम हो गया और जनताने इन 'समाचार पत्र' वालोंको खूब जली-कटी सुनाई। जो बराबर जनताको वास्तविकतासे दूर रख कर आगमें घी डालते रहे।

वह रोग जो भारतको खा रहा है

लेखक—श्री सन्तराम, बी० ए०

सचाई कभी कभी कड़वी होती है. उतनी ही कड़वी जितनी कि कुनाइनकी गोली। पर यदि भारतमें स्वतंत्रता और शांति रखनेकी आवश्यकता है तो सचाईको प्रकट करना अनिवार्य है। ७ वीं शताब्दीमें मुहम्मद बिन कासिमके सिंध देशपर आक्रमणसे लेकर आजतक भारतका पग सदा पीछे और पीछे ही हटता आया है, ९ वीं शताब्दीमें काबुल में हिंदू राजे राज्य करते थे, पर आज लाहौरमें भी आगे तकका समूचा प्रदेश इस्लामके पेटमें चला गया है। भारतीय लोग अपेक्षाकृत अधिक विद्वान, सदाचारी, तत्वदर्शी और रणबीर होते हुए भी अपढ़, असभ्य और उजड्ड मुसलमानों से सदा हार खाते रहे इसका क्या कारण है? बात असलमें यह है कि भारतकी हारोंका कारण उसके सैनिकों की कायरता नहीं, वरन भारतीय सेनापतियोंकी अयोग्यता है। हमारे राजपूत, डोगरे, सिख, जाट सैनिक वीरतामें अपनी उपमा नहीं रखते। संसारका कोई भी राष्ट्र इनपर गर्व कर सकता है। पर ये वीर सैनिक अपने देशको दासतासे मुक्त न कर सके। इसका कारण आपको एक घटनासे पता लग जायगा। पहले अंगरेजोंने यू० पी० के लोगोंकी सेनासे पंजाबके सिखोंको विजय किया, बाद को सन १८५७ के विद्रोहमें अंगरेजोंने सिखोंकी सेनासे उन्हीं यू० पी० वालोंको परास्त किया। कहनेका तात्पर्य यह कि जिस सेनाका सेनानायक अंगरेज होता था वही विजयी होती थी। हाथी और सांड़ मनुष्यसे कहीं अधिक बलवान होते हैं, पर मनुष्य अपनी बुद्धिसे उनको काबू करके अपना काम करा लेता है। उसी प्रकार अंगरेज सेनानायक राजपूतों सिखों और गोरखोंसे काम लेते रहे हैं। यदि हमारे देशका नेतृत्व सदोष न होता, यदि वह योग्य एवं दीर्घदर्शी होता तो देशके विभाजनसे आज देशका—क्या हिंदू और क्या मुसलमानका—ऐसा विनाश न होता। पहले तो पाकिस्तान बननेकी नौबत ही न आती, फिर यदि पाकिस्तान बनता भी तो जनताको इतनी धन जनहानि न होती। योग्य नेता देख सकते कि मुस्लिम प्रजाके भीतर कौन भावनाएं काम कर रही हैं और कि विभाजनसे कैसे भयंकर उपद्रव खड़े हो जायंगे। ऐसी दशामें वे पुलिस और सेना का विभाजन तब करते जब पाकिस्तान और भारतकी हिन्दू मुस्लिम प्रजा शांतिपूर्वक स्थानान्तर कर चुकती। यदि पाकिस्तानमें हिन्दू पुलिस और सेना होती और भारतमें मुस्लिम पुलिस और सेना होती तो कभी इस प्रकारकी धन जन हानि न हो पाती। बड़े आरामसे इधरसे उधर चले जाते। पर नहीं, हमारे नेता इस विपत्तिका अनुमान नहीं कर सके। इसके विपरीत अंगरेज नेताओंको देखिये। अभीसे रूसको पैर फैलानेसे रोकनेके लिये क्या क्या चालें चल रहे हैं। काश्मीरका उपद्रव भी उनकी इसी चालका एक भाग प्रतीत होता है। इसका कारण यह नहीं कि अंगरेजोंको कोई जादू आता है या भारतीयोंको अंगरेजोंने अनुभवी सेनापति नहीं बनने दिया, क्योंकि अंगरेजोंके पूर्व महाराजा रणजीत सिंहको भी अपनी सेनाके लिये फरांसीस सेनापति रखने पड़े थे। हमारे यहां विजयी सेनानायक उत्पन्न न होने का कारण हमारी सदोष सामाजिक व्यवस्था है। हिंदुओंकी जात पांतने मानवी गुणोंको एक दूसरेसे पृथक करके भिन्न भिन्न जातियों और उपजातियोंमें पूंजीभूत कर दिया है। इसके कारण हमारा ब्राह्मण विद्वान पर साथ ही घमण्डी, हमारा क्षत्रिय वीर पर साथ ही अदूरदर्शी, हमारा वैश्य व्यापार कुशल पर साथ ही कायर हमारा शूद्र परिश्रमी पर साथ ही सभी मानवी भावोंसे शून्य बना दिया गया है। विजयी सेनानायक बननेके लिये मनुष्यमें केवल वीरता ही नहीं उसके साथ दूरदर्शिताका होना भी परम आवश्यक है। पर जात पांत दो वर्णोंके परस्पर बेटी व्यवहारका निषेध करती है। इस लिये एक व्यक्तिमें वीरता और दूरदर्शिता दोनों गुण इकट्ठे नहीं हो पाते। बस, इसीसे हमारे राजपूत और गोरखे प्राणोंकी ममता को छोड़कर लड़ने वाले योद्धा तो बन सके हैं पर विजय पानेवाले सेनापति नहीं। जाति भेदको माननेवाला समाज गांधी, जवाहरलाल और राजगोलाचार्य तो उत्पन्न कर सकता है, पर चर्चिल और माउण्ट बैटन नहीं, जो चतुर राजनीतिज्ञ होनेके साथ साथ सफल सेनानायक भी हैं। भारतके इस राष्ट्रीय दोष को दूर करनेके लिये जाति-भेदको मिटाना अनिवार्य है। यदि इस दोषको दूर न किया गया तो हम भारतीयोंके लिये इतिहास अपनी पुनरावृत्तिके नियमको बद नहीं कर देगा।

खेदका विषय है कि भारत सरकार इस घातक जाति भेदको मिटानेके बजाय ज्ञानतः या अज्ञानतः इसे स्थायी बनाने का ही यत्न करती है। पाकिस्तानमें छोड़ी हुई या नष्ट हुई सम्पत्तिका दावा दायर करने के लिये भारतीय सरकारने हिंदू शरणार्थियोंके लिये हालमें जो फार्म छपाये हैं उनमें एक कालम (४) जातिका भी रखा गया है। उस कालममें शरणार्थीको अपनी जाति लिखनी पड़ती है। मेरे जैसे व्यक्ति जो जात पांत तोड़क पण्डालका प्रधान है, जो गत २५ वर्षसे वाणी और लेखनी द्वारा जाति भेदके विरुद्ध प्रचार कर रहा है, और जिसने जात पांत तोड़ कर विवाह किया है, भला उस कालममें क्या लिख सकता है? यह जाति वाचक नाम किसी व्यक्ति को पहचाननेमें कुछ सहायता नहीं दे सकते, मान लीजिये कोई मनुष्य जातिमें नाई कहलाता है, पर है किसी कालेजमें प्रोफेसर अब आप उसे नाई नामसे कैसे ढूंढ़ सकते हैं? जनताको जन्ममें ऊंच-नीचके दुम-छल्ले नामके साथ लगाने पर बाध्य करना किसी सरकारके लिये कहां तक हितकर हो सकता है। कहने को तो कहा जाता है कि भारत सरकार जाति भेदके विरुद्ध है, पर उसका आच-

रण उसकी बात का समर्थन नहीं करता यदि वह जाति भेदको स्वीकार नहीं करती तो रेडियो और कांग्रेसी पत्रोंमें पण्डित गोविन्द वल्लभ पन्त, लाला देश बन्धु गुप्ता, ठाकुर रणजीत गोपाल चौधरी लहरी सिंह और श्री पृथ्वी सिंह आजाद क्यों कहा और लिखा जाता है ? खेद है, न तो गांधीजीने और न उनकी कांग्रेसने ही जाति भेदके राष्ट्र घातक प्रभावको समझा है। यदि समझा होता तो न पाकिस्तान बनता और न इतना रक्तपात होता। गांधीजीकी सबसे बड़ी भूल यह है कि वे समझते हैं कि सामाजिक एकता हो सकती है। उनके कोई तीस वर्षके प्रयत्नका फल साम्प्रदायिक एकताके बजाय साम्प्रदायिक कटुताकी वृद्धि और भारतकी अखण्डताके बजाय देशका विभाजन हुआ है। खेद है कि फिर भी वे नहींदेख सकते कि उनकी कार्य प्रणाली गलत है वे हठसे कहते जा रहे हैं कि हिन्दू और मुस्लिम दो नहीं एक राष्ट्र हैं। मालूम नहीं वे राष्ट्रकी परिभाषा क्या करते हैं यदि वे एक राष्ट्र होते, यदि सब भारत-वासियोंके सब प्रकारके हित एक होते, तो देशमें जाटस्थान सिख स्थान, राजस्थान, ब्राह्मण बाग अग्रवाला सभा और कायस्थ पाठशालाके नाम सुनने को न मिलता भारत-वासियोंके इस घातक दोषको दूर करनेके बजाय क्या कांग्रेस और क्या हिन्दू महासभा इस पर पर्दा डालनेका ही यत्न करती है। परिणाम यह है कि हाथमें आई हुई स्वतंत्रता भी बार बार हाथसे निकल जाती है।

गांधीजी और उनकी कांग्रेस समझती है कि देशवासियोंमें जातिभेद रहते हुए भी एकता हो सकती है। हिन्दू मुस्लिम एक दूसरेसे सामाजिक रूपसे अलग रहते हुए भी एक राष्ट्र बन सकते हैं। उनकी इस धारणाकी परीक्षा काश्मीर में अभी थोड़े दिनमें हो जायगी। शेख अब्दुल्ला कितने भी भले मनुष्य हों, जवाहरलालजी और गांधीजीका उनपर कितना भी विश्वास हो, पर काश्मीर प्रवासी हिन्दू सिख समझते हैं कि अब हमारा काश्मीरमें रहना भयावह है। अब्दुल्ला सरकार हाथमें सत्ता आ जानेपर किसी भी समय अंगूठा दिखाकर पाकिस्तानमें मिल सकती हैं। इसलिये वे काश्मीर छोड़ रहे हैं। जबतक काश्मीरमें हिन्दू और मुसलिमका सामाजिक भेद है, मुसलमानोंको दिन्दुओंके विरुद्ध किसी भी समय भड़काया जा सकता है। वर्तमान राजनीतिक एकताका आधार बिलकुल बोदा है। मुझे भय है कि हमारे नेताओंको अपनी हिमालय जैसी उस भूलका पता कहीं उस समय न लगे जब पानी पुलपरसे होकर निकल चुका हो। किसी राजाके लिये अपने रजवाड़ेमें अपने धर्मबंधुओंकी संख्या बढ़ाना ही अपनेको मजबूत करनेका सच्चा उपाय है। निजाम हैदराबाद भोपाल और बहावल रके मुस्लिम शासक इस बातको समझते हैं। पर काश्मीर नरेश और नेहरू सरकार नहीं। मेरा अभिप्राय: यह नहीं कि काश्मीरमें या भारतमें मुसलमानोंको बलात हिन्दू बनाया जाय। वास्तवमें, किसी हिन्दूको बलात् मुसलमान तो बनाया जा सकता है पर किसी मुसलमानको बलात् हिन्दू नहीं। मेरा तात्पर्य यह है कि जो मुसलमान स्वेच्छासे हिन्दू समाजमें आना चाहते हैं उनको रोटी-बेटी व्यवहार द्वारा अपनाने की सुविधाएं उपस्थित करनी चाहिये।

लोग कहते हैं कि महात्मा गांधी जातिभेदको मिटानेका काम इस कारण हाथमें नहीं लेते क्योंकि वे समझते हैं कि यह असम्भव है। एक बार उनसे पूछा भी गया था कि जब आप यह मानते हैं कि जातिभेदको मिटाये बिना अस्पृश्यताकी जड़ न कटेगी तो फिर आप जातिभेदको ही मिटानेपर क्यों नहीं बल देते। इसपर उन्होंने उत्तर दिया था कि यदि मैं ५० वर्ष और जीवित रहूं तब मैं इस कार्यको प्रारम्भ कर सकूंगा। पर मैं समझता हूं, महात्माजीने जातिभेद की दृढ़ताका गलत अन्दाजा किया है। जाति भेदका दुर्ग उतना सुदृढ़ नहीं जितना वे समझ रहे हैं। इसे सदा राजाश्रय प्राप्त रहा है—क्या हिन्दू राजत्वकालमें और क्या मुसलिम और ब्रिटिश शासनकालमें यदि इसे इस आश्रयसे वंचित कर दिया जाय तो यह एक दिनके लिये भी खड़ा न रह सके। मैंने अपने जीवनका सर्वोत्तम भाग इसके विरुद्ध प्रचारमें लगाया है। मैंने पुस्तिकाओं लेखों और व्याख्यानों द्वारा प्रचार किया है। इस दुर्गपर बम वर्षाके लिये २० वर्षतक उर्दूमें "क्रान्ति" नामक मासिक पत्रिकाका सम्पादन किया है। अपने अनुभवके आधारपर मैं कह सकता हूं कि हिन्दू समाज जातिभेदके रोगसे मुक्तिलाभ करने के लिये लालायित है। आवश्यकता केवल इस बातकी है कि इसके लिये एक प्रबल आन्दोलन चलाया जाय। मेरे जैसा साधन संबल विहीन व्यक्ति भी जब अपने परिश्रमसे हताश नहीं, तो गांधीजी जैसे धन-जन शक्ति सम्पन्न मनुष्यके लिये तो कुछ भी कठिन नहीं। वे जितना धन चरखा संघ और हिन्दुस्तानी तालीमसंघ जैसे कामोंपर खर्च करते हैं यदि उतना ही जात पांत तोड़नेके प्रचार पर करें तो सफलता निश्चित है। पञ्जाबमें उपद्रवके कारण मैं इस समय 'क्रान्ति' को चलानेमें असमर्थ हो गया हूं। 'क्रान्ति' का सारा रिकार्ड और रुपया पाकिस्तानमें पड़ा रह गया है। बहुत यत्न करने पर भी वह मुझे मिल नहीं रहा है। क्रान्ति' के वियोगसे व्यथित होकर एक सज्जनने हाल में जो पत्र मुझे लिखा है, वह मैं नीचे देता हूं। इससे जहां इस बातका पता लगता है कि पाकिस्तानके हिन्दुओं पर कैसी बीती है, वहां यह भी मालूम हो जाता है कि जात पांत तोड़क आन्दोलन को भी जनता कितना महत्व देती है।

१२३ नेपियर टाउन, जबलपुर २६ नवम्बर १९४७

मान्यवर श्री सन्तरामजी,

मैं आपका गुप्त भक्त हूं। 'क्रान्ति' पत्रिका बारह तेरह वर्षसे नियमित रूपमें पढ़ता हूं। मैं तहसील बादोवाल जिला

सियालकोटके अन्तर्गत गोता फतेहगढ़ नाम गांवका एक जमीन्दार था। सारी नगरी हमारे ही एक परिवार की थी। दूसरा व्यक्ति उसमें भागीदार न था। सन १९२९में मैट्रिक पास करके मैं लाहौर आ गया। वहां आर्यसमाज बच्छोवालीमें जात-पांत तोड़क मण्डलके वाद विवाद सुना करता था। उसी समयसे तबयितका झुकाव इसी ओर हो गया।

२५ अगस्तको पाकिस्तानका मजहबी तूफान आया। इस अविवेक विप्लवने प्रत्येकको कहींसे कहीं फेंक दिया। मैं अपने परिवार को कठिनाईसे निकाल सका। हम ठीक मृत्युके मुखमें थे। मेरा ११ वर्षका सबसे बड़ा लड़का जब मुहम्मदी तलवार चलनी शुरू हुई तो हमसे बिछुड़ गया। सात-आठ दिन बाद वह हमें हिन्दुस्तानमें आकर मिला। हम तीन दिन भूखे प्यासे रह कर पांच मीलके अन्तरपर नारोवाल कैम्पमें पहुंचे। कभी खेतोंमें छिपे रहते कभी जलोंको देखकर उलटा सफर करने लगते, रातको फिर कहीं खेतों में छिप जाते। जब हम डेरा बाबा नानक में पहुंचे तो हमारे पास एक रिस्ट वाच और चार आने पैसे थे जो मेरी नौवर्षीया कन्याकी जेबमें न मालूम कैसे बच कर आ गये थे। मुसलमानोंने हमारा सब कुछ छीन लिया। बच्चोंका पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यारसे किया था। मैं स्वयं बड़ा आराम पसन्द था। केवल जमीन्दारीकी देख रेख ही करनी होती थी। विभिन्न पत्र पत्रिकाएं आया करती थीं। आर्यसमाज के उत्सवों पर जात पांत तोड़क मन्डलके ट्रैक्ट मुफ्त बांटा करता था। आर्यसमाज में जात पांत को माननेवाला अंश बहुत अधिक था। पर वे मुझे ट्रैक्ट बांटनेसे रोक न सकते थे, क्योंकि मेरे बिना उनका काम न चलता था। मैंने गांवके ८५वर्षीय वर्नाक्यूलर मिडलको यत्न करके अंगरेजी मिडल बनवाया। पर मनकी कितनी अभिलाषाएं थीं जो मिट्टीमें मिल गईं।

मैं कोई बड़ा धनी होनेका दावा तो नहीं करता पर जीवनकी सभी सुविधायें मैं जमीन्दारीसे पूरी कर लिया करता था। सन्तानकी शिक्षामें मुझे बड़ी दिलचस्पी थी। यदि इधर हिन्दुस्तानमें मेरी रिश्तेदारियां न होतीं तो मानो जीवनका अन्त था। कैम्पोंकी दशा देख कर रोना आता है। मनमें एक साध रह गयी है कि आपको कभी गोतामें निमन्त्रण न दे सका, यद्यपि कई बार विचार आया था और एक बार अक्टूबरमें बुलानेका तो पक्का निश्चय कर रखा था।

मेरे मनमें आपके प्रति अपार श्रद्धा है। हृदय कभी आपको महात्मा कहता है कभी महर्षि। आप सचमुच सब कुछ हैं। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। ब्राह्मणी धर्मवाले लोग आर्यसमाज पर अधिकार जमा बैठे। उन लोगोंने आपके विचारोंका मूल्य न समझा। फलतः आज हमें यह दुर्दिन देखना पड़ा। मैं चाहता था कि आप पाकिस्तानसे सकुशल किसी जगह पहूंच गये हों। अन्तमें दिल्ली ट्रिब्यूनका एक पुराना अंक हाथ पड़ा। उससे आपका पता लगा। मनमें बहुत प्रसन्नता हुई। एक बार संकल्प भी किया कि महर्षिकी जन्म भूमिकी यात्रा करूं। पर उस दिन यात्रा करना बहुत कठिन हो रहा था। हिन्दू समाजको आपकी लेखनीकी बड़ी आवश्यकता है। ईश्वरसे प्रार्थना है कि आपको दीर्घायु प्रदान करें।

महात्मन, अब कार्यक्षेत्रमें आइए और दिल्लीको केन्द्र बनाकर देश भरमें प्रकाश फैलाइये। मैं पहले स्वतन्त्र था। अब युगकी विवशताओंके कारण प्रत्येक भाईसे अलग होकर इधर आ गया हूं। तबियत उदास है। मुहब्बत मातम कर रही है। आप जैसे महापुरुषोंकी संगति चाहता था, पर दूर हो गया हूं।

प्राचीन भारतके राजे फलित ज्योतिषियोंके प्रभावाधीन रहा करते थे। वे बेचारे इसी कारण भारतको हाथसे गंवा बैठे। नेहरूजीने गवर्नमेंटका चार्ज लिया तो ज्योतिषियोंने बताया कि अमुक मुहूर्त्त शुभ रहेगा। ऐसा समाचार पत्रोंमें था। इस शुभ मुहूर्त्तका फल पञ्जाबका विनाश हुआ। ये ज्योतिषी हमें तो क्या बचाते, अपने आपको भी पाकिस्तानमें न बचा सके।

महात्मा गांधीके शब्द याद कीजिये कि 'पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा।' अब पाकिस्तान तो बन गया, पर कैसे? हमारी लाशोंपर और जीवित लाशोंपर। गांधीजी तो मरे नहीं। हमें उनके शब्दों का मूल्य पहलेसे ही मालूम था।

महात्मन, आप इसी समय अपनी लेखनीको गतिमान कीजिये और इन दम-तोड़ रही जिन्दा लाशोंको ठिकाने लगाने में कोई बहुमूल्य परामर्श दीजिए। कांग्रेस के जिम्मेदार पदाधिकारियोंको पञ्जाबियों के साथ कोई विशेष प्रेम नहीं। आपके उत्कृष्ट मस्तिष्ककी उत्कृष्ट योजनाओंकी इस समय भारी आवश्यकता है।

आपका—रोशनलाल सेनी

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजो सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी हैं। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेको शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

वे घनीभूत स्मृतियां : वे काले धब्बे

अ० भिक्षु स्वामी

अरब सागरकी अल्हड़ हिलोरें जिसके चरण पखारनेमें अपना गौरव अनुभव करती थीं, समुद्रकी छातीपर तैरनेवाले दैत्यकाय पोत जिसके प्रांगणमें विश्राम पाते थे, पाश्चात्य और पौर्वात्य यात्री जहां अपने स्वप्न संवारते थे—वह कराची शहर अब भी उसी धरतीपर खड़ा है। किन्तु अब अरब सागरकी हिलोरोंमें कराचीका भक्ति-सङ्गीत नहीं बल्कि करुण क्रन्दन सुनायी दे रहा है। बड़े बड़े पोत और छोटी नौकायें अब भी किनारोंपर बिश्राम पाती हैं, पर भय और घृणासे सहमी हुई। सैर करने वाले यात्री अब भी आते जाते हैं, पर गिनतीके। अब जो डेक यार्डपर' रेलवे स्टेशनपर और एयरो ड्रोमपर हजारोंकी संख्यामें आदमी औरतें, बूढ़े और बच्चोंके जमघटे दिखायी देते हैं, वे यात्रियोंके नहीं बल्कि उन पीड़ितोंके हैं जो पाकिस्तानकी राजधानी से अपनी जान बचाये सर्वस्व खोकर हिन्दुस्तान भागे जा रहें हैं। या हिन्दुस्तानसे इसी तरह भय खाकर अथवा पाकिस्तानके स्वर्गमें बसनेकी लालसासे आ पहुंचते हैं।

कराची कितना खूबसूरत शहर था? पर अब? क्या हो गया उसके सौन्दर्य-का? क्यों मुरझा गया वह? गुलामीके बन्धनोंमें जिसका सौन्दर्य न घटा, आजादीके मुक्त वायुमण्डलमें उसका मुर्झा जाना विस्मयजनक ही है। कैसी आजादी है यह?

पचरंगी बस्ती वाला कराची अब 'कास्मोपोलिटन' शहर नहीं रहा। व्यापार कुशल मारवाड़ी और गुजराती, परिश्रमी सिख औ पंजाबी यू० पी० और बिहार-के पटेवाले चौकीदार) भैया, दफ्तरों रेलवे डाकखानों, बैंकों और पोर्ट ट्रस्टमें काम करने वाले मध्यम वर्गके मराठे, बङ्गाली और मद्रासी डाक और तार बांटनेवाले गरीब मराठे, सूखे मेवेके व्यापारी और अनजानोंको रुपया उधार देनेवाले सूदखोर पठान, मजदूरी करने वाले बलोच और मकरानी, तथा खलासी का काम करनेवाले हर कौम और हर प्रांतके—या यों कहो कि बेजात, बेघर, और बिना प्रान्तके—हजारों मजदूर इसी कराचीमें रहा करते थे। और सारी दुनियांमें पहुंच जाने वाले सिंधियोंका तो यह घर ही था। हां, अङ्गरेज, अमेरिकन, चीने और जिन्हें देखकर अंग्रेज होनेका भ्रम हो जाये वे पारसी, तथा जैन ईसाई, मुसलमान और अभागे अछूत भी इस कास्मोपोलिटन शहरके नागरिक थे।

लेकिन अब? अब वह कास्मोपोलिटन शहर नहीं, पाकिस्तान है। दीन और ईमान वालोंका कुरान शरीफका कलामें पाक पढ़नेवाले केवल मुसलमानों-का हजारों-हजार निरपराध मनुष्योंके खूनसे हाथ रंगनेवाले मुसलमानोंके कायदे आजमका घर है।

गुलाबके फूलकी तरह सुन्दर खिल-खिलाते और किलकारियां भरते हुए मासूम बच्चे, जो कराचीकी गलियों और बागीचोंको घेरे रहते थे, अब न मालूम कहां चले गये होंगे। शायद हिन्दुस्तान-के शरणार्थी केम्पोंमें हों। उस हिन्दुस्तान-में जिसमें आज उनका कोई नहीं है। उस हिन्दुस्तानमें, जिस हिन्दुस्तानके उच्च वर्णाभिमानी उनको अछूत नीच, गोश्त और मछली खानेवाले, और न मालूम क्या क्या समझते हैं। उस हिन्दु-स्तानमें जहांके रीतिरिवाज, खान पान, वेशभूषा और भाषासे उनका मेल नहीं बैठता। और सम्भव है, बहुतसे बच्चे कहीं बिक भी गये हों। सीधे रूपमें न बिके हों तो होटलोंके नौकर, बंगलोंके पंखे चलानेवाले या टहलुए बनकर जरूर बिक गये होंगे। और क्या पता हजारों मजहबी पागलोंके खञ्जरोंकी प्यास बुझाने, पाकिस्तानमें ही रह गये हों'?

और वह पुल! जिसे बूढ़े लोग घृणासे एवं नौजवान खुश होकर 'लवर्स ब्रिज' प्रेमियोंका पुल कहा करते थे, क्या वह भी कहीं चला गया होगा? नहीं। हर्गिज नहीं। वह क्यों जाये, आखिर क्यों? वह तो एक फी सदी भी हिन्दू नहीं है। उसे कौन मार सकता है?

कितनी भीड़ रहा करती थी उस पुल पर हर शाम और सुबह? मनचले तरुण और चुलबुली युवतियां किस शानके साथ उस पुल पर घूमने फिरने आया करती थीं। यौवन, रोमान्स जीवन और यह पुल उस वर्जित पहेलीके चार चरण बने हुए थे जिसे 'मानव' कहा जाता, है। सिन्धी, पारसी पंजाबी

और ईसाई लड़कियोंका निराली तथा चुस्त अंतर्राष्ट्रीय (अंग्रेजी ढबकी पोशाकें पहिनें घूमनेके लिये जाना सामाजिक रूढ़ियों और पर्देवाली बीबियों को चुनौती देनेका काम करता था। तेज महकते हुए सेन्ट, रंगे हुए होंठ और नाखून उभरा हुआ यौवन और आधा बनावटी तथा आधा वास्तविक सौंदर्य अब कभी उस पर नहीं दिखायी देगा। गलबैंया डाले हुए वे प्रणयपंछी भी अब कभी उस पुल पर अपने स्वप्निल पंखोंसे नहीं उड़ेंगे।

आलू छोले, आलू मटर, मसालेदार मूंग, नमकीन बीट, कई तरहके पापड़, पात्रोटी और आलू कुचालू, रसदार भें (कमलकी जड़) फुच्चे, पकौड़ी, आमलेट, पुडिंग आलूकी टिकियाएं, भुजिये और खजूर (पिंड कोटड़ी जो मेवा-कोटड़ी गांवका मेवा भूना सेव और गांठियेके ठेलेवाले अब कहीं फेरी लगाकर बेंचते हुए नहीं दिखाई देते। ये सब भाग गये, क्योंकि उनके ग्राहक सिन्धी, पंजाबी और गुजराती हिन्दू भी भाग गये हैं।

कलेज, विद्यालय, लायब्रेरियां, मंदिर गुरुद्वारे सब वीरान हो गये हैं। ये सब हिन्दुओंके पैसेसे बने थे इसलिये उनमें अब भेड़िये रहने चाहिये। वे भेड़िये जो आदमीकी शकलके हों, दीन और इसलाम का नारा लगाना जानते हों, काफिरोंको चीर कर खानेके लिये 'अल्लाहो अकबर' कहकर टूट पड़ते हों, झूठमूठकी कहानियां सुनाकर शरणार्थी बने हुए हों। इन स्थानों में उन उल्लू और चमगादड़ोंको भी रहने का कुदरती हक मिल जाता है जिन्होंने मानवताके प्रकाशको हमेशा अपना दुश्मन माना है।

हालहीमें मेरे पास ५ जनवरीको एक पत्र आया था। इस पत्रमें लिखा था —

"हिन्दीके पुस्तकालय उजड़ रहे हैं। साहित्य भवनके आगे भी वही प्रश्न है, पुस्तकें कहीं ले ली जाये। अपनी अपनी सबको लग रही है। उस ओर कोई भूलकर भी नहीं झांकता है। यदि उचित समझें तो आप हिम्मत करें। यहांके सभी पुस्तकालयोंकी पुस्तकें इकट्ठी, उपयुक्त जगह भेज कर एक बड़ा पुस्तकालय खोलें। वहीं ज्योत्स्नाको बिठा दें। क्षेत्र खुला है परन्तु करने वाला कोई नहीं है। व्यापारी तो अपनी धुनमें हैं।"

और दूसरे ही दिन कराचीके सब हिन्दुओंके घर लूट लिये गये। बदनके कपड़े तक उतार लिये गये। किसी किसी की नौजवान लड़कियां तक छीन ली, यह कहकर कि यह पाकिस्तानका माल है। खून और कत्ल.....?

फिर १३ जनवरीको एक पत्र आया, उन्हीं सद्गृहस्थका। जिसमें लिखा— पुस्तकोंके लिये अब तो चेष्टा नहीं हो सकेगी। लोग अपनी ही समेटनेमें लगे हैं।

(२)

अब वहां चारो तरफ, हर, चेहरे पर इस्लामका नूर दिखाई दे रहा है। मुल्ले और मौलवी लम्बी और गोल, छंटी और खशखशी दाढ़ियां साथ साथ अधिक संख्यामें जिन्नाकेप। अक्सर अपने प्राण बचानेके लिये हिन्दू लोग भी जिन्ना केप पहिना करते हैं। हालांकि उनकी घुटी हुई दाढ़ी—यह जीता जागता कुफ्र—किसी भी इस्लामके बन्देसे नहीं छुपा सकते। हरम और पर्देमें छुपी हुई, घुट घुट कर जिन्दगीका मर्सिया गाती हुइ मुस्लिम औरतें, इसलामी कलचर और आजादी का सबूत दे रही हैं। मैले और फटे हुए चिथड़े, जब बच्चोंको पहिने हुए देखते है तब हमारा दिल क्या कहता होगा? हुक्के और बीड़ीमें मशगूल, बलगमकी घर्राहटके साथ गांधीको कोसते हुए बुड्ढे अपनी अनोखी राजनीतिक जानकारीका परिचय देते रहते हैं।

कराचीमें कितने होटल हो गये हैं अब? जिधर देखो उधर होटल! चाय, बिस्कुट, डबल रोटी, अंडे, गोश्त, मछलियां, कोफ्ते और तेज अंगारोंपर भुने हुए दुर्गन्धित कबाब।

हाथ गाड़ी और ठेलोंमें भी अंडे, गोश्त और मछलियां भरी रहती हैं। गरीब और मुफलिस इन्हें खरीदनेके बजाय ललचायी आंखोंसे घूर घूर कर देखनेमें ही खदाका शुकर समझें तो कई आश्चर्य नहीं। उनका पाकिस्तान तो अभीका जनमा हुआ बच्चा है--दूध पीता बच्चा वह दे ही क्या सकता है? और गरीब आखिर किस खेतकी मूली है?

इन हाथगाड़ियों और ठेलोंकी बदबूसे हर गली और घर बेजार हैं। घरोंमें बंधी हुई बकरियां, 'वेस्ट एण्ड वाच' की तरह बिलकुल सच्चा टाइम बतानेवाले मुर्गे, अच्छी अच्छी मुर्गियां और बतखें भी चारों तरफ गन्दगी फैलानेमें पीछे नहीं रहती। काश यह दौलत देते वक्त परवर दिगारने उनके नाक ले लिये होते।

जिसे देखो वही बेकार। काम किसी के पास नहीं या फिर कोई कामके पास नहीं। लोग करें तो क्या? ताश, चौपड़, शतरंज, कंकरियोंका खेल, जुआ और शराब सिर्फ ये ही दो चार शगलकी चीजें हैं। माशूक और इसलामके तराने जरूर इनसे अलहिदा माने जायंगे। मगर अली बाबा चालीस चोर, लैला मजनू, लाले अरब, लाले यमन, खैबर पास, शीरीं फरहाद, वाड़िया और रणजीतके स्टंट पिक्चर्स, उन गमजदोंके गम गलत करने के सबसे अच्छे साधन हैं। :कौनसा गम, पाकिस्तानका! या भूख, बेकारी और कत्लकी सौगात देनेवाली आजादीका?

आलीशान और खुली हुई (वेलवेण्टिलेटेड) बिल्डिगें जो बहुतसे दीनवालोंने हिन्दू काफिरोंसे छीन कर आबाद की हैं, अब फटे टूटे टाट, चटाइयों और पुराने तहमदके कपड़ोंसे बापर्दा बनायी जा चुकी होंगी या बनायी जा रही हैं। कहीं-कहीं लूटमें मिली हुई सिन्धी, मारवाड़ी और गुजराती औरतोंकी रेशमी जार्जेट या नफीस साड़ियोंसे भी खिड़कियों और दरवाजोंपर शायद यह काम लिया जाये। आखिर हिन्दुओंकी ये चीजें जिनमें उनकी कलचर या तहजीब घुसी हुई है, और किसी काममें आ

सकती हैं ? इनसे न पाजामें बन सकते हैं न पाजामेंकी शकलें।

(३)

उफ ! यह अत्यन्त भयंकर स्मृति है। ६, ७ और ८ जनवरी सन ४८। कहरके दिन थे, बिलकुल काले। उन दिनों एक एक हिन्दू को, उसके घरको, उसकी दौलतको चुन चुन कर लूटा है। और वे पारसी, ईसाई.....कुछ पता नहीं, शायद बच गये हैं। पर सिख शरणार्थियोंका कत्ले आम .....?

हमारा वह 'कबीर धर्म स्थान,' उसके सायका 'शिवमंदिर, जैनियोंका 'देरासर' और लगभग सभी मंदिर लूट लिये गये हैं। 'नाग नाथ' और 'पार्वति पति' के मंदिरके पुजारियोंको भी कत्ल कर दिया। और भी मन्दिर और घरोंमें क्या हुआ, यह देखनेके लिये कौन जाता ? सुनते हैं कि पांच लाख मुसलमानोंके उन्मादने कराचीके जीवनसे खिल वाड़ किया।

दस, बीस सौ और हजारों मुसलमान (मुसलमान ?) देखते देखते कबीर धर्म स्थानमें घुस गये और उसको घेर लिया। मन्दिरमें बैठे हुए बूढ़े सेवक मोती माई करे तो क्या करे ? प्रथम तो वे अत्यन्त धैर्य और शांतिके साथ बठे रहे—पाषाण प्रतिमाकी तरह। पर थोड़ी ही देर बाद वे खड़े हो गये। उनके कपड़े गुदड़े कम्बल एक एक कर उठाये जाने लगे। लायब्रेरीकी आलमारियां, सिंघासन कबीर साहबकी गादी, उनका चित्र फूलोंसे ढंका हुआ धर्म ग्रंथ सब तोड़कर लूट लिये गये। वर्तन पुस्तकें, कपड़े नकदी आटा जो जिसके हाथ पड़ा वह लेकर चलता हो रहा था। हथौड़े और कुल्हाड़े चल रहे थे। बेचारे मोती माइ सेवक बड़ी मुश्किलसे जैसे खड़े थ वैसे ही निकल गये। भीड़के किसी आदमीने धीरेसे उन्हें इशारा करते हुए कहा—चलते बनो अब क्या रखा है ?

पुलिसवाले तमाशा देख रहे थे और फौज वालोंने कहीं कहीं सिवाय हिंदुओं के प्राण बचानेके और कोई कारगर कदम नहीं उठाया। लुटेरोंको उन्होंने भी नहीं रोका।

मंदिरके बाहर ही एक मुसलमान युवक सायकल लिये खड़ा था। उसने निराधार बूढ़ेसे पूंछा—कहां जाना है अब ?

'जाना तो कहां है ? यहीं एक पासके मकान में....।'

चलो 'मैं ले चलता हूं' कहते हुए वह साथ हो गया 'वर्ना ये लोग तुमको मार डालेंगे शायद।'

उसने बड़ी हमदर्दीके साथ एक ठेकेदारके मकानमें पहुंचा दिया। और भी इस प्रकारके साहस और उदारताके उदाहरण मिलते हैं। कराचीके अनेक हिन्दुओं को, बच्चों और औरतोंको कुछ मुसलमानोंने बचाया है। मनुष्यताके ये नमूने हम कभी नहीं भूल सकेंगे। भविष्यमें बननेवाली नयी दुनिया और नये मनुष्योंके निर्माणमें ऐसे ही उदाहरण हमको प्रेरणा दे सकेंगे।

आजसे दस साल पहिले ही कबीर धर्म स्थानका निर्माण हुआ था। इस सम्पत्तिका ट्रस्ट हो चुका था और अनेक धर्मावलम्बियोंने निर्माण कार्यमें सहायता दी थी। लगभग पचास हजारसे अधिक की यह सम्पत्ति अब लुटेरोंके हाथोंमें चली गयी। उन लोगोंके हाथोंमें जो इसलामके बन्दे दीन और ईमानवाले मुसलमान माने जाते हैं।

कबीर धर्म स्थानके महन्त और निर्माता अत्यंत उदार हृदयके संत हैं। उन्होंने अथक परिश्रम करके इस स्थान का कराचीमें निर्माण किया था, यह सोचकर कि यह कस्मोपोलिटन शहर है और यहांके लोग कबीर साहबके उदार विचारोंसे लाभ उठायेंगे। यहां हिन्दू, सिख ईसाई, पारसी, मसलमान जैन, बहाई, आर्य समाजी, राष्ट्रवादी और सभी धर्मों और विचारोंके लोग आते थे। आधुनिक कराचीके निर्माता और लगभग बारह सालतक 'मेयर' पद पर [illegible] मेयरगण भी कबीर जयंतीपर आते रहे हैं। शिक्षित और विद्वान साधु या विचारक व्यक्तिके लिये स्थान हमेशा खुला रहा है।

आज उस मंदिरमें उन नरपिशाचों का साम्राज्य है जहांसे कभी मनुष्यताका संदेश मिलता था। रूसके महान संत लिओ तालस्तायकी लायब्रेरीका भी नाजी बण्डालोंने यही हाल किया था।

इसी धर्म स्थानमें मेरी भी कुछ सम्पत्ति थी। मैंने बरसों तक हिन्दुस्तान में इधरसे उधर नंगे भूखे घूमकर सांस्कृतिक अध्ययन किया था। इस विषयमें जो भी सामग्री इकट्ठी की थीं मोहनजोदड़ों 'हड़प्पा' और 'तक्षशिला' में परिश्रम किया था, सब लुट गया। अब जब भी याद आती है और वह कब नहीं आती—हृदयके टुकड़े हो जाते हैं। पर हिन्दुओंके सामूहिक सर्वनाशके सामने मेरे दखका महत्व ही क्या ?

सम्भव है कभी हम इन दुष्कृत्योंको भूल जायें अथवा भूलनेका प्रयत्न करें। सम्भव है सब लोग ऐसा प्रयत्न करें। परन्तु यह असंभव है कि आनेवाली संतान इन बातों को भूल जायें। यह असंभव है कि हमारा इतिहास इस बातको भूल जाये और उन नर पिशाचोंको क्षमा कर दे जिन्होंने मानवता और मानव संस्कृतिका गला घोंटा है। पाकिस्तानके इतिहासके वे काले धब्बे अब कभी नहीं मिट सकेंगे।

हमने इन देश व्यापी दुर्घटनाओंसे सबक सीखा है। देशकी तमाम प्रगतिशील शक्तियोंसे सबक सीखा है। अब हमारी समाज व्यवस्थाको बदलना होगा—शीघ्र बदलना होगा। अब नया समाज, नये मनुष्य और नयी व्यवस्था होगी और हम लोग ही इसकी नींव डालेंगे।

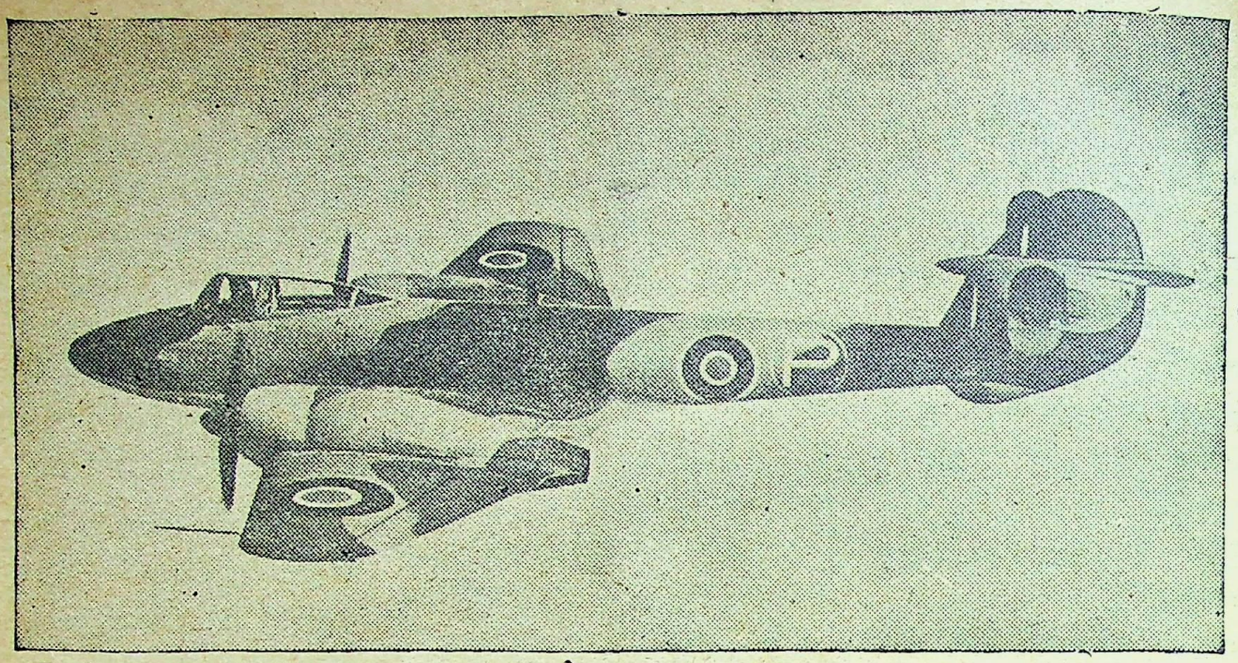

पवन पथपर

(लेखक—दुर्गाप्रसाद अनिरुद्ध शास्त्री एम० ए०, साहित्यरत्न, काव्यतीर्थ)

प्रिय बेटी सुशीला देवी,

तुमको बहुत बहुत प्यार। गत मास जब मैं झांसीमें था तब मैंने तुम्हें आश्वासन दिया था कि इस बार जब वायुयानसे यात्रा करूंगा, तो उसका प्रायः सांगोपांग वर्णन लिखकर ही तुम्हें भेजूंगा। तुम्हें वचन दिये हुए अभी एक मास भी नहीं हो पाया और आज वह अवसर आ ही गया।

आज दिसम्बर मासकी ६ तारीख है। दिल्लीसे कलकत्ते जानेके लिये दो दिन पूर्व ही टिकट खरीद लिया गया है। तुम जानती हो कि रेल यात्रामें फर्स्ट तथा सेकिण्ड क्लाससे यात्रा करते समय भी इसी प्रकार दो चार दिन पूर्व टिकट खरीद कर अपना स्थान सुरक्षित करा लेना पड़ता है। अस्तु, हमारा यान ठीक साढ़े सात बजे अपनी उड़ान प्रारंभ करेगा। इस यानका नाम 'सुपर्ण' है, यह बिड़ला लाइन भारत एयरवेजका जहाज है। प्रत्येक यात्रीको ठीक साढ़े छः बजे भारत एयरवेज के कार्यालयमें उपस्थित हो जाना चाहिये, वहांसे कम्पनीकी बड़ी मोटरमें सब यात्रियों को हवाई अड्डे पर पहुंचा दिया जाता है। [illegible] का सामान तौला गया। कोई भी व्यक्ति अपने साथ २२ सेरसे अधिक सामान नहीं ले जा सकता। अधिक ले जाने पर दो रुपये सेरके हिसाबसे अतिरिक्त भाड़ा देना पड़ता है। तुम कहोगी कि यह बहुत अधिक है बात भी ऐसी ही है। इसका कारण यह है कि हवाई जहाज एक निश्चित परिमाणसे अधिक भार नहीं ले जा सकते और इसीलिये अतिरिक्त भारपर किराया इतना अधिक लिया जाता है। प्रत्येक यात्रीको भी अपना-अपना वजन लेना पड़ा, इस प्रकार कुल यात्रियों तथा सामानका वजन जोड़ कर विमान चालक को उड़नेसे पूर्व ही बता दिया जाता है। गनीमत यही होती है कि आदमी स्वयं चाहे कितना ही मोटा हो उसे अपने शरीर के लिये अतिरिक्त भाड़ा नहीं देना पड़ता।

अभी सात बज कर पच्चीस मिनट हुए हैं। लाउड स्पीकरने बोलना शुरू किया "कृपया ध्यान दीजिये, ध्यान दीजिये। जो सज्जन कलकत्तेके लिये प्रस्थान कर रहे हैं, कृपया C.G.O. जहाजमें पहुंच जाइये।" यही सन्देश दो बार सुनाया गया। अब हम लोग हवाई अड्डे पर एक- [illegible] बढ़। एक सीढ़ीपर चढ़कर हवाई जहाज के अन्दर पहुंचे। इसमें २१ व्यक्तियोंके बैठनेके लिये स्थान है। सात पंक्तियां हैं, प्रत्येक पंक्तिमें एक ओर दो तथा दूसरी ओर एक व्यक्ति बैठ सकता है। दोनों ओर बहुत मजबूत प्लास्टिकके शीशे लगे हुए हैं जिनमेंसे बाहरके दृश्य खूब अच्छी तरह दिखाई दे सकते हैं। यह शीशे रेल गाड़ियोंके शीशोंकी भांति इच्छानुसार गिराये और लगाये नहीं जा सकते, क्योंकि ऊपर वायुवेग इतना तीव्र होता है कि उसका एक चार अंगुलके छिद्रमेंसे प्रवेश करना भी भयङ्कर हो जाये। बाहरकी सीढ़ी हटा दी गयी, द्वार बन्द कर दिया गया। हवाई जहाजका पंखा जोरका शब्द करता हुआ घूमने लगा और हमारे सामने ही बिजली बत्तीके प्रकाशमें एक वाक्य आ गया, इसमें लिखा हुआ था Fasten your seat belts (सीटपर लगे हुए बैल्टसे अपने आपको बांध लीजिये) यानमें एक सेवक उपस्थित रहता है। मेरे साथ कुछ सज्जन ऐसे भी थे जो नये सवार थे पहिले वायुयानमें नहीं बैठे थे। यानका सेवक बैल्ट बांधनेमें उनकी सहायता कर रहा था। हमारे यान में दो सेवक थे। एक एंग्लोइण्डियन युवक और एक यूरोपियन लड़की। हो सकता है यह लड़की स्वयं ही सेविका न होकर किसी सेवक अथवा चालकसे सम्बन्धित हो, बहरहाल एकके स्थान पर दो दो का होना यात्रियोंकी दृष्टिसे तो अच्छा ही

शेष [illegible] में पढ़ें

केश-कल्प

लै० बलदेव प्रसाद मिश्र

बी० ए० फिस्स ठाकुर जंगबहादुर सिंहका दूसरा विवाह हो ही गया। जैसे नौकरी पानेके लिये प्रतियोगिता होती है, वैसे ही अब श्रीमती जंगबहादुर सिंहको पानेके लिये भी हुई थी। डाक्टरी, वकालत, इन्श्योरेंस एजेंसी आदि तरह तरहके पेशे उस समयकी कुमारी सरोजके चरणों पर गिर कर पछाड़ खा रहे थे। पर, उनमेंसे किसी एकको चुननेका भार कुमारी सरोजके पिता जी पर ही था, क्योंकि कुमारीजीको कालेजकी शिक्षा दिलाकर उन्होंने उसे उतनी योग्यतासे विभूषित न किया था।

कुमारीजीकी यह अयोग्यता ही ठाकुर साहबकी विजयका कारण हुई। उनकी योग्यता केवल यह थी कि वे उन पेशेवालोंको उनके सामानके साथ खरीद सकते थे। वैसे द्वितीय विवाहके लिये डाक्टर साहबमें सब अयोग्यतायें ही थी। कालेजमें शिक्षा प्राप्तिके समयका उनका रेकर्ड खराब था—उस समय उन्हें बात व्याधि थी और किसी भी छात्राको देखते ही उनकी मौंहें बहुत चञ्चल हो जाया करती थीं। बी० ए० सागरमें सात वर्ष डुबकी लगानेके बाद वे घर चले आये और कुछ ऐसे कृत्य किये कि उनकी हरिजन प्रजा उनसे बहुत असंतुष्ट हुई, पर द्विज गण बहुत संतुष्ट हुए क्योंकि उन्हें हवन पूजा पाठमें बहुत कुछ मिला। प्रथम विवाहके बाद उनकी स्मरण शक्ति बिलकुल खराब हो गयी। वे अपना विवाह होना भूल गये और लखनऊ जाकर उन्होंने भूली भटकी अबलाओंको सुख पहुंचानेका आश्रम खोला। ऐसा शुभ कार्य भी विदेशी कलकरको पसंद न आया, इससे दुःखी होकर वे विदेशी सत्ताके विद्वेषी हो गये और हृदयसे भारत की स्वतंत्रताके समर्थक हो गये। इनकी उम्र भी अब ३८ के आस पास थी, पर वह बहुत अधिक ज्ञात होती थी क्योंकि केश उड़े जा रहे थे। मौंहोंसे ऊपर ६ अंगुल तक सपाट मैदान था। इसके बाद बीचमें दो दो अंगुल केश थे और दोनों बगल कुछ दूरतक साफ मैदान था।

ठाकुर साहबको अपनी इस अयोग्यतापर द्वितीय विवाहके समय बहुत चिंता हुई और विवाह हो जानेके बाद वह बहुत बढ़ गयी। जन्म पत्र नया बन सकता था। उसमें उम्र कम कर दी जा सकती थी—उसे कालेजकी सर्टिफिकेट से मिला दिया जा सकता था। पर, ललाट पर विधाताके इस हस्तलाघवका क्या किया जाय! सरोजको भ्रम न होने देनेका क्या उपाय!

ठाकुर साहबको विधाताने दर्शकोंको पंचभूतोंको नम्र बना देनेवाला व्यक्तित्व और शरीर दिया था, पर वे सरोजको देखते ही समझ गये कि उसके पंचभूतोंपर असर न पड़ेगा क्योंकि वह किसी और विधाताकी रची हुई है।

ठाकुर साहबने एक दिन अपनी चिंता अपने ठाकुर (नापित) पर व्यक्त की। वह वृद्ध और अनुभवी था। उसने ठाकुर साहबके पिताजीको भी बहुतसे नुस्खे बतलाये थे। उसने ठाकुर साहबसे उच्च अंगकी बहुत सी अंतरंग बातें पूंछी। अपनी जिज्ञासा शांत करनेके बाद उसने कहा कि केश उड़ना सौभाग्यका लक्षण है, धनियोंके ही केश उड़ते हैं। पर, इस लक्षणसे अरुचि हो तो हाथी दांतकी भस्मका प्रयोग किया जा सकता है।

ठाकुर साहबने हाथी दांत मंगवा लिया, वैद्यजीको फूंकनेके लिये दे दिया। इस बीचमें उनके ठाकुरने उस बातका गोबेल्सकी तरह प्रचार किया। फल यह हुआ कि ठाकुर साहबके सभी मिलने जुलनेवाले उन्हें कोई न कोई दवा बतलाने लगे। और ठाकुर साहब भी हर एकका सेवन करने लगे। साल भरके भीतर एक कमरा केश कल्प कुटीर बन गया। उसमें आंवला, भृंगराज, हाथी दांत, पेटेंट लोशनोंकी शीशियां तरह तरहके तेल, सैकड़ों जड़ी बूटियां, पेड़ोंकी छाल आदि वस्तुएं एकत्र हो गयीं। सबका प्रयोग भी हुआ, पर खल्वाटता अंगदके पैरकी तरह जमकर बैठी ही न रही, बढ़ती भी रही।

एक दिन ठाकुर साहबके एक अंतरंग मित्र अर्थात अबलाओंको सुख पहुंचाने वाले आश्रमके भूतपूर्व मैनेजर, उनके यहां आये। उनका आगमन उसी तरहके एक काममें ठाकुर साहबका सहयोग प्राप्त करने के लिये हुआ था, पर इस समय ठाकुर साहबका मन घरमें ही उलझा हुआ था।

उन्होंने अपने मित्रसे कहा कि – इस समय बरेलीसे बांस बरेलीके बीचमें मुझ जैसा चिंतित कोई नहीं है। मेरी चिंता उस तरल पदार्थसे भी दूर नहीं होती जिसमें ६० प्रतिशत अलकोहल होता है। तुम मेरे मित्र हो। तुम्हारी मां मेरे सामने तुम्हें अपना बेटा नहीं समझतीं। तुमको मैंने जेल जानेसे बचाया है। तुम्हारे यहां मेरे कुछ पैसे भी बाकी चले आते हैं। तुम मेरा उद्धार करो। मुझे कोई उपाय बतलाओ।

मित्रने कहा—जबतक मैं चार अण्डे टोस्ट तथा चायका सेवन नहीं कर लेता तबतक दार्शनिकता मेरी खोपड़ीसे दूर रहती है। जीवन दर्शन सबसे गहन है। अतः आज तो ड्राई जिनके दो पेग भी चाहिये।

ठाकुर साहबके घरमें गंगा जल न मिले, शालग्राम न मिलें, कुशा न मिले, गीता न मिले, हो सकता है। पर उनके मित्रकी बतायी चीजें न मिले यह नहीं हो सकता। मित्रवरने जीवन दर्शनपर विचार करनेकी क्षमता प्राप्त करनेके

बहुत देर सोचा और तब पूंछा—श्रीमती जीसे तुम्हें प्रेम है ?

ठाकुर साहबने कहा—यह मैं नहीं जानता। पर, वे मेरे साथ कुछ भी करें, मुझे आनंद प्राप्त होगा।

मित्रवरने कहा—यही प्रेम है। तुम्हारी श्रीमतीजीको तुमसे प्रेम है ?

ठाकुर साहब बोले—किसी दिन जब वे मेरी मूंछें खींचती है या कान पकड़ लेती हैं या चपत मार देती हैं तो मैं समझता हूं कि उन्हें मुझपर प्रेम है। पर, जिस दिन वे मुझे तकिया फेंककर मारती हैं या मेरे सिरकी ओर देखती हैं, उस दिन मेरा किला ढह जाता है।

मित्रवरने कहा—प्रेम संदिग्ध है। श्रीमतीजी सोकर उठते ही पहले तुम्हें ही देखती होंगी ?

—हां।

—यह ठीक नहीं। रोज एक ही चीज देखनेसे विरक्ति हो जाती है।

—तो क्या करूं ?

मित्रवर कुछ बोले नहीं। वे विचार मग्न थे। अंतमें उन्होंने कहा—तुम्हारी खल्वाटता निश्चय ही रोग है। बुद्धिपर जोर पड़नेसे भी यह सम्भव है, पर तुमपर वह बात लागू नहीं। धनवानोंको ही यह होती है, यह बात भी नहीं—अध्यापकों और संपादकोंपर भी इसका आक्रमण होता है। तो तुम एक काम करो।

ठाकुर साहबने साग्रह पूछा—क्या ?

—कलकत्ते जाओ। वहां एक डाक्टर हैं—बिड़ालाक्ष भादुड़ी। जीवन दर्शनके प्रकांड पण्डित ! इसीलिये तो मुझसे परिचय हुआ था।

—वे डाक्टर हैं या दार्शनिक ?

—डाक्टरों तथा ज्योतिषियोंको जीवन दर्शनका परम ज्ञाता होना चाहिये, क्योंकि उनका कारबार जीवनका ही है।

ठाकुर साहबने कहा—कभी उनका नाम सुना तो नहीं।

मित्र बोले—अपने लकड़दादाके लकड़दादाका नाम सुना है ? नहीं। लेकिन उनके अस्तित्व या महत्तापर संदेह कर सकते हो ? और तुमने नाम नहीं सुना तो क्या ! अमेरिका और हवाईके अनेक विश्वविद्यालयोंने उनका सम्मान किया है—उन्हें आनरेरी डिग्रियां दी हैं।

ठाकुर साहब बोले—तो जाऊं ?

—जरूर ! वे अत्यंत योग्य हैं। अपने साथ ही पूरा अस्पताल रखते हैं—एक बक्स में। पर, उनसे कुछ भी छिपाना मत।

छिपाया तो केवल पत्नीसे जाता है।

—ठीक है तुम जाओ। मैं उन्हें एक पत्र लिख देता हूं।

मित्रवरने डाक्टर बिड़ालाक्ष भादुड़ी, एम० डी० के नाम पत्र लिख दिया जिसके प्रत्येक अक्षरसे शिष्टताके दुग्ध बिंदु टपक रहे थे। अंतमें मित्रवरने हिदायत दी—सामना होते ही हाथ मिलाना। नमस्कार करनेसे वे नाराज होते हैं।

ठाकुर साहबने कहा—ठीक है। हाथ मिलाऊंगा और सभ्य समागमके प्रत्येक नियमके सांचेमें अपना व्यवहार ढाल दूंगा।

ठाकुर साहब कलकत्ते पहुंच गये। डाक्टर साहबके सेक्रेटरीने दूसरे दिन उन्हें बुलाया। वे परिचय पत्र देकर चले आये।

दूसरे दिन डाक्टर साहबका सेक्रेटरी उन्हें भीतरी कमरेमें ले गया। डाक्टर साहब एक प्रकाण्ड पुस्तकमें आंखें गड़ाये बैठे थे। आहट पाकर उन्होंने चश्मेके भीतरसे इधर देखा और उठ खड़े हुए। ठाकुर साहबने चट हाथ बढ़ाया। हाथ मिलाकर डाक्टर साहबने एक रिवाल्विङ्ग (घूमनेवाली कुर्सीकी ओर संकेत किया। ठाकुर साहब बैठ गये।

डाक्टर साहबने उन्हें पूरबसे पच्छिम और उत्तरसे दक्खिन देखा, तब बोले—ग्रैंड !

ठाकुर साहब चुप रहे। डाक्टर बोले आप केश उठ जानेसे चिंतित क्यों है ? वाइसरायका एक्जीक्यूटव सदस्य लोग तो चिमटीसे केश उठवा देता है !

ठाकुर साहब बोले—वायसरायकी आज्ञा होगी। मैं इसे पसन्द नहीं करता।

डाक्टर बोले—चार दिन आपको हमारे सामने बैठना होगा, हमारा प्रश्नका जवाब देने होगा।

ठाकुर साहबने सिर हिलाया।

डाक्टर साहबने एक कोरी कापी सामने रखी, उसपर मरीजका नाम पता लिखा और पूछा—आपका घरमें किसीको सिफलिस था ?

ठाकुर साहबने कहा—सन्देह कई आदमियोंपर है।

प्रश्न—उनका रक्त आपमें है ?

उत्तर—सबका नहीं।

प्रश्न—आपके पिताजी नींदमें चौंक उठते थे ?

उत्तर—कभी—कभी।

आप ?

नित्य।

आपको चिड़िया अच्छी लगती हैं ?

बहुत। शर्त यह कि अच्छी तरह बनी हों, प्लेटमें हो, पासमें एक बोतल भी हो।

डाक्टर साहब—प्रश्नोत्तर नोट करते जाते थे। उन्होंने पूछा—आपके मामाको संग्रहणी हुई थी ?

पता नहीं। वे अधिक भोजन करनेसे मरे थे।

आपके ससुरजीको दमा है ?

नहीं। पर क्रोधमें वे हांफने लगते हैं।

आपके पिताजी जम्हाई लेते थे तो पूरा मुंह खुलता था कि नहीं ?

जम्हाई आनेपर वे मुंहपर हाथ रख लेते थे।

आप किसी बहुत ऊंचे मकानके नीचे खड़े होते हैं तो मनमें क्या भाव आता है ?

यही कि यह मेरा नहीं है।

आपको यह तो भय नहीं होता कि वह आपपर गिर पड़ेगा ?

नहीं।

भूख खूब लगती है ?

अब नहीं। पहले तीन सेर कलाकन्द का जलपान करता था। अब उतना भोजन करता हूं।

चार दिन बीते। प्रश्नोत्तर समाप्त हुआ। तब डाक्टर साहबने कहा—अब हम दवा देगा। पर आपको पान छोड़ने

होगा। कपूर, इलायची, हींग, तेल, खट्टा, मिर्च, अतर (इत्र), शराब, भांग सब छोड़ने होगा।

ठाकुर साहबने कहा—सिगरेट, पान और शराब तो नहीं छूट सकती। अचार खाना ही पड़ेगा।

डाक्टरने कहा—तो विडालाक्ष भादुड़ी आपको दवा नहीं देगा।

ठाकुर साहब बोले—भूमण्डल पर एक बित्ता जमीन दवा बतानेवालोंसे खाली नहीं है। आप न देंगे, और लोग देंगे।

डाक्टर बोले—आप जैसे रोगीके लिये होमियोपैथी नहीं है। आप लोगोंकी दवा एलोपैथ कर सकते हैं। आप कहें तो मैं डाक्टर हिरण्यकश्यप एम० बी० बी के नाम पत्र लिख दूं।

ठाकुर साहब पत्र लेकर चले आये।

डाक्टर हिरण्यकश्यपने ठाकुर साहब की जांच की – उनकी जीभ देखी, सीना देखा, पीठ देखी, सिरके दो-चार बाल उखाड़ कर देखे, पेटमें उंगलियां गड़ायीं और तब कहा—न्यूयार्क हेयर लोशन लगाइये।

ठाकुर साहब १०-१२ लोशनोंके नाम गिना गये और कहा – ये सब लगा चुका हूं।

डाक्टर बोले—तब तो पेटेंट चीज कोई छूटी नहीं। मैंने एक चीज तैयार की है, पर उसका प्रयोग अभी नहीं किया है। आप चाहें तो करें, पर लाभकी गारण्टी नहीं दे सकता।

ठाकुर साहबने १४॥≡)में एक शीशी ली।

डाक्टर तब बोले—देखिए, आप डाक्टर भादुड़ीका पत्र लेकर आये हैं, इसलिये साफ कह देता हूं। आप कैंथराइडिसका प्रयोग भी कीजिये।

कहां मिलेगा ?

सब केमिस्टोंके यहां। पर, आप जानते हैं कि कैंथराइडिस क्या है ?

नहीं।

पैखानेमें जो लाल-लाल चपड़े होते हैं, उनका सत्त। आप उन्हें पकड़ कर उनका तेल बना कर लगाइये और सुबह चार चपड़ोंकी चाय बनाकर पीजिये। यह पसंद न हो तो हफ्तेमें एक बार उनके पानीका एनिमा लीजिये।

ठाकुर साहबने कहा—मैं बाजारसे ही खरीदूंगा। चपड़े उन्नीसवीं सदीके पैखानोंमें ही मिल सकते हैं। इसके लिये मुझे काशी जाना होगा। फिर भी बहुत झंझट है।

ठाकुर साहबके जानेके बाद डाक्टर हिरण्यकश्यपने अपने कम्पाउण्डरसे कहा—इस मरीजकी आमदनीपर २० प्रतिशत कमीशन डाक्टर भादुड़ीको भेज देना।

ठाकुर साहब दवा कराने लगे। महीना भर बीता। कभी उन्हें मालूम होता कि केश बढ़ रहे हैं, नये निकल रहे हैं, कभी मालूम होता कि सब भ्रम है।

एक दिन डाक्टर हिरण्यकश्यपके कंपाउण्डरसे एकान्तमें ठाकुर साहबकी भेंट हो गयी। उसने कहा—इस दवासे बहुत दिनोंमें लाभ होगा; यदि हुआ। आप किसी हकीमकी दवा कीजिए। उनके यहां कुछ रोगोंकी रामबाण दवायें होती हैं।

ठाकुर साहबको यह बात जंच गयी। वे दूसरे ही दिन लखनऊ चले आये और हकीमुलमुल्क चिराग़दान अली खांके यहां पहुंचे।

हकीम साहबने रोग सुन कर कहा—जिगरकी नसोंमें कफ जमा हो जाता है और दिमागमें पहुंच जाता है। उससे खून का दौरा रुक जाता है और बाल झड़ने लगते हैं। उसे गलाकर निकाल देना होगा और नया खून पैदा कर देना होगा। तब अल्लाह चाहेगा तो एक-एक हाथके घुंघराले बाल निकलेंगे।

ठाकुर साहबने पूछा—कफके साथ दिमाग तो नहीं गल जायगा ?

हकीम साहब बोले—सुभान अल्लाह ! क्या शाइस्ता मजाक किया है ! आप बेफिक्र रहिये। दवा शुरू कीजिये। चालीस दिन काढ़ा पीजिये, उससे कफ गल जायगा।

ठाकुर साहबको दवा शुरू करनेके दिन ही जुकाम हो गया और ४० दिन बहुत कष्टसे बीते। नाक पोंछते पोंछते वहांका चमड़ा छिल गया। उसकी अलग दवा शुरू हुई। ५१ दिन बीतनेपर हकीम साहबने कहा—अब आप सिर मुड़ा दीजिये और मेरा घोंघोका रोगन लगाइये। पर उसके पहले सिरमें जोंक लगवा कर खराब खून निकलवा देना होगा। मैं अपने सामने जोंक लगवा दूंगा। आप सुबह तशरीफ लाइये। हजाम और जोंकवाला दोनों हाजिर रहेंगे।

ठाकुर साहब फिर हकीमके यहां न गये। वे जिस होटलमें ठहरे थे उसमें रात को उन्हें जीवन-दर्शनके एक विद्वान मिले। उनके सामने ठाकुर साहबके हृदयके कपाट खुल गये। विद्वानने कहा—चाचा, तुम नाहक इन बेवकूफोंके फेरमें पड़े हो। काशी जाओ काशी। वहां एकसे एक वैद्य हैं। वे तुम्हारा रोग जरूर अच्छा कर देंगे।

ठाकुर साहब उस समय उस स्थिति में थे कि जबान और मनसे कहीं भी जा सकते थे। उन्होंने काशी जाना स्वीकार कर लिया। उनके दार्शनिक साथीने कहा—यार, मेरा एक काम करते आना।

कहो, कहो !

२० बरस पहले मुझे तबला सीखनेका शौक हुआ था। मुझे एक आसामी गुरू मिला। उसने एक बोल बताया। मैंने उसे सीख लिया, पर तभी तबला सीखना छोड़ दिया। सोचा, ऐसे वाहियात बोल कौन याद करे। बादमें मालूम हुआ कि उस आसामीने किसी अच्छे बोलकी यह दुर्गति हिन्दी न जाननेके कारण की थी। बनारस तबलेकी खान है, किसीसे इसका शुद्ध रूप समझकर लिख भेजना।

ठाकुर साहब बोले—तबलेका शौक मुझे भी था। सीखा भी था। सुनो—धा तेटे तेटे, धागे तेटे तेटे, क्रिधा तेटे धा, तेटे क्रिधा तेटे धा, तेटे क्रिधा तेटे धा।

दार्शनिक बोले—वह बोल सुनो—धान धोड़ धोड़ नागोनो धोड़ धोड़ धागोनो ताक धोन ताक धोनाक धोन, धागोनो

ताक धोन ताक धोनाक धोन धा, धागोनो ताक तोट नागोनो ताक तोट क्रोधोट धोट धोट धागोनो धा, कड़तक धानो धा धो धा तो धा, कड़तक धानो धा धो धा तो धा, कड़तक धानो धा धो धा तो धा।

ठाकुर साहबने पूंछा—यार, यह कोई सावर मन्त्र तो नहीं है? अच्छा तो अब सो रहूं। गाड़ी सुबह ही जाती है।

ठाकुर साहबका छ फुटा शरीर कुर्सी परसे उठा। दार्शनिकने उन्हें पकड़ कर बैठाना चाहा पर उनके हलकेसे झटकेसे वे फर्शपर चित हो गये और पड़े-पड़े गाने लगे—

'मरनेके बाद भी मेरी हसरत निकाल दे।
मेरा मजार भी तो तेरी रहगुजरमें हैं॥'

* * * * *

ठाकुर साहब काशी पहुंच गये, जहां वे पहले भी आ चुके थे। यहां चौक और बांसफाटक आदिके आस पासके जीवन-दर्शनके प्रत्येक पण्डित—तल्लज तथा उक्त दर्शनके उत्तेजक व्यक्तियोंसे उनका परिचय तथा घनिष्ठता थी।

काशी आने तथा औषध प्रारम्भ करने के उपलक्ष्यमें एक उत्तेजक व्यक्तिके निवास स्थानपर उन्होंने संगीत (गान-वाद्य-नृत्य) का आयोजन कराया। उन्होंने वहीं यह निश्चित करनेका निश्चय किया कि किस वैद्यराजकी दवा की जाय।

संगीतोत्सव प्रारम्भ हुआ। उसकी प्रत्येक सूक्ष्मता पर ध्यान जमानेके लिये उन्होंने तथा उनके मित्रोंने जीवन दर्शन के मूल तत्वका आस्वादन प्रारम्भ किया।

गान समाप्त होनेपर विश्राम कालमें वैद्यराजोंकी चर्चा हुई।

एक मित्रने कहा—महादेव शास्त्री वैद्य बहुत बड़े हैं, पर हाथमें जस नहीं। 'जाकी धरी नाटिका (नाड़ी) सो एकौ पल ना टिका।'

दूसरेने कहा—उसका मुंह गालियोंका शब्द-सागर है।

उत्तेजकने कहा—मेरी मौसीको साधारण ज्वर आया। एक रईस उन्हें बुला लाये। नाड़ी धरते ही टायफाड और दवा खाते ही हरिबोल! बड़ा कुलच्छन है।

हारमोनियम बजानेवालेने 'तुरन्ता' (गांजा) की चौथी चिलम 'चांदी' करके (गांजा समाप्त कर) कहा—अहा हा! पहली चिलम खांसखूंस दूसर चिलम ताजा, तीसर चिलम भैया बाबू चौथी चिलम राजा।

हां सरकार! बहुत कुलच्छन है।

तीसरे मित्रने कहा - उनके शिष्य नारायणजी तो अच्छे हैं।

दूसरेने कहा—अरे वह दंभी, जो चांदनीमें भी छाता लगाकर चलता है।

ठाकुर साहबने कहा—शौकीन-तबीयत मालूम होता है उसकी ही दवा चले।

चौथेने कहा—भूलकर भी उसके यहां न जाइयेगा। जाते ही दाल बन्द, केला खाओ। छेना खाओ। और जरा भी व्यतिक्रम हुआ तो जूता-पैजार करने को तैयार। ऐसे आदमीकी क्या दवा करना!

पहलेने कहा दवा तो चिलबिल्ली वैद्यके पास बहुत अच्छी हैं।

तीसरेने उत्तेजककी ओर आंख मार कर कहा—उसकी दवा तो खास आदमियोंके लिये हैं। अपनी असली पेटी तो वह तभी खोलता है।

उत्तेजकने कहा—पूरा दाम वसूल करता है। मेरी यह अंगूठी मांग रहा था।

चौथेने कहा हनुमानजीकी दवा करो। शहरमें तुम्हारे लिये उससे अच्छा वैद्य नहीं है।

दूसरेने कहा बाबा रे! रात एक बजे तो रोगी देखने निकलता है। घर पर रोगी देखता है रातको ११ बजे।

ठाकुर साहबने कहा मेरे लिये तो यह सर्वोत्तम समय है।

पहलेने कहा—नाड़ी देखकर महल्लेके लोगोंको पहचान लेता है। पर, मिजाज जरा खराब है।

तीसरेने कहा खराब नहीं, खरा कहो। लल्लो पत्तो नहीं करता। फटकार देता है।

ठाकुर साहबने कहा—ऐसा आदमी बहुत अच्छा होता है। तो उसीकी दवा शुरू की जाय।

इसी समय तबलेपर थाप देकर उस्तादजीने कहा—ता थेई, ता ता थेई, धुम किट तक थेइ, ता थेई थेइ थेइ थेइ.... और नृत्य प्रारम्भ हो गया।

* * *

दूसरे दिन रातको १० बजे वैद्यराज हनुमानजीके यहां ठाकुर साहब अपने दो तीन मित्रोंके साथ पहुंच गये। उनका घर १६८ गलियां पारकर एक बन्द गलीमें था। ठाकुर साहब कमरेमें घुसे। वह दालानुमा था। उसमें चौकियां बिछी थीं और उनपर दरियां तथा मैली चांदनियां।

बीचमें दीवालके सहारे एक मैली गद्दी और गाव तकिया था। और उसके सामने एक छोटी पेटी। कमरे भरमें आदमी बैठे थे और वायुमें मानव-गन्ध भरी थी।

ठाकुर साहबने अपने व्यक्तित्वका उपयोग किया। वे भीड़ पारकर गद्दीके बिलकुल पास जा बैठे। थोड़ी देर बाद लोग उठ खड़े हुए—वैद्यजीका कमरेमें आविर्भाव हुआ था। वैद्यजी गद्दीपर बैठ गये, तब ठाकुर साहब भी बैठे और प्रणामकर उनके सामने सेरों फल पानका दोना और १६) रखे।

वैद्यजीने ठाकुर साहबको और उन्होंने वैद्यजीको देखा। ठाकुर साहबको उन पर बहुत श्रद्धा हुई क्योंकि उनका मुख आयुर्वेद शास्त्रके आदि पुरुष भगवान धन्वन्तरीसे बहुत मिलता था।

वैद्यजीने पानका दोना उठाया और उसके पानोंका वितरण समाप्त कर ठाकुर साहब की नाड़ी देखनेके लिये हाथ बढ़ाया। तीनों उङ्गलियोंसे क्रमसे नाड़ीपर ठोके देते हुए उन्होंने नाड़ी देखी, तब पूछा—२० वर्ष पहले संग्रहणी हुई थी?

नहीं।

ऐं! नाड़ी झूठ बोलती है?

स्त्रीका क्या विश्वास।

दिल्लगी करता है! मूर्ख।

क्षमा महाराज।

है, संग्रहणी बोलती है।

होगी।

उष्णवात ?

समझा नहीं।

सिफलिस, सिफलिस।

नहीं।

फिर झूठ ! नाड़ीमें है। तुम्हारे पिताजीका रही होगी।

हो सकता है।

थी, थी। हो क्या सकता है।

प्रमेह ?

नहीं।

प्रमेहका ६२ वां भेद बोल रहा है।

उसका फल जानते हो ? एकाएक लकवा।

—जी ?

— हां, हां, लकवा। पहले फील पांव। 'प्रमेहतो हस्तिपदं विभाव्यते।' चरकने लिखा है।

—लेकिन महाराज,

—लेकिन सेकिन क्या ! रामरूप ! इनके रोगका लक्षण तो लिखो—गम्भीरा-तर्मदा वच्छेदकता—वच्छिन्न क्रोध मूर्च्छितत्व प्रणाल निःसृत प्रमेहा स्कन्दित स्पृष्ट हस्तिपदक शरीर जाड्यमूलको महाकुपितः प्रभञ्जनः।

—लेकिन महाराज,

—फिर वही ! अरे. तुमने १६)रुपये दिये, हमने निदान कर दिया। अब दवा करनी हो तो वैसा कहो।

करनी है। लेकिन मैं अपने सिरकी-चिकित्सा कराने आया हूं।

—आह ! महाकुपितः प्रभंजनः। तुम्हारा माथा ठीक नहीं है, यह तो लिख ही दिया।

—मेरे केश उड़ रहे हैं. उसकी चिकित्सा कराना चाहता हूं।

—और प्रधान रोगोंकी नहीं ?

—अभी नहीं।

—अच्छी बात है। हमें क्या। कुछ इलाज किया ?

—पहले होमियो पैथिक,

—रामरूप इसको बाहर निकाल दो। होमियो पैथिक ! कोई चिकित्सा है !

—की नहीं राय मर ली थी। उसने कहा कि पान-तम्बाकू छोड़ो, हींग छोड़ो। यह कठिन है। मैं चला आया।

—अरे, चिकित्सा तो हमारी है। गांजा पियो ताड़ी पियो, भांग छानो, मदक पियो, चाहे जो करो ! पर, चिकित्सा बन्द थोड़े ही होगी। कोई पैसा खरचे तो वह दुनियां भरकी चीजें खाय और हम हर एक रोग अच्छा कर दें।

—ऐसी ही चिकित्सा मुझे चाहिये।

—ऐं ! तुम इन सब चीजोंका सेवन करते हो ?

—नहीं, दो-एकका।

—चाहो तो सबका करो। दवामें कोई व्याघात न होगा। अच्छा और क्या किया ?

—एलोपैथी की।

—एलोपैथी ! उसमें है क्या ! जघन्य रोगोंके इंजेक्शन, बस। ज्वरके कारण सिरम दर्द है तो दवा दोनोंकी होगी। ज्वरके मूलकी नहीं। हम लोग जड़की दवा करते हैं वे डालों और पत्तोंकी।

—हकीमकी भी की।

हकीम ! उनके पास कुश्ते छोड़कर और क्या है ! दुनियांमें बदमाशी फैलाने के प्रमाण-पत्र-प्राप्त एजेंट हैं।

—अब आप कृपा करें।

—हमारी कुछ शर्तें हैं। १—श्रद्धा पूर्वक दवा करनी होगी। २-बीचमें छोड़ना न होगा, नहीं तो फिर दवा न करेंगे। ३-धैर्य रखना होगा। ४-जो कुछ कहें, आंख बंद करके करना पड़ेगा।

—मंजूर है।

—तो जाओ। कल इसी समय सिर मुंड़ाकर आना।

—महाराज,

—कुछ नहीं दवा करनी है तो यहींसे प्रारम्भ करना होगा।

—मैं इस रोगका कारण जानना चाहता हूं।

—सुनो। वायु कुपित होकर जब ऊपर चढ़ता है, तब हृदयसे सिर तकके समस्त रोग उत्पन्न होते हैं। उसके कारण रक्त-संचालनमें गड़बड़ी होती है और केश गिरने लगते हैं। अतः वायु-शमनके लिये खानेकी तथा लगानेकी दवा दी जायगी।

—अच्छा, तो कल आऊंगा।

—हां बकरीका दूध आध सेर रोज चाहिये। उसका प्रबन्ध कर लेना।

जिन ठाकुर साहबने पिताजीके मरने पर अगत्या, बहुत कुढ़ कर सिर मुंड़ाया था वे सहर्ष सिर मुंड़ाकर वैद्यजीके यहां पहुंच गये। वैद्यजीने एक बड़ी-सी पुड़िया उन्हें दी और कहा—इसे बकरी के दूधमें गाढ़ा सान कर सिर पर ऐसे समय लेप करना कि ६ घण्टे लगा रहे। सिर रोज मुंड़ाना होगा। और यह तेल लो। लेपको बकरीके ही दूधसे धोकर सिर पोंछ लेना और इसे लगाना। और यह खानेकी दवा है। दिनमें चार बार भृंगराजके रससे।

ठाकुर साहबसे लोग सिर मुंड़ानेका कारण पूछने लगे और वे किसीसे कहते-नानी मर गयी। किसीसे कहते-मामाजीका स्वर्गवास हो गया। कुछ लोगोंसे कहा यों हीं। पर, वास्तविक कारण किसीको न बतलाया।

चार पांच महीने बीते। वैद्यजीने कहा-अब तुम्हारे सिरको जुलाब देंगे।

ठाकुर साहबने पूछा-वह क्या ?

— नाकसे एक खास तरहकी सुंघनी सूंघनी होगी कानमें तेल छोड़ा जायगा, आंखोंमें दवाका घी और मुंहमें एक काढ़ा भर कर रखना होगा। इससे सिरके भीतरकी गंदगी पानी बनकर बह जायगी।

—यह क्रिया कै दिन करनी होगी ?

जब तक पानी निकलता रहे। इसके बाद बिल्लीके दांत और भटकटैयाके कांटे से तुम्हारा सिर खुरचा जायगा और, बेधक लेप लगाया जायगा, जो भीतर तक प्रवेश कर रक्तको शुद्ध और चंचल कर दे। जोंक भी लगायी जायगी।

ठाकुर साहबने वैद्यजीको एक विचित्र

दृष्टिसे देखा पर वे दृष्टि-प्रूफ निकले। उन्होंने कहा-हम कोई काम अधूरा नहीं करते। हंसना तो बयालीसों दांत निकाल कर हंसो मारना हो तो जानसे मारो, लूटना हो तो लंगोटा भी उतार लो ऐसे ही, दवा करनी हो तो अन्त तक करो।

ठाकुर साहबको अपना अन्त निकट जान पड़ा, ब्रह्मांड शून्य हो गया, तब उसमें प्रकाशका एक वृत्त नाचने लगा और उसमें एक मुख मात्र प्रकट हुआ। वह सरोज का था।

ठाकुर साहब चैतन्य हुए। ओठों पर जीभ फेरकर बोले मेरा भी यही सिद्धांत है। पर मुझे एक सप्ताहके लिये घर जाना है। आप लेप दे दें, मैं लगाता रहूंगा। वहांसे आते ही, मेरे सिरके साथ आप जो चाहे कीजियेगा।

उसी दिन प्रातःकालकी गाड़ीसे ठाकुर साहब घर रवाना हुए।

सरोजने पतिदेवका मुंड़ा सिर देखा तो उसे बहुत आशंका हुई। उसने सहमते हुए कारण पूछा। ठाकुर साहब मौन रहे। सरोजने उनके सिर पर हाथ फेरते हुए फिर कारण पूछा। ठाकुर साहब मौन न रह सके। उन्होंने विस्तारसे चिकित्सा विवरण और पलायनका कारण बतलाया।

सरोजने पूछा-एक बात बतलाओगे ?

हां।

सच।

हां।

तुम्हारी उम्र कितनी है।

ठाकुर साहब चुप हो गये। जैसे मुंहमें गुरुचका रस भर गया।

बतलाओ न !

यही तीस होगी।

झूठ !

मैं भूल रहा हूं। पैंतीस।

फिर भूल रहे हो याद करो।

मई, ४०के भीतर है।

अच्छा तो गदह-पचीसीके पार हो। लेकिन बुद्धि वैसी ही है।

कैसे ?

४० वर्षके हो, तीन वर्ष सिर मुंड़ाओगे, तब दो वर्षमें दो-दो बित्तेके बाल होंगे। मैं पूछती हूं, ४५ वर्षकी उम्रमें किसे रिझाओगे ?

तुम्हें।

तब तो मुझसे शादी करनेके पहले यह सब कर लेना चाहिये था।

ठाकुर साहब चुप हो गये।

सरोजने कहा-कुछ दवा लाये हो ?

हां।

उठो, उन्हें फेंक दो।

सरोज ! तुम मुझसे प्रेम करती हो ? अगर करती हो तो मेरी मौंहें भी उड़ जायं। कोई चिंता नहीं।

सरोजकी बीचसे कटी कामदेवकी (भ्र) प्रत्यंचा कुछ चढ़ गयी, उसने वक्र दृष्टिसे पतिको देखा और मुस्करा कर बाहर चली।

ठाकुर साहबने कहा तुम लोगोंकी यही बात बहुत खराब होती है।

सरोजने द्वार पर खड़ी होकर कहा—तुम्हारी मूंछें कुछ बड़ी हैं।

दूसरे दिन लोगोंने देखा—ठाकुर साहबकी मूंछें आधीसे ऊपर गायब हैं।

क्या आपने अनुभव किया है कि घड़ी ट्रेनसे भी तेज चलता है

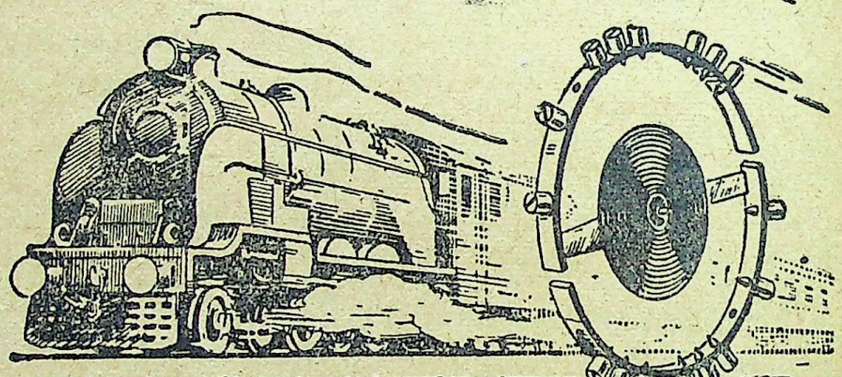

आश्चर्य है कि घड़ीका हैलेन्स हवील ठीक उसी रफ्तारसे चलता है, जिससे ६० मील प्रति घण्टा चलने वाला इंजिन। हालांकि हैलेन्स हवीलकी बनावट सर्वथा भिन्न होती है, और इंजिनके खिलाफ; थोड़ी निगहबानी पर चौबीसों घण्टे प्रति दिन, माह व वर्षों तक इसका काम निरंतर जारी रहता है-सिर्फ समय-समय पर तेल देने और सफाईकी जरूरत होती है। एक लम्बे अरसे तक अविश्रांत रूपसे सेवा देने वाली घड़ीके समान दूसरी कोई मशीन नहीं।

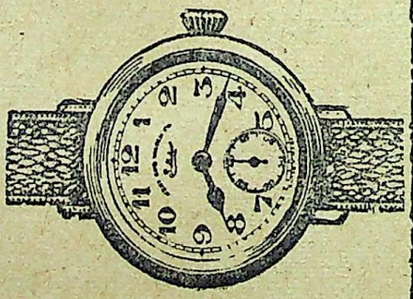

लिलीदार रिस्ट-
(क्रिस्टल शेप)
निकेल सिलवर केस...६२)

अतएव ऐसा यन्त्र प्रख्यात फर्मसे ही खरीदना उचित है—वेस्ट एण्ड वाच की घड़ी खरीद आप निश्चिन्त रहेंगे। यद्यपि सभी घड़ियोंकी सप्लाइ सम्भव नहीं तथापि यथाशक्ति चेष्टाकी जाती है

वेस्ट एण्ड वाच ६० बम्बई और कलकत्ता।

WEST END WATCH Co.

BOMBAY CALCUTTA

नारी, उपयोगितावाद और जीवन-सत्य

लेखक—श्री विजयकुमार मुन्शी साहित्यरत्न बी० ए० एलएल० बी०

जीवनकी दीवारमें उपयोगितावाद किस सीमा तक धंसना चाहिये ? उपयोगितावादका रंग जीवनकी दीवारको किस सीमा तक आकर्षक और मनोरम रूप प्रदान कर सकता है ? ये प्रश्न हैं जो हमारे सामाजिक जीवनमें प्रवेश पा रहे हैं। नारीका शोषण होता है और मुझे मानवकी इस क्रूर पाशविक शोषणकी मनोवृत्तिके अन्तरालमें केवल एक ही भावनाका विशेष प्राधान्य नजर आता है और वह हैं उपयोगितावाद समाजका एक अंग इस जीवनके उपयोगितावादी दृष्टिकोणसे विद्रोह करना चाहता है किन्तु जीवनकी आर्थिक स्थिति इतनी निर्बल है कि विद्रोहका स्वर कोई क्रियात्मक स्वरूप प्राप्त करनेमें असमर्थ है। १५ अगस्तने हमारे जीवन में आजादीकी एक नवीन चेतना प्रदान की है। १५ अगस्तने हमारे जीवन को आत्म निर्माणकी एक दिशा दी है। १५ अगस्तने हमें आत्म-निरीक्षणके लिये साधन प्रदान किये हैं।

निम्नतम स्वार्थकी चालबाज नीतिने राष्ट्रको अपनी शक्तियोंका उपयोग, प्रतिक्रियावादी शक्तियोंको समाप्त करनेके लिये बाध्य किया है। सक्रांति कालमें सब देशोंमें यही हुआ है। आज हमारे धर्मकी मान्यताएं बदल चुकी हैं, आज हमें युगके इशारे पर आगे बढ़ना है। इस देशकी लम्बी गुलामीने न केवल हमारी वाणीकी शक्तिको बांध दिया, न केवल उसने हमारे जाग्रत चेतनामय स्वरोंका संगीत बिखेर दिया अपितु उसने हमारी कलमकी अजस्र-प्रवाहिनी समाज निर्माणके शक्ति प्रवाहकी राहमें स्वार्थपरता औरनिरंकुशताकाएक बांध खड़ा कर दिया था। आज बंधन छूट चुके हैं किन्तु वे कुछ दिनों तक अपनी प्रतिक्रियात्मक शक्तिका प्रयोग करनेके लिये उतावले दीखेंगे।

जीवनके उपयोगितावादी दृष्टिकोणसे जीवनका भौतिक धरातल यद्यपि मजबूत बनता है किन्तु साहित्य और जीवनकी रसना, काव्यात्मक सज्ञान, प्रेरणात्मक कल्पनाके रिमझिम आवरणमें परिवेष्टित अनुभूतियां प्रायः विकृत हो जाया करती हैं। हमें आज न तो जीवनसे विमुख होकर चलना है और न कल्पना और न स्वप्न की रंगीनीमें जीवनकी महत्ताको समाप्त कर देना है। हमें पश्चिमके जीनेके मौजमय तरीकेको उधार लेना है, हमें रूस के यथार्थवादका अपनी कलामें स्वागत करना है, हमें नारी जीवनके धरातलको ऊपर उठाना है, उसे जीवनकी गति और प्रेरणा प्रदान करना है, उसे अपने हृदयके संतोष और साहित्यकी मान्यताओंको लेकर जीने देना है। हमें उसे सहचरी बनाना है। उसे कलके गौरवमय गरिमामय और महिमामय मुक्त देशके जिम्मेदार नागरिकोंका आत्म निर्माण करना है। उसे कलके वृहत्तर हिंदके जीवनको विश्वके रंगमचपर अपनी सांस्कृतिक गरिमा और शालीनताको लेकर प्रस्तुत करनेमें सहायक होना है।

नारीको जीवनके चौराहेपर खड़े होकर केवल भाषणकी कलमें ही पारंगत नहीं होना है, नारीको पुरुषकी वासना और कामुकताका ही भागी नहीं बनना है किन्तु उसे समाजके आचरणको उन्नत करके हमारी आत्माके उत्थानको एक दिशा देनी है। उसे जीवनकी प्रगति करनी है, समाज और देशको अपने प्राणोंकी बाजी लगानेवाले भगत, आजाद और बिस्मिल बिरासतमें देना है, उसे आगामी कलके भारतको सुभाषका गौरव और जवाहरकी चेतनाका वरदान देना है, उसे कलके भारतको बापूकी अमरवाणी और पटेलकी दृढ़ताके स्वर देने हैं।

हम राजनीतिके चकाचौंधमें अपने युग निर्माताओंको सदा भूल गये हैं। क्या प्रेमचन्दने भारतके पीड़ित प्राणोंको प्रगति और अधिकारकी किरणसे आलोकित नहीं किया ? क्या प्रसादके सांस्कृतिक स्वरोंने हमें उन्नत नहीं बनाया ? 'क्या हम उस राष्ट्रकवि श्यामलालको भूल जाना चाहते हैं जिसका राष्ट्रीय गीत दिल्लीके लाल किलेमें उच्चतम स्वरमें उद्घोषित होकर अथाह जनसागरके प्राणोंमें तूफान का ज्वालामुखी फोड़नेकी शक्ति रखता है ? क्या हम उन सेनानियोंको भूल जाना चाहते हैं जो दिनको तोप और तमंचेसे खेल कर रातको काव्य निर्माणमें डूब जाया करते थे ? क्या हम रूस और चीन की उन नारी नामधारी शक्तियोंको भूल जायं जिन्होंने अपनी कोमल छाती पर भारी बन्दूक रख कर अपने प्राणप्यारे स्वदेशके लिये जिन्दगी और मौतका खेल खेला था ? कवीन्द्र रवीन्द्र प्रेमचन्द या जनमनमें अपने गीतोंका रस भरनेवाले कवियोंको हमें नहीं भूलना है।

इस देशकी पुरातन संस्कृतिकी नींव को हमें खोद कर फेंक नहीं देना है। हमें एक ऐसी इमारतका निर्माण करना है जिसमें साम्राज्यवादी मनोवृत्तियां प्रश्रय न पा सकें।

नारीको हमें जीवनके उपभोगकी चीज नहीं बनाना है। उससे हमें आगे बढ़नेकी शक्ति लेना है। नारी सौंदर्य हमें केवल रिझा कर न रह जाये, वह हमें जीवनके सौंदर्यकी ओर बढ़नेके लिये प्रेरणा दे। नारी को चूल्हेकी आगमें केवल रोटी नहीं सेंकना है किन्तु जीवनकी उन दूषित भावनाओंको भी जला डालना है, जो जीवनकी राहमें रोड़े अटकाती हैं। उपयोगितावाद नारी के शरीर तक ही सीमित न हो वरन वह नारी हृदय की सूक्ष्मतम मनोवृत्तियोंसे हमें विलग न करें। आजकी पाशविकता, तीव्र यथार्थवादके धरातलपर खड़ी है। उपयोगितावाद अपने नग्न और वीभत्स रूपमें जनमन और जनमतको रौंद रही है। जूतेकी ठोकरपर सुहाग उड़ रहा है। पाशविक हंसीकी घोर गूंजमें नारीत्वका उपहास हो रहा है। मानवके नीच अट्टहासकी छायामें, नारीका शरीर और आत्मा दोनों जल रहे हैं। जो मानव आज इस नारीकी आगकी राखसे राजप्रासाद बनाकर जीना चाहता है वह कल मानवता के सम्मुख घुटने टेकनेको बाध्य होगा। रणचण्डीकी झोली रणमुण्डोंसे भर रही है किन्तु नारीका खून मानवताकी धरती

(शेष ३६ वें पृष्ठ पर)

व्यक्ति और व्यक्तित्व

लेखक— श्री 'विपिन'

हाड़—मांसका वह पुतला, जिसमें एक चेतन तत्व हो, कर्त्तृत्व—शक्ति हो 'व्यक्ति' है। व्यक्ति द्वारा, वे कार्य, जो रचनात्मक रूप लेकर, जो समय सरिता की बहती लहरोंपर भी अपना चमकीला इतिहास लिख देते हैं —'व्यक्तित्व' है।

व्यक्तिका दायरा स-सीम है, व्यक्तित्वका अ-सीमा व्यक्ति क्षर होता है, व्यक्तित्व अ—क्षर।

यहां यह प्रश्न सहज उठ सकता है कि जब दो विरोधी तत्वोंका नाम व्यक्ति और व्यक्तित्व है तो क्या जीवन दो विरोधी तत्वोंके सम्मिश्रणका नाम है? किन्तु, यूं देखा जाय तो जीवन कई मेल बेमेल तत्वोंका अस्पष्टाकार है। वास्तवमें जीवनकी गति—विधिको जागरुकता पूर्वक संचालन करने वाला है व्यक्ति, और, गतिके क्रियात्मक स्वरूपमें, पीढ़ियोंकी अमिटता छोड़ दें, वह व्यक्तित्व है। जीवधारी व्यक्ति हैं, जीवन-धारी व्यक्तित्व।

व्यक्ति और व्यक्तित्व सापेक्ष है, अन्योन्याश्रित है। व्यक्ति व्यक्तित्वका निर्माता है और व्यक्तित्व व्यक्तिको स्थायित्व-प्रदान करनेवाला। यों तो व्यक्तिसे व्यक्त रूप पाया जानेवाला प्रत्येक कार्य व्यक्तित्व है। किन्तु जिस कार्यमें व्यक्तिकी कलङ्क-कालिमा निहित हो वह व्यक्तित्व नहीं है। यहां एक शङ्का हो सकती है कि व्यक्तित्व तो रामका भी था और रावणका भी, दोनोंकी गाथायें अमर हैं, सही है। किन्तु जो व्यक्तित्व दूसरे व्यक्तित्वके निर्माणमें समर्थ हो, जो कुछ दे सके कुछ सिखा सके—वही व्यक्तित्वका सच्चा स्वरूप है। जिस व्यक्तित्वमें आतङ्क हो, वह अमर होकर भी लांछित व्यक्तित्व है। पं० माखनलाल चतुर्वेदीने कहीं कहा है कि 'व्यक्तित्व वह है, जो पीढ़ियों तक, हृदय-से-हृदयपर उतरता चला जाय।'

आतङ्क, कु-प्रभाव डालनेवाला व्यक्ति, व्यक्तित्ववान नहीं है। वह व्यक्तित्व ही नहीं है, जिसमें अद्भुत कर्त्तव्य-निष्ठा और अद्भुत आकर्षण शक्ति नहीं है। व्यवस्थाके खोखलेपनको उलट-पलट देने वाली, अपने क्षेत्रमें अनुकरणीय उथल-पुथल मचा देनेवाली और काल वायुके समक्ष सीना तानकर अडिग रहनेवाली महाशक्तिका नाम व्यक्तित्व है।

किन्तु, इन सबोंका सामना करता है—व्यक्ति, और उसके मुकाबलेका सुफल होता है व्यक्तित्व। परिमार्जित व्यक्ति, परिमार्जित व्यक्तित्वका प्रदाता है, व्यक्तिकी पवित्रता, व्यक्तित्वकी पवित्रता है। 'व्यक्ति'को आडम्बरोंमें ढांककर, आलोकदानका दम्भ भरने वाला भी वह व्यक्ति व्यक्तित्वहीन है। भले ही उसके व्यक्तित्वका असर, कुछ हृदय में अपना स्थान सुरक्षित कर ले, किन्तु, जन-जनके मनमनमें उसका स्थान अरक्षित है प्रभावशून्य है।

व्यक्तिके मृत्तिका घटसे ढाले जाने वाले बिन्दु भले ही अमृत-बिन्दु क्यों न हों, अमृततत्व नहीं प्रदान कर सकेंगे। वे बिन्दु मिट्टीके घड़ेसे निकलकर, मिट्टीके घड़ेमें भले ही गिरते हों, किन्तु उसमें जीवन-स्फूर्ति नहीं फूंक सकते। जब व्यक्ति भी कंचन-घट होगा, तभी उसके व्यक्तित्व रूपी अमृत-बिन्दु, मृत्तिकाघटमें ढलकर भी नवचेतना जाग्रत कर देंगे।

व्यक्तित्व, जीवन साधनाका पुण्यफल है। या यों कह सकते हैं कि व्यक्तिकी परम पवित्र और अविचल तपस्याका मन व्यक्तित्व है। व्यक्ति ही तो अपना जीवन पुष्प, कांटों भरी परिस्थितियोंमें विकसाता है और व्यक्तित्वका सौरभ दान करता है। व्यक्ति यदि वीणा है, तो व्यक्तित्व उससे फूट फूटकर दिग-दिगन्तरोंमें व्याप्त होनेवाला स्वरविलास, व्यक्ति दीप है, व्यक्तित्व दीपालोक, व्यक्ति फल है व्यक्तित्व रस, व्यक्ति जलधर है व्यक्तित्व जलाधार, व्यक्ति जल है, व्यक्तित्व प्रवाह, और व्यक्ति यदि शून्य अन्तरिक्ष है, तो व्यक्तित्व उस में व्याप्त गहन, अमेय नीलिमा।

——

(३५ वें पृष्ठका शेषांश)

का वह काला दाग है जो युग युग तक मानवकी नीचता, बर्बरता और हीनताकी निशानी बनकर नहीं मिट सकेगा।

जब पाप ताली पीटकर गाता है तो जीवनका सत्य मौन दिखायी देता है। आज हमारे चारों ओर पूंजीवादी मनोवृत्तियोंका कुहरा छाया है। नारी विद्रोहकी आगमें जल रही है, पुरुष अपनी हीनतापर तड़प रहा है। यदि संघर्षमय तीव्र यथार्थवादी संक्रांतिकालसे पार होकर हमें एक प्रगतिशील समाजका निर्माण करना है तो न तो हमें जीवनके सत्योंको दफनाकर उनकी कब्र बनाना है और न नारीके शरीर और सौन्दर्यको उपयोगितावादकी शानपर चढ़ाकर मानवत के लिये नरकके दरवाजे इस दुनियामें खोलने हैं। हमें आगे बढ़ना है शोषणका नाश करना है, जीवन-सत्यका दीप जलाना है।

——

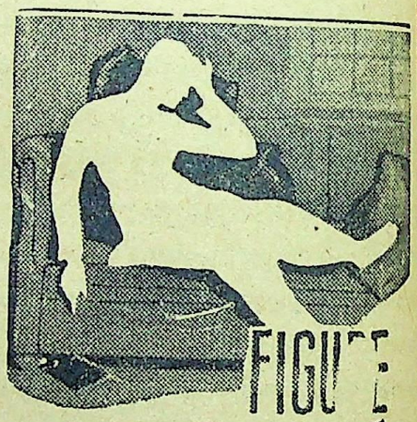

प्रशंसनीय रक्त परिष्कारक दूषित रक्तसे उत्पन्न होनेवाली सभी बीमारियोंकी अचूक दवा तथा टानिक। सजन, बात, गठिया चर्मरोग, दुर्बलता घाव, फोड़ा फुंसी, गांठोंकी सजन जो रक्तकी कमी या दूषित रक्तसे उत्पन्न होता है

AMRITABALLI KASAYA
restores vitality & strength

KAVIRAJ N. N. SEN & Co. LTD CALCUTTA

पुस्तक परिचय

मानव समाज—लेखक, महा पण्डित राहुल सांकृत्यायन, प्रकाशक किताब महल, ५६ ए जीरो रोड इलाहाबाद। मूल्य ४॥)

पुस्तकका यह दूसरा संस्करण है। इसकी उपयोगिता पुस्तक और लेखकके नामसे ही स्पष्ट है। मानव समाज, जो कभी जंगली और अर्द्ध शिक्षित अवस्था में था धीरे-धीरे कैसे विकासकी ओर अग्रसर होकर सभ्य (१) मानव बन कर मानव द्वारा मानवके शोषणके नित नये तौर तरीके ईजाद करने लगा, इस शोषणने कितने रूप कब धरे और देशकी राज सत्ता तथा विज्ञानसे कब किस रूपमें शोषणको बल और प्रोत्साहन मिलता रहा—इस क्रम-विकास वर्णनमें विद्वान लेखकने मानव जातिका सम्पूर्ण सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और वैज्ञानिक इतिहास बड़ी सुन्दर, रोचक और आकर्षक शैलीमें सजीव और पुष्ट भाषा के माध्यमसे तैयार किया है। राजनीति, समाजनीति और अर्थनीतिके क्रमविकास का पूरा अध्ययन इस एक पुस्तकके द्वारा पर्याप्त रूपमें हो सकता है। सामन्तवादकी चिताभस्मपर उद्योगवाद, पूंजीवाद कैसे विकसित हुए और उद्योगवादने धीरे-धीरे कैसे साम्राज्यवाद, फासिस्टवाद और एकतंत्रशाहीको जन्म दिया और समाजवाद कैसे आया, और संसारके शोषित, उत्पीड़ित पूंजीवाद द्वारा त्रस्त और आतंकित विराट जनसमूहने समाजवादको मानव व्याधिके लिये क्यों रामवाण समझा, आदि बातोंका सुन्दरता और पाण्डित्यके साथ किन्तु सरल ढंगसे इस पुस्तकमें दिग्दर्शन कराया गया है। जीवनतत्वोंके दर्शनके साथ साथ उत्पादन और वितरणका रहस्य, वर्ग संघर्षका महत्व जिसे समझना है उसे मानव समाजको अवश्य पढ़ना चाहिये। शास्त्रीय ग्रंथ होते हुए भी इसे पढ़ते समय औपन्यासिक और साहित्यिक आनंद मिलता है साथ ही साथ आदिकालसे चले हुए मनुष्यसे लेकर आजके इस युगके मनुष्यका सम्पूर्ण इतिहास इस एक पुस्तकको पढ़कर इतने सम्यक ढंगसे जाना और समझा जा सकता है कि पाठक दर्जनों पुस्तकें पढ़नेके श्रमसे सहज ही बच जा सकता है।

मानसिक चिकित्सा—लेखक प्रो० लालजी राम शुक्ल एम० ए० बी० टी, अध्यापक टीचार्स ट्रेनिंग कालेज; काशी विश्व विद्यालय प्रकाशक नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स चौक, बनारस। मूल्य ४

मनोविज्ञानके महीन विद्वान शुक्लजी से हिंदीके पाठक भली प्रकार परिचित हैं। हिंदी साहित्यमें उपेक्षित किंतु अत्यंत महत्वपूर्ण इस विषयपर विवेचनात्मक पुस्तकें लिखकर शुक्लजी हिंदी के साथ साथ समाजकी जो सेवा कर रहे हैं वह प्रशंसनीय है। इस पुस्तकमें मानसिक उपचार द्वारा रोगोंकी चिकित्सापर प्रकाश डालते हुए लेखकने चेतन और अचेतन मनका बड़े सुन्दर ढंगसे बोध कराया है। भौतिक और मानसिक चिकित्साका क्या सम्बन्ध है और दोनोंमें कहांतक समानता है तथा मनोविकार जनित रोगोंका विश्लेषण और उनकी चिकित्सा प्रणालीपर पुस्तक में अच्छा प्रकाश डाला गया है।

नयी दिशा—(कविता - रचयिता श्री आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक तारा मण्डल, मुजफ्फरपुर मूल्य २॥)

यह पुस्तक कविकी पचास स्फुट कविताओंका संग्रह है। कविमें "कीट्स की वासना, शेलीका विद्रोह, स्विनवर्नका विक्षोभ, टैगोरकी कल्पना, पन्तकी कोमलता और निरालाकी वधानिक विविधता (१)" है या नहीं, हम इसकी चर्चा करके कविका महत्व नहीं घटाना चाहते। मुझे माफ किया जाय यह कहने के लिये कि कविके इस तरहके प्रशंसक क्या सचमुच उनके प्रशंसक हैं? कविका अपना निजत्व है और यह निजत्व 'नाराज' शीर्षक कवितामें कितने सुन्दर ढंगसे व्यक्त किया गया है जिसमें कवि कहता है मुझसे मेरा मन नाराज, मुझसे जीवन भी नाराज दुनिया भी तो है नाराज, मेरा ईश्वर भी नाराज, और तब कवि सोचने लगता है "सब तो सच ही कहते हैं, मुझे बनानेवाले, बोलो क्या मैं इतना तुच्छ नगण्य। मुझे मिटानेवाले, बोलो क्या मैं इतना अधम, अधन्य। अगर नहीं तो किसने तुमको कहा कि मेरी याद करो! मुझे बनाकर खेल-खेलमें यों मुझको बर्बाद करो। मुझे बता दो, किसके सम्मुख जाकर नत मस्तक होऊं? मैं ही केवल भार जगतका क्या मैं ही इतना दुर्बल? जो मुझसे मेरा जीवन हैं जीवनका प्रतिक्षण नाराज।

रेडियो—लेखक श्री रा० र० खाडिलकर बी० एस० सी। प्रकाशक काशी नागरी प्रचारिणी सभा बनारस। मूल्य ।॥)

आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारोंमें रेडियोका समाज और देशके जीवनमें कितना महत्वपूर्ण स्थान है यह किसीसे छिपा नहीं है। इसके सम्बन्धमें अधिकसे अधिक जानकारी जनसाधारणको होनी चाहिये। अन्य भाषाओंमें इस विषयका पर्याप्त साहित्य है। हिन्दीके पाठकोंको रेडियो सम्बन्धी ज्ञान करानेके उद्देश्यसे लिखी गयी इस पुस्तकका हम स्वागत

(शेष ३९ वें पृष्ठपर)

पवन पथ पर

२८ वें पृष्ठ का शेषांश

था। अब बड़ी सुई ठीक छः पर पहुंची। हमारा यान अपने स्थानसे खिसकने लगा, कुछ और तेज चला—फिर कुछ और ज्यादा दूर जाकर घूमकर खड़ा हो गया। यहां मशीन पूरे वेगके साथ तेज कर दी गयी, जोरदार घर्राटे का शब्द होने लगा, हम लोगोंको कानोंमें लगानेके लिये रूई दे दी गई थी, वह सब लोग पहिले ही लगा चुके थे, अब हमारा यान जोरसे जमीन पर दौड़ने लगा—इतना तेज जितना कि कोई भी दूसरी सवारी मोटर गाड़ी नहीं दौड़ सकती, कुछ क्षणोंमें ही आस पास दूर पर दिखने वाले वृक्ष और कुछ पुरानी इमारतोंके खंडहर हमारे पैरोंके नीचे आने लगे, वायुयान अब पृथ्वीको छोड़कर वायुमें विचरण करने लगा। सामने ही देखो कैसा सुन्दर दृश्य है। ठीक हमारे नीचे एक खेत आया, किसान बैलोंकी जोड़ी लिये खेत जोत रहा है हम लोगों को ऊपरसे उड़ता हुआ देखकर खड़ा हो गया। वह और उसके बैल कितने छोटे छोटे दिखाई देते हैं। एक महाभारती पण्डितने कथा कहते समय बताया था कि गांधारीके सौ पुत्र पैदा हुए थे, प्रत्येक पुत्र अंगूठेके बराबरका था। उन दिनों पण्डितजीकी बात मुझे बहुत जची थी। बिलकुल उतना ही बड़ा वह किसान भी मालूम होता है इसके बैल दो-दो अंगूठोंके बराबर समझो।

जहाज कुछ ऊपर उठ रहा है। वह देखो, सामनेसे गवर्नर जनरल हाउस तथा एसेम्बली चेम्बर कितने स्पष्ट रूपसे दिखाई देते हैं। एसेम्बली चेम्बरका दृश्य तो यहांसे ऐसा दिखता है मानो कोई सुन्दर शतदल कमल खिला हुआ हो। तुम जब दिल्लीमें थीं तब इसे देख चुकी हो किन्तु मेरा विश्वास है कि पृथ्वीकी ही वस्तु पृथ्वी परसे इतनी सुन्दर एवं सुखद नहीं मालूम होती जितनी कि अन्तरिक्षसे। यदि यह बात न होती तो भला यह क्योंकर सम्भव था कि पृथ्वीके ही प्राणी पृथ्वीके जीवनको भारभूत समझते, संसारको दुःखों और वेदनाओंका घर समझते तथा आकाशके देवतागण इसी पृथ्वीतल पर जन्म लेने को तरसते? यह देखो जहाज पश्चिम की ओर मुड़ता हुआ मंडलाकार गति से ऊपर चढ़ता जा रहा है। यदि तुमने कभी ध्यानसे देखा होगा तो तुम्हें ज्ञात होगा कि सन्ध्या समय प्रायः चीलें जब आकाशमें अधिकाधिक उड़ती जाती हैं, मंडलाकार गतिसे ही चक्कर लगाती हुई ऊपर उड़ती हैं। अब सामने ही कुतुबमीनार दिखायी देने लगी। यहांसे देखने पर तो बच्चाका तमाशा सा मालूम होती है, इस समयतो इसका आकार मेरे फाउण्टन पेनसे बड़ा न होगा। सफदर जंगका मकबरा, एसेम्बली चेम्बर इंडियागेट जामा मस्जिद तथा बिड़ला मन्दिर सभी ऊंची ऊंची इमारतें दूर अधिकाधिक दूर, जाने लगी और अब दिल्लीकी दक्षिणपूर्वी सीमा पर मथुरा रोड पर अवस्थित हुमायूंका मकबरा आ पहुंचा। दो मास पूर्व जब मैं यहांसे उड़ा था उस समय यहांके मुसलमान शरणार्थियोंकी उमड़ती हुई भीड़ ठीक ऐसी मालूम होती थी, मानो एक बड़ी गुड़की भेली रक्खी हो और उस पर असंख्य चींटे रेंग रहे हों। दृश्य इतनी शीघ्रतासे बदलते जारहे हैं। जिसका ठिकाना नहीं। जितनी देरमें मैं एक वाक्य लिख रहा हूं उतनी देरमें जहाजके नीचेसे एक मील जमीन पीछे खिसकती जा रही है। वायुयानकी यात्रा कितनी सुव्यवस्थित तथा अबाध होती है इसका अन्दाज इसी बातमें लगाया जा सकता है कि रेलगाड़ी तथा मोटरमें एक भी वाक्य सहज सरलतासे लिखना असंभव है, पानीके जहाजकी तो ऐसी उछल कूद रहती है कि वहां पर हाथमें ली हुई पुस्तक पढ़ना भी बड़ा दुस्तर कार्य होता है, किन्तु यहां तो ठीक उसी प्रकार लिखा जा रहा है जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने कमरेमें कोच पर बैठा हुआ लिख रहा हो। अन्तर इतना ही है कि कमरेका दृश्य अपरिवर्तनशील होनेसे एक रूपता उपस्थित करता है किन्तु यहां क्षण क्षणमें परिवर्तन और नवीनता। वस्तुस्थितिको देखा जाये तो सच्ची रमणीयता यही है। महाकवि माघने लिखा है क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।"

यह लो सुपर्ण यमुनाजीके ऊपर से उड़ रहा है। नीचे के बालुकामय तट बिलकुल सीधे और चिकने दिख रहे हैं। आजका दृश्य यहांके दो मास पूर्वके दृश्यसे सर्वथा भिन्न है। कहां उस समयकी जलमयी सृष्टि जिसने प्रलयका सा दृश्य उपस्थित कर दिया था और कहां यह मनोमोहक रूप मानो किसी वैष्णवने अपने मन्दिरकी झांकी सजानेके लिये देव मूर्तियोंके सम्मुख एक छोटी सी जलकी धारा प्रवाहित की हो किन्तु पानी अधिक न मिलनेके कारण जलकी धारा एक संकुचित स्थानमें रह गयी हो - अधिकांश भाग सूखा हो। इस समयतो तटवर्ती वृक्ष तथा गांवोंके घर द्वार पूरे पूरे दिखाई देते हैं और जो यमुना इनके कण्ठ देश तक आ चुकी थी वह किसी अव्यक्त क्षणमें अलक्ष्य कृष्णके चरणोंका स्पर्श करके पुनः उतर गयी है जिससे अब सभी गांव और खेत, पेड़ और पौधे, मनुष्य और पशु सभी सुखकी सांस ले रहे हैं। हमारा यान ठीक सूर्याभिमुख उड़ रहा है, क्योंकि यही हमारी दिशा है, अब हम यमुनाको पार करके पुनः भूमिके ऊपर से उड़ रहे हैं। नीचेके खेत ऐसे सुन्दर और सुघर दिखाते हैं मानो प्रकृति सुन्दरीने हरी हरी मेंहदी और हल्दी तथा रोलीसे चौक पूर रखा हो।

—*—

करते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे होने वाले नागरिकको विज्ञानके विकासकी कमसे कम स्थूल जानकारी तो अवश्य ही होनी चाहिये। इस दृष्टिसे इस पुस्तकको प्राथमिक शिक्षाके पाठ्यक्रममें स्थान दिया जाना चाहिये।

१६॥) में ज्वेल ली रिस्ट वाच

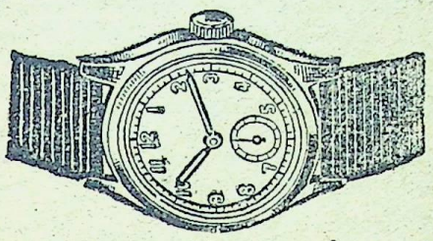

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी
गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)
अंगुठा कभ या टोनो शेप
क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।
एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

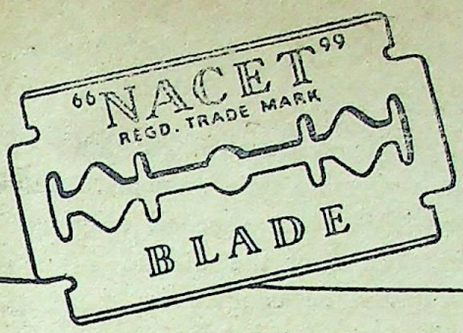

"NACET"
"नेसेट"
अल्प मूल्य में श्रेष्ठ ब्लेड

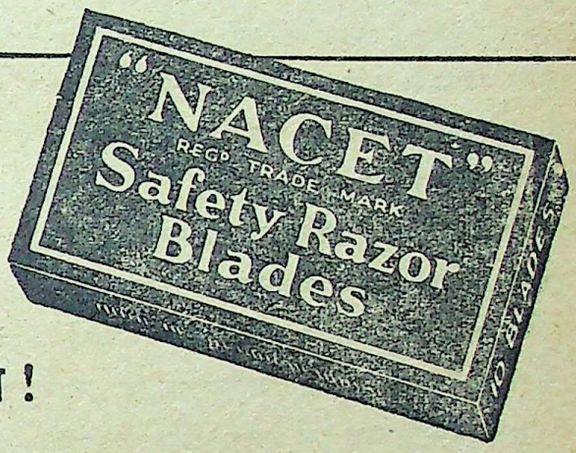

१० के
सिर्फ ८ आने !

Ad. No. NB. 2.

वेदनानिग्रह रस

वेदना निग्रह रस के फायदे
शिर दर्द, कमर दर्द, पेट का शूल, जुकाम, फूड़ी, मलेरिया और मौसमी बुखार दूर करता है, जलमान परेशानी हटाकर नींद लाता है

कुंवर आयुर्वेदिक फार्मेसी - कानपुर

REGD. NO. C 2229.

A NOVELTY WATCH
'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage As. 12. Free for 2 watches

ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM

१९४८ में क्या होने वाला है

भारतवर्षके प्राचीन महापुरुषोंकी सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या अन्धकारपूर्ण संसार में सूर्यका प्रकाश है, यदि आप भी इस अन्धेरी दुनियामें अपने भविष्यका साफ साफ फोटो समयसे पूर्व देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर किसी दिल-पसन्द फूलका नाम लिख कर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष विद्या द्वारा आपके आने वाले बारह मासका हानि लाभ, व्यापार, नौकरीमें तरक्की, गिरावट, तबदीली, तन्दुरुस्ती, बीमारी, यात्रा, अकस्मात् न मालूम कारणसे धनकी प्राप्ति, किसीसे नया मिलाप, औरत औलादका सुख; तारीख पोस्टकार्डसे लेकर वर्ष भरमें पेश आने वाली सब बातोंका खुलासा यानी मासिक वर्ष फल बताकर केवल १।) रु० में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलावा होगा। बुरे ग्रहोंके शान्तिका उपाय लिख दिया जायगा। ज्योतिष विद्याका चमत्कार एक बार अवश्य देखें।

श्री महावीर स्वामी ज्योतिष कार्यालय

(V.W. C.) करतारपुर (जालन्धर)

Shree MAHABIR SWAMI JYOTISH KARYALAYA

V. W. C. Kartarpur (Jullundhar)

फैंसी सिल्क साड़ी आकर्षक डिज़ाईन

नं०	७	८	९	५ गज
	१८)	२३)	२८)	"

२) आर्डर के साथ पेशगी
बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता

भारत इन्डस्ट्रीज, जुही-कानपुर

नेपाली शुद्ध कस्तूरी, शुद्ध

हिमालय और तिब्बत कस्तूरी शुद्ध शीलाजित, आयुर्वेदीय औषधि द्रव्य, जड़ी बूटी इत्यादि निम्नलिखित पते से मंगा लीजिये।

मालिकान—
साहु नारायण बहादुर श्रेष्ठ एण्ड सन्स (रजि०)
अध्यक्ष—नेपाल हिमालय कस्तूरी भण्डार (रजि०)
माहापाल तुलन्हे ललितपुर, नेपाल।

अमेरिकन माडेल पिस्तौल

[illegible] इण्डिया ट्रेडिंग कम्पनी, दर्शनपुरवा, कानपुर।

भूकम्प सदीपर अकसीर उपाय

श्रीसोदा १८६६ नीलगिरि तेल

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमें बचानेवाला

प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

आह: ह:

'लालशर' तो मेरे लिये अमृत है!

लाल-शर

(लाल शरबत)

बच्चोंको मोटा, ताजा, स्वस्थ और प्रसन्नचित्त रखने की प्रसिद्ध मीठी दवा

सब जगह मिलता है।

डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लि० कलकत्ता

सम्पादक—देवदत्तमिश्र। ७४ धमतला स्ट्रीट, स्थित इलेस्ट्रेड इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

पुस्तकालय

सचित्र

विश्वामित्र

ऐसे दिखने के लिये
आप पैसा देते हैं

यदि आप नाई को सिर्फ़ तीन हजामत के ही लिये छः आने तक दे देते हैं तो सात दिनों में से चार दिन आप ऐसे दिखेंगे—खुरदरे और अव्यवस्थित।

ऐसा दिखना
आपके लिये लाभप्रद है।

यदि आप स्वयं ही प्रतिदिन "सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड से हजामत बनाते हैं तो आप उस सुव्यवस्थित आकृति को प्राप्त कर सकेंगे जो सफलता की जननी है। आप पैसे की भी बचत करेंगे। ब्लेडों का एक पैकेट हफ्तों चलता है।

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड बाजार में सर्वश्रेष्ठ हैं। वे अतिरिक्त तेजी के लिये तीन स्तरों वाले श्रेष्ठतम इस्पातसे बनाये जाते हैं।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

7 o'clock
SLOTTED BLADES

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडस्

ब्लेड जो ज़्यादा हजामत और कम ख़र्चा देते हैं

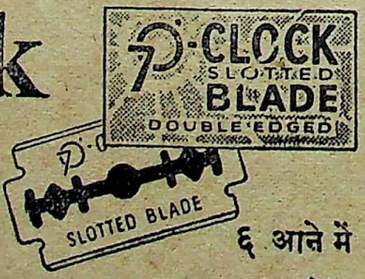

६ आने में
५ का प्रत्येक पैकेट

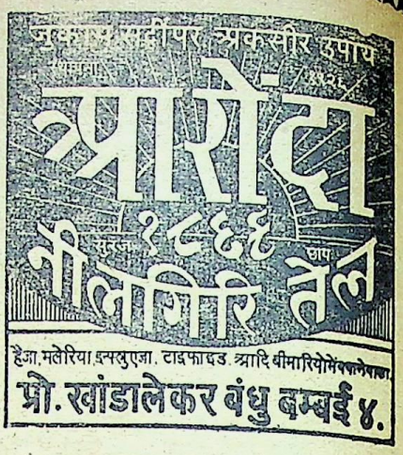

१६॥) में ज्वेल्ड लीवर वाच

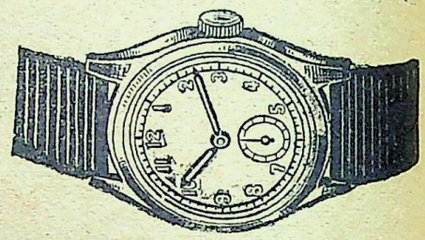

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)
एक गुना कभी या टोनो शेप क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।

एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

सफेद बाल काला

इस तेलसे बालोंका पकना रुककर और पका बाल काला पड़ा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दुगना मूल्य वापिस की शर्त लिखा लें यह तेल सिरके दर्द व सिरमें चक्कर आना आदि को आराम कर आंखकी रोशनी को बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) आधा पका हो तो ३॥) और सब पका हो तो ५) का तेल मगवा लें।

श्रीइन्दिरा फार्मेसी पो० बेगूसराय, मुंगेर

विश्वामित्र

सम्पादक—
देवदत्त मिश्र

वर्ष—३० संख्या—५१ ता० १४ जनवरी १९४८ JANUARY 14, 1948. मूल्य =) वार्षिक ६)

विपरीत

जग की आंखों में व्यथा अश्रु मेरे अंतर का गान बन गयी।

मैं उसे मचलते देख चुका
जल - जल कर पलते देख चुका
दिल की दुनियामें घुल-घुल कर
आंखों से गलते देख चुका
बन बिजली जी में गिरी मौन, अधरों पर मृदु मुस्कान बन गयी।

सब बढ़ा [illegible]व के भार नये
जीवन की बाजी हार गये
सुख की आशा की वेदी पर
रख अश्रु-सुमन सर मार [illegible]
बन जलन व्यथा मेरे उर में आयी, जीवन - कल्याण बन गयी।

दुःख भार एक, जो ढोना है
जग का नित-नित का रोना है
हिय की सीपी के मोती को
दृग - वातायन से खोना है
औरों को व्यथा धूल का धन, मेरे जीवन में प्राण बन गयी।

—श्री हंसकुमार ति[illegible]री

आंखों के तारे

—श्री श्याम बिहारी शुक्ल 'तरल'

बिखर गये आंखों के तारे !
जल बन कर जलते अन्तर से,
पिघल पड़े झरते निर्झर से;
भू पर टपक पड़े आंसू बन कर सुस्मृतियों के क्षण प्यारे !
बिखर गये आंखों के तारे !
सुख संयोग की एक कहानी,
सुन - सुन कर हो गयी पुरानी;
फिर नवीन, फिर कुछ नवीन हो जग के अगणित कण्ठ पुकारे !
बिखर गये आंखों के तारे !
प्रणय ज्ञान की एक पिपासा,
मानव की अतृप्त अभिलाषा;
कब मिल सके एक धारा के दो अशांत, दो हृदय किनारे !
बिखर गये आंखों के तारे !

तिन कहं जग दुलभ कछु नाहीं ॥

विश्वामित्र

यही समय है।

अभी उस दिन तक अर्थात् १५ अगस्त तक कांग्रेसका काम था स्वतंत्रता के लिये देशकी सरकारसे लड़ना और इस लड़ाईके लिये देशको सङ्गठित, सुसज्जित और सर्वदा प्रस्तुत रखना। १५ अगस्तके बाद कांग्रेसका काम ठीक इसके विपरीत हो गया है। देशकी सरकारको सब भांति सहायता, सहयोग और बल देकर उसको हर तरह शक्तिशाली बनाना आज कांग्रेसका काम है। तब सरकार विदेशी थी अब अपनी सरकार है। कांग्रेसकी ताकत ही सरकारकी ताकत है। किसी महान परिवर्तनके बाद प्राप्त महान उत्तरदायित्वकी रक्षा करना उतना सहज काम नहीं है जितना साधारण कालमें होता। विनाशकी योजनाको कार्यान्वित करनेसे वहीं अधिक योग्यता, क्षमता और बुद्धिमत्ताकी आवश्यकता होती है निर्माणकी योजना में। विदेशी सरकारसे लड़ना उतना कठिन काम नहीं था जितना प्रगति विरोधी देशी विदेशी सभी तत्वोंसे लड़ते हुए निर्माणके पथ पर साहस और दृढ़ताके साथ अग्रसर होना है। पहलेकी अपेक्षा अधिक कठोर कार्य, त्याग और साधनाकी आज आवश्यकता है। विषम और प्रतिकूल परिस्थितियों और वातावरणमें एक देशके शासन सूत्रको हाथमें लेकर उसके उत्तरदायित्वको मान और मर्यादाके साथ कोई राष्ट्र तभी सुन्दर रूपसे पूर्ण कर सकता है जब राष्ट्रके सभी सदस्य और अङ्ग ईमानदारीके साथ अपना कर्त्तव्य पालन करें। रंगूनसे वापस आते समय राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसादने कलकत्तेमें कांग्रेस कर्मियोंको यही उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि आज हमारे सामने पहलेसे लिये तैयार होना चाहिये।

देशकी स्थिति किसीसे छिपी नहीं है। एकसे एक भयानक और रोमाञ्चकारी घटनाओंके समाचार दिन प्रतिदिन आ रहे हैं, शरणार्थियों पर दिन-दिहाड़े नादिरशाहीको भी लज्जित करने वाले दुष्कृत्य किये जा रहे हैं, दुश्मन तलवारसे ही सब बातका फैसला करनेको तुल गया है और काश्मीरकी सीमा और सरहद पर पाकिस्तानकी बर्बरताका नग्न-नृत्य हो रहा है। यह समूचे देशके संयम और अनुशासनकी अग्नि परीक्षाका समय है। इस परीक्षाकी सफलता और असफलतापर सद्यः प्राप्त हमारी स्वतंत्रताका भविष्य अवलम्बित है। अंगरेजोंके हटनेसे जो अधिकार और शक्ति कांग्रेसके हाथमें आयी है उसका सुन्दरसे सुन्दर उपयोग करके ही हम सामने खड़ी तमाम आपदाओं विपदाओंको निर्मल करके संसारमें अपना वह स्थान प्राप्त कर सकेंगे, देशके भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौतिक उपादानोंने हमें जिस उच्च और गौरवशाली आसनके योग्य और उपयुक्त बनाया है। अतः हमारे सामने सबसे बड़ा और प्रथम काम है आयी हुई स्वतंत्रताकी रक्षा करना। इसके लिये आवश्यक है देशमें शांति और व्यवस्था रखना। हमारी सरकारको अपनी पूरी ताकत इसी काममें लगानी पड़ी। यह देशका दुर्भाग्य ही है कि ऐसे समयमें भी कुछ ऐसे व्यक्ति निकल ही आये जो अपने नेतृत्वके लिये इस स्थितिका नाजायज फायदा उठानेकी कुचेष्टा कर रहे हैं। राजेन्द्र बाबूके शब्दोंमें यह और भी दुर्भाग्यकी बात है कि कल तक जो सरकारके एक सदस्य थे आज वही उसके खिलाफ मोर्चेबंदी कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि ये लोग समझें कि इस महत्वाकांक्षाको चरितार्थ करनेका अभी उपयुक्त समय नहीं आया। यदि उपस्थित सङ्कटोंका सामना करनेमें ये देशकी सरकारकी सहायता नहीं कर सकते, उसकी ताकत बढ़ानेमें अपना सहयोग नहीं दे सकते तो न दें किंतु स्वयम् तो सङ्कट न बनें। धैर्यके साथ उस समयकी प्रतीक्षा करें जब हमारा देश और आपदाओंसे मुक्त हो जाये। उस समय उनको राजनीतिक पैंतड़ेबाजी करने से नहीं रोका जायेगा। पर अभी उनके कलाबाजी दिखानेका समय नहीं आया। यह वे समझ लें तो इसमें उनका और देश दोनोंका हित है। अभी तो, जैसा हमारे राष्ट्रपतिने कहा है हमारा मुख्य काम है अपनेको देशकी सेवामें लगा देना।

सेवाका काम सहज नहीं है। यह बहुत बड़ी साधना और तपस्या है। भारत की यह अपनी विशेषता रही है। आज पश्चिमी सभ्यताने हमारी इस विशेषताको नष्ट कर दिया है। साधक और तपस्वीका सबसे बड़ा बल सत्य होता है। हमने अपने जीवनमें आज बहुत दूर तक असत्यको प्रतिष्ठित कर रखा है। अब तक विदेशी सरकारसे इसे बल और प्रश्रय मिला है। किन्तु अब हमारी सरकार हो गयी है। हमें अब अपने प्राचीन आदर्श पर फिर वापस आना चाहिये। राष्ट्रीय जीवनमें असत्यके प्रवेशने ही संसारमें अशांति और संघर्षकी सृष्टि कर रखी हैं। नैतिकतासे शून्य अन्तर्राष्ट्रीय धरातल संसारमें शांति नहीं ला सकता। भारत सदा ही संसारका आध्यात्मिक नेता रहा है। आज स्वतंत्र भारत पर इस नेतृत्वका नैतिक उत्तरदायित्व फिर आया है। किन्तु संसारका नेतृत्व करनेके पूर्व हमें अपनेको उसके योग्य बनाना होगा। इसीसे राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद कहते हैं कि सत्यके आधार पर राष्ट्रका चरित्र निर्माण करनेमें सहायक होना आजकी आवश्यकता है? आत्म शुद्धि और संस्कार द्वारा हमें यह सिद्ध करना होगा कि हम अपने पूर्वजोंके इस उत्तराधिकारके सर्वथा योग्य और उपयुक्त हैं और समय आने पर हम कठिनसे कठिन परीक्षामें सफल हो सकते हैं। हम अमृत पी सकते हैं तो उसी तरह निर्द्वंद्व होकर कालकूट भी घटघट-घटघट पी जा सकते हैं। इस परीक्षाका समय आ रहा है, यह बात प्रत्येक कांग्रेसमैंन ध्यानमें रखें तभी हम आयी हुई स्वतंत्रताकी ही नहीं मानवता की भी रक्षा कर सकेंगे। संसारके सामने यह हमारा दावा रहा है, अब हमें उसे पूरा करना है। यही समय है।

दो घोड़ों पर सवार

शिलांग, कलकत्ता और लखनऊमें पिछले दिनों सर्दार बल्लभ भाई पटेलकी वक्तृताएं सुनकर भारतके मुसलमान कुछ सहमे हुए से दिखायी देते हैं। यह शिकायत सुनी जा रही है कि सर्दार मुसलमानोंको संदेहकी नजरसे देखते हैं और यह अशंका प्रकट की गयी है कि सर्दारके इस मनोभावको देखते हुए मुसलमान भारतमें बहुसंख्यकोंसे निर्भय होकर नहीं रह सकते। हमारा कहना है कि जो मुसलमान भारतको अपना वतन मानते हैं और उसके सुखदुखको अपना समझते हैं और अन्य भारतीयोंकी तरह किसी भी सङ्कटके समय वे देशका हर हालतमें साथ देनेको और भारतके शत्रु का सामना करनेको—वह शत्रु पाकिस्तान ही क्यों न हो—प्रस्तुत हैं उनको सर्दारकी बातोंसे किसी तरहकी शिकायत या अशंका नहीं होनी चाहिये। कलकत्तेमें विराट जन सभामें सर्दारने यह कहा था कि बहुत बड़ी तादादमें भारतके मुसलमान अभी उस दिन तक पाकिस्तान के लिये मरने-मारने पर उतारू थे और उनके जोरदार सहयोगने ही पाकिस्तानकी सृष्टि की है। अब १५ अगस्तके बाद वही भारतीय संघके प्रति अपनी राजभक्ति का राग अलाप रहे हैं। कमसे कम मैं तोहै इस भक्तिका अर्थ नहीं समझ पाता। निस्सन्देह सर्दारकी यह बात हृदयके तह तक चुभने वाली हैं, किन्तु क्या खुद इन मुसलमानोंके नेताओंने ही सर्दारको यह कहनेको बाध्य नहीं किया? चौधरी खली कुज्जमा पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने भारत संघके प्रति अपनी भक्तिका इजहार करते हुए भारतीय झण्डेका सम्मान किया था। आज ये चौधरी साहब कहां हैं? और उनके तथा वैसे ही अन्य नेता स्थानीय मुसलमानोंके आचरण क्या यह सिद्ध नहीं करते कि भारतीयताके प्रति भक्तिके जबानी जमा खर्च पर विश्वास नहीं किया जा सकता! क्या लखनऊमें हुए आजाद सम्मेलनका बहिष्कार करके एवं भारतमें मुस्लिम लीगको जीवित रखनेका फैसला करके इन मुसलमानोंने यह सिद्ध नहीं कर दिया कि अब भी वे अपनेको अन्य भारतीयोंसे भिन्न समझते हैं और पाकिस्तानकी सृष्टि करने वाली मुस्लिम लीग और उसके दो राष्ट्रोंके सिद्धांतों पर आज भी उनका पहलेके समान ही विश्वास है। और तब क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि ये मुसलमान दरअसल पाकिस्तानको अपना रहनुमा मानते हैं और अवसर आने पर अब भी ये पाकिस्तानके संकेत पर चलेंगे। तब सर्दार पटेलने यदि कुछ साफ साफ खोलकर सत्य, किन्तु अप्रिय और कटु बातें कहीं हैं तो उनसे अपनेको सच्चे अर्थमें भारतीय नागरिक मानने वाले सच्चे मुसलमानोंकी तो जरा भी नहीं घबराना चाहिये।

पाकिस्तानकी आजकी नीति युद्धकी स्थिति सन्निकट ला रही है, इस तरहकी हालतमें जिन लोगोंपर देशकी रक्षाका भार है वे किसी तबकेकी तरफसे गफलतमें कैसे रह सकते हैं। काश्मीर-पाकिस्तानकी सरहदपर जो स्थिति है वह हर हरहसे अशुभका संकेत कर रही है। सर्दार पटेलकी बातोंसे क्षुब्ध और सष्ट होनेवाले कितने मुसलमानोंने पाकिस्तानकी काश्मीरकी नीतिकी निन्दा की है? कितने भारतके मुसलमान हैं जिन्होंने यह ऐलान करके पाकिस्तानको आगाह किया है कि यदि काश्मीर या किसी मामलेको लेकर पाकिस्तानने भारतसे युद्ध ठाना तो उनको पहले भारतके मुसलमानोंकी तलवारसे लोहा लेना होगा? एक भी मुसलमानकी जबानसे जब काश्मीर या हैदराबादमें होनेवाले काण्डोंपर निन्दाका एक शब्द भी नहीं निकलता तो कैसे यह आशा की जा सकती है कि पाकिस्तानके साथ युद्ध छिड़नेपर भारतके मुसलमान अपने देश और सरकारके प्रति वफादार रहेंगे? यह बात जवाहर लाल या महात्मा गांधी ही नहीं, जिनकी आज मुसलमान बात-बातमें दुहाई देते हैं, स्वयं सर्दार पटेलने भी एक नहीं अनेक बार दुहरायी है कि पाकिस्तानसे भारतको जरा भी द्वेष नहीं है वह उसका भला चाहता है। वैसे ही भारतके मुसलमानोंको यह आश्वासन भी सर्दारने दिया है कि उनको भारतमें किसी बातका डर नहीं है। लेकिन जैसा सर्दारने कलकत्तेमें पाकिस्तानके सम्बन्धमें कहा था कि वह अपने दुश्मनोंको बाहर नहीं अपने भीतर ढूंढ़ें उसी तरह भारतके मुसलमान भयका कारण सर्दारकी वक्तृतामें नहीं अपने दिलमें टटोलें। उनकी दो घोड़ोंपर चढ़नेकी खतरनाक आदतने सर्दारको बाध्य किया है कि वे भारतके मुसलमानोंको समय रहते सावधान कर दें, सचेत कर दें?

यह दुर्भाग्यकी बात है कि पाकिस्तानके बन जाने पर भी भारतमें मुसलमानोंकी समस्या बनी ही है और जब तक ये दो घोड़ों पर सवार रहनेकी नीति न छोड़ेंगे, जब तक उनपर लीगियोंका नेतृत्व बना रहेगा और जब तक पाकिस्तान से वे प्रेरणा और निर्देश ग्रहण करेंगे तबतक यह समस्या बनी रहेगी और तब पाकिस्तान के इशारे पर चलने वाली इत्तिहादुल मुसलमीनके हैदराबाद के सम्बन्धमें शिलांगमें भारतके गृह मंत्री सर्दार बल्लभभाई पटेलने ठीक ही तो कहा कि "मुझे विश्वास है कि हैदराबाद बुद्धि और विवेकका मार्ग पहचानेगा। लेकिन यदि यह सुमति उसे न आयी तो उसे स्मरण रखना चाहिये कि यह समस्या हैदराबाद तक ही नहीं सीमित रहेगी, इसकी प्रतिक्रिया दूर दूर तक फैलेगी। साढ़े चार करोड़ मुसलमान भारतमें रहते हैं, उनपर इसका असर पड़ना अनिवार्य है।" सत्य कठोर होती ही है किन्तु इस तरह की परिस्थिति न आने देना भारतके मुसलमानोंके हाथमें है। हम तो यहां तक कहते हैं कि भारतके मुसलमान चाहें तो, अब भी कुछ बिगड़ा नहीं है, वे पाकिस्तानको भारत विरोधी नीति परित्याग करनेको बाध्य कर सकते। क्या भारतके मुसलमान इसके हद तक अपने देशके प्रति वफादार हैं? इसका जवाब तो वे ही दे सकते हैं सर्दारके अभियोगका उत्तर शब्दोंसे नहीं कामोंसे ही दिया जा सकता है, काश ये मुसलमान यह समझ पाते!

स्टालिन कहां हैं !

मास्को स्थित भूतपूर्व ब्रेजिलियन राजदूतने बताया है कि मार्शल स्टालिनका स्वास्थ्य बहुत ही चिन्ताजनक है। उन्होंने यह भी बताया है कि मार्शल स्टालिनको लकवा मार गया जिसके परिणाम स्वरूप उनका दहिना हाथ और पैर बेकाम हो गये हैं। अब वे बैसाखीक सहारे बड़ी मुश्किलसे चल फिर पाते हैं। उन्होंने यह भी अनुमान लगाया कि स्टालिनके बाद अब मोलोटोव उनके उत्तराधिकारी होंगे। इस संवादमें कितनी सत्यता है यह तो अभी नहीं कहा जा सकता। लेकिन यह सत्य हैं कि ब्रिटेन अमेरिकाके अखबार और झूठ के प्रचारक 'रायटर' ने न जाने कितनी बार स्टालिनके विषयमें ऐसी अफवाहें फैलाई है। युद्ध कालमें स्टालिन जब काले सागरके सोची नामक स्थान पर विश्राम कर रहे थे तब भी उनके सम्बंधमें ऐसी ही अफवाह सुनी थी और एक संवादमें तो उनके मरने तककी बात कही गयी थी। स्टालिनके विषयमें ऐसी अफवाहें फैलनेका कारण सोवियट रेडियो और अखबारोंमें 'व्यक्तिगत' बातोंको अत्यधिक महत्व न देना ही है। दूसरे देशोंमें नेताओं और उनके कुत्ते-बिल्लियोंके संवाद भी बड़े बड़े टाइपोंमें छपते हैं। लेकिन स्टालिन विश्राम करने जाते हैं, इस संवादको सोवियत पत्रोंमें महत्व नहीं दिया जाता। इस लिये विरोधियोंको तरह तरहके प्रचार का मौका मिल जाता है। स्टालिनका अस्वस्थ होना कोई अनहोनी बात नहीं है। पर, जिस ढंगसे उनकी अस्वस्थता का ढिंढोरा पीटा जा रहा है, वह बहुत ही संदेहजनक है। स्टालिन आजकी दुनिया की बहुत बडी हस्ती है। अतः उनके बारेमें जानकारी प्राप्त करनेकी सबकी उत्सुकता स्वाभाविक है।

यू०पीमें कण्ट्रोल हटा—

युक्तप्रांतमें खाद्यान्नके यातायात और मूल्यपर लगे कण्ट्रोलको उठा लिया गया। अब केवल कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, आगरा और लखनऊ आदि बड़े बड़े नगरोंमें सौ रुपये या उनसे कम मासिक आयवालोंको १ फरवरीसे राशन मिला करेगा। कुछ पहाड़ी शहरों एवं रेलवे श्रमिक, पुलिस और शरणार्थियोंके लिये भी राशनकी व्यवस्था रहेगी। युक्तप्रान्तके खाद्य एवं रसद सचिव श्री चन्द्रभान गुप्तके इस निर्णयकी हम प्रशंसा करते हैं। इस समय देशकी जैसी स्थिति है उसमें यकायक राशन उठा देनेसे कम आयवाले गरीबोंकी कैसी हालत हो जाती, यह सहज हीमें समझा जा सकता है। नियन्त्रण उठनेके बाद चीनी डढ़ रुपये सेर खुले आम बाजारमें बिक रही है। दूसरी चीजोंसे नियंत्रण उठ जानेसे वे भी बाजारमें बिकनेके लिये निकल आयेगी लेकिन उनके दाम जरूर नियंत्रणसे बढ़े चढ़े रहेंगे। इसलिये युक्तप्रांतकी सरकारका निर्णय जनताके हितको दृष्टिगत रखकर किया गया है। आशा है अन्य प्रांतोंकी सरकारें भी ऐसी ही नीतिका अनुसरण करेंगी।

करांची और अजमेर—

पाकिस्तान और भारतमें रहने वाले अल्पसंख्यकोंकी रक्षाके प्रश्नको दोनों देशोंकी सरकारें किस दृष्टिसे देखती हैं यह अभी कुछ दिन पहले अजमेरमें और अभी उस दिन करांचीमें हुई घटनाओंके सम्बन्धमें दोनों देशोंके अधिकारियोंकी बातोंसे सहज ही समझा जा सकता है। करांचीमें दिन दहाड़े सिख गुरुद्वारेमें टिके हुए सिंधमें रहने वाले सिखों पर आक्रमण किया गया, सैकड़ोंकी तादादमें निरीह व्यक्तियोंको मारा गया, लूटा गया और गुरुद्वारेमें आग लगा दी गयी। इस घटना पर सिंधके प्रधान मन्त्री मि० खुरोने जो वक्तव्य दिया है वह बहुत ही शरारतसे भरी घृणित मनोवृत्तिका परिचायक है। दुर्वृत्तोंके हाथों सताये गये निस्सहाय व्यक्तियोंके प्रति हमदर्दी और अपने सजातीयोंके कुकृत्यों पर पश्चात्ताप करना तो दूर रहा उलटे यह सिद्ध करनेकी बेहयायी की गयी है कि ऐसा होना स्वाभाविक ही था। आप कहते हैं कि "करांचीका शहर भारतसे आये उन शरणार्थियो (मुसलमानों) से भरा हुआ है जो सिखों और लड़ाकू तबीयतके हिन्दुओं द्वारा सताये हुए हैं। उनको सिखोंके यहां आनेकी बात मालूम होते ही फौरन उन्होंने उनके स्थान को घेर लिया, उन पर पत्थर फेंके और आग लगानेकी कोशिश की।" इस घटना में सैकड़ों हताहत हुए पर सिंधके प्रीमियर को इसका जरा भी पश्चात्ताप नहीं हुआ। उलटे उन्होंने भारतके हाई कमिश्नर श्री श्रीप्रकाश पर यह दोष लगाया है कि ऐसी स्थिति न उत्पन्न हुई होती यदि भारतीय हाई कमिश्नरने उनको स्थानान्तरित करने की व्यवस्था न की होती। मि० खुरोका यह वक्तव्य प्रकारान्तरसे भारतसे आये हुए मुस्लिम शरणार्थियोंको खुला निमन्त्रण है कि सिंध छोड़कर जानेवाले हिन्दुओं और सिखों पर भूखे भेड़ियेकी तरह टूट पड़ने को। सिंधके हिंदू पहले ही से इस तरहकी आशंका करते थे। इस कांडसेसिद्ध हो गया कि उनकी आशंकाएं निराधार नहीं थीं। यह है पाकिस्तानके अधिकारियोंकी मनोवृत्ति। दूसरी तरफ इसकी तुलनामें अजमेरकी बहुत ही छोटी घटना पर भारतके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलालने हृदयसे खेद प्रकट करते हुए जोरके साथ कहा है कि 'भारतमें रहने वाले मुसलमानोंकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। पाकिस्तान से आये हुए शरणार्थियोंके साथ हमारी सहानुभूति है और हम उनकी सब तरहसे सहायता करेंगे लेकिन इस साथ साथ यह देखना भी हमारा फर्ज है कि प्रत्येक मुसलमान यहां इज्जतके साथ सुरक्षित रहे। पाकिस्तानके आदर्श न तो आदर्श हैं न उनका अनुकरण यहां किया जा सकता है। हम चाहते हैं कि प्रत्येक मुसलमान यहां रहे, इतनाही नहीं हम यह भी चाहते हैं कि जो यहां चलेसे गये हैं वे अपने घर वापस आ जायें।"

———

अन्तर्राष्ट्रीय

जर्मनीके अमेरिकन अधिकृत अंचल के कमांडर जेनरल क्लेने दो अंचलोंके सम्मेलनमें अपनी योजना उपस्थित की है। उस योजनामें जर्मनीके हाथ कुछ क्षमता देनेकाप्रस्ताव किया गया है। क्षमता कितनी दी जायगी, कैसी दी जायगी, यह तो नहीं कहा जा सकता लेकिन लंदनके पर-राष्ट्र-सचिव सम्मेलनकी विफलताके बाद ही ब्रिटिश और अमेरिकन अधिकृत अंचलोंको एकत्र करनेके लिये बुलाये गये इस सम्मेलनके महत्वको अस्वीकार नहीं किया जा सकता। असल बात तो यह है कि इसीके लिये परराष्ट्र-सचिव सम्मेलनको जल्दीसे जल्दी समाप्त कियागया एवं ब्रिटिश और अमेरिकाके परराष्ट्र सचिवोंने लंदन सम्मेलन सफल न हो जाय इसके लिये जी जानसे कोशिश की। जर्मनीके विषयमें वहां जो निर्णय किये जाने वाले थे वे इन्होंने वहां नहीं होने दिये बल्कि उन्होंने जर्मनीके सम्बन्धमें किसी किस्मकी स्पष्ट बात करनेका मौका ही नहीं आने दिया। क्योंकि इन्होंने जर्मनीके विषयमें पहले ही से अपनी योजना स्थिर कर रखी थी। उसी योजनाको अब कार्यान्वित करनेकी व्यवस्था की जा रही है।

इधर यूनानसे जो संवाद प्राप्त हो रहे हैं, उनसे पता चलता है कि वहां जेनरल मार्कसकी सरकार कायम हो जानेके बाद यूनानीकी कठपुतली सरकारके पृष्ठपोषक बुरी तरह घबड़ा उठे हैं मार्कस सरकार कायम होनेके साथ साथ वाशिंगटन से बाल्कन राष्ट्रोंको एक चेतावनी दी गयी है कि 'इस सरकारको स्वीकार करनेसे अच्छा नहीं होगा।' अमेरिकन सरकार इतना कह कर ही निश्चिंत नहीं हो गयी बल्कि उसने यूनानके साथ एक नयी सैनिक संधि की है। इस संधिके अनुसार यूनान और अमेरिका मिलकर यूनान राष्ट्रीय रक्षादल गठित करेंगे। ऐलान किया गया है कि अमेरिकाकी नौ सेना निर्धारित तिथिसे एक दिन पहले ही भूमध्यसागरकी ओर रवाना हो गयी है। इस नौ सेनामें टैंक, बंदूकें, जीप और अन्यान्य सामरिक साज सामान है। साथ ही उसको एथेंसके बन्दरगाहपर ४५००० टनका विमान वाही यान, १०००० टनके तीन क्रूजर मिलेंगे, जो पूर्वसे भेजे गये हैं। इन घटनाओंपर गम्भीरतापूर्वक विचार करनेसे यही समझमें आता है कि अमेरिकन साम्राज्यवादी मार्शल योजनाके सहारे समस्त यूरोप और उसके बाद एशिया आदिमें अपना आधिपत्य जमाना चाहते हैं। यूनानमें तो वे चीनकी अवस्था उत्पन्न करते जा रहे हैं। इधर मार्कस सरकार कायम होनेके बाद अमेरिकाने यूनानमें जो कुछ किया है, वह आगमें घी डालनेके समान है। जो भी हो, अमेरिका की यह नीति अधिक सफल नहीं होगी, अन्तमें उसको पराजित होना ही पड़ेगा।

इटलीको सामरिक सहायता देनेके लिये इटली और अमेरिकाके बीच जो संधि हुई है उसकी पुष्टि इटलीके परराष्ट्र विभागसे हो गयी है। इसके पहले हीसे इटली और फ्रांस डालरामृतका पानकर अमेरिकाके हुक्म बरदार बने हुए थे। तुर्की, ईरान यूनान आदि राष्ट्र भी डालर-प्रेम बन्धनमें बंध गये हैं। पहले डालर आता है और उसके बाद सैनिक संधियां आनिवार्य हो जाती हैं। डालर-प्रेमके बन्धनमें बंधे राष्ट्रोंको अमेरिका के सामने नतमस्तक होना पड़ता है और उसकी सामरिक शर्तें स्वीकार कर लेनी पड़ती है। इटलीने भी ऐसा ही किया है। अमेरिकाको धोखा तो चीनकी चांगकाई सरकारसे होता सा प्रतीत हो रहा है। चीनकी कम्यूनिस्ट सेनाएं तीव्रगतिसे अस्त्रबलके भक्त जेनरल चांगकाई शेक उस तीव्रगतिके सामने कितने दिनोंतक ठहर सकेंगे, यह अभी नहीं कहा जा सकता। लेकिन अमेरिकाके अखबारोंने दबी जबानसे कहना प्रारम्भ कर दिया है कि चीनको मदद देना आगमें घी डालना है। उसका नतीजा सिवा लपटों के कुछ न निकलेगा।

ब्रिटेनके प्रधान मंत्री मि० एटलीने रूस पर जबर्दस्त अभियोग लगाते हुए कहा है कि रूसकी वर्तमान नीति सैद्धांतिक, आर्थिक और सामरिक दृष्टिसे साम्राज्यवादका नया रूप है। इसका आशय यूरोपके अन्य राष्ट्रोंको भयभीत करनेका है। हम लोग धन्य हैं कि इस देशमें हमें भाषणकी स्वतंत्रता प्राप्त है। रूस और पूर्वी यूरोपके उसके आश्रित देशों में मुंह खोलनेका अधिकार नहीं है। वहां केवल एक दृष्टिकोणकी अनुमति प्राप्य है। वहां जनतंत्रके नाम पर विरोधियोंको कुचला जा रहा है लेकिन १९४८ में समाजवादी और उदारदली यूरोपमें ऐसी सरकारोंके विरुद्ध विद्रोह करेंगे। खेदकी बात है कि एक विशेष आंदोलन, जिसका प्रारम्भ मानवकी मुक्तिके लिये हुआ है वही आज उसके बंधनोंका कारण बनता रहा है। मि० एटलीके इस वक्तव्यका आशय स्पष्ट है कि यूरोपमें सारी खूराफातोंकी जड रूस और उसका कम्यूनिज्म है। मि० एटली ने यह भी संकेत दे दिया है १९४८ में ऐसी सरकारोंको, जो मानव मुक्ति (?) के विरुद्ध आचरण कर रही है, उलट दिया जायया। अमेरिका भी आज इसी तरह की बातें कह रहा है। इन बातों से यद्यपि आतंरिक बातोंका बिलकुल खुलासा नहीं होता तथापि यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्रिटेन अमेरिका और रूस के बीच मतभेदकी खाई चौड़ी होती जा रही है। और वह कभी भी विकराल रूप धारण कर सकती है।

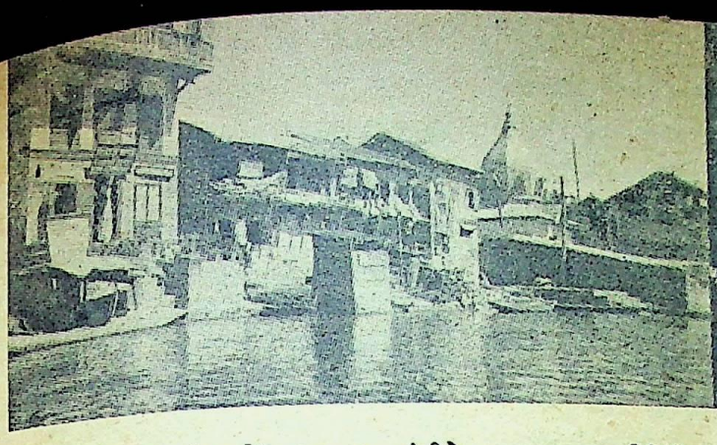

काश्मीर

काश्मीरके विषयमें महात्मा गांधीने अपने एक प्रार्थना प्रवचनमें कहा है कि पाकिस्तान और भारतको मिल जुलकर काश्मीरके बारेमें फैसला कर लेना चाहिये तीसरी ताकतको बुलाकर फैसला नहीं कराना चाहिये। काश्मीरमें जो कुछ हो रहा है। उसका मुझे भी पता है। हिन्दुस्तानके दो टुकड़े काफी ज्यादा हैं। इस तरह काश्मीरके दो टुकड़े नहीं हो सकते। यदि हम काश्मीरके ही टुकड़े करते है तो फिर सब रियासतोंके भी टुकड़े क्यों न हों। महात्मा गांधीके कथनानुसार भारत सरकारने काश्मीरकी समस्याका समाधान करनेके लिये बराबर पाकिस्तान सरकारसे कहा लेकिन सभी प्रयास विफल रहे। पाकिस्तान समझौतेकी बातें भी करता और दूसरी तरफ आक्रमणकारियोंको हर तरहकी सहायता पहुंचाता है। एक पड़ोसी राष्ट्रका ऐसा आचरण किसी भी राष्ट्रको सह्य नहीं हो सकता।

काश्मीर भारतीय संघका एक हिस्सा है। इसीलिये भारत सरकारने आक्रमणकारियोंसे काश्मीरकी रक्षा करनेके लिये वहां अपनी सेनाएं भेजी हैं। आक्रमणकारियोंको पाकिस्तानसे सहायता मिल रही है, जिससे वे भारतीय सेनाओंका मुकाबला कर रहे हैं। उन आक्रमणकारियोंके पास आधुनिक अस्त्रशस्त्र हैं, जिसमें हथगोले तथा मध्यकोटिकी मशीन गनें सम्मिलित हैं। वे बाकायदा सैनिकों के लड़नेके समयके वस्त्र पहनते हैं। वे हालके संघर्षों में आधुनिक ढंगकी मोर्चे बन्दी करके लड़े हैं और आधुनिक रणनीतिका पूरी तरहसे आश्रय लिया गया है। वेतारके तार पत्रों और मार्क बी की सुरंगोंतकका प्रयोग किया गया है। आक्रमणकारियोंने यातायातके लिये बराबर मोटर गाड़ियोंका उपयोग किया। निस्सन्देह इन लोगोंको ट्रेनिङ्ग दी जाती रही है और एक हदतक पाकिस्तानी सेनाके अफसर उनका नेतृत्व करते हैं। इनका राशन व अन्य सामान पाकिस्तानसे ही प्राप्त होता रहा है। इन बातोंसे यह स्पष्ट हो जाता है कि (१) आक्रमणकारियोंको पाकिस्तान प्रदेशसे गुजरने दिया जाता है। (२) आक्रमणकारियोंको उनकी कार्रवाइयोंके लिये पाकिस्तान प्रदेशको अड्डा बनाने दिया जाता है। (३) इन आक्रमणकारियोंमें पाकिस्तानके प्रजाजन भी शामिल हैं। (४) ये आक्रमणकारी अधिकांशमें अपना सैन्य साज-सामान यातायातके साधन और रसद (पेट्रोल सहित) पाकिस्तानसे ही प्राप्त करते हैं। (५) पाकिस्तान के अफसर इन आक्रमणकारियोंको ट्रेनिङ्ग देते हैं, मार्ग प्रदर्शन करते हैं, और अन्य प्रकारसे सक्रिय सहायता देते हैं। पाकिस्तानके अतिरिक्त और कोई ऐसा जरिया नहीं है जहांसे ये लोग इतनी मात्रामें आधुनिक सैन्य-सामान तथा ट्रेनिङ्ग प्राप्त कर सकते हों। भारत सरकार कई बार पाकिस्तान सरकारसे कह चुकी है कि वह इन आक्रमणकारियोंको सुविधाएं प्रदान न करें क्योंकि यह भारतके विरुद्ध आक्रमणात्मक और शत्रुतापूर्ण कार्य है। लेकिन इसका कोई उत्तर नहीं मिला। गत २२ दिसम्बरको भारतके प्रधान मंत्री ने पाकिस्तानके प्रधान मंत्रीको एक पत्र दिया, उसका उत्तर नहीं मिला तब २६ दिसम्बरको एक तार दिया गया। लेकिन अभीतक उसका कोई उत्तर नहीं मिला है। इन बातोंसे स्पष्ट हो जाता है कि सामान और आदमियोंकी इन आक्रमणकारियोंको जो सहायता पाकिस्तानके प्रजाजनोंसे (जिनमें पाकिस्तान सरकारके सैनिक और गैर सैनिक कर्मचारी भी शामिल हैं) मिल रही है, उसे पाकिस्तान सरकार बन्द नहीं करना चाहती। सरकारका यह रुख केवल तटस्थ ही नहीं बल्कि भारतके जिसका जम्मू और काश्मीरकी रियासत एक अंग है के विरुद्ध आक्रमणात्मक और शत्रुतापूर्ण है। पाकिस्तानके रुखमें परिवर्तन करनेके लिये भारत सरकारने बहुत कुछ अनुभव और संतोषसे काम लिया है। लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। अन्तमें उसने इस प्रश्नको विश्व सुरक्षा परिषदके समक्ष उपस्थित किया है। भारत सरकारने सुरक्षा परिषदसे निवेदन किया है कि वह पाकिस्तानसे कहे कि वह तत्काल इस प्रकारकी मदद देना बन्द कर दे क्योंकि यह कार्रवाई भारतके विरुद्ध आक्रमण है। यदि पाकिस्तानने ऐसा नहीं किया तो सम्भव है कि आत्म रक्षाके ख्यालसे विवश होकर भारत सरकारको पाकिस्तानकी भूमिमें पदार्पण करना पड़े ताकि आक्रमणकारियोंके विरुद्ध सैनिक कार्रवाईकी जा सके। सुरक्षा परिषदसे भारतने पाकिस्तान सेयह कहनेका अनुरोध किया है कि (१) पाकिस्तानके सैन्य तथा नागरिक कर्मचारियोंको जम्मू और काश्मीर की रियासतपर आक्रमण करनेमें भाग लेनेसे अथवा सहायता देनेसे रोक लिया जाय, २। पाकिस्तानके अन्य निवासियों

पं० जवाहरलाल नेहरू

को जम्मू और काश्मीर रियासतोंमें होनेवाले युद्धमें भाग लेनेसे रोका जाय, ३ आक्रमणकारियोंको निम्न सहायता न दी जाय, क काश्मीरके विरुद्ध युद्धके लिये अपनी सीमामें आने अथवा उसका उपयोग करने न दिया जाय। (ख) उनकी सेना तथा अ य किसी प्रकारकी सहायता न की जाय, ग) ऐसी सब प्रकारकी सहायता बन्द कर दी जाय जिससे वर्तमान संघर्षकी अवधि बढ़ती हो।

भारतके इस आरोपोंसे पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री मि० लियाकत अली और परराष्ट्र सचिव जफरुल्ला खां बौखला उठे हैं। उन्होंने आरोपोंको असत्य बताते हुए जो वक्तव्य दिया है उसमें "उल्टा चोर कोतवालको डाटे" वाली कहावतकी पुष्टि होती है। भारत सरकार द्वारा काश्मीरकी समस्याको सुरक्षा परिषदके सामने पेश किये जानेसे लन्दनमें तरह-तरहकी प्रतिक्रियाएं हुई हैं। कुछ लोग इसके विरोधी और कुछ पक्षमें हैं। विरोधियों का कथन है कि यह तो ब्रिटिश कामनवेल्थका घरू मामला है जो भी हो लन्दनके कूटनीतिक अंचलोंमें इस प्रश्नपर बड़ी दिलचस्पी दिखायी जा रही है। इधर पण्डित नेहरूने पाकिस्तानके नेताओंको मुंह तोड़ उत्तर दिया है और बताया है कि भारतने काश्मीरके प्रश्नपर उदारता से काम लिया है।

सुरक्षा परिषदमें पाकिस्तानके विरुद्ध भारतके आरोपों पर विचार प्रारम्भ हो गया है। जानकार क्षेत्रोंमें ऐसी संभावना है कि इस विषय पर काफी वादविवाद होगा। भारतके आरोपोंके उत्तरमें पाकिस्तान काश्मीर की समस्याके समाधानके लिये जनमत संग्रह पर जोर देगा। 'रायटर' को पता चला है कि परिषदके कुछ सदस्य इसके पक्षमें है लेकिन जनमत संग्रहमें भी तो कठिनाइयां कम नहीं है। जानकार क्षेत्रोंमें यह भी अनुमान लगाया जाता है कि परिषद इण्डोनेशिया की भांति उभयपक्ष को सामरिक कार्यकलाप बंद करने को कहेंगी। साथ ही परिषद घटनास्थल पर पहुंच कर जांच करनेके लिये एक कमीशन का गठन करेगी! कमीशन जनमत संग्रहके सम्बन्धमें भी जांच करेगा। राष्ट्रसंघके ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डलके नेता सर अलेक्जेण्डर कैडोगनने रायटर को बताया है कि उभय डोमिनियनके बीच समाधानके लिये जो भी व्यवस्था की जायगी ब्रिटेन उसका समर्थन करेगा। जो भी हो, फिलहाल सुरक्षा परिषदने आगामी सप्ताह तक भारतके आरोपों पर विचार करना स्थगित कर दिया है। लेकिन यह स्पष्ट कर दिया गया है कि किसी भी हालतमें १५ जनवरीके बाद स्थगित नहीं किया जायगा। पाकिस्तान सरकारके मुख्य वक्ता मि० इस्पहानीने परिषद से अनुरोध किया कि सर मुहम्मद जफरुल्ला उपस्थित नहीं हो सके हैं इसलिये अभी विचार स्थगित किया जाय। सर जफरुल्ला १५ जनवरी तक न्यूयार्क पहुंच जायेंगे। सुरक्षा परिषदके अध्यक्ष ने भारत और पाकिस्तान से अनुरोध किया है कि सयुक्तराष्ट्र संघ की ३५ वीं धाराके अनुसार काश्मीर की समस्या पर विचार किया जा रहा है। अतः इस बीच दोनों राष्ट्रोंसे मैं अनुरोध करता हूं कि वे संयुक्तराष्ट्र संघके घोषणा पत्रके विरोधी कार्य न करें। क्योंकि उससे अवस्था और भी गम्भीर हो सकती है भारतके प्रतिनिधि डा० पिल्ले ने एक सप्ताह तक कार्यवाही

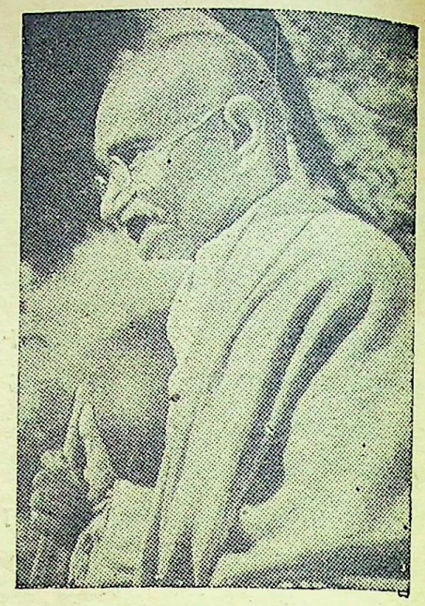

महात्मा गांधी

स्थगित करने की बात को स्वीकार किया है। अब शायद १५ जनवरी को सुरक्षा परिषद की बैठक में इस प्रश्न पर पुनः विचार होगा। उस अवसरपर भारत और पाकिस्तान दोनोंके प्रतिनिधि उपस्थित रहेंगे

भारतकी ओर से श्री गोपालस्वामी अयंगर, शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्ला और पाकिस्तान की ओर से सर जफरुल्लाह खां और मि० मुहम्मदअली शीघ्र न्यूयार्कको प्रस्थान करने वाले हैं। उधर काश्मीरका प्रश्न सुरक्षा परिषद में उपस्थित है और इधर पाकिस्तानकी ओर से काश्मीरमें जबर्दस्त हमला करने की तैयारी की जा रही है। पाकिस्तानने सुरक्षा परिषद से जो समय मांगा है, उसमें कुछ राजनीति छिपी मालूम होती है। जम्मू और पाकिस्तान की सीमा से जो खबरे मिली है उनसे पता चला है कि पाकिस्तान की सीमाके भीतर हजारों आदमी काश्मीर पर हमला करनेके लिये एकत्र हो रहे हैं। अगर स्थिति ऐसी ही रही तो सुरक्षा परिषदका निर्णय होनेके लिये ही बहुत बडी घटना घट सकती है। पाकिस्तानका रवैया अच्छा नहीं है।

यह डायरी है कलकत्ते की

लोग कानाफूसी कर रहे थे कि ५ जनवरीको कलकत्तेकी लुटिया डूब जायगी। साम्प्रदायिक दानवको तो शिकस्त किया पर अब हड़तालका भूत सवार है।

सरदार पटेलने ऐन मौके पर काली कलकत्ते वालीकी लाज बचायी। कामरेडोंको गलत फहमी हो गयी थी कि बार दोलीके शेर मेहमानी करनेके लिये यहां ठहर गये हैं। भला उनके विराजमान रहते किसकी मजाल है कि चें भी करे!

* * *

सरदारजीकी सभा भी भंग करनेके लिये एड़ी-चोटीका पसीना एक किया गया। उन्होंने फटकारा, सुनिये, गड़बड़ मत करिये। बस गड़बड़ देवताओंकी बोलती बंद।

सभा नेहरूजी की नहीं, फौलादी पटेल की थी, फिर, हमेशा एक ही हथकण्डा कारगर नहीं होता। बीसवीं सदीकी राजनीतिका तकाजा है गिरगिटकी तरह रंग बदलना। अपने लीडरको ही देखिये। कलकत्तेसे खरसावांके मोर्चे पर पहुंच गये।

* * *

सरदारजीने कलकत्तावासियोंको मार्मिक विदाई-संदेश देते हुए कहा है कि मैदानकी सभा हमेशा याद रखूंगा।

दिल्ली-बम्बई थोड़े ही है कि लाख-दो लाखकी भीड़ उमड़े। नेहरूजीने भी अपनी जिन्दगीमें सबसे बड़ी सभा यहीं देखी।

* * *

नेताजी रोडके हलकोंमें "बेखबर" को सुराग मिला है कि नेहरूजीके १५ दिसम्बर वाले भाषणसे उद्योग पतियोंके दिलमें गहरा जख्म हो गया था। उधर बरार केसरीने यह चेतावनी देकर कि समाजवाद आ रहा है कटे पर नमक छिड़क दिया था।

सरदारजी खासे अच्छे डाक्टर जान पड़ते हैं। चेट्टीजी तो आपके लिये ही अर्थ मंत्री नियुक्त किये गये हैं। अब नींद हराम करनेसे क्या फायदा?

घोष-बोस दंगलमें बोस बाबू चारो खाने चित्त। तो कलकत्तेने ४७ में मिल्लत मिशन और अपने ४८ मोडलमें औद्योगिक शांति मिशनकी मिसालें पेश कीं।

होनहार लीडर नोट कर लें। अपने व्याख्यानोंमें कलकत्तेका उदाहरण रखना न भूलें।

* * *

बंगाल प्रांतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के सेक्रेटरी मि० मोमिनका दावा है कि एक-दो नहीं, ११२ हजार मजदूरोंने 'आम' हड़तालमें हिस्सा लिया।

पलड़ा तो घोष महाशयका ही भारी मानना पड़ेगा। वे कहेंगे कि ४० लाख आबादीके कलकत्तेमें ३९ लाख जनताने मेरा साथ दिया।

* * *

हड़ताल-कार्यकर्त्ताओंकी एक असाधारण बैठकमें शिकायत की गयी कि हमारी बड़ी भद्द हुई। बस ट्राम वाले, छात्र, मजदूर—कोई कमबख्त हमारी सुनता ही नहीं। डिक्टेटरने तसल्ली दी कि हिम्मत हारनेसे कैसे काम चलेगा, आखिरी हथियारका प्रयोग करो।

कलकत्ताके राजपथों पर ब्रह्मास्त्र अपनी करामात दिखाने लगा। गनीमत यह हुई कि एक मंत्री महोदयकी मोटर पर उसका एक टुकड़ा ही गिरा और वह भी गलतफहमी से। मंत्रीजी उस समय शायद चायपान कर रहे थे।

* * *

सत्यनारायण पार्कमें रामचरित मानसका अधिवेशन हो रहा है। रविवार को जनता-जनार्दनके तहेदिलसे शुक्रिया अदा करनेके बाद सभापतिजीका इतना गुणगान किया गया कि मानो उन्होंने आज ही राजनीतिक-धार्मिक क्षेत्रमें पदार्पण किया है। बाबा राघवदासने तकरीर शुरू ही की थी कि भगदड़ मच गयी। बाहरसे आयी चीत्कारकी आवाज ने श्रोताओंका मानस—कपाट खोलकर करपात्रीकाण्डकी याद ताजी कर दी। बाहर निकलने पर मालूम हुआ कि एक नौसिखया पाकेटमारकी मरम्मत हो रही है।

खोदा पहाड़, निकला चूहा!

* * *

मां-बहिनोंका सतीत्व अपहरण दंगे का सबसे बुरा रूप है, सभी यही कहते हैं। बाबा राघवदासकी नसीहत विचारणीय है। महाबली रावण सती सीता माता का कुछ नहीं बिगाड़ सका, तो दो-चार गुण्डे तो सीता जैसी नारियोंकी एक फूंकमें ही उड़ जाते।

महिला सम्मेलनको एक प्रस्ताव पास करना चाहिये।

* * *

राष्ट्रपति राजेन बाबू इसी पखवारे दो बार कलकत्ता होकर गुजरे। कलकत्तावालोंने सोचा कि रंगूनका हवा पानी खाकर लौटनेपर उनके दर्शन होंगे। दिलकी दिलमें ही रह गयी।

अकुमारी गयी है। इन हड़ताल विरोधियों की। होने देते हड़ताल और फिर उत्पात। जब गांधी-नेहरू-पटेलको दौड़कर आना पड़ा, तो राष्ट्रपति निगाहों से बचकर कहां जाते?

० ० ०

युद्ध समाप्तिपर विजेता स्वर्ण संसार का ख्वाब देखने लगता है। कांग्रेसजनों ने भी सोचा था कि आजाद भारतमें खूब कटेगी।

राष्ट्रपतिने उनकी सारी तमन्नाओं पर पानी फेर दिया है। कहते हैं कि अब युद्धके मोर्चेसे निर्माणके मोर्चेपर आइये। जीता हुआ जुआड़ी जीतका ऐलान कर दे, तो फिर जुआड़ी कैसा?

० ० ०

तरुण जैन संघने सूचित किया है कि रविवारको एक सफल प्रगतिशील दम्पति सम्मेलन हुआ।

जो डबल नहीं यानी सिंगल हैं, पूछ सकते हैं कि हमारे लिये नो एड मिशनका साइन बोर्ड तो नहीं लगा हुआ है? जवाब साफ है, आप मेरी देख लेंगे और अपनी नहीं दिखायंगे, यह कहांका इंसाफ है? एक हाथसे कहीं ताली बजती है?

० ० ०

सरकारने चीनीपरसे कण्ट्रोल क्या उठाया, श्रमजीवियोंपर आफतका पहाड़

(शेष १२ वें पृष्ठ पर)

जीवन है मृत्युके लिये

लेखक—श्री उदित मिश्र

सोचिये, यह बात सही है या गलत ? हम लोगोंकी यात्राकी परिसमाप्ति कहां होगी, 'मृत्यु' तक। जितने काम हम दुनियामें कर रहे हैं सब मौत होने पर हमारे लिये खत्म हैं।

इसी बातको अपनी अपनी बुद्धि अपने अपने अनुभवके अनुसार हम फेर फार कर कहते हैं।

एक कहता है—मरना तो है ही आओ मौजसे मरें—उसके 'मौज' का अर्थ है शिश्नोदर परायणता।

दूसरा कहता है जब एक दिन मरना ही है तो हाय हाय—क्यों करें। जो मिले उसीमें संतोष करके बैठ रहना चाहिये। संसार भरके झगड़े बखेड़ेसे क्या मतलब ?

इसी प्रकार जितने लोग हैं सबका भाव पृथक ही पृथक है। जा रहे हैं सभी मृत्युकी ओर—मंजिले मकसूद—अन्तिम लक्ष्य वही है। पर झगड़ा है मार्ग का।

जिन महापुरुषोंने 'मृत्युका मार्ग' प्रशस्त किया है, जीवन भर जिन्होंने इस विषयका मनन किया है—उनका कहना यही है कि मृत्युकी तैयारीका अर्थ है 'जीवन' उज्वल बनाना।

प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरश्चरित मात्मनः।
किन्नुमे पशुभिस्तुल्यं किन्नुसत्पुरुषैरिति।

दिन भर काम धंधा करनेके बाद जब हम चारपाई पर पड़ते हैं, तब हमें अपने दिन भरके जीवनका हिसाब लगाना चाहिये—ऊपरके उल्लेखमें इसी हिसाब की चर्चा है। यदि दैनिक कृत्यका परिणाम यह निकले कि हमने सत्पुरुषोंकी भांति काम किया—तब क्या कहना ? उस समय समझना चाहिये कि हमारी यात्रा आज सुफल हुई। यदि ऐसा नहीं हुआ तो हिसाब किताब खराब हो गया। जीवनमें गलती हो गयी, यात्रा खोटी हुई।

जितना हम अपनेको जान सकते हैं—दूसरेको हमारा क्या पता लग सकता है। हममें प्रतिभा है, हमारे पास प्रकाश है और हमारेमें साहस भी काफी है पर यदि हम अपने दैनिक जीवनके आय व्यय पर ध्यान नहीं रखेंगे तो सारी कमाई बट्टे खाते चली जायगी। यह बात समयमें सोचनेकी है। अच्छासे अच्छा कवि, लेखक, व्याख्याता, पहलवान--अपनी यात्राको अपनी असावधानीसे खोटी कर देता है। सड़क उसको जीवन भर नहीं मिलती। खड्डहीमें गिरता रहता है। झाड़ झङ्खाड़में बझ जाता है। चिल्लाता, रोता, पछताता है और 'मृत्यु' का दर्शन करनेके पहले ही 'जीवन'---समाप्त कर देता है मृत्युसे वह डर जाता है। उसके पास पहुंचनेमें उसकी सारी दुर्गति हो जाती है। उसकी कमर टूट जाती है। उसकी आंखे धंस जाती हैं, उसके हाथ पैरमें लकवेकी बीमारी हो जाती है। न उसको अन्नका स्वाद मिलता है, न वायुके झकोरेसे वह प्रफुल्लित होता है। मनुष्य समाजके लिये वह बोझा हो जाता है।

शराब पी-कर—शराबके नशेमें उपदेश करना कि नशा पीना बड़ा पाप है—की प्रवृत्ति रखने वाले 'मौत'का आनन्द पा-ही नहीं सकते, जिसके जीवनमें निरानन्द रहा है उसकी मौत तो बड़ी दुःखदायी होगी।

जिसके लिये प्रातः काल सुहावना और संन्ध्या प्यारी नहीं जिसकी वाणीमें रस नहीं जिसके हृदयमें निर्मल पवित्र धारा नहीं। जिसके पद-पद पर निरालस नहीं उसको 'मौत' कब प्यारी लगेगी ? मौतको आलिङ्गन तो वही कर सकता है जो जीवनको प्यार करता है। बादशाह बहादुर शाहको एक क्षणके लिये मृत्युका दर्शन हुआ था- वह कहता है :

न जफर किसीका रकीब हूं।
न तो मैं किसीका हबीब हूं।
जो बिगड़ गया वह नसीब हूं।
जो उजड़ गया वह दयार हूं,।

मृत्यको देख कर रोने वाला 'जफर' न किसीका रकीब (वैरी) न हबीब(मित्र) रहा केवल उसने उजड़ा हुआ दयार (स्थान) ही अपनेको समझा क्योंकि उसने मृत्युकी तैयारी नहीं की।

तुलसी, सूर, कबीर ये कवि थे। कविता करते थे—इनकी वाणी पढ़ कर 'जीवन'में कुछ स्फूर्ति, जागृति और उत्साह आता है और आता है वह भाव जी उठते' हैं।

सारी बातोंका निचोड़ यह है कि हमको जहां जाना है वहां जब तक न पहुंचें तब तक इस भ्रममें पड़ना ठीक नहीं कि हम अपनी यात्रा पूरी कर चुके। जाना है हमको मृत्युसे मिलने और मरते हैं हम रोज ही, इसी बातसे बचना चहिये।

एक बार मरनेके लिये हम संसारमें आये हैं। रोज-रोज मरनेकी भावना 'जीवन'को निकम्मा बना देती है।

छुई मुई टोना—क्षण-क्षणमें प्रसन्न तनिक देरमें रोनी सूरत बनाना। जरा सी बातमें मन मलीन करना—मौतसे डरनेकी पहचान है।

शरीर ठीक-मन गदगद और प्रत्येक सांस आनन्दसे पूरित करके रहने वाला जीने वाला प्राणी मृत्युका स्वाद ले सकता है।

पाठकों में से किसीने किसीको मरते समय हंसते हुए देखा है ? मरण कालमें आंसू लाने वाले तो बहुत देखे जाते हैं हमारी तय्यारी ऐसी होनी चाहिये कि हम मृत्यु कालमें आनन्द विभोर हो जायं एवमस्तु।

यह डायन है कलकत्ते की

(११ वें पृष्ठ का शेषांश)

टूट पड़ा। पहले तो चीनी देवी कलकत्ते से रुष्ट होकर गंगातटपर चली गयीं। बहुत हाथ पैर जोड़नेकर लौटीं भी, तो एक रुपया ६ आने सेरसे कमपर दुकानदार बात ही नहीं करना चाहते।

गांधीवादी जमाना है। विदेशी समझ कर बहिष्कार शुरू कर दीजिये। गली-कूचीमें मारी-मारी फिरेगी।

° ° °

पश्चिमी बंगालके मन्त्री श्री हेमचन्द्र नस्करने असेम्बलीमें एक प्रश्नका उत्तर देते हुए सरकारी दूध-योजना उद्धृत की। हृष्ठ पुष्ट सांड़ मंगाये जायंगे और गायोंकी नस्ल सुधारी जायगी।

खबरदारीसे कदम बढ़ानेकी जरूरत है। कहीं दूध-घी की नदी प्रांतमें न बहने लग जाय, वरना कृष्ण भगवान सुन्दर बनको वृन्दा बन समझ कर स्वर्गसे पुष्प विमान द्वारा दमदमके हवाई अड्डे पर पहुंच जायंगे !

—बेखबर

स्वागत, स्वतंत्र ब्रह्मदेश, स्वागत !

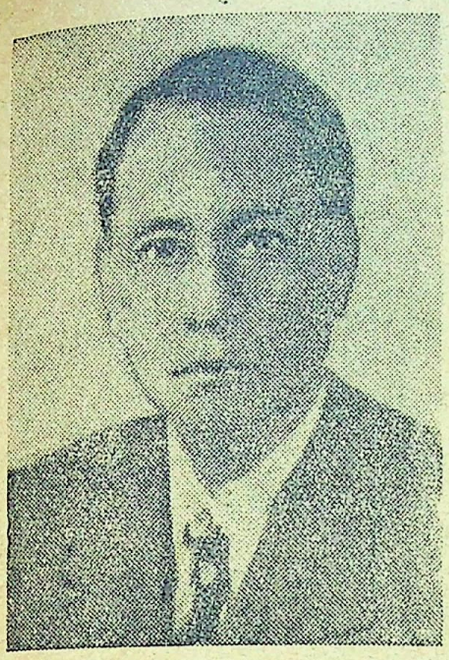

स्वतन्त्र बर्माके महान नेता स्वर्गीय जेनरल यांग सान

बर्मामें ब्रिटिश शासन गत ४ जनवरीको समाप्त हो गया और प्रभात होनेके दो घण्टे पूर्व ऐतिहासिक समारोह के साथ बर्माके प्रजातन्त्रका जन्म हुआ, विधान परिषद पर फहराता हुआ यूनियन जैक उतार लिया गया और उसकी जगह प्रजातंत्रका तारिका मंडित तिरंगा झण्डा लहराया गया। उज्वल ज्योत्स्ना छिटकी हुई रातमें जब यूनियन जैक धीरे धीरे उतारा जा रहा था तो बर्मी नेताओं और संसार के सभी राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंने उसका अभिवादन किया। भूतल पर यूनियन जैकके पहुंचते ही बर्मी प्रजातन्त्र का राष्ट्रीय गीत बैण्ड पर बज उठा और तत्काल बर्मी झण्डा फहराया गया।

अधिकार हस्तान्तरितकी घोषणा दुन्दुभी, शंखध्वनि और ढोल द्वारा प्राचारित की गयी। स्वतन्त्रता समारोहका यह आयोजन परिषद उद्यानमें निर्मित विशाल मण्डपमें किया गया था, जो प्रकाशसे जगमगा रहा था। प्रायः दो हजार व्यक्ति मण्डपमें आसीन थे। १५ मिनिटके भीतर यह कार्य समाप्त होते ही परिषद भवनके भीतर कार्य आरम्भ हुआ। भवन में बर्मी व्यवस्थापक सर पर रंग बिरंगी पट्टियां बांधे, विदेशी राजदूत और कूटनीतिज्ञ अपने अपने प्रातः कालीन परिछदमें तथा सैनिक अफसर उपस्थित थे। प्रजातंत्रके अध्यक्ष साव श्वि तामक साववाते संक्षिप्त, सुन्दर, गौरवमयी वक्तृताके साथ अधिकार ग्रहणकी घोषणा की और बाकायदा स्वतंत्र बर्माके विधानके जारी होनेका ऐलान किया। तदनन्तर विधान परिषदके सदस्योंने खड़े होकर राष्ट्रगीत गया और दो मिनिट तक यू आंगसान और अन्य वध किये गये बर्मी नेताओंकी स्मृतिमें मौन खड़े रहे। यह सब हो जानेके बाद अध्यक्षने थाकिन नू को बाकायदा प्रधान मन्त्री नियुक्त किया। उसी समय नवीन मन्त्रिमण्डलने शपथ ली और थाकिन नू ने परिषदमें वक्तृता दी।

स्वतन्त्र बर्माके प्रथम प्रधान मंत्री थाकिन नू

उधर आकाश पर बाल रविका धीरे धीरे उदय हो रहा था इधर बर्मी नेता और नवीन बर्माके मित्र विधान परिषद भवन से निकल रहे थे। सम्पूर्ण बर्माने इस अवसर पर ४ जनवरीके प्रभातका बर्मा की स्वतंत्रताके प्रभातके रूपमें स्वागत और बन्दनाकी बर्मा प्रजातन्त्रके प्रथम मन्त्रिमण्डलने यह शपथ ली कि "हम स्वतंत्रताके मार्ग पर हमें अग्रसर करने वाले अपने नेता यू आंगसानके बताये मार्ग पर हम आगे बढ़ते रहनेकी प्रतिज्ञा करते हैं।" नये मंत्रियोंने नौ शपथ

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसादका बर्मा जाते समय कलकत्ता पहुंचनेपर दमदम हवाई अड्डे पर शानदार स्वागत

भारतके गवनर्नर जनरल लार्ड माउण्टबेटन बर्मा स्वाधीनता दिवसपर नयी दिल्लीके समारोहकी अध्यक्षतामें कर रहे हैं।

लीं जिनमें एक यह है कि "इस जीवन दान देकर भी अपनी देश और अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा करेंगे।

सरकारी तौरसे यह घोषणा की गयी कि स्वतन्त्रताके स्मारक स्तूप बर्मा भरमें सार्वजनिक केन्द्र स्थलों पर निर्मित किये जायंगे।

गवर्नरका प्रस्थान

बर्माके अन्तिम ब्रिटिश गवर्नर सर हचूवर्ट रैंकने ४ जनवरीको प्रातः कल बर्मिंघम नामक युद्ध पोत द्वारा रंगूनसे प्रस्थान किया। उनकी विदाके समय पंक्तियोंमें समवेतः हजारों बर्मियोंने हर्ष-ध्वनिके साथ बर्मामें ब्रिटिश शासनके अन्तिम प्रतिनिधिको विदा दी।

भारतकी शुभ कामनाएं

बर्माके प्रजातन्त्र संघका स्वागत करते हुए भारतके प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरूने भारतकी सरकार और जनताकी ओरसे यह संदेश भेजा है "यह महान और पवित्र दिवस है, केवल बर्माके लिये ही नहीं बल्कि भारत और सम्पूर्ण एशियाके लिये। हम भरतवासी इससे विशेषरूपेण प्रसन्न और आनन्दित हुए हैं क्योंकि हमारा अनादिकालसे नानारूपमें बर्माके साथ सम्पर्क चला आ रहा है। हमारे प्राचीन आर्य ग्रन्थोंमें बर्माको स्वर्णभूमि कहकर सम्बोधित किया गया है। यद्यपि इसके बहुत दिन बाद किन्तु आजसे दीर्घकाल पूर्व हमने बर्माको एक संदेश भेजा - भारतके श्रेष्ठातिश्रेष्ठ पुत्र गौतम बुद्धका संदेश और इस संदेशने हम लोगोंको दो हजार वर्षसेभी अधिक समयसे एक सूत्रमें बांध रखा है और बहुतसी बातोंके अतिरिक्त वह संदेश शांति और सदाचारका था और संभवतः आज उस शांति और सदाचारके संदेशकी आवश्यकता अन्य सब बातोंसे अधिक है। हमारे ये बंधन बने हुए हैं। अतीतमें राजनीतिक बंधन और सूत्रभी रहे हैं किंतु सच्ची ग्रंथि भारत और बर्माके बीच जो सदा रही है वह पारस्परिक आत्मिक हितों और समान आदर्शोंकी स्निग्ध स्वर्णिम ग्रंथि है जिसे राजनीतिक परिवर्त्तनभी नहीं तोड़ सकते। अतीतकी तरह भविष्यमें भी भारतवासी कंधेसे कंधा मिलाकर बर्मावासियोंके साथ खड़े होंगे और सुदिन या दुर्दिन हम उस समयभी एक साथ रहेंगे।

बर्माका राजसिंहासन वापस

बर्माके राजदूतने भारतके गवर्नर जेनरल लार्ड माउण्ट बैटनके सामने अपने को जब उपस्थित किया तो गवर्नर जेनरलने कहाकि आशा करता हूं कि मार्चमें मैं बर्माके अंतिम शासक थिबाके राजसिंहासनके साथ जो, इस समय भारतीय संग्रहालयमें है, बर्मा जाऊंगा और उसे बर्माके संघ प्रजातंत्रको भेंट करूंगा। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि हमारे अपने भारतके स्वतंत्रतादिवसके बाद इतना शीघ्र बर्माका स्वतंत्रतादिवस आया।

रंगूनमें डा० रा० प्रसादका अभिनन्दन

बर्माके स्वतंत्रता समारोहमें भारतके राष्ट्रपति डा० राजेंद्र प्रसादने स्वयं उपस्थित होकर भारतकी शुभ कामनाएं और सद्भावनाएं प्रकट कीं। इस अवसर पर रंगूनमें डा० राजेंद्रप्रसादका नागरिक अभिनंदन किया गया। प्रायः दस हजार नागरिकोंने इस समारोहमें भाग लिया।

संसारकी शुभ कामनाएं

अधिकार ग्रहणके बाद तत्काल बर्मा प्रजातंत्रके प्रथम अध्यक्ष साव श्रिथाथकने विश्वका अभिनंदन किया। आपने कहा स्वतंत्रताके नवयुगमें प्रवेश करते समय बर्मा संसारका अभिवादन करता है। हमें अपने नवीन राष्ट्राधिकार पर हर्ष हो रहा है और प्रसन्नता है कि हमारे इस शुभ अवसर पर संसार हमारे साथ है। हम बर्माके स्वतंत्रताके नवयुगमें अपना जीवन प्रारम्भ करने जा रहे हैं, राष्ट्रकी स्वतंत्रताके लिये लड़नेवालों और ब्रिटिश राजनीज्ञताके प्रति प्रगाढ़ कृतज्ञताका भाव लेकर —जिसके कारण हम अपने लक्ष्य तक इतने सुन्दर ढङ्गसे और इतनी जल्दी पहुंच सके हम संसारके राष्ट्रोंके बीच अपना स्थान ग्रहण करने जा रहे हैं इस दृढ़ सङ्कल्पके साथ कि सबके साथ हम मिलकर परममित्रकी भांति रहेंगे और विश्वशांतिकी रक्षामें अपना कर्त्तव्य पूरा करेंगे।"

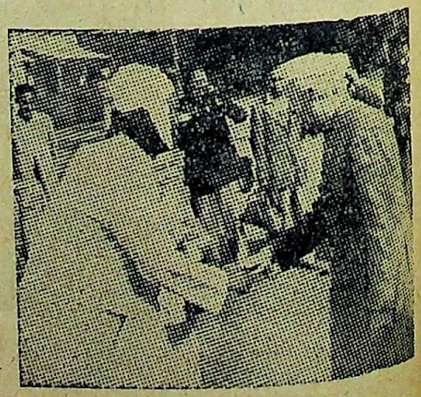

पं० जवाहरलाल नेहरू बर्माके राजदूतको स्वतन्त्रता प्राप्तिके उपलक्षमें बधाई दे रहे हैं

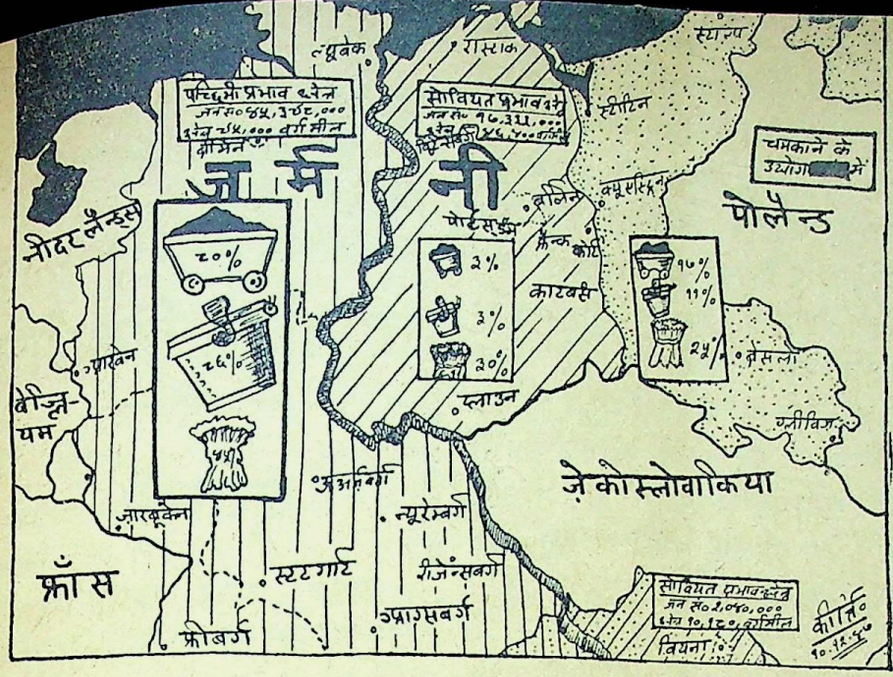

जर्मनीकी समस्याका विषम रूप

—:***:—

लेखक—श्री परिपूर्णानन्द वर्मा

जर्मनीकी समस्याने एक विषम रूप धारण कर लिया है। समाचार पत्रोंमें, विशेष कर यूरोपीय पत्रोंमें जर्मनी की समस्या पर बहुत कुछ लिखा पढ़ा जा रहा है। ब्रिटिश परराष्ट्र सचिव मि० बेविन तथा अमेरिकाके परराष्ट्र सचिव श्री मार्शलने लंदनमें विदेशी मंत्रियोंकी बैठक की असफलताका पूरा दोष रूसके सर लाद दिया है और बेविनने जिस बातको दबी जबानसे कहा था, मार्शलने उसे बड़े साफ शब्दोंमें कह दिया है कि जब तक रूसकी लिप्सा और लालच पर प्रतिबंध न लगेगा, तब तक इसी प्रकार जर्मनीकी दुर्दशा होती रहेगी और वह कभी जीवित न किया जा सकेगा।

जर्मनीको जिलानेकी फिक्र तो न रूस को है और न संयुक्त राज्य अमेरिका या ब्रिटेन को। यह तो मि० बेविन ही स्वयं कह चुके हैं कि हम कभी भी जर्मनीको ऐसा केन्द्रीय राज्य न बनने देंगे कि यहां पुनः एकतंत्र शासन प्रारम्भ हो सके या 'नाजीवाद' का जन्म हो। मान लेना चाहिये कि केवल नाजीवाद का प्रभुत्व रोकनेके लिये ही आज जर्मनीके चार टुकड़े हैं। एक टुकड़े पर रूसका अधिकार है, दूसरे टुकड़े पर अमेरिका का, तीसरे टुकड़े पर ब्रिटेनकी चढ़ ढी है और चौथे पर दुर्बल फ्रांस भी दांत लगाये बैठा है। पर यदि उसके टुकड़े करनेका ही सवाल है तो वही क्यों नहीं तय हो जाता। जर्मनी जनता कभी पराधीन नहीं रही। उसे पराधीन रखनेका निरर्थक प्रयास क्यों हो रहा है। यह तो सभी विदेशी राज्य जानते हैं कि जर्मनीको टुकड़े कर देनेके कारण ही 'जर्मनी पितृभूमि' के नाम पर हिटलरका उदय हुआ था। यह भी सभी जानते हैं कि यदि वार्साईकी संधिमें सन् १९१८ में जर्मनीके साथ न्याय हुआ होता तो हिटलरका उदय ही नहीं होता। यह अवश्य है कि उस समय ब्रिटेन और फ्रांस यह दांत पीस कर रह गये थे कि जिस प्रकार जर्मनीने फ्रांसको रौंदा था, वे भी बर्लिन तक रौंद आते। पर वह मौका इसी बार लगा। उसका पूरा लाभ उठाया गया। हरेक अंग्रेज, फ्रेंच, रूसी तथा अमेरिकन सिपाहीने जर्मनीको वेश्यालय समझ कर खूब पैशाचिक नाच नाचा। भूखी मरती जर्मन जनता अपनी लड़कियां बेंचकर पेट चलाने लगी। पर, जर्मन इस अपमानको सदा न सहेंगे। वे कभी भयंकर हो उठेंगे। उस भयंकरताको रोकनेके लिये तलवार या बन्दूक से कब तक काम लिया जावेगा। स्टालिन या एटली या ट्रूमैन ऐसे भोले उनको एक दूसरी ही चीज सता रही है।

बालकनका भय

रूस जर्मनीको अपने तथा पश्चिमीय राज्योंके बीचमें एक परदा बनाकर रखना चाहता है जिससे वह हंगरी, रूमानिया आदिको अपने प्रभावमें रख सके। अमेरिका तथा ब्रिटेन, फ्रांस और इटली भी रूसके प्रभावको नष्ट करनेके लिये जर्मनी को निस्सहाय नहीं रहने देना चाहते। रूस चाहता है कि जब तक जर्मनी हाथमें है उसका रोंया-रोंया नोच कर अपना खजाना भर लिया जाये। इसीलिये वह जर्मनी पर कमसे कम २५ अरब रुपयेका हर्जाना लाद कर उसके उद्योग-धंधोंका सब माल हड़प कर लेना चाहता है। फ्रांस तथा ब्रिटेन रूरकी घाटीसे इतना कोयला निकाल लेना चाहते हैं कि उनके उद्योग-धंधोंकी पूरी समस्या हल हो जाये। अमेरिकाको जर्मनीके मालकी फिक्र नहीं है। वह रूसको जर्मन कारखानोंसे फायदा उठानेसे रोकना चाहता है। उसे यह सहन नहीं है कि कम्यूनिस्टोंका औद्योगिक विकास भयावह हो जावे। हिन्दीके पाठकों को यह पूरी तरहसे मालूम भी न होगा कि जर्मनीका वर्तमान बंटवारा किस प्रकार का है तथा किसके हाथ क्या माल हाथ लगा है। इसीलिये हम एक सुन्दर मान चित्र देकर वर्तमान परिस्थितिका ज्ञान कराना चाहते हैं। इस नकशेसे यह पता चलेगा कि

जर्मन-उत्पत्तिका बंटवारा

किस प्रकार है। रूसी प्रभाव क्षेत्रमें जर्मनीका ३ प्रतिशत कोयला, ३० प्रतिशत गल्ला तथा ३ प्रतिशत लोहा आता है। पोलैण्डसे रूसको १७ प्रतिशत कोयला ११ प्रतिशत लोहा और २५ प्रतिशत गल्ला मिलता है। जर्मनीका ४६,४०० वर्गमील तथा १७ ३३३,००० जनता रूसके आधीन है। पश्चिमी राज्योंको ९५,००० वर्गमील तथा ४५ ३९८,००० जनता और ८० प्रतिशत कोयला ८६ प्रतिशत लोहा, ४५ प्रतिशत गल्ला मिलता है। अतः राजधानी बर्लिन की हानि छोड़कर, पश्चिमी राज्यों को अधिकांश भाग मिला ही हुआ है। फिर भी, रूसी क्षेत्रके साथ आस्ट्रियाकी २०,४०,००० जनता तथा १०,१८० वर्ग-

मील भूमि मिल जानेके कारण पोलैण्डको शामिल कर लेनेसे रूसी शक्ति इतनी विशाल हो जाती है कि उसे मित्र राष्ट्र सहन नहीं कर सकते। इसलिये समझौता हो तो कैसे हो।

व्यापारका सवाल

इसके साथ ही यह भी भय है कि रूस हाथसे न जाने पाये। जहां विदेशी मंत्री सम्मेलन यानी लन्दनकी चार बड़ोंकी बैठक बिना कुछ तय किये समाप्त हो गयी, वहीं ब्रिटेनके व्यापार मंत्री रूसकी राजधानी मास्को इसलिये जा रहे हैं कि गत जुलाईमें जो व्यापारिक संधिकी वार्ता चलायी थी, वह फिरसे चालू की जाये। उस समय ब्रिटेनने रूस पर यह आक्षेप किया था कि वह अमेरिकन मुद्रा डालर में रुपये चाहता है, इसीलिये सम्मेलन सफल न हो सका। रूसने कहा कि यह बात नहीं है। हम स्टर्लिंगमें भी व्यापारिक भुगतान करनेके लिये तैयार हैं। तब समझौता क्यों नहीं हुआ। ब्रिटेनको रूसका गेहूं चाहिये। रूसको ब्रिटेनकी मशीनें। समझौता वास्तवमें इसलिये न हो सका कि जर्मन माल कौन ले जाये। उस भीतरी उलझनने फैसला होने नहीं दिया। अतएव अब मेलकी कौनसी नयी सूरत निकल सकती है।

रूसका पाखंड

जिस समय नवम्बर, १९४७ में लंदनमें यह चार बड़ोंकी बैठक शुरू हुई, "न्यूयार्क टाइम्स" के संवाददाताने २९ नवम्बरको लिखा कि सम्मेलन बड़े उदास तथा परस्परके अविश्वासके वातावरणमें प्रारम्भ हुआ है। सब लोग यह जानना चाहते हैं कि क्या रूस इस बार सचमुच जर्मनीके विषयमें निश्चित फैसला करना चाहता है। क्या रूस आस्ट्रियाके साथ भी संधि करेगा। जोहांसबर्गके "संडे एक्सप्रेस" ने ७ दिसम्बरको साफ लिख दिया कि रूस तभी समझौता करेगा जब पश्चिमी जर्मनीमें उसे टांग अड़ानेका काफी मौका मिले।

इसलिये, लंदन सम्मेलनका यह निर्णय कि जर्मनीको कभी एक केंद्रीय राज्य एक सूत्रमें इस लिये न रहने दिया जायेगा कि वहां एकतंत्र शासन न स्थापित हो जाये, निरर्थक सी बात है। वास्तविकता तो यह है कि कोई अपना क्षेत्र छोड़ना नहीं चाहता। इसका जो फल होनेवाला है, वह होकर रहेगा। जर्मनी यदि सभी युद्धोंका कारण रहा है तो उसी के कारण पश्चिमी राज्योंका संहार भी होगा। किसी दूसरेको सतानेकी सीमा होती है। अभागा जर्मनी कितना अत्याचार सहेगा। 'कबतक वह दासता भोगेगा और भूखों मरेगा।

साप्ताहिक विश्वामित्र
—: की :—
एजेन्सी
लेकर लाभ उठाइये।

पूर्ण उपहार

टाटा के ओ डी कोलोन की एक शीशी मित्रों व प्रियजनों को भेंट करने के लिये एक परिपूर्ण उपहार है क्योंकि सब लोग इसकी प्रशंसा करेंगे। यह पेंचदार शीशी बहुत आकर्षक है मूल्य उचित होनेके कारण इसे हर कोई खरीद सकता है। आनेवाले त्योहार के समय इसे खरीद कर भेंट कर दीजिये।

टाटा का ओ डी कोलोन
दी टाटा आईल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

सर्दारकी बात

लेखक—श्री रुद्रसाच

भारतके उप प्रधान मन्त्री वल्लभ भाई पटेलको हिन्दुस्तान और संसारने सबसे पहले बारदोली किसान सत्याग्रहके विजयी नेताके रूपमें—सर्दार पटेलके रूपमें—देखा और सुना। उस समय तक भारतके स्वतन्त्रता आन्दोलनमें आर्थिक सिद्धान्तके आधार पर आजकी विचार धाराएं स्पष्ट नहीं हुई थीं। विदेशियोंसे भारतको मुक्त करना यही उस समय प्रधान विचार धारा थी। स्वतन्त्रता आंदोलनकी प्रगतिके साथ साथ धीरे धीरे किसान और मजदूर आन्दोलन भी बढ़ने लगे और हमारे राजनीतिक आन्दोलन का प्रभावित होना स्वाभाविक था। रूसमें समाजवादी गणतन्त्रकी प्रतिष्ठा एवं यूरोप के अन्य देशोंके श्रमिक तथा आर्थिक आंदोलनोंका प्रभाव भी हमारे देश पर कम नहीं पड़ा और फलस्वरूप पहले धीरे धीरे और बादमें स्पष्ट और दृढ़ स्वरमें यह मांग की जाने लगी कि स्वराज्यकी रूपरेखा क्या होगी, उसका आर्थिक आधार क्या होगा यह स्पष्ट कर दिया जाना चाहिये। स्वतन्त्रता आंदोलनका नेतृत्व कांग्रेस कर रही थी अतः उस पर यह दबाव दिया जाने लगा कि इस सम्बन्धमें वह अपनी नीतिका स्पष्टीकरण करे। यह दबाव बाहरसे तो पड़ ही रहा था कांग्रेस के भीतरसे भी दिया जाने लगा और पण्डित जवाहरलाला नेहरू भीतरी दबाव डालने वालोंमें प्रमुख थे। इस मांगने इतना जोर पकड़ा कि १९३१ में करांची अधिवेशनमें कांग्रेसको प्रथम बार नागरिकके मौलिक आर्थिक अधिकारोंकी घोषणा करनी पड़ी और संयोगकी बात है कि सर्दार वल्लभ भाई पटेल इस अधिवेशनके अध्यक्ष थे। इसी समयसे कांग्रेसके भीतर पहले ही सेचले आते दो पक्षों—दक्षिण और बाम—का गठन आर्थिक आधार पर आरम्भ हुआ। कालान्तरमें इन धाराओं को समाजवादी और पूंजीवादी नामसे कहा जाने लगा। कांग्रेसके भीतर पण्डित जवाहरलाल नेहरूसे यदि समाजवादको पूंजीपतियों, उद्योगपतियों और अन्य प्रतिगामी तत्वोंने सर्दार वल्लभ भाईको अपने परित्राता और संरक्षकके रूपमें पाया। हमारी आर्य संस्कृतिकी यह विशेषता है कि इसने हमेशा सर्व हिताय काम करनेकी प्रेरणा दी है। कांग्रेसने बराबर यही आदर्श सामने रखा। स्वराज्यकी लड़ाईको जनताकी, देशके किसान और मजदूरको आभाव, उत्पीड़न और शोषणसे मुक्तिकी लड़ाई कहा गया। किन्तु विदेशी दासताके विषने हमारी दृष्टि और विचार धाराको संकीर्ण, अनुदार और व्यक्ति तक सीमित बना दिया है। यही कारण है कि किसानोंके सर्दार धनपतियों और उद्योग पतियोंके "लौहकाय पुरुष" में परिणत हो गये और आज समाजवादी उनकी आंखोंमें शूलके समान प्रतीत होता है तो पूंजीपति उनको प्रिय नयनाभिराम लगता है। किसानोंका यह सर्दार, उत्पीड़ितोंका यह नेता वल्लभ भाई पटेल पूंजीपतियोंका "लौहकाय पुरुष" बनकर वही काम करता है या करनेकी इच्छा रखता है जो महाभारतका धृतराष्ट्र भीमके साथ करना चाहता था। आज इस लौहकाय पुरुषकी चेष्टाओं, उसके प्रवचनो और उसके कार्य कलापोंमें देशके जन साधारण किसान मजदूरको सन्तुष्ट करनेकी प्रवृत्तिका सर्वथा अभाव दिखायी देता है। सर्दार पटेलका यह मनोभाव बड़ा ही मर्मान्तक है। किसानों और मजदूरोंको विष दृष्टिसे सर्दारका देखना उतना कष्ट प्रद न होता यदि इसी न्याय तुलासे वे इन पूंजीपतियों और उद्योग पतियोंको भी तौलते जिन्होंने हमारे अन्तिम स्वतंत्रता आंदोलनमें देशके साथ विश्वास घात किया, विदेशी सरकार का साथ दिया, जन साधारणका शोषण किया। किन्तु सर्दारकी सम दृष्टि नहीं है। १९४२ के स्वातंत्र्य संग्राममें देशका साथ न देने वाले राजनीतिक दलोंको तो वे क्षमा नहीं कर सकते किन्तु उनसे भी हीन आचरण करनेवाले आज उनके लाड़ले कैसे बन गये? सवाल तो यह है। न्याय शील पिता अन्याय और अपराध करने वाले दो पुत्रोंमें जब एकको दण्ड देता है और दूसरेको प्यार तब वह पितृत्वके

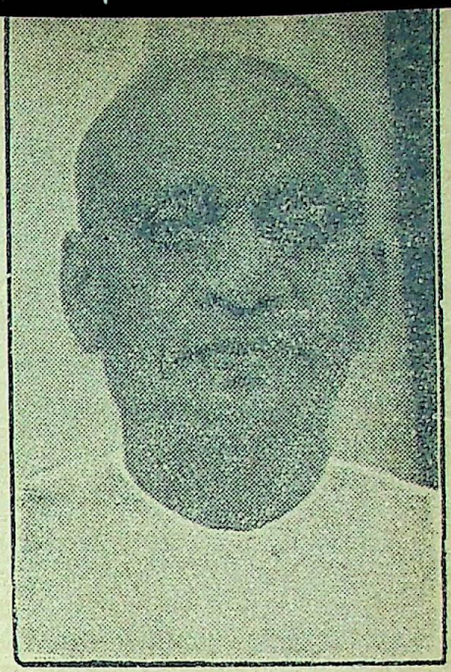

सरदार वल्लभ भाई पटेल

पवित्र अधिकारसे वंचित हो जाता है और लाड़ले पुत्रके प्रति अंध पक्षपात करके न्यायाधिकरणर के स्थानके लिये वह अयोग्य सिद्ध होता है। न्यायासनपर बैठकर मोह या स्वार्थ जन्य दुर्बलताको ज नहीं जीत सकता उसके हाथोंमें सम्पूर्ण जाति, समाज या देशका हित कदापि सुरक्षित नहीं समझा जा सकता। विचारों और धारणाओंकी शक्ति और दुर्बलताकी पहचान संक्रांति या विषम संधिकालमें ही हुआ करती है। मुक्त और स्वतंत्र भारतके सामने आज घोर संकट उपस्थित है। इस विषम संक्रांतिकालमें देशका हित, स्वार्थ सर्वोपरि है। किसी एक वर्गके स्वार्थको, वह कितना ही आवश्यक क्यों न हो, देशके सामने तरजीह नहीं दी जा सकती। हम यह मानते हैं कि आज देशके संकटके सामने अपने स्वार्थके लिये किसी वर्ग को सर ऊपर नहीं उठाने दिया जा सकता। इस तरहकी किसी चेष्टाका प्रश्रय या प्रोत्साहन नहीं दिया जा सकता। किन्तु इस स्थितिका किसीको नाजायज फायदा भी नहीं उठाने देना चाहिये। पं० जवाहर लाल नेहरूने यही स्थिति ग्रहण की है। जहां उन्होंने श्रम जीवियोंको अनुशासनमें रहनेकी चेतावनी दी वहीं उन्होंने पूंजीपतियों और उद्योगपतियोंको भी धमकाया कि उनकी उच्छृंखलताको

बर्दाश्त नहीं किया जा सकता ! व्यवसाय और वाणिज्य, उत्पादन और वितरण देशका हित ध्यानमें रखकर संचालित किया जाना आवश्यक है। इनपर नियंत्रण आवश्यक है। सरकार इस दिशामें योजना तैयार कर रही है। अभी पिछले दिसम्बर में पण्डित जवाहर लाल नेहरू कलकत्ते आये थे। एसोशिएटेड चेम्बर आफ कामर्समें उनकी वक्तृता सुनकर देशी और विदेशी दोनों बनियोंको एक समान निराशा हुई। कांग्रेस अब तक जिस सिद्धांतकी घोषणा डंकेकी चोट करती आयी है। अब जब उसे कार्यमें परिणत करनेका समय आया है तो देशके पूंजीपति चाहते हैं कि कांग्रेसको पथभ्रष्ट कर दिया जाये। पर दिसम्बरमें पण्डित नेहरू की घोषणाने उनको निराश किया। देशके मुख्य और मौलिक उद्योग धंधोंको राज नियंत्रण और प्रबन्धके अन्तर्गत लाना कांग्रेस सरकारकी नीति है। पण्डितजीने यह भी कहा कि निजी व्यवसाय वाणिज्य एक सीमित दायरेतक ही बढ़ने दिया जायेगा। पण्डितजीने स्पष्ट शब्दोंमें यह कहा कि व्यवसायियोंकी निरंकुशता नहीं रह सकती। यह असम्भव है कि उद्योग धंधोंको स्वच्छंद भाव और अबाधगतिसे अपने रास्ते चलने दिया जाये। यह नहीं हो सकता कि कोई सरकार पूंजीपति और श्रमिक, किसान और जमींदारके सम्पर्कों में दिलचस्पी न ले। पण्डितजीने औरभी स्पष्ट शब्दोंमें कहा कि पिछले युद्धके दौरानमें व्यापारियोंने अच्छा सलूक नहीं किया। यह कहा जा सकता है कि इनलोगोंने बेहद ज्यादतियां कीं। न्यायकी कौन कहे इनको अपने सिवा और किसीकी चिंता ही नहीं थीं। पण्डितजी हैरान हैं यह देखकर कि हिन्दुस्तानमें लम्बे इनकम टैक्सके रहते भी लोगोंने अतुल धनराशि कैसे कमायी। राष्ट्र और धंधोंको क्षति पहुंचाकर इस तरहके निर्लज्ज घृणित व्यापार द्वारा जो अमित लाभ उठाया जा रहा है उसे रोकने के लिये हमें उचित उपाय और प्रणालीका अवलम्बन करनाही होगा। यह बात सही है कि प्रत्येक नागरिकको देवता नहीं बनाया जा सकता लेकिन देवतान बन सकने वालों को टेढ़े रास्ते चलनेकी उचित सजा तो दी ही जा सकती है।

पण्डितजी की इन बातोंसे कलकत्ते के पूंजीपति समाजमें बड़ा आतंक छा गया, घबराहट पैदा हो गयी। सर्दार पटेल जब उस दिन आसामसे लौटते समय कलकत्ते आये तो यहांके पूंजीपतियोंने उनके सामने अपना दुखड़ा रोया। पर अपने लौहकाय पुरुष की बातें सुनकर उनको ढ़ाढ़स मिला, प्रसन्नता हुई। और क्यों न होती ? लियाकत अलीखांने १९४७-४८ के बजट द्वारा जो चोट की थी उसे भूल जानेके लिये कहते कहते सर्दार पटेलको स्मरण आया कि लियाकत अली की चोट दिसम्बरमें पण्डित नेहरूकी बातोंको सुनकर ये कैसे भूल सकते हैं। तब आपने कहा कि आप परेशान क्यों होते हैं ? हमारा अर्थ सचिव तो आपका ही आदमी है। वह जानते और समझते हैं कि उनको क्या करना है. वे योग्य, चतुर और कुशल व्यक्ति हैं। हमने जान बूझ कर ही ऐसे आदमीको इस पद पर नियुक्त किया ताकि भारतके औद्योगिक क्षेत्रका जो विश्वास हिल गया है वह फिरमजबूत हो। हमारे व्यापार सचिव (जे०एन० मामा) भी एक अनुभवी उद्योग पति हैं। उद्योग और रसद मन्त्री डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी (हिन्दू महासभाके नेता) कांग्रेसी नहीं हैं। मुझे पूरा भरोसा है कि ये सब मन्त्रिगण भारतको औद्योगिक दृष्टिसे महान बनानेमें आपका सहयोग चाहेंगे। आप यह भी देखते हैं कि मंत्रिमण्डलमें भारतके राजनीतिक जीवनके विभिन्न दलों के प्रतिनिधि हैं। आप इस धारणाको हटा दीजिये कि मंत्रिमण्डल जरा भी किसी तरह आपके हितोंका विरोधी है। क्या सर्दारकी इन बातोंका स्पष्ट ही यह अर्थ नहीं है कि जब मंत्रिमण्डलमें कुंजीके स्थानों पर निहित स्वार्थोंके प्रतिनिधि बैठे हुए हैं तब अकेले पंडित जवाहरलाल नेहरू तुम्हारा क्या बिगाड़ सकते हैं ? इस पर विशेषटिप्पणी करनेकी आवश्यकता नहीं है, यह स्वतःस्पष्ट है। संभवतःइसीसे दिल्लीमें हुए उद्योग सम्मेलनमें सेठ घनश्याम दास बिड़लाने कहा था कि सरकारकी एक आवाज निकलनी चाहिये। इस पर अधिक न कह कर फिलहाल इतना ही पर्याप्त है कि देशके पूंजीपति जो अपने स्वार्थके लिये कुछ भी कर सकते हैं, इस स्थितिसे अधिकसे अधिक नाजायज फायदा उठायेंगे। देशका यह दुर्भाग्य है कि किसानोंका नेता सर्दार वल्लभ भाई पटेल पूंजीपतियोंका लौहकाय पुरुष बन कर उस स्थितिको सम्भव बनानेमें सहायक है जिसका अनिवार्य परिणाम होगा कांग्रेसमें फूट ! ! !

—*—

पांच सौ रुपया इनाम

(एक आश्चर्यजनक अद्भुत ईजाद)

मैस्मरेज़िम और जादू की शक्ति से तैयार की हुई यह अंगूठी अनिष्टकारी ग्रहों का प्रभाव दूर करने में अलौकिक शक्ति का परिचय देती है। इस अंगूठी को पहनने वाला अपनी हर प्रकार की कामना पूरा करने में सफल हो जाता है। प्रेम और मुकदमे में सफलता स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा कीर्त्ति उसके पांव चूमती है। एक ही रात में इस अद्भुत अंगूठी के गुणों और करामात से प्रभावित होना ही पड़ता है।

एक अंगूठी का मूल्य सिर्फ २)।
एक साथ तीन अंगूठी मंगाने पर ५)।
पेकिङ्ग और डाक खर्च अलग

—: पता :—
महाकाली आश्रम नं० २४७ कानपुर

दो दर्पोन्मत्त जनतन्त्रोंका संघर्ष

—:***:—

लेखक—श्री रतनलाल जोशी एम० ए०

अमेरिकाके राष्ट्रपति ट्रूमैन

१२ मार्च, १९४७ के प्रभातकालमें अमेरिकाके उर्वर प्रांत मिसौरीके एक व्यक्तित्वहीन प्रतिनिधिने, जो अपने नेताके अकस्मात् अवसानके फलस्वरूप सहसा अप्रत्याशित रूपसे अमेरिकाका प्रेसिडेण्ट बन गया था, अमेरिकाकी वैदेशिक नीतिका दिशा परिवर्तन करते हुए एक महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया जिसे भविष्यका इतिहासकार 'ट्रूमैन-सिद्धांत' की संज्ञा देगा। अमेरिकाकी राजनीतिक परम्पराका यह वक्तव्य भी ऐतिहासिक शिलालेख कहलायेगा क्योंकि इस वक्तव्यने अमेरिकाके निर्लिप्त एकांतवाद और अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें हस्तक्षेपहीन तटस्थताको सदैव के लिये त्याज्य घोषित कर दिया है। ऐसा प्रतीत होता है मानो अमेरिका अंकुरित होनेकी प्रबल महत्वाकांक्षा वाले सशक्त बीजकी भांति अपने वाह्य छिलके को तोड़ कर बाहर निकल आया हो। अमेरिकाकी यह साहसपूर्ण विज्ञप्ति व्यक्त करती है कि अमेरिकाने अपना राजनीतिक शैशवकाल समाप्त कर दिया है और अब वह इतना वयस्क हो गया है कि ब्रिटेनके संरक्षणका स्वयं परित्याग करके वह अकेला ही निर्भीक होकर अपनी महत्वाकांक्षाओंकी पूर्ति करना चाहता है। ऐसिहासिक परम्पराकी पार्श्वभूमिमें इस नये परिवर्तनका मूल्यांकन इस प्रकार किया जा सकता है कि फ्रेंकलिन रूजवेल्टके राजनीतिक सिद्धांत अपनी प्रकृत परिणति पर पहुंच गये हैं और अमेरिका यूरोपके राजनीतिक नेतृत्वको परित्याग कर चुका है—आज वह यूरोपकी कूटनीतिका आज्ञाकारी सेवक न रहकर उसका स्वामी बन बैठा है। ट्रूमैनके वक्तव्यकी यही भाव भूमि है।

अमेरिकाके राजनीतिक क्षेत्रोंमें तो इस वक्तव्यकी व्यापक चर्चा स्वाभाविक ही थी किंतु अभी तक अपनी ही परिधि में केन्द्रित अमेरिकनोंको यह आशा नहीं थी कि सारे संसारका राजमञ्च इस घोषणासे विचलित हो जायेगा। अतः जब उन्हें इस घोषणासे सम्बन्धित बाह्य प्रतिक्रियाओंका ज्ञान हुआ तो उन्होंने अपनी संकीर्ण धारणाओंको दोहराया और गम्भीरताके साथ उसकी मान्यताओंको समझना शुरू किया। यही कारण है कि 'न्यूयार्क हेराल्ड' जैसे प्रसिद्ध पत्रने भी एक सप्ताह बाद इस वक्तव्य पर टिप्पणी लिखी और उसे यह कहना पड़ा कि किसी भी राष्ट्रके कर्णधारने ऐसी घोषणा पहले की। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें इस धारणा का अभिप्राय यह है कि अमेरिकाका सुरक्षा क्षेत्र पूर्वमें दर्रेदानियाल और अरब राष्ट्रों तक है और पश्चिममें जापान और प्रशांत महासागरके दूरस्थ द्वीप समूह तक विस्तृत है। संक्षेपमें, अमेरिकाने अपना राजनीतिक व्यक्तित्व इतना विराट घोषित कर दिया है जहां कभी सूर्य अस्त नहीं हो सकता है अर्थात् 'पेक्स ब्रिटेनिया' के भग्नावशेष पर 'पेक्स अमेरिकाकी प्रतिष्ठाका प्रयत्न किया जा रहा है।

एंग्लो-अमेरिकन जनतन्त्र

'ट्रूमैन-सिद्धांत' के विराट क्षेत्रकी परिधिका केंद्र बिंदु है लोकतंत्र। लोकतंत्रकी रक्षाकी प्रेरणाने ही 'ट्रूमैन-सिद्धांत' को जन्म दिया है—अधिकांश पाश्चात्य राजनीतिज्ञोंका यही मत है। ट्रूमैनने भी जनतंत्रकी रक्षाका संकल्प करते हुए नवीन वैदेशिक नीतिका शिलान्यास किया है। जनतंत्रके प्रति इतनी अगाध श्रद्धा भक्ति भावनाके प्रदर्शनसे एशियावासियों को अमेरिकाकी ईमानदारी और निर्विकार शुभेच्छाके प्रति एकदम श्रद्धालु नहीं हो जाना चाहिये। क्योंकि पाश्चात्य देशोंका लोक व्यवहार आंतरिक यथार्थसे बिल्कुल भिन्न होता है। राजनीति और जीवनकी नैतिकता वहां एक ही सत्यके रूपांतर नहीं

अमेरिकाकी परराष्ट्र नीतिके विरोधी हेनरी वालेस

है। जनतंत्रकी रक्षाके संकल्पकी जो आवृत्ति अमेरिकाके राजनीतिक नेताओं द्वारा की जा रही है वह कूटनीतिका एक आवरण मात्र है। असलियतका केवल मुलम्मा ही उसके ऊपर लगाया जा रहा है। जनतंत्रका जो नकशा हमारी कल्पना में अङ्कित होता है वह नकशा अमेरिकाका नकशा नहीं है—सारी पाश्चात्य जनतंत्र-प्रणाली जनतंत्रकी जो हमारी धारणा है उसके साथ साम्य नहीं रखती। पाश्चात्य जनतंत्रका आधार वस्तुतः वैयक्तिक स्वातंत्र्य और मुक्त एवं निर्द्वंद्व आजीविकोपार्जन इन दो प्राचीरों पर प्रतिष्ठित है—जीवनके विकासके लिये व्यक्तिगत स्वातंत्र्य की आवश्यकता है किंतु व्यक्तिगत स्वातंत्र्यकी भी मर्यादा होनी चाहिये-व्यावहारिक जीवनमें प्रत्येक नागरिकको उस मर्यादाका अनुभव होता है। पाश्चात्य देशोंमें इस मर्यादाका निश्चित मानदंड न होनेके कारण वहांके सामाजिक जीवन में वैषम्यकी परिस्थितियां इतनी गहराई तक पहुंच गयीं कि समाजवाद कई कृत्रिम खण्डोंमें विभक्त हो गया और ये खण्ड परस्पर प्रतियोगिता और संघर्ष करने लगे हैं। साम्राज्यवाद फासिज्म, नाजीवाद, पूंजीवाद एवं कम्यूनिज्म इस वैषम्यके ही अंकुरित बीज हैं। पाश्चात्य जनतंत्रका दूसरा प्राचीर मुक्त आजीविकोपार्जन है। आजीविकोपार्जनमें स्वाधीन कर्तृत्वको काफी महत्व देना चाहिये। मन और कर्म की स्वाधीन प्रेरणा और प्रक्रियाके बिना उपार्जनके क्षेत्रमें यथोचित सफलता नहीं मिल सकती। किन्तु मर्यादाका प्रश्न यहां भी अनायास ही आ जाता है! यह मर्यादा मनुष्यत्वकी मर्यादा है। मनुष्यत्व को ही जीवनके सारे प्रयत्नोंका मानदण्ड माने बिना कर्म क्षेत्रके विकारोंका परिहार नहीं होता। जीविकोपार्जनमें मनुष्यत्वके लक्ष्यके अभावोंके कारण सारी प्रणाली ही दूषित हो जाती है पूंजीवादका विकास उपार्जनमें मनुष्यत्वकी भावनाका तिरस्कार करनेसे ही हो पाया है। इन दो तथ्योंके प्रकाशमें ही हमें पाश्चात्य जनतंत्रका मूल्यांकन करना होगा अन्यथा हमारी विचार प्रगतिकी भांतिके अतिरिक्त और कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। 'ट्रूमैन-सिद्धांत' के साथ प्रासंगिक रूपसे जिस जनतंत्रका उल्लेख किया जाता है उसका नग्नरूप पहिले हमें देख लेना होगा।

प्रसुप्त ज्वालामुखी

एंग्लो अमेरिकन जनतन्त्रवादके संरक्षणका ब्रिटेन और अमेरिकाने जिस प्रकार अपने कम्यूनिस्ट-विरोधी जेहादका मूलमंत्र बना रखा है उसी प्रकार सोवियट रूसने भी अपने लिये एक मूलमंत्र खोज

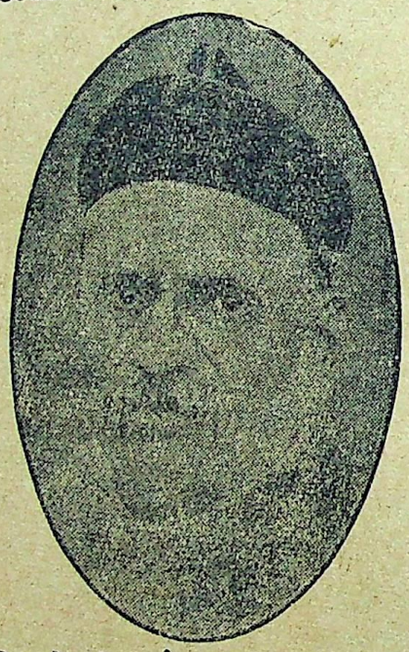

बिहारके नये गवर्नर श्री लोक नायक अणे

लिया है जिसका नामकरण उसने भी 'जनतंत्र' ही किया है। लेकिन उसके जनतंत्रकी परिभाषा एंग्लो-अमेरिकन जनतंत्रसे भिन्न है। जिस प्रकार एंग्लो, अमेरिकन जनतंत्र वस्तुतः पूंजीवाद और साम्राज्यवादको संयुक्त आत्माका ऊपरी लिबास है उसी प्रकार सोवियत प्रचारित जनतंत्रवाद भी कम्यूनिज्मका बाह्य आवरण है। इस प्रकार आजके अंतर्राष्ट्रीय रणक्षेत्रमें दो विभिन्न विचार धारायें जनतंत्रकी आड़ लेकर लड़ रही हैं। दोनों महान शक्तियां यह विश्वास कर चुकी हैं कि जो कुछ भी वे कर रहे हैं वह एक पवित्र अनुष्ठान ही नहीं, वरन मूलभूत नैतिक दायित्व भी है। इस विश्वास ने एक ही प्रहारमें सारे अंतर्राष्ट्रीय मनोजगतको दो खंडोंमें विभक्त कर दिया है। विडम्बना यह है कि दोनों खंडोंका युद्ध-घोष एक ही है। जनतंत्रकी रक्षा दोनोंके क्रूसेडका आधार है।

सोवियत रूस और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका इस पारस्परिक प्रभुत्व प्रतियोगितामें इतने गहरे उतर गये हैं कि वर्षका कोई भी सप्ताह ऐसा नहीं बीत रहा है जिसमें दोनों राष्ट्र एक दूसरेपर आक्रमण प्रत्याक्रमण न करते हों। सशस्त्र आक्रमण ये अवश्य नहीं हैं किन्तु सशस्त्र आक्रमणों से भी प्रबल ऐसे शाब्दिक आक्रमण हैं जो नरमेधकी भावभूमिको सौ गुनी अधिक विस्तृत करते हैं। ट्रूमैन और अमेरिकन कांग्रेसके प्रतिनिधियोंकी काफी संख्या जिस आवेशमयी भाषामें अपने वक्तव्य देते हैं उनसे ऐसी आशंका हो सकती है कि अमेरिका युद्धकी चुनौती दे रहा है। मालोतोव और अन्य रूसी प्रतिनिधियोंके आरोपोंमें भी ऐसा ही अनियंत्रित आक्रोश और उत्तेजना रहती है किंतु असलियत यह है कि दोनों राष्ट्र सशस्त्र युद्धसे डरते हैं—पिछले बारह मासमें ऐसी परिस्थितियां तुर्की, ईरान और कोरियामें आयी कि दोनों राष्ट्रोंने अपनी सेनायें एक दूसरेके सामने अड़ा दीं किन्तु तत्काल ही दोनों कोई बहाना लेकर पीछे हट गये। लेकिन इसका अभिप्राय यह नहीं है कि अनंतकाल तक यह शाब्दिक युद्ध अमूर्त ही बना रहेगा और दोनों ओरके दायित्वहीन वक्तव्योंसे प्रसुप्तज्वालामुखीमें विस्फोट नहीं हो सकेगा। दोनों राष्ट्रोंके कर्णधारोंको इस परिस्थितिका ज्ञान है और दोनों इस अभिनयकी अंतिम परिणतिसे भी परिचित हैं। किन्तु वस्तु स्थिति के तंतु इतने उलझ गये हैं कि जितना उन्हें सुलझानेकी चेष्टाकी जा रही है उतना ही वे उलझते जा रहे हैं। आजके अंतर्राष्ट्रीय राजतंत्रके साथ यही क्रूर प्रवंचना बद्धमूल हो गयी है जो तृतीय महायुद्धकी परिस्थितियोंको प्रतिदिन निकट लाती जा रही है।

नारी का सौदा

कहानी

ले० - श्री राम शर्मा 'राम'

अपने स्वभावके विपरीत, झुंझला कर, पांच वर्षके ममीने मांसे कहा—मैं यह दलिया नहीं खाता....इतना...कड़ुवा'

ममीकी झुंझलाहटको देखनेके साथ राधाने उसकी बातको सुन लिया। कई और समय होता, तो निश्चय ही, वह उसे फटकार देती। कह देती 'खाता है तो खा, नहीं तो छोड़ जा, बलासे मेरी। किंतु उस समय, सचमुच ही, उसके मनमें इतना साहस नहीं पैदा हुआ कि वह अपने बच्चेसे इतना भर भी कह देती उसे डांट देती। न मानता, तो उसके एक चपत ही मार देती। वरन इसके विपरीत, उस समय तो राधाका मन स्वयं अपने आपमें ही इस प्रकार छटपटा गया कि जैसे उस पर कोई प्रहार हो गया। एकाएक ही, उसके अंतरमें आंधीका इतना बड़ा झोंका उठ आया कि पल मारते उसे जाने कहांसे कहां उड़ा ले गया। मुंहके सामने चौखट की दीवट पर दीया टिमटिमा रहा था। लगा कि वह भी असंतोष और राधाके प्रति झुंझलाहटसे पूर्ण था। क्योंकि जैसे ही वह हवाका स्पर्श पाता, तो इतने जोर से झपक खा जाता कि जैसे बुझा...अब ज्योतिहीन हो जायगा। दोष उसका भी नहीं था। वह भी तैल रहित था, महीनों और वर्षोंकी उसमें कीचड़ जमा थी, उसीका आश्रय उस समय बातीको मिल रहा था। अ यथा उसमें जलनेका साहस नहीं था। वह निष्प्राण था।

अभी कुछ देर पूर्व, वस्तीका धनिक, साहू जगजीवनलाल उसके घर पर होकर गया था। वह मितव्ययी, धेले-धेले पर जान देनेवाला सूदखोर जब राधासे अपने रुपये मांगने आया, त उसके मनमें एक प्रस्ताव था कि वह राधाका मकान और जमीन ले ले और रुपये चुकता कर दे। इस प्रस्तावकी आड़में जगजीवनके मनमें कुछ और भी था। किंतु उसे राधाके सामने रखनेका उसमें साहस नहीं। साहू आत्माका दुर्बल था। परंतु उस दिन जिस उदार और सरस दृष्टिसे उसने राधाकी ओर देखा, उससे अवश्य ही, उसके अंतरका छाया-चित्र दिखायी देता था। लेकिन यह संदिग्ध था कि उस युवा, सुन्दर और वैधव्यके द्वार पर बैठी हुई राधाने उस चित्रको पहचान लिया औ। समझ लिया था।...हां, उसने न देखा ही, न समझा ही। अपितु, जब साहू जगजीवनलालने अपने रुपयोंका प्रसंग उठाया और यह बताया कि सूद सहित दस हजार रुपये हो गये, तो निश्चय ही, राधा को इतना सुनना, अधिक सुखकर नहीं लगा। जीवन सागरके जिस किनारे पर वह खड़ी थी, मानो वहांसे बरबस ही उसे सागरके अन्तरालमें फेंक देनेकी उस जगजीवनलाल ने चेष्टा की थी। मानस सागरमें जो गहरी और उत्ताल तरंगे उठ रही थीं वे जैसे चीत्कार करती हुईं राधाको खा जाना चाहती थीं। यही कारण था कि राधा डर गयी। वह कांप गयी। इतना ज्यादा पैसा और उसके पास पाई नहीं। अपनी रोटियोंका साधन नहीं। कदाचित, इसीलिये, उसे लगा कि जीवनके जिस विशाल तटपर वह खड़ी थी, वहांकी बालू धीरे-धीरे उसके परोंके नीचेसे निकलने लगी... राधा पल-पलपर स्वतः ही गहरे पानीकी ओर जा रही थी, मरने—शायद तर जाने के लिये।

निःसन्देह उस समय राधा चौक गयी कि जब साहू जगजीवन लालने उसे फिर टंकोरा--'सुना, राधा देवी ! मैं अब अधिक समय नहीं दूंगा। तुम्हारे पति रामचरणको गये दो वर्षका समय हो गया। तबसे तुमने एक पैसा नहीं दिया। ब्याज भी नहीं।'

बात सुनकर, राधाने अपना थोटोंपर रखा हुआ मुंह उठाया। दस हजार रुपये कितने होते हैं, इसका विचार भी उसने नहीं किया। वरन, उसने तो अनुभव किया कि यह साहू मूर्ख है,—शायद दम्भी ! भला जिसके पास खानेको नहीं, दस पैसे नहीं, उसीसे इतने रुपये लेते हैं। निदान, उसने ऊपर आसमानकी ओर देखते हुए कह दिया—'लालाजी, आपको रुपया नहीं मिलेगा...नहीं मिल सकेगा।'

'नहीं मिलेगा,—क्यों !' बात सुनते ही, जगजीवन लालने कहा—रुपया तो देना पड़ेगा, राधा देवी !'—वह बोला तुम रामचरणकी पत्नी हो, घर और जमींनकी मालकिन; कानून कहता है, रुपया तुमसे ही लिया जा सकेगा।'

इतना सुनकर राधाके मनमें आया कि कह दे—तुम जाओ, चले जाओ, तुम ! किन्तु इतना न कहकर,अपितु मुसकराते हुए अपने सूखे दांत निकालकर उसने कहा—'देखते हैं आप, यहां रोटियों का सहारा नहीं।'

यही स्थल था कि जहांपर साहू जगजीवनलालके मनमें आया कि वह राधासे कहे, रुपया नहीं, ता न सही। जमीन तो हैं, यह मकान। इसे ही मेरे नाम कर दो। लेकिन जब यह भी उसके मुंह तक आकर रह गया, तो तब, जगजीवनके मनमें एक और विचार उठ आया। वह मन-ही-मन आकुल और बेचैन भी हो गया। एकाएक ही, मस्तिष्क में इतनी गर्मी आयी कि लगा स्नायुओंने पूरे बलके साथ उसके मन और मस्तिष्क को जकड़ लिया। उसी क्षण एकाएक जगजीवन लालके मुंहसे निकला—'इस जीवनका बोझ उठाने लिये और पूरी मंजिल तय करनेके लिये, सभी कुछ किया जाता है, राधा देवी ! मेरे सामने भी जब रुपयोंकी बात आती है, तो

सोचता हूं, हां, समस्या जटिल है। और देखता हूं, मेरी तरह तुम भी अकेली हो.... निस्सहाय हो, तुम !'

सम्भवतः राधाने बातका मर्म नहीं समझ पाया। इसीसे उसने मत नहीं दिया। केवल जगजीवन लालकी ओर अपनी भारी बनी हुई दृष्टिको उठा दिया।

जगजवीन लालने फिर कहा—'तुम सोच लो। तुम समझ लो।'— वह बोला 'यह रुपया क्या, मेरा सभी कुछ तुम्हारा बन सकता है राधा देवी! जीवन कट जायगा। इस शून्य और एकाकी जगजीवनको भी सहारा मिल जायगा।'

आश्चर्य था इतनी बात सुनकर भी राधाने उत्तर नहीं दिया। उसने अपनी आंखोंके उठे हुए पलकोंको भी नहीं फिराया। मानों उसने कुछ सुना ही नहीं। जितना सुना, वह उसके मस्तिष्कमें नहीं आ सका था।

और जगजीवनलालने अवसर पाकर जो बात कह दी, वह इतनी सरल और सुगम तो थी नहीं कि उसे वह कभी भी कह सकता था। किसी से भी। जब वही बात उसे राधासे कहनी थी, तो उसने पहिले उस सुन्दर और युवा नारी की विवशता वेदना और आत्म-पीड़ाको समझ लिया था। वह व्यावसायी था,—सूदखोर ! अतएव, जो सौदा करनेके लिये वह आगे बढ़ा उसके लाभ-अलाभ को समझ चुका था। उस समय राधा अकेली थी। दिन और रातके मध्यमें सन्ध्या आ गयी थी। दिन भरके थके पंछी अपने घोंसलोंमें विश्राम करने जा रहे थे। उनकी तरह, प्राणोंका छोटा-सा स्पन्दन अपनी छातीमें लिये जगजीवनका दिल धड़क रहा था। रात उसके सामने खड़ी थी। वह कितनी रहस्यमय थी, कितनी हर्ष और वेदनासे पूर्ण....

उसी समय, जगजीवन लालने कहा—'राधा रानी जीवन बड़ा है...जिन लहरों पर यह खड़ा है, उनका क्या भरोसा कि किस क्षण बीच मंझधारमें हमको डुबो दें....पार भी कर दें, ये लहरें !'

इतना सुनकर राधाने सांस भरी और छोड़ दी। उसने अपनी दृष्टि भी झुका दी।

जगजीवन बोला-'तुम जिस जीवन की दहलीजपर खड़ी हो, वहां अभी दिन की दोपहरी है... सांझकी शीतलता तो अभी दूर है. राधारानी ! रात अदृश्य ! भला यों कैसे रहोगी, कैसे काटोगी, भरी दोपहरीके ये दिन ! यहां आग ही तो है --इच्छा और अभिलाषाओंका खेल !'--उसने कहा तुम्हारे सामने तो जीविकाका भी प्रश्न है—मान और अपमानका प्रश्न !'

सुनते ही एकाएक राधाने अपना झुका हुआ सिर ऊपर उठाया। उसने रूखे और वेदनापूर्ण होंठोंसे मुसकरा कर कहा -'तुम यही कहोगे --मुझे यही सुनाओगे तुम !'

सुनकर, बरबस ही, जगजीवनने दांत निपोर दिये थे, राधा ! राधाने कहा तुम निर्लज्ज हो ! तुम कामी !

सुनतेही, मानों जगजीवनकी जिह्वापर ताला लग गया। उससे कुछ नहीं कहा गया।

राधा बोली-'लालाजी, जानती नहीं हूं, जब विपत्ति आती है, निर्बलता और असहाय जीवनकी थाती किसीको मिलती है, तो न सुनने योग्य बातें भी उसे सुनायी जाती है! ... हां, तुम्हारी कर्जदार जो ठहरी राधा, तो क्यों न कहो तुम कि राधा यौवनमयी है ..... राधा—'

बीचही में, एकाएक कठिन बनकर जगजीवनलालने कहा—तुम भ्रममें हो, राधा ! सच।

राधाने कहा-'ऐसाही भाग्य है, मेरा ! आप कहें। कहते जायें।'

जगजीवनलालने खड़े होकर कहा-मुझे दुःख है। जो कुछ कहा, उसके लिये मुझे वेदना है।'

सुनकर राधा मौन। जैसे अज्ञात।

जगजीवनलालने कहांसे लौट जानेकी इच्छा लेकर कहा 'सच, तुम क्षमा कर देना,—तुम भूल जाना, राधारानी !

उसी समय राधाके मनने कहा मूर्ख।

जगजीवनलाल लौट गया। राधा फिर अकेली रह गयी। उसी समय उसने जैसे अपने परही हंस कर कहा-आह ! यह भी एक समस्या है। राधा देवी है ... राधा रानी है ... राधा नार है।' वह बोली इस पुरुषने इसे पानेके लिये जो इन शब्दों का जाल रचा, आखिर क्यों ? किस लिये ? ' -उसने धुंधले हो आये अन्तरिक्ष की ओर देखते हुए कहा 'रुपकी जो दुर्गन्धि है,पाप और वासनाकी आग उसमें जल रही है, उसी में नारी भस्म होती है ... अन्तही कर जाती है, एक ही।

राधाके मनमें आया कि वह चुप क्यों रही। शांतही बैठी रही। इस जगजीवनका गला पकड़ लेती। उसमें जितनीभी हिंसा है क्रूरता और वर्बरता है, उस सभीको ले, जगजीवनका गला दाब देती। उसके मुंह पर थूक देती और कह देती-- 'कुत्ते ...'

किन्तु हाय ! उसी समय, राधाने देखा कि उसकी आंखें रो रही थी। वह अविरल बनकर गालों पर बह रही थीं। इतना अनुभव करतेही, उस नारीका, उस यौवनमयी वैधव्य सुन्दरीका वह क्रूर भाव ऐसे दब गया कि मानों उसका कोई अर्थही नहीं था। वह स्वयं हीन था,—अपनी विवशताओंका दास।

लेकिन इसके बाद ही, उसका एक मात्र बच्चा ममी जाग कर उठा और भोजनके लिये उसके पास आया. तो राधा ने अपने सभी विचारोंको छोड़ अपना ध्यान,—मन, बचन और कर्म—उस ममीकी ओर लगा दिया। घरमें अन्न नहीं था। थोड़ा-सा दलिया पड़ा था, वही बना दिया। लेकिन जब ममीने उस दलिये को झुंझलाकर अपने सामनेसे हटा दिया और रोना-सा मुंह बना लिया, तो सचमुच ही, राधाको यह अच्छा नहीं लगा कि उसका लड़का यों रोये, यों दुःखी मन लिये हुए भूखा रह जाये। इसका परिणाम यह हुआ कि राधाको बरबस ही, अपना भूत काल याद हो आया। किस प्रकारके घरमें वह पली, कैसे घरमें आई। इतना देख, जब उसने अपने वर्तमानकी

तुलना की, तो उसका रोंवा-रोंवा कांप गया। देर हो गयी कि ममी रोता हुआ, वहीं जमींन पर पड़ गया और फिर सो गया। वह ममी, जो अपनी पैदा होनेकी घड़ीमें रेशमके झूलनेमें झूला, दासियोंकी गोदमें खेला—वही राधाका पुत्र अब यों नंगी पृथ्वी पर पड़ा था। उस समय, राधाने देखा, तो बरबस ही, उसका मन चीख उठा और छटपटा गया। मानो उसने अपने अन्तरके परमेश्वरको साक्षी बना कर कहा—'मैं दुःखी हूं तो हूं, मेरा ममी तो सुख पाये, यह तो अवहेलना और उपेक्षा न पाये, मेरे प्रभो!

किन्तु प्रभो कहां था। वह नहीं सुनता था,—आह!

* * *

प्रातः होते ही, राधाके बुलावे पर जब जगजीवनलाल उसके पास आया, तो उसने देखा कि सच, राधा रात भर रोयी है। आंखें चढ़ी हैं। उसके सिरके सुन्दर केशों की लटें रूखी-रूखी-सी बन चारों ओर बिखर रही हैं। और जब जगजीवनने उसका बुलावा पाया, तो समझा कि राधा ने उसकी बातोंको मान लिया है। इसलिये उस पुरुषने और अधिक प्रलोभन देनेके लिये अपनी तिजोरीको खोला। वह सोने-चांदीकी मुद्राओंको देख, स्वयं भी चौंधिया गया। उसने बहुतसे रुपये अपनी जेबमें भर लिये। सोनेकी गिन्नियां भी।

राधाके पास जाते ही, उसने हर्षोन्मत्त बन कर कहा-क्यों राधा!

सुनते हो, राधा चौंक गयी। कुछ देर पूर्व जो उसके मनमें था, मानो वह बालूकी दीवारकी तरह ढह गया। उसके मनमें था कि वह स्वयं मरे, तो मरे, परन्तु अपने ममीको नहीं मरने देगी। अपने बच्चेको वह सुख और सुवासमय जीवन ही बिताता देख पायेगी। निदान, उसने जगजीवनके मनकी इच्छा पूरी करनेकी बात ले ली थी। इसीसे, उसने पड़ोसकी बुढ़ियाके द्वारा उसे बुलाया। किन्तु जैसे ही साहू जगजीवनलाल वहां आया, तो मानो उस साकार पुरुषको पाकर राधा कांप गयी। वह समझ गयी कि यही है कि जिसकी बातोंने उसे रात भर सोने नहीं दिया। उसे आकुल और व्यथापूर्ण बना दिया। वह पतिके बाद जिस बलके सहारे चल रही थी मानो वह छीन लिया। आत्महीन बना दिया, राधाको! लेकिन आश्चर्य था कि जगजीवन लालको देखते ही, उसका स्वत्व जाग गया। मानो प्रतिरोध तड़प गया। वह तुरन्त ही, दयार्द्र और वेदना-पूरित स्वरमें बोली—हां, लालाजी, बतायें तो, आप भी मेरा अन्त करेंगे ईश्वरने तो मुझे श्रापित किया ही, ऊपरसे नीचे फेंक दिया, तो आप भी—

जगजीवनलालने देखा कि राधाकी आंखोंकी वेदना और व्याकुलता जो एक जगह सन्निहित थी,वैसी उसने जीवन भर अन्यत्र नहीं देख पायी। जेबकी गिन्नियां कुरतेके पल्लेमें कर ली,—शायद राधाको दिखाने और देनेके लिये। लेकिन जब राधाने अकाल्पित बात कही,—वही रात वाली बातः—तो उसकी आत्मा जैसे स्वतः ही कांप गयी। उसमें निर्बलता आ गयी। जो बात मनमें थी, वह जिह्वाके नीचे ही दबी रह गयी।

उसी समय राधाने और अधिक अश्रुपूरित बन, जगजीवनकी ओर देखते हुए कहा—ईश्वरके आप भी हैं, आत्मा और धर्मको मानते हैं, बताइये आप, राधा क्या प्रेमिका है...नारी नहीं?... नहीं?

जगजीवनलालके मुंहसे बोल नहीं निकला। उसने जिन रुपयों और गिन्नियों को कुरतेमें ले रखा था, उन्हें वहीं छोड़ दिया। मानो विसर्जित कर दिया। वह कल्पनावादी या भावनावादी नहीं, परन्तु उस समय, राधाने जो कुछ कहा, वह मानो अधिक बड़ा था—उन रौप्य-मुद्राओं से श्रेष्ठ! इसलिये, जगजीवनने अपनी ओरसे कुछ नहीं कहा, वरन, वह तेजीके साथ अपने पैरोंको उठा कर उस घरसे विदा हो गया।

क्या कह कर सत्कार करूं मैं

—:☺*☺:—

मैं लघु लहरी, तुम मलय वात
मैं लता क्षीण, तुम हो निकुंज
मैं वीणा तुम हो अमर राग
मैं चिनगारी, तुम अग्नि पुंज
चिनगारीसे कैसे बोलो ज्वालाका शृंगार करूं मैं।
क्या कह कर सत्कार करूं मैं

मैं यौवन तुम उन्माद प्रिये
मैं क्षुद्र तारिका तुम निशिधन
मैं यमुना तट तुम शुचि मधुबन
मैं अवनि और तुम नील गगन
नभको बसुधा की किस निधिका बोलो कैसे उपहार करूं मैं।
क्या कह कर सत्कार करूं मैं

तुम क्षितिज और मैं श्रान्त पथिक
तुम भैरव रव मैं हूं बिहाग
तुम हो अशेष, मैं दुःखद अन्त
तुम मिलन गान मैं बिरह राग
मेरी वीणाके छिन्न तार बोलो कैसे झंकार करूं मैं।
क्या कह कर सत्कार करूं मैं।

—श्री आदित्य अग्निहोत्री

चीनी राष्ट्रवाद

श्री चन्द्र कुमार वर्मा, एम० ए०

चीनी सभ्यता भारतीय सभ्यताके ही समान प्राचीन तथा स्थायी है। चीन पर कई आक्रमण हुए, उसे तातार तथा मन्चू लोगोंने जीत लिया, परन्तु दोनों ही को चीनियोंने अपनेमें मिला लिया। सिद्ध तत्ववेत्ता कन्फ्यूशियसके समयसे मिश्री, फारसी, ग्रीक, तथा रोमन साम्राज्योंका उत्थान तथा पतन हो चुका, परन्तु चीन एक धीमी निरन्तर गतिसे विकास करता रहा है। भारत ही के समान इस देशमें भी सांस्कृतिक एकताके होते हुए भी राष्ट्रीयताके भाव बहुत हाल ही में उदय हुए हैं। और इन भावोंके जन्मदाता डाक्टर सनयात सेन थे।

प्राचीन समयसे चीनमें जीवनके राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक सभी प्रदेशोंमें सार्वभौमिक सिद्धान्त प्रचलित थे। चीनी महात्माओंने इनका प्रचार हजारों वर्ष पहले किया था और तबसे करते रहे हैं। सार्वभौमिक राज सत्ता तथा समाजके आदर्शको चीनीमें 'ता तुंग' कहते हैं। इसके अनुसार कन्फ्यूशियसका कहना है कि जब संसारमें 'सत्य' को सब लोग मान लेंगे तो संसारमें एक ही राष्ट्र होगा। डाक्टर सनयात सेन भी इस सिद्धान्तके भक्त थे और उन्होंने इसीका राजनैतिक अनुवाद करके चीनी लोगोंके सामने रखा। यदि संसारके लोगोंको एक राष्ट्र बनाना है तो आवश्यक है कि संसारके चौथाई मनुष्य जो एक देशमें रहते हैं, एक राष्ट्र बन कर रहें। इसी आदर्शको लेकर इस प्रसिद्ध नेताने मन्चू वंशके विरुद्ध होते हुए आंदोलनको एक प्रजातन्त्रवादी आंदोलनमें परिवर्तित कर दिया, और उसीका फल था कि फरवरी १९१२ में चीन एक प्रजातन्त्र देश हो गया।

सन् १९१२ से आज तक चीनके ऊपर कई विपत्तियां आयीं। नये प्रजातंत्र की कठिनाइयोंके सिवाय यूरोपीय महायुद्ध और उसके पश्चात जापानी साम्राज्यवाद का बढ़ता हुआ ज्वार-भाटा इस देशको निगलनेके लिये तैयार हो रहा था। उधर अमेरिका तथा ब्रिटेनका व्यापारिक साम्राज्यवाद चीनको आर्थिक उन्नतिकी ओर अग्रसर होनेसे रोके हुए था। सन् १९३७ में चीनको जापानके विरुद्ध ऐसे घोर माहायुद्धमें लीन होना पड़ा जिसने कि इस देशको नष्ट कर डाला। एक वृहत माप पर बम वर्षा, पुरुषों तथा स्त्रियोंके बलिदान, और शेष बचे हुए लोगोंके लिये बहुगुनी मंहगाई, बस्तुओंकी अल ता इत्यादि इस युद्धकी देन हैं। परन्तु चीनियोंने वीरतासे इन मुसीबतोंका सामना किया और अपने प्रजातंत्रवादी विधान पर कायम ही नहीं रहे बल्कि उसको आगे बढ़ाया। इस प्रकार चीन बीसवीं शताब्दी में एक आदर्श प्रजातंत्रवादी देश रहा है और डाक्टर सनयात सेनको इस विचार धाराके जन्मदाता होनेका श्रेय प्राप्त है।

डाक्टर सनकी 'सैन मिन चू' नामक पुस्तक प्रजातंत्रवादकी भागवत मानी जाती है। इस पुस्तकमें चीनके प्राचीन ज्ञान-तत्वसे लेकर आधुनिक समाजवादी सिद्धांत, और शोषण, दासत्व तथा अन्यायके विरोधका सामञ्जस्य है। इसके विचारोंमें मुख्य तीन प्रसिद्ध सिद्धांत हैं—राष्ट्रवाद, राजनैतिक प्रजातंत्रवाद तथा आर्थिक प्रजातंत्रवाद। इन तीनों सिद्धांतों के प्रवर्तनमें डाक्टर सनके ऊपर पाश्चात्य राजनैतिक साहित्यका काफी प्रभाव पड़ा था। इसमें सबसे प्रभावपूर्ण थे—मार्क्स का समाजवादी साहित्य अमेरिकन प्रजातंत्रका इतिहास, तथा फ्रेञ्च-क्रान्तिके मूल सिद्धांत। परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि डाक्टर सेनके विचार मौलिक नहीं थे। इतिहासमें कई स्थानों पर ऐसे अनूठे संयोगके उदाहरण पाये जाते हैं कि दो विचारकोंने एक दूसरेसे मिलते जुलते विचारोंको जन्म दिया यद्यपि दोनोंका कार्य यथार्थमें मौलिक रहा था। डाक्टर सन मार्क्सके 'मूल्य' 'वर्ग संघर्ष' तथा 'क्रान्ति द्वारा पूंजीवादके नाश' सम्बन्धी सिद्धांतोंसे संतुष्ट नहीं हुए। इसलिये किया जो कि चीनी स्वभाव, सामाजिक व्यवस्था तथा संस्कृतिके अनुकूल थे।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है डाक्टर सनकी पुस्तकमें तीन मुख्य सिद्धांत है। इनमें से पहला है राष्ट्रवाद जिससे कि चीनी क्रांतिके प्रारम्भ कालमें विदेशी साम्राज्यवादकी शोषक नीतिका विरोध किया गया था। अन्तर्राष्ट्रीय स्थलमें यह सिद्धांत सारे देशोंकी राजनैतिक तथा आर्थिक स्वतंत्रताका द्योतक था।

दूसरा मुख्य सिद्धांत है राजनैतिक प्रजातन्त्रवाद। प्रथम सीढ़ीको पार करके चीनी क्रांतिने परतन्त्रताकी बेड़ी तो तोड़ दीं। उसके पश्चात प्रश्न था चीनमें सर्व जन-सम्मतिके ऊपर निर्भर एक विधान बनाना। इसके लिये चीनियोंको 'स्वराज्य' के लिये शिक्षा देना अनिवार्य था। चीन में प्रजातंत्र शासन स्थापनके लिये डा० सनने एक विधान बनाया जिसमें जनता तथा सरकार दोनोंके अधिकारोंको स्पष्ट कर दिया। जनताके अधिकार हैं चुनाव, वापसी तथा जन-सम्मति, सरकारके अधिकार हैं नियम-विधान, नियम-पालन, न्याय, परीक्षा तथा शासन शक्ति। यह पांच शक्तियां चीनी केन्द्रीय सरकारके प्रमुख विभाग हैं।

तीसरा सिद्धांत है आर्थिक प्रजातंत्रवाद। इसके अनुसार सर्वसाधारणके लिये भोजन, वस्त्र तथा मकानकी व्यवस्था होनी चाहिये। भूमि तथा पूंजीका समान विभाजन इसका मुख्य आदर्श है। परन्तु डा० सन चीनके सामाजिक तथा आर्थिक जीवनमें क्रांतिकारी ढङ्गसे सुधार नहीं चाहते थे। वे धीरे धीरे सुधारका विकास चाहते थे। आधुनिक भाषामें डा० सनके इस सिद्धांतका मतलब है कि राष्ट्रको एक योजनाके अनुसार चलना चाहिये जिसमें बड़े माप वाले उद्योग, भूमि, तथा आने जानेके साधनोंका राष्ट्रीयकरण हो जाय और जहां सरकार जनसाधारणकी जीविकाकी जिम्मेदार हो।

इसमेंसे पहला लक्ष्य तो करीब करीब पूरा हो चुका है। जेनरलिसमों च्यांगके नेतृत्वमें चीनके एक स्वतंत्र राष्ट्र बननेमें

(शेष २६ वें पृष्ठ पर)

भारतीय पत्रकारिता

—*:*:*—

लेखक—श्री० एस० के० पाटिल

तुलनात्मक दृष्टिसे भारतवर्षमें पत्रकारिताका इतिहास बिलकुल नया है। हमारी पत्रकारिता अंग्रेजीसे शुरू हुई क्योंकि यही हमारे शासकोंकी भाषा थी और उन्होंने हमारे देशके लोकमतको अपने अनुकूल ढालनेके लिये विशेष ध्यान दिया। यही कारण है कि हमारे देशके सबसे पुराने पत्रोंमेंसे अधिकांश अंग्रेजीमें पाये जाते हैं। और वे भी प्रारम्भमें ईसाई मतके प्रचार करने और पादरियोंकी अन्य गतिविधियोंमें संलग्न रहे। अभी कुल ५० वर्ष ही बीते हैं कि अंग्रेजी पत्रकारोंने राजनीतिक समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना शुरू किया है। दूसरे मुल्कोंकी भांति इस मुल्क में भी समय-समय पर निकलने वाले पत्र-पत्रिकाओं और मासिक तथा साप्ताहिक पत्रोंसे पत्रकारिताका आरम्भ हुआ और धीरे-धीरे दैनिक पत्र भी निकलने लगे। आज भी हमारे कुछ सबसे अधिक लोकप्रिय दैनिक पत्र, चाहे वे अंग्रेजीके हों या भारतीय भाषाओंके, इङ्गलैण्ड और अमेरिकाके लोकप्रिय अखबारोंकी तुलना में बहुत नीचे उतरते हैं। अब तक भारत में शायद ही कोई ऐसा पत्र होगा जिसका वितरण एक लाख तक पहुंचा हो, जब कि अमेरिका और इङ्गलैण्डमें कई पत्रोंकी वितरण संख्या कई लाख है। कारण स्पष्ट हैं। यद्यपि जन-संख्याके दृष्टिकोण से हिन्दुस्तान संसारका दूसरा देश है, किंतु हमारी विभिन्न भाषाओंके होने और एक राष्ट्रभाषाके अभावमें हमारे पत्रों पर एकप्रकारका उल्टा असर होता है और जो दूसरी कमी है, वह है पत्र-पाठकों की। यद्यपि पाठकोंकी संख्या बढ़ानेमें हमने अथक परिश्रम किया है और अब उनकी संख्या २० प्रतिशत हो गयी है फिर भी उनमेंसे आधे ऐसे हैं जो पत्र नहीं पढ़ सकते। इसके अतिरिक्त समाचार-पत्रोंकी संख्या कम होनेके कारण था हमारे मध्यमें राष्ट्रीय जागृतिकी बहुत कमी। खुशीकी बात है कि यह कमी बहुत जल्दी दूर हो रही है और साथ ही साथ राष्ट्रीय भाषाका भी विकास हो रहा है। मुझे यह भी आशा है कि निरक्षरोंकी संख्या बहुत जल्द नहीं के बराबर हो जायगी। ज्यों ही ये कमियां दूर हो गयीं त्यों ही वह समय जल्द आ जायगा जब कि हमारे राष्ट्रीय पत्र हमारी राष्ट्र-भाषा में प्रकाशित होने लगेंगे और उनके पाठकोंकी संख्या लाखोंमें पहुंच जायगी। यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस समय को अधिकसे अधिक समीप ला दें और मुझे विश्वास है कि हमारा यह नया उत्साह और जागृति, जिसका उदय हमारी स्वतंत्रताके साथ हो गया है, इस उद्देश्य की पूर्ति अत्यन्त शीघ्र कर दिखायेगा। भारतीय भाषाओंके अन्य पत्रोंके सम्बन्धमें यदि मैं यह कहूं तो अतिशयोक्ति न होगी कि केवल कुछ इने-गिने पत्रोंको छोड़कर कुछ ही ऐसे पत्र हैं जिनको कि समाचार-पत्रका उचित नाम दिया जा सकता है। इसका क्या कारण है, यह बतानेकी कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। इतना कहना पर्याप्त होगा कि हम सबका कर्त्तव्य है कि हम सब इस प्रयत्नमें जुट जायं और उसे इतना प्रगतिशील बना दें कि वह उन्नति के शिखर पर शीघ्रसे शीघ्र पहुंच जाय। मेरी रायमें यह प्रत्येक भारतीय पत्रकार का परम कर्त्तव्य है। वे दिन लद गये जब कि भारतीय पत्रकार विदेशी पत्रकारोंकी तुलनामें अपनेको निम्न श्रेणीमें पाता था।

जहां तक भारतीय पत्रकारिताके गुणावगुणका प्रश्न है, वहां तक यह कहना होगा कि हमारे दोषों और त्रुटियोंका सबसे बड़ा कारण यह है कि शिक्षा तथा अभ्यास-सम्बन्धी समुचित साधन हमें प्राप्त नहीं हैं। पत्रकारिता भी अन्य कलाओंकी तरह एक कला है और उसका भी विकास अभ्यासके बिना नहीं हो सकता। पश्चिमी देशोंके विश्वविद्यालयोंमें छात्र-छात्राओंको इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कलाकी शिक्षा प्रदान करनेके लिये सब प्रकारकी सुविधाएं दी जाती हैं। अमेरिकामें पत्रकारिताके कई शिक्षालय बहुत पुराने हैं, उनको खुले हुए सौ या सौसे भी अधिक वर्ष बीत चुके हैं। लगभग ३० वर्षों से इंगलैण्डके विश्वविद्यालयोंमें भी पत्रकारिताकी शिक्षा दी जाती है। हमारे देशके कुछ विश्वविद्यालयोंने भले ही गत कुछ वर्षोंसे इनकी शिक्षा देना प्रारम्भ किया हो, किन्तु यह तो कहना ही होगा कि उन्होंने अभी तक इस ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया है। आवश्यकता इस बात की है कि हमारे विश्वविद्यालय इस ओर अधिकाधिक ध्यान दें। यही बात समाचार पत्रोंके लिये भी ठीक-ठीक लागू होती है। समाचार पत्रोंमें भी जो लोग पत्रकारिता सीखने जाते हैं, उन्हें अनुभवके द्वारा योग्यता हासिल करनेके लिये पर्याप्त सुविधाएं नहीं दी जाती हैं। आखिर जबतक विश्वविद्यालय और समाचार पत्र दोनों ही पत्रकारिताको सर्वप्रिय बनानेके लिये सर्वांगीन प्रयत्न न करें, इसका स्तर कैसे ऊंचा उठ सकता है? आज हमारे शा के पत्रकारोंमें वह कला (टेकनीक) ही विद्यमान नहीं है, जिस पर पत्रकारिताकी सफलता निर्भर करती है। मुझे यकीन है कि यह त्रुटि शीघ्रातिशीघ्र दूर की जायगी।

दूसरी त्रुटि, जिसके कारण भारतीय पत्रकारिताकी प्रगति अवरुद्ध है, वह यह है कि पत्रकारिता व्यक्तिगत भावनाओंके धरातलसे ऊपर उठनेमें असमर्थ है। यह बात मैं आपको और स्पष्ट कर दूं। भारत में देखते हैं कि समाचार पत्रोंके संपादक तथा मालिक (Bosses) इस कार्यमें इस ढंगसे दखल देते हैं और इस पर इतना हामी हो जाते हैं कि सार्वजनिक जीवन ही दूषित हो जाता है। हमारे अधिकांश पत्रोंमें व्यक्तिवादका बोल बाला है! मेरी रायमें पत्रकारिताको व्यक्तिवादके धरातलसे उठ कर सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिये। अक्सर हम देखते हैं कि व्यक्तिगत धारणाओंकी बुनियाद पर वस्तु

स्थितिको तोड़-मरोड़ कर प्रकाशित किया जाता है। इसके लिये या तो सम्पादक जिम्मेदार है या सम्पादकीय लेखक या मालिक। यही कारण है कि हमारे समाचार पत्रोंका स्तर बहुत नीचे है। पत्रकारिताके सम्मान और उसकी समृद्धिको कायम रखनेके लिये आवश्यकता इस बात की है कि इसे व्यक्तिवादसे परे रख कर सिद्धांतों पर आधारित किया जाय!

इस कलाके सम्मानको बढ़ाना हमारा कर्तव्य है आखिर इसे सम्मानित अध्यवसाय कहनेसे क्या लाभ, जब कि स्वयं इसमें लगे हुए लोग, सब प्रकारके सम्मानों को असंभव बना देने वाली स्थितिमें पड़े हों? इस कलाके संचालकोंको विचार और कार्यकी उचित स्वतन्त्रता अवश्य मिलनी चाहिये, लेकिन यह सब तबतक संभव नहीं हैं जबतक कि पत्रकारोंके लिये उचित आर्थिक सुरक्षा और उत्तम ढंगसे जीवन निर्वाह करने योग्य वेतन आदि की व्यवस्था न हो। आम तौर पर इस देशमें पत्रकारोंका वेतन बहुत कम होता है। गत कुछ वर्षों से कुछ अंग्रेजी दैनिक पत्रोंमें यह कमी दूर की जा रही है किन्तु अन्य पत्रोंकी स्थिति आज भी ज्यों की त्यों बनी है। आवश्यकता है कि पत्रकारिताकी प्रतिनिधि संस्थाएं इस प्रश्नकी ओर उचित ध्यान देकर वेतन आदिका स्टण्डर्ड निर्धारित कर दें और उसे कार्यान्वित करें। पत्रकारिता देशके किसी भी ऊंचेसे ऊंचे अध्यवसायसे निम्न कोटि का नहीं है। उसे आर्थिक सुरक्षा मिलनी ही चाहिये।

मुद्रण और पत्रकारिता परस्पर सहयोगी कलाएं हैं। मुद्रण कला (Technique of Printing) अविकसित रहने से पत्रकारिता दोषपूर्ण रहेगी ही। कुछ अपवादोंको छोड़ कर अधिकांश भारतीय समाचार-पत्रोंकी सजावट (Get up) बहुत ही निम्न कोटिकी होती है। दोषपूर्ण संपादनके साथ ही उनका मुद्रण भी भद्दा होता है। पत्रकारिताकी अन्य रीतियां (Processes) भी अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में हैं। इस सम्बन्धमें, भारतीय समाचार-पत्रोंको अमेरिकन पत्र पत्रिकाओंसे बहुत कुछ सीखना है। अमेरिकन पत्र-पत्रिकाओंकी सजावट सबसे ऊंचे दर्जेकी होती है। कोई भी व्यक्ति इन्हें देखते ही आकर्षित हो जाता है और जबतक उठा कर उसे अच्छी तरह देख न ले उससे रहा नहीं जाता। पत्रकी अन्य सामग्रियोंके पढ़नेसे पूर्व यह आकर्षण उत्पन्न होना आवश्यक है। हमें बराबर उस औसत पत्र-पाठकको अपने ध्यानमें रखना चाहिये जो न अधिक पढ़ा-लिखा होता है और नहीं राजनीतिक मनोवृत्तिका होता है। इस देशमें कुछ पत्र पत्रिकाएं ऐसी हैं जो अमेरिकाके स्तर पर पहुंचनेके लिये सदप्रयत्न कर रही हैं। मैं आशा करता हूं कि दूसरी पत्र-पत्रिकाएं भी ऐसा ही करेंगी।

एक और बात, जिस ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, वह यह है कि पत्रकारिता अपनेको दलगत मतभेदों और झगड़ों (factions and squabbles) से दूर रखे। ये दोनों बात दलगत राजनीतिके अविच्छेद्य अंग है। किसी भी समाचार पत्रका यह हक है कि जब सिद्धांतोंको लेकर जनमतको तैयार और उसे मार्ग प्रदर्शन करे। उसका यह अर्थ नहीं कि वे दलगत झगड़ोंमें फंस जांय। अधिकारों और सुविधाओंकी अपेक्षा उसके कर्तव्य और उसकी जिम्मेदारियां कहीं अधिक हैं। पत्रकार चाहे तो अपने देशकी किस्मतको बना दे और चाहे तो बिगाड़ दे। उसमें निर्माण करनेकी शक्ति है और विध्वंसकी भी उनकी जिम्मेदारी बहुत बड़ी है और है पवित्र जनता जनार्दन के हितमें उसे निभाना उनका कर्तव्य है।

आ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलनके पत्रकार परिषदके अध्यक्ष-पद दिया गया भाषण।

—०—

(२४ वें पृष्ठ का शेषांश)

कुछ भी कमी नहीं है। केवल एक प्रश्न बचा है। जब तक कम्यूनिस्ट विरोधका अन्त नहीं होता है चीन शांतिपूर्वक उन्नति नहीं कर सकता। दूसरा लक्ष्य अभी अधूरा ही है। कुओमिण्टाङ्ग पार्टी चीनियोंकी संरक्षक है। चीनमें अभी प्रजातंत्रवादका पूरी तौरसे प्रादुर्भाव नहीं हो पाया है और जब तक यह नहीं होता है तब तक कुओमिण्टाङ्ग चीनी शासनकी बागडोर अपने हाथमें रखेगी। तीसरे लक्ष्यसे चीनमें कम्यूनिस्ट प्रश्न पैदा हुआ है। डा० सन और कम्यूनिस्टों का लक्ष्य एक ही है अर्थात आर्थिक समानता। परन्तु दोनोंके ढङ्गोंमें भीषण अन्तर है। इसी कारण चीन आपसी युद्ध में बुरी तरह फंसा हुआ है और अपने इस लक्ष्यसे काफी दूर है। भाग्य ही बता सकता है कि चीन कब इस युद्धसे मुक्त होकर उन लक्ष्यों तक पहुंचेगा जो कि चालीस वर्ष पहले डा० सनने अपनी महान पुस्तकमें निर्धारित किये थे।

जिन पुरुषोंकी बचपनमें बुरे रास्ते पर और समझ आने पर भी विलास में आसक्ति रखनेसे नसोंमें नर्बलता आ गई हो जिनके लिये सर्वश्रेष्ठ औषधि खानेके लिये विचार में न हो। उनके लिये उत्तम से उत्तम दवा केवल मालिस द्वारा प्रयोगिता यह मलहम है। कारण कि इसके एकमात्र प्रयोग करने से नसें मजबूत व सख्त अवश्य हो जाती हैं। युवक, अधेड़ और वृद्ध सबको ही इससे फायदा पहुंचता है। एक शीशीका मूल्य ५) वी० पी० खर्च अलग।

चाइनोज मेडिकल स्टोर स्थापना १९३०

हेड आफिस- २८ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

शाखायें—चार रास्ता, अहमदाबाद १२, डलहौसी स्क्वायर कलकत्ता, नया बाजार, दिल्ली

[illegible] मन्दी

लेखक—श्रीकृष्ण कुमार गुप्त, विशारद

गत वर्षों में भारतीय फिल्म व्यवसाय ने अपने जीवनके स्वर्णिम दिवस देखे। युद्ध कालीन समय प्रत्येक मनुष्यके लिये अनुकूल था। पूंजीकी कमी न होनेके कारण स्टूडिओंकी संख्या देखते देखते चौगुनी हो गयी और अच्छे बुरे चित्रोंका विद्युत गतिसे निर्माण हुआ। महायुद्धके शेष होते ही परिस्थितियोंमें परिवर्तन हुआ है और कोई आश्चर्य नहीं कि आज फिल्म निर्माताओं, निर्देशकों वितरकों और प्रदर्शकों सभी पर मन्दीका भूत सवार प्रतीत होता है।

नूरजहां

फिल्म क्षेत्रोंमें मन्दीका सबसे प्रथम और महत्वपूर्ण कारण स्वयं दर्शकोंकी हलकी जेबें हैं। युद्धसे सम्बन्धित नौकरियों, उद्यमों तथा ठेकोंका प्रायः अन्त हो गया है और जो कुछ बचे हैं वे भी सम्भव है बहुत शीघ्र लोप हो जायेंगे। दर्शक गण ही फिल्म देशोंकी समृद्धि करनेमें सहायक होते हैं। जब वे ही बेकार होंगे तो पूंजीपति निर्माताओंकी अपार आशाएं कैसे पूर्ण हो सकती हैं। यह स्मरण रखना आवश्यक है कि सिनेमा मनोरंजनका साधन है और देश और कालके अनुसार ही उसका मूल्य होता है। भारत जैसे निर्धन देशके लिये एक रूपये ५ आने और २ रू० १० आने वाला वर्तमान सिनेमा या तो अनुपयुक्त है अथवा अति मंहगा मनोरंजन।

फिल्मोंकी बेतुकी कहानियां, अस्वाभाविक चरित्र चित्रण और अयोग्य निर्देशण एक बड़े अंश तक वर्तमान परिस्थितके लिये उत्तरदायी हैं। जिसको देखो वही कहानी लेखक बन बैठा है। चाहें जिसने निर्देशकका रूप धर लिया है। कहीं कहीं तो एक ही मनुष्यने निर्माता निर्देशक और कलाकार तीनो का बाना पहन लिया है। जब ऐसा हो तो उन्नति की बात सब प्रकारसे असंगत है। मन्दी के लिये आकाशके तारोंको कदापि दोषी नहीं ठहराया जा सकता। निर्बल भाग्यके सहारे रहता है। और बलवानके साथ साथ भाग्य चलता है। हम अपने रोगको जिस प्रकार दूसरोंको नहीं दे सकते उसी प्रकार अपने ऊपरसे अपने दायित्वको भी नहीं हटा सकते।

साम्प्रदायिक दंगों पर मन्दीके लिये अवश्य दायित्व है। दंगोंने देशकी सारी सामाजिक व्यवस्था ही उलट दी है। आर्थिक व्यवस्थाको भी भारी ठेस पहुंचाई है। पूंजीकी कमीको मन्दीका कारण कहना भूल है। यदि इस समय और अधिक पूंजी उपलब्ध होगी तो और अधिक चित्रोंका निर्माण होगा और अधिक मन्दी आयेगी।

अत्यधिक फिल्म निर्माण, वितरणका गलत ढंग और प्रदर्शकोंकी चोर बाजारी मन्दीके अन्य कारण हैं। कम कम्पनियों

मेहताब

है। तब व्यवसाय उन्नत था। वही अब भी हमारा नारा होना चाहिये। प्रदर्शकों की चोर बाजारी फिल्मोंका मूल्य बढ़ा देती हैं और प्रदर्शित फिल्में सस्ते दर पर दिखाना कठिन हो जाता है। इस चोर बाजारीको तत्काल दूर करनेकी आवश्यकता है।

अन्तिम कारण विज्ञापनकी कमी है। हर कोई मानेगा कि फिल्मोंकी उन्नति और लोक प्रियता विज्ञान पर निर्भर रही है और रहेगी। परन्तु यह भी सत्य है कि विज्ञापन आवश्यक वस्तुका ही सफल हो सकता है। मंहगे सिनेमाका बड़े नाम पर भी विज्ञापन पूर्ण रूपेण असफल रहेगा। यदि सिनेमाके टिकट दरोंको

मलिना

पूर्ववत नहीं किया गया तो रही सही आशा भी जाती रहेगी। फिल्म प्रदर्शक आजकल अवश्य विज्ञापन पर जोर देते हैं। हो सकता है दर्शक यह नहीं जानते कि किन कम्पनियोंमें कौनसे फिल्म बन रहे हैं। यह इसलिये है कि अब पहलेकी भांति थोड़ी सी कम्पनियां नहीं और वे सालमें एक दो चित्र न बनाकर महीनेवारी नये चित्र भेंट करती हैं।

निष्कर्ष यह है कि भारतीय पृष्ठ भूमिमें सिनेमाकी यह मन्दी मन्दी नहीं है। यह हमारे सिने जगतका वास्तविक रूप व्यक्त करती है। इससे अधिककी आशा करना दुराशा है। हमने हाल ही में स्वतंत्रता प्राप्त की है। अब हमारी दैनिक आय

बढ़ेगी और उसीके साथ साथ हमारे फिल्म व्यवसायकी उन्नति होगी।

मन्दीके रूप एवं कारणों पर दृष्टिपात करनेके पश्चात मन्दीके प्रभाव पर अकिंध विचार करना अनावश्यक है। युद्ध कालमें सबकी आय बढ़ी थी। जैसा ऊपर कहा गया है फिल्म व्यवसाय भी खूब चला। अभिनेता अभिनेत्रियोंकी आयमें भी वृद्धि हो गयी थी अब स्वतः वह खूब चली जा रही है। जब फिल्म क्षेत्रकी प्रस्तुत मंदी केवल युद्धसे पूर्वकी यथावत अवस्था है हमें उचित है हम मंदीको दूर करनेके उपायोंको फिल्म व्यवसायकी उन्नतिके उपाय कहें। फिल्म उद्योगकी काया पलट होना अत्यावश्यक है। गंदे और निरर्थक चित्र जाति देश और समाजके लिये हानिकारक है जो भी चित्र हमारे यहां बनें आदर्शकी छाप लिये रहने चाहिये। ऐतिहासिक चित्र सही इतिहास हमारे सम्मुख रखें सामाजिक चित्र हमारे समाजकी अनूठी, झांकी हों, जीवन चरित्र संबन्धी चित्र चरित्रोंकी विशेषतायें और उनसे मिलने वाली शिक्षाएं स्पष्ट दें। अन्य व्यर्थ चित्रोंका निर्माणही न हो।

"नये चेहरों" और" पुराने चेहरोंके पचड़ेमें पड़ना निरर्थक है। न नये चेहरोंका मांग और पुराने चेहरोंका बहिष्कार हमें कहीं ले जायगा। सहगल मर गया किन्तु अंत तक उसकी ख्याति कम होनेके स्थान पर बढ़ती ही गयी और सहगल आज मर कर भी अमर है। उमा शशि, कानन, जमुना, शोभना समथ के पुराने चेहरे विचित्र प्रतिमा रखते हैं जो दर्शकोंको अनायास अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। अधिक उदाहरण न देकर इतनाही कहना पर्याप्त होगा कि नये चेहरोंका अवसर दिया जाय, किंतु पुरानें चेहरोंकी उपेक्षा न की जाय। अच्छी वस्तु और अच्छा कार्य हमें सदैव भाता है। पुराने चेहरे नये चेहरोंकी अपेक्षा अपने अनुभवके आधार पर जो उनसे कहा जाय उससे भी अधिक और सुंदर काम करते हैं

फिल्म निर्माण फिल्म वितरण और फिल्म प्रदर्शन भारतीय विशेषताओंको ध्यानमें रख कर होना उचित है। हमारी पुरातन परम्पराका सर्वत्र पालन होना चाहिये। कलाकारोंको बहुत ऊंचे वेतन देना फिल्म व्यवसायकी कब्र खोदना है। जब सरकारी मंत्रीगण १५००) प्रति मास ले रहे हैं, कलाकारोंको असीमित और असंख्य धन राशि देना कैसे सहन किया जा सकता है। निर्माण वितरण और प्रदर्शनका खर्च कम होनेका अर्थ होगा पूंजी पर आय परन्तु सिनेमाका निश्चय प्रचार और उसका उज्ज्वल भविष्य। राष्ट्रीय हितोंको ध्यानमें रख कर ही हमारी सिने समस्याका हल हो सकेगा।

प्रभावशाली व्यक्ति

जीलेट से हजामत बनाते हैं।

कोई भी प्रभावशाली व्यक्ति सुव्यवस्थित आकृति की विश्वासपात्रता स्वीकार नहीं कर सकता यदि वह अच्छी तरह हजामत बनाई हुई नहीं हो। प्रभावशाली व्यक्ति जिलेट से ही हजामत बनाते हैं क्योंकि उन्हें अनुभव द्वारा ज्ञात हो गया है कि उनके पैसे के पूरे मूल्य के अनुसार जिलेट ही उन्हें सर्वश्रेष्ठ हजामत देते हैं।

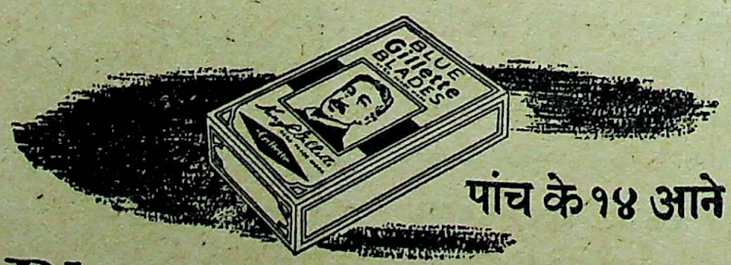

पांच के १४ आने

Blue Gillette Blades

ब्ल्यू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये!

बहालपुरके गैर-मुस्लिम

आ मुझे तीन बातें कहनी हैं बहालपुरसे लोग आये हैं। वे परेशानीमें हैं। वे कहते हैं कि वहां जितने हिन्दू सिख हैं, उन्हें बुला लो नहीं तो वे कट जायेंगे। दो आदमी आज मेरे पास आये थे। उनहोंने कहा कि 'अगर उनके लिये कुछ नहीं होगा, तो गवर्नर जेनरलके मकानके सामने भूख-हड़ताल करेंगे।" ऐसा करनेसे अगर बहावलपुरके हिन्दू-सिख जिन्दा रह सकें तो अलग बात है। पर आज गवर्नर जेनरलमें बल नहीं है। उनकी पीठपर आज ब्रिटिश सल्तनतका बल नहीं है। हमारे बलसे वह खड़े रहते हैं। आप आन्दोलन भले करें। लेकिन ऐसा उपवास करनेसे कोई फायदा नहीं है। बहावलपुरके नवाब साहबसे मैं कहूंगा कि वहांके हिन्दू-सिख जहां चाहें वहां उन्हें भेज दिया जाय, नहीं तो उनके धर्मका पतन है। नवाब साहबके होते हुए वहां क्या क्या हो गया, उसमें मैं नहीं जाना चाहता। बहावलपुर बना तो है सिखोंसे। वे लोग आलसी नहीं हैं। मगर बहावलपुरमें काफी लोग मारे गये, काफी काटे गये, और जो बाकी रहे हैं, वे भी आरामसे नहीं हैं, तो वहां कैसे रह सकते हैं? नवाब साहब को ऐलान करना चाहिये कि जो वहां हैं, उनको भेजनेका प्रबन्ध जब तक नहीं होता, तबतक हम उनकी पूरी रक्षा करेंगे। उनका बालभी बांका नहीं होगा। उनके रोटी कपड़ोंका इन्तजाममी कर देना चाहिये। जो हुआ सो हुआ वह पागलपन था। लेकिन भविष्यको संभालें।

पाकिस्तानके शरणार्थी

स्टेट्समेनमें छपा है कि लाहौरमें जो दुःखी लोग शरणार्थियोंके कैंपमें पड़े हैं, वे बहुतही बुरी हालतमें हैं। गन्दगीकी वजह से वहां कालरा (हैजा) और शीतला जैसे रोग फैले हुए हैं। सर्दीमें वे आकाशके नीचे पड़े हैं। वे खुलेमें भले रहें, मगर उनके पास पानीसे बचनेका, ओढ़नेका, खानेका सामानतो होनाही चाहिये। वह नहीं है तो, उन्हें मरनाही है। सियालकोट मङ्गी बुलाते हैं। मगर वहांके स्वास्थ्य-अफसर कहते हैं कि मैं लाचार बन गया हूं। मैं पूरा काम उनसे ले नहीं सकता। पाकिस्तानमें से या यहांसे लोग जान बचाने को भागे हैं तो जहां गये हैं, वहां उन्हें कुछभी सुख तो हो। पाकिस्तानकी हुकूमत के अफसरोंको यह देखना है कि दुःखी लोगोंकी यह कहनाही नहीं चाहिये कि हमें सफाई करनेवाले दो खाना पकाने वाले दो। अगर सभी कामोंके लिये नौकर मिलेंगे तब वे क्या काम करेंगे? उसमें उनका पतन है। उन्हें शरणार्थियोंको दृढ़तासे कहना चाहिये कि अपना काम आप करो। कप साफ रखनेका काम उनका है। शरणार्थियोंको उद्यम करनाही चाहिये। शराफत रहना चाहिये। पाकिस्तानके मुसलमान शरणार्थियोंके बारेमें इतनी चिन्ता प्रकट करनेके लिये आप मुझे माफ करेंगे। मैं उनमें और यूनियनके हिंदू सिख शरणार्थियोंमें कोई फर्क नहीं कर सकता।

गजनवीको फिरसे बुलाना

एक उर्दू मैगजीनमें आज मैंने एक शेर देखा। वह झे चुभा। उसमें कहाहै — 'आज तो सबकी जबान पर सोमनाथ हैं। जूनागढ़ वगैरका बदला लेनेके लिये गजनी से किसी नये गजनवी को आना होगा।' यह बहुत बुरा है। यूनियनकी किसी मुसलमानकी कलमसे ऐसीचीज नहीं निकलनी चाहिये। एक तरफसे मित्रभाव और वफादारीकी बातें और दूसरी तरफसे और यह? मैं तो यहां यूनियनके मुसलमानोंको हिफाजतके लिये जीवनकी बाजी लगाकर बैठा हूं। मैं तो यही करूंगा, क्योंकि मुझे बुराईका बदला भलाईसे देना है। आप लोगोंको यह सुनाया, ताकि आप ऐसी चीजोंसे बहक न जायें। गजनवी था। इस्लाममें जो बुराइयां हुई हो उन्हें मुसलमानोंको समझना और कबूल करना चाहिये। काश्मीर, पटियाला वगैराका हिन्दू सिख राजाओंको उनके यहां जो बुराई हुई हो उसे कबूल कर लेना चाहिये। उसमें कोई शर्म नहीं। गुनाह कबूल करने से वह हलका होता है। यूनियन में बैठकर मुसलमान अगर लड़केको सिखावें कि गजनवीको आना है तो उसका मतलब यह हुआ कि हिन्दुस्तानको और हिन्दुओं को खा जाओ। जिसे कोई बर्दाश्त करने वाला नहीं। दोनों आपसमें मिलकर चाहें कुछभी करलें। अगर यह शरारतभरा शेर एक महत्वपूर्ण मैगजीनमें न छपा होता, तो मैं उसका जिक्र भी न करता।

क्या वहा अहिंसा थी?

मेरे पास हमेशा सिख भाई आते रहते हैं। मैं अखबारोंमेंसे थोड़ा पढ़ लेता हूं। मिलने आनेवाले लोग भी मुझे सुनाते रहते हैं। वे लोग कहते हैं कि मैं तो सिखोंका दुश्मन बन गया हूं। उन्होंने इसकी परवाह न की होती, अगर मेरी बात हिन्दुस्तानके बाहर कुछ-न कुछ वजन न रखती। दुनिया मानती है कि हिन्दने अहिंसाके, शान्तिके जरिये आजादी ली है। अगर ऐसा ही होता, तो मुझे बहुत अच्छा लगता। मगर पंगु और नामर्दोंसे अहिंसा चल नहीं सकती। यह पंगुपन और गूंगापन शारीरिक नहीं। शरीरसे पंगु बननेवाले तो ईश्वरकी मददसे अहिंसापर खड़े रह सकते है। एक बच्चा भी अहिंसा पर खड़ा रह सकता है—जैसे प्रह्लाद। ऐसा हुआ या नहीं। मैं नहीं जानता। पर कहानी बन गयी है कि प्रह्लादने अपने पिताको साफ कह दिया था कि मेरी कलम से रामके सिवा कुछ निकलेगा ही नहीं। मेरे सामने १२ बरसका बच्चा प्रह्लाद आज भी खड़ा है। मगर जो आदमी आत्मासे लूला है, पंगु है, अंधा है, वह अहिंसाको समझ नहीं सकता। अहिंसा का पालन कर नहीं सकता। मैंने गलती से यह सोच लिया था कि हिन्दुस्तानकी आजादीकी लड़ाई अहिंसक लड़ाई थी। लेकिन पिछली घटनाओंने मेरी आंखें खोल दी हैं कि हमारी अहिंसा असलमें

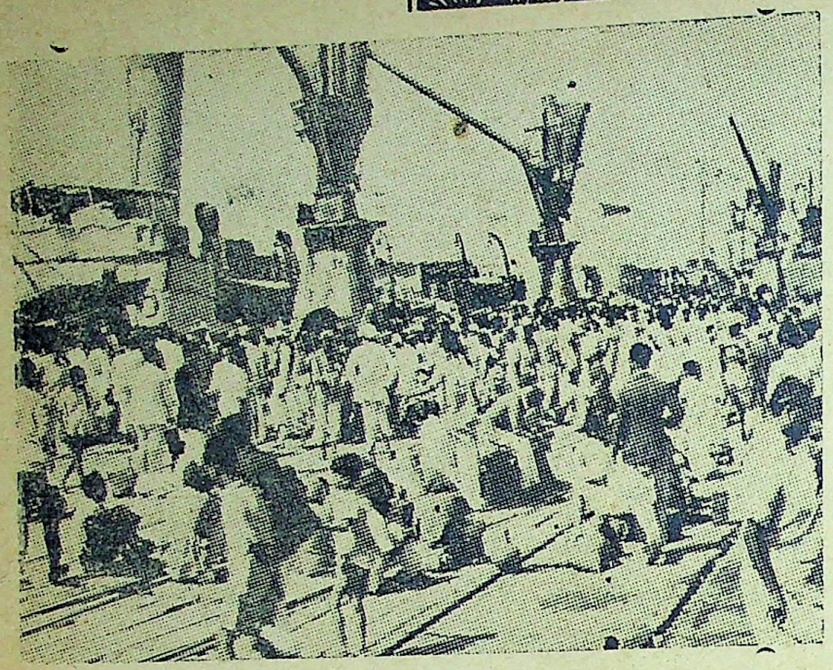

पाकिस्तानसे भारत प्रस्थान करनेवाले कराची बन्दरगाहपर समवेत शरणार्थी

कमजोरोंका मन्द विरोध था। अगर हिन्दुस्तानके लोग सचमुच बहादुरीसे अहिंसाका पालन करते, तो वे उनकी हिंसा कभी नहीं करते।

काश्मीरके सच्चे महाराजा शेख अब्दुल्ला हैं

काश्मीरमें जो कुछ हो रहा है, उसके बारेमें थोड़ा बहुत मुझे और आपको मालूम है। एक चीजकी तरफ मैं आपका ध्यान खींचना चाहता हूं। अखबारोंमें आ गया है कि यूनियन और पाकिस्तान काश्मीरके बारेमें फैसला करनेका किसीको निमंत्रण दें। यह पंच नियुक्त करनेकी बात हुई। कहांतक ऐसा चलेगा कि पाकिस्तान और यूनियन आपसमें फैसला कर ही नहीं सकते? कहांतक हम आपसमें लड़ते रहेंगे? काश्मीर और जम्मू एक है। वहां मुसलमानोंकी अधिकता है। काश्मीरके दो टुकड़े करें, तो यह टुकड़े करनेकी बात कहां जाकर रुकेगी? हिन्दुस्तानके दो टुकड़े हुए, इतना बस है। बससे ज्यादा है। हिन्दुस्तानको ईश्वरने एक बनाया, उसके टुकड़े मनुष्य कैसे कर सकता था? पर वह हुआ। लीग और कांग्रेस अलग अलग कारणोंसे उसमें राजी हुईं। आज काश्मीरके टुकड़े कर, तो दूसरी रियासतोंके क्यों नहीं?

काश्मीरमें झगड़ा क्यों हुआ? कहा जाता था कि हमला करनेवाले डाकू हैं, लुटेरे हैं। वे बाहरसे आते हैं। रेडर्स हैं। मगर जैसे जैसे वक्त बीतता है, वैसे वैसे पता चला है कि ऐसा नहीं है। उर्दूके कुछ अखबार यहां आ जाते हैं। मैं थोड़ा बहुत खुद पढ़ सकता हूं। कुछ मुझे आस पासवाले सुना देते हैं। आज 'जमींदार' नामके अखबारोंमेंसे मुझे थोड़ा सुनाया गया। 'जमीन्दार' के एडीटरको मैं पहचानता हूं। उनकी जबानपर कभी कलाम नहीं रही। अब तो उन्होंने खुल्लमखुल्ला निमंत्रण दिया है कि सब मुसलमान काश्मीरपर हमला करनेके लिये भर्ती हों। डोगरोंको, सिखोंको, सबको उन्होंने गालियां दी हैं। काश्मीरकी लड़ाईको जिहाद कहा है। मगर जिहादमें तो मर्यादा होती है—संयम होता है। यहां तो कुछ भी नहीं। जो कुछ चल रहा है, वह होना नहीं चाहिये। क्या वह यह चाहते हैं कि हिन्दू, सिख और मुसलमान हमेशा अलग ही रहें? मुसलमान अगर हिन्दुओं और सिखोंको मारें काटें, फिर भी हमारा धर्म क्या है? वह मैं आपको रोज बतलाता हूं।

"NACET"
"नेसेट"
अपने मूल्य में संसार का सर्वोत्तम ब्लेड

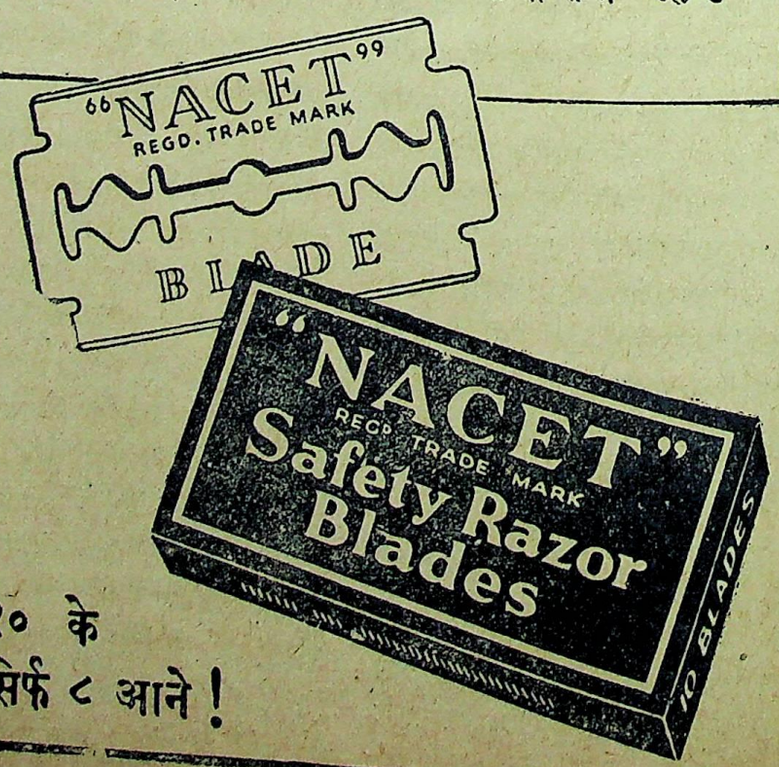

१० के
सिर्फ ८ आने!

उलझन

ले०—श्री श्री निवास साहित्यालङ्कार

साधना, कल्पना, कुमार इन तीनोंका आपसमें परिचय कैसे हुआ और परिचयके कुछ क्षणोंके बाद ही वे बच्चोंके समान इतने कैसे हिल-मिल गये यह एक बड़ा रहस्य था।

साधना अपने स्वभावके अनुसार धीर गम्भीर तथा मृदु-मधुर भाषिणी थी। उसका दावा था कि पुरुष कुमार, नारी कल्पनाको समझनेमें गलती कर रहा है। भले ही कुमार कवि, लेखक, एवं मनोविज्ञानका पण्डित क्यों न हो पर उसके पास यह शक्ति कहां कि वह नारीके दिखाने तथा खानेके दांत अलग-अलग हुआ करते हैं इस रहस्यको समझ सके। कल्पना साधनाकी बाल-संगिनी थी और कुमार....! साधनाके हृदयमें कल्पनाके प्रति अपार स्नेह एवं कुमारके प्रति(शायद) श्रद्धा थी, आदर था। कमसे-कम सीधा-सादा कुमार उन दोनोंकी बातें सुनकर इसी बातका अनुमान किया करता था। हां अनुमान ही। क्योंकि कुमार पुरुष है न!

कल्पना मानसिक गुत्थियोंकी एक उलझन है। साधना जितनी शांत एवं सरल स्वभाव की थी कल्पना उतनी ही चञ्चल एवं हठी। कभी कभी भावावेशमें वह ऐसी ही बातें करती थी कि जिन्हें छिपानेमें अपनेको असमर्थ पाती थी। वह अपनी उत्कण्ठाको शायद ही कभी रोक पाती थी। जब कभी उसके किसी रहस्य का भेद खुल जाता था तब वह शानसे यह कहनेमें जरा भी नहीं हिचकिचाती थी कि उसके मनकी बातें (राधा-कृष्ण ही जाने क्या थी) दुनियांमें कोई-यानी कोई भी समझ नहीं सकते। ऐसे अवसर पर उसकी आंखो में ऐसी आभा और शरीर में ऐसी चमक आती थी कि मानो विजिगीषु प्रवृत्ति की यह कल्पना सुन्दरी विश्वके पुरुषोंको परास्त कर स्त्री जातिके गूढ़ातिगूढ़ रहस्यकी प्रतिमा बन गयी है। साधना के समझमें नहीं आता था कि क्यों कल्पना कुमारको भी उसके अपरोक्षमें मूर्ख एवं बेवकूफ कहकर अपने अंतस्तलके किसी भागमें होने वाले बड़े भीषण संघर्षको दबाकर दुनिया को यही बताने का प्रयास करती थी कि वह कुमारसे जरा भी प्रभावित नहीं है, प्यार करना तो दूर ही रहा। कल्पना जब कुमारका इस तरह उपहास करती थी तब साधनाको कुछ अच्छा नहीं लगता था। क्योंकि साधना कुमारको जितनी गहराईसे जान चुकी थी उतनी कल्पना जाननेमें असमर्थ थी।

कुमारके सरल स्वभावमें एक ऐसा आकर्षण था कि वह जिनके साथ दस-पांच मिनट तक बातें कर लेता था उन्हें अपना-सा बना लेता था। वह परिचितों के अन्तस्तल पर अपनी स्मृतिके अवशेषोंकी ऐसी सूक्ष्म रेखायें खींच देता था कि वे जी चाहकर भी कुमारको भूल नहीं सकते थे। उसके जीवनकी यह विशेषता थी कि उसके अपने पराये हो गये थे और पराये अपने। वह जितना निष्कपट था उतना ही हठी एवं उन्मत्त। पर उसके हठमें बालकोचित मूढ़ता थी। यही कारण है कि कुमारको हंसते-हंसते रोने और रोते-रोते हंसकर नाराज होनेमें तनिक भी देर नहीं लगती थी। कुमारको इस बातका बड़ा आश्चर्य होता था कि कल्पना और साधनाने कैसे जान लिया कि वह कल्पनाको ही प्यार करता है। पता नहीं लड़कियां अपनेको क्या क्या समझती हैं आखिर। जब कोई साहित्य संगीत-कला प्रेमी सुसंकृत भावुक युवक किसी भद्र युवतीके साथ अत्यन्त सौजन्यतापूर्ण व्यवहार करता है तब वह ऐसा क्यों समझती है कि यह युवक उस सुन्दरी? के रूप, गुण यौवन एवं प्रतिभा? से प्रभावित होकर उसे प्यार भी करने लगा है। हो सकता है कि कल्पना और साधना भी ऐसी मनोवृत्तियोंकी शिकार हो गयी हो। तभी तो उन्हें कुमारकी बात-बातमें, उसकी लिखी एक-एक पंक्तिमें उनमेंसे 'किसी का मित्र।' दिखायी पड़ता था। उफ। आखिर, नारी जो ठहरी।

वास्तवमें साधना अत्यन्त भावुक स्वभाव की है। उसके पास मानवके सुकुमार भावों गुत्थियोंका अभिव्यंजना कुशलतासे करनेकी क्षमता है। वह कल्पना की अभिन्न-हृदय सखी होकर भी उससे दूर और कुमारसे दूर होते हुए भी उसके सन्निकट थी। वह जानती है कि कल्पना-कुमार दोनों ही हठी एवं दुराभिमानी हैं। मायाविनी कल्पना न कुमारको समझ पाती है और न फक्कड़, मस्त कुमार किसी की बात पर विश्वास भी करता है। फिर भी स-हृदया साधना सोचती है कि कुमार पुरुष है—नवयुवक साहित्यिक एवं कलाकार है— उसके सामने उसका उज्वल भविष्य उसे आवाहन कर रहा है। ऐसी अवस्थामें कल्पने, तुम्हें यह उचित नहीं है कि तुम कुमारको समझनेमें गलती करो या उसे अंधेरेमें रखकर खुद तुम अपनी आत्माके साथ आंख मिचौनी खेलो। कुमार चाहे गलत समझता हो या सही पर

उनके शब्दोंमें ही मैं कहूंगी कि, सखि, तुम आत्मवंचना न करो। मैं जानती हूं तुम अपने कमरेमें अकेली-अकेली एकांत में बैठकर मुंह ढांपकर रोया करती हो। आह! तुम क्यों रोया करती हो, कल्पने? तुमने भी कई बार इस रहस्यको कुमारके सामने प्रकट किया है। क्या तुम्हारा यह मूक-रोदन तुम्हारी वंचनाका द्योतक नहीं है? तब फिर क्यों तुम अनुचित शब्दोंसे कुमारकी सम्भावना करती हो। मुझे दुःख होता है तुम कैसे जानोगी! क्या तुम्हारे पास इतना मनोधैर्य है कि तुम कुमारके लिखे, कहे एक भी शब्दको असत्य या अनुचित साबित कर सकोगी? हां, जानती हूं, अमिशप्त नारी क्या नहीं कर सकती। उफ! मेरी समझमें नहीं आता कि मैं क्या करूं! कल्पना, कुमार दोनों ही एक दूसरेको अलग-अलग समझ रहे हैं। जाने मुझे क्यों इतना दुःख, इतनी वेदना होती है। आह.....! कुमार.... कल्पना.....कुमार.....!

रातकी नीरव शांतिमें अनिच्छासे किताब पढ़ते-पढ़ते कल्पना को कुमारकी याद आती है। वह कुमारसे नाराज भी है क्योंकि कई बार सन्देश मिलनेके बाद भी वह घर नहीं आया। उसे ऐसा लगता है कि कुमारको भूल जाना शायद उसके लिये असम्भव सा है। आज कल वह अकारण ही यह सोचने लगी है कि कुमारमें अब परिवर्तन हो गया है और हजरत झूठ-मुठकी बातें भी खूब करने लगे हैं। अब जब कभी मिलेंगे तब फौरन कह देंगे—अरे परसों ही नहीं और आठ-दस दिन पहले भी हम आपके यहां गये थे! पर क्या किया जाय। बड़े लोग ठहरे आप। कोई मिले तब न!' उफ! कैसी झूठी बातें करते हैं कुमार, जब कभी वे खुश हैं तो दुनियां इनके लिये खुश हैं। फिर घण्टों तक बातें करेंगे न खाने-पीने का ध्यान और न लिखने पढ़ने का। बस, ऐसे ही मस्त हैं। अगर कभी नाराज हैं तो दो मिनटमें ही चले जायंगे। जाते समय कहेंगे भी नहीं कि 'जा रहा हूं।' मानो घर की दीवाल' छत, छड़ी, नीमके सुन्दर पेड़ ही देखने आये हैं। फिर क्या महीनों तक दर्शन दूर रहा पता तक नहीं चलेगा कि कुमारजी कल्पना लोककी किस 'अनामिका' की साधनामें इतने व्यस्त हो गये हैं। जाने यह 'अनामिका' भी कौन है उनकी। बारबार उसीको ही लक्ष्य कर लिखते हैं। पर क्या कुमारकी कहानियोंकी एक एक पंक्ति, गीतोंका एक-एक शब्द मेरे प्रति उनके स्नेहकी अभिव्यंजना नहीं करता। सचमुच मेरे लिये कुमार एक रहस्य है। साधना भी यही कहती है। कुछ समझमें नहीं आता कि उनका जीवन क्या है और उनके जीवनपग क्या हैं। कुछ भी हों वे अब पहले जैसे नहीं रहे। मुझे बारबार कहते हैं कि, 'कल्पने तुम कितनी चंचल हो।' पर खुद ही इतने चंचल है कि बातें करते-करते या पढ़ाते समय ही एकदम जगहसे उठकर जानेके लिये जल्दी मचायेंगे। हाथ पकड़ कर बिठलानेके बाद भी नहीं बैठेंगे। अगर माना कभी बैठ भी जांय तो अपनी आदतके अनुसार कहेंगे—'कल्पना, तुम मेरे पास आकर बैठो न!' और फिर ऐसी खरीखोटी, व्यंग पूर्ण बातें सुना देंगे कि हम ही जानती है कि क्या बीत रही है। कुमारका हठ करना या नाराज होकर मारना भी कितना अच्छा लगता है! हां, कुमारमें यह एक बात बड़ी अच्छी है कि वे पक्के भुलक्कड़ है। सब कुछ भूल जाते हैं। इतना ही नहीं अपने गीतोंका प्रारम्भ, कहानियों-एकांकियोंके नायक-नायिकाओंके नामतक भूल जाते हैं। और मुझे या साधनासे पूंछते हैं कि, 'बता जो, मेरे फलाने गीतका प्रारंभ कैसे हुआ?' जब हम अथ से इति तक सुना देती है तो इतने-इतने खुश हो जाते हैं कि क्या कहूं। हम इतनी बार बुलाती है और जब प्रतीक्षामें बैठती हैं तब तो बिलकुल नहीं आते। जाने अपनेको क्या समझते हैं। हमीं पागल हैं बेकार किसी की याद और प्रतीक्षा करती हैं। क्या कुमारको मेरी मेरी-मेरी याद नहीं आती? यह हो ही नहीं सकता। मेरे साथ भी आजकल बड़ा कठोर एवं निर्ममतापूर्ण व्यवहार कर रहे हैं। कभी कभी ऐसा गुस्सा आता है इस कुमारकी कि...!

अपने 'साधना लोक' में अकेला बैठ कर कुमार लिख रहा है। घोर निशाकाल है। बाहर झम-झम पानी बरस रहा है। छोटा सा कमरा एक कोनेमें कुछ कपड़े—और कपड़ों एवं अन्य आवश्यक वस्तुओंसे अधिक किताबें और अखबार इतस्ततः फैले हुए हैं। छतसे पानी भी चू रहा हैं। जमीन पर शुभ्र बिस्तरा बिछा है। पर जब पानीकी बून्दे कागज एवं कुमारके बिस्तरे पर बड़ी तेजीसे आती है तब वह करुण दृष्टिसे अपनी कुटीके चारों ओर देखता है। अपनी विवशता-लाचारी, गरीबी और निस्संग एकाकी जीवनके प्रति वह खीझ उठता है। अनजानमें दो चार आंसूकी बून्दे उसकी आंखोंसे ढुलक पड़ती है। उफ....कौन जानता है उसकी वेदना। उसे दो ही दिन पहले हुई साधनाके साथकी कई बातें याद आती है। हां, कल्पना, कुमार और साधना सोमवारके दिनकी झिल मिलाती संध्या-बेलामें 'प्लेजरट्रिप' में गये थे। जाने कल्पना क्यों नाराज थी उस दिन। कुमार दोनोंकी तुलना करनेका मोह टाल नहीं सकता साधना और कल्पना...कोई देवी है तो कोई मानवी...! उसे ऐसा लगता है कि वह आशा-निराशाके झूलेमें बैठ कर अनंतकी गोदमें झूला जा रहा है। उसकी निश्चित धारणा है कि नारी, आत्म वंचना कर ही जी सकती है। कल्पना भी इस नियमका अपवाद नहीं है। पता नहीं कि साधना बारबार यह क्यों कहती है कि कल्पनाने अपनेको एक मात्र 'राधाकृष्ण' की प्रतिमा सा ही निछावर किया है। तब तो कमाल है। इतनी प्रवचना कल्पने, तुम्हीं कर सकती हो। पर क्या तुम साधना जैसी स्नेहमयी सखीसे भी अपना हृद्गत-अपनी बातें छिपा सकोगी? क्या वह तुम्हारे-नारीके स्वभावको नहीं जानती! क्या ही अच्छा होता, यह पगली कल्पना

कल्पना न होकर मीरा ही हो जाती ! कल्पने, काश तुम मीरा हो सकती ! पर मैं किस पर विश्वास करूं ! साधना और कल्पना मेरे लिये दोनों ही उलझन है....!

सुसज्जित एवं सुन्दर कमरेमें बैठ कर साधना कुछ लिखनेमें व्यस्त हो गयी है। कल्पना भी किताबें, फाउण्टेन, कापी आदि साहित्य लेकर लिखे, पढ़े या सो ही जाय इस तरहका बिचार करती हुई अपने स्वभावके अनुसार मुंहसे कुछ न कुछ कहती और उनींदी आंखोंसे जाने शून्यमें क्या क्या देख रही थी। उसे इस बातकी जरा भी परवाह नहीं थी कि साधना उसकी बात ध्यानसे सुन रही है या नहीं। साधनाको कल्पनाकी बातें सुनते ही कुमार की याद आती है और हंस पड़ती है। कुमार भी कभी कभी मस्त होकर आंखें मूंदकर ऐसी ही बातें किया करते हैं इसका साधनाको स्मरण होता है। फिर भी कल्पनाके प्रश्नों को 'हां' या 'ना' उत्तर देती हुई लिखने लग जाती है—"आपको किस नामसे संबोधन करूं कुछ समझमें नहीं आ रहा है कुमार। आपको अपनी रचनाओं पर इतना गर्व है कि मुझे कोई रचना पढ़नेके लिये देना तो दूर रहा पर दिखाना भी नहीं पसन्द करते। जानती हूं। कल्पनाको ही आप दिखायेंगे। मैं यह भी हृदयसे मानती हूं कुमार, कि आप योग्य हैं पूर्ण रूपसे। भला मुझ जैसे अज्ञानकी कोई रचना क्यों दिखाना पसन्द करेंगे। आपको शायद मालूम होगा कि पहले जिसे घृणा होती है, स्निग्ध परिचयके बाद, उसीसे ही अधिक स्नेह एवं आत्मीयता होती है। अधिक क्या लिखूं ? आप बड़ी जल्दी मेरी किसी भी बातको बुरा मानकर नाराज होते हैं। मुझे बड़ा दुःख होता है फिर। पर सचमुच आप बड़े भोले हैं कुमार। आप कैसे जानेंगे कि दुनियां कितनी स्वार्थी एवं मतलबी है। आप इतने सरल स्वभावके क्यों हो गये कुमार ! मुझे भी कल्पनाकी तरह छलना समझकर भला बुरा न कहिये। काश कल्पना कल्पना है और साधना साधना है यह आप जान पाते तो....। आप मुझे साधना कहते हैं अब और कुछ न कहकर मेरे नामको भद्दा न बनाइये वरना साधना नामक सुन्दर नामकी सुन्दरता जाती रहेगी। खैर....आपकी इच्छा। जी चाहें वही कहिये कुमार..। पर यह 'अनामिका किसका नाम है ! मेरे लिये आप और कल्पना दोनों ही पहेली हैं। मुझे अकेलीको-तो बता दीजिये न कि यह 'अनामिका' कौन है कुमार ! जाने ऐसे सुन्दर-सुन्दर नाम आप कैसे रखते हैं। ओह। कैसा प्यारा-प्यारा नाम है अनामिका। अ..ना..मिका। काश अनामिका...मे मे...—।

कुमार, साधना कल्पना तीनों ही अपनी बुद्धिसे एक दूसरेको जाननेकी कोशिश करते हैं पर कभी-कभी उन्हें ऐसा लगता है कि वे एक दूसरेके बारेमें कुछ नहीं जानते। परिचयके बाद इन दोनोंको ऐसा लगता। कि उनके मिलनके समय और कोई वहांपर न आयेपर आज जब दोनों मिलते हैं तब तीसरे व्यक्तिकी अनुपस्थिति दोनोंको भी खटकने लगती है। जब तीनों फिर एक साथ मिलते हैं तब वे भूल जाते हैं कि उनमेंसे कोई कभी किसीपर नाराज हो गये थे। उस समय उनकी हार्दिक अभिलाषा होती है कि कोई पहले-पहले अपने मधुर रहस्यको प्रकट करे। पर..पर यह हो नहीं सकता और ये आपसमें ऐसे ही प्रश्न एक दूसरेसे करते हैं कि जिसका उत्तर पूछनेवाले व्यक्तिसे ही शेष दोनों चाहते हैं।

कल्पना, कुमार, साधना का तो यह दावा है कि उन्होंने एक दूसरेके अन्तस्तल में प्रवेश कर अपनी-अपनी गुत्थियोंको खोला है। कुमारको ऐसा लगता है कि वह नारीके मनो विज्ञानका सफल अभिव्यंजक है। साधनाका कुमारकी इस क्षमता पर पूरा विश्वास है और वह इसे पूर्ण रूप से मान भी चुकी है। पर जब कल्पना और साधना दोनों मिलकर यही सोचती है कि कुमार पुरुष है और पुरुषमें नारी को समझनेकी क्षमता नहीं होती। कभी-कभी इन तीनोंको ऐसा लगता है कि वे इतने निकट होकर भी हठ, वंचना या दुराभिमानके कारण एक दूसरेसे उतने ही दूर है जितने दो ध्रुव। तीनों जानते हैं कि उनमेंसे एकका जीवन दूसरेके बिना नीरस, अपूर्ण एवं विनाशका द्योतक है। आज दोनोंके बीचकी चौड़ी खाई, जो सामाजिक परिस्थितियां खोद रही है, भरनेकी बहुत बहुत कम सम्भावना है। क्योंकि यह जीवनका शाश्वत सत्य है, यौवनका कठोर अभिशाप है। मानव और उसमें भी नारी विशेषतः धन, सौंदर्य एवं सम्मानको ही प्यार करती है। भले ही भुक्तभोगी इस बातको गलत साबित करे या कहे। पर यह निश्चित सत्यत और तीनोंके लिये एक उलझन है। हा! उल..झ..न—!।

आँख है तो जहान है

आंखके बिगड़ जानेसे मनुष्य-जीवन ही बेकार है। बड़े ही अथक परिश्रम द्वारा भीमसेनी कपूर आदि जङ्गली जड़ी-बूटियां से तैयार किये हुए जगत-प्रसिद्ध **भीम सेनी** सुरमा इस्तेमाल करें। इससे आंख की लाली, सूजन, पानी बहना, जाला मांड़ा, फूली, संमलबाई, रतौंधी, दिनौंधी, पड़वाल, चकाचौंध तथा मोतियाबिन्द बिना आपरेशन दूर होता है। लाखों आदमियोंने परीक्षाएं की हैं। प्रतिदिन नियमित रूपसे लगानेसे बुढ़ापे तक आंख की रोशनी बनी रहती है। कीमत १॥), तीन शीशियां ४)।

पता—भारत आयुर्वेद आश्रम, दरशनपुरवा (नं० ३) कानपुर

आधुनिक नारी

—:***:—

लेखक—श्री शम्भूनाथ सकसेना

अभी-अभी की बात है। मैं एक लम्बी यात्रासे लौटा हूं और भारी उदास हूं।

बात कानपुर जंकशनकी है। मैं स्टेशन पर खड़ा अपनी गाड़ीकी प्रतीक्षा कर रहा था कि लखनऊ और झांसीके बीच चलने वाली मेल-ट्रेनके सेकिण्ड क्लाससे एक नवयुवती उतरी। वेश-भूषा से वह टिप-टाप थी—काली रेशमी साड़ी, ऊंची ऐड़ीके सुर्ख सेंडिल, साटनका कामदार 'मिसेज पण्डित टाइप' बगलों तकका ब्लाउज, जो कि उसके उरोजों और कटि-भाग पर आकर एकदम संकरा हो गया था; साड़ीका पल्ला अर्ध वक्ष-प्रदेशको अनावृत छोड़ता हुआ पीठ पर मंदिरके चवर-सा झूल गया था, उसके काले, घने बाल पुराने बरगद की जटाओं-से पीठ पर छितराये हुए थे, लम्बी, पतली ककड़ियों-सी उसकी अंगुलियोंके नाखून सुर्ख रंग से रंगे हुए थे, ओठों पर उसके लिपस्टिक का हल्का प्रयोग था और वे नवोदित गुलाबकी कली की पंखुड़ियोंसे लगते थे। चेहरा उसका लम्बा और रंग उसका धूप-सा था। आंखें उसकी आकर्षक थीं—उनमें यौवनकी मादकता थी, विलास उसके लिबासमें ही नहीं, उसकी आंखों और चालमें भी उसकी छाप थी, कलाईमें उसके सुंदर छोटी सी रिस्ट वाच थी और आंखों पर उसके गोल्डन फ्रेमका चश्मा था। जिस समय वह अपने कम्पार्टमेण्टसे नीचे उतरी उस समय प्लेट फार्मपर चहल कदमी करते हरएक नवयुवककी नजर उस तरफ उठ गयी, अनायास ही मुसाफिर स्त्रियोंने भी उसकी तरफ देखा, अनायास चिंहुक कर गंवार यात्रियोंने भी उसकी तरफ देखा। लोग-बाग उसकी तरफ देख नहीं जनाब, घूर रहे थे।

उस युवतीने कम्पार्टमेण्टसे नीचे उतरते ही पुकारा—

'ऐ कुली.....ऐ कुली!'

कुछ कुली स्टेशन पर पहलेसे व्यस्त थे, कुछ और डिब्बोंकी तरफ दौड़ गये थे। उसने जरा और तीखे स्वरमें आवाज दी—

'कुली.....ऐ कुली!'

फिर भी किसी कुलीने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। कुलियोंका मधु-मक्खियों-सा छत्ता आगेके एक फर्स्ट क्लासके सामने लगा हुआ था, जहांसे किसी अंग्रेज अफसरका सामान उतर रहा था और जहांसे उन्हें अपने श्रमके बदलेमें कुछ अधिक मिलनेकी आशा थी। नव युवती प्रतिक्षण अपना धैर्य खोती जा रही थी और उसका स्वर रुखा होता जा रहा था। उसने फिर आवाज लगायी—

'कुली.....ऐ कुली!'

सामनेसे एक बूढ़ा कुली चला जा रहा था उसके जानेका रुख भी उस फर्स्ट क्लास कम्पार्टमेण्टकी ओर ही था, जहां और कुली सामान उतार ठेलों पर लाद रहे थे। युवतीने उस बूढ़े कुलीकी ओर संकेत करते हुए कहा—

'ऐ बूढ़े....इधर चलो....इधर!'

कुलीने अपने चलने का रुख बदल दिया और युवतीके कम्पार्टमेण्टके सामने आ खड़ा हुआ। युवतीने कर्कश स्वरमें कहा—

बदमाश सुनता नहीं था, हम कबसे आवाज पर आवाज दे रहा है।'

कुलीने प्रत्युत्तरमें कुछ नहीं कहा सीधे जाकर कम्पार्टमेण्टमेंसे युवती द्वारा निर्देशित सामानको प्लेटफार्म पर उतारने लगा।

सामानमें तीन अटेचियां थीं, दो लम्बी मुंह बन्द थैलियां थीं, एक होल्डोल था और एक बड़ा थर्मस था। उस बूढ़े कुलीके सामने सबसे बड़ी कठिनाई इतने अद्दोंको ले जानेकी थी। यदि वह

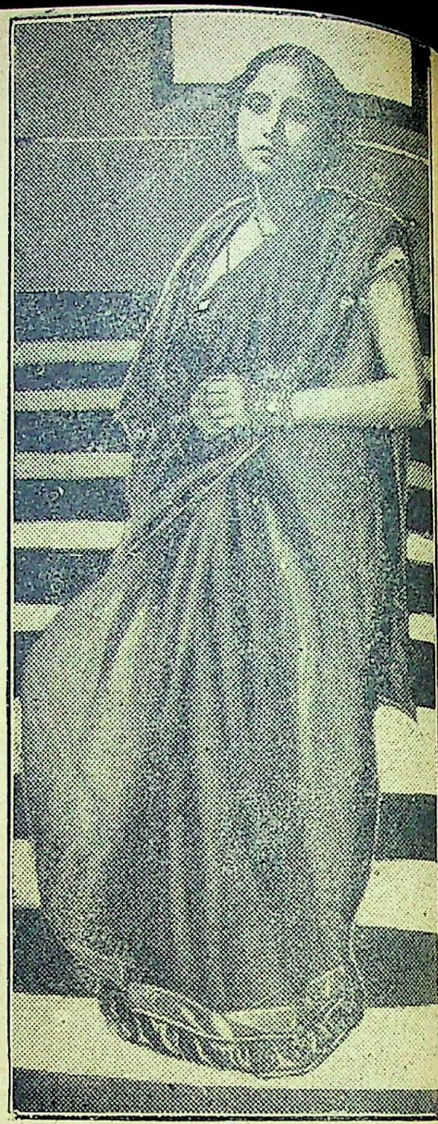

एक आधुनिक नारी

युवती थोड़ा-सा सहयोग देती तो सामान कुली आसानीसे उठा ले गया होता। लेकिन युवती वैसी ही सामानकी ओर से असम्बद्ध खड़ी कुलीको शीघ्र सामान उठा चलनेके लिये गालियां दे रही थी। उसकी भाषामें गालियां थीं—वाणीमें कर्कशता थी—धमकियां थीं। कुली इतने अद्दोंको एक बारमें उठानेमें विवशता अनुभव कर रहा था जब कि युवती सामानमें हाथ लगानेमें भी तैयार नहीं थी। यदि उस कुलीको जरा भी अवसर मिल गया होता तो वह वहांसे मजदूरीका मोह छोड़कर अविलम्ब पीछा छुड़ा कर भाग गया होता लेकिन भागनेकी वह गुंजाइश नहीं पा रहा था। तब कुलीने सामान उठाना शुरू किया, बैठकर उसने तीनों अटेचियां अपने सिर पर जमाईं, एक-एक थैलीको कन्धेके एक-एक तरफ लटकाया, होल्डोल को एक हाथमें लटकाया, थर्मसको दूसरे हाथमें थामा और बमुश्किल तमाम उठा।

उठनेमें उसकी पिंडलियां थर-थर कांप रही थीं और उसका वृद्ध शरीर पेड़के सूखे पत्तेकी तरह दलित हो रहा था। नवयुवतीने अपने हाथके रूमालसे चेहरे पर हाथ फेरा और रौब भरे स्वरमें कहा—

'देख गिरा मत देना सामानको वरना चमड़ी खिंचवा ली जायेगी।'

प्लेट फार्मके लोग एक बार फिर आश्चर्यसे उस जानवरसे लदे इंसानको देखने लगे थे, जो कि अपनी शक्तिसे ऊपर बोझ उठाये हुए था, अपनी इच्छाके विरुद्ध (उसकी चालसे दिखता था कि या तो असमर्थ होकर वह इस सामानको रखकर उस नवयुवतीके शासनके विरुद्ध विद्रोहकर देगा या फिर इस सामानको गिराकर नुक्सान और अपनेको चोटिल कर लेगा। और वह बढ़ा कुली अपनी थर थराती पिंडलियों, उम्रके बोझसे परिश्रान्त शरीरको लिये उस बोझको बैलकी तरह लादे लिये जा रहा था। युवतीकी नजरोंमें कुलीके इस अतिशय श्रमके प्रति कोई सहानभूति नहीं थी, कोई करुणात्मक भावना नहीं थी—कोई प्रशंसा नहीं थी। वह वैसी ही आगे-आगे कुलीको झिड़कते-कड़वी-तीखी बातें सुनाती चली जा रही थी।

०

इस दृश्यको देखकर मैं घटनापर सोचनेके लिये विवश हुआ हूं। उस जानवर से लदे हुए मानवको देखकर कोमल भावनाएं विद्रोह कर उठी हैं। माना कि वह व्यक्ति कुली था। कुली था इस कारण उसका पेशा भी सामान लादना ही है। कम और अधिक सामान लदवानेके सम्बन्धमें भी हम उस नवयुवतीको दोष नहीं दे सकते। यदि वह अधिक बोझ नहीं उठा सकता था तो अन्य अपने सहयोगीको भी बुला सकता था अथवा इस अन्यायके विरुद्ध विद्रोह भी कर सकता था। लेकिन, जो बात सबसे अधिक अखरती है वह है नारी होते हुए भी निष्ठुरता! जिस नारीको हम दया और ममताकी देवी मानकर उपासना करते हैं—जिस नारीत्वकी परिभाषा ही भारतीय संस्कृतिमें पर दुख कातरता है—विनाश नहीं निर्माण है, हिंसा नहीं अहिंसा है—क्रोध नहीं प्रेम है, इन गुणोंका उस आधुनिक नारीमें सर्वथा अभाव था—जबर्दस्त कमी थी। हम मानते आये हैं कि सौन्दर्य निष्ठुर नहीं धुनी हुई रुई—सा मुलायम होता है—यह भी आदि-काल से हमारी संस्कृतिने सिखाया है कि स्त्री मातृत्वकी पोषक है अतएवममत्व-प्रधान है।

इन प्रश्नोंको लेकर बात केवल उस सौन्दर्यकी प्रतिमा नवयुवतीकी ही नहीं है। मेरे सामने आधुनिक-नारीका प्रश्न है? मैं देखता हूं आजकी नारी, वेश-भूषा और खाने-पीने चलने-फिरनेकी बात छोड़िये दैनिक-जीवनकी उन सांस्कृतिक बातोंसे भी गिर गयी है जिसपर भारतीय संस्कृतिकी आधार शिला स्थिर है और मैं फिर सोचने लगा हूं कि उक्त युवतीमें दयाकी जगह अहम्मन्यता थी, प्रेमकी जगह रोष था। उसकी भावनामें ममत्व की जगह निष्ठुरता थी—क्रूरता थी—बाहरी दिखावा था। वहां उसका नारीत्व कुछ नहीं केवल उस वातावरणकी छाप थी जिस दूषित प्रवृतियोंके बीच उसका निर्माण हुआ। वह नवयुवती उस बूढ़े कुलीसे प्रेमसे भी काम ले सकती थी—उसे कुछ अधिक देनेका प्रलोभन और अटेचियोंको उठानेमें सहायता देकर, प्रेरणाका काम कर सकती थी और मैं समझता हूं उस स्थिति में बूढ़ा कुली नारीमें ममत्वकी प्रबल भावना देखकर नवोत्साहसे एक स्फूर्तिसे भर गया होता उसे जो बोझ उठाना पड़ा उसे वह अखरा भी नहीं होता। जिस सौन्दर्यकी वह नवयुवती प्रतिमा थी यदि उसने कुलीके प्रति ममताका प्रदर्शन किया होता तो उसने अपने सौन्दर्यको सार्थक कर दिया होता।

आजके युगमें मानव तो पशु बन गया है—राजनीतिक विषमताओंने उसके अन्दरकी सारी कोमलताका—सारी सात्विकताका और समस्त मानवीय भावनाओंका क्रूरतासे अन्त कर दिया है। यह खूनी युग है। हत्या, लूट, मार, नारीत्वका अपमान सभी साधारण बातें बन गयी हैं। विनाशकी प्रलयंकर लपटोंसे हम आज गुजर रहे हैं। और इस भयानक युगमें—इस हैवानियतसे भरे वातावरणमें मात्र हमारी नजर केवल अपने नारी-समाजकी ओर है। केवल उस नारी की ओर है जो निर्माणकी प्रतीक हैं। लाल लाल लहूसे भरे हाथों और चिनगारियां चिलकती आंखोंको लिये हुए भी हम आशा और विश्वाससे नारी की ओर निर्माणकी आशासे देखते हैं। और हम जब उस तरफ भी विलास और अहमन्यता, क्रोध और अनौचित्य, धूर्तता और विनाशको सदेह देखते हैं तो अंधेरे में निर्माणकी आशा किरण भी लुप्त हो जाती है। जिन पशुत्वपूर्ण, हिंसक परिस्थितियोंसे हम गुजर रहे हैं उनसे हम निस्सन्देह ऊपर उठना चाहते हैं। मानव में पशुताकी प्रधानता नहीं निर्माणकी कल्पनाका ही बाहुल्य है। निर्माण-पथपर हम नारीको अग्रणी मानते हैं। आरम्भसे ही प्रकृतिने उसे 'सिर जनहार' बनाया है। और इस कारण उसका उत्तरदायित्व भी पुरुषसे अधिक है। आजकी नारी इस सत्यकी अवहेलना कर रही है। कलकी नारी दूसरेके निर्माणके लिये तिल-तिल मिटती थी और अमर है। आजकी नारी अपने सुख साधन बटोरनेमें निरन्तर प्रयत्नशील है और पशुताके अत्यन्त निकट है। दूसरोंके लिये मिटना निर्माण-भावना है—मानवता है और अपने हितोंकी सुरक्षाके लिये आठो पहर यत्नशील रहना विनाशकी भावना है—पशुता है। जहां हम केवल अपने हितोंके विषयमें सोचते वहां स्वार्थ हमें अपनेमें जकड़ लेता है और मानवताका अन्त हो जाता है। अपना हित अपना सुख है दूसरेका हित मानवता है। और आज विभ्रान्त नारीको इसी सत्यको अपनाना होगा। निर्माणकी भावनासे अपना 'भविष्य' और 'वर्तमान' उज्वल बनाना होगा। नारीपर ही बहरहाल हमारे निर्माणकी आशा केन्द्रित है। और हम इस बातमें विश्वास करते हैं आज उसका उत्तरदायित्व अत्यन्त गुरुत्तम है।

साहित्य चर्चा

विटामिन हीनता जनित रोग—

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रनाथ' एम० बी० बी.एस०प्रकाशक,भृगुराज भार्गव, अवधपब्लिशिङ्ग हाउस, लखनऊ, मूल्य सवा दो रुपये।

स्वास्थ्य विषयक चर्चाके साथ साथ देश में विटामिनका नाम काफी प्रचारित हुआ है, लेकिन उसके विषयमें जानकारी बहुतही कम लोगोंको है। प्रस्तुत पुस्तकमें विटामिन की उत्पत्ति एवं उनका महत्व तथा हमारे शरीर पर उनका प्रभाव आदि विषयों पर बड़ी गम्भीरताके साथ विचार किया गया है। विटामिनकी हीनतासे उत्पन्न होनेवाले रोगों और उनका निदान एवं चिकित्सा पर भी लेखकने प्रकाश डाला है। हिन्दीमें इस विषय पर कम लिखा गया है। अतएव लेखकने प्रस्तुत पुस्तककी रचना कर एक अभाव की पूर्ति की है। इसमें सन्देह नहीं कि यह पुस्तक हिन्दी संसारमें आदर पायेगी। उच्च श्रेणियों और खास तौर पर बालिका शिक्षण संस्थाओंमें इसको पाठ्य पुस्तकोंमें रखनेसे भावी नागरिकों का बड़ा हित होगा।

गरुड़ध्वज—

लेखक श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र—प्रकाशक गयाप्रसाद एण्ड सन्स आगरा। मूल्य सवा दो रुपये

हिन्दीके श्रेष्ठ नाटककार श्री लक्ष्मीनारायण मिश्रका यह ऐतिहासिक नाटक है, इसकी कथा-वस्तु ईसाके पूर्व पहली दूसरी शताब्दीकी है। कथाका आधार ऐतिहासिक होते हुएभी लेखकने कल्पना और चिन्तनके बल पर नाटकका ढांचा तैयार किया है और लेखकको इस कार्यमें बड़ी सफलता मिली है। इतना सुन्दर नाटक लिखनेकेलिये हम लक्ष्मीनारायण मिश्रको बधाई देते हैं।

चारुमित्रा—

लेखक डा० रामकुमार वर्मा एम० ए पी० एच डी० प्रकाशक साधना-सदन, प्रयाग मूल्य सवा दो रुपये।

चारुमित्रा ख्यातिप्राप्त डाक्टर रामकुमार वर्माके चार मौलिक एकाङ्की नाटकों का संग्रह है। इससे पहले 'पृथ्वीराजकी आंखें' और रेशमीटाई नामक एकाङ्की नाटकोंके संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। यह उनके एकांकी नाटकोंका तीसरा संग्रह है, इसमें संग्रहीत नाटक 'चारुमित्र' की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक और 'रजनीकी रात'की सामाजिक और उत्सर्ग, तथा अन्धकारकी दार्शनिक है। इस संग्रहके सभी नाटक भाव-भाषा कथानक और रचना-कौशिल सभी दृष्टियोंसे श्रेष्ठ है। वर्माजीको अपने अन्य दो संग्रहोंसे इसमें अधिक सफलता मिली है। सभी एकाङ्की हिन्दी संसारमें समादृत होंगे, ऐसी आशा है।

पुस्तकालय: उसका सञ्चालन—

पण्डित छविनाथजी पाण्डेय, प्रकाशक किताबघर, पो० कदमकुआं, पटना, मूल्य डेढ़ रुपया।

शिक्षा-प्रसारके साथसाथ देशमें पुस्तकालयोंकी प्रगति स्वाभाविक है, किन्तु खेद है, कि पुस्तकालय शास्त्र पर हिन्दी पुस्तकोंका सर्वथा अभाव है। हर्षकी बात है कि प्रस्तुत पुस्तक द्वारा इस अभावको दूर करनेकी कोशिश की गयी है। इस पुस्तकमें पुस्तकालयोंके सम्बन्धकी सारी ज्ञातव्य बातोंका सुन्दर समावेश है। इसके विद्वान लेखकको पुस्तकालय आंदोलनका पर्याप्त ज्ञान एवं अनुभव है जिसके सहारे उन्होंने इसे सब प्रकार उपयोगी बना दिया है। पुस्तकालय संचालन, पुस्तकालयाध्यक्षके कर्त्तव्य, ग्राम-पुस्तकालय,शिशु-पुस्तकालय वर्गीकरण आदिके परिच्छेद तो बहुतही उपयोगी हैं। हमें यह कहनेमें जराभी संकोच नहीं है कि यह पुस्तकालयोंके लिये सर्वथा संग्रहणीय है।

कल्पना-कानन—

लेखक—श्री वृजलाल वियाणी। प्रकाशक 'हिन्द' प्रकाशन,अकोला (बरार) पृष्ठ संख्या-७९-मूल्य २) रु०

इस पुस्तकमें राष्ट्रकर्मी वियाणीजीके ४२ के देशव्यापी आंदोलनमें जेलके एकांत निवासके समय हृदयमें उठे हुए उन १३ विचारोंका संग्रह है, जिनके आधार हैं, उनकी भावुकताको अपनी ओर आकर्षित करने वाली, कुछतो सामाजिक मान्यताएं और कुछ नैतिक-अनैतिकका द्वन्द्व। इन तर्कपूर्ण तेरहों विचारोंको विचारककी नाहे दृष्टि निक्षेप करते हुए वियाणीजीने जिस शैली और भाषाका आश्रय लिया है। वह प्रशंसनीयही, नहीं अनुकरणीय है और इस पुस्तकके पाठक ऐसा अनुभव करेंगे कि वह कल्पना काननमें स्वयं विचर रहे हैं। इसमें संग्रहीत विचारोंकी शृङ्खला कहीं से टूटती नजर नहीं आती इस विशेषताके साथही साथ सत्य, शिव सुन्दरका निर्वाह तो अनोखे ढङ्गसे हुआ है। किन्तु 'जन्माष्टमी और 'पर्व स्नान' शीर्षक दोनों विचारोंमें उनका भावोद्वेग सीमाके परे जान पड़ता है। क्योंकि मानवीय मर्यादा जहां हार मानती है वहीं हमें भगवानका आश्रय लेना पड़ता अर्थात हम विचारकी तर्ककी सीढ़ियोंसे उतर कर छुटकारा चाहते हैं। यही द्वन्द्व उपरोक्त दोनों विचारों में टकराता है। लेखककी अधीरता इसमें स्पष्ट ताकती झांकती है। एकराष्ट्र कर्मीका हृदय और विचार इतनी डावाडोल स्थिति में क्यों?

वस्तुतः यह पुस्तक बहुतही लाभपूर्ण और प्रयास बहुतही सफल रहा है। हम ऐसी रचनाके लिये लेखकको धन्यवाद देते हैं।

विद्यापति—

रचयिता पोद्दार रामावतार 'अरुण' प्रकाशक विहारीलाल राजकुमार, किरण-कुञ्ज, समस्तीपुर (विहार)

'विद्यापति' कवि अरुणका प्रबन्ध काव्य है। मिथिलाके प्रसिद्ध महाकवि विद्यापतिकी स्मृतिमें इस पुस्तककी रचना कर कवि अरुणने बहुतही प्रशंसनीय कार्य किया है। विद्यापतिमें कई स्थलोंपर बड़े सुहावने चित्र हैं जिन्हें देखकर कविकी सराहना किये विना कोई रह ही नहीं सकता। शब्द-योजना और भाव-व्यञ्जनामें जो सौन्दर्य और माधुर्य है वह काव्य प्रेमियोंको उत्कुल्लित करदेगा इसमें सन्देह नहीं। आचार्य जानकी बल्लभशास्त्रीके शब्दोंमें इतनाही कहना पर्याप्त है विद्यापतिका प्रणयन कर कवि अरुण, नयी पीढ़ीके कवियोंमें सबसे आगे आ गये हैं। कवि अरुण भविष्यमें इससे भी सुन्दर रचना लेकर हिन्दी-संसारमें उपस्थित होंगे-ऐसी आशा है।

चयनिका

काश्मीरके युद्धको दैनिक खर्च

काश्मीरमें खुल्लमखुल्ला युद्ध नहीं हो रहा है। अफरीदी पाकिस्तानके शिखण्डी के रूपमें लड़ रहे हैं। भारत सरकार काश्मीरकी रक्षाके लिये जो कुछ कर रही है। उसमें प्रतिदिन ४ लाख रुपयेका खर्च है। अगर कहीं लड़ाईने विकरालरूप धारण किया तो कितना खर्च होगा, यह देशवासियोंके सोचनेकी चीज है।

'हजाम' नहीं 'नाई'

छोटा नागपुरके नाइयोंने दो दिनतक के सम्मेलनके बाद 'हजाम' या 'ठाकुर' कहनेके बजाय अपनेको नाई कहलानेके अधिकारपर जोर दिया है। इस सिलसिले में यह उल्लेखनीय है कि बहुतसे नाई अपनेको 'न्यायी ब्राह्मण' नामसे सम्बोधित करते हैं।

मनहूस बड़ा दिन

विश्वके कोने कोनेसे जो संवाद मिले हैं उनसे पता चलता है कि इस वर्ष बड़े दिनपर जितना रक्त पात और दुर्घटनाएं हुई हैं उतना युद्ध छिड़नेके बाद कभी नहीं हुआ था। फिलीस्तीन, यूनान और चीनकी लड़ाइयोंको छोड़ न्यूयार्कमें २७३ आदमी मरे। १० रेड इण्डियन जीवित जला दिये गये। एक सुरंगके फूटनेसे डच जहाजपर २४ आदमी मर गये। फ्रांस में तूफानमें १० आदमी मरे हैं। फिलिपाइन द्वीप समूहके समरटाप् तथा राजधानी मनीलामें तूफानसे बड़ी हानि हुई है और बहुतेरे लोग कालके गालमें चले गये हैं। तुर्कीमें साठ घण्टेतक भयंकर तूफान चला है जिससे बड़ी क्षति हुई है। कुछ शहरोंमें तो मुश्किलसे एकाध घर सुरक्षित बचा।

१९४७ के महापुरुष

'लन्दन न्यूज क्रानिकल' में १९४७ के महापुरुष' शीर्षक एक लेखमें प्रकाशित हुआ है जिसमें भारतके गवर्नर जेनरल लार्ड माउण्ड बैटन और प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहर लाल नेहरूका उल्लेख किया गया है लेखमें कहा गया है कि सुदूरपूर्वमें लार्ड माउण्ट बैटनने सत्ता हस्तान्तरणका कार्य बहुत ही शानदार ढंगसे सम्पादित किया है और इस प्रकार इतिहासमें उन्होंने अपना स्थान बना लिया है उधर भारतके प्रथम प्रधान मन्त्री पं० नेहरूने अपनी उस राजनीतिक क्षमताका परिचय दिया है जिसे देखकर उस नये राष्ट्रकी शांति तथा प्रगतिकी सर्वोत्तम आशा की जाती है।

* * *

६०० पत्नियों वाला राजा

कुछ लोगोंको अजीब तरहका शौक होता है। किसीको कुत्तोंका किसीको तरह तरहकी चिड़ियोंका और किसीको खाने पीने और पहननेका लेकिन अमेरिकामें वेकोम कबीलेके राजाको पत्नियां एकट्ठा करनेका शौक है। अबतक उसके यहां कोई ६०० पत्नियां इकट्ठा हो चुकी है। राजाके दूत पत्नियां एकत्र करनेके लिये घूमा करते हैं तथा जिस झोपड़ीमें नौजवान लड़की देखते हैं, उसे राजाको भेंट करने को कहते हैं। राजाकी उम्र इस वक्त ८० वर्ष की है। वह ज्यों ज्यों बूढ़ा होता जाता है त्यों त्यों पत्नियां एकत्र करनेका उसका शौक बढ़ता जाता है।

* * *

शीशेसे प्रणय और विवाह

कभी कभी ऐसी घटना घटती है जिसकी पहले कल्पना भी नहीं की जाती है। लन्दनकी एक घटना है। एक २० वर्षीया युवतीको अपने कमरेके शीशेके

बच्चोंमें वायुयानके प्रति दिलचस्पी उत्पन्न करने वाले—ये खिलौना हवाई जहाज बाजारमें बिक्रीके लिये तैयार हैं।

आकाशमें जब सूरज निकला तो उसकी खिड़कीमें आदम कद शीशेका प्रतिबिम्ब उसके कमरेके सामने वाले अस्पतालके शीशे में पड़ा जहां फ्रेडी मिलर नामक एक २२ वर्षीय युवक बिस्तरे पर पड़ा था। प्रतिबिम्ब से उसकी आंखें चौंधियां गयीं और दोनों मुस्करा पड़े। धीरे धीरे यह मुस्कराहट प्रेममें परिवर्तित हो गयी और उसके दो वर्ष तक दोनोंमें रोमांस चलता रहा। एक दिन यह रोमांस प्रणयमें परिवर्तित हो गया और आज दोनों पति-पत्निके रूपमें जीवन यापन कर रहे हैं।

—०—

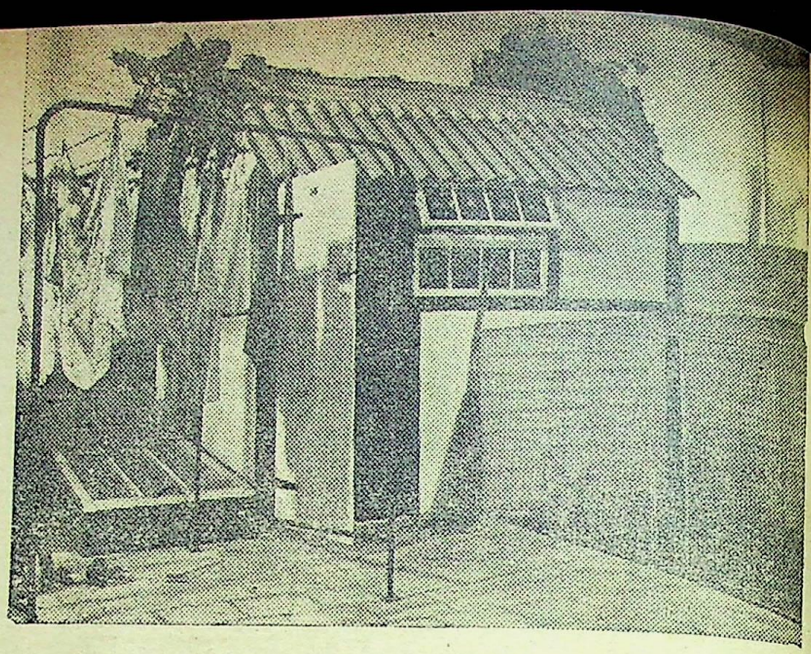

लन्दनमें हाल ही में भवन प्रदर्शिनी हुई थी उसमें विभिन्न प्रकारके घरों के नमूने प्रदर्शित हुए थे। यह १९५० का माडेल है।

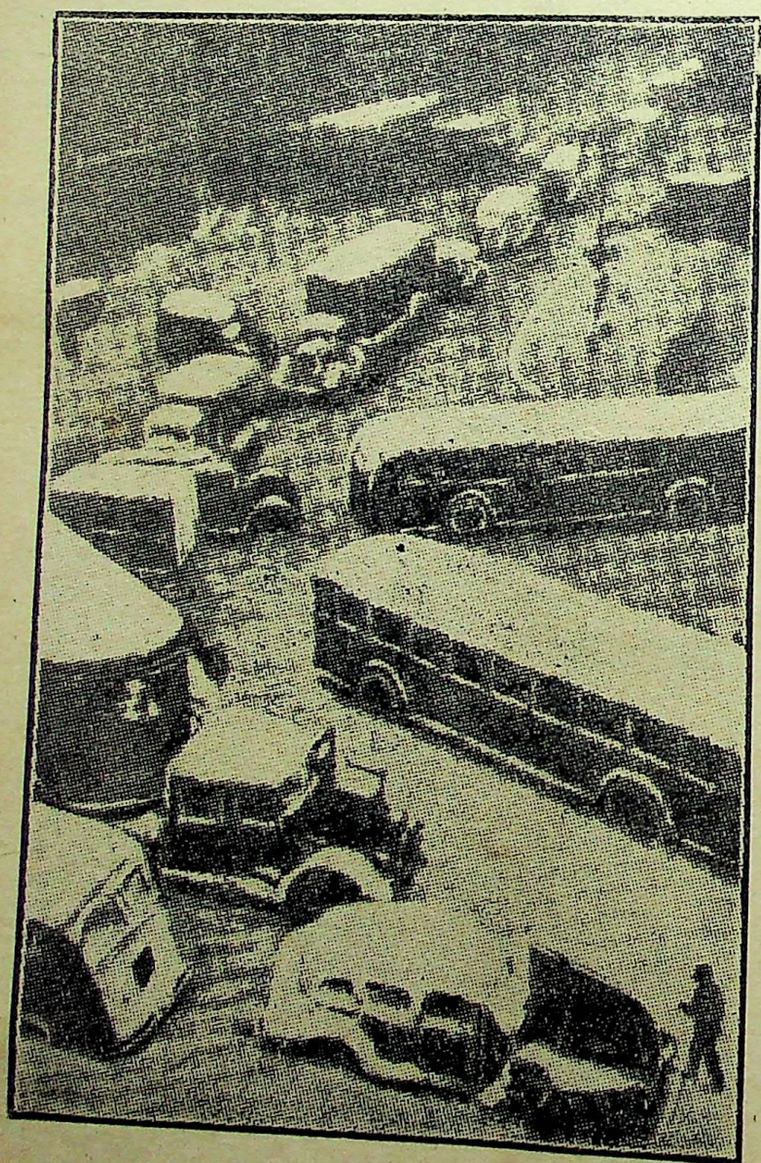

अत्यधिक बरफ पड़नेसे न्यूयार्ककी बरफ आच्छादित सड़कें और मोटरें। कहते हैं कि इससे पहले न्यूयार्कमें इतनी बरफ कभी नहीं जमी थी।

कम्पन

—

अनल कुमार

रे मृदु-मृदु स्पन्दित कम्पन!
उर उरके कम्पित स्पन्दन!
सांसों में तेरा जीवन
उच्छ्वासों में अपनापन,
कल तरल मुखर मन भावन
तुम भावुक उर के कम्पन!
जल लहरों के नवजीवन
तृण तरु-दल के आंदोलन,
तुम नील गगन के उडुगन
हे नियति बीन के कम्पन!
किस अमल विभा के नूतन
तुम तिमरांकित आकर्षण
आकर्षित कर जगका मन
खद्योत बने हे कम्पन!
बुझ—बुझ जल—जल
कंप—कंप चञ्चल
उर—उर को छल
छल—छल अविरल
करते रहते अयास स्पन्दन
कविके उरके चिर आकर्षण!
मेरी कविता के कल-कम्पन
रे मृदु-मृदु स्पन्दित कम्पन!

छाती और फेफड़े के लिये धोखेबाज मौसम

कीटाणु नाशक पेप्सकी टिकियाका सेवन करके अपनी हिफाजत कीजिये।

गफलत करने आपको छातीको तकलीफ हो सकती है।

मुंहमें घुलने पर पेप्स काफी मात्रामें औषधियुक्त वत्तके रूपमें परिवर्तित हो जाता है, जो सांसों द्वारा छाती और फेफड़ेके भीतरी भागों तकमें पहुंच जाता है। इससे कीड़े मर जाते हैं यह खांसी बन्द करता है, झिल्लीके घावको आराम करता, बलगमको ढीला करता और रक्ताधिक्यको कम करता है।

कड़ी ठंड, गलेके घाव, खांसी, सर्दी, इन्फ्लुएंजा, ब्रोंकाइटीज और छाती तथा फेफड़े के अन्य कष्टोंको अच्छा करनेके लिए पेप्स जगद्विख्यात है।

पेप्स लीजिये

PEPS

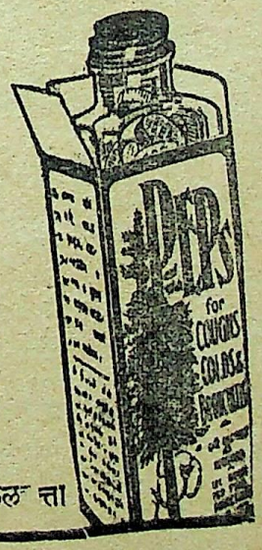

कीटाणु नाशक सांसदायक टिकिया
हमेशा अपने पास रखें
सभी दवाखानोंमें मिलता है।

एजेण्ट-स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट एण्ड कं० लि० इण्टाली कलकत्ता

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी हैं। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेको शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

नेपाली शुद्ध मृग कस्तूरी

हिमालय और तिब्बत की शुद्ध कस्तूरी शुद्ध शत शिलाजीत और जड़ी बूटी इत्यादि

मालिकान—

साहु नारायण बहादुर श्रेष्ठ एण्ड सन्स (रजि०) अध्यक्ष-नेपाल हिमालय कस्तूरी भण्डार (रजि०) मा: पाल तुलहंने, ललितपुर, नेपाल।

AT AMAZINGLY LOW PRICE

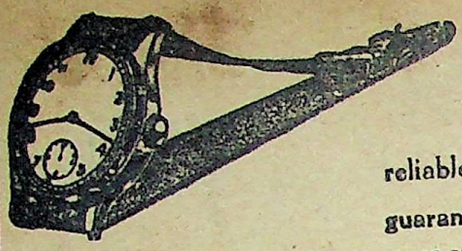

Lever movements jeelled wriet watches in fancy shapes, 36 hours winding with second hand, thick crystal glass, most reliable and accurate time keepers, guaranteed for 3 years, nickle silver cases with a nice strap and box.

Prices Rs. 26, Postage As. 12 (free for 2)
for white Chromium case Rs. 2 and Radium Dial Rs. 3 extra.
LIMITED STOCK NO ORDER FOR MORE THAN 3 ACCEPTED.

ORIENT WATCH SYNDICATE Dept. (14B) Colony Rd. DUM DUM

बवासीर

खूनी या बादी नई या पुरानी; अन्दरूनी या बाहरी चाहे जैसी बवासीर क्यों न हो उसपर महात्मा-प्रदत्त शक्तिशाली दिव्य महौषधि बबासीर की दवा तुरन्त जादू का सा असर करती है। केवल एकबार के इस्तेमालसे दर्द; खुजली; टीस; सूजन; जलन; मवाद आना खूनका गिरना फौरन दूर होता है। ३ दिन में खराब से खराब बबासीर; नासूर; भगन्दर बिना आपरेशन जड़से शर्तिया आराम होता है। लाखों निराश रोगी इसके व्योहार से अच्छे होकर अन्य रोगियों से इसकी सिफारिश करते हैं। कीमत २) दो रुपया डाक खर्च पृथक।

पता—भारत आयुर्वेद आश्रम, दरगाह रोड (नं० ३) कानपुर

१९४८ में क्या होने वाला है

भारतवर्षके प्राचीन महापुरुषोंकी सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या अन्धकारपूर्ण संसार में सूर्यका प्रकाश है, यदि आप भी इस अन्धेरी दुनियामें अपने भविष्यका साफ साफ फोटो समयसे पूर्व देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर किसी दिल-पसन्द फूलका नाम लिख कर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष विद्या द्वारा आपके आने वाले बारह मासका हानि लाभ, व्यापार, नौकरीमें तरक्की, गिरावट, तबदीली, तन्दुरुस्ती, बीमारी, यात्रा, अकस्मात् न मालूम कारणसे धनकी प्राप्ति, किसीसे नया मिलाप, औरत औलादका सुख; तारीख पोस्टकार्डसे लेकर वर्ष भरमें पेश आने वाली सब बातोंका खुलासा यानी मासिक वर्ष फल बताकर केवल १।) रु० में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलावा होगा। बुरे ग्रहोंके शान्तिका उपाय लिख दिया जायगा। ज्योतिष विद्याका चमत्कार एक बार अवश्य देखें।

श्री महावीर स्वामी ज्योतिष कार्यालय
(V.W.C.) करतारपुर (जालन्धर)
Shree MAHABIR SWAMI JYOTISH KARYALAYA
V. W. C. Kartarpur (Jullundhar)

सम्पादक—देवदत्तमिश्र। ७४ धर्मतल्ला स्ट्रीट, स्थित इलस्ट्रेटड इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

MONSOON
SETS IN
Anophelis breeds

यह आश्चर्यजनक औषधि म
रिया बुखारके लिये रामबाण है
अगर आपके परिवारमें किसी
मलेरियासे कष्ट हो तो इसका
सेवन करें। यह लाभप्रद
कम खर्चीला है।

PANCHATIKTA
Kasaya

KAVIRAJ N. N. SEN & CO.
CALCUTTA

अहः हः
'लालशर' तोमेरे लिये अमृत

लाल-शर
(लाल शरबत)
बच्चोंको मोटा, ताजा, रखता और
रखने की प्रसिद्ध मोती दवा

सब जगह मिलता है।
डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लि०

सचित्र

चित्रमय जगत

ऐसे दिखने के लिये
आप पैसा देते हैं

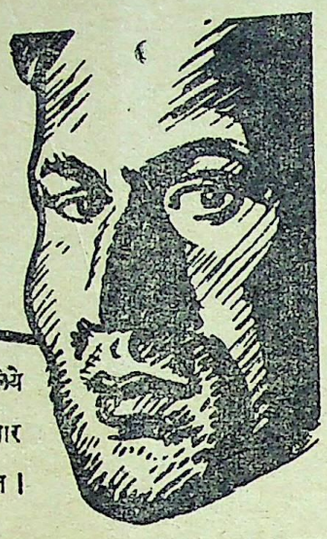

यदि आप नाई को सिर्फ़ तीन हजामत के ही लिये छः आने तक दे देते हैं तो सात दिनों में से चार दिन आप ऐसे दिखेंगे—खुरदरे और अव्यवस्थित।

ऐसा दिखना
आपके लिये लाभप्रद है।

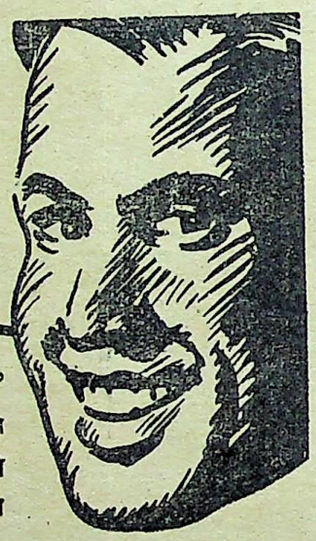

यदि आप स्वयं ही प्रतिदिन "सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड से हजामत बनाते हैं तो आप उस सुव्यवस्थित आकृति को प्राप्त कर सकेंगे जो सफलता की जननी है। आप पैसे की भी बचत करेंगे। ब्लेडों का एक पैकेट हफ्तों चलता है।

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड बाजार में सर्वश्रेष्ठ हैं। वे अतिरिक्त तेज़ी के लिये तीन स्तरों वाले श्रेष्ठतम इस्पातसे बनाये जाते हैं।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

7 o'clock
SLOTTED BLADES

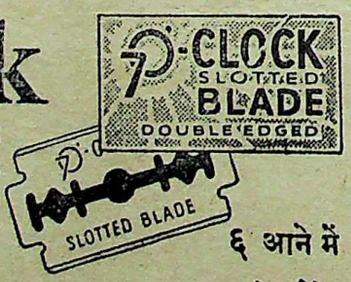

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडस्
ब्लेड जो ज़्यादा हजामत
और कम ख़र्चा देते हैं

६ आने में
५ का प्रत्येक पैकेट

जुकाम, खांसी पर अकसीर उपाय
आरोग्य
१८६६
नीलगिरि तेल
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमें काम आता है
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

१६॥) में ज्वेल्ली रिस्ट वाच

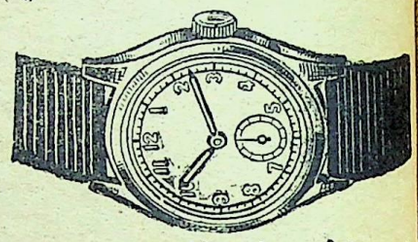

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)
एक गुना कभी या टोनो शेप क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।
एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

सफेद बाल काला

इस तेलसे बालोंका पकना रुककर और पका बाल काला पड़ा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दुगना मूल्य वापिस की शर्त लिखा लें यह तेल सिरके दर्द व सिरमें चक्कर आना आदि को आराम कर आंखकी रोशनी को बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) आधा पका हो तो ३॥) और पूरा पका हो तो ५) का तेल मगवा लें।
श्रीइन्दिरा कामैसी पो० बेगूसराय, मुंगेर

विश्वामित्र

सम्पादक—
देवदत्त मिश्र

वर्ष—३० संख्या—५१ ता० १४ जनवरी १९४८ JANUARY 14, 1948. मूल्य =) वार्षिक ६)

विपरीत

जग की आंखों में व्यथा अश्रु मेरे अंतर का गान बन गयी।

मैं उसे मचलते देख चुका
जल - जल कर पलते देख चुका
दिल की दुनियामें घुल-घुल कर
आंखों से गलते देख चुका
बन बिजली जी में गिरी मौन, अधरों पर मृदु मुस्कान बन गयी।

सब बढ़ा [illegible]व के भार नये
जीवन की बाजी हार गये
सुख की आशा की वेदी पर
रख अश्रु-सुमन सब मार गये
बन जलन व्यथा मेरे उर में आयी, जीवन - कल्याण बन गयी।

दुःख भार एक, जो ढोना है
जग का नित-नित का रोना है
हिय की सीपी के मोती को
दृग - वातायन से खोना है
औरों को व्यथा धूल का धन, मेरे जीवन में प्राण बन गयी।

—श्री हंसकुमार ति[illegible]री

आंखों के तारे

—श्री श्याम बिहारी शुक्ल 'तरल'

बिखर गये आंखों के तारे !
जल बन कर जलते अन्तर से,
पिघल पड़े झरते निर्झर से;
भू पर टपक पड़े आंसू बन कर सुस्मृतियें के क्षण प्यारे !
बिखर गये आंखों के तारे !
सुख संयोग की एक कहानी,
सुन - सुन कर हो गयी पुरानी;
फिर नवीन, फिर कुछ नवीन हो जग के अगणित कण्ठ पुकारे !
बिखर गये आंखों के तारे !
प्रणय ज्ञान की एक पिपासा,
मानव की अतृप्त अभिलाषा;
कब मिल सके एक धारा के दो अशांत, दो हृदय किनारे !
बिखर गये आंखों के तारे !

परहित बस जिनके मनमाहीं।
तिन कहं जग दुलभ कछु नाहीं ॥

विश्वमित्र

यही समय है।

अभी उस दिन तक अर्थात् १५ अगस्त तक कांग्रेसका काम था स्वतंत्रता के लिये देशकी सरकारसे लड़ना और इस लड़ाईके लिये देशको सङ्गठित, सुसज्जित और सर्वदा प्रस्तुत रखना। १५ अगस्तके बाद कांग्रेसका काम ठीक इसके विपरीत हो गया है। देशकी सरकारको सब भांति सहायता, सहयोग और बल देकर उसको हर तरह शक्तिशाली बनाना आज कांग्रेसका काम है। तब सरकार विदेशी थी अब अपनी सरकार है। कांग्रेसकी ताकत ही सरकारकी ताकत है। किसी महान परिवर्तनके बाद प्राप्त महान उत्तरदायित्वकी रक्षा करना उतना सहज काम नहीं है जितना साधारण कालमें होता। विनाशकी योजनाको कार्यान्वित करनेसे वहीं अधिक योग्यता, क्षमता और बुद्धिमत्ताकी आवश्यकता होती है निर्माणकी योजना में। विदेशी सरकारसे लड़ना उतना कठिन काम नहीं था जितना प्रगति विरोधी देशी विदेशी सभी तत्वोंसे लड़ते हुए निर्माणके पथ पर साहस और दृढ़ताके साथ अग्रसर होना है। पहलेकी अपेक्षा अधिक कठोर कार्य, त्याग और साधनाकी आज आवश्यकता है। विषम और प्रतिकूल परिस्थितियों और वातावरणमें एक देशके शासन सूत्रको हाथमें लेकर उसके उत्तरदायित्वको मान और मर्यादाके साथ कोई राष्ट्र तभी सुन्दर रूपसे पूर्ण कर सकता है जब राष्ट्रके सभी सदस्य और अङ्ग ईमानदारीके साथ अपना कर्त्तव्य पालन करें। रंगूनसे वापस आते समय राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसादने कलकत्तेमें कांग्रेस कर्मियोंको यही उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि आज हमारे सामने पहलेसे अधिक कठिन काम है और हमको उसके लिये तैयार होना चाहिये।

देशकी स्थिति किसीसे छिपी नहीं है। एकसे एक भयानक और रोमाञ्चकारी घटनाओंके समाचार दिन प्रतिदिन आ रहे हैं, शरणार्थियों पर दिन-दिहाड़े नादिरशाहीको भी लज्जित करने वाले दुष्कृत्य किये जा रहे हैं, दुश्मन तलवारसे ही सब बातका फैसला करनेको तुल गया है और काश्मीरकी सीमा और सरहद पर पाकिस्तानकी बर्बरताका नग्न-नृत्य हो रहा है। यह समूचे देशके संयम और अनुशासनकी अग्नि परीक्षाका समय है। इस परीक्षाकी सफलता और असफलतापर सद्यः प्राप्त हमारी स्वतंत्रताका भविष्य अवलम्बित है। अंगरेजोंके हटनेसे जो अधिकार और शक्ति कांग्रेसके हाथमें आयी है उसका सुन्दरसे सुन्दर उपयोग करके ही हम सामने खड़ी तमाम आपदाओं विपदाओंको निर्मल करके संसारमें अपना वह स्थान प्राप्त कर सकेंगे, देशके भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौतिक उपादानोंने हमें जिस उच्च और गौरवशाली आसनके योग्य और उपयुक्त बनाया है। अतः हमारे सामने सबसे बड़ा और प्रथम काम है आयी हुई स्वतंत्रताकी रक्षा करना। इसके लिये आवश्यक है देशमें शांति और व्यवस्था रखना। हमारी सरकारको अपनी पूरी ताकत इसी काममें लगानी पड़ी। यह देशका दुर्भाग्य ही है कि ऐसे समयमें भी कुछ ऐसे व्यक्ति निकल ही आये जो अपने नेतृत्वके लिये इस स्थितिका नाजायज फायदा उठानेकी कुचेष्टा कर रहे हैं। राजेन्द्र बाबूके शब्दोंमें यह और भी दुर्भाग्यकी बात है कि कल तक जो सरकारके एक सदस्य थे आज वही उसके खिलाफ मोर्चेबंदी कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि ये लोग समझें कि इस महत्वाकांक्षाको चरितार्थ करनेका अभी उपयुक्त समय नहीं आया। यदि उपस्थित सङ्कटोंका सामना करनेमें ये देशकी सरकारकी सहायता नहीं कर सकते, उसकी ताकत बढ़ानेमें अपना सहयोग नहीं दे सकते तो न दें किंतु स्वयम् तो सङ्कट न बनें। धैर्यके साथ उस समयकी प्रतीक्षा करें जब हमारा देश पाकिस्तान द्वारा पैदा किये गये सङ्कटों और आपदाओंसे मुक्त हो जाये। उस समय उनको राजनीतिक पैंतड़ेबाजी करने से नहीं रोका जायेगा। पर अभी उनके कलाबाजी दिखानेका समय नहीं आया। यह वे समझ लें तो इसमें उनका और देश दोनोंका हित है। अभी तो, जैसा हमारे राष्ट्रपतिने कहा है हमारा मुख्य काम है अपनेको देशकी सेवामें लगा देना।

सेवाका काम सहज नहीं है। यह बहुत बड़ी साधना और तपस्या है। भारत की यह अपनी विशेषता रही है। आज पश्चिमी सभ्यताने हमारी इस विशेषताको नष्ट कर दिया है। साधक और तपस्वीका सबसे बड़ा बल सत्य होता है। हमने अपने जीवनमें आज बहुत दूर तक असत्यको प्रतिष्ठित कर रखा है। अब तक विदेशी सरकारसे इसे बल और प्रश्रय मिला है। किन्तु अब हमारी सरकार हो गयी है। हमें अब अपने प्राचीन आदर्श पर फिर वापस आना चाहिये। राष्ट्रीय जीवनमें असत्यके प्रवेशने ही संसारमें अशांति और संघर्षकी सृष्टि कर रखी हैं। नैतिकतासे शून्य अन्तर्राष्ट्रीय धरातल संसारमें शांति नहीं ला सकता। भारत सदा ही संसारका आध्यात्मिक नेता रहा है। आज स्वतंत्र भारत पर इस नेतृत्वका नैतिक उत्तरदायित्व फिर आया है। किन्तु संसारका नेतृत्व करनेके पूर्व हमें अपनेको उसके योग्य बनाना होगा। इसीसे राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद कहते हैं कि सत्यके आधार पर राष्ट्रका चरित्र निर्माण करनेमें सहायक होना आजकी आवश्यकता है? आत्म शुद्धि और संस्कार द्वारा हमें यह सिद्ध करना होगा कि हम अपने पूर्वजोंके इस उत्तराधिकारके सर्वथा योग्य और उपयुक्त हैं और समय आने पर हम कठिनसे कठिन परीक्षामें सफल हो सकते हैं। हम अमृत पी सकते हैं तो उसी तरह निर्द्वंद्व होकर कालकूट भी घटघट-घटघट पी जा सकते हैं। इस परीक्षाका समय आ रहा है, यह बात प्रत्येक कांग्रेसमैन ध्यानमें रखें तभी हम आयी हुई स्वतंत्रताकी ही नहीं मानवता की भी रक्षा कर सकेंगे। संसारके सामने यह हमारा दावा रहा है, अब हमें उसे पूरा करना है। यही समय है।

विश्वमित्र

दो घोड़ों पर सवार

शिलांग, कलकत्ता और लखनऊमें पिछले दिनों सर्दार बल्लभ भाई पटेलकी वक्तृताएं सुनकर भारतके मुसलमान कुछ सहमे हुए से दिखायी देते हैं। यह शिकायत सुनी जा रही है कि सर्दार मुसलमानोंको संदेहकी नजरसे देखते हैं और यह अशंका प्रकट की गयी है कि सर्दारके इस मनोभावको देखते हुए मुसलमान भारतमें बहुसंख्यकोंसे निर्भय होकर नहीं रह सकते। हमारा कहना है कि जो मुसलमान भारतको अपना वतन मानते हैं और उसके सुखदुखको अपना समझते हैं और अन्य भारतीयोंकी तरह किसी भी सङ्कटके समय वे देशका हर हालतमें साथ देनेको और भारतके शत्रु का सामना करनेको—वह शत्रु पाकिस्तान ही क्यों न हो—प्रस्तुत हैं उनको सर्दारकी बातोंसे किसी तरहकी शिकायत या अशंका नहीं होनी चाहिये। कलकत्तेमें विराट जन समामें सर्दारने यह कहा था कि बहुत बड़ी तादादमें भारतके मुसलमान अभी उस दिन तक पाकिस्तान के लिये मरने-मारने पर उतारू थे और उनके जोरदार सहयोगने ही पाकिस्तानकी सृष्टि की है। अब १५ अगस्तके बाद वही भारतीय संघके प्रति अपनी राजभक्ति का राग अलाप रहे हैं। कमसे कम मैं तोहै इस भक्तिका अर्थ नहीं समझ पाता। निस्सन्देह सर्दारकी यह बात हृदयके तह तक चुभने वाली हैं, किन्तु क्या खुद इन मुसलमानोंके नेताओंने ही सर्दारको यह कहनेको वाध्य नहीं किया? चौधरी खली कुज्जमा पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने भारत संघके प्रति अपनी भक्तिका इजहार करते हुए भारतीय झण्डेका सम्मान किया था। आज ये चौधरी साहब कहां हैं? और उनके तथा वैसे ही अन्य नेता स्थानीय मुसलमानोंके आचरण क्या यह सिद्ध नहीं करते कि भारतीयताके प्रति भक्तिके जबानी जमा खर्च पर विश्वास नहीं किया जा सकता! क्या लखनऊमें एवं भारतमें मुस्लिम लीगको जीवित रखनेका फैसला करके इन मुसलमानोंने यह सिद्ध नहीं कर दिया कि अब भी वे अपनेको अन्य भारतीयोंसे भिन्न समझते हैं और पाकिस्तानकी सृष्टि करने वाली मुस्लिम लीग और उसके दो राष्ट्रोंके सिद्धांतों पर आज भी उनका पहलेके समान ही विश्वास है। और तब क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि ये मुसलमान दरअसल पाकिस्तानको अपना रहनुमा मानते हैं और अवसर आने पर अब भी ये पाकिस्तानके संकेत पर चलेंगे। तब सर्दार पटेलने यदि कुछ साफ साफ खोलकर सत्य, किन्तु अप्रिय और कटु बातें कहीं हैं तो उनसे अपनेको सच्चे अर्थमें भारतीय नागरिक मानने वाले सच्चे मुसलमानोंकी तो जरा भी नहीं घबराना चाहिये।

पाकिस्तानकी आजकी नीति युद्धकी स्थिति सन्निकट ला रही है, इस तरहकी हालतमें जिन लोगोंपर देशकी रक्षाका भार है वे किसी तबकेकी तरफसे गफलतमें कैसे रह सकते हैं। काश्मीर-पाकिस्तानकी सरहदपर जो स्थिति है वह हर हरहसे अशुभका संकेत कर रही है। सर्दार पटेलकी बातोंसे क्षुब्ध और सष्ट होनेवाले कितने मुसलमानोंने पाकिस्तानकी काश्मीरकी नीतिकी निन्दा की है? कितने भारतके मुसलमान हैं जिन्होंने यह ऐलान करके पाकिस्तानको आगाह किया है कि यदि काश्मीर या किसी मामलेको लेकर पाकिस्तानने भारतसे युद्ध ठाना तो उनको पहले भारतके मुसलमानोंकी तलवारसे लोहा लेना होगा? एक भी मुसलमानकी जबानसे जब काश्मीर या हैदराबादमें होनेवाले काण्डोंपर निन्दाका एक शब्द भी नहीं निकलता तो कैसे यह आशा की जा सकती है कि पाकिस्तानके साथ युद्धछिड़नेपर भारतके मुसलमान अपने देश और सरकारके प्रति वफादार रहेंगे? यह बात जवाहर लाल या महात्मा गांधी ही नहीं, जिनकी आज मुसलमान बात-बातमें दुहाई देते हैं, स्वयं सर्दार पटेलने भी एक नहीं अनेक बार जरा भी द्वेष नहीं है वह उसका भला चाहता है। वैसे ही भारतके मुसलमानोंको यह आश्वासन भी सर्दारने दिया है कि उनको भारतमें किसी बातका डर नहीं है। लेकिन जैसा सर्दारने कलकत्तेमें पाकिस्तानके सम्बन्धमें कहा था कि वह अपने दुश्मनोंको बाहर नहीं अपने भीतर ढूंढ़ें उसी तरह भारतके मुसलमान भयका कारण सर्दारकी वक्तृतामें नहीं अपने दिलमें टटोलें। उनकी दो घोड़ोंपर चढ़नेकी खतरनाक आदतने सर्दारको वाध्य किया है कि वे भारतके मुसलमानोंको समय रहते सावधान कर दें सचेत कर दें?

यह दुर्भाग्यकी बात है कि पाकिस्तानके बन जाने पर भी भारतमें मुसलमानों की समस्या बनी ही है और ज तक ये दो घोड़ों पर सवार रहनेकी नीति न छोड़ेंगे, जब तक उनपर लीगियोंका नेतृत्व बना रहेगा और जब तक पाकिस्तान से वे प्रेरणा और निर्देश ग्रहण करेंगे तबतक यह समस्या बनी रहेगी और तब पाकिस्तान के हशोर पर चलने वाली इत्तिहादुल मुसलमीनके हैदराबाद के सम्बन्धमें शिलांगमें भारतके गृह मंत्री सर्दार बल्लभभाई पटेलने ठीक ही तो कहा कि "मुझे विश्वास है कि हैदराबाद बुद्धि और विवेकका मार्ग पहचानेगा। लेकिन यदि यह सुमति उसे न आयी तो उसे स्मरण रखना चाहिये कि यह समस्या हैदराबाद तक ही नहीं सीमित रहेगी, इसकी प्रतिक्रिया दूर दूर तक फैलेगी। साढ़े चार करोड़ मुसलमान भारतमें रहते हैं, उनपर इसका असर पड़ना अनिवार्य है।" सत्य कठोर होती ही है किन्तु इस तरह की परिस्थिति न आने देना भारतके मुसलमानोंके हाथमें है। हम तो यहां तक कहते हैं कि भारतके मुसलमान चाहें तो, अब भी कुछ विगड़ा नहीं है, वे पाकिस्तानको भारत विरोधी नीति परित्याग करनेको बाध्य कर सकते। क्या भारतके मुसलमान इसके हद तक अपने देशके प्रति बफादार हैं? इसका जवाब तो वे ही दे सकते हैं सर्दारके अभियोगका उत्तर शब्दोंसे नहीं कामोंसे ही दिया जा सकता

स्टालिन कहां हैं !

मास्को स्थित भतपूर्वब्रेजिलियन राजदूतने बताया है कि मार्शल स्टालिनका स्वास्थ्य बहुत ही चिन्ताजनक है। उन्होंने यह भी बताया है कि मार्शल स्टालिनको लकवा मार गया जिसके परिणाम स्वरूप उनका दहिना हाथ और पैर बेकाम हो गये हैं। अब वे बैसाखीके सहारे बड़ी मुश्किलसे चल फिर पाते हैं। उन्होंने यह भी अनुमान लगाया कि स्टालिनके बाद अब मोलोटोव उनके उत्तराधिकारी होंगे। इस संवादमें कितनी सत्यता है यह तो अभी नहीं कहा जा सकता। लेकिन यह सत्य है कि ब्रिटेन अमेरिकाके अखबार और झूठके प्रचारक 'रायटर' ने न जाने कितनी बार स्टालिनके विषयमें ऐसी अफवाहें फैलाई है। युद्ध कालमें स्टालिन जब काले सागरके सोची नामक स्थान पर विश्राम कर रहे थे तब भी उनके सम्बंधमें ऐसी ही अफवाह सुनी थी और एक संवादमें तो उनके मरने तककी बात कही गयी थी। स्टालिनके विषयमें ऐसी अफवाहें फैलनेका कारण सोवियट रेडियो और अखबारोंमें 'व्यक्तिगत' बातोंको अत्यधिक महत्व न देना ही है। दूसरे देशोंमें नेताओं और उनके कुत्ते-बिल्लियोंके संवाद भी बड़े बड़े टाइपोंमें छपते हैं। लेकिन स्टालिन विश्राम करने जाते हैं, इस संवादको सोवियत पत्रोंमें महत्व नहीं दिया जाता। इस लिये विरोधियोंको तरह तरहके प्रचार का मौका मिल जाता है। स्टालिनका अस्वस्थ होना कोई अनहोनी बात नहीं है। पर, जिस ढंगसे उनकी अस्वस्थता का ढिंढोरा पीटा जा रहा है, वह बहुत ही संदेहजनक है। स्टालिन आजकी दुनिया की बहुत बडी हस्ती है। अतः उनके बारेमें जानकारी प्राप्त करनेकी सबकी उत्सुकता स्वाभाविक है।

यू०पीमें कण्ट्रोल हटा—

युक्तप्रांतमें खाद्यान्नके यातायात और मूल्यपर लगे कण्ट्रोलको उठा लिया गया। अब केवल कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, आगरा और लखनऊ आदि बड़े बड़े नगरोंमें सौ रुपये या उनसे कम मासिक आयवालोंको १ फरवरीसे राशन मिला करेगा। कुछ पहाड़ी शहरों एवं रेलवे श्रमिक, पुलिस और शरणार्थियोंके लिये भी राशनकी व्यवस्था रहेगी। युक्तप्रान्तके खाद्य एवं रसद सचिव श्री चन्द्रभान गुप्तके इस निर्णयकी हम प्रशंसा करते हैं। इस समय देशकी जैसी स्थिति है उसमें यकायक राशन उठा देनेसे कम आयवाले गरीबोंकी कैसी हालत हो जाती, यह सहज हीमें समझा जा सकता है। नियन्त्रण उठनेके बाद चीनी डेढ़ रुपये सेर खुले आम बाजारमें बिक रही है। दूसरी चीजोंसे नियंत्रण उठ जानेसे वे भी बाजारमें बिकनेके लिये निकल आयेगी लेकिन उनके दाम जरूर नियंत्रणसे बढ़े चढ़े रहेंगे। इसलिये युक्तप्रांतकी सरकारका निर्णय जनताके हितको दृष्टिगत रखकर किया गया है। आशा है अन्य प्रांतोंकी सरकारें भी ऐसी ही नीतिका अनुसरण करेंगी।

करांची और अजमेर—

पाकिस्तान और भारतमें रहने वाले अल्पसंख्यकोंकी रक्षाके प्रश्नको दोनों देशोंकी सरकारें किस दृष्टिसे देखती हैं यह अभी कुछ दिन पहले अजमेरमें और अभी उस दिन करांचीमें हुई घटनाओंके सम्बन्धमें दोनों देशोंके अधिकारियोंकी बातोंसे सहज ही समझा जा सकता है। करांचीमें दिन दहाड़े सिख गुरुद्वारेमें टिके हुए सिंधमें रहने वाले सिखों पर आक्रमण किया गया, सैकड़ोंकी तादादमें निरीह व्यक्तियोंको मारा गया, लूटा गया और गुरुद्वारेमें आग लगा दी गयी। इस घटना पर सिंधके प्रधान मन्त्री मि० खुरोने जो वक्तव्य दिया है वह बहुत ही शरारतसे भरी घृणित मनोवृत्तिका परिचायक है। दुर्वृत्तोंके हाथों सतांये गये निस्सहाय व्यक्तियोंके प्रति हमदर्दी और अपने सजातीयोंके कुकृत्यों पर पश्चात्ताप करना तो दूर रहा उलटे यह सिद्ध करनेकी बेहयायी की गयी है कि ऐसा होना स्वाभाविक ही था। आप कहते हैं कि "करांचीका शहर भारतसे आये उन शरणार्थियो (मुसलमानों) से भरा हुआ है जो सिखों और लड़ाकू तबीयतके हिन्दुओं द्वारा सताये हुए हैं। उनको सिखोंके यहां आनेकी बात मालूम होते ही फौरन उन्होंने उनके स्थान को घेर लिया, उन पर पत्थर फेंके और आग लगानेकी कोशिश की।" इस घटना में सैकड़ों हताहत हुए पर सिंधके प्रीमियर को इसका जरा भी पश्चात्ताप नहीं हुआ। उलटे उन्होंने भारतके हाई कमिश्नर श्री श्रीप्रकाश पर यह दोष लगाया है कि ऐसी स्थिति न उत्पन्न हुई होती यदि भारतीय हाई कमिश्नरने उनको स्थानान्तरित करने की व्यवस्था न की होती। मि० खुरोका यह वक्तव्य प्रकारान्तरसे भारतसे आये हुए मुस्लिम शरणार्थियोंको खुला निमन्त्रण है कि सिंध छोड़कर जानेवाले हिन्दुओं और सिखों पर भूखे भेड़ियेकी तरह टूट पड़ने को। सिंधके हिंदू पहले ही से इस तरहकी आशंका करते थे। इस कांडसेसिद्ध हो गया कि उनकी आशंकाएं निराधार नहीं थीं। यह है पाकिस्तानके अधिकारियोंकी मनोवृत्ति। दूसरी तरफ इसकी तुलनामें अजमेरकी बहुत ही छोटी घटना पर भारतके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलालने हृदयसे खेद प्रकट करते हुए जोरके साथ कहा है कि 'भारतमें रहने वाले मुसलमानोंकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। पाकिस्तान से आये हुए शरणार्थियोंके साथ हमारी सहानुभूति है और हम उनकी सब तरहसे सहायता करेंगे लेकिन इस साथ साथ यह देखना भी हमारा फर्ज है कि प्रत्येक मुसलमान यहां इज्जतके साथ सुरक्षित रहे। पाकिस्तानके आदर्श न तो आदर्श हैं न उनका अनुकरण यहां किया जा सकता है। हम चाहते हैं कि प्रत्येक मुसलमान यहां रहे, इतनाही नहीं हम यह भी चाहते हैं कि जो यहां चलेसे गये हैं वे अपने घर वापस आ जायें।"

———

अन्तर्राष्ट्रीय

जर्मनीके अमेरिकन अधिकृत अंचल के कमांडर जेनरल क्लेने दो अंचलोंके सम्मेलनमें अपनी योजना उपस्थित की है। उस योजनामें जर्मनीके हाथ कुछ क्षमता देनेकाप्रस्ताव किया गया है। क्षमता कितनी दी जायगी, कैसी दी जायगी, यह तो नहीं कहा जा सकता लेकिन लंदनके पर-राष्ट्र-सचिव सम्मेलनकी विफलताके बाद ही ब्रिटिश और अमेरिकन अधिकृत अंचलोंको एकत्र करनेके लिये बुलाये गये इस सम्मेलनके महत्वको अस्वीकार नहीं किया जा सकता। असल बात तो यह है कि इसीके लिये परराष्ट्र-सचिव सम्मेलनको जल्दीसे जल्दी समाप्त कियागया एवं ब्रिटिश और अमेरिकाके परराष्ट्र सचिवोंने लंदन सम्मेलन सफल न हो जाय इसके लिये जी जानसे कोशिश की। जर्मनीके विषयमें वहां जो निर्णय किये जाने वाले थे वे इन्होंने वहां नहीं होने दिये बल्कि उन्होंने जर्मनीके सम्बन्धमें किसी किस्मकी स्पष्ट बात करनेका मौका ही नहीं आने दिया। क्योंकि इन्होंने जर्मनीके विषयमें पहले ही से अपनी योजना स्थिर कर रखी थी। उसी योजनाको अब कार्यान्वित करनेकी व्यवस्था की जा रही है।

इधर यूनानसे जो संवाद प्राप्त हो रहे हैं, उनसे पता चलता है कि वहां जेनरल मार्कसकी सरकार कायम हो जानेके बाद यूनानीकी कठपुतली सरकारके पृष्ठपोषक बुरी तरह घबड़ा उठे हैं मार्कस सरकार कायम होनेके साथ साथ वाशिंगटन से बाल्कन राष्ट्रोंको एक चेतावनी दी गयी है कि 'इस सरकारको स्वीकार करनेसे अच्छा नहीं होगा।' अमेरिकन सरकार इतना कह कर ही निश्चित नहीं हो गयी बल्कि उसने यूनानके साथ एक नयी सैनिक संधि की है। इस संधिके अनुसार यूनान और अमेरिका मिलकर यूनान राष्ट्रीय रक्षादल गठित करेंगे। ऐलान किया गया है कि अमेरिकाकी नौ सेना निर्धारित तिथिसे एक दिन पहले ही भूमध्यसागरकी ओर रवाना हो गयी है। इस नौ सेनामें टैंक, बंदूकें, जीप और अन्यान्य सामरिक साज सामान है। साथ ही उसको एथेंसके बन्दरगाहपर ४५००० टनका विमान वाही यान, १०००० टनके तीन क्रूजर मिलेंगे, जो पूर्वसे भेजे गये हैं। इन घटनाओंपर गम्भीरतापूर्वक विचार करनेसे यही समझमें आता है कि अमेरिकन साम्राज्यवादी मार्शल योजनाके सहारे समस्त यूरोप और उसके बाद एशिया आदिमें अपना आधिपत्य जमाना चाहते हैं। यूनानमें तो वे चीनकी अवस्था उत्पन्न करते जा रहे हैं। इधर मार्कस सरकार कायम होनेके बाद अमेरिकाने यूनानमें जो कुछ किया है, वह आगमें घी डालनेके समान है। जो भी हो, अमेरिका की यह नीति अधिक सफल नहीं होगी, अन्तमें उसको पराजित होना ही पड़ेगा।

इटलीको सामरिक सहायता देनेके लिये इटली और अमेरिकाके बीच जो संधि हुई है उसकी पुष्टि इटलीके परराष्ट्र विभागसे हो गयी है। इसके पहले हीसे इटली और फ्रांस डालरामृतका पानकर अमेरिकाके हुक्म बरदार बने हुए थे। तुर्की, ईरान यूनान आदि राष्ट्र भी डालर-प्रेम बन्धनमें बंध गये हैं। पहले डालर आता है और उसके बाद सैनिक संधियां आनिवार्य हो जाती हैं। डालर-प्रेमके बन्धनमें बंधे राष्ट्रोंको अमेरिका के सामने नतमस्तक होना पड़ता है और उसकी सामरिक शर्तें स्वीकार कर लेनी पड़ती है। इटलीने भी ऐसा ही किया है। अमेरिकाको धोखा तो चीनकी चांगकाई सरकारसे होता सा प्रतीत हो रहा है। चीनकी कम्यूनिस्ट सेनाएं तीव्रगतिसे उस तीव्रगतिके सामने कितने दिनोंतक ठहर सकेंगे, यह अभी नहीं कहा जा सकता। लेकिन अमेरिकाके अखबारोंने दबी जबानसे कहना प्रारम्भ कर दिया है कि चीनको मदद देना आगमें घी डालना है। उसका नतीजा सिवा लपटोंके कुछ न निकलेगा।

ब्रिटेनके प्रधान मंत्री मि० एटलीने रूस पर जबर्दस्त अभियोग लगाते हुए कहा है कि रूसकी वर्तमान नीति सैद्धांतिक, आर्थिक और सामरिक दृष्टिसे साम्राज्यवादका नया रूप है। इसका आशय यूरोपके अन्य राष्ट्रोंको भयभीत करनेका है। हम लोग धन्य हैं कि इस देशमें हमें भाषणकी स्वतंत्रता प्राप्त है। रूस और पूर्वी यूरोपके उसके आश्रित देशों में मुंह खोलनेका अधिकार नहीं है। वहां केवल एक दृष्टिकोणकी अनुमति प्राप्य है। वहां जनतंत्रके नाम पर विरोधियोंको कुचला जा रहा है लेकिन १९४८ में समाजवादी और उदारदली यूरोपमें ऐसी सरकारोंके विरुद्ध विद्रोह करेंगे। खेदकी बात है कि एक विशेष आंदोलन, जिसका प्रारम्भ मानवकी मुक्तिके लिये हुआ है वही आज उसके बंधनोंका कारण बनता रहा है। मि० एटलीके इस वक्तव्यका आशय स्पष्ट है कि यूरोपमें सारी खूराफातोंकी जड रूस और उसका कम्यूनिज्म है। मि० एटली ने यह भी संकेत दे दिया है १९४८ में ऐसी सरकारोंको, जो मानव मुक्ति (?) के विरुद्ध आचरण कर रही है, उलट दिया जायया। अमेरिका भी आज इसी तरह की बातें कह रहा है। इन बातों से यद्यपि आंतरिक बातोंका बिल्कुल खुलासा नहीं होता तथापि यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्रिटेन अमेरिका और रूस के बीच मतभेदकी खाई चौड़ी होती जा रही है। और वह कभी भी विकराल रूप धारण कर सकती है।

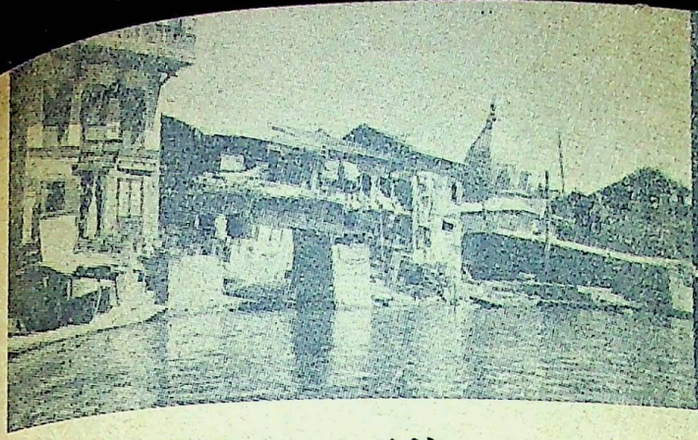

काश्मीर

काश्मीरके विषयमें महात्मा गांधीने; अपने एक प्रार्थना प्रवचनमें कहा है कि पाकिस्तान और भारतको मिल जुलकर काश्मीरके बारेमें फैसला कर लेना चाहिये तीसरी ताकतको बुलाकर फैसला नहीं कराना चाहिये। काश्मीरमें जो कुछ हो रहा है। उसका मुझे भी पता है। हिन्दुस्तानके दो टुकड़े काफी ज्यादा हैं। इस तरह काश्मीरके दो टुकड़े नहीं हो सकते। यदि हम काश्मीरके ही टुकड़े करते है तो फिर सब रियासतोंके भी टुकड़े क्यों न हों। महात्मा गांधीके कथनानुसार भारत सरकारने काश्मीरकी समस्याका समाधान करनेके लिये बराबर पाकिस्तान सरकारसे कहा लेकिन सभी प्रयास विफल रहे। पाकिस्तान समझौतेकी बातें भी करता और दूसरी तरफ आक्रमणकारियोंको हर तरहकी सहायता पहुंचाता है। एक पड़ोसी राष्ट्रका ऐसा आचरण किसी भी राष्ट्रको सह्य नहीं हो सकता।

काश्मीर भारतीय संघका एक हिस्सा है। इसीलिये भारत सरकारने आक्रमणकारियोंसे काश्मीरकी रक्षा करनेके लिये वहां अपनी सेनाएं भेजी हैं। आक्रमणकारियोंको पाकिस्तानसे सहायता मिल रही है, जिससे वे भारतीय सेनाओंका मुकाबला कर रहे हैं। उन आक्रमणकारियोंके पास आधुनिक अस्त्रशस्त्र हैं, जिसमें हथगोले तथा मध्यकोटिकी मशीन गनें सम्मिलित हैं। वे बाकायदा सैनिकों के लड़नेके समयके वस्त्र पहनते हैं। वे हालके संघर्षों में आधुनिक ढंगकी मोर्चे बन्दी करके लड़े हैं और आधुनिक रणनीतिका पूरी तरहसे आश्रय लिया गया है। बेतारके तार पत्रों और मार्क बी की सुरंगोंतकका प्रयोग किया गया है। आक्रमणकारियोंने यातायातके लिये बराबर मोटर गाड़ियोंका उपयोग किया। निस्सन्देह इन लोगोंको ट्रेनिङ्ग दी जाती रही है और एक हदतक पाकिस्तानी सेनाके अफसर उनका नेतृत्व करते हैं। इनका राशन व अन्य सामान पाकिस्तानसे ही प्राप्त होता रहा है। इन बातोंसे यह स्पष्ट हो जाता है कि (१) आक्रमणकारियोंको पाकिस्तान प्रदेशसे गुजरने दिया जाता है। (२) आक्रमणकारियोंको उनकी कार्रवाइयोंके लिये पाकिस्तान प्रदेशको अड्डा बनाने दिया जाता है। (३) इन आक्रमणकारियोंमें पाकिस्तानके प्रजाजन भी शामिल हैं। (४) ये आक्रमणकारी अधिकांशमें अपना सैन्य साज-सामान यातायातके साधन और रसद (पेट्रोल सहित) पाकिस्तानसे ही प्राप्त करते हैं। (५) पाकिस्तान के अफसर इन आक्रमणकारियोंको ट्रेनिङ्ग देते हैं, मार्ग प्रदर्शन करते हैं, और अन्य प्रकारसे सक्रिय सहायता देते हैं। पाकिस्तानके अतिरिक्त और कोई ऐसा जरिया नहीं है जहांसे ये लोग इतनी मात्रामें आधुनिक सैन्य-सामान तथा ट्रेनिङ्ग प्राप्त कर सकते हों। भारत सरकार कई बार पाकिस्तान सरकारसे कह चुकी है कि वह इन आक्रमणकारियोंको सुविधाएं प्रदान न करें क्योंकि यह भारतके विरुद्ध आक्रमणात्मक और शत्रुतापूर्ण कार्य है। लेकिन इसका कोई उत्तर नहीं मिला। गत २२ दिसम्बरको भारतके प्रधान मंत्री ने पाकिस्तानके प्रधान मंत्रीको एक पत्र दिया, उसका उत्तर नहीं मिला तब २६ दिसम्बरको एक तार दिया गया। लेकिन अभीतक उसका कोई उत्तर नहीं मिला है। इन बातोंसे स्पष्ट हो जाता है कि सामान और आदमियोंकी इन आक्रमणकारियोंको जो सहायता पाकिस्तानके प्रजाजनोंसे (जिनमें पाकिस्तान सरकारके सैनिक और गैर सैनिक कर्मचारी भी शामिल हैं) मिल रही है, उसे पाकिस्तान सरकार बन्द नहीं करना चाहती। सरकारका यह रुख केवल तटस्थ ही नहीं बल्कि भारतके जिसका जम्मू और काश्मीरकी रियासत एक अंग है के विरुद्ध आक्रमणात्मक और शत्रुतापूर्ण है। पाकिस्तानके रुखमें परिवर्तन करनेके लिये भारत सरकारने बहुत कुछ अनुभव और संतोषसे काम लिया है। लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। अन्तमें उसने इस प्रश्नको विश्व सुरक्षा परिषदके समक्ष उपस्थित किया है। भारत सरकारने सुरक्षा परिषदसे निवेदन किया है कि वह पाकिस्तानसे कहे कि वह तत्काल इस प्रकारकी मदद देना बन्द कर दे क्योंकि यह कार्रवाई भारतके विरुद्ध आक्रमण है। यदि पाकिस्तानने ऐसा नहीं किया तो सम्भव है कि आत्म रक्षाके ख्यालसे विवश होकर भारत सरकारको पाकिस्तानकी भूमिमें पदार्पण करना पड़े ताकि आक्रमणकारियोंके विरुद्ध सैनिक कार्रवाईकी जा सके। सुरक्षा परिषदसे भारतने पाकिस्तान सेयह कहनेका अनुरोध किया है कि (१) पाकिस्तानके सैन्य तथा नागरिक कर्मचारियोंको जम्मू और काश्मीर की रियासतपर आक्रमण करनेमें भाग लेनेसे अथवा सहायता देनेसे रोक लिया जाय, (२) पाकिस्तानके अन्य निवासियों

पं० जवाहरलाल नेहरू

को जम्मू और काश्मीर रियासतोंमें होनेवाले युद्धमें भाग लेनेसे रोका जाय, (३ आक्रमणकारियोंको निम्न सहायता न दी जाय, क काश्मीरके विरुद्ध युद्धके लिये अपनी सीमामें आने अथवा उसका उपयोग करने न दिया जाय। (ख) उनकी सेना तथा अन्य किसी प्रकारकी सहायता न की जाय, ग) ऐसी सब प्रकारकी सहायता बन्द कर दी जाय जिससे वर्तमान संघर्षकी अवधि बढ़ती हो।

भारतके इस आरोपोंसे पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री मि० लियाकत अली और परराष्ट्र सचिव जफरुल्ला खां बौखला उठे हैं। उन्होंने आरोपोंको असत्य बताते हुए जो वक्तव्य दिया है उसमें "उल्टा चोर कोतवालको डांटे" वाली कहावतकी पुष्टि होती है। भारत सरकार द्वारा काश्मीरकी समस्याको सुरक्षा परिषदके सामने पेश किये जानेसे लन्दनमें तरह-तरहकी प्रतिक्रियाएं हुई हैं। कुछ लोग इसके विरोधी और कुछ पक्षमें हैं। विरोधियों का कथन है कि यह तो ब्रिटिश कामनवेल्थका घरू मामला है जो भी हो लन्दनके कूटनीतिक अंचलोंमें इस प्रश्नपर बड़ी दिलचस्पी दिखायी जा रही है। इधर पण्डित नेहरूने पाकिस्तानके नेताओंको मुंह तोड़ उत्तर दिया है और बताया है कि भारतने काश्मीरके प्रश्नपर उदारता से काम लिया है।

सुरक्षा परिषदमें पाकिस्तानके विरुद्ध भारतके आरोपों पर विचार प्रारम्भ हो गया है। जानकार क्षेत्रोंमें ऐसी संभावना है कि इस विषय पर काफी वादविवाद होगा। भारतके आरोपोंके उत्तरमें पाकिस्तान काश्मीर की समस्याके समाधानके लिये जनमत संग्रह पर जोर देगा। 'रायटर' को पता चला है कि परिषदके कुछ सदस्य इसके पक्षमें है लेकिन जनमत संग्रहमें भी तो कठिनइयां कम नहीं है। जानकार क्षेत्रोंमें यह भी अनुमान लगाया जाता है कि परिषद इण्डोनेशिया की भांति उभयपक्ष को सामरिक कार्यकलाप बंद करने को कहेंगी। साथ ही परिषद घटनास्थल पर पहुंच कर जांच करनेके लिये एक कमीशन का गठन करेगी! कमीशन जनमत संग्रहके सम्बन्धमें भी जांच करेगा। राष्ट्रसंघके ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डलके नेता सर अलेक्जेण्डर कैडोगनने रायटर को बताया है कि उभय डोमिनियनके बीच समाधानके लिये जो भी व्यवस्था की जायगी ब्रिटेन उसका समर्थन करेगा। जो भी हो, फिलहाल सुरक्षा परिषदने आगामी सप्ताह तक भारतके आरोपों पर विचार करना स्थगित कर दिया है। लेकिन यह स्पष्ट कर दिया गया है कि किसी भी हालतमें १५ जनवरीके बाद स्थगित नहीं किया जायगा। पाकिस्तान सरकारके मुख्य वक्ता मि० इस्पहानीने परिषद से अनुरोध किया कि सर मुहम्मद जफरुल्ला उपस्थित नहीं हो सके हैं इसलिये अभी विचार स्थगित किया जाय। सर जफरुल्ला १५ जनवरी तक न्यूयार्क पहुंच जायेंगे। सुरक्षा परिषदके अध्यक्ष ने भारत और पाकिस्तान से अनुरोध किया है कि सयुक्तराष्ट्र संघ की ३५ वीं धाराके अनुसार काश्मीर की समस्या पर विचार किया जा रहा है। अतः इस बीच दोनों राष्ट्रोंसे मैं अनुरोध करता हूं कि वे संयुक्तराष्ट्र संघके घोषणा पत्रके विरोधी कार्य न करें। क्योंकि उससे अवस्था और भी गम्भीर हो सकती है भारतके प्रतिनिधि डा० पिल्ले ने एक सप्ताह तक कार्यवाही

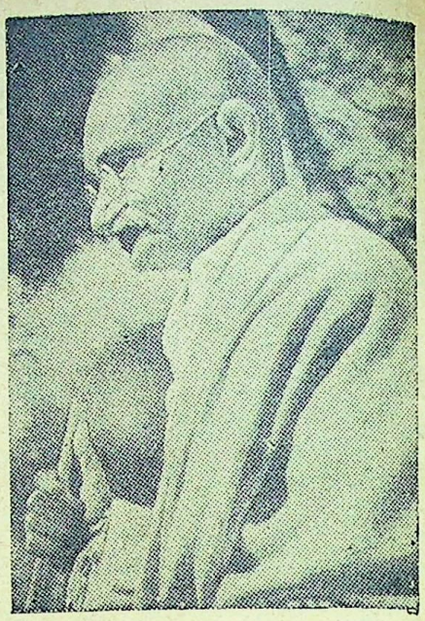

महात्मा गांधी

स्थगित करने की बात को स्वीकार किया है। अब शायद १५ जनवरी को सुरक्षा परिषद की बैठक में इस प्रश्न पर पुनः विचार होगा। उस अवसरपर भारत और पाकिस्तान दोनोंके प्रतिनिधि उपस्थित रहेंगे

भारतकी ओर से श्री गोपालस्वामी अयंगर, शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्ला और पाकिस्तान की ओर से सर जफरुल्लाह खां और मि० मुहम्मदअली शीघ्र न्यूयार्कको प्रस्थान करने वाले हैं। उधर काश्मीरका प्रश्न सुरक्षा परिषद में उपस्थित है और इधर पाकिस्तानकी ओर से काश्मीरमें जबर्दस्त हमला करने की तैयारी की जा रही है। पाकिस्तानने सुरक्षा परिषद से जो समय मांगा है, उसमें कुछ राजनीति छिपी मालूम होती है। जम्मू और पाकिस्तान की सीमा से जो खबरे मिली है उनसे पता चला है कि पाकिस्तान की सीमाके भीतर हजारों आदमी काश्मीर पर हमला करनेके लिये एकत्र हो रहे हैं। अगर स्थिति ऐसी ही रही तो सुरक्षा परिषदका निर्णय होनेके लिये ही बहुत बडी घटना घट सकती है। पाकिस्तानका रवैया अच्छा नहीं है।

यह डायरी है कलकत्ते की

लोग कानाफूसी कर रहे थे कि ५ जनवरीको कलकत्तेकी लुटिया डूब जायगी। साम्प्रदायिक दानवको तो शिकस्त किया, पर अब हड़तालका भूत सवार है।

सरदार पटेलने ऐन मौके पर काली कलकत्ते वालीकी लाज बचायी। कामरेडोंको गलत फहमी हो गयी थी कि बारदोलीके शेर मेहमानी करनेके लिये यहां ठहर गये हैं। भला उनके विराजमान रहते किसकी मजाल है कि चें भी करे!

* * *

सरदारजीकी सभा भी भंग करनेके लिये एड़ी चोटीका पसीना एक किया गया। उन्होंने फटकारा, सुनिये, गड़बड़ मत करिये। बस गड़बड़ देवताओंकी बोलती बंद।

सभा नेहरूजी की नहीं, फौलादी पटेल की थी, फिर, हमेशा एक ही हथकण्डा कारगर नहीं होता। बीसवीं सदीकी राजनीतिका तकाजा है गिरगिटकी तरह रंग बदलना। अपने लीडरको ही देखिये। कलकत्तेसे खरसावांके मोर्चे पर पहुंच गये।

* * *

सरदारजीने कलकत्तावासियोंको मार्मिक विदाई-संदेश देते हुए कहा है कि मैदानकी सभा हमेशा याद रखूंगा।

दिल्ली-बम्बई थोड़े ही है कि लाख-दो लाखकी भीड़ उमड़े। नेहरूजीने भी अपनी जिन्दगीमें सबसे बड़ी सभा यहीं देखी।

* * *

नेताजी रोडके हलकोंमें "बेखबर" को सुराग मिला है कि नेहरूजीके १५ दिसम्बर वाले भाषणसे उद्योग पतियोंके दिलमें गहरा जख्म हो गया था। उधर बरार केसरीने यह चेतावनी देकर कि समाजवाद आ रहा है कटे पर नमक छिड़क दिया था।

सरदारजी खासे अच्छे डाक्टर जान पड़ते हैं। चेट्टीजी तो आपके लिये ही अर्थ मंत्री नियुक्त किये गये हैं। अब नींद हराम करनेसे क्या फायदा?

घोष-बोस दंगलमें बोस बाबू चारो खाने चित्त। तो कलकत्तेने ४७ में मिल्लत मिशन और अपने ४८ मोडलमें औद्योगिक शांति मिशनकी मिसालें पेश कीं।

होनहार लीडर नोट कर लें। अपने व्याख्यानोंमें कलकत्तेका उदाहरण रखना न भूलें।

* * *

बंगाल प्रांतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेसके सेक्रेटरी मि० मोमिनका दावा है कि एक-दो नहीं, ११२ हजार मजदूरोंने 'आम' हड़तालमें हिस्सा लिया।

पलड़ा तो घोष महाशयका ही भारी मानना पड़ेगा। वे कहेंगे कि ४० लाख आबादीके कलकत्तेमें ३९ लाख जनताने मेरा साथ दिया।

* * *

हड़ताल-कार्यकर्त्ताओंकी एक असाधारण बैठकमें शिकायत की गयी कि हमारी बड़ी मद्द हुई। बस ट्राम वाले, छात्र, मजदूर—कोई कमबख्त हमारी सुनता ही नहीं। डिक्टेटरने तसल्ली दी कि हिम्मत हारनेसे कैसे काम चलेगा, आखिरी हथियारका प्रयोग करो।

कलकत्ताके राजपथों पर ब्रह्मास्त्र अपनी करामात दिखाने लगा। गनीमत यह हुई कि एक मंत्री महोदयकी मोटर पर उसका एक टुकड़ा ही गिरा और वह भी गलतफहमी से। मंत्रीजी उस समय शायद चायपान कर रहे थे।

* * *

सत्यनारायण पार्कमें रामचरित मानसका अधिवेशन हो रहा है। रविवार को जनता-जनार्दनके तहेदिलसे शुक्रिया अदा करनेके बाद सभापतिजीका इतना गुणगान किया गया कि मानो उन्होंने आज ही राजनीतिक-धार्मिक क्षेत्रमें पदार्पण किया है। बाबा राघवदासने तकरीर शुरू ही की थी कि भगदड़ मच गयी। बाहरसे आयी चीत्कारकी आवाज ने श्रोताओंका मानस—कपाट खोलकर करपात्रीकाण्डकी याद ताजी कर दी। बाहर निकलने पर मालूम हुआ कि एक नौसिखिया पाकिटमारकी मरम्मत हो रही है।

खोदा पहाड़, निकला चूहा!

* * *

मां-बहिनोंका सतीत्व अपहरण दंगेका सबसे बुरा रूप है, सभी यही कहते हैं। बाबा राघवदासकी नसीहत विचारणीय है। महाबली रावण सती सीता माताका कुछ नहीं बिगाड़ सका, तो दो-चार गुण्डे तो सीता जैसी नारियोंकी एक फूंकमें ही उड़ जाते।

महिला सम्मेलनको एक प्रस्ताव पास करना चाहिये।

* * *

राष्ट्रपति राजेन बाबू इसी पखवारे दो बार कलकत्ता होकर गुजरे। कलकत्तावालोंने सोचा कि रंगूनका हवा पानी खाकर लौटनेपर उनके दर्शन होंगे। दिलकी दिलमें ही रह गयी।

अक्लमारी गयी है। इन हड़ताल विरोधियों की। होने देते हड़ताल और फिर उत्पात। जब गांधी-नेहरू-पटेलको दौड़कर आना पड़ा, तो राष्ट्रपति निगाहों से बचकर कहां जाते?

० ० ०

युद्ध समाप्तिपर विजेता स्वर्ण संसार का ख्वाब देखने लगता है। कांग्रेसजनों ने भी सोचा था कि आजाद भारतमें खूब कटेगी।

राष्ट्रपतिने उनकी सारी तमन्नाओं पर पानी फेर दिया है। कहते हैं कि अब युद्धके मोर्चेसे निर्माणके मोर्चेपर आइये। जीता हुआ जुआड़ी जीतका ऐलान कर दे, तो फिर जुआड़ी कैसा?

० ० ०

तरुण जैन संघने सूचित किया है कि रविवारको एक सफल प्रगतिशील दम्पति सम्मेलन हुआ।

जो डबल नहीं यानी सिंगल हैं, पूछ सकते हैं कि हमारे लिये नो एड मिशनका साइन बोर्ड तो नहीं लगा हुआ है? जवाब साफ है, आप मेरी देख लेंगे और अपनी नहीं दिखायंगे, यह कहांका इंसाफ है? एक हाथसे कहीं ताली बजती है?

० ० ०

सरकारने चीनीपरसे कण्ट्रोल क्या उठाया, श्रमजीवियोंपर आफतका पहाड़

(शेष १२ वें पृष्ठ पर)

जीवन है मृत्युके लिये

लेखक—श्री उदित मिश्र

सोचिये, यह बात सही है या गलत ? हम लोगोंकी यात्राकी परिसमाप्ति कहां होगी, 'मृत्यु' तक। जितने काम हम दुनियामें कर रहे हैं सब मौत होने पर हमारे लिये खत्म हैं।

इसी बातको अपनी अपनी बुद्धि अपने अपने अनुभवके अनुसार हम फेर फार कर कहते हैं।

एक कहता है—मरना तो है ही आओ मौजसे मरें—उसके 'मौज' का अर्थ है शिश्नोदर परायणता।

दूसरा कहता है जब एक दिन मरना ही है तो हाय हाय—क्यों करें। जो मिले उसीमें संतोष करके बैठ रहना चाहिये। संसार भरके झगड़े बखेड़ेसे क्या मतलब ?

इसी प्रकार जितने लोग हैं सबका भाव पृथक ही पृथक है। जा रहे हैं सभी मृत्युकी ओर—मंजिले मकसूद—अन्तिम लक्ष्य वही है। पर झगड़ा है मार्ग का।

जिन महापुरुषोंने 'मृत्युका मार्ग प्रशस्त किया है, जीवन भर जिन्होंने इस विषयका मनन किया है—उनका कहना यही है कि मृत्युकी तैयारीका अर्थ है 'जीवन' उज्वल बनाना।

प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरश्चरित मात्मनः।
किन्नुमे पशुभिस्तुल्यं किन्नुसत्पुरुषैरिति।

दिन भर काम धंधा करनेके बाद जब हम चारपाई पर पड़ते हैं, तब हमें अपने दिन भरके जीवनका हिसाब लगाना चाहिये—ऊपरके उल्लेखमें इसी हिसाब की चर्चा है। यदि दैनिक कृत्यका परिणाम यह निकले कि हमने सत्पुरुषोंकी भांति काम किया—तब क्या कहना ? उस समय समझना चाहिये कि हमारी यात्रा आज सुफल हुई। यदि ऐसा नहीं हुआ तो हिसाब किताब खराब हो गया। जीवनमें गलती हो गयी, यात्रा खोटी हुई।

जितना हम अपनेको जान सकते हैं—दूसरेको हमारा क्या पता लग सकता है। हममें प्रतिभा है, हमारे पास प्रकाश है और हमारेमें साहस भी काफी है पर यदि हम अपने दैनिक जीवनके आय व्यय पर ध्यान नहीं रखेंगे तो सारी कमाई बट्टे खाते चली जायगी। यह बात समयमें सोचनेकी है। अच्छासे अच्छा कवि, लेखक, व्याख्याता, पहलवान--अपनी यात्राको अपनी असावधानीसे खोटी कर देता है। सड़क उसको जीवन भर नहीं मिलती। खड्डहीमें गिरता रहता है। झाड़ झङ्खाड़में बझ जाता है। चिल्लाता, रोता, पछताता है और 'मृत्यु' का दर्शन करनेके पहले ही 'जीवन'---समाप्त कर देता है मृत्युसे वह डर जाता है। उसके पास पहुंचनेमें उसकी सारी दुर्गति हो जाती है। उसकी कमर टूट जाती है। उसकी आंखे धंस जाती हैं, उसके हाथ पैरमें लकवेकी बीमारी हो जाती है। न उसको अन्नका स्वाद मिलता है, न वायुके झकोरेसे वह प्रफुल्लित होता है। मनुष्य समाजके लिये वह बोझा हो जाता है।

शराब पी-कर—शराबके नशेमें उपदेश करना कि नशा पीना बड़ा पाप है—की प्रवृत्ति रखने वाले 'मौत'का आनन्द पा-ही नहीं सकते, जिसके जीवनमें निरानन्द रहा ह उसकी मौत तो बड़ी दुःखदायी होगी।

जिसके लिये प्रातः काल सुहावना और संन्ध्या प्यारी नहीं जिसकी वाणीमें रस नहीं जिसके हृदयमें निर्मल पवित्र धारा नहीं। जिसके पद-पद पर निरालस नहीं उसको 'मौत' कब प्यारी लगेगी ? मौतको आलिङ्गन तो वही कर सकता है जो जीवनको प्यार करता है। बादशाह बहादुर शाहको एक क्षणके लिये मृत्युका दर्शन हुआ था- वह कहता है :

न जफर किसीका रकीब हूं।
न तो मैं किसीका हबीब हूं।
जो बिगड़ गया वह नसीब हूं।
जो उजड़ गया वह दयार हूं,।

मृत्यको देख कर रोने वाला 'जफर' न किसीका रकीब (वैरी) न हबीब(मित्र) रहा केवल उसने उजड़ा हुआ दयार (स्थान) ही अपनेको समझा क्योंकि उसने मृत्युकी तैयारी नहीं की।

तुलसी, सूर, कबीर ये कवि थे। कविता करते थे—इनकी वाणी पढ़ कर 'जीवन'में कुछ स्फूर्ति, जागृति और उत्साह आता है और आता है वह भाव जिसकी सहायतासे हम 'मरने'के लिये जी उठते' हैं।

सारी बातोंका निचोड़ यह है कि हमको जहां जाना है वहां जब तक न पहुंचें तब तक इस भ्रममें पड़ना ठीक नहीं कि हम अपनी यात्रा पूरी कर चुके। जाना है हमको मृत्युसे मिलने और मरते हैं हम रोज ही, इसी बातसे बचना चहिये।

एक बार मरनेके लिये हम संसारमें आये हैं। रोज-रोज मरनेकी भावना 'जीवन'को निकम्मा बना देती है।

छुई मुई टोना—क्षण-क्षणमें प्रसन्न तनिक देरमें रोनी सूरत बनाना। जरा सी बातमें मन मलीन करना—मौतसे डरनेकी पहचान है।

शरीर ठीक-मन गदगद और प्रत्येक सांस आनन्दसे पूरित करके रहने वाला जीने वाला प्राणी मृत्युका स्वाद ले सकता है।

पाठकों में से किसीने किसीको मरते समय हंसते हुए देखा है ? मरण कालमें आंसू लाने वाले तो बहुत देखे जाते हैं हमारी तय्यारी ऐसी होनी चाहिये कि हम मृत्यु कालमें आनन्द विभोर हो जायं एवमस्तु।

यह डायरी है कलकत्ते की

(११ वें पृष्ठ का शेषांश)

टूट पड़ा। पहले तो चीनी देवी कलकत्ते से रुष्ट होकर गंगातटपर चली गयीं। बहुत हाथ पैर जोड़नेकर लौटीं भी, तो एक रुपया ६ आने सेरसे कमपर दुकानदार बात ही नहीं करना चाहते।

गांधीवादी जमाना है। विदेशी समझ कर बहिष्कार शुरू कर दीजिये। गली-कूचीमें मारी-मारी फिरेगी।

० ० ०

पश्चिमी बंगालके मन्त्री श्री हेमचन्द्र नस्करने असेम्बलीमें एक प्रश्नका उत्तर देते हुए सरकारी दूध-योजना उद्धृत की। हृष्ठ पुष्ट सांड़ मंगाये जायंगे और गायोंकी नस्ल सुधारी जायगी।

खबरदारीसे कदम बढ़ानेकी जरूरत है। कहीं दूध-घी की नदी प्रांतमें न बहने लग जाय, वरना कृष्ण भगवान सुन्दर बनको वृन्दा बन समझ कर स्वर्गसे पुष्प विमान द्वारा दमदमके हवाई अड्डे पर पहुंच जायंगे।

—लेखक

स्वागत, स्वतंत्र ब्रह्मदेश, स्वागत !

स्वतन्त्र बर्माके महान नेता स्वर्गीय जेनरल यांग सान

बर्मामें ब्रिटिश शासन गत ४ जनवरीको समाप्त हो गया और प्रभात होनेके दो घण्टे पूर्व ऐतिहासिक समारोह के साथ बर्माके प्रजातन्त्रका जन्म हुआ, विधान परिषद पर फहराता हुआ यूनियन जैक उतार लिया गया और उसकी जगह प्रजातंत्रका तारिका मंडित तिरंगा झण्डा लहराया गया। उज्वल ज्योत्स्ना छिटकी हुई रातमें जब यूनियन जैक धीरे धीरे उतारा जा रहा था तो बर्मी नेताओं और संसार के सभी राष्ट्रोंके प्रतिनिधियों ने उसका अभिवादन किया। भूतल पर यूनियन जैकके पहुंचते ही बर्मी प्रजातन्त्र का राष्ट्रीय गीत बैण्ड पर बज उठा और तत्काल बर्मी झण्डा फहराया गया।

अधिकार हस्तान्तरितकी घोषणा दुन्दुभी, शंखध्वनि और ढोल द्वारा प्रचारित की गयी। स्वतन्त्रता समारोहका यह आयोजन परिषद उद्यानमें निर्मित विशाल मण्डपमें किया गया था, जो प्रकाशसे जगमगा रहा था। प्रायः दो हजार व्यक्ति मण्डपमें आसीन थे। १५ मिनिटके भीतर यह कार्य समाप्त होते ही परिषद भवनके भीतर कार्य आरम्भ हुआ। भवन में बर्मी व्यवस्थापक सर पर रंग बिरंगी पट्टियां बांधे, विदेशी राजदूत और कूटनीतिज्ञ अपने अपने प्रातः कालीन परिछदमें तथा सैनिक अफसर उपस्थित थे। प्रजातंत्रके अध्यक्ष साव श्वि तामक साववाते संक्षिप्त सुन्दर, गौरवमयी वक्तृताके साथ अधिकार ग्रहणकी घोषणा की और बाकायदा स्वतंत्र बर्माके विधानके जारी होनेका ऐलान किया। तदनन्तर विधान परिषदके सदस्यों ने खड़े होकर राष्ट्रगीत गया और दो मिनिट तक यू आंगसान और अन्य वध किये गये बर्मी नेताओंकी स्मृतिमें मौन खड़े रहे। यह सब हो जानेके बाद अध्यक्षने थाकिन नू को बाकायदा प्रधान मन्त्री नियुक्त किया। उसी समय नवीन मन्त्रिमण्डलने शपथ ली और थाकिन नू ने परिषदमें वक्तृता दी।

स्वतन्त्रके बर्मा प्रथम प्रधान मंत्री थाकिन नू

उधर आकाश पर बाल रविका धीरे धीरे उदय हो रहा था इधर बर्मी नेता और नवीन बर्माके मित्र विधान परिषद भवन से निकल रहे थे। सम्पूर्ण बर्माने इस अवसर पर ४ जनवरीके प्रभातका बर्माकी स्वतंत्रताके प्रभातके रूपमें स्वागत और बन्दनाकी बर्मा प्रजातन्त्रके प्रथम मन्त्रिमण्डलने यह शपथ ली कि "हम स्वतंत्रताके मार्ग पर हमें अग्रसर करने वाले अपने नेता यू आंगसानके बताये मार्ग पर हम आगे बढ़ते रहनेकी प्रतिज्ञा करते हैं।" नये मंत्रियोंने नौ शपथ

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसादका बर्मा जाते समय कलकत्ता पहुंचनेपर दमदम हवाई अड्डे पर शानदार स्वागत

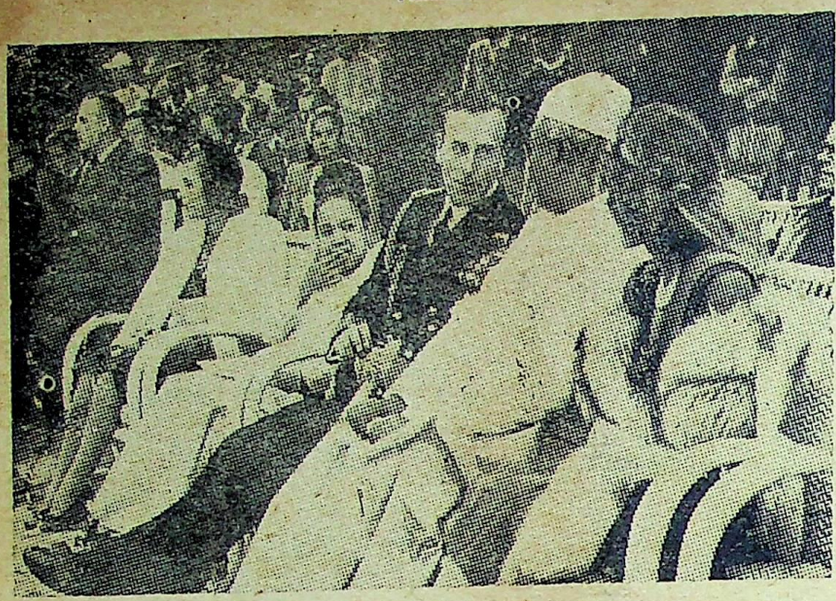

भारतके गवनर्नर जनरल लार्ड माउण्टबेटन बर्मा स्वाधीनता दिवसपर नयी दिल्लीके समारोहकी अध्यक्षतामें कर रहे हैं।

लीं जिनमें एक यह है कि "इस जीवन दान देकर भी अपनी देश और अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा करेंगे।

सरकारी तौरसे यह घोषणा की गयी कि स्वतन्त्रताके स्मारक स्तूप बर्मा भरमें सार्वजनिक केन्द्र स्थलों पर निर्मित किये जायंगे।

गवर्नरका प्रस्थान

बर्माके अन्तिम ब्रिटिश गवर्नर सर हचूबर्ट रैंकने ४ जनवरीको प्रातः काल बर्मिंघम नामक युद्ध पोत द्वारा रंगूनसे प्रस्थान किया। उनकी विदाके समय पंक्तियोंमें समवेतः हजारों बर्मियोंने हर्ष-ध्वनिके साथ बर्मामें ब्रिटिश शासनके अन्तिम प्रतिनिधिको विदा दी।

भारतकी शुभ कामनाएं

बर्माके प्रजातन्त्र संघका स्वागत करते हुए भारतके प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरूने भारतकी सरकार और जनताकी ओरसे यह संदेश भेजा है "यह महान और पवित्र दिवस है, केवल बर्माके लिये ही नहीं बल्कि भारत और सम्पूर्ण एशियाके लिये। हम भारतवासी इससे विशेषरूपेण प्रसन्न और आनन्दित हुए हैं क्योंकि हमारा अनादिकालसे नानारूपमें बर्माके साथ सम्पर्क चला आ रहा है। हमारे प्राचीन आर्य ग्रन्थोंमें बर्माको स्वर्णभूमि कहकर सम्बोधित किया गया है। यद्यपि इसके बहुत दिन बाद किन्तु आजसे दीर्घकाल पूर्व हमने बर्माको एक संदेश भेजा - भारतके श्रेष्ठातिश्रेष्ठ पुत्र गौतम बुद्धका संदेश और इस संदेशने हम लोगोंको दो हजार वर्षसेभी अधिक समयसे एक सूत्रमें बांध रखा है और बहुतसी बातोंके अतिरिक्त वह संदेश शांति और सदाचारका था और संभवतः आज उस शांति और सदाचारके संदेशकी आवश्यकता अन्य सब बातोंसे अधिक है। हमारे ये बंधन बने हुए हैं। अतीतमें राजनीतिक बंधन और सूत्रभी रहे हैं किंतु सच्ची ग्रंथि भारत और बर्माके बीच जो सदा रही है वह पारस्परिक आत्मिक हितों और समान आदर्शोंकी स्निग्ध स्वर्णिम ग्रंथि है जिसे राजनीतिक परिवर्त्तनभी नहीं तोड़ सकते। अतीतकी तरह भविष्यमें भी भारतवासी कंधेसे कंधा मिलाकर बर्मावासियोंके साथ खड़े होंगे और सुदिन या दुर्दिन हम उस समयभी एक साथ रहेंगे।

बर्माका राजसिंहासन वापस

बर्माके राजदूतने भारतके गवर्नर जेनरल लार्ड माउण्ट बैटनके सामने अपने को जब उपस्थित किया तो गवर्नर जेनरलने कहाकि आशा करता हूं कि मार्चमें मैं बर्माके अंतिम शासक थिबाके राजसिंहासनके साथ जो, इस समय भारतीय संग्रहालयमें है, बर्मा जाऊंगा और उसे बर्माके संघ प्रजातंत्रको भेंट करूंगा। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि हमारे अपने भारतके स्वतंत्रतादिवसके बाद इतना शीघ्र बर्माका स्वतंत्रतादिवस आया।

रंगूनमें डा० रा० प्रसादका अभिनंदन

बर्माके स्वतंत्रता समारोहमें भारतके राष्ट्रपति डा० राजेंद्र प्रसादने स्वयं उपस्थित होकर भारतकी शुभ कामनाएं और सद्भावनाएं प्रकट कीं। इस अवसर पर रंगूनमें डा० राजेंद्रप्रसादका नागरिक अभिनंदन किया गया। प्रायः दस हजार नागरिकोंने इस समारोहमें भाग लिया।

संसारकी शुभ कामनाएं

अधिकार ग्रहणके बाद तत्काल बर्मा प्रजातंत्रके प्रथम अध्यक्ष साव श्वियाथकने विश्वका अभिनंदन किया। आपने कहा स्वतंत्रताके नवयुगमें प्रवेश करते समय बर्मा संसारका अभिवादन करता है। हमें अपने नवीन राष्ट्राधिकार पर हर्ष हो रहा है और प्रसन्नता है कि हमारे इस शुभ अवसर पर संसार हमारे साथ है। हम बर्माके स्वतंत्रताके नवयुगमें अपना जीवन प्रारम्भ करने जा रहे हैं, राष्ट्रकी स्वतंत्रताके लिये लड़नेवालों और ब्रिटिश राजनीज्ञताके प्रति प्रगाढ़ कृतज्ञताका भाव लेकर —जिसके कारण हम अपने लक्ष्य तक इतने सुन्दर ढङ्गसे और इतनी जल्दी पहुंच सके हम संसारके राष्ट्रोंके बीच अपना स्थान ग्रहण करने जा रहे हैं इस दृढ़ सङ्कल्पके साथ कि सबके साथ हम मिलकर परममित्रकी भांति रहेंगे और विश्वशांतिकी रक्षामें अपना कर्त्तव्य पूरा करेंगे।"

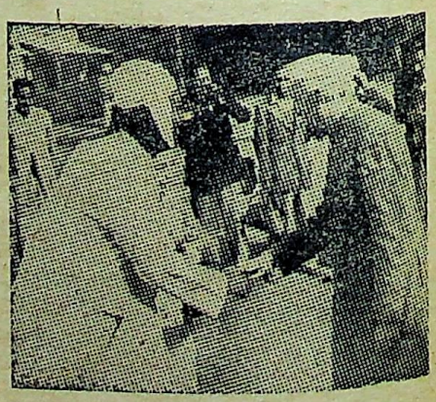

पं० जवाहरलाल नेहरू बर्माके राजदूतको स्वतन्त्रता प्राप्तिके उपलक्षमें बधाई दे रहे हैं

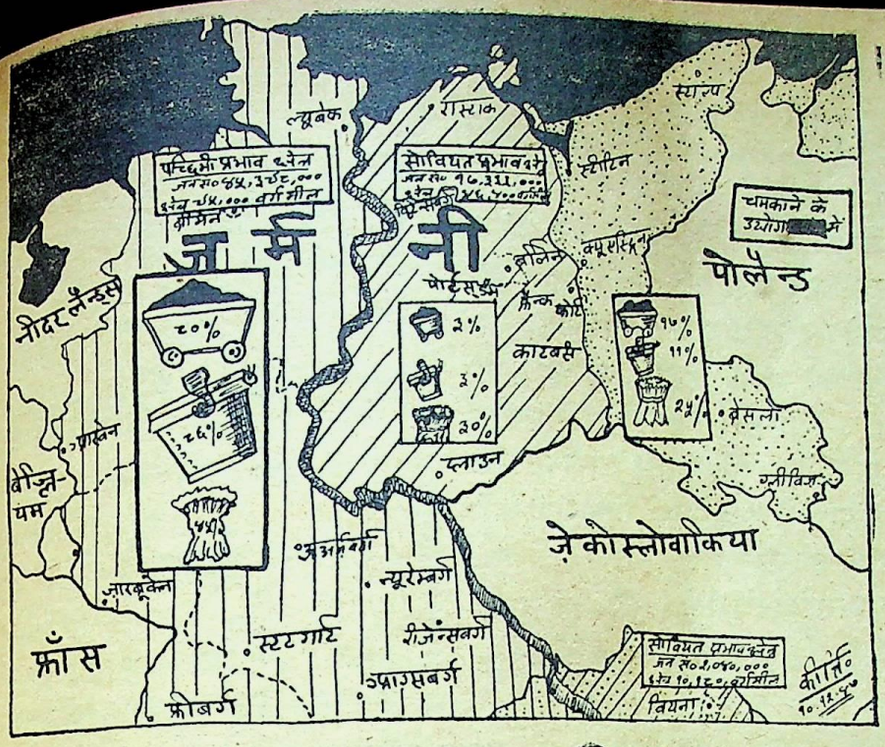

जर्मनीकी समस्याका विषम रूप

—:***:—

लेखक—श्री परिपूर्णानन्द वर्मा

जर्मनीकी समस्याने एक विषम रूप धारण कर लिया है। समाचार पत्रोंमें, विशेष कर यूरोपीय पत्रोंमें जर्मनी की समस्या पर बहुत कुछ लिखा पढ़ा जा रहा है। ब्रिटिश परराष्ट्र सचिव मि० बेविन तथा अमेरिकाके परराष्ट्र सचिव श्री मार्शलने लंदनमें विदेशी मंत्रियोंकी बैठक की असफलताका पूरा दोष रूसके सर लाद दिया है और बेविनने जिस बातको दबी जबानसे कहा था, मार्शलने उसे बड़े साफ शब्दोंमें कह दिया है कि जब तक रूसकी लिप्सा और लालच पर प्रतिबंध न लगेगा, तब तक इसी प्रकार जर्मनीकी दुर्दशा होती रहेगी और वह कभी जीवित न किया जा सकेगा।

जर्मनीको जिलानेकी फिक्र तो न रूस को है और न संयुक्त राज्य अमेरिका या ब्रिटेन को। यह तो मि० बेविन ही स्वयं कह चुके हैं कि हम कभी भी जर्मनीको ऐसा केन्द्रीय राज्य न बनने देंगे कि यहां पुनः एकतंत्र शासन प्रारम्भ हो सके या नाजीवाद' का जन्म हो। मान लेना चाहिये कि केवल नाजीवाद का प्रभुत्व रोकनेके लिये ही आज जर्मनीके चार टुकड़े हैं। एक टुकड़े पर रूसका अधिकार है, दूसरे टुकड़े पर अमेरिका का, तीसरे टुकड़े पर ब्रिटेनकी चढ़ाई है और चौथे पर दुर्बल फ्रांस भी दांत लगाये बैठा है। पर यदि उसके टुकड़े करनेका ही सवाल है तो वही क्यों नहीं तय हो जाता। जर्मनी जनता कभी पराधीन नहीं रही। उसे पराधीन रखनेका निरर्थक प्रयास क्यों हो रहा है। यह तो सभी विदेशी राज्य जानते हैं कि जर्मनीको टुकड़े कर देनेके कारण ही 'जर्मनी पितृभूमि' के नाम पर हिटलरका उदय हुआ था। यह भी सभी जानते हैं कि यदि वार्साईकी संधिमें सन् १९१८ में जर्मनीके साथ न्याय हुआ होता तो हिटलरका उदय ही नहीं होता। यह अवश्य है कि उस समय ब्रिटेन और फ्रांस यह दांत पीस कर रह गये थे कि जिस प्रकार जर्मनीने फ्रांसको रौंदा था, वे भी बर्लिन तक रौंद आते। पर वह मौका इसी बार लगा। उसका पूरा लाभ उठाया गया। हरेक अंग्रेज, फ्रेंच, रूसी तथा अमेरिकन सिपाहीने जर्मनीको वेश्यालय समझ कर खूब पैशाचिक नाच नाचा। भूखी मरती जर्मन जनता अपनी लड़कियां बेंचकर पेट चलाने लगी। पर, जर्मन इस अपमानको सदा न सहेंगे। वे कभी भयंकर हो उठेंगे। उस भयंकरताको रोकनेके लिये तलवार या बन्दूक से कब तक काम लिया जावेगा। स्टालिन या एटली या ट्रूमैन ऐसे भोले नहीं हैं कि यह बात नहीं समझते। पर उनको एक दूसरी ही चीज सता रही है।

बाल्कनका भय

रूस जर्मनीको अपने तथा पश्चिमीय राज्योंके बीचमें एक परदा बनाकर रखना चाहता है जिससे वह हंगरी, रूमानिया आदिको अपने प्रभावमें रख सके। अमेरिका तथा ब्रिटेन, फ्रांस और इटली में रूसके प्रभावको नष्ट करनेके लिये जर्मनी को निस्सहाय नहीं रहने देना चाहते। रूस चाहता है कि जब तक जर्मनी हाथमें है उसका रोंया-रोंया नोच कर अपना खजाना भर लिया जाये। इसीलिये वह जर्मनी पर कमसे कम २५ अरब रुपयेका हर्जाना लाद कर उसके उद्योग-धंधोंका सब माल हड़प कर लेना चाहता है। फ्रांस तथा ब्रिटेन रूरकी घाटीसे इतना कोयला निकाल लेना चाहते हैं कि उनके उद्योग-धंधोंकी पूरी समस्या हल हो जाये। अमेरिकाको जर्मनीके मालकी फिक्र नहीं है। वह रूसको जर्मन कारखानोंसे फायदा उठानेसे रोकना चाहता है। उसे यह सहन नहीं है कि कम्यूनिस्टोंका औद्योगिक विकास भयावह हो जावे। हिन्दीके पाठकों को यह पूरी तरहसे मालूम भी न होगा कि जर्मनीका वर्तमान बंटवारा किस प्रकार का है तथा किसके हाथ क्या माल हाथ लगा है। इसीलिये हम एक सुन्दर मान चित्र देकर वर्तमान परिस्थितिका ज्ञान कराना चाहते हैं। इस नकशेसे यह पता चलेगा कि

जर्मन-उत्पत्तिका बंटवारा

किस प्रकार है। रूसी प्रभाव क्षेत्रमें जर्मनीका ३ प्रतिशत कोयला, ३० प्रतिशत गल्ला तथा ३ प्रतिशत लोहा आता है। पोलैण्डसे रूसको १७ प्रतिशत कोयला ११ प्रतिशत लोहा और २५ प्रतिशत गल्ला मिलता है। जर्मनीका ४६,४०० वर्गमील तथा १७ ३३३,००० जनता रूसके आधीन है। पश्चिमी राज्योंको ९५,००० वर्गमील तथा ४५ ३९८,००० जनता और ८० प्रतिशत कोयला ८६ प्रतिशत लोहा, ४५ प्रतिशत गल्ला मिलता है। अतः राजधानी बर्लिन की हानि छोड़कर, पश्चिमी राज्यों को अधिकांश भाग मिला ही हुआ है। फिर भी, रूसी क्षेत्रके साथ आस्ट्रियाकी

मील भूमि मिल जानेके कारण पोलैण्डको शामिल कर लेनेसे रूसी शक्ति इतनी विशाल हो जाती है कि उसे मित्र राष्ट्र सहन नहीं कर सकते। इसलिये समझौता हो तो कैसे हो।

व्यापारका सवाल

इसके साथ ही यह भी भय है कि रूस हाथसे न जाने पाये। जहां विदेशी मंत्री सम्मेलन यानी लन्दनकी चार बड़ोंकी बैठक बिना कुछ तय किये समाप्त हो गयी, वहीं ब्रिटेनके व्यापार मंत्री रूसकी राजधानी मास्को इसलिये जा रहे हैं कि गत जुलाईमें जो व्यापारिक संधिकी वार्ता चलायी थी, वह फिरसे चालू की जाये। उस समय ब्रिटेनने रूस पर यह आक्षेप किया था कि वह अमेरिकन मुद्रा डालर में रुपये चाहता है, इसीलिये सम्मेलन सफल न हो सका। रूसने कहा कि यह बात नहीं है। हम स्टर्लिंगमें भी व्यापारिक भुगतान करनेके लिये तैयार हैं। तब समझौता क्यों नहीं हुआ। ब्रिटेनको रूसका गेहूं चाहिये। रूसको ब्रिटेनकी मशीनें। समझौता वास्तवमें इसलिये न हो सका कि जर्मन माल कौन ले जाये। उस भीतरी उलझनने फैसला होने नहीं दिया। अतएव अब मेलकी कौनसी नयी सूरत निकल सकती है।

रूसका पाखंड

जिस समय नवम्बर, १९४७ में लंदनमें यह चार बड़ोंकी बैठक शुरू हुई, "न्यूयार्क टाइम्स" के संवाददाताने २९ नवम्बरको लिखा कि सम्मेलन बड़े उदास तथा परस्परके अविश्वासके वातावरणमें प्रारम्भ हुआ है। सब लोग यह जानना चाहते हैं कि क्या रूस इस बार सचमुच जर्मनीके विषयमें निश्चित फैसला करना चाहता है। क्या रूस आस्ट्रियाके साथ भी संधि करेगा। जोहांसबर्गके "संडे एक्सप्रेस" ने ७ दिसम्बरको साफ लिख दिया कि रूस तभी समझौता करेगा जब पश्चिमी जर्मनीमें उसे टांग अड़ानेका काफी मौका मिले।

इसलिये, लंदन सम्मेलनका यह निर्णय कि जर्मनीको कभी एक केंद्रीय राज्य एक सूत्रमें इस लिये न रहने दिया जायेगा कि वहां एकतंत्र शासन न स्थापित हो जाये, निरर्थक सी बात है। वास्तविकता तो यह है कि कोई अपना क्षेत्र छोड़ना नहीं चाहता। इसका जो फल होनेवाला है, वह होकर रहेगा। जर्मनी यदि सभी युद्धोंका कारण रहा है तो उसी के कारण पश्चिमी राज्योंका संहार भी होगा। किसी दूसरेको सतानेकी सीमा होती है। अभागा जर्मनी कितना अत्याचार सहेगा। 'कबतक वह दासता भोगेगा और भूखों मरेगा।

साप्ताहिक विश्वामित्र
—: की :—
एजेन्सी
लेकर लाभ उठाइये।

पूर्ण उपहार

टाटा के ओ डी कोलोन की एक शीशी मित्रों व प्रियजनों को भेंट करने के लिये एक परिपूर्ण उपहार है क्योंकि सब लोग इसकी प्रशंसा करेंगे। यह पेंचदार शीशी बहुत आकर्षक है मूल्य उचित होनेके कारण इसे हर कोई खरीद सकता है। आनेवाले त्योहार के समय इसे खरीद कर भेंट कर दीजिये।

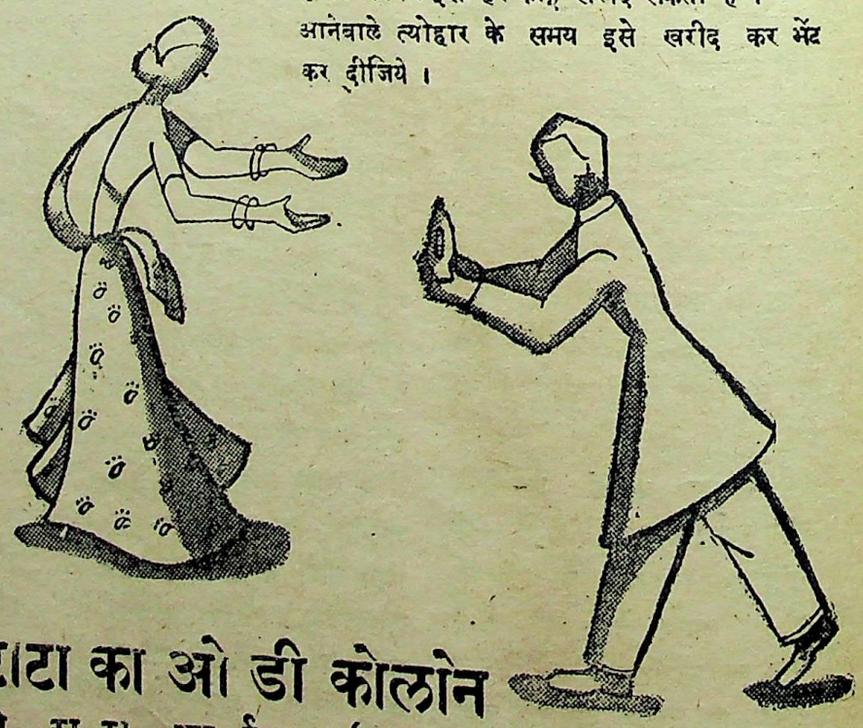

टाटा का ओ डी कोलोन
दी टाटा आईल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

सर्दारकी बातें

लेखक—श्री सत्यवाचो

भारतके उप प्रधान मंत्री वल्लभ भाई पटेलको हिन्दुस्तान और संसारने सबसे पहले बारदोली किसान सत्याग्रहके विजयी नेताके रूपमें—सर्दार पटेलके रूपमें—देखा और सुना। उस समय तक भारतके स्वतन्त्रता आन्दोलनमें आर्थिक सिद्धान्तके आधार पर आजकी विचार धाराएं स्पष्ट नहीं हुई थीं। विदेशियोंसे भारतको मुक्त करना यही उस समय प्रधान विचार धारा थी। स्वतन्त्रता आंदोलनकी प्रगतिके साथ साथ धीरे धीरे किसान और मजदूर आन्दोलन भी बढ़ने लगे और हमारे राजनीतिक आन्दोलन का प्रभावित होना स्वाभाविक था। रूसमें समाजवादी गणतन्त्रकी प्रतिष्ठा एवं यूरोप के अन्य देशोंके श्रमिक तथा आर्थिक आंदोलनोंका प्रभाव भी हमारे देश पर कम नहीं पड़ा और फलस्वरूप पहले धीरे धीरे और बादमें स्पष्ट और दृढ़ स्वरमें यह मांग की जाने लगी कि स्वराज्यकी रूपरेखा क्या होगी, उसका आर्थिक आधार क्या होगा यह स्पष्ट कर दिया जाना चाहिये। स्वतन्त्रता आंदोलनका नेतृत्व कांग्रेस कर रही थी अतः उस पर यह दबाव दिया जाने लगा कि इस सम्बन्धमें वह अपनी नीतिका स्पष्टीकरण करे। यह दबाव बाहरसे तो पड़ ही रहा था कांग्रेस के भीतरसे भी दिया जाने लगा और पण्डित जवाहरलाला नेहरू भीतरी दबाव डालने वालोंमें प्रमुख थे। इस मांगने इतना जोर पकड़ा कि १९३१ में करांची अधिवेशनमें कांग्रेसको प्रथम बार नागरिकके मौलिक आर्थिक अधिकारोंकी घोषणा करनी पड़ी और संयोगकी बात है कि सर्दार वल्लभ भाई पटेल इस अधिवेशनके अध्यक्ष थे। इसी समयसे कांग्रेसके भीतर पहले ही सेचले आते दो पक्षों—दक्षिण और वाम—का गठन आर्थिक आधार पर आरम्भ हुआ। कालान्तरमें इन धाराओं को समाजवादी और पूंजीवादी नामसे कहा जाने लगा। कांग्रेसके भीतर पण्डित जवाहरलाल नेहरूसे यदि समाजवादको प्रेरणा प्रोत्साहन और प्रश्रय मिला तो पूंजीपतियों, उद्योगपतियों और अन्य प्रतिगामी तत्वोंने सर्दार वल्लभ भाईको अपने परित्राता और संरक्षकके रूपमें पाया। हमारी आर्य संस्कृतिकी यह विशेषता है कि इसने हमेशा सर्व हिताय काम करनेकी प्रेरणा दी है। कांग्रेसने बराबर यही आदर्श सामने रखा। स्वराज्यकी लड़ाईको जनताकी, देशके किसान और मजदूरको आभाव, उत्पीड़न और शोषणसे मुक्तिकी लड़ाई कहा गया। किन्तु विदेशी दासताके विषने हमारी दृष्टि और विचार धाराको संकीर्ण, अनुदार और व्यक्ति तक सीमित बना दिया है। यही कारण है कि किसानोंके सर्दार धनपतियों और उद्योग पतियोंके "लौहकाय पुरुष" में परिणत हो गये और आज समाजवादी उनकी आंखोंमें शूलके समान प्रतीत होता है तो पूंजीपति उनको प्रिय नयनाभिराम लगता है। किसानोंका यह सर्दार, उत्पीड़ितोंका यह नेता वल्लभ भाई पटेल पूंजीपतियोंका "लौहकाय पुरुष" बनकर वही काम करता है या करनेकी इच्छा रखता है जो महाभारतका धृतराष्ट्र भीमके साथ करना चाहता था। आज इस लौहकाय पुरुषकी चेष्टाओं, उसके प्रवचनो और उसके कार्य कलापोंमें देशके जन साधारण किसान मजदूरको सन्तुष्ट करनेकी प्रवृत्तिका सर्वथा अभाव दिखायी देता है। सर्दार पटेलका यह मनोभाव बड़ा ही मर्मान्तक है। किसानों और मजदूरोंको विष दृष्टिसे सर्दारका देखना उतना कष्ट प्रद न होता यदि इसी न्याय तुलासे वे इन पूंजीपतियों और उद्योग पतियोंको भी तौलते जिन्होंने हमारे अन्तिम स्वतंत्रता आंदोलनमें देशके साथ विश्वास घात किया, विदेशी सरकार का साथ दिया, जन साधारणका शोषण किया। किन्तु सर्दारकी सम दृष्टि नहीं है। १९४२ के स्वातंत्र्य संग्राममें देशका साथ न देने वाले राजनीतिक दलोंको तो वे क्षमा नहीं कर सकते किन्तु उनसे भी हीन आचरण करनेवाले आज उनके लाड़ले कैसे बन गये? सवाल तो यह है। न्याय शील पिता अन्याय और अपराध करने वाले दो पुत्रोंमें जब एकको दण्ड देता है और दूसरेको प्यार तब वह पितृत्वके

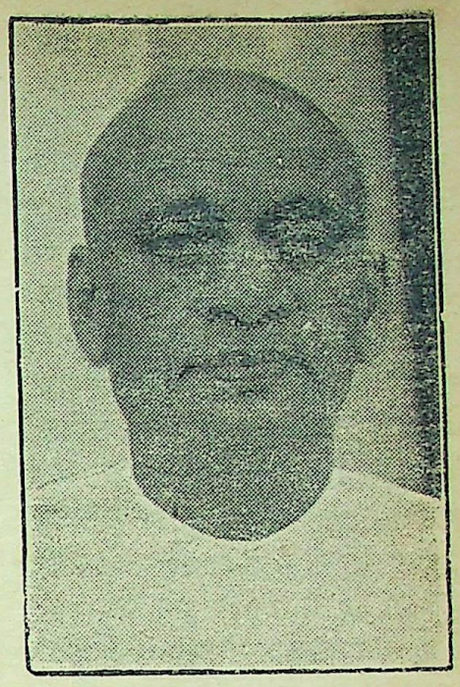

सरदार वल्लभ भाई पटेल

पवित्र अधिकारसे वंचित हो जाता है और लाड़ले पुत्रके प्रति अंध पक्षपात करके न्यायाधिकरणर के स्थानके लिये वह अयोग्य सिद्ध होता है। न्यायासनपर बैठकर मोह या स्वार्थ जन्य दुर्बलताको ज नहीं जीत सकता उसके हाथोंमें सम्पूर्ण जाति, समाज या देशका हित कदापि सुरक्षित नहीं समझा जा सकता। विचारों और धारणाओंकी शक्ति और दुर्बलताकी पहचान संक्रांति या विषम संधिकालमें ही हुआ करती है। मुक्त और स्वतंत्र भारतके सामने आज घोर संकट उपस्थित है। इस विषम संक्रांतिकालमें देशका हित, स्वार्थ सर्वोपरि है। किसी एक वर्गके स्वार्थको, वह कितना ही आवश्यक क्यों न हो, देशके सामने तरजीह नहीं दी जा सकती। हम यह मानते हैं कि आज देशके संकटके सामने अपने स्वार्थके लिये किसी वर्ग को सर ऊपर नहीं उठाने दिया जा सकता। इस तरहकी किसी चेष्टाका प्रश्रय या प्रोत्साहन नहीं दिया जा सकता। किन्तु इस स्थितिका किसीको नाजायज फायदा भी नहीं उठाने देना चाहिये। पं० जवाहर लाल नेहरूने यही स्थिति ग्रहण की है। जहां उन्होंने श्रम जीवियोंको अनुशासनमें रहनेकी चेतावनी दी वहीं उन्होंने पूंजीपतियों और उद्योगपतियोंको भी धमकाया कि उनकी उच्छृंखलताको

बर्दाश्त नहीं किया जा सकता ! व्यवसाय और वाणिज्य, उत्पादन और वितरण देशका हित ध्यानमें रखकर संचालित किया जाना आवश्यक है। इनपर नियंत्रण आवश्यक है। सरकार इस दिशामें योजना तैयार कर रही है। अभी पिछले दिसम्बर में पंडित जवाहर लाल नेहरू कलकत्ते आये थे। एसोशिएटेड चेम्बर आफ कामर्समें उनकी वक्तृता सुनकर देशी और विदेशी दोनों बनियोंको एक समान निराशा हुई। कांग्रेस अब तक जिस सिद्धांतकी घोषणा डंकेकी चोट करती आयी है। अब जब उसे कार्यमें परिणत करनेका समय आया है तो देशके पूंजीपति चाहते हैं कि कांग्रेसको पथभ्रष्ट कर दिया जाये। पर दिसम्बरमें पण्डित नेहरू की घोषणाने उनको निराश किया। देशके मुख्य और मौलिक उद्योग धंधोंको राज नियंत्रण और प्रबन्धके अन्तर्गत लाना कांग्रेस सरकारकी नीति है। पण्डितजीने यह भी कहा कि निजी व्यवसाय वाणिज्य एक सीमित दायरेतक ही बढ़ने दिया जायेगा। पण्डितजीने स्पष्ट शब्दोंमें यह कहा कि व्यवसायियोंकी निरंकुशता नहीं रह सकती। यह असम्भव है कि उद्योग धंधोंको स्वच्छंद भाव और अबाधगतिसे अपने रास्ते चलने दिया जाये। यह नहीं हो सकता कि कोई सरकार पूंजीपति और श्रमिक, किसान और जमींदारके सम्पर्कोंमें दिलचस्पी न ले। पण्डितजीने औरभी स्पष्ट शब्दोंमें कहा कि पिछले युद्धके दौरानमें व्यापारियोंने अच्छा सलूक नहीं किया। यह कहा जा सकता है कि इनलोगोंने बेहद ज्यादतियां कीं। न्यायकी कौन कहे इनको अपने सिवा और किसीकी चिंता ही नहीं थीं। पण्डितजी हैरान हैं यह देखकर कि हिन्दुस्तानमें लम्बे इनकम टैक्सके रहते भी लोगोंने अतुल धनराशि कैसे कमायी। राष्ट्र और धंधोंको क्षति पहुंचाकर इस तरहके निर्लज्ज घृणित व्यापार द्वारा जो अमित लाभ उठाया जा रहा है उसे रोकने के लिये हमें उचित उपाय और प्रणालीका अवलम्बन करनाही होगा। यह बात सही है कि प्रत्येक नागरिकको देवता नहीं बनाया जा सकता लेकिन देवतान बन सकने वालों को टेढ़े रास्ते चलनेकी उचित सजा तो दी ही जा सकती है।

पण्डितजी की इन बातोंसे कलकत्ते के पूंजीपति समाजमें बड़ा आतंक छा गया, घबराहट पैदा हो गयी। सर्दार पटेल जब उस दिन आसामसे लौटते समय कलकत्ते आये तो यहांके पूंजीपतियोंने उनके सामने अपना दुखड़ा रोया। पर अपने लौहकाय पुरुष की बातें सुनकर उनको ढ़ाढ़स मिला, प्रसन्नता हुई। और क्यों न होती ? लियाकत अलीखांने १९४७-४८ के बजट द्वारा जो चोट की थी उसे भूल जानेके लिये कहते कहते सर्दार पटेलको स्मरण आया कि लियाकत अली की चोट दिसम्बरमें पण्डित नेहरूकी बातोंको सुनकर ये कैसे भूल सकते हैं। तब आपने कहा कि आप परेशान क्यों होते हैं ? हमारा अर्थ सचिव तो आपका ही आदमी है। वह जानते और समझते हैं कि उनको क्या करना है वे योग्य, चतुर और कुशल व्यक्ति हैं। हमने जान बूझ कर ही ऐसे आदमीको इस पद पर नियुक्त किया ताकि भारतके औद्योगिक क्षेत्रका जो विश्वास हिल गया है वह फिरमजबूत हो। हमारे व्यापार सचिव (जे०एन० मामा) भी एक अनुभवी उद्योग पति हैं। उद्योग और रसद मन्त्री डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी (हिन्दू महासभाके नेता) कांग्रेसी नहीं हैं। मुझे पूरा भरोसा है कि ये सब मन्त्रिगण भारतको औद्योगिक दृष्टिसे महान बनानेमें आपका सहयोग चाहेंगे। आप यह भी देखते हैं कि मंत्रिमण्डलमें भारतके राजनीतिक जीवनके विभिन्न दलों के प्रतिनिधि हैं। आप इस धारणाको हटा दीजिये कि मंत्रिमण्डल जरा भी किसी तरह आपके हितोंका विरोधी है। क्या सर्दारकी इन बातोंका स्पष्ट ही यह अर्थ नहीं है : कि जब मंत्रिमण्डलमें कुंजीके स्थानों पर निहित स्वार्थोंके प्रतिनिधि बैठे हुए हैं तब अकेले पंडित जवाहरलाल नेहरू तुम्हारा क्या बिगाड़ सकते हैं ? इस पर विशेषटिप्पणी करनेकी आवश्यकता नहीं है, यह स्वतःस्पष्ट है। संभवतःइसीसे दिल्लीमें हुए उद्योग सम्मेलनमें सेठ घनश्याम दास बिड़लाने कहा था कि सरकारकी एक आवाज निकलनी चाहिये। इस पर अधिक न कह कर फिलहाल इतना ही पर्याप्त है कि देशके पूंजीपति जो अपने स्वार्थके लिये कुछ भी कर सकते हैं, इस स्थितिसे अधिकसे अधिक नाजायज फायदा उठायेंगे। देशका यह दुर्भाग्य है कि किसानोंका नेता सर्दार वल्लभ भाई पटेल पूंजीपतियोंका लौहकाय पुरुष बन कर उस स्थितिको सम्भव बनानेमें सहायक है जिसका अनिवार्य परिणाम होगा कांग्रेसमें फूट !!!

—*—

पांच सौ रुपया इनाम

(एक आश्चर्यजनक अद्भुत ईजाद)

मैस्मरेज़िम और जादू की शक्ति से तैयार की हुई यह अंगूठी अनिष्टकारी ग्रहों का प्रभाव दूर करने में अलौकिक शक्ति का परिचय देती है। इस अंगूठी को पहनने वाला अपनी हर प्रकार की कामना पूरा करने में सफल हो जाता है। प्रेम और मुकदमे में सफलता स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा कीर्त्ति उसके पांव चूमती है। एक ही रात में इस अद्भुत अंगूठी के गुणों और करामात से प्रभावित होना ही पड़ता है।

एक अंगूठी का मूल्य सिर्फ २)।
एक साथ तीन अंगूठी मंगाने पर ५)।
पेकिङ्ग और डाक खर्च अलग

—: पता :—

महाकाली आश्रम नं० २४७ कानपुर

दो दर्पोन्मत्त जनतन्त्रोंका संघर्ष

—:***:—

लेखक—श्री रतनलाल जोशी एम० ए०

अमेरिकाके राष्ट्रपति ट्रूमैन

१२ मार्च, १९४७ के प्रभातकालमें अमेरिकाके उर्वर प्रांत मिसौरीके एक व्यक्तित्वहीन प्रतिनिधिने, जो अपने नेताके अकस्मात् अवसानके फलस्वरूप सहसा अप्रत्याशित रूपसे अमेरिकाका प्रेसिडेण्ट बन गया था, अमेरिकाकी वैदेशिक नीतिका दिशा परिवर्तन करते हुए एक महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया जिसे भविष्यका इतिहासकार 'ट्रूमैन-सिद्धांत' की संज्ञा देगा। अमेरिकाकी राजनीतिक परम्पराका यह वक्तव्य भी ऐतिहासिक शिलालेख कहलायेगा क्योंकि इस वक्तव्यने अमेरिकाके निर्लिप्त एकांतवाद और अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें हस्तक्षेपहीन तटस्थताको सदैव के लिये त्याज्य घोषित कर दिया है। ऐसा प्रतीत होता है मानो अमेरिका अंकुरित होनेकी प्रबल महत्वाकांक्षा वाले सशक्त बीजकी भांति अपने वाह्य छिलके को तोड़ कर बाहर निकल आया हो। अमेरिकाकी यह साहसपूर्ण विज्ञप्ति व्यक्त करती है कि अमेरिकाने अपना राजनीतिक शैशवकाल समाप्त कर दिया है और अब वह इतना वयस्क हो गया है कि ब्रिटेनके संरक्षणका स्वयं परित्याग करके वह अकेला ही निर्भीक होकर अपनी महत्वाकांक्षाओंकी पूर्ति करना चाहता है। ऐतिहासिक परम्पराकी पार्श्वभूमिमें इस नये परिवर्तनका मूल्यांकन इस प्रकार किया जा सकता है कि फ्रेंकलिन रूजवेल्टके राजनीतिक सिद्धांत अपनी प्रकृत परिणति पर पहुंच गये हैं और अमेरिका यूरोपके राजनीतिक नेतृत्वको परित्याग कर चुका है—आज वह यूरोपकी कूटनीतिका आज्ञाकारी सेवक न रहकर उसका स्वामी बन बैठा है। ट्रूमैनके वक्तव्यकी यही भाव भूमि है।

अमेरिकाके राजनीतिक क्षेत्रोंमें तो इस वक्तव्यकी व्यापक चर्चा स्वाभाविक ही थी किंतु अभी तक अपनी ही परिधि में केन्द्रित अमेरिकनोंको यह आशा नहीं थी कि सारे संसारका राजमञ्च इस घोषणासे विचलित हो जायेगा। अतः जब उन्हें इस घोषणासे सम्बन्धित बाह्य प्रतिक्रियाओंका ज्ञान हुआ तो उन्होंने अपनी संकीर्ण धारणाओंको दोहराया और गम्भीरताके साथ उसकी मान्यताओंको समझना शुरू किया। यही कारण है कि 'न्यूयार्क हेराल्ड' जैसे प्रसिद्ध पत्रने भी एक सप्ताह बाद इस वक्तव्य पर टिप्पणी लिखी और उसे यह कहना पड़ा कि किसी भी राष्ट्रके कर्णधारने ऐसी घोषणा पहले की। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें इस धारणा का अभिप्राय यह है कि अमेरिकाका सुरक्षा क्षेत्र पूर्वमें दर्रेदानियाल और अरब राष्ट्रों तक है और पश्चिममें जापान और प्रशांत महासागरके दूरस्थ द्वीप समूह तक विस्तृत है। संक्षेपमें, अमेरिकाने अपना राजनीतिक व्यक्तित्व इतना विराट घोषित कर दिया है जहां कभी सूर्य अस्त नहीं हो सकता है अर्थात् 'पेक्स ब्रिटेनिया' के भग्नावशेष पर 'पेक्स अमेरिकाकी प्रतिष्ठाका प्रयत्न किया जा रहा है।

एंग्लो-अमेरिकन जनतन्त्र

'ट्रूमैन-सिद्धांत' के विराट क्षेत्रकी परिधिका केंद्र बिंदु है लोकतंत्र। लोकतंत्रकी रक्षाकी प्रेरणाने ही 'ट्रूमैन-सिद्धांत' को जन्म दिया है—अधिकांश पाश्चात्य राजनीतिज्ञोंका यही मत है। ट्रूमैनने भी जनतंत्रकी रक्षाका संकल्प करते हुए नवीन वैदेशिक नीतिका शिलान्यास किया है। जनतंत्रके प्रति इतनी अगाध श्रद्धा भक्ति भावनाके प्रदर्शनसे एशियावासियों को अमेरिकाकी ईमानदारी और निर्विकार शुभेच्छाके प्रति एकदम श्रद्धालु नहीं हो जाना चाहिये। क्योंकि पाश्चात्य देशोंका लोक व्यवहार आंतरिक यथार्थसे बिल्कुल भिन्न होता है। राजनीति और जीवनकी नैतिकता वहां एक ही सत्यके रूपांतर नहीं

अमेरिकाकी परराष्ट्र नीतिके विरोधी हेनरी वालेस

है। जनतंत्रकी रक्षाके संकल्पकी जो आवृत्ति अमेरिकाके राजनीतिक नेताओं द्वारा की जा रही है वह कूटनीतिका एक आवरण मात्र है। असलियतका केवल मुलम्मा ही उसके ऊपर लगाया जा रहा है। जनतंत्रका जो नकशा हमारी कल्पना में अङ्कित होता है वह नकशा अमेरिकाका नकशा नहीं है—सारी पाश्चात्य जनतंत्र-प्रणाली जनतंत्रकी जो हमारी धारणा है उसके साथ साम्य नहीं रखती। पाश्चात्य जनतंत्रका आधार वस्तुतः वैयक्तिक स्वातंत्र्य और मुक्त एवं निर्द्वंद्व आजीविकोपार्जन इन दो प्राचीरों पर प्रतिष्ठित है—जीवनके विकासके लिये व्यक्तिगत स्वातंत्र्य की आवश्यकता है किंतु व्यक्तिगत स्वातंत्र्यकी भी मर्यादा होनी चाहिये-व्यावहारिक जीवनमें प्रत्येक नागरिकको उस मर्यादाका अनुभव होता है। पाश्चात्य देशोंमें इस मर्यादाका निश्चित मानदंड न होनेके कारण वहांके सामाजिक जीवन में वैषम्यकी परिस्थितियां इतनी गहराई तक पहुंच गयीं कि समाजवाद कई कृत्रिम खण्डोंमें विभक्त हो गया और ये खण्ड परस्पर प्रतियोगिता और संघर्ष करने लगे हैं। साम्राज्यवाद फासिज्म, नाजीवाद, पूंजीवाद एवं कम्यूनिज्म इस वैषम्यके ही अंकुरित बीज हैं। पाश्चात्य जनतंत्रका दूसरा प्राचीर मुक्त आजीविकोपार्जन है। आजीविकोपार्जनमें स्वाधीन कर्तृत्वको काफी महत्व देना चाहिये। मन और कर्म की स्वाधीन प्रेरणा और प्रक्रियाके बिना उपार्जनके क्षेत्रमें यथोचित सफलता नहीं मिल सकती। किन्तु मर्यादाका प्रश्न यहां भी अनायास ही आ जाता है! यह मर्यादा मनुष्यत्वकी मर्यादा है। मनुष्यत्व को ही जीवनके सारे प्रयत्नोंका मानदण्ड माने बिना कर्म क्षेत्रके विकारोंका परिहार नहीं होता। जीविकोपार्जनमें मनुष्यत्वके लक्ष्यके अभावोंके कारण सारी प्रणाली ही दूषित हो जाती है पूंजीवादका विकास उपार्जनमें मनुष्यत्वकी भावनाका तिरस्कार करनेसे ही हो पाया है। इन दो तथ्योंके प्रकाशमें ही हमें पाश्चात्य जनतंत्रका मूल्यांकन करना होगा अन्यथा हमारी विचार प्रगतिकी भांतिके अतिरिक्त और कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। 'ट्रूमैन-सिद्धांत' के साथ प्रासंगिक रूपसे जिस जनतंत्रका उल्लेख किया जाता है उसका नग्नरूप पहिले हमें देख लेना होगा।

प्रसुप्त ज्वालामुखी

एंग्लो अमेरिकन जनतन्त्रवादके संरक्षणका ब्रिटेन और अमेरिकाने जिस प्रकार अपने कम्यूनिस्ट-विरोधी जेहादका मूलमंत्र बना रखा है उसी प्रकार सोवियट रूसने भी अपने लिये एक मूलमंत्र खोज

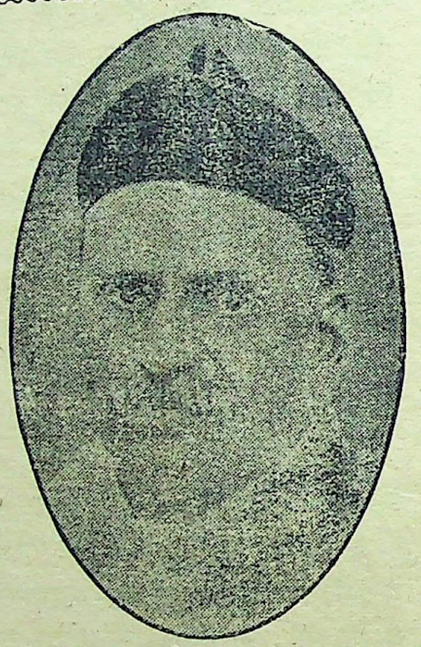

बिहारके नये गवर्नर श्री लोक नायक अणे

लिया है जिसका नामकरण उसने भी 'जनतंत्र' ही किया है। लेकिन उसके जनतंत्रकी परिभाषा एंग्लो-अमेरिकन जनतंत्रसे भिन्न है। जिस प्रकार एंग्लो, अमेरिकन जनतंत्र वस्तुतः पूंजीवाद और साम्राज्यवादको संयुक्त आत्माका ऊपरी लिबास है उसी प्रकार सोवियत प्रचारित जनतंत्रवाद भी कम्यूजिज्मका बाह्य आवरण है। इस प्रकार आजके अंतर्राष्ट्रीय रणक्षेत्रमें दो विभिन्न विचार धारायें जनतंत्रकी आड़ लेकर लड़ रही हैं। दोनों महान शक्तियां यह विश्वास कर चुकी हैं कि जो कुछ भी वे कर रहे हैं वह एक पवित्र अनुष्ठान ही नहीं, वरन मूलभूत नैतिक दायित्व भी है। इस विश्वास ने एक ही प्रहारमें सारे अंतर्राष्ट्रीय मनोजगतको दो खंडोंमें विभक्त कर दिया है। विडम्बना यह है कि दोनों खंडोंका युद्ध-घोष एक ही है। जनतंत्रकी रक्षा दोनोंके क्रूसेडका आधार है।

सोवियत रूस और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका इस पारस्परिक प्रभुत्व प्रतियोगितामें इतने गहरे उतर गये हैं कि वर्षका कोई भी सप्ताह ऐसा नहीं बीत रहा है जिसमें दोनों राष्ट्र एक दूसरेपर आक्रमण प्रत्याक्रमण न करते हों। सशस्त्र आक्रमण ये अवश्य नहीं हैं किन्तु सशस्त्र आक्रमणों से भी प्रबल ऐसे शाब्दिक आक्रमण हैं जो नरमेधकी भावभूमिको सौ गुनी अधिक विस्तृत करते हैं। ट्रूमैन और अमेरिकन कांग्रेसके प्रतिनिधियोंकी काफी संख्या जिस आवेशमयी भाषामें अपने वक्तव्य देते हैं उनसे ऐसी आशंका हो सकती है कि अमेरिका युद्धकी चुनौती दे रहा है। मालोतोव और अन्य रूसी प्रतिनिधियोंके आरोपोंमें भी ऐसा ही अनियंत्रित आक्रोश और उत्तेजना रहती है किंतु असलियत यह है कि दोनों राष्ट्र सशस्त्र युद्धसे डरते हैं—पिछले बारह मासमें ऐसी परिस्थितियां तुर्की, ईरान और कोरियामें आयी कि दोनों राष्ट्रोंने अपनी सेनायें एक दूसरेके सामने अड़ा दीं किन्तु तत्काल ही दोनों कोई बहाना लेकर पीछे हट गये। लेकिन इसका अभिप्राय यह नहीं है कि अनंतकाल तक यह शाब्दिक युद्ध अमूर्त ही बना रहेगा और दोनों ओरके दायित्वहीन वक्तव्योंसे प्रसुप्तज्वालामुखीमें विस्फोट नहीं हो सकेगा। दोनों राष्ट्रोंके कर्णधारोंको इस परिस्थितिका ज्ञान है और दोनों इस अभिनयकी अंतिम परिणतिसे भी परिचित हैं। किन्तु वस्तु स्थितिके तंतु इतने उलझ गये हैं कि जितना उन्हें सुलझानेकी चेष्टाकी जा रही है उतना ही वे उलझते जा रहे हैं। आजके अंतर्राष्ट्रीय राजतंत्रके साथ यही क्रूर प्रवंचना बद्धमूल हो गयी है जो तृतीय महायुद्धकी परिस्थितियोंको प्रतिदिन निकट लाती जा रही है।

नारी का सौदा

कहानी

ले० – श्री राम शर्मा 'राम'

अपने स्वभावके विपरीत, झुंझला कर, पांच वर्षके ममीने मांसे कहा—मैं यह दलिया नहीं खाता....इतना...कडुवा'

ममीकी झुंझलाहटको देखनेके साथ राधाने उसकी बातको सुन लिया। कई और समय होता, तो निश्चय ही, वह उसे फटकार देती। कह देती 'खाता है तो खा, नहीं तो छोड़ जा, बलासे मेरी। किंतु उस समय, सचमुच ही, उसके मनमें इतना साहस नहीं पैदा हुआ कि वह अपने बच्चेसे इतना भर भी कह देती उसे डांट देती। न मानता, तो उसके एक चपत ही मार देती। वरन इसके विपरीत, उस समय तो राधाका मन स्वयं अपने आपमें ही इस प्रकार छटपटा गया कि जैसे उस पर कोई प्रहार हो गया। एकाएक ही, उसके अंतरमें आंधीका इतना बड़ा झोंका उठ आया कि पल मारते उसे जाने कहांसे कहां उड़ा ले गया। मुंहके सामने चौखट की दीवट पर दीया टिमटिमा रहा था। लगा कि वह भी असंतोष और राधाके प्रति झुंझलाहटसे पूर्ण था। क्योंकि जैसे ही वह हवाका स्पर्श पाता, तो इतने जोर से झपक खा जाता कि जैसे बुझा...अब ज्योतिहीन हो जायगा। दोष उसका भी नहीं था। वह भी तैल रहित था, महीनों और वर्षोंकी उसमें कीचड़ जमा थी, उसीका आश्रय उस समय बातीको मिल रहा था। अ यथा उसमें जलनेका साहस नहीं था। वह निष्प्राण था।

अभी कुछ देर पूर्व, बस्तीका धनिक, साहू जगजीवनलाल उसके घर पर होकर गया था। वह मितव्ययी, धेले-धेले पर जान देनेवाला सूदखोर जब राधासे अपने रुपये मांगने आया, त उसके मनमें एक प्रस्ताव था कि वह राधाका मकान और जमीन ले ले और रुपये चुकता कर दे। इस प्रस्तावकी आड़में जगजीवनके मनमें कुछ और भी था। किंतु उसे राधाके सामने रखनेका उसमें साहस नहीं। साहू आत्माका दुर्बल था। परंतु उस दिन जिस उदार और सरस दृष्टिसे उसने राधाकी ओर देखा, उससे अवश्य ही, उसके अंतरका छाया-चित्र दिखायी देता था। लेकिन यह संदिग्ध था कि उस युवा, सुन्दर और वैधव्यके द्वार पर बैठी हुई राधाने उस चित्रको पहचान लिया और समझ लिया था।...हां, उसने न देखा ही, न समझा ही। अपितु, जब साहू जगजीवनलालने अपने रुपयोंका प्रसंग उठाया और यह बताया कि सूद सहित दस हजार रुपये हो गये, तो निश्चय ही, राधा को इतना सुनना, अधिक सुखकर नहीं लगा। जीवन सागरके जिस किनारे पर वह खड़ी थी, मानो वहांसे बरबस ही उसे सागरके अन्तरालमें फेंक देनेकी उस जगजीवनलाल ने चेष्टा की थी। मानस सागरमें जो गहरी और उत्ताल तरंगे उठ रही थीं वे जैसे चीत्कार करती हुई राधाको खा जाना चाहती थीं। यही कारण था कि राधा डर गयी। वह कांप गयी। इतना ज्यादा पैसा और उसके पास पाई नहीं। अपनी रोटियोंका साधन नहीं। कदाचित, इसीलिये, उसे लगा कि जीवनके जिस विशाल तटपर वह खड़ी थी, वहांकी बालू धीरे-धीरे उसके परोंके नीचेसे निकलने लगी... राधा पल-पलपर स्वतः ही गहरे पानीकी ओर जा रही थी, मरने—शायद तर जाने के लिये।

निःसन्देह उस समय राधा चौक गयी कि जब साहू जगजीवन लालने उसे फिर टंकोरा--'सुना, राधा देवी ! मैं अब अधिक समय नहीं दूंगा। तुम्हारे पति रामचरणको गये दो वर्षका समय हो गया। तबसे तुमने एक पैसा नहीं दिया। ब्याज भी नहीं।'

बात सुनकर, राधाने अपना थोटोंपर रखा हुआ मुंह उठाया। दस हजार रुपये कितने होते हैं, इसका विचार भी उसने नहीं किया। वरन, उसने तो अनुभव किया कि यह साहू मूर्ख है,—शायद दम्भी ! भला जिसके पास खानेको नहीं, दस पैसे नहीं, उसीसे इतने रुपये लेते हैं। निदान, उसने ऊपर आसमानकी ओर देखते हुए कह दिया—'लालाजी, आपको रुपया नहीं मिलेगा...नहीं मिल सकेगा।'

'नहीं मिलेगा,—क्यों !' बात सुनते ही, जगजीवन लालने कहा—रुपया तो देना पड़ेगा, राधा देवी !'—वह बोला तुम रामचरणकी पत्नी हो, घर और जमींनकी मालकिन; कानून कहता है, रुपया तुमसे ही लिया जा सकेगा।'

इतना सुनकर राधाके मनमें आया कि कह दे—तुम जाओ, चले जाओ, तुम ! किन्तु इतना न कहकर,अपितु मुसकराते हुए अपने सूखे दांत निकालकर उसने कहा—'देखते हैं आप, यहां रोटियों का सहारा नहीं।'

यही स्थल था कि जहांपर साहू जगजीवनलालके मनमें आया कि वह राधासे कहे, रुपया नहीं, ता न सही। जमीन तो हैं, यह मकान। इसे ही मेरे नाम कर दो। लेकिन जब यह भी उसके मुंह तक आकर रह गया, तो तब, जगजीवनके मनमें एक और विचार उठ आया। वह मन-ही-मन आकुल और बेचैन भी हो गया। एकाएक ही, मस्तिष्क में इतनी गर्मी आयी कि लगा स्नायुओंने पूरे बलके साथ उसके मन और मस्तिष्क को जकड़ लिया। उसी क्षण एकाएक जगजीवन लालके मुंहसे निकला—'इस जीवनका बोझ उठाने लिये और पूरी मंजिल तय करनेके लिये, सभी कुछ किया जाता है, राधा देवी ! मेरे सामने भी जब रुपयोंकी बात आती है, तो

सोचता हूं, हां, समस्या जटिल है। और देखता हूं, मेरी तरह तुम भी अकेली हो.... निस्सहाय हो, तुम !'

सम्भवतः राधाने बातका मर्म नहीं समझ पाया। इसीसे उसने मत नहीं दिया। केवल जगजीवन लालकी ओर अपनी भारी बनी हुई दृष्टिको उठा दिया।

जगजवीन लालने फिर कहा—'तुम सोच लो। तुम समझ लो।'—वह बोला 'यह रुपया क्या, मेरा सभी कुछ तुम्हारा बन सकता है राधा देवी! जीवन कट जायगा। इस शून्य और एकाकी जगजीवनको भी सहारा मिल जायगा।'

आश्चर्य था इतनी बात सुनकर भी राधाने उत्तर नहीं दिया। उसने अपनी आंखोंके उठे हुए पलकोंको भी नहीं फिराया। मानों उसने कुछ सुना ही नहीं। जितना सुना, वह उसके मस्तिष्कमें नहीं आ सका था।

और जगजीवनलालने अवसर पाकर जो बात कह दी, वह इतनी सरल और सुगम तो थी नहीं कि उसे वह कभी भी कह सकता था। किसी से भी। जब वही बात उसे राधासे कहनी थी, तो उसने पहिले उस सुन्दर और युवा नारी की विवशता वेदना और आत्म-पीड़ाको समझ लिया था। वह व्यावसायी था,—सूदखोर ! अतएव, जो सौदा करनेके लिये वह आगे बढ़ा उसके लाभ-अलाभ को समझ चुका था। उस समय राधा अकेली थी। दिन और रातके मध्यमें सन्ध्या आ गयी थी। दिन भरके थके पंछी अपने घोंसलोंमें विश्राम करने जा रहे थे। उनकी तरह, प्राणोंका छोटा-सा स्पन्दन अपनी छातीमें लिये जगजीवनका दिल धड़क रहा था। रात उसके सामने खड़ी थी। वह कितनी रहस्यमय थी, कितनी हर्ष और वेदनासे पूर्ण....

उसी समय, जगजीवन लालने कहा—'राधा रानी जीवन बड़ा है···जिन लहरों पर यह खड़ा है, उनका क्या भरोसा कि किस क्षण बीच मंझधारमें हमको डुबो दें....पार भी कर द, ये लहरें !'

इतना सुनकर राधाने सांस भरी और छोड़ दी। उसने अपनी दृष्टि भी झुका दी।

जगजीवन बोला-'तुम जिस जीवन की दहलीजपर खड़ी हो, वहां अभी दिन की दोपहरी है... सांझकी शीतलता तो अभी दूर है. राधारानी ! रात अदृश्य ! भला यों कैसे रहोगी, कैसे काटोगी, भरी दोपहरीके ये दिन ! यहां आग ही तो है --इच्छा और अभिलाषाओंका खेल !'--उसने कहा तुम्हारे सामने तो जीविकाका भी प्रश्न है—मान और अपमानका प्रश्न !'

सुनते ही एकाएक राधाने अपना झुका हुआ सिर ऊपर उठाया। उसने रुखे और वेदनापूर्ण होंठोंसे मुसकरा र कहा -'तुम यही कहोगे --मुझे यही सुनाओगे तुम !'

सुनकर, बरबस ही, जगजीवनने दांत निपोर दिये थे, राधा ! राधाने कहा तुम निर्लज्ज हो ! तुम कामी !

सुनतेही, मानों जगजीवनकी जिह्वापर ताला लग गया। उससे कुछ नहीं कहा गया।

राधा बोली-'लालाजी, जानती नहीं हूं, जब विपत्ति आती है, निर्बलता और असहाय जीवनकी थाती किसीको मिलती है, तो न सुनने योग्य बातें भी उसे सुनायी जाती है ! ··· हां, तुम्हारी कर्जदार जो ठहरी राधा, तो क्यों न कहो तुम कि राधा यौवनमयी है .... राधा—'

बीचही में, एकाएक कठिन बनकर जगजीवनलालने कहा—तुम भ्रममें हो, राधा ! सच।

राधाने कहा-'ऐसाही भाग्य है, मेरा ! आप कहें। कहते जायें।'

जगजीवनलालने खड़े होकर कहा-मुझे दुःख है। जो कुछ कहा, उसके लिये मुझे वेदना है।'

सुनकर राधा मौन। जैसे अज्ञात।

जगजीवनलालने कहांसे लौट जानेकी इच्छा लेकर कहा 'सच, तुम क्षमा कर देना,—तुम भूल जाना, राधारानी !

उसी समय राधाके मनने कहा मूर्खे।

जगजीवनलाल लौट गया। राधा फिर अकेली रह गयी। उसी समय उसने जैसे अपने परही हंस कर कहा-आह ! यह भी एक समस्या है। राधा देवी है ... राधा रानी है .. राधा नार है।' वह बोली इस पुरुषने इसे पानेके लिये जो इन शब्दों का जाल रचा, आखिर क्यों ? किस लिये ? ' -उसने धुंधले हो आये अन्तरिक्ष की ओर देखते हुए कहा 'रुपकी जो दुर्गन्धि है,पाप और वासनाकी आग उसमें जल रही है, उसी में नारी भस्म होती है ... अन्तही कर जाती है, एक ही।

राधाके मनमें आया कि वह चुप क्यों रही। शांतही बैठी रही। इस जगजीवनका गला पकड़ लेती। उसमें जितनीभी हिंसा है क्रूरता और वर्बरता है, उस सभीको ले, जगजीवनका गला दाब देती। उसके मुंह पर थूक देती और कह देती-- 'कुत्ते ...'

किन्तु हाय ! उसी समय, राधाने देखा कि उसकी आंखें रो रही थी। वह अविरल बनकर गालों पर बह रही थीं। इतना अनुभव करतेही, उस नारीका, उस यौवनमयी वैधव्य सुन्दरीका वह क्रूर भाव ऐसे दब गया कि मानों उसका कोई अर्थही नहीं था। वह स्वयं हीन था,—अपनी विवशताओंका दास।

लेकिन इसके बाद ही, उसका एक मात्र बच्चा ममी जाग कर उठा और भोजनके लिये उसके पास आया, तो राधा ने अपने सभी विचारोंको छोड़ अपना ध्यान,—मन, बचन और कर्म—उस ममीकी ओर लगा दिया। घरमें अन्न नहीं था। थोड़ा-सा दलिया पड़ा था, वही बना दिया। लेकिन जब ममीने उस दलिये को झुंझलाकर अपने सामनेसे हटा दिया और रोना-सा मुंह बना लिया, तो सचमुच ही, राधाको यह अच्छा नहीं लगा कि उसका लड़का यों रोये, यों दुःखी मन लिये हुए भूखा रह जाये। इसका परिणाम यह हुआ कि राधाको बरबस ही, अपना भूत काल याद हो आया। किस प्रकारके घरमें वह पली, कैसे घरमें आई। इतना देख, जब उसने अपने वर्तमानकी

तुलना की, तो उसका रोंवा-रोंवा कांप गया। देर हो गयी कि ममी रोता हुआ, वहीं जमींन पर पड़ गया और फिर सो गया। वह ममी, जो अपनी पैदा होनेकी घड़ीमें रेशमके झूलनेमें झूला, दासियोंकी गोदमें खेला—वही राधाका पुत्र अब यों नंगी पृथ्वी पर पड़ा था। उस समय, राधाने देखा, तो बरबस ही, उसका मन चीख उठा और छटपटा गया। मानो उसने अपने अन्तरके परमेश्वरको साक्षी बना कर कहा—'मैं दुःखी हूं तो हूं, मेरा ममी तो सुख पाये, यह तो अवहेलना और उपेक्षा न पाये, मेरे प्रभो!

किन्तु प्रभो कहां था। वह नहीं सुनता था,—आह!

* * *

प्रातः होते ही, राधाके बुलावे पर जब जगजीवनलाल उसके पास आया, तो उसने देखा कि सच, राधा रात भर रोयी है। आंखें चढ़ी हैं। उसके सिरके सुन्दर केशों की लटें रूखी-रूखी-सी बन चारों ओर बिखर रही हैं। और जब जगजीवनने उसका बुलावा पाया, तो समझा कि राधा ने उसकी बातोंको मान लिया है। इसलिये उस पुरुषने और अधिक प्रलोभन देनेके लिये अपनी तिजोरीको खोला। वह सोने-चांदीकी मुद्राओंको देख, स्वयं भी चौंधिया गया। उसने बहुतसे रुपये अपनी जेबमें भर लिये। सोनेकी गिन्नियां भी।

राधाके पास जाते ही, उसने हर्षोन्मत्त बन कर कहा-क्यों राधा!

सुनते ही, राधा चौंक गयी। कुछ देर पूर्व जो उसके मनमें था, मानो वह बालूकी दीवारकी तरह ढह गया। उसके मनमें था कि वह स्वयं मरे, तो मरे, परन्तु अपने ममीको नहीं मरने देगी। अपने बच्चेको वह सुख और सुवासमय जीवन ही बिताता देख पायेगी। निदान, उसने जगजीवनके मनकी इच्छा पूरी करनेकी बात ले ली थी। इसीसे, उसने पड़ोसकी बुढ़ियाके द्वारा उसे बुलाया। किन्तु जैसे ही साहू जगजीवनलाल वहां आया, तो मानो उस साकार पुरुषको पाकर राधा कांप गयी। वह समझ गयी कि यही है कि जिसकी बातोंने उसे रात भर सोने नहीं दिया। उसे आकुल और व्यथापूर्ण बना दिया। वह पतिके बाद जिस बलके सहारे चल रही थी मानो वह छीन लिया। आत्महीन बना दिया, राधाको! लेकिन आश्चर्य था कि जगजीवन लालको देखते ही, उसका स्वत्व जाग गया। मानो प्रतिरोध तड़प गया। वह तुरन्त ही, दयार्द्र और वेदना-पूरित स्वरमें बोली—हां, लालाजी, बतायें तो, आप भी मेरा अन्त करेंगे ईश्वरने तो मुझे श्रापित किया ही, ऊपरसे नीचे फेंक दिया, तो आप भी—

जगजीवनलालने देखा कि राधाकी आंखोंकी वेदना और व्याकुलता जो एक जगह सन्निहित थी,वैसी उसने जीवन भर अन्यत्र नहीं देख पायी। जेबकी गिन्नियां कुरतेके पल्लेमें कर ली,—शायद राधाको दिखाने और देनेके लिये। लेकिन जब राधाने अकाल्पित बात कही,—वही रात वाली बात:—तो उसकी आत्मा जैसे स्वतः ही कांप गयी। उसमें निर्बलता आ गयी। जो बात मनमें थी, वह जिह्वाके नीचे ही दबी रह गयी।

उसी समय राधाने और अधिक अश्रुपूरित बन, जगजीवनकी ओर देखते हुए कहा—ईश्वरके आप भी है, आत्मा और धर्मको मानते हैं, बताइये आप, राधा क्या प्रेमिका है...नारी नहीं?... नहीं?

जगजीवनलालके मुंहसे बोल नहीं निकला। उसने जिन रुपयों और गिन्नियों को कुरतेमें ले रखा था, उन्हें वहीं छोड़ दिया। मानो विसर्जित कर दिया। वह कल्पनावादी या भावनावादी नहीं, परन्तु उस समय, राधाने जो कुछ कहा, वह मानो अधिक बड़ा था—उन रौप्य-मुद्राओं से श्रेष्ठ! इसलिये, जगजीवनने अपनी ओरसे कुछ नहीं कहा, वरन, वह तेजीके साथ अपने पैरोंको उठा कर उस घरसे विदा हो गया।

क्या कह कर सत्कार करूं मैं

—:☺*☺:—

मैं लघु लहरी, तुम मलय बात
मैं लता क्षीण, तुम हो निकुंज
मैं वीणा तुम हो अमर राग
मैं चिनगारी, तुम अग्नि पुंज
चिनगारीसे कैसे बोलो ज्वालाका शृंगार करूं मैं।
क्या कह कर सत्कार करूं मैं

मैं यौवन तुम उन्माद प्रिये
मैं क्षुद्र तारिका तुम निशिधन
मैं यमुना तट तुम शुचि मधुबन
मैं अवनि और तुम नील गगन
नभको बसुधा की किस निधिका बोलो कैसे उपहार करूं मैं।
क्या कह कर सत्कार करूं मैं

तुम क्षितिज और मैं श्रान्त पथिक
तुम भैरव रव मैं हूं बिहाग
तुम हो अशेष, मैं दुःखद अन्त
तुम मिलन गान मैं बिरह राग
मेरी वीणाके छिन्न तार बोलो कैसे झंकार करूं मैं।
क्या कह कर सत्कार करूं मैं।

—श्री आदित्य अग्निहोत्री

चीनी राष्ट्रवाद

श्री चन्द्र कुमार वर्मा, एम० ए०

चीनी सभ्यता भारतीय सभ्यताके ही समान प्राचीन तथा स्थायी है। चीन पर कई आक्रमण हुए, उसे तातार तथा मन्चू लोगोंने जीत लिया, परन्तु दोनों ही को चीनियोंने अपनेमें मिला लिया। सिद्ध तत्ववेत्ता कन्फ्यूशियसके समयसे मिश्री, फारसी, ग्रीक, तथा रोमन साम्राज्योंका उत्थान तथा पतन हो चुका, परन्तु चीन एक धीमी निरन्तर गतिसे विकास करता रहा है। भारत ही के समान इस देशमें भी सांस्कृतिक एकताके होते हुए भी राष्ट्रीयताके भाव बहुत हाल ही में उदय हुए हैं। और इन भावोंके जन्मदाता डाक्टर सनयात सेन थे।

प्राचीन समयसे चीनमें जीवनके राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक सभी प्रदेशोंमें सार्वभौमिक सिद्धान्त प्रचलित थे। चीनी महात्माओंने इनका प्रचार हजारों वर्ष पहले किया था और तबसे करते रहे हैं। सार्वभौमिक राज सत्ता तथा समाजके आदर्शको चीनीमें 'ता तुंग' कहते हैं। इसके अनुसार कन्फ्यूशियसका कहना है कि जब संसारमें 'सत्य' को सब लोग मान लेंगे तो संसारमें एक ही राष्ट्र होगा। डाक्टर सनयात सेन भी इस सिद्धान्तके भक्त थे और उन्होंने इसीका राजनैतिक अनुवाद करके चीनी लोगोंके सामने रखा। यदि संसारके लोगोंको एक राष्ट्र बनाना है तो आवश्यक है कि संसारके चौथाई मनुष्य जो एक देशमें रहते हैं, एक राष्ट्र बन कर रहें। इसी आदर्शको लेकर इस प्रसिद्ध नेताने मन्चू वंशके विरुद्ध होते हुए आंदोलनको एक प्रजातन्त्रवादी आंदोलनमें परिवर्तित कर दिया, और उसीका फल था कि फरवरी १९१२ में चीन एक प्रजातन्त्र देश हो गया।

सन् १९१२ से आज तक चीनके ऊपर कई विपत्तियां आयीं। नये प्रजातंत्र की कठिनाइयोंके सिवाय यूरोपीय महायुद्ध और उसके पश्चात जापानी साम्राज्यवाद का बढ़ता हुआ ज्वार-भाटा इस देशको निगलनेके लिये तैयार हो रहा था। उधर अमेरिका तथा ब्रिटेनका व्यापारिक साम्राज्यवाद चीनको आर्थिक उन्नतिकी ओर अग्रसर होनेसे रोके हुए था। सन् १९३७ में चीनको जापानके विरुद्ध ऐसे घोर माहायुद्धमें लीन होना पड़ा जिसने कि इस देशको नष्ट कर डाला। एक बृहत माप पर बम वर्षा, पुरुषों तथा स्त्रियोंके बलिदान, और शेष बचे हुए लोगोंके लिये बहुगुनी मंहगाई, बस्तुओंकी अल्पता इत्यादि इस युद्धकी देन हैं। परन्तु चीनियोंने वीरतासे इन मुसीबतोंका सामना किया और अपने प्रजातंत्रवादी विधान पर कायम ही नहीं रहे बल्कि उसको आगे बढ़ाया। इस प्रकार चीन बीसवीं शताब्दी में एक आदर्श प्रजातंत्रवादी देश रहा है और डाक्टर सनयात सेनको इस विचार धाराके जन्मदाता होनेका श्रेय प्राप्त है।

डाक्टर सनकी 'सैन मिन चू' नामक पुस्तक प्रजातंत्रवादकी भागवत मानी जाती है। इस पुस्तकमें चीनके प्राचीन ज्ञान-तत्वसे लेकर आधुनिक समाजवादी सिद्धांत, और शोषण, दासत्व तथा अन्यायके विरोधका सामञ्जस्य है। इसके विचारोंमें मुख्य तीन प्रसिद्ध सिद्धांत हैं—राष्ट्रवाद, राजनैतिक प्रजातंत्रवाद तथा आर्थिक प्रजातंत्रवाद। इन तीनों सिद्धांतों के प्रवर्तनमें डाक्टर सनके ऊपर पाश्चात्य राजनैतिक साहित्यका काफी प्रभाव पड़ा था। इसमें सबसे प्रभावपूर्ण थे—मार्क्स का समाजवादी साहित्य अमेरिकन प्रजातंत्रका इतिहास, तथा फ्रेञ्च-क्रान्तिके मूल सिद्धांत। परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि डाक्टर सेनके विचार मौलिक नहीं थे। इतिहासमें कई स्थानों पर ऐसे अनूठे संयोगके उदाहरण पाये जाते हैं कि दो विचारकोंने एक दूसरेसे मिलते जुलते विचारोंको जन्म दिया यद्यपि दोनोंका कार्य यथार्थमें मौलिक रहा था। डाक्टर सन मार्क्सके 'मूल्य' 'वर्ग संघर्ष' तथा 'क्रान्ति द्वारा पूंजीवादके नाश' सम्बन्धी सिद्धांतोंसे संतुष्ट नहीं हुए। इसलिये उन्होंने अपने मौलिक सिद्धांतोंका प्रचार किया जो कि चीनी स्वभाव, सामाजिक व्यवस्था तथा संस्कृतिके अनुकूल थे।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है डाक्टर सनकी पुस्तकमें तीन मुख्य सिद्धांत हैं। इनमें से पहला है राष्ट्रवाद जिससे कि चीनी क्रांतिके प्रारम्भ कालमें विदेशी साम्राज्यवादकी शोषक नीतिका विरोध किया गया था। अन्तर्राष्ट्रीय स्थलमें यह सिद्धांत सारे देशोंकी राजनैतिक तथा आर्थिक स्वतंत्रताका द्योतक था।

दूसरा मुख्य सिद्धांत है राजनैतिक प्रजातन्त्रवाद। प्रथम सीढ़ीको पार करके चीनी क्रांतिने परतन्त्रताकी बेड़ी तो तोड़ दीं। उसके पश्चात प्रश्न था चीनमें सर्व जन-सम्मतिके ऊपर निर्भर एक विधान बनाना। इसके लिये चीनियोंको 'स्वराज्य' के लिये शिक्षा देना अनिवार्य था। चीन में प्रजातंत्र शासन स्थापनके लिये डा० सनने एक विधान बनाया जिसमें जनता तथा सरकार दोनोंके अधिकारोंको स्पष्ट कर दिया। जनताके अधिकार हैं चुनाव, वापसी तथा जन-सम्मति, सरकारके अधिकार हैं नियम-विधान, नियम-पालन, न्याय, परीक्षा तथा शासन शक्ति। यह पांच शक्तियां चीनी केन्द्रीय सरकारके प्रमुख विभाग हैं।

तीसरा सिद्धांत है आर्थिक प्रजातंत्रवाद। इसके अनुसार सर्वसाधारणके लिये भोजन, वस्त्र तथा मकानकी व्यवस्था होनी चाहिये। भूमि तथा पूंजीका समान बिभाजन इसका मुख्य आदर्श है। परन्तु डा० सन चीनके सामाजिक तथा आर्थिक जीवनमें क्रांतिकारी ढङ्गसे सुधार नहीं चाहते थे। वे धीरे धीरे सुधारका विकास चाहते थे। आधुनिक भाषामें डा० सनके इस सिद्धांतका मतलब है कि राष्ट्रको एक योजनाके अनुसार चलना चाहिये जिसमें बड़े माप वाले उद्योग, भूमि, तथा आने जानेके साधनोंका राष्ट्रीयकरण हो जाय और जहां सरकार जनसाधारणकी जीविकाकी जिम्मेदार हो।

इसमेंसे पहला लक्ष्य तो करीब करीब पूरा हो चुका है। जेनरलिसमो च्यांगके नेतृत्वमें चीनके एक स्वतंत्र राष्ट्र बननेमें

(शेष २६ वें पृष्ठ पर)

भारतीय पत्रकारिता

—*:*:*—

लेखक—श्री एस० के० पाटिल

तुलनात्मक दृष्टिसे भारतवर्षमें पत्रकारिताका इतिहास बिलकुल नया है। हमारी पत्रकारिता अंग्रेजीसे शुरू हुई क्योंकि यही हमारे शासकोंकी भाषा थी और उन्होंने हमारे देशके लोकमतको अपने अनुकूल ढालनेके लिये विशेष ध्यान दिया। यही कारण है कि हमारे देशके सबसे पुराने पत्रोंमेंसे अधिकांश अंग्रेजीमें पाये जाते हैं। और वे भी प्रारम्भमें ईसाई मतके प्रचार करने और पादरियोंकी अन्य गतिविधियोंमें संलग्न रहे। अभी कुल ५० वर्ष ही बीते हैं कि अंग्रेजी पत्रकारोंने राजनीतिक समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना शुरू किया है। दूसरे मुल्कोंकी भांति इस मुल्क में भी समय-समय पर निकलने वाले पत्र-पत्रिकाओं और मासिक तथा साप्ताहिक पत्रोंसे पत्रकारिताका आरम्भ हुआ और धीरे-धीरे दैनिक पत्र भी निकलने लगे। आज भी हमारे कुछ सबसे अधिक लोकप्रिय दैनिक पत्र, चाहे वे अंग्रेजीके हों या भारतीय भाषाओंके, इङ्गलैण्ड और अमेरिकाके लोकप्रिय अखबारोंकी तुलना में बहुत नीचे उतरते हैं। अब तक भारत में शायद ही कोई ऐसा पत्र होगा जिसका वितरण एक लाख तक पहुंचा हो, जब कि अमेरिका और इङ्गलैण्डमें कई पत्रोंकी वितरण संख्या कई लाख है। कारण स्पष्ट हैं। यद्यपि जन-संख्याके दृष्टिकोण से हिन्दुस्तान संसारका दूसरा देश है, किंतु हमारी विभिन्न भाषाओंके होने और एक राष्ट्रभाषाके अभावमें हमारे पत्रों पर एकप्रकारका उल्टा असर होता है और जो दूसरी कमी है, वह है पत्र-पाठकों की। यद्यपि पाठकोंकी संख्या बढ़ानेमें हमने अथक परिश्रम किया है और अब उनकी संख्या २० प्रतिशत हो गयी है फिर भी उनमेंसे आधे ऐसे हैं जो पत्र नहीं पढ़ सकते। इसके अतिरिक्त समाचार-पत्रोंकी संख्या कम होनेके कारण था हमारे मध्यमें राष्ट्रीय जागृतिकी बहुत कमी। खुशीकी बात है कि यह कमी बहुत जल्दी दूर हो रही है और साथ ही साथ राष्ट्रीय भाषाका भी विकास हो रहा है। मुझे यह भी आशा है कि निरक्षरोंकी संख्या बहुत जल्द नहीं के बराबर हो जायगी। ज्यों ही ये कमियां दूर हो गयीं त्यों ही वह समय जल्द आ जायगा जब कि हमारे राष्ट्रीय पत्र हमारी राष्ट्र-भाषा में प्रकाशित होने लगेंगे और उनके पाठकोंकी संख्या लाखोंमें पहुंच जायगी। यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस समय को अधिकसे अधिक समीप ला दें और मुझे विश्वास है कि हमारा यह नया उत्साह और जागृति, जिसका उदय हमारी स्वतंत्रताके साथ हो गया है, इस उद्देश्य की पूर्ति अत्यन्त शीघ्र कर दिखायेगा। भारतीय भाषाओंके अन्य पत्रोंके सम्बन्धमें यदि मैं यह कहूं तो अतिशयोक्ति न होगी कि केवल कुछ इने-गिने पत्रोंको छोड़कर कुछ ही ऐसे पत्र हैं जिनको कि समाचार-पत्रका उचित नाम दिया जा सकता है। इसका क्या कारण है, यह बतानेकी कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। इतना कहना पर्याप्त होगा कि हम सबका कर्त्तव्य है कि हम सब इस प्रयत्नमें जुट जायं और उसे इतना प्रगतिशील बना दें कि वह उन्नति के शिखर पर शीघ्रसे शीघ्र पहुंच जाय। मेरी रायमें यह प्रत्येक भारतीय पत्रकार का परम कर्त्तव्य है। वे दिन लद गये जब कि भारतीय पत्रकार विदेशी पत्रकारोंकी तुलनामें अपनेको निम्न श्रेणीमें पाता था।

जहां तक भारतीय पत्रकारिताके गुणावगुणका प्रश्न है, वहां तक यह कहना होगा कि हमारे दोषों और त्रुटियोंका सबसे बड़ा कारण यह है कि शिक्षा तथा अभ्यास-सम्बन्धी समुचित साधन हमें प्राप्त नहीं हैं। पत्रकारिता भी अन्य कलाओंकी तरह एक कला है और उसका भी विकास अभ्यासके बिना नहीं हो सकता। पश्चिमी देशोंके विश्वविद्यालयोंमें छात्र-छात्राओंको इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कलाकी शिक्षा प्रदान करनेके लिये सब प्रकारकी सुविधाएं दी जाती हैं। अमेरिकामें पत्रकारिताके कई शिक्षालय बहुत पुराने हैं, उनको खुले हुए सौ या सौसे भी अधिक वर्ष बीत चुके हैं। लगभग ३० वर्षों से इंगलैण्डके विश्वविद्यालयोंमें भी पत्रकारिताकी शिक्षा दी जाती है। हमारे देशके कुछ विश्वविद्यालयोंने भले ही गत कुछ वर्षोंसे इनकी शिक्षा देना प्रारम्भ किया हो, किन्तु यह तो कहना ही होगा कि उन्होंने अभी तक इस ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया है। आवश्यकता इस बात की है कि हमारे विश्वविद्यालय इस ओर अधिकाधिक ध्यान दें। यही बात समाचार पत्रोंके लिये भी ठीक-ठीक लागू होती है। समाचार पत्रोंमें भी जो लोग पत्रकारिता सीखने जाते हैं, उन्हें अनुभवके द्वारा योग्यता हासिल करनेके लिये पर्याप्त सुविधाएं नहीं दी जाती हैं। आखिर जबतक विश्वविद्यालय और समाचार पत्र दोनों ही पत्रकारिताको सर्वप्रिय बनानेके लिये सर्वांगीन प्रयत्न न करें, इसका स्तर कैसे ऊंचा उठ सकता है? आज हमारे देशके पत्रकारोंमें वह कला (टेकनीक) ही विद्यमान नहीं है, जिस पर पत्रकारिताकी सफलता निर्भर करती है। मुझे यकीन है कि यह त्रुटि शीघ्रातिशीघ्र दूर की जायगी।

दूसरी त्रुटि, जिसके कारण भारतीय पत्रकारिताकी प्रगति अवरुद्ध है, वह यह है कि पत्रकारिता व्यक्तिगत भावनाओंके धरातलसे ऊपर उठनेमें असमर्थ है। यह बात मैं आपको और स्पष्ट कर दूं। भारत में देखते हैं कि समाचार पत्रोंके संपादक तथा मालिक (Bosses) इस कार्यमें इस ढंगसे दखल देते हैं और इस पर इतना हामी हो जाते हैं कि सार्वजनिक जीवन ही दूषित हो जाता है। हमारे अधिकांश पत्रोंमें व्यक्तिवादका बोल बाला है! मेरी रायमें पत्रकारिताको व्यक्तिवादके धरातलसे उठ कर सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिये। अक्सर हम देखते हैं कि व्यक्तिगत धारणाओंकी बुनियाद पर वस्तु

स्थितिको तोड़-मरोड़ कर प्रकाशित किया जाता है। इसके लिये या तो सम्पादक जिम्मेदार है या सम्पादकीय लेखक या मालिक। यही कारण है कि हमारे समाचार पत्रोंका स्तर बहुत नीचे है। पत्रकारिताके सम्मान और उसकी समृद्धिको कायम रखनेके लिये आवश्यकता इस बात की है कि इसे व्यक्तिवादसे परे रख कर सिद्धांतों पर आधारित किया जाय!

इस कलाके सम्मानको बढ़ाना हमारा कर्तव्य है आखिर इसे सम्मानित अध्यवसाय कहनेसे क्या लाभ, जब कि स्वयं इसमें लगे हुए लोग, सब प्रकारके सम्मानों को असंभव बना देने वाली स्थितिमें पड़े हों? इस कलाके संचालकोंको विचार और कार्यकी उचित स्वतन्त्रता अवश्य मिलनी चाहिये, लेकिन यह सब तबतक संभव नहीं हैं जबतक कि पत्रकारोंके लिये उचित आर्थिक सुरक्षा और उत्तम ढंगसे जीवन निर्वाह करने योग्य वेतन आदि की व्यवस्था न हो। आम तौर पर इस देशमें पत्रकारोंका वेतन बहुत कम होता है। गत कुछ वर्षों से कुछ अंग्रेजी दैनिक पत्रोंमें यह कमी दूर की जा रही है किन्तु अन्य पत्रोंकी स्थिति आज भी ज्यों की त्यों बनी है। आवश्यकता है कि पत्रकारिताकी प्रतिनिधि संस्थाएं इस प्रश्नकी ओर उचित ध्यान देकर वेतन आदिका स्टण्डर्ड निर्धारित कर दें और उसे कार्यान्वित करें। पत्रकारिता देशके किसी भी ऊंचेसे ऊंचे अध्यवसायसे निम्न कोटि का नहीं है। उसे आर्थिक सुरक्षा मिलनी ही चाहिये।

मुद्रण और पत्रकारिता परस्पर सहयोगी कलाएं हैं। मुद्रण कला (Technique of Printing) अविकसित रहने से पत्रकारिता दोषपूर्ण रहेगी ही। कुछ अपवादोंको छोड़ कर अधिकांश भारतीय समाचार-पत्रोंकी सजावट (Get up) बहुत ही निम्न कोटिकी होती है। दोषपूर्ण संपादनके साथ ही उनका मुद्रण भी भद्दा होता है। पत्रकारिताकी अन्य रीतियां (Processes) भी अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में हैं। इस सम्बन्धमें, भारतीय समाचार-पत्रोंको अमेरिकन पत्र पत्रिकाओंसे बहुत कुछ सीखना है। अमेरिकन पत्र-पत्रिकाओंकी सजावट सबसे ऊंचे दर्जेकी होती है। कोई भी व्यक्ति इन्हें देखते ही आकर्षित हो जाता है और जबतक उठा कर उसे अच्छी तरह देख न ले उससे रहा नहीं जाता। पत्रकी अन्य सामग्रियोंके पढ़नेसे पूर्व यह आकर्षण उत्पन्न होना आवश्यक है। हमें बराबर उस औसत पत्र-पाठकको अपने ध्यानमें रखना चाहिये जो न अधिक पढ़ा-लिखा होता है और नहीं राजनीतिक मनोवृत्तिका होता है। इस देशमें कुछ पत्र पत्रिकाएं ऐसी हैं जो अमेरिकाके स्तर पर पहुंचनेके लिये सदप्रयत्न कर रही हैं। मैं आशा करता हूं कि दूसरी पत्र-पत्रिकाएं भी ऐसा ही करेंगी।

एक और बात, जिस ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, वह यह है कि पत्रकारिता अपनेको दलगत मतभेदों और झगड़ों (factions and squabbles) से दूर रखे। ये दोनों बात दलगत राजनीतिके अविच्छेद्य अंग है। किसी भी समाचार पत्रका यह हक है कि जब सिद्धांतोंको लेकर जनमतको तैयार और उसे मार्ग प्रदर्शन करे। उसका यह अर्थ नहीं कि वे दलगत झगड़ोंमें फंस जांय। अधिकारों और सुविधाओंकी अपेक्षा उसके कर्तव्य और उसकी जिम्मेदारियां कहीं अधिक हैं। पत्रकार चाहे तो अपने देशकी किस्मतको बना दे और चाहे तो बिगाड़ दे। उसमें निर्माण करनेकी शक्ति है और विध्वंसकी भी उनकी जिम्मेदारी बहुत बड़ी है और है पवित्र जनता जनार्दन के हितमें उसे निभाना उनका कर्तव्य है।

आ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलनके पत्रकार परिषदके अध्यक्ष-पद दिया गया भाषण।

—०—

(२४ वें पृष्ठ का शेषांश)

कुछ भी कमी नहीं है। केवल एक प्रश्न बचा है। जब तक कम्यूनिस्ट विरोधका अन्त नहीं होता है चीन शांतिपूर्वक उन्नति नहीं कर सकता। दूसरा लक्ष्य अभी अधूरा ही है। कुओमिण्टाङ्ग पार्टी चीनियोंकी संरक्षक है। चीनमें अभी प्रजातंत्रवादका पूरी तौरसे प्रादुर्भाव नहीं हो पाया है और जब तक यह नहीं होता है तब तक कुओमिण्टाङ्ग चीनी शासनकी बागडोर अपने हाथमें रखेगी। तीसरे लक्ष्यसे चीनमें कम्यूनिस्ट प्रश्न पैदा हुआ है। डा० सन और कम्यूनिस्टों का लक्ष्य एक ही है अर्थात आर्थिक समानता। परन्तु दोनोंके ढङ्गोंमें भीषण अन्तर है। इसी कारण चीन आपसी युद्ध में बुरी तरह फंसा हुआ है और अपने इस लक्ष्यसे काफी दूर है। भाग्य ही बता सकता है कि चीन कब इस युद्धसे मुक्त होकर उन लक्ष्यों तक पहुंचेगा जो कि चालीस वर्ष पहले डा० सनने अपनी महान पुस्तकमें निर्धारित किये थे।

जिन पुरुषोंकी बचपनमें बुरे रास्ते पर और समझ आने पर भी विलास में आसक्ति रखनेसे नसोंमें निर्बलता आ गई हो जिनके लिये सर्वश्रेष्ठ औषधि खानेके लिये विचार में न हो। उनके लिये उत्तम से उत्तम दवा केवल मालिस द्वारा प्रयोगिता यह मलहम है। कारण कि इसके एकमात्र प्रयोग करने से नसें मजबूत व सख्त अवश्य हो जाती हैं। युवक, अधेड़ और वृद्ध सबको ही इससे फायदा पहुंचता है। एक शीशीका मूल्य ५) वी० पी० खर्च अलग।

चाइनोज मेडिकल स्टोर स्थापना १९३०

हेड आफिस-२८ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

शाखायें—चार रास्ता, अहमदाबाद १२, डलहौसी स्क्वायर कलकत्ता, नया बाजार, दिल्ली

फिल्म क्षेत्रमें तथाकथित मन्दी

लेखक—श्रीकृष्ण कुमार गुप्त, विशारद

गत वर्षों में भारतीय फिल्म व्यवसाय ने अपने जीवनके स्वर्णिम दिवस देखे। युद्ध कालीन समय प्रत्येक मनुष्यके लिये अनुकूल था। पूंजीकी कमी न होनेके कारण स्टूडिओंकी संख्या देखते देखते चौगुनी हो गयी और अच्छे बुरे चित्रोंका विद्युत गतिसे निर्माण हुआ। महायुद्धके शेष होते ही परिस्थितियोंमें परिवर्तन हुआ है और कोई आश्चर्य नहीं कि आज फिल्म निर्माताओं, निर्देशकों वितरकों और प्रदर्शकों सभी पर मन्दीका भूत सवार प्रतीत होता है।

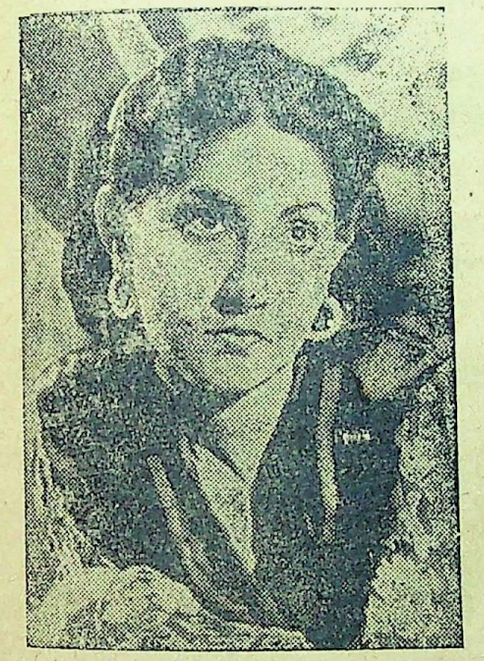

नूरजहां

फिल्म क्षेत्रोंमें मन्दीका सबसे प्रथम और महत्वपूर्ण कारण स्वयं दर्शकोंकी हल्की जेबें हैं। युद्धसे सम्बन्धित नौकरियों, उद्यमों तथा ठेकोंका प्रायः अन्त हो गया है और जो कुछ बचे हैं वे भी सम्भव है बहुत शीघ्र लोप हो जायेंगे। दर्शकगण ही फिल्म देशोंकी समृद्धि करनेमें सहायक होते हैं। जब वे ही बेकार होंगे तो पूंजीपति निर्माताओंकी अपार आशाएं कैसे पूर्ण हो सकती हैं। यह स्मरण रखना आवश्यक है कि सिनेमा मनोरंजनका साधन है और देश और कालके अनुसार ही उसका मूल्य होता है। भारत जैसे निर्धन देशके लिये एक रूपये ५ आने और २ रू० १० आने वाला वर्तमान सिनेमा या तो अनुपयुक्त है अथवा अति मंहगा मनोरंजन।

फिल्मोंकी बेतुकी कहानियाँ, अस्वाभाविक चरित्र चित्रण और अयोग्य निर्देशण एक बड़े अंश तक वर्तमान परिस्थितके लिये उत्तरदायी हैं। जिसको देखो वही कहानी लेखक बन बैठा है। चाहें जिसने निर्देशकका रूप धर लिया है। कहीं कहीं तो एक ही मनुष्यने निर्माता निर्देशक और कलाकार तीनो का बाना पहन लिया है। जब ऐसा हो तो उन्नति की बात सब प्रकारसे असंगत है। मन्दी के लिये आकाशके तारोंको कदापि दोषी नहीं ठहराया जा सकता। निर्बल भाग्यके सहारे रहता है। और बलवानके साथ साथ भाग्य चलता है। हम अपने रोगको जिस प्रकार दूसरोंको नहीं दे सकते उसी प्रकार अपने ऊपरसे अपने दायित्वको भी नहीं हटा सकते।

साम्प्रदायिक दंगों पर मन्दीके लिये अवश्य दायित्व है। दंगोंने देशकी सारी सामाजिक व्यवस्था ही उलट दी है। आर्थिक व्यवस्थाको भी भारी ठेस पहुंचाई है। पूंजीकी कमीको मन्दीका कारण कहना भूल है। यदि इस समय और अधिक पूंजी उपलब्ध होगी तो और अधिक चित्रोंका निर्माण होगा और अधिक मन्दी आयेगी।

अत्यधिक फिल्म निर्माण, वितरणका गलत ढंग और प्रदर्शकोंकी चोर बाजारी मन्दीके अन्य कारण हैं। कम कम्पनियों

मेहताब

[illegible] पहलेकी बात है। तब व्यवसाय उन्नत था। वही अब भी हमारा नारा होना चाहिये। प्रदर्शकों की चोर बाजारी फिल्मोंका मूल्य बढ़ा देती हैं और प्रदर्शित फिल्में सस्ते दर पर दिखाना कठिन हो जाता है। इस चोर बाजारीको तत्काल दूर करनेकी आवश्यकता है।

अन्तिम कारण विज्ञापनकी कमी है। हर कोई मानेगा कि फिल्मोंकी उन्नति और लोक प्रियता विज्ञान पर निर्भर रही है और रहेगी। परन्तु यह भी सत्य है कि विज्ञापन आवश्यक वस्तुका ही सफल हो सकता है। मंहगे सिनेमाका बड़े नाम पर भी विज्ञापन पूर्ण रूपेण असफल रहेगा। यदि सिनेमाके टिकट दरोंको

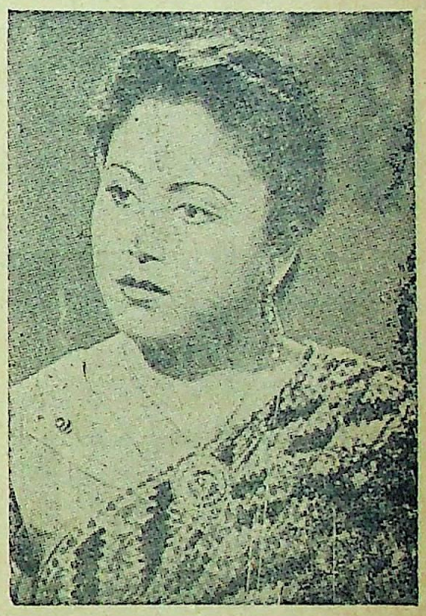

मलिना

पूर्ववत नहीं किया गया तो रही सही आशा भी जाती रहेगी। फिल्म प्रदर्शक आजकल अवश्य विज्ञापन पर जोर देते हैं। हो सकता है दर्शक यह नहीं जानते कि किन कम्पनियोंमें कौनसे फिल्म बन रहे हैं। यह इसलिये है कि अब पहलेकी भांति थोड़ी सी कम्पनियां नहीं और वे सालमें एक दो चित्र न बनाकर महीनेवारी नये चित्र भेंट करती हैं।

निष्कर्ष यह है कि भारतीय पृष्ठ भूमिमें सिनेमाकी यह मन्दी मन्दी नहीं है। यह हमारे सिने जगतका वास्तविक रूप व्यक्त करती है। इससे अधिककी आशा करना दुराशा है। हमने हाल ही में स्वतंत्रता प्राप्त की है। अब हमारी दैनिक आय

बढ़ेगी और उसीके साथ साथ हमारे फिल्म व्यवसायकी उन्नति होगी।

मन्दीके रूप एवं कारणों पर दृष्टिपात करनेके पश्चात मन्दीके प्रभाव पर अकिंध विचार करना अनावश्यक है। युद्ध कालमें सबकी आय बढ़ी थी। जैसा ऊपर कहा गया है फिल्म व्यवसाय भी खूब चला। अभिनेता अभिनेत्रियोंकी आयमें भी वृद्धि हो गयी थी अब स्वतः वह खूब चली जा रही है। जब फिल्म क्षेत्रकी प्रस्तुत मंदी केवल युद्धसे पूर्वकी यथावत अवस्था है हमें उचित है हम मंदीको दूर करनेके उपायोंको फिल्म व्यवसायकी उन्नतिके उपाय कहें। फिल्म उद्योगकी काया पलट होना अत्यावश्यक है। गंदे और निरर्थक चित्र जाति देश और समाजके लिये हानिकारक है जो भी चित्र हमारे यहां बनें आदर्शकी छाप लिये रहने चाहिये। ऐतिहासिक चित्र सही इतिहास हमारे सम्मुख रखें सामाजिक चित्र हमारे समाजकी अनूठी, झांकी हों, जीवन चरित्र संबन्धी चित्र चरित्रोंकी विशेषतायें और उनसे मिलने वाली शिक्षाएं स्पष्ट दें। अन्य व्यर्थ चित्रोंका निर्माणही न हो।

"नये चेहरे" और" पुराने चेहरोंके पचड़ेमें पड़ना निरर्थक है। न नये चेहरोंका मांग और पुराने चेहरोंका बहिष्कार हमें कहीं ले जायगा। सहगल मर गया किन्तु अंत तक उसकी ख्याति कम होनेके स्थान पर बढ़ती ही गयी और सहगल आज मर कर भी अमर है। उमा शशि, कानन, जमुना, शोभना समर्थके पुराने चैहरे विचित्र पतिमा रखते हैं जो दर्शकोंको अनायास अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। अधिक उदाहरण न देकर इतनाही कहना पर्याप्त होगा कि नये चेहरोंका अवसर दिया जाय, किंतु पुरानें चेहरोंकी उपेक्षा न की जाय। अच्छी वस्तु और अच्छा कार्य हमें सदैव भाता है। पुराने चेहरे नये चेहरोंकी अपेक्षा अपने अनुभवके आधार पर जो उनसे कहा जाय उससे भी अधिक और सुंदर काम करते हैं

फिल्म निर्माण फिल्म वितरण और फिल्म प्रदर्शन भारतीय विशेषताओंको ध्यानमें रख कर होना उचित है। हमारी पुरातन परम्पराका सर्वत्र पालन होना चाहिये। कलाकारोंको बहुत ऊंचे वेतन देना फिल्म व्यवसायकी कब्र खोदना है। जब सरकारी मंत्रीगण १५००) प्रति मास ले रहे हैं, कलाकारोंको असीमित और असंख्य धन राशि देना कैसे सहन किया जा सकता है। निर्माण वितरण और प्रदर्शनका खर्च कम होनेका अर्थ होगा पूंजी पर आय परन्तु सिनेमाका निश्चय प्रचार और उसका उज्ज्वल भविष्य। राष्ट्रीय हितोंको ध्यानमें रख कर ही हमारी सिने समस्याका हल हो सकेगा।

प्रभावशाली व्यक्ति

जीलेट से हजामत बनाते हैं।

कोई भी प्रभावशाली व्यक्ति सुव्यवस्थित आकृति की विश्वासपात्रता स्वीकार नहीं कर सकता यदि वह अच्छी तरह हजामत बनाई हुई नहीं हो। प्रभावशाली व्यक्ति जिलेट से ही हजामत बनाते हैं क्योंकि उन्हें अनुभव द्वारा ज्ञात हो गया है कि उनके पैसे के पूरे मूल्य के अनुसार जिलेट ही उन्हें सर्वश्रेष्ठ हजामत देते हैं।

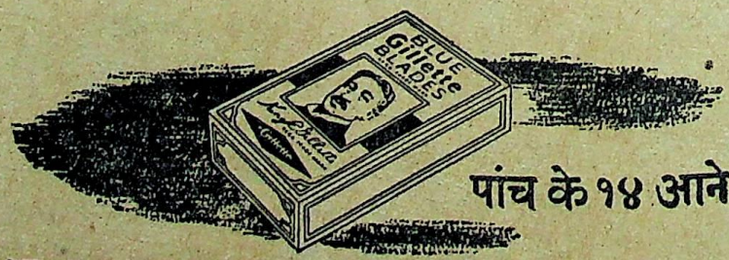

पांच के १४ आने

Blue Gillette Blades

ब्लू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये!

बहालपुरके गैर-मुस्लिम

आ मुझे तीन बातें कहनी हैं बहालपुरसे लोग आये हैं। वे परेशानीमें हैं। वे कहते हैं कि वहां जितने हिंदू सिख हैं, उन्हें बुला लो नहीं तो वे कट जायेंगे। दो आदमी आज मेरे पास आये थे। उनहोंने कहा कि 'अगर उनके लिये कुछ नहीं होगा, तो गवर्नर जेनरलके मकानके सामने भूख-हड़ताल करेंगे।" ऐसा करनेसे अगर बहावलपुरके हिन्दू-सिख जिन्दा रह सकें तो अलग बात है। पर आज गवर्नर जेनरलमें बल नहीं है। उनकी पीठपर आज ब्रिटिश सल्तनतका बल नहीं है। हमारे बलसे वह खड़े रहते हैं। आप आन्दोलन भले करें। लेकिन ऐसा उपवास करनेसे कोई फायदा नहीं है। बहावलपुरके नवाब साहबसे मैं कहूंगा कि वहांके हिन्दू-सिख जहां चाहें वहां उन्हें भेज दिया जाय, नहीं तो उनके धर्मका पतन है। नवाब साहबके होते हुए वहां क्या क्या हो गया, उसमें मैं नहीं जाना चाहता। बहावलपुर बना तो है सिखोंसे। वे लोग आलसी नहीं हैं। मगर बहावलपुरमें काफी लोग मारे गये, काफी काटे गये, और जो बाकी रहे हैं, वे भी आरामसे नहीं हैं, तो वहां कैसे रह सकते हैं? नवाब साहब को ऐलान करना चाहिये कि जो वहां हैं, उनको भेजनेका प्रबन्ध जब तक नहीं होता, तबतक हम उनकी पूरी रक्षा करेंगे। उनका बालभी बांका नहीं होगा। उनके रोटी कपड़ोंका इन्तजामभी कर देना चाहिये। जो हुआ सो हुआ वह पागलपन था। लेकिन भविष्यको संभालें।

पाकिस्तानके शरणार्थी

स्टेट्समेनमें छपा है कि लाहौरमें जो दुःखी लोग शरणार्थियोके कैंपमें पड़े हैं, वे बहुतही बुरी हालतमें हैं। गन्दगीकी वजह से वहां कालरा (हैजा) और शीतला जैसे रोग फैले हुए हैं। सर्दीमें वे आकाशके नीचे पड़े हैं। वे खुलेमें भले रहें, मगर उनके पास पानीसे बचनेका, ओढ़नेका, खानेका सामानतो होनाही चाहिये। वह नहीं है तो, उन्हें मरनाही है। सियालकोट भङ्गी बुलाते हैं। मगर वहांके स्वास्थ्य-अफसर कहते हैं कि मैं लाचार बन गया हूं। मैं पूरा काम उनसे ले नहीं सकता। पाकिस्तानमें से या यहांसे लोग जान बचाने को भागे हैं तो जहां गये हैं, वहां उन्हें कुछभी सुख तो हो। पाकिस्तानकी हुकूमत के अफसरोंको यह देखना है कि दुःखी लोगोंकी यह कहनाही नहीं चाहिये कि हमें सफाई करनेवाले दो, खाना पकाने वाले दो। अगर सभी कामोंके लिये नौकर मिलेंगे तब वे क्या काम करेंगे? उसमें उनका पतन है। उन्हें शरणार्थियोंको दृढ़तासे कहना चाहिये कि अपना काम आप करो। कप साफ रखनेका काम उनका है। शरणार्थियोंको उद्यम करनाही चाहिये। शराफत रहना चाहिये। पाकिस्तानके मुसलमान शरणार्थियोंके बारेमें इतनी चिन्ता प्रकट करनेके लिये आप मुझे माफ करेंगे। मैं उनमें और यूनियनके हिंदू सिख शरणार्थियोंमें कोई फर्क नहीं कर सकता।

गजनवीको फिरसे बुलाना

एक उर्दू मैगजीनमें आज मैंने एक शेर देखा। वह मुझे चुभा। उसमें कहाहै—'आज तो सबकी जबान पर सोमनाथ हैं। जूनागढ़ वगैरका बदला लेनेके लिये गजनी से किसी नये गजनवीको आना होगा।' यह बहुत बुरा है। यूनियनकी किसी मुसलमानकी कलमसे ऐसीचीज नहीं निकलनी चाहिये। एक तरफसे मित्रभाव और वफादारीकी बातें और दूसरी तरफसे और यह? मैं तो यहां यूनियनके मुसलमानोंको हिफाजतके लिये जीवनकी बाजी लगाकर बैठा हूं। मैं तो यही करूंगा, क्योंकि मुझे बुराईका बदला भलाईसे देना है। आप लोगोंको यह सुनाया, ताकि आप ऐसी चीजोंसे बहक न जायें। गजनवीने जो किया जा था, बहुत बुरा किया था। इस्लाममें जो बुराइयां हुई हो उन्हें मुसलमानोंको समझना और कबूल करना चाहिये। काश्मीर, पटियाला वगैराका हिन्दू सिख राजाओंको उनके यहां जो बुराई हुई हो उसे कबूल कर लेना चाहिये। उसमें कोई शर्म नहीं। गुनाह कबूल करने से वह हलका होता है। यूनियन में बैठकर मुसलमान अगर लड़केको सिखावें कि गजनवीको आना है तो उसका मतलब यह हुआ कि हिन्दुस्तानको और हिन्दुओं को खा जाओ। जिसे कोई बर्दाश्त करने वाला नहीं। दोनों आपसमें मिलकर चाहें कुछभी करलें। अगर यह शरारतभरा शेर एक महत्वपूर्ण मैगजीनमें न छपा होता, तो मैं उसका जिक्र भी न करता।

क्या वहा अहिंसा थी?

मेरे पास हमेशा सिख भाई आते रहते हैं। मैं अखबारोंमेंसे थोड़ा पढ़ लेता हूं। मिलने आनेवाले लोग भी मुझे सुनाते रहते हैं। वे लोग कहते हैं कि मैं तो सिखोंका दुश्मन बन गया हूं। उन्होंने इसकी परवाह न की होती, अगर मेरी बात हिन्दुस्तानके बाहर कुछ-न कुछ वजन न रखती। दुनिया मानती है कि हिन्दने अहिंसाके, शान्तिके जरिये आजादी ली है। अगर ऐसा ही होता, तो मुझे बहुत अच्छा लगता। मगर पंगु और नामर्दोंसे अहिंसा चल नहीं सकती। यह पंगुपन और गूंगापन शारीरिक नहीं। शरीरसे पंगु बननेवाले तो ईश्वरकी मददसे अहिंसापर खड़े रह सकते है। एक बच्चा भी अहिंसा पर खड़ा रह सकता है—जैसे प्रह्लाद। ऐसा हुआ या नहीं। मैं नहीं जानता। पर कहानी बन गयी है कि प्रह्लादने अपने पिताको साफ कह दिया था कि मेरी कलम से रामके सिवा कुछ निकलेगा ही नहीं। मेरे सामने १२ बरसका बच्चा प्रह्लाद आज भी खड़ा है। मगर जो आदमी आत्मासे लूला है, पंगु है, अंधा है, वह अहिंसाको समझ नहीं सकता। अहिंसा का पालन कर नहीं सकता। मैंने गलती से यह सोच लिया था कि हिन्दुस्तानकी आजादीकी लड़ाई अहिंसक लड़ाई थी। लेकिन पिछली घटनाओंने मेरी आंखें खोल दी हैं कि हमारी अहिंसा असलमें

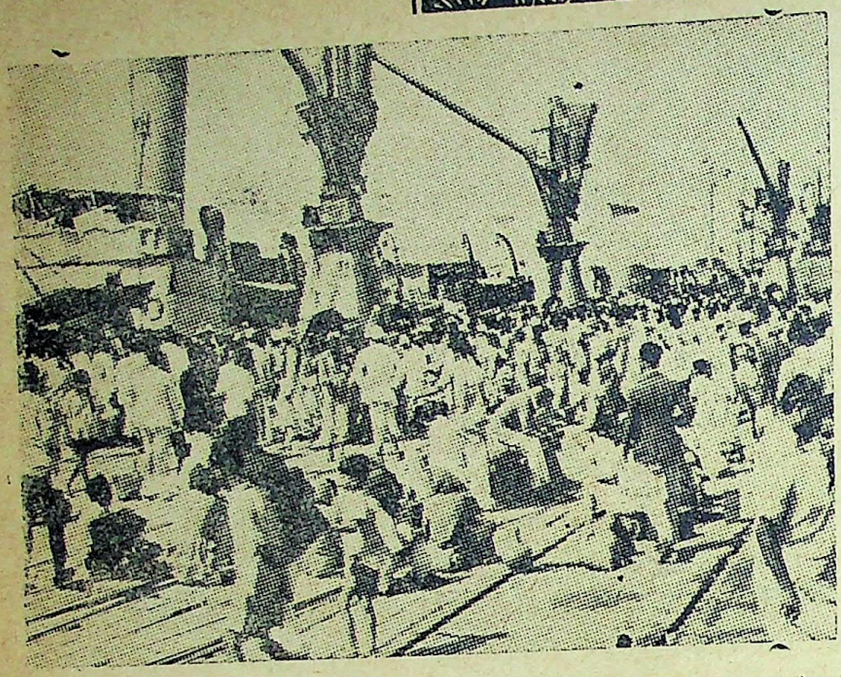

पाकिस्तानसे भारत प्रस्थान करनेवाले कराची बन्दरगाहपर समवेत शरणार्थी

कमजोरोंका मन्द विरोध था। अगर हिन्दुस्तानके लोग सचमुच बहादुरीसे अहिंसाका पालन करते, तो वे उनकी हिंसा कभी नहीं करते।

काश्मीरके सच्चे महाराजा शेख अब्दुल्ला हैं

काश्मीरमें जो कुछ हो रहा है, उसके बारेमें थोड़ा बहुत मुझे और आपको मालूम है। एक चीजकी तरफ मैं आपका ध्यान खींचना चाहता हूं। अखबारोंमें आ गया है कि यूनियन और पाकिस्तान काश्मीरके बारेमें फैसला करनेका किसीको निमंत्रण दें। यह पंच नियुक्त करनेकी बात हुई। कहांतक ऐसा चलेगा कि पाकिस्तान और यूनियन आपसमें फैसला कर ही नहीं सकते? कहांतक हम आपसमें लड़ते रहेंगे? काश्मीर और जम्मू एक है। वहां मुसलमानोंकी अधिकता है। काश्मीरके दो टुकड़े करें, तो यह टुकड़े करनेकी बात कहां जाकर रुकेगी? हिन्दुस्तानके दो टुकड़े हुए, इतना बस है। बससे ज्यादा है। हिन्दुस्तानको ईश्वरने एक बनाया, उसके टुकड़े मनुष्य कैसे कर सकता था? पर वह हुआ। लीग और कांग्रेस अलग अलग कारणोंसे उसमें राजी हुईं। आज काश्मीरके टुकड़े कर, तो दूसरी रियासतोंके क्यों नहीं?

काश्मीरमें झगड़ा क्यों हुआ? कहा जाता था कि हमला करनेवाले डाकू हैं, लुटेरे हैं। वे बाहरसे आते हैं। रेडर्स हैं। मगर जैसे जैसे वक्त बीतता है, वैसे वैसे पता चला है कि ऐसा नहीं है। उर्दूके कुछ अखबार यहां आ जाते हैं। मैं थोड़ा बहुत खुद पढ़ सकता हूं। कुछ मुझे आस पासवाले सुना देते हैं। आज 'जमींदार' नामके अखबारोंमेंसे मुझे थोड़ा सुनाया गया। 'जमीन्दार' के एडीटरको मैं पहचानता हूं। उनकी जबानपर कभी कलाग नहीं रही। अब तो उन्होंने खुल्लमखुल्ला निमंत्रण दिया है कि सब मुसलमान काश्मीरपर हमला करनेके लिये भर्ती हों। डोगरोंको, सिखोंको, सबको उन्होंने गालियां दी हैं। काश्मीरकी लड़ाईको जिहाद कहा है। मगर जिहादमें तो मर्यादा होती है—संयम होता है। यहां तो कुछ भी नहीं। जो कुछ चल रहा है, वह होना नहीं चाहिये। क्या वह यह चाहते हैं कि हिन्दू, सिख और मुसलमान हमेशा अलग ही रहें? मुसलमान अगर हिन्दुओं और सिखोंको मारें काटें, फिर भी हमारा धर्म क्या है? वह मैं आपको रोज बतलाता हूं।

"NACET"

"नेसेट"

अपने मूल्य में संसार का सर्वोत्तम ब्लेड

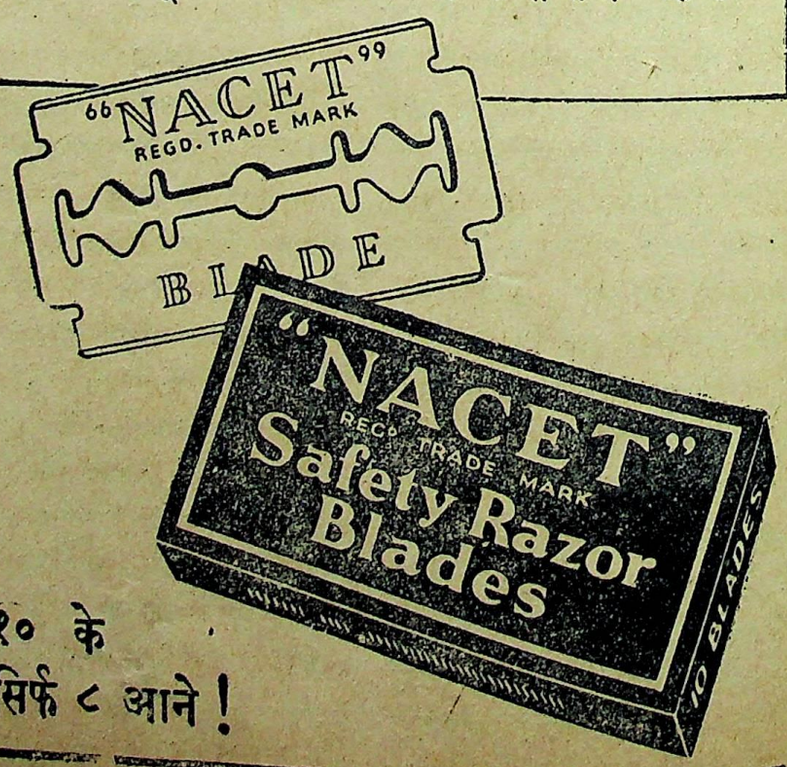

१० के
सिर्फ ८ आने!

उलझन

ले०—श्री श्री निवास साहित्यालङ्कार

साधना, कल्पना, कुमार इन तीनोंका आपसमें परिचय कैसे हुआ और परिचयके कुछ क्षणोंके बाद ही वे बच्चोंके समान इतने कैसे हिल-मिल गये यह एक बड़ा रहस्य था।

साधना अपने स्वभावके अनुसार धीर गम्भीर तथा मृदु-मधुर भाषिणी थी। उसका दावा था कि पुरुष कुमार, नारी कल्पनाको समझनेमें गलती कर रहा है। भले ही कुमार कवि, लेखक, एवं मनोविज्ञानका पण्डित क्यों न हो पर उसके पास यह शक्ति कहां कि वह नारीके दिखाने तथा खानेके दांत अलग-अलग हुआ करते हैं इस रहस्यको समझ सके। कल्पना साधनाकी बाल-संगिनी थी और कुमार....! साधनाके हृदयमें कल्पनाके प्रति अपार स्नेह एवं कुमारके प्रति(शायद) श्रद्धा थी, आदर था। कमसे-कम सीधा-सादा कुमार उन दोनोंकी बातें सुनकर इसी बातका अनुमान किया करता था। हां अनुमान ही। क्योंकि कुमार पुरुष है न!

कल्पना मानसिक गुत्थियोंकी एक उलझन है। साधना जितनी शांत एवं सरल स्वभाव की थी कल्पना उतनी ही चञ्चल एवं हठी। कभी कभी भावावेशमें वह ऐसी ही बातें करती थी कि जिन्हें छिपानेमें अपनेको असमर्थ पाती थी। वह अपनी उत्कण्ठाको शायद ही कभी रोक पाती थी। जब कभी उसके किसी रहस्य का भेद खुल जाता था तब वह शानसे यह कहनेमें जरा भी नहीं हिचकिचाती थी कि उसके मनकी बातें (राधा-कृष्ण ही [illegible] थी) [illegible]

भी समझ नहीं सकते। ऐसे अवसर पर उसकी आंखो में ऐसी आभा और शरीर में ऐसी चमक आती थी कि मानो विजिगीषु प्रवृत्ति की यह कल्पना सुन्दरी विश्वके पुरुषोंको परास्त कर स्त्री जातिके गूढ़ातिगूढ़ रहस्यकी प्रतिमा बन गयी है। साधना के समझमें नहीं आता था कि क्यों कल्पना कुमारको भी उसके अपरोक्षमें मूर्ख एवं बेवकूफ कहकर अपने अंतस्तलके किसी भागमें होने वाले बड़े भीषण संघर्षको दबाकर दुनिया को यही बताने का प्रयास करती थी कि वह कुमारसे जरा भी प्रभावित नहीं है, प्यार करना तो दूर ही रहा। कल्पना जब कुमारका इस तरह उपहास करती थी तब साधनाको कुछ अच्छा नहीं लगता था। क्योंकि साधना कुमारको जितनी गहराईसे जान चुकी थी उतनी कल्पना जाननेमें असमर्थ थी।

कुमारके सरल स्वभावमें एक ऐसा आकर्षण था कि वह जिनके साथ दस-पांच मिनट तक बातें कर लेता था उन्हें अपना-सा बना लेता था। वह परिचितों के अन्तस्तल पर अपनी स्मृतिके अवशेषोंकी ऐसी सूक्ष्म रेखायें खींच देता था कि वे जी चाहकर भी कुमारको भूल नहीं सकते थे। उसके जीवनकी यह विशेषता थी कि उसके अपने पराये हो गये थे और पराये अपने। वह जितना निष्कपट था उतना ही हठी एवं उन्मत्त। पर उसके हठमें बालकोचित मूढ़ता थी। यही कारण है कि कुमारको हंसते-हंसते रोने और रोते-रोते हंसकर नाराज होनेमें तनिक भी देर नहीं लगती थी। कुमारको इस बातका बड़ा आश्चर्य होता था कि कल्पना और साधनाने कैसे जान लिया कि वह [illegible]

लड़कियां अपनेको क्या क्या समझती हैं आखिर। जब कोई साहित्य संगीत-कला प्रेमी सुसंकृत भावुक युवक किसी भद्र युवतीके साथ अत्यन्त सौजन्यतापूर्ण व्यवहार करता है तब वह ऐसा क्यों समझती है कि यह युवक उस सुन्दरी ? के रूप, गुण यौवन एवं प्रतिभा ? से प्रभावित होकर उसे प्यार भी करने लगा है। हो सकता है कि कल्पना और साधना भी ऐसी मनोवृत्तियोंकी शिकार हो गयी हो। तभी तो उन्हें कुमारकी बात-बातमें, उसकी लिखी एक-एक पंक्तिमें उनमेंसे 'किसी का मित्र।' दिखायी पड़ता था। उफ। आखिर, नारी जो ठहरी।

वास्तवमें साधना अत्यन्त भावुक स्वभाव की है। उसके पास मानवके सुकुमार भावों गुत्थियोंका अभिव्यंजना कुशलतासे करनेकी क्षमता है। वह कल्पना की अभिन्न-हृदय सखी होकर भी उससे दूर और कुमारसे दूर होते हुए भी उसके सन्निकट थी। वह जानती है कि कल्पना-कुमार दोनों ही हठी एवं दुराभिमानी हैं। मायाविनी कल्पना न कुमारको समझ पाती है और न फक्कड़, मस्त कुमार किसी की बात पर विश्वास भी करता है। फिर भी स-हृदया साधना सोचती है कि कुमार पुरुष है—नवयुवक साहित्यिक एवं कलाकार है— उसके सामने उसका उज्वल भविष्य उसे आवाहन कर रहा है। ऐसी अवस्थामें कल्पने, तुम्हें यह उचित नहीं है कि तुम कुमारको समझनेमें गलती करो या उसे अंधेरेमें रखकर खुद तुम अपनी आत्माके साथ आंख मिचौनी खेलो।

उनके शब्दोंमें ही मैं कहूंगी कि, सखि, तुम आत्मवंचना न करो। मैं जानती हूं तुम अपने कमरेमें अकेली-अकेली एकांत में बैठकर मुंह ढांपकर रोया करती हो। आह! तुम क्यों रोया करती हो, कल्पने? तुमने भी कई बार इस रहस्यको कुमारके सामने प्रकट किया है। क्या तुम्हारा यह मूक-रोदन तुम्हारी वंचनाका द्योतक नहीं है? तब फिर क्यों तुम अनुचित शब्दोंसे कुमारकी सम्भावना करती हो। मुझे दुःख होता है तुम कैसे जानोगी! क्या तुम्हारे पास इतना मनोधैर्य है कि तुम कुमारके लिखे, कहे एक भी शब्दको असत्य या अनुचित साबित कर सकोगी? हां, जानती हूं, अभिशप्त नारी क्या नहीं कर सकती। उफ! मेरी समझमें नहीं आता कि मैं क्या करूं! कल्पना, कुमार दोनों ही एक दूसरेको अलग-अलग समझ रहे हैं। जाने मुझे क्यों इतना दुःख, इतनी वेदना होती है। आह.....! कुमार.... कल्पना.....कुमार.....!

रातकी नीरव शांतिमें अनिच्छासे किताब पढ़ते-पढ़ते कल्पना को कुमारकी याद आती है। वह कुमारसे नाराज भी है क्योंकि कई बार सन्देश मिलनेके बाद भी वह घर नहीं आया। उसे ऐसा लगता है कि कुमारको भूल जाना शायद उसके लिये असम्भव सा है। आज कल वह अकारण ही यह सोचने लगी है कि कुमारमें अब परिवर्तन हो गया है और हजरत झूठ-मुठकी बातें भी खूब करने लगे हैं। अब जब कभी मिलेंगे तब फौरन कह देंगे—अरे परसों ही नहीं और आठ-दस दिन पहले भी हम आपके यहां गये थे! पर क्या किया जाय। बड़े लोग ठहरे आप। कोई मिले तब न!' उफ! कैसी झूठी बातें करते हैं कुमार, जब कभी वे खुश हैं तो दुनियां इनके लिये खुश हैं। फिर घण्टों तक बातें करेंगे न खाने-पीने का ध्यान और न लिखने पढ़ने का। बस, ऐसे ही मस्त हैं। अगर कभी नाराज है तो दो मिनटमें ही चले जायंगे। जाते समय कहेंगे भी नहीं कि 'जा रहा हूं।' मानो घर की दीवाल' छत्त, छड़ी, नीमके सुन्दर पेड़ ही देखने आये हैं। फिर क्या महीनों तक दर्शन दूर रहा पता तक नहीं चलेगा कि कुमारजी कल्पना लोककी किस 'अनामिका' की साधनामें इतने व्यस्त हो गये हैं। जाने यह 'अनामिका' भी कौन है उनकी। बारबार उसीको ही लक्ष्य कर लिखते हैं। पर क्या कुमारकी कहानियोंकी एक एक पंक्ति, गीतोंका एक-एक शब्द मेरे प्रति उनके स्नेहकी अभिव्यंजना नहीं करता। सचमुच मेरे लिये कुमार एक रहस्य है। साधना भी यही कहती है। कुछ समझमें नहीं आता कि उनका जीवन क्या है और उनके जीवनपग क्या हैं। कुछ भी हों वे अब पहले जैसे नहीं रहे। मुझे बारबार कहते हैं कि, 'कल्पने तुम कितनी चंचल हो।' पर खद ही इतने चंचल है कि बातें करते-करते या पढ़ाते समय ही एकदम जगहसे उठकर जानेके लिये जल्दी मचायेंगे। हाथ पकड़ कर बिठलानेके बाद भी नहीं बैठेंगे। अगर माना कभी बैठ भी जांय तो अपनी आदतके अनुसार कहेंगे—'कल्पना, तुम मेरे पास आकर बैठो न!' और फिर ऐसी खरीखोटी, व्यंग पूर्ण बातें सुना देंगे कि हम ही जानती है कि क्या बीत रही है। कुमारका हठ करना या नाराज होकर मारना भी कितना अच्छा लगता है! हां, कुमारमें यह एक बात बड़ी अच्छी है कि वे पक्के भुलक्कड़ है। सब कुछ भूल जाते हैं। इतना ही नहीं अपने गीतोंका प्रारम्भ, कहानियों-एकांकियोंके नायक-नायिकाओंके नामतक भूल जाते हैं। और मुझे या साधनासे पूछते हैं कि, 'बता जो, मेरे फलाने गीतका प्रारंभ कैसे हुआ?' जब हम अथ से इति तक सुना देती है तो इतने-इतने खुश हो जाते हैं कि क्या कहूं। हम इतनी बार बुलाती है और जब प्रतीक्षामें बैठती हैं तब तो बिलकुल नहीं आते। जाने अपनेको क्या समझते हैं। हमीं पागल हैं बेकार किसी की याद और प्रतीक्षा करती हैं। क्या कुमारको मेरी मेरी-मेरी याद नहीं आती? यह हो ही नहीं सकता। मेरे साथ भी आजकल बड़ा कठोर एवं निर्ममतापूर्ण व्यवहार कर रहे हैं। कभी कभी ऐसा गुस्सा आता है इस कुमारकी कि...!

अपने 'साधना लोक' में अकेला बैठ कर कुमार लिख रहा है। घोर निशाकाल है। बाहर झम-झम पानी बरस रहा है। छोटा सा कमरा एक कोनेमें कुछ कपड़े—और कपड़ों एवं अन्य आवश्यक वस्तुओंसे अधिक किताबें और अखबार इतस्ततः फैले हुए हैं। छतसे पानी भी चू रहा हैं। जमीन पर शुभ्र बिस्तरा बिछा है। पर जब पानीकी बून्दे कागज एवं कुमारके बिस्तरे पर बड़ी तेजीसे आती है तब वह करुण दृष्टिसे अपनी कुटीके चारों ओर देखता है। अपनी विवशता-लाचारी, गरीबी और निस्संग एकाकी जीवनके प्रति वह खीझ उठता है। अनजानमें दो चार आंसूकी बून्दे उसकी आंखोंसे ढुलक पड़ती है। उफ....कौन जानता है उसकी वेदना। उसे दो ही दिन पहले हुई साधनाके साथकी कई बातें याद आती है। हां, कल्पना, कुमार और साधना सोमवारके दिनकी झिल मिलाती संध्या-बेलामें 'प्लेजरट्रिप' में गये थे। जाने कल्पना क्यों नाराज थी उस दिन। कुमार दोनोंकी तुलना करनेका मोह टाल नहीं सकता साधना और कल्पना...कोई देवी है तो कोई मानवी....! उसे ऐसा लगता है कि वह आशा-निराशाके झूलेमें बैठ कर अनंतकी गोदमें झूला जा रहा है। उसकी निश्चित धारणा है कि नारी, आत्म वंचना कर ही जी सकती है। कल्पना भी इस नियमका अपवाद नहीं है। पता नहीं कि साधना बारबार यह क्यों कहती है कि कल्पनाने अपनेको एक मात्र 'राधाकृष्ण' की प्रतिमा सा ही निछावर किया है। तब तो कमाल है। इतनी प्रवचना कल्पने, तुम्हीं कर सकती हो। पर क्या तुम साधना जैसी स्नेहमयी सखीसे भी अपना हृद्गत-अपनी बातें छिपा सकोगी? क्या वह तुम्हारे-नारीके स्वभावको नहीं जानती! क्या ही अच्छा होता, यह पगली कल्पना

कल्पना न होकर मीरा ही हो जाती ! कल्पने, काश तुम मीरा हो सकती ! पर मैं किस पर विश्वास करूं ! साधना और कल्पना मेरे लिये दोनों ही उलझन है....!

सुसज्जित एवं सुन्दर कमरेमें बैठ कर साधना कुछ लिखनेमें व्यस्त हो गयी है। कल्पना भी किताबें, फाउण्टेन, कापी आदि साहित्य लेकर लिखे, पढ़े या सो ही जाय इस तरहका विचार करती हुई अपने स्वभावके अनुसार मुंहसे कुछ न कुछ कहती और उनींदी आंखोंसे जाने शून्यम क्या क्या देख रही थी। उसे इस बातकी जरा भी परवाह नहीं थी कि साधना उसकी बात ध्यानसे सुन रही है या नहीं। साधनाको कल्पनाकी बातें सुनते ही कुमार की याद आती है और हंस पड़ती है। कुमार भी कभी कभी मस्त होकर आंखें मूंदकर ऐसी ही बातें किया करते हैं इसका साधनाको स्मरण होता है। फिर भी कल्पनाके प्रश्नेको 'हां' या 'ना' उत्तर देती हुई लिखने लग जाती है—"आपको किस नामसे संबोधन करूं कुछ समझमें नहीं आ रहा है कुमार। आपको अपनी रचनाओं पर इतना गर्व है कि मुझे कोई रचना पढ़नेके लिये देना तो दूर रहा पर दिखाना भी नहीं पसन्द करते। जानती हूं। कल्पनाको ही आप दिखायेंगे। मैं यह भी हृदयसे मानती हूं कुमार, कि आप योग्य हैं पूर्ण रूपसे। भला मुझ जैसे अज्ञानको कोई रचना क्यों दिखाना पसन्द करेंगे। आपको शायद मालूम होगा कि पहले जिसे घृणा होती है, स्निग्ध परिचयके बाद, उसीसे ही अधिक स्नेह एवं आत्मीयता होती है। अधिक क्या लिखूं ? आप बड़ी जल्दी मेरी किसी भी बातको बुरा मानकर नाराज होते हैं। मुझे बड़ा दुःख होता है फिर। पर सचमुच आप बड़े भोले हैं कुमार। आप कैसे जानेंगे कि दुनियां कितनी स्वार्थी एवं मतलबी है। आप इतने सरल स्वभावके क्यों हो गये कुमार ! मुझे भी कल्पनाकी तरह छलना समझकर भला बुरा न कहिये। काश कल्पना कल्पना है और साधना साधना है यह आप जान पाते तो....। आप मुझे साधना कहते हैं अब और कुछ न कहकर मेरे नामको मद्दा न बनाइये वरना साधना नामक सुन्दर नामकी सुन्दरता जाती रहेगी। खैर....आपकी इच्छा। जी चाहें वही कहिये कुमार..। पर यह 'अनामिका किसका नाम है ! मेरे लिये आप और कल्पना दोनों ही पहेली हैं। मुझे अकेलीको-तो बता दीजिये न कि यह 'अनामिका' कौन है कुमार ! जाने ऐसे सुन्दर-सुन्दर नाम आप कैसे रखते हैं। ओह। कैसा प्यारा-प्यारा नाम है अनामिका। अ...ना...मिका। काश अनामिका...मे मे...—।

कुमार, साधना कल्पना तीनों ही अपनी बुद्धिसे एक दूसरेको जाननेकी कोशिश करते हैं पर कभी-कभी उन्हें ऐसा लगता है कि वे एक दूसरेके बारेमें कुछ नहीं जानते। परिचयके बाद इन दोनोंको ऐसा लगता। कि उनके मिलनके समय और कोई वहांपर न आयेपर आज जब दोनों मिलते हैं तब तीसरे व्यक्तिकी अनुपस्थिति दोनोंको भी खटकने लगती है। जब तीनों फिर एक साथ मिलते हैं तब वे भूल जाते हैं कि उनमेंसे कोई कभी किसीपर नाराज हो गये थे। उस समय उनकी हार्दिक अभिलाषा होती है कि कोई पहले-पहले अपने मधुर रहस्यको प्रकट करे। पर... पर यह हो नहीं सकता और ये आपसमें ऐसे ही प्रश्न एक दूसरेसे करते हैं कि जिसका उत्तर पूछनेवाले व्यक्तिसे ही शेष दोनों चाहते हैं।

कल्पना, कुमार, साधना का तो यह दावा है कि उन्होंने एक दूसरेके अन्तस्तल में प्रवेश कर अपनी-अपनी गुत्थियोंको खोला है। कुमारको ऐसा लगता है कि वह नारीके मनो विज्ञानका सफल अभिव्यंजक है। साधनाका कुमारकी इस क्षमता पर पूरा विश्वास है और वह इसे पूर्ण रूप से मान भी चुकी है। पर जब कल्पना और साधना दोनों मिलकर यही सोचती है कि कुमार पुरुष है और पुरुषमें नारी को समझनेकी क्षमता नहीं होती। कभी-कभी इन तीनोंको ऐसा लगता है कि वे इतने निकट होकर भी हठ, वंचना या दुराभिमानके कारण एक दूसरेसे उतने ही दूर हैं जितने दो ध्रुव। तीनों जानते हैं कि उनमेंसे एकका जीवन दूसरेके बिना नीरस, अपूर्ण एवं विनाशका द्योतक है। आज दोनोंके बीचकी चौड़ी खाई, जो सामाजिक परिस्थितियां खोद रही हैं, भरनेकी बहुत-बहुत कम सम्भावना है। क्योंकि यह जीवनका शाश्वत सत्य है, यौवनका कठोर अभिशाप है। मानव और उसमें भी नारी विशेषतः धन, सौंदर्य एवं सम्मानको ही प्यार करती है। भले ही भुक्तभोगी इस बातको गलत साबित करे या कहे। पर यह निश्चित सत्यत और तीनोंके लिये एक उलझन है। हा! उल..झ..न—!।

आँख है तो जहान है

आंखके बिगड़ जानेसे मनुष्य-जीवन ही बेकार है। बड़े ही अथक परिश्रम द्वारा भीमसेनी कपूर आदि जङ्गली जड़ी-बूटियां से तैयार किये हुए जगत-प्रसिद्ध **भीम सेनी** सुरमा इस्तेमाल करें। इससे आंख की लाली, सूजन, पानी बहना, जाला मांड़ा, फूली, संभलबाई, रतौंधी, दिनौंधी, पड़वाल, चकाचौंध तथा मोतियाबिन्द बिना आपरेशन दूर होता है। लाखों आदमियोंने परीक्षाएं की हैं। प्रतिदिन नियमित रूपसे लगानेसे बुढ़ापे तक आंख की रोशनी बनी रहती है। कीमत १॥), तीन शीशियां ४)।

पता—भारत आयुर्वेद आश्रम, दरशनपुरवा (नं० ३) कानपुर

आधुनिक नारी

—:***:—

लेखक—श्री शम्भूनाथ सकसेना

अभी-अभी की बात है। मैं एक लम्बी यात्रासे लौटा हूं और भारी उदास हूं।

बात कानपुर जंकशनकी है। मैं स्टेशन पर खड़ा अपनी गाड़ीकी प्रतीक्षा कर रहा था कि लखनऊ और झांसीके बीच चलने वाली मेल-ट्रेनके सेकिण्ड क्लाससे एक नवयुवती उतरी। वेश-भूषा से वह टिप-टाप थी—काली रेशमी साड़ी, ऊंची ऐड़ीके सुर्ख सेंडिल, साटनका कामदार 'मिसेज पण्डित टाइप' बगलों तकका ब्लाउज, जो कि उसके उरोजों और कटि-भाग पर आकर एकदम संकरा हो गया था; साड़ीका पल्ला अर्ध वक्ष-प्रदेशको अनावृत छोड़ता हुआ पीठ पर मंदिरके चवर-सा झूल गया था, उसके काले, घने बाल पुराने बरगद्की जटाओं-से पीठ पर छितराये हुए थे, लम्बी, पतली ककड़ियों-सी उसकी अंगुलियोंके नाखून सुर्ख रंग से रंगे हुए थे, ओठों पर उसके लिपस्टिक का हल्का प्रयोग था और वे नवोदित गुलाबकी कली की पंखुड़ियोंसे लगते थे। चेहरा उसका लम्बा और रंग उसका धूप-सा था। आंखें उसकी आकर्षक थीं—उनमें यौवनकी मादकता थी, विलास उसके लिबासमें ही नहीं, उसकी आंखों और चालमें भी उसकी छाप थी, कलाईमें उसके सुंदर छोटी सी रिस्ट वाच थी और आंखों पर उसके गोल्डन फ्रेमका चश्मा था। जिस समय वह अपने कम्पार्टमेण्टसे नीचे उतरी उस समय प्लेट फार्मपर चहल कदमी करते हरएक नवयुवककी नजर उस तरफ उठ गयी, अनायास ही मुसाफिर स्त्रियोंने भी उसकी तरफ देखा, अनायास चिंहुक कर गंवार यात्रियोंने भी उसकी तरफ देखा। लोग-बाग उसकी तरफ देख नहीं जनाब, घूर रहे थे।

उस युवतीने कम्पार्टमेण्टसे नीचे उतरते ही पुकारा—

'ऐ कुली.....ऐ कुली!'

कुछ कुली स्टेशन पर पहलेसे व्यस्त थे, कुछ और डिब्बोंकी तरफ दौड़ गये थे। उसने जरा और तीखे स्वरमें आवाज दी—

'कुली.....ऐ कुली!'

फिर भी किसी कुलीने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। कुलियोंका मधु-मक्खियों-सा छत्ता आगेके एक फर्स्ट क्लासके सामने लगा हुआ था, जहांसे किसी अंग्रेज अफसरका सामान उतर रहा था और जहांसे उन्हें अपने श्रमके बदलेमें कुछ अधिक मिलनेकी आशा थी। नव युवती प्रतिक्षण अपना धैर्य खोती जा रही थी और उसका स्वर रुखा होता जा रहा था। उसने फिर आवाज लगायी—

'कुली.....ऐ कुली!'

सामनेसे एक बूढ़ा कुली चला जा रहा था उसके जानेका रुख भी उस फर्स्ट क्लास कम्पार्टमेण्टकी ओर ही था, जहां और कुली सामान उतार ठेलों पर लाद रहे थे। युवतीने उस बूढ़े कुलीकी ओर संकेत करते हुए कहा—

'ऐ बूढ़े....इधर चलो....इधर!'

कुलीने अपने चलने का रुख बदल दिया और युवतीके कम्पार्टमेण्टके सामने आ खड़ा हुआ। युवतीने कर्कश स्वरमें कहा—

बदमाश सुनता नहीं था, हम कबसे आवाज पर आवाज दे रहा है।'

कुलीने प्रत्युत्तरमें कुछ नहीं कहा सीधे जाकर कम्पार्टमेण्टमेंसे युवती द्वारा निर्देशित सामानको प्लेटफार्म पर उतारने लगा।

सामानमें तीन अटेचियां थीं, दो लम्बी मुंह बन्द थैलियां थीं, एक होल्डोल था और एक बड़ा थर्मस था। उस बूढ़े कुलीके सामने सबसे बड़ी कठिनाई इतने अद्दोंको ले जानेकी थी। यदि वह

एक आधुनिक नारी

युवती थोड़ा-सा सहयोग देती तो सामान कुली आसानीसे उठा ले गया होता। लेकिन युवती वैसी ही सामानकी ओर से असम्बद्ध खड़ी कुलीको शीघ्र सामान उठा चलनेके लिये गालियां दे रही थी। उसकी भाषामें गालियां थीं—वाणीमें कर्कशता थी—धमकियां थीं। कुली इतने अद्दोंको एक बारमें उठानेमें विवशता अनुभव कर रहा था जब कि युवती सामानमें हाथ लगानेमें भी तैयार नहीं थी। यदि उस कुलीको जरा भी अवसर मिल गया होता तो वह वहांसे मजदूरीका मोह छोड़कर अविलम्ब पीछा छुड़ा कर भाग गया होता लेकिन भागनेकी वह गुंजाइश नहीं पा रहा था। तब कुलीने सामान उठाना शुरू किया, बैठकर उसने तीनों अटेचियां अपने सिर पर जमाईं, एक-एक थैलीको कन्धेके एक-एक तरफ लटकाया, होल्डोल को एक हाथमें लटकाया, थर्मसको दूसरे हाथमें थामा और बमुश्किल तमाम उठा।

उठनेमें उसकी पिंडलियां थर-थर कांप रही थीं और उसका वृद्ध शरीर पेड़के सूखे पत्तेकी तरह दलित हो रहा था। नवयुवतीने अपने हाथके रूमालसे चेहरे पर हाथ फेरा और रौब भरे स्वरमें कहा—

'देख गिरा मत देना सामानको वरना चमड़ी खिंचवा ली जायेगी।'

प्लेट फार्मके लोग एक बार फिर आश्चर्यसे उस जानवरसे लदे इंसानको देखने लगे थे, जो कि अपनी शक्तिसे ऊपर बोझ उठाये हुए था, अपनी इच्छाके विरुद्ध (उसकी चालसे दिखता था कि या तो असमर्थ होकर वह इस सामानको रखकर उस नवयुवतीके शासनके विरुद्ध विद्रोहकर देगा या फिर इस सामानको गिराकर नुक्सान और अपनेको चोटिल कर लेगा। और वह बढ़ा कुली अपनी थर थराती पिंडलियों, उम्रके बोझसे परिश्रान्त शरीरको लिये उस बोझको बैलकी तरह लादे लिये जा रहा था। युवतीकी नजरोंमें कुलीके इस अतिशय श्रमके प्रति कोई सहानभूति नहीं थी, कोई करुणात्मक भावना नहीं थी—कोई प्रशंसा नहीं थी। वह वैसी ही आगे-आगे कुलीको झिड़कते-कड़वी-तीखी बातें सुनाती चली जा रही थी।

०

इस दृश्यको देखकर मैं घटनापर सोचनेके लिये विवश हुआ हूं। उस जानवर से लदे हुए मानवको देखकर कोमल भावनाएं विद्रोह कर उठी हैं। माना कि वह व्यक्ति कुली था। कुली था इस कारण उसका पेशा भी सामान लादना ही है। कम और अधिक सामान लदवानेके सम्बन्धमें भी हम उस नवयुवतीको दोष नहीं दे सकते। यदि वह अधिक बोझ नहीं उठा सकता था तो अन्य अपने सहयोगीको भी बुला सकता था अथवा इस अन्यायके विरुद्ध विद्रोह भी कर सकता था। लेकिन, जो बात सबसे अधिक अखरती है वह है नारी होते हुए भी निष्ठुरता! जिस नारीको हम दया और ममताकी देवी मानकर उपासना करते हैं—जिस नारीत्वकी परिभाषा ही भारतीय संस्कृतिमें पर दुख कातरता है—विनाश नहीं निर्माण है, हिंसा नहीं अहिंसा है—क्रोध नहीं प्रेम है, इन गुणोंका उस आधुनिक नारीमें सर्वथा अभाव था—जबर्दस्त कमी थी। हम मानते आये हैं कि सौन्दर्य निष्ठुर नहीं धुनी हुई रुई—सा मुलायम होता है—यह भी आदि-काल से हमारी संस्कृतिने सिखाया है कि स्त्री मातृत्वकी पोषक है अतएवममत्व-प्रधान है।

इन प्रश्नोंको लेकर बात केवल उस सौन्दर्यकी प्रतिमा नवयुवतीकी ही नहीं है। मेरे सामने आधुनिक-नारीका प्रश्न है? मैं देखता हूं आजकी नारी, वेश-भूषा और खाने-पीने चलने-फिरनेकी बात छोड़िये दैनिक-जीवनकी उन सांस्कृतिक बातोंसे भी गिर गयी है जिसपर भारतीय संस्कृतिकी आधार शिला स्थिर है और मैं फिर सोचने लगा हूं कि उक्त युवतीमें दयाकी जगह अहम्मन्यता थी, प्रेमकी जगह रोष था। उसकी भावनामें ममत्व की जगह निष्ठुरता थी—क्रूरता थी—बाहरी दिखावा था। वहां उसका नारीत्व कुछ नहीं केवल उस वातावरणकी छाप थी जिस दूषित प्रवृतियोंके बीच उसका निर्माण हुआ। वह नवयुवती उस बूढ़े कुलीसे प्रेमसे भी काम ले सकती थी—उसे कुछ अधिक देनेका प्रलोभन और अटेचियोंको उठानेमें सहायता देकर, प्रेरणाका काम कर सकती थी और मैं समझता हूं उस स्थिति में बूढ़ा कुली नारीमें ममत्वकी प्रबल भावना देखकर नवोत्साहसे एक स्फूर्तिसे भर गया होता उसे जो बोझ उठाना पड़ा उसे वह अखरा भी नहीं होता। जिस सौन्दर्यकी वह नवयुवती प्रतिमा थी यदि उसने कुलीके प्रति ममताका प्रदर्शन किया होता तो उसने अपने सौन्दर्यको सार्थक कर दिया होता।

आजके युगमें मानव तो पशु बन गया है—राजनीतिक बिषमताओंने उसके अन्दरकी सारी कोमलताका—सारी सात्विकताका और समस्त मानवीय भावनाओंका क्रूरतासे अन्त कर दिया है। यह खूनी युग है। हत्या, लूट, मार, नारीत्वका अपमान सभी साधारण बातें बन गयी हैं। विनाशकी प्रलयंकर लपटोंसे हम आज गुजर रहे हैं। और इस भयानक युगमें—इस हैवानियतसे भरे वातावरणमें मात्र हमारी नजर केवल अपने नारी-समाजकी ओर है। केवल उस नारी की ओर है जो निर्माणकी प्रतीक हैं। लाल लाल लहूसे भरे हाथों और चिनगारियां चिलकती आंखोंको लिये हुए भी हम आशा और विश्वाससे नारी की ओर निर्माणकी आशासे देखते हैं। और हम जब उस तरफ भी विलास और अहमन्यता, क्रोध और अनौचित्य, धूर्तता और विनाशको सदेह देखते हैं तो अंधेरे में निर्माणकी आशा किरण भी लुप्त हो जाती है। जिन पशुत्वपूर्ण, हिंसक परिस्थितियोंसे हम गुजर रहे हैं उनसे हम निस्सन्देह ऊपर उठना चाहते हैं। मानव में पशुताकी प्रधानता नहीं निर्माणकी कल्पनाका ही बाहुल्य है। निर्माण-पथपर हम नारीको अग्रणी मानते हैं। आरम्भसे ही प्रकृतिने उसे 'सिर जनहार' बनाया है। और इस कारण उसका उत्तरदायित्व भी पुरुषसे अधिक है। आजकी नारी इस सत्यकी अवहेलना कर रही है। कलकी नारी दूसरेके निर्माणके लिये तिल-तिल मिटती थी और अमर है। आजकी नारी अपने सुख साधन बटोरनेमें निरन्तर प्रयत्नशील है और पशुताके अत्यन्त निकट है। दूसरोंके लिये मिटना निर्माण-भावना है—मानवता है और अपने हितोंकी सुरक्षाके लिये आठो पहर यत्नशील रहना विनाशकी भावना है—पशुता है। जहां हम केवल अपने हितोंके विषयमें सोचते वहां स्वार्थ हमें अपनेमें जकड़ लेता है और मानवताका अन्त हो जाता है। अपना हित अपना सुख है दूसरेका हित मानवता है। और आज विभ्रान्त नारीको इसी सत्यको अपनाना होगा। निर्माणकी भावनासे अपना 'भविष्य' और 'वर्तमान' उज्वल बनाना होगा। नारीपर ही बहरहाल हमारे निर्माणकी आशा केन्द्रित है। और हम इस बातमें विश्वास करते हैं आज उसका उत्तरदायित्व अत्यन्त गुरुत्तम है।

साहित्य चर्चा

विटामिन हीनता जनित रोग—

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रनाथ' एम० बी० बी.एस०प्रकाशक,भृगुराज भार्गव, अवधपब्लिशिङ्ग हाउस, लखनऊ, मूल्य सवा दो रुपये।

स्वास्थ्य विषयक चर्चाके साथ साथ देश में विटामिनका नाम काफी प्रचारित हुआ है, लेकिन उसके विषयमें जानकारी बहुतही कम लोगोंको है। प्रस्तुत पुस्तकमें विटामिन की उत्पत्ति एवं उनका महत्व तथा हमारे शरीर पर उनका प्रभाव आदि विषयों पर बड़ी गम्भीरताके साथ विचार किया गया है। विटामिनकी हीनतासे उत्पन्न होनेवाले रोगों और उनका निदान एवं चिकित्सा पर भी लेखकने प्रकाश डाला है। हिन्दीमें इस विषय पर कम लिखा गया है। अतएव लेखकने प्रस्तुत पुस्तककी रचना कर एक अभाव की पूर्ति की है। इसमें सन्देह नहीं कि यह पुस्तक हिन्दी संसारमें आदर पायेगी। उच्च श्रेणियों और खास तौर पर बालिका शिक्षण संस्थाओंमें इसको पाठ्य पुस्तकोंमें रखनेसे भावी नागरिकों का बड़ा हित होगा।

गरुड़ध्वज—

लेखक श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र—प्रकाशक गयाप्रसाद एण्ड सन्स आगरा। मूल्य सवा दो रुपये

हिन्दीके श्रेष्ठ नाटककार श्री लक्ष्मीनारायण मिश्रका यह ऐतिहासिक नाटक है, इसकी कथा-वस्तु ईसाके पूर्व पहली दूसरी शताब्दीकी है। कथाका आधार ऐतिहासिक होते हुएभी लेखकने कल्पना और चिन्तनके बल पर नाटकका ढांचा तैयार किया है और लेखकको इस कार्यमें बड़ी सफलता मिली है। इतना सुन्दर नाटक लिखनेकेलिये हम लक्ष्मीनारायण मिश्रको बधाई देते हैं।

चारुमित्रा—

लेखक डा० रामकुमार वर्मा एम० ए पी० एच डी० प्रकाशक साधना-सदन, प्रयाग मूल्य सवा दो रुपये।

चारुमित्रा ख्यातिप्राप्त डाक्टर रामकुमार वर्माके चार मौलिक एकाङ्की नाटकों का संग्रह है। इससे पहले 'पृथ्वीराजकी आंखें' और रेशमीटाई नामक एकाङ्की नाटकोंके संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। यह उनके एकांकी नाटकोंका तीसरा संग्रह है, इसमें संग्रहीत नाटक 'चारुमित्र' की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक और 'रजनीकी रात'की सामाजिक और उत्सर्ग, तथा अन्धकारकी दार्शनिक है। इस संग्रहके सभी नाटक भाव-भाषा कथानक और रचना-कौशिल सभी दृष्टियोंसे श्रेष्ठ है। वर्माजीको अपने अन्य दो संग्रहोंसे इसमें अधिक सफलता मिली है। सभी एकाङ्की हिन्दी संसारमें समादृत होंगे, ऐसी आशा है।

पुस्तकालय: उसका सञ्चालन—

पण्डित छविनाथजी पाण्डेय, प्रकाशक किताबघर, पो० कदमकुआं, पटना, मूल्य डेढ़ रुपया।

शिक्षा-प्रसारके साथसाथ देशमें पुस्तकालयोंकी प्रगति स्वाभाविक है, किन्तु खेद है, कि पुस्तकालय शास्त्र पर हिन्दी पुस्तकोंका सर्वथा अभाव है। हर्षकी बात है कि प्रस्तुत पुस्तक द्वारा इस अभावको दूर करनेकी कोशिश की गयी है। इस पुस्तकमें पुस्तकालयोंके सम्बन्धकी सारी ज्ञातव्य बातोंका सुन्दर समावेश है। इसके विद्वान लेखकको पुस्तकालय आंदोलनका पर्याप्त ज्ञान एवं अनुभव है जिसके सहारे उन्होंने इसे सब प्रकार उपयोगी बना दिया है। पुस्तकालय संचालन, पुस्तकालयाध्यक्षके कर्त्तव्य, ग्राम-पुस्तकालय,शिशु-पुस्तकालय वर्गीकरण आदिके परिच्छेद तो बहुतही उपयोगी हैं। हमें यह कहनेमें जरामी संकोच नहीं है कि यह पुस्तकालयोंके लिये सर्वथा संग्रहणीय है।

कल्पना-कानन—

लेखक—श्री वृजलाल वियाणी। प्रकाशक 'हिन्द' प्रकाशन,अकोला (बरार) पृष्ठ संख्या-७६-मूल्य २) रु०

इस पुस्तकमें राष्ट्रकर्मी वियाणीजीके ४२ के देशव्यापी आंदोलनमें जेलके एकांत निवासके समय हृदयमें उठे हुए उन १३ विचारोंका संग्रह है, जिनके आधार हैं, उनकी भावुकताको अपनी ओर आकर्षित करने वाली, कुछतो सामाजिक मान्यताएं और कुछ नैतिक-अनैतिकका द्वन्द्व। इन तर्कपूर्ण तेरहों विचारोंको विचारककी नई दृष्टि निक्षेप करते हुए वियाणीजीने जिस शैली और भाषाका आश्रय लिया है, वह प्रशंसनीयही, नहीं अनुकरणीय है और इस पुस्तकके पाठक ऐसा अनुभव करेंगे कि वह कल्पना काननमें स्वयं विचर रहे हैं। इसमें संग्रहीत विचारोंकी शृङ्खला कहीं से टूटती नजर नहीं आती इस विशेषताके साथही साथ सत्य, शिव सुन्दरका निर्वाह तो अनोखे ढङ्गसे हुआ है। किन्तु 'जन्माष्टमी और 'पर्व स्नान' शीर्षक दोनों विचारोंमें उनका भावोद्वेग सीमाके पार जान पड़ता है। क्योंकि मानवीय मर्यादा जहां हार मानती है वहीं हमें भगवानका आश्रय लेना पड़ता अर्थात हम विचारकी तर्ककी सीढ़ियोंसे उतर कर छुटकारा चाहते हैं। यही द्वन्द्व उपरोक्त दोनों विचारों में टकराता है। लेखककी अधीरता इसमें स्पष्ट ताकती झांकती है। एकराष्ट्र कर्मीका हृदय और विचार इतनी डावाडोल स्थिति में क्यों ?

वस्तुतः यह पुस्तक बहुतही लाभपूर्ण और प्रयास बहुतही सफल रहा है। हम ऐसी रचनाके लिये लेखकको धन्यवाद देते हैं।

विद्यापति—

रचयिता पोद्दार रामावतार 'अरुण' प्रकाशक विहारीलाल राजकुमार, किरण-कुञ्ज, समस्तीपुर (विहार)

'विद्यापति' कवि अरुणका प्रबन्ध काव्य है। मिथिलाके प्रसिद्ध महाकवि विद्यापतिकी स्मृतिमें इस पुस्तककी रचना कर कवि अरुणने बहुतही प्रशंसनीय कार्य किया है। विद्यापतिमें कई स्थलोंपर बड़े सुहावने चित्र हैं जिन्हें देखकर कविकी सराहना किये विना कोई रह ही नहीं सकता। शब्द-योजना और भाव-व्यञ्जनामें जो सौन्दर्य और माधुर्य है वह काव्य प्रेमियोंको उत्फुल्लित करदेगा इसमें सन्देह नहीं। आचार्य जानकी वल्लभशास्त्रीके शब्दोंमें इतनाही कहना पर्याप्त है विद्यापतिका प्रणयन कर कवि अरुण, नयी पीढ़ीके कवियोंमें सबसे आगे आ गये हैं। कवि अरुण भविष्यमें इससे भी सुन्दर रचना लेकर हिन्दी-संसारमें उपस्थित होंगे-ऐसी आशा है।

चयनिका

काश्मीरके युद्धको दैनिक खर्च

काश्मीरमें खुल्लमखुला युद्ध नहीं हो रहा है। अफरीदी पाकिस्तानके शिखण्डी के रूपमें लड़ रहे हैं। भारत सरकार काश्मीरकी रक्षाके लिये जो कुछ कर रही है। उसमें प्रतिदिन ४ लाख रुपयेका खर्च है। अगर कहीं लड़ाईने विकरालरूप धारण किया तो कितना खर्च होगा, यह देशवासियोंके सोचनेकी चीज है।

'हजाम'' नहीं 'नाई'

छोटा नागपुरके नाइयोंने दो दिनतक के सम्मेलनके बाद 'हजाम' या 'ठाकुर' कहनेके बजाय अपनेको नाई कहलानेके अधिकारपर जोर दिया है। इस सिलसिले में यह उल्लेखनीय है कि बहुतसे नाई अपनेको 'न्यायी ब्राह्मण' नामसे सम्बोधित करते हैं।

मनहूस बड़ा दिन

विश्वके कोने कोनेसे जो संवाद मिले हैं उनसे पता चलता है कि इस वर्ष बड़े दिनपर जितना रक्त पात और दुर्घटनाएं हुई हैं उतना युद्ध छिड़नेके बाद कभी नहीं हुआ था। फिलीस्तीन, यूनान और चीनकी लड़ाइयोंको छोड़ न्यूयार्कमें २७३ आदमी मरे। १० रेड इण्डियन जीवित जला दिये गये। एक सुरंगके फूटनेसे डच जहाजपर २४ आदमी मर गये। फ्रांस में तूफानमें १० आदमी मरे हैं। फिलिपाइन द्वीप समूहके समरटाप् तथा राजधानी मनीलामें तूफानसे बड़ी हानि हुई है और बहुतेरे लोग कालके गालमें चले गये हैं। तुर्कीमें साठ घण्टेतक भयंकर तूफान चला है जिससे बड़ी क्षति हुई है। कुछ शहरोंमें तो मुश्किलसे एकाध घर सुरक्षित बचा।

१९४७ के महापुरुष

'लन्दन न्यूज क्रानिकल' में १९४७ के महापुरुष' शीर्षक एक लेखमें प्रकाशित हुआ है जिसमें भारतके गवर्नर जेनरल लार्ड माउण्ड बैटन और प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहर लाल नेहरूका उल्लेख किया गया है लेखमें कहा गया है कि सुदूरपूर्वमें लार्ड माउण्ट बैटनने सत्ता हस्तान्तरणका कार्य बहुत ही शानदार ढंगसे सम्पादित किया है और इस प्रकार इतिहासमें उन्होंने अपना स्थान बना लिया है उधर भारतके प्रथम प्रधान मन्त्री पं० नेहरूने अपनी उस राजनीतिक क्षमताका परिचय दिया है जिसे देखकर उस नये राष्ट्रकी शांति तथा प्रगतिकी सर्वोत्तम आशा की जाती है।

* * *

६०० पत्नियों वाला राजा

कुछ लोगोंको अजीब तरहका शौक होता है। किसीको कुत्तोंका किसीको तरह तरहकी चिड़ियोंका और किसीको खाने पीने और पहननेका लेकिन अमेरिकामें वेकोम कबीलेके राजाको पत्नियां एकट्ठा करनेका शौक है। अबतक उसके यहां कोई ६०० पत्नियां इकट्ठा हो चुकी है। राजाके दूत पत्नियां एकत्र करनेके लिये घूमा करते हैं तथा जिस झोपड़ीमें नौजवान लड़की देखते हैं, उसे राजाको भेंट करने को कहते हैं। राजाकी उम्र इस वक्त ८० वर्ष की है। वह ज्यों ज्यों बूढ़ा होता जाता है त्यों त्यों पत्नियां एकत्र करनेका उसका शौक बढ़ता जाता है।

* * *

शीशेसे प्रणय और विवाह

कभी कभी ऐसी घटना घटती है जिसकी पहले कल्पना भी नहीं की जाती है। लन्दनकी एक घटना है। एक २० वर्षीया युवतीको अपने कमरेके शीशेके

बच्चोंमें वायुयानके प्रति दिलचस्पी उत्पन्न करने वाले—ये खिलौना हवाई जहाज बाजारमें बिक्रीके लिये तैयार हैं।

प्रतावम्बस हो पातका प्राप्त हो गया। आकाशमें जब सूरज निकला तो उसकी खिड़कीमें आदम कद शीशेका प्रतिबिम्ब उसके कमरेके सामने वाले अस्पतालके शीशे में पड़ा जहां फ्रेडी मिलर नामक एक २२ वर्षीय युवक बिस्तरे पर पड़ा था। प्रतिबिम्ब से उसकी आंखें चौंधियां गयीं और दोनों मुस्करा पड़े। धीरे धीरे यह मुस्कराहट प्रेममें परिवर्तित हो गयी और उसके दो वर्ष तक दोनोंमें रोमांस चलता रहा। एक दिन यह रोमांस प्रणयमें परिवर्तित हो गया और आज दोनों पति-पत्निके रूपमें जीवन यापन कर रहे हैं।

—०—

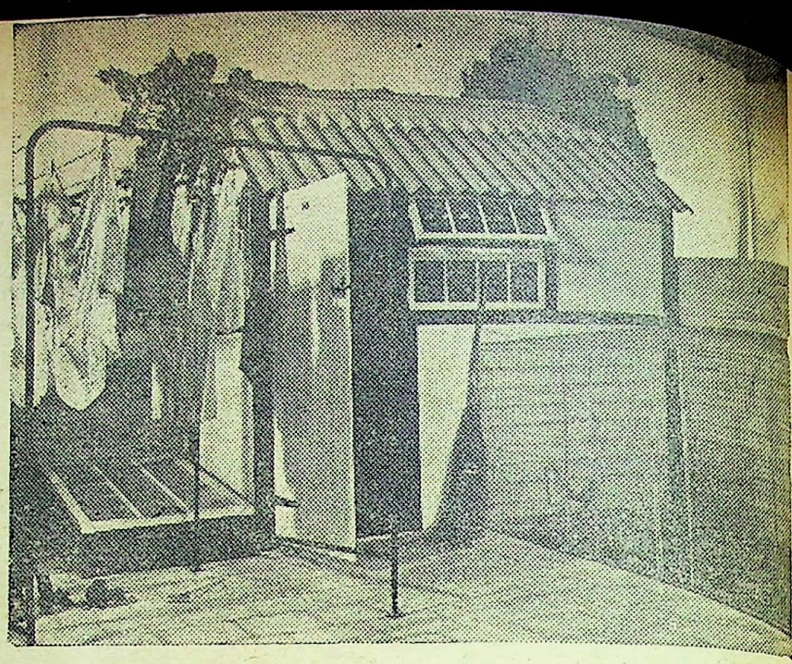

लन्दनमें हाल ही में भवन प्रदर्शिनी हुई थी उसमें विभिन्न प्रकारके घरों के नमूने प्रदर्शित हुए थे। यह १९५० का माडेल है।

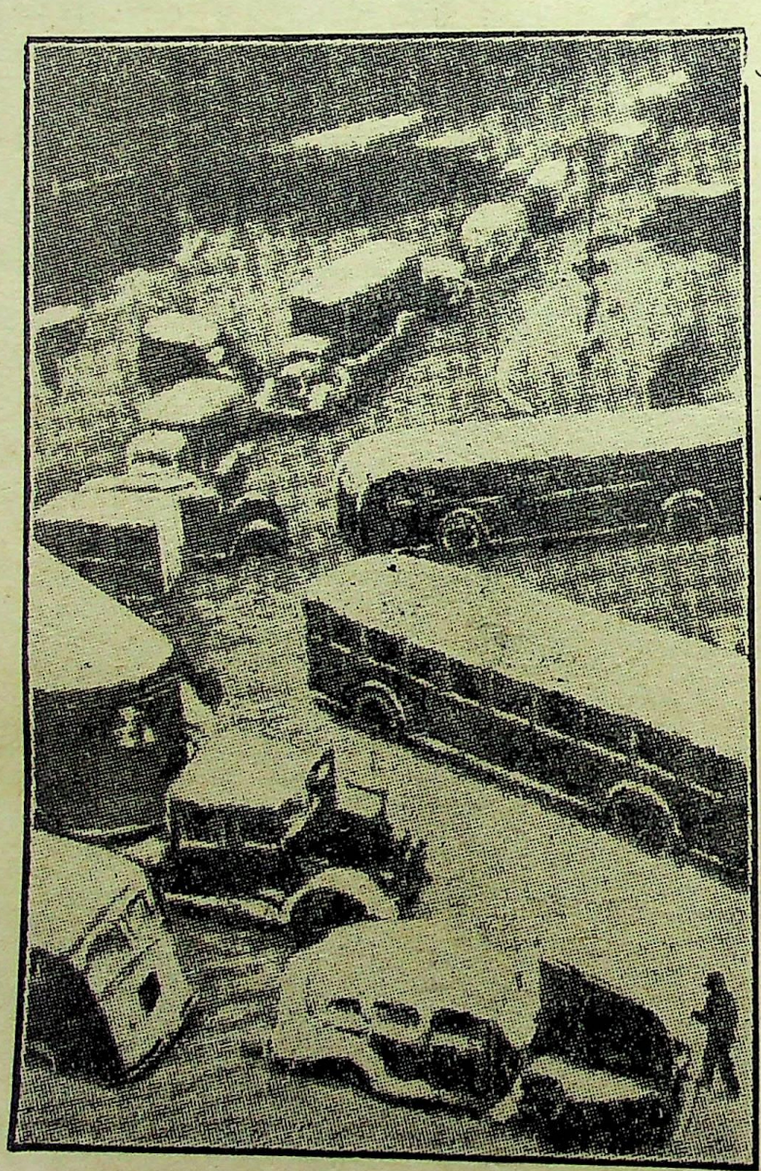

अत्यधिक बरफ पड़नेसे न्यूयार्ककी बरफ आच्छादित सड़कें और मोटरें। कहते हैं कि इससे पहले न्यूयार्कमें इतनी बरफ कभी नहीं जमी थी।

कम्पन

—

अनल कुमार

रे मृदु-मृदु स्पन्दित कम्पन!
उर उरके कम्पित स्पन्दन!
सांसों में तेरा जीवन
उच्छ्वासों में अपनापन,
कल तरल मुखर मन भावन
तुम भावुक उर के कम्पन!
जल लहरों के नवजीवन
तृण-तरु-दल के आंदोलन,
तुम नील गगन के उडुगन
हे नियति बीन के कम्पन!
किस अमल विभा के नूतन
तुम तिमिरांकित आकर्षण
आकर्षित कर जगका मन
खद्योत बने हे कम्पन!
बुझ—बुझ जल—जल
कंप—कंप चञ्चल
उर—उर को छल
छल—छल अविरल
करते रहते अयास स्पन्दन
कविके उरके चिर आकर्षण!
मेरी कविता के कल-कम्पन
रे मृदु-मृदु स्पन्दित कम्पन!

छाती और फेफड़े के लिये धोखेबाज मौसम

कीटाणु नाशक पेप्सकी टिकियाका सेवन करके अपनी हिफाजत कीजिये।

गफलत करने आपको छातीको तकलीफ हो सकती है।

मुंहमें घुलने पर पेप्स काफी मात्रामें औषधियुक्त भप्तके रूपमें परिवर्तित हो जाता है, जो सांसों द्वारा छाती और फेफड़ेके भीतरी भागों तकमें पहुंच जाता है। इससे कीड़ मर जाते हैं यह खांसी बन्द करता है, झिल्लीके घावको आराम करता, बलगमको ढीला करता और रक्ताधिक्यको कम करता है।

कड़ी ठंड, गलेके घाव, खांसी, सर्दी, इन्फ्लुएंजा, ब्रोंकाइटीज और छाती तथा फेफड़ेके अन्य कष्टोंको अच्छा करनेके लिए पेप्स जगद्विख्यात है।

पेप्स लीजिये

PEPS

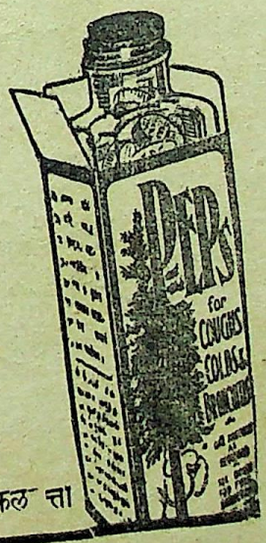

कीटाणु नाशक सांसदायक टिकिया हमेशा अपने पास रखें सभी दवाखानोंमें मिलता है।

एजेण्ट-सिम स्ट्रैंनिस्ट्रीट एण्ड कं० लि० इण्टाली कलकत्ता

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी हैं। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेको शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

नेपाली शुद्ध मृग कस्तूरी

हिमालय और तिब्बत की शुद्ध कस्तूरी शुद्ध शत शिलाजीत और जड़ी बूटी इत्यादि

मालिकान—

साहु नारायण बहादुर श्रेष्ठ एण्ड सन्स (रजि०) अध्यक्ष-नेपाल हिमालय कस्तूरी भण्डार (रजि०) मा: पाल तुल्हेंने, ललितपुर, नेपाल।

AT AMAZINGLY LOW PRICE

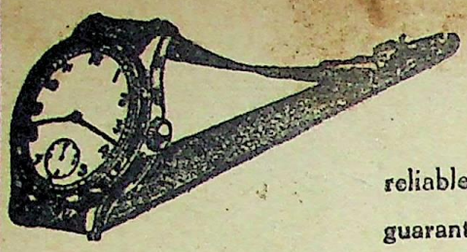

Lever movements jeelled wrist watches in fancy shapes, 36 hours winding with second hand, thick crystal glass, most reliable and accurate time keepers, guaranteed for 3 years, nickle silver cases with a nice strap and box.

Prices Rs. 26, Postage As. 12 (free for 2)
for white Chromium case Rs. 2 and Radium Dial Rs. 3 extra.
LIMITED STOCK NO ORDER FOR MORE THAN 3 ACCEPTED.

ORIENT WATCH SYNDICATE Dept. (14B) Colony Rd. DUM DUM

बवासीर

खूनी या बादी नई या पुरानी; अन्दरूनी या बाहरी चाहे जैसी बवासीर क्यों न हो उसपर महात्मा-प्रदत्त शक्तिशाली दिव्य महौषधि बवासीर की दवा तुरन्त जादू का सा असर करती है। केवल एकबार के इस्तेमालसे दर्द; खुजली; टीस; सूजन; जलन; मवाद आना खूनका गिरना फौरन दूर होता है। ३ दिन में खराब से खराब बवासीर; नासूर; भगन्दर बिना आपरेशन जड़से शर्तिया आराम होता है। लाखों निराश रोगी इसके व्योहार से अच्छे होकर अन्य रोगियों से इसकी सिफारिश करते हैं। कीमत २) दो रुपया डाक खर्च पृथक।

पता—भारत आयुर्वेद आश्रम, दरबान पुरा (नं० ३) कानपुर

१९४८ में क्या होने वाला है

भारतवर्षके प्राचीन महापुरुषोंकी सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या अन्धकारपूर्ण संसार में सूर्यका प्रकाश है, यदि आप भी इस अन्धेरी दुनियामें अपने भविष्यका साफ साफ फोटो समयसे पूर्व देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर किसी दिल-पसन्द फूलका नाम लिख कर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष विद्या द्वारा आपके आने वाले बारह मासका हानि लाभ, व्यापार, नौकरीमें तरक्की, गिरावट, तबदीली, तन्दुरुस्ती, बीमारी, यात्रा, अकस्मात् न मालूम कारणसे धनकी प्राप्ति, किसीसे नया मिलाप, औरत औलादका सुख; तारीख पोस्टकार्डसे लेकर वर्ष भरमें पेश आने वाली सब बातोंका खुलासा यानी मासिक वर्ष फल बताकर केवल १।) रु० में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलावा होगा। बुरे ग्रहोंके शान्तिका उपाय लिख दिया जायगा। ज्योतिष विद्याका चमत्कार एक बार अवश्य देखें।

श्री महावीर स्वामी ज्योतिष कार्यालय
(V.W.C.) करतारपुर (जालन्धर)
Shree MAHABIR SWAMI JYOTISH KARYALAYA
V. W. C. Kartarpur (Jullundhar)

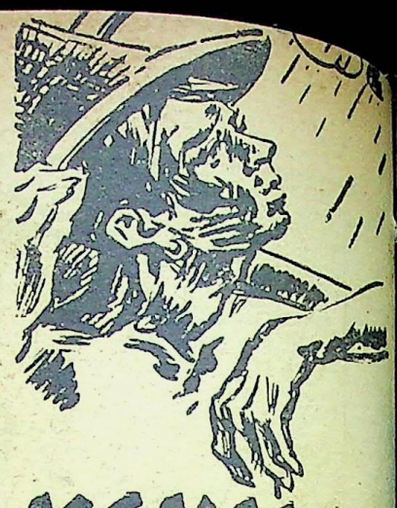

MONSOON SETS IN
Anophelis breeds..

यह आश्चर्यजनक औषधि मलेरिया बुखारके लिये रामबाण है अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियासे कष्ट हो तो इसका सेवन करें। यह लाभप्रद एवं कम खर्चीला है।

The PANCHATIKTA Kasaya

KAVIRAJ N. N. SEN & CO. LD.
CALCUTTA

अहः हः
लालशर तोमेरे लिये अमृत है

लाल-शर
(लाल शरबत)
बच्चोंको मोटा, ताजा, स्वस्थ और प्रसन्नचित रखने की प्रसिद्ध मीठी दवा

सब जगह मिलता है।
डाबर (डॉ० एस० के० बर्मन) लि० कलकत्ता

सम्पादक—देवदत्तमिश्र। ७४ धमतल्ला स्ट्रीट, स्थित इलेक्ट्रड इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

বিশ্বামিত্র

१९४८ में क्या होने वाला है

भारतवर्षके प्राचीन महापुरुषोंकी सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या अन्धकारपूर्ण संसार में सूर्यका प्रकाश है, यदि आप भी इस अन्धेरी दुनियामें अपने भविष्यका साफ साफ फोटो समयसे पूर्व देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर किसी दिल-पसन्द फूलका नाम लिख कर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष विद्या द्वारा आपके आने वाले बारह मासका हानि लाभ, व्यापार, नौकरीमें तरक्की, गिरावट, तबदीली, तन्दुरुस्ती, बीमारी, यात्रा, अकस्मात् न मालूम कारणसे धनकी प्राप्ति, किसीसे नया मिलाप, औरत औलादका सुख; तारीख पोस्टकार्डसे लेकर वर्ष भरमें पेश आने वाली सब बातोंका खुलासा यानी मासिक वर्ष फल बताकर केवल १।) रु० में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलावा होगा। बुरे ग्रहोंके शान्तिका उपाय लिख दिया जायगा। ज्योतिष विद्याका चमत्कार एक बार अवश्य देखें।

श्री महावीर स्वामी ज्योतिष कार्यालय

(V.W. C.) करतारपुर (जालन्धर)

Shree MAHABIR SWAMI JYOTISH KARYALAYA

V. W. C. Kartarpur (Jullundhar)

पांच सौ रुपया इनाम

(एक आश्चर्यजनक अद्भुत जादूई)

मैस्मरेज़िम और जादू की शक्ति से तैयार की हुई यह अंगूठी अनिष्टकारी ग्रहों का प्रभाव दूर करने में अलौकिक शक्ति का परिचय देती है। इस अंगूठी को पहनने वाला अपनी हर प्रकार की कामना पूर्ण करने में सफल हो जाता है। प्रेम और मुकदमे में सफलता, स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा कीर्त्ति उसके पांव चूमती है। एक ही रात में इस अद्भुत अंगूठी के गुणों और करामात से प्रभावित होना ही पड़ता है।

एक अंगूठी का मूल्य सिर्फ २)।

एक साथ तीन अंगूठी मंगाने पर ५)।

पेकिङ्ग और डाक खर्च अलग

—: पता :—

महाकाली आश्रम नं० २४७ कानपुर

इससे आपको
सुन्दर स्वास्थ्य, स्फूर्ति और
शक्ति मिलती है

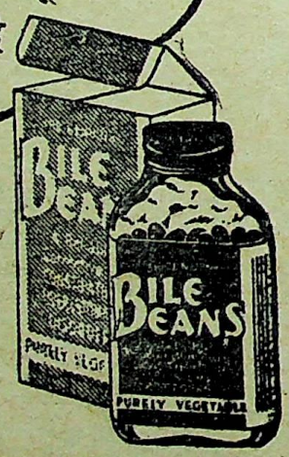

नियमित रूपसे बाइलबीन्सका सेवन करनेसे आपके संस्थानसे विषाक्त पदार्थ प्रति दिन बाहर निकल जानेसे आन्तरिक सफाई होती है, आपकी पाचनशक्ति बढ़ती है और रक्त प्रवाहका परिष्कार होता है।

इस तरह पित्ताधिक्य रोग, कब्जियत, सिरमें दर्द, बदहजमी, लिवर की गड़बड़ी, शिथिलता, वात और ऐसे ही [illegible] इस सुप्रसिद्ध वनस्पति औषधि से आराम होते हैं।

विशुद्ध वानस्पतिक

BILE BEANS

प्राकृतिक टानिक और रोगनाशक का सेवन करें

एजेण्टस: स्मिथ स्टनिस्ट्रीट एण्ड कं० लि०, इण्टाली, कलकत्ता।

ओटो पुष्पबहार

ओटो पुष्प बहार समस्त सुगन्धियों का सम्राट है। इसको लगाते ही आपका हृदय मस्ती की लहरों में खो जायगा। जिधर से आप निकलेंगे, इसकी सुगंध पाकर सबों की नजरें आप पर केन्द्रित हो जायँगी। रूमाल में लगाने से इसकी खुशबू महीनों नहीं जाती। यह सुगंध लगा कर आप जिससे मिलेंगे वह आप से बहुत प्रभावित हो जायगा।

मूल्य प्रति शीशी ।।।) एक दर्जन का ६॥) डाक खर्च १।)

एक साथ एक दर्जन शीशी मँगाने पर एक जोड़ी हाथ के बटनों का सेट बम्बई फैशन की एक चमकदार अंगूठी एक फैन्सी रूमाल, एक खूबसूरत शीशा मय कंघा इनाम में मुफ्त दिया जायगा।

(यह घोषणा केवल प्रचार के उद्देश्य से की जा रही है।)

पता—इंडिया ट्रेडिंग कम्पनी, कानपुर

विश्वमित्र

वर्ष—३० संख्या—५२ | ता० २१ जनवरी १९४८ | JANUARY 21, 1948. | वार्षिक मूल्य६=)

देशके युवकोंसे—

कठोर सत्य हैं, नहीं कहानियां,
जिन्हें सुना गईं कई शताब्दियां,
करो अतीतकी पुनः न गलतियां,
न कान बीच
उङ्गलियां
दिये रहो।

अनेक शत्रु देश पार हैं खड़े,
अनेक शत्रु देश मध्य हैं पड़े,
कुशल कभी नहीं बिना हुए कड़े,
सजग कृपाण
हाथमें
लिये रहो।

स्वतन्त्रता लता अभी मृदुल-नवल,
समूल पशु इसे कहीं न लें निगल,
कि हो हजार वर्षकी रगड़ विफल,
युवक सचत
चौकसी
किये रहो।

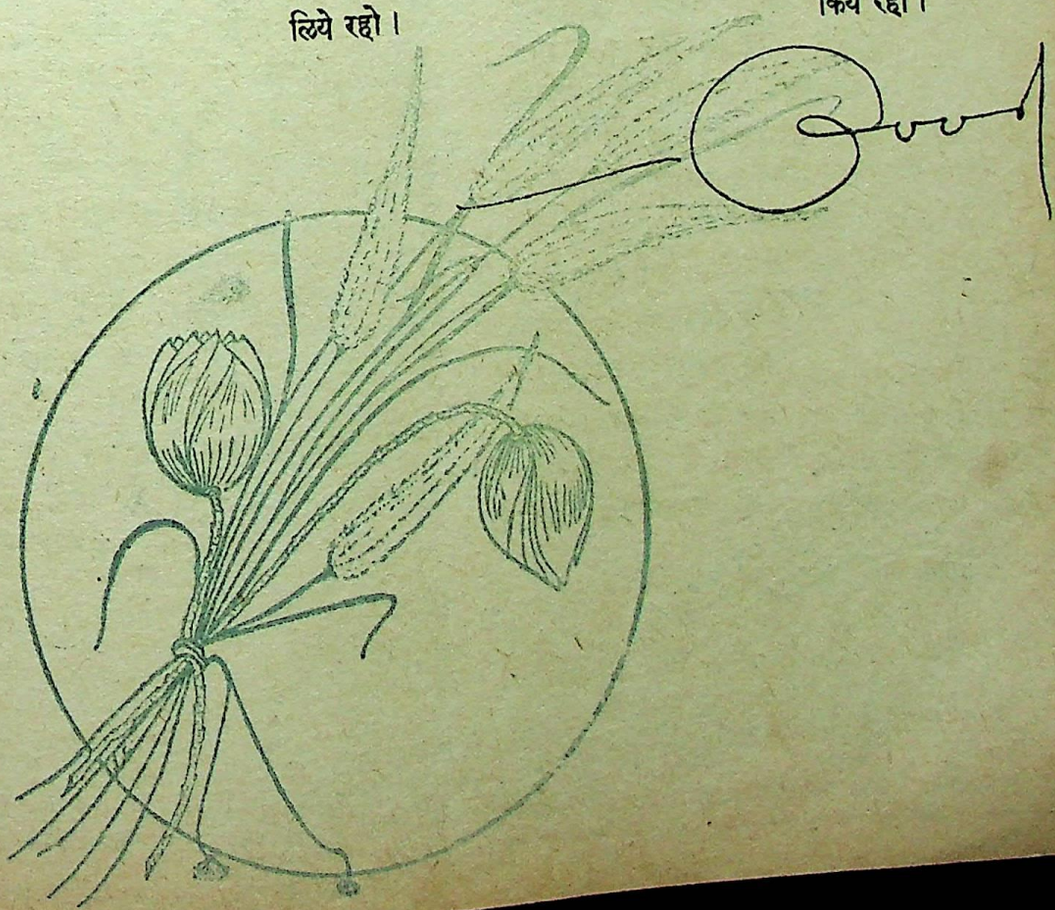

धूलमें मिल प्रेमियों की, यों उभरती है जवानी।

श्री अ० ।मक्षु स्वामी

धूल में मिल प्रेमियों की
यों उभरती है जवानी।

१

जो प्रणय के शुभ्र पथ में
दे चुके बलिदान अपना।
रक्त से सींचा जिन्होंने
प्रेम का उद्यान अपना।
हां, उन्हीं की रक्त लाली
से सुमन के रंग निखरे।
झूमती मद-मस्त कलियां
विश्व से कहती कहानी।
धूल में मिल प्रेमियों की
यों उभरती है जवानी।

२

जो व्यथा के औ विरह के,
चिर मिलन के गीत गाते।
जो वियोगी बन कभी
वैराग्य से धूनी रमाते।
खोजने पर भी न मिलता
चिन्ह जिनको शान्ति सुखका।
है अमर भण्डार जिनका
तप्त ज्वाला और दुखका।
भूल जाता विश्व जिनको,
याद कर बदनाम करता।
जिन अभागे प्रेमियों का
भाग्य भी उपहास करता।
वे मिटा अस्तित्व अपना
चिर व्यथा में जा समाते।
सो उमड़ती विश्व-उर में
प्रेम की बन कर निशानी।
धूल में मिल प्रेमियों की
यों उभरती है जवानी

३

जो किसी की याद में हैं
भूल जाते आप को भी।
जो वरद मीठे समझते
हाय तीखे शाप को भी।
पान कर लेते गरल का,
प्रेम का सम्मान करते।
प्रेयसी के स्वेदकण पर
जो महा बलिदान करते।
प्रेम के उन पागलों को
आग में चाहे जला दो।
औ चिता की राख तक भी
गहन सागर में बहा दो।
किन्तु सागर में उठेंगे
प्रेम के तूफान ऐसे।
जो थपेड़ों से लिखेंगे
कूल पर भी यह कहानी।
धूल में मिल प्रेमियों की
यों उभरती है जवानी।

तिन कहं जग दुलभ कछु नाहीं ।।

विश्वमित्र

फिर उपवास !!

महात्मा गांधी १३ जनवरीसे दिल्ली-में बिड़ला भवनमें उपवास कर रहे हैं। यह उनका १५ वां उपवास है। अभी चार महीना पहले ही वे गत सितम्बरमें कलकत्तेमें अनशन कर चुके हैं। जिस उद्देश्य से कलकत्तेमें उपवास करना पड़ा था इतनी जल्दी उसी उद्देश्यके लिये आज फिर उनको दिल्लीमें उपवास करना पड़ रहा है, इससे बढ़कर देशके लिये लज्जा और अकृतज्ञताकी बात दूसरी क्या हो सकती है। क्या देशने, खासकर गांधीकी जय बोलनेवालोंने, कभी गम्भीरतापूर्वक इस बातपर विचार किया है कि 'महात्मा गांधीके जीवनकी हानिका अर्थ है भारतकी आत्माकी मृत्यु, क्योंकि वे भारतकी आध्यात्मिक शक्तिके प्रतीक हैं।" शायद नहीं। क्योंकि भौतिक शक्तिके पुजारियोंको आध्यात्मिक शक्तिसे तभीतक वास्ता है जबतक उसे भौतिक उत्कर्षका साधन बनाना सम्भव है।

गांधीजीकी आध्यात्मिक शक्तिके साथ राजनीतिक उद्देश्यकी सिद्धिके लिये सर्वस्व त्याग और उत्सर्ग करनेवालोंकी तपस्याके फलस्वरूप देशने जो विजय प्राप्त की है उसे पराजयमें परिणत करनेवाली शक्तियां काम कर रही हैं। इन शक्तियोंको व्यर्थ करनेके लिये ही महात्माजीने इस वृद्धावस्थामें कठोर साधनाका मार्ग अवलम्बन किया है। शत्रु हमारी साधना या तपस्यासे प्रभावित होगा या नहीं सन्देहास्पद है। गांधीजी भी इसे महसूस करते हैं, इसीसे अनशन आरम्भ करनेके बाद दूसरे दिन अपनी प्रार्थना-सभामें उन्होंने यह कहा था कि पाकिस्तानकी हरकतोंको "संघ कबतक बर्दाश्त करेगा ? हिन्दुओं और सिखोंके धैर्यकी भी एक सीमा है। इस तरहकी हरकतोंके होते धैर्यकी आशा कर सकता हूं ? पाकिस्तानको इस स्थितिका अन्त करना चाहिये। वे अपने हृदय शुद्ध करें और यह संकल्प करें कि जबतक हिन्दू और मुसलमान निरापद और सुरक्षित पाकिस्तान लौट नहीं आते तबतक हम चैन न लेंगे।" अभीतक पाकिस्तानियोंके हृदयको गांधीजीके उपवासने स्पर्श किया है इसका कोई सबूत नहीं मिलता, उलटा वे गांधीजीके अनशनको अपनी नैतिक विजय समझते हैं। 'पाकिस्तान और भारतके बीचमें सन्देह और विवादके एक कारणको दूर करनेके इरादेसे" भारत सरकारने पाकिस्तानके साथ हुए आर्थिक समझौतेको तत्काल कार्यमें परिणत करनेका जो निश्चय किया है पाकिस्तान सरकारपर उसका कोई असर नहीं पड़ा, यह उसके अर्थसचिव मि० गुलाम अहमदके वक्तव्यसे स्पष्ट है। खैर, हम थोड़ी देरके लिये यही मान लेते हैं कि गांधीजीके अनशनसे भारत सरकारको अपनी भूल मालूम हो गयी पर हम यह पूछते हैं कि पाकिस्तानकी सरकारपर भी इसका कोई असर पड़ा है, क्या ? कहां हैं कायदे आजम जिन्ना ? क्यों नहीं वे भी सामने आकर अपने प्राणोंकी बाजी लगाकर अपने अनुयायियोंको सीधे रास्तेपर लानेका सच्चा प्रयत्न करते ? क्या गांधीजीके उपवाससे उनका हृदय जरा भी द्रवित हुआ है ? बिलकुल नहीं। किन्तु गांधीजीका मार्ग जिन्नाके मार्गसे भिन्न है। जिन्नाने घृणा और द्वेष, क्रूरता और प्रतिहिंसाके बलपर अपनेको प्रभावशाली बनाया है। विभाजन उनका आधार रहा है। प्रेम और अहिंसा सेवा और एकता गांधीजीको जीवनसे अधिक प्रिय हैं, यह उपवास इस बातका ज्वलंत प्रमाण है। तब उनका मार्ग जिन्नासे भिन्न क्यों न होगा ?

गांधीजी कहते हैं कि आत्मशुद्धिके लिये मैं यह उपवास कर रहा हूं। उनकी धारणा है कि भारतमें उठी हुई आत्मशुद्धिकी लहर पाकिस्तानको भी पाक बना देगी। इस तरह गांधीजीने पाकिस्तान और भारत दोनोंको शुद्ध करनेका बीड़ा उठाया है। गांधीजी कहते हैं कि भारतकी आत्मशुद्धिसे ही पाकिस्तान भी इस योग्य वैसे ही सम्मानके साथ सुरक्षित रह सकेगा जैसे कायदे आजम रहते हैं। इस तरहका पाकिस्तान कभी मर नहीं सकता और जब वह इतना पाक हो जायगा तभी उसके पहले नहीं, मुझे इस बातका पश्चात्ताप होगा कि इसे मैंने कभी पाप कहा था क्योंकि आज भी इस सम्बंधमें मैं दृढ़ताके साथ यही विचार रखता हूं। और इसीलिये भारतकी आत्मशुद्धि द्वारा गांधीजीने पाकिस्तानकी शुद्धिका बीड़ा उठाया है। इस दिशामें गांधीजीकी सफलता चमत्कार ही समझा जायेगा। किन्तु इसके साथ-साथ यह भी हमें स्मरण रखना चाहिये कि गांधीजीकी सफलताएं चमत्काररूपमें ही सामने आयी हैं। भारतकी स्वतंत्रता इस चमत्कारका सबसे बड़ा निदर्शन है।

अभी उस दिन कलकत्तेमें हम यह चमत्कार देख चुके हैं जब 'रातो रात दुर्भाव सद्भावमें बदल गया।" गवर्नर जेनरल लार्ड माउण्ट बेटेनने इस चमत्कारपर कहा था कि पश्चिम पञ्जाबमें ५० हजार सरहदी फौज शांति रखनेमें सफल नहीं हो सकी पर अकेले गांधीजीके रूपमें सगठित इस सरहदी सेनाने कैसा चमत्कार कर दिखाया। अहिंसाके इस निःशस्त्र सेनानीने फिर अपना कदम उठाया है। गांधीजीके इस कदमसे भारतका शतसहस्र गुण नैतिक उत्तरदायित्व बढ़ गया है। भारतका महत्व और विशेषता पाकिस्तानके अनुकरणमें नहीं है बल्कि पाकिस्तानको अपने पद-चिन्होंपर चला सकने में है। जो व्यक्ति या समूह 'गांधी मुर्दाबाद' या "गांधीको मर जाने दो" जैसे नारे लगा सकता है वह हिन्दू हो सिख हो या मुसलमान वह मनुष्य जीवनका कलङ्क है, अभिशाप है। अपनी कायरुषताका, स्वार्थान्धताका वह जीवित पुतला है। वह देशकी कौन कहे अपने प्रियसे प्रियका आततायियोंके खूंखारी पंजेमें सौंप कर अपने जीवनकी कामना करनेवाला नर कंकाल है। देश और समाजका सम्मान वही व्यक्ति कर सकता है जो उसके गौरव और मानको अपना गौरव और मान समझ उसपर मर मिटता है। हमें आशा और विश्वास है कि

इस तरहके व्यक्ति लाख-लाख कोटि कोटि की तादादमें गांधीजीके उपवाससे प्रभावित होंगे। गांधीजीका यही रास्ता है। वे अपनी अच्छाइयों द्वारा दूसरोंकी बुराइयोंको जीतते हैं। उनका यह प्रभाव ही हमको और संसारको चमत्कारके रूपमें दिखायी देता है। भगवान ऐसे चमत्कारी महापुरुषको शताधिक वर्षतक चिरायु रखें।

बंग सुरक्षा बिल—

गत सप्ताह बृहस्पतिवारको पश्चिम बंग व्यवस्थापिका परिषदमें विरोधी दलके दुराग्रहके बावजूद बंग सुरक्षा बिल १२ के मुकाबले ४७ वोटसे पास हो गया। विरोधी दलका दुराग्रह बेहयायीमें बदल गया था और खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे' कहावत चरितार्थ करते हुए उन्होंने इस बिलपर विचारके दौरानमें ४९ बार मत गणना करायी। आज तक इसके पूर्व भारतकी किसी व्यवस्थापिकामें एक बिलपर कभी इतनी बार मतगणनाका प्रसंग नहीं आया। दो कम्यूनिस्ट सदस्योंका यह आचरण जितना निन्दनीय है मुस्लिम लीगके सदस्योंका भी उनसे कम नहीं है। यह विरोध नहीं कहा जा सकता। यह है अड़ंगा नीति और कम्यूनिस्टोंको याद रखना चाहिये कि इस तरहका दुराग्रह और बेहयायी दिखा कर वे अपने ही हाथों अपनी कब्र खोद रहे हैं। मुस्लिम लीगी सदस्योंके संबंधमें कुछ कहना व्यर्थ है। भारतमें मुस्लिम लीग आज तलाक-शुदा मनचली जवान बीवी जैसा आचरण कर रही है। फलतः उसे क्षणिक सुहागके नामपर कोई भी बहका सकता है, फुसला सकता है। हम इस लीगसे इतना ही कहना चाहते हैं कि परित्यक्ता हो दुराचरणकी नीतिका अवलम्बन देशके लिये अच्छा नहीं है, इस लिये उसका हित इसीमें है कि वह अपने पुराने शुभैषी प्रेमिकोंमेंसे किसीके पल्ले बंध कर अपनी सकूनत बदल डाले अन्यथा यह नहीं होने दिया जा सकता कि वह अपने बेहयापनसे हमेशा एक नया फितना फसाद बरपा किया करें।

बिलपर बहसका जवाब देते हुए प्रधान मंत्री डा० घोषने एक बार फिर विरोधी आशंकाओंको दूर करनेके लिये यह आश्वासन दिया कि जबतक कांग्रेस सरकार अधिकारमें रहेगी वह बिना किसी जाति धर्म या वर्णका विचार किये सबका हित ध्यानमें रखकर काम करेगी। देशमें किसी समय विस्फोट हो जानेवाली स्थितिको देखते हुए बिना विचार बन्द रखनेकी व्यवस्थाको हम आजकी सबसे बड़ी आवश्यकता समझते हैं। हम जानते हैं कि यह अवांछनीय है, हम भुक्त भोगी हैं। किन्तु जानते हुए भी कि यह विष है क्या हमें कभी कभी मौतसे लड़नेके लिये कालकूट नहीं पीना पड़ता। चतुर वैद्य विषका प्रयोग बहुत सावधानीके साथ करता है। हर्षकी बात है कि डा० घोषने सरकारके प्रधान मंत्रीकी हैसियतसे यह आश्वासन दिया है कि वैध ट्रेड यूनियन अथवा किसान आंदोलनके विरुद्ध इसका प्रयोग नहीं किया जायेगा। इसके विपरीत देशमें एकतंत्रशाही या तानाशाही न बढ़ने पाये और लोकतंत्र प्रभावशाली ढंगसे काम कर सके, यह इस कानूनका उद्देश्य है और इसे पूरा करनेके लिये ही इसका उपयोग किया जायगा। हम चाहते हैं कि बङ्गाल सरकारके वे अधिकारी और कर्मचारी, जो इस बिल द्वारा प्रदत्त अधिकारोंका प्रयोग करेंगे, डा० घोषने परिषदमें और बाहर भी जो आश्वासन दिया है उसे शब्दशः याद रखेंगे और उसीके अनुसार आचरण करेंगे।

उपवास तोड़ा

छपते छपते मालूम हुआ कि महात्मा गांधीने रविवारको मध्यान्ह छठे दिन १२ बजकर ४० मिनटपर उपवास तोड़ दिया। उस समय उनके पास प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू, राष्ट्रपति डा० राजेंद्र प्रसाद, पाकिस्तानके हाई कमिश्नर, हैदराबादके एजेण्ट जेनरल और विभिन्न सम्प्रदायोंके प्रतिनिधि उपस्थित थे। इन प्रतिनिधियोंके मेल और शान्ति बनाये रखनेका आश्वासन देनेपर, भगवानको कोटिशः धन्यवाद जिसकी प्रेरणासे, गांधीजीने उपवास तोड़ दिया। हमें प्रसन्नता है कि गांधीजीकी हालत खतरनाक होने देनेके पहले ही ऐसी स्थिति पैदा कर दी गयी कि वे समय रहते अनशन तोड़ सके। गांधीजीका यह अनशन हिंदुस्तान और पाकिस्तानके दुर्वृत्तोंकी शक्तिको एक चुनौती थी। आध्यात्मिक शक्तिके आगे हिंदू हमेशा नतमस्तक हुए हैं। किंतु प्रश्न यह है कि क्या पाकिस्तान और भारतके मुसलमानोंके हृदय भी उसी तरह प्रभावित और परिवर्तित होंगे?

भगवानको कोटिशः धन्यवाद है कि उसकी प्रेरणाने गांधीजीसे उपवास भङ्ग कराया। क्या मुसलमानोंको यह सुबुद्धि आयेगी कि वे इस बातको समझें कि गांधीसे बढ़कर उनका मित्र कोई नहीं है। काश, मुसलमान यह समझ पाते?

सर्दार मुस्लिम विरोध—

सत्य बड़ा कटु होता है। स्वार्थ और क्षुद्रतासे पूर्ण मनुष्य सत्यकी चोट बर्दाश्त नहीं कर सकते और तब कटु सत्य कहने वाले व्यक्तिके वे दुश्मन बन जाते हैं और यह प्रचार करने लगते हैं कि सत्य के रूपमें वह अपने मनका कलुष प्रकट कर रहा है। अपने आचरणको न देखने वाले भारतके मुसलमानोंकी ठीक यही हालत है। भारतके उप-प्रधान मंत्री सर्दार बल्लभ भाई पटेलने इधर कुछ साफ साफ किन्तु सत्य बातें कहीं हैं। इन बातोंके लिये मुसलमान सर्दार पटेलको मुस्लिम विरोधी कहने लगे। इतना ही नहीं यह प्रचार भी किया जाने लगा कि इस प्रश्न पर सर्दार और गांधीजीके बीचमें विरोध खड़ा हो गया है। उपवास आरम्भ करने के बाद गांधीजीने अपने एक वक्तव्यमें यह कहा था कि सर्दार पटेल अब पहलेकी तरह मेरे 'हां हुजूर' नहीं रह गये। इस बातकी टीका मुस्लिम अंचलोंमें यह की जाने लगी कि सबसे अधिक सर्दार पटेल का हृदय परिवर्तन करानेके लिये गांधीजीने उपवास आरम्भ किया है। गांधीजी के सामने जब यह बात रखी गयी तो

उन्होंने कहा कि ऐसा विचार मेरे मनमें भी कभी नहीं आया। अगर मैं यह समझता कि मेरे वक्तव्यका यह अर्थ भी लगाया जा सकता है तो पहले ही मैं इस संदेहको मिटा देता। सर्दार पटेलके समालोचकों को मैंने यह समझा दिया है कि सर्दारको पण्डित जवाहरलाल और मुझसे अलग करके देखना उनकी भूल है। इससे उनका कोई हित नहीं हो सकता। साफगोई सर्दारको पसन्द है और इसीसे कभी कभी वह जान कर चोट करते हैं। किन्तु उनका हृदय बड़ा विशाल है और उसमें सबके लिये गुंजाइश है। मैंने सर्दारके सम्बंधमें यह बात इसीलिये कही थी कि जीवन व्यापी और सच्चे साथीको कहीं लोग गलत न समझें। सर्दार जब मेरे 'हां हुजूर' थे उस वक्त उनको मेरी बात अतःकरणसे रुचती थी। अब जब सत्ता उनके हाथमें आयी है अहिंसासे पहलेकी तरह सफलता पूर्वक उनका काम नहीं चल सकता। अब मैंने यह जाना है कि मैंने और मेरे साथके आदमियोंने जिसे अहिंसा समझा था वह खांटी दार्थ नहीं है बल्कि निष्क्रिय प्रतिरोधके रूपमें उसकी क्षीण नकल था। स्वभावतः निष्क्रिय प्रतिरोध शासक के किस काम की। क्या दुर्बल शासक किसीका भी प्रतिनिधित्व कर सकता है! वह अ ने उन मालिकों को ही अपदस्थ करेगा जिन्होंने अपनेको कुछ कालके लिये उसके नियंत्रण और उत्तरदायित्वके मातहत रखा है। मैं जनता हूं कि सर्दारके हाथोंमें जो पवित्र उत्तरदायित्व हैं उसका कभी तिरस्कार या विश्वासघात वे नहीं कर सकते। मुझे ताज्जुब होता है कि मेरे वक्तव्यकी इस पृष्ठभूमिको जानते हुए कोई व्यक्ति यह कहनेका साहस कैसे कर सकता है कि मैंने गृह सचिवकी नीतिके विरुद्ध अनशन किया है। बात यह है कि मुस्लिम लीगका भूत अब तक जिनपर सवार है वह यही क्यों गांधीजीको भी मुस्लिम शत्रु कह सकते हैं और कह सकते क्यों एक दिन कहते ही थे।

यह परिवर्तन क्यों ?

पश्चिम बंगालके वर्तमान मंत्रिमण्डलमें जो परिवर्तन होने जा रहा है, डा० प्रफुल्लचन्द्र घोषके स्थानमें डा० विधान च द्र राय जो प्रधान मंत्री बनने जा रहे हैं प्रांतका साधारण नागरिक यह जानना चाहेगा कि यह परिवर्तन क्यों होने जा रहा है। कांग्रेस नेता डा० विधान च द्र रायको युक्तप्रांतका गवर्नर बनाना चाहते थे, पर उन्होंने कुछ दिनतक टालमटूल करते रहनेके बाद जब गवर्नरी स्वीकार नहीं की तभी यह आशंका हुई थी कि बंगालकी राजनीतिमें शीघ्र ही कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होने जा रहे हैं। उस दिन जब वंग व्यवस्थापिका परिषदमें विश्वविद्यालयके प्रतिनिधिके रिक्त स्थानके लिये डा० राय उम्मेदवार खड़े हुए तब पहलेकी आशंका इस विश्वासमें बदलने लगी कि कांग्रेस असेम्बली पार्टीमें डा० घोषके विरुद्ध जो असंतोष एक बार प्रकट किया जा चुका है उसे अब अपनी मनोकामना पूरी करनेका रास्ता मिल गया और डा० घोषको हटाकर उनके स्थानपर डा० रायको एवं दूसरे असंतुष्ट व्यक्तियोंको मंत्रिमण्डलमें बैठानेका उपक्रम किया जायेगा। डा० रायके व्यवस्थापिका सदस्य चुन जानेकी घोषणा होते ही कार्य आरंभ हो गया और जब पार्टीके अधिकांश सदस्योंने यह प्रकट कर दिया कि हम आपको नहीं चाहते तो डा० घोषने अविलम्ब त्यागपत्र दे दिया। प्रफुल्लबाबूके त्याग और तपस्याने एक दिन उनको पश्चिम बंगालका प्रधान मंत्री बनाया था और शायद उनकी यह त्याग और तपस्या ही उनके प्रधान मंत्रित्वसे हटनेका कारण हुई है क्योंकि यह त्याग तपस्या बहुतोंके सुखस्वार्थान्वेषणके मार्गमें शायद बाधक सिद्ध हो रही होगी। अन्यथा जो कभी घोरसे घोर संकटकालमें पश्चात पद नहीं हुआ और देशके संकटके समय जिस व्यक्तिने साहस और दृढ़ता, संकल्प और तेजके साथ प्रांतका शासन सूत्र संचालित किया उसे हटाकर आज ऐसे व्यक्तिको क्यों उस स्थानपर लाया जा रहा है जो देशका स्वतन्त्रता-आंदोलन जब जोरोंपर चल रहा था, देशवासी एक तरफ निरंकुश ब्रिटिश दमनचक्रके शिकार हो रहे थे, दूसरी तरफ आर्थिक चक्रसे पीसे जा रहे थे उस समय वह राजनीतिक क्षेत्रसे बहुत दूर था। यह बात प्रायः देखी गयी है कि शासनके लिये अन्य तमाम गुणोंसे सम्पन्न व्यक्तिमें यदि पर्याप्त मात्रामें आत्मिक बल नहीं होता तो अनीति और जनाचारको उसका सहज प्रश्रय मिल जाता है। क्या हम आशा करें कि अपने प्रधान मन्त्रित्वकालमें डा० विधानचन्द्र राय इस तथ्यको दृष्टिगत रखेंगे।

सूनापन मुझे नहीं भाता

सूनापन मुझे नहीं भाता।
अब मधुर नहीं लगते दुख पल,
कितने सुन्दर मादक सुख पल,
एकाकीपन, दुखका सूचक, मधु मिलन हृदय में मुसकाता।
सूनापन मुझे नहीं भाता।

जीवन-सर में जलजात खिला,
खोया सुख उनके साथ मिला,
सुखकी मस्ती में बेसुध सुख-सरिता में आज बहा जाता।
सूनापन मुझे नहीं भाता।

दुख-गान, मनोहर गान हुए,
पूरे सारे अरमान हुए,
अब याद नहीं आती पिछली, मधु-सुख ही ऐसा मदमाता।
सूनापन मुझे नहीं भाता।

—प्रो० मित्तल, एम० ए०

अन्तर्राष्ट्रीय

ब्रिटेन और रूस—

ब्रिटेनके प्रधानमंत्री मि० क्लेमेण्ट एटली ने एक सप्ताह पूर्व अपने ब्राडकास्ट-भाषण में सोवियट रूसके ऊपर आक्षेप करते हुए कहा था रूसी साम्राज्यवाद. साम्राज्यवादके एक नये रूपको जन्म देता है जिससे यूरोपके अन्य राष्ट्रोंके जीवन और उन्नति के मार्गको भारी खतरा है। प्रधानमंत्री मि० एटली के इन आरोपोंका उत्तर मास्को से प्रकाशित होनेवाले रूसी कम्यूनिस्ट पार्टीके मुखपत्र 'प्रवदा'ने दिया है। उक्त पत्रने लिखा है कि उस भाषणमें राजनीतिक सिद्धांतो की अनभिज्ञता और राजनीतिक हृदय हीनताका परिचय दिया गया है।

मि० एटलीने प्रजातंत्र सामाजिक न्याय और व्यक्तिगत स्वतंत्रताका राग उस देशके सम्बन्धमें अलापा है, जहां एकाधिकार वादियोंका बोलवाला ह। मि० एटलीने ब्रिटेनके रूस और अमेरिका के बीचका मार्ग अपनानेका दावा किया है प्रवदा' ने कहा है कि इस ब्राडकास्टके पहले ही मालूम था कि मि० एटली साम्राज्यवाद विरोधी गुट्टमें नहीं है। उनके जैसा क्षणिक पंथी श्रमिक नेता जानबूझ कर रूस विरोधी हो गयी, इस ब्राडकास्टके द्वारा तो मि० एटलीने इस सत्यकी सार्वजनिक रूपसे पुष्टि की है। मि० एटलीने साम्यवादसे यूरोपीय सभ्यताको बचानेकी बात कह कर ट्रूमैन-मार्शल सिद्धान्त जो यूरोपीय जनताके लिये मृगमरीचिका है, मैं अपनी आस्था प्रकट की है। मि० एटलीने अमेरिकन पूंजीवादके प्रजातंत्रवादी प्रणालीका आदर्श बताकर गुण गाये हैं। अगर इसीको सोवियट रूसके साम्यवाद और अमेरिकन पूंजीवादसे स्वतंत्र मध्यम मार्ग कहा जाय तो फिर डालरकी गुलामी किसे कही जायगी?

जब शत प्रतिशत प्रजातंत्रवादी लेबर पार्टीके मंत्री मि० मार्गन फिलिप्स अमेरिकन साम्राज्यवादके आदेशोंके अनुसार ब्रिटिश मजदूर संघोंसे कम्यूनिस्टोंके (निष्कासनका प्रयास करते हैं तो वास्तविक प्रजातन्त्रवाद क्या है, अन्तमें 'प्रवदा' ने ब्रिटेनके)श्रमिकदलको भारतकी समस्याके समाधानकेलिये दोषी बताया है और लिखा है कि भारतमें लाखों हिन्दू मुसलमानोंका जो रक्तपात हुआ उसका समस्त अपराध ब्रिटिश श्रमिक दलकी नीति पर है।—मारिसनने ब्रिटेनके उप प्रधानमंत्री मि० हर्बर्ट मारिसन रूस द्वारा ब्रिटेनपर किये आरोपोंकी असत्य और विद्वेषपूर्ण बताया है। उन्होंने कहा है कि शान्ति रक्षा एवं मानवताकी भलाईके लिये हम सोवियट रूसके सहयोगकी महती आवश्यकता समझते हैं। लेकिन हम अपने देश एवं अपने आधार पर सदैव असत्य और विद्वेष पूर्ण आरोप नहीं होने देना चाहते हैं। हमें यह देखकर प्रसन्नता नहीं है कि पूर्वी और दक्षिणी यूरोपके देश एकके बाद एक अप्रजातंत्र वादी कम्यूनिष्ट सरकारोंके गुलाम बनते जांय। उन देशोंमें अन्य राजनीतिक दलों एवं अखबारोंकी स्वतंत्रताको कुचलकर कम्यूनिस्ट सरकारें गठितकी जा रही है तथा गैर कम्यूनिष्ट नेताओं पर मामले चलाये जा रहे हैं। हम इसको मानव स्वतंत्रताके लिये घातक समझते हैं।

ब्रिटेन और सोवियटरूसके बीच लन्दन की पर राष्ट्र सचिवके समाप्त होने बाद एक नयी स्थिति उत्पन्न हुई है। और अब दोनों देशोंके मतभेदोंकी खाई अधिक चौड़ी हो गयी है। जर्मनीको लेकर यह मतभेद और भी व्यापक हो सकते हैं। उधर अमेरिका सोवियट रूस और उसका समर्थन करने वाली कम्यूनिस्ट पार्टियोंके विनाशके लिये हरचंद और यूरोपके अन्य कई देशोंसे यह स्पष्ट हो चुका है। जो भी हो, इन बातोंके अध्ययनसे यही मालूम पड़ता है कि अब विश्व शान्तिका स्वप्न तो दूर हो रहा है तृतीय महायुद्ध के दिन करीब आ रहे हैं।

ट्रूमैनकी चेतावनी—

१९४८-४९ के लिये ३९७० करोड डालरका बजट पेश करते वक्त अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रूमैनने कांग्रेसको सतर्क करते हुए कहा है यदि यूरोपमें तानाशाहीका आधिपत्य हुआ तो अमेरिकाको सशस्त्र रहना पड़ेगा। इसीलिये अमेरिका की परराष्ट्रनीतिके व्यावहारिक रूप प्रदर्शन करनेके लिये विभिन्न देशोंके सहायतार्थ ७०० करोड डालरके व्ययका हिसाब रखा है। उनके बजटमें चीन और यूरोपके सिवा अन्यान्य देशोंको छोड़कर सुदूरपूर्व देशोंमें मार्शल योजनाके चालू करनेका निर्णय किया गया है। बजटसे पता चला है कि भविष्यमें होने वाले युद्धकी सम्भावना की ओर लक्ष्य कर अमेरिका नियमानुसार तैयारियां कर रहा है। इसके सिवा मार्शल योजना या डालर मददका असल मतलब किसी देशके पुनर्गठनमें सहायता पहुंचाना नहीं है यह राष्ट्रपति ट्रूमैनके बजट भाषणसे स्पष्ट समझा जा सकता है। यूरोप एवं अन्यान्य संकटग्रस्त अंचलोंमें बजटके अनुसार काम न होने पर वहां तानाशाही कायम हो जानेकी आशंका बतायी गयी है। लेकिन अमेरिका की परराष्ट्र नीति और मार्शल योजनासे दिलचस्पी रखने वाले जानते हैं कि तानाशाहीका प्रतिरोध करनेके लिये ही तो अमेरिकाको प्रजातन्त्रका अस्तित्व बचाने के लाले पड़ गये हैं। ट्रूमैनको आगामी चुनावमें अपनी पराजय दिखलायी पड़ रही है। इसलिये उनको बजट भाषणमें कुछ ऐसी बातें कहने पड़ी है, जिनसे अमेरिकाके साम्राज्यवादी मनोभावका स्पष्टीकरण हुआ है। अमेरिका अपने साथ ब्रिटेनको रख करके विश्वशांतिमें कितना खलल डालेगा, इसकी अभी कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

मनुष्य और हृदय

श्रीमती शिवरानी देवी प्रेमचन्द्र

पंडित पद्माकर अपनेको पण्डितोंसे श्रेष्ठ समझते ही नहीं, बल्कि थे भी। इनकी लड़की नीरा बड़ी सुशील थी। इन्हें आप बहुत प्यार करते। मेलेका दिन था। विजयादशमीकी हर जगह धूम थी। पण्डितजी नीरासे बोले—बेटी, मेला देखने नहीं चलोगी ?

नीरा—क्यों नहीं ! मां भी तो चलेंगी।

पण्डितजी—जाकर मां से पूछो न ?

नीरा जाकर मांसे बोली—माताजी, चलो।

मां—नहीं। तुम जाकर देख आओ।

नीरा—क्यों, आप क्यों नहीं चलतीं ?

मा—आज विजयादशमी है। ठीक न होगा।

नीरा—मां तुम्हे भगवान्का छवि-दर्शन करनेके लिये चलना चाहिये।

मां - नहीं बेटी तुम अकेले जाकर देख आओ।

पण्डितजीने बाहरसे आवाज दी—नीरा, चलती हो। जब भीड़ हो जायगी तो चलना कठिन हो जायगा।

नीरा सामने आकर बोली—मां तो नहीं चल रही हैं पिताजी !

पण्डितजी—तुम्हारी मां बेवकूफ हैं। तुम अकेली चलो।

नीरा तैयार होकर मेला देखने पिताजीके साथ चली।

* * *

मेलेमें भगवान्का दर्शन करने जब पण्डितजी आगे बढ़े तो नीरा भीड़में दूसरी ओर भटक गयी।

बहुत देर बाद पण्डितजी घबराकर इधर-उधर ढूंढ़ने लगे कि नीरा कहां गयी ? नीरा और पण्डितजी दोनों एक दूसरेको ढूंढ़ने लगे।

पण्डितजी रात ११ बजे तक नीराको ढूंढ़ते रहे, पर सफलता नहीं मिली।

जो भी मिलता, नीरा उसीसे अपने पिताके बारेमें पूछती कि कहीं पिताजीको आपने देखा है ?

इतने बड़े शहरमें कौन जानता है कि किस मुहल्लेमें पण्डितजी बसते हैं, किस मुहल्लेमें नीरा। रोते-पीटते पण्डितजीने जाकर थानेमें हुलिया लिखायी। पुलिस-उसको ढूंढ़ती है, जिसका पता चल जानेपर गवर्नमेण्ट इनाम देती है। मगर आम जनताकी आवाज पुलिसके कानों में कहां पहुंचती हैं ?

पण्डितजीको अन्तमें यह ख्याल आया कि कहीं नीरा घरपर न चली गयी हो।

लेखिका

पण्डितजी जब घरपर पहुंचे तो अपनी पत्नी माधुरीसे बोले—माधुरी नीरा घरपर आयी कि नहीं ?

माधुरी—नीरा तो घर नहीं आयी। गयी कहां ?

पण्डितजी—नीराका साथ तो पहुंचते ही छूट गया। पता नहीं, बिटिया कहां है ?

माधुरी कैसे क्या हुआ ? यह कहती हुई वह धड़ामसे गिर पड़ी। चीखती हुई बोली—यह अनर्थ हो कैसे गया ?

पण्डितजीका क्रोध और शोक दोनों उमड़ पड़े। क्या नीरा तुम्हें ही प्यारी थी। इस तरह बोल रही हो, मैंने मानो जान-बूझकर उसे खो दिया।

माधुरी—मेरी १२ सन्तानोंमें वही आखिरी सन्तान बची है। उसे भी तुमने खो दिया। हाय, राम ! मेरे ईश्वर मेरे ऊपर रहनेकर ! जहां भी नीरा हो, मेरे पास भेजवाओ।

माधुरी इस तरह पागल मत बनो। ईश्वर मेरे साथ अन्याय नहीं करेगा। तुम क्यों इतनी चिन्तित हो रही हो ?

* * *

आज चार दिनोंसे माधुरीके मुंहमें न पानी गया, न दाना।

पण्डितजीको माधुरी और नीरा दोनों पर क्रोध आता। माधुरीसे बोले—पागल मत बन। अब इससे काम नहीं चलनेका।

माधुरी—आखिर मनको कैसे समझाऊं।

पण्डितजी—अगर वह मुसलमानके यहां हो तो।

माधुरी—तो क्या ? हर हालतमें वह मेरे स्नेहकी अधिकारिणी होगी।

पण्डितजी—तुम ऐसी कुलटाओंने ही हिन्दूधर्मका नाश कर दिया।

माधुरी—आज स्त्रियां ऐसा हृदय और मस्तिष्क लेकर सारे संसारका कल्याण कर सकती हैं। तुम्हें लज्जा नहीं आती कि लड़कीको खोकर आये हो और लम्बी लम्बी बातें भी बना रहे हो। मेरा कलेजा फटा जा रहा है और तुम हिन्दू धर्मके नामपर सती हो रहे हो !

* * *

ईदू मुसलमानके घर नीराको आये आठ रोज हो गये।

ईदूके घरमें उसकी एक बूढ़ी मां है। और खुद। मध्यमश्रेणीका एक लुंगाड़ा है वह।

ईदूकी माने नीराको देखा तो उसकी आंखोंमें आंसू भर आये।

ईदूने अपनी मांको सहेजते हुए कहा-इसको संभालकर रखना। किसीको कानों कान भी खबर न होने पावे।

मां—कहांसे लाये बेटा, इसे ?

ईदू—तुमसे इससे मतलब। इसे घरमें रखो। अगर इसने हमारा धर्म कबूल करके घरमें रहना स्वीकार न किया तो इसे तलवारके घाट उतार दूंगा। इसको रास्तेपर लाना तुम्हारा काम है। इतना कहकर ईदू बाहर चला गया।

नीराके पास बैठकर बुढ़िया पूछने

लगी—बेटी, तुम कहां की हो क्या तुम्हारा नाम है, किस शहर की हो ?

नीरा—मां, मैं बनारस शहर की हूं। पक्के मुहाल की। ब्राह्मणकी लड़की हूं। मेरा नाम नीरा है।

नीरा यह कहती हुई बुढ़ियाके पैरों पर लेट पड़ी। बोली—तुम मुझे अपनी पुत्री समझकर अपनाओ। मेरी रक्षा अपने बेटेसे उसी तरह करो, जिस तरह अपनी बेटीकी करती !

बुढ़िया—बेटी तेरी रक्षा खुदा करेगा। मैं खुद चाहती हूं कि तुम सुरक्षित रहो। तेरी हालतपर मुझे रहम आ रहा है, आज तुम्हारी मां क्या सोचती होगी ? तुम निकली कहां थी बेटी, यह बड़ा शरारती है। इसके करतबोंको देख कर बड़ी चिंता होती है, बेटी ! यह मेरा पुत्र होने लायक नहीं था। मगर अफसोस ! ऐसी सन्तानके साथ मेरी भी बदनामी हो रही है।

बुढ़ियाके ये शब्द सुनकर नीरा फिर रोने लगी।

बुढ़िया सिरपर हाथ फेरती हुई बोली तुम घबड़ा मत बेटी। मां-बापके पास तुम्हें पहुंचाऊंगी, तुम चिंता न करो, बेटी, मैं जानती हूं कि अपने मां-बाप, अपना धरम-करम सबको प्यारा होता है। तुमने कुछ खाया नहीं बेटी, तुम्हें कुछ खा लेना चाहिये। बोलो, मैं जाऊं किसी हिंदू लड़केके हाथ उसके घरका बना हुआ खाना लाऊं। जहांतक हो सकेगा, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी।

इसके बाद बुढ़िया घरसे निकलकर बाजारकी ओर गयी। वहांसे एक घण्टेके बाद एक हिंदूके हाथ, खाना लिवा लायी। बोली—नीरा, जब तुमने मुझे अपनी मां बना लिया तो मेरा कहा मान और खा। मेरी बातपर विश्वास कर। तुमने खुद ही कहा है कि बेटीकी तरह मेरी रक्षा करना। बेटी, मैं रक्षा करूंगी। चाहे इसके लिये मुझे अपनी ही जान देनी पड़े।

नीरा रोती जाती और किसी तरह कौर निगलती रही।

नीरा जब खा चुकी तो बुढ़िया बोली मैं तुम्हारे घर जरूर पहुंचाऊंगी।

खा पीकर नीरा बैठी ही थी कि उसके पड़ोसके मीरू चाचा आ पहुंचे। आवाज लगायी—फफी जी हैं। बुढ़िया सहमी हुई मीरूके पास निकल आयी। बोली—कहांसे आ रहे हो बेटा।

मीरू—बहुत दिन हो गये थे। सोचा चलूं फूफीको सलाम करता चलूं। आज कलका कुछ ठिकाना है।

फूफी बैठकर हाल-चाल पूछने लगी—

मीरू—सभी अच्छे हैं और कोई अच्छा नहीं है। आज कल मिनट-मिनट की बात नहीं कहीं जा सकती।

बुढ़िया—क्या मुसलमान बहुत मारे जा रहे हैं बेटा ?

मीरू—गुण्डे दोनों में हैं। किसी कौममें कोई खराबी नहीं है। आज दस रोज हुए मेरे पड़ोसके पण्डितजीकी लड़की का पता नहीं चल रहा है। मां दहाड़ मारकर रो रही है। सच कहता हूं। नीरा के खो जानेका दुःख मुझे बहुत है। वह मुझे भी चचा-चचा कहती थी।

मीरू नाम सुनकर बुढ़िया सहम गयी। धीरेसे बोली—ईदू एक लड़की लाया है। उसे चलकर पहचानो तो। ईदू को इसका पता लगा तो वह मुझे जिंदा न छोड़ेगा। उसे मैंने अपनी पुत्री माना है। उसे उसकी मां के पास किसी तरह भेज दो। मैं तुम्हें दुआ दे रही हूं। तुम्हें बड़ा यश होगा।

बुढ़िया मीरूको नीरूके कमरेकी ओर ले गयी।

नीरा मीरूके पैरोंपर गिरकर बोली अब हम बच जायंगी चाचा ! तुम बड़े भागसे मिले। मुझे बचा लो।

मीरूने कहा—बेटी तुम मेरी बेटी हो। जैसे होगा, तुम्हें यहांसे अलग करूंगा। लेजाऊंगा और तुझे तेरी मांसे मिलाऊंगा। तेरी मदद करूंगा, घबराओ मत बेटी !

बुढ़िया—वही लड़की है बेटा !

मीरू—हां वही है। इसे मैंने अपनी लड़कीकी तरह गोदमें खेलाया है। इसकी मां भी बड़ी अच्छी और भली लड़की है। व्रत-त्यौहारपर यह मेरे बच्चोंको भी अपने ही बच्चोंकी तरह खिलाती-पिलाती है। इसकी मां बड़ी नेक है। बाप तो पूरा पण्डित है।

बुढ़िया—इसका क्या मतलब ?

मीरू—आदमी, सभी आदमी नहीं होते ? आदमियोंमें हैवान भी तो बहुत हैं।

बुढ़िया—इसको इस तरह ले जाओ कि ईदू न देखने पावे।

मीरू—यों, न जाने देगा ईदू !

बुढ़िया—ईदू इतना ही भलामानुस होता तो उसे घर लाया होता। वह तो आदमी नहीं, शैतान है ? इसे चोरीसे भगाना होगा।

मीरू—ईदू गया कहां है ?

बुढ़िया—मालूम नहीं वह गया कहां है ? इसी वक्त इसे लेकर तुम चले जाओ। रात कहीं छिपे रहना।

मीरू—तब मुझे रवाना करो फफी !

बुढ़िया—हां बस, यही ठीक होगा। इसके कपड़े बदलवा दो। चुपके चुपके ले जाना।

नीराने बुढ़ियाके पैर छुए, बोली—मां, जिन्दा रही तो आकर तुम्हारी पूजा करूंगी।

नीरा और मीरू दोनों घरसे निकल पड़े।

मीरू नीराको दूसरी राहसे लेकर चला। दूसरे रोज बारह बजे जाकर घर पहुंचा। सीधे पण्डितजीके घर पहुंचा।

* * *

पण्डितजीके घर सभी बिना दाना पानीके सोये हुए थे।

नीरा भीतर जाकर मांकी गोदमें लेट गयी।

मीरू भाभी-भाभी' करके पुकारने लगा।

माधुरी रोती हुई चिपटाती हुई बोली आओ भैया ! अपनी बेटीको कहांसे ढूंढ़ कर लाये ? मैंने ख्याल भी नहीं किया था कि तुम मेरी बेटीको लाकर हाजिर करोगे।

नीरा दौड़ी हुई अपने पिताके पास पहुंची। पिताके पैरों पर गिरती हुई बोली—तुम मुझे छोड़ कर चले क्यों आये ?

उसका पैर पर गिरना था कि एक ठोकर लगाते हुए बोले—तुमको पैदा होते ही मर जाना चाहिये था। बता अबतक कहां रही ?

नीरा रोती हुई बोली—इसमें अपराधी कौन है ? मेरे ख्यालमें सब किस्मत का दोष हैं ? न आपका न मेरा। मैं मेला देखने खुद नहीं गयी थी। वहां भीड़के कारण भटक जाना पड़ा ?

यह हंगामा सुना तो मीरू उठकर पण्डितजीके कमरेमें गया। जाकर बोला—ऐसी लड़की पर आपको गर्व होना चाहिये था, भाई ! यह मुसलमानके घरमें १० रोज जरूर रही, पर वहां एक बूंद भी जल इसने नहीं ग्रहण किया। यह लड़की जैसे आपके घरमें पाक साफ थी, वैसे ही अब भी है।

पण्डितजी—यह दस रोज मुसलमान के घरमें रही और मैं अपने घरमें इसे रखकर कहीं मुंह दिखाने लायक रह जाऊंगा।

मीरू और पण्डितजीमें बातें हो ही रही थी कि माधुरी झिड़क कर बोली—अजब हिन्दुत्व है, तुम्हारा ! तुम ब्राह्मणों में कलंक-स्वरूप हो। अगर तुम्हारा पांडित्य इसी तरह रहा तो एक भी हिन्दू नहीं बचेगा। हिन्दुओंका नाम भी कोई न लेगा। यह हिन्दू समाज है। तुम पुरुषवर्ग महीनों बाहर रहकर हिन्दू बने रह जाते हो, पर स्त्रियों पर इस तरह बन्धन ! अगर तुम इस तरह न मानोगे तो महात्मा गांधीके निकट मैं फरियाद करूंगी। इसीका फल है कि आज मुल्क दो हिस्सोंमें बंट गया।

पण्डितजी—कुलटा, मेरे घर कोई पानी पियेगा। शादी भला कौन करेगा, इसको भी तो सोचो।

माधुरी—अगर इस तरह हिन्दू समाज पतित है तो मैं खुद उस समाजमें नहीं रहूंगी ?

पण्डित—चुप रहा नहीं जाता। तुम्हारी ऐसी सभी होतीं तो हिन्दुस्तान गायब हो गया होता। अबतक मुल्क रसातलको चला गया होता।

पंडितने उठकर बीबीको दो-चार चपत लगाये और बोले—तुमने नाश कर दिया हमारा। मीरूकी ओर मुखातिब होकर बोले—तुम क्यों खड़े हो जी ! तुमने मेरा घर बर्बाद कर दिया !

मीरू—आप मेरे भाई हैं। यह लड़की निर्दोष है। यह मेरी बच्ची है। इसकी पवित्रतामें संदेह करना अन्याय है। मैं कुरानकी कसम खाकर कह सकती हूं कि लड़की पाक साफ है। महात्माजीके पास चलो वहीं न्याय होगा।

पंडितजी क्रोधमें और लाल होकर बोले—जाइये, महात्माजीके पास।

श्रीमती, चन्द्रकिरण सौनरिक्सा
आपको इस साल 'आदमखोर' नामक कहानी संग्रहपर श्री सेकसरिया पुरस्कार प्रदान किया गया

माधुरीने मीरूसे कहा—चलिये शेखजी, यह अन्याय मुझसे नहीं सहा जायगा।

पंडितजी—तू सब कुछ करेगी बदमाश !

माधुरी—करूंगी नहीं तो क्या करूंगी। अपनी बेटीके साथ अन्याय नहीं कर सकती।

पंडितजीके रोकने पर भी दोनों निकल पड़े महात्माजीके पास।

* * *

माधुरी तीसरे दिन दोनोंके साथ दिल्ली पहुंची। पण्डितजी भी चुपके-चुपके उनके पीछे हो लिये।

रास्ते भर तीनो इस तरह चुप-चुप रहे जैसे किसीको कुछ कहना ही नहीं था।

महात्माजीके सामने इन्होंने अपनी फरियाद की।

महात्माजीके सामने माधुरीने सारा किस्सा कह सुनाया। इसकी पवित्रताकी गवाह शेख मीरू हैं। मगर पतिदेव इसे घरमें रखनेको राजी नहीं होते। आप बताइये, इसमें किसका दोष है ?

मीरूने भी सारा किस्सा सुना दिया। महात्माजीकी आंखोंमें, आंसू भर गये।

महात्माजीने भरी सभामें कहा—कोई साहसी हिन्दू हो तो इसका पाणिग्रहण करे।

एक ब्राह्मण युवक सामने आकर नीराका हाथ पकड़ कर बोला—मैं पाणिग्रहण करनेको तैयार हूं।

सभाके लोग गांधीजीकी जय बोलते हुए बोले—इसीमें हिन्दू समाजका कल्याण है।

पंडितजीने आकर महात्माके पैरों पर सिर रखते हुए कहा—सबसे अधिक दोषी मैं हूं।

महात्माजी पंडितजीको उठाते हुए बोले भगवान तुम लोगोंको सुखी करे। प्रतीक्षा करो कि हिंदू मुसलमानको समभावसे देखेंगे। इधर-उधर करना गुंडों का अत्याचार है।

महात्माजी—आओ। उस युवकसे अपनी कन्याका पाणिग्रहण कराओ ईश्वर से प्रार्थना है कि वर और वधू दोनों सुखी हों।

'महात्माजीकी जय। के नारोंसे आसमान गूंज उठा।

नेपाली शुद्ध कस्तूरी, शुद्ध

हिमालय और तिब्बत कस्तूरी, शुद्ध शीलाजित, आयुर्वेदीय औषधि द्रव्य, जड़ी बूटी इत्यादि निम्नलिखित पते से मंगा लीजिये।

मालिकान—
साहु नारायण बहादुर श्रेष्ठ एण्ड सन्स (रजि०)
अध्यक्ष—नेपाल हिमालय कस्तूरी भण्डार (रजि०)
माहापाल तुलन्हे ललितपुर, नेपाल।

यह डायरी है कलकत्ते की!

महात्मा गांधीने साम्प्रदायिक दानव को फिर ताल ठोककर ललकारा है। उनके मिशनकी सफलताके लिये कलकत्तेके धार्मिक स्थानोंमें विशेष प्रार्थनाएं की गयीं जिनमें हमारे गवर्नर राजाजीने भी भाग लिया और सबके साथ मिलजुलकर बापूकी दीर्घायुके लिये ईश्वरसे प्रार्थना की।

महात्माजी से समधीका रिश्ता रहने के कारण राजाजीका तो यह विशेष फर्ज है। कलकत्तावासियों, बड़े बूढ़ों छोटे-मोटे बच्चे कच्चे, लम्बे-नाटे, खरे-खोटे, सबोंकी तरफसे बेखबर बापूसे अनुरोध करेगा कि फाकाकशी छोड़ दो। ठंढाई छानकर दानवसे भिड़ जाओ तो तुम्हारी जीत अवश्य होगी।

बापूके प्रति कलकत्तावासियोंका भी विशेष फर्ज है। उन्हींके चमत्कारकी बदौलत आज जहां तिलकधारी अमजादिया होटलमें चायपान करते हैं, वहां पर्दा नशीन बेगमें निःसंकोच बड़े बाजार में चहल कदमी करती हैं। काश! 'बेखबर' कलकत्तेसे एक डाम लेकर बिड़ला भवनके सामने धूनी रमा देता और फाका खत्म होते ही बापूको कलकत्तावासियोंकी तरफसे एक गिलास डामका रस भेंट करनेका श्रेय प्राप्त करता। बापू, जिन्दाबाद।

० ० ०

इधर पश्चिमी बङ्गालके कांग्रेस सदस्योंका दिमाग फिर गया है। प्रधान मन्त्री डा० घोष जैसा सीधा सादा आदमी पसन्द नहीं और आकर्षण मोटे तगड़े डा० विधान चन्द्र रायकी तरफ है। आशा है भारतके चोटीके डाक्टर होनेके नाते डा० राय उनके दिमागको फिर बहकने न देंगे।

जीत किसकी हुई चोर बाजार वालोंकी या सरक्षा बिलके विरोधियों की?

० ० ०

दिमाग फिरनेके सिलसिलेमें असेम्बलीके कम्यूनिस्ट सदस्य बेचारे ज्योति बसकी याद बर बस आ ही जाती है। मंगलवारको सरक्षा बिलपर उनके संशोधनोंका उत्तर देते हुए डा० घोषने कहा कि आपको चारों तरफ भूत ही भूत नजर आता है। यह आपके दिमाग खराब रहने का एक लक्षण है। इस लिये इस मर्जका इलाज होना चाहिये।

अपने रामको तो सिर्फ रातमें भूतके दर्शनका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसलिये घोष बाबूके पहले इलजामका खुदबखुद खण्डन हो जाता है। फिर उनके दिमागी मर्जकी अभी शुरूआत है और रांचीका मशहूर पागल खाना भी तो ज्यादा दूर नहीं है।

* * *

एक लीगी सदस्यको सुरक्षा बिलमें अमेरिका-ब्रिटेन-भारत साजिशकी गंध मिली।

भारत सरकारको चाहिये कि आपको खुफिया विभागकी चोटी पर बिठा दे।

* * *

आजके भारतमें गवर्नरीका पेशा भी कोई पेशा है? मन्त्रिमण्डलके इशारे पर नाचना पड़ता है। बापूकी राय है कि गवर्नरोंको कठपुतली न बनाया जाय। डा० घोषका जब कांग्रेस सदस्योंकी पसन्द का पता चल गया तो डा० रायको सीधे निमन्त्रण भेज दिया कि अब पार्टीकी बागडोर आप संभालें मानो यह भाई भाई के बटवारेका कोई झगड़ा हो। हमारे गवर्नरसे रायतक न ली गयी।

क्या इसीलिये डा० रायने युक्तप्रांतकी गवर्नरी पर बंगालके राजनीतिक क्षेत्रमें प्रवेशको तरजीह दी?

* * *

पश्चिमी बंगालके मुस्लिम सदस्योंने निर्णय किया है कि अब उन्हें, चाहे वे मर्द हों या औरत, मिस्टर मिसेज, मिस नहीं, जनाब कह कर सम्बोधित किया जाय।

औरत-मर्दके भेदभाव मिटानेकी दिशामें एक कदम। अब समाचार पत्रके पाठकोंको इस चक्करमें नहीं पड़ना है कि अमुक जनाब मर्द हैं या औरत।

* * *

मि० सुहरावर्दी भी उनकी सेवामें हाजिर हुए। महात्माजीने अपनी प्रार्थना सभामें कहा कि लोग मि० सुहरावर्दीको गुण्डों का सर्दार समझते हैं। कोई दो साल पहले भारतके वर्तमान उद्योग मन्त्री डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जीने बंगाल असेम्बलीमें उन्हें गुण्डोंका राजा बताया था।

सर्दार और राजामें बड़ा अन्तर है। कलकत्ता वासी तो सुहरावर्दी हुकूमतमें काफी दिनों तक सुखचैनकी बंशी बजा चुके हैं। उन्हें इस इल्जामसे बरी करना कलकत्तावासियोंका फर्ज है। ऐलान कर देना चाहिये कि सुहरावर्दी साहब 'मद्दर लोग' हैं।

* * *

गुण्डोंकी श्रेणीमें स्थान पानेका दूसरा सौभाग्य रियासती मुस्लिम लीगके प्रेसिडेंटको है। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषदके जेनरल सेक्रेटरी श्री जय नारायण व्यासनेमाहेश्वरी भवन की एक सभामें भाषण करते हुए इस प्रेसिडेंटको गुण्डा और जोधपुर महाराज का दिलका दोस्त बताया।

और, अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के प्रेसिडेंट कायदे आजम जिन्ना साहब?

उच्च कोटिकी रिस्ट वाच

स्वीस मेड, मजबूत टिकाऊ, आधुनिक डिजाइन, लीवर मूवमेंट ठीक समय, ३ वर्षकी गरान्टी। गोल आकारकी रिस्टवाच १४) सुपीरियर १६।।), उपर्युक्त जैसी फ्लैट शेप, ४ जुएल, कोमीयम केस २४)। उसी प्रकार सेन्टर सेकण्ड २६), गोल आकार १५ जूएल ३६), लम्बी शेप ५ जूएल ३५), रोल्ड गोल्ड स्टोल बैंक (केस गारन्टी युक्त १० वर्ष (५२), डाक खर्च ।।=) दो आर्डर आनेसे मुफ्त। प्रत्येक घड़ीके साथ एक फीता दिया जाता है।

इस्टर्न वाच कं०

पो० बक्स नम्बर १२२१६ (बी)

कलकत्ता ५

महात्माजी उपवास कर रहे हैं

श्री पाञ्चजन्य

महात्मा गांधीने १२ जनवरीको दिल्लीमें प्रार्थनाके बाद अपनी वक्तृतामें यह घोषणा की कि हिन्दू-मुस्लिम एकता लानेको मैं अनिश्चित कालके लिये कलसे (१३ जनवरी, मंगलवार) उपवास करने जा रहा हूं।

उपवास करनेका अपना निर्णय बताने के बाद गांधीजीने कहा कि उपवास कोई स्वास्थ्यके लिये करता है, कोई प्रायश्चित्त स्वरूप करता है। यह आवश्यक नहीं है कि ये उपवास करने वाले अहिंसामें विश्वास रखते ही हों। किन्तु एक उपवास ऐसा भी है जिसे अहिंसाका पुजारी समाज द्वारा किये गये अन्यायके प्रतिवाद में करनेको प्रेरित होता है और यह उपवास अहिंसाका पुजारी तभी करता है जब उसके सामने दूसरा कोई उपाय, उपचार या मार्ग नहीं रह जाता। ऐसा ही अवसर आज मेरे सामने उपस्थित है। कलकत्तेसे ६ सितम्बरको मैं पश्चिम पंजाब जानेके लिये दिल्ली आया था। यह नहीं हो सका। सुन्दर चित्र विचित्र दिल्ली श्मसान तुल्य हो रही थी। गाड़ीसे उतरने पर मैंने प्रत्येकके मुख पर निराशाक छाया देखी। यहां तक कि मने देखा कि सर्दार भी इस बार, विनोद और उस विनोदसे उत्पन्न प्रसन्नता जिनका साथ कभी नहीं छोड़ती, इसके अपवाद न थे। वे मुझे लेने स्टेशन आये थे। संघकी राजधानीमें जो उपद्रव और उत्पात हो रहे थे उनका दुखद समाचार मुझे तत्काल उन्होंने दिया। तभी मैंने समझा कि मुझे दिल्लीमें रहना होगा और कुछ करूंगा या मरूंगा। दिखायी पड़ने वाली शांति तत्काल काममें लाये गये फौजी और पुलिस कार्योंका फल है। किन्तु भीतर तूफान दबा हुआ है। यह किसी क्षण फट पड़ सकता है। बेजीड़ दोस्त मौतसे मुझे कार्य सिद्धिके प्रणकी पूर्त्ति ही बचा सकती है, किन्तु इस स्थितिको मैं कार्य सिद्धि की स्थिति नहीं मानता। हिंदुओं, सिखों और मसलमानोंके बीचमें हार्दिक मैत्रीके

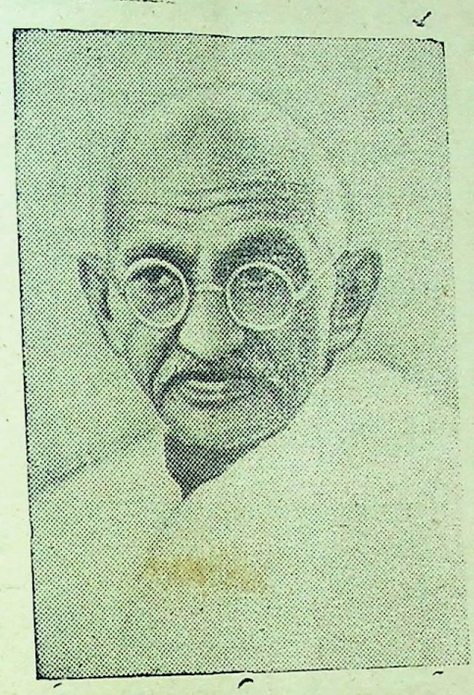

महात्मा गांधी

लिये मैं तड़प रहा हूं। अभी उस दिन तक यह थी, आज नहीं है। कोई सच्चा भारतीय देश भक्त इस तरहकी स्थितिकी परिकल्पना करके कैसे धैर्य रख सकता है। बहुत दिनोंसे अंत र्ध्वनि इस ओर ध्यान आकर्षित कर रही थी; लेकिन यह आवाज कहीं शैतानकी आवाज न हो अर्थात् यह कहीं दुर्बलता न हो समझकर मैंने अबतक उसकी तरफसे कान बन्द कर रखे थे। लाचारी महसूस करना मझे कभी पसन्द नहीं है और एक सत्याग्रही के लिये यह उचित भी नहीं। उसकी या दूसरोंकी तलवारके बदले उपवास उसका अन्तिम संबल है। रोजना जो मुसलमान दोस्त मेरे पास आते हैं उनके लिये मेरे पास देनेको कोई जवाब नहीं है कि वे क्या करें। मेरी यह असमर्थता इधर कुछ दिनोंसे मुझे चबाये डाल रही थी। उपवासके साथ यह मिट जायेगी। पिछले तीन दिनोंसे मैं इसी ऊहापोहमें पड़ा था। अन्तिम निर्णयका प्रकाश मझे मिला और इससे मैं प्रसन्न हूं। किसी व्यक्तिके पास यदि वह शुद्धपवित्र है—देनेके लिये जीवनसे अधिक मूल्यवान दूसरी कौन वस्तु है? मैं आशा करता हूं और यही मेरी प्रार्थना है कि इतनी शुद्धता मझमें है कि मैं यह कदम उठाऊं। आप लोगोंसे यही चाहता हूं कि आप आशीर्वाद दें कि प्रयास सफल हो और मेरे लिये तथा मेरे साथ इसकी सफलताके लिये आप भी प्रार्थना करें। मेरा उपवास कलसे आरम्भ होगा। अवधि अनिश्चित है और इस दौरानमें मैं नमक और निम्बू के साथ या इनके विना भी पानी पीयूंगा। उपवासका अंत तभी होगा जब मुझे सन्तोष हो जायगा कि विना किसी बाहरी दबावके, कर्त्तव्यकी प्रेरणासे सब सम्प्रदायोंके बीच हृदयोंका पुनर्मिलन हो गया है।

इसका पुरष्कार यह होगा कि भारतको अपनी मिटती हुई प्रतिष्ठा और एशियासे तथा फलस्वरूप संसारसे तेजीके साथ लुप्त होती हुई उसकी सार्वभौमिकता फिरसे प्राप्त होगी। आत्म प्रशंसा ही कहना चाहिये इसे किंतु मेरा विश्वास है कि भारतकी आत्माके हननका अर्थ होगा पीड़ित, तूफानोंसे आलोड़ित, धूलिधूसरित और भूखे संसारकी आशाका हनन। जरा कल्पना तो कीजिये कि भारत प्रिय भारतमें कैसी विनाशलीलाका ताण्डव हो रहा है, तब आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उसके एक विनम्र पुत्रमें इतनी शक्ति और शायद पवित्रता भी पर्याप्त मात्रामें है कि वह इस खद मार्गपर चल सकता है। यदि वह दोनोंमें एक भी नहीं है तो वह धरतीपर भार स्वरूप है और ऐसा भार जितनी जल्दी उठ जाय और भारतीय वातावरण उससे मुक्त हो जाये उतना ही उसके लिये और सबके लिये अच्छा है। मैं अपने मित्रोंसे अनुनय करूंगा कि वे मझे इस पथसे विचलित करनेके लिये बिड़ला भवनको न दौड़ पड़ें और न मेरे लिये चिन्तित ही हों। मुझे भगवान देखता है, मैं उसीके सहारे हूं। बल्कि वे अपने भीतर रोशनी डालें क्यों कि हम सबके लिये यह अग्निपरीक्षाका समय है।

(शेष २० व पृष्ठ पर)

काश्मीरकी समस्या

शेख मुहम्मद अब्दुल्ला

काश्मीरकी सैनिक मोर्चेबंदीके सम्बंधमें हमें बिलकुल भी चिंता नहीं है। सैनिक विजय तो एक ध्येयके लिये साधनमात्र है। हमारा ध्येय है राजनीतिक सफलता। मैं तो केवल यही चिंता करता हूं कि राजनीतिक रूप में भी हमें विजय प्राप्त करनी चाहिये। लोग सोच सकते हैं कि काश्मीर पर आक्रमण करने वाले आखिर इतने दिनों तक कैसे टिके रह गये। लेकिन इसका सीधा-सा उत्तर है कि आक्रमणकारियोंकी पाकिस्तान सहायता कर रहा है तथा उन्हें प्रोत्साहन दे रहा है। लेकिन पाकिस्तान सैनिक रूपमें विजय प्राप्त नहीं कर सकता और मैं भी नहीं चाहता कि पाकिस्तान राजनीतिक रूपमें विजयी हो। यदि राजनीतिक रूपमें पाकिस्तान जीत जाता है तो हमारा भविष्य अंधकारमें है। मुझसे यह प्रश्न किया जा सकता है कि राजनीतिक विजयका क्या अर्थ है। इसका सीधा जवाब यह है कि हम काश्मीरमें साम्प्रदायिकता और जिन्नाके दो राष्ट्रवाले सिद्धांतके विरुद्ध लड़ रहे हैं।

काश्मीरी मुसलमानोंको दो राष्ट्र वाले सिद्धांतमें बिलकुल विश्वास नहीं है। जब तक हम सब प्रकारकी साम्प्रदायिकता को चाहे वह जिन्नाके विचारके अनुसार हो चाहे हिन्दुस्तानमें उन हिंदुओंके विचार के अनुसार हो जो कि हिंदुओं का पूर्ण प्रभुत्व चाहते हैं, समाप्त नहीं कर देंगे तब तक हम राजनीतिक रूपमें नहीं जीत सकते।

सिद्धांतोंकी लड़ाई,

हम काश्मीरमें सिद्धांतोंकी लड़ाई लड़ रहे हैं। काश्मीर राष्ट्रीय सम्मेलन एकता और साम्प्रदायिक सद्भावनामें विश्वास करता है। हम दो राष्ट्रवाले सिद्धांतमें विश्वास नहीं करते हैं। और, इस कारण से सम्प्रदायी जब हमारे दृष्टिकोणसे सहमत नहीं हो सके तो उन्होंने युद्ध आरम्भ कर दिया।

वे जो कुछ शांति और समझा-बुझा कर प्राप्त नहीं कर सके वह उन्होंने शक्ति और शस्त्रोंकी सहायतासे प्राप्त करनेका प्रयत्न किया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अंतमें हम विजयी होंगे, हम केवल काश्मीरके लिये ही युद्ध विजय नहीं करेंगे बल्कि उस सारे भारतके लिये विजय प्राप्त करेंगे जो कि साम्प्रदायिक सद्भावना और एकतामें विश्वास करता है।

काश्मीरके विरुद्ध झूठा प्रचार

काश्मीरकी आंतरिक स्थितिके बारेमें तरह-तरहकी बातें कही जा रही हैं और

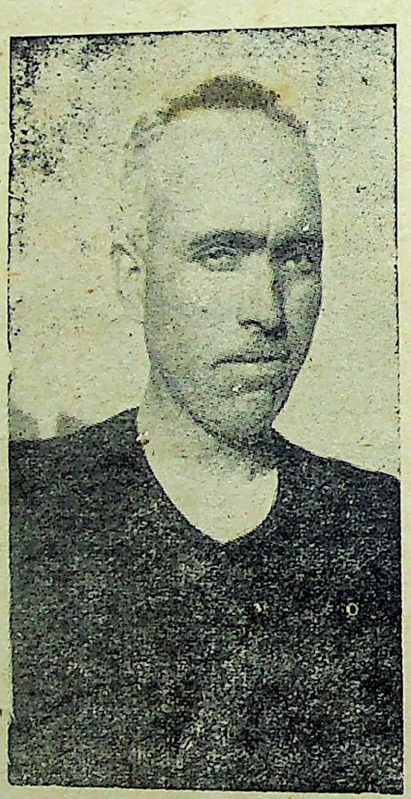

शेख अब्दुल्ला

लोग राष्ट्रीय सम्मेलनको कमजोर बनाने और बदनाम करनेके लिये तरह-तरहकी साजिश कर रहे हैं। कहा जाता है कि शेख अब्दुल्ला मुसलमान होनेके कारण एक राष्ट्रवादी नहीं हो सकता और भारत को अपनी मातृभूमिके रूपमें स्वीकार नहीं कर सकता। अब भी वे यह कहते हैं कि कोई भी मुसलमानका विश्वास नहीं कर सकता, एक मुसलमान तो मुसलमान ही है और वह एक राष्ट्रमें विश्वास नहीं कर सकता। पर, थोड़े अर्सेके बाद जब हमारी सचाई प्रमाणित हो गयी तो कहा गया कि अब्दुल्ला कम्यूनिस्ट है और रूस काश्मीर पर कब्जा कर लेगा और भारत पर आक्रमण कर देगा। काश्मीरको सहायता मत करो अन्यथा भारतमें साम्यवाद फैल जायगा। ऐसी कहानियां जो कि अस्ट्रेलिया और बी० बी० सी० द्वारा फैलाई गयीं हैं, आतंक फैलानेके रूपमें कही गयी है। वास्तविकता यह है कि काश्मीर न तो साम्यवादी है और न सम्प्रदायवादी और वह तो भारतकी कीर्ति और एकतामें विश्वास करता है और सब जातियोंको अपने आपको भारतीय समझना चाहिये। हम वर्षोंसे साम्प्रदायिकतासे युद्ध कर रहे हैं, क्योंकि हमारा विश्वास है कि हिंदुओं, मुसलमानों, पारसियों और ईसाइयोंको साथ साथ रहना है। हमें केवल मस्लिम साम्प्रदायिकता ही नहीं बल्कि हर प्रकारकी साम्प्रदाकितासे लड़ना चाहिये।

राजनीतिमें धर्मका स्थान नहीं

भारतमें साम्प्रदायिक एकता बनाये रख हम साम्प्रदायिकत के सिद्धांतके विरुद्ध आरम्भसे ही लड़ते आये हैं और मसलमानोंको उसकी निरर्थकताका विश्वास दिलाते रहे हैं। पाकिस्तानसे शत्रु इस्लाम को बचाओ की पुकार लगाते आये हैं। वे कहते हैं कि उन्होंने मसलमानोंको हिंदू आक्रमणसे बचानेका बीड़ा उठाया है। हमने काश्मीरकी जनताको बताया है कि यह सब धोखेबाजी है और राजनीतिमें धर्मका कोई स्थान नहीं। मैं एक मसलमान हूं और मुझे अपने धर्ममें अनुराग है, लेकिन मैं हिंदू, मसलमान, सिख, ईसाई सभीसे प्रेम करता हूं, क्योंकि उनके धर्मने हमें प्रेम करने और करानेकी शिक्षा दी है और हम उनकी इस शिक्षाका पालन कर रहे हैं। मैं चाहे दिल्ली जाऊं, चाहे त्रावनकोर, चाहे बम्बई, मुझे कोई अंतर नहीं दिखाई देता। मुझे सब जगह ऐसा लगता है कि मैं अपने ही आदमियोंके बीच हूं। भारतीय होनेके नाते मैं भारतके कोने-कोनेमें रहनेका दावा रखता हूं।

छल

—०—

श्रीमती कमला त्रिवेणी शङ्कर

पोटिकोमें खट् खट्की आवाज सुन रायसाहब कृष्णानन्दने खिड़की खोल कर देखा, एक सुन्दर तेजस्वी युवा संन्यासी खड़ा परिचित-सा मुस्करा रहा है।

नमस्कार— श्रद्धासे उन्होंने हाथ जोड़ दिये।

दरवाजा खोलकर बाहर निकले— संन्यासीने उसी मुस्कानमयी मुद्रासे कहा —आपने मुझे पहचाना।

"आपको ?... उन्होंने स्मृतियोंको एकत्र करना चाहा पर कुछ याद न आया बोले—शायद कहीं देखा हो पर याद नहीं आ रहा है। आइये, बैठिये ?

युवा संन्यासी उनके पीछे पीछे आकर एक कुर्सीकी गद्दी उठाकर बैठ गया। उसका काषाय वस्त्र उसके सुन्दर गौर रंगपर खिल रहा था—राय साहब उसे देखकर पूर्व-परिचयको स्मरण करनेकी चेष्टा कर रहे हैं; यह देख, संन्यासीने कहा—एक बार गाड़ीमें आपके साथ कुछ घण्टे व्यतीत करनेका सौभाग्य मिला था ...शायद आठ वर्ष पूर्व···किसी यात्रामें ?

'आठ वर्ष पहले....उन्होंने अपनी बिखरी हुई स्मृतियोंको फिर एकत्रकर यह यह स्मरण करना चाहा कि आठ वर्ष पहले किस यात्रामें संन्यासीसे उनका साक्षात्कार हुआ था... किन्तु स्मृतियां बीचमें ही बिखर गयीं तरुणने मुस्काकर कहा—किन्तु, उस समय मैं संन्यासी नहीं था ?

रायसाहबने हंसकर कहा—होगा··· अब कहिये कहांसे शुभागमन हो रहा है, बहुत थकेसे दीख रहे हैं आप ?

संन्यासीने किञ्चित सुस्मित मुद्रासे जवाब दिया—"बहुत दूरसे ? आठ वर्ष बाद मैं शहर और मनुष्योंके विशाल समुदायके सम्पर्कमें आ रहा हूं...देखता हूं इन आठ वर्षों में ही काफी परिवर्तन हो गये हैं ?

आठ वर्षों तक आप थे कहां ?

'पहाड़ोंमें, घाटियोंमें, गुफाओंमें, मसानोंपर, मेरा यह समय अधिकांश हिमालय और 'कैलाश'पर ही व्यतीत हुआ है ?

रायसाहबने कौतूहलसे पूछा 'क्या आपका प्रयोजन सुन सकता हूं ?

"अवश्य योग विद्याकी प्राप्तिकी लालसा ही खींचकर मुझे वहां ले गयी थी।

"आपको सफलता कहां तक प्राप्त हुई क्या इस विषयमें भी कुछ बतलानेकी कृपा करेंगे ?

सन्यासीने उसी भांति प्रसन्न मुखसे कहा— अवश्य ! पर वे बातें जब आप इत्मीनानमें रहें तभी सुनें ?

'यद्यपि आपकी बातोंसे उत्सुकता बढ़ रही है, फिर भी आप जलपानकर थोड़ा विश्राम करें। इत्मीनानके साथ आपकी बातें सुनेंगे।

उन्होंने नौकरको बुलाकर शीघ्र ही जल और कुछ जलपान लानेके लिये कहा-

इस बीच संन्यासीने अपना खादीका रंगीन झोला खोलकर कुछ छोटे-छोटे पत्थरके चमकीले टुकड़े निकाले और उन्हें राय साहबके सामने रखते हुए कहा —आप इन टुकड़ोंमें रंगोंकी पहचान कीजिये—ये हमेशा रंग बदलते रहते हैं। पर, पौराणिक दृष्टिसे भी इनका महत्व कुछ और ही है ? कहते हैं भगवान शङ्कर जब पार्वतीजीके साथ विवाह करके लौटे थे और भगवती वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित जब भगवान् शङ्करके साथ साथ पहाड़ियों पर विचरण करती थीं तभी उनकी वह जगमगाती, प्रतिछवि इन पत्थरोंपर अङ्कित हो गयी थी....

तबतक नौकरके पीछे पीछे उनकी १८ वर्षीया पुत्री सुनन्दा जलपानकी तश्तरी लिये पर्दा उठाकर भीतर आयी।

उसने एक बार पिताकी ओर और एक बार संन्यासीकी ओर दृष्टि डालकर हाथ जोड़कर नतनमस्कार किया।

रायसाहबने जलपानकी तश्तरी संन्यासीके सामने रखते हुए कहा—यह मेरी पुत्री हैं, इसने इसी वर्ष बी० ए० पास किया है ?

आशीर्वाद दिया।

सुनन्दा क्षणिक चकित दृष्टिसे संन्यासीकी ओर देखती रही...फिर धीरे धीरे पर्दा खींचकर लौट आयी ?

दो पहरको पिता और संन्यासीमें जो बातें होती रहीं उन्हें सुनन्दा ध्यान-पूर्वक सुनती रहीं। बीच बीचमें संन्यासी कभी अङ्गरेजी और कभी संस्कृत शब्दों का भी उच्चारण कर रहा था और उसके उच्चारणसे यह स्पष्ट हो रहा था कि वह दोनों ही भाषाओंका अच्छा विद्वान् है।

सबसे अधिक सुनन्दाकी उत्सुकता जिस बातको सुनकर बढ़ी वह थी संन्यासी की ज्योतिष विद्या ? किन्तु पिताके सामने वह उसकी परीक्षा लेनेमें संकुचित हुई ? दूसरी जिस बातसे वह चमत्कृत हुई वह थी सन्यासीका अदृश्य विद्याका वर्णन। उसने बतलाया 'योग'की कुछ विशेष क्रियाओंको करते ही मनुष्य अदृश्य हो जाता है ? और इच्छानुसार जबतक चाहे अदृश्य रहकर वह सभी जगह आ जा सकता है। वह सुन सकता है देख सकता है, किसी भी वस्तुका स्पर्श कर सकता है। केवल निद्रित होकर सो नहीं सकता। अस्तु अदृश्यकालमें वह प्रेत सदृश चारो तरफ घूमता ही रहता है।

सुनन्दाको रोमांच हो आया।

पिताने पूछा—आपने इस विद्याको कितने दिनोंमें सीखा।

'तीन वर्ष कुछ महीने ?

"क्या आप जब भी चाहें अदृश्य हो सकते हैं ?

'अवश्य ?

'कल आप इस समय कहां थे ?

'कल मैं अदृश्य रूपमें अपने एक परिचित प्रोफेसरके पास था ? इसी शहरमें ?

सुनन्दाका कौतुहल जागा—मन्द स्वरमें बोली—"उनका नाम बतलानेकी कृपा कीजियेगा।

क्यों नहीं, अवश्य ? प्रोफसर भट्ट उनके बड़े हालकी बगलमें जो छोटा कमरा है उसमें बैठे वे एक मेरे ही सह-पाठीसे बड़ी देर तक बातें कर रहे थे ?

"आपने उनकी बातें सुनीं ?

"हां, मैं करीब डेढ़ घण्टे तक वहीं

था, उसके बाद मैंने अपने उस साथीका पीछा किया, जो उस समय मानसिक संघर्षसे बहुत परेशान हो उठा था।

"उसके बाद—पिता-पुत्रीने साथ ही प्रश्न किया।

उसके बाद—मैंने अपना परिचय दिया और रात १ बजेतक उससे बातें करता रहा, उसके मानसिक द्वन्द्वका अच्छी तरह समाधान कर मैं अपने कई और परिचितोंके यहां गया। किन्तु अदृश्य रूपसे ?

रायसाहबकी उत्सुकता बढ़ी। उन्होंने पूछा - आप कहांके रहनेवाले हैं और पूर्ण शिक्षा आपने कहांतक पायी है।

"मैं पुरीके निकट, एक छोटेसे कस्बका रहनेवाला हूं। और कलकत्तेमें रहकर मैंने एम० ए० पास किया था ?

सुनन्दाकी दृष्टि संन्यासीके मुखपर जम गयी ?

राय साहबने एक बार सुनन्दाकी ओर देखकर कहा—आप ज्योतिष विद्यामें पारङ्गत हैं, कृपया यह बतायें कि सुनन्दाका विवाह कब और कहां होगा ?

सुनंदाका विवाह कब और कहां होगा ?

सुनंदा सामने ही थी, अपने भविष्य और विवाहके विषयमें जाननेके लिये उत्कण्ठा और उत्सुकता रहते हुए भी वह नारी सुलभ शील संकोचके बस उठनेका उपक्रम करने लगी।

रायसाहबने उसे रोककर कहा—आप इस विषयमें स्पष्ट कहकर मेरी चिंता ही न दूर करेंगे बल्कि बहुत बड़ी सहायता भी करेंगे ?

संन्यासी मुस्कराया, उसने अपनी एक तीखी दृष्टि सुनन्दाके मुखपर डाली और तब गम्भीर होकर बोला—इस समय आप जहांसे विवाहके लिये निराश हो चुके हैं, वस्तुतः विवाह वहीं और उसी लड़केसे होगा।

"पर वहांसे तो कोई आशा नहीं, सम्बन्ध 'वर' स्वयं अस्वीकार कर रहा है।

"यह अमिट है ? विवाह अवश्य होगा ? विधि विधान आशा निराशाके परे है। लड़की अपनी पतिके साथ समस्त संसारिक सुखोंका उपयोग चिरकाल तक करेगी। और विवाह अधिक दिन न टल कर अगले सप्ताहमें ही सम्पन्न होगा ? इसे आप या दुनियाकी कोई भी शक्ति नहीं टाल सकती ? दूसरी बात यह है कि आप पुत्री पतिके साथ देश विदेशकी बहुत बड़ी-बड़ी यात्रा करेगी। और आपको कुछ ही दिनों बाद किसी तीर्थमें वास करना पड़ेगा

राय साहबने कुछ चकित होकर कहा-आपका कथन सत्य है। मै बहुत दिनोंसे सोच रहा हूं कि सुनन्दासे मुक्ति पानेके बाद कुछ दिन किसी तीर्थ स्थानमें शान्ति पूर्वक निवास करूं ?

कुछ देर निस्तब्धता सी छायी रही-राय साहबने मौन तोड़ा—"आप उस लड़के के विषयमें भी कुछ बतला सकते हैं, जो सुनन्दाको ग्रहण करेगा ? सन्यासी कुछ देर मौन सोचता रहा फिर मुस्कराकर बोला—वह एक श्रेष्ठ वक्ता और लेखक है। उसकी कृतियां जो अभी केवल लोक प्रिय है आगे अमर हो जायगी और आपकी पुत्री उसकी कृतियोंकी भक्त है। आगे चलकर ये दोनो ही अमूल्य और सुन्दर साहित्यकी निर्माण करेंगे ?

सुनन्दाका शरीर झनझना उठा उसके कानोंमें लाली दौड़ गयी।

भविष्य वक्ता सन्यासी विश्रामके लिये उठ गया।

—उस रात सुनन्दा रात भर करवटें लेती रही, संयासीको एक एक शब्द उसके कानोंमें रह रह कर गूंज उठते। क्या सचमुच जिसे वह मन ही मन श्रद्धाके फूल चढ़ा कर वर चुकी है उसी ...

पर ऐसे संयासियों और ज्योतिषियों पर तो उसे कभी भी विश्वास न था वह सदैव उन्हें अविश्वासकी दृष्टिसे देखा करती थी।

सूर्यास्तके पूर्व सन्यासी विदा लेकर चला गया ?

* * *

आज सुनंदाका विवाह था—

'वर' देख कर राय साहब क्षणके सोचते रहे, एक और ही मख उनकी स्मृतियोंमें बार बार झाकनेकी चेष्टा कर रहा था, किन्तु प्रकट करनेका अवसर न देख वे अन्य वैवाहिक कार्योंमें लग गये ? बरात बहुत बड़ी आयी थी, वर सुन्दर और प्रतिभा वान था सनंदा कीमत वस्त्राभूषणमेसे सुलंकृता किसी सुगढ़ कलाकार द्वारा गढ़ी गयी प्रतिमा सी लगती थी। भविष्यवाणी सत्य स्पष्ट हो रहा था। किंतु प्रथम रात्रिमें जब सुनंदाने पल्वके तंज प्रकाशमें पतिका मुख देखा तो सहसा घूंघट उठा चकित दृष्टिसे देख विस्मय भरे स्वरमें बोली—"आप ?

'वर' ने मुस्करा कर कहा—जी, हां, मै, पहचान लिया आपने ?

'और संयासी. . इतना बड़ा छल ?

उसने हस कर कहा—करता क्या, जब तुम्हारे पिताने कहा कि मै लड़की किसी भी तरह लड़ को नहीं दिखा सकता ? उसे घरकी स्त्रियां ही देख सकती हैं ?

"तभी आपको कोपीन पहन संयासी बननेकी सूझी ? उसने उसी मुस्कारन भरी परिचित मुद्रासे कहा—नही सिर्फ यही बात न थी, अपनी कहानियो और उपंयासों के विषयमें बहुत सी आलोचना प्रत्यालोचन सुनी है . . सुना करता था तुम भी प्रभावित थी...उसका कुछ प्रत्यक्ष प्रभाव भी देखना चाहता था कि मै अपने शब्दोंमें लोगोंके खासकर तुम्हें कहां तक बांध सकता हूं ? . . और मै अपने प्रयोगमे सफल हुआ ? फल रूपमें तुम सामने हो..

क्रीडालपदिंत शीलसे झुकी सुनंदा ने स्वामीके वसमें मुहं छिपा लिया . . . ?

———

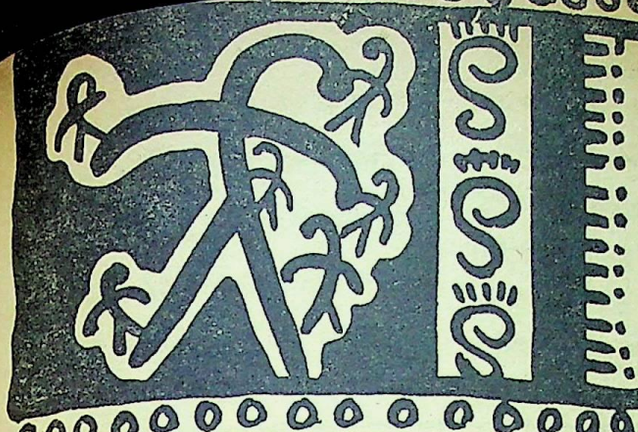

वृद्ध जनोंके प्रति

—:**:—

लेखक—प्रो० भगवती प्रसाद, श्रीवास्तव एम० ए०

भारतीय घरोंमें वृद्धजन प्रायः कुटुम्बके अन्य सदस्योंके लिये परेशानीका कारण बने रहते हैं। छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ना, खीजना उनका नित्यका क्रम हो जाता है। उनकी बातोंमें कोई दिलचस्पी नहीं लेता क्योंकि सदैव ही पुराने दिनोंकी स्मृतिको ही वे दुहराते हैं। नवीन विचारधारा, नये सामाजिक आन्दोलन आदिके प्रति ये वृद्धजन सदैव ही उदासीन रहते हैं क्योंकि उनकी यह दृढ़ धारणा-सी बन जाती है कि जो कुछ भी नया है सब अवांछनीय तथा अहितकर है शारीरिक श्रमके लिये वे सम्भवतः मजबूर होते ही हैं किन्तु इसी कारण वे अपनेको मानसिक श्रमके लिये भी असमर्थ मान लेते हैं। अतः वे घरके लोगोंके लिये हर मानेमें भार स्वरूप बन जाते हैं।

किन्तु विज्ञानकी खोजसे पता चलता है कि अवस्थाके बढ़नेके साथ दिमागके कोषोंमें इस किस्मके कोई परिवर्तन नहीं होते कि उनके कारण मानसिक शक्ति विशेष क्षीण हो जाय। वास्तवमें गत महायुद्धमें इस तथ्यकी जांच भली भांति की जा सकी है। युवकोंकी एक बड़ी संख्या जब रणक्षेत्रमें थी या युद्ध उद्योगमें लगी थी, तो उस समय कल कारखानोंके प्रबन्धके लिये अथवा गवर्नमेण्टके विभिन्न विभागोंमें उत्तरदायित्वके पद पर अनेक वृद्धजन लगाये गये थे और इन लोगोंने सचारु रूपसे अपने उत्तरदायित्वको निबाहा। बावजूद इसके कि अवकाश प्राप्त कर ये लोग जिन्दगीके संघर्षसे एक प्रकार अलग हो चुके थे, इन लोगोंने नयी बातोंको सीखनेमें पूरी कामयाबी हासिल की। मानो बुड्ढे तोतेने भी पढ़ना सीखा। युद्धभूमिमें भी कई उच्च पदाधिकारी ऐसे थे जिनकी अवस्था ६० वर्षसे ऊपर थी!

विज्ञान तथा साहित्यकी प्रगतिमें तो वृद्धजनोंने सदैव ही महत्वपूर्ण योग दिया है। उदाहरणके लिये ऐडिसन तथा लार्ड केल्विनने अपनी ८० वीं वर्षगांठके बाद अनेक महत्वपूर्ण आविष्कार किये। प्रो० आइन्सटाइन जिनकी गणना संसारके सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकोंमें होती है अपनी वृद्धावस्थाके बावजूद भी अभी वैज्ञानिक अनुसंधानोंमें लगे हुए हैं। साहित्यके क्षेत्रमें श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा जार्ज बर्नर्ड शा की प्रतिभासे कौन प्रभावित नहीं हो सका है। ९० वर्षकी अवस्थामें भी आज बर्नर्ड शा साहित्य निर्माणमें पूर्ववत संलग्न हैं। इस वर्षके लिये साहित्यका नोवेल पुरस्कार भी ७६ वर्षके एक वृद्ध साहित्यकारको मिला है!

देश और समाज लिये प्रत्येक वृद्धजन उपयोगी बन सकता है बशर्ते वह जिन्दगीके प्रति अपने दृष्टिकोणको विकृत होनेसे बचा सके। वास्तवमें जब तक मनुष्यके अन्दर उत्साह बना रहता है, जिन्दगीके प्रति उसकी दिलचस्पी कायम रहती है और उसका मनोवैज्ञानिक सन्तुलन ठीक रहता है तब तक उसे बुड्ढा नहीं कहा जा सकता।

साधारणतया वृद्धावस्थाके पदार्पणके फलस्वरूप लोगोंके स्वभावमें चिड़ाचिड़ापन आ जाता है हालकी घटनाओंकी स्मृति क्षीण हो जाती है, परिवर्तनके प्रति विरोध की भावना जोर पकड़ती जाती है तथा आत्मविश्वासमें कमी हो जाती है। वृद्धावस्थाके इन लक्षणोंके प्रति जागरुक रह कर इनपर विजय प्राप्त किया जा सकता है। आइये इन लक्षणोंपर जरा विस्तृतरूप से गौर करें।

चिड़ाचिड़ापन आमतौरपर अधिक श्रमसे उत्पन्न हुए थकावटसे पैदा होती है। अतः इससे बचनेके लिये प्रत्येक वृद्धजनको ऐसे कामोंको हाथमें न लेना चाहिये जिसमें अधिक देरतक श्रम करना पड़े—या फिर उन्हें इस बातका प्रबंध कर लेना चाहिये कि तीन चार घण्टेके श्रमके उपरांत वे आध घण्टे अवश्य विश्राम कर सकें। नींदकी कमीसे भी चिड़ाचिड़ापन उत्पन्न हो सकता है अतः वृद्धजनोंको ऐसे अवसरोंसे सदैव बचना चाहिये जब कि उनकी निद्रामें बाधा पहुंचनेकी आशंका हो।

विस्मृतिका मूल कारण है भूलनेवाली बातोंके प्रति दिलचस्पी की कमी। प्रायः देखा जाता है कि वृद्ध पुरुष कल परसोंकी बातें सहज ही भूल जाता है किंतु बीस बरस पहलेकी घटनाकी याद उसी व्यक्तिके मस्तिष्कमें बिलकुल ताजी बनी रहती है। इसका कारण यह है कि वृद्ध मनुष्योंके मनमें अतीतकी स्मृतिका मोह होता है उस युगको वे जल्दी भूलना नहीं चाहते जब अपनी आसपास की दुनियामें उन्हें एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। काश ये लोग कभी महसूस कर पाते कि उनके बीते दिनोंकी स्मृतिकी पुनरावृत्ति ही, जिनसे उन्हें सबसे अधिक सुख और शांति मिलती है, दूसरोंकी दृष्टिमें उन्हें अप्रिय बनानेका सबसे बड़ा कारण है। बुढ्ढे बाबा गदरके दिनोंकी बातें जब मनोयोग पूर्वक धीरे धीरे सुनाने लग जाते

हैं तो उस समय उ हें यह ख्याल नहीं होता है कि उन्हीं घटनाओंका विवरण वह बीसियों बार पहले ही सुन चुके हैं। घरके अन्य लोग ऊबकर मन ही मन प्रार्थना करने लग जाते हैं कि इनकी बकवाद अब बंद हो तो छुट्टी मिले।

इस खामीसे बचनेके लिये प्रत्येक वृद्धजनको यह नियम बना लेना चाहिये कि निष्प्रयोज ही वह अपने अतीत की घटनाओंका हाल लोगोंको न सुनाया करेगा। इस सुनहले नियमका पालन करके वह नयी पीढ़ीके लोगोंके बीच अप्रिय बननेसे सहज ही अपनेको बचा सकेगा। परिवर्तनके प्रति विरोधकी भावनाका भी मूलस्रोत अतीतके प्रति प्रगाढ़ मोहमें निहित है। अतः अतीतका ठीक ठीक मूल्याङ्कन करनेमें वृद्ध व्यक्ति यदि सफलता हासिल कर लेता है तब परिवर्त्तनसे वह घबड़ायगा नहीं। अपनी इच्छा शक्तिके जोर से उसे अपने अन्तः मनको यह स्वीकार कराना होगा कि सभी परिवर्तन बुरे नहीं होते और न परम्परासे चली आने वाली सभी चीजें निर्दोष।

आत्म विश्वासकी कमीका प्रधान कारण है बेकारी। कुटुम्ब या समाजके प्रबन्धमें उनका विशेष योग न होनेके कारण उनके मनमें यह बात बैठ जाती है कि मौजूदा युगको उनकी जरूरत नहीं है, वे मानों उस मशीन जैसे हैं जिसके पुर्जे घिस घिसा कर बेकार हो चुके हैं। निस्सन्देह यही हीन भावना उनके आत्म विश्वास को शेष जीवनके लिये डिगा देती है। किंतु वृद्धावस्थाके इस दयनीय लक्षणको अनिवार्य समझ लेना भी ठीक नहीं है। सरकारी नौकरीमें ५५ या ६० वर्षकी आयु प्राप्त करने पर लोगोंको अवकाश लेना ही पड़ता है किंतु व्यवसाय, डाक्टरी या वकालतके पेशेमें कोई मजबूरी नहीं कि इतनी जल्दी पेशेको छोड़ कर अवकाश ग्रहण कर लें। हमारे देशमें दुर्भाग्यवश जहां ५० वर्षकी अवस्था हुई कि मित्रगण बार बार सुझाने लग जाते हैं 'कि जीविका उपार्जनके झंझटसे अब तुम्हें अवकाश ले लेना चाहिये लोककी अपेक्षा परलोक की चिन्ता तुम्हें अधिक करनी चाहिये"

जिन्दगीके संघर्षसे पलायन करनेकी मनोवृत्तिको अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिये—और इस समय तो स्वाधीन भारतके नवनिर्माणके लिये अनेक योजनायें कार्यान्वित की जा रही हैं आप भी सहज ही इन योजनाओंको सफल बनानेमें योग दे सकते हैं। इस प्रकार वृद्धावस्थाकी नीरसतासे आपको छुटकारा मिलेगा, साथ ही राष्ट्रकी सेवा करनेका सन्तोष भी आप हासिल कर सकेंगे।

—०—

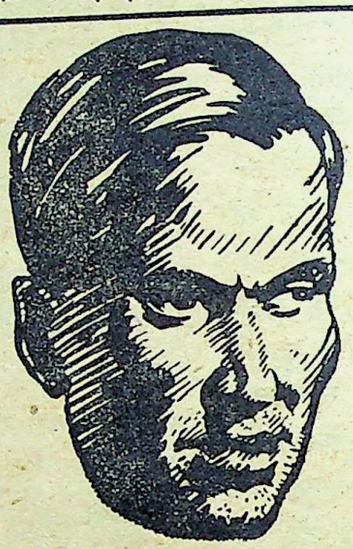

नाई को क्यों देते हैं ?

हफ्ते में छः आने तक नाई को क्या ऐसा दिखने के लिये देते हैं? यदि आप सप्ताह में सिर्फ तीन बार ही हजामत बनाते हों तो यह निश्चित है कि सात दिनों में से चार दिन आपकी दाढ़ी खुरदरी रहेगी।

...जब "सेविन ओ'क्लाक" से हजामत बनाना पैसे की बचत करना है।

जब आप प्रतिदिन स्वयं "सेविन ओ'क्लाक" ब्लेडों से हजामत बनाते हैं तो आप पांच ब्लेड के एक पैकेट के छः आने देते हैं, लेकिन वे इतने तेज़ होते हैं कि हफ्तों तक आप उनसे सफाई के साथ हजामत बना सकते हैं।

"सेविन ओ'क्लाक" ब्लेड बाजार में सर्वश्रेष्ठ हैं। वे सर्वोत्तम इस्पात के बने होते हैं और अतिरिक्त तेज़ी के लिये तीन स्तरों में बनाये जाते हैं।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

7 o'clock

SLOTTED BLADES

"सेविन ओ'क्लाक" ब्लेडस्

ब्लेड जो ज़्यादा हजामत और कम खर्चा देते हैं

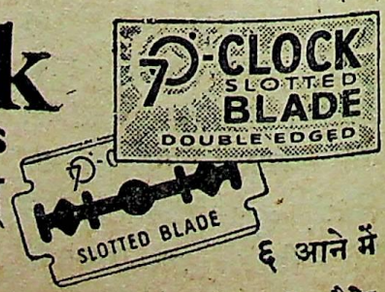

६ आने में ५ का प्रत्येक पैकेट

रियासतोंमें उत्तरदायी शासनके लिये संघर्ष

देशमें छोटी-छोटी सामंती रियासतों की कमी नहीं है। प्रत्येक रियासतका शासक अपनी प्रजा पर मनमाने अत्याचार करता है और उसकी गाढ़ी कमाईसे दुनिय में प्राप्य सारी न्यामतें भोगता है। कुछ रियासतोंकी जनताकी जिन्दगी तो पशुओंसे बदतर है। न वहां शिक्षा है और न वहां चिकित्सा आदि की व्यवस्था ही है। मनुष्य अन्धेरेमें पैदा होता है और उसी अन्धेरेमें घुट-घटकर मर जाता है। कृषि और उद्योग - धन्धोंके विकासकी बातें तो शराबी-कबाबी नरेशोंके दिमागके बाहरकी बात है। वहांका दीन हीन किसान 'भगवान भरोसे' पर जो कुछ पैदा करता है उसको भी तरह तरहके कर, नजारानोंमें वसूल कर लिया जाता है कि उस बेचारेके पास एक वक्तके खानेका भी ठिकाना नहीं रहता। इधर कुछ पूंजीपतियोंने रियासतों में उद्योग-धन्धोंका प्रसार किया है। लेकिन रियासती राजनीतिसे दिलचस्पी रखने वाले जानते हैं कि इससे वहांकी जनताको कोई विशेष लाभ नहीं बल्कि उद्योगपतियों का ही अधिक लाभ है। वहां श्रम सस्ता है और कई तरहके करोंसे बचत होती है। इसीलिये उद्योगपतियोंने रियासतोंमें अपनी टांगे अड़ाई हैं। अब तक भारत गुलाम था और यहां अंग्रेजोंका शासन था। लिहाजा रियासतोंकी जनताको दुहरी गुलामीका बोझ ढोना पड़ता था। लेकिन गत १५ अगस्तसे भारत स्वतन्त्र हो गया है और देशमें एक नयी स्थिति उत्पन्न हुई है। लेकिन रियासतोंकी जनताका बोझ थोड़ा हल्का अवश्य हुआ है, उसके सिर पर अब भी स्वेच्छाचारी शासकोंका बोझ लदा है। पर उसकी मियाद अब खत्म होने वाली है।

रियासतोंकी जनता अब पहलेसे अधिक जाग्रत है और सामन्ती शासनका खात्मा करनेके लिये कटिबद्ध है। राजपूताना सामन्ती शासनका मजबूत गढ़ है। अभी अभी लोक परिषदकी राजपूताना प्रादेशिक कौंसिलकी बैठक हुई थी जिसमें राजपूतानाकी रियासतोंकी राजनीतिक स्थिति पर विचार किया गया। कौंसिल में स्वीकृत प्रस्तावमें राजाओंको चेतावनी दी गयी कि यदि वे लोग अपने राज्योंमें अतिशीघ्र उत्तरदायी सरकार नहीं स्थापित करते तो कौंसिल उन राज्योंकी जनताको निर्देश देगी कि वे अपनी मांगों की पूर्तिके लिये आवश्यक कार्रवाई करें। इसी प्रकारकी चेतावनी रियासतोंको गवर्नर जेनरल लार्ड माउण्ट बैटनने दी है। गत सप्ताह दिल्लीमें ७० से अधिक छोटी रियासतोंके प्रतिनिधियोंकी एक बैठक हुई थी जिसमें लार्ड माउण्ट बैटनने नरेशोंको यह सलाह दी है कि वे अपनी रियासतोंमें अविलम्ब ही सुधारोंकी घोषणा करें जिससे प्रजा वास्तविक शासक बन सके। गवर्नर जेनरलने साफ-साफ कहा है कि यूरोपमें वे ही नरेश रह सके जिन्होंने अपनी जनताको सत्ता सौंपना स्वीकार किया। पडौसी प्रान्तों तथा बड़ी रियासतोंमें छोटी रियासतोंको मिलनेसे जो शासन सम्बन्धी लाभ होंगे उन पर लार्ड माउण्ट बैटनने जोर दिया है। इस सिलसिलेमें यह जिक्र कर देना आवश्यक है कि उड़ीसा, और छत्तीसगढ़की रियासतें अपने पडौसी प्रान्तोंसे मिल गयीं हैं। राजपूताना, बम्बई तथा बुन्देलखण्डकी रियासतें भी बड़ी इकाइयोंसे मिल जायगी ऐसी चर्चा चल रही है।

विभिन्न रियासतोंमें संघर्ष—

मयूरभंज राज्यमें लोकप्रिय उत्तरदायी सरकार कायम हो गयी है। महाराजने नवगठित सरकारके हाथमें सब अधिकार सौंप दिये हैं। प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू और राष्ट्रपति डा० राजेंद्रप्रसादने इसके लिये महाराजको बधाई दी है और लोकप्रिय सरकारको शुभकामनाएं भेजी हैं। झाबुआ नरेश एवं लोकपरिषदके बीच राज्यमें उत्तरदायी शासन कायम करनेकी बातचीत असफल हो जानेपर परिषद कार्यकारिणीने राज्य एवं नरेशको शीघ्र उत्तरदायी शासन के उद्देश्यसे अंतरिमसरकार कायम करने का अल्टीमेटम दिया है। राज पिप्पलीमें अंतरिम सरकार जिसमें ३ लोकप्रिय मंत्री हैं, स्थापित हो गयी है। युवराज उसके अध्यक्ष बनाये गये हैं। मध्य भारत की रियासत में ग्वालियर प्रमुख रियासत है। वहां शासक और स्टेट कांग्रेसके बीच उत्तरदायी सरकारके गठन लेकर काफी मतभेद पैदा हो गया है। अभी वहां डा० राममनोहर लोहिया गये थे उन्होंने शासकको चेतावनी दी है कि ग्वालियरमें शीघ्र लोकप्रिय सरकार कायम की जाय। ग्वालिय नरेश तरह तरहकी चालें चल कर जनमतकी उपेक्षा करनेका प्रयास कर रहे हैं। अगर नरेशने ऐसा ही रवैया रखा तो वहां शीघ्र ही सत्याग्रह छिड़ जायगा। उपप्रधान मंत्री सरदार पटेलने भावनगरमें जाकर उत्तरदायी शासन स्थापित करनेकी घोषणा करवाई है। महाराजा बड़ौदाने गत ६ जनवरीको जिन सुधारोंकी घोषणा की थी उन्हें राज्य प्रजामण्डलकी कार्यसमितिने गम्भीरतापूर्वक विचारकर अस्वीकार कर दिया है। प्रजामण्डलका कथन है कि इन सुधारोंसे राज्यमें उत्तरदायी शासनकी स्थापना नहीं होती है। बीकानेर राजपूतानाकी रियासते में सबसे अधिक पिछड़ी हुई रियासत हैं।

वहां आज भी भांति भांतिके अत्याचार जारी है। प्रजामण्डलकी मांगके अनुसार अभी तक लोकप्रिय उत्तरदायी शासन वहां कायम नहीं हुआ है। आज कल गवर्नर जेनरल लार्ड और लेडी माउण्ट बैटन वहां पहुंचे हैं। बीकानेरके नरेश सर्वोच्चसत्ता अपने हाथमें रखने के लिये बड़ी कूटनीतिसे चल रहे हैं और जनताकी मांगोंको ठुकराते जा रहे हैं।

टिहरीराज्यमें कुछ दिनोंमें पहले जनसेवक श्रीसुमनकी हत्या की गयी थी। तबसे वहां के नरेश बराबर जन आंदोलनको कुचलते आये हैं। लेकिन जन आंदोलनको बड़ीसे बड़ी सत्ता जब नहीं दबा सकती हैं, तो टिहरी राज्यकी क्या हस्ती है। आजकल वहां लोकप्रिय उत्तरदायी सरकार कायम करनेके लिये जोरदार आंदोलन चल रहा है। ओरछा राज्य बुन्देलखण्डमें अपनी खास अहमियत रखता है।

थोड़े दिन पहले वहां किसान नेता श्री खेरको मार कर जंगलमें फेंक दिया गया और जनताके आन्दोलनको इस भांति दबानेकी कोशिश की गयी। अब वहांके शासक बुंदेलखंड प्रांत बनाने का नया नारा लगा कर वहांकी जनताको बरगलाना चाह रहे हैं। दतिया छोटी पर, बड़ी प्रतिक्रियाशील रियासत है। लेकिन जनआंदोलनका मकाबला न कर सकने पर वहांके शासक अब जनताके सहयोगकी बातें कहने लगे हैं। लेकिन अभी तक वहां उत्तरदायी शासन नहीं कायम किया गया है। समस्त घटनाओंसे स्पष्ट है कि रियासतोंकी जनता अब जाग्रत हो गयी है। अतः उसको कोई शक्ति नहीं दबा सकती है। महात्मा गांधी के शब्दोंमें अब राजाओंका इसीमें हित है कि वे प्रजाके सच्चे सेवक बनें।

हैदराबादका विश्वास घात

हैदराबादने पाकिस्तानको २५ करोड़ रुपया कर्ज देकर भारतके साथ जो विश्वासघात किया है, उससे एक भयंकर स्थिति उत्पन्न हो गयी है। इस सिलसिले में लाहौरसे लौटकर प्रधान मंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरूने सरदार पटेल तथा श्री षण्मुखम चेट्टीसे विचार विमर्श किया है। नेताओंने ऐसा निर्णय किया बताया जाता है कि उसके परिणामस्वरूप निजाम की हरकतोंको बंद कर दिया जायगा। दिल्लीके राजनीतिक क्षेत्रोंमें जैसा विचार किया जा रहा है, उससे स्पष्ट है कि हैदराबादकी इस कार्रवाईसे अब भारत सरकार सिकन्दराबादसे अपनी सेनाएं नहीं हटायेगी। साथ ही हैदराबादकी आयात और निर्यातपर नियंत्रण किया जायगा और इस बातका पूरा ध्यान रखा जायगा कि हैदराबादके फासिस्ट शासक भारतीय संघके हितोंको कोई हानि न पहुंचाये। हैदराबादने पाकिस्तानको कर्ज देकर भारतके साथ हुए समझौतेको भंग किया है। साथ ही उसके इस कामसे भारत पर आक्रमण करनेकी पाकिस्तानकी ताकत को बढ़ाया है। हैदराबादमें आज नादिर शाहीका राज है। करबंदीका आंदोलन प्रारम्भ हो गया है। सत्याग्रह प्रारम्भ होने के बादसे ३०० व्यक्ति मारे और १०, ००० कैद किये जा चुके हैं। रिजवी अपने पथपर दृढ़तासे चल रहा है और हैदराबादको भारतीय संघसे अलग एक स्वाधीन राज्य बनानेकी आवश्यक तैयारी कर रहा है। हैदराबादमें जैसी सामरिक तैयारियां हो रही हैं उनको देखते हुए मालूम होता है कि हैदराबाद भारतके चिन्ताका एक बड़ा कारण बन गया है। हैदराबाद राज्य कांग्रेसके अध्यक्ष स्वामी रामानंद तीर्थके वक्तव्यसे स्पष्ट है कि हैदराबादमें कभी भी अग्नि प्रज्वलित हो सकती है।

काश्मीर और राष्ट्र संघ

काश्मीरकी समस्या संयुक्त राष्ट्र संघ के समक्ष उपस्थित है। शेख अब्दुल्ला एवं भारत एवं पाकिस्तानके अन्य प्रतिनिधि अपने अपने पक्षका समर्थन करनेके लिये न्यूयार्क पहुंच गये हैं। काश्मीरपर आक्रमण कर काश्मीरी नर नारियों एवं निरीह बच्चोंकी हत्या करनेवालोंका सरदार भी शीघ्र ही न्यूयार्क पहुंचने वाला है। राष्ट्र संघ काश्मीरकी समस्याका क्या समाधान करेगा, यह तो अभी नहींकहा जा सकता। लेकिन अभीसे तरह तरहके अनुमान लगाये जा रहे हैं। विदेशोंसे जो समाचार प्राप्त हुए हैं उनसे पता चला है कि अमेरिका और ब्रिटेनके राजनीतिज्ञ इस बात की ओर आकर्षित होते जा रहे हैंकि मित्र-राष्ट्र संघको फिलिस्तीनकी भांति काश्मीर में भी एक कमीशन भेजना चाहिये। जो वहां संधि करानेका प्रयत्न करे और काश्मीरी जनताको अपना भविष्य अपने आप तय करनेका अवसर दें। दिल्लीके राजनीतिक क्षेत्र राष्ट्र संघके इस तरहके निर्णयको पसंद नहीं करेंगे। अगर वहां यूनानकी शिकायतकी भांति देरकी जायगी तो भारत अपनी शिकायत वापस लेलेगा। यूनानने १९४६ में शिकायतकी थी लेकिन अभीतक उसका फैसला नहीं हुआ है। एक खबर मिली है जिससे पता चला है कि अरब लीगकी काश्मीर समस्याके समाधानके विचार कर रही है। अरब लीगकी ओरसे भारत और पाकिस्तानसे समस्या समाधानका प्रस्ताव किया जाने वाला है।

महात्माजी उपवास कर रहे हैं

(१३ वें पृष्ठ का शेषांश)

अपने कर्त्तव्यके स्थान पर रह कर पहलेकी अपेक्षा अब और अधिक अध्यवसाय और सुंदरताके साथ उसका पालन करके ही मझे और मेरे उद्देश्य को हर तरह कहायता पहुंचायी जा सकती है। उपवास आत्मशुद्धिका एक क्रम है।

कितनी वेदना व्यथा और पीड़ा है गांधीजीकी इस वाणीमें किन्तु वे वीर पुरुष हैं, महान आत्मा हैं। आज मदोन्मत्त भारतकी उनकी आवश्यकता नहीं रह गयी क्योंकि उसके रास्तेमें जितने कांटे थे, जितनी बिघ्न-बाधाएं थी उनको गांधीजीने अपने त्याग और तपस्या द्वारा दूर कर दिया अब भारतको उनकी आवश्यकता नहीं रह गयी। अब तो प्राप्त शक्ति और सत्ताको मनमाने ढंग से उपयोग करनेके मार्गमें गांधीजी ही उनके लिये सबसे बड़े रोड़े मालूम दे रहे हैं। पूंजीवादी फासिस्ट समाजकी यह चुनौती वीर पुरुष के हृदयको जहां तक सम्भव था व्यथा और वेदना पहुंचा चुकी किन्तु उसकी आत्माको वह छू नहीं सकती। इस उपवास द्वारा वे देखना चाहते हैं कि उनकी शक्ति और पवित्रतामें पूंजीवादी समाजकी दुरभिलाषाको ध्वस्त करनेकी ताकत है या नहीं। यदि नहीं है तो इस मिट्टीके ढेर रूपी शरीरको रख करके क्या करेंगे। धराधामके भार बन कर रहना वीर पुरुष कभी पसन्द नहीं करता। अतः गांधीजी का यह उपवास समाजकी मदोन्मत्तताको चुनौती है, उसके पापोंका प्रायश्चित्त है और भगवानके निकट प्रार्थना है कि वह इन गुमराह स्वार्थके पुतलोंको सीधे रास्ते पर ला दे।

—०—

अणु बमका युग पीछे पड़ गया

—:**:—

लेखक—श्री सव्यसाची

इस शताब्दीमें दोनों विश्व युद्ध आने वाले युद्धोंका अन्त करनेके लिये लड़े गये, पर अभी तक युद्धोंका अन्त समीप नहीं दिखायी देता। पहला विश्व युद्ध १९१४-१८ में लड़ा गया था। २१ वर्ष बाद दूसरा युद्ध प्रायः उन्हीं बातों के लिये हुआ जिनके लिये पहला लड़ा गया था। लेकिन दोनों युद्धोंके बीचमें २१ सालका अन्तर पड़ा यद्यपि सीमित अंचलों और प्रदेशोंमें इस दौरानमें अफ्रीका, एशिया और यूरोपमें लड़ाइयों का सिलसिला चलता ही रहा। पर इस बारकी स्थिति इससे भिन्न है। सीमित दायेरके भीतर लड़ाइयोंका सिलसिला तो बराबर जारी रहा ही तीसरे विश्व युद्धकी चर्चा प्रायः दूसरेकी समाप्तिके साथ ही आरम्भ हो गयी। अभी तीन वर्ष भी नहीं बीते और महा शक्तियोंके बीचमें परस्पर मनोमालिन्य और दुर्भाव इतना अधिक बढ़ गया है कि वाशिंगटन्, मास्को और लन्दन एवं अन्यत्र भी तीसरे महा-युद्धकी खुले आम चर्चा चल रही है।

युद्ध क्यों होते हैं ?

ऐसा समझा जाता है कि साधारणतया किसी राज्यके प्रधान या अधिकारारुढ़ दलकी बहक, उच्चाभिलाषा अथवा उसकी दुस्साहसी प्रवृत्तिकी प्रचण्डता और आत-तायी मनको सन्तुष्ट करनेके लिये युद्ध लड़े जाते हैं। इसके साथ साथ युद्धोंकी संभावनाको सत्य करनेके और भी कई कारण हैं। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और भौगोलिक परिस्थितियां युद्ध की स्थिति उत्पन्न करनेमें किसी देशके शासककी दुरा कांक्षाओं की कम सहायक नहीं होतीं। यह बात सही है कि देशका शक्तिशाली शासक यदि चाहे तो जिन परिस्थितियोंसे वह युद्ध-स्थिति सम्भव करनेमें काम लेता है उनसे शांति स्थापन का काम भी ले सकता है। युद्धकी राज-नीति और शांतिकी राजनीतिके लिये दो भिन्न प्रकारकी परिस्थितियों और हालतों, प्रसंगों और वातावरणकी आव-श्यकता नहीं होती। जर्मनीके धुरंधर राजनेता फ्रेडरिक महानने कहा है कि "सभी संभव साधनोंसे राज्यकी सेवा करनेकी कलाका नाम राजनीति है।" जर्मनीके चाणक्य प्रिंस बिसमार्क कहते हैं कि 'सम्भव कर दिखानेकी कलाका नाम राजनीति है।" इस कथनसे उनका तात्पर्य यह है कि राज्यकी सेवा करनेके लिये प्रत्येक संभावनासे लाभ उठाया जाना चाहिये। दरअसल संसार आज इसी नीति पर चल रहा है। नैतिक है या अनै-तिक यह प्रश्न तो परिणाम सामने आ जानेके बाद उठता है और विजय घोरसे घोर अनैतिकताको नैतिकताका रूप दे देती है। अधुना राज्यके सूत्रधारके सामने एक ही लक्ष्य और एक ही उद्देश्य रहता है —राज्यके भीतरी और विदेशी स्वार्थों की रक्षा करनेकी ज्वालन्त अभिलाषा। यही अभिलाषा परस्पर स्वार्थोंकी प्रति-स्पर्द्धाके फलस्वरूप धीरे धीरे युद्धका रूप धारण करती रहती है और अन्तमें एक दिन,-वह कितना ही अवांछनीय, अमान-वीय क्यों न कहा जाता हो-सम्पूर्ण राष्ट्र मन वचन कर्मसे उसका स्वागत करता है।

तैयारी आरम्भ हो गयी

प्रायः सभी राष्ट्र एक मामलेमें एक ही रवैय्या और तौर तरीका अख्तियार करते हैं और वह है युद्धकी तैयारीका कारण बताना। सभी कहते हैं कि हम अपनी रक्षाके लिये, आने वाले युद्धसे राष्ट्रके धन-जन और सम्पत्तिकी रक्षाके लिये हम तैयार हो रहे हैं अस्त्र शस्त्रों सुसज्जित हो रहे हैं और नये वैज्ञानिक साधनोंका अविष्कार किया जा रहा है। आज तक यह किसी राष्ट्रको कहते नहीं सुना गया कि अयुक देश पर आक्रमणकी तैयारी की जा रही है। अभी उसी दिन ब्रिटिश सरकारने देशके सामने अपनी रक्षा योजना उपस्थित की है और बताया है कि अणु बमके युगका सामना करनेके लिये प्रत्येक नर नारी, बालक और बालिकाको नागरिक रक्षाकी कला सीख लेनी चाहिये।

इस बार युद्ध आरम्भ हुआ तो उसका परिणाम कहां तक मानव जाति सभ्यता और संस्कृतिका विनाशक हो सकता है यह सभी जानते हैं। वे स्वयं न समझते हों यह बात नहीं है, फिर भी शान्तिका प्रव-चन करने वालोंकी चेतावनियां भी उनको मिलती रहती हैं, किन्तु ये चेतावनियां युद्ध की ओर ले जाने वाले घटना-चक्रको अधिक प्रभावित करती हैं, ऐसा नहीं समझा जाता।

अभी उस दिन वर्मिंघममें पादड़ियों के सम्मेलनमें भाषण करते हुए बिशप वारनेसने कहा "यदि इंगलैंड महा युद्धमें लिप्त हुआ तो इस भूमि पर अणु बमोंकी वर्षा होगी, यह निश्चित समझना चाहिये। परिणाम घातक होगा, यह कहनेकी आव-श्यकता नहीं है। धर्मयाजकका कर्त्तव्य है कि वह अन्तर्राष्ट्रीय कटुता बढ़ाने लायक कुछ न कहे। दूसरे राष्ट्रोंका विचार करना हमारा काम नहीं है। यह दुर्भाग्य की बात है कि अमेरिकन समाचार पत्र और अमेरिकन बेतार जगत (रेडिया) रूसकी निन्दासे परिपूर्ण हैं। हमें इंग-लैण्डमें असत आदर्श से दूर रहना चाहिये। आप कहेंगे कि रूस ही तो सन्देह और कुछ दुरभिसंधिपूर्ण भ्रान्ति फैलाता है। इस देशको धैर्य से काम लेना

चाहिये। जब यह स्पष्ट हो जायेगा कि हमारी विश्वनीति स्वार्थसे प्रेरित नहीं है, हमें पूर्ण विश्वास है कि जो लोग आज हमपर सन्देह करते हैं अन्तमें हम उनका सम्मान और मैत्री जीत सकेंगे। हमें यह याद रखना चाहिये कि सबसे पहले इंगलैण्ड और अमेरिकाने मिलकर ही इस तरहके विधातक अस्त्रका प्रयोग किया है जिसकी पहले कल्पना भी नहीं की गयी थी। अमेरिकन धर्माचार्योंने इस कार्यको निन्दनीय बताया किन्तु ब्रिटिश धर्माचार्योंने इसकी निन्दा करनेसे आस्वीकार किया। ईसाके भाव और आदर्शसे इस तरह हट जाने पर हम इससे अधिक कुछ नहीं कहेंगे कि हमें इस तरह की हीनता पर लज्जित होना चाहिये।"

हथियारोंका युग

किन्तु हम नहीं समझते कि विशप बारनेसके इस कथनका उनके अनुयायियों और सहयोगियोंपर कुछ भी असर पड़ेगा। यदि ऐसा सम्भव होता तो क्या आज महात्मा गांधीको अनिश्चितकालतक उपवास रख कर मौतको मौन निमंत्रण देनेको वाध्य होना पड़ता। यह युग सत्य और प्रेमके आदर्शोंका नहीं है। यह तो स्वार्थ, लिप्सा, मोह मत्सरका युग है और इनको चरितार्थ करनेके लिये मनुष्य अणुबमसे भी भयंकर शस्त्रास्त्रोंकी खोज और निर्माणमें लगा है। विज्ञान आज विनाशका सहायक है। विज्ञानने इस युगको हथियारोंका युग बना दिया है। आज मानवताके आदर्शोंकी नहीं विनाशके प्रचण्ड शस्त्रास्त्रोंकी प्रतियोगिता और प्रतिद्वंद्वितामें राष्ट्रोंके ज्ञान और विज्ञान, बुद्धि और प्रतिभाका परिचय संसारको दिया जा रहा है। युद्धकालमें अमेरिकन जल सेनाके एक उच्च पदस्थ अधिकारी एडमिरल एलिस जेकेरियाने 'यूनाइटेड नेशन्स वर्ल्ड' नामकी पत्रिकामें यह गंभीर घोषणा की है कि यदि तमाम अणुबम और उसके निर्माण की सुविधाएं कल नष्ट कर दी जायें तो भी इस तरहके शस्त्रास्त्र बन चुके हैं जो मानव, पशु और उद्भिद जीवनका नामो-निशान मिटा डालनेके लिये पर्याप्त हैं। इस अधिकारीका कहना है कि अणुबमका तो नाम ही नाम है, उससे इतने भयंकर और प्रचण्ड विनाशक साधनोंका निर्माण हो चुका है कि अणुबमका युग पीछे पड़ गया। यह तो 'पूर्ण ग्वांस्वाहा अस्त्र' का युग है।

एडमिरल एलिस कहते हैं कि कई महा-शक्तियोंके शस्त्रागारोंमें अणुसे अधिक विनाशकारी शस्त्रास्त्र और रसायनिक-तत्व एवं पदार्थ हैं। यह आनेवाली भयंकर विभीषिकाकी भविष्यवाणी नहीं है। ये अस्त्र मौजूद हैं। इनका निर्माण धड़ल्लेके साथ हो रहा है। और इस क्षेत्रमें केवल अमेरिकाका ही एकाधिकार हो, ऐसी बात भी नहीं है। कई राष्ट्रोंके पास इस तरहके अस्त्र हैं और वे इनकी भयंकरता बढ़ानेमें लगे हैं। और एक बात है, अणुबमका निर्माण सीमित साधनोंके अन्तर्गत सम्भव नहीं था, किंतु इन अस्त्रोंको तो सीमित औद्योगिक सुविधा सम्पन्न छोटे छोटे राष्ट्र भी बना सकते हैं।

एडमिरल एलिसके कथनमें कितना जोरदार सत्य है यह अमेरिकाके पार्लमेण्टके एक सदस्यने अति उत्साह और विवेक शून्यताका परिचय देते हुए उस दिन जिस रहस्यका उद्घाटन किया है उसे शायद संसारके भेदिया अमित धन या बुद्धि खर्च करके भी नहीं प्राप्त कर सकते थे। आपने कहा था कि 'हमारे राष्ट्रके अधिकारमें ऐसे-ऐसे वैज्ञानिक साधन हैं जिनसे हमारी स्थिति अजेय हो गयी है। हमारे अधिकारमें एक ऐसा जीवाणु अस्त्र है जिसकी विध्वंसक शक्ति अणुबमसे भी कहीं अधिक भयंकर है। आपने यह भी कहा था कि केलिफोर्निया विश्वविद्यालयकी रसायन और प्रयोगशालाओंमें अमेरिकन वैज्ञानिकोंने एक ऐसे अस्त्रकी सृष्टि की है जो बड़ेसे बड़े शहरके सब प्रकारके जीवनका अस्तित्व लोपकर सकता है। कुछ दिनों बाद कांग्रेसके सामने उपस्थित की गयी युद्ध-विभागकी रिपोर्टमें यह बताया गया कि यह नवीन अस्त्र सचमुच मध्य इण्डियानामें कहीं तैयार किया जा रहा है। एक सप्ताह बाद एक सुप्रसिद्ध अमेरिकन वैज्ञानिकने यह कहा कि अमेरिकाके अधिकारमें एक नहीं तीन गुप्त शस्त्र हैं।

बीजाणु विष प्रयोग

बीजाणु विष प्रयोगके अनुसंधानकी चर्चा पुरानी हो गयी है। जर्मनी और जापान तथा ब्रिटेन, अमेरिका और कनाडा मिलकर इनके निर्माणमें लगे हुए थे। कहते हैं कि एक इस प्रकारका बीजाणु विष तैयार किया गया है जिसके एक ही प्रयोगमें सत्तर लाख मनुष्योंको मौतकी गोदमें सुलाया जा सकता है। किन्तु यहीं इति नहीं हो गयी। इससे भी अधिक समर्थ और सशक्त संक्रामक पदार्थोंका आविष्कार किया गया है जो कोटि कोटि मनुष्योंको मार सकते हैं। बीजाणु विष प्रयोग मनुष्य, पशु और वृक्ष लतादिके विनाशके लिये इच्छानुसार किया जा सकता है। नवीनास्त्रोंके आविष्कारके सामने गत युद्धमें व्यवहृत शस्त्रास्त्र आज तीर धनुष की तरह निकम्मे हो गये हैं। नये अस्त्रोंका प्रभाव अत्यन्त व्यापक बताया जाता है। उनका मारात्मक गुण व्यवहारके बहुत दिनों तक रहेगा और राष्ट्रोंकी सीमाओंको लांघता हुआ आपसे आप बहुत दूर तक फैलता चला जायेगा। जिस जिस क्षेत्र तक इसका असर फैलेगा उसे प्रवेश निषिद्ध घोषित करके रखा जायेगा ताकि बाहरके आदमी वहां आकर उस विषके प्रभावमें न आ जायें। उसी तरह उस क्षेत्रके आदमियोंको भी बाहर नहीं जाने दिया जायेगा क्योंकि उनके संसर्गसे दूसरे भी संक्रान्त होंगे। एक बार जिस क्षेत्रमें इस विषका प्रयोग होगा यह जो संक्रान्त होगा एक हजार वर्ष तक वहां कोई-मनुष्य, पशु पक्षी या वृक्ष लतादि-जीवन धारण नहीं कर सकते। वह दिन देखा जा रहा है जब अन्तर्राष्ट्रीय सरहदों पर इस आशयके नोटिस लगे दिखायी देंगे 'एक हजार वर्ष तक संक्रामक विषसे बचावके लिये इस राज्यमें प्रवेश निषिद्ध—प्रवेशका अर्थ है मृत्यु।"

इसीसे कहा जाता है कि अणुबमका युग समाप्त हो गया पूर्ण ग्वांस्वाहा अस्त्रका युग आ रहा है।

ये दीवारें

कहानी

ले०—श्री विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त

अन्तर व्यथा भुलाये जा,
मीठे गीत गाये जा
रूखी सूखी डालों में,
फल नये खिलाये जा
पतझड़के हाथ बिक गयी,
कोमल कली बसंत की
जग-बनके तार-तार पर,
स्नेह सलिल बहाये जा
अन्धड़ तूफान आग हो,
साथ प्रलयका राग हो
बादल-सा घूम-घूम कर,
उजड़ा घर बसाये जा
जग-पथमें अंधकार है,
भग्न किरणका तार है
बदलीमें चांद-सा निकल,
ज्योति नयी दिखाये जा
पछीके प्राण खिल उठे,
अवरोध द्वार खुल पड़े
जलता जीवन मधुर बने,
गीत नवीन गाये जा....

निर्मल गुनगुना रहा है। रधिया उपवनमें प्रवेश करती है। उसकी दृष्टि 'निर्मल' पर पड़ती है—उसके ओठों पर प्रसन्नताकी एक रेखा खिच जाती है। निर्मल उसको नहीं देख पाता है। वह लुकती छिपती निर्मलके पीछे पहुंचती है और वृक्षकी ओटमें खड़ी हो जाती है। उसके अङ्ग-अङ्गसे चञ्चलता और प्रसन्नता प्रकट हो रही है।

'आक छीं'.....रधिया को छींक आती है।

निर्मल चौंक कर पीछेकी ओर देखता है और रधियाके सामने आ खड़ा होता है।

रधिया लज्जित भयभीत हिरनीकी तरह उसे देखती है—जैसे चोर चोरी करते समय सेंध पर पकड़ा गया हो।

'तुम....आप !'—

'जी...'

'आप कबसे खड़ी हैं ?'

'कुछ देर से।'—रधियाका सिर झुका हुआ है पूर्ववत।

'माफ कीजियेगा—मुझे आपकी उपस्थितिका ज्ञान नहीं था।'

'मैं इसके लिये शिकायत नहीं करती।'

'यह आपकी उदारता है।'—निर्मल जाते-जाते रुकता है और तुरंत जानेके लिये घूमता है।

'आप कुछ कहना चाहते हैं ?'—

'मैं...नहीं।'—प्रश्न सुनकर निर्मल चौंकता है। आगे बढ़ता है किंतु दो कदमके बाद ही रुक जाता है।

'....हां, जरा सुनिये तो !'

रधिया हौले-हौले उसके पास जाती है।

'आपका शुभनाम, मैं पूछ सकता हूं ?'

'जरूर ! जरूर !! मुझे लोग 'राधा' कहते हैं।'

'राधा ?'

'जी !'

'नमस्ते !'

'नमस्ते !'—रधिया दोनों हाथ जोड़ देती है। और जब तक निर्मल आंखोंसे ओझल नहीं हो जाता—वह उसे ठगी-ठगी-सी देखती रहती है।

o o o

अपने घरके कमरेमें रधियासे काफी प्रभावित निर्मल निद्रामग्न है। उसके मानस-पट पर रधियाके साक्षातका दृश्य खिंच जाता है:

'आप कुछ कहना चाहते हैं ?'

'मैं....नहीं।'-प्रश्न सुनकर निर्मल चौंकता है। आगे बढ़ता है किन्तु दो कदम के बाद ही रुक जाता है।.....

'हां, जरा सुनिये तो !'

रधिया हौले-हौले उसके पास जाती है।

'आपका शुभनाम, मैं पूछ सकता हूं?'

जरूर ! जरूर !! मुझे लोग 'राधा' कहते हैं।'

'राधा ?'

'जी !'

'नमस्ते !'

'नमस्ते !'—रधिया दोनों हाथ जोड़ देती है।'

सहसा निर्मलकी नींद टूट जाती है। मोहमें डूबा हुआ वह जम्भाइ लेता है। बेचैनीसे करवट बदल कर सामने शून्य की ओर देखता है।—आंखें खुली हैं किंतु मन कहीं सुदूरमें भ्रमण कर रहा है।

o o o

रधिया अपनी झोंपड़ीमें अपनी मांके निकट एक चरपाई पर सो रही है। निर्मल के प्रति प्रेमसे परिपूर्ण उसका मन कल्पना की सुनहली दुनियामें विचरण कर रहा है: "स्वर्गसे सुन्दर ब्रजमण्डलमें जहां मोर नाच रहे हैं, प्रेमी कपोतोंकी जोड़ी प्रेमालाप निमग्न है, ब्रजमोहन निर्मलके पास वह राधाके रूपमें खड़ी है। निर्मल बांसुरी बजा रहा है और ब्रजांगना ग्वालोंके साथ मुग्ध हो कर नृत्यके साथ संगीत कलाका प्रदर्शन कर रही हैं। सभीके पास झोलीमें अबीर भरा है और पासमें रंगसे भरी बाल्टी पिचकारी रखी है जिसे सब इच्छानुसार काम लेते हैं।..."

रधियाकी नींद टूट जाती है। वह आंखें मलते उठ बैठती है। मांको देखती है—वह निद्रामग्न है। हौले-हौले वह खिड़कीके पास जाकर बाहरकी ओर देखती है, पास खड़ा बूढ़ा बरगदका पेड़ जो अंधकारमें एक विशाल दैत्यकी तरह लगता था, चांदको हृदयमें छुपाये मनलुभावना दिखाई देता है। वह मोह भरी आंखोंसे उसे एकटक देखती रह जाती है।

दूसरे दिन रूपका भंडार लिये रधिया उपवनमें पहुंचती है किन्तु निर्मल उसे दिखाई नहीं देता है। वह निराशासे टकराने लगती है :

मेरे नयनों के पावस में,
कोई सपने सा छाये क्यों
मेरे दिल के सूनेपन में,
कोइ चुपके से आये क्यों
मैं आंसू की हूं बूंद हाय,
भू पर चूकर मिटने वाली
जग में जिसका कुछ मोल नहीं,
मैं मिट्टी की टूटी प्याली
तब मेरी जीवन-रातों में,
कोई चंदा मुस्काये क्यों
मैं एक कली हूं जग-वन की,
पर मिलने का अधिकार नहीं
घुल-घुल जल-जल मुरझा जाऊं,
पर मिल न सकेगा प्यार कहीं
कोई रसिया प्रेमी भौंरा,
तब मीठे गीत सुनाये क्यों

मंदिरका पुजारी पण्डित हीरानंद जिसके सिर पर पण्डितनुमा गोल टोपी और शरीर पर मिरजई शोभा दे रही है, बगलमें 'पत्रा' दबाये आता है। रधियाको विस्मयसे आंखें फाड़-फाड़ कर देखता है।

"राधाकृष्ण! राधाकृष्ण! मेनका और रंभासे भी अधिक सुन्दर तुम कौन हो सुन्दरी? इस निर्जन स्थानमें वियोगिनीकी तरह किस निष्ठुर प्रेमीकी प्रतीक्षा कर रही हो?"—पण्डितकी आंखोंमें वासना झांक रही है।

"पण्डितजी!"—रधियाके मुख पर भयकी रेखाएं खिंच जाती हैं।

'हां, लोग मुझे पण्डित' कह कर ही पुकारते हैं। दस मीलके भीतर कौन ऐसा है जिसने महापण्डित हीरानंद पुजारीका नाम नहीं सुना होगा"—पंडित अलगबगल किसीको न देख संतोषकी सांस लेता है।

केवल दो लोटा भंग पीकर निकला था किंतु परमात्माकी सोगंध खिला लो, तुम्हारी मादक आंखोंने मुझे मतवाला बना दिया।"—पंडित रधियाकी ओर बढ़ता है।

'उसे नहीं रूक जाओ! सचमानो! तुम्हारे कोमल शरीरको छूत ही मेरे मन प्राण शीतल हो जायंगे!"

'पंडितजी! मैं अछूत हूं।"—रधिया पीछेकी ओर हटती है। कोई परवाह नहीं। कींचमें उत्प न होकर भी कमल देवताके शीश पर चढ़ता है।"—पंडित मूंछों पर हाथ फेरता है। "आप मेरे पिताके समान हैं।"

एक अछूत लड़कीका पिता महापंडित हीरानंद? राधाकृष्ण! राधाकृष्ण! सामने आते हुए निर्मल पर उसकी नजर पड़ती है। वह संभल जाता है।

जीती रहो! जीती रहो! भगवान तुम्हारा जीवन आनन्दसे कटने दें! राधाकृष्ण! राधाकृष्ण!"—कभी रधिया और कभी 'निर्मल' को घूरते हुए चला जाता है।

विचारोंकी आंधीमें लड़खड़ाता निर्मल रधियाके पास पहुंचता है किन्तु संकोचवश उसको कुछ कह नहीं पाता। रधिया उसके चेहरेके उतार-चढ़ावको ध्यानसे देखती है!

कुछ आगे बढ़ने पर निर्मल पीछेकी ओर देखता है और चौंक कर रुक जाता है। रधिया उसके अत्यन्त निकट है।

'आप कुछ कहना चाहती हैं?'—निर्मल पूछता है।

जी।'—रधियाके ओठोंपर मुस्कुराहट की रेखा खिंच जाती हैं।

'कहिये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?'

'मैं जो पूछूंगी—आप उस प्रश्नका सही-सही उत्तर देनेकी तकलीफ करें—प्रार्थना है।'

'आप विश्वास रखें! ऐसा ही होगा।'

'आप मुझसे कुछ कहना चाहते हैं किन्तु कह नहीं पाते।'

'यह आपसे किसने कहा?'

'आपके चेहरेके भावों ने।'

'जी!'

'जी!'

'आप बहुत बुद्धिमान हैं। मेरे दिलकी बातें आपसे छिपी न होंगी।'

'मैं अन्तर्यामी नहीं हूं।'

किन्तु आंखोंकी भाषा तो अवश्य पढ़ सकती हैं।'

'मैं पहेली, नहीं समझती। आप स्पष्ट बतलानेका कष्ट करें!'

—रधिया लज्जाके मारसे दबकर तिरछी नजरोंसे देखने लगती हैं।

'तनिक धैर्य्यसे काम लीजिले!'

'मेरी प्रार्थना न ठुकराइये!'

'मैं निष्ठुर नहीं। आज आधी रात तक सब्र करें!'

० ० ०

उस रात को।

रधिया अपनी झोपड़ीमें बेचैनसे करवटें बदल रही है। सहसा उसके कानोंमें निर्मलकी आवाज पड़ती है। वह चञ्चल हो जाती है। उसकी मां नींदमें बेसुध है। वह चोरी चोरी घरसे निकल कर बरगद के पेड़के नीचे पहुंचती है। कुछ दूरपर झाड़ियोंकी ओटसे निर्मलकी आवाज आ रही है:

गीत

निर्मल०—जीवन-पथकी अंधिआली में, चांदनी बन प्रिय, आओ!
तेरे दिल में पीर न होती
क्या नयनों के नीर न खोती
युग युगसे प्यासे जीवन की, तत्क्षण प्यास बुझाओ!

सशंकित रधिया०—
साथ हमारा छूट न जाये
मीठे सपने टूट न जाये
राह नहीं कांटों से खाली, साथी! तुम रुक जाओ!

निर्मल०—
चलना ही है फिर रुकना क्या
बाधाओं का मुंह तकना क्या
कांटे हैं मगमें तो भय क्या, हंस-हंस फूल खिलाओ!

निर्मलकी ओर बढ़ती हुई रधिया०—
न्योछावर तुझ पर जीवन धन!
तन मन मेरा चञ्चल यौवन

ज्वाला में सावन पावन बन, जीवन मधुर बनाओ !

दोनों०—

जन्म मरण का सौदा कर लें
जान हथेली पर हम धर लें
तोड़ो बन्धन, पंछी बनकर, मन के गीत सुनाओ !

० ० ०

रधिया की मां की नींद टूटती है। पासमें रधियाको न देखकर वह उठ बैठती है।

'रधिया ! रधिया !'—वह कई बार पुकारती है किन्तु उसे कोई उत्तर नहीं मिलता। सशंकित वह घरके बाहर निकलती है। बरगदके पेड़के नीचे पहुंचती है और फिर कई बार पुकारती है, 'रधिया ! रधिया !'

'मां पुकारती है। मुझे जाने दो !' —अपनी मां की आवाज सुनकर रधिया घबड़ाहट भरे स्वरमें निर्मलसे कहती है।

फिर हम कब मिलेंगे ?'—निर्मलके नेत्रोंमें अनुराग भरा है।

'कल इसी समय, इसी जगह ।'—

चांदनी रातमें रधियाकी मां देखती है, झाड़ियोंकी ओटसे निकल कर अधिया आ रही है और दूसरी ओर एक युवक जा रहा है। वह क्रोधमें भर जाती है।

रधिया डरते-डरते उसके पास जाती है।

कहां गई थी ?' -रधियाकी मांका क्रोधपूर्ण स्वरी रधियाकी बोलती बन्द है। वह चुप खड़ी रह जाती है।

'मैंने उस गुण्डेको भी झाड़ियों की ओटसे निकलते हुए देखा है ।'—उसकी मां का क्रोध बढ़ता जाता है।

मां ! उन्हें गुण्डा न कहो !'—रधिया अपना मौन व्रत भंग करती है।

'बेशर्म लड़की ! जो अपनी वासना की वेदीपर एक भोली लड़कीका भविष्य भेंट चढ़ा रहा हो—उसे गुण्डा नहीं तो और क्या कहा जायगा ?'

'वह बड़े सज्जन हैं ।'

इसलिये, कि तुमसे कहता होगा, 'तुम मेरे दिलकी रानी हो' 'मैं तुम्हारे लिये अपनी जानतक न्योछावर कर सकता हूं' 'तुम मेरी छाती चीर कर देख लो, मैं तुमको कितना प्यार करता हूं।' भोली लड़की, यह तुम्हारी जैसी मूर्ख स्त्रियों को अपने चंगुलमें फंसानेके लिये, अपने शरीरकी प्यास बुझानेके लिये, धूर्त्त पुरुषों द्वारा बिछाया गया सुनहला जाल है। ऐसे जालमें फंसकर कितनी स्त्रियां अपना भविष्य नष्ट कर चुकी हैं—तुम्हें पता नहीं।'

'वह ऐसे नीच नहीं हो सकते, मां ! उनका हृदय बच्चोंके हृदयकी तरह पवित्र है।'—

'परीक्षा कर लो ! यदि वह सोना है, आगमें तपाकर जांच लो ! मैं उससे फिर एक बार मिलनेकी आज्ञा देती हूं।'-

दोनों मां, बेटी घरकी ओर बातें करतीं, लौटीं।

० ० ०

निर्मलके पिता 'पैसादास' अपनी दूकानपर बैठे हुए वही उलट-पुलट रहे हैं। उनके पास एक देहाती जमींदार बैठे हुए उनके मुखकी ओर आशा भरी दृष्टिसे देख रहे हैं।

'आपकी स्वीकृति मिल जाती तो विवाहकी तिथि पक्की हो जाती। शुभ कार्य में देर अच्छी नहीं।'—

'मैंने अपना निश्चय बतला दिया आपको। पांच हजार रुपये तिलकमें देना स्वीकार करें तो मुझे कुछ उज्र नहीं।'—बहीसे आंखें हटाकर पैसादासने जमींदार से कहा।

"किन्तु वह तो बहुत बड़ी रकम है, मेरे लिये असम्भव है।"

"तब तो मेरी राय है, आपको दूसरा द्वार देखना चाहिये।"

"मैं आपसे करबद्ध प्रार्थना करता हूं। आप रुपयेकी ओर नहीं, लड़कीकी ओर देखिये। लाखोंमें एक है। जमींदार-ने हाथ जोड़कर कहा।

"मेरा लड़का भी क्या कम है ? तपस्या करनेपर भी शायद वैसा लायक दामाद आपको न मिले।"

"तभी तो मैं दो हजार दे रहा हूं।"

"जनाब ! आपसे यह सौदा नहीं पट सकेगा। मैंने कई बार आपको बतलाया कि तीन हजार कल एक महाशय देनेके लिये एकदम तैयार थे किन्तु मैंने सिर हिला दिया।"

"अच्छा, तीन हजार ही सही।"

"नहीं, नहीं।"

चार हजार !'

'हरगिज नहीं।'

'अच्छा, पांच हजार ही सही। विवाह की तिथि निश्चित हो जानी चाहिये—इस जुलाईमें ही।'

मुझे कोई उज्र नहीं।'

'राधा कृष्ण ! राधाकृष्ण !"—कहते हुए पण्डित हीरानन्द पधारे।

अच्छे अवसरपर आये महाराज ! निर्मलके विवाहकी तिथि विचार कर बतलानेकी कृपा करें !'—पैसादासने पण्डित-से कहा।

पण्डितजीकी प्रसन्नताका ठिकाना न रहा।

* * *

निर्मलने विवाहका विरोध किया। पैसादास आग बन गये !

"जब तुम चार वर्षके बच्चे थे, तुम्हारी मां तुमको छोड़कर चल बसी। उस समय से मैंने तुमको पाला-पोसा और पढ़ा-लिखा कर एक आदमी बनाया। क्या इसी दिन के लिये कि तुम मेरी आज्ञाका उलंघन करो ?"—पैसादासकी आंखें लाल हो गई थीं। "पिता जी !" ....निर्मल कुछ कहना चाहा।

"बस, मैं कुछ सुनना नहीं चाहता।' —पैसादासने उसे आगे बोलनेसे रोककर कहा, "तुम्हारी होने वाली पत्नी एक आंख की हो चाहे एक पांव की, गूंगी हो या बहरी, पढ़ी लिखी हो या अपढ़, तुमको उसे कबूल करना ही होगा इसलिये कि मैंने विवाह की तिथि निश्चित कर ली है।" —

"विवाह, जन्म-मरणका प्रश्न है, पिता जी !"—

'सोच-समझकर जवाब दो ! अपने पांवमें आप कुल्हाड़ी मत मारो ! गरीब गायकी तरह एक मासूम लड़की को कसाई की तरह एक साठ वर्षीय बढ़ेके हाथोंमें सौंप दिया जाता है किन्तु वह इंकार नहीं करती। अच्छा होता, तुम लड़का न होकर लड़की होते।' —

"मैंने अपना निश्चय बतला दिया आपको।"—

"तो यह विवाह स्वीकार नहीं ?'

"जी, नहीं।"

"अच्छा, कान खोलकर सुन लो ! तुमने मुझे अपमानित करनेके लिये प्रण कर लिया है तो मैंने भी निश्चय कर लिया है। मैं एक मन्दिर बनवाऊंगा, और ठाकुर जी के भोगके लिये अपनी सारी जायदाद दे दूंगा। तुम्हें एक कौड़ी भी न दूंगा। साधु मालपुआ उड़ायेंगे, सुलफा सुलगायेंगे और तुम दाने-दानेके लिये तरसोगे।" —

"अधर्मसे कमाया हुआ धन गरीबोंके काम नहीं आता, पिता जी, मुझे मालूम है।" —

"बस, जुबान बन्द करो और कूड़े की तरह अभी मेरे घरसे निकल जाओ ! आजसे तुम मुझे अपना पिता नहीं, शत्रु समझना !" —

व्यथित निर्मल एक दूसरे कमरेमें अपनी मां के चित्रके पास आता है। उसकी आंखोंमें आंसू भर जाते हैं।

* *

आधी रातका समय। आकाशमें बादल मंडरा रहे हैं। निर्मल झाड़ियोंके पास खड़ा है। रधिया आती है।

"मुझे विश्वास था तुम जरूर आओगे।" —रधियाने आते ही कहा।

"कब से खड़े हो ?।"

"कुछ देर से।"

'मेरी आंखें लग गई थीं।"

'राधा ! तुमसे बहुत जरूरी बातें करनी हैं।"—निर्मलके नेत्रोंमें विषाद झांक रहा था।

'रात, मां ने हम दोनोंको देख लिया।"

"मां तुम्हारी मां का क्रोधपूर्ण स्वर कानोंमें पड़ा था।"

"आज हमारे भाग्यका अंतिम फैसला है।"

"निस्संदेह।"

"मेरी बातोंका जवाब दो !"

मैंने कब नहीं' कहा ?"

'.... तुम मुझे हृदयसे प्यार करते हो ?"

"तुम जानती हो।"

लोग मुझे अछूत' कहते हैं।"

'मुझे मालूम है"

"जब तुम मुझको पत्नीके रूपमें ग्रहण करोगे-हिन्दू समाज सहन न कर सकेगा। उस समय तुमने मुझको मझधारमें छोड़ दिया तब मेरा क्या होगा ?"—

'राधा ! मुझ पर तुम्हारा विश्वास नहीं ?"—

'तुमको सबूत देना होगा।"

"किस तरह ?"—

"कम से-कम पांच हजार रूपयेकी जायदाद मेरे नाम रजिस्ट्री करा कर।.... मां कहती है, धनिकके लड़केंका क्या विश्वास ! सुन्दर युवतियोंको अपने प्रेम-जालमें फंसा कर, उनके रूप यौवन से खेलवाड़ करना उनके लिये साधारण बात है।"—

"क्या मतलब ? तुम रूपये से अपने प्रेम का सौदा करना चाहती हो। मुझे क्या मालूम था कि तुम्हारे सुन्दर शरीर के भीतर एक वेश्या का हृदय छिपा है।"-

"निर्मल !"-- रधिया क्रोधावेशमें निर्मलके गाल पर तमाचा मार कर उसे आगे बोलनेसे रोकती है। बादल गरजता है। बिजली चमकती है।

निर्मल अवाक खडा रहता है।

'दगाबाज ! विश्वासघाती !"— रधिया फफक कर रोने लगती है।

आंधी का एक झोंका आताहै। रधिया घरकी ओर लौटती है।

'राधा ! राधा !"— रधियाकी ओर निर्मल बढ़ता है। किन्तु उत्तरमें उसे रधियाके रोनेकी आवाज सुनाई पड़ती है।

हवा तेज होती जाती है। झमाझम पानी गिरने लगता है। रह-रहकर बिजली चमकती है। पानीमें भींगता और हवाके झोंकेमें लड़खड़ाता निर्मल पथ-पर बढ़ता दिखाई देता है।

दो शब्द चित्र

भाता नहीं—

आज मानवताका यह आडम्बर
भाता नहीं, भाता नहीं।
जो प्रेत बनकर रेंगता सा
छा गया है विश्व पर।
बन्द चारों ओर
चट्टानों सा
कि
जिसमें किलबिलाती
इन्सानियत।
दम घुट रहा, दुर्गन्ध कड़वी
सड़े प्याज सी
परिधि जिसकी है क्षितिज सी
छा गयी है वानियत।
और मानव ढूंढता ही जा रहा है,
घृणित आडम्बर,
जो स्वार्थके पर्याय है,
स्नेहके दुश्मन,
यह कृत्रिम रूप, निर्मम
भाता नहीं, भाता नहीं।

अमरते—

ओ अमरते !
आज सुन तू
मैं तुझे ललकारता हूं।
जन युगके सम्बन्ध से
कि
जिसके वेग प्रबल से
दहलती छाती,
हिमालय सी,
स्वार्थके बन्धनों की।
संघर्ष युग की देन है
कर्म रथ गतिशील है।
आज भर दे, अमृत घट से
पीड़ित छाती
विकल युग की
ओ अमरते !
आज सुन तू

—श्री अशोक

हो गया। इससे पहले वर्षमें पण्डित जवाहरलाल नेहरूकी अध्यक्षतामें दिल्लीमें अधिवेशन हुआ था जिसमें देश एवं विदेशसे पधारे हुए बड़े बड़े वैज्ञानिकोंने भाग लिया था। गत १५ अगस्तको भारत स्वाधीन हुआ है। अतः भारतके वैज्ञानिकोंका उत्तरदायित्व अब पहलेसे कई गुना बढ़ गया है। साथ ही भारत एवं संसारकी परिस्थिति बहुत ही विकट हो गयी है; तृतीय महायुद्धकी भयावनी आशङ्काएं लोगोंको परेशान किये हुए हैं। ऐसी अवस्थामें पटनामें होनेवाले स्वतन्त्र भारतके विज्ञान कांग्रेसके प्रथम अधिवेशन का कितना मूल्य है यह सहज ही में समझा जा सकता है। विज्ञान कांग्रेसके पटना अधिवेशनमें सम्मिलित होनेके लिये लग-

[illegible] खड़ा नहीं होने देते हैं। उन्होंने समवेत वैज्ञानिकोंसे अनुरोध किया कि आप लोग ऐसे उपायोंका अनुसन्धान कीजिये जिससे हमारे राष्ट्रीय जीवनकी उन्नति हो एवं भविष्यमें किसी तरह निराश न होना पड़े। और हम पुनः अपनी प्राचीन समृद्धि तथा परम्पराको प्राप्त कर सकें।

पण्डित नेहरूने अधिवेशनके प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए जो सन्देश भेजा था उसमें उन्होंने लिखा था कि मुझे आशा है कि वैज्ञानिक अपनी विद्या, बुद्धि परिश्रम एवं अनुभवोंके आधारपर जनताकी उन्नतिमें सहायक होंगे। अगर आप लोग ऐसा नहीं कर सके तो आपने [illegible] ज्ञान अर्जित किया है वह पेशे तक ही सीमित रहेगा, जनताके हितमें तनिक भी सहायक न होगा।

की। सम्मेलनकी सफलताके लिये श्रीमती सरोजिनी नायडू अर्देशिर दलाल, ज्ञानचन्द्र घोष, मेजर जनरल भाटिया शान्तिस्वरूप भटनागर श्री जीवराज मेहता और बर्माके बी० मायने स देश भेजे थे। भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडूने लिखा था कि जीवनके संहारकारी निष्ठुर हाथोंसे छूटकर विज्ञानको जनताके कल्याणमें लग जाना चाहिये।

सम्मेलनके मूल सभापति कर्नल सर रामनाथ चोपड़ा निर्वाचित किये गये थे। लेकिन आपरेशन होनेके कारण वे सम्मेलनमें सम्मिलित नहीं हो सके। उनके बदले संसार प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री चन्द्रशेखर वेंकट रमण वे अध्यक्षका आसन ग्रहण किया। और उन्होंने श्री रामनाथ चोपड़ाके अभिभाषणके कुछ चुने हुए

भारतीय विज्ञान कांग्रेस

एक दर्शक

भाग आठ सौ प्रतिनिधि भारत और पाकिस्तानके कोने कोनेसे आये थे।

बिहारके गवर्नर श्री जयराम दास दौलतरामने अधिवेशनका उद्घाटन किया। उन्होंने अपने भाषणमें कहा कि दरिद्र, नंगे एवं तरह तरहकी बीमारियोंसे ग्रस्त जनताके बलपर ही भारतीय वैज्ञानिकोंको अपना अनुसन्धान कार्य करना पड़ा है। इस देशकी प्रति व्यक्ति औसत आय दो आना है और साठ प्रतिशत भी लोग पेट भर खाना नहीं पाते हैं। प्रति चार व्यक्तियोंमें एक मलेरियाका शिकार है तथा औसत आयु २५ वर्ष है। प्रति दस व्यक्तियोंमें ९ व्यक्ति निरक्षर हैं। और उनके हिस्सेमें कपड़ा पड़ता है १३ गज। इस प्रकारके अभाव ही इनके मार्गमें हिमालयके समान खड़े हैं, जो उन्हें

स्वागत समितिके सभापति पटना विश्वविद्यालयके वायस चान्सलर श्री सी० पी० एन० सिंह थे। आगत प्रतिनिधियोंका स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकोंको साम्राज्य वादियोंके हाथ की कठपुतली बनकर अपने ही भाइयोंके विनाशका कारण नहीं बनना चाहिये बल्कि मनुष्य समाज भला कैसे होगा, कौन सा आविष्कार मनुष्यके उपयोगमें आयेगा आदि विचार प्रत्येक वैज्ञानिकको अपने ध्यानमें रखने चाहिये।

वन्देमातरम् गानसे अधिवेशनकी कार्यवाही प्रारम्भ हुई। अमेरिका, ब्रिटेन आस्ट्रेलिया और बर्मासे आगत विख्यात वैज्ञानिकोंका परिचय प्रतके गवर्नरसे प्रो० प्रशान्त महल नवीसने कराया। प्रत्येक विदेशी वैज्ञानिकने अपने अपने

अंश पढ़कर सुनाये। अध्यक्षने अपने भाषणमें चिकित्सा प्रणालीकी विस्तृत आलोचना की थी, उन्होंने कहा कि भारतमें दो तरहके चिकित्सक हैं। उनमें एक पाश्चात्य प्रणालीसे शिक्षा प्राप्त चिकित्सक हैं। लेकिन भारतकी गरीब जनताके लिये उनकी चिकित्सा प्रणाली बहुत ही महंगी है। इसलिये बीस प्रतिशतसे अधिक लोग उनकी चिकित्सा प्रणालीसे लाभ नहीं उठा पाते हैं। एक दूसरे तरहके चिकित्सक हैं जो पेड़ पौधोंसे दवाइयां एकत्र करते हैं। और उन्हींसे भारतके ८० प्रतिशत लोगोंकी चिकित्सा करते हैं। क्योंकि विलायती चिकित्सा प्रणालीकी अपेक्षा यह प्रणाली बहुत सस्ती है। हां, यह बात अवश्य है कि इस प्रणालीके चिकित्सकोंको वैज्ञानिक प्रणालीसे शिक्षा

प्राप्त नहीं होती है। उपयुक्त गवेषणा और शिक्षाके अभावमें यह प्रणाली नष्ट होती जाती है। वर्तमान भारतमें इन दोनों चिकित्सा प्रणालियोंकी आवश्यकता है। अध्यक्षके अभिभाषणका पाठ करनेके उपरान्त श्री चन्द्रशेखर वेङ्कटरमणने मनुष्यके स्वाद और नासिकाकी अनुभूतिका उल्लेख किया और दूसरे विषयमें वैज्ञानिक दृष्टिसे विचार किया। प्रथम दिनकी कार्यवाही समाप्त हो जानेके बाद दरभंगाके महाराजने आगत प्रतिनिधियोंको प्रीति भोज दिया।

विज्ञान कांग्रेसका इतिहास

स्वतन्त्र भारतमें विज्ञान कांग्रेसको कितना महत्व प्राप्त होगा, यह सभी जानते हैं। लेकिन आज जिस विज्ञान कांग्रेसने इतना नाम प्राप्त किया है उसकी स्थापना आज २९ वर्ष पूर्व हुई थी। सन् १९१०में प्रो० पी० एस० मैर मोइन एवं प्रो० जे० एल० साइमनसनने ब्रिटिश एसोसियेशनके अनुसरणपर भारतमें वैज्ञानिकोंका वार्षिक सम्मेलन करनेका प्रयास किया। १९११ में इस विषयमें देशके वैज्ञानिकोंका मत जाननेकी कोशिश की गयी। लेकिन वैज्ञानिकोंने सम्मेलनके पक्षमें मत नहीं व्यक्त किया। विरोध और प्रतिवाद की परवाह किये बिना ग्यारह विशिष्ट वैज्ञानिकोंकी एक कमेटी गठित कर ली गयी और प्रस्तावित सम्मेलनका प्रथम अधिवेशन बुलानेका निश्चय किया गया। सन् १९१४ में १५ और १६ जनवरीका कलकत्तेमें एशियाटिक सोसाइटी भवनमें भारतीय विज्ञान कांग्रेसका प्रथम अधिवेशन सम्पन्न हुआ। उस अधिवेशनके अध्यक्ष कलकत्ता विश्व विद्यालयके तत्कालीन वायस चांसलर सर आशुतोष मुखर्जी थे और प्रसिद्ध वैज्ञानिक डाक्टर डी हूवर मंत्री एवं कोषाध्यक्ष चुने गये थे। प्रथम अधिवेशनमें रसायन, पदार्थ विद्या, प्राणीशास्त्र, उद्भिज आदि पांच विभाग प्रारम्भ हुए थे। उसके बाद दूसरा अधिवेशन मद्रासमें और तीसरा लखनऊमें हुआ। १९१७ से १९२० तक बङ्गलोर, लाहौर, बम्बई एवं नागपुरमें अधिवेशन हुए। गत ३५ वर्षोंमें विज्ञान कांग्रेसके देशके कई प्रमुख प्रमुख नगरोंमें अधिवेशन हुए हैं और वैज्ञानिक शिक्षा और अनुसंधान की उन्नतिके लिये आशातीत कार्य हुआ है। विदेशोंके बड़े बड़े वैज्ञानिकोंको भारत में निमंत्रितकर भारतीय विज्ञान कांग्रेसने अन्य देशोंके साथ भारतका सांस्कृतिक सम्बन्ध बढ़ानेका प्रयास किया है। १९३८ में कांग्रेसकी रजतजयंती हुई थी जिसमें सर जेम्स जिन्सके नेतृत्वमें संसारके श्रेष्ठ वैज्ञानिक भारत पधारे थे। १९४६ में पण्डित नेहरूकी अध्यक्षतामें दिल्लीमें अधिवेशन हुआ जिसमें सोवियट रूस, चीन एवं अन्यान्य राष्ट्रोंसे प्रतिनिधि पधारे थे। पटना अधिवेशनमें देश विदेशके कई विख्यात वैज्ञानिकने भाग लेकर मानव कल्याणके विभिन्न उपायोंपर विचार किया। ब्रिटिश शासनका अवसान हो गया है, भारतने स्वाधीनता प्राप्त की है और भारतके आर्थिक, सामाजिक जीवनमें आमूल परिवर्तनकी सूचना दृष्टिगोचर होने लगी है, वैज्ञानिकोंको अपने अलौकिक अनुसंधानोंके द्वारा इस सूचनाको कार्यान्वित करना है। पटना अधिवेशनमें मूल अधिवेशनके सभापति श्री रामनाथ चौपड़ाके सेवा, गणित विभागके मद्रासके डाक्टर आर० वैद्यनाथ स्वामी आंकड़ा विभागके अध्यक्ष कलकत्तेके डाक्टर एस० एन० राय, पदार्थ विद्याके पूनाके डाक्टर एल० ए० रामदास, रसायन शास्त्रके बंगलोरके प्रो० वी० संजीव राव भूगोल एंव भूतत्वके डाक्टर पी० के० घोष, उद्भिज विद्याके डाक्टर कैफीउद्दीन अहमद, जीव विद्या एंव कीटतत्वके काशी विश्वविद्यालयके प्रो० ए० बी० मिश्र नृतत्व और पुरातत्वके प्रो० अनाथनाथ चटर्जी, मौसम और पशु-चिकित्साके डाक्टर जी० डी० मालेराव, कृषिके रायबहादुर कालीदास सोहनी, शरीर तत्वके डाक्टर वसीर अहमद, मनोविज्ञान और शिक्षाके, डाक्टर जाकिर हुसैन, खनिजतत्वके श्री नलिनी विहारी सेन विभागीय अध्यय निर्वाचित किये गये थे।

अध्यक्षका परिचय

पटना अधिवेशनके निर्वाचित अध्यक्ष सर रामनाथ चोपड़ाका भारतके वैज्ञानिकोंमें प्रमुख स्थान है। जिस प्रकार स्वर्गीय आचार्य पी० सी० रायको आधुनिक भारतीय रसायन शास्त्रका जनक माना जाता है उसी प्रकार सर चोपड़ाको भी भारत फारमोकोलजीके जनक माना जाता है। फारमोकोलजीमें पेड़-पौधों और वनस्पतियोंसे कौन-कौनसी दवा मिल सकती है इसका विवरण लिखा है। भारतमें ऐसी जङ्गली औषधियोंका घाटा नहीं है। केवल वैज्ञानिक प्रणाली द्वारा उनकी खोज खबर लेकर काममें लगानेकी आवश्यकता है। आज देशमें देशी पेड़-पौधोंसे प्रस्तुत अनेक औषधियां बिक रही हैं लेकिन जिन पेड़-पौधोंसे वे दवाइयां बनती हैं उनकी रक्षा और उपयोगके सम्बन्धमें सर चोपड़ाने वैज्ञानिकोंका ध्यान उधर खींचा और उसके लिये उद्योग किया। सर चोपड़ाका जन्म पञ्जाबके गुजरानवाला जिलेमें हुआ था १९०२ में पञ्जाब विश्वविद्यालयकी शिक्षा समाप्त कर वे इङ्गलैण्ड गये। वहां उन्होंने केम्ब्रिज विश्वविद्यालयमें ६ वर्ष शिक्षा प्राप्त की और एल० आर० सी० पी० एम० आर० सी० पी० एवं एम० बी० बी० सी० एच० आदि परीक्षाएं पास की। उसके बाद प्रो० डिक्सनके आधीन रहकर अनुसंधान किया। १९१२ में आपको शरीर तत्वों पर एक मौलिक निबंध लिखनेके लिये 'डाक्टर आफ मेडीसिन' की उपाधि प्रदान की गयी। उसके बाद आप इण्डियन मेडिकल सर्विस परीक्षा दी और उसमें तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहांसे लौटकर सरकारी नौकरी की और प्रथम महायुद्ध एवं अफगान युद्धमें शरीक हुए। १२ वर्ष तक आपने युद्ध मोर्चे पर नौकरी की। १९२१ में आपको कलकत्ता मेडिकल कालेजमें प्राफेसर नियुक्त किया गया। १९३४ में आपको ट्रापिकल स्कूलका अध्यक्ष बनाया गया। इस पदको प्राप्त करने वाले आप पहले भारतीय थे।

साहित्य सेवा पूरी तपस्या है

—(*):(*):—

डा० जगदीश चन्द्र जैन, एम० ए० पी० एच्डी०

हमारा देश आज बड़े संकटमेंसे गुजर रहा है। १५ अगस्तको हमें पूर्ण स्वतंत्रता मिल भी नहीं पाई थी कि सारे देशमें भयंकर साम्प्रदायिक उत्पात शुरू हो गये। हिन्दू और मुसलमान इंसानियत छोड़ कर हैवान बन गये, निरपराध स्त्री-बच्चों पर लोमहर्षण अत्याचार किये गये, और उनके रक्तसे रंजित जो भीषण होली खेली गयी वह सदाके लिये भारतकी सभ्यता और संस्कृतिके नाम पर अमिट कलंक रहेगी, जिसकी याद कर, आनेवाली पीढ़ियां हम पर घृणासे अट्टहास्य करेंगी। इन दंगोंके कारण हमारे देशमें साम्प्रदायिकताका जहर बड़ी तीव्रगतिसे फैल रहा है, प्रतिक्रियावादी शक्तियां राष्ट्रको आगे बढनेसे रोक रही हैं, स्वतंत्रता और प्रगति के विरोधियोंकी आज बन आई और वे सम्प्रदाय और जातिवादका नाम लेकर जी भर कर जहर उगल रहे हैं। ऐसे कठिन समय पर जनवादकी रक्षाके लिये हमारे देशके नवयुवकोंका कर्तव्य है कि वे इस विध्वंसकारी संकुचित मनोवृत्तिका डट कर मुकाबला करें, और इसे जड़मूलसे उखाड़ कर फेंकनेका प्रण करें। यह निश्चय समझिये कि साम्प्रदायिकताकी इस महामारीसे यदि हम अपनी रक्षा नहीं कर सके तो हमारा देश रसातलको पहुंच जायगा, और हमने जो अपना रक्त बहाकर स्वतंत्रता प्राप्त की है वह अधिक समय तक न टिक सकेगी।

स्वतंत्रता आनेके बाद हमारे देशमें और भी अनेक विकट समस्यायें उपस्थित हो गई हैं। मंहगाई इतनी बढ़ती जा रही है कि साधारण लोगोंको रूखी रोटी मिलना भी कठिन हो गया है। चोर बाजारके ढीले पड़नेके कोई लक्षण दिखाई नहीं देते, उल्टे पुराने अनुभवोंसे पुष्ट होकर वह सुदृढ़ ही बनता जाता है। खाना-कपड़ा और घरकी समस्यायें ज्यों की त्यों बनी हुई हैं, शायद अन्य कार्योंमें व्यस्त होने के कारण हमारे देशके कर्णधार इस ओर जितना चाहिये उतना ध्यान नहीं दे सके।

हिन्दुस्तानमें आज भी करोड़ों एकड़ जमीन बेकार पड़ी है। ३ अरब ५५ करोड़ एकड़ जमीनमेंसे हमारे यहां सिर्फ ५६ फी सदी जमीनमें काश्त की जाती है, १३.२ फी सदी परती पड़ी है, और २७.३ फी सदी जमीन काश्त करनेके काबिल होते हुए भी बेकार पड़ी हुई है। परिणाम यह हो रहा है कि हमें करोड़ों रुपयेका नुकसान सहकर विदेशोंसे अनाज मंगाना पड़ता है। आंकड़ोंसे पता लगता है कि सिर्फ १ वर्ष (१ अप्रैल १९४६ से ३१ मार्च १९४७) के भीतर हिन्दुस्तानको बाहरसे गल्ला मंगवानेमें २०.५१ करोड़ रुपयेका नुकसान उठाना पड़ा! फल यह हुआ कि पौण्ड-पावनेसे हमें जो रकम मिलती है, उसका हमें अनाज खरीद लेना पड़ा और शिल्प-उद्योगकी वस्तुएं खरीदनेके लिये हमारे पास कुछ नहीं बचा। भारत सदासे कृषि-प्रधान देश रहा है। सजला, सुफला और शस्य श्यामला कहीं जानेवाली भारत-वसुन्धराके निवासियोंको खानेके लिये विदेशियोंका मुंह ताकना पड़े, यह बड़े खेद और लज्जा की बात है!

हमारी कपड़ेकी समस्या भी कम जटिल नहीं। वस्त्रके अभावमें हमारे देशकी भद्र महिलाओंको आत्मघात करनेके लिये बाध्य होना पड़ा यहां तक कि गरीब लोग कब्रमें गड़े हुए मुर्दोंके कफन उतार कर अपना तन ढकने लगे। भारतके इतिहासमें, यह अनोखी बात है। तारीफ यह कि चोर बाजारमें पर्याप्त कपड़ा मौजूद है लेकिन वह गरीबों तक नहीं पहुंच सकता! दुर्भाग्यसे चोर बाजार करनेवालों पर जितनी सख्ती होनी चाहिये उतनी अभी तक नहीं की गयी अब सरकार कपड़ा अनाज तथा दूसरी वस्तुओं परसे नियन्त्रण हटा रही है समझमें नहीं आता ऐसा क्यों किया जा रहा है, और जनता पर इसका क्या असर होगा! कुछ समय पूर्व सरकारने कुछ दालों तथा पीतलके ऊपरसे नियन्त्रण हटाया था, परिणाम यह हुआ कि ये चीजें चोर बाजारकी कीमत पर खुल आम बिकने लगीं। शक्कर परसे नियन्त्रण उठाने की घोषणा होते ही शक्करके दाम बढ़ने लगे।

देशमें अन्न और वस्त्रकी पैदावार बढ़ानेका उपाय है कि किसान और मजदूरोंके रहन-सहनको ऊंचा किया जाय और उन्हें अधिकाधिक मात्रामें सुविधायें प्रदान की जायें। उसी समय देशकी उपार्जन शक्ति बढ़ सकती है, और तभी दरिद्रता रूपी पिशाचसे हमारा पिंड छूट सकता है।

शिक्षाका माध्यम

ब्रिटिश साम्राज्यवादका खात्मा होनेके साथ-साथ अंग्रेजी भाषा भी अपने सिंहासनसे अनारूढ़ हो गयी है, इसलिये अब समय आ गया है कि हमारी शिक्षाका माध्यम हमारी मातृभाषा हो, और राष्ट्र-भाषाका पद हिन्दीको दिया जाय। इसके लिये आवश्यक है कि शिक्षकों और लेखकोंको प्रोत्साहित किया जाय जिससे देशी भाषाओंमें उच्च कोटिका साहित्य निर्माण हो सके। विज्ञान और कला आदि के ऊपर हिन्दीमें साहित्य निर्माण भी उसी समय हो सकता है। यदि हमारे देशमें जगह-जगह संस्कृतिके केन्द्र स्थापित किये जांय, जहां साधारण जनता विचारोंका आदान-प्रदान कर सके और जहां प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्रतापूर्वक अपने विचारोंको रख सके, तो यह कार्य बहुत शीघ्र सम्पन्न हो सकता है। इस सम्बन्धमें हम युक्त प्रांतीय सरकारका अभिनन्दन करते हैं जिसने हाल ही में हिन्दी और देवनागरीको क्रमशः राजभाषा और राजलिपि घोषित कर दूरदर्शिताका परिचय दिया है।

दुर्भाग्यसे हमारे देशमें सबसे अधिक शोषित प्राणी लेखक है। यही कारण है कि उसके हाथमें कलम जैसा सबल शस्त्र होते हुए भी उसे निम्न कोटिका जीवन बिताना पड़ता है। आजकलकी मंहगाई और ठगीके युगमें आटा-दाल जुटानेकी चिन्तामें ही उसकी सारी शक्ति खर्च हो जाती है, फिर उससे क्या आशा की जा सकती है कि वह राष्ट्र-निर्माणके लिये कुछ सोचे। लेखकोंकी विद्या-बुद्धि पर ऐश उड़ाने वाले प्रकाशकों और सिनेमा-निर्माताओंकी आज हमारे देशमें कमी नहीं। कितने ही प्रकाशक थोड़े

से रुपये देकर लेखकोंसे उनकी रचनाओं का सर्वाधिकार खरीद लेते हैं। लेखकोंके प्रति इस अन्यायका घोर विरोध किया जाना चाहिये।

विज्ञान-युग

हमें न भूलना चाहिये कि यह युग विज्ञानका युग है। केवल प्राचीनताके मोह को रख कर हम जिन्दा नहीं रह सकते। द्वितीय महायुद्धके अणुशक्तिके आविष्कारने हमारी पुरानी कल्पनाओं पर पानी फेर दिया है। पुराने युगमें लोग देवी-देवताओं पर विश्वास करते थे. जादू-मन्तरको मानते थे, ईश्वरको जगन्नियंता मान कर उसकी पूजा उपासना करते थे, लेकिन आज इस मशीनके युगमें मनुष्य अपने भाग्यका विधाता अपने आपको मानने लगा है, वह अपने सहारे आगे बढ़ना चाहता है। उसने बड़े-बड़े पहाड़ काटकर रेलें निकालीं, पर्वतों और समुद्रोंको लांघनेके लिये हवाई जहाजका आविष्कार किया चन्द्रलोक तक पहुंचनेके लिये 'राकेट' तैयार किये, अपने ज्ञानके प्रकाशसे संसार भरमें उजाला कर दिया, और जन-समाजके कल्याणके लिये सदोष समाज रचनाको बदल कर समाजवादी जनतंत्रकी स्थापना की। आज मनुष्य इस योग्य हो गया है कि वह अपने दोषोंकी परख स्वयं कर सके। इससे समाजकी दोषपूर्ण अपर्याप्तताका अनुभव कर उसे एक नयी प्रेरणा, नयी स्फूर्ति मिली है। मानवताके इस युगमें उसे विश्वास हो गया है कि केवल अपने आपको लेकर आगे बढ़नेका युग अब समाप्त हो गया है। अब आया है एक साथ मिल कर सोचनेका एक साथ काम करने का और जनसमुदाय को साथ-साथ लेकर आगे बढ़नेका। केवल 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' और 'स्वांतः सुखाय' गीत गानेसे काम न चलेगा अब आज तो जो जीवनप्रद है—स्फूर्तिदायक है वही सत्य कल्याणप्रद और सुन्दर है।

प्रसन्नताकी बात है कि आर्थिक-शोषणके इस घोर युगमें भी हमारा साहित्यिक जीवित है। उसमें आशा है, प्राण हैं, और वर्तमान समाजकी गतिविधिको मोड़कर नया समाज सृजन करनेकी उत्कट भावना है। साहित्य-सम्राट स्वर्गीय श्री प्रेमचन्द्र जीके शब्दोंमें दृढ़तापूर्वक वह सोचता है—'हमारा धर्म है काम करना। हम काम करते हैं, और तन-मनसे करते हैं। अगर इस पर भी हमें फाका करना पड़े तो उसमें दोष नहीं।...अगर दुनिया हमारी कदर नहीं करती, न करे। इसमें दुनियाका ही नुकसान है मेरी कोई हानि नहीं। दीपक का काम जलना है...मैं दीपक हूं और जलनेके लिये बना हूं। मैं आज यह तत्व पा गया हूं कि साहित्य-सेवा पूरी तपस्या है।"

साहित्यिकका भविष्य उज्ज्वल है। आज उसके सामने विशाल क्षेत्र है। हमारा साहित्यिक ही राष्ट्र और समाजको अंधकारसे प्रकाशकी ओर, असतसे सत् की ओर और मृत्युसे अमृतकी ओर ले जा सकता है। हमें विश्वास है कि आजका साहित्यकार देशको साम्प्रदायिकता, कंगाली, भुखमरी, ठगाई और निरक्षरताके गर्त मेंसे निकाल कर राष्ट्रमें नव जीवन संचार कर भारतीय साहित्य और संस्कृतिकी अभिवृद्धि करेगा।

बम्बईमें हुए अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलनके ३९ वें अधिवेशनकी साहित्य परिषदके स्वागताध्यक्षके पदसे दी गयी वक्तृता।

कुंवर आयुर्वेदिक फार्मेसी - कानपुर

लार्ड लिस्टोवेल

लेखक—श्री शङ्करदेव विद्यालंकार

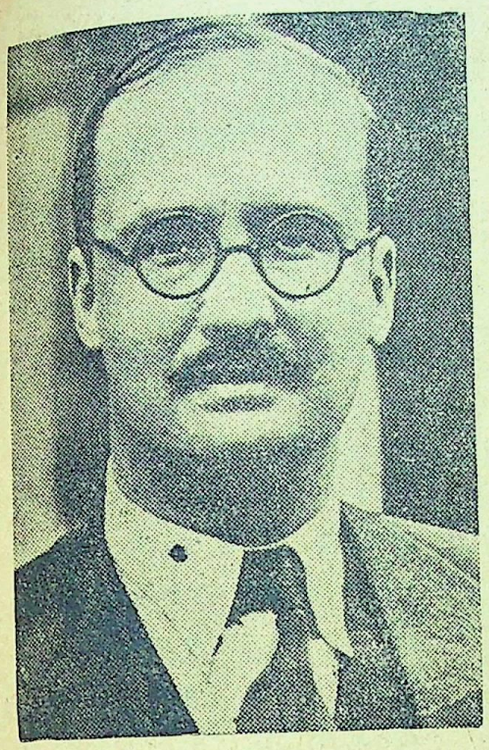

लार्ड लिस्टेवेल

अंग्रेज सरकारकी ओर से इंडिया आफिस की निगरानी करने वालोंमें लार्ड लिस्टोवेल भारत मंत्रियोंकी लंबी नाममाला में अन्तिम भारत सचिव थे। वे प्रकृतिसे अतिशय नम्र हैं, और चश्मा धारण करनेके कारण एक प्रोफेसरसे प्रतीत होते हैं। स्वभावसे बहुत प्रशान्त होने पर भी हर हिटलरके गेस्टापो ने उनका नाम फासिस्ट सिद्धान्तों के भयंकर विरोधियोंकी सूचीमें लिखा था।

लिस्टोवेलकी जागीरके इस पांचवें सामन्तका वास्तविक नाम है-विलियम फ्रांसिस हेयर। अपने विद्यार्थी जीवनमें केम्ब्रिज यूनियन की विचार समितिमें छात्रोंको भी सम्मिलित करना चाहिए-इस प्रकारकी जोरदार मांग प्रस्तुत करना लिस्टोवेलका ही काम था। तबसे लेकर आजतक ये ऐसी विचार धाराओंके पक्ष पाती रहें हैं जो कम लोक प्रिय और अल्पमान्य हों।

लिस्टोवेलके समग्र व्यक्तित्वका दर्शन तो तब हो सका था जब सन् १९४४ में ये सहायक भारत सचिव नियुक्त किये गये थे। सामान्य तौर पर यह नियुक्ति उस समय विस्मय कारक प्रतीत होती थी क्योंकि उस समय इनके ऊपर भारत सचिवके पद पर लियोपोल्ड एमरी आसीन थे। राजनीतिके इतिहासमें ऐसा क्वचित ही हुआ है जब सर्वथा भिन्न विचारवाले व्यक्तियोंको एक ही विभागमें कार्य करना पड़ा हो। एक ओर थे ठिगने कदके एमरी साहब और दूसरी ओर थे हृष्टपुष्ट सहिष्णु, और ऊंचे कदके श्रीमान् लिस्टोवेल महाशय। ऐसी अवस्थामें इंडिया आफिस में छः महीनेकी अवधि तक इन्हें महत्वहीन दशामें रहना पड़ा हो तो इसमें विशेष आश्चर्य नहीं।

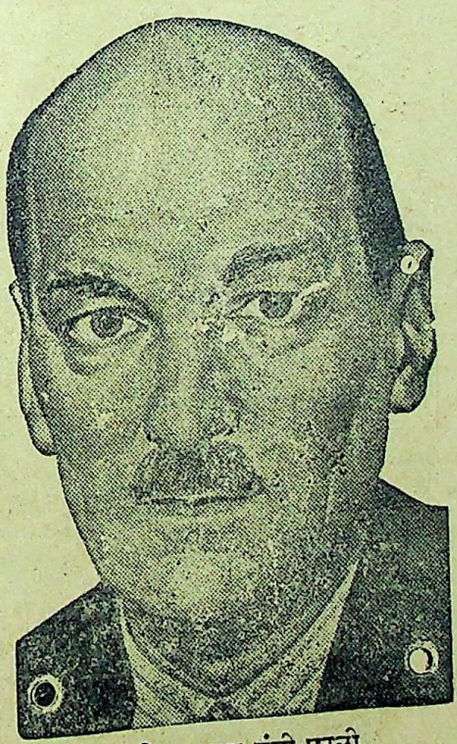

ब्रिटिश प्रधान मंत्री एटली

लिस्टोवेलकी शिक्षा ईटन, आक्सफोर्ड तथा केम्ब्रिजके प्रसिद्ध विद्यातीर्थों में हुई है। इन्होंने लन्दन विश्वविद्यालयसे पी० एच० डी० की उपाधि भी प्राप्त की है। स्नातक बननेसे पूर्व ही ये मजदूर दलके सदस्य बन गये थे और सामंत सभा में समाजवादीके रूपमें प्रविष्ट हो गये थे। उनके आत्मबल और साहसके विषय में इतना लिखना ही पर्याप्त होगा कि गत महायुद्धसे पहले ही ये रूस, चीन तथा प्रजातन्त्रवादी स्पेनके समर्थक थे। सन् १९३० से १९४० तकके समयमें मजदूर पक्षके सिवाय अन्य लोगोंमें रूस अधिक लोकप्रिय नहीं था। परन्तु इन्होंने सन् १९३७ में रूसके साथ शांति और बंधुता स्थापित करने वाली कांग्रेसका प्रधान-पद स्वीकार किया। दूसरे वर्ष इन्होंने 'मांचेस्टर गार्जियन' को लिखा था कि शांतिवादी और प्रजातंत्रवादी राष्ट्रोंके पक्ष को सबल रखनेके लिये यह आवश्यक है कि जिस प्रकार इङ्गलिस्तान फ्रांसके साथ मैत्री बनाये रहता है, उसी प्रकार रूससे भी बंधुता बनाये रहे।

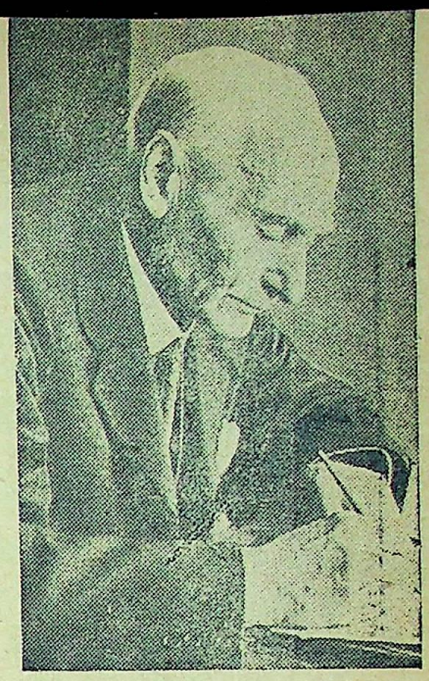

लार्ड पेथिक लारेंस

बहुत वर्षों तक लिस्टोवेल महाशय इस बातका प्रयत्न करते रहे हैं कि इङ्गलैण्डमें चीनके प्रति सहानुभूति और जिज्ञासा बनी रहे। चीनी आंदोलन-समितिके प्रधान पद पर कार्य करते हुए चीनवालोंकी सहायताके लिये इन महाशय ने एक द्रव्यनिधि भी स्थापित की थी और इङ्गलैण्डके मुख्य अखबारोंका ध्यान उस ओर आकृष्ट करनेके लिये खूब पत्र-व्यवहार किया था। इनका कथन था कि जापानियोंका ध्येय अपने साम्राज्यका अनिश्चित विस्तार करनेका है। और उसका परिणाम एक विश्व व्यापी युद्ध ही होगा।

स्पेनमें भी लिस्टोवेलने फासिज्मसे त्रस्त लोगोंकी सहायताके भरपूर प्रयत्न किये थे। वे स्वयं बास्क शिशु समितिके मुख्य सदस्य थे। उस समितिने स्पेनके गृहयुद्धके समय बास्कमें रहे हुए चार हजार बालकोंकी सुरक्षा और सहायता की व्यवस्था की थी और अंतमें उनको वहांसे स्थानांतरित किया था। स्पेनमें प्रवर्तित इनके फासिज्म विरोधी कार्योंको निहार कर जर्मन गेस्टापोका ध्यान इनकी ओर आकृष्ट हुआ था।

लार्ड लिस्टोवेल अङ्गरेजी उपनिवेशोंकी जनता की स्थितिके विषयमें खब दिलचस्पी लेते हैं। विशेषतया सन् १९४२ में इन्होंने सामन्त सभामें एकबार औपनिवेशिक नीति पर चर्चा प्रारम्भ करवा कर इस बात पर बहुत बल दिया था कि युद्ध के बीचमें ही ब्रिटेनको अपनी वह इच्छा घोषित कर देनी चाहिये कि वह उपनिवेशोंके लिये सामाजिक सेवा विभागकी स्थापना करेगा।

इन्होंने अनेक बार स्पष्ट किया है कि वे मंत्री मिशनकी भारत विषयक योजना का हार्दिक समर्थन करते हैं।

ये महाशय अपनी अधिकतर शक्ति पार्लमेण्टरी कार्योंमें ही लगाते रहे हैं। ब्रिटेनकी ऊपरकी सभामें वे अनेक महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं।

ये जब कालेजमें पढ़ते थे तब बाइकाउण्ट आफ ऐनिसमोर कहाते थे। परंतु इन्होंने केम्ब्रिजके व्यापारियों और मित्रों की विनती की थी वे उन्हें मि० हेमर नामसे ही बुलाया करें। ये मानते हैं कि उपाधियां तो दासताके लक्षण हैं।

जिस समय ये फेबियन सोसायटीके सदस्य बननेकेलिये प्रयत्नवान थे तब आपने बर्नार्ड शा को तीव्र समालोचना की थी। बर्नार्ड शाने अपने एक ग्रन्थमें लिखा था कि सब व्यक्तियोंकी आमदनी समान कर देनी चाहिये। लिस्टोवेल महाशयने तुरन्त ही इसके उत्तरमें बर्नार्ड शाको लिखा था कि आप प्रति वर्ष सहस्त्रों पौंड कमाते हैं, उन्हें आप अन्य लोगोंमें वितरण करनेका प्रयत्न क्यों नहीं करते।

१६॥) में ज्वेल वाली रिष्ट वाच

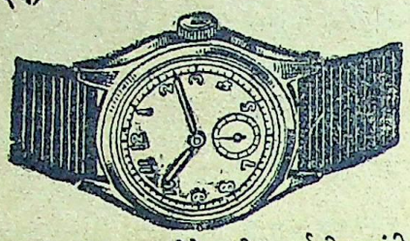

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी
गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)
रक्तेंगुलर कभी या टोनो शेप
क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीम साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।
एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

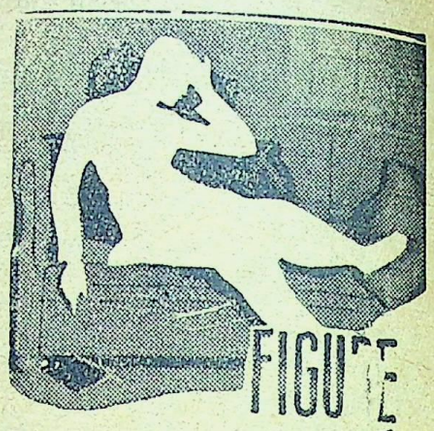

FIGURE
WITHOUT LIFE

प्रशंसनीय रक्त परिष्कारक दूषित रक्तसे उत्पन्न होनेवाली सभी बीमारियोंकी अचूक दवा तथा टानिक। सजन, बात, गठिया चर्मरोग, दुर्बलता घाव, फोड़ा फुंसी, गांठोंकी सजन जो रक्तकी कमी या दूषित रक्तसे उत्पन्न होता है

AMRITABALLI KASAYA
restores vitality & strength
KAVIRAJ N. N. SEN & CO. LTD CALCUTTA

साप्ताहिक विश्वामित्र
—: की :—
एजेन्सी
लेकर लाभ उठाइये।

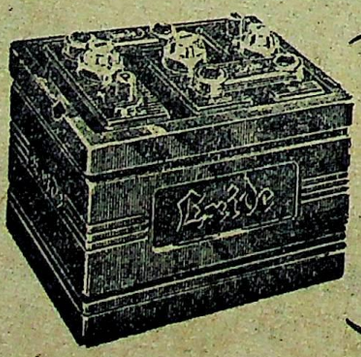

आप इससे अच्छी बटरी खरीद नहीं सकते
कार, ट्रक और बसोंके लिये
एक्साइड बैटरी

Local Agents, Mess. F. & C. OSLER Ltd.
12, Old Court Houe Sreet, Calcutta.

Ex 766B

मोसियेवर्दा चार्ली चैपलिनका श्रेष्ठ चित्र

कलकत्तेके ग्लोब सिनेमामें आजकल विश्व विख्यात हास्य अभिनेता चार्ली चैपलिनका सबसे ताजा, श्रेष्ठ चित्र 'मोसियो वर्दा' चल रहा है। मोसियो वर्दा' चार्ली चैपलिनका प्रथम सर्वांग पूर्ण सवाक चित्र है। छायाचित्रोंमें जब सवाक चित्रोंका प्रयत्न हुआ तब 'चार्ली' चैपलिनने उसका सबसे जबर्दस्त विरोध किया था। उनका ख्याल था कि सवाक की अपेक्षा मूक चित्र नाट्यकलाकी दृष्टि से अधिक अच्छे हैं। लेकिन आगे चलकर युगके प्रभाव और अपने अनुभवो से उनका विचार बदल गया। फिर 'मार्डन टाइम्स' एवं 'दी ग्रेट डिक्टेटर' में उनका जो रूप प्रारम्भ हुआ वह 'मोसिमोवर्दा'में आकर पूर्णरूपेण विकासको प्राप्त हुआ है। साथ ही 'मोसियोवर्दा' ही पहला चित्र है जिसमें चार्लीने अपनी पहली परम्पराको छोड नये रूपमें, नयीभूमिकामें काम किया है। इसमें वे गन्दी वेषभूषा' टेढी-छडी और लम्बे लम्बे जूते पहने नहीं दिखलाई पडते हैं, वे बिलकुल नये रूपरंग और वेषभूषामें है। यह याद रखनेकी बाद है कि इस चित्रमें चार्लीकी वेषभूषा और भूमिकामें ही परिवर्तन हुआ है उनकी नाट्यकलाके मूलभावमें तनिक भी रि-वर्तन नहीं है। 'मासियोवर्दा' व्यागत्मक चित्र होने पर भी उसमें वर्तमान समाज व्यवस्था की विभिन्न असंगतिओंपर तीखा व्यंग किया गया है। चार्ली के 'दीकिड, 'गोल्डरश' 'माडर्नटाइम्स' के साथ मोसियोमदांका कोई मौलिक अंतर नहीं है। माडर्न टाईम्स,में मशीनवादकी हृदयहीनताका चित्रण किया गया था और 'मासियोमर्दा'' में वर्तमान पूंजीवाद समाजके शोषण और उत्पीड़न पर हथौड़ेसे चोट की गयी है। साथ ही रईसोंके बनावटीपन और भोग विलास पर गहरा कटाक्ष किया गया है। इस सिलसिले में यहां उल्लेख कर देना आवश्यक है कि चार्लीके प्रगतिशील दृष्टिकोणसे अमेरिकाके पूंजीवादियोंमें बड़ी बड़ी खलबली रहती है। चार्लीको अमेरिकासे निकालनेके लिये काफी कोशिशें की गयी है। 'मोसियोमर्दा' से जो अमेरिकाके पूंजीवादी चार्लीसे और कुढ़ जायेंगे, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। 'मोसियो वर्दा'' देख कर कुछ

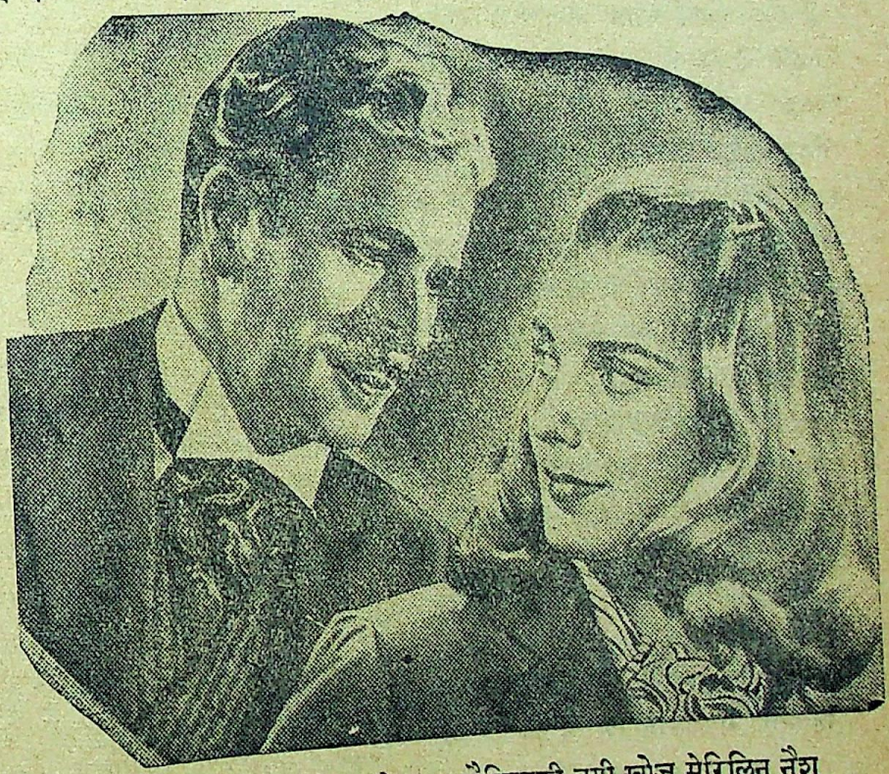

मोशिये वर्दा चित्रमें चार्ली चैप्लिनके साथ चैप्लिनकी नयी खोज मेरिलिन नैश

अमेरिकाके पूंजीपतियोंने आग बबूला होकर अमेरिका विरोधी कार्य कलापों' के विरुद्ध कार्यवाही करनेवाली संस्थाके पास नालिश की है और चार्लीके विरुद्ध अविलम्ब कार्यवाही करनेकी प्रार्थना की है लेकिन चार्ली पर रोक लगाना कोई सहज काम नहीं है। अमेरिकाके पूंजीवादी चार्लीके इस चित्रका कितना भी विरोध क्यों न करें लेकिन अमेरिकाकी शोषित जनता उनको ऐसा चित्र बनानेके लिये अवश्य बधाई देगी। 'मोसियो मर्दा' की कहानी इस प्रकार है। मोसियो मर्दा फ्रांसको एक बैंक के क्लर्क थे। १९३०-३९ के विश्वव्यापी आर्थिक संकटके समय उनकी नौकरी छूट गयी। घरमें रोगिनी पत्नी और बच्चे और उनके भरण पोषणका कोई उपाय नहीं। आखिर वर्दांने सफेद पोश खूनीका पेशा अपनाया। वर्दा राष्ट्रके सुसम्पन्न उप योगी नागरिक हो सकते हो लेकिन सामा-जिक विषमताओं और पूंजीवादी व्यवस्था के कारण उन्हें खूनी बनना पड़ा। पूंजीवाद में इससे तीखाव्यंग और क्या हो सकता है?

वर्दा विलास प्रिय फ्रांसके रईस-समाजमें तरह-तरहके वेष बनाकर, रूप धारण कर शामिल होता है। कभी मकान बेचनेवाला, कभी जेवर विक्रेताके रूपमें

(शेष ३६ वें पृष्ठ पर)

राजाजीमें मैत्री भाव

—*०*—

श्री ति० शेषाद्रि,

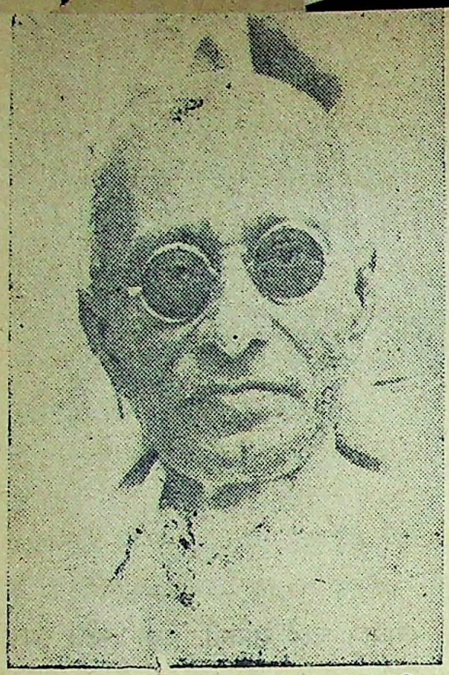

राजाजी

व्यक्तिगत दोस्ती, अबतक निबाही, यही राजाजीका अटल सिद्धांत है, राजनीतिक मतभेद हो, चाहे हैसियत संबंधी भिन्नता, कोई भी बात उनकी मित्रतामें अंतर नहीं डाल सकती है। इसकी पुष्टि में दो चार उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।-

जब युवक राजाजी सेलममें वकालत करते थे तभी सर-टी विजयराघवाचार्य उनके मित्र बने। आजतक वे ही नहीं उनके कुटंब सभी मनुष्य राजाजीके पक्के दोस्त हैं और उनके बीच एक कौटुंबिक नाता रहता है। एक बार कोई उनके मैत्री जालमें फंसा, तो समझिये वह आजीवन जकड़ा ही रहेगा।

एक समय तमिलनादका भाग्य था कि राजाजी और ईरोड शहरके प्रसिद्ध व्यक्ति थे। रामस्वामी नायकर (ई-वे-रा) और राजाजी राजनीतिक क्षेत्रमें कंधेसे कंधा मिलाये चल सकते थे। लेकिन परिस्थिति बदली गयी है ओर ई-वे-रा ब्राह्मण विरोधी, शुद्ध द्रविड अब्राह्मण संघके संगठक तथा नेता हैं और इस हैसियतमें वे ब्राह्मणोंके सबल विरोधी बने हुए हैं। उनकी ही यह कृपा है कि सांप्रदायिकताका यह लघुरूप चिनगारीकी तरह मौकेकी ताकमें तमिल प्रांतमें विचर रहा है।

पर ऐसी हालतमें भी राजाजी व्यक्तिगत तौरपर ई-वे-रा के पक्के दोस्त हैं। इ तो जरूर सेलममें उतरते हैं और नायकरसे मिल लेते हैं। राजाजी प्रांतके प्रधान मंत्री रहे और तब हिंदी विरोधी आंदोलनके प्रवर्त्तककी हैसियतसे ई-वे-रा को जेलकी सजा भुगतनी पड़ी। वह घटना भी उनको राजाजीकी व्यक्तिगत विरोधी नहीं बना सकी? शुद्ध कांग्रेसवादी राजाजीके साथी कभी कभी इससे अपनी असंतुष्टि जताते हैं पर इसका राजाजी पर कुछ असर नहीं पड़ता।

सेलमके, एक समय, श्री टी शिवज्ञानम नामक एक प्रभावशाली सज्जन डिपुटी कलेक्टर थे। तब राजाजी उनके मित्र बने। इतने घनिष्ट मित्र बने कि शिवज्ञानम के बच्चे भी राजाजीके ही घरमें पलने लगे। यही शिवज्ञानमजी अवकाश प्राप्ति के बाद राजनीतिके क्षेत्रमें उतरे, धारा सभाके मेम्बर बने और तीन सालके लिये मंत्री भी रहे।

एक दफे राजाजी कांग्रेस प्रचारार्थ तमिलनादमें भ्रमण करते हुए राजपालयम नामक इलाकेमें आये। वहां श्री रामचंद्रम पिल्लै नामक एक धनी तथा सम्पन्न घराने के सज्जन रहते हैं। राजाजी उनके ही घरपर ठहरे। घरके पुरुषोंसे बातचीत करते करते राजाजी पूछ बैठे कि घरकी स्त्रियां कहां हैं? लोगोंको बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि पिल्लैके घरमें पर्दोंकी प्रथा थी। पिल्लैने सामनेके विशाल मकानको दिखाया और कहा वहीं हैं। राजाजी तुरंत उठे और उस मकानकी ओर जाने लगे। घरके स्वामीको भी मजबूर होकर उनके साथ जाना पड़ा।

लोगोंका आश्चर्य तब सीमा पार कर गया जब उन्होंने देखा कि पिल्लैजीकी पत्नी "पिता जी! पुकारती हुई राजाजी के पैरोंपर गिर कर नमस्कार कर रही हैं। राजाजीने उनसे कुशल प्रश्न किया और पिल्लैकी ओर मुखातिब होकर कहने लगे, देखिये रामचंद्रम् जी! यह मत पिल्लैकी मृत्युके कारण व बाप का हो गया हैं। यह मेरी भी पुत्री है अतः सावधान रहें। बादको ही पिल्लैको पता चला कि उनकी पत्नी अपने बचपनका ज्यादा अंश वक्त राजाजीके घरमें बिता चुकी हैं। उनके विस्मित मुखमें आनंदकी आभा थिरक पड़ी।

इतना कहनेके बाद और एक बात—

राजाजीकी मित्रतासे कोई भी अनुचित लाभ नहीं उठा सकता। इस विषयमें राजाजी अपने दोस्तोंके निकट एक पहेली हैं। बहुतोंने कई बार कहा है:— यह क्या है? करते तो चिकनी चुपड़ी बातें, पर समय आया तो मदद नहीं देते। इसका मतलब यह नहीं है कि राजाजी मित्रोंकी सहायता ही नहीं करते। पर जब लोक सेवार्थ उनको कोई पद मिला तब मित्र उसे अपनी स्वार्थ सिद्धिका साधन बनावे यह बिलकुल असम्भव है।

लेखकको स्वयं एक उदाहरण ज्ञात है। जो इस कथनकी पुष्टि करा सकता है:—लेखकका एक मित्र है जो आजकल बम्बईमें किसी नौकरी पर है उसके पिता तमिलनादके किसी शहरके (नाम बतलाना नहीं चाहता) प्रतिष्ठित वकील थे। राजाजीका मंत्रित्व काल था। वे राजाजीके मित्र ही नहीं बल्कि दूरके रिश्तेदार भी थे। उन्होंने चाहा कि उस शहरके पब्लिक प्रासिक्यूटरशिप प्राप्त करनेमें राजाजीकी मदद ली जाय! यों तो वे नाम या दामके भूखे नहीं थे। पर, लोक सेवामें अपना सब कुछ अर्पण कर चुकनेके बाद वे उन दिनों जरा तङ्ग हालतमें थे। इसीलिये उनका इस संबंधमें प्रयत्न क्षम्य ही नहीं बल्कि उचित भी माना जा सकता था। खैर, वे और उनके सुपुत्र दोनों मद्रास गये और राजाजीने उनको अपने ही घर पर आरामसे ठहराया था। जब उनको किसी विधि पता चला कि ये किस उद्देश्यसे आये हैं तो खोदके साथ उन्होंने साफ-साफ कह दिया कि यह अपनेसे नहीं होने का

पहले तो वकील साहब झुंझलाये, पर उदारमन होनेके कारण ये यह कहते हुए वापस आ गये कि हां! यहां तो

(शेष ३६ वें पृष्ठ पर)

मीठी-छुरी

(हलालूराम हरमुस्टक)

पेटका पचरा

सुनता आ रहा हूं सम्पादकजी, अपनी धूलिया-लोटान अवस्थासे ही कि आपके कलकत्ता नगरमें भी कोई विश्व विद्यालय है।....उस विश्वविद्यालयमें वीरेशचन्द्र गुहा नामक कोई डाक्टर हैं। नेहरूजीकी तरह मैं भी....और मेरी बुद्धि भी सदा चकराती रहती है कि आखिर दुनियामें डाक्टरीकी इतनी करारी बाढ़ कहांसे फूट निकली है। व्याधियोंमें डाक्टर, विज्ञानमें डाक्टर, साहित्यमें डाक्टर और कहां-कहां डाक्टर....क्या हमें इतने डाक्टरोंकी आवश्यकता थी? पर हैं जरूर श्री वीरेशचन्द्र गुहा डाक्टर ही।...सुनता हूं, ये डाक्टर साहब आहार विशेषज्ञ हैं। आहार विशेषज्ञका एक अर्थ तो यह होता है कि भिन्न-भिन्न प्रकारके उत्तमोत्तम स्वादिष्ट भोजनकी क्रियात्मक योजनाके आप विशेषज्ञ हैं...और दूसरा यह कि किसी प्रकारका भी अन्न...कहीं से बटोरकर भूखसे ऐंठन खाते हुए पेटोंमें, येनकेन प्रकारेण, ठूंस देना!...यह भी एक विशेषज्ञता ही है। और यह भी हो सकता है कि किस आहार वस्तुमें... किस नम्बरका...कितनी मात्रामें 'विटैमिन' विद्यमान रहता है इस निष्कर्षको उस विशेषज्ञने हस्तामलक बना रखा हो। अन्तर्यामी ही जाने कि इन कतिपय आहार विशेषज्ञोंमें डाक्टर गुहा किस डिगरीके नम्बरपर चढ़ते हैं किन्तु हैं तो वे अवश्य ही आहार विशेषज्ञ...तिल भरनेकी भी इसमें गुंजाइश नहीं।

पटनेमें भारतीय विज्ञान कांग्रेसकी सब कमेटी द्वारा आयोजित विज्ञान और सामाजिक सम्बन्धोंके विषयमें होनेवाले विवादमें 'अन्न और दुनियाकी आबादी' सर्व प्रमुख विषय था!...इस विवादमें बलबलाते हुए डाक्टर साहबने बताया कि 'दुनियाकी बढ़ती हुई आबादी और अन्न की कमी आज चिन्ताजनक विषय बन इतने बड़े डाक्टरको चिन्ताका रोग लग जाना बड़े पश्चात्ताप की बात है।....इस गंभीर समस्याका तात्कालिक हल आजकी आधुनिकाओंने समुद्र मन्थन करके खोज निकाला है। जानते हैं सम्पादकजी...वह है 'बर्थ कण्ट्रोल!' इससे आबादीका बढ़ना तो अवश्य ही रुक जायगा। कंट्रोलके स्वर्ण युगमें इस कण्ट्रोलका महत्व कालिजकी जनानी डिगरियोंमें अपना खास महत्व रखता है।...एक ओर से जब वृद्धि रोक दी जायगी तो दूसरी ओरसे डाक्टर साहब विज्ञानके चमत्कार का नमूना दिखानेमें कमी कसर कर नहीं सकते। डाक्टर साहबने एक दिन घासकी चाय निर्माण करके पेयकी समस्याका समाधान कर लिया है तो क्या इस विषय संकटके समय बुरादेका आटा और कङ्करीटका चावल बनाकर बढ़ते हुए खाद्य संकटका मूलोच्छेद नहीं कर सकते?... अवश्य कर सकते हैं। आप छाती ठोंककर बताते हैं कि—'मेरे विचारसे अन्नकी कमीका भय झूठा है। यदि मानव समाज अन्न उत्पादनके नये वैज्ञानिक मार्ग अपनाये और नयी-नयी वस्तुओंको खाद्य सामग्रीमें सम्मिलित कर ले तो अन्नकी कमीका सवाल न रहे।' अपने इस परमोपयोगी निष्कर्षपर भरपूर जोर डालकर डाक्टर साहब कहते हैं कि—'आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्यमात्रके सामने विकासकी जो सम्भावनायें हैं उन्हें साहस के साथ अपनाया जाय।'—डाक्टर साहबका यह कहना सोलहो आने सच है कि अन्नकी कमीका भय झूठा है। सेठ-साहूकारों, मुनाफा खोरों, चोर बाजारवालों और रिश्वत खोरोंके हलवा मांड़े तो पहले से भी अधिक जोरोंपर चल रहे हैं... होटलोंकी चहल-पहल, सिनेमाके गुलछर्रे और गुलजार दावतें क्या खाद्यकी कमी की द्योतक हैं? इसकी कमी है तो गरीबों को..मजदूरोंको और सर्वस्व हारा लुण्ठित शरणार्थियोंको सो इनके लिये लकड़ीके बुरादे, इमलीके चीआंसे बने आंटे या पेड़के गूदेसे कोई खाद्य तैयार कर दिया जाय...सारा झंझट समाप्त हो जाय! यही तो रामराज्य है...यही जनतंत्र का सच्चा प्रमाण है।

चूहे कलैया मार रहे हैं और दूसरा जनतंत्र है अमेरिका। वहां बुद्धि एवं धनके कीड़े उनकी खोपड़ीको रात दिन चालते रहते हैं। डाक्टर साहबका ही कथन है कि—'अमेरिकामें वस्तुओंके दाम बहुत बढ़ गये हैं किन्तु वहां उत्पादनके नवीन साधन होते हुए उत्पादन क्यों नहीं बढ़ रहा है?... कारण यह है कि वहांके निवासी इस भयसे उत्पादन बढ़ानेमें हिचकते हैं कि यदि अन्न अधिक उत्पन्न होने लगा तो अनाजका भाव ही गिर जायगा।'...एक ओर तो भाव गिर जानेके भयसे उत्पादन बढ़ाये जानेसे भागते हैं और दूसरी ओर उत्पादन बढ़ानेके लिये गला फाड़-फाड़कर चिल्लाते और हुमच-हुमचकर जोर लगाते हैं। फिर भी सफलता देवी मुंह फूलाये ऐंठी-सी ही चली जाती हैं। सम्पादकजी, शासन तो उत्पादन के लिये ऐंड़ीका पसीना चोटीपर चढ़ाता नजर लाने लगा है...यदि देशके वैज्ञानिक भी इस मसलेको तै करनेके लिये कमर कसकर जुट पड़ें तो कोई कारण नहीं कि कठिनाइयोंकी नौका उसपार न लग जाय...! सो भाई मैं तो यही कहूंगा कि अब देशके समस्त वैज्ञानिक डाक्टर वीरेशचंद्र गुहाकी सलाह मान, जल्द ही वैज्ञानिक उपायोंसे खाद्यान्नके उत्पादनको चूड़ान्त पहुंचा देनेके लिये.. सब तरहकी आना कानी त्यागकर पिल पड़ें। शासन और विज्ञानके सम्मिश्रणसे जो मिकश्चर तैयार होगा, ध्रुव है कि उससे भारतकी यह भीषण व्याधि...असाध्य होनेपर भी कपूरके सदृश उड़ जायगी। इसमें संदेह करनेवालोंको आंखें आकाशपर तानकर अमेरिकाकी ओर निहारना चाहिये।

—०—

सफेद कोढ़ पर हजारों प्रशंसा पत्र और कई इनाम मिल गये। मू० १०) रु० ज्यादा हालके लिये डेढ़ आनेका टिकट भेजें।

वैद्य बोरकर बन्धु

मु० पो० मंगरूलपीर जि० आकोला (बरार)

कसौटी

—:*:—

श्री—"भृङ्ग" तुपकरी

(१)

एक पेड़की ऊंची डाली पर एक छोटा सा घोंसला था। उसमें दो पक्षी—नर और मादा—अपने बच्चों समेत निवास करते थे। हर कार्यमें दोनों एक दूसरेके सहयोगी थे। अपने सहचर पर आई हुई आपत्तिका दोनों प्राणपणसे सामना करते थे। एक दिन एक चीलने उनके घोंसले पर हमला कर दिया। नर मादा दोनों ही बाहर गये थे। वे लौटे तो उन्होंने चीलका अपने बच्चों पर वार करते हुए देखा। दोनों आग बबूला हो गये और उस पर टूट पड़े। चील बलवान थी। वह अपनी पैनी चोंचसे इन्हें घायल करती रही। किन्तु दोनोंने हिम्मत नहीं हारी और वे बराबर क्रमशः वार करते रहे। चील भी किसी हदतक घायल हुई किन्तु अन्ततः मादा पक्षी धराशायी हो गयी। उसका बदन लहूलुहान हो गया था। और ऊंचेसे गिरनेके कारण उसका दम छूट गया था। थोड़ी ही देर उपरांत नर भी मादासे कुछ फासले पर गिर पड़ा। उसने फैली हुयी चोंचसे चीलको देखा और फिर करुणा भरी आंखें अपनी मृत मादा की ओर फेर लीं।

पलक मारते उसका भी दम टूट गया।

दोनोंकी लाशें अपने अभिमानके पंख फैलाये हुये थीं क्योंकि दोनो अपने प्यारे बच्चोंकी रक्षाके लिये लड़ते लड़ते मरे थे। ईश्वरने उन्हें सफल नहीं किया यह उनका दुर्भाग्य था।

अफसोस, आज वे बहादुर पक्षी दुनियामें नहीं हैं!

(२)

एक बड़े शहरकी चौड़ी सड़क पर एक ऊंची अट्टालिका थी। उसमें एक धनाढ्य परिवार निवास करता था। मां बाप थे, बच्चे थे, भरापूरा घर था। हर खाते, साथ पीते, साथ सोते, साथ जागते। सबका आपसमें खूब स्नेह था। एक दिन, जब आतंकके बादल जमीन पर जोरोंसे बरस रहे थे, कुछ गुण्डोंने उनके घर पर हमला कर दिया। मां चिल्ला उठी, बाप कांप उठा, बच्चे चीखने लगे, और लड़कियां रोने लगीं। सब डरपोक निकले। चन्द लुच्चों-लफंगोंने सबको लूटा, मारा पीटा, बापके सम्मुख बेटे मारे गये और केवल अपनी जिन्दगीका लालच बापको बांधे रहा! भाइयो के सम्मुख बहनोंकी बेइज्जती हुयी, बापके सम्मुख बेटियों पर अत्याचार हुये! और सब डरके मारे थर-थर कांपते हुये देखते रहे! सबके सब बे मारे मर गये थे, सबके हौसले उनकी जिन्दगीका लालच चाट गया था। गुण्डे अपना कार्य करके बड़ी शानसे चले गये। अफसोस कि बहुतसे आदमी पशु पक्षियोंके समान भी गौरवकी मौत नहीं मर सकते!

उस डरपोक परिवारके अनेक सदस्य आज भी जीवित समझे जाते हैं।

—o—

राजाजीमें मैत्री भाव

(३४ वें पृष्ठ का शेषांश)

राजाजीके महत्वका रहस्य है! इसी निस्वार्थताकी वजहसे तो वे इस पदके योग्य समझे गये हैं!

राजाजी सेवा ही जानते हैं पर दाम या नाम नहीं चाहते। तमिलनादने कुछ ही समय पहले अपने इस सुयोग्य पुत्रका अन्यायपूर्ण अपमान किया था। तब भी वे अपने दोस्तोंसे कहां असन्तुष्ट हुए। कामराज नाडारका उस पुण्य कृतिमें बड़ा हाथ था पर अब वे ही यह कहते फिर रहे हैं कि राजाजी मुझ पर कभी अतृप्त नहीं हुए!

——

श्रेष्ठ चित्र

(३३ वें पृष्ठ का शेषांश)

देखा जाता है। उसको अनेक नारियां अत्मसमर्पण करतीं हैं लेकिन वे फिर अपने घर वापस नहीं लौटती। वर्दा उनका सर्वस्व ले लिवा कर अपने स्वर्ग भेज देता है। इस प्रकार कई नारियोंकी हत्या कर लेनेके उपरांत वर्दा का मुकाबला एक नारीसे हुआ। जब वर्दा उसको विष खिलाकर मारने जा रहा था कि उसी समय उसको पता चला कि यह स्त्री पति द्वारा वहिष्कृता अभागिनी है। बस, फिर क्या था वर्दा के हृदयके किसी कोनेमें छिपी भावकता या यों कहिये कि मनुष्यता जाग्रत हो उठी। उस स्त्रीके जीवनमें उसे जीवनका एक नया अर्थ मिला। वर्दा जब अपनी बीमार पत्नी और बच्चोंको देखनेके लिये बीच बीचमें अपने घर आता है तो वहां वह खूनी नहीं रहती वह वहां पति और पिताके वास्तविक रूपमें दिखायी पड़ता है। अगर हम वर्दा के इन दोनों रूपों पर ठीकसे गौर नहीं करें तो उसके चरित्रकी खूबियां आसानी से नहीं समझ पायेंगे। आर्थिक सङ्कटके बाद, नाजीवादी अ सीनियो पर फासिस्टोंकी चढ़ाई, स्पेनका गृहयुद्ध और उसके बाद द्वितीय महायुद्ध आया। द्वितीय महायुद्धमें वर्दा की स्त्री-पुत्र मारे गये उसके बाद वर्दा ने अपने खनी पेशेको छोड़ दिया और पुलिसको आत्मसमर्पण किया। फैसलेके बाद उसको फांसी की सजा दी गयी। हत्याको आधार बनाकर निर्मित होनेपर चित्र सुखतां है। मोसियो वर्दा की कहानी, निर्देशन आदि सब कुछ चार्लीने किया है। वर्तमान पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था की असङ्गतियों और व्यक्तिगत व्यवसायके अनियन्त्रित मुनाफाखोरों पर जितना तीखा व्यंग इस चित्रमें किया गया वैसा अन्य किसी चित्रमें देखनेमें नहीं आया।

——

चयनिका

आधी शताब्दी जेलमें

रोममें अण्टोनिया कोलिन नामक एक किसान आधी शताब्दीसे अधिक अपना जीवन जेलमें व्यतीत करनेके बाद अब ८० वर्षकी आयुमें अपने जीवनका दूसरा अध्याय प्रारंभ कर रहा है। उसको अपने पड़ोसकी स्त्रीकी हत्या करनेके अभियोगमें आजीवन कैदकी सजा मिली थी। गत ५६ वर्षोंतक यह बाहरी दुनियाकी बातें सिर्फ क्रमशः आनेवाले नये कैदियोंसे सुनता था। फिर भी मजेदार बात है कि वह इतनी लम्बी अवधिमें भी कभी निराश नहीं हुआ। बल्कि हमेशा सोचता रहा कि कभी न कभी मेरे मामलेपर फिरसे विचार किया जायगा और अन्तमें उसे माफी मिल ही गयी। अब वह रिहा होकर खेती कर रहा है।

० ० ०

नीला चन्द्रमा

ब्रिटेनमें कुछ दिन पहले नीला चंद्रमा देखा गया था। उसके संबंधमें प्रसिद्ध ज्योतिषी डा० डब्ल्यू० एच० स्टार्कन्सनका कहना है कि कोई भी नीलाचन्द्रमा देख सकता है। आपका कहना है कि सूर्योदय या सूर्यास्तके समय आकाश नारंगीके रंगका या रक्तिम हो जाता है। इसलिये उस समय चन्द्रमा नीला या हरा दिखायी पड़ सकता है। उसी प्रकार यदि कोई कोयले या गैसकी आग या आग उगलते हुए ज्वालामुखीको देखनेके बाद ही देखे तो रातमें चन्द्रमा नीला या हरा दिखायी पड़ सकता।

असाधारण मोटा बच्चा

लन्दनमें एक सवा सालका बच्चा है जिसका वजन ४२ पौण्ड है। साधारणतः बच्चे १८ से २४ पौण्डके बीचके ही होते हैं। इस बच्चेकी मांने राशनिंग विभाग में अपने बच्चेको कपड़ा तथा अतिरिक्त भोजनके लिये प्रार्थना पत्र भेजा है। डाक्टरोंका कहना है कि यह बच्चा आगे चलकर बहुत मोटा आदमी बनेगा।

* * *

तख्ते ताऊसकी खोज

७० वर्षीय अंग्रेज इंजिनियर बिल डरहम एक ज्योतिषीके कहनेपर मुगल बादशाहोंके तख्ते ताऊसकी खोजमें, जो ३० लाख पौण्डका है समुद्रमें पैठनेको तैयार हैं। तख्ते ताऊस १६६ वर्षपूर्व दक्षिण अफ्रीकाके समुद्रमें डूब गया था।

० ० ०

प्रलयकी भविष्य वाणी

आस्ट्रेलिया प्रवासी ११४ वर्षीय वयोवृद्ध भारतीय भविष्य वक्ता एवं ज्योतिषी श्री अमर गंगा सिंहने, जिनकी भविष्यवाणियां पिछले दिनों दो बार सही साबित हो चुकी हैं, फिर एक नयी भविष्यवाणी की है कि आगामी ५० वर्षोंके भीतर ही एक महा विनाशकारी विश्वयुद्ध होगा। भारतीय ज्योतिषीने गत १० दिसम्बरको भविष्यवाणी की थी कि 'बड़े दिनों' के रोज आधी रातके दो मिनट बाद आस्ट्रेलियापर सूर्यके धब्बे दिखायी देंगे। उनकी यह भविष्यवाणी सच निकली। इसके पूर्व उन्हने पुच्छल तारेके प्रकट होनेकी भविष्यवाणी की थी, वह भी सही निकली। अब आपने भविष्यवाणी की है कि आगामी ६० वर्षोंतक युद्ध जारी रहेगा जिसके अंतमें एक एक विश्व-व्यापी युद्ध होगा। लेकिन अंतिम महा विनाश और कत्ले आमके पूर्व ही ईश्वर सम्पूर्ण व्यक्तियोंको इस भूमिसे उठा लेंगे।

१९३३ से एक भी व्यक्तिका भक्षण नहीं

क्वीन्स लैण्डके सेण्ट जार्ज जिलेके आदिवासी नर भक्षक प्रसिद्ध है। इस बार उनपर आरोप लगाया कि वे हाल हीमें एक अंग्रेजको पका कर खा गये हैं। इस आरोपका आदिवासियोंने जबर्दस्त प्रतिवाद किया है और उनके प्रवक्ताने बताया है कि 'हमने १९३३ से एक भी व्यक्तिका भक्षण नहीं किया है।' यही नहीं अब हम लोग ने पहले की भांति छिपकली का खाना भी छोड़ दिया है। वस्तुतः यह देखा गया है कि आदिवासी अब गोश्त और तरह तरहकी तरकारियां पका कर खाते हैं और अंग्रेजको गायबकर खा जानेका आरोप उनपर झूठ मूठ लगाया गया है।

कलाकारकी अनुभूति

लन्दनका चार्लसथ्रेल नामक कलाकार द्वितीय महायुद्धमें जापानका बन्दी बना था। जेलमें उसे खबर मिली कि लंदनमें उसकी पत्नीको लड़की पैदा हुई है। चार्लस थ्रेलको अपनी पुत्रीका चित्र बनानेकी उत्सुकता पैदा हुई। लेकिन जेलमें चित्र बनानेका सामान कहां? वह कलाकार बेचैन हुआ। लेकिन आवश्यकता आविष्कारकी जननी है इस कहावत के अनुसार उसका रास्ता निकल आया। उसने रंगीन किताबों और उनके चित्रों को उबालकर रंग तैयार किये एवं अपने बालों से तूलिका। उसके बाद उक्त कलाकारने एक पंच वर्षीया बालिकाका चित्र बनाया। जेलसे रिहा होकर जब कलाकार लंदन आया और उसने देखा कि कल्पना द्वारा प्रस्तुत चित्र और उसकी पुत्री में बिलकुल समानता है, तो इसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। थ्रेलने बंदी गृहमें ८७ चित्र बनाये थे। वे सभी लन्दनकी कला प्रदर्शनमें रखे गये हैं। थ्रेलसे जब उसकी लड़कीके चित्र मनानेके रहस्यको

पूछा गया तो उसने सिर्फ इतना ही कहा कि मुझे अपनी प्यारी पुत्रीका चित्र बनाने की अंतः प्रेरणा मिली थी इसके सिवा मझे और कुछ नहीं मालूम।

जीवोंके आकारमें यह विभिन्नता क्यों ?

चहा जब हाथीके समीप पहुंचता होगा तो उसके हृदयको अवश्य यह ठेस लगती होगी कि कहा तो जाता है कि 'ईश्वर सबको समान रूपसे देखता है'— फिर कहां हम और कहां यह गज राज ! किंतु यह उसकी भूल है, ईश्वरने प्रत्येक जीवको उसकी सुविधाके लिये विभिन्न आकार प्रकार दिये हैं।

थोड़ी देरके लिये मान लिया जाय कि मनुष्यका आकार राक्षसोंकी तरह होता—६० फीट लम्बा आदमी। इस महामानवकी लम्बाई ही दस गुनी नहीं, बल्कि चौड़ाई और मटाई भी दस गुनी होती। इसका वजन तब हजार गुना होता-लगभग ८०-९० टन।

अभाग्यवश इसकी हड्डियोंका जोड़ मनुष्यसे केवल सौ गुना होता फलस्वरूप इस दानवकी हड्डियोंको, मनुष्यकी हड्डियों से दस गुना भार उठाना पड़ता। लेकिन मनुष्यके जांघकी हड्डियां, मनुष्यके वजनसे दस गुना भार या उससे भी कम भार वहन करने पर टूट जाती हैं। तब तो इस दानवकी हड्डियां कदम उठाते ही टूट जातीं। और हम आज बैठे ही रहते चल फिर नहीं पाते।

अब चिड़ियाखानेकी ओर नजर डालिये, हिरण जैसे संदर जीव ो कहीं बड़ा राना है कि विधाताने सब अङ्ग तो संदर सुष्ट बनाये पर उसकी टांग सूखी लकड़ी जैसी असंदर बना दीं। तब दो ही रास्ते इसके सामने रह जाते हैं या तो गेंडेकी तरह यह पैर छोटे और मोटे कर ले या जिराफकी तरह अपने शरीरको दबोचकर पैर फैला ले। शायद ही इन दोनोंमें कोई उसे पसंद आये।

० ० ०

कीड़े-मकोड़ों पर पृथ्वीकी आकर्षण-शक्तिका कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता, इन्हें जमीन पर गिरनेसे कोई कष्ट नहीं होता, ये फिर किसी भी चीजके सहारे दीवाल पर चढ़ सकते हैं। किंतु इनके लिये आकर्षण शक्तिकी तरह 'सतहका तनाव' बड़ा भयानक होता है। एक आदमीके शरीर पर नहानेके बाद लगभग एक बटा पचास इञ्च पानीकी परत रह जाती है, जिसका वजन लगभग आधा सेर होता है। एक भींगे चूहेको लगभग अपने वजनके बराबर पानी उठाना पड़ता है। एक मक्खीको भींगने पर अपनेसे कहीं अधिक पानीका भार वहन करना पड़ता है और यही कारण है कि एक बार भीग जाने पर मक्खी उड़ नहीं सकती।

प्रभावशाली व्यक्ति

जीलेट से हजामत बनाते हैं।

जिन व्यक्तियों को आप आदर देते हैं वे वास्तवमें वे व्यक्ति हैं जिन्होंने सफलता के इस सरलतम नियम का पालन सीख लिया है—एक सुव्यवस्थित, सुसज्जित आकृति। प्रभावशाली व्यक्तियों की बुद्धिमता से लाभान्वित होते हुये जिलेट पर विश्वास रखिये जो आपको इतने अल्प व्यय में प्रतिदिन जीवन की सर्वोत्तम और सब से स्वच्छ हजामत देता है।

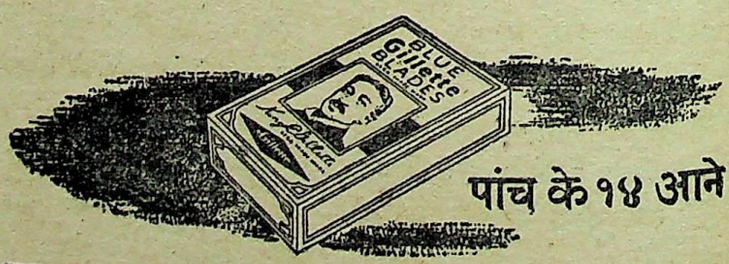

पांच के १४ आने

Blue Gillette Blades

ब्ल्यू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये !

एक पते की बात

'डेट्टल' को सदैव पास रखिये, और जब छूत का भय हो तत्काल उसका प्रयोग कीजिये।

'DETTOL'

TRADE MARK

डेट्टल आधुनिक इन्डिसैप्टिक

एटलान्टिस (इस्ट) लि०, चेतला रोड, कलकत्ता

लाइसेन्स की आवश्यकता नहीं

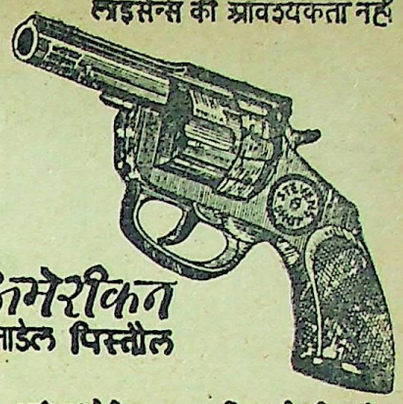

अमेरिकन माडल पिस्तौल

[illegible] है। इसे इधर उधर ले जाने में कोई खतरा नहीं। [illegible] चलने की चरखी लगी है। इसे घुमाते ही [illegible] आवाज और चिनगारियों से डर कर बड़े २ जंगली जानवर और खूंखार जानवर भाग खड़े होंगे।

मूल्य नं० ४४५५ ६॥) नं० ६६६६ ७॥) नं० ७७७७ ८॥)
व दर्शन अतिरिक्त रोज का मूल्य ५), चमड़े की पेटी ५), तेल की शीशी १।)

इण्डिया ट्रेडिंग कम्पनी, दर्शनपुरवा, कानपुर।

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजो सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसको सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी हैं। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर ता आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेको शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

होमियोपैथिक दवाइयां

प्रति डाम =) =)॥ आना है। हरएक बीमारियों की दवाइयां मय सैगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी

९८ नम्बर क्लाइव स्ट्रीट, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।

REGD. NO. C 2220.

AT AMAZINGLY LOW PRICE

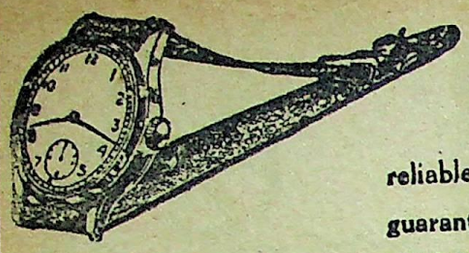

Lever movements jeelled wrist watches in fancy shapes, 36 hours winding with second hand, thick crystal glass, most reliable and accurate time keepers, guaranteed for 3 years, nickle silver cases with a nice strap and box.

Prices Rs. 26. Postage As. 12 (free for 2)
for white Chromium case Rs. 2 and Radium Dial Rs. 3 extra.
LIMITED STOCK NO ORDER FOR MORE THAN 3 ACCEPTED.

ORIENT WATCH SYNDICATE Dept. (14B) Colony Rd. DUM DUM

बवासीर

खूनी या बादी नई या पुरानी, अन्दरुनी या बाहरी चाहे जैसी बवासीर क्यों न हो उसपर महात्मा-प्रदत्त शक्तिशाली दिव्य महौषधि बवासीर की दवा तुरन्त जादू का सा असर करती है। केवल एक बार के इस्तेमालसे दर्द; खुजली, टीस; सूजन; जलन; मवाद आना खूनका गिरना फौरन दूर होता है। ३ दिन में खराब से खराब बवासीर; नासूर; भगन्दर बिना आपरेशन जड़से शर्तिया आराम होता है। लाखों निराश रोगी इसके व्योहार से अच्छे होकर अन्य रोगियों से इसकी सिफारिश करते हैं। कीमत २) दो रुपया डाक खर्च पृथक।

पता—भारत आयुर्वेद आश्रम, दरशन पुरवा (नं० ३) कानपुर

सुई फन-सो (तरल)

पानी की तरह पतली दवाई है और एक शीशी से लगभग ६० बार लगाया जा सकता है। उसके उपयोग के लिये मुलायम ब्रश भी रखा हुआ है। प्रत्येक युवक, अधेड़ और वृद्ध पुरुष के लिये स्तंभन रुकावट को बाबतमें अक्सीर है। इस दवाई की विशेषता यह है कि इसके उपयोग करने वाले दम्पति को मालूम भी नहीं होता है कि दवा लगाई है इस दवा का नियमित उपयोग करना भी आवश्यक नहीं है परन्तु एक ही शीशी के उपयोग के उपरांत बिना दवा के ही शरीरमें प्राकृतिक शक्ति का संचार होता है। १ शीशीका दाम १२) वी० पी० खर्च अलग।

चाईनीज मेडिकल स्टोर स्थापना १९३०

हेड आफिस—२८ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट बंबई | शाखायें—चार रास्ता, अहमदाबाद १२ डलहौसी स्क्वायर कलकत्ता, नया बाजार दल्ली।

सफेद बाल काला

इस तेलसे बालोंका पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दुगना मूल्य वापिस की शर्त लिखा लें यह तेल सिरके दर्द व सिरमें चक्कर आना आदि को आराम कर आंखकी रोशनी को बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मगवा लें।

श्रीइन्दिरा फार्मेसी पो० बेगूसराय, मुंगेर

जुकाम सर्दीपर अक्सीर उपाय

स्थापना १९२६

आसेवा

१८६६

नीलगिरि तैल

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमें काम देनेवाला

प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

अहः हः

'लालशर' तोमेरे लिये अमृत है!

लाल-शर

(लाल शरबत)

बच्चोंको मोटा, ताजा, स्वस्थ और प्रसन्नचित रखने की प्रसिद्ध मीठी दवा

सब जगह मिलता है।

डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लि० कलकत्ता

सम्पादक—देवदत्तमिश्र। ७४ घमतल्ला स्ट्रीट, स्थित इलेक्ट्रिक इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

विश्वमित्र

वर्ष—३० संख्या—५२ | ता० २१ जनवरी १९४८ | JANUARY 21, 1948. | वार्षिक मूल्य६=)

देशके युवकोंसे—

कठोर सत्य हैं, नहीं कहानियां,
जिन्हें सुना गईं कई शताब्दियां,
करो अतीतकी पुनः न गलतियां,
न कान बीच
उङ्गलियां
दिये रहो।

अनेक शत्रु देश पार हैं खड़े,
अनेक शत्रु देश मध्य हैं पड़े,
कुशल कभी नहीं बिना हुए कड़े,
सजग कृपाण
हाथमें
लिये रहो।

स्वतन्त्रता लता अभी मृदुल-नवल,
समूल पशु इसे कहीं न लें निगल,
कि हो हजार वर्षकी रगड़ विफल
युवक सचेत
चौकसी
किये रहो।

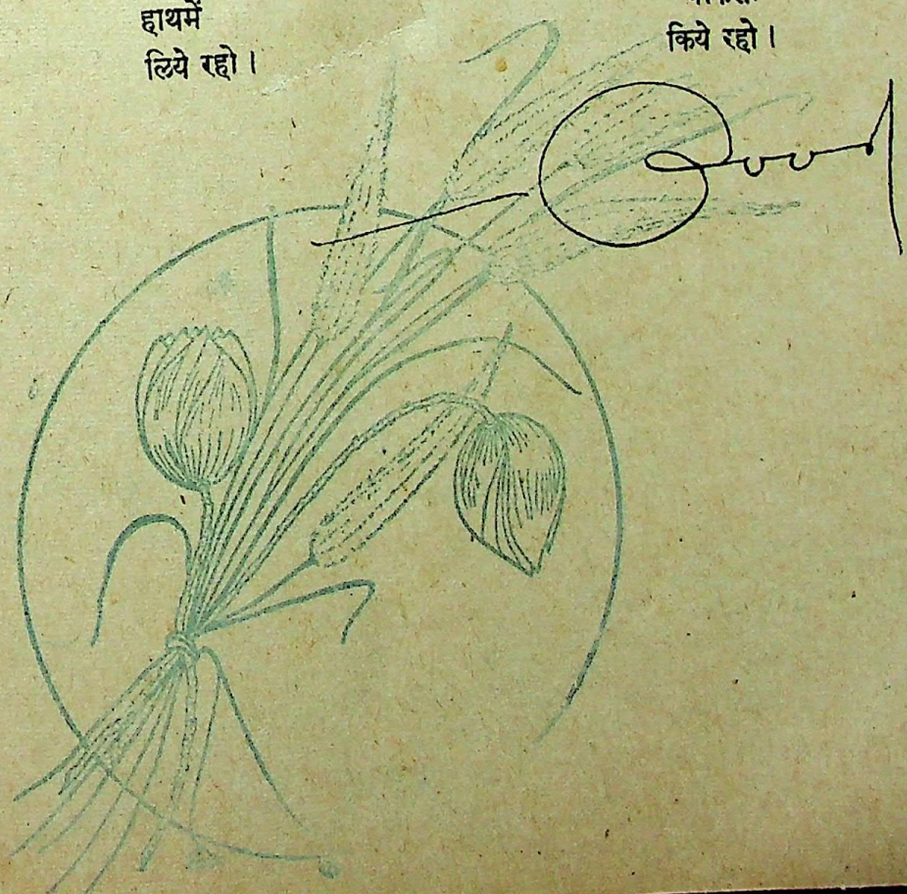

धूलमें मिल प्रेमियों की, यों उभरती है जवानी।

श्री अ० भिक्षु वामा

धूल में मिल प्रेमियों की
यों उभरती है जवानी।

१

जो प्रणय के शुभ्र पथ में
दे चुके बलिदान अपना।
रक्त से सींचा जिन्होंने
प्रेम का उद्यान अपना।
हाँ, उन्हीं की रक्त लाली
से सुमन के रंग निखरे।
झूपती मद-मस्त कलियां
विश्व से कहती कहानी।
धूल में मिल प्रेमियों की
यों उभरती है जवानी।

२

जो व्यथा के औ विरह के,
चिर मिलन के गीत गाते।
जो वियोगी बन कुसी
वैराग्य से धूनी रमाते।
खोजने पर भी न मिलता
चिन्ह जिनको शान्ति सुखका।
है अमर भण्डार जिनका
तप्त ज्वाला और दुखका।
भूल जाता विश्व जिनको,
याद कर बदनाम करता।
जिन अभागे प्रेमियों का
भाग्य भी उपहास करता।
वे मिटा अस्तित्व अपना
चिर व्यथा में जा समाते।
जो उमड़ती विश्व-उर में
प्रेम की बन कर निशानी।
धूल में मिल प्रेमियों की
यों उभरती है जवानी।

३

जो किसी की याद में हैं
भूल जाते आप को भी।
जो वरद मीठे समझते
हाय तीखे शाप को भी।
पान कर लेते गरल का,
प्रेम का सम्मान करते।
प्रेयसी के स्वेदकण पर
जो महा बलिदान करते।
प्रेम के उन पागलों को
आग में चाहे जला दो।
औ चिता की राख तक भी
महन सागर में बहा दो।
किन्तु सागर में उठेंगे
प्रेम के तूफान ऐसे।
जो थपेड़ों से लिखेंगे
फूल पर भी यह कहानी।
धूल में मिल प्रेमियों की
यों उभरती है जवानी।

परहित बस जिनके मनमाहीं।
तिन कहं जग दुलभ कछु नाहीं ।।

विश्वामित्र

फिर उपवास !!

महात्मा गांधी १३ जनवरीसे दिल्ली-में बिड़ला भवनमें उपवास कर रहे हैं। यह उनका १५ वां उपवास है। अभी चार महीना पहले ही वे गत सितम्बरमें कलकत्तेमें अनशन कर चुके हैं। जिस उद्देश्य से कलकत्तेमें उपवास करना पड़ा था इतनी जल्दी उसी उद्देश्यके लिये आज फिर उनको दिल्लीमें उपवास करना पड़ रहा है, इससे बढ़कर देशके लिये लज्जा और अकृतज्ञताकी बात दूसरी क्या हो सकती है। क्या देशने, खासकर गांधीकी जय बोलनेवालोंने, कभी गम्भीरतापूर्वक इस बातपर विचार किया है कि 'महात्मा गांधीके जीवनकी हानिका अर्थ है भारतकी आत्माकी मृत्यु, क्योंकि वे भारतकी आध्यात्मिक शक्तिके प्रतीक हैं।" शायद नहीं। क्योंकि भौतिक शक्तिके पुजारियोंको आध्यात्मिक शक्तिसे तभीतक वास्ता है जबतक उसे भौतिक उत्कर्षका साधन बनाना सम्भव है।

गांधीजीकी आध्यात्मिक शक्तिके साथ राजनीतिक उद्देश्यकी सिद्धिके लिये सर्वस्व त्याग और उत्सर्ग करनेवालोंकी तपस्याके फलस्वरूप देशने जो विजय प्राप्त की है उसे पराजयमें परिणत करनेवाली शक्तियां काम कर रही हैं। इन शक्तियों-को व्यर्थ करनेके लिये ही महात्माजीने इस वृद्धावस्थामें कठोर साधनाका मार्ग अवलम्बन किया है। शत्रु हमारी साधना या तपस्यासे प्रभावित होगा या नहीं सन्देहास्पद है। गांधीजी भी इसे महसूस करते हैं, इसीसे अनशन आरम्भ करनेके बाद दूसरे दिन अपनी प्रार्थना-सभामें उन्होंने यह कहा था कि पाकिस्तानकी हरकतोंको "संघ कबतक बर्दाश्त करेगा? हिन्दुओं और सिखोंके धैर्यकी भी एक सीमा है। इस तरहकी हरकतोंके होते हुए मैं उपवासके बावजूद कबतक उनके धैर्यकी आशा कर सकता हूं? पाकिस्तानको इस स्थितिका अन्त करना चाहिये। वे अपने हृदय शुद्ध करें और यह संकल्प करें कि जबतक हिन्दू और मुसलमान निरापद और सुरक्षित पाकिस्तान लौट नहीं आते तबतक हम चैन न लेंगे।" अभीतक पाकिस्तानियोंके हृदय-को गांधीजीके उपवासने स्पर्श किया है इसका कोई सबूत नहीं मिलता, उलटा वे गांधीजीके अनशनको अपनी नैतिक विजय समझते हैं। 'पाकिस्तान और भारतके बीचमें सन्देह और विवादके एक कारणको दूर करनेके इरादेसे" भारत सरकारने पाकिस्तानके साथ हुए आर्थिक समझौतेको तत्काल कार्यमें परिणत करनेका जो निश्चय किया है पाकिस्तान सरकारपर उसका कोई असर नहीं पड़ा, यह उसके अर्थसचिव मि० गुलाम अहमदके वक्तव्यसे स्पष्ट है। खैर, हम थोड़ी देरके लिये यही मान लेते हैं कि गांधीजीके अनशनसे भारत सरकारको अपनी भूल मालूम हो गयी पर हम यह पूछते हैं कि पाकिस्तानकी सरकारपर भी इसका कोई असर पड़ा है, क्या? कहां हैं कायदे आजम जिन्ना? क्यों नहीं वे भी सामने आकर अपने प्राणोंकी बाजी लगाकर अपने अनुयायियोंको सीधे रास्तेपर लानेका सच्चा प्रयत्न करते? क्या गांधीजीके उपवाससे उनका हृदय जरा भी द्रवित हुआ है? बिलकुल नहीं। किन्तु गांधीजीका मार्ग जिन्नाके मार्गसे भिन्न है। जिन्नाने घृणा और द्वेष, क्रूरता और प्रतिहिंसाके बलपर अपनेको प्रभावशाली बनाया है। विभाजन उनका आधार रहा है। प्रेम और अहिंसा सेवा और एकता गांधीजीको जीवनसे अधिक प्रिय हैं, यह उपवास इस बातका ज्वलंत प्रमाण है। तब उनका मार्ग जिन्नासे भिन्न क्यों न होगा?

गांधीजी कहते हैं कि आत्मशुद्धिके लिये मैं यह उपवास कर रहा हूं। उनकी धारणा है कि भारतमें उठी हुई आत्म-शुद्धिकी लहर पाकिस्तानको भी पाक बना देगी। इस तरह गांधीजीने पाकिस्तान और भारत दोनोंको शुद्ध करनेका बीड़ा उठाया है। गांधीजी कहते हैं कि भारतकी आत्मशुद्धिसे ही पाकिस्तान भी इस योग्य बनेगा कि वहां छोटासे छोटा आदमी भी वैसे ही सम्मानके साथ सुरक्षित रह सकेगा जैसे कायदे आजम रहते हैं। इस तरहका पाकिस्तान कभी मर नहीं सकता और जब वह इतना पाक हो जायगा तभी उसके पहले नहीं, मुझे इस बातका पश्चात्ताप होगा कि इसे मैंने कभी पाप कहा था क्योंकि आज भी इस सम्बंधमें मैं दृढ़ताके साथ यही विचार रखता हूं। और इसीलिये भारतकी आत्मशुद्धि द्वारा गांधीजीने पाकिस्तानकी शुद्धिका बीड़ा उठाया है। इस दिशामें गांधीजीकी सफलता चमत्कार ही समझा जायेगा। किन्तु इसके साथ-साथ यह भी हमें स्मरण रखना चाहिये कि गांधीजीकी सफलताएं चमत्काररूपमें ही सामने आयी हैं। भारतकी स्वतंत्रता इस चमत्कारका सबसे बड़ा निदर्शन है।

अभी उस दिन कलकत्तेमें हम यह चमत्कार देख चुके हैं जब 'रातो रात दुर्भाव सद्भावमें बदल गया।" गवर्नर जेनरल लार्ड माउण्ट बेटेनने इस चमत्कारपर कहा था कि पश्चिम पञ्जाबमें ५० हजार सरहदी फौज शांति रखनेमें सफल नहीं हो सकी पर अकेले गांधीजीके रूपमें संगठित इस सरहदी सेनाने कैसा चमत्कार कर दिखाया। अहिंसाके इस निःशस्त्र सेनानीने फिर अपना कदम उठाया है। गांधीजीके इस कदमसे भारतका शतसहस्र गुण नैतिक उत्तरदायित्व बढ़ गया है। भारतका महत्व और विशेषता पाकिस्तानके अनुकरणमें नहीं है बल्कि पाकिस्तानको अपने पद-चिन्हों-पर चला सकने में है। जो व्यक्ति या समूह 'गांधी मुर्दाबाद' या "गांधीको मर जाने दो" जैसे नारे लगा सकता है वह हिन्दू हो सिख हो या मुसलमान वह मनुष्य जीवनका कलङ्क है, अभिशाप है। अपनी कायरताका, स्वार्थान्धताका वह जीवित पुतला है। वह देशकी कौन कहे अपने प्रियसे प्रियका आततायियोंके खूंखारी पंजेमें सौंप कर अपने जीवनकी कामना करनेवाला नर कंकाल है। देश और समाजका सम्मान वही व्यक्त कर सकता है जो उसके गौरव और मानको अपना गौरव और मान समझ उसपर मर मिटता है। हमें आशा और विश्वास है कि

विश्वमित्र

इस तरहके व्यक्ति लाख-लाख कोटि कोटि की तादादमें गांधीजीके उपवाससे प्रभावित होंगे। गांधीजीका यही रास्ता है। वे अपनी अच्छाइयों द्वारा दूसरोंकी बुराइयोंको जीतते हैं। उनका यह प्रभाव ही हमको और संसारको चमत्कारके रूपमें दिखायी देता है। भगवान ऐसे चमत्कारी महापुरुषको शताधिक वर्षतक चिरायु रखें।

बंग सुरक्षा बिल—

गत सप्ताह बृहस्पतिवारको पश्चिम बंग व्यवस्थापिका परिषदमें विरोधी दलके दुराग्रहके बावजूद बंग सुरक्षा बिल १२ के मुकाबले ४७ वोटसे पास हो गया। विरोधी दलका दुराग्रह बेहयायीमें बदल गया था और 'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे' कहावत चरितार्थ करते हुए उन्होंने इस बिलपर विचारके दौरानमें ४६ बार मत गणना करायी। आज तक इसके पूर्व भारतकी किसी व्यवस्थापिकामें एक बिलपर कभी इतनी बार मतगणनाका प्रसंग नहीं आया। दो कम्यूनिस्ट सदस्योंका यह आचरण जितना निन्दनीय है मुस्लिम लीगके सदस्योंका भी उनसे कम नहीं है। यह विरोध नहीं कहा जा सकता। यह है अड़ंगा नीति और कम्यूनिस्टोंको याद रखना चाहिये कि इस-तरहका दुराग्रह और बेहयायी दिखा कर वे अपने ही हाथों अपनी कब्र खोद रहे हैं। मुस्लिम लीगी सदस्योंके संबंधमें कुछ कहना व्यर्थ है। भारतमें मुस्लिम लीग आज तलाक-शुदा मनचली जवान बीबी जैसा आचरण कर रही है। फलतः उसे क्षणिक सुहागके नामपर कोई भी बहका सकता है, फुसला सकता है। हम इस लीगसे इतना ही कहना चाहते हैं कि परित्यक्ता हो दुराचरणकी नीतिका अवलम्बन देशके लिये अच्छा नहीं है, इस लिये उसका हित इसीमें है कि वह अपने पुराने शुभैषी प्रेमिकोंमेंसे किसीके पल्ले बंध कर अपनी सकूनत बदल डाले अन्यथा यह नहीं होने दिया जा सकता कि वह अपने बेहयापनसे हमेशा एक नया फितना फसाद बरपा किया करें।

बिलपर बहसका जवाब देते हुए प्रधान मंत्री डा० घोषने एक बार फिर विरोधी आशंकाओंको दूर करनेके लिये यह आश्वासन दिया कि जबतक कांग्रेस सरकार अधिकारमें रहेगी वह बिना किसी जाति धर्म या वर्णका विचार किये सबका हित ध्यानमें रखकर काम करेगी। देशमें किसी समय विस्फोट हो जानेवाली स्थितिको देखते हुए बिना विचार बन्द रखनेकी व्यवस्थाको हम आजकी सबसे बड़ी आवश्यकता समझते हैं। हम जानते हैं कि यह अवांछनीय है, हम मुक्त मांगी हैं। किन्तु जानते हुए भी कि यह विष है क्या हमें कभी कभी मौतसे लड़नेके लिये कालकूट नहीं पीना पड़ता। चतुर वैद्य विषका प्रयोग बहुत सावधानीके साथ करता है। हर्षकी बात है कि डा० घोषने सरकारके प्रधान मंत्रीकी हैसियतसे यह आश्वासन दिया है कि वैध ट्रेड यूनियन अथवा किसान आंदोलनके विरुद्ध इसका प्रयोग नहीं किया जायेगा। इसके विपरीत देशमें एकतंत्रशाही या तानाशाही न बढ़ने पाये और लोकतंत्र प्रभावशाली ढंगसे काम कर सके, यह इस कानूनका उद्देश्य है और इसे पूरा करनेके लिये ही इसका उपयोग किया जायगा। हम चाहते हैं कि बङ्गाल सरकारके वे अधिकारी और कर्मचारी, जो इस बिल द्वारा प्रदत्त अधिकारोंका प्रयोग करेंगे, डा० घोषने परिषदमें और बाहर भी जो आश्वासन दिया है उसे शब्दशः याद रखेंगे और उसीके अनुसार आचरण करेंगे।

उपवास तोड़ा

छपते छपते मालूम हुआ कि महात्मा गांधीने रविवारको मध्यान्ह छठे दिन १२ बजकर ४० मिनटपर उपवास तोड़ दिया। उस समय उनके पास प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू, राष्ट्रपति डा० राजेंद्र प्रसाद, पाकिस्तानके हाई कमिश्नर, हैदराबादके एजेण्ट जेनरल और विभिन्न सम्प्रदायोंके प्रतिनिधि उपस्थित थे। इन प्रतिनिधियोंके मेल और शान्ति बनाये रखनेका आश्वासन देनेपर, भगवानको कोटिशः धन्यवाद जिसकी प्रेरणासे, गांधीजीने उपवास तोड़ दिया। हमें प्रसन्नता है कि गांधीजीकी हालत खतरनाक होने देनेके पहले ही ऐसी स्थिति पैदा कर दी गयी कि वे समय रहते अनशन तोड़ सके। गांधीजीका यह अनशन हिंदुस्तान और पाकिस्तानके दुर्वृत्तोंकी शक्तिको एक चुनौती थी। आध्यात्मिक शक्तिके आगे हिंदू हमेशा नतमस्तक हुए हैं। किंतु प्रश्न यह है कि क्या पाकिस्तान और भारतके मुसलमानोंके हृदय भी उसी तरह प्रभावित और परिवर्तित होंगे?

भगवानको कोटिशः धन्यवाद है कि उसकी प्रेरणाने गांधीजीसे उपवास भङ्ग कराया। क्या मुसलमानोंको यह सुबुद्धि आयेगी कि वे इस बातको समझें कि गांधीसे बढ़कर उनका मित्र कोई नहीं है। काश, मुसलमान यह समझ पाते?

सर्दार मुस्लिम विरोध—

सत्य बड़ा कटु होता है। स्वार्थ और क्षुद्रतासे पूर्ण मनुष्य सत्यकी चोट बर्दाश्त नहीं कर सकते और तब कटु सत्य कहने वाले व्यक्तिके वे दुश्मन बन जाते हैं और यह प्रचार करने लगते हैं कि सत्य के रूपमें वह अपने मनका कलुष प्रकट कर रहा है। अपने आचरणको न देखने वाले भारतके मुसलमानोंकी ठीक यही हालत है। भारतके उप-प्रधान मंत्री सर्दार बल्लभ भाई पटेलने इधर कुछ साफ साफ किन्तु सत्य बातें कहीं हैं। इन बातोंके लिये मुसलमान सर्दार पटेलको मुस्लिम विरोधी कहने लगे। इतना ही नहीं यह प्रचार भी किया जाने लगा कि इस प्रश्न पर सर्दार और गांधीजीके बीचमें विरोध खड़ा हो गया है। उपवास आरम्भ करने के बाद गांधीजीने अपने एक वक्तव्यमें यह कहा था कि सर्दार पटेल अब पहलेकी तरह मेरे 'हां हुजूर' नहीं रह गये। इस बातकी टीका मुस्लिम अंचलोंमें यह की जाने लगी कि सबसे अधिक सर्दार पटेल का हृदय परिवर्तन करानेके लिये गांधीजीने उपवास आरम्भ किया है। गांधीजी के सामने जब यह बात रखी गयी तो

उन्होंने कहा कि ऐसा विचार मेरे मनमें भी कभी नहीं आया। अगर मैं यह समझता कि मेरे वक्तव्यका यह अर्थ भी लगाया जा सकता है तो पहले ही मैं इस संदेहको मिटा देता। सर्दार पटेलके समालोचकों को मैंने यह समझा दिया है कि सर्दारको पण्डित जवाहरलाल और मुझसे अलग करके देखना उनकी भूल है। इससे उनका कोई हित नहीं हो सकता। साफगोई सर्दारको पसन्द है और इसीसे कभी कभी वह जान कर चोट करते हैं। किन्तु उनका हृदय बड़ा विशाल है और उसमें सबके लिये गुंजाइश है। मैंने सर्दारके सम्बंधमें यह बात इसीलिये कही थी कि जीवन व्यापी और सच्चे साथीको कहीं लोग गलत न समझें। सर्दार जब मेरे 'हां हुजूर' थे उस वक्त उनको मेरी बात अतःकरणसे रुचती थी। अब जब सत्ता उनके हाथमें आयी है अहिंसासे पहलेकी तरह सफलता पूर्वक उनका काम नहीं चल सकता। अब मैंने यह जाना है कि मैंने और मेरे साथके आदमियोंने जिसे अहिंसा समझा था वह खांटी दार्थ नहीं है बल्कि निष्क्रिय प्रतिरोधके रूपमें उसकी क्षीण नकल था। स्वभावतः निष्क्रिय प्रतिरोध शासक के किस काम की। क्या दुर्बल शासक किसीका भी प्रतिनिधित्व कर सकता है! वह अपने उन मालिकोंको ही अपदस्थ करेगा जिन्होंने अपनेको कुछ कालके लिये उसके नियंत्रण और उत्तरदायित्वके मातहत रखा है। मैं जनता हूं कि सर्दारके हाथोंमें जो पवित्र उत्तरदायित्व हैं उसका कभी तिरस्कार या विश्वासघात वे नहीं कर सकते। मुझे ताज्जुब होता है कि मेरे वक्तव्यकी इस पृष्ठभूमिको जानते हुए कोई व्यक्ति यह कहनेका साहस कैसे कर सकता है कि मैंने गृह सचिवकी नीतिके विरुद्ध अनशन किया है। बात यह है कि मुस्लिम लीगका भूत अब तक जिनपर सवार है वह यही क्यों गांधीजीको भी मुस्लिम शत्रु कह सकते हैं और कह सकते क्यों एक दिन कहते ही थे।

यह परिवर्तन क्यों ?

पश्चिम बंगालके वर्तमान मंत्रिमण्डलमें जो परिवर्तन होने जा रहा है, डा० प्रफुल्लचन्द्र घोषके स्थानमें डा० विधान चन्द्र राय जो प्रधान मंत्री बनने जा रहे हैं प्रांतका साधारण नागरिक यह जानना चाहेगा कि यह परिवर्तन क्यों होने जा रहा है। कांग्रेस नेता डा० विधान चन्द्र रायको युक्तप्रांतका गवर्नर बनाना चाहते थे, पर उन्होंने कुछ दिनतक टालमटूल करते रहनेके बाद जब गवर्नरी स्वीकार नहीं की तभी यह आशंका हुई थी कि बंगालकी राजनीतिमें शीघ्र ही कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होने जा रहे हैं। उस दिन जब बंग व्यवस्थापिका परिषदमें विश्वविद्यालयके प्रतिनिधिके रिक्त स्थानके लिये डा० राय उम्मेदवार खड़े हुए तब पहलेकी आशंका इस विश्वासमें बदलने लगी कि कांग्रेस असेम्बली पार्टीमें डा० घोषके विरुद्ध जो असंतोष एक बार प्रकट किया जा चुका है उसे अब अपनी मनोकामना पूरी करनेका रास्ता मिल गया और डा० घोषको हटाकर उनके स्थानपर डा० रायको एवं दूसरे असंतुष्ट व्यक्तियोंको मंत्रिमण्डलमें बैठानेका उपक्रम किया जायेगा। डा० रायके व्यवस्थापिका सदस्य चुन जानेकी घोषणा होते ही कार्य आरंभ हो गया और जब पार्टीके अधिकांश सदस्योंने यह प्रकट कर दिया कि हम आपको नहीं चाहते तो डा० घोषने अविलम्ब त्यागपत्र दे दिया। प्रफुल्लबाबूके त्याग और तपस्याने एक दिन उनको पश्चिम बंगालका प्रधान मंत्री बनाया था और शायद उनकी यह त्याग और तपस्या ही उनके प्रधान मंत्रित्वसे हटनेका कारण हुई है क्योंकि यह त्याग तपस्या बहुतोंके सुखस्वार्थान्वेषणके मार्गमें शायद बाधक सिद्ध हो रही होगी। अन्यथा जो कभी घोरसे घोर संकटकालमें पश्चात पद नहीं हुआ और देशके संकटके समय जिस व्यक्तिने साहस और दृढ़ता, संकल्प और तेजके साथ प्रांतका शासन सूत्र संचालित किया उसे हटाकर आज ऐसे व्यक्तिको क्यों उस स्थानपर लाया जा रहा है जो देशका स्वतन्त्रता-आंदोलन जब जोरोंपर चल रहा था, देशवासी एक तरफ निरंकुश ब्रिटिश दमनचक्रके शिकार हो रहे थे, दूसरी तरफ आर्थिक चक्रसे पीसे जा रहे थे उस समय वह राजनीतिक क्षेत्रसे बहुत दूर था। यह बात प्रायः देखी गयी है कि शासनके लिये अन्य तमाम गुणोंसे सम्पन्न व्यक्तिमें यदि पर्याप्त मात्रामें आत्मिक बल नहीं होता तो अनीति और जनाचारको उसका सहज प्रश्रय मिल जाता है। क्या हम आशा करें कि अपने प्रधान मन्त्रित्वकालमें डा० विधानचन्द्र राय इस तथ्यको दृष्टिगत रखेंगे।

सूनापन मुझे नहीं भाता

सूनापन मुझे नहीं भाता।
अब मधुर नहीं लगते दुख पल,
कितने सुन्दर मादक सुख पल,
एकाकीपन, दुखका सूचक, मधु मिलन हृदय में मुसकाता।
सूनापन मुझे नहीं भाता।

जीवन-सर में जलजात खिला,
खोया सुख उनके साथ मिला,
सुखकी मस्ती में बेसुध सुख-सरिता में आज बहा जाता।
सूनापन मुझे नहीं भाता।

दुख-गान, मनोहर गान हुए,
पूरे सारे अरमान हुए,
अब याद नहीं आती पिछली, मधु-सुख ही ऐसा मदमाता।
सूनापन मुझे नहीं भाता।

—प्रो० मित्तल, एम० ए०

अन्तर्राष्ट्रीय

ब्रिटेन और रूस—

ब्रिटेनके प्रधानमंत्री मि० क्लेमेण्ट एटली ने एक सप्ताह पूर्व अपने ब्राडकास्ट-भाषण में सोवियट रूसके ऊपर आक्षेप करते हुए कहा था रूसी साम्राज्यवाद, साम्राज्यवादके एक नये रूपको जन्म देता है जिससे यूरोपके अन्य राष्ट्रोंके जीवन और उन्नति के मार्गको भारी खतरा है। प्रधानमंत्री मि० एटली के इन आरोपोंका उत्तर मास्को से प्रकाशित होनेवाले रूसी कम्यूनिस्ट पार्टीके मुखपत्र 'प्रवदा'ने दिया है। उक्त पत्रने लिखा है कि उस भाषणमें राजनीतिक सिद्धांतो की अनभिज्ञता और राजनीतिक हृदय हीनताका परिचय दिया गया है।

मि० एटलीने प्रजातंत्र सामाजिक न्याय और व्यक्तिगत स्वतंत्रताका राग उस देशके सम्बन्धमें अलापा है, जहां एकाधिकार वादियोंका बोलवाला ह। मि० एटलीने ब्रिटेनके रूस और अमेरिका के बीचका मार्ग अपनानेका दावा किया है प्रवदा' ने कहा है कि इस ब्राडकास्टके पहले ही मालूम था कि मि० एटली साम्राज्यवाद विरोधी गुट्टमें नहीं है। उनके जैसा क्षणिक पंथी श्रमिक नेता जानबूझ कर रूस विरोधी हो गयी, इस ब्राडकास्ट-के द्वारा तो मि० एटलीने इस सत्यकी सार्वजनिक रूपसे पुष्टि की है। मि० एटलीने साम्यवादसे यूरोपीय सभ्यताको बचानेकी बात कह कर ट्रूमैन-मार्शल सिद्धान्त जो यूरोपीय जनताके लिये मृग-मरीचिका है, में अपनी आस्था प्रकट की है। मि० एटलीने अमेरिकन पूंजीवादके प्रजातंत्रवादी प्रणालीका आदर्श बताकर गुण गाये हैं। अगर इसीको सोवियट रूसके साम्यवाद और अमेरिकन पूंजीवादसे स्वतंत्र मध्यम मार्ग कहा जाय तो फिर डालरकी गुलामी किसे कही जायगी?

जब शत प्रतिशत प्रजातंत्रवादी लेबर पार्टीके मंत्री मि० मार्गन फिलिप्स अमेरिकन साम्राज्यवादके आदेशोंके अनुसार ब्रिटिश मजदूर संघोंसे कम्यूनिस्टोंके (निष्कासनका प्रयास करते हैं तो वास्तविक प्रजातन्त्रवाद क्या है, अ तमें 'प्रवदा' ने ब्रिटेनके)श्रमिकदलको भारतकी समस्याके समाधानकेलिये दोषी बताया है और लिखा है कि भारतमें लाखों हिन्दू मुसलमानोंका जो रक्तपात हुआ उसका समस्त अपराध ब्रिटिश श्रमिक दलकी नीति पर है।—मारिसनने ब्रिटेनके उप प्रधानमंत्री मि० हर्बर्ट मारिसन रूस द्वारा ब्रिटेनपर किये आरोपोंकी असत्य और विद्वेषपूर्ण बताया है। उन्होंने कहा है कि शान्ति रक्षा एवं मानवताकी भलाईके लिये हम सोवियट रूसके सहयोगकी महती आवश्यकता समझते हैं। लेकिन हम अपने देश एवं अपने आधार पर सदैव असत्य और विद्वेष पूर्ण आरोप नहीं होने देना चाहते हैं। हमें यह देखकर प्रसन्नता नहीं है कि पूर्वी और दक्षिणी यूरोपके देश एकके बाद एक अप्रजातंत्र वादी कम्यूनिष्ट सरकारों के गुलाम बनते जांय। उन देशोंमें अन्य राजनीतिक दलों एवं अखबारोंकी स्वतंत्रताको कुचलकर कम्यूनिस्ट सरकारें गठितकी जा रही है तथा गैर कम्यूनिष्ट नेताओंपर मामले चलाये जा रहे हैं। हम इसको मानव स्वतंत्रताके लिये घातक समझते हैं।

ब्रिटेन और सोवियटरूसके बीच लन्दन की पर राष्ट्र सचिवके समाप्त होने बाद एक नयी स्थिति उत्पन्न हुई है। और अब दोनों देशोंके मतभेदोंकी खाई अधिक चौड़ी हो गयी है। जर्मनीको लेकर यह मतभेद और भी व्यापक हो सकते हैं। उधर अमेरिका सोवियट रूस और उसका समर्थन करने वाली कम्यूनिस्ट पार्टियोंके विनाशके लिये हरचंद और यूरोपके अन्य कई देशोंसे यह स्पष्ट हो चुका है। जो भी हो, इन बातों के अध्ययनसे यही मालूम पड़ता है कि अब विश्व शान्तिका स्वप्न तो दूर हो रहा है तृतीय महायुद्ध के दिन करीब आ रहे हैं।

ट्रूमैनकी चेतावनी—

१९४८-४९ के लिये ३९७० करोड डालरका बजट पेश करते वक्त अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रूमैनने कांग्रेसको सतर्क करते हुए कहा है यदि यूरोपमें तानाशाहीका आधिपत्य हुआ तो अमेरिकाको सशस्त्र रहना पड़ेगा। इसीलिये अमेरिका की परराष्ट्रनीतिके व्यावहारिक रूप प्रदर्शन करनेके लिये विभिन्न देशोंके सहायतार्थ ७०० करोड डालरके व्ययका हिसाब रखा है। उनके बजटमें चीन और यूरोपके सिवा अन्यान्य देशोंको छोड़कर सुदूरपूर्व देशोंमें मार्शल योजनाके चालू करनेका निर्णय किया गया है। बजटसे पता चला है कि भविष्यमें होने वाले युद्धकी सम्भावना की ओर लक्ष्य कर अमेरिका नियमानुसार तैयारियां कर रहा है। इसके सिवा मार्शल योजना या डालर मददका असल मतलब किसी देशके पुनर्गठनमें सहायता पहुंचाना नहीं है यह राष्ट्रपति ट्रूमैनके बजट भाषणसे स्पष्ट समझा जा सकता है। यूरोप एवं अन्यान्य संकटग्रस्त अंचलोंमें बजटके अनुसार काम न होने पर वहां तानाशाही कायम हो जानेकी आशंका बतायी गयी है। लेकिन अमेरिका की परराष्ट्र नीति और मार्शल योजनासे दिलचस्पी रखने वाले जानते हैं कि तानाशाहीका प्रतिरोध करनेके लिये ही तो अमेरिकाको प्रजातन्त्रका अस्तित्व बचाने के लाले पड़ गये हैं। ट्रूमैनको आगामी चुनावमें अपनी पराजय दिखलायी पड़ रही है। इसलिये उनको बजट भाषणमें कुछ ऐसी बातें कहने पड़ी है, जिनसे अमेरिकाके साम्राज्यवादी मनोभावका स्पष्टीकरण हुआ है। अमेरिका अपने साथ ब्रिटेनको रख करके विश्वशांतिमें कितना खलल डालेगा, इसकी अभी कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

मनुष्य और हृदय

श्रीमती शिवरानी देवी प्रेमचन्द

पंडित पद्माकर अपनेको पण्डितोंसे श्रेष्ठ समझते ही नहीं, बल्कि थे भी। इनकी लड़की नीरा बड़ी सुशील थी। इन्हें आप बहुत प्यार करते। मेलेका दिन था। विजयादशमीकी हर जगह धूम थी। पण्डितजी नीरासे बोले—बेटी, मेला देखने नहीं चलोगी ?

नीरा—क्यों नहीं ! मां भी तो चलेंगी।

पण्डितजी—जाकर मां से पूछो न ?

नीरा जाकर मांसे बोली—माताजी, चलो।

मां—नहीं। तुम जाकर देख आओ।

नीरा—क्यों, आप क्यों नहीं चलतीं ?

मा—आज विजयादशमी है। ठीक न होगा।

नीरा—मां तुम्हे भगवान्का छवि-दर्शन करनेके लिये चलना चाहिये।

मां - नहीं बेटी तुम अकेले जाकर देख आओ।

पण्डितजीने बाहरसे आवाज दी—नीरा, चलती हो। जब भीड़ हो जायगी तो चलना कठिन हो जायगा।

नीरा सामने आकर बोली—मां तो नहीं चल रही हैं पिताजी !

पण्डितजी—तुम्हारी मां बेवकूफ हैं। तुम अकेली चलो।

नीरा तैयार होकर मेला देखने पिताजीके साथ चली।

* * *

मेलेमें भगवान्का दर्शन करने जब पण्डितजी आगे बढ़े तो नीरा भीड़में दूसरी ओर भटक गयी।

बहुत देर बाद पण्डितजी घबराकर इधर-उधर ढूंढ़ने लगे कि नीरा कहां गयी ? नीरा और पण्डितजी दोनों एक दूसरेको ढूंढ़ने लगे।

पण्डितजी रात ११ बजे तक नीराको ढूंढ़ते रहे, पर सफलता नहीं मिली।

जो भी मिलता, नीरा उसीसे अपने पिताके बारेमें पूछती कि कहीं पिताजीको आपने देखा है ?

इतने बड़े शहरमें कौन जानता है कि किस मुहल्लेमें पण्डितजी बसते हैं, किस मुहल्लेमें नीरा। रोते-पीटते पण्डितजीने जाकर थानेमें हुलिया लिखायी। पुलिस-उसको ढूंढ़ती है, जिसका पता चल जानेपर गवर्नमेण्ट इनाम देती है। मगर आम जनताकी आवाज पुलिसके कानों में कहां पहुंचती हैं ?

पण्डितजीको अन्तमें यह ख्याल आया कि कहीं नीरा घरपर न चली गयी हो।

लेखिका

पण्डितजी जब घरपर पहुंचे तो अपनी पत्नी माधुरीसे बोले—माधुरी नीरा घरपर आयी कि नहीं ?

माधुरी—नीरा तो घर नहीं आयी। गयी कहां ?

पण्डितजी—नीराका साथ तो पहुंचते ही छूट गया। पता नहीं, बिटिया कहां है ?

माधुरी कैसे क्या हुआ ? यह कहती हुई वह धड़ामसे गिर पड़ी। चीखती हुई बोली—यह अनर्थ हो कैसे गया ?

पण्डितजीका क्रोध और शोक दोनों उमड़ पड़े। क्या नीरा तुम्हें ही प्यारी थी। इस तरह बोल रही हो, मैंने मानो जान-बूझकर उसे खो दिया।

माधुरी—मेरी १२ सन्तानोंमें वही आखिरी सन्तान बची है। उसे भी तुमने खो दिया। हाय, राम ! मेरे ईश्वर मेरे पास भेजवाओ।

माधुरी इस तरह पागल मत बनो। ईश्वर मेरे साथ अन्याय नहीं करेगा। तुम क्यों इतनी चिन्तित हो रही हो ?

* * *

आज चार दिनोंसे माधुरीके मुंहमें न पानी गया, न दाना।

पण्डितजीको माधुरी और नीरा दोनों पर क्रोध आता। माधुरीसे बोले—पागल मत बन। अब इससे काम नहीं चलनेका।

माधुरी—आखिर मनको कैसे समझाऊं।

पण्डितजी—अगर वह मुसलमानके यहां हो तो।

माधुरी—तो क्या ? हर हालतमें वह मेरे स्नेहकी अधिकारिणी होगी।

पण्डितजी—तुम ऐसी कुलटाओंने ही हिन्दूधर्मका नाश कर दिया।

माधुरी—आज स्त्रियां ऐसा हृदय और मस्तिष्क लेकर सारे संसारका कल्याण कर सकती हैं। तुम्हें लज्जा नहीं आती कि लड़कीको खोकर आये हो और लम्बी लम्बी बातें भी बना रहे हो। मेरा कलेजा फटा जा रहा है और तुम हिन्दू धर्मके नामपर सती हो रहे हो !

* * *

ईदू मुसलमानके घर नीराको आये आठ रोज हो गये।

ईदूके घरमें उसकी एक बूढ़ी मां है। और खुद। मध्यमश्रेणीका एक लुंगाड़ा है वह।

ईदूकी माने नीराको देखा तो उसकी आंखोंमें आंसू भर आये।

ईदूने अपनी मांको सहेजते हुए कहा—इसको संभालकर रखना। किसीको कानों कान भी खबर न होने पावे।

मां—कहांसे लाये बेटा, इसे ?

ईदू—तुमसे इससे मतलब। इसे घरमें रखो। अगर इसने हमारा धर्म कबूल करके घरमें रहना स्वीकार न किया तो इसे तलवारके घाट उतार दूंगा। इसको रास्तेपर लाना तुम्हारा काम है। इतना कहकर ईदू बाहर चला गया।

नीराके पास बैठकर बुढ़िया पूछने

लगी—बेटी, तुम कहां की हो क्या तुम्हारा नाम है, किस शहर की हो ?

नीरा—मां, मैं बनारस शहर की हूं। पक्के मुहाल की। ब्राह्मणकी लड़की हूं। मेरा नाम नीरा है।

नीरा यह कहती हुई बुढ़ियाके पैरों पर लेट पड़ी। बोली—तुम मुझे अपनी पुत्री समझकर अपनाओ। मेरी रक्षा अपने बेटेसे उसी तरह करो, जिस तरह अपनी बेटीकी करती !

बुढ़िया—बेटी तेरी रक्षा खुदा करेगा। मैं खद चाहती हूं कि तुम सरक्षित रहो। तेरी हालतपर मुझे रहम आ रहा है, आज तुम्हारी मां क्या सोचती होगी ? तुम निकली कहां थी बेटी, यह बड़ा शरारती है। इसके करतबोंको देख कर बड़ी चिंता होती है, बेटी ! यह मेरा पुत्र होने लायक नहीं था। मगर अफसोस ! ऐसी सन्तानके साथ मेरी भी बदनामी हो रही है।

बुढ़ियाके ये शब्द सनकर नीरा फिर रोने लगी।

बुढ़िया सिरपर हाथ फेरती हुई बोली तुम घबड़ा मत बेटी। मां-बापके पास तुम्हें पहुंचाऊंगी, तुम चिंता न करो, बेटी, मैं जानती हूं कि अपने मां-बाप, अपना धरम-करम सबको प्यारा होता है। तुमने कुछ खाया नहीं बेटी, तुम्हें कुछ खा लेना चाहिये। बोलो, मैं जाऊं किसी हिंदू लड़केके हाथ उसके घरका बना हुआ खाना लाऊं। जहांतक हो सकेगा, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी।

इसके बाद बुढ़िया घरसे निकलकर बाजारकी ओर गयी। वहांसे एक घण्टेके बाद एक हिंदूके हाथ, खाना लिवा लायी। बोली—नीरा, जब तुमने मुझे अपनी मां बना लिया तो मेरा कहा मान और खा। मेरी बातपर विश्वास कर। तुमने खद ही कहा है कि बेटीकी तरह मेरी रक्षा करना। बेटी, मैं रक्षा करूंगी। चाहे इसके लिये मुझे अपनी ही जान देनी पड़े।

नीरा रोती जाती और किसी तरह कौर निगलती रही।

नीरा जब खा चुकी तो बुढ़िया बोली मैं तुम्हारे घर जरूर पहुंचाऊंगी।

खा पीकर नीरा बैठी ही थी कि उसके पड़ोसके मीरू चाचा आ पहुंचे। आवाज लगायी—फफी जी हैं। बुढ़िया सहमी हुई मीरूके पास निकल आयी। बोली—कहांसे आ रहे हो बेटा।

मीरू—बहुत दिन हो गये थे। सोचा चलूं फूफीको सलाम करता चलूं। आज कलका कुछ ठिकाना है।

फूफी बैठकर हाल-चाल पूछने लगी—

मीरू—सभी अच्छे हैं और कोई अच्छा नहीं है। आज कल मिनट-मिनट की बात नहीं कहीं जा सकती।

बुढ़िया—क्या मुसलमान बहुत मारे जा रहे हैं बेटा ?

मीरू—गुण्डे दोनों में हैं। किसी कौममें कोई खराबी नहीं है। आज दस रोज हुए मेरे पड़ोसके पण्डितजीकी लड़की का पता नहीं चल रहा है। मां दहाड़ मारकर रो रही है। सच कहता हूं। नीरा के खो जानेका दुःख मुझे बहुत है। वह मझे भी चचा-चचा कहती थी।

मीरू नाम सुनकर बुढ़िया सहम गयी। धीरेसे बोली—ईदू एक लड़की लाया है। उसे चलकर पहचानो तो। ईदू को इसका पता लगा तो वह मझे जिंदा न छोड़ेगा। उसे मैंने अपनी पुत्री माना है। उसे उसकी मां के पास किसी तरह भेज दो। मैं तुम्हें दुआ दे रही हूं। तुम्हें बड़ा यश होगा।

बुढ़िया मीरूको नीरूके कमरेकी ओर ले गयी।

नीरा मीरूके पैरोंपर गिरकर बोली अब हम बच जायंगी चाचा ! तुम बड़े भागसे मिले। मझे बचा लो।

मीरूने कहा—बेटी तुम मेरी बेटी हो। जैसे होगा, तुम्हें यहांसे अलग करूंगा। लेजाऊंगा और तुझे तेरी मांसे मिलाऊंगा। तेरी मदद करूंगा, घबराओ मत बेटी !

बुढ़िया—वही लड़की है बेटा !

मीरू—हां वही है। इसे मैंने अपनी लड़कीकी तरह गोदमें खेलाया है। इसकी मां भी बड़ी अच्छी और भली लड़की है। व्रत-त्यौहारपर यह मेरे बच्चोंको भी अपने ही बच्चोंकी तरह खिलाती-पिलाती है। इसकी मां बड़ी नेक है। बाप तो पूरा पण्डित है।

बुढ़िया—इसका क्या मतलब ?

मीरू—आदमी, सभी आदमी नहीं होते ? आदमियोंमें हैवान भी तो बहुत हैं।

बुढ़िया—इसको इस तरह ले जाओ कि ईदू न देखने पावे।

मीरू यों, न जाने देगा ईदू !

बुढ़िया—ईदू इतना ही भलामानुस होता तो उसे घर लाया होता। वह तो आदमी नहीं, शैतान है ? इसे चोरीसे भगाना होगा।

मीरू—ईदू गया कहां है ?

बुढ़िया—मालूम नहीं वह गया कहां है ? इसी वक्त इसे लेकर तुम चले जाओ। रात कहीं छिपे रहना।

मीरू—तब मुझे रवाना करो फफी !

बुढ़िया—हां बस, यही ठीक होगा। इसके कपड़े बदलवा दो। चुपके चुपके ले जाना।

नीराने बुढ़ियाके पैर छुए, बोली—मां, जिन्दा रही तो आकर तुम्हारी पूजा करूंगी।

नीरा और मीरू दोनों घरसे निकल पड़े।

मीरू नीराको दूसरी राहसे लेकर चला। दूसरे रोज बारह बजे जाकर घर पहुंचा। सीधे पण्डितजीके घर पहुंचा।

* रु *

पण्डितजीके घर सभी बिना दाना पानीके सोये हुए थे।

नीरा भीतर जाकर मांकी गोदमें लेट गयी।

मीरू भाभी-भाभी' करके पुकारने लगा।

माधुरी रोती हुई चिपटाती हुई बोली आओ भैया ! अपनी बेटीको कहांसे ढूंढ़ कर लाये ? मैंने ख्याल भी नहीं किया था कि तुम मेरी बेटीको लाकर हाजिर करोगे।

नीरा दौड़ी हुई अपने पिताके पास पहुंची। पिताके पैरों पर गिरती हुई बोली—तुम मुझे छोड़ कर चले क्यों आये ?

उसका पैर पर गिरना था कि एक ठोकर लगाते हुए बोले—तुमको पैदा होते ही मर जाना चाहिये था। बता अबतक कहां रही ?

नीरा रोती हुई बोली—इसमें अपराधी कौन है ? मेरे ख्यालमें सब किस्मत का दोष हैं ? न आपका न मेरा। मैं मेला देखने खुद नहीं गयी थी। वहां भीड़के कारण भटक जाना पड़ा ?

यह हंगामा सुना तो मीरू उठकर पण्डितजीके कमरेमें गया। जाकर बोला—ऐसी लड़की पर आपको गर्व होना चाहिये था, भाई ! यह मुसलमानके घरमें १० रोज जरूर रही, पर वहां एक बूंद भी जल इसने नहीं ग्रहण किया। यह लड़की जैसे आपके घरमें पाक साफ थी, वैसे ही अब भी है।

पण्डितजी—यह दस रोज मुसलमान के घरमें रही और मैं अपने घरमें इसे रखकर कहीं मुंह दिखाने लायक रह जाऊंगा।

मीरू और पण्डितजीमें बातें हो ही रही थी कि माधुरी झिड़क कर बोली—अजब हिन्दुत्व है, तुम्हारा ! तुम ब्राह्मणों में कलंक-स्वरूप हो। अगर तुम्हारा पांडित्य इसी तरह रहा तो एक भी हिन्दू नहीं बचेगा। हिन्दुओंका नाम भी कोई न लेगा। यह हिन्दू समाज है। तुम पुरुषवर्ग महीनों बाहर रहकर हिन्दू बने रह जाते हो, पर स्त्रियों पर इस तरह बन्धन ! अगर तुम इस तरह न मानोगे तो महात्मा गांधीके निकट मैं फरियाद करूंगी। इसीका फल है कि आज मुल्क दो हिस्सोंमें बंट गया।

पण्डितजी—कुलटा, मेरे घर कोई पानी पियेगा। शादी भला कौन करेगा, इसको भी तो सोचो।

माधुरी—अगर इस तरह हिन्दू समाज पतित है तो मैं खुद उस समाजमें नहीं रहूंगी ?

पण्डित—चुप रहा नहीं जाता। तुम्हारी ऐसी सभी होतीं तो हिन्दुस्तान गारत हो गया होता। अबतक भूलक रसातलको चला गया होता।

पंडितने उठ कर बीबीको दो-चार चपत लगाये और बोले—तुमने नाश कर दिया हमारा। मीरूकी ओर मुखातिब होकर बोले—तुम क्यों खड़े हो जी ! तुमने मेरा घर बर्बाद कर दिया !

मीरू—आप मेरे भाई हैं। यह लड़की निर्दोष है। यह मेरी बच्ची है। इसकी पवित्रतामें संदेह करना अन्याय है। मैं कुरानकी कसम खाकर कह सकती हूं कि लड़की पाक साफ है। महात्माजीके पास चलो वहीं न्याय होगा।

पंडितजी क्रोधमें और लाल होकर बोले—जाइये, महात्माजीके पास।

श्रीमती, चन्द्रकिरण सौनरिक्सा
आपको इस साल 'आदमखोर' नामक कहानी संग्रहपर श्री सेकसरिया पुरस्कार प्रदान किया गया

माधुरीने मीरूसे कहा—चलिये शेखजी, यह अन्याय मुझसे नहीं सहा जायगा।

पंडितजी—तू सब कुछ करेगी बदमाश !

माधुरी—करूंगी नहीं तो क्या करूंगी। अपनी बेटीके साथ अन्याय नहीं कर सकती।

पंडितजीके रोकने पर भी दोनों निकल पड़े महात्माजीके पास।

* * *

माधुरी तीसरे दिन दोनोंके साथ दिल्ली पहुंची। पण्डितजी भी चुपके-चुपके उनके पीछे हो लिये।

रास्ते भर तीनो इस तरह चुप-चुप रहे जैसे किसीको कुछ कहना ही नहीं था।

महात्माजीके सामने इन्होंने अपनी फरियाद की।

महात्माजीके सामने माधुरीने सारा किस्सा कह सुनाया। इसकी पवित्रताकी गवाह शेख मीरू हैं। मगर पतिदेव इसे घरमें रखनेको राजी नहीं होते। आप बताइये, इसमें किसका दोष है ?

मीरूने भी सारा किस्सा सुना दिया। महात्माजीकी आंखोंमें, आंसू भर गये।

महात्माजीने भरी सभामें कहा—कोई साहसी हिन्दू हो तो इसका पाणिग्रहण करे।

एक ब्राह्मण युवक सामने आकर नीराका हाथ पकड़ कर बोला—मैं पाणिग्रहण करनेको तैयार हूं।

सभाके लोग गांधीजीकी जय बोलते हुए बोले—इसीमें हिन्दू समाजका कल्याण है।

पंडितजीने आकर महात्माके पैरों पर सिर रखते हुए कहा—सबसे अधिक दोषी मैं हूं।

महात्माजी पंडितजीको उठाते हुए बोले भगवान तुम लोगोंको सुखी करे। प्रतीक्षा करो कि हिंदू मुसलमानको समभावसे देखेंगे। इधर-उधर करना गुंडों का अत्याचार है।

महात्माजी—आओ। उस युवकसे अपनी कन्याका पाणिग्रहण कराओ ईश्वर से प्रार्थना है कि वर और वधू दोनों सुखी हों।

'महात्माजीकी जय। के नारोंसे आसमान गूंज उठा।

नेपाली शुद्ध कस्तूरी, शुद्ध

हिमालय और तिब्बत कस्तूरी, शुद्ध शीलाजित, आयुर्वेदीय औषधि द्रव्य, जड़ी बूटी इत्यादि निम्नलिखित पते से मंगा लीजिये।

मालिकान—
साहु नारायण बहादुर श्रेष्ठ एण्ड सन्स (रजि०)
अध्यक्ष—नेपाल हिमालय कस्तूरी भण्डार (रजि०)
माहापाल तुलम्हे ललितपुर, नेपाल।

बेखबरकी खबरें—

यह डायरी है कलकत्ते की!

महात्मा गांधीने साम्प्रदायिक दानव को फिर ताल ठोककर ललकारा है। उनके मिशनकी सफलताके लिये कलकत्तेके धार्मिक स्थानोंमें विशेष प्रार्थनाएं की गयीं जिनमें हमारे गवर्नर राजाजीने भी भाग लिया और सबोंके साथ मिलजुलकर बापूकी दीर्घायुके लिये ईश्वरसे प्रार्थना की।

महात्माजी से समधीका रिश्ता रहने के कारण राजाजीका तो यह विशेष फर्ज है। कलकत्तावासियों, बड़े बूढ़ों छोटे-मोटे बच्चे कच्चे, लम्बे-नाटे, खरे-खोटे, सबोंकी तरफसे बेखबर बापूसे अनुरोध करेगा कि फाकाकशी छोड़ दो। ठंढाई छानकर दानवसे भिड़ जाओ तो तुम्हारी जीत अवश्य होगी।

बापूके प्रति कलकत्तावासियोंका भी विशेष फर्ज है। उन्हींके चमत्कारकी बदौलत आज जहां तिलकधारी अमजादिया होटलमें चायपान करते हैं, वहां पर्दा नशीन बेगमें निःसंकोच बड़े बाजार में चहल कदमी करती हैं। काश! 'बेखबर' कलकत्तेसे एक डाभ लेकर बिड़ला भवनके सामने धूनी रमा देता और फाका खत्म होते ही बापूको कलकत्तावासियोंकी तरफसे एक गिलास डाभका रस भेंट करनेका श्रेय प्राप्त करता। बापू, जिन्दाबाद।

० ० ०

इधर पश्चिमी बङ्गालके कांग्रेस सदस्योंका दिमाग फिर गया है। प्रधान मन्त्री डा० घोष जैसा सीधा सादा आदमी पसन्द नहीं और आकर्षण मोटे तगड़े डा० विधान चन्द्र रायकी तरफ है। आशा है भारतके चोटीके डाकर होनेके नाते डा० राय उनके दिमागको फिर बहकने न देंगे।

जीत किसकी हुई चोर बाजार वालोंकी या सरक्षा बिलके विरोधियों की?

० ० ०

दिमाग फिरनेके सिलसिलेमें असेम्बलीके कम्यूनिस्ट सदस्य बेचारे ज्योति बसकी याद बर बस आ ही जाती है। मंगलवारको सरक्षा बिलपर उनके संशोधनोंका उत्तर देते हुए डा० घोषने कहा कि आपको चारों तरफ भूत ही भूत नजर आता है। यह आपके दिमाग खराब रहने का एक लक्षण है। इस लिये इस मर्जका इलाज होना चाहिये।

अपने रामको तो सिर्फ रातमें भूतके दर्शनका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसलिये घोष बाबूके पहले इलजामका खुदबखुद खण्डन हो जाता है। फिर उनके दिमागी मर्जकी अभी शुरूआत है और [illegible] मशहूर पागल खाना भी तो ज्यादा दूर नहीं है।

* * *

एक लीगी सदस्यको सुरक्षा बिलमें अमेरिका-ब्रिटेन-भारत साजिशकी गंध मिली।

भारत सरकारको चाहिये कि आपको खुफिया विभागकी चोटी पर बिठा दे।

* * *

आजके भारतमें गवर्नरीका पेशा भी कोई पेशा है? मन्त्रिमण्डलके इशारे पर नाचना पड़ता है। बापूकी राय है कि गवर्नरोंको कठपुतली न बनाया जाय। डा० घोषका जब कांग्रेस सदस्योंकी पसन्द का पता चल गया तो डा० रायको सीधे निमन्त्रण भेज दिया कि अब पार्टीकी बागडोर आप संभालें मानो यह भाई भाई के बटवारेका कोई झगड़ा हो। हमारे गवर्नरसे रायतक न ली गयी।

क्या इसीलिये डा० रायने युक्तप्रांतकी गवर्नरी पर बंगालके राजनीतिक क्षेत्रमें प्रवेशको तरजीह दी?

* * *

पश्चिमी बंगालके मुस्लिम सदस्योंने निर्णय किया है कि अब उन्हें, चाहे वे मर्द हों या औरत, मिस्टर मिसेज, मिस नहीं, जनाब कह कर सम्बोधित किया जाय।

औरत-मर्दके भेदभाव मिटानेकी दिशामें एक कदम। अब समाचार पत्रके पाठकोंको इस चक्करमें नहीं पड़ना है कि अमुक जनाब मर्द हैं या औरत।

* * *

महात्माजीका अनशन शुरू होने पर मि० सुहरावर्दी भी उनकी सेवामें हाजिर हुए। महात्माजीने अपनी प्रार्थना सभामें कहा कि लोग मि० सुहरावर्दीको गुण्डों का सर्दार समझते हैं। कोई दो साल पहले भारतके वर्तमान उद्योग मन्त्री डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जीने बंगाल असेम्बलीमें उन्हें गुण्डोंका राजा बताया था।

सर्दार और राजामें बड़ा अन्तर है। कलकत्ता वासी तो सुहरावर्दी हुकूमतमें काफी दिनों तक सुखचैनकी बंशी बजा चुके हैं। उन्हें इस इल्जामसे बरी करना कलकत्तावासियोंका फर्ज है। ऐलान कर देना चाहिये कि सुहरावर्दी साहब 'भद्दर लोग' हैं।

* * *

गुण्डोंकी श्रेणीमें स्थान पानेका दूसरा सौभाग्य रियासती मुस्लिम लीगके प्रेसिडेंटको है। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषदके जेनरल सेक्रेटरी श्री जय नारायण व्यासनेमाहेश्वरी भवन की एक सभामें भाषण करते हुए इस प्रेसिडेंटको गुण्डा और जोधपुर महाराज का दिलका दोस्त बताया।

और अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के प्रेसिडेंट कायदे आजम जिन्ना साहब?

उच्च कोटिकी रिस्ट वाच

स्वीस मेड, मजबूत टिकाऊ, आधुनिक डिजाइन, लीवर मूवमेंट ठीक समय, ३ वर्षकी गरान्टी। गोल आकारकी रिस्टवाच १४) स्टीरियर १६।।), उपर्युक्त जैसी फ्लैट शेप, ४ जुएल, कोमीयम केस २४)। उसी प्रकार सेन्टर सेकण्ड २६), गोल आकार १५ जूएल ३६), लम्बी शेप ५ जूएल ३५), रोल्ड गोल्ड स्टील बैंक (केस गारन्टी युक्त १० वर्ष (५२), डाक खर्च ॥=) दो आर्डर आनेसे मुफ्त। प्रत्येक घड़ीके साथ एक फीता दिया जाता है।

इस्टर्न वाच कं०
पो० बक्स नम्बर १२२१६ (बी)
कलकत्ता ५

महात्माजी उपवास कर रहे हैं

श्री पाञ्चजन्य

महात्मा गांधीने १२ जनवरीको दिल्लीमें प्रार्थनाके बाद अपनी वक्तृतामें यह घोषणा की कि हिन्दू-मुस्लिम एकता लानेको मैं अनिश्चित कालके लिये कलसे (१३ जनवरी, मंगलवार) उपवास करने जा रहा हूं।

उपवास करनेका अपना निर्णय बताने के बाद गांधीजीने कहा कि उपवास कोई स्वास्थ्यके लिये करता है, कोई प्रायश्चित्त स्वरूप करता है। यह आवश्यक नहीं है कि ये उपवास करने वाले अहिंसामें विश्वास रखते ही हों। किन्तु एक उपवास ऐसा भी है जिसे अहिंसाका पुजारी समाज द्वारा किये गये अन्यायके प्रतिवाद में करनेको प्रेरित होता है और यह उपवास अहिंसाका पुजारी तभी करता है जब उसके सामने दूसरा कोई उपाय, उपचार या मार्ग नहीं रह जाता। ऐसा ही अवसर आज मेरे सामने उपस्थित है। कलकत्तेसे ६ सितम्बरको मैं पश्चिम पंजाब जानेके लिये दिल्ली आया था। यह नहीं हो सका। सुन्दर चित्र विचित्र दिल्ली श्मसान तुल्य हो रही थी। गाड़ीसे उतरने पर मैंने प्रत्येकके मुख पर निराशाक छाया देखी। यहां तक कि मने देखा कि सर्दार भी इस बार, विनोद और उस विनोदसे उत्पन्न प्रसन्नता जिनका साथ कभी नहीं छोड़ती, इसके अपवाद न थे। वे मुझे लेने स्टेशन आये थे। संघकी राजधानीमें जो उपद्रव और उत्पात हो रहे थे उनका दुखद समाचार मुझे तत्काल उन्होंने दिया। तभी मैंने समझा कि मुझे दिल्लीमें रहना होगा और कुछ करूंगा या मरूंगा। दिखायी पड़ने वाली शांति तत्काल काममें लाये गये फौजी और पुलिस कार्योंका फल है। किन्तु भीतर तूफान बना हुआ है। यह किसी क्षण फट पड़ सकता है। बेजोड़ दोस्त मौतसे मुझे कार्य सिद्धिके प्रणकी पूर्ति ही बचा सकती है, किन्तु इस स्थितिको मैं कार्य सिद्धि की स्थिति नहीं मानता। हिंदुओं, सिखों और मसलमानोंके बीचमें हार्दिक मैत्रीके

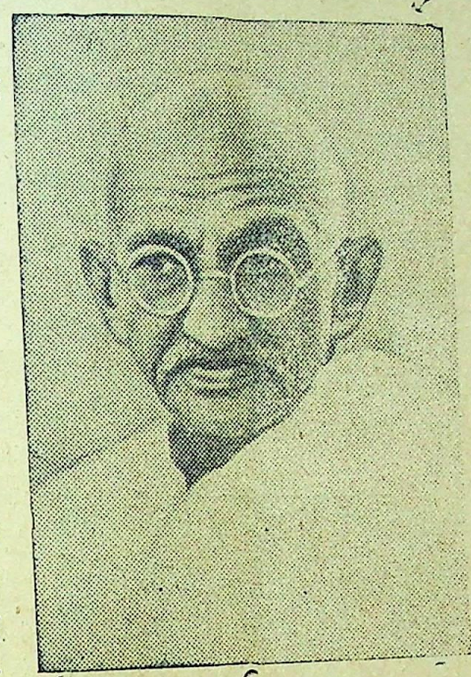

महात्मा गांधी

लिये मैं तड़प रहा हूं। अभी उस दिन तक यह थी, आज नहीं है। कोई सच्चा भारतीय देश भक्त इस तरहकी स्थितिकी परिकल्पना करके कैसे धैर्य रख सकता है। बहुत दिनोंसे अंत र्ध्वनि इस ओर ध्यान आकर्षित कर रही थी, लेकिन यह आवाज कहीं शैतानकी आवाज न हो अर्थात् यह कहीं दुर्बलता न हो समझकर मैंने अबतक उसकी तरफसे कान बन्द कर रखे थे। लाचारी महसूस करना मझे कभी पसन्द नहीं है और एक सत्याग्रही के लिये यह उचित भी नहीं। उसकी या दूसरोंकी तलवारके बदले उपवास उसका अन्तिम संबल है। रोजना जो मुसलमान दोस्त मेरे पास आते हैं उनके लिये मेरे पास देनेको कोई जवाब नहीं है कि वे क्या करें। मेरी यह असमर्थता इधर कुछ दिनोंसे मुझे चबाये डाल रही थी। उपवासके साथ यह मिट जायेगी। पिछले तीन दिनोंसे मैं इसी ऊहापोहमें पड़ा था। अन्तिम निर्णयका प्रकाश मझे मिला और इससे मैं प्रसन्न हूं। किसी व्यक्तिके पास यदि वह शुद्धपवित्र है—देनेके लिये जीवनसे अधिक मूल्यवान दूसरी कौन वस्तु है? मैं आशा करता हूं और यही मेरी प्रार्थना है कि इतनी शुद्धता मझमें है कि मैं यह कदम उठाऊं। आप लोगोंसे यही चाहता हूं कि आप आशीर्वाद दें कि प्रयास सफल हो और मेरे लिये तथा मेरे साथ इसकी सफलताके लिये आप भी प्रार्थना करें। मेरा उपवास कलसे आरम्भ होगा। अवधि अनिश्चित है और इस दौरानमें मैं नमक और निम्बू के साथ या इनके बिना भी पानी पीयूंगा। उपवासका अंत तभी होगा जब मुझे सन्तोष हो जायगा कि बिना किसी बाहरी दबावके, कर्त्तव्यकी प्रेरणासे सब सम्प्रदायोंके बीच हृदयोंका पुनर्मिलन हो गया है।

इसका पुरष्कार यह होगा कि भारतको अपनी मिटती हुई प्रतिष्ठा और एशियासे तथा फलस्वरूप संसारसे तेजीके साथ लुप्त होती हुई उसकी सार्वभौमिकता फिरसे प्राप्त होगी। आत्म प्रशंसा ही कहना चाहिये इसे किंतु मेरा विश्वास है कि भारतकी आत्माके हननका अर्थ होगा पीड़ित, तूफानोंसे आलोड़ित, धूलिधूसरित और भूखे संसारकी आशाका हनन। जरा कल्पना तो कीजिये कि भारत प्रिय भारतमें कैसी विनाशलीलाका ताण्डव हो रहा है, तब आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उसके एक विनम्र पुत्रमें इतनी शक्ति और शायद पवित्रता भी पर्याप्त मात्रामें है कि वह इस दुखद मार्गपर चल सकता है। यदि वह दोनोंमें एक भी नहीं है तो वह धरतीपर भार स्वरूप है और ऐसा भार जितनी जल्दी उठ जाय और भारतीय वातावरण उससे मुक्त हो जाये उतना ही उसके लिये और सबके लिये अच्छा है। मैं अपने मित्रोंसे अनुनय करूंगा कि वे मझे इस पथसे विचलित करनेके लिये बिड़ला भवनको न दौड़ पड़ें और न मेरे लिये चिन्तित ही हों। मुझे भगवान देखता है, मैं उसीके सहारे हूं। बल्कि वे अपने भीतर रोशनी डालें क्यों कि हम सबके लिये यह अग्निपरीक्षाका समय है।

(शेष २० व पृष्ठ पर)

काश्मीरकी समस्या

शेख मुहम्मद अब्दुल्ला

काश्मीरकी सैनिक मोर्चेबंदीके सम्बंधमें हमें बिलकुल भी चिंता नहीं है। सैनिक विजय तो एक ध्येयके लिये साधनमात्र है। हमारा ध्येय है राजनीतिक सफलता। मैं तो केवल यही चिंता करता हूं कि राजनीतिक रूप में भी हमें विजय प्राप्त करनी चाहिये। लोग सोच सकते हैं कि काश्मीर पर आक्रमण करने वाले आखिर इतने दिनों तक कैसे टिके रह गये। लेकिन इसका सीधा-सा उत्तर है कि आक्रमणकारियोंकी पाकिस्तान सहायता कर रहा है तथा उन्हें प्रोत्साहन दे रहा है। लेकिन पाकिस्तान सैनिक रूपमें विजय प्राप्त नहीं कर सकता और मैं भी नहीं चाहता कि पाकिस्तान राजनीतिक रूपमें विजयी हो। यदि राजनीतिक रूपमें पाकिस्तान जीत जाता है तो हमारा भविष्य अंधकारमें है। मुझसे यह प्रश्न किया जा सकता है कि राजनीतिक विजयका क्या अर्थ है। इसका सीधा जवाब यह है कि हम काश्मीरमें साम्प्रदायिकता और जिन्नाके दो राष्ट्रवाले सिद्धांतके विरुद्ध लड़ रहे हैं।

काश्मीरी मुसलमानोंको दो राष्ट्र वाले सिद्धांतमें बिलकुल विश्वास नहीं है। जब तक हम सब प्रकारकी साम्प्रदायिकता को चाहे वह जिन्नाके विचारके अनुसार हो चाहे हिन्दुस्तानमें उन हिंदुओंके विचार के अनुसार हो जो कि हिंदुओं का पूर्ण प्रभुत्व चाहते हैं, समाप्त नहीं कर देंगे तब तक हम राजनीतिक रूपमें नहीं जीत सकते।

सिद्धांतोंकी लड़ाई

हम काश्मीरमें सिद्धांतोंकी लड़ाई लड़ रहे हैं। काश्मीर राष्ट्रीय सम्मेलन एकता और साम्प्रदायिक सद्भावनामें विश्वास करता है। हम दो राष्ट्रवाले सिद्धांतमें विश्वास नहीं करते हैं। और, इस कारण से सम्प्रदायी जब हमारे दृष्टिकोणसे सहमत नहीं हो सके तो उन्होंने युद्ध आरम्भ कर दिया।

वे जो कुछ शांति और समझा-बुझा कर प्राप्त नहीं कर सके वह उन्होंने शक्ति और शस्त्रोंकी सहायतासे प्राप्त करनेका प्रयत्न किया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अंतमें हम विजयी होंगे, हम केवल काश्मीरके लिये ही युद्ध विजय नहीं करेंगे बल्कि उस सारे भारतके लिये विजय प्राप्त करेंगे जो कि साम्प्रदायिक सद्भावना और एकतामें विश्वास करता है।

काश्मीरके विरुद्ध झूठा प्रचार

काश्मीरकी आंतरिक स्थितिके बारेमें तरह-तरहकी बातें कही जा रही हैं और

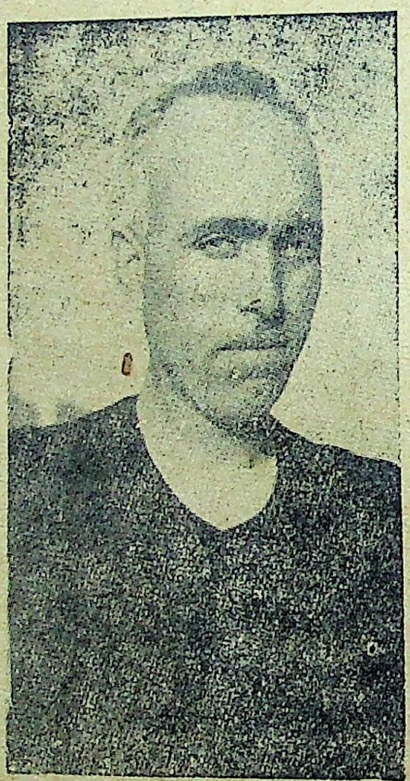

शेख अब्दुल्ला

लोग राष्ट्रीय सम्मेलनको कमजोर बनाने और बदनाम करनेके लिये तरह-तरहकी साजिश कर रहे हैं। कहा जाता है कि शेख अब्दुल्ला मुसलमान होनेके कारण एक राष्ट्रवादी नहीं हो सकता और भारत को अपनी मातृभूमिके रूपमें स्वीकार नहीं कर सकता। अब भी वे यह कहते हैं कि कोई भी मुसलमानका विश्वास नहीं कर सकता, एक मुसलमान तो मुसलमान ही है और वह एक राष्ट्रमें विश्वास नहीं कर सकता। पर, थोड़े अर्सेके बाद जब हमारी सचाई प्रमाणित हो गयी तो कहा गया कि रूस काश्मीरका निकट पड़ोसी है, शेख अब्दुल्ला कम्यूनिस्ट है और रूस काश्मीर पर कब्जा कर लेगा और भारत पर आक्रमण कर देगा। काश्मीरको सहायता मत करो अन्यथा भारतमें साम्यवाद फैल जायगा। ऐसी कहानियां जो कि अस्ट्रेलिया और बी० बी० सी० द्वारा फैलाई गयीं हैं, आतंक फैलानेके रूपमें कही गयी है। वास्तविकता यह है कि काश्मीर न तो साम्यवादी है और न सम्प्रदायवादी और वह तो भारतकी कीर्ति और एकतामें विश्वास करता है और सब जातियोंको अपने आपको भारतीय समझना चाहिये। हम वर्षोंसे साम्प्रदायिकतासे युद्ध कर रहे हैं, क्योंकि हमारा विश्वास है कि हिंदुओं, मुसलमानों, पारसियों और ईसाइयोंको साथ साथ रहना है। हमें केवल मस्लिम साम्प्रदायिकता ही नहीं बल्कि हर प्रकारकी साम्प्रदाकितासे लड़ना चाहिये।

राजनीतिमें धर्मका स्थान नहीं

भारतमें साम्प्रदायिक एकता बनाये रख हम साम्प्रदायिकत के सिद्धांतके विरुद्ध आरम्भसे ही लड़ते आये हैं और मसलमानोंको उसकी निरर्थकताका विश्वास दिलाते रहे हैं। पाकिस्तानसे शत्रु इस्लाम को बचाओ की पुकार लगाते आये हैं। वे कहते हैं कि उन्होंने मसलमानोंको हिंदू आक्रमणसे बचानेका बीड़ा उठाया है। हमने काश्मीरकी जनताको बताया है कि यह सब धोखेबाजी है और राजनीतिमें धर्मका कोई स्थान नहीं। मैं एक मसलमान हूं और मझे अपने धर्ममें अनुराग है, लेकिन मैं हिंदू, मसलमान, सिख, ईसाई सभीसे प्रेम करता हूं, क्योंकि उनके धर्मने हमें प्रेम करने और करानेकी शिक्षा दी है और हम उनकी इस शिक्षाका पालन कर रहे हैं। मैं चाहे दिल्ली जाऊं, चाहे त्रावनकोर, चाहे बम्बई, मझे कोई अंतर नहीं दिखाई देता। मझे सब जगह ऐसा लगता है कि मैं अपने ही आदमियोंके बीच हूं। भारतीय होनेके नाते मैं भारतके कोने-कोनेमें रहनेका दावा रखता हूं।

'छल'

—०—

श्रीमती कमला त्रिवेणी शङ्कर

पोटिकोमें खट् खट्की आवाज सुन रायसाहब कृष्णानन्दने खिड़की खोल कर देखा, एक सुन्दर तेजस्वी युवा संन्यासी खड़ा परिचित-सा मुस्करा रहा है।

नमस्कार—श्रद्धासे उन्होंने हाथ जोड़ दिये।

दरवाजा खोलकर बाहर निकले—संन्यासीने उसी मुस्कानमयी मुद्रासे कहा—आपने मुझे पहचाना।

"आपको ?... उन्होंने स्मृतियोंको एकत्र करना चाहा पर कुछ याद न आया बोले—शायद कहीं देखा हो पर याद नहीं आ रहा है। आइये, बैठिये ?

युवा संन्यासी उनके पीछे पीछे आकर एक कुर्सीकी गद्दी उठाकर बैठ गया। उसका काषाय वस्त्र उसके सुन्दर गौर रंगपर खिल रहा था—राय साहब उसे देखकर पूर्व-परिचयको स्मरण करनेकी चेष्टा कर रहे हैं; यह देख, संन्यासीने कहा—एक बार गाड़ीमें आपके साथ कुछ घण्टे व्यतीत करनेका सौभाग्य मिला था ...शायद आठ वर्ष पूर्व...किसी यात्रामें ?

'आठ वर्ष पहले....उन्होंने अपनी बिखरी हुई स्मृतियोंको फिर एकत्रकर यह यह स्मरण करना चाहा कि आठ वर्ष पहले किस यात्रामें संन्यासीसे उनका साक्षात्कार हुआ था....किन्तु स्मृतियां बीचमें ही बिखर गयीं तरुणने मुस्काकर कहा—किन्तु, उस समय मैं संन्यासी नहीं था ?

रायसाहबने हंसकर कहा—होगा... अब कहिये कहांसे शुभागमन हो रहा है, बहुत थकेसे दीख रहे हैं आप ?

संन्यासीने किञ्चित सुस्मित मुद्रासे जवाब दिया—"बहुत दूरसे ? आठ वर्ष बाद मैं शहर और मनुष्योंके विशाल समुदायके सम्पर्कमें आ रहा हूं...देखता हूं इन आठ वर्षों में ही काफी परिवर्तन हो गये हैं ?

आप ठीक कहते हैं। लेकिन इन आठ वर्षों तक आप थे कहां ?

'पहाड़ोंमें, घाटियोंमें, गुफाओंमें, मसानोंपर, मेरा यह समय अधिकांश हिमालय और 'कैलाश'पर ही व्यतीत हुआ है ?

रायसाहबने कौतूहलसे पूछा 'क्या आपका प्रयोजन सुन सकता हूं ?

"अवश्य योग विद्याकी प्राप्तिकी लालसा ही खींचकर मुझे वहां ले गयी थी।

"आपको सफलता कहां तक प्राप्त हुई क्या इस विषयमें भी कुछ बतलानेकी कृपा करेंगे ?

सन्यासीने उसी भांति प्रसन्न मुखसे कहा— अवश्य ! पर वे बातें जब आप इत्मीनानमें रहें तभी सुनें ?

'यद्यपि आपकी बातोंसे उत्सुकता बढ़ रही है, फिर भी आप जलपानकर थोड़ा विश्राम करें। इत्मीनानके साथ आपकी बातें सुनेंगे।

उन्होंने नौकरको बुलाकर शीघ्र ही जल और कुछ जलपान लानेके लिये कहा-

इस बीच संन्यासीने अपना खादीका रंगीन झोला खोलकर कुछ छोटे-छोटे पत्थरके चमकीले टुकड़े निकाले और उन्हें राय साहबके सामने रखते हुए कहा —आप इन टुकड़ोंमें रंगोंकी पहचान कीजिये—ये हमेशा रंग बदलते रहते हैं। पर, पौराणिक दृष्टिसे भी इनका महत्व कुछ और ही है ? कहते हैं भगवान शङ्कर जब पार्वतीजीके साथ विवाह करके लौटे थे और भगवती वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित जब भगवान् शङ्करके साथ साथ पहाड़ियों पर विचरण करती थीं तभी उनकी वह जगमगाती, प्रतिछवि इन पत्थरोंपर अङ्कित हो गयी थी....

तबतक नौकरके पीछे पीछे उनकी १८ वर्षीया पुत्री सुनन्दा जलपानकी तश्तरी लिये पर्दा उठाकर भीतर आयी।

उसने एक बार पिताकी ओर और एक बार संन्यासीकी ओर दृष्टि डालकर हाथ जोड़कर नतनमस्कार किया।

रायसाहबने जलपानकी तश्तरी संन्यासीके सामने रखते हुए कहा—यह मेरी पुत्री हैं, इसने इसी वर्ष बी० ए० पास किया है ?

सन्यासीने—आयुष्मती हो, कहकर आशीर्वाद दिया।

सुनन्दा क्षणिक चकित दृष्टिसे संन्यासीकी ओर देखती रही...फिर धीरे धीरे पर्दा खींचकर लौट आयी ?

दो पहरको पिता और संन्यासीमें जो बातें होती रहीं उन्हें सुनन्दा ध्यान-पूर्वक सुनती रहीं। बीच बीचमें संन्यासी कभी अङ्गरेजी और कभी संस्कृत शब्दों का भी उच्चारण कर रहा था और उसके उच्चारणसे यह स्पष्ट हो रहा था कि वह दोनों ही भाषाओंका अच्छा विद्वान् है।

सबसे अधिक सुनन्दाकी उत्सुकता जिस बातको सुनकर बढ़ी वह थी संन्यासी की ज्योतिष विद्या ? किन्तु पिताके सामने वह उसकी परीक्षा लेनेमें संकुचित हुई ? दूसरी जिस बातसे वह चमत्कृत हुई वह थी सन्यासीका अदृश्य विद्याका वर्णन। उसने बतलाया 'योग'की कुछ विशेष क्रियाओंको करते ही मनुष्य अदृश्य हो जाता है ? और इच्छानुसार जबतक चाहे अदृश्य रहकर वह सभी जगह आ जा सकता है। वह सुन सकता है देख सकता है, किसी भी वस्तुका स्पर्श कर सकता है। केवल निद्रित होकर सो नहीं सकता। अस्तु अदृश्यकालमें वह प्रेत सदृश चारो तरफ घूमता ही रहता है।

सुनन्दाको रोमांच हो आया।

पिताने पूछा—आपने इस विद्याको कितने दिनोंमें सीखा।

'तीन वर्ष कुछ महीने ?

"क्या आप जब भी चाहें अदृश्य हो सकते हैं ?

'अवश्य ?

'कल आप इस समय कहां थे ?

'कल मैं अदृश्य रूपमें अपने एक परिचित प्रोफेसरके पास था ? इसी शहरमें ?

सुनन्दाका कौतुहल जागा—मन्द स्वरमें बोली—"उनका नाम बतलानेकी कृपा कीजियेगा।

क्यों नहीं, अवश्य ? प्रोफसर भट्ट उनके बड़े हालकी बगलमें जो छोटा कमरा है उसमें बैठे वे एक मेरे ही सह-पाठीसे बड़ी देर तक बातें कर रहे थे ?

"आपने उनकी बातें सुनीं ?

"हां, मैं करीब डेढ़ घण्टे तक वहीं

था, उसके बाद मैंने अपने उस साथीका पीछा किया, जो उस समय मानसिक संघर्षसे बहुत परेशान हो उठा था।

"उसके बाद—पिता-पुत्रीने साथ ही प्रश्न किया।

उसके बाद—मैंने अपना परिचय दिया और रात १ बजेतक उससे बातें करता रहा, उसके मानसिक द्वन्द्वका अच्छी तरह समाधान कर मैं अपने कई और परिचितोंके यहां गया। किन्तु अदृश्य रूपसे ?

रायसाहबकी उत्सुकता बढ़ी। उन्होंने पूछा—आप कहांके रहनेवाले हैं और पूर्ण शिक्षा आपने कहांतक पायी है।

"मैं पुरीके निकट, एक छोटेसे कस्बका रहनेवाला हूं। और कलकत्तेमें रहकर मैंने एम० ए० पास किया था ?

सुनन्दाकी दृष्टि संन्यासीके मुखपर जम गयी ?

राय साहबने एक बार सुनन्दाकी ओर देखकर कहा—आप ज्योतिष विद्यामें पारङ्गत हैं, कृपया यह बतायें कि सुनन्दाका विवाह कब और कहां होगा ?

सुनंदाका विवाह कब और कहां होगा ?

सुनंदा सामने ही थी, अपने भविष्य और विवाहके विषयमें जाननेके लिये उत्कण्ठा और उत्सुकता रहते हुए भी वह नारी सुलभ शील संकोचके बस उठनेका उपक्रम करने लगी।

रायसाहबने उसे रोककर कहा—आप इस विषयमें स्पष्ट कहकर मेरी चिंता ही न दूर करेंगे बल्कि बहुत बड़ी सहायता भी करेंगे ?

संन्यासी मुस्कराया, उसने अपनी एक तीखी दृष्टि सुनन्दाके मुखपर डाली और तब गम्भीर होकर बोला—इस समय आप जहांसे विवाहके लिये निराश हो चुके हैं, वस्तुतः विवाह वहीं और उसी लड़केसे होगा।

"पर वहांसे तो कोई आशा नहीं, सम्बन्ध 'वर' स्वयं अस्वीकार कर रहा है।

"यह अमिट है ? विवाह अवश्य होगा ? विधि विधान आशा निराशाके परे है। लड़की अपनी पतिके साथ समस्त संसारिक सुखोंका उपयोग चिरकाल तक करेगी। और विवाह अधिक दिन न टल कर अगले सप्ताहमें ही सम्पन्न होगा ? इसे आप या दुनियाकी कोई भी शक्ति नहीं टाल सकती ? दूसरी बात यह है कि आप पुत्री पतिके साथ देश विदेशकी बहुत बड़ी-बड़ी यात्रा करेगी। और आपको कुछ ही दिनों बाद किसी तीर्थमें वास करना पड़ेगा

राय साहबने कुछ चकित होकर कहा-आपका कथन सत्य है। मै बहुत दिनोसे सोच रहा हूं कि सुनन्दासे मुक्ति पानेके बाद कुछ दिन किसी तीर्थ स्थानमें शान्ति पूर्वक निवास करूं ?

कुछ देर निस्तब्धता सी छायी रही-राय साहबने मौन तोड़ा—"आप उस लड़के के विषयमें भी कुछ बतला सकते हैं, जो सुनन्दाको ग्रहण करेगा ? सन्यासी कुछ देर मौन सोचता रहा फिर मुस्कराकर बोला—वह एक श्रेष्ठ वक्ता और लेखक है। उसकी कृतियां जो अभी केवल लोक प्रिय है आगे अमर हो जायगी और आपकी पुत्री उसकी कृतियोकी भक्त है। आगे चलकर ये दोनो ही अमूल्य और सुन्दर साहित्यकी निर्माण करेंगे ?

सुनन्दाका शरीर झनझना उठा उसके कार्योंलों पर लाली दौड़ गयी।

भविष्य वक्ता सन्यासी विश्रामके लिये उठ गया।

—उस रात सुनन्दा रात भर करवटें लेती रही, संयासीको एक एक शब्द उसके कानोंमें रह रह कर गूंज उठते। क्या सचमुच जिसे वह मन ही मन श्रद्धाके फूल चढ़ा कर वर चुमी है उसी ...

पर ऐसे संयासियों और ज्योतिषियों पर तो उसे कभी भी विश्वास न था वह सदैव उन्हें अविश्वासकी दृष्टिसे देखा करती थी।

सूर्यस्तके पूर्व सन्यासी विदा लेकर चला गया ?

* * *

आज सुनंदाका विवाह था—

'वर' देख कर राय साहब क्षणेक सोचते रहे, एक और ही मख उनकी स्मृतियोंमें बार बार झाकनेकी चेष्टा कर रहा था, किन्तु प्रकट करनेका अवसर न देख वे अन्य वैवाहिक कार्योंमें लग गये ? बरात बहुत बड़ी आयी थी, वर सुन्दर और प्रतिभा वान था सनंदा कीमत वस्त्राभूषणमेसे सुलंकृता किसी सुगढ़ कलाकार द्वारा गढ़ी गयी प्रतिमा सी लगती थी। भविष्यवाणी सत्य स्पष्ट हो रहा था। किंतु प्रथम रात्रिमें जब सुनंदाने पल्वके तंज प्रकाशमें पतिका मुख देखा तो सहसा घूंघट उठा चकित दृष्टिसे देख विस्मय भरे स्वरमें बोली—"आप ?

'वर' ने मुस्करा कर कहा—जी, हां, मै, पहचान लिया आपने ?

'और संयासी. . इतना बड़ा छल ?

उसने हस कर कहा—करता क्या, जब तुम्हारे पिताने कहा कि मै लड़की किसी भी तरह लड़केको नहीं दिखा सकता ? उसे घरकी स्त्रियां ही देख सकती हैं ?

"तभी आपको कोपीन पहन संयासी बननेकी सूझी ? उसने उसी मुस्कारन भरी परिचित मुद्रासे कहा—नही सिर्फ यही बात न थी, अपनी कहानियो और उपंयासों के विषयमें बहुत सी आलोचना प्रत्यालोचन सुनी है . . सुना करता था तुम भी प्रभावित थी...उसका कुछ प्रत्यक्ष प्रभाव भी देखना चाहता था कि मै अपने शब्दोंमें लोगोंके खासकर तुम्हें कहां तक बांध सकता हूं ? . . और मै अपने प्रयोगमे सफल हुआ ? फल रूपमें तुम सामने हो..

क्रीडालपदित शीलसे झुकी सुनंदा ने स्वामीके वसमें मुहं छिपा लिया . . . ?

———

वृद्ध जनोंके प्रति

—:**:—

लेखक—प्रो० भगवती प्रसाद, श्रीवास्तव एम० ए०

भारतीय घरोंमें वृद्धजन प्रायः कुटुम्बके अन्य सदस्योंके लिये परेशानीका कारण बने रहते हैं। छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ना, खीजना उनका नित्यका क्रम हो जाता है। उनकी बातोंमें कोई दिलचस्पी नहीं लेता क्योंकि सदैव ही पुराने दिनोंकी स्मृतिको ही वे दुहराते हैं। नवीन विचारधारा, नये सामाजिक आन्दोलन आदिके प्रति ये वृद्धजन सदैव ही उदासीन रहते हैं क्योंकि उनकी यह दृढ़ धारणा-सी बन जाती है कि जो कुछ भी नया है सब अवांछनीय तथा अहितकर है शारीरिक श्रमके लिये वे सम्भवतः मजबूर होते ही हैं किन्तु इसी कारण वे अपनेको मानसिक श्रमके लिये भी असमर्थ मान लेते हैं। अतः वे घरके लोगोंके लिये हर मानेमें भार स्वरूप बन जाते हैं।

किन्तु विज्ञानकी खोजसे पता चलता है कि अवस्थाके बढ़नेके साथ दिमागके कोषोंमें इस किस्मके कोई परिवर्तन नहीं होते कि उनके कारण मानसिक शक्ति विशेष क्षीण हो जाय। वास्तवमें गत महायुद्धमें इस तथ्यकी जांच भली भांति की जा सकी है। युवकोंकी एक बड़ी संख्या जब रणक्षेत्रमें थी या युद्ध उद्योगमें लगी थी, तो उस समय कल कारखानोंके प्रबन्धके लिये अथवा गवर्नमेण्टके विभिन्न विभागोंमें उत्तरदायित्वके पद पर अनेक वृद्धजन लगाये गये थे और इन लोगोंने सचारु रूपसे अपने उत्तरदायित्वको निबाहा। बावजूद इसके कि अवकाश प्राप्त कर ये लोग जिन्दगीके संघर्षसे एक प्रकार अलग हो चुके थे, इन लोगोंने नयी बातोंको सीखनेमें पूरी कामयाबी हासिल की। माना बुड्ढे तोतेने भी पढ़ना सीखा। युद्धभूमिमें भी कई उच्च पदाधिकारी ऐसे थे जिनकी अवस्था ६० वर्षसे ऊपर थी!

विज्ञान तथा साहित्यकी प्रगतिमें तो वृद्धजनोंने सदैव ही महत्वपूर्ण योग दिया है। उदाहरणके लिये ऐडिसन तथा लार्ड केल्विनने अपनी ८० वीं वर्षगांठके बाद अनेक महत्वपूर्ण आविष्कार किये। प्रो० आइन्सटाइन जिनकी गणना संसारके सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकोंमें होती है अपनी वृद्धावस्थाके बावजूद भी अभी वैज्ञानिक अनुसंधानोंमें लगे हुए हैं। साहित्यके क्षेत्रमें श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा जार्ज बर्नर्ड शा की प्रतिभासे कौन प्रभावित नहीं हो सका है। ९० वर्षकी अवस्थामें भी आज बर्नर्ड शा साहित्य निर्माणमें पूर्ववत संलग्न हैं। इस वर्षके लिये साहित्यका नोवेल पुरस्कार भी ७६ वर्षके एक वृद्ध साहित्यकारको मिला है!

देश और समाज लिये प्रत्येक वृद्धजन उपयोगी बन सकता है बशर्ते वह जिन्दगीके प्रति अपने दृष्टिकोणको विकृत होनेसे बचा सके। वास्तवमें जब तक मनुष्यके अन्दर उत्साह बना रहता है, जिन्दगीके प्रति उसकी दिलचस्पी कायम रहती है और उसका मनोवैज्ञानिक सन्तुलन ठीक रहता है तब तक उसे बुड्ढा नहीं कहा जा सकता।

साधारणतया वृद्धावस्थाके पदार्पणके फलस्वरूप लोगोंके स्वभावमें चिड़ाचिड़ापन आ जाता है हालकी घटनाओंकी स्मृति क्षीण हो जाती है, परिवर्तनके प्रति विरोध की भावना जोर पकड़ती जाती है तथा आत्मविश्वासमें कमी हो जाती है। वृद्धावस्थाके इन लक्षणोंके प्रति जागरुक रह कर इनपर विजय प्राप्त किया जा सकता है। आइये इन लक्षणोंपर जरा विस्तृतरूप से गौर करें।

चिड़ाचिड़ापन आमतौरपर अधिक श्रमसे उत्पन्न हुए थकावटसे पैदा होती है। अतः इससे बचनेके लिये प्रत्येक वृद्धजनको ऐसे कामोंको हाथमें न लेना चाहिये जिसमें अधिक देरतक श्रम करना पड़े—या फिर उन्हें इस बातका प्रबंध कर लेना चाहिये कि तीन चार घण्टेके श्रमके उपरांत वे आध घण्टे अवश्य विश्राम कर सकें। नींदकी कमीसे भी चिड़ाचिड़ापन उत्पन्न हो सकता है अतः वृद्धजनोंको ऐसे अवसरोंसे सदैव बचना चाहिये जब कि उनकी निद्रामें बाधा पहुंचनेकी आशंका हो।

विस्मृतिका मूल कारण है भूलनेवाली बातोंके प्रति दिलचस्पी की कमी। प्रायः देखा जाता है कि वृद्ध पुरुष कल परसोंकी बातें सहज ही भूल जाता है किंतु बीस बरस पहलेकी घटनाकी याद उसी व्यक्तिके मस्तिष्कमें बिलकुल ताजी बनी रहती है। इसका कारण यह है कि वृद्ध मनुष्योंके मनमें अतीतकी स्मृतिका मोह होता है उस युगको वे जल्दी भूलना नहीं चाहते जब अपनी आसपास की दुनियामें उन्हें एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। काश ये लोग कभी महसूस कर पाते कि उनके बीते दिनोंकी स्मृतिकी पुनरावृत्ति ही, जिनसे उन्हें सबसे अधिक सुख और शांति मिलती है, दूसरोंकी दृष्टिमें उन्हें अप्रिय बनानेका सबसे बड़ा कारण है। बुढ्ढे बाबा गदरके दिनोंकी बातें जब मनोयोग पूर्वक धीरे धीरे सुनाने लग जाते

हैं तो उस समय उ हें यह ख्याल नहीं होता है कि उन्हीं घटनाओंका विवरण वह बीसियों बार पहले ही सुन चुके हैं। घरके अंय लोग ऊबकर मन ही मन प्रार्थना करने लग जाते हैं कि इनकी बकवाद अब बंद हो तो छुट्टी मिले।

इस खामीसे बचनेके लिये प्रत्येक वृद्धजनको यह नियम बना लेना चाहिये कि निष्प्रयोज ही वह अपने अतीत की घटनाओंका हाल लोगोंको न सुनाया करेगा। इस सुनहले नियमका पालन करके वह नयी पीढ़ीके लोगोंके बीच अप्रिय बननेसे सहज ही अपनेको बचा सकेगा। परिवर्तनके प्रति विरोधकी भावनाका भी मूलस्रोत अतीतके प्रति प्रगाढ़ मोहमें निहित है। अतः अतीतका ठीक ठीक मूल्याङ्कन करनेमें वृद्ध व्यक्ति यदि सफलता हासिल कर लेता है तब परिवर्त्तनसे वह घबड़ायगा नहीं। अपनी इच्छा शक्तिके जोर से उसे अपने अन्तः मनको यह स्वीकार कराना होगा कि सभी परिवर्तन बुरे नहीं होते और न परम्परासे चली आने वाली सभी चीजें निर्दोष।

आत्म विश्वासकी कमीका प्रधान कारण है बेकारी। कुटुम्ब या समाजके प्रबन्धमें उनका विशेष योग न होनेके कारण उनके मनमें यह बात बैठ जाती है कि मौजूदा युगको उनकी जरूरत नहीं है, वे मानों उस मशीन जैसे हैं जिसके पुर्जे घिस घिसा कर बेकार हो चुके हैं। निस्सन्देह यही हीन भावना उनके आत्म विश्वास को शेष जीवनके लिये डिगा देती है। किंतु वृद्धावस्थाके इस दयनीय लक्षणको अनिवार्य समझ लेना भी ठीक नहीं है। सरकारी नौकरीमें ५५ या ६० वर्षकी आयु प्राप्त करने पर लोगोंको अवकाश लेना ही पड़ता है किंतु व्यवसाय, डाक्टरी या वकालतके पेशेमें कोई मजबूरी नहीं कि इतनी जल्दी पेशेको छोड़ कर अवकाश ग्रहण कर लें। हमारे देशमें दुर्भाग्यवश जहां ५० वर्षकी अवस्था हुई कि मित्रगण बार बार सुझाने लग जाते हैं 'कि जीविका उपार्जनके झंझटसे अब तुम्हें अवकाश ले लेना चाहिये लोककी अपेक्षा परलोक की चिन्ता तुम्हें अधिक करनी चाहिये"

जिन्दगीके संघर्षसे पलायन करनेकी मनोवृत्तिको अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिये—और इस समय तो स्वाधीन भारतके नवनिर्माणके लिये अनेक योजनायें कार्यान्वित की जा रही हैं आप भी सहज ही इन योजनाओंको सफल बनानेमें योग दे सकते हैं। इस प्रकार वृद्धावस्थाकी नीरसतासे आपको छुटकारा मिलेगा, साथ ही राष्ट्रकी सेवा करनेका सन्तोष भी आप हासिल कर सकेंगे।

—०—

नाई को क्यों देते हैं ?

हफ्ते में छः आने तक नाई को क्या ऐसा दिखने के लिये देते हैं? यदि आप सप्ताह में सिर्फ तीन बार ही हजामत बनाते हों तो यह निश्चित है कि सात दिनों में से चार दिन आपकी दाढ़ी खुरदरी रहेगी।

...जब "सेविन ओ'क्लाक" से हजामत बनाना पैसे की बचत करना है।

जब आप प्रतिदिन स्वयं "सेविन ओ'क्लाक" ब्लेडों से हजामत बनाते हैं तो आप पांच ब्लेड के एक पैकेट के छः आने देते हैं, लेकिन वे इतने तेज़ होते हैं कि हफ्तों तक आप उनसे सफाई के साथ हजामत बना सकते हैं।

"सेविन ओ'क्लाक" ब्लेड बाजार में सर्वश्रेष्ठ हैं। वे सर्वोत्तम इस्पात के बने होते हैं और अतिरिक्त तेज़ी के लिये तीन स्तरों में बनाये जाते हैं।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

7 o'clock

SLOTTED BLADES

"सेविन ओ'क्लाक" ब्लेडस्

ब्लेड जो ज़्यादा हजामत और कम खर्चा देते हैं

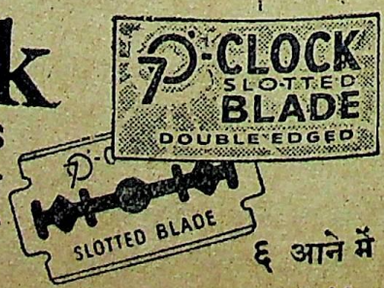

६ आने में

५ का प्रत्येक पैकेट

रियासतोंमें उत्तरदायी शासनके लिये संघर्ष

देशमें छोटी-छोटी सामंती रियासतों की कमी नहीं है। प्रत्येक रियासतका शासक अपनी प्रजा पर मनमाने अत्याचार करता है और उसकी गाढ़ी कमाईसे दुनिय में प्राप्य सारी न्यामतें भोगता है। कुछ रियासतोंकी जनताकी जिन्दगी तो पशुओंसे बदतर है। न वहां शिक्षा है और न वहां चिकित्सा आदि की व्यवस्था ही है। मनुष्य अन्धेरेमें पैदा होता है और उसी अन्धेरेमें घुट-घटकर मर जाता है। कृषि और उद्योग - धन्धोंके विकासकी बातें तो शराबी-कबाबी नरेशोंके दिमागके बाहरकी बात है। वहांका दीन हीन किसान 'भगवान भरोसे' पर जो कुछ पैदा करता है उसको भी तरह तरहके कर, नजारानोंमें वसूल कर लिया जाता है कि उस बेचारेके पास एक वक्तके खानेका भी ठिकाना नहीं रहता। इधर कुछ पूंजीपतियोंने रियासतों में उद्योग-धन्धोंका प्रसार किया है। लेकिन रियासती राजनीतिसे दिलचस्पी रखने वाले जानते हैं कि इससे वहांकी जनताको कोई विशेष लाभ नहीं बल्कि उद्योगपतियों का ही अधिक लाभ है। वहां श्रम सस्ता है और कई तरहके करोंसे बचत होती है। इसीलिये उद्योगपतियोंने रियासतोंमें अपनी टांगे अड़ाई हैं। अब तक भारत गुलाम था और यहां अंग्रेजोंका शासन था। लिहाजा रियासतोंकी जनताको दुहरी गुलामीका बोझ ढोना पड़ता था। लेकिन गत १५ अगस्तसे भारत स्वतन्त्र हो गया है और देशमें एक नयी स्थिति उत्पन्न हुई है। लेकिन रियासतोंकी जनताका बोझ थोड़ा हल्का अवश्य हुआ है, उसके सिर पर अब भी स्वेच्छाचारी शासकोंका बोझ लदा है। पर उसकी मियाद अब खत्म होने वाली है।

रियासतोंकी जनता अब पहलेसे अधिक जाग्रत है और सामन्ती शासनका खात्मा करनेके लिये कटिबद्ध है। राजपूताना सामन्ती शासनका मजबूत गढ़ है। अभी अभी लोक परिषदकी राजपूताना प्रादेशिक कौंसिलकी बैठक हुई थी जिसमें राजपूतानाकी रियासतोंकी राजनीतिक स्थिति पर विचार किया गया। कौंसिल में स्वीकृत प्रस्तावमें राजाओंको चेतावनी दी गयी कि यदि वे लोग अपने राज्योंमें अतिशीघ्र उत्तरदायी सरकार नहीं स्थापित करते तो कौंसिल उन राज्योंकी जनताको निर्देश देगी कि वे अपनी मांगों की पूर्तिके लिये आवश्यक कार्रवाई करें। इसी प्रकारकी चेतावनी रियासतोंको गवर्नर जेनरल लार्ड माउण्ट बैटनने दी है। गत सप्ताह दिल्लीमें ७० से अधिक छोटी रियासतोंके प्रतिनिधियोंकी एक बैठक हुई थी जिसमें लार्ड माउण्ट बैटनने नरेशोंको यह सलाह दी है कि वे अपनी रियासतोंमें अविलम्ब ही सधारोंकी घोषणा करें जिससे प्रजा वास्तविक शासक बन सके। गवर्नर जेनरलने साफ-साफ कहा है कि यूरोपमें वे ही नरेश रह सके जिन्होंने अपनी जनताको सत्ता सौंपना स्वीकार किया। पडौसी प्रान्तों तथा बड़ी रियासतोंमें छोटी रियासतोंको मिलनेसे जो शासन सम्बन्धी लाभ होंगे उन पर लार्ड माउण्ट बैटनने जोर दिया है। इस सिलसिलेमें यह जिक्र कर देना आवश्यक है कि उड़ीसा, और छत्तीसगढ़की रियासतें अपने पडौसी प्रान्तोंसे मिल गयीं हैं। राजपूताना, बम्बई तथा बुन्देलखण्डकी रियासतें भी बड़ी इकाइयोंसे मिल जायगी ऐसी चर्चा चल रही है।

विभिन्न रियासतोंमें संघर्ष—

मयूरभंज राज्यमें लोकप्रिय उत्तरदायी सरकार कायम हो गयी है। महाराजने नवगठित सरकारके हाथमें सब अधिकार सौंप दिये हैं। प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू और राष्ट्रपति डा० राजेंद्रप्रसादने इसके लिये महाराजको बधाई दी है और लोकप्रिय सरकारको शुभकामनाएं भेजी हैं। झाबुआ नरेश एवं लोकपरिषदके बीच राज्यमें उत्तरदायी शासन कायम करनेकी बातचीत असफल हो जानेपर परिषद कार्यकारिणीने राज्य एवं नरेशको शीघ्र उत्तरदायी शासन के उद्देश्यसे अंतरिमसरकार कायम करने का अल्टीमेटम दिया है। राज पिप्पलामें अंतरिम सरकार जिसमें ३ लोकप्रिय मंत्री हैं, स्थापित हो गयी है। युवराज उसके अध्यक्ष बनाये गये हैं। मध्य भारत की रियासत में ग्वालियर प्रमुख रियासत है। वहां शासक और स्टेट कांग्रेसके बीच उत्तरदायी सरकारके गठन लेकर काफी मतभेद पैदा हो गया है। अभी वहां डा० राममनोहर लोहिया गये थे उन्होंने शासकको चेतावनी दी है कि ग्वालियरमें शीघ्र लोकप्रिय सरकार कायम की जाय। ग्वालियर नरेश तरह तरहकी चालें चल कर जनमतकी उपेक्षा करनेका प्रयास कर रहे हैं। अगर नरेशने ऐसा ही रवैया रखा तो वहां शीघ्र ही सत्याग्रह छिड़ जायगा। उपप्रधान मंत्री सरदार पटेलने भावनगरमें जाकर उत्तरदायी शासन स्थापित करनेकी घोषणा करवाई है। महाराजा बड़ौदाने गत ९ जनवरीको जिन सुधारोंकी घोषणा की थी उनको राज्य प्रजामण्डलकी कार्यसमितिने गम्भीरतापूर्वक विचारकर अस्वीकार कर दिया है। प्रजामण्डलका कथन है कि इन सुधारोंसे राज्यमें उत्तरदायी शासनकी स्थापना नहीं होती है। बीकानेर राजपूतानाकी रियासतमें सबसे अधिक पिछड़ी हुई रियासत हैं।

वहां आज भी भांति भांतिके अत्याचार जारी है। प्रजामण्डलकी मांगके अनुसार अभी तक लोकप्रिय उत्तरदायी शासन वहां कायम नहीं हुआ है। आज कल गवर्नर जेनरल लार्ड और लेडी माउण्ट बैटन वहां पहुंचे हैं। बीकानेरके नरेश सर्वोच्चसत्ता अपने हाथमें रखने के लिये बड़ी कूटनीतिसे चल रहे हैं और जनताकी मांगोंको ठुकराते जा रहे हैं।

टिहरीराज्यमें कुछ दिनोंमें पहले जनसेवक श्रीसुमनकी हत्या की गयी थी। तबसे वहां के नरेश बराबर जन आंदोलनको कुचलते आये हैं। लेकिन जन आंदोलनको बड़ीसे बड़ी सत्ता जब नहीं दबा सकती हैं, तो टिहरी राज्यकी क्या हस्ती है। आजकल वहां लोकप्रिय उत्तरदायी सरकार कायम करनेके लिये जोरदार आंदोलन चल रहा है। ओरछा राज्य बुन्देलखण्डमें अपनी खास अहमियत रखता है।

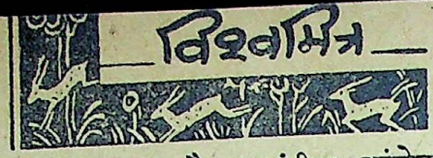

थोड़े दिन पहले वहां किसान नेता की खेरको मार कर जंगलमें फेंक दिया गया और जनताके आन्दोलनको इस भांति दबानेकी कोशिश की गयी। अब वहांके शासक बुंदेलखंड प्रांत बनाने का नया नारा लगा कर वहांकी जनताको बरगलाना चाह रहे हैं। दतिया छोटी पर, बड़ी प्रतिक्रियाशील रियासत है। लेकिन जनआंदोलनका मकाबला न कर सकने पर वहांके शासक अब जनताके सहयोगकी बातें कहने लगे हैं। लेकिन अभी तक वहां उत्तरदायी शासन नहीं कायम किया गया है। समस्त घटनाओंसे स्पष्ट है कि रियासतोंकी जनता अब जाग्रत हो गयी है। अतः उसको कोई शक्ति नहीं दबा सकती है। महात्मा गांधी के शब्दोंमें अब राजाओंका इसीमें हित है कि वे प्रजाके सच्चे सेवक बनें।

हैदराबादका विश्वास घात

हैदराबादने पाकिस्तानको २५ करोड़ रुपया कर्ज देकर भारतके साथ जो विश्वासघात किया है, उससे एक भयंकर स्थिति उत्पन्न हो गयी है। इस सिलसिले में लाहौरसे लौटकर प्रधान मंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरूने सरदार पटेल तथा श्री षण्मुखम चेट्टीसे विचार विमर्श किया है। नेताओंने ऐसा निर्णय किया बताया जाता है कि उसके परिणामस्वरूप निजाम की हरकतोंको बंद कर दिया जायगा। दिल्लीके राजनीतिक क्षेत्रोंमें जैसा विचार किया जा रहा है, उससे स्पष्ट है कि हैदराबादकी इस कार्रवाईसे अब भारत सरकार सिकन्दराबादसे अपनी सेनाएं नहीं हटायेगी। साथ ही हैदराबादकी आयात और निर्यातपर नियंत्रण किया जायगा और इस बातका पूरा ध्यान रखा जायगा कि हैदराबादके फासिस्ट शासक भारतीय संघके हितोंको कोई हानि न पहुंचाये। हैदराबादने पाकिस्तानको कर्ज देकर भारतके साथ हुए समझौतेको भंग किया है। साथ ही उसके इस कामसे भारत पर आक्रमण करनेकी पाकिस्तानकी ताकत को बढ़ाया है। हैदराबादमें आज नादिर शाहीका राज है। करबंदीका आंदोलन प्रारम्भ हो गया है। सत्याग्रह प्रारम्भ होने के बादसे ३०० व्यक्ति मारे और १०,००० कैद किये जा चुके हैं। रिजवी अपने पथपर दृढ़तासे चल रहा है और हैदराबादको भारतीय संघसे अलग एक स्वाधीन राज्य बनानेकी आवश्यक तैयारी कर रहा है। हैदराबादमें जैसी सामरिक तैयारियां हो रही हैं उनको देखते हुए मालूम होता है कि हैदराबाद भारतके चिन्ताका एक बड़ा कारण बन गया है। हैदराबाद राज्य कांग्रेसके अध्यक्ष स्वामी रामानंद तीर्थके वक्तव्यसे स्पष्ट है कि हैदराबादमें कभी भी अग्नि प्रज्वलित हो सकती है।

काश्मीर और राष्ट्र संघ

काश्मीरकी समस्या संयुक्त राष्ट्र संघ के समक्ष उपस्थित है। शेख अब्दुल्ला एवं भारत एवं पाकिस्तानके अन्य प्रतिनिधि अपने अपने पक्षका समर्थन करनेके लिये न्यूयार्क पहुंच गये हैं। काश्मीरपर आक्रमण कर काश्मीरी नर नारियों एवं निरीह बच्चोंकी हत्या करनेवालोंका सरदार भी शीघ्र ही न्यूयार्क पहुंचने वाला है। राष्ट्र संघ काश्मीरकी समस्याका क्या समाधान करेगा, यह तो अभी नहींकहा जा सकता। लेकिन अभीसे तरह तरहके अनुमान लगाये जा रहे हैं। विदेशोंसे जो समाचार प्राप्त हुए हैं उनसे पता चला है कि अमेरिका और ब्रिटेनके राजनीतिज्ञ इस बात की ओर आकर्षित होते जा रहे हैंकि मित्र-राष्ट्र संघको फिलिस्तीनकी भांति काश्मीर में भी एक कमीशन भेजना चाहिये। जो वहां संधि करानेका प्रयत्न करे और काश्मीरी जनताको अपना भविष्य अपने आप तय करनेका अवसर दें। दिल्लीके राजनीतिक क्षेत्र राष्ट्र संघके इस तरहके निर्णयको पसंद नहीं करेंगे। अगर वहां यूनानकी शिकायतकी भांति देरकी जायगी तो भारत अपनी शिकायत वापस लेलेगा। यूनानने १९४६ में शिकायतकी थी लेकिन अभीतक उसका फैसला नहीं हुआ है। एक खबर मिली है जिससे पता चला है कि अरब लीगकी काश्मीर समस्याके समाधानके विचार कर रही है। अरब लीगकी ओरसे भारत और पाकिस्तानसे समस्या समाधानका प्रस्ताव किया जाने वाला है।

महात्माजी उपवास कर रहे हैं

(१३ वें पृष्ठ का शेषांश)

अपने कर्त्तव्यके स्थान पर रह कर पहलेकी अपेक्षा अब और अधिक अध्यवसाय और सुंदरताके साथ उसका पालन करके ही मुझे और मेरे उद्देश्य को हर तरह कहायता पहुंचायी जा सकती है। उपवास आत्मशुद्धिका एक क्रम है।

कितनी वेदना व्यथा और पीड़ा है गांधीजीकी इस वाणीमें किन्तु वे वीर पुरुष हैं, महान आत्मा हैं। आज मदोन्मत्त भारतकी उनकी आवश्यकता नहीं रह गयी क्योंकि उसके रास्तेमें जितने कांटे थे, जितनी विघ्न-बाधाएं थी उनको गांधीजीने अपने त्याग और तपस्या द्वारा दूर कर दिया अब भारतको उनकी आवश्यकता नहीं रह गयी। अब तो प्राप्त शक्ति और सत्ताको मनमाने ढंग से उपयोग करनेके मार्गमें गांधीजी ही उनके लिये सबसे बड़े रोड़े मालूम दे रहे हैं। पूंजीवादी फासिस्ट समाजकी यह चुनौती वीर पुरुष के हृदयको जहां तक सम्भव था व्यथा और वेदना पहुंचा चुकी किन्तु उसकी आत्माको वह छू नहीं सकती। इस उपवास द्वारा वे देखना चाहते हैं कि उनकी शक्ति और पवित्रतामें पूंजीवादी समाजकी दुरभिलाषाको ध्वस्त करनेकी ताकत है या नहीं। यदि नहीं है तो इस मिट्टीके ढेर रूपी शरीरको रख करके क्या करेंगे। धराधामके भार बन कर रहना वीर पुरुष कभी पसन्द नहीं करता। अतः गांधीजी का यह उपवास समाजकी मदोन्मत्तताको चुनौती है, उसके पापोंका प्रायश्चित्त है और भगवानके निकट प्रार्थना है कि वह इन गुमराह स्वार्थके पुतलोंको सीधे रास्ते पर ला दे।

—o—

अणु बमका युग पीछे पड़ गया

—:***:—

लेखक—श्री सव्यसाची

इस शताब्दीमें दोनों विश्व युद्ध आने वाले युद्धोंका अन्त करनेके लिये लड़े गये, पर अभी तक युद्धोंका अन्त समीप नहीं दिखायी देता। पहला विश्व युद्ध १९१४-१८ में लड़ा गया था। २१ वर्ष बाद दूसरा युद्ध प्रायः उन्हीं बातों के लिये हुआ जिनके लिये पहला लड़ा गया था। लेकिन दोनों युद्धोंके बीचमें २१ सालका अन्तर पड़ा यद्यपि सीमित अंचलों और प्रदेशोंमें इस दौरानमें अफ्रीका, एशिया और यूरोपमें लड़ाइयों का सिलसिला चलता ही रहा। पर इस बारकी स्थिति इससे भिन्न है। सीमित दायेरके भीतर लड़ाइयोंका सिलसिला तो बराबर जारी रहा ही तीसरे विश्व युद्धकी चर्चा प्रायः दूसरेकी समाप्तिके साथ ही आरम्भ हो गयी। अभी तीन वर्ष भी नहीं बीते और महा शक्तियोंके बीचमें परस्पर मनोमालिन्य और दुर्भाव इतना अधिक बढ़ गया है कि वाशिंगटन्, मास्को और लन्दन एवं अन्यत्र भी तीसरे महा-युद्धकी खुले आम चर्चा चल रही है।

युद्ध क्यों होते हैं ?

ऐसा समझा जाता है कि साधारणतया किसी राज्यके प्रधान या अधिकारारुढ़ दलकी बहक, उच्चाभिलाषा अथवा उसकी दुस्साहसी प्रवृत्तिकी प्रचण्डता और आततायी मनको सन्तुष्ट करनेके लिये युद्ध लड़े जाते हैं। इसके साथ साथ युद्धोंकी संभावनाको सत्य करनेके और भी कई कारण हैं। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और भौगोलिक परिस्थितियां युद्ध की स्थिति उत्पन्न करनेमें किसी देशके शासककी दुरा कांक्षाओं की कम सहायक नहीं होतीं। यह बात सही है कि देशका शक्तिशाली शासक यदि चाहे तो जिन परिस्थितियोंसे वह युद्ध-स्थिति सम्भव करनेमें काम लेता है उनसे शांति स्थापन का काम भी ले सकता है। युद्धकी राजनीति और शांतिकी राजनीतिके लिये दो भिन्न प्रकारकी परिस्थितियों और हालतों, प्रसंगों और वातावरणकी आवश्यकता नहीं होती। जर्मनीके धुरंधर राजनेता फ्रेडरिक महानने कहा है कि "सभी संभव साधनोंसे राज्यकी सेवा करनेकी कलाका नाम राजनीति है।" जर्मनीके चाणक्य प्रिंस बिसमार्क कहते हैं कि 'सम्भव कर दिखानेकी कलाका नाम राजनीति है।" इस कथनसे उनका तात्पर्य यह है कि राज्यकी सेवा करनेके लिये प्रत्येक संभावनासे लाभ उठाया जाना चाहिये। दरअसल संसार आज इसी नीति पर चल रहा है। नैतिक है या अनैतिक यह प्रश्न तो परिणाम सामने आ जानेके बाद उठता है और विजय घोरसे घोर अनैतिकताको नैतिकताका रूप दे देती है। अधुना राज्यके सूत्रधारके सामने एक ही लक्ष्य और एक ही उद्देश्य रहता है—राज्यके भीतरी और विदेशी स्वार्थों की रक्षा करनेकी ज्वालन्त अभिलाषा। यही अभिलाषा परस्पर स्वार्थोंकी प्रतिस्पर्द्धाके फलस्वरूप धीरे धीरे युद्धका रूप धारण करती रहती है और अन्तमें एक दिन,-वह कितना ही अवांछनीय, अमानवीय क्यों न कहा जाता हो-सम्पूर्ण राष्ट्र मन वचन कर्मसे उसका स्वागत करता है।

तैयारी आरम्भ हो गयी

प्रायः सभी राष्ट्र एक मामलेमें एक ही रवैय्या और तौर तरीका अख्तियार करते हैं आर वह है युद्धकी तैयारीका कारण बताना। सभी कहते हैं कि हम अपनी रक्षाके लिये, आने वाले युद्धसे राष्ट्रके धन-जन और सम्पत्तिकी रक्षाके लिये हम तैयार हो रहे हैं अस्त्र शस्त्रों सुसज्जित हो रहे हैं और नये वैज्ञानिक साधनोंका अविष्कार किया जा रहा है। आज तक यह किसी राष्ट्रको कहते नहीं सुना गया कि अयुक देश पर आक्रमणकी तैयारी की जा रही है। अभी उसी दिन ब्रिटिश सरकारने देशके सामने अपनी रक्षा योजना उपस्थित की है और बताया है कि अणु बमके युगका सामना करनेके लिये प्रत्येक नर नारी, बालक और बालिकाको नागरिक रक्षाकी कला सीख लेनी चाहिये।

इस बार युद्ध आरम्भ हुआ तो उसका परिणाम कहां तक मानव जाति सभ्यता और संस्कृतिका विनाशक हो सकता है यह सभी जानते हैं। वे स्वयं न समझते हों यह बात नहीं है फिर भी शान्तिका प्रवचन करने वालोंकी चेतावनियां भी उनको मिलती रहती हैं, किन्तु ये चेतावनियां युद्ध की ओर ले जाने वाले घटना-चक्रको अधिक प्रभावित करती हैं, ऐसा नहीं समझा जाता।

अभी उस दिन वर्मिंघममें पादड़ियों के सम्मेलनमें भाषण करते हुए बिशप वारनेसने कहा "यदि इंगलैंड महा युद्धमें लिप्त हुआ तो इस भूमि पर अणु बमोंकी वर्षा होगी, यह निश्चित समझना चाहिये। परिणाम घातक होगा, यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है। धर्मयाजकका कर्त्तव्य है कि वह अन्तर्राष्ट्रीय कटुता बढ़ाने लायक कुछ न कहे। दूसरे राष्ट्रोंका विचार करना हमारा काम नहीं है। यह दुर्भाग्य की बात है कि अमेरिकन समाचार पत्र और अमेरिकन बेतार जगत (रेडिया) रूसकी निन्दासे परिपूर्ण हैं। हमें इंगलैण्डमें असत आदर्श से दूर रहना चाहिये। आप कहेंगे कि रूस ही तो सन्देह और कुछ दुरभिसंधिपूर्ण भ्रान्ति फैलाता है। इस देशको धैर्य से काम लेना

चाहिये। जब यह स्पष्ट हो जायेगा कि हमारी विश्वनीति स्वार्थसे प्रेरित नहीं है, हमें पूर्ण विश्वास है कि जो लोग आज हमपर सन्देह करते हैं अन्तमें हम उनका सम्मान और मैत्री जीत सकेंगे। हमें यह याद रखना चाहिये कि सबसे पहले इंगलैण्ड और अमेरिकाने मिलकर ही इस तरहके विघातक अस्त्रका प्रयोग किया है जिसकी पहले कल्पना भी नहीं की गयी थी। अमेरिकन धर्माचार्योंने इस कार्यको निन्दनीय बताया किन्तु ब्रिटिश धर्माचार्योंने इसकी निन्दा करनेसे आस्वीकार किया। ईसाके भाव और आदर्शसे इस तरह हट जाने पर हम इससे अधिक कुछ नहीं कहेंगे कि हमें इस तरह की हीनता पर लज्जित होना चाहिये।'

हथियारोंका युग

किन्तु हम नहीं समझते कि बिशप बारनेसके इस कथनका उनके अनुयायियों और सहयोगियोंपर कुछ भी असर पड़ेगा। यदि ऐसा सम्भव होता तो क्या आज महात्मा गांधीको अनिश्चितकालतक उपवास रख कर मौतको मौन निमंत्रण देनेको वाध्य होना पड़ता। यह युग सत्य और प्रेमके आदर्शोंका नहीं है। यह तो स्वार्थ, लिप्सा, मोह मत्सरका युग है और इनको चरितार्थ करनेके लिये मनुष्य अणुबमसे भी भयंकर शस्त्रास्त्रोंकी खोज और निर्माणमें लगा है। विज्ञान आज विनाशका सहायक है। विज्ञानने इस युगको हथियारोंका युग बना दिया है। आज मानवताके आदर्शोंकी नहीं विनाशके प्रचण्ड शस्त्रास्त्रोंकी प्रतियोगिता और प्रतिद्वंद्वितामें राष्ट्रोंके ज्ञान और विज्ञान, बुद्धि और प्रतिभाका परिचय संसारको दिया जा रहा है। युद्धकालमें अमेरिकन जल सेनाके एक उच्च पदस्थ अधिकारी एडमिरल एलिस जेकेरियाने 'यूनाइटेड नेशन्स बुलेटिन' नामकी पत्रिकामें यह गंभीर घोषणा की है कि यदि तमाम अणुबम और उसके निर्माण की सुविधाएं कल नष्ट कर दी जायें तो भी इस तरहके शस्त्रास्त्र बन चुके हैं जो मानव, पशु और उद्भिद् जीवनका नामो-निशान मिटा डालनेके लिये पर्याप्त हैं। इस अधिकारीका कहना है कि अणुबमका तो नाम ही नाम है, उससे इतने भयंकर और प्रचण्ड विनाशक साधनोंका निर्माण हो चुका है कि अणुबमका युग पीछे पड़ गया। यह तो 'पूर्ण ध्वंस्वाहा अस्त्र' का युग है।

एडमिरल एलिस कहते हैं कि कई महा-शक्तियोंके शस्त्रागारोंमें अणुसे अधिक विनाशकारी शस्त्रास्त्र और रसायनिक-तत्व एवं पदार्थ हैं। यह आनेवाली भयंकर विभीषिकाकी भविष्यवाणी नहीं है। ये अस्त्र मौजूद हैं। इनका निर्माण धड़ल्लेके साथ हो रहा है। और इस क्षेत्र में केवल अमेरिकाका ही एकाधिकार हो, ऐसी बात भी नहीं है। कई राष्ट्रोंके पास इस तरहके अस्त्र हैं और वे इनकी भयंकरता बढ़ानेमें लगे हैं। और एक बात है, अणुबमका निर्माण सीमित साधनोंके अन्तर्गत सम्भव नहीं था, किंतु इन अस्त्रोंको तो सीमित औद्योगिक सुविधा सम्पन्न छोटे छोटे राष्ट्र भी बना सकते हैं।

एडमिरल एलिसके कथनमें कितना जोरदार सत्य है यह अमेरिकाके पार्लमेण्टके एक सदस्यने अति उत्साह और विवेक शून्यताका परिचय देते हुए उस दिन जिस रहस्यका उद्घाटन किया है उसे शायद संसारके भेदिया अमित धन या बुद्धि खर्च करके भी नहीं प्राप्त कर सकते थे। आपने कहा था कि 'हमारे राष्ट्रके अधिकारमें ऐसे-ऐसे वैज्ञानिक साधन हैं जिनसे हमारी स्थिति अजेय हो गयी है। हमारे अधिकारमें एक ऐसा जीवाणु अस्त्र है जिसकी विध्वंसक शक्ति अणुबमसे भी कहीं अधिक भयंकर है। आपने यह भी कहा था कि केलिफोर्निया विश्वविद्यालयकी रसायन और प्रयोगशालाओं में अमेरिकन वैज्ञानिकोंने एक ऐसे अस्त्र की सृष्टि की है जो बड़ेसे बड़े शहरके सब प्रकारके जीवनका अस्तित्व लोपकर सकता है। कुछ दिनों बाद कांग्रेसके सामने उपस्थित की गयी युद्ध-विभागकी रिपोर्टमें यह बताया गया कि यह नवीन अस्त्र सचमुच मध्य इण्डियानामें कहीं तैयार किया जा रहा है। एक सप्ताह बाद एक सुप्रसिद्ध अमेरिकन वैज्ञानिकने यह कहा कि अमेरिकाके अधिकारमें एक नहीं तीन गुप्त शस्त्र हैं।

बीजाणु विष प्रयोग

बीजाणु विष प्रयोगके अनुसंधानकी चर्चा पुरानी हो गयी है। जर्मनी और जापान तथा ब्रिटेन, अमेरिका और कनाडा मिलकर इनके निर्माणमें लगे हुए थे। कहते हैं कि एक इस प्रकारका बीजाणु विष तैयार किया गया है जिसके एक ही प्रयोगमें सत्तर लाख मनुष्योंको मौतकी गोदमें सुलाया जा सकता है। किन्तु यहीं इति नहीं हो गयी। इससे भी अधिक समर्थ और सशक्त संक्रामक पदार्थोंका आविष्कार किया गया है जो कोटि कोटि मनुष्योंको मार सकते हैं। बीजाणु विष प्रयोग मनुष्य, पशु और वृक्ष लतादिके विनाशके लिये इच्छानुसार किया जा सकता है। नवीनास्त्रोंके आविष्कारके सामने गत युद्धमें व्यवहृत शस्त्रास्त्र आज तीर धनुष की तरह निकम्मे हो गये हैं। नये अस्त्रोंका प्रभाव अत्यन्त व्यापक बताया जाता है। उनका मारात्मक गुण व्यवहारके बहुत दिनों तक रहेगा और राष्ट्रोंकी सीमाओंको लांघता हुआ आपसे आप बहुत दूर तक फैलता चला जायेगा। जिस जिस क्षेत्र तक इसका असर फैलेगा उसे प्रवेश निषिद्ध घोषित करके रखा जायेगा ताकि बाहरके आदमी वहां आकर उस विषके प्रभावमें न आ जायें। उसी तरह उस क्षेत्रके आदमियोंको भी बाहर नहीं जाने दिया जायेगा क्योंकि उनके संसर्गसे दूसरे भी संक्रान्त होंगे। एक बार जिस क्षेत्रमें इस विषका प्रयोग होगा यह जो संक्रान्त होगा एक हजार वर्ष तक वहां कोई-मनुष्य, पशु पक्षी या वृक्ष लतादि-जीवन धारण नहीं कर सकते। वह दिन देखा जा रहा है जब अंतर्राष्ट्रीय सरहदों पर इस आशयके नोटिस लगे दिखायी देंगे 'एक हजार वर्ष तक संक्रामक विषसे बचावके लिये इस राज्यमें प्रवेश निषिद्ध—प्रवेशका अर्थ है मृत्यु।"

इसीसे कहा जाता है कि अणुबमका युग समाप्त हो गया पूर्ण ध्वंस्वाहा अस्त्रका युग आ रहा है।

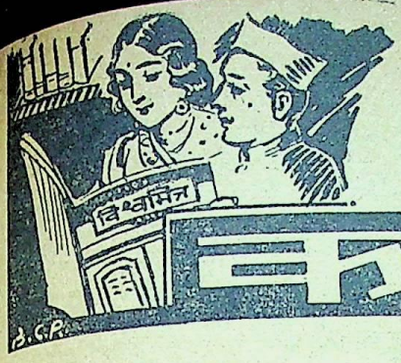

ये दीवारें

ले०—श्री विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त

अन्तर व्यथा भुलाये जा,
मीठे गीत गाये जा
रूखी सूखी डालों में,
फूल नये खिलाये जा
पतझड़के हाथ बिक गयी,
कोमल कली बसंत की
जग-बनके तार-तार पर,
स्नेह सलिल बहाये जा
अन्धड़ तूफान आग हो,
साथ प्रलयका राग हो
बादल-सा घूम-घूम कर,
उजड़ा घर बसाये जा
जग-पथमें अंधकार है,
भग्न किरणका तार है
बदलीमें चांद-सा निकल,
ज्योति नयी दिखाये जा
पक्षीके प्राण खिल उठे,
अवरोध द्वार खुल पड़े
जलता जीवन मधुर बने,
गीत नवीन गाये जा....

निर्मल गुनगुना रहा है। रधिया उपवनमें प्रवेश करती है। उसकी दृष्टि 'निर्मल' पर पड़ती है—उसके ओठों पर प्रसन्नताकी एक रेखा खिच जाती है। निर्मल उसको नहीं देख पाता है। वह लुकती छिपती निर्मलके पीछे पहुंचती है और वृक्षकी ओटमें खड़ी हो जाती है। उसके अङ्ग-अङ्गसे चञ्चलता और प्रसन्नता प्रकट हो रही है।

'आक छीं'.....रधिया को छींक आती है।

निर्मल चौंक कर पीछेकी ओर देखता है और रधियाके सामने आ खड़ा होता है।

रधिया लज्जित भयभीत हिरनीकी तरह उसे देखती है—जैसे चोर चोरी करते समय सेंध पर पकड़ा गया हो।

'तुम....आप !'—

'जी...'

'आप कबसे खड़ी हैं ?'

'कुछ देर से।'—रधियाका सिर झुका हुआ है पूर्ववत।

'माफ कीजियेगा—मुझे आपकी उपस्थितिका ज्ञान नहीं था।'

'मैं इसके लिये शिकायत नहीं करती।'

'यह आपकी उदारता है।'—निर्मल जाते-जाते रुकता है और तुरंत जानेके लिये घूमता है।

'आप कुछ कहना चाहते हैं ?'—

'मैं...नहीं।'—प्रश्न सुनकर निर्मल चौंकता है। आगे बढ़ता है किंतु दो कदमके बाद ही रुक जाता है।

'....हां, जरा सुनिये तो !'

रधिया हौले-हौले उसके पास जाती है।

'आपका शुभनाम, मैं पूछ सकता हूं ?'

'जरूर ! जरूर !! मुझे लोग 'राधा' कहते हैं।'

'राधा ?'

'जी !'

'नमस्ते !'

'नमस्ते !'—रधिया दोनों हाथ जोड़ देती है। और जब तक निर्मल आंखोंसे ओझल नहीं हो जाता—वह उसे ठगी-ठगी-सी देखती रहती है।

० ० ०

अपने घरके कमरेमें रधियासे काफी प्रभावित निर्मल निद्रामग्न है। उसके मानस-पट पर रधियाके साक्षातका दृश्य खिंच जाता है:

'आप कुछ कहना चाहते हैं ?'

'मैं....नहीं।'-प्रश्न सुनकर निर्मल चौंकता है। आगे बढ़ता है किन्तु दो कदम के बाद ही रुक जाता है।.....

'हां, जरा सुनिये तो !'

रधिया हौले-हौले उसके पास जाती है।

'आपका शुभनाम, मैं पूछ सकता हूं?'

जरूर ! जरूर !! मुझे लोग 'राधा' कहते हैं।'

'राधा ?'

'जी !'

'नमस्ते !'

'नमस्ते !'—रधिया दोनों हाथ जोड़ देती है।'

सहसा निर्मलकी नींद टूट जाती है। मोहमें डूबा हुआ वह जम्माइ लेता है। बेचैनीसे करवट बदल कर सामने शून्य की ओर देखता है।—आंखें खुली हैं किंतु मन कहीं सुदूरमें भ्रमण कर रहा है।

० ० ०

रधिया अपनी झोंपड़ीमें अपनी मांके निकट एक चरपाई पर सो रही है। निर्मल के प्रति प्रेमसे परिपूर्ण उसका मन कल्पना की सुनहली दुनियांमें विचरण कर रहा है: "स्वर्गसे सुन्दर ब्रजमण्डलमें जहां मोर नाच रहे हैं, प्रेमी कपोतोंकी जोड़ी प्रेमालाप निमग्न है, ब्रजमोहन निर्मलके पास वह राधाके रूपमें खड़ी है। निर्मल बांसुरी बजा रहा है और ब्रजांगना ग्वालोंके साथ मुग्ध हो कर नृत्यके साथ संगीत कलाका प्रदर्शन कर रही हैं। सभीके पास झोलीमें अबीर भरा है और पासमें रंगसे भरी बाल्टी पिचकारी रखी है जिसे सब इच्छानुसार काम लेते हैं।..."

रधियाकी नींद टूट जाती है। वह आंखें मलते उठ बैठती है। मांको देखती है—वह निद्रामग्न है। हौले-हौले वह खिड़कीके पास जाकर बाहरकी ओर देखती है, पास खड़ा बूढ़ा बरगदका पेड़ जो अंधकारमें एक विशाल दैत्यकी तरह लगता था, चांदको हृदयमें छुपाये मनलुभावना दिखाई देता है। वह मोह भरी आंखोंसे उसे एकटक देखती रह जाती है।

दूसरे दिन रूपका भंडार लिये रधिया उपवनमें पहुंचती है किन्तु निर्मल उसे दिखाई नहीं देता है। वह निराशासे टकराने लगती है :

मेरे नयनों के पावस में,
कोई सपने सा छाये क्यों
मेरे दिल के सूनेपन में,
कोइ चुपके से आये क्यों
मैं आंसू की हूं बूंद हाय,
भू पर चूकर मिटने वाली
जग में जिसका कुछ मोल नहीं,
मैं मिट्टी की टूटी प्याली
तब मेरी जीवन-रातों में,
कोई चंदा मुस्काये क्यों
मैं एक कली हूं जग-वन की,
पर मिलने का अधिकार नहीं
घुल-घुल जल-जल मुरझा जाऊं,
पर मिल न सकेगा प्यार कहीं
कोई रसिया प्रेमी भौंरा,
तब मीठे गीत सुनाये क्यों

मंदिरका पुजारी पण्डित हीरानंद जिसके सिर पर पण्डितनुमा गोल टोपी और शरीर पर मिरजई शोभा दे रही है, बगलमें 'पत्रा' दबाये आता है। रधियाको विस्मयसे आंखें फाड़-फाड़ कर देखता है।

"राधाकृष्ण ! राधाकृष्ण ! मेनका और रंभासे भी अधिक सुन्दर तुम कौन हो सुन्दरी ? इस निर्जन स्थानमें वियोगिनीकी तरह किस निष्ठुर प्रेमीकी प्रतीक्षा कर रही हो ?"—पण्डितकी आंखोंमें वासना झांक रही है।

"पण्डितजी !"—रधियाके मुख पर भयकी रेखाएं खिंच जाती हैं।

'हां, लोग मुझे पण्डित' कह कर ही पुकारते हैं। दस मीलके भीतर कौन ऐसा है जिसने महापण्डित हीरानंद पुजारीका नाम नहीं सुना होगा"—पंडित अलग-बगल किसीको न देख संतोषकी सांस लेता है।

केवल दो लोटा भंग पीकर निकला था किंतु परमात्माकी सोगंध खिला लो, तुम्हारी मादक आंखोंने मुझे मतवाला बना दिया।"—पंडित रधियाकी ओर बढ़ता है।

'उसे नहीं रूक जाओ ! सचमानो ! तुम्हारे कोमल शरीरको छूत ही मेरे मन प्राण शीतल हो जायंगे !"

'पंडितजी ! मैं अछूत हूं।"—रधिया पीछेकी ओर हटती है। कोई परवाह नहीं। कींचमें उत्प न होकर भी कमल देवताके शीश पर चढ़ता है।"—पंडित मूंछों पर हाथ फेरता है। „आप मेरे पिताके समान हैं।"

एक अछूत लड़कीका पिता महापंडित हीरानंद ? राधाकृष्ण ! राधाकृष्ण ! सामने आते हुए निर्मल पर उसकी नजर पड़ती है। वह संभल जाता है।

जीती रहो ! जीती रहो ! भगवान तुम्हारा जीवन आनन्दसे कटने दें ! राधाकृष्ण ! राधाकृष्ण !"—कभी रधिया और कभी 'निर्मल' को घूरते हुए चला जाता है।

विचारोंकी आंधीमें लड़खड़ाता निर्मल रधियाके पास पहुंचता है किन्तु संकोचवश उसको कुछ कह नहीं पाता। रधिया उसके चेहरेके उतार-चढ़ावको ध्यानसे देखती है !

कुछ आगे बढ़ने पर निर्मल पीछेकी ओर देखता है और चौंक कर रुक जाता है। रधिया उसके अत्यन्त निकट है।

'आप कुछ कहना चाहती हैं ?'—निर्मल पूछता है।

जी।'—रधियाके ओठोंपर मुस्कुराहट की रेखा खिंच जाती हैं।

'कहिये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?'

'मैं जो पूछूंगी—आप उस प्रश्नका सही-सही उत्तर देनेकी तकलीफ करें—प्रार्थना है।'

'आप विश्वास रखें ! ऐसा ही होगा।'

'आप मुझसे कुछ कहना चाहते हैं किन्तु कह नहीं पाते।'

'यह आपसे किसने कहा ?'

'आपके चेहरेके भावों ने।'

'जी !'

'जी !'

'आप बहुत बुद्धिमान हैं। मेरे दिलकी बातें आपसे छिपी न होंगी।'

'मैं अन्तर्यामी नहीं हूं।'

किन्तु आंखोंकी भाषा तो अवश्य पढ़ सकती हैं।'

'मैं, पहेली, नहीं समझती। आप स्पष्ट बतलानेका कष्ट करें !'

—रधिया लज्जाके भारसे दबकर तिरछी नजरोंसे देखने लगती हैं।

'तनिक धैर्य्यसे काम लीजिले !'

'मेरी प्रार्थना न ठुकराइये !'

'मैं निष्ठुर नहीं। आज आधी रात तक सब्र करें !'

० ० ०

उस रात को।

रधिया अपनी झोपड़ीमें बेचैनसे करवटें बदल रही है। सहसा उसके कानोंमें निर्मलकी आवाज पड़ती है। वह चञ्चल हो जाती है। उसकी मां नींदमें बेसुध है। वह चोरी चोरी घरसे निकल कर बरगद के पेड़के नीचे पहुंचती है। कुछ दूरपर झाड़ियोंकी ओटसे निर्मलकी आवाज आ रही है:

गीत

निर्मल०—जीवन-पथकी अंधिआली में, चांदनी बन प्रिय, आओ !
तेरे दिल में पीर न होती
क्या नयनों के नीर न खोती
युग युगसे प्यासे जीवन की, तत्क्षण प्यास बुझाओ !

सशंकित रधिया०—
साथ हमारा छूट न जाये
मीठे सपने टूट न जाये
राह नहीं कांटों से खाली, साथी ! तुम रुक जाओ !

निर्मल०—
चलना ही है फिर रुकना क्या
बाधाओं का मुंह तकना क्या
कांटे हैं मगमें तो भय क्या, हंस-हंस फूल खिलाओ !

निर्मलकी ओर बढ़ती हुई रधिया०—
न्योछावर तुझ पर जीवन धन !
तन मन मेरा चञ्चल यौवन

ज्वाला में सावन पावन बन, जीवन मधुर बनाओ !

दोनों०—

जन्म मरण का सौदा कर लें
जान हथेली पर हम धर लें
तोड़ो बन्धन, पंछी बनकर, मन के गीत सुनाओ !

० ० ०

रधिया की मां की नींद टूटती है। पासमें रधियाको न देखकर वह उठ बैठती है।

'रधिया ! रधिया !'—वह कई बार पुकारती है किन्तु उसे कोई उत्तर नहीं मिलता। सशंकित वह घरके बाहर निकलती है। बरगदके पेड़के नीचे पहुंचती है और फिर कई बार पुकारती है, 'रधिया ! रधिया !'

'मां पुकारती है। मुझे जाने दो !'—अपनी मां की आवाज सुनकर रधिया घबड़ाहट भरे स्वरमें निर्मल से कहती है।

फिर हम कब मिलेंगे ?'—निर्मलके नेत्रोंमें अनुराग भरा है।

'कल इसी समय, इसी जगह।'—

चांदनी रातमें रधियाकी मां देखती है, झाड़ियोंकी ओटसे निकल कर अधिया आ रही है और दूसरी ओर एक युवक जा रहा है। वह क्रोधमें भर जाती है।

रधिया डरते-डरते उसके पास जाती है।

कहां गई थी ?' रधियाकी मांका क्रोधपूर्ण स्वरी रधियाकी बोलती बन्द है। वह चुप खड़ी रह जाती है।

'मैंने उस गुण्डेको भी झाड़ियों की ओटसे निकलते हुए देखा है।'—उसकी मां का क्रोध बढ़ता जाता है।

मां ! उन्हें गुण्डा न कहो !'—रधिया अपना मौन व्रत भंग करती है।

'बेशर्म लड़की ! जो अपनी वासना की बेदीपर एक भोली लड़कीका भविष्य भेंट चढ़ा रहा हो—उसे गुण्डा नहीं तो और क्या कहा जायगा ?'

'वह बड़े सज्जन हैं।'

इसलिये, कि तुमसे कहता होगा, 'तुम मेरे दिलकी रानी हो' 'मैं तुम्हारे लिये अपनी जानतक न्योछावर कर सकता हूं' 'तुम मेरी छाती चीर कर देख लो, मैं तुमको कितना प्यार करता हूं।' भोली लड़की, यह तुम्हारी जैसी मूर्ख स्त्रियों को अपने चंगुलमें फंसानेके लिये, अपने शरीरकी प्यास बुझानेके लिये, धूर्त्त पुरुषों द्वारा बिछाया गया सुनहला जाल है। ऐसे जालमें फंसकर कितनी स्त्रियां अपना भविष्य नष्ट कर चुकी हैं—तुम्हें पता नहीं।'

'वह ऐसे नीच नहीं हो सकते, मां ! उनका हृदय बच्चोंके हृदयकी तरह पवित्र है।'—

'परीक्षा कर लो ! यदि वह सोना है, आगमें तपाकर जांच लो ! मैं उससे फिर एक बार मिलनेकी आज्ञा देती हूं।'-

दोनों मां, बेटी घरकी ओर बातें करतीं, लौटीं।

० ० ०

निर्मलके पिता 'पैसादास' अपनी दूकानपर बैठे हुए बही उलट-पुलट रहे हैं। उनके पास एक देहाती जमींदार बैठे हुए उनके मुखकी ओर आशा भरी दृष्टिसे देख रहे हैं।

'आपकी स्वीकृति मिल जाती तो विवाहकी तिथि पक्की हो जाती। शुभ कार्य में देर अच्छी नहीं।'—

'मैंने अपना निश्चय बतला दिया आपको। पांच हजार रुपये तिलकमें देना स्वीकार करें तो मुझे कुछ उज्र नहीं।'—बहीसे आंखें हटाकर पैसादासने जमींदार से कहा।

"किन्तु वह तो बहुत बड़ी रकम है, मेरे लिये असम्भव है।"

"तब तो मेरी राय है, आपको दूसरा द्वार देखना चाहिये।"

"मैं आपसे करबद्ध प्रार्थना करता हूं। आप रुपयेकी ओर नहीं, लड़कीकी ओर देखिये। लाखोंमें एक है। जमींदार-ने हाथ जोड़कर कहा।

"मेरा लड़का भी क्या कम है ? तपस्या करनेपर भी शायद वैसा लायक दामाद आपको न मिले।"

"तभी तो मैं दो हजार दे रहा हूं।"

"जनाब ! आपसे यह सौदा नहीं पट सकेगा। मैंने कई बार आपको बतलाया कि तीन हजार कल एक महाशय देनेके लिये एकदम तैयार थे किन्तु मैंने सिर हिला दिया।"

"अच्छा, तीन हजार ही सही।"

"नहीं, नहीं।"

चार हजार !'

'हरगिज नहीं।'

'अच्छा, पांच हजार ही सही। विवाह की तिथि निश्चित हो जानी चाहिये—इस जुलाईमें ही।'

मुझे कोई उज्र नहीं।'

'राधा कृष्ण ! राधाकृष्ण !"—कहते हुए पण्डित हीरानन्द पधारे।

अच्छे अवसरपर आये महाराज ! निर्मलके विवाहकी तिथि विचार कर बतलानेकी कृपा करें !'—पैसादासने पण्डित-से कहा।

पण्डितजीकी प्रसन्नताका ठिकाना न रहा।

* * *

निर्मलने विवाहका विरोध किया। पैसादास आग बन गये !

"जब तुम चार वर्षके बचे थे, तुम्हारी मां तुमको छोड़कर चल बसी। उस समय से मैंने तुमको पाला-पोसा और पढ़ा-लिखा कर एक आदमी बनाया। क्या इसी दिन के लिये कि तुम मेरी आज्ञाका उलंघन करो ?"—पैसादासकी आंखें लाल हो गई थीं। "पिता जी !" ....निर्मल कुछ कहना चाहा।

"बस, मैं कुछ सुनना नहीं चाहता।' —पैसादासने उसे आगे बोलनेसे रोककर कहा, "तुम्हारी होने वाली पत्नी एक आंख की हो चाहे एक पांव की, गूंगी हो या बहरी, पढ़ी लिखी हो या अपढ़, तुमको उसे कबूल करना ही होगा इसलिये कि मैंने विवाह की तिथि निश्चित कर ली है।" —

"विवाह, जन्म-मरणका प्रश्न है, पिता जी !"—

'सोच-समझकर जवाब दो ! अपने पांवमें आप कुल्हाड़ी मत मारो ! गरीब गायकी तरह एक मासूम लड़की को कसाई की तरह एक साठ वर्षीय बढ़ेके हाथोंमें सौंप दिया जाता है किन्तु वह इंकार नहीं करती। अच्छा होता, तुम लड़का न होकर लड़की होते।' —

"मैंने अपना निश्चय बतला दिया आपको।"—

"तो यह विवाह स्वीकार नहीं ?'

"जी, नहीं !"

"अच्छा, कान खोलकर सुन लो ! तुमने मुझे अपमानित करनेके लिये प्रण कर लिया है तो मैंने भी निश्चय कर लिया है। मैं एक मन्दिर बनवाऊंगा, और ठाकुर जी के भोगके लिये अपनी सारी जायदाद दे दूंगा। तुम्हें एक कौड़ी भी न दूंगा। साधु मालपुआ उड़ायेंगे, सुलफा सुलगायेंगे और तुम दाने-दानेके लिये तरसोगे।" —

"अधर्मसे कमाया हुआ धन गरीबोंके काम नहीं आता, पिता जी, मुझे मालूम है।" —

"बस, जुबान बन्द करो और कूड़े की तरह अभी मेरे घरसे निकल जाओ ! आजसे तुम मुझे अपना पिता नहीं, शत्रु समझना !" —

व्यथित निर्मल एक दूसरे कमरेमें अपनी मां के चित्रके पास आता है। उसकी आंखोंमें आंसू भर जाते हैं।

* * *

आधी रातका समय। आकाशमें बादल मंडरा रहे हैं। निर्मल झाड़ियोंके पास खड़ा है। रधिया आती है।

"मुझे विश्वास था तुम जरूर आओगे।" —रधियाने आते ही कहा।

"कब से खड़े हो ?।"

"कुछ देर से।"

'मेरी आंखें लग गई थीं।"

'राधा ! तुमसे बहुत जरूरी बातें करनी हैं।"—निर्मलके नेत्रोंमें विषाद झांक रहा था।

'रात, मां ने हम दोनोंको देख लिया।"

"मां तुम्हारी मां का क्रोधपूर्ण स्वर कानोंमें पड़ा था।"

"आज हमारे भाग्यका अंतिम फैसला है।"

"निस्संदेह।"

"मेरी बातोंका जवाब दो !"

मैंने कब नहीं' कहा ?"

'.... तुम मुझे हृदयसे प्यार करते हो ?"

"तुम जानती हो।"

लोग मुझे अछूत' कहते हैं।"

'मुझे मालूम है"

"जब तुम मुझको पत्नीके रूपमें ग्रहण करोगे-हिन्दू समाज सहन न कर सकेगा। उस समय तुमने मुझको मझधारमें छोड़ दिया तब मेरा क्या होगा ?"—

'राधा ! मुझ पर तुम्हारा विश्वास नहीं ?"—

'तुमको सबूत देना होगा।"

"किस तरह ?"—

"कम से-कम पांच हजार रूपयेकी जायदाद मेरे नाम रजिस्ट्री करा कर।.... मां कहती है, धनिकके लड़केंका क्या विश्वास ! सुन्दर युवतियोंको अपने प्रेम-जालमें फंसा कर, उनके रूप यौवन से खेलवाड़ करना उनके लिये साधारण बात है।"—

"क्या मतलब ? तुम रूपये से अपने प्रेम का सौदा करना चाहती हो। मुझे क्या मालूम था कि तुम्हारे सुन्दर शरीर के भीतर एक वेश्या का हृदय छिपा है।"-

"निर्मल !"— रधिया क्रोधावेशमें निर्मलके गाल पर तमाचा मार कर उसे आगे बोलनेसे रोकती है। बादल गरजता है। बिजली चमकती है।

निर्मल अवाक खडा रहता है।

'दगाबाज ! विश्वासघाती !"— रधिया फफक कर रोने लगती है।

आंधी का एक झोंका आताहै। रधिया घरकी ओर लौटती है।

'राधा ! राधा !"— रधियाकी ओर निर्मल बढ़ता है। किन्तु उत्तरमें उसे रधियाके रोनेकी आवाज सुनाई पड़ती है।

हवा तेज होती जाती है। झमाझम पानी गिरने लगता है। रह-रहकर बिजली चमकती है। पानीमें भींगता और हवाके झोंकेमें लड़खड़ाता निर्मल पथ-पर बढ़ता दिखाई देता है।

दो शब्द चित्र

भाता नहीं—

आज मानवताका यह आडम्बर
भाता नहीं, भाता नहीं।
जो प्रेत बनकर रेंगता सा
छा गया है विश्व पर।
बन्द चारों ओर
चट्टानों सा
कि
जिसमें किलबिलाती
इन्सानियत।
दम घुट रहा, दुर्गन्ध कड़वी
सड़े प्याज सी
परिधि जिसकी है क्षितिज सी
छा गयी है वानियत।
और मानव ढूंढता ही जा रहा है,
घृणित आडम्बर,
जो स्वार्थके पर्याय है,
स्नेहके दुश्मन,
यह कृत्रिम रूप, निर्मम
भाता नहीं, भाता नहीं।

अमरत—

ओ अमरते !
आज सुन तू
मैं तुझे ललकारता हूं।
जन युगके सम्बन्ध से
ाक
जिसके वेग प्रबल से
दहलती छाती,
हिमालय सी,
स्वार्थके बन्धनों की।
संघर्ष युग की देन है
कर्म रथ गतिशील है।
आज भर दे, अमृत घट से
पीड़ित छाती
विकल युग की
ओ अमरते !
आज सुन तू

—श्री अशोक

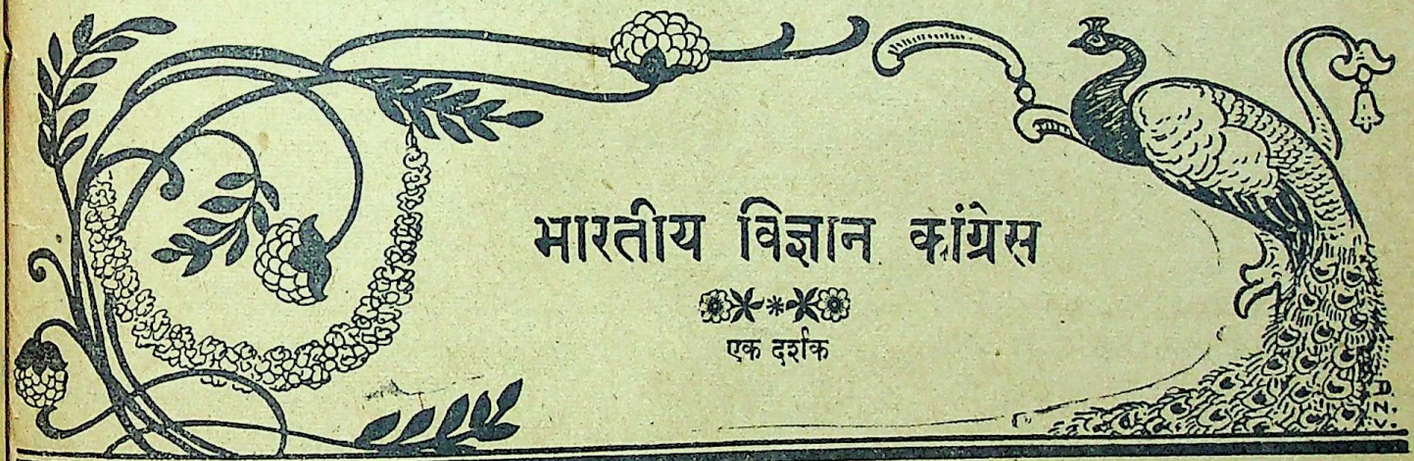

भारतीय विज्ञान कांग्रेस

एक दर्शक

कांग्रेसका ३५ वां अधिवेशन सम्पन्न हो गया। इससे पहले वर्षमें पण्डित जवाहरलाल नेहरूकी अध्यक्षतामें दिल्लीमें अधिवेशन हुआ था जिसमें देश एवं विदेशसे पधारे हुए बड़े बड़े वैज्ञानिकोंने भाग लिया था। गत १५ अगस्तको भारत स्वाधीन हुआ है। अतः भारतके वैज्ञानिकोंका उत्तरदायित्व अब पहलेसे कई गुना बढ़ गया है। साथ ही भारत एवं संसारकी परिस्थिति बहुत ही विकट हो गयी है; तृतीय महायुद्धकी भयावनी आशङ्काएं लोगोंको परेशान किये हुए हैं। ऐसी अवस्थामें पटनामें होनेवाले स्वतन्त्र भारतके विज्ञान कांग्रेसके प्रथम अधिवेशन का कितना मूल्य है यह सहज ही में समझा जा सकता है। विज्ञान कांग्रेसके पटना अधिवेशनमें सम्मिलित होनेके लिये लगभग आठ सौ प्रतिनिधि भारत और पाकिस्तानके कोने कोनेसे आये थे।

बिहारके गवर्नर श्री जयराम दास दौलतरामने अधिवेशनका उद्घाटन किया। उन्होंने अपने भाषणमें कहा कि दरिद्र, नंगे एवं तरह तरहकी बीमारियोंसे ग्रस्त जनताके बलपर ही भारतीय वैज्ञानिकोंको अपना अनुसन्धान कार्य करना पड़ा है। इस देशकी प्रति व्यक्ति औसत आय दो आना है और साठ प्रतिशत भी लोग पेट भर खाना नहीं पाते हैं। प्रति चार व्यक्तियोंमें एक मलेरियाका शिकार है तथा औसत आयु २५ वर्ष है। प्रति दस व्यक्तियोंमें ९ व्यक्ति निरक्षर हैं। और उनके हिस्सेमें कपड़ा पड़ता है १३ गज। इस प्रकारके अभाव ही इनके मार्गमें हिमालयके समान खड़े हैं, जो उन्हें संसारकी अन्य सभ्य जातियोंके समक्ष सीना तानकर खड़ा नहीं होने देते हैं। उन्होंने समवेत वैज्ञानिकोंसे अनुरोध किया कि आप लोग ऐसे उपायोंका अनुसन्धान कीजिये जिससे हमारे राष्ट्रीय जीवनकी उन्नति हो एवं भविष्यमें किसी तरह निराश न होना पड़े। और हम पुनः अपनी प्राचीन समृद्धि तथा परम्पराको प्राप्त कर सकें।

पण्डित नेहरूने अधिवेशनके प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए जो सन्देश भेजा था उसमें उन्होंने लिखा था कि मुझे आशा है कि वैज्ञानिक अपनी विद्या, बुद्धि परिश्रम एवं अनुभवोंके आधारपर जनताकी उन्नतिमें सहायक होंगे। अगर आप लोग ऐसा नहीं कर सके तो आपने जो ज्ञान अर्जित किया है वह पेशे तक ही सीमित रहेगा, जनताके हितमें तनिक भी सहायक न होगा।

स्वागत समितिके सभापति पटना विश्वविद्यालयके वायस चान्सलर श्री सी० पी० एन० सिंह थे। आगत प्रतिनिधियोंका स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकोंको साम्राज्य वादियोंके हाथ की कठपुतली बनकर अपने ही भाइयोंके विनाशका कारण नहीं बनना चाहिये बल्कि मनुष्य समाज भला कैसे होगा, कौन सा आविष्कार मनुष्यके उपयोगमें आयेगा आदि विचार प्रत्येक वैज्ञानिकको अपने ध्यानमें रखने चाहिये।

वन्देमातरम् गानसे अधिवेशनकी कार्यवाही प्रारम्भ हुई। अमेरिका, ब्रिटेन आस्ट्रेलिया और बर्मासे आगत विख्यात वैज्ञानिकोंका परिचय प्रतके गवर्नरसे प्रो० प्रशान्त महल नवीसने कराया। प्रत्येक विदेशी वैज्ञानिकने अपने अपने देशकी ओरसे भारतके प्रति श्रद्धा प्रकट की। सम्मेलनकी सफलताके लिये श्रीमती सरोजिनी नायडू अर्देशिर दलाल, ज्ञानचन्द्र घोष, मेजर जनरल माटिया शान्तिस्वरूप भटनागर श्री जीवराज मेहता और वर्माके बी० मायने सन्देश भेजे थे। भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडूने लिखा था कि जीवनके संहारकारी निष्ठुर हाथोंसे छूटकर विज्ञानको जनताके कल्याणमें लग जाना चाहिये।

सम्मेलनके मूल सभापति कर्नल सर रामनाथ चोपड़ा निर्वाचित किये गये थे। लेकिन आपरेशन होनेके कारण वे सम्मेलनमें सम्मिलित नहीं हो सके। उनके बदले संसार प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री चन्द्रशेखर वेंकट रमण वे अध्यक्षका आसन ग्रहण किया। और उन्होंने श्री रामनाथ चोपड़ाके अभिभाषणके कुछ चुने हुए अंश पढ़कर सुनाये। अध्यक्षने अपने भाषणमें चिकित्सा प्रणालीकी विस्तृत आलोचना की थी, उन्होंने कहा कि भारतमें दो तरहके चिकित्सक हैं। उनमें एक पाश्चात्य प्रणालीसे शिक्षा प्राप्त चिकित्सक हैं। लेकिन भारतकी गरीब जनताके लिये उनकी चिकित्सा प्रणाली बहुत ही महंगी है। इसलिये बीस प्रतिशतसे अधिक लोग उनकी चिकित्सा प्रणालीसे लाभ नहीं उठा पाते हैं। एक दूसरे तरहके चिकित्सक हैं जो पेड़ पौधोंसे दवाइयां एकत्र करते हैं। और उन्हींसे भारतके ८० प्रतिशत लोगोंकी चिकित्सा करते हैं। क्योंकि विलायती चिकित्सा प्रणालीकी अपेक्षा यह प्रणाली बहुत सस्ती है। हां, यह बात अवश्य है कि इस प्रणालीके चिकित्सकोंको वैज्ञानिक प्रणालीसे शिक्षा

प्राप्त नहीं होती है। उपयुक्त गवेषणा और शिक्षाके अभावमें यह प्रणाली नष्ट होती जाती है। वर्तमान भारतमें इन दोनों चिकित्सा प्रणालियोंकी आवश्यकता है। अध्यक्षके अभिभाषणका पाठ करनेके उपरान्त श्री चन्द्रशेखर वेङ्कटरमणने मनुष्यके स्वाद और नासिकाकी अनुभूतिका उल्लेख किया और दूसरे विषयमें वैज्ञानिक दृष्टिसे विचार किया। प्रथम दिनकी कार्यवाही समाप्त हो जानेके बाद दरभंगाके महाराजने आगत प्रतिनिधियोंको प्रीति भोज दिया।

विज्ञान कांग्रेसका इतिहास

स्वतन्त्र भारतमें विज्ञान कांग्रेसको कितना महत्व प्राप्त होगा, यह सभी जानते हैं। लेकिन आज जिस विज्ञान कांग्रेसने इतना नाम प्राप्त किया है उसकी स्थापना आज २९ वर्ष पूर्व हुई थी। सन् १९१०में प्रो० पी० एस० मैर मोइन एवं प्रो० जे० एल० साइमनसनने ब्रिटिश एसोसियेशनके अनुसरणपर भारतमें वैज्ञानिकोंका वार्षिक सम्मेलन करनेका प्रयास किया। १९११ में इस विषयमें देशके वैज्ञानिकोंका मत जाननेकी कोशिश की गयी। लेकिन वैज्ञानिकोंने सम्मेलनके पक्षमें मत नहीं व्यक्त किया। विरोध और प्रतिवाद की परवाह किये बिना ग्यारह विशिष्ट वैज्ञानिकोंकी एक कमेटी गठित कर ली गयी और प्रस्तावित सम्मेलनका प्रथम अधिवेशन बुलानेका निश्चय किया गया। सन् १९१४ में १५ और १६ जनवरीको कलकत्तेमें एशियाटिक सोसाइटी भवनमें भारतीय विज्ञान कांग्रेसका प्रथम अधिवेशन सम्पन्न हुआ। उस अधिवेशनके अध्यक्ष कलकत्ता विश्व विद्यालयके तत्कालीन वायस चांसलर सर आशुतोष मुखर्जी थे और प्रसिद्ध वैज्ञानिक डाक्टर डी हूवर मंत्री एवं कोषाध्यक्ष चुने गये थे। प्रथम अधिवेशनमें रसायन, पदार्थ विद्या, प्राणीशास्त्र, उद्भिज आदि पांच विभाग प्रारम्भ हुए थे। उसके बाद दूसरा अधिवेशन मद्रासमें और तीसरा लखनऊमें हुआ। १९१७ से १९२० तक बङ्गलोर, लाहौर, बम्बई एवं नागपुरमें अधिवेशन हुए। गत ३५ वर्षोंमें विज्ञान कांग्रेसके देशके कई प्रमुख प्रमुख नगरोंमें अधिवेशन हुए हैं और वैज्ञानिक शिक्षा और अनुसंधान की उन्नतिके लिये आशातीत कार्य हुआ है। विदेशोंके बड़े बड़े वैज्ञानिकोंको भारत में निमंत्रितकर भारतीय विज्ञान कांग्रेसने अन्य देशोंके साथ भारतका सांस्कृतिक सम्बन्ध बढ़ानेका प्रयास किया है। १९३८ में कांग्रेसकी रजतजयंती हुई थी जिसमें सर जेम्स जिन्सके नेतृत्वमें संसारके श्रेष्ठ वैज्ञानिक भारत पधारे थे। १९४६ में पण्डित नेहरूकी अध्यक्षतामें दिल्लीमें अधिवेशन हुआ जिसमें सोवियट रूस, चीन एवं अन्यान्य राष्ट्रोंसे प्रतिनिधि पधारे थे। पटना अधिवेशनमें देश विदेशके कई विख्यात वैज्ञानिकने भाग लेकर मानव कल्याणके विभिन्न उपायोंपर विचार किया। ब्रिटिश शासनका अवसान हो गया है, भारतने स्वाधीनता प्राप्त की है और भारतके आर्थिक, सामाजिक जीवनमें आमूल परिवर्तनकी सूचना दृष्टिगोचर होने लगी है, वैज्ञानिकोंको अपने अलौकिक अनुसंधानोंके द्वारा इस सूचनाको कार्यान्वित करना है। पटना अधिवेशनमें मूल अधिवेशनके सभापति श्री रामनाथ चौपड़ाके सिवा, गणित विभागके मद्रासके डाकर आर० वैद्यनाथ स्वामी आंकड़ा विभागके अध्यक्ष कलकत्तेके डाकर एस० एन० राय, पदार्थ विद्याके पूनाके डाक्टर एल० ए० रामदास, रसायन शास्त्रके बंगलोरके प्रो० वी० संजीव राव भूगोल एंव भूतत्वके डाक्टर पी० के० घोष, उद्भिज विद्याके डाक्टर कैफीउद्दीन अहमद, जीव विद्या एंव कीटतत्वके काशी विश्वविद्यालयके प्रो० ए० बी० मिश्र नृतत्व और पुरातत्वके प्रो० अनाथनाथ चटर्जी, भौषज और पशु-चिकित्साके डाक्टर जी० डी० मालेराव, कृषिके रायबहादुर कालीदास सोहनी, शरीर तत्वके डाक्टर वसीर अहमद, मनोविज्ञान और शिक्षाके, डाक्टर जाकिर हुसैन, खनिजतत्वके श्री नलिनी बिहारी सेन विभागीय अध्यय निर्वाचित किये गये थे।

अध्यक्षका परिचय

पटना अधिवेशनके निर्वाचित अध्यक्ष सर रामनाथ चोपड़ाका भारतके वैज्ञानिकोंमें प्रमुख स्थान है। जिस प्रकार स्वर्गीय आचार्य पी० सी० रायको आधुनिक भारतीय रसायन शास्त्रका जनक माना जाता है उसी प्रकार सर चोपड़ाको भी भारत फारमोकोलजीके जनक माना जाता है। फारमोकोलजीमें पेड़-पौधों और वनस्पतियोंसे कौन-कौनसी दवा मिल सकती है इसका विवरण लिखा है। भारतमें ऐसी जङ्गली औषधियोंका घाटा नहीं है। केवल वैज्ञानिक प्रणाली द्वारा उनकी खोज खबर लेकर काममें लगानेकी आवश्यकता है। आज देशमें देशी पेड़-पौधोंसे प्रस्तुत अनेक औषधियां बिक रही हैं लेकिन जिन पेड़-पौधोंसे वे दवाइयां बनती हैं उनकी रक्षा और उपयोगके सम्बन्धमें सर चोपड़ाने वैज्ञानिकोंका ध्यान उधर खींचा और उसके लिये उद्योग किया। सर चोपड़ाका जन्म पञ्जाबके गुजरानवाला जिलेमें हुआ था १९०२ में पञ्जाब विश्वविद्यालयकी शिक्षा समाप्त कर वे इङ्गलैण्ड गये। वहां उन्होंने केम्ब्रिज विश्वविद्यालयमें ६ वर्ष शिक्षा प्राप्त की और एल० आर० सी० पी० एम० आर० सी० पी० एवं एम० बी० बी० सी० एच० आदि परीक्षाएं पास की। उसके बाद प्रो० डिक्सनके आधीन रहकर अनुसंधान किया। १९१२ में आपको शरीर तत्वों पर एक मौलिक निबंध लिखनेके लिये 'डाकर आफ मेडीसिन' की उपाधि प्रदान की गयी। उसके बाद आप इण्डियन मेडिकल सर्विस परीक्षा दी और उसमें तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहांसे लौटकर सरकारी नौकरी की और प्रथम महायुद्ध एवं अफगान युद्धमें शरीक हुए। १२ वर्ष तक आपने युद्ध मोर्चे पर नौकरी की। १९२१ में आपको कलकत्ता मेडिकल कालेजमें प्रोफेसर नियुक्त किया गया। १९३४ में आपको ट्रापिकल स्कूलका अध्यक्ष बनाया गया। इस पदको प्राप्त करने वाले आप पहले भारतीय थे।

साहित्य सेवा पूरी तपस्या है

—(*:(*):—

डा० जगदीश चन्द्र जैन, एम० ए० पी० एच्डी०

हमारा देश आज बड़े संकटमेंसे गुजर रहा है। १५ अगस्तको हमें पूर्ण स्वतंत्रता मिल भी नहीं पाई थी कि सारे देशमें भयंकर साम्प्रदायिक उत्पात शुरू हो गये। हिन्दू और मुसलमान इंसानियत छोड़ कर हैवान बन गये, निरपराध स्त्री-बच्चों पर लोमहर्षण अत्याचार किये गये, और उनके रक्तसे रंजित जो भीषण होली खेली गयी वह सदाके लिये भारतकी सभ्यता और संस्कृतिके नाम पर अमिट कलंक रहेगी, जिसकी याद कर, आनेवाली पीढ़ियां हम पर घृणासे अट्टहास्य करेंगी। इन दंगोंके कारण हमारे देशमें साम्प्रदायिकताका जहर बड़ी तीव्रगतिसे फैल रहा है, प्रतिक्रियावादी शक्तियां राष्ट्रको आगे बढनेसे रोक रही हैं, स्वतंत्रता और प्रगतिके विरोधियोंकी आज बन आई और वे सम्प्रदाय और जातिवादका नाम लेकर जी भर कर जहर उगल रहे हैं। ऐसे कठिन समय पर जनवादकी रक्षाके लिये हमारे देशके नवयुवकोंका कर्तव्य है कि वे इस विध्वंसकारी संकुचित मनोवृत्तिका डट कर मुकाबला करें, और इसे जड़मूलसे उखाड़ कर फेंकनेका प्रण करें। यह निश्चय समझिये कि साम्प्रदायिकताकी इस महामारीसे यदि हम अपनी रक्षा नहीं कर सके तो हमारा देश रसातलको पहुंच जायगा, और हमने जो अपना रक्त बहाकर स्वतंत्रता प्राप्त की है वह अधिक समय तक न टिक सकेगी।

स्वतंत्रता आनेके बाद हमारे देशमें और भी अनेक विकट समस्यायें उपस्थित हो गई हैं। मंहगाई इतनी बढ़ती जा रही है कि साधारण लोगोंको रूखी रोटी मिलना भी कठिन हो गया है। चोर बाजारके ढीले पड़नेके कोई लक्षण दिखाई नहीं देते, उल्टे पुराने अनुभवोंसे पुष्ट होकर वह सुदृढ़ ही बनता जाता है। खाना-कपड़ा और घरकी समस्यायें ज्यों की त्यों बनी हुई हैं, शायद अन्य कार्यों में व्यस्त होनेके कारण हमारे देशके कर्णधार इस ओर

हिन्दुस्तानमें आज भी करोड़ों एकड़ जमीन बेकार पड़ी है। ३ अरब ५५ करोड़ एकड़ जमीनमेंसे हमारे यहां सिर्फ ५६ फी सदी मीनमें काश्त की जाती है, १३.२ फी सदी परती पड़ी है, और २७.३ फी सदी मीन काश्त करनेके काबिल होते हुए भी बेकार पड़ी हुई है। परिणाम यह हो रहा है कि हमें करोड़ों रुपयेका नुकसान सह कर विदेशोंसे अनाज मंगाना पड़ता है। आंकड़ोंसे पता लगता है कि सिर्फ १ वर्ष (१ अप्रैल १९४६ से ३१ मार्च १९४७) के भीतर हिन्दुस्तानको बाहरसे गल्ला मंगवानेमें २०.५१ करोड़ रुपयेका नुकसान उठाना पड़ा! फल यह हुआ कि पौण्ड-पावनेसे हमें जो रकम मिलती है, उसका हमें अनाज खरीद लेना पड़ा और शिल्प-उद्योगकी वस्तुएं खरीदनेके लिये हमारे पास कुछ नहीं बचा। भारत सदासे कृषि-प्रधान देश रहा है। सजला, सुफला और शस्य श्यामला कहीं जानेवाली भारत-वसुन्धराके निवासियोंको खानेके लिये विदेशियोंका मुंह ताकना पड़े, यह बड़े खेद और लज्जा की बात है!

हमारी कपड़ेकी समस्या भी कम जटिल नहीं। वस्त्रके अभावमें हमारे देशकी भद्र महिलाओंको आत्मघात करनेके लिये वाध्य होना पड़ा यहां तक कि गरीब लोग कब्रमें गड़े हुए मुर्दोंके कफन उतार कर अपना तन ढकने लगे। भारतके इतिहासमें, यह अनोखी बात है। तारीफ यह कि चोर बाजारमें पर्याप्त कपड़ा मौजूद है लेकिन वह गरीबों तक नहीं पहुंच सकता! दुर्भाग्यसे चोर बाजार करनेवालों पर जितनी सख्ती होनी चाहिये उतनी अभी तक नहीं की गयी अब सरकार कपड़ा अनाज तथा दूसरी वस्तुओं परसे नियन्त्रण हटा रही है समझमें नहीं आता ऐसा क्यों किया जा रहा है, और जनता पर इसका क्या असर होगा! कुछ समय पूर्व सरकारने कुछ दालों तथा पीतलके ऊपरसे नियन्त्रण

चोर बाजारकी कीमत पर खुले आम बिकने लगीं। शक्कर परसे नियन्त्रण उठाने की घोषणा होते ही शक्करके दाम बढ़ने लगे।

देशमें अन्न और वस्त्रकी पैदावार बढ़ानेका उपाय है कि किसान और मजदूरोंके रहन-सहनको ऊंचा किया जाय और उन्हें अधिकाधिक मात्रामें सुविधायें प्रदान की जायें। उसी समय देशकी उपार्जन शक्ति बढ़ सकती है, और तभी दरिद्रता रूपी पिशाचसे हमारा पिंड छूट सकता है।

शिक्षाका माध्यम

ब्रिटिश साम्राज्यवादका खात्मा होनेके साथ-साथ अंग्रेजी भाषा भी अपने सिंहासनसे अनारूढ़ हो गयी है, इसलिये अब समय आ गया है कि हमारी शिक्षाका माध्यम हमारी मातृभाषा हो, और राष्ट्रभाषाका पद हिन्दीको दिया जाय। इसके लिये आवश्यक है कि शिक्षकों और लेखकोंको प्रोत्साहित किया जाय जिससे देशी भाषाओंमें उच्च कोटिका साहित्य निर्माण हो सके। विज्ञान और कला आदिके ऊपर हिन्दीमें साहित्य निर्माण भी उसी समय हो सकता है। यदि हमारे देशमें जगह-जगह संस्कृतिके केन्द्र स्थापित किये जांय, जहां साधारण जनता विचारोंका आदान-प्रदान कर सके और जहां प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्रतापूर्वक अपने विचारोंको रख सके, तो यह कार्य बहुत शीघ्र सम्पन्न हो सकता है। इस सम्बन्धमें हम युक्त प्रांतीय सरकारका अभिनन्दन करते हैं जिसने हाल ही में हिन्दी और देवनागरीको क्रमशः राजभाषा और राजलिपि घोषित कर दूरदर्शिताका परिचय दिया है।

दुर्भाग्यसे हमारे देशमें सबसे अधिक शोषित प्राणी लेखक हैं। यही कारण है कि उसके हाथमें कलम जैसा सबल शस्त्र होते हुए भी उसे निम्न कोटिका जीवन बिताना पड़ता है। आजकलकी मंहगाई और ठगीके युगमें आटा-दाल जुटानेकी चिन्तामें ही उसकी सारी शक्ति खर्च हो जाती है, फिर उससे क्या आशा की जा सकती है कि वह राष्ट्र-निर्माणके लिये कुछ सोचे। लेखकोंकी विद्या-बुद्धि पर ऐश उड़ाने वाले प्रकाशकों और सिनेमा-निर्माताओंकी आज हमारे

से रुपये देकर लेखकोंसे उनकी रचनाओं का सर्वाधिकार खरीद लेते हैं। लेखकोंके प्रति इस अन्यायका घोर विरोध किया जाना चाहिये।

विज्ञान-युग

हमें न भूलना चाहिये कि यह युग विज्ञानका युग है। केवल प्राचीनताके मोह को रख कर हम जिन्दा नहीं रह सकते। द्वितीय महायुद्धके अणुशक्तिके आविष्कारने हमारी पुरानी कल्पनाओं पर पानी फेर दिया है। पुराने युगमें लोग देवी-देवताओं पर विश्वास करते थे, जादू-मन्तरको मानते थे, ईश्वरको जगन्नियंता मान कर उसकी पूजा उपासना करते थे, लेकिन आज इस मशीनके युगमें मनुष्य अपने भाग्यका विधाता अपने आपको मानने लगा है, वह अपने सहारे आगे बढ़ना चाहता है। उसने बड़े-बड़े पहाड़ काटकर रेलें निकालीं, पर्वतों और समुद्रोंको लांघनेके लिये हवाई जहाजका आविष्कार किया चन्द्रलोक तक पहुंचनेके लिये 'राकेट' तैयार किये, अपने ज्ञानके प्रकाशसे संसार भरमें उजाला कर दिया, और जन-समाजके कल्याणके लिये सदोष समाज रचनाको बदल कर समाजवादी जनतंत्रकी स्थापना की। आज मनुष्य इस योग्य हो गया है कि वह अपने दोषोंकी परख स्वयं कर सके। इससे समाजकी दोषपूर्ण अपर्याप्तताका अनुभव कर उसे एक नयी प्रेरणा, नयी स्फूर्ति मिली है। मानवताके इस युगमें उसे विश्वास हो गया है कि केवल अपने आपको लेकर आगे बढ़नेका युग अब समाप्त हो गया है। अब आया है एक साथ मिल कर सोचनेका एक साथ काम करने। और जनसमुदाय को साथ-साथ लेकर आगे बढ़नेका। केवल 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' और 'स्वांतः सुखाय' गीत गानेसे काम न चलेगा अब आज तो जो जीवनप्रद है—स्फूर्तिदायक है वही सत्य कल्याणप्रद और सुन्दर है।

प्रसन्नताकी बात है कि आर्थिक-शोषणके इस घोर युगमें भी हमारा साहित्यिक जीवित है। उसमें आशा है, प्राण हैं, और वर्तमान समाजकी गतिविधिको मोड़कर नया समाज सृजन करनेकी उत्कट भावना है। साहित्य-सम्राट स्वर्गीय श्री प्रेमचन्द्र जीके शब्दोंमें दृढ़तापूर्वक वह सोचता है—'हमारा धर्म है काम करना। हम काम करते हैं, और तन-मनसे करते हैं। अगर इस पर भी हमें फाका करना पड़े तो उसमें दोष नहीं।...अगर दुनिया हमारी कदर नहीं करती, न करे। इसमें दुनियाका ही नुकसान है मेरी कोई हानि नहीं। दीपक का काम जलना है...मैं दीपक हूं और जलनेके लिये बना हूं। मैं आज यह तत्व पा गया हूं कि साहित्य-सेवा पूरी तपस्या है।"

साहित्यिकका भविष्य उज्ज्वल है। आज उसके सामने विशाल क्षेत्र है। हमारा साहित्यिक ही राष्ट्र और समाजको अंधकारसे प्रकाशकी ओर, असत्से सत्की ओर और मृत्युसे अमृतकी ओर ले जा सकता है। हमें विश्वास है कि आजका साहित्यकार देशको साम्प्रदायिकता, कंगाली, भुखमरी, ठगाई और निरक्षरताके गर्त मेंसे निकाल कर राष्ट्रमें नव जीवन संचार कर भारतीय साहित्य और संस्कृतिकी अभिवृद्धि करेगा।

बम्बईमें हुए अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलनके ३९ वें अधिवेशनकी साहित्य परिषदके स्वागताध्यक्षके पदसे दी गयी वक्तृता।

कुंवर आयुर्वेदिक फार्मेसी - कानपुर

लार्ड लिस्टोवेल

लेखक—श्री शङ्करदेव विद्यालंकार

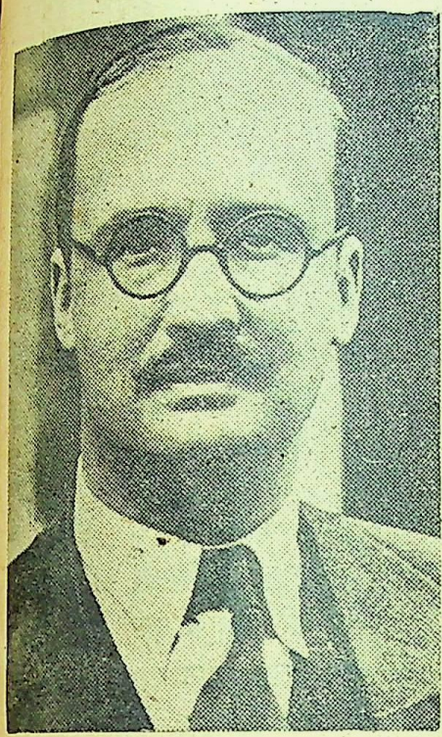

लार्ड लिस्टेवेल

अंग्रेज सरकारकी ओर से इंडिया आफिस की निगरानी करने वालोंमें लार्ड लिस्टोवेल भारत मंत्रियोंकी लंबी नाममाला में अन्तिम भारत सचिव थे। वे प्रकृतिसे अतिशय नम्र हैं, और चश्मा धारण करनेके कारण एक प्रोफेसरसे प्रतीत होते हैं। स्वभावसे बहुत प्रशान्त होने पर भी हर हिटलरके गेस्टापो ने उनका नाम फासिस्ट सिद्धान्तों के भयंकर विरोधियोंकी सूचीमें लिखा था।

लिस्टोवेलकी जागीरके इस पांचवें सामन्तका वास्तविक नाम है-विलियम फ्रांसिस हेयर। अपने विद्यार्थी जीवनमें केम्ब्रिज यूनियन की विचार समितिमें छात्रोंको भी सम्मिलित करना चाहिए-इस प्रकारकी जोरदार मांग प्रस्तुत करना लिस्टोवेलका ही काम था। तबसे लेकर आजतक ये ऐसी विचार धाराओंके पक्ष पाती रहें हैं जो कम लोक प्रिय और अल्पमान्य हों।

लिस्टोवेलके समग्र व्यक्तित्वका दर्शन तो तब हो सका था जब सन् १९४४ में ये सहायक भारत सचिव नियुक्त किये गये थे। सामान्य तौर पर यह नियुक्ति उस समय विस्मय कारक प्रतीत होती थी क्योंकि उस समय इनके ऊपर भारत सचिवके पद पर लियोपोल्ड एमरी आसीन थे। राजनीतिके इतिहासमें ऐसा कचित ही हुआ है जब सर्वथा भिन्न विचारवाले व्यक्तियोंको एक ही विभागमें कार्य करना पड़ा हो। एक ओर थे ठिगने कदके एमरी साहब और दूसरी ओर थे हृष्टपुष्ट सहिष्णु, और ऊंचे कदके श्रीमान् लिस्टोवेल महाशय। ऐसी अवस्थामें इंडिया आफिस में छः महीनेकी अवधि तक इन्हें महत्वहीन दशामें रहना पड़ा हो तो इसमें विशेष आश्चर्य नहीं।

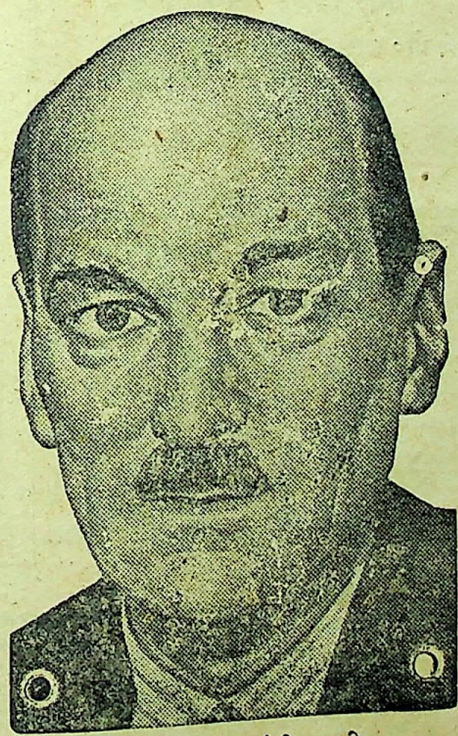

ब्रिटिश प्रधान मंत्री एटली

लिस्टोवेलकी शिक्षा ईटन, आक्सफोर्ड तथा केम्ब्रिजके प्रसिद्ध विद्यातीर्थों में हुई है। इन्होंने लन्दन विश्वविद्यालयसे पी० एच० डी० की उपाधि भी प्राप्त की है। स्नातक बननेसे पूर्व ही ये मजदूर दलके सदस्य बन गये थे और सामंत समा में समाजवादीके रूपमें प्रविष्ट हो गये थे। उनके आत्मबल और साहसके विषय

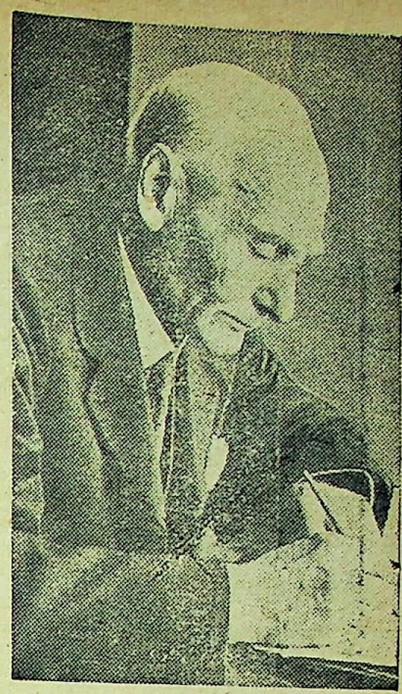

लार्ड पेथिक लारेंस

में इतना लिखना ही पर्याप्त होगा कि गत महायुद्धसे पहले ही ये रूस, चीन तथा प्रजातन्त्रवादी स्पेनके समर्थक थे। सन् १९३० से १९४० तकके समयमें मजदूर पक्षके सिवाय अन्य लोगोंमें रूस अधिक लोकप्रिय नहीं था। परन्तु इन्होंने सन् १९३७ में रूसके साथ शांति और बंधुता स्थापित करने वाली कांग्रेसका प्रधान-पद स्वीकार किया। दूसरे वर्ष इन्होंने 'मांचेस्टर गार्जियन' को लिखा था कि शांतिवादी और प्रजातंत्रवादी राष्ट्रोंके पक्ष को सबल रखनेके लिये यह आवश्यक है कि जिस प्रकार इङ्गलिस्तान फ्रांसके साथ मैत्री बनाये रहता है, उसी प्रकार रूससे भी बंधुता बनाये रहे।

बहुत वर्षों तक लिस्टोवेल महाशय इस बातका प्रयत्न करते रहे हैं कि इङ्गलैण्डमें चीनके प्रति सहानुभूति और जिज्ञासा बनी रहे। चीनी आंदोलन-समितिके प्रधान पद पर कार्य करते हुए चीनवालोंकी सहायताके लिये इन महाशय ने एक द्रव्यनिधि भी स्थापित की थी और इङ्गलैण्डके मुख्य अखबारोंका ध्यान उस ओर आकृष्ट करनेके लिये खूब पत्र-व्यवहार किया था। इनका कथन था कि जापानियोंका ध्येय अपने साम्राज्यका अनिश्चित विस्तार करनेका है। और उसका परिणाम एक विश्व व्यापी युद्ध ही होगा।

स्पेनमें भी लिस्टोवेलने फासिज्मसे त्रस्त लोगोंकी सहायताके भरपूर प्रयत्न किये थे। वे स्वयं बास्क शिशु समितिके मुख्य सदस्य थे। उस समितिने स्पेनके गृहयुद्धके समय बास्कमें रहे हुए चार हजार बालकोंकी सुरक्षा और सहायता की व्यवस्था की थी और अंतमें उनको वहांसे स्थानांतरित किया था। स्पेनमें प्रवर्तित इनके फासिज्म विरोधी कार्योंको निहार कर जर्मन गेस्टापोका ध्यान इनकी ओर आकृष्ट हुआ था।

लार्ड लिस्टोवेल अङ्गरेजी उपनिवेशोंकी जनता की स्थितिके विषयमें खब दिलचस्पी लेते हैं। विशेषतया सन् १९४२ में इन्होंने सामन्त सभामें एकबार औपनिवेशिक नीति पर चर्चा प्रारम्भ करवा कर इस बात पर बहुत बल दिया था कि युद्ध के बीचमें ही ब्रिटेनको अपनी वह इच्छा घोषित कर देनी चाहिये कि वह उपनिवेशोंके लिये सामाजिक सेवा विभागकी स्थापना करेगा।

इन्होंने अनेक बार स्पष्ट किया है कि वे मंत्री मिशनकी भारत विषयक योजना का हार्दिक समर्थन करते हैं।

ये महाशय अपनी अधिकतर शक्ति पार्लमेण्टरी कार्योंमें ही लगाते रहे हैं। ब्रिटेनकी ऊपरकी सभामें वे अनेक महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं।

ये जब कालेजमें पढ़ते थे तब बाइकाउण्ट आफ ऐनिसमोर कहाते थे। परंतु इन्होंने केम्ब्रिजके व्यापारियों और मित्रों की विनती की थी वे उन्हें मि० हेमर नामसे ही बुलाया करें। ये मानते हैं कि उपाधियां तो दासताके लक्षण हैं।

जिस समय ये फेबियन सोसायटीके सदस्य बननेकेलिये प्रयत्नवान थे तब आपने बर्नार्ड शा की तीव्र समालोचना की थी। बर्नार्ड शाने अपने एक ग्रन्थमें लिखा था कि सब व्यक्तियोंकी आमदनी समान कर देनी चाहिये। लिस्टोवेल महाशयने तुरन्त ही इसके उत्तरमें बर्नार्ड शाको लिखा था कि आप प्रति वर्ष सहस्त्रों पौंड कमाते हैं, उन्हें आप अन्य लोगोंमें वितरण करनेका प्रयत्न क्यों नहीं करते।

१६॥) में ज्वेल ली रिस्ट वाच

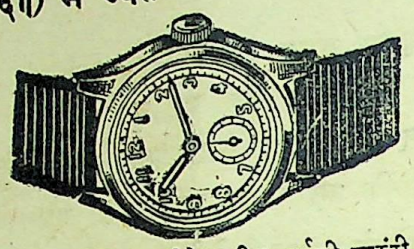

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी
गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)
रेक्टेंगुलर कर्व या टोनो शेप
क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।
एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

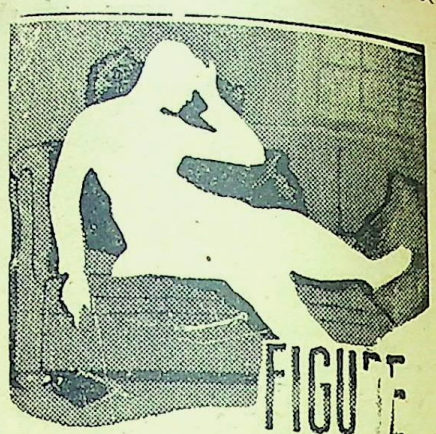

FIGURE
WITHOUT LIFE

प्रशंसनीय रक्त परिष्कारक दूषित रक्तसे उत्पन्न होनेवाली सभी बीमारियोंकी अचूक दवा तथा टानिक। सजन, बात, गठिया चर्मरोग, दुर्बलता घाव, फोड़ा फुंसी गांठोंकी सजन जो रक्तकी कमी या दूषित रक्तसे उत्पन्न होता है

AMRITABALLI KASAYA
restores vitality & strength
KAVIRAJ N. N. SEN & CO. LTD CALCUTTA

साप्ताहिक विश्वामित्र
—: की :—
एजेन्सी
लेकर लाभ उठाइये।

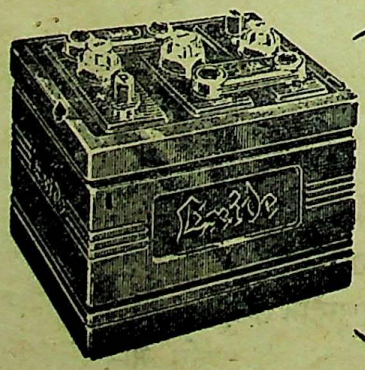

आप इससे अच्छी बटरी खरीद नहीं सकते
कार, ट्रक और बसोंके लिये
एक्साइड बैटरी

Local Agents. Mess. F. & C. IOSLIER Ltd.
12, Old Court Houe Sreet, Calcutta.

Ex7668

मोसियेवर्दा चार्ली चैपलिनका श्रेष्ठ चित्र

कलकत्तेके ग्लोब सिनेमामें आजकल विश्व विख्यात हास्य अभिनेता चार्ली चैपलिनका सबसे ताजा, श्रेष्ठ चित्र 'मोसियो वर्दा' चल रहा है। मोसियो वर्दा चार्ली चैपलिनका प्रथम सर्वांग पूर्ण सवाक चित्र है। छायाचित्रोंमें जब सवाक चित्रोंका प्रयत्न हुआ तब चार्ली चैपलिनने उसका सबसे जबर्दस्त विरोध किया था। उनका ख्याल था कि सवाक की अपेक्षा मूक चित्र नाट्यकलाकी दृष्टि से अधिक अच्छे हैं। लेकिन आगे चलकर युगके प्रभाव और अपने अनुभवों से उनका विचार बदल गया। फिर 'मार्डन टाइम्स' एवं 'दी ग्रेट डिक्टेटर' में उनका जो रूप प्रारम्भ हुआ वह 'मोसिओवर्दा'में आकर पूर्णरूपेण विकासको प्राप्त हुआ है। साथ ही 'मोसियोवर्दा' ही पहला चित्र है जिसमें चार्लीने अपनी पहली परम्पराको छोड नये रूपमें, नयीभूमिकामें काम किया है। इसमें वे गन्दी वेषभूषा' टेढी-छडी और लम्बे लम्बे जूते पहने नहीं दिखलाई पडते हैं, वे बिलकुल नये रूपरंग और वेषभूषामें है। यह याद रखनेकी बात है कि इस चित्रमें चार्लीकी वेषभूषा और भूमिकामें ही परिवर्तन हुआ है उनकी नाट्यकलाके मूलभावमें तनिक भी रि-वर्तन नहीं है। 'मासियोवर्दा' व्यागत्मक चित्र होने पर भी उसमें वर्तमान समाज व्यवस्था की विभिन्न असंगतिओंपर तीखा व्यंग किया गया है। चार्ली के 'दीकिड, 'गोलडरश' 'माडर्नटाइम्स' के साथ मोसियोमदांका कोई मौलिक अंतर नहीं है। माडर्न टाईम्स,में मशीनवादकी हृदयहीनताका चित्रण किया गया था और 'मासियोमर्दा' में वर्तमान पूंजीवाद समाजके शोषण और उत्पीड़न पर हथौड़ेसे चोट की गयी है। साथ ही रईसोंके बनावटीपन और भोग विलास पर गहरा कटाक्ष किया गया है। इस सिलसिले में यहां उल्लेख कर देना आवश्यक है कि चार्लीके प्रगतिशील दृष्टिकोणसे अमेरिकाके पूंजीवादियोंमें बड़ी बड़ी खलबली रहती है। चार्लीको अमेरिकासे निकालनेके लिये काफी कोशिशें की गयी है। 'मोसियोमर्दा' से जो अमेरिकाके पूंजीवादी चार्लीसे और कुढ़ जायेंगे, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। 'मोसियो वर्दा'' देख कर कुछ अमेरिकाके पूंजीपतियोंने आग बबूला होकर अमेरिका विरोधी कार्य कलापों' के विरुद्ध कार्यवाही करनेवाली संस्थाके पास नालिश की है और चार्लीके विरुद्ध अविलम्ब कार्यवाही करनेकी प्रार्थना की है लेकिन चार्ली पर रोक लगाना कोई सहज काम नहीं है। अमेरिकाके पूंजीवादी चार्लीके इस चित्रका कितना भी विरोध क्यों न करें लेकिन अमेरिकाकी शोषित जनता उनको ऐसा चित्र बनानेके लिये अवश्य बधाई देगी। 'मोसियो मर्दा' की कहानी इस प्रकार है। मोसियो मर्दा फ्रांसको एक बैंक के क्लर्क थे। १९३०-३९ के विश्वव्यापी आर्थिक संकटके समय उनकी नौकरी छूट गयी। घरमें रोगिनी पत्नी और बच्चे और उनके भरण पोषणका कोई उपाय नहीं। आखिर वर्दांने सफेद पोश खूनीका पेशा अपनाया। वर्दां राष्ट्रके सुसम्पन्न उप योगी नागरिक हो सकते हो लेकिन सामा-जिक विषमताओं और पूंजीवादी व्यवस्था के कारण उन्हें खूनी बनना पड़ा। पूंजीवाद में इससे तीखाव्यंग और क्या हो सकता है?

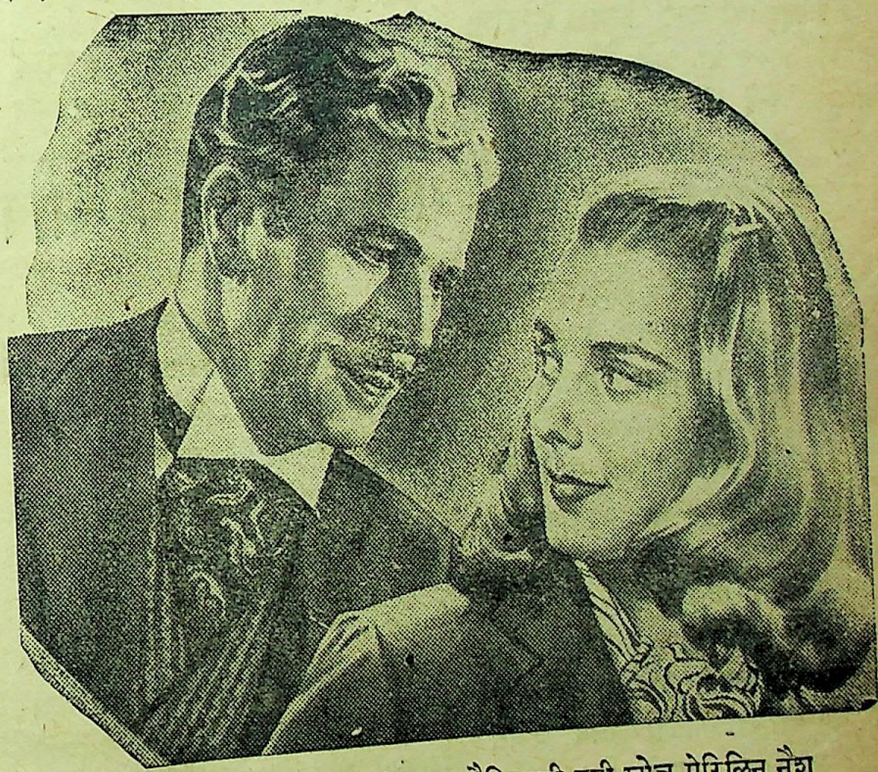

मोशिये वर्दा चित्रमें चार्ली चैप्लिनके साथ चैप्लिनकी नयी खोज मेरिलिन नैश

वर्दां विलास प्रिय फ्रांसके रईस-समाजमें तरह-तरहके वेष बनाकर, रूप धारण कर शामिल होता है। कभी मकान बेचनेवाला, कभी जेवर विक्रेताके रूपमें

(शेष ३६ वें पृष्ठ पर)

राजाजीमें मैत्री भाव

—*०*—

श्री ति० शेषाद्रि,

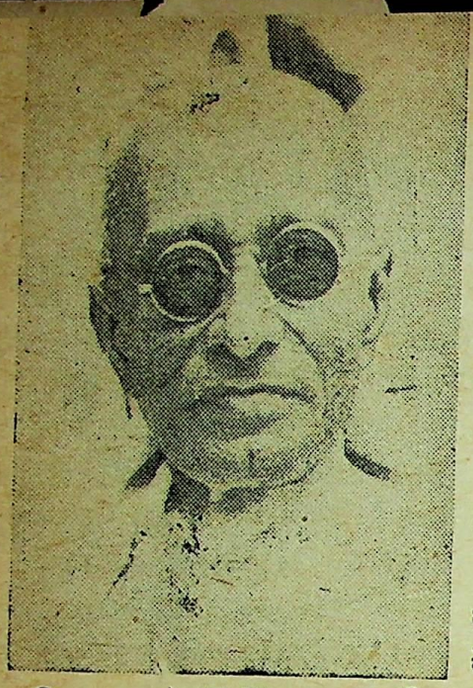

राजाजी

व्यक्तिगत दोस्ती, अबतक निबाहो, यही राजाजीका अटल सिद्धांत है, राजनीतिक मतभेद हो, चाहे हैसियत संबंधी भिन्नता, कोई भी बात उनकी मित्रतामें अंतर नहीं डाल सकती है। इसकी पुष्टि में दो चार उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।-

जब युवक राजाजी सेलममें वकालत करते थे तभी सर-टी विजयराघवाचार्य उनके मित्र बने। आजतक वे ही नहीं उनके कुटुंब सभी मनुष्य राजाजीके पक्के दोस्त हैं और उनके बीच एक कौटुंबिक नाता रहता है। एक बार कोई उनके मैत्री जालमें फंसा, तो समझिये वह आजीवन जकड़ा ही रहेगा।

एक समय तमिलनादका भाग्य था कि राजाजी और ईरोड शहरके प्रसिद्ध व्यक्ति थे। रामस्वामी नायकर (ई-वे-रा) और राजाजी राजनीतिक क्षेत्रमें कंधेसे कंधा मिलाये चल सकते थे। लेकिन परिस्थिति बदली गयी है ओर ई-वे-रा ब्राह्मण विरोधी, शुद्ध द्रविड अब्राह्मण संघके संगठक तथा नेता हैं और इस हैसियतमें वे ब्राह्मणोंके सबल विरोधी बने हुए हैं। उनकी ही यह कृपा है कि सांप्रदायिकताका यह लघुरूप चिनगारीकी तरह मौकेकी ताकमें तमिल प्रांतमें विचर रहा है।

पर ऐसी हालतमें भी राजाजी व्यक्तिगत तौरपर ई-वे-रा के पक्के दोस्त हैं। इ ता ज़रूर सेलममें उतरते हैं और नायकरसे मिल लेते ह। राजाजी प्रांतके प्रधान मंत्री रहे और तब हिंदी विरोधी आंदोलनके प्रवर्त्तककी हैसियतसे ई वे-रा को जेलकी सजा भुगतनी पड़ी। वह घटना भी उनको राजाजीकी व्यक्तिगत विरोधी नहीं बना सकी? शुद्ध कांग्रेसवादी राजाजीके साथी कभी कभी इससे अपनी असंतुष्टि जताते हैं पर इसका राजाजी पर कुछ असर नहीं पड़ता।

सेलमके, एक समय, श्री टी शिवज्ञानम नामक एक प्रभावशाली सज्जन डिपुटी कलेक्टर थे। तब राजाजी उनके मित्र बने। इतने घनिष्ट मित्र बने कि शिवज्ञानम के बच्चे भी राजाजीके ही घरमें पलने लगे। यही शिवज्ञानमजी अवकाश प्राप्ति के बाद राजनीतिके क्षेत्रमें उतरे, धारा सभाके मेम्बर बने और तीन सालके लिये मंत्री भी रहे।

एक दफे राजाजी कांग्रेस प्रचारार्थ तमिलनादमें भ्रमण करते हुए राजपालयम नामक इलाकेमें आये। वहां श्री रामचंद्रम पिल्लै नामक एक धनी तथा सम्पन्न घराने के सज्जन रहते हैं। राजाजी उनके ही घरपर ठहरे। घरके पुरुषोंसे बातचीत करते करते राजाजी पूछ बैठे कि घरकी स्त्रियां कहां हैं? लोगोंको बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि पिल्लैके घरमें पर्दे की प्रथा थी। पिल्लैने सामनेके विशाल मकानको दिखाया और कहा वहीं हैं। राजाजी तुरंत उठे और उस मकानकी ओर जाने लगे। घरके स्वामीको भी मजबूर होकर उनके साथ जाना पड़ा।

लोगोंका आश्चर्य तब सीमा पार कर गया जब उन्होंने देखा कि पिल्लैजीकी पत्नी "पिता जी! पुकारती हुई राजाजी के पैरोंपर गिर कर नमस्कार कर रही हैं। राजाजीने उनसे कुशल प्रश्न किया और पिल्लैकी ओर मुखातिब होकर कहने लगे, देखिये रामचंद्रम् जी! यह मत पिल्लैकी मृत्युके कारण वे बाप की हो गयी हैं। यह मेरी भी पुत्री है अतः सावधान रहें। बादको ही पिल्लैको पता चला कि उनकी पत्नी अपने बचपनका ज्यादा अंश वक्त राजाजीके घरमें बिता चुकी हैं। उनके विस्मित मुखमें आनंदकी आभा थिरक पड़ी।

इतना कहनेके बाद और एक बात—

राजाजीकी मित्रतासे कोई भी अनुचित लाभ नहीं उठा सकता। इस विषयमें राजाजी अपने दोस्तोंके निकट एक पहेली हैं। बहुतोंने कई बार कहा है:— यह क्या है? करते तो चिकनी चुपड़ी बातें, पर समय आया तो मदद नहीं देते। इसका मतलब यह नहीं है कि राजाजी मित्रोंकी सहायता ही नहीं करते। पर जब लोक सेवार्थ उनको कोई पद मिला तब मित्र उसे अपनी स्वार्थ सिद्धिका साधन बनावे यह बिलकुल असम्भव है।

लेखकको स्वयं एक उदाहरण ज्ञात है। जो इस कथनकी पुष्टि करा सकता है:—लेखकका एक मित्र है जो आजकल बम्बईमें किसी नौकरी पर है उसके पिता तमिलनादके किसी शहरके (नाम बतलाना नहीं चाहता) प्रतिष्ठित वकील थे। राजाजीका मंत्रित्व काल था। वे राजाजीके मित्र ही नहीं बल्कि दूरके रिश्तेदार भी थे। उन्होंने चाहा कि उस शहरके पब्लिक प्रासिक्यूटरशिप प्राप्त करनेमें राजाजीकी मदद ली जाय! यों तो वे नाम या दामके भूखे नहीं थे। पर, लोक सेवामें अपना सब कुछ अर्पण कर चुकनेके बाद वे उन दिनों जरा तङ्ग हालतमें थे। इसीलिये उनका इस संबंधमें प्रयत्न क्षम्य ही नहीं बल्कि उचित भी माना जा सकता था। खैर, वे और उनके सुपुत्र दोनों मद्रास गये और राजाजीने उनको अपने ही घर पर आरामसे ठहराया था। जब उनको किसी विधि पता चला कि ये किस उद्देश्यसे आये हैं तो खोदके साथ उन्होंने साफ-साफ कह दिया कि यह अपनेसे नहीं होने का

पहले तो वकील साहब झुंझलाये, पर उदारमन होनेके कारण ये यह कहते हुए वापस आ गये कि हां! यहां तो

(शेष ३६ वें पृष्ठ पर)

विनोद

मीठी-छुरी

(हलालूराम हरमुस्टक)

पेटका पचरा

मैं सुनता आ रहा हूं सम्पादकजी, अपनी धूलिया-लोटान अवस्थासे ही कि आपके कलकत्ता नगरमें भी कोई विश्व विद्यालय है।....उस विश्वविद्यालयमें वीरेशचन्द्र गुहा नामक कोई डाक्टर हैं। नेहरूजीकी तरह मैं भी....और मेरी बुद्धि भी सदा चकराती रहती है कि आखिर दुनियामें डाक्टरीकी इतनी करारी बाढ़ कहांसे फूट निकली है। व्याधियोंमें डाक्टर, विज्ञानमें डाक्टर, साहित्यमें डाक्टर और कहां-कहां डाक्टर....क्या हमें इतने डाक्टरोंकी आवश्यकता थी? पर हैं जरूर श्री वीरेशचन्द्र गुहा डाक्टर ही।...सुनता हूं, ये डाक्टर साहब आहार विशेषज्ञ हैं। आहार विशेषज्ञका एक अर्थ तो यह होता है कि भिन्न-भिन्न प्रकारके उत्तमोत्तम स्वादिष्ट भोजनकी क्रियात्मक योजनाके आप विशेषज्ञ हैं...और दूसरा यह कि किसी प्रकारका भी अन्न...कहीं से बटोरकर भूखसे ऐंठन खाते हुए पेटोंमें, येनकेन प्रकारेण, ठूंस देना!...यह भी एक विशेषज्ञता ही है। और यह भी हो सकता है कि किस आहार वस्तुमें... किस नम्बरका...कितनी मात्रामें 'विटैमिन' विद्यमान रहता है इस निष्कर्षको उस विशेषज्ञने हस्तामलक बना रखा हो। अन्तर्यामी ही जाने कि इन कतिपय आहार विशेषज्ञोंमें डाक्टर गुहा किस डिगरीके नम्बरपर चढ़ते हैं किन्तु हैं तो वे अवश्य ही आहार विशेषज्ञ...तिल भरनेकी भी इसमें गुंजाइश नहीं।

पटनेमें भारतीय विज्ञान कांग्रेसकी सब कमेटी द्वारा आयोजित विज्ञान और सामाजिक सम्बन्धोंके विषयमें होनेवाले विवादमें 'अन्न और दुनियाकी आबादी' सर्व प्रमुख विषय था!...इस विवादमें बलबलाते हुए डाक्टर साहबने बताया कि 'दुनियाकी बढ़ती हुई आबादी और अन्न की कमी आज चिन्ताजनक विषय बन गया है।' इस साधारण-सी बातके लिये इतने बड़े डाक्टरको चिन्ताका रोग लग जाना बड़े पश्चात्ताप की बात है।....इस गंभीर समस्याका तात्कालिक हल आजकी आधुनिकाओंने समुद्र मन्थन करके खोज निकाला है। जानते हैं सम्पादकजी...वह है 'बर्थ कण्ट्रोल!' इससे आबादीका बढ़ना तो अवश्य ही रुक जायगा। कंट्रोलके स्वर्ण युगमें इस कण्ट्रोलका महत्व कालिजकी जनानी डिगरियोंमें अपना खास महत्व रखता है।...एक ओर से जब वृद्धि रोक दी जायगी तो दूसरी ओरसे डाक्टर साहब विज्ञानके चमत्कार का नमूना दिखानेमें कभी कसर कर नहीं सकते। डाक्टर साहबने एक दिन घासकी चाय निर्माण करके पेयकी समस्याका समाधान कर लिया है तो क्या इस विषय संकटके समय बुरादेका आटा और कङ्करीटका चावल बनाकर बढ़ते हुए खाद्य संकटका मूलोच्छेद नहीं कर सकते?... अवश्य कर सकते हैं। आप छाती ठोंककर बताते हैं कि—'मेरे विचारसे अन्नकी कमीका भय झूठा है। यदि मानव समाज अन्न उत्पादनके नये वैज्ञानिक मार्ग अपनाये और नयी-नयी वस्तुओंको खाद्य सामग्रीमें सम्मिलित कर ले तो अन्नकी कमीका सवाल न रहे।' अपने इस परमोपयोगी निष्कर्षपर भरपूर जोर डालकर डाक्टर साहब कहते हैं कि—'आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्यमात्रके सामने विकासकी जो सम्भावनायें हैं उन्हें साहस के साथ अपनाया जाय।'—डाक्टर साहबका यह कहना सोलहो आने सच है कि अन्नकी कमीका भय झूठा है। सेठ-साहूकारों, मुनाफा खोरों, चोर बाजारवालों और रिश्वत खोरोंके हलवा मांड़े तो पहले से भी अधिक जोरोंपर चल रहे हैं... होटलोंकी चहल-पहल, सिनेमाके गुलछर्रे और गुलजार दावतें क्या खाद्यकी कमी की द्योतक हैं? इसकी कमी है तो गरीबों को..मजदूरोंको और सर्वस्व हारा लुण्ठित शरणार्थियोंको सो इनके लिये लकड़ीके बुरादे, इमलीके चीआंसे बने आंटे या पेड़के गूदेसे कोई खाद्य तैयार कर दिया जाय...सारा झंझट समाप्त हो जाय! यही तो रामराज्य है...यही जनतंत्र का एक प्रमाण है।

एक जनतंत्र देश यह है जहां पेटमें चूहे कलैया मा रहे हैं और दूसरा जनतंत्र है अमेरिका। वहां बुद्धि एवं धनके कीड़े उनकी खोपड़ीको रात दिन चालते रहते हैं। डाक्टर साहबका ही कथन है कि—'अमेरिकामें वस्तुओंके दाम बहुत बढ़ गये हैं किन्तु वहां उत्पादनके नवीन साधन होते हुए उत्पादन क्यों नहीं बढ़ रहा है?... कारण यह है कि वहांके निवासी इस भयसे उत्पादन बढ़ानेमें हिचकते हैं कि यदि अन्न अधिक उत्पन्न होने लगा तो अनाजका भाव ही गिर जायगा।'...एक ओर तो भाव गिर जानेके भयसे उत्पादन बढ़ाये जानेसे भागते हैं और दूसरी ओर उत्पादन बढ़ानेके लिये गला फाड़-फाड़कर चिल्लाते और हुमच-हुमचकर जोर लगाते हैं। फिर भी सफलता देवी मुंह फूलाये ऐंठी-सी ही चली जाती हैं। सम्पादकजी, शासन तो उत्पादन के लिये ऐंड़ीका पसीना चोटीपर चढ़ाता नजर आने लगा है...यदि देशके वैज्ञानिक भी इस मसलेको तै करनेके लिये कमर कसकर जुट पड़ें तो कोई कारण नहीं कि कठिनाइयोंकी नौका उसपार न लग जाय...! सो भाई मैं तो यही कहूंगा कि अब देशके समस्त वैज्ञानिक डाक्टर वीरेशचंद्र गुहाकी सलाह मान, जल्द ही वैज्ञानिक उपायोंसे खाद्यान्नके उत्पादनको चूड़ान्त पहुंचा देनेके लिये.. सब तरहकी आना कानी त्यागकर पिल पड़ें। शासन और विज्ञानके सम्मिश्रणसे जो मिकश्चर तैयार होगा, ध्रुव है कि उससे भारतकी यह भीषण व्याधि...असाध्य होनेपर भी कपूरके सदृश उड़ जायगी। इसमें संदेह करनेवालोंको आंखें आकाशपर तानकर अमेरिकाकी ओर निहारना चाहिये।

—०—

सफेद कोढ़ पर हजारों प्रशंसा पत्र और कई इनाम मिल गये। मू० १०) रु० ज्यादा हालके लिये डेढ़ आनेका टिकट भेजें।

वैद्य बोरकर बन्धु

मु० पो० मंगरूलपीर जि० आकोला (बरार)

२ लघु कथा—

कसौटी

—:*:—

श्री—"शृङ्ग' तुपकरी

(१)

एक पेड़की ऊंची डाली पर एक छोटा सा घोंसला था। उसमें दो पक्षी—नर और मादा—अपने बच्चों समेत निवास करते थे। हर कार्यमें दोनों एक दूसरेके सहयोगी थे। अपने सहचर पर आई हुई आपत्तिका दोनों प्राणपणसे सामना करते थे। एक दिन एक चीलने उनके घोंसले पर हमला कर दिया। नर मादा दोनों ही बाहर गये थे। वे लौटे तो उन्होंने चीलका अपने बच्चों पर वार करते हुए देखा। दोनों आग बबूला हो गये और उस पर टूट पड़े। चील बलवान थी। वह अपनी पैनी चोंचसे इन्हें घायल करती रही। किन्तु दोनोंने हिम्मत नहीं हारी और वे बराबर क्रमशः वार करते रहे। चील भी किसी हदतक घायल हुई किन्तु अन्ततः मादा पक्षी धराशायी हो गयी। उसका बदन लहूलुहान हो गया था। और ऊंचेसे गिरनेके कारण उसका दम छूट गया था। थोड़ी ही देर उपरांत नर भी मादासे कुछ फासले पर गिर पड़ा। उसने फैली हुयी चोंचसे चीलको देखा और फिर करुणा भरी आंखें अपनी मृत मादा की ओर फेर लीं।

पलक मारते उसका भी दम टूट गया।

दोनोंकी लाशें अपने अभिमानके पंख फैलाये हुये थीं क्योंकि दोनो अपने प्यारे बच्चोंकी रक्षाके लिये लड़ते लड़ते मरे थे। ईश्वरने उन्हें सफल नहीं किया यह उनका दुर्भाग्य था।

अफसोस, आज वे बहादुर पक्षी दुनियांमें नहीं हैं!

(२)

एक बड़े शहरकी चौड़ी सड़क पर एक ऊंची अट्टालिका थी। उसमें एक धनाढ्य परिवार निवास करता था। मां कार्य सब लोग सहयोग पूर्वक करते। साथ खाते, साथ पीते, साथ सोते, साथ जागते। सबका आपसमें खूब स्नेह था। एक दिन, जब आतंकके बादल जमीन पर जोरोंसे बरस रहे थे, कुछ गुण्डोंने उनके घर पर हमला कर दिया। मां चिल्ला उठी, बाप कांप उठा, बच्चे चीखने लगे, और लड़कियां रोने लगीं। सब डरपोक निकले। चन्द लुच्चों-लफंगोंने सबको लूटा, मारा पीटा, बापके सम्मुख बेटे मारे गये और केवल अपनी जिन्दगीका लालच बापको बांधे रहा! भाइयो के सम्मुख बहनोंकी बेइज्जती हुयी, बापके सम्मुख बेटियों पर अत्याचार हुये! और सब डरके मारे थर-थर कांपते हुये देखते रहे! सबके सब बे मारे मर गये थे, सबके हौसले उनकी जिन्दगीका लालच चाट गया था। गुण्डे अपना कार्य करके बड़ी शानसे चले गये। अफसोस कि बहुतसे आदमी पशु पक्षियोंके समान भी गौरवकी मौत नहीं मर सकते!

उस डरपोक परिवारके अनेक सदस्य आज भी जीवित समझे जाते हैं।

—o—

राजाजीमें मैत्री भाव

(३४ वें पृष्ठ का शेषांश)

राजाजीके महत्वका रहस्य है! इसी निस्वार्थताकी वजहसे तो वे इस पदके योग्य समझे गये हैं!

राजाजी सेवा ही जानते हैं पर दाम या नाम नहीं चाहते। तमिलनादने कुछ ही समय पहले अपने इस सुयोग्य पुत्रका अन्यायपूर्ण अपमान किया था। तब भी वे अपने दोस्तोंसे कहां असन्तुष्ट हुए। कामराज नाडारका उस पुण्य कृतिमें बड़ा हाथ था पर अब वे ही यह कहते फिर रहे हैं कि राजाजी मुझ पर कभी अतृप्त नहीं हुए!

मोसियो वर्दा चार्ली चैपलिनका श्रेष्ठ चित्र

(३३ वें पृष्ठ का शेषांश)

देखा जाता है। उसको अनेक नारियां अत्मसमर्पण करतीं हैं लेकिन वे फिर अपने घर वापस नहीं लौटती। वर्दा उनका सर्वस्व ले लिया कर अपने स्वर्ग भेज देता है। इस प्रकार कई नारियोंकी हत्या कर लेनेके उपरांत वर्दा का मुकाबला एक नारीसे हुआ। जब वर्दा उसको विष खिलाकर मारने जा रहा था कि उसी समय उसको पता चला कि यह स्त्री पति द्वारा वहिष्कृता अभागिनी है। बस, फिर क्या था वर्दा के हृदयके किसी कोनेमें छिपी भावकता या यों कहिये कि मनुष्यता जाग्रत हो उठी। उस स्त्रीके जीवनमें उसे जीवनका एक नया अर्थ मिला। वर्दा जब अपनी बीमार पत्नी और बच्चोंको देखनेके लिये बीच बीचमें अपने घर आता है तो वहां वह खूनी नहीं रहती वह वहां पति और पिताके वास्तविक रूपमें दिखायी पड़ता है। अगर हम वर्दा के इन दोनों रूपों पर ठीकसे गौर नहीं करें तो उसके चरित्रकी खूबियां आसानी से नहीं समझ पायेंगे। आर्थिक सङ्कटके बाद, नाजीवादी अ सीनियो पर फासिस्टोंकी चढ़ाई, स्पेनका गृहयुद्ध और उसके बाद द्वितीय महायुद्ध आया। द्वितीय महायुद्धमें वर्दा की स्त्री-पुत्र मारे गये उसके बाद वर्दा ने अपने खनी पेशेको छोड़ दिया और पुलिसको आत्मसमर्पण किया। फैसलेके बाद उसको फांसी की सजा दी गयी। हत्याको आधार बनाकर निर्मित होनेपर चित्र सुखतां है। मोसियो वर्दा की कहानी, निर्देशन आदि सब कुछ चार्लीने किया है। वर्तमान पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था की असङ्गतियों और व्यक्तिगत व्यवसायके अनियन्त्रित मुनाफाखोरों पर जितना तीखा व्यंग इस चित्रमें किया गया वैसा अन्य किसी चित्रमें देखनेमें नहीं आया।

———

चयनिका

आधी शताब्दी जेलमें

रोममें अण्टोनिया कोलिन नामक एक किसान आधी शताब्दीसे अधिक अपना जीवन जेलमें व्यतीत करनेके बाद अब ८० वर्षकी आयुमें अपने जीवनका दूसरा अध्याय प्रारंभ कर रहा है। उसको अपने पड़ोसकी स्त्रीकी हत्या करनेके अभियोगमें आजीवन कैदकी सजा मिली थी। गत ५६ वर्षोंतक यह बाहरी दुनियाकी बातें सिर्फ क्रमशः आनेवाले नये कैदियोंसे सुनता था। फिर भी मजेदार बात है कि वह इतनी लम्बी अवधिमें भी कभी निराश नहीं हुआ। बल्कि हमेशा सोचता रहा कि कभी न कभी मेरे मामलेपर फिरसे विचार किया जायगा और अन्तमें उसे माफी मिल ही गयी। अब वह रिहा होकर खेती कर रहा है।

० ० ०

नीला चन्द्रमा

ब्रिटेनमें कुछ दिन पहले नीला चंद्रमा देखा गया था। उसके संबंधमें प्रसिद्ध ज्योतिषी डा० डब्ल्यू० एच० स्टार्कन्सनका कहना है कि कोई भी नीलाचन्द्रमा देख सकता है। आपका कहना है कि सूर्योदय या सूर्यास्तके समय आकाश नारंगीके रंगका या रक्तिम हो जाता है। इसलिये उस समय चन्द्रमा नीला या हरा दिखायी पड़ सकता है। उसी प्रकार यदि कोई कोयले या गैसकी आग या आग उगलते हुए ज्वालामुखीको देखनेके बाद ही देखे तो रातमें चन्द्रा नीला या हरा दिखायी पड़ सकता।

असाधारण मोटा बच्चा

लन्दनमें एक सवा सालका बच्चा है जिसका वजन ४२ पौण्ड है। साधारणतः बच्चे १८ से २४ पौण्डके बीचके ही होते हैं। इस बच्चेकी माँने राशनिंग विभाग में अपने बच्चेको कपड़ा तथा अतिरिक्त भोजनके लिये प्रार्थना पत्र भेजा है। डाक्टरोंका कहना है कि यह बच्चा आगे चलकर बहुत मोटा आदमी बनेगा।

* * *

तख्ते ताऊसकी खोज

७० वर्षीय अंग्रेज इंजिनियर विलडरहम एक ज्योतिषीके कहनेपर मुगल बादशाहोंके तख्ते ताऊसकी खोजमें, जो ३० लाख पौण्डका है समुद्रमें पैठनेको तैयार हैं। तख्ते ताऊस १६६ वर्षपूर्व दक्षिण अफ्रीकाके समुद्रमें डूब गया था।

० ० ०

प्रलयकी भविष्य वाणी

आस्ट्रेलिया प्रवासी ११४ वर्षीय वयोवृद्ध भारतीय भविष्य वक्ता एवं ज्योतिषी श्री अमर गंगा सिंहने, जिनकी भविष्यवाणियां पिछले दिनों दो बार सही साबित हो चुकी हैं, फिर एक नयी भविष्यवाणी की है कि आगामी ५० वर्षोंके भीतर ही एक महा विनाशकारी विश्वयुद्ध होगा। भारतीय ज्योतिषीने गत १० दिसम्बरको भविष्यवाणी की थी कि 'बड़े दिनों' के रोज आधी रातके दो मिनट बाद आस्ट्रेलियापर सूर्यके धब्बे दिखायी देंगे। उनकी यह भविष्यवाणी सच निकली। इसके पूर्व उन्हने पुच्छल तारेके प्रकट होनेकी भविष्यवाणी की थी, वह भी सही निकली। अब आपने भविष्यवाणी की है कि आगामी ६० वर्षोंतक युद्ध जारी रहेगा जिसके अंतमें एक एक विश्व-व्यापी युद्ध होगा। लेकिन अंतिम महा विनाश और कत्ले आमके पूर्व ही ईश्वर सम्पूर्ण व्यक्तियोंको इस भूमिसे उठा लेंगे।

१९३३ से एक भी व्यक्तिका भक्षण नहीं

क्वीन्स लैण्डके सेण्ट जार्ज जिलेके आदिवासी नर भक्षक प्रसिद्ध है। इस बार उनपर आरोप लगाया कि वे हाल हीमें एक अंग्रेजको पका कर खा गये हैं। इस आरोपका आदिवासियोंने जबर्दस्त प्रतिवाद किया है और उनके प्रवक्ताने बताया है कि 'हमने १९३३ से एक भी व्यक्तिका भक्षण नहीं किया है।' यही नहीं अब हम लोग ने पहले की भांति छिपकली का खाना भी छोड़ दिया है। वस्तुतः यह देखा गया है कि आदिवासी अब गोश्त और तरह तरहकी तरकारियां पका कर खाते हैं और अंग्रेजको गायबकर खा जानेका आरोप उनपर झूठ मूठ लगाया गया है।

कलाकारकी अनुभूति

लन्दनका चार्लसथ्रेल नामक कलाकार द्वितीय महायुद्धमें जापानका बन्दी बना था। जेलमें उसे खबर मिली कि लंदनमें उसकी पत्नीको लड़की पैदा हुई है। चार्लस थ्रेलको अपनी पुत्रीका चित्र बनानेकी उत्सुकता पैदा हुई। लेकिन जेलमें चित्र बनानेका सामान कहां? वह कलाकार बेचैन हुआ। लेकिन आवश्यकता आविष्कारकी जननी है इस कहावत के अनुसार उसका रास्ता निकल आया। उसने रंगीन किताबों और उनके चित्रों को उबालकर रंग तैयार किये एवं अपने बालों से तूलिका। उसके बाद उक्त कलाकारने एक पंच वर्षीया बालिकाका चित्र बनाया। जेलसे रिहा होकर जब कलाकार लंदन आया और उसने देखा कि कल्पना द्वारा प्रस्तुत चित्र और उसकी पुत्री में बिलकुल समानता है, तो इसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। थ्रेलने बंदी गृहमें ८७ चित्र बनाये थे। वे सभी लन्दनकी कला प्रदर्शनमें रखे गये हैं। थेलसे जब उसकी लड़कीके चित्र मनानेके रहस्यको

पूछा गया तो उसने सिर्फ इतना ही कहा कि मुझे अपनी प्यारी पुत्रीका चित्र बनाने की अंतः प्रेरणा मिली थी इसके सिवा मुझे और कुछ नहीं मालूम।

जीवोंके आकारमें यह विभिन्नता क्यों ?

चहा जब हाथीके समीप पहुंचता होगा तो उसके हृदयको अवश्य यह ठेस लगती होगी कि कहा तो जाता है कि 'ईश्वर सबको समान रूपसे देखता है'—फिर कहां हम और कहां यह गज राज ! किंतु यह उसकी भूल है, ईश्वरने प्रत्येक जीवको उसकी सुविधाके लिये विभिन्न आकार प्रकार दिये हैं।

थोड़ी देरके लिये मान लिया जाय कि मनुष्यका आकार राक्षसोंकी तरह होता—६० फीट लम्बा आदमी। इस महामानवकी लम्बाई ही दस गुनी नहीं, बल्कि चौड़ाई और मटाई भी दस गुनी होती। इसका वजन तब हजार गुना होता-लगभग ८०-९० टन।

अभाग्यवश इसकी हड्डियोंका जोड़ मनुष्यसे केवल सौ गुना होता फलस्वरूप इस दानवकी हड्डियोंको, मनुष्यकी हड्डियों से दस गुना भार उठाना पड़ता। लेकिन मनुष्यके जांघकी हड्डियां, मनुष्यके वजनसे दस गुना भार या उससे भी कम भार बहन करने पर टूट जाती हैं। तब तो इस दानवकी हड्डियां कदम उठाते ही टूट जातीं। और हम आज बैठे ही रहते चल फिर नहीं पाते।

अब चिड़ियाखानेकी ओर नजर डालिये, हिरण जैसे सुंदर जीव ने कहीं बड़ा राना है कि विधाताने सब अङ्ग तो सुंदर सुपुष्ट बनाये पर उसकी टांग सूखी लकड़ी जैसी असुंदर बना दीं। तब दो ही रास्ते इसके सामने रह जाते हैं या तो गेंडेकी तरह यह पैर छोटे और मोटे कर ले या जिराफकी तरह अपने शरीरको दबोचकर पैर फैला ले। शायद ही इन दोनोंमें कोई उसे पसंद आये।

० ० ०

कीड़े-मकोड़ों पर पृथ्वीकी आकर्षण-शक्तिका कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता, इन्हें जमीन पर गिरनेसे कोई कष्ट नहीं होता, ये फिर किसी भी चीजके सहारे दीवाल पर चढ़ सकते हैं। किंतु इनके लिये आकर्षण शक्तिकी तरह 'सतहका तनाव' बड़ा भयानक होता है। एक आदमीके शरीर पर नहानेके बाद लगभग एक बटा पचास इञ्च पानीकी परत रह जाती है, जिसका वजन लगभग आधा सेर होता है। एक भींगे चूहेको लगभग अपने वजनके बराबर पानी उठाना पड़ता है। एक मक्खीको भींगने पर अपनेसे कहीं अधिक पानीका भार बहन करना पड़ता है और यही कारण है कि एक बार भीग जाने पर मक्खी उड़ नहीं सकती।

प्रभावशाली व्यक्ति

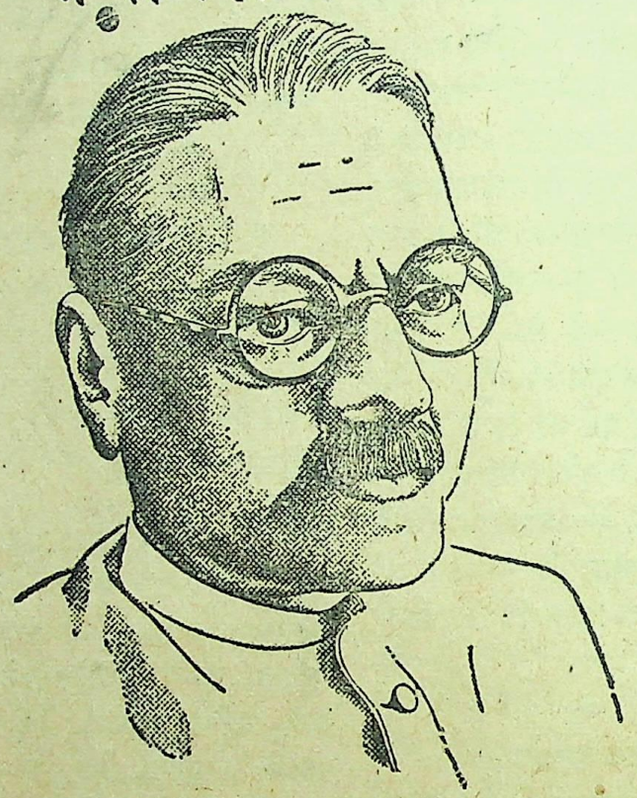

जीलेट से हजामत बनाते हैं।

जिन व्यक्तियों को आप आदर देते हैं वे वास्तवमें वे व्यक्ति हैं जिन्होंने सफलता के इस सरलतम नियम का पालन सीख लिया है—एक सुव्यवस्थित, सुसज्जित आकृति। प्रभावशाली व्यक्तियों की बुद्धिमता से लाभान्वित होते हुये जिलेट पर विश्वास रखिये जो आपको इतने अल्प व्यय में प्रतिदिन जीवन की सर्वोत्तम और सब से स्वच्छ हजामत देता है।

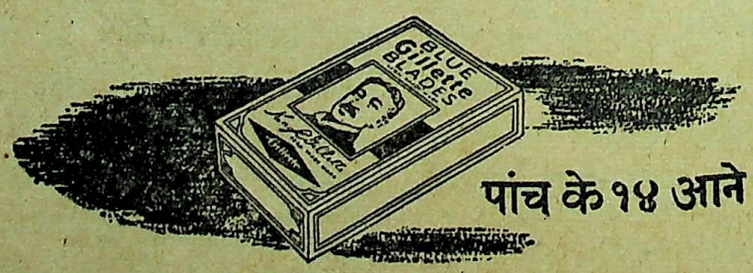

पांच के १४ आने

Blue Gillette Blades

ब्ल्यू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये !

१९४८ में क्या होने वाला है

भारतवर्षके प्राचीन महापुरुषोंकी सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या अन्धकारपूर्ण संसार में सूर्यका प्रकाश है, यदि आप भी इस अन्धेरी दुनियामें अपने भविष्यका साफ साफ फोटो समयसे पूर्व देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर किसी दिल-पसन्द फूलका नाम लिख कर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष विद्या द्वारा आपके आने वाले बारह मासका हानि लाभ, व्यापार, नौकरीमें तरक्की, गिरावट, तबदीली, तन्दुरुस्ती, बीमारी, यात्रा, अकस्मात् न मालूम कारणसे धनकी प्राप्ति, किसीसे नया मिलाप, औरत औलादका सुख; तारीख पोस्टकार्डसे लेकर वर्ष भरमें पेश आने वाली सब बातोंका खुलासा यानी मासिक वर्ष फल बताकर केवल १।) रु० में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलावा होगा। बुरे ग्रहोंके शान्तिका उपाय लिख दिया जायगा। ज्योतिष विद्याका चमत्कार एक बार अवश्य देखें।

श्री महावीर स्वामी ज्योतिष कार्यालय

(V.W. C.) करतारपुर (जालन्धर)

Shree MAHABIR SWAMI JYOTISH KARYALAYA

V. W. C. Kartarpur (Jullundhar)

पांच सौ रुपया इनाम

(एक आश्चर्यजनक अद्भुत जादई)

मैस्मरेज़िम और जादू की शक्ति से तैयार की हुई यह अंगूठी अनिष्टकारी ग्रहों का प्रभाव दूर करने में अलौकिक शक्ति का परिचय देती है। इस अंगूठी को पहनने वाला अपनी हर प्रकार की कामना पूरी करने में सफल हो जाता है। प्रेम और मुकदमे में सफलता, स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा कीर्त्ति उसके पांव चूमती है। एक ही रात में इस अद्भुत अंगूठी के गुणों और करामात से प्रभावित होना ही पड़ता है।

एक अंगूठी का मूल्य सिर्फ २)।

एक साथ तीन अंगूठी मंगाने पर ५)।

पेकिङ्ग और डाक खर्च अलग

—: पता :—

महाकाली आश्रम नं० २४७ कानपुर

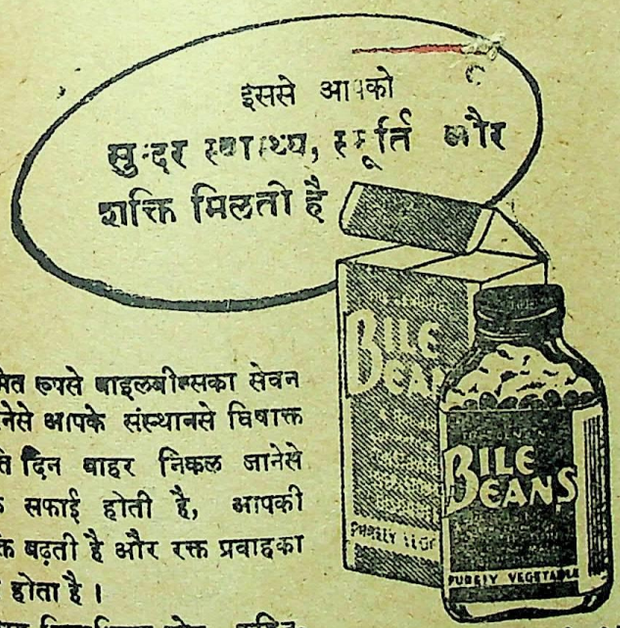

नियमित रूपसे बाइलबीन्सका सेवन करनेसे आपके संस्थानसे विषाक्त पदार्थ प्रति दिन बाहर निकल जानेसे आन्तरिक सफाई होती है, आपकी पाचनशक्ति बढ़ती है और रक्त प्रवाहका परिष्कार होता है।

इस तरह पित्ताधिक्य रोग, कब्जियत, सिरमें दर्द, बदहजमी, लिवर की गड़बड़ी, शिथिलता, वात और ऐसे ही [illegible] इस सुप्रसिद्ध वनस्पति औषधि से आराम होते हैं।

विशुद्ध वानस्पतिक

BILE BEANS

प्राकृतिक टानिक और रोगनाशक का सेवन करें

एजेण्टसः स्मिथ स्टनिस्ट्रीट एण्ड कं० लि०, इण्टाली, कलकत्ता।

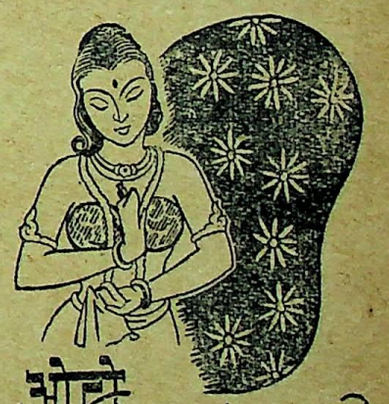

ओटो पुष्पबहार

ओटो पुष्प बहार सब इत्र सुगन्धियों का सम्राट है। इसको लगाते ही आपका हृदय मस्ती की लहरों में खो जायगा। जिधर से आप निकलेंगे, इसकी सुगंध पाकर सबों की नजरें आप पर केन्द्रित हो जायेंगी। रूमाल में लगाने से इसकी खुशबू महीनों नहीं जाती। यह सुगंध लगा कर आप जिससे मिलेंगे वह आप से बहुत प्रभावित हो जायगा।

मूल्य प्रति शीशी ॥।) एक दर्जन का ६॥।) डाक खर्च १।)

एक साथ एक दर्जन शीशी मंगाने पर एक जोड़ी हाथ के बटनों का सेट बम्बई फैशन की एक चमकदार अंगूठी एक फैन्सी रूमाल, एक खूबसूरत शीशा मय कंघा इनाम में मुफ्त दिया जायगा।

(यह घोषणा केवल प्रचार के उद्देश्य से की जा रही है।)

पता—इंडिया ट्रेडिंग कम्पनी, कानपुर

...लय
गुरुकुल काँगड़ी.

चित्र

विश्वामित्र

सचित्र

विश्वामित्र

The AIRMAN and his watch!

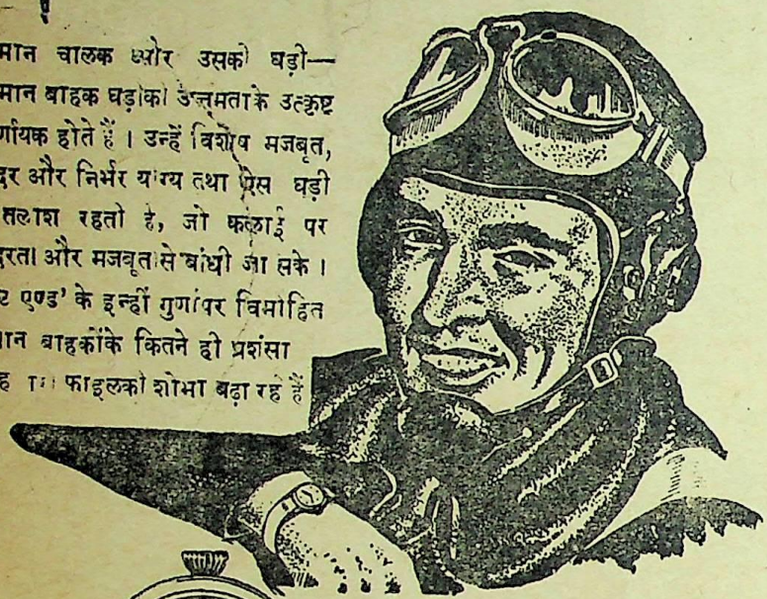

विमान चालक और उसकी घड़ी—विमान वाहक घड़ीकी उच्चतमताके उत्कृष्ट निर्णायक होते हैं। उन्हें विशेष मजबूत, सुन्दर और निर्भर योग्य तथा ऐसी घड़ी की तलाश रहती है, जो कलाई पर सुन्दरता और मजबूतीसे बांधी जा सके। 'वेस्ट एण्ड' के इन्हीं गुणोंपर विमोहित विमान वाहकोंके कितने ही प्रशंसा पत्र हमारी फाइलकी शोभा बढ़ा रहे हैं।

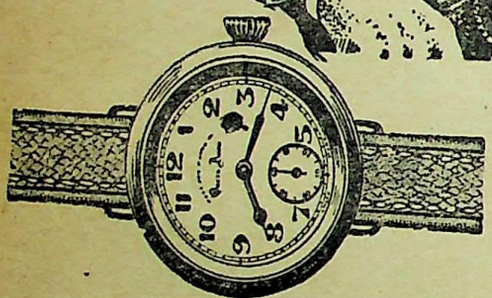

क्वीन ऐनी - क्रिस्टल शेप
निकेल सिल्वर, एवर ब्राइट स्टील बेंक ... ५२) रु०

एक हवाई आफिसर लिखते हैं—"मेरे एक मित्र, जब कि भारतमें थे, गत सितम्बर या अक्टूबरमें मेरे लिए आपसे एक घड़ी खरीदे थे—मैं बहुत खुश हूं कि यह बिलकुल ठीक चल रही है।"

मांग की अधिकता और अपर्याप्त आयात के कारण हम विज्ञापित सब प्रकारकी घड़ियों की सप्लाई की गारंटी नहीं दे सकते, तथापि यथा सम्भव कोशिश करते हैं

वेस्ट एण्ड वाच कं०, बम्बई और कलकत्ता

WEST END WATCH Co

BOMBAY - CALCUTTA

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी हैं। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शीशियां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

फैंसीसिल्कसाड़ी आकर्षकडिज़ाईन

कलापूर्ण ३-४ इञ्च चौड़ा बार्डर

नं०	७	८	९	५ गज
	१८)	२३)	२८)	"

२) आर्डर के साथ पेशगी बाकी वी०पी० से

थोक व्यापारियों को खास सुभीता

वमाको इन्डस्ट्रीज, जुही कानपुर

देश हितैषी धर्मप्रेमी ध्यान दें

रामायणकी विशारद, रत्न, भूषण आचार्य आदि परीक्षाओंके अपने २ स्थानों पर केन्द्र खोलकर एवं परीक्षायें देकर डिग्री प्रमाण पत्रोंके अतिरिक्त मेडिल पारितोषिक इनामें प्राप्त कर आध्यात्मिक प्रचार करें नियमों के लिये लिखें :—

पता--अ०भा० धर्मग्रन्थ प्रचार समिति मछरया (मिहोना) गवालियर सी. आई

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय

स्थापना १९२६

आरोग्य नीलगिरि तेल

सुरज १८६६ उप

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमें लाभदायक

प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

विश्वामित्र

सम्पादक—

देवदत्त मिश्र

वर्ष—३० संख्या—५६ ता० १० मार्च १९४८ MARCH, 10 1948. मूल्य =) वार्षिक ६)

युगकी मांग

आज ओजका नवीनतम उमार चाहिये !
रक्त-तप्त रक्तकी सशक्त धार चाहिये !
सुव्यक्त धार चाहिये !

अस्त व्यस्त, ध्वस्त, त्रस्त हो रही वसुन्धरा,
ढो रही विनाश और सृष्टिकी परम्परा,
मान मानवोंका आज हो गया है अधमरा,
एक युग हुआ मनुष्य दानवोंसे है घिरा,
अब मनुष्य को पुनीत मुक्ति द्वार चाहिये !
मुक्तिके लिये सशक्त रक्तधार चाहिये !
सुव्यक्त धार चाहिये ।

मति विहीन, गतिविहीन, क्षीणकाय, दीन क्यों ?
गिन रहे हो मौतके दिन एक, दो व तीन क्यों ?
अब उठो जवान हो ! कि बाहुओंको तौल लो,
मीन-मेख छोड़कर स्वराज्य लो न चिन्ह क्यों ?
राष्ट्रके विकासमें न ये विकार चाहिये !
आज तो हमें नयो, नये विचार चाहिये !
नये विचार चाहिये !

'नर्म' हों कि 'गर्म' हों, स्वधर्म भूलिये नहीं,
शर्म भूलिये नहीं, स्वकर्म भूलिये नहीं,
मर्म जान जाइये, अधर्म दर्प जानिये,
वर्ण और विवर्णके बिबाद व्यर्थ मानिये,
आज एक सूत्रमें बंधे विचार चाहिये !
आज ओजका नवीनतम उमार चाहिये !
नया उमार चाहिये !

बार बार त्रस्त भारती तुझे पुकारती,
धीर वीर, एक बार, फिर उतार आरती,
कष्ट हों हजार किन्तु आश छोड़ना नहीं,
भारको उतार आज दब रही है भारती,
धारसे उबार, नांव आज पार चाहिये !
आज ओजका नवीन तम उमार चाहिये !
नया उमार चाहिये !

हो रहे विनष्टपर न रुष्ट तुम भी हो सके,
राष्ट्र-भालसे न कष्टके कलङ्क धो सके,
आत्म ओज भ्रष्ट हो गया कि तुष्ट तुम रहे,
किन्तु आज फिर जगी प्रभा न नष्ट हो सके,
जागते रहो ! न नींदका खुमार चाहिये !
आज ओजका नवीनतम उमार चाहिये !
नया उमार चाहिये !

—श्री 'भृङ्ग' तुपकरी

'गांधी तो अमर है'

आचार्य प्रभुदयाल अग्निहोत्री

वज्रपात !
वज्रपात दारुण रे !
दारुण रे महानाश
डोल रहा शीश शीश,
बोल रहा पीस पीस
भैरव दंष्ट्रा कराल,
'रक्त रक्त, उष्ण रक्त।'
मासोंसे कि वर्षोंसे कि युगोंसे शताब्दियोंसे
पीता आ रहा है
तो भी पेट भरता नहीं,
बुझती नहीं है प्यास।
देखो रे, देखो रे !
घूमता है महाकाल
शिवि हो, दधीचि हों कि दार्शनिक सुकरात
मनसूर हों कि खुद ईशपुत्र ईसा हों
रुकता नहीं है वह,
झुकता नहीं है वह,
शोणितकी मांग है, शोणितकी मांग है।
गूंज उठा अम्बर है,
कैसा भयङ्कर है ?
सम्हलो रे, सम्हलो रे !
देखो वह आ गया,
अवनीपर छा गया।
कैसा परपंची है ?
मानवका भेष धरे
टूट पड़ा मानवोंमें।
इसे टोको तो।
इसे रोको तो।
घ[illegible]ह खोल रहा,
[illegible]ष्ट तोल रहा,
उठा कण कण।
[illegible]धर प्रहार किया ?
[illegible]केस पर वार किया ?
अरे वही मानव यह,
यह महामानव है,
यह अतिमानव है
धर्म द्युतिमान है।
नहीं नहीं,
मानवका बेष धरे यह भगवान है

* * *

क्रूर यह क्या किया ?
रक्त किसका पिया ?
पच यह न पायेगा,
फूट फूट आयेगा।
देख रे,
कालकी, दिशाओंकी शरीरकी कि प्राणकी
भीतियोंको छेद कर,
सौर लोक बेध कर,
देख, वह आ गया।
अस्थि, मांस, शोणितके नागपाश तोड़कर,
आधियोंकी व्याधियोंके ग्रीवाय मरोड़कर
देख फिर जी उठा।
खिल उठा जन जन,
खिल उठा मन मन,
बोल उठा कण कण,
गांधी डरता नहीं,
गांधी मरता नहीं,
गांधी कब मानुष हैं ?
गांधी तो प्रतीक हैं !
सभ्यताका संस्कृतिका,
मानवके मनकी निवासी सुर शक्ति का,
सत्य, शिव, सुन्दर का,
मानवका रूप धरे ईश्वर का,
गांधी अविनश्वर है
गांधी तो अमर है।

* * *

तो भी नभ रोता है,
धैर्य जग खोता है,
गिरते हैं अश्रु टप टप कर।
वेदना के बादलों ने
आशा के सितारे ये,
एक एक लील लिये।
दारुण है अन्धकार,
दारुण पीड़ा प्रसार,
ओर नहीं छोर नहीं,
पूरबसे पश्चिम लों,
उत्तर से दक्खिन लों,
आंसू ही आंसू हैं।
काम सब रुक गये,
झण्डे सब झुक गये,
घोर शोर हो उठा,
प्राण प्राण रो उठा।

* * *

नहीं, यह पीड़ा नहीं,
दुर्बल की व्रीड़ा नहीं,
अरे यह श्रद्धा है,
आंसू नहीं, पूजन के हेतु यह जल है,
जीवन के पथका पुनीत सम्बल है।
कौन कहता है आज मानवता मीता है
सौंप गया गांधी जिसे भागवत मीता है ?
हम नहीं भीरु आज, हम न अधीर हैं,
गाण्डीव कर और लक्ष्य भेदी तीर हैं।
क्षण भर का ही मोह लायी यह आंधी है
किन्तु साथ गांधी है
गांधी अविनश्वर है,
गांधी घर घर है।

* * *

माना, यह सत्य है,
भारतीय संस्कृतिके शुभ्र इतिहास में
सबदा को सर्वदा को
जुड़ गया काला पृष्ठ
शुभ्र चित्रपट पर धब्बा है,
सचमुच है निकृष्ट।
कट न सकेगा यह,
फट न सकेगा यह,
किन्तु हम बैठें क्यों ?
क्रोध भरे ऐंठें क्यों ?
भूल से उठा जो पग उसको सम्हाल दें
क्रोधकी दावाग्निपर क्षमाका जल डाल दें।
बापू ने बताया है,
हमको सिखाया है,
असुर को सुर में बदल डालो
कलमष धो डालो,
मन को टटोलो,
देखो और फिर बोलो'
कहीं तुममें भी छिप कर
बैठा तो न दानव है।
व्यर्थ ही न जाय महामानव का बलिदान
हिन्दू 'औ' मुसलमान
मानव हैं, मानव की सन्तान।
भेद, अरे ये तो सब हमने बनाये हैं।
उठो उठो आगे बढ़ो
सीना चीर पत्थरों का
ब्रह्मपुत्र के समान
कलकल गीत से
जग को गुंजा दो
शांति रस बरसा दो
भेद, अन्तर असत्य है
राम नाम सत्य है,
सत्य एक गति है,
सत्य एक मति है,
भावना पुनीता हो,
हाथ चारु गीता हों,
गांधी जन जन में
गांधी मन-मन में
गांधी अविनश्वर है
गांधी तो अमर है

पर हित बस जिनके मन माहीं ॥
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

युद्धकी विभीषिका

साधारणतया इस धारणाने घर कर लिया है कि राष्ट्रोंके बीचमें युद्ध होते ही रहेंगे, इनको मिटाया नही जा सकता क्यों कि मनुष्य स्वभावसे युद्ध-प्रिय होता है। कुछ अंशोंमें यह बात सत्य हो सकती है, किन्त प्रत्यक्षमें दिखायी देने वाला यह सत्य वास्तवमें सत्य है नहीं। स्वभाव बनता और बिगड़ता है। अबतकका इतिहास इस बातका साक्षी है कि युद्धको रोकनकी अपेक्षा उसको प्रोत्साहन देने वाले ही प्रयास अधिक किये गये। युग-युगमें सन्तोंने अहिंसाका प्रचार किया किन्तु युद्ध स्थिति उत्पन्न करनेवाली राजसत्ताएं इस प्रचारके प्रभाव में बहुत कम आयीं और युद्ध होते रहे।

युद्धके समर्थक अपनी कुत्सित मनोवृत्तिको छिपानके लिये यह दलील भी पेश करते हैं कि नाना कारणोंसे युद्ध होते हैं और इन सब कारणोंका अस्तित्व मिटाना असम्भव और असाध्य है। किन्तु संसार की अबतक की प्रगति यह बताती है कि असम्भव और असाध्य कुछ भी नहीं है, यदि अधिकारी व्यक्ति उचित और पर्याप्त प्रयास करें। युद्ध नहीं रोके जा सकते, इस मतसे सहमत न होते हुए भी हम देख रहे हैं कि अभीतक दुनियाने ईमानदारीके साथ युद्ध रोकनेका प्रयत्न नहीं किया और उसीका परिणाम है कि अभी युद्ध बन्द हुए चार वर्ष भी नहीं बीते किन्तु १९४८ की युद्धकी विभीषिका दूसरे महायुद्धके आरम्भ होनेके पूर्व १९३९ से भी अधिक घनी, काली और भयंकर है। चकोस्लोवाकिया ही दूसरे महायुद्धका अन्तिम कदम था। १९३९ में हिटलरकी सेना चेकोस्लोवाकियाकी राजधानी प्रगमें घुसी थी। किन्तु इस कार्यको घोर अन्याय मानते हुए भी युद्धके लिये पर्याप्त नहीं समझा गया। कुछ महीने बाद युद्धका विस्फोट पोलैण्डमें हुआ। युद्धकी ओर संसारकी प्रगति ठीक उसी क्रमसे हो रही है, पर इस नाटकके पात्रोंमें कुछ हेर-फर है और भावी रंगस्थल भी इस बार दूसरा ही होगा। दूसरे महायुद्धके समय नाटकका प्रधान पात्र नतूफानी तहलका मचानेवाला हिटलर था। इस बार प्रधान नायक कौन है, धीरे-धीरे दृढ़ताके साथ प्रायः सम्पूर्ण यूरोप पर प्रभाव और आधिपत्य जमानेवाला स्टालिन या पैसेका जाल बिछाकर दुनियाको अपने चंगलमें फंसानेका प्रयत्न करनेवाला ट्रूमैन——यह कह सकना जरा कठिन है। बहर हाल यह तो कहाही जा सकता है कि इस बार युद्धका श्रीगणेश कोई भी क्यों न करे उसका प्रतिद्वंदी दूसरे युद्धके ब्रिटेनके समान दुर्बल, दब्बू, असमर्थ, और साधन शून्य पर मुखापेक्षी न होगा। दोनों अपनी-अपनी प्रचण्ड शक्तिके साथ टकरायंगे और इसलिये इस वारका युद्ध पिछले से कहीं अधिक भयंकर होगा, इसमें सन्देह नहीं है। इस वारके युद्धका रूप पहलेकी अपेक्षा अधिक सीमित हो गया है, इस अर्थ में कि तब युद्धारम्भके समय रूस और अमेरिका दोनों तटस्थ थे। कालान्तरमें जब ये दोनों युद्धमें आये तो एक ही पक्षमें। इस वार किसीके तटस्थ रह सकनेकी गुंजाइश नहीं है।

प्रतिक्रिया शुरू हो गयी है। चेकोस्लोवाकिया कम्यूनिस्ट अधिकारमें चला गया। वाशिंगटनमें इसकी प्रतिक्रिया बड़ी द्रुतगतिसे हो रहीं है। अमेरिका इसे अपने अस्तित्वके लिये चुनौती समझता है और वह इस चुनौतीको दुर्बल ब्रिटेनकी अपेक्षा अधिक मुस्तैदीसे स्वीकार करने जा रहा है। उसकी तैयारियां बहुत पहलेसे आरम्भ हो गयी थीं। यूनान और टर्कीको उसने अपना सामरिक गढ़ बना रखा है। बहुत सम्भव है कि यूनान ही तीसरे महायुद्धका पोलैण्ड बने। किन्तु प्रश्न यह है कि आततायी कौन होगा। स्टालिनको अपने संगठन और आदर्शों पर उतना ही भरोसा है जितना अपनी सैनिक शक्ति पर। इसलिय हम नहीं समझते कि स्टालिन युद्धारम्भ करनेकी उतावली दिखायेगा। क्योंकि उसे सैनिक और असैनिक दोनों क्रांतियों पर विश्वास है और एकके लिये वह दूसरेकी धैर्यपूर्वक तबतक प्रतीक्षा कर सकता है जबतक एकके सभी मार्ग बिलकुल ही अवरुद्ध न हो जायें। अमेरिकाका कूटनीतिक जाल उसकी महत्वाकांक्षाओंको पूरा करनेमें व्यर्थ सिद्ध हो रहा है अतः प्रश्न यह है कि क्या वह उस समय तक धैर्यके साथ यह देखनेकी प्रतीक्षा करता रह सकता है कि धीरे-धीरे सम्पूर्ण यूरोप रूसके प्रभावमें चला गया। शायद नहीं। उसकी सैनिक शक्ति, आर्थिक साधन और सम्पन्नता एवं सर्वोपरि अणुबमकी शक्ति उसके धैर्यके बांधको अधिक दिनोंतक नहीं रुकने दे सकती। और तब बहुत सम्भव है कि अमेरिकाकी ओरसे ही इस बार युद्धकी स्थिति पैदा की जाये।

ब्रिटेन और फ्रांस अमेरिकाके पीछे हैं। किन्तु इस बातकी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि फ्रांसकी सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी कम्यूनिस्ट है। इतना बड़ा विरोधी घरमें रखकर फ्रांस इस युद्धमें अधिक सहायक हो सकेगा, ऐसी आशा नहीं है। तब, एक तरह अकेले ही अमेरिकाको अपने बल पर तीसरा युद्ध लड़ना पड़ेगा और वह इसके लिये तैयार है। चेकोस्लोवाकिया में हुए परिवर्तनके लिये रूसको जिम्मेदार ठहराया गया है और अमेरिकाके नेतृत्वमें ब्रिटेन और फ्रांसने पहली बार रूसके विरुद्ध सम्मिलित प्रतिवाद किया है। वाशिंगटनमें इस बात पर विचार हो रहा है कि इस मामलेमें अब क्या किया जाना चाहिये। बहुत सम्भव है कि युद्धकी ओर पहला कदम रूससे कूटनीतिक सम्बन्ध विच्छेद करके उठाया जाये। दोएकब्रिटेन, फ्रांस, वेलजियम और नेदरलैंडको एक सूत्रमे बांधकर अमेरिका इसी दिशामें अग्रसर हो रहा है।

न मूर्ख हैं न पागल

गत सप्ताह पाकिस्तान पार्लमेण्टमें बजट पर बोलते हुए प्रधान मन्त्री मि० लियाकत अली खांने कहा कि "पाकिस्तान में ऐसा कोई नहीं है, वह झोपड़ेमें रहता हो या महलमें, सरकारी नौकर हो या नागरिक, जो युद्ध चाहता है।" हिटलरने एक नयी कूटनीतिको जन्म दिया था। बात वह कहो जो करनेके ठीक विपरीत हो। युद्धकी स्थिति उत्पन्न करनेवाले न मूर्ख होते हैं न पागल। मियां लियाकत अली कहते हैं कि यदि मैं युद्ध चाहूं या वह काम करूं जो युद्धकी स्थिति पदा करे तो मेरी जगह पागलखानेमें होनी चाहिय। दुनिया जानती है कि युद्ध स्थिति उत्पन्न करने वालोंको आज तक कभी पागल खानेमें नहीं रखा गया, उलटे उन्होंन ही उन लोगों को पागल बनाने वाले कैदखानोंमें रखा रखा जिन्होंने सचाई और ईमानदारीके साथ युद्धका विरोध किया। लियाकत अली यह भी कहते हैं कि पाकिस्तान सीमा विस्तार नहीं चाहता। शान्ति और प्रगति चाहता है, और कुछ नहीं। काश्मीरमें अघोषित युद्ध पाकिस्तानकी इसी इच्छाकी प्रतिक्रिया है, सीमा विस्तार उसका उद्देश्य नहीं है। पाकिस्तानके प्रधान मन्त्री खुद तो नहीं पर दूसरोंको पागल अवश्य समझते होंगे। अन्यथा कमसे कम वे दूसरोंके त्याग और बलिदान, संकटों और कष्टोंसे लाभ उठाकर यह कहनेकी हिमाकत न करते कि "बड़ी-बड़ी कुर्बानियोंके बाद हमने जो स्वतन्त्रता पायी है उसकी रक्षाके लिये हम आखिरी दमतक लड़ेंगे।" शायद हिन्दुओंके विरुद्ध घोषित जेहादको वे अपना स्वतन्त्रता-युद्ध कहते होंगे। मुस्लिम लीगी प्रान्तोंमें लीगी सरकारों और अंगरेज अधिकारियोंकी सहायतासे वहांके हिन्दुओंके खिलाफ बोले गये सीधे हमलों और नृशंस कायरतापूर्ण अत्याचारोंको जो व्यक्ति स्वतन्त्रताका युद्ध कह सकता है वह दूसरोंको पागल ही समझ कर ऐसी बात कह सकता है।

पाकिस्तानकी वर्तमान आर्थिक स्थिति जैसी है उसे देखते हुए दबा हुआ असंतोष या विद्रोह किसी समय भड़क उठ सकता है। इसे दबाये रखनेके लिये यह आवश्यक है कि कमसे कम पाकिस्तानको तो किसी बातके पीछे पागल बना रखना चाहिये। पाकिस्तानके प्रधान मन्त्री मियां लियाकत अली खांने वह नुसखा तजबीज किया है। अधिकांश पाकिस्तानी भूखे और अधनंगे तो है ही, पर वे यह महसूस न करें कि उनकी इस हालतके लिये मौजूदा हुकूमतकी जिम्मेदारी भी कम नहीं है। इसीलिये वे फरमाते हैं कि "भले ही पाकिस्तानी भूखे रहें या नंगे, मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि उनकी आजादी उनसे छीन ली जाये।" यह हैं पाकिस्तानी प्रीमियर जो गरीबोंकी सद्वृत्तिको जाग्रत करके अपनी घृणित मनोवृत्ति पर पर्दा ही नहीं डाल रहे उसे चरितार्थ करनेका साधन और सुयोग जुटा रहे हैं। मियां लियाकत अली खां अच्छी तरह जानते हैं कि पाकिस्तानकी स्वतन्त्रता को किसीसे खतरा नहीं है, कमसे कम पड़ोसी भारतसे नहीं। किन्तु वे नहीं चाहते कि पाकिस्तानमें इस सत्य बातका प्रचार हो। इसी कल्पित भयको सामने रख कर वे पाकिस्तानीके शोषणको बलिदानका रूप देकर जारी रखना चाहते हैं।

निजामकी दुरंगी चाल

हम यह बात एक नहीं अनेक वार कह चुके हैं कि निजामको समझौते और वार्तालापके जरिये सीधे रास्ते पर नहीं लाया जा सकता। एक तरफ वह भारत सरकारके साथ वार्तालाप का समय बढ़ाता जा रहा है दूसरी तरफ राज्यमें दमन चक्रकी गढ़ित बती जा रही है। उसकी यह दुरंगी चाल किसके इशारे और सहारे हो रही है, यह सहजही समझा जा सकता है। पाकिस्तान औरसाम्राज्यवादी विदेशी ताकतोंकी रक्षा निजाम हदराबादकी पीठ पर है और जितना विलम्ब होता होगा उतनीही उसकी स्थिति मजबूत होगी। भारतकी सुरक्षा और साम्प्रदायिक एकताके लिये हैदराबाद का यह रवैया खतरनाक होगा। इस समय नागरिक अधिकार, सामाजिक स्वतंत्रता और राजनीतिक सुरक्षा बोलकर कोई चीज हैदराबादमें नहीं रह गयी। हत्तिहादुल मसलमीन रजाकरों के जुल्मोंका कोई ठिकाना नहीं है। इज्जत आबरू, जीवन, धन सम्पत्ति की रक्षा रजाकरकी मर्जी पर है। हत्तिहादुल मुसलमीनने राज्यमें जो पैशाचिक काण्ड मचा रखा है वह चलता रहे और हत्तिहादुल मुसलमीनको संसार दोषी न ठहराये इस दृष्टिसे निजाम सरकारने एक नया हथकण्डा निकाला है। राज्यमें जो उपद्रव हो रहा है उसका दोष कम्यूनिस्टों पर मढ़ा जा रहा है। कम्यूनिस्ट विरोधी भावसे नाजायज फायदा उठानेके इरादे से राज्यम इन नये हथकण्डों पर प्रकाश डालते हुए हैदराबाद राज्य कांग्रसके मंत्री श्री आचार्य कहते हैं कि राज्य कांग्रेस द्वारा परिचालित जन आन्दोलनके प्रति लोगोंकी सहानुभूतिको विकृत करनेके लिये अधिकारियोंने इस मिथ्याका प्रश्रय लिया है। यह स्थिति वांछनीय नहीं है। हैदराबाद की जनता आज लूटपाट, अग्निकाण्ड, बलात्कार और इलाकी शिकार बन रही रही है और हैदराबादकी पुलिस, पलटन और रजाकरोंने मिलकर स्थिति को जहांतक संभव था भयंकर बना दिया। हम जानना चाहेंगे कि आखिर कबतक भारत सरकार इस समझौतेकी बातचीतको ढ़ील देती रहेगी?

पाकिस्तानका रूप—

जनहितकी भावना जितनी व्यापक, प्रशस्त और भेदभाव हीन होती है शासनमें सुव्यवस्था, शान्ति, सन्तोष और स्थायित्व उतना ही अधिक होता है। इस दृष्टिसे जब हम पाकिस्तानको देखते ह तो ठीक इसके विपरीत स्थिति पाते हैं। जातिगत या धर्मगत भेदभाव तो उसका आधार है ही दलगत राजनीतिक प्रधानता बनाये रखनके लिये मुसलमान और मुसलमानके बीचमें भी संकीर्णता और पाथक्यकी सृष्टि की गयी है और अबतक यह क्रम जारी है।

सीमान्तके गांधी सच्चे अर्थोंमें जन सेवक हैं उनका संगठन खुदाई खिदमतगार, लोक सेवाके लिये बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने वाला संगठन है। गलतफहमियां पैदा करके जितन अधिक काल तक जनताको इनसे दूर रखा जा सकेगा स्वार्थी और सुविधावादी जानते हैं तभी तक वे अपना सार्वजनिक जीवन रख सकेंगें। जन हितकी दृष्टिसे यह गलतफहमी दूर होनी चाहिये। पाकिस्तान पार्लमेण्टम भाग लेनेको खान अब्दुल गफ्फार खांके करांची जानेका एक उद्देश्य इस गलतफहमीको दूर करना भी है। यह बात सही है कि सीमान्तके गांधीने पाकिस्तानकी स्थापनाका विरोध किया था। किन्तु जब वह बन गया तो इस तथ्यकी कोई व्यवहार कुशल राजनीतिज्ञ उपेक्षा नहीं कर सकता। अब्दुल गफ्फार खां एक व्यवहारवादी नेता हैं। वे जानते हैं कि नये राज्यका विरोध करके वे जनताकी सेवा नहीं कर सकते जो उनके जीवनका लक्ष्य है, जिसके लिये उन्होंने जीवन भर कुर्बानियां दीं, कष्ट सहें। किन्तु सुविधावादीका स्वार्थ इसीमें है कि जन साधारणके भीतर उनके प्रति गलतफहमी पैदा करके उनको जहां तक सम्भव हो जन सहयोगसे वंचित रख कर अपना उल्लू सीधा किया जाये। फ्रण्टियरकी सरकार और उसका संरक्षण प्राप्त वहांके समाचार जान-बूझ कर यही गलतफहमी फैला रहे हैं कि खुदाई खिदमतगार और उनके नेता पाकिस्तान के दुश्मन हैं। तथ्य यह नहीं है, यह बताते हुए अब्दुल गफ्फार खां साहब पाकिहतान पार्लमेण्टम कहते हैं कि "पाकिस्तानी शासन को मैं देखता हूं तो पाता हूं कि इसमें और ब्रिटिश शासनमें कोई फर्क नहीं है। ब्रिटिश शासन से भी अधिक आज वहां अनाचार है। शासनकी दृष्टिसे हम अंगरेजोंसे भी अधिक अंगरेज हैं और आज भी हम उसी पुरानी नीति पर चल रहे हैं। जिन अंगरेजोंको हमने फ्रण्टियरसे निकाल बाहर किया था आज फिर हमारे ऊपर बैठे हुए हैं। क्या यही इसलामी भ्रातृत्व और समानता है," जिसकी पाकिस्तानी नेता उठते बैठते दुहाई देते हैं। जातीय और धार्मिक संकीर्णता एवं विद्वेष फैलाकर किसी शासन को अधिक दिनों तक स्थायी नहीं बनाया जा सकता। पाकिस्तानी कहते हैं कि पाकिस्तानको सुदृढ़ और मजबूत बनानेके लिये अभी मुस्लिम लीगकी आवश्यकता है। बादशाह खां (सीमान्त गांधी) अब इसकी आवश्यकता नहीं समझते। यही कारण है कि मुस्लिम लीगमें शामिल होनेकी बात को वे माननेको तैयार नहीं हैं। बंगालके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री शहीद सुहरावर्दी भी ऐसा ही समझते हैं। पाकिस्तान पार्लमेण्टमें उन्होंने भी यह कहा कि पाकिस्तान को मजबूत बनानेके लिये मुस्लिम लीग की जरूरत नहीं है। किन्तु व्यक्ति विशेष या दल विशेषको अधिकारमें रखनके लिये, जिसके सामने जनहितका कोई कार्यक्रम नहीं है, जनहित जिसके लिय गौण है, वह अपनी ताकत और पूंजीको कैसे नष्ट कर सकता है! मुस्लिम लीग, जिसका आधार साम्प्रदायिक हिंसा और घृणा है, आजके पाकिस्तानी नेताओंकी एक मात्र पूंजी है और वे यह भी जानते हैं कि अकेले बहुत दिन तक इस पूंजीकी वे रक्षा नहीं कर सकते। इसीसे उसकी रक्षाकी सहायताके लिये उनको आदरके साथ विदेशियोंको बुलाकर बैठाना पड़ता है। यह है आजके पाकिस्तानका रूप।

'वन्देमातरम्'—

यह शब्द स्वयं एक इतिहास बन गया है। किंतु देखा जा रहा है कि इसे क्रमशः पीछे रेलनेकी कोशिशकी जा रही है। और जुलूसोंमें हर्ष ध्वनि और नारोंके रूपमें, परस्पर अभिवादनके रूपमें वन्देमातरम् का स्थान जय हिंद जिस द्रुतगतिसे ले रहा है उसे देखते हुए इसके आस्तित्व लोपकी अंशका सहज है। उधर राष्ट्रवन्दनाके रूपमें अबतक वन्देमातरम् गाया जाता था। धीरे धीरे इस स्थानसे इसे हटाया जा रहा है। रविबाबूके 'जनगण, मनअधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता'को बंकियबाबूके वन्देमातरम् का स्थान देनेका प्रयास पहलेही से आरंभ हो चुका है। गत सप्ताह भारतीय पार्लमेंटमें एक प्रश्नके उत्तरमें प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने कहा कि राष्ट्रीय गीत का अन्तिम निर्णय करनेके पहले गीतों की वाद्य स्वरलिपि तैयार करके देख लेना वांछनीय समझा गया। इसी उद्देश्यसे टैगोर के 'जन गण मन' की वाद्य स्वरलिपियां विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गयी हैं और कई सैनिक संगीत मण्डलियों (बैण्ड) से उनका अभ्यास करनेको कहा गया है। यह शंका प्रकट की जाने पर कि क्या वन्देमातम् राष्ट्रीय गीत न रखनेका निश्चय कर लिया गया, पण्डितजी ने कहा कि हरगिज नहीं। कुछ सरकारी समारोहोंमें जनगणमन आरकेस्टामें बजने लगा है, यद्यपि ऐसा कोई सरकारी हुक्म जारी नहीं किया गया। 'जनगणमन' के प्रति किसी असम्मानकी भावनासे नहीं पर वन्देमातरम्के साथ स्वतंत्रता संग्रामका जो इतिहास है उसे देखते हुए हम चाहते हैं कि वन्देमातम्को ही राष्ट्रीय गीतके रूपमें स्वीकार किया जाये। आशा है कि हमारी राष्ट्रीय सरकार जनगण की इस भावना का अन्तिम निर्णय करते समय ध्यान रखेगी।

फिलस्तीनका भाग्य—

संयुक्त राष्ट्र संघ फिलस्तीनको दो भागोंमें विभक्त करनेका फैसला करचुका है। एक भाग अरबोंके और दूसरा यहूदियों के नियंत्रणमें रहेगा। अभी फिलस्तीन पर ब्रिटिशनियंत्रण है। १५ मई से ब्रिटेन पर ब्रिटिश नियंत्रण है। १५ मईसे ब्रिटेन ने अपना शासन और नियंत्रण हटा लेनेका निर्णय किया है। अरब देश इस बात पर तुले हुए हैं कि प्राण रहते फिलस्तीनका बंटवारा नहीं होने दिया जा सकता। उनकी जोरदार सैनिक तैयारी हो रही है। राष्ट्रसंघके सामन यह प्रश्न है कि बंटवारेको कैसे कार्यान्वित किया जाये। अमेरिका बंटवारेके पक्षमें है। यहूदियोंको उससे

प्रोत्साहन मिल रहा है। ब्रिटनकी स्थिति डांवाडोल है। वह खुलकर न अरबोंका समर्थन करता है न यहूदियोंका विरोध। स्थित जटिल देख फिलस्तीन की समस्या को सुलझानेके लिय कोई दूसरा रास्ता निकालनका प्रयास अमेरिका कर रहा है। कहते हैं कि अमेरिकाने सिक्यूरिटी कौसिलके सामने यह प्रस्ताव रखा है कि पांच बड़े राष्ट्रोंकी कमेटी फिलस्तीनके मामले पर विचार करनेके लिये नियुक्त किया जाये और जो फिलस्तीन कमीशन नियुक्त हुआ था और जिसने बंटवारेका निर्णय दिया है उसे दफना दिया जाये। सिक्यूरिटी कौंसिल के पांच स्थायी सदस्योंकी इस कमेटीका काम होगा यह देखना कि क्या फिलस्तीन की स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय शांतिके लिये खतरा बन रही है। फिलस्तीन कमीशनके निर्णय को कार्यान्वित करनेका उत्तरदायित्व ग्रहण करनेको पांच बड़ोंको प्रस्तुत न होते देख संभवतः यह रास्ता पकड़ा जा रहा है। समझा जाता होगा कि जबतक फैसलेके साथ पांचों महान स्वयं संश्लिष्ट नहीं होंगे तबतक उनको क्या पड़ी है कि वे दूसरेकी बला अपने सर पर लें। लेकिन ब्रिटेन शायद आज अपनेको इस स्थितिम नहीं पा रहा कि वह अरबोंका खुलकर विरोध करे। इसीसे उसने प्रस्तावित पांच महान कमेटीमें कहने मे इनकार कर दिया है। ब्रिटिश औपनिवेशिक मंत्री मि० क्रीक जजोन्सने इसके साथ साथ यह भी स्पष्ट कर दिया है कि अधिक से अधिक अगस्तके बाद अंग्रेजी फौजें फिलस्तीन में नहीं रहेंगी। अमेरिका अभी तक इस बात पर अड़ा है कि वह भी अब भी विभाजन-योजनाका समर्थन करता है। अमेरिका प्रतिनिधि मि० आस्टिन कहते हैं कि फिलस्तीन की समस्याको सुलझानेके लिये राष्ट्रसंघ की साधारण परिषदने विभाजनका प्रतिपादन किया है। अमेरिका इस योजनाका समर्थक है। किंतु म्याऊंके मुंहमें हाथ कौन डाले? अरब मरने मारनेको तैयार हैं। फलतः विभाजन योजनाको कार्यान्वित करनेका अर्थ है संघर्ष। ब्रिटेनने साफ जवाब दिया है। अमेरिका पैसा दे सकता है पर जान देनेको तैयार नहीं है। इसीसे वह कहता है कि विभाजनके लिये सैनिकशक्ति से काम नहीं लिया जा सकता। तब सवाल यह है कि राष्ट्रसंघका फैसला कैसे काममें लाया जाये। दूसरा प्रश्न यह उठता है कि १५ मई को ब्रिटिश नियंत्रण हटा लिये जानेके बाद वहांकी स्थिति क्या होगी? अराजकता उच्छृंखलता और हिंसाकी की प्रचण्डता बढ़ेगी, इसे कौन नियंत्रणमें लायगा? ब्रिटिश सरकारके प्रयत्नोंके बावजूद अभी कम हिंसा नहीं है। अरबों और यहूदियोंके सहयोगके बिना फिलस्तीन संबंधी कोई योजना शांतिपूर्ण ढंगसे कार्यान्वित नहीं की जा सकती, यह अबतक की घटनाओंसे स्पष्ट है। विभाजनके फैसलेसे स्थिति और भयंकर हो गयी है। हमारा तो यह ख्याल है कि विभाजनकी योजनाको दफनाये बिना समझौतेके अनुकूल वातावरण की सृष्टि नहीं की जा सकती।

पश्चिमी यूरोप सङ्घ—

चेकोस्लोवाकियाके राज-परिवर्तनसे उत्पन्न स्थितिसे पश्चिमी राष्ट्रोंके सामने एक महान संकट उपस्थित हो गया है। रूस का बढ़ता हुआ प्रभाव भय और आतंक फैला रहा है। ब्रिटिश प्रधान मंत्री मि० एटली कहते हैं कि फिर सनिक जर्मनीके पैदा होनेका जबर्दस्त भय है। १९१८ की जैसी स्थिति फिर उत्पन्न हो गयी है। उस समय यह समझा गया था कि संकट मिट गया उसी तरहकी स्थितिका आज फिर सामना है। प्रश्न यह है कि उस समय की गलती आज फिर क्यों दुहरायी जा रही है। उस समय ब्रिटिश और फ्रेंच साम्राज्यवाद ने जिस नीतिको प्रश्रय दिया था आज का डालर साम्राज्यवाद उसीका पोषण कर रहा है। अमेरिका और ब्रिटेनके नेतृत्व पर संसारको विश्वास नहीं रह गया। यूनान हिंदेशिया, हिन्दचीन, फिलस्तीन और दक्षिण अफ्रीकामें प्रचलित वर्णभेदके प्रति संयुक्त राष्ट्रसंघकी नीति ने यह स्पष्ट कर दिया है कि संघके सामने विश्वशांति और सुरक्षाका प्रश्न गौण है। इस स्थितिके लिये जिम्मेदार कौन है? संघ पर एकाधिकार जमानेकी तीन राष्ट्रोंकी मनोवृत्तिने ही इस स्थितिको जन्म दिया है। गत युद्धके कारण जर्जरित राष्ट्रोंको आर्थिक सहायता देने में जिस स्वार्थ और अधिकार नीतिका अवलम्बन किया गया उसका परिणाम है कि संघ रहते हुए भी आज अलग अलग संगठन बनने लगे। पश्चिमी यूरोपके संगठन का प्रश्न उठा। रूसने इसे अपने विरुद्ध समझा और उसने पूर्वीय यूरोपका संगठन कर डाला। शस्त्रास्त्रोंको नियंत्रणम लाने का प्रश्न नये नये अविष्कारोंकी प्रतियोगिता का प्रश्न बन गया। कोई यह नहीं कहता कि हम संघर्ष चाहते हैं फिरभी सब करते वही हैं जिससे शांति दूर, संघर्ष निकट आ रहा है। संभवतः इसी उद्देश्य को लेकर ब्रूसेल्सम पंचशक्ति सम्मेलन हो रहा है। आर्थिक मामलेमें, संयुक्त राष्ट्र-संघके रहते हुए भी दो गुट बन चुके हैं अब राजनीतिके मामलेमें भी वही होन जा रहा है। अमेरिकाके संरक्षण एवं ब्रिटेन और फ्रांसके नेतृत्वम बेलजियम, नेदरलैण्ड और लक्समवर्गको लेकर पश्चिमी यूरोप संघ बन रहा है। यह चेकोस्लोवाकियामें हुए परिवर्तनकी प्रतिक्रिया है। किंतु ये संघ युद्धकी स्थिति निकट लानेके सिवा और क्या कर सकते हैं?

औद्योगिक युद्ध विराम सन्धि

औद्योगिक क्षेत्रमें शाति रखने और उत्पादन बढ़ानेके उद्देश्यसे तीन सालके लिये जो औद्योगिक युद्ध विराम समझौता हुआ था उसे कार्यान्वित करनेके उपायोंका अवलम्बन करनेके प्रश्नपर विचार करना आवश्यक बताते हुए एक प्रमुख उद्योगपति सर आर्देशिर दलालने यह सुझाव रखा है कि दिल्लीमें एक त्रिदल सम्मेलन होना चाहिये जिसमें सरकार, श्रम और उद्योग धन्धेके प्रतिनिधि भाग लें।

नयाकाश्मीर

जम्मू और काश्मीरके महाराजने इस आशयकी घोषणा जारी की है कि १ मार्च से शेख अब्दुल्ला राज्यके प्रधान मंत्री नियुक्त किये गये। प्रधान मंत्री एवं अन्य मंत्री मिलकर मंत्री सभा होगी एवं सबका संयुक्त उत्तर दायित्व होगा। महाराजा द्वारा नियुक्त एक दीवान भी मंत्री सभाका सदस्य होगा। साधारण स्थिति आते ही शीघ्रसे शीघ्र बालिग मताधिकारके आधार पर मंत्री सभा राष्ट्रीय परिषद संयोजित करेगी। यह परिषद राज्यका भावी विधान प्रस्तुत करेगी। महाराजकी घोषणामें यह आशा प्रकटकी गयी है कि अन्तर्कालीन लोकप्रिय सरकार और निकट भविष्यमें ही पूर्णतया लोकतंत्र वादी विधानके प्रचलित हो जाने से राज्यमें लोगोंके संतोष, सुख, एवं नैतिक तथा भौतिक समृद्धि बढ़ेगी।

नेहरूजीकी घोषणा

गत सप्ताह शुक्रवारको भारतीय पार्लमेंटमें प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने काश्मीर के वैधानिक परिवर्तनोंकी घोषणा करते हुए पण्डिजीने कहा कि बारबार यह कहा जाता है कि शेख-अब्दुल्ला और उनकी पार्टी तो महाराजको की लड़ाई लड़ रहे हैं। यह कहने वालोंका मुंह बन्द कर देनेके इरादेसे महाराजने अपने तमाम शासनधिकारोंको हस्तांतरित कर दिया है और अब वे वैधानिक शासक मात्र रह गये हैं। भारतमें काश्मीर के मिलनेके समय जो संकटकालीन सरकार कायम की गयी थी उसे भंग कर दिया गया और १ मार्चसे एक अन्तरिम सरकार कायम कर दी गयी शेखअब्दुल्ला जिसके प्रधान मंत्री नियुक्त हुए हैं। अन्य मंत्री प्रधान मंत्री के परामर्शसे नियुक्त किये जायेंगे जिनका संयुक्त उत्तदायित्व होगा।

अबतक राज्यकी डोगरा पलटन में केवल डोगरा राजपूत ही लिये जाते थे। डोगरा राजपूत ही शस्त्र धारण कर सकते थे। महाराजने इस प्रतिबंधको भी हटा दिया। महाराजने यह घोषणा की है कि सैनिक और असैनिक सरकारी नौकरीके मार्गमें सरकारका एक काम होगा बालिग मताधिकारके आधार पर राष्ट्रीय परिषदका आह्वान करना जो राज्यके लिये नया विधान बनायेगी एवं उस विधानमें अल्पसंख्यकोंके लिये पर्याप्त संरक्षण रखे जायंगे एवं विवेक, भाषण और सभाकी स्वतंत्रता की गारंटी रहेगी। राष्ट्रीय परिषद ही इस बातका निर्णय करेगी कि राज्य भारतके साथ रहे या पाकिस्तानमें शामिल हो।

मुंहतोड़ उत्तर

पण्डित नेहरूने कहा कि भारत की सीमाके बाहरके आदमी यह अभियोग लगाया करते हैं कि भारतीय संघ एक स्वेच्छाचारी शासककी मदद कर रहा है। यह घोषणा उस अभियोगका मुंहतोड़ जवाब है। आसलीयत तो यह है कि काश्मीरको भारतीय संघमें मिलानेके समय ही भारतने यह आग्रह किया था कि राज्यमें सेना भेजनेके पहले ही राज्यमें फौरन लोकप्रिय सरकार बन जानी चाहिये। आश्चर्य होता है कि यह अभियोग वे लोग लगाते हैं जिन्होंने बराबर स्वेच्छाचारिता का समर्थन किया उनके विरुद्ध जो दो पुश्त से उसका विरोध कर रहे थे। ये लोग आज स्वतंत्रताके समर्थक बन रहे हैं और इनके पीछे है पाकिस्तान जो किसी बातकी जिम्मेदारी नहा लेता लेकिन दूसरोंके संकटसे लाभ उठानेके लिये उतावला हो रहा है।

सिक्यूरिटी कौंसिलसे निराश

हिन्दुस्तानके मामले पर सिक्यूरिटी कौंसिलने जिस तरह विचार किया है उस पर निराशा प्रकट करते हुए पण्डितजीने कहा कि मामले पर विचार फिर आरम्भ होन जा रहा है इसलिय अभी इस संबंधमें मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

काश्मीर आर्डिनेन्स

इस आशयका काश्मीर सरकारने एक आर्डिनेन्स जारी किया है कि राज्यके भीतर या बाहर शत्रुकी सहायता करते पाये जाने वाले काश्मीरियोंकी तमाम अचल सम्पत्ति: जब्त कर ली जायेगी। शत्रुके साथ सहयोग करनेवालोंकी जागीरें भी जब्त हो आयेंगी।

यत्रतत्र

बिहारका बजट

फरवरीके अन्तिम सप्ताहमें बिहार असेम्बलीमें अर्थ सचिव माननीय डा० अनुग्रह नारायण सिंहने १९४८-४९ का बजट उपस्थित किया। बजट नफेका है। चालू सालके लिये आमदनीका तखमीना १६ करोड़ ५८ लाख २४ हजार किया गया था किन्तु आमदनी १ करोड़ ३५ लाख अधिक हुई। खर्चा बजटसे ५६ लाख ३ हजार अधिक होगा। इस तरह चालू सालकी बचत ४ करोड़ २९ लाख ९२ हजार होगी। १९४८-४९ में कुल आमदनी २१ करोड़ ५६ साख ७८ हजार और खर्च २० करोड़ ८ लाख ८० हजार होनेका अनुमान लगाया गया है। इस खर्चमें रिजर्व फण्ड, युद्धोत्तरकालीन पुनर्निर्माण और विकास फण्डको हस्तान्तरित ३ करोड़ २२ लाख ७३ हजार शामिल हैं। प्रस्तावित वर्षके अन्तमें साधारण बचत १ करोड़ १६ लाख होगी, ऐसा अनुमान है।

बंगलाको स्थान नहीं

पाकिस्तान विधान परिषद्में जिस समय यह पास हुआ कि विधान परिषद्की कार्यवाही उर्दू या अङ्गरेजीमें हो उस समय यह प्रयत्न किया गया कि इन दोनों भाषाओंके साथ बङ्गलाको भी जोड़ दिया जाये क्योंकि पाकिस्तानमें बङ्गला भाषियोंकी संख्या अधिक है। पर इस सुझावको ठुकरा दिया गया और पाकिस्तान परिषद्में, इस आशयका जो संशोधन उपस्थित किया गया उसका बंगाली मुसलमान सदस्योंने विरोध किया। बंगालके साधारण मुसलमानोंमें पाकिस्तानके इस व्यवहारसे क्षोभ और असन्तोष पैदा हुआ। इसकी लचर कैफियत देते हुए पाकिस्तान विधान परिषदके एक मुस्लिम सदस्य डा० ए० एम० मल्लिकने यह वक्तव्य दिया कि बङ्गालके मुस्लिम सदस्य अनुशासनकी पाबन्दीसे लाचार थे, क्योंकि मुसलिम लीग पार्लमेण्टरी बोर्ड बङ्गलाका विरोध करनेका बहुमतसे फैसला कर चुका था।

तलाकका अधिकार

मालूम हुआ है कि पश्चिम बङ्गाल सरकार इस आशयका एक कानून बनाने जा रही है कि सभी वर्गोंके हिन्दू कुछ परिस्थितियोंमें तलाक दे सकें। इसी अधिवेशनमें एक बिल व्यवस्थापिकाके सामने आयेगा, ऐसी आशा है। नपुंसकता, पागपन, कुष्ट और कानूनी निर्दयताके आधार पर कोई भी हिन्दू तलाक देने या पृथक् रहनेका अधिकार पा सकेगा। इसके सिवा पांच वर्ष तक प्रतिवादीके जीवित रहनेका कोई सबूत न मिलनेपर, अथवा यदि प्रतिवादीने लगातार तीन साल तक वादीको परित्यक्त रखा है अथवा यदि पतिने किसी दूसरी स्त्रीको उपपति बना रखा है या यदि स्त्री किसी अन्य पुरुषकी उपपत्नी बनी है, या वेश्या जीवन बिता रही है तो उस हालतमें तलाकका अधिकार होगा ?

डा० बेनसका इस्तीफा ?

चेकोस्लोवाकियाके राष्ट्रपति डा० बेनसने इस्तीफा दे दिया है, इस आशयके समाचारकी पुष्टि नहीं हुई। चेक पार्लमेण्टकी बैठक १० मार्चको बुलायी गयी है। पार्लमेण्टकी बैठकमें प्रधान मन्त्री मो० गोटवाल्ड वैधानिक संकटपर प्रकाश डालेंगे। इस आशयकी अफवाह है कि चेकोस्लोवाकियाके कई प्रमुख नेता लापता हो गये हैं।

जमनादास मेहता फिर गिरफ्तार

बम्बई सरकारके हुक्मसे श्री जमनादास मेहता गत सप्ताह फिर गिरफ्तार कर लिये गये। उनको नजरबन्द रखा गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघपर भारत सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगनेपर ५ फरवरी को मेहता गिरफ्तार हुए थे पर उसी दिन रातमें वे छोड़ दिये गये थे।

चीनमें नये राजदूत

श्री पानीकरने बीकानेरके प्रधान मंत्रित्वसे इस्तीफा दे दिया है क्यों कि वे चीनमें भारतके राजदूत श्री मेननकी जगह नियुक्त किये हैं। श्री मेनन वैदेशिक मंत्रि विभागके कार्य सचिव (सेक्रेटरी) नियुक्त किये गये हैं।

अन्तरौपनिवेशिक समस्या

मालूम हुआ है कि भारत और पाकिस्तानके बीचमें जिन समस्याओंका अबतक समाधान नहीं हुआ उनपर विचार करनेके लिये भारत और पाकिस्तानके प्रतिनिधि ११ मार्चको लाहौरमें मिलेंगे। इस वार्तालापमें शरणार्थियोंकी चल सम्पत्तिको स्थानान्तरित करनेका महत्वपूर्ण स्थान होगा, ऐसा समझा जाता है।

विश्व खाद्य नियन्त्रण

विश्वत सूत्रसे मालूम हुआ है कि अगुई (फिलिपाइन्स) में होनेवाले खाद्य और कृषि सम्मेलनमें भारत, चीन और फिलिपाइन्सके प्रतिनिधि अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य नियन्त्रणकी नीति निर्धारणमें अधिक स्वतंत्रता प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। इनका कहना है कि संसारके चावल का ९० प्रतिशत उत्पादन और व्यय एशियामें होता है। इनका कहना है कि चावल सम्बन्धी नीति निर्धारण करनेका अधिकार अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य समितिसे लड़कर लेना है क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य समितिका नियंत्रण स्टर्लिंग एरियावाले देशोंके हाथोंमें है। ब्रिटिश प्रतिनिधि इसका विरोध कर रहे हैं।

महा गुजरात प्रान्त

प्रयत्न किया जा रहा है कि बड़ौदाको गुजरातमें मिलाकर महा गुजरात नामका एक नया प्रान्त बनानेका। आशा है कि इसी महीनेमें यह काम हो जायेगा। बड़ौदाके प्रधान मंत्री श्री भुआलकर इस सम्बन्धमें सरदार पटेलको बड़ौदा दरबारके विचारोंसे अवगत कराने दिल्ली गये थे। इस सम्बन्धमें गुजरातके अन्तर्गत लूनावाड़, राजमीयला, खम्भे धरमपुर, मालनपुर, छोटा उदयपुर एवं अन्य रियासतोंके शासक दिल्लीमें अधिकारियोंके साथ विचार परामर्श कर रहे हैं। मालूम हुआ है कि बड़ौदा नरेश तमाम गुजराती रियासतोंको बड़ौदाके सहित एक राजनीतिक इकाईमें मिलाने और इस इकाई, काठियावाड़ तथा गुजरातमें पड़नेवाले बम्बई प्रान्तके हिस्सेको लेकर एक महा गुजरात प्रान्त बनानेको तैयार हैं।

युद्धकी चर्चा

लन्दनके समाचार पत्रोंमें आसन्न युद्धकी चर्चा हो रही है। वे मजूरदली डेली हेराल्डने पश्चिमी राष्ट्रोंसे युद्धसे बचनेकी अपील की है और रूसके सामने यह प्रस्ताव उपस्थित किया है कि इस सम्बन्धमें राष्ट्रके प्रधानोंका सम्मेलन होना चाहिये। जेकोस्लोवाकियामें हुए परिवर्तन और फिनलैण्डके प्रति प्रदर्शित मनोभाव देखते हुए ब्रिटिश पत्रोंने पहले रूसको यूरोपमें आगे कदम न बढ़ानेकी चेतावनी दी है। इन पत्रोंका कहना है कि स्पेन और पुर्तगालको छोड़ अन्य तमाम देशोंका नियन्त्रण अपने हाथमें लिये बिना रूस माननेवाला नहीं है। रूस जहां है वहीं रुका रहे इस आशयकी चेतावनी रूसको दी जानी चाहिये। एक अखबारने तो यहांतक लिखा है कि अमेरिकाको चाहिये कि वह रूसको चेतावनी ही नहीं यह धमकी भी दे कि अगर न मानोगे तो रूसपर अणुबमोंकी वर्षा होगी।

अनिवार्य सैनिक शिक्षा

समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायणने यह मांग पेश की है कि १८ और १९ के बीचके तमाम लड़कोंको राष्ट्रीय सेनामें अनिवार्य भर्ती किया जाये और इसी उम्रकी लड़कियोंको भी, जो स्वेच्छासे भर्ती होना चाहें, भर्ती करना चाहिये। राष्ट्र-हितके लिये युवक और युवतियोंकी कर्मशक्तिको सुनियंत्रित करने की आवश्यकता है।

पाकिस्तानके यहूदी

करांचीसे इस आशयका समाचार मिला है कि पाकिस्तानमें रहने वाले यहूदियोंने भारत चले जानेका निश्चय किया है और प्रायः दो सौ यहूदी बम्बई पहुंच गये। कहते हैं कि फिलस्तीनके बंटवारेके कारण यहूदियोंके प्रति मुसलमानोंका मनोभाव देखकर यहूदियोंको पाकिस्तान छोड़ देनेका फैसला करना पड़ा है।

महात्मा गांधीकी देन

श्री भगवन्तशरण जाहरी एम० ए०

३० जनवरीकी सन्ध्या विश्वके इतिहास पर वज्रपात बनकर आयी। उसने प्रेम, अहिंसा, शान्ति और सत्यके उपासकोंको अनाथ बना दिया। स्वतन्त्र भारतके एक नागरिक ने युगकी मानवताकी छातीमें खंजर भोंक दिया। हमारा ही देश क्या, संसारका बच्चा बच्चा तक स्तब्ध रह गया। हमने अपने मूर्तिमान सौभाग्यका गला घोंट दिया। बापूका निर्माण ही उन तत्वोंसे हुआ था, जो किसी शहीदमें होते हैं।

अमेरिकाकी सुप्रसिद्ध लेखिका पर्ल बकने लिखा है कि उनका दस वर्षका बालक इस संवादको सुन आंखोंमें आंसू भरकर बोला 'मैं सोचता हूं कि किसीने कभी बंदूक बनाना सीखा ही न होता।' एक किसान उनसे कह उठा 'संसारका प्रत्येक व्यक्ति गांधीजीको एक श्रेष्ठ व्यक्ति मानता था। उसने उनको क्यों मार डाला ?'

गांधीजीने हमें सिखाया कि उत्तम पुरुष वह है, जो शत्रुके साथ भी उपकार करे, कांटे चुभोनेवालेके पथमें भी फूल बिछाये। सन् १९०८ में जब उन पर आक्रमण हुआ तब भी उन्होंने इसी ध्येयका प्रतिपादन किया। २० जनवरीको बम फेंकनेवाले व्यक्तिको भी क्षमा कर देनेका आदेश आपने दिया। बापूका आत्म-बल और निर्भयता इतनी ज्वलन्त थी कि यदि हत्यारेकी दृष्टि उनकी पुतलियोंसे टकरा जाती तो वह इतना भीषण कार्य कर न पाता। सन् १९०८ की घटना पर ही यूरोप के पत्रोंने लिखा था कि गांधीजी वे महापुरुष हैं जिनका इतिहास बुद्ध, ईसा और सुकरातके समान ही स्थान लेगा। गांधीजीका जीवन ही त्याग और बलिदान का प्रतीक रहा। वे स्थितप्रज्ञ थे।

तरहसे वस्त्र पहिननेको प्राप्त नहीं होता, तब तक मैं स्वल्प वस्त्र धारण करूंगा।

उस समयसे उनके कन्धे उघाड़े रहने लगे और उन्होंने केवल घुटने तक ही वस्त्र धारण किया। जग-हंसाईकी चिन्ता न करके उन्होंने सभी आराम त्याग दिये तथा जितेन्द्रिय बन गये।

जिस बातको वे ठीक समझते थे, उसे किसी भी कारणसे उन्होंने न त्यागा। प्रार्थना-सभामें कुरानकी शरहें पढ़नेका हिन्दुओंने कितना विरोध किया, पर उन्होंने उसे अन्तिम श्वास तक जारी रखा।

एक बार अचानक बापूको सूझा कि परमेश्वरसे नाता बनाये रखनेका मौन ही सबसे श्रेष्ठ मार्ग है। तबसे वह उनके स्वभावका एक अंग बन गया। बापूके उपदेश नीचेके श्लोकमें समाविष्ट हैं:—

अहिंसा १ सत्य२ अस्तेय ३
ब्रह्मचर्य४, असंग्रहः ।५
शरीरश्रम६ अस्वाद,७
सर्वत्र भयवर्जनः ।८
सर्वधर्मी९ समानत्व,
स्वदेशी,१० स्पर्शभावना ।११
ही एकादश सेवाभिः
नम्रत्वे व्रतनिश्चये ।

एक मुलाकातीने बापूसे प्रश्न किया—

गांधीजीने आदर्शोंको जीवनकी नग्न और यथार्थ घटनाओंसे अपनाया। उस अधनंगे फकीरकी ऐसी एक घटना यों है:

एक बार दक्षिण में घूमते-घामते बापू एक ऐसे स्थानमें पहुंचे जो निर्जन और निर्जल था।

उस स्थानमें उन्होंने फटे मैले-कुचैले कपड़ेमें एक अत्यन्त कृश और मलीन अछूत नारीको देखा।

इस अस्वच्छ अछूत नारीको देखकर महात्माजी बहुत व्याकुल हुए उन्होंने और सादर उससे पूछा कि तुम इतनी मैली-कुचैली क्यों हो ?

उस नारीने लज्जासे सिर नीचा कर लिया और बोली "मालिक! गरीबोंकी हालत वे अच्छी तरह नहीं समझ सकते, जो आरामसे रहते हैं। मैं लगातार दस वर्षोंसे इसी धोतीको पहने रहती हूं। यहां पानी न मिलनेके कारण, प्रतिदिन इसे धो भी नहीं सकती।

यदि कभी पानी मिल भी जाता है तब मैं पहिले एक छोरको धोकर पहिन लेती हूं, फिर दूसरा छोर धोती हूं।

यहां पानीके अभावके कारण दिन-रात इसे ही पहिने रहती हूं; इसलिए आप ही बताइये, मैं साफ कैसे रह सकती हूं ?

मेरे ही समान करोड़ों आदमी आधा टुकड़ा पहिने रहते हैं और आधा पेट खाकर मुश्किलसे अपनेको जीवित रख रहे हैं।'

उस अछूत नारीकी दर्दभरी कहानी सुनकर महात्माजी बहुत द्रवित हुए और उन्होंने अपने कन्धेसे चादर उतार कर उसे प्रदान कर दिया।

उस आश्चर्यविमुग्ध नारीसे महात्माजीने कहा 'देवी ! चर्खा काता करो, इससे तुम्हारी सभी दरिद्रता दूर हो जायगी।' उसी समय गांधीजीने यह त लिया कि जब तक मेरे देशके सभी भाइयोंको अच्छी मैं बहैसियत एक ईसाईके अन्तर्राष्ट्रीय शान्तिके काममें किस तरह योग दे सकता हूं। किस प्रकार अहिंसा अन्तर्राष्ट्रीय अराजकताको नष्ट करके शान्ति-स्थापनामें प्रभावकारी हो सकती है ?"

गांधीजीने उत्तर दिया—

एक ईसाईके नाते आप अपना सहयोग अहिंसात्मक मुकाबला करके दे सकते हैं, फिर भले ही ऐसा मुकाबला करते हुए आपको अपना सर्वस्व होम देना पड़े। जब तक बड़े-बड़े राष्ट्र अपने यहां निःशस्त्रीकरण करनेका साहसपूर्वक निर्णय नहीं करेंगे, तब तक शांति स्थापित होनेकी नहीं। मेरे हृदयमें तो आधी सदीके निरन्तर अनुभव और प्रयोगके बाद इतना निःशंक विश्वास है और ऐसा विश्वास आज पहिलेसे भी अधिक ज्वलंत हो गया है कि केवल अहिंसा

ग्रंथ-संरक्षण

भारतीय ग्रन्थ-संरक्षण विभागकी सन् १९४६ की रिपोर्टमें बताया गया है कि इस वर्षमें ग्रन्थ-संरक्षण-विज्ञानके क्षेत्रमें काफी कार्य किया गया। भारत सरकारने इस कार्यके महत्वको देखते हुए इसकी उन्नतिके लिए बहुतसे टेक्निकल व्यक्ति रखनेकी स्वीकृति दी है। भारत सरकार के बहुतसे विभिन्न विभागोंके रिकार्ड राष्ट्रीय ग्रन्थ संरक्षण विभागमें आये।

आलोच्य वर्षमें इस विभागकी संरक्षण शाखामें कुल २,१४,१९४ पृष्ठोंको सुधारा गया। पुराने तथा फटे हुए रिकार्डों को सुधारनेका कार्य काफी मात्रामें हुआ। इस कार्यके लिए एक लैमिनेटिंग हाइड्रोलिक प्रेसका आर्डर दिया गया है।

आवश्यक रसायनोंकी कमीके कारण भारतके राष्ट्रीय संग्रहालयकी अनुसंधान प्रयोगशालाओंका कार्य पूरी तरह नहीं हो सका। अब इस प्रयोगशालामें ताड़के पत्तोंकी हस्तलिपियोंको ठीक करनेके एक नये तरीकेकी खोज की गयी है। इसके अनुसार फटे पुराने पत्तोंके दोनों ओर एक प्रकारके रसायनका लेप किया जाता है और बादमें उसको एक नर्म रबड़के रोलर से रगड़ दिया जाता है। इससे वे पत्ते ठीक दशामें हो जाते हैं।

रिकार्ड संग्रहालयों तथा पुस्तकालयों में डी० डी० टी० के उपयोगके सम्बन्धमें में छानबीन की गयी और कुछ दुष्प्राप्य रसायनोंके स्थान पर नीमको उपयोगमें लानेकी सम्भावनाके सम्बन्धमें भी खोज की गयी।

प्रान्तीय तथा रियासती सरकारों,—यूनिवर्सिटियों तथा अन्य संस्थाओं द्वारा चुने गये विद्यार्थियोंको ग्रन्थ-रक्षा एवं तत्सम्बन्धी प्रबन्ध कार्यकी ट्रेनिंग देनेके लिए क्लासें खोल दी गयी हैं। यह विभाग विभिन्न अन्य कार्यालयों तथा व्यक्तियोंको ग्रन्थ संग्रह एवं रक्षणकी वैज्ञानिक विधिके सम्बन्धमें सलाह देता है। इसके अतिरिक्त इंडियन आर्काइव्स' के नामसे एक पत्रिका भी निकाल दी गयी है।

अनुक्रमणिका तथा कलेंडर बनानेके कार्यमें भी यह विभाग संतोषप्रद उन्नति कर रहा है। ईस्ट इण्डिया कम्पनीके कुछ महत्वपूर्ण रिकार्डोंको प्रकाशित करनेकी एक योजनाको स्वीकार कर लिया गया है। थेवेना तथा कारेरीकी यात्राओं संबंधी हस्तलिपियां छपनेके लिए तैयार हैं। अधिकाधिक विद्यार्थी इस विभाग द्वारा दी जनेवाली विभिन्न विषयक अनुसंधान की ट्रेनिंगसे लाभ उठा रहे हैं।

कई अवसरों पर बहुत-से रिकार्डोंका प्रदर्शन किया गया। अक्टूबर १९४६ में नागपुरमें हुई ओरियंटल कान्फ्रेंस द्वारा संगठित की गयी जो प्रदर्शिनीमें वस्तु रसायन एवं पुरातत्व ज्ञान विषयक आवश्यक कागज-पत्रोंका प्रदर्शन किया गया था। बंगालकी रायल एशियाटिक सोसाइटी द्वारा संगठित एक प्रदर्शिनीमें सर विलियम जोन्स के सम्बन्धमें मौलिक लेखोंका प्रदर्शन हुआ।

इस विभागने विदेशी संस्थाओं एवं ग्रन्थ-संरक्षण-कार्यालयोंसे भी शैक्षिक तथा सांस्कृतिक सम्पर्क स्थापित किये हैं। इसके अतिरिक्त आपसमें प्रकाशनों एवं सूचनाओं का आदान-प्रदान भी हुआ है। स्टाफका एक सदस्य वाशिंगटनके राष्ट्रीय संग्रहालय में ग्रन्थ-रक्षा-सम्बन्धी रीतियोंकी ट्रेनिंग लेनेके लिए भी भेजा गया था।

मे है। मानव जातिका उद्धार निहित है। बाइबिलकी शिक्षाका भी सार मुख्यतः यही है।

भारतमें उन्होंने इसी सिद्धांतकी शिक्षा दी कि मनुष्य मनुष्य सब समान हैं। भारतीयको किसी यूरोपीयसे घटकर न मानें। भारत ही नहीं, समस्त एशियाको गांधीजीने राष्ट्रीयता व स्वतंत्रताका सन्देश दिया। अहिंसाके बलसे भारत ही क्या, ब्रह्मा व लंकाको भी उन्होंने आजादी दिलायी। शताब्दियोंका काम बापूने वर्षों, महीनों और दिनोंमें किया। राजनीतिसे परे मानवताके साम्राज्यमें वे अमर है, क्योंकि यह श्लोक बचपनमें ही गांधीजीके मन पर अंकित हो गया था:

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

(यह हमारा है और वह पराया, ऐसा विचार तो छोटे मनके लोग किया करते हैं, उदारचरित्र व्यक्ति तो सारी दुनिया को ही अपना कुटुम्ब मानते हैं।)

देवि !

तुम कितनी त्यागमयी हो देवि !

तुम जिस घरमें जन्म धारण करती हो, जिस गेहमें जीवनदाता मातृ-पितृ हृदय अपने निश्छल, वात्सल्य स्नेह द्वारा, तुम्हें बाल्यावस्थाकी निश्चित सीमा तक आश्रय प्रदान करते हैं।

सीमाको लांघते ही—,

जब तुम्हारी चूड़ियोंकी खनखनाहटमें पग-पायलकी मधुर-रुनझुनमें, मन्दिर-यौवनके प्रथम आकर्षणका संगीत आभासित होने लगता है। जब तुम्हारे नारीत्वका सलज्ज, आदर्श-रूप, घूंघटकी ओटमें मुस्करा उठता है। जब तुम्हारा सिन्दूर-सम्पन्न हो जाता है।

तुम—

एक अपरिचितके पराये-चरणोंमें अपनी भोलेपनकी अर्जित निधिक, सुन्दर बाल्य-स्वच्छन्दताको—यौवनके चिर सांस्कृतिक सूत्रमें बंधवाकर निछावर कर देती हो।

और—

अपने जन्म-सदनसे विलग होकर पराये घरको बसा लेती हो। अपनोंको रुलाकर औरोंको हंसा लेती हो। तुम्हारे इस आत्म-समर्पणकी पवित्र-बेलामें, अपने पराये हो जाते हैं और पराये अपने। मातृ-पितृ-गृह त्याग कर पराये हृदय-मन्दिरमें बसने वाली !

तुम कितनी त्यागमयी हो देवि !

—लाला जगदलपुरी।

बापू

श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

३० जनवरीकी सन्ध्या विश्वके इतिहासमें युगान्तकारी है। महात्मा गांधीके अमर बलिदानसे वह सदा स्मरणीय और पवित्र हो गयी है। उस महान ऐतिहासिक घटनाको हुए एक मास से अधिक हो गया है। पर उस दिन जो दिव्य चमत्कार प्राप्त हुआ, उसकी आभा अभी तक बनी हुई है, उसकी प्रभासे आज भी सारा जग आलोकित है।

गांधीजी वीर मृत्यु चाहते थे,और वह उनको मिली। वे उपवाससे विस्तरपर पड़े पड़े मरनेको वीर-मृत्यु नहीं मानते थे। 'पर्णकुटी पूनामें उपवासके बाद स्वास्थ्य लाभ करते हुए १९३३ में गांधीजीने एक संध्याको श्री आनन्दसे कहा था :— "पगला कहींका ! तुम इसे (उपवाससे) गौरव भरी मौत समझते हो....उपवाससे मरनेको मैं ऐसा नहीं समझता। उसमें गौरव कहां है ? मगर क्या तुम जानते हो कि मेरी जन्मकुण्डलीमें लिखा है कि बहादुरकी मौत मरूंगा !"

आनन्द—"मगर बापू, उपवास करके इस तरह मरना भी बहादुरकी मौत मरना है। जान-बूझकर तिल-तिल करके मरना आसान बात नहीं है। इसके लिये बड़ेसे बड़े धीरजकी जरूरत है।"

गांधीजी—"नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचता। मेरी मौत या तो फांसीपर चढ़ने से होगी या गोली लगनेसे। और वही सचमुच एक बहादुरकी मौत होगी। बिस्तरपर पड़े पड़े उपवास करनेसे होनेवाली मौत नहीं।"

गांधीजीकी इच्छा पूरी हुई। पर गांधीजीके अन्तिम दर्शन करनेका जिनको सौभाग्य प्राप्त हुआ है, वे क्या महाप्रयाणके [illegible] भूल सकते हैं ? उस समय भी उससे करुणा क्षमा,दया और प्रेम बरस रहा था। मालूम होता था प्रेम और पवित्र मानवताका मूर्तिमान अवतार गहरी नींदमें सोया हुआ है। प्रेमके मानवने अनेक कल्पनायें की हैं, दया और क्षमाकी अनेक मूर्तियां गढ़ी हैं, पर क्या गांधीसे भी कोई उत्कृष्ट और भव्य मूर्ति गढ़ी जा सकती है ?

भगवान बुद्ध दया और करुणाके अवतार माने जाते हैं। गांधीजी उसके बाद दया और प्रेमके दूसरे अवतार हुए हैं। गांधीजीकी भूत दया मानव तक ही सीमित नहीं थी। वह पशु-पक्षियों और वृक्षों लता गुल्मों तक व्यापक थी। इस दृष्टिसे चम्पारणकी दो घटनाएं अत्यधिक हृदयहारी और हृदयङ्गम हैं।

भगवान बुद्धके जीवनकी एक घटना प्रसिद्ध है। राजा बिम्बिसारकी यज्ञशालामें बलि देनेके लिये यज्ञ-दूभसे बकरा बंधा हुआ था। भगवान बुद्धने उसको छोड़ देने के लिये कहा। मगध नरेशने ऐसा करनेसे इन्कार कर दिया। वे तथागत मौन हो गये। कुछ समय बाद राजा बिम्बिसारको दिखायी दिया कि जिस यज्ञदूभसे बकरा बंधा था, उससे बुद्ध बंधे हुए हैं। यज्ञ करानेवाले पण्डितोंको भी ऐसा ही मालूम दिया। इस चमत्कारसे यज्ञ कराने वाले पण्डित और राजा घबड़ा गये। व्याकुल राजाने बकरेको छोड़ देनेके लिये कह दिया।

गांधीजी ने ऐसा कोई चमत्कार नहीं दिखाया। पर उन्होंने बकरेकी रक्षाके लिये आन्दोलन किया है। देवीके सामने बलि देनेकी सारे देशमें प्रथा है। बिहार इसमें आगे ही है, पीछे नहीं है। इस प्रांत के गांव-गांवमें देवीके सामने पशु बलि दी जाती है। चम्पारण इससे अछूता नहीं है। जब गांधीजी नीलहे गोरोंसे चम्पारणके निरीह किसानोंको मुक्ति दिलाने गये थे उन्ही दिनोंकी एक घटना है।

एक दिन एक किसान एक बकरेको देवीजीके सामने बलि देनेको ले जा रहा था। गांधीजीको यह बात मालूम न होती। क्योंकि उनको ऐसा दृश्य देखनेकी कल्पना भी नहीं थी। पर बकरेको जलूसमें धूम-धाम और गान-बाजेके साथ ले जा रहे थे बाजेकी ध्वनीसे गांधीजी कुछ चौंके। उन्होंने अपने एक साथीसे पूछा--- यह क्या हो रहा है ? आज किसकी शादी और जलूस !

गांधीजीका वह साथी बिहारका था। उसको मालूम था कि गांधीजी हिंसा नहीं मानते। अहिंसाका उपदेश करते हैं। अतः वह बड़े असमंजसमें पड़ा। वह गांधीजीसे यह कहनेमें अपनेको असमर्थ पाता था। बाजे-गाजेके साथ बकरेको बलिदान देनेके लिये ले जा रहे हैं। पर गांधी जी की जिज्ञासा जान चुकी थी। वे भी चुप लग जानेवाले नहीं थे। कार्यकर्त्ता जानता था कि गांधीजी को उसने यदि खोल कर बता दिया तो बापू और एक बखेड़ा सिर पर ले लेंगे। पर गांधीजी खोद-खोद कर पूछते ही गये। बाजे-गाजेके साथ जलूस निकलनेका वास्तविक कारण जानते ही गांधीजी उठ खड़े हुए। और बोले चलो भाई, वहां चलो ! गांधीजी जलूसमें सम्मिलित होकर माला डाले हुए बकरेके पास पहुंच गये।

बलिदानके लिये देवालय जाते हुए दलके मुखियासे गांधीजी बोले, बकरेका बलिदान आप किस लिए कर रहे हो ? मुखियाने जवाब दिया, देवीके सन्तोषके लिये। 'देवीकी प्रसन्नता और सन्तोषके लिये आपको अधिक से अधिक अच्छी वस्तु उसको अर्पित करनी चाहिए न ?" गांधीजीने उलटे उससे फिर कहा। मुखिया ने झट जवाब दिया 'हां'। गांधीजीने फिर पूछा—

'बकरेकी अपेक्षा मनुष्य श्रेष्ठ है या नहीं ?' इस प्रश्नका भी उसने जवाब 'हां' में दिया। इस पर गांधीजीने पूछा— "फिर इस बकरेकी जगह कोई मनुष्य देवीको क्यों नहीं अर्पण करते ? यदि इस कार्यके लिये तुमको कोई आदमी न मिलता हो, तो मैं स्वतः बलि चढ़ने के लिये तैयार हूं !"

गांधीजी की यह बात सुन कर वह स्तब्ध और सन्न रह गया। जलूसके सब लोग भी हैरान होकर आंख फाड़-फाड़ कर गांधीजीकी ओर देखने लगे। सन्नाटा छा गया। इस स्तब्धता और चुप्पीको

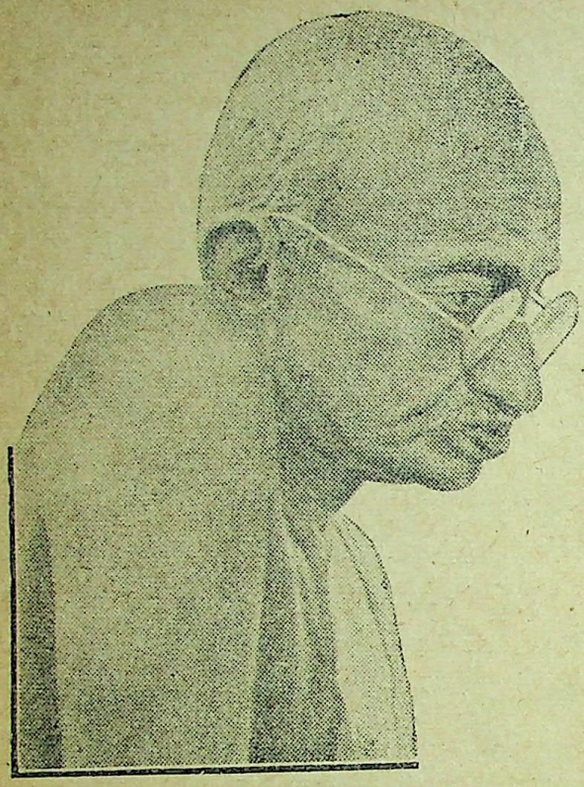

मंग करते हुए गांधीजी फिर बोले:—
"भाई! तेरी इच्छा हो, तो तू खुशी खुशी मुझे देवीको अर्पण कर सकता है। बकरी सदृश मूक प्राणीका नैवेद्य देवीको देनेका क्या अर्थ? कम दर्जेकी चीज देवीको देना क्या उसको धोखा देना नहीं? इस धोखेसे कौन सन्तुष्ट होगा?"

गांधीजीका एक हाथ दलके मुखिया के कंधे पर और दूसरा बकरीकी पीठ पर था। मुखिया स्तब्ध विस्मित और गम्भीर खड़ा था। वह समझनेमें असमर्थ था यह क्या हो रहा है। यह आकाशवाणी है या मनुष्यवाणी है। पर गांधी जी शान्त भावसे उत्तरकी प्रतीक्षामें खड़े थे। वह अन्तमें बोला, 'आप जो कहोगे वही करूंगा!" यह सुनतेही गांधी जीने बकरेके गलेमें बंधी डोरी उसके हाथसे ले ली और उसको छोड़ दिया। और मुखियाको देवीके पास ले जाकर बोले, 'आज जगन्माता जितना तुझ पर प्रसन्न होगी, उतनी इससे पहले किसी पर भी प्रसन्न नहीं हुई होगी।"

(२)

चम्पारणकी दूसरी घटना इससे भी अधिक मनमोहक और हृदयग्राही है, साथ ही बोधप्रद भी है। गांधी जीके साथ वहां अनेक मजूर सत्याग्रही थे। उनमेंसे एक मजूर सत्याग्रहीका एक पांव महा- रोगके कारण सूज गया और गिल्टी निकल आयी। परपांवके चारों ओर चिंचा लगा लेनेके कारण किसीको वहां जख्म होनेका पता न चला।

एक दिन सायंकाल वह सत्याग्रही जब शिबिर वापस आ रहा था, उसके पांवका वह फोड़ा फूट पड़ा और उससे खून निकलने लगा। अन्य सत्याग्रही जल्दी जल्दी पैर बढ़ा कर गांधीजीके साथ चले गये। पर वह मजूर सत्याग्रही पीछे रह गया। उसकी दीन और पंगु अवस्थाकी ओर किसीका ध्यान नहीं गया।

गांधीजीके मुकाम पर पहुंचनेके बाद सब लोग सायंकालकी प्रार्थनाके लिये उनके चारों ओर जमा हुए, तब सदा पीछे पीछे रहनेवाला वह मजदूर उनको वहां दिखायी नहीं दिया। गांधी जीने उसके बारेमें बहुत विचारा पूछ-ताछ की वह क्यों नहीं आया पर कोई इसका ठीक-ठीक जवाब नहीं दे सका। केवल एक जनने इतना बताया, 'बापू, वह आपके साथ साथ जल्दी जल्दी चल नहीं सकता था, अतः वह पेड़के नीचे बैठा था।"

गांधीजी उसकी बात सुन कर एकदम उठ खड़े हुए और हरीकेन लैम्प लेकर उसकी खोजमें उसी प्रकार चल पड़े, जिस प्रकार राम सीताकी खोजमें निकले थे। वह सचमुच एक पेड़के नीचे पड़ा हुआ आर्त्त वाणीसे 'राम राम' कह रहा था। गांधीजीके हाथके हरीकेनकी रोशनी मुंह पर पड़तेही वह घबड़ा कर बोला, "बापू! बापू!!"

क्या हुआ भाई! तुझे! तुझसे चला नहीं जाता था, तो मुझे क्यों नहीं हांक दी! महात्माजीने उसके शरीपर हाथ फेरते हुए उससे यह पूछा। पर वह निर्वाक था, उसके मुहसे शब्द तक निकले नहीं। उसने केवल अपना हाथ अंगकी ओर लेजाकर बताया पांवसे रक्तगरिते हुए देखकर महारोगके भयसे महात्माजीके चारो ओर खड़े लोग पीछे हट गये।

पर गांधीजीने अपने वदनपर ओढ़ शालको फाड़कर उसके पांवके जख्मको बांधा और उसको अपने कंधेका आधार देकर धीरे धीरे उसके साथ शिविरमें आये वहां पहुंचनेपर गांधीजीने उसके पांवको धोआ, फोड़ेको साफ किया और पट्टी करके उसको अपने पास बिठाकर सायंकालीन प्रार्थना प्रारम्भकी। उस मजूरेके हाथ राम धुनके साथ ताली बजा रहे थे पर उसकी आंखोंसे आंसू बह रहा था।

महामना मालवीयजीने जब यह कथा देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसादके मुंहसे सुनी तब महामना मालवीयजी सहसा बोल उठे गंगापाप शमन करती है, चन्द्रमा ताप शमन करता है, और कल्पवृक्ष मैल दूर करता है यह सच है पर गांधीजी गंगाकी अपेक्षा अधिक पावन, चन्द्रकी अपेक्षा अधिक शीतल और कल्पवृक्षकी अपेक्षा अधिक सामर्थ शाली हैं।

गंगा पापं शशी तापं
दैन्यं कल्पतरु स्तथा।
पापं तापं च दैन्यं च
घ्नन्ति संतो महाशयः॥

साप्ताहिक विश्वामित्र
—: की :—
एजेन्सी
लेकर लाभ उठाइये।

डालर साम्राज्यका प्रसार

लेखक—श्री अयोध्या सिंह

संयुक्त राष्ट्र अमरीकाके जनतन्त्रवादके प्रशंसक हमारे देशमें एक नहीं कितने ही हैं। आये गये उसके जनतन्त्रवादके गुण गाये जाते हैं। इन प्रशंसाओंको सुन ऐसा मालूम होता है कि अन्य साम्राज्यवादी देशोंकी तरह वह भूखा भेड़िया नहीं है। उसका इतिहास उन कलंक कालिमाओंसे मुक्त है जिससे अन्य साम्राज्यवादी देशोंके इतिहास रंगे पड़े हैं। वह दूधका धोया है, अतएव वैसा जनन्त्रवाद हमारे देशके लिये स्पृहणीय है।

अमरीकन इतिहास भी हमारे सामने कुछ ऐसा ही चित्र रखते हैं। बचा चिट्ठा तब खुलता है जब साम्राज्यवादी एक दूसरेकी पोल खोलना शुरू करते हैं, ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर अमरीकनोंके आक्षेपोंसे तंग आकर डालर जनतन्त्रवादके बड़े भारी समर्थक अंगरेज पत्रकार हेराल्ड निकोलसनने १६ सितम्बर १९४६ को रेडियोसे ब्राडकास्ट करते हुए कहा :

संयुक्त अमरीकामें लोग यह भूल जाते हैं कि अमरीका टेक्सास, न्यू मैक्सिको, कैलीफोर्निया और खास कर पनामा नहर के नियन्त्रणकी कहानी निश्चित रूपसे साम्राज्यवादसे रंगी है। जब अमरीकनों को यह बताया जाता है, इन्हें बड़ा भारी धक्का लगता है। वे कहते हैं कि यह साम्राज्यवाद नहीं, भाग्यका खेल है। जब मैं संयुक्त अमरीकामें भाषण देता फिरता था, मुझसे अक्सर इण्डियनों भारतीयों) के कत्ले आमके बारेमें कुछ कहनेका अनुरोध किया था। इस प्रश्नको दो सौ बार सुननेके बाद मेरे धैर्यका बांध टूट गया और मैंने बेरुखीसे जवाब दिया, आपका मतलब किन इण्डियनोंसे है—अपने या हमारे ? आप लोगोंने अपने इण्डियनोंको कत्ले आम किया।

अमरीका दूधका धोया नहीं

अमरीकाके प्रसारकी विवेचना हमें इसी निष्कर्ष पर पहुंचाती है कि ऊपरी आवरण हटा देनेके बाद यहां भी वही भूखा भेड़िया नजर आता है जो अपनी क्षुधाकी शान्तिके लिये अपने पड़ोसी, अपने इष्ट मित्र, अपने सम्बन्धी किसीको भी चट कर जानेमें नहीं हिचकिचता। १७७५-८३ के स्वाधीनता-संग्रामके बाद जन्मके समय संयुक्त अमरीकाका क्षेत्रफल केवल ३ लाख ८६ हजार वर्ग मील था। १३० सालके अन्दर उसके ३० लाख वर्ग मीलसे ज्यादा भूमि पर अपना अधिकार जमा लिया। कहा यह गता है कि अमरीकाने तो यह सब भूमि वाजिब दाम पर खरीदी है। पर इस सम्बन्धमें जो आंकड़े प्रकाशित हुए हैं वे इस कथनका पर्दा फाश कर देते हैं। स्वाधीनता संग्रामके बाद एक शताब्दीके अन्दर संयुक्त अमरीकाने भूमि प्राप्त करने में ५ करोड़ डालर खर्च किये। यह धन न्यूयार्कके एक गगन चुम्बी प्रासादकी लागतसे ज्यदा नहीं है। पर इतनेमें संयुक्त अमरीकाने ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जामनी, इटली, जापान और बेल्जियम-सबके सम्मिलित क्षेत्रफलके तिगुनके बराबर भूमि पर अपना अधिकार जमाया और यह भूमि कोई ऊसर या बंजर नहीं। स्पष्ट है कि यह धन भूमिका मूल्य नहीं, जबरन कब्जेको छिपानेकी नकाब मात्र है। इतिहासके पन्ने भी इस बातके साक्षी हैं कि अमरीकाका यह प्रसार शान्तिपूर्ण ढंगसे नहीं हुआ। १९०३ में प्रकाशित संयुक्त अमरीका सेनाका ऐलिटसिक रजिस्टर में १७७५ के बाद संयुक्त अमरीका द्वारा किये गये ११४ युद्धोंकी तालिका है। इन युद्धोंमें ८६०० मुठभेंड़ हुई। इनमें स्वाधीनता-संग्रामको छोड़ कर बाकी प्रायः सभी युद्ध अमरीकाने अपना साम्राज्य बढ़ानेके लिये किया।

इण्डियनोंका सफाया और सीमा विस्तार

लगभग डेढ़ सौ साल पहले भी संयुक्त अमरीकाकी अधिकांश भूमिके मालिक वहांके आदिवासी इण्डियन थे। पर श्वेतांगोको उनकी भूमिकी जरूरत थी। युद्धोंके जरिये उन्होंने आदिवासियोंको मार भगाया और अन्तमें लगभग नेस्तनाबूद कर दिया। आज प्यूएब्लो जातिको छोड़ अन्य कोई भी इण्डियन वहां नहीं है जहां डेढ़ सौ साल पहले उनके पूर्वज रहते थे। प्यूएब्लो अपनी भूमिमें रह सकें, यह श्वेतांगोंकी मेहरबानीन थी। दरअसल इनकी भूमिमें न तो तेल है और न सोना न कोयला है और न अच्छे चरागाह। इस भूमिपर कब्जाकर श्वेताङ्ग करें तो क्या करें ? ये इण्डियन आज भी श्वेताङ्गों को बड़ी नफरतकी निगाहसे देखते हैं। जब इनके बच्चे स्कूलकी शिक्षा समाप्त कर लेते हैं उनके बड़े बूढ़े उनसे साफ कहते हैं कि अगर तुम श्वेताङ्ग मनुष्य होना चाहते हो तो उनमें जा मिलो। हमारे पास फिर कभी मत आना। पर अगर तुम इंडियन ही बने रहना पसन्द करते हो तो जो कुछ तुम्हें सिखाया गया है, उसे भूल जाओ, इन इण्डियनोंके गावोंमें बिजली, तार, मोटर कुछ नहीं है पर वे श्वेताङ्गोंकी सभ्यताको घृणाकी की दृष्टिसे देखते हैं और आज भी अपनेको उस देशका मालिक समझते हैं।

जिस वक्त संयुक्त अमेरिका स्वतन्त्र हुआ, ओरेगान कैलीफोर्निया, यूटाट अरि-

जोना, यूमेकिसको टेकसास, लूसियाना और फ्लोरिडा आदि पश्चिम तथा दक्षिण के भाग उसके अधिकार में न थे। स्वतन्त्रता संग्रामके बाद काफी लम्बे अरसे तक संयुक्त अमेरिका किसी बड़े युद्धमें नहीं उतरा। इस तथा अन्य कई बातोंने मिलकर अमरीका आर्थिक दृष्टिसे बढ़ाया इस उन्नतिके साथ ही उसने अपने पैर भी पसारने शुरू किये। १८०३ में उसके फ्रांससे तेल, प्राकृतिक गैस, गन्धक के प्रांत लूसियाना(क्षेत्रफल ८२७९०० व० मील) को डेढ़ करोड़ डालरमें खरीद लिया। १८१९में रूई और तम्बाकूके प्रान्त फ्लोरिडा ५८६०० व० मी०)को ५० लाख डालरमें हथिया लिया।

संपुक्त अमेरिकाकी २५ फी सदी रूई पैदा करने, उसके ३६ फीसदी तेल देनेवाला और ७०लाख पशुओंका पालन करने वाला टेक्सास प्रान्त पहले मैक्सिकोके आधीन था संयुक्त अमेरिकाके नागरिक मैक्सिको सरकारकी आज्ञा लेकर इसमें बसे और रोजगार करते रहे। इन लोगोंने जब मैक्सिकोको गृह-कलहके कारण कमजोर देखा, मैक्सिकोसे टेक्सासको अलग कर संयुक्त अमेरिकासे मिलाने की मांग की। मैक्सिकोकी सरकार टेक्सासको पूर्ण स्वतन्त्र करनेको तैयार थी, पर—अमेरिकाके साथ मिल जाने देनेको तैयार न था। संयुक्त अमेरिकाकी सरकारने आक्रमणात्मक नीति अख्तियार की और युद्ध ठान दिया।अपने इस कार्यको न्यायोचित साबित करते हुए तात्कालीन राष्ट्रपति पाक १८४५ की २९ अप्रेल को कहा कि मैक्सिकनोंने यूरोपीय देशोंसे मदद की अपील की है, अभी तक वे नहीं आये, पर आ रहे हैं। संरक्षणके बदलेमें वे उस देशमें शक्ति और सत्ताकी मांग करेंगे जिसकी मदद करेंगे। अमेरिका यह बर्दास्त नहीं कर सकता।

क्या ऐसी ही दलीलें आज एक सौ साल बाद साम्राज्यवादी पेश नहीं करते? चेकोस्लोवाकियाको हड़पनेमें क्या हिटलर ने वही नीति अख्तियार न की थी जो संयुक्त अमेरिकाने टेक्सासपर अधिकार जमानेमें की।

१९४८ में सन्धिके अनुसार टेक्सासपर अमरीकाका अधिकार जायज हो गया। इसके अलावा उसे कैलीफोर्निया, यूराल अरिजोना और न्यूमैक्सिकोके प्रांत भी मिल गये। इस ५ लाख २९ हजार बगमील भूमिके लिये अमेरिकाने मैक्सिको को कुल १॥ करोड़ डालर दिये। राष्ट्रपति ग्राण्टने इस युद्धके बारेमें कहा कि "दुर्बल राष्ट्रके विरुद्ध शक्तिशाली राष्ट्र द्वारा छेड़े गये अत्यधिक अन्यायपूर्ण युद्धोंमेंसे भी यह एक है।"

पूर्ण रूपसे साम्राज्यवादी।

१८६१-६५ के गृहयुद्धके कारण अमरीकाके प्रसारकी गति रुक गयी। दासताके विरुद्ध संघर्षमें जनवादी शक्तियां बढ़ी और उन्होंने युद्ध समयके लिये राज बढ़ाने वालोंकी आवाजको मन्द कर दिया। पर भूमिको बढ़ाने वाले मिट नहीं गये, वे बने रहे और शक्ति संचय करते रहे। इस बीच एक और भी बड़ा परिवर्तन हुआ। संयुक्त अमरीका कृषि प्रधान देशकी जगह प्रथम श्रेणीका औद्योगिक देश बन गया। १८९० में उसका औद्योगिक उत्पादन ब्रिटेनके उत्पादनसे बढ़ गया। अब अमरीका रुई, गेहूं, ऊन और कोयला तथा तांबाकी जगह बड़ी मात्रामें तैयार माल बाहर भेजने लगा। देशके अन्दर एकाधिकारी व्यवसायियोंका जन्म हुआ। उनकी ताकत बढ़ी और राज्यकी नीतिपर उनका सीधा प्रभाव पड़ने लगा। इससे अमरीका के प्रसारके ढङ्गमें भी परिवर्तन आया।

इसके पहले श्वेतांगोंको बसनेके लिये नयी भूमिकी जरूरत थी। अभीतक यह जरूरत अमरीकाके प्रसारके पीछे कामकर रही थी। पर अब इसका स्थान उद्योगपतियों, बैंकरों और व्यवसायियोंके गुटों के मुनाफेने लिया। अब अमरीकाके प्रसारके पीछे जो शक्ति काम करने लगी वह बसनेके लिये भूमिकी जरूरत न थी, वह थी मुनाफेकी चाह। भूमि हथियानेकी एक हद हुआ करती है, पर मुनाफेकी चाह हद नहीं हुआ करती। अतएव अब डालरके दूसरे देशोंमें जाने, वहांकी अर्थनीति और राजनीतिपर अधिकार जमाने का युग प्रारम्भ हुआ। यानी संक्षेपमें अमरीका साम्राज्यवादी बन गया और महान शक्तियोंकी साम्राज्यवादी प्रतिद्वन्द्वितामें उसने भी हाथ बटाना शुरू किया।

हवाई टापुओंपर अधिकार

साधारणतः हवाई टापुओंको अपने राज्यमें मिला लेनेके समयसे अमरीकाके इस नये युगका आरम्भ माना जाता है। यह पहला अवसर था जब अमरीकाने अपने भरोसे हजारों मीलकी दूरीपर स्थित भूमिपर कब्जा किया हो। संयुक्त राज्य अमेरिकाने एक संधिके द्वारा हवाई टापुओंकी निष्पक्षता और स्वाधीनता मान रखी थी। वहांके धनी लोगके साथ उसका रोजगार चलता था। इस तबकेपर विश्वास था कि अगर हवाई टापू अमरीकामें मिला दिया जाये तो उन्हें आर्थिक दृष्टिसे लाभ होगा। फलतः उन्होंने बगावतका झण्डा खड़ा कर दिया। बगावत शुरू होते ही १८९३ की १६ जनवरीको हनालूलूमें लङ्गर डाले अमरीकन युद्धपोत बोस्टनने अपने नौसैनिकोंको उतार दिया। अमरीकाकी तोपोंकी मददसे मुट्ठी भर लोगोंने राजाको हटा अस्थायी सरकार बना ली और इसके बाद एक घण्टेके अन्दर ही अमरीकाने इस सरकारको मान लिया।

हवाई टापुओंपर जिस प्रकार कब्जा किया गया, उसका ऐतिहासिक महत्व है। स्थान विशेषके लिहाजसे कुछ हेरफेरके साथ यह तरीका कितनी ही बार अपनाया गया और पनामा, हांडूराज, हैइटी, सान डोमिंगो, निकारागुआ, क्यूबा और यहां तक कि मैक्सिको तकने इस 'हवाई' तरीकेका मजा चखा।

अमरीकाके जनतन्त्र वादियोंने इस प्रकार अन्य देशको अपनेमें मिला लेनेपर बड़ी आपत्ति उठायी। सारे देशमें इसपर वाद-विवाद प्रारम्भ हो गया, पर अन्तमें १८९४ के जुलाईमें स्पेन-अमरीकाके युद्धके समय अमरीकन कांग्रेसने इसपर अपनी स्वीकृति दे दी।

ब्रिटिश टैक्टर—अमरिकाने ५० लाख पौण्डके ब्रिटिश टैक्टरोंका आडर ब्रिटेनके एक फर्मको दिया है।

फिलिपाइन्स और कैरीबियन समुद्रपर अधिकार

१९ वीं सदीके अन्तमें कमजोर हो जानेके कारण साम्राज्यवादी प्रतिद्वन्दितामें टिकनेमें असमर्थ था। उसके धन-धान्य पूर्ण उपनिवेशोंको छीनकर अपने कब्जेमें कर लेनेकी अमरीकामें ताकत थी। स्पेन अपनी कमजोरी समझता था, अतएव वह क्यूबाको अमरीकके सुपुर्द करनेको तैयार था। लेकिन अमरीका उस कनजोरीको जानता था और इसलिये वह सीधे युद्धपर तुला था। उस वक्त अमरीकाके इसरुखका समर्थन केवल ब्रिटेनने किया। कहा जाता है कि युद्ध शुरू होनेके कुछ ही दिन पहले ब्रिटिश परराष्ट्र सचिवने लन्दन स्थित अमरीकन प्रतिनिधिसे कहा था—'आप हमारा बेड़ा क्यों नहीं मांगलेते औरजल्दी से क्यूबाका मामला तय कर डालें? किसी दूसरे समयमें ऐसी ही भलाई आप हमारे साथ भी कर सकते हैं।' इस अंग्रेजके मस्तिष्कमें बोअर युद्धकी बात चक्कर काट रही थी। उसी दिन ब्रिटिश उपनिवेश मंत्री जोसेफ चैम्बरलेनने संयुक्त अमरीका और ब्रिटेनके बीच कमसे कम महत्वपूर्ण प्रश्नों पर संयुक्त कार्रवाई करनेके समझौतेकी सिफारिश करते हुए कहा—'कंधेसे कंधा मिलाकर हम सारी दुनिया भरमें शांति कायम कर सकते हैं।'

युद्ध खतम होनेपर सन्धिके अनुसार स्पेनने गुआम, पोर्टोरिको और फिलिपाइन द्वीपपुंजोंको संयुक्त अमरीकाको सौंपदिया। इनके लिये क्षति पूर्तिके रूप अमरीकाने स्पेनको २ करोड़ डालर दिये। क्यूबाकी स्पेनके हाथसे मुक्तिकी घोषणा पहले ही की जा चुकी थी।

युद्धके बाद यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि इन जीते हुए भू खण्डोंको क्या किया जाय? १८९८ की २० अप्रेलकोसंयुक्त अमरीकाकी कांग्रेसने क्यूबाकी जनताकी स्वाधीनताके अधिकारकी घोषणा की थी। यह घोषणा फिलिपाइन्सऔ पोर्टोरिकोके बारेमें उसी प्रकार लागू होती थी। पर अमरीकन साम्राज्यवादियोंने अपनी कार्रवाईसे यह स्पष्ट कर दिया कि हाथीके खानेके दांत और होते हैं दिखानेके और। उस वक्त अमरीकन साम्राज्यवादियोंका दिमाग किस तरह काम कर रहा था उसका जीता जागता सबूत तत्कालीन राष्ट्रपति मैकिन्लीका अपने मानसिक संघर्षका वर्णन है—

'लगातार कितने ही दिन आधी रातत्तक मैं ह्वाइट हाउसमें रहता रहा और सज्जनों को यह कहते मुझे शर्म नहीं आती कि कई रात मैंने घुटने टेककर सर्वशक्ति सम्पन्न ईश्वरसे प्रकाश और पथ प्रदर्शन की प्रार्थना की। और एक दिन जबकि रात बीत गयी थी, मेरी समझमें यह आया- मैं नहीं जानता कि यह कसे हुआ, पर समझ में आया कि (१) हम उनको फिलिपाइन्स को) स्पेनको वापस नहीं सौंप सकते—यह कायरता और अप्रतिष्ठापूर्ण होगा, (२) हम उन्हें पूर्वमें व्यवस्थामें अपने प्रतिद्वन्द्वी फ्रांस या जर्मनीके हाथ भी नहीं दे सकते, यह खराब और अपने नामपर बट्टा लगानेका काम होगा, (३) हम उन्हें अपने ऊपर नहीं छोड़ सकते वे स्वायत्त-शासनके अयोग्य हैं और शीघ्र वहां उछृंखलता पैदा हो जायगी और स्पेन युद्धसे भी बदतर कुशासन हो जायगा, (४) हमारे सामने सिवा उसके दूसरा रास्ता नहीं कि हम उन सबको ले लें, फिलिपिनोंको शिक्षित बनायें, ऊपर उठायें, सभ्य बनायें और ईसाई बनाकर उन्हें अपना साथी बनायें। इसीके लिये ईसा मसीहने भी जान जान दी थी। और तब मैं सोने गया गहरी नींद सोया।' (साम्राज्यवाद और विश्व राजनीति, पार्कर टामस मून)

पर क्या मैंकिन्लीं यकायक इस निर्णयपर पहुंच गया था? उसके शब्द हमें कुछ ऐसा ही विश्वास दिलाते हैं। पर असलियत वह थी कि मैकिन्लीने आत्मज्ञान ही से विचार विमर्श न किया था, साथ ही अपने परामर्शदाताओंसे भी। इन टापुओंके आर्थिक सामरिक महत्वकी विस्तृत रिपोर्टोंने ईश्वर द्वारा दिखलाये गये रास्तेपर अपनी मुहर लगा दी थी।

पर केवल स्पेनको हटानेसे फिलिपाइन पर अमरीकाका कब्जा नहीं हो सका। १८९८ में फिलिपिनोंके पास २०-३० हजार सेना थी। इसकी बदौलत वे बराबर स्पेनकी सेनाओंका मुकाबला करते रहे। १८९८ की १८ जूनको उन्होंने जनतन्त्रवादी राष्ट्रकी घोषणा की और ६

अगस्तको अपनी नयी सरकार बननेकी सूचना अन्य राष्ट्रोंको दी। उन्होंने अपना प्रतिनिधि मण्डल पेरिसको जहां शांति कमीशनकी बैठक हो रही थी, और वाशिंगटन भेजा। पर उनकी स्वाधीनता स्वीकार करनेकी बात राष्ट्रपति मैकिन्ली को जरा भी पसन्द न थी। उसने अमरीकन सेनाओंके सेनापति जनरल ओंटिसको परिस्थिति सम्भालनेका हुक्म दिया। अमरीकन सैनिकोंने हथियार उठाये और फिलिपाइन द्वीप पूंजों पर दूसरी बार विजय प्राप्त की गयी।

१९०० की ९ जनवरीको सिनेटमें मैकिन्लीके सहायक इण्डियानाके सिनेटर वेवेरिजने जो भाषण दिया था, वह अमरीकन साम्राज्यवादियोंके नग्न रूपमें हमारे सामने ला रखता है। उसने कहा था :—

"फिलिपाइन द्वीपपुंज हमेशाके लिये हमारे हो गये।....और फिलिपाइनके ठीक आगे चीनका असीम बाजार है। हम इनमें से किसीसे भी पैर पीछे न हटायेंगे। हम द्वीपपुंजोंके प्रति अपने कर्त्तव्यसे विमुखन होंगे। हम पूर्वमें अपने अवसरको न छोड़ेंगे। हम अपनी जातिके जो ईश्वरके आधीन विश्व सभ्यताकी सरक्षक है, उद्देश्यकी सिद्धिमें अपने कर्त्तव्यसे विमुख न होंगे।"

उसके एक साल बाद ७ जनवरी १९०१ को फिलिपाइनकी विजय पर बहस के सिलसिलेमें एक दूसरे सिनेटर हेनरी कैबट लाजके अमरीकन साम्राज्यवादियों की महत्वाकांक्षाको और भी स्पष्ट रूपमें प्रकट किया :—

"आर्थिक दृष्टिसे हम उच्च आसन पर बैठे हैं। हम उच्चतर आसनकी ओर बढ़ रहे हैं। आर्थिक शक्तियोंके कार्यकी रफ्तार आप कम सकते हैं, उसमें रुकावट डाल सकते हैं, पर आप उसे एक दम रोक नहीं सकते। आप संयुक्त अमरीकाकी अग्रगतिको नहीं रोक सकते।....अमरीकन जनता और आर्थिक शक्तियां जो सभी बातोंकी बुनियादमें हैं, विश्वकी आर्थिक सर्व श्रेष्ठताकी ओर हमें आगे लिये जा रही हैं।"

हम स्पष्ट देखते हैं कि विश्व पर अमरीकाके प्रभुत्वका स्वप्न देखने वाले वांडेन वर्ग, कोनैली या वाल्टर लिपवमान जैसे व्यक्ति केवल आज ही पदा नहीं हुए, भी पहले मौजूद थे।

कैरी बियन सागरमें संयुक्त अमरीका को स्वार्थकी तुलना अक्सर भूमध्य सागर में ब्रिटेनके स्वार्थके साथ की जाती है। जो महत्व ब्रिटेनके लिये स्वेज नहरका है, वही महत्व अकरीकाके लिये पनामा नहर का है। स्पेन-अमरीका युद्ध समाप्त होनेके

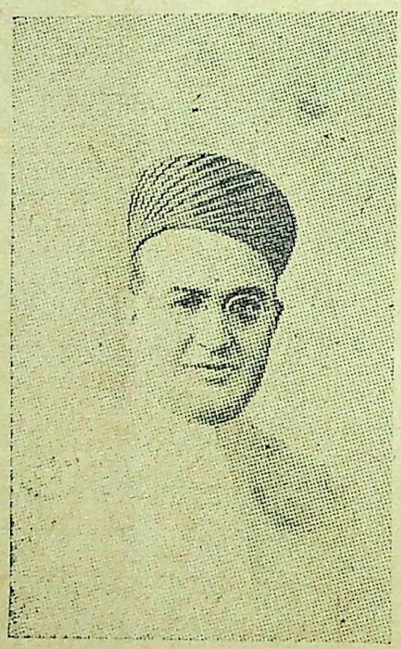

बादसे प्रथम महासभाके खतम होने तक संयुक्त अमरीकाने कैरीबियन सागरके अधिकांश देशों पर अपना राजनीतिक प्रभुत्व कायम कर लिया। १८९८ में उसने पोर्टरिको पर कब्जा किया, १९०१ में क्यूकाके मामलोंमें हस्तक्षेप करनेका हक हासिल किया, १९०३ में पनामाको एक तरहसे अपना अंग बना लिया। १९०७ में सान डोमिंगो पर अपना आर्थिक नियन्त्रण कायम कर लिया १९०८ में निकारा गुआके राष्ट्रपतिको निकाल बाहर किया, १९१५ में हैइटीमें अपने नौसैनिक भेजे। १९१७ में कई वर्जिन टापुओंको उसने खरीद लिया।

बीसवीं शताब्दीके प्रारम्भमें पनामा कोलम्बिया जनतन्त्रका अंग था। लेकिन संयुक्त अमरीकाके राष्ट्रपति थे यो डोट रूजवेल्टने अंधसागर और प्रशान्तको जोड़ती हुई एक नहर पनामासे होकर निकालनी चाही। यहां भी 'हवाई' तरीके का प्रयोग किया गया। अमरीकन एजेण्टों ने पनामामें क्रान्ति करा दी। अमरीकन अधिकारियोंने इन बाभियोंकी सरकार को मान लिया और इन बागियोंने पलक मारते दस मील दौड़ा रास्ता नहर बनाने के लिये अमरीकाको दे दिया। १९१४ में पनामा नहर तैयार हो गयी और उससे जहाज आने जाने लगे।

अंध महासागरसे प्रशान्त जानेका छोटा रास्ता अमरीकाको मिला जरूरत पर फिर भी यह खतरा था कि कहीं दूसरी शक्ति दोनों महासागरोंको मिलानेवाली दूसरी नहर ननिकाल दे दूसरी नहर निकारा गुआमें हीनिकाली जासकती थी। इस खतरे को दूर करनेके लिये १९१२ में अमरीकाने खले आम निकारा गुआके निजी मामलों में हस्तक्षेप किया और अपनी कठपुतलियोंको गद्दी पर बैठाया इन कठपुतलियोंने संधि कर अमरीकाको अपने देशकी रेलवे चुंगी और बैंकों तथा नहरके योग्य भूमि का नियन्त्रण सौंप दिया। तबसे अमरीकन सरकार यहां प्रतिक्रियावादियोंको गद्दी पर बैठाये रहनेमें लगी रहती है।

इस प्रकार प्रथम महायुद्ध प्रारम्भ होनेके पहले पूरे साम्राज्यवादीके रूपमें हमारे सामने आता है। डालर साम्राज्य पश्चिममें चीन तक फैल जाती है और दक्षिणमें कैरीबियन सागरके देशों पर अधिकार जमाता हुआ दक्षिणमें अमरीका को अपने चंगुलमें करनेके लिये आगे बढ़ता है। उसके अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों का संघके अन्य महान शक्तियोंकी महत्वाकांक्षाओंसे होता है, अतएव साम्राज्यवादी विरोधों और अन्तमें संघर्षके चक्करमें वह भी आ पड़ता है।

स्वर्गीय देवी प्रसादजी खतान। आप भारतीय विधान बनाने वाली समितिके एक सदस्य और मारवाड़ी समाजके एक विशिष्ट नागरिक थे। गत २७ फरवरीको आपका देहान्त हो गया।

हमारी आर्थिक उन्नतिके कुछ राह

लेखक—प्रो० महेशचन्द्र, प्रयाग विश्वविद्यालय

कलकत्तेकी इस यात्रामें बहुत सी नई बातें मालूम हुईं। ऐसी नयी बातें जिनका हमारी आर्थिक उन्नति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है।

भारत अधिक उत्पादन की समस्या हल करनेका प्रयत्न कर रहा है। आये दिन यह कहा जाता है कि पूंजीपति दोषी है और मजदूर निर्दोषी है। कमसे कम ऐसा कहने वाले लोगोंका एक वर्ग है। पञ्जाबकी चीनी एक मिलके एसिस्टेण्ट मैनेजरने अपने अनुभव बतलाये। उनकी मिलमें पहले मजदूरोंके दो ग्रुप केरियर पर गन्ना डालता था। मिलका उत्पादन उतनाही है परन्तु अब केरियर पर चार ग्रुप काम करते हैं। मजदूरोंको एक काम से दूसरे काममें जानेमें एतराज होता है। यदि कोई मजदूर केरियर पर काम करता है और उसे कोयले ढोनेके काम पर लगाया जाता है तो वह बहाने निकाल कर वहां जानेसे इंकार करता है। जब मजदूर गाड़ियों परसे गन्ने उतारते हैं तब वे अफसरकी आंखसे बचनेके लिये गाड़ियोंके पीछे छिप जाते हैं। मजदूर समय काटना चाहता है। कहावत है कि 'दिन खसा, मजदूर हंसा"। आज प्रत्येक क्षेत्रमें मजदूरोंका यही रवैया हो रहा है। कम उत्पादन की समस्याको हल करनेके लिये हमारी सरकार निम्नतम मजदूरोंकी व्यवस्था कर रही है। परन्तु उसके साथ साथ यह भी जरूरी है कि मजदूरोंकी बढ़ती हुई अक्षमताको भी दूर किया जाय। यदि मजदूर दिलसे काम करने लगे तो बहुत अच्छा हो।

अधिक उत्पादन और अधिक अच्छे उत्पादनके लिये यह भी आवश्यक है कि मिलकी उत्पादन व्यवस्थामें सांख्याकिक-नियन्त्रण (स्टाफिस्टिफल कण्ट्रोल) को पूरा स्थान दिया जाय। मिलके विभिन्न विभागोंके लिये जो सामान खरीदा जाता है वह अच्छी किस्मका हो। मिलके विभिन्न विभागोंमें जो काम होता है वह खराब न हो। मजदूरोंको जो औजार दिये जाते हैं वह एक स्टैण्डर्डके हो। उन सबोंके लिये खरीदे सामान, विभिन्न उत्पादन स्टेज पर अर्धनिर्मित सामान तथा औजारोंके नमूने लेकर जांच करनी चाहिये। इस जांचके लिये सांख्यकिकों (स्टाफिस्टियन्स) ने जो खोज कर रक्खी है तथा जो नये ढंग ढूंढ निकाले हैं उन्हें पूंजीपति उस पर विश्वास नहीं करते। यही नहीं। कलकत्ता कांग्रेसमें प्रस्तुत पूंजीपति प्रतिनिधियोंसे एक प्रश्न पूंछा गया। एक पतला धातुका पत्तर है जिसकी मोटाई दो मिलीमीटर रहती है परन्तु कोई पत्तर ·०१ मिलीमीटरतक कम या अधिक मोटा हो सकता है। यदि ऐसे बीस पत्तर एकके ऊपर एक रक्खे जायं तो बीसोंकी मोटाई ४० मिलीमीटर होनी चाहिये प्रत्येक पत्तरकी मोटाईमें कमी वेशीकी संभावनाके कारण उपर्युक्त ४० मीटरकी मोटाईमें भी कमी वेशी होगी। प्रस्तुत व्यक्तियोंसे यह पूंछा गया कि वे बीसों पत्तरोंकी मोटाइमें ४० मिलीमीटरसे कितना अन्तर सम्भव मांगेंगे। किसी ने कहा 'वही जो इक पत्तर की है,' किसी ने कहा पांच की। किसीने कहा दो मिलीमीटर की। परन्तु सही जवाब कोई नहीं दे सका सही उत्तर सांख्यकिक (स्टाफिस्टियन्स) दे सकता है। यदि जो पूंजीपति उसकी सलाह लें वे बहुत दिक्कतोंसे बच जाय, सरकारी ईंस्पेक्टर द्वारा ना-पास किये सामानकी मात्रा घट जाये। कमसे कमे अधिक मात्रामें कच्चा माल को खरीदने और अधिक मात्रामें तैयार वस्तु बेचने वाले उत्पादक (पूंजीपति)को यह ढङ्ग अवश्य अपनाना चाहिये।

अस्तु भारत- विख्यात अलम्यूनियम कारपोरेशनके मैनेजरसे एक अति महत्व पूर्ण बात मालूम हुई। उनके कथनानुसार मिलके विश्वविद्यालयके उन ताजे विद्यार्थियोंके कारण, जिन्हें पूंजीपति नौकर रखते हैं, हड़तालें होती हैं। वे शीघ्र उन्नति करनेकी इच्छा वश इन मजदूरोंको हराबाग दिखाते हैं परन्तु वे अपने वादोंको पूरा नहीं कर पाते। फलतः मजदूर हड़ताल कर देते हैं। विद्यार्थियोंको चाहिये कि वे ऐसी मृगतृष्णाको छोड़कर पहले प्रत्येक छोटे बड़े कार्योंको सीखें। मनेजरकी राय बहुत अच्छी है। हमारे विद्यार्थियोंके दिमागमें यह बात अच्छी तरह जम जानी चाहिये। परन्तु इस बातको पूंजीपति वर्ग किसी दूसरे प्रकार रखा करें तो अच्छा हो। अन्यथा मुझे डर यह है कि कम्युनिस्ट नेता भी यही कहने लगेंगे कि हड़तालें हमारे कारण नहीं होती। यह तो नये विद्यार्थी मजदूरोंके उत्तेजना दिलानेका नतीजा है।

अस्तु। हिंदोस्तान डेवेलपमेण्ट कारपोरेशनके अति मिलनसार आस्ट्रियन इञ्जीनियर श्रीयुत ग्लाससे हमको सी अनुभव की बातें मिली। उन्होंने जिस परिश्रमसे अपनी संस्थाकी उन्नति की है वह अनुकरणीय है। उनका यह कहना सत्य है कि हमारे एम० ए० तथा बी० ए० पास विद्यार्थी साफ-साफ एक सा अक्षर और अङ्क लिखना नहीं जानते। उन्होंने पूंजीपतियोंका पक्ष नहीं लिया उन्होंने यह बताया कि हमारे पूंजीपति रूपयेके पीछे अन्धे हो जाते हैं। वे चाहते हैं कि ऐसी मशीन बनो और ऐसी व्यवस्था हो कि एक पैसा लगाया जाय तो तुरन्त एक रूपया बन जाय। यह अति आवश्यक है कि मिल-मालिक अपनी मिलोंमें सांख्यकी सम्बन्धी मामूली आंकड़े एकत्र करें। वे भले ही अभीसे सांख्यकिक नियन्त्रण न अपनावें।

साथ ही यह भी आवश्यक है कि विश्वविद्यालयोंसे निकलनेवाले विद्यार्थी उद्योगधन्धोंसे जानकारी रक्खें। उन्हें यह ज्ञान हो कि वहां किस प्रकारके सांख्यकिक आंकड़ोंकी आवश्यकता होती है। इस हेतु पूंजीपतियोंको चाहिये कि वे अर्थ शास्त्रियोंको ऐसी सुविधायें दे ताकि विद्यार्थियोंको ऐसी शिक्षा दी जा सकें। हम उनके विचारोंसे पूर्ण तया सहमत हैं।

कलकत्तेमें आकर हमने मिल और फैक्टरियोंसे संबधित लोगोंसे तो भेंट करके बहुत कुछ विचारोंका आदान प्रदान किया। इसका श्रेय कलकत्ता नगरको है। परन्तु 'लाइट हाउस' सिनेमामें सर्व प्रथम 'कल्पना' चित्र देखनेके पश्चात

(शेष २० व पृष्ठ पर)

समाजवाद क्या है ?

श्री श्याम परमार

समाजवाद आजके युगका एक महत्वपूर्ण राजनैतिक प्रश्न बन गया है। ज्यों-ज्यों यह वाद प्रचार पाता गया, इसके सम्बन्धमें अनेक धारणाएं भी प्रकट होती गयीं। यहां तक कि राजनैतिक सिद्धान्तों के प्रकाण्ड विद्वानों तकने इसके प्रति अपने भ्रान्तिपर्ण मन्तव्य प्रकट किये हैं। हियर्नशा जैसे विद्वान्ने तो यहां तक कह डाला है कि समाजवाद सनकियों और अपराधियोंके आकर्षणकी वस्तु है।

वास्तवमें समाजवादको जहां परिभाषामें बांधनेका प्रयत्न किया है वहां वह सफलतापूर्वक व्यक्त नहीं हुआ। यदि सही मानेमें समझा जाये तो समाजवाद एक जीवित आन्दोलन है। यह एक ऐसा आन्दोलन है जिसका उद्देश्य सबका भला करना है। वह जीवनका एक दर्शन है—एक धर्म है और एक रास्ता है। जनतन्त्रवादकी बुराइयोंके ऊपर हम समाजवादकी कल्पना करते हैं। यह सही कि इस कल्पनाकी पीछे जीवनके विकासकी एक प्रबल आकांक्षा छिपी हुई है। समाजवाद हमें उसी ओर ले जानेका प्रयत्न करता है। समाजवादी सेलरने कहा है कि वह आन्दोलन है जिसका उद्देश्य उत्पादनके साधनोंपर अधिकार करके बहुसंख्यक जनताका भला करना है। इस परिभाषा को हम पूर्ण नहीं कह सकते, क्योंकि इसमें वे सभी बातें हमें प्राप्त नहीं होतीं जो कि समाजवादकी आदर्श कल्पनामें निहित हैं।

गत शताब्दीके मध्य तक समाजवाद एक आदर्श था। किन्तु मोअर, ओवेन, फोरियर और सेण्ट सायमनने समाजवाद वादको राष्ट्रीय धरातलपर उदाहरणों और सिद्धान्तों सहित तौलकर आगे बढ़ा दिया उन्होंने अपनी रचनाओंमें समाजवाद और साम्यवादका भेद करनेका प्रयत्न नहीं किया किन्तु जिस समाजकी कल्पना उन्होंने की वह साम्यवादी ढङ्ग की थी। समाजवादके इस प्रारम्भिक रूपको कार्ल मार्क्स और एञ्जिलने अपने हाथोंमें लेकर उसको राजनीतिक रूप दे दिया है। उन्होंने इसको शोषित जनताका आन्दोलन बनाया और वर्गसंघर्षके अपने दर्शनको दुनियाके सामने रखा। लेकिन अब समाजवाद और साम्यवाद एक ओर, और दूसरी ओर समाजवाद और व्यक्तिवादमें एक प्रकारका संघर्ष चल रहा है। लोग सहसा अब यह नहीं कहते कि समाजके बादके पीछे मार्क्सकी छाया चल रही है।

वर्तमान समयमें समाजवाद क्रमशः अपने असली तत्वोंमें व्यक्त किया जा रहा है, इसमें भी सन्देह है। समाजवाद और साम्यवादमें अधिकांश लोग भेद नहीं समझते, किन्तु इन दोनोंमें बहुत अन्तर है। जहां साम्यवाद जरूरतके मुताबिक उपकरण प्रदान करता है, यहां समाजवाद कार्यकी मात्राके अनुकूल जरूरत पूरी करनेमें विश्वास करता है। समाजवाद व्यक्तिगत सम्पत्तिके पक्षमें है साम्यवाद उसका विरोध करता है। एक विकासवादी है, दूसरा क्रान्तिकारी समाजवाद सरकार के सहयोगकी आशा करता है, साम्यवाद उसको खत्म करनेकी बात करता है। ऐसे अनेक भेद हैं, जिनका लिखना व्यर्थ होगा। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिकाके अनुसार समाजवाद एक नीति या सिद्धान्त है जिसका उद्देश्य केन्द्रीय सरकारकी जनतन्त्रवादी हुकूमतके कार्यों द्वारा उत्पादन और वितरणको ठीक तरीकोंपर अधिकार प्राप्त करना है। इसके लिये तीन मुख्य कार्य समाजवादियोंके सामने हैं। (१) मुख्य - मुख्य कारखानों और जरूरी सेवाओंको जनताके अधिकारमें सौंपना, (२) व्यक्तिगत फायदे की अपेक्षा सामाजिक फायदेका अधिक ध्यान रखते हुए सारी मशिनरीको चलाये रखना, और (३) सेवाओंका रूप समाजोन्मुखी भले की ओर हो। इङ्गलडकी लेबर पार्टीने दूसरे कार्यक्रम रखे हैं, जो अर्थसे अधिक सम्बन्धित है।

आपत्ति की जाती है कि समाजवाद यदि कार्य रूपमें परिणित किया गया तो हर व्यक्तिको सरकारका नौकर बन जाना सोचेंगे तो स्पष्ट हो जायगा कि सरकार समाजका एक अस्त्र जिसके द्वारा स्वयं समाज अपना भला कर सकता है। फिर वह क्यों यह समझे कि सरकार नौकर बन जायगी। वास्तवमें समाजवादके सिद्धांत आशावादी हैं। एक समाजवादी व्यक्ति समाजके परिवर्तन की तीव्र आशा करता है। यह आशा हमें सभी धर्मों और आदर्शों में प्राप्त होती है। ऐसी स्थितिमें सरकारको समाजके भलेका एक जरिया बनाया जाना बुरा क्या है ?

यद्यपि समाजवाद हमारे सामने मूर्तिमान नहीं हो सकता किन्तु यह सत्य है कि उसका आन्दोलन हर राजनैतिक संस्थाके लिये खिंचावका विषय बना रहेगा। पश्चिमी देशोंमें इसने निम्न वर्गीय समाज को एकताके सूत्रमें बांध दिया है। समाजके द्वारा यह स्पष्ट किया जा चुका है भौतिक आवश्यकताओंको पूर्ण किये बिना कोई भी उन्नति नहीं की जा सकती। राजनैतिक जनतन्त्रवाद सामाजिक जनतन्त्रवादके बिना अधूरा है। भारत जैसे देशमें जहां भेदभाव अधिक हैं, इस आन्दोलन का बड़ा महत्व है। समाज आज समझ गया है कि न्यायका स्तर सामाजिक हो, मौजूदा वर्गभेद नष्ट हो और आर्थिक सामाजिक समानता दुनियामें लायी जाय। लोगोंकी इन मांगोंको उचित अर्थोंमें समझा जाये तो विलियम हरकोर्टने ठीक ही कहा है, क्योंकि हम सब उसी समानता को प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रहे हैं।

—०—

हमारी आर्थिक उन्नतिके कुछ रोड़े

(१९ वें पृष्ठका शेषांश)

वहांकी जनताने जो अराष्ट्रीयताका परिचय दिया वह भी बता देना आवश्यक है। खेलके पश्चात राष्ट्रीयतापूर्ण जो गायन हुआ उस समय दो व्यक्तियोंको छोड़कर शेष सारी जनता दरवाजेके बाहर हो गयी थी। बारह दिसम्बरकी बैरकपुरकी भीड़ और तेरह तारीखकी इस घटनामें महान अन्तर है। इसका दोष कलकत्ताको दिया जाय या कलकत्ता वासियोंको ? यदि हम तीव्र आर्थिक उन्नति चाहते हैं तो ऐसी आदतोंको बदलना होगा। (लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

काश्मीरकी समस्या

श्री मोहनसिंह सेंगर

(४)

जहां काश्मीरमें हमने एक ओर वह जन-जागरण देखा, जिसके साये में बार-बार आघात सह कर, साम्राज्य-वादी षड्यन्त्रों और साम्प्रदायिक कठ-मुल्लाओंके भ्रान्ति-प्रचारके धूम्र-जालको दूर हटा कर जन-बल एक ठोसचट्टानकी तरह आततायीके मुकाबलेमें दृढ़तासे अड़ा खड़ा है, वहां दूसरी ओर हमने वह काश्मीर भी देखा, जो अपने कुसंस्कारों, अन्ध परम्पराओं, संकीर्णताओं और अदूरदर्शिताके कठघरेमें बन्द, बाहरकी ताजी हवा और रोशनीसे वंचित रो और सिसक रहा है—वेदना या दर्दसे नहीं, अपने मिटते हुए वैभव और अनीति के प्रासादको ढहता देख कर। यह है सिखों और हिन्दुओंका काश्मीर। नेश-नल कानफरेन्सकी स्वाभाविक प्रगतिसे जैसे वे मनही मन सुखी एवं सन्तुष्ट नहीं! पर साथही वे यह भी समझ बूझ रहे हैं कि जिस डोगराशाही पर उन्हें सिर्फ इस लिये नाज था कि वह 'हिन्दू' है, वह आज अपनेही पापों एवं जुल्म ज्यादतियोंके बोझसे बठी जा रही हैं।

इतिहासकी दृष्टिसे सिखों और हिन्दुओंको काश्मीर पर गर्व होना स्वा-भाविक ही है। काफी लम्बे अर्से तक दोनोंने यहां राज किया है। नील पुराणके अनुसार वर्त्तमान काश्मीर-तराई किसी समय झील थी, जो दक्ष-कन्या सतीके नाम पर 'सतीसर' कहलाती थी। इसीके बीचमें हरमूक पर्वत था, जिस पर हर (शिव) तपस्या करते थे। इस झीलमें अनेक राक्षस विचरा करते थे, जो आसपासके आदमियों एवं ऋषियोंको मार डाला करते थे। जब ब्रह्माके पौत्र कश्यप ऋषि इधर आये, तो वे राक्षसोंके अत्या-चारोंसे बड़े क्षुब्ध हुए। उन्होंने आर्या-वर्त्तके राजा चन्द्रदेवको यहां निमन्त्रित किया, जिसने अपने मित्र नीलनागकी सहायतासे राक्षसोंको पराजित किया (महाभारतसे १००-१५० वर्ष पूर्व) और ब्रह्मावर्त्त (वर्त्तमान कुरुक्षेत्र) तथा आर्यावर्त्त (वर्त्तमान कन्नौज) से लोगों को बुला कर यहां बसाया। २००० ई० पू० तक यहां कोई स्थायी और दृढ़ शासन कायम नहीं हो सका। २५० ई० पू० में अशोककी सेनाओंने इस पर विजय प्राप्त कर इसे अशोकके साम्राज्यमें मिला लिया। तदुपरान्त यहां बौद्ध मतका इस तेजीसे प्रचार हुआ कि ब्राह्मण तक बौद्ध प्रचारक बन गये। कुछ समय बाद इस पर ताजारोंका और फिर कनिष्कका अधिकार हो गया। इसके बाद हूणोंने आक्रमण कर इसे खूब लूटा—सताया। हुएनसङ्गके कथनानुसार हूण-राजा मिहिरगुलने यहां बड़े जुल्म किये। इसके कई वर्ष बाद फिर यहां हिन्दुओंका राज कायम हुआ। इनमें ललितादित्य (७१५-५२ ई०) और अवन्तिवर्मन ८१३-५५) ने काश्मीरकी काफी उन्नति की और यहां अनेक प्रसिद्ध मन्दिर आदि बनवाये। १४ वीं शताब्दी तक यहां हिन्दुओंका राज रहा, जिसके बाद फिर दमरा और तांत्रिय जातियोंके आक्रमण आरम्भ हुए।

१३२२ ई० में जुल्फी कादिर खांने काश्मीर पर हमला किया और भीषण लूट-मारके बाद ५० हजार ब्राह्मणोंको कैदी बना कर ले गया। फिर मोहम्मद गजनवीने हमला किया। १३४१ ई० में काश्मीरकी महारानी कुटारानीने, जिसका पति तातारी-आक्रमणसे भयभीत होकर तिब्बत भाग गया था, अपने मन्त्री शाह मिर्जा द्वारा षडयन्त्र रच कर राज्य पर अधिकार कर लिये जाने और उससे विवाह करनेके कुचक्रको व्यर्थ करनेके लिये आत्म हत्या कर ली। इसके बाद काश्मीरमें शाह मिर्जाके उत्तराधिकारी कई सुल्तानोंका राज रहा। फिर कुछ समय तक चाकों (शिया) का राज रहा। फिर अकबरकी सेनाओंने जीत कर काश्मीरको मुगल साम्राज्यमें मिला लिया। मुगल-शासन में काश्मीरमें शान्ति स्थापित हुई और इसकी काफी समृद्धि भी हुई। १७५० में अफगान शाह अहमदशाह दुर्रानीने इस पर कब्जा कर लिया। १८१९ में रणजीतसिंहकी सेनाने इस पर कब्जा किया। १८४६ में सिखोंको पराजित कर ईस्ट-इण्डिया कम्पनीकी सेनाओंने इसे ७० लाखमें जम्मूके डोगरा-राजा गुलाब संहको बेच दिया। गुलाबसिंहकी मृत्यु (१८५७ ई०) के बाद रणबीरसिंहने और उसके बाद प्रतापसिंह (१८८५) ने राज्यमें कई सुधार किये। वर्त्तमान महाराज हरीसिंह (१९२५) का शासन प्रतिगामी और परम्परानुवादी शोषणके सिवा अन्य किसी दृष्टिसे उल्लेखनीय नहीं।

उपर्युक्त विवरणसे हमें दो बातोंका सूत्र मिलता है: पहली तो यह कि कश्यप ऋषि ब्रह्मावर्त्त और आर्यावर्त्तसे जिन ब्राह्मणोंको काश्मीर ले गये थे, वे बौद्ध, अफगान, तातार, सिख, हिन्दू (डोगरा) आदि शासनोंमें भी पुरोहितके रूप में राज-काजसे सम्बन्धित रहे। दूसरी यह कि सिख शासनके समय तथा उसके बादमें जो सिख सैनिक और नागरिक आदि काश्मीर गये, वे वहीं बस गये। इन दोनों जातियोंके लोगोंने न सिर्फ काश्मीरको अपना घरही बनाया, बल्कि पराजित और अधिकारच्युत होने पर भी उस पर अपना विशेष अधिकार समझते रहे। आज भी काश्मीरकी ऊंची और प्रधान नौकरियां ब्राह्मणोंके हाथोंमें हैं तथा पुलिस और सेनामें सिख काफी हैं। इसके विपरीत तातार, अफगान, चाक; शिया आदि मुस्लिम जातियों-ने—जिनके उत्तराधिकारी, गुमास्ते, सैनिक आदि आक्रमणकी सफलताके बाद काश्मीर में ही बस गये—काश्मीर पर आक्रमण कर लूट-मार और अपहरण आदि किया, जिससे हिन्दुओं और सिखोंमें उनके प्रति दुर्भाव और अविश्वास पैदा हो गया। यह दुर्भाव और अविश्वास आज भी किसी हद तक मौजूद है। यह केवल ब्राह्मण और सिख नागरिकों अथवा

अधिकारियोंमें ही हो, ऐसी बात नहीं है, काश्मीरके अनेक राजाओंके आचरणोंमें भी इसकी झलक दिखाई देती है। इस स्थितिमें यदि मुस्लिम-जनतामें जिसकी आबादी ६७ से ९४६ प्रतिशत तक है डोगरा-शासन और उसका बाहन बने हिन्दुओं और सिखोंके प्रति क्षोभ एवं असन्तोष हो, तो आश्चर्यकी क्या बात है ?

तथा कथित कबाइलियोंके आक्रमणोंके दौरानमें हुई लूट-मार, बलात्कार और अपहरणके जो विवरण हमारे सामने आये, उनसे यह स्पष्ट है कि इनके शिकार सिख और हिन्दूही ज्यादा हुए हैं। पर इसका कारण सर्वथा इतिहासमें खोजना भी भूल होगी। हमें इसके दो कारण बताये गये, प्रथम तो यह कि आक्रमणकारी पूर्वी पंजाब, दिल्ली और जम्मूमें सिखों तथा हिन्दुओं द्वारा मुसलमानों पर हुए जुल्मोंका बदला लेने आये थे। दूसरा यह कि पैसा और जेवर वगैरह (और) स्त्रियां भी !) सिखों और हिन्दुओंके पासही ज्यादा थीं। जो भी हो, इससे मुसलमानोंके प्रति हिन्दुओं और सिखोंके दुर्भाव एवं अविश्वासमें वृद्धि ही हुई और कई नेक दिल मुसलमानोंके स्थिति संभालनेके प्रयत्न भी बेकार सिद्ध हुए। यह देखकर कि हम हिन्दुस्थानसे आये हैं और हिन्दू हैं (यद्यपि हमने इस तरहसे न कभी सोचा और न किसीसे कुछ कहा ही), कई हिन्दुओंने हमसे कहा—"आपने यहां कुछ देखा सुना ? इन मुसलमानोंका कोई भरोसा नहीं। ये फिर हमपर राज करनेके स्वप्न देख रहे हैं।" हमारे यह पूछनेपर कि कैसे, हमसे कहा गया—"मुसलमान मुसलमान सब एक सलतनतमें रहना चाहते हैं। ये सिर्फ पाकिस्तानमें शामिल ही नहीं होना चाहते बल्कि इनका खयाल है कि बहुसंख्यक होनेके कारण काश्मीर इन्हें मिलना चाहिये और उसपर इन्हींका शासन होना चाहिये। हम लोगोंकी अब यहां खैर नहीं।" हमारे मुंहसे यही निकला—'अगर वाकई आपकी यहां खैर नहीं और भाग जाना ही आपका एकमात्र कर्त्तव्य है, तब तो भारत-सरकार शायद बेवकूफ है कि काश्मीरको बचानेके लिये ४ लाख रुपये रोज खर्च कर रही है।"

हमें ताज्जुब इस बातपर हुआ कि जो सिख और हिन्दू राज्यकी बड़ी बड़ी नौकरियां हथियाये बैठे हैं और जिन्होंने बहुसंख्यक मुसलमानोंको उनके न्याय अधिकार दिये जानेके बदलेमें उनपर होनेवाली जुल्म ज्यादतियोंका इसलिये समर्थन किया है कि वे विधर्मियोंके साथ हुए हैं, वे ही आज मुसलमानोंकी शिकायतें करते हैं। काश्मीरके महाराजाने वहांकी गरीबीको दूर करने या जनताको नागरिक अधिकार देना तो दूर रहा, उल्टे उसपर नये नये कर लगाये और उन्हें फौजें भेजकर वसूल करवाया ! न मालूम कितने तरहकी बेगारें आज भी बाकायदा ली जाती हैं। कई जगह (उदाहरणार्थ पुन्छके एक गांवमें) तो कहते हैं कि किसी एक व्यक्ति द्वारा कर देनेकी असमर्थता प्रकट की जानेपर डोगरा-फौजने समूचा गांव ही फूंक दिया। ऐसे गांवके मुसलमानोंने यदि कबाइलियोंका साथ दिया या उनके साथ मिलकर हिन्दुओं और सिखोंको लूटा, तो इसमें किसका दोष है ? आखिर मुसलमान भी इन्सान हैं और उन्होंने भी एक अर्से तक काश्मीरपर राज किया है। अगर वे डोगराशाहीकी जुल्म ज्यादतियोंसे नजात पानेका सोचें, तो उसमें अस्वाभाविक क्या है ?

भारतमें जैसी राजनीति मुस्लिम लीग की रही है, वैसी ही काश्मीरमें अधिकांश हिन्दुओं और सिखोंकी भी रही है। जिस प्रकार भारतमें स्वाधीनताके लिये लड़नेवालोंमें अधिकांश हिन्दू कांग्रेसी ही थे और लीगी उनका विरोध करनेके पुरस्कार स्वरूप सरकारसे कुछ राजनीतिक टुकड़े पा जाते थे, उसी प्रकार काश्मीरमें भी नागरिक अधिकारों एवं जिम्मेदार हुकूमतकी मांग अधिकांश मुसलमानोंने ही की (क्योंकि डोगराशाहीके अभिशापका अधिकांशमें उन्हींको शिकार होना पड़ा है) और हिन्दू तथा सिख (जो अपनी आबादीके अनुपातसे कहीं अधिक नौकरियां हथियाये बैठे हैं) बराबर राजके साथ ही रहे। उन्हें स्वस्थ राजनीतिके अभावमें अपने अधिकारों, सुख, शान्ति और नौकरियोंके लिये किसी संगठित जन-मोर्चेकी बजाय महाराजाकी कृपापर ही अधिक भरोसा था। हमसे कई मुसलमानोंने यह शिकायत की कि यहांके हिन्दू और सिख इसी तरजीहके कारण कभी किसी राजनीतिक तहरीकमें काफी संख्यामें शरीक नहीं हुए। इससे मुसलमानोंका उनके प्रति रोष होना स्वाभाविक ही है। पर जहां-जहां कबाइलियोंका अधिकार हुआ और महाराजाका हाथ हिन्दुओं एवं सिखोंकी रक्षा नहीं कर सका, वहां वे स्थानीय मुसलमानोंकी दयापर ही छूट गये। कुछको इस स्थितिमें अपने जान-मालसे हाथ धोना पड़ा और कुछकी स्थानीय आबादीने अपने प्राणोंको जोखिममें डालकर भी रक्षा की। ऐसे अनेक हिन्दू और सिख, जो कुछ तो मजबूरन और कुछ बादमें स्वेच्छासे मुसलमान हो गये हैं, अब वापस अपने धर्ममें आनेको तैयार नहीं। उन्हें भय है कि गैरमुस्लिम होकर वे अधिक दिन मुस्लिम-गांवोंमें सुरक्षापूर्वक नहीं रह सकेंगे।

काश्मीरके गांवोंकी लूटका वर्णन, जो बहुत कुछ पत्रोंमें आ चुका है, यहां असामयिक ही नहीं अरुचिकर सा भी प्रतीत होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जब कबाइलियोंने मुजफ्फराबादपर आक्रमण किया, तो उनका मुख्य उद्देश्य हिन्दुओं और सिखोंको ही लूटना-मारना था। इसीलिये उनका नारा था 'सरदारका सर और हिन्दूका जर !' हमारे सामने ऐसे दुखद उदाहरण आये, जहां (विशेष तौरपर मुजफ्फराबाद और बारामूलामें) कई स्थानीय मुसलमानोंने लीगी गुर्गोंके बहकावेमें आकर कबाइलियोंका साथ दिया। अनेक स्थानोंमें लूटमें भी वे शामिल थे। लीगके हिमायती जिस डोगरा

शाहीसे मुसलमानों को उद्धार करनेका दम भरते हैं, उसी डोगराशाहीके टुकड़ोंपर पलनेवाले अनेक लीगी अधिकारियोंने गैरमुस्लिम जनताको लूटने-मारनेकी पाकिस्तानी योजनाकी रूप रेखा बनानेमें मदद की है और हमला होनेपर न सिर्फ स्वयं ही, बल्कि अपने अमलेके हाथ कबाइलियों के साथ शिरकत भी की है। रेवेन्यू, जङ्गलात और पुलिस विभागोंके अनेक उच्च पदाधिकारियोंको इन जुरमोंमें गिरफ्तार किया गया है। अबतक उनपर कैसा मुकदमा चलाया जायगा या उन्हें क्या सजा दी जायगी इस सम्बन्धमें हमारे सुननेमें विशेष कुछ नहीं आया।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन मुसलमानोंकी संख्या अधिक नहीं है; पर इनके जुरमोंका गुरुत्व काफी बड़ा है। जिन ऊंचे और जिम्मेदार पदोंपर ये थे, उनके अधिकारोंका सर्वथा दुरुपयोग कर और जिस राज्यके टुकड़ोंपर ये चलते रहे हैं, उसकेप्रति नमकहरामी कर इन्होंने काश्मीरके लोगोंमें हिन्दू मुस्लिम विद्वेषका वह जहर भरा है, जिसके दुष्परिणामकी अभी केवल कल्पनाही की जा सकती है। इन्हींके जहरीले प्रचारका फल नेशनल-कान्फ्रेंसको आज भोगना पड़रहा है। जिन स्थानों को भारतीय सेनाने कबालियोंको भगाकर वापस अपने अधिकारमें ले लिया है, वहां लीगके अनेक प्रचारक हिन्दुओंके वापस बसाये जानेमें तरह-तरहकी बाधाएं खड़ी कर रहे हैं। एक तो लूट-मारके कारण अपने घर-गांव छोड़कर भागे हुए हिन्दू और सिख स्वयं अपने पुराने स्थानोंमें जाकर फिर आबाद होनेको विशेष उत्सुक एवं राजी नहीं; फिर कतिपय मुसलमानोंके रुखसे तो वे और भी अनिच्छा दिखाने लगे हैं। कई जगह स्थानीय मुसलमानोंने अपने हिन्दू और सिख पड़ोसियोंका जो माल लूटा है, वह वापस करने को वे तैयार नहीं। यदि नेशनल कांफ्रेंस, जो आजकल काश्मीरका अन्तरिम शासन संभाले हुए है, उन्हें लूटका माल लौटानेके लिए मजबूर या राजी करती है,तो लीगकी तरफसे कहा जाता है कि महाराजाके हिन्दू नौकर मुसलमानोंपर असाधारण जुलम ज्यादतियां कर रहे हैं जिससे मुसलमानोंको काश्मीर छोड़नेपर मजबूर होना पड़ रहा है। पर सचाई यह है कि इन बदमाश और लुटेरे मुसलमानोंके साथ भी नेशनल कांफ्रेंस बड़ी नरमी और समझदारीसे पेश आरही है। हमने जब उसके कुछ मंत्रियोंसे इस रुखके पुनर्आवास व्यवस्थामें बाधक होनेकी बात कही, तो वे बोले कि निःसंदेह इससे पुनर्आवासका कार्य उस गतिसे तो नहीं हो पा रहा जिससे कि होना चाहिये। पर हम मुसलमानोंके साथ इस लिये भी जान बूझकर सख्ती नहीं कर रहे कि कल यदि जनमत-संग्रह हो, तो उन्हें अपने सहधर्मियोंको बरगलाने का यह नया बहाना न मिले! इससे एक ओर जहां हिन्दू और सिख नेशनल कांफ्रेंसकी नीतिसे जरा असन्तुष्ट हैं वहां मुसलमानोंपर कोई खास असर पड़ा नहीं देखा गया। उनकी राजनीतिके पीछे एक शरारत भरी स्वार्थ-नीति है जिसका सचाई, ईमानदारी और भलमंसाहतसे कोई वास्ता नहीं। नेशनल कांफ्रेंसको जिसे एक ओर महाराजाकी संकीर्णताके कारण अभी पूरे शासनाधिकार भी प्राप्त नहीं हैं और दूसरी ओर जनमत संग्रहमें मुसलमानोंके विद्रोहके डरसे उनके साथ जायज सख्ती भी नहीं की जा रही, जिससे हिन्दुओं एवं सिखोंमें असन्तोष ही नहीं, कांफ्रेंसके मुस्लिम-पक्षीय होने तककी बात कही जा रही है। इस समय जिन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ रहा है उनकी बाहरके लोग ठीक ठीक कल्पना भी नहीं कर सकते। आज उसके सामने दो विकल्प हैं। मुसलमानोंपर सख्ती करहिन्दुओं और सिखोंका लूटा हुआ माल वापस दिलाना या काश्मीरको पाकिस्तानमें जानेसे बचाना। पर इसका यह मतलब नहीं कि हिन्दुओं और सिखोंका लूटा हुआ माल मुसलमानोंसे वापस दिलानेकी कांफ्रेंसने कोई चेष्टा ही न की हो। यह माल कबाइलियों द्वारा लूटे गये मालका एक बहुत छोटासा अंश ही था। लोगोंको समझा बुझाकर इसे वापस दिलानेके लिये कांफ्रेंसने स्तुत्य प्रयत्न किया है और इसमें वह सफल भी हुई है। इसी प्रयत्नके फलस्वरूप अब कई स्थानोंपर मुसलमान स्वयं आगे आकर लूटका यह माल लौटा रहे हैं।

काश्मीरसे लौटनेके बाद एक प्रश्न जो अकसर हमसे पूछा गया और आज भी पूछा जाता है, वह यह है कि काश्मीरमें यदि जनमत संग्रह हो, तो वह भारतके साथ रहेगा या पाकिस्तानके साथ ? जो कुछ हमने काश्मीरमें देखा-सुना और लोगोंसे पूछ पाछकी उसके आधारपर हमें तो अधिकांश लोग नेशनल कांफ्रेंस और शेख अब्दुल्लाके पक्षमें ही नजर आये। जैसा कि हम पहले कह आये हैं अर्थनीतिक दृष्टिसे काश्मीरकी अस्तित्व-रक्षाके लिये हिन्दुस्तानके साथ उसका सम्बन्ध रहना जरूरी सा हो जाता है। यह मसला साम्प्रदायिक कदापि नहीं है। पर एक खतरा नजर दिखाई देता है। वह यह कि लीगके गुप्त और प्रकट रूपसे होने वाले जिस प्रचार कार्यका हमें काश्मीरमें परिचय मिला और जिसका उत्तर-पश्चिम सीमा-प्रान्तमें प्रयोग किये जानेकी बात हमने सुनी है, उससे हमारी यह आशंका है कि असत्य और अर्द्धसत्य द्वारा लीग वाले काश्मीरके भोले भाले लोगोंको धोखा शायद दे सकें। उदाहरणके तौरपर यदि उत्तर पश्चिम सीमान्तकी तरह काश्मीरमें भी वे मतदाताके हाथपर कुरान रखकर उससे कहें कि यह कुरान और नबीको रजील करने वाले काफिरोंके साथ रहना चाहते हैंया अपने हम मजहब पाकिस्तानियोंके साथ; तो तज्जुब नहीं कि अज्ञ और धर्मभीरु ग्रामीण मुसलमान इस प्रोपेगंडाकी शरारतके शिकार हो जाये साथही हमें यह भी विश्वास है कि नेशनल कांफ्रेंस इस शरारतसे वहांके मुसलमानों को बचानेकी चेष्टा अवश्य करेगी। इसके लिये कांफ्रेंसके हाथ मजबूत किये जाने चाहिये। और वह तभी संभव है जब कि शासनकी पूरी जिम्मेदारी और पूरे अधिकार कांफ्रेंसको सौंप दिये जायं। आजतो महाराजा और भारत सरकारका मतभेद तथा आशंकाएं इसमें बाधक सिद्ध हो रही हैं। पता नहीं,इनसे वे कब मुक्त होंगे

कल्पना और आचरण

प्रो. लालजी राम शुक्ल एम. ए. बी.टी.

कल्पनाका आचरणसे घनिष्ट सम्बन्ध है। जिस प्रकारकी कल्पना मनुष्य अपने मनमें बार बार लाता है उसका आचरण उसी प्रकारका हो जाता है। कल्पना बौद्धिक विचारसे भिन्न वस्तु है बौद्धिक विचार वाह्य जगत और वास्तविकता से सम्बन्ध रखता है, कल्पना अन्तर जगतसे सम्बन्ध रखती है। उसका उद्गम स्थान मनुष्य का भीतरी मन है। जिस प्रकार बुद्धि के द्वारा मनुष्य वास्तविक जगत के उपयुक्त अपना आचरण बनाने की चेष्टा करता है, इसी प्रकार कल्पना के द्वारा मनुष्य अपने आन्तरिक जीवन से समता स्थापित करता है। कल्पना का प्रधान कार्य अचेतन मन की भावनाओं को चेतना की सतह पर लाना है। पर यदि चेतना की सतह पर आई हुई कल्पनाओं का बुद्धि के द्वारा नियंत्रण न किया जाय तो वे आचरण में अवश्य प्रकाशित हो जावें।

अपनी कल्पना का सुधार करना अपने स्वभाव का सुधार करना है। कल्पना का सुधार कल्पना के दमन मात्र से नहीं होता। दमनसे कल्पना कभी कभी और भी प्रबल हो जाती है। जब कल्पना और इच्छा शक्ति में विरोध हो जाता है तो जितना ही अधिक कल्पनाको दबाया जाता है कल्पना उतनी ही अधिक प्रबल होती जाती है। कल्पना के दबानेसे प्रयत्न से इच्छा शक्ति इतनी निर्बल हो जाती है कि मनुष्य को अपने आप पर विश्वास नहीं रहता और वह जिधर कल्पना ले जाती है उसी ओर बह जाता है। मानसिक रोगकी अवस्थामें कल्पना प्रबल हो जाती है। और इच्छा शक्तिका उसपर नियंत्रण नहीं रहता।

कल्पना में परिवर्तन प्रति अभ्यासके द्वारा किया जा सकता है। कल्पनाओंका स्रोत मनुष्यके भाव हैं। ये भाव मनुष्यके अचेतन मनमें स्थित रहते हैं। भावोंमें परिवर्तन होनेसे कल्पनामें परिवर्तन हो जाता है। जिस व्यक्तिके प्रति हम शत्रुता का भाव रखते हैं उसके सम्बन्धमें अनेक प्रकारकी अभद्र कल्पनाएं हमारे मनमें आती हैं, और जिसके प्रति हमारा मैत्री भाव है उसके सम्बन्धमें कल्याणकारी कल्पनायें हमारे मनमें आती हैं। अपने शत्रुको हम बुरा ही अपनी कल्पनामें देखते हैं और अपने मित्र को भला देखते हैं। ये भाव सदा स्थानान्तरित होते रहते हैं। शत्रुके प्रति सोचे गये अभद्र विचार अपने ऊपर अथवा अपने मित्रके ऊपर आरोपित हो जाते हैं फिर हमारे मनमें अनायास बुरे विचार अर्थात् अपनेही अकल्याणके विचार आने लगते हैं। हम अपने आपको इस प्रकार निकम्मा बना लेते हैं अथवा आत्म-विनाश कर लेतें।

शत्रु भावनाका बिनाश मैत्री भावना से होता है। जिस व्यक्तिके प्रति हमारा मैत्री भाव है उसके प्रति सदा शुभ कल्पनायें हमारे मनमें आती हैं और हम अनायास उसके प्रति कोई भलाईका काम करने लगते हैं। यदि हम किसी व्यक्तिके मनमें दूसरे व्यक्तिके प्रति शत्रु भावकी उत्तेजना करदें तो थोड़े ही दिनमें उसके आचरण में भी परिवर्तन हो जायगा। भावके बदल जाने पर कल्पना बदल जाती और जब कल्पना बदल जाती है तो आचरण भी बदल जाता है।

मनकी स्वस्थ अवस्थामें हमारी कल्पना हमारे नियंत्रणमें रहती है। हमारी कल्पनायें अभद्र न होकर कल्याणकारी होती हैं मनकी अस्वस्थ अवस्थामें मनकी स्थिति ठीक इसके प्रतिकूल होती है। कल्पनामें सुधार प्रति भावनासे जिस प्रकार होता है इसी तरह उसमें सुधार कल्पनकी शक्तिरचनात्मक कार्य में लगानेसे भी होता है। मनुष्यका मन जब निकम्मा होता है तो उसमें अनेक प्रकारके बितर्क अर्थात् पापकी कल्पनायें आती हैं। इसके प्रतिकार आनापान सति का अभ्यास बताया है। अनापान सति वितर्कों का निरोध होता है पर एस प्रकारके निरोधसे उस मानसिक शक्तिका सदुपयोग नहीं होता जो उन वितर्कोंका कारण है। सम्यग सकल्पसे इस मानसिक शक्तिका शोध होता है। इसके अतिरिक्त सम्यग कायाम और मैत्री भावनाका अभ्यास भी वितर्कोंकी शक्तिका शोध करता है।

मनुष्यको अपनी कल्पनाओंके विषय ने सदा अचेत रहना चाहिये। अपनी कल्पनाओंके प्रति जागरूक रहना सम्यग स्मृति कहलाता है। अपने मनमें जो व्यक्ति भोग विलासकी कल्पनाएं लाता है, वह भोग विलास करने लगता है। इसी प्रकार जो किसी शत्रुसे बदला लेनेकी कल्पना अपने मनमें बार बार लाता है वह शत्रुसे बदला लेनेके काममें लग जाता है। जब कल्पना प्रबल हो जाती है तो वह इच्छा शक्तिके नियंत्रणके बाहर हो जाती है। अतएव आत्म—कल्याण चाहने वाला व्यक्ति कल्पना पर ऐसा नियंत्रण रखता में जिससे वह किसी शुभ काममें ही अपने आपको लगावे।

मनुष्यके मनके दो प्रबल भाव काम और क्रोध हैं। यही हमारी अधिक कल्पनाओंका संचालन करते है। ये राग और द्वेषके परिणाम हैं। काम भावनासे उत्तेजित कल्पनामें काम बिषयके पदार्थ को सुन्दर रूपमें चित्रित करती हैं। मनुष्य पहले कई वार कल्पनामें विषय भोग करता है पीछे वह वास्तविक विषय भोग मे लगता है। यदि कोई व्यक्ति कल्पनामें विषय भोग को वीभत्स रूपमें चित्रित करे तो उसे बिषय भोग करनेकी इच्छा ही न होगी। मनुष्यकी काम वासनाको मारनेके लिये भगवान बुद्धने अशुभ भावनाका अभ्यास बताया है। अशुभ भावना कामके द्वारा उत्तेजित कल्पनाओंको शान्तकर देती है। इससे काम क्रीड़ा करने की इच्छा मर जाती है शरीर की अमंगलताका चिन्तन उसके प्रति हमारे मनमें विकर्षण उत्पन्न करता है। अशुभ भावनाके अभ्याससे सुन्दर पदार्थ असुन्दर दिखाई देने लगता

है। सुन्दरताके प्रति ही मनुष्यके मनमें आकर्षण होता है, असुन्दर पदार्थके प्रति आकर्षण नहीं होता। काम भावसे विमुक्त होनेके लिये शरीर की वीभत्सता पर बार-बार चिन्तन करना और अपनी कल्पनामें उसके असन्दर रूपको देखना आवश्यक है।

जिस प्रकार काम वासनाका प्रतिकार अशुभ भावनासे होता है, क्रोधका प्रतिकार मैत्री भावनासे होता है। अपने शत्रुके सदगुणोंपर विचार करना, उसके कल्याण की इच्छा करना, मैत्री भावनाका अभ्यास है। शत्रुका विनाश चाहना स्वाभाविक है, उसके कल्याणकी इच्छा करना मानव स्वभावके प्रतिकूल है। पर मनुष्यमें अपने स्वभावपर विजय प्राप्त करनेकी भी योग्यता है। मनुष्यका स्वभाव अभ्यासपर निर्भर करता है। मनुष्य अभ्यासद्वारा अपने आपमें चाहे जैसा परिवर्तन कर सकता है। यदि वह चाहे तो सभी संसारको मित्र रूपमें देख सकता है और उनके प्रति मित्र जैसा ही कार्य कर सकताहै। यही मानव जीवनका परम पुरुषार्थ है।

जब मनुष्य पहले पहल किसी विनाश कारी कल्पनाको अपने मनमें लाता है तो उसे आनन्द आता है। यह विनाश कारी कल्पना किसी दूसरे व्यक्तिके प्रति होती है। जब मनुष्य इस कल्पनामें अध्यस्त हो जाती है तो वह आत्म विनाशका कारण बन जाता है। जिस तरह अमैत्री भावना का अभ्यास करने वाला व्यक्ति दूसरेका विनाश चाहता है और अपने मनमें अनेक अभद्र कल्पनायें उसके प्रति लाता है वैसे ही ऐसा व्यक्ति अपने प्रति भी अनेक अभद्र कल्पनायें मनमें ले आता है। ये कल्पनायें अब उसके रोकने से नहीं रुकतीं उसकी इच्छाके प्रतिकूल भी वे मनमें आती रहती हैं। कभी-कभी ऐसा व्यक्ति आत्म हत्याकी कल्पना अपने मनमें लाता है। जब ये कल्पनायें प्रबल हो जाती हैं तो वह आत्महत्याभी कर बैठता है। इसप्रकार कल्पनाओंका अनियंत्रण आत्म बिनाश का कारण हो जाता है प्रत्येक अवांछनीय भावनाका निराकरण प्रति भावनासे होता है। जब हमारे मनमें अमैत्री भावनाके अधिक विचार करने लगें तो हमें मैत्री भावनाका अभ्यास करना उचित है। आत्म विनाशके विचारों अथवा कल्पनाओंका निवारण भी मैत्री भावनाके अभ्याससे हो जाता है। यह मैत्री भावनाका अभ्यास दो प्रकारसे होता है, पहले सभी लोगों के प्रति उदारताके भाव मनमें लाना और आपत्तियोंमें पड़े लोगोंकी सहायता करना और दूसरे अपने लिये सभी घटनाओंको शुभ मानना। सभीका कल्याण हो —इस बिचार का अभ्यास करना दूसरोंके प्रति मैत्री भावनाका अभ्यास है और जो कुछ भी होता है हमारे कल्याणके लिए होता है इस बिचारका आभास करना आत्म-मैत्री का अभ्यास है। जब मनुष्य इस प्रकारके बिचारोंमें स्थिर मन हो जाता है ना उसके मनमें अभद्र कल्पनायें नहीं आती हैं आत्म बिनाश नहीं करता।

हमारी कल्पनायें किसी भी व्यक्तिके मनमें शत्रुता अथवा मित्रताके भावों को उत्तीजित करती हैं। यदि किसी व्यक्तिका चित्र बनाकर हम उसके विषयमें सदा यह सोचें कि वह भला मनुष्य है तो उसके स्वभावमें अज्ञात रूपसे मौलिक परिवर्तन हो जावेगा, वह नित्य प्रति भला होते जावेगा। इसके प्रतिकूल यदि हम किसी व्यक्तिके विषयमें नित्य प्रति सोचते रहे कि वह बहुत ही बुरा व्यक्ति है तो धीरे धीरे और भी बुरा होते जाता है। हमारे बिचार उसके अचेतन मनको प्रभावित करते हैं और जैसा हम बसे हम अपनी कल्पनामें चित्रित करते हैं वह वैसाही हो जाता है इस प्रकार हम अपसी कल्पना से दूसरे लोगोंके विचार और आचरणको भी परिवर्तित कर देते हैं। फिर जैसे विचार हम दूसरे लोगोंके प्रति भेजते हैं, वे भी वैसे ही विचार हमारे प्रति भेजते हैं। यदि हम दूसरे लोगोंके प्रति भले विचार भेजते हैं तो दूसरे लोग भी हमारे लिये कल्याणकारी विचार भेजते हैं। ये विचार हमारे मनमें शुभ भावनायें और कल्पनायें उत्पन्न करते हैं। और इसके कारण हमारे आचरणमें सुधार होता है। इसी प्रकार विनाशकारी विचार दूसरे के मनमें प्रभावित करनेके पश्चात् अपने ही मनको प्रभावित करने लगते हैं। वे वैसे ही विचार दूसरे लोगोंके मनमें हमारे प्रति उत्तेजित करते हैं जैसे हम उनके विषयमें लाते हैं। जैसे हम अपने मनमें उनकी बुरी कल्पना करते हैं वे भी वैसी ही बुरी कल्पना हमारी अपने मनमें लाते हैं। इस प्रकार दोनोंका पतन होता है।

अपनी कल्पनाका सुधार करना अपने जीवनका नव निर्माण करना है। जिस मनुष्यको सहजमें भली कल्पनायें आती हैं वह वास्तविक रूपसे सुखी है। कल्पनाके अनुसार न केवल मनुष्यका आचरण परिवर्तित हो जाता है वरन् उसकी मुखाकृति और स्वास्थ्य भी परिवर्तित हो जाता है। अतएव कल्पनाका सुधारना भारी महत्वक कार्य है।

——

१६॥) में ज्वेल वाली रिष्ट वाच

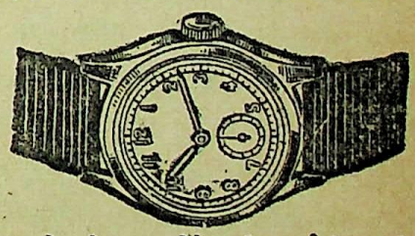

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी
गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)
रेक्टेंगुलर कभी या टोनो शेप
क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।
एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

कलाकार

कहानी

ले०—श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी

सारसकी जोड़ीकी भांति वे दोनों साथ-साथ रहते। बाजारमें, सैर-सपाटेमें होटलमें—गरज यह कि जहां देखो दोनों मौजूद। किसी राष्ट्रीय नेताका भाषण हो रहा हो, तो दोनों साथ साथ ही पहुंचते। कहीं कोई कवि सम्मेलन अथवा साहित्य-गोष्ठी हो, तो दोनों उपस्थित। तरुणाईके ज्वार पर दोनों बहे जा रहे थे। एककी पोशाक थी ढीला ढाला पायजामा और ढीला-ढाला ही कुरता। दूसरेकी पोशाक थी दूध जैसी श्वेत साड़ी तथा गहरे नीले, लाल या बादामी रङ्गका ब्लाऊज। सिर दोनोंके खुले रहते। बाल भी दोनोंके काफी लम्बे सजे-संवारेसे लटकते रहते और तरुणीकी गूंथी बेणी उसकी पीठ पर नागिनकी तरह कमर तक लहराती रहती। एक था कवि, दूसरी थी कवियित्री।

जब कभी किसी कवि-सम्मेलनमें इनका कविता-पाठ होता, दर्शक मन्त्र मुग्धसे रह जाते। एक कोयलकी तरह कूकती, तो दूसरा तानसेन प्रतीत होता। तालियोंकी गड़गड़ाहट और 'वाह-वाह' का समां बंध जाता। तरुणकी कविता यदि श्रोताओंको नन्दन-बनमें पहुंचा देती, तो तरुणीकी कविता स्वर्गङ्गाकी लहरों पर बहा देती।

कितने ही साहित्यिकोंको मनही मन इस दम्पति कविके प्रति ईर्ष्या होने लगती। कोई कहता, यह सौभाग्य सभीको प्राप्त नहीं होता। कोई कहता, मेरी पत्नी भी यदि कामिनीकी तरह कवियित्री होती, तो मैं भी कंचन जैसा सुखी होता।

कामिनी और कंचन! कैसा कवित्वपूर्ण नाम है। इनका नामकरण जिन पण्डितोंने किया होगा वे सचमुच बड़े विद्वान और भविष्य-पारखी रहे होंगे। लेकिन इस नामकरणमें किसी-किसीको सन्देह होता। कहते, यह नाम पण्डितोंने नहीं इन्होंने स्वयं रखा होगा। जो कुछ भी हो, आज हम लोग एक दूसरेके बहुत निकट हैं। एक दिन था जब ये दोनों ही मेरे यहां मेहमान होकर आये थे। कैसे आये, क्यों आये और परिचयकी परिधिमें मैंने इन्हें कैसे पाया, यह कहानी कहनेके लिये कुछ साल पहलेका तारतम्य छूना होगा।

उन दिनों हमारे शहरमें एक बृहत कवि-सम्मेलनका आयोजन किया गया था। यों तो प्रयागमें चाहे जब और चाहे जहां कवि-सम्मेलन होते रहते हैं, लेकिन वह कवि-सम्मेलन अखिल भारतीय स्वदेशी प्रदर्शनीके तत्वावधानमें आयोजित किया गया था। दूर-दूरसे विख्यात कवियोंको आमन्त्रित किया गया। स्थानीय कवियों तथा पत्रकारोंसे उनके परिचित कवियोंके नाम पते पूछे गये। मैंने इस अवसरका लाभ उठाते हुए अपनी परिचित सहेली कामिनी और उसके पति कंचनका नाम पता बतला दिया। इस दम्पति कविके यथा समय निमन्त्रण और इण्टर क्लासका रेल-भाड़ा भेज दिया गया। मैंने भी कामिनीको पत्र लिख दिया कि वह अवश्य आवें।

कामिनीसे मेरा परिचय पत्र व्यवहार की परिधिसे थोड़ासा आगे बढ़ चुका था। दो साल पहले की बात थी। झांसीमें अखिल भारतीय महिला सम्मेलनमें मुझे विशेष निमन्त्रण पर जाना पड़ा था। वहां की कार्यकर्त्रियोंमें कामिनी स्वागताध्यक्षा थी। उसके कवित्वपूर्ण भाषणसे ही मैं उसकी ओर यथेष्ट आकर्षित हो चुकी थी। सम्मेलनके अन्तमें कवियित्रियोंकी एक गोष्टी हुई। उसमें मैंने भी कविता पढ़ी और उसने भी। कविता-पाठका जहां तक सम्बन्ध है, कामिनीकी तुलनामें मेरा कविता-पाठ हुआ नहीं कहा जा सकता। लेकिन अन्य कवियित्रियोंमें मेरे कविता पाठकी जितनी सराहना हुई, उतनी किसीकी नहीं। स्वभावतः गोष्ठीके बाद कामिनी मुझसे बहुत घुल मिल कर मिली। अपने निवास स्थान पर भी मुझे ले गयी। चाय पिलाई और परिचय का सूत्रपात हो गया।

इसके बाद सालमें कामिनीके दो-चार पत्र मेरे पास बराबर आते रहे। मैं भी उसे बराबर उत्तर देती रही। हम दोनोंकी इच्छा थी कि कभी पुनः मिलें, दो चार दिन साथ-साथ रहें और एक दूसरेको अधिक निकटसे देखें समझें।—

ऐसी स्थितिमें अखिल भारतीय स्वदेशी प्रदर्शनीके तत्वावधानमें होनेवाले कवि सम्मेलनमें स्वभावतः मैंने कामिनीको निमन्त्रित करानेका प्रयत्न किया।

कवि-सम्मेलन जिस दिन था ठीक उसी दिन तीसरे पहरकी गाड़ीसे कामिनी और कंचन प्रयाग आ रहे थे। स्टेशन पर मैं इन दोनोंको लेने स्वयं गयी। मेरे साथ मेरी छोटी बच्ची लता भी थी। लताका बड़ा भाई अपने स्कूलमें था और उसके बाबूजी अपने कार्यालयमें थे। यों लताके बाबूजी भी स्टेशन जा सकते थे। एक मासिक पत्रिकाके सम्पादक हैं वह। समयका बन्धन उन्हें दूसरोंकी तरह नहीं। लेकिन आज उनकी पत्रिकाके प्रकाशित होनेकी तिथि थी। इस दशामें उत्तरदायित्वका प्रश्न उनके सामने था। फिर सन्ध्या समय कार्यालयसे आज उन्हें कुछ जल्दी भी आना था। रातको कवि-सम्मेलनमें हम लोगोंको भी जाना था न! इस दशामें लताके साथ मैं अकेली ही स्टेशन गयी थी।

ठीक समय पर गाड़ी नहीं आयी। दूसरा युद्ध समाप्त हुए लगभग एक साल बीत चुका था। लेकिन युद्ध-जन्य अनेक अभिशापोंकी छाया दुनिया पर अबतक व्याप्त थी। युद्ध-कालमें रेलगाड़ियोंकी

संख्यामें जो कमी कर देनी पड़ी थी, वह अबतक वैसी ही थी। इससे जहां गाडियोंमें ठसाठस भीड़ रहती, वहां उनके समय पर पहुंचनेके नियममें भी बड़ा व्यतिक्रम हो चुका था। निर्धारित समयसे ठीक सवा घण्टेके बाद कहीं गाड़ी आयी। इस बीच लताका मिजाज नहीं बिगड़ा यह बहुत बड़ी बात थी। प्लेटफार्मकी चहल पहलमें उसका दिल बहला रहा। खिलौने बेचनेवालोंको वह ध्यान पूर्वक देखती रही। एक बड़ा-सा गुड्डा भी उसके लिये मैंने ले दिया था। इस गुड्डे-को पाकर लता प्रसन्नताका अनुभव करती रही। एक बात और : लताको केले बहुत पसन्द हैं। चार केले मैंने पहलेही उसे ले दिये थे। अपनी पसन्द-की यह चीज पाकर वह और भी अधिक प्रसन्न थी। बीच-बीचमें उसे मैं एक केला दे देती थी। केला खाकर और गुड्डा पाकर लताको गाड़ीके लेट होनेसे कोई झुंझलाहट नहीं हुई।

गाड़ीके पहुंचतेही इण्टर क्लासके डिब्बेकी तरफ मैं बढ़ रही थी। लतामेरी अंगुली पकड़े हुए मेरे साथ साथ चल रही थीं। लेकिन इण्टर क्लासके डिब्बे तक अभी मैं पहुंचने भी नहीं पाई थी कि सेकण्ड क्लासके एक डिब्बेसे कामिनी और कांचन दोनों उतर कर प्लेट फार्म पर कदम रखते हुए मुझे नजर आये। उनके पासमें पहुंचने भी नहीं पाई थी कि कामिनी मेरे पास आ पहुंची और लताको अपनी गोदमें उठाते हुए कहा—'आप इस बच्चीको लेकर घण्टों स्टेशन पर खड़ी रही होंगी बहिन! गाड़ी तो एक घण्टेसे भी ज्यादा लेट है आज। और लताका चुम्बन लेते हुए कहा—बेटी, यह केला मुझे खिलाओगी?

और लताने अपना आधा खाया हुआ केला कामिनीके मुखकी तरफ सच-मुच बढ़ा दिया। कामिनीने भी उस केले-को खाते हुए कहा—'बड़ी रानी बेटी हैं लता!'

अबतक कंचन भी हम लोगोंके पास आ पहुंचे। एक कुली उनका सामान लिये हुए कह रहा था—'जल्दी चलिये साहब!"

'अरे भाई, क्यों जल्दी कर रहा है।' कंचनने कहा—'सामान तो वजनदार है नहीं। रही पैसोंकी बात, सो दो आने तुझे अधिक मिल जायंगे। बस!'

कुली चुप रह गया। दो आने अधिक मिल जानेकी बातसे उसे शायद गहरा सन्तोष हो उठा था।

इसी समय केला बेचनेवाला वहांसे निकला। कामिनीने उसे अपने पास बुलाया और लतासे पूछा—'कितने केले खाओगी बेटी?'

'छः।' लताने कह दिया।

'अच्छा!' कामिनीने कहा और केले वालेसे डेढ़ दर्जन केले खरीद कर लता-को देते हुए कहा—'लो बेटी।'

ढेरसे केले पाकर लता फूली नहीं समायी। मैंने कहा—इतने केले आपने नाहक लिये बहिन!'

'नाहक!' कामिनीने दोहराया—'लता बेटी जितने खाना चाहेगी, खालेगी। बाकी हम लोग खा लेंगे।'

'अच्छा, चलिये चलें।' मैंने कहा, और गेटकी तरफ हम लोग बढ़ चले। गेटके बाहर पहुंच, एक तांगेपर कुलीने सामान रख दिया। कुलीको एक अठन्नी और एक दुअन्नी देते हुए कञ्चनने कहा—'लो भई!' कुली प्रसन्न मुद्रासे चला गया।

तांगेपर हमलोग सवार हुए। तांगा चल पड़ा। राहमें कञ्चनने पूछा—'भाई साहब आफिसमें होंगे?'

'हां, आज पत्रिकाकी प्रकाशन-तिथि है न?' मैंने कहा—'और शामको कुछ जल्दी भी आयांगे। इसीलिये स्टेशन नहीं आये।'

'स्टेशन तो आपको भी नहीं आना था।' कामिनीने कहा—'आजकल गाड़ियां ठीक समयपर नहीं पहुंचतीं। घण्टों विलम्बसे आती हैं। राह देखते-देखते परे-शान हो जाना पड़ता है।'

'और राह नापते नापते आनेवालोंकी क्या हालत होती है, यह न कहेंगी? मैंने कहा—'आप लोगोंको जो कष्ट हुआ होगा, वह मेरी परेशानीसे कहीं बहुत अधिक होगा।' फिर एक क्षण रुककर मैंने कहा—'और, सेकण्ड क्लासमें आने का कारण भी तो मैं समझती हूं, यही कष्ट रहा होगा न!'

'हां, बहिन! कामिनीने कहा—'इण्टरमें आना तो सम्भव नहीं था।'

'खैर!' मैंने कहा—सेकेण्ड क्लास में आपका जो अतिरिक्त खर्च हुआ होगा, वह आपको प्रदर्शनीकी ओरसे मिल जायेगा।

'खर्च मिलने न मिलनेकी हमें चिन्ता नहीं।' कञ्चनने कहा—'आप लोगोंके पास हमें आना था। सोचा, इण्टरका किराया तो हमें मिल ही गया है। अधिक पैसा जो सेकण्डमें देना पड़ा, वह आप लोगोंकी ही खातिर हमने खर्च किया है। इसलिये आपको इस मामलेमें चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं।'

'प्रदर्शिनीके आयोजक गरीब नहीं हैं।' मैंने कहा।

'और आपको मेरा खर्च स्वीकार नहीं।' कामिनीने मुस्कराते हुए कहा।

तांगा जब मेरे घर पहुंचा, तब साढ़े ४ बज चुका था। घरमें पहुंचकर अभी हमलोग बैठने भी नहीं पाये थे कि बड़ा बच्चा स्कूलसे वापस आ गया और उसके बाद ही लताके बाबूजी भी हाथमें गांधी झोला लटकाये आ पहुंचे। आते ही उन्हों ने कहा—'अरे, गाड़ी काफी लेट आयी क्या?'

'हां!' मैंने कहा—'अभी-अभी तो हमलोग आ रहे हैं।'

कञ्चनने दोनों हाथ जोड़कर अभि-वादन किया और मुस्कराते हुए कहा—'आज आपके दर्शन कर बड़ी प्रसन्नता हुई। पत्रों द्वारा आपकी जो निकटता मुझे प्राप्त हो चुकी है, उससे अधिक सुख हुआ आज आपको देखकर।'

'और आप लोगों को मेहमानके रूपमें अपने घरमें पाकर आज मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई।' लताके बाबूजीने एक कुरसीपर बैठते हुए कहा—'बहिन कामिनी की सहृदयताका परिचय तो मैं दो साल पहले ही लताकी मांसे पा चुका था। बहुत इच्छा थी आप लोगोंको देखनेकी।'

लेकिन हम लोगोंको आप मेहमान समझ रहे हैं।' कामिनीने कहा—'यह ठीक नहीं। हम तो आपके परिवारके ही सदस्य हैं। क्या आप लोगोंको यह स्वीकार नहीं ?'

और, कामिनीकी यह बात सुनते ही मुझे याद आया कि लताका आधा खाया हुआ केला कामिनीने जो बिना किसी हिचकिचाहटके, अभी अभी स्टेशनपर खा लिया था, वह सचमुच आत्मीयता और अपनत्वका ही प्रमाण था। कहा मैंने 'परिवारके सदस्योंकी क्या मेहमानदारी नहीं की जाती बहिन ? बहुत दिनोंके बिछुड़े आत्मीय जब मिलते हैं, तब एक दूसरेका जो स्वागत सत्कार किया जाता है, वह भी तो मेहमानदारी ही हैं। इसमें बेजानेकी भावना नहीं रहती।

'हां, मेरा मतलब बिलकुल यही था।' लताके बाबूजीने कहा—'आप लोगोंको अपने परिवारकी परिधिमें देख, सचमुच हमें गर्व है। फिर, साहित्यिक होकर हम लोगोंका परिवार भी तो साहित्यिकोंसे ही भरा-पूरा रहना है न! एक-दूसरेको बेगाना समझकर, हम रहेंगे कहां ? हमारा निर्वाह कैसे होगा ? हमें अपनापन कहां मिलेगा ?'

इसी बीच कञ्चनने अपना सूटकेस खोला और लता तथा हरिके लिये उपहार-में खादीकी बढ़िया फिराक और सुन्दर कुरता सामने रख दिये। कागजके एक बड़े-से पुड़ेमेंसे मेवा निकालकर टेबिल पर रखते हुए कहा—'लता बेटी, देखो ये अंजीर, काजू, किसमिस। खाओगी कुछ ? और हरिको बुलाकर कहा—'लो भई, तुम्हारा भी तो हिस्सा है इसमें।'

मैं अब तक चौकेमें जाकर शाक-भाजी बनाने लगी थी। पूड़ी आदि तो पहले ही बनाकर रख ली थी। शाक भाजीके अतिरिक्त चाय भी बनानी थी। चाय मैंने पहले तैयार की और सबके सामनेमें लाकर रख दिया।

चाय पीनेके बाद कंचन और कामिनी ने नहाया धोया। भोजन करते कराते आठ बज गये। नौ बजे तक तैयार होकर हम लोग प्रदर्शिनीके पण्डालमें जा पहुंचे।

उस दिन कवि-सम्मेलन खूब जमा। रातको दो बजे तक कविता पाठ होते रहे। कंचन और कामिनीके कविता पाठने गजबका समां बांध दिया। कई पदक और और पुरस्कार मिले इन दोनोंको।

लेकिन यह सब तो कामिनी और कञ्चनके व्यक्तित्वका एक पहलू ही मैंने अबतक चित्रित किया है। इनका दूसरा पहलू इस कवि सम्मेलनके बाद ही मैं देख सकी और समझ सकी।

कवि सम्मेलनके दूसरे दिन प्रयागमें घूमते-घामनेका कार्यक्रम निर्धारित किया गया। लताके बाबूजी उस दिन कार्यालय नहीं गये। उनकी पाक्षिक पत्रिका प्रकाशित हो चुकी थी। कोई विशेष कार्य नहीं था उस दिन। दिन भर तक लोग घूमते-घामते रहे। सबसे पहले हम लोग त्रिवेणी-स्नान करने गये।

त्रिवेणी से लौटते समय उस किलेमें हम गये जिसमें वह वृक्ष है और अनेक हिन्दू देवी देवताओंकी मण्य मूर्तियां भारतकी प्राचीन कालीन मूर्ति कलाका उत्कर्ष अबतक प्रकट कर रही है। कहते हैं, यह किला महाराज अशोकने बनवाया था। बादमें जब मुगल-सम्राट अकबरका इसन गरपर अधिकार हुआ, तब इस किलेको पुनर्जीवन प्रदान किया गया। आज इस किलेका जो रूप है, वह सम्राट अकबरकी ही देन है। अकबरने इस शहरका नाम प्रयागसे इलाहाबाद कर दिया था, जो अबतक प्रचलित है।

किलेसे लौटकर हम लोग भारद्वाज-आश्रम देखने गये। इसी बीच लताके बाबूजीने कंचनसे कहा—'स्थानीय किसी साहित्यिकसे भी मिलना चाहेंगे कंचनजी ? 'नहीं'। कंचनने गम्भीर मुद्रासे कहा। क्यों' ? लताके बाबूजीने साश्चर्य। पूछा मुझे भी कंचनके इस नकारात्मक उत्तरपर बहुत आश्चर्य हुआ। अब तक जितने भी साहिनिक हम लोगोंके पास आये थे, उनमेंसे प्रायः सभी लोग, स्थानीय साहित्यिकोंसे भेंट करनेका लोभ संवरण नहीं कर पाते थे।

तभी कंचनने कहा—में साहित्यिकों से भेंट करना बुरा नहीं समझता भाई साहब। लेकिन अपने परिचयकी पारिधिसे मैं इतना विस्तृत करनेका कायल नहीं, जिसका निर्वाह जीवनके अन्त तक न किया जा सके। दस-पांच मिनटके परि-चयको मैं परिचय नहीं मानता। जिन साहित्यिकोंसे इस प्रकार मिलूंगा, वे समझेंगे कि मैं किसी स्वार्थसे ही उनसे मिल रहा हूं। लेकिन आप विश्वास कीजिये, मुझे अपने किसी स्वार्थकी सिद्धि इन लोगोंसे नहीं करनी है। यदि यही सब कर सकता, तो शायद झांसी जैसे साधारण नगरमें एक साधारणसे प्रेसमें नौकरी न करनी पड़ती।

और हम लोगोंने महसूस किया कि सचमुच कंचन-जैसा कलाकार अपने इसी स्वभावके कारण आज पत्र-पत्रि-काओंके पृष्ठों पर प्रायः नहींके बरा-बर दिखता है। इस प्रकारके युग में कंचन जैसे कलाकारका निर्वाह नहीं। लेकिन कंचन इसके लिये दुखी नहीं। वह कहता है, यदि प्रचारके बलपर मैं सामने आया, तो इसका कोई मूल्य नहीं। जबतक प्रचारकोंके हाथकी कठपुतली रहूंगा, तब तक मेरी धूम रहेगी। जिस दिन प्रचारकों की कृपाका पात्र न रहूंगा, उस दिन फिर कौन पूछेगा मुझे ?

दो दिन रहकर कंचन और कामिनी वापस चले गये। इस बीच एक दिन जब हम लोग चौकसे लौट रहे थे, तब एक चौराहेपर कंचन अचानक खड़ा हो गया। हमलोग अपनी बातचीतमें इतने मशगूल थे कि कुछ कदम आगे बढ़ जानेपर जब हरिने कहा कि चाचाजी तो पीछे रह गये, तब कहीं इस ओर ध्यान दे सके। घूमकर देखा, तो कंचनको एक भिखमंगेसे बात करते पाया। पास जानेपर पता चला कि वह भिखारी बङ्गालकी तरफसे यहां आया

था। हड्डियोंका ढांचा भर था। आखें उसकी धंसी हुई और गाल पिचके हुए थे। कंचनने अपनी जेबमेंसे दस रुपयाका नोट निकाल उसके हाथोंपर धर दिया और हमलोगों के साथ चल पडा।

लताके बाबूजीने कहा—'इस तरह भिखारियोंको रुपये लुटाते चलोगे, तो घर पहुंचते-पहुंचते दो-एक हजार रुपयोंकी जरूरत पड़ेगी कंचन जी!'

'एक तो इतना रुपया नहीं मेरे पास कंचनने कहा—'दूसरे, सभी भिखारियों को मैं इस प्रकार रुपया नहीं देना—दे भी नहीं सकता। लेकिन इस भिखारीकी करुण कथा सुन, मैं द्रवित हो गया। कहना था, बङ्गाल के अकालमें उसका पूरा परिवार भूखकी बलिवेदीपर भस्म हो चुका है। दो मासूम बच्चे फूल-सी कोमल पत्नी, तितली-सी चंचल बहिन सभी चल बसे। वही अभागा बच रहा है। मारा-मारा फिर रहा है। किसीसे अपनी कहानी कहता है, तो उसपर कोई विश्वास नहीं करता। दो दिन से भूखा है।'

'कौन कह सकता है' लताके बाबूजीने कहा 'कि उसकी कहानी सच है? आपने कैसे जाना, वह सच-सच कह रहा है? मांगने की भी कला होती है कंचन जी! आंखोंमें आंसू भर कर उसने कहा और आपने विश्वास कर लिया!

'सन्देह करनेसे तो काम नहीं चलता भाई साहब! कंचनने कहा—'प्रत्येक व्यक्ति पर हम सन्देह करने लगें, तब तो इस दुनियामें रहना ही मुश्किल हो जाये। फिर विश्वास ही तो बहुत बड़ी चीज है न! यदि हम अपनी बातोंसे आपपर विश्वास जमा सके, तो यही हमारी सफलता है; भले ही, हम झूठे हों।'

और जाते समय कामनीने पांच-पांच रुपयेका एक-एक नोट लता और हरिको देते हुए कहा—'लता केला खायगी और हरि अपनी पसन्द की पुस्तकें खरीदेगा।'

बहुत मना किया हमलोगोंने लेकिन कामिनीने ये रुपये वापस नहीं लिये। स्टेशन पर जाकर हमने देखा कि कामिनी और कंचनने इण्टर-क्लासका टिकट लिया है।

मैंने कहा—'इण्टर में तो काफी तकलीफ होगी बहिन!'

नहीं' कामिनी ने कहा—'सेकण्ड का जो किराया आपने दिलाया है, उसमें से आधा तो यहां आनेमें पहले ही हम खर्च कर चुके हैं। अब यहांसे जाते समय इण्टर क्लासका टिकट इसलिये ले रही हूं कि कुछ अतिरिक्त खर्च यहां किया जा चुका है। जितनी चादर हो उतना ही पैर फैलाना ठीक होता है न!'

हमलोगोंको यह समझते देर न लगी कि उस भिखारीको दस रुपये कंचन दे चुका है। लता और हरिको भी दस रुपये कामिनीने दे दिये हैं। यही अतिरिक्त खर्च इण्टर का टिकट लेकर पूरा किया जा रहा है।

कंचन और कामिनी जब चले गये, तब मैंने लताके बाबूजीसे कहा—'देखा, इस कलाकार दम्पति को कितना सहृदय, स्वाभिमानी और सोच-समझ कर खर्च करनेवाला है।'

'पहली दो बातोंपर मुझे गर्व है।' लताके बाबू जी ने कहा—'लेकिन सोच समझ कर खर्च करने की जो बात है वह हमारे कलाकारोंके विकास के लिये बहुत बड़ी बाधा है। भारतमें जन्म लेकर और हिन्दी के कलाकार होकर हमलोगोंको विवश होकर यह करना पडता है। कौन हमारे सुख-दुख की परवा करता है, कौन हमें सहारा देने आगे आता है? और इन चिन्ताओं की परिधिमें घूमते-घूमते कलाकार अपनी कलाका समुचित विकास कर नहीं पाता! कंचन-जैसा प्रतिभा-सम्पन्न कवि एक प्रेसमें अपनी कलम घसीटा करे, यह हिन्दी के भविष्य के लिये कितना विघातक है। लेकिन हमारा समाज और हमारे प्रकाशक कब दूसरेकी परवा करते हैं? कभी करेंगे या नहीं, यह भी एक पहेली है!' मैंने कहा। और, इस दम्पति-कविसे अब हम लोगोंकी घनिष्ठता सचमुच एक परिवारके सदस्यों जैसी ही बढ़ गयी है। सालमें एकाध बार हमलोग झांसी जाते और कंचन-कमिनी भी हमलोगों के पास एकाध बार आजाती हैं।

आजकल इस दम्पति कविके भी दो सनतानें हैं। लेकिन देखती हूं कि परिवार में सदस्योंकी संख्या वृद्धि के साथ-साथ इस दम्पति कविकी सारी मस्ती और स्वच्छन्दता पता नहीं, कहां तिरोहित हो जा रही है!

पिछले महीने हमलोग झांसी गये थे जब हमलोग इस कलाकारके दरवाजेपर पहुंचे, तो सदाकी तरह एक उल्लासमें उमड़ते हुए-हमलोगोंने घरमें प्रवेश किया लेकिन भीतर जाकर देखा कि कामिनी एक कमरेमें फर्श पर ही एक दरी पर लेटी है। समीप ही उसका छोटा बच्चा सोया हुआ है। हमलोगोंको देखते ही उसके ओठोंपर एक मन्द मुस्कराहट दौड़ गयी। लेकिन उसके ओठ कुम्हलाये हुए थे। चेहरा एकदम उतरा हुआ था शरीर उसका कृश और अस्वस्थ था। कहा मैंने—'मालूम पड़ता है, कुछ बीमार हो कामिनी!'

हां, बहिन!' उसने दरीपर बैठते हुए कहा—'आपलोग बैठिये तो सही। और कमरेमें रखी कुर्सियोंकी तरफ उसने संकेत किया।

निकट जाकर मैंने उसका माथा छूकर देखा। वह तवेकी तरह जल रहा था। कहा मैंने—बुखार बहुत तेज है बहिन तुम लेटी रहो।' फिर एक क्षण रुककर पूछा—और कंचन जी कहां हैं?

'प्रेस गये हैं। छुट्टी बकाया नहीं है, अब छुट्टी लेंगे तो वेतन कटेगा।'

मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि गृहस्थीका चक्कर और जीवन प्रवाहका भंवर जाल इस कलाकार दम्पतिका गला घोंट रहा है। स्वाभिमान और दुनियादारी! कलाकार और जीवनकी परिस्थितियां! भारतीय कलाकारका स्वाभिमान उसे प्रचारके साधनोंसे बहुत दूर पटक चुका है। दुनियाकी परेशानियां उसकी मस्तीका अपहरण कर रही हैं।

दुनियांका क्रम चलता है और चलता है और चलता रहेगा। लेकिन कलाकारों की मिटती हुई प्रतिभा और इनके व्यक्तित्व के बुझते हुए प्रकाशको यह दुनिया बार-बार न पा सकेगी।

दूसरे दिन हमलोग झांसीसे लौट आये। समय नहीं था कि अधिक ठहर सकते। लेकिन कंचन और कामिनीकी चमकती-दमकती और बुझती-सी प्रतिभा के जो दोनों पहलू मैंने देखे हैं, उन्हें कभी भूल नहीं सकती। यह भी नहीं समझ पाती कि इस सबके लिये हमारा भारतीय समाज दोषी है अथवा कलाकार?

सोवियट एशियायी राष्ट्र

श्री जीवन

स्वाधीनता-प्राप्तिके पश्चात् भारत के सम्मुख अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं हैं, जिनका समाधान करना आवश्यक है। 'स्वराज्य'के बाद 'सुराज'का प्रश्न अनिवार्यतः आता है। अपने देशके भीतर बुरी तरह फैली हुई गरीबीको दूर करना और सामाजिक एवं सांस्कृतिक बुराइयों तथा अत्याचारोंसे कराहते हुए देशके हजारों व्यक्तियोंको मुक्त करना राष्ट्रीय सरकारका कर्त्तव्य हो जाता है। इस सम्बन्धमें बाहरी देशोंकी स्थितिका तुलनात्मक अध्ययन करके हम भी बहुत कुछ लाभ उठा सकते हैं। इस दिशामें सोवियट एशियाई राष्ट्रोंका उदाहरण हमारे सामने है, जहां कभी गरीबी मुंह फैलाये थी, अकालका दौरदौरा था, सामाजिक बुराइयोंका बोलवाला था; पर आज जहांके लोगोंकी जीवनधारा एकदम बदल गयी है और सभी देशकी उन्नति प्रगतिमें लगे हुए हैं।

सोवियट एशिया यूराल्स तथा कास्पियन सागरके पूर्व बेरिंग स्ट्रीटसे लेकर बालासागर तक एशियाके समस्त आर्टिक सटवर्तीय अंचलमें फैला हुआ है। संसारके सारे भूखण्डोंमें इसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। सोवियट यूनियनके कोई तीन-चौथाई भागमें यह भू प्रदेश फैला हुआ है।

सोवियट एशियामें ६ राष्ट्र हैं—अजरबेजान, तुर्कमेनिस्तान, ताजिकिस्तान, उजबेकिस्तान, कजाकिस्तान और किरगिजिया, और....ये सभी सोवियट यूनियनके अन्तर्गत स्वेच्छासे सम्मिलित हैं। सोवियट यूनियनमें इन्हें बराबरीका स्थान प्राप्त है।

अनेक इतिहासकारोंने मध्यएशियाको ज्ञानका आदि स्रोत माना है। एक जमाना था, जब इस भूभागके बुखारा, ताशकंद और समरकंद आदि प्रसिद्ध नगरोंके नाम कला-कौशल आदिको लेकर सारे संसारमें मशहूर थे। एक युग था, जब वहां की सिचाई-व्यवस्था ऐसी सुंदर थी कि मध्यएशियाका महामरुस्थल नखलिस्तानमें परिणत होकर अन्नोंका भंडार हो गया था। यहांके प्राचीन बालीन वर्णनोंसे साहित्य भरा पड़ा है। बुद्धचरितके लेखक महाकवि अश्वघोषके संबंधमें अनेक विद्वानोंकी सम्मति है कि वह इसी भूभागके रहनेवाले थे। कनिष्कके बारेमें भी कहा जाता है कि वह कजाखके रहनेवाले थे।

१. अजरबेजान
क्षेत्रफल—३३००० वर्गमील
जनसंख्या—(१९३९) ३२१०००
२. तुर्कमेनिस्तान
क्षेत्रफल—१७१३८४ वर्गमील
जनसंख्या—(१९३९)-१२५४०००
बजट—(१९४५)-५१६२११००० रूबल
ताजिकिस्तान
क्षेत्रफल—५५५४५ वर्गमील
जनसंख्या—(१९३९)-१४८५०९०
बजट—(१९४५)-७००००००० रूबल
उजबेकिस्तान
४.उजबेकिस्तान
क्षेत्रफल—६६३९२ वर्गमील
जनसंख्या—(१९३९)—६२८२४५०
बजट—(१९४५)—२१६१९१८००० रूबल
५. कजाकिस्तान
क्षेत्रफल—१०४७७९७ वर्गमील
जनसंख्या—(१९३९)—६१४५९३७
बजट—(१९४५)—१८८५३३७००० रूबल
६. किरघिजिया—
क्षेत्रफल—७८००० वर्गमील
जनसंख्या—(१९३९ १४५९३०१
बजट—(१९४५)—५६२२९९००० रूबल

सबसे पहले सिकन्दरके आक्रमणसे यह भूभाग श्री विहीन हुआ। तैमूरलङ्गके निरंतर होनेवाले आक्रमणोंसे इसकी बुरी तरह बर्बादी हुई, पर जैसा कहा जाता है तैमूरने पीछे चलकर इस भूभागको फिर से आबाद भी किया था। इसके पहले भी यह चंगेज खां की नृशंसताका शिकार हुआ था। और इसके बाद तो यह [illegible] लड़ाईका केंद्र बना रहा। तत्पश्चात् रूसी व्यापारियोंने इस भूभागके साथ व्यापार शुरू किया और अपना पैर जमाया। जारशाही कब चुप बैठने वाली थी। जारने अनेक मुसलमान अमीरोंको कठपुतली शासकके रूपमें बनाकर काफी पैसे ऐंठे। रूसी जारशाहीके शोषणका शिकार यह भूप्रदेश लालक्रांति तक बना रहा।

रूसी लाल क्रांतिके पहले तक रूसी एशियाके अमीरों, काजियों और मुल्लाओंका बोलवाला था। काजी और मुल्ले अमीरोंकी दलाली के लिये सदा तैयार रहते थे। अमीरोंके बाद राजभक्त छोटे-छोटे जमींदारों (बे) की तूती बोलती थी, जो बड़े ही अत्याचारी और प्रतिक्रियावादी थे।

पर जारशाहीके विरुद्ध की गयी लालक्रांतिकी सफलताके बाद रूसमें समाजवादी शासन आरंभ हुआ और मध्यएशियाके शोषणका भी अंत होकर रहा। यह आश्चर्यजनक बात मालूम होती है कि मध्य एशियाके लोग ही ऐसे थे, जिन्होंने सबसे पहले खूनी-खूंख्वार जारशाहीके खिलाफ बगावत की थी। बोरवारा समरकंद और ताजिकिस्तानके बोल्शेविक क्रांतिकारियोंके प्रबल प्रयास से जारशाहीका जनाजा निकला और जारके इंगितमात्र पर चलनेवाले शोषक अमीर, मुल्ले, पीर और काजी मार भगाये गये। और, आज मुल्लों और काजियोंका नामोनिशान मिट गया है, अमीर सब भाग कर अफगानिस्तानमें व्यापार कर अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं। इस बीच सोवियत एशियाने आश्चर्यजनक उन्नति प्रगति की है जो मानव समाजके लिये गौरव का विषय है।

अजरबेजान

सोवियत यूनियन और ईरानकी सीमा पर यह ट्रांस काकेशियाके पूर्वी भागों में फैला हुआ है। यह खनिज पदार्थोंसे परिपूर्ण है। यहा तेल, लोहा, अलुमूनियम, तांबा, लीड, जिन, गंधक, चनेका पत्थर और कीमती धातुएं पाई जाती हैं। इसकी राजधानी बाकू है जो तेलके कारखानेके लिये प्रसिद्ध है। इस प्रजातंत्रमें ६० प्रति-

शत अजरबेजानियन रहते हैं। और लोगों में आर्मिनियन रूसी, कुर्द, जार्जियन, टाटार, तालिसी आदि हैं। अजरबेजान प्रजातन्त्रके अन्तर्गत स्वेच्छासे नाखिशेवल, जिसकी राजधानी नाखिशेवन है, और नागोर्नो, जिसकी राजधानी स्टेपेनाकर्त है, आ गये हैं। इन दोनों को भी प्रजातन्त्र के नियमानुसार समानता का अधिकार प्राप्त है।

सोवियत यूनियनमें शामिल हो जानेसे यहांके भूखे, नंगे और पिछड़े हुए निवासी अपने राष्ट्रके आर्थिक तथा सांस्कृतिक निर्माणमें जोर-शोरसे लग गये। फलतः जहां पहले घोर अशिक्षा फैली हुई थी, वहां ७३ प्रतिशत जनता सन् १९३९ तक ही साक्षर हो गयी। इस प्रजातंत्रमें अभी प्रायः ५०० से अधिक यूनिवर्सिटी प्रोफेसर तथा वैज्ञानिक अनुसन्धान कर्त्ता हैं। दसों वैज्ञानिक संस्थाएं सोवियट यूनियनकी एकेडमी आफ साइंसकी अजरबेजान शाखाके अधीन काम कर रही हैं।

सोवियट यूनियनके अन्तर्गत बाकूके तेल-उद्योगकी अत्यधिक उन्नति हुई है। द्वितीय विश्व-महायुद्धके पहले ही बाकूके तेल-कूपोंसे प्रति वर्ष २ करोड़ ५ लाख टन तेल प्राप्त किया जाता था। सन् १९१४ के पहले तो इसका एक तिहाई तेल नहीं निकाला जाता था। इधर कृषिकी काफी उन्नति हुई है और आबाद की जानेवाली जमीन २५ लाख एकड़से भी बढ़ गयी हैं।

यह मिस्री कपास पैदा करनेवाला सबसे बड़ा क्षेत्र है। लेनकोरानके उत्तर-कास्पियन तटके समीपवर्ती भागोंमें, जहां, सिंचाई होती है, धान पैदा होता है। कास्पियन सागरमें अनेक मछली मारनेके स्थान हैं, जहां कीमती मछलियां पायी जाती हैं। यहां और भी अनेक बस्तुएं पायी जाती हैं।

तुर्कमेनिस्तान

तुर्कमेनिस्तान ईरान और अफगानिस्तानकी सीमाओंसे सटा हुआ कास्पियन सागरसे आमू नदी तक फैला हुआ है। इसका ८० प्रतिशत भाग कराकुरमकी मरुभूमि है। यहां ५० प्रतिशत तुर्कमेनियन रहते हैं। इनके अलावे रूसी, आर्मेनियन, कजाक, फारसी और उजबेक लोग भी यहां बसते हैं। यहांकी राजधानी अश्काबाद है।

सन १९२४ में तुर्कमेनिस्तान प्रजातन्त्रकी स्थापना हुई। उसके बाद ही शिक्षा-प्रचारका कार्य यहां इतने जोर-शोरसे आरम्भ हुआ कि अब १४०० स्कूल खुल गये हैं, जहां मातृ भाषामें बच्चोंको शिक्षा दी जाती है। यहां ३३ टेकनिकल स्कूल हैं और ४ बड़े कालिजों की स्थापना हुई है। रूसी क्रांतिके पहले यहां सिर्फ ९ डाक्टर थे, लेकिन अब डाक्टरोंकी संख्या एक हजारसे भी अधिक हो गयी है। तुर्कमेनियन भाषामें कोई ४० पत्र-पत्रिकाएं और ७ मासिक पत्र अब निकला करते हैं। घोर देहातों में भी घर-घर टेलीफोन और रेडियो लगे हैं। स्कूलोंकी स्थापना हुई है। यहां ७०० पुस्तकालय और ६०० बाचनालय एवं मनोरंजनालय स्थापित हो चुके हैं। सतरह साल पहले यहांकी राजधानी अराकाबादमें पहले-पहल स्टालिन थियेटर की स्थापना की गयी थी, पर अब इस प्रजातन्त्रमें ३७ थियेटर खुल चुके हैं। देशमें ३०से भी अधिक वैज्ञानिक संस्थाएं खुल चुकी हैं।

विस्तृत मरुभूमिको हरा-भरा बनानेके लिये रूसी वैज्ञानिकोंका प्रयोग जारी है। देशमें आधुनिक ढङ्गकी बड़ी बड़ी नहरें बनायी गयी हैं। कृषिकी उन्नतिके लिये कशिशें हो रही हैं। सन १९३७ में ३७५००० एकड़ क्षेत्रमें कपासकी खेती की गयी, जबकि सन् १९१४ में इससे १२० प्रतिशत कम क्षेत्रमें ही कपासकी खेती हुई जबकि सन् १९१३ तक ७५००० एकड़ क्षेत्रमें ही गेहूंकी खेती होती थी।

तुर्कमेनिया रेशमके उत्पादन और कालीन, दरी आदि बिछौनोंके लिये प्रसिद्ध है। यहां अच्छी किस्मके घोड़े पाले जाते हैं। मरुभूमिके कुछ भागोंको चारागाह कामोंमें लाया जाता है। स्त्रियां काली बुनती हैं। भेड़ें भी पाली जाती हैं। इस प्रजातन्त्रमें अंगूर और खजूर खूब होते हैं। रबरकी खेती भी अब की जाने लगी है। यहांसे कपास, रेशम, कालीन, फल और मिट्टीका तेल बाहर भेजा जाता है। खनिज पदार्थोंमें यहां तेल कोयला नमक गन्धक, पोटास, शीशा सोडियम सल्फेट पोटास, ब्रोनियम आदि पाये जाते हैं। यहांकी राजधानी अश्काबाद उद्योग और संस्कृतिका बहुत बड़ा केन्द्र हैं। कृषिके अतिरिक्त खाद्य सामग्रीके कारखाने और अन्य उद्योग धन्धे भी पिछले कई सालोंसे बढ़ रहे हैं। सन् १९२७ से '३९ तक इस देशकी जनसंख्यामें २५ प्रतिशत वृद्धि हुई थी।

ताजिकिस्तान

ताजिकिस्तान सोवियट रूस, अफगानिस्तान तथा पश्चिमी चीनके बीच तानशान पर्वत श्रेणी और पामीरके पठारके सङ्गमपर बसा हुआ है। भारतवर्ष (भारतीय संघ नहीं) की सीमासे कुछ ही मिलों की दूरीपर यह स्थित है। एक स्थानपर तो भारतवर्ष और इसकी सीमाओंकी दूरी सिर्फ १० मील ही है। अफगानिस्तानका एक पतला टुकड़ा—नूरिस्तान – सोवियट राष्ट्रको भारतकी सीमासे अलग करता है। चूंकि यह 'संसारकी छत' पामीरकी ऊंची पर्वत श्रेणियोंपर स्थित है, इसलिये सारी भूमि पहाड़ी और ऊंची है। सोवियट रूसकी सबसे ऊंची चोटी स्टालिन गिरि (२४३५९ फीट) और लेनिन गिरि (२३१६३ फीट) यहीं हैं। संसारके सबसे बड़े ग्लेसियरोंमेंसे एक फेदचेन्को यहीं है जो ४५ लम्बा है। इस प्रजातन्त्रकी राजधानी स्टालिनवाद है।

यहांकी तीन-चौथाई आबादी ताजिक लोगोंकी है। उत्तरी-पश्चिमी भागमें उजबेक रहा करते हैं। इनके अतिरिक्त रूसी खिरगिज तथा ईरानी लोग भी यहां बसे हुए हैं। पामीरके इलाकेमें एक गोर्नो-बदखां स्वायत्त शासन प्राप्त प्रजातन्त्र है, जो

ताजिकिस्तान प्रजातन्त्रके अन्तगत ही आ गया है। इस सम्बद्ध प्रजातन्त्रकी राजधानी खोरोग है। सन् १९२५ में ताजिकिस्तान स्वतन्त्र राष्ट्र बना और सन् १९२९ में सोवियट यूनियनमें स्वेच्छासे सम्मिलित हो गया।

उजबेकिस्तान

उजबेकिस्तान सोवियट रूस और अफगानिस्तानकी सीमाओंपर सोवियत मध्य-एशियाके मध्यमें ताशकन्दसे लेकर अफगानिस्तानके सरहद बक्ष (आमू दरिया) तक फैला हुआ है। फर्गाना की प्रसिद्ध उपत्यका मध्य एशियाकी सबसे बड़ी उपत्यकाओंमेंसे है। इस प्रजातन्त्रके दक्षिण में बुखारा, समरकंद आदि इतिहास प्रसिद्ध नगर हैं। इसकी राजधानी ताशकन्द है, जो मध्य एशियाका सबसे बड़ा नगर है। उजबेकिस्तान प्रजातन्त्रके अंतर्गत कराकल्पक नामक स्वायत्त शासन प्राप्त प्रजातन्त्र है जो आमू दरियाके निचले भागमें फैला हुआ है। इस अधीन प्रजातन्त्रमें कराकल्पक लोग रहा करते हैं। उजबेकिस्तानमें तीन चौथाई आबादी उजबेकोंकी है इसके अतिरिक्त कराकल्पक रूसी तजाक औरकजाक लोग भी रहते हैं।

देशकी आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उन्नतिके लिये भरपूर कोशिशें हुई हैं। सन् १९१३ में जहां यहांकी पूरी पैदावारकी कीमत ३७ करोड़ रुपये थी, वहां १९२६ में ही १५० करोड़ रु० से भी अधिक हो गयी। सोवियत रूसका यह सबसे बड़ा सिंचित प्रदेश है, जहां १९३८ में ७० लाख एकड़ जमीनमें खेती होती थी। देश की उपज बढ़ानेके लिये वैज्ञानिक अनुसंधानोंसे सहायता ली गयी है। यहां भी बड़ी बड़ी नहरोंका निर्माण हुआ है। सन १९४०में स्टालिन ग्रेट फरगना नहर बनाई गयी थी, जिससे १२ लाख ५० हजार एकड़ भूमिमें सीर दरिया से सिंचाई होती है। यह प्रजातन्त्र रूई उपजानेमें सोवियत यूनियन का सबसे बड़ा भाग है। सारे यूनियन का ६० प्रतिशत कपास यहीं उत्पादित होता है। इसके लिये भी यह प्रजातन्त्र प्रसिद्ध है। चावल, गेहूं, वार्ली, मकई, तेलहन, सूगर, बीट नाना प्रकारके मेवे और फल आदि भी यहां पैदा होते हैं। यहांके पञ्चायती खेतों में इनदिनों कोई १८००० ट्रैक्टर चलते हैं। देशके पशुधन की काफी वृद्धि हुई है। अभी कोई ६ करोड़ घोड़े, ऊंट, भेंड़ें आदि पशु हैं। यहां वाले क्रांतिके पहले खनिज पदार्थोंके बारेमें कुछ नहीं जानते थे, देशमें कल-कारखानेका तो नाम तक न था। किन्तु अब यहां ५१ कपड़े की मिलें हैं। इसके सिवाय कोयलेके कारखाने ट्रैक्टर और मशीनके कारखाने; नाइट्रेट खाद्यके कारखाने, सीमेंट, गंधककी खानों के कारखाने, कागज, चमड़े आदिके कारखाने इत्यादि विशाल कारखाने काम कर रहे हैं। चिर्चकका महान हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन अनेक कारखानोंको शक्ति प्रदान करता है। सभी प्रकारके यातायात के लिये देशमें बड़ी-बड़ी सड़कें बनायी गयी है। यहांकी आधी आबादी खेती, ४ बटा पांच कलकारखाने और २ बटा ३ रेलवे में है। यहां की सभी प्रकार की औद्योगिक उन्नति सन् १९१३ की तुलना में १९३८ तक ही ६ गुनी बढ़ गयी थी और कपासकी उपज पहले से तीन गुनी। यह प्रजातन्त्र मध्यएशियाके प्रजातन्त्रोंमें सबसे अधिक समृद्धिशाली है। यहां की कला संगीत और नृत्य आदि सोवियत यूनियनमें खास स्थान रखते हैं।

कजाकिस्तान

कजाकिस्तान सोवियत एशियाके दक्षिणी पश्चिमी भागमें सोवियत और सिक्यांग (पश्चिमी चीन)की सीमाओंपर स्थित है। यह वोल्गासे लेकर अल्ताई और ट्रांस साइबेरियन रेलवेसे लेकर त्यानसान पर्वत माला तक फैला हुआ है। इसकी राजधानी अलमा अता है। इसकी भौगोलिक स्थिति विषम है। जहां एक ओर इसमें निरंतर हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियां है, वहां दूसरी ओर विस्तृत मरुभूमि भी है। कहीं तो बहुत ही वर्षा होती है, तो कहीं पानी पड़ता ही नहीं। यहां कजाक लोग सबसे अधिक संख्यामें (६०प्रतिशत) बसते हैं। इसके अतिरिक्त रूसी, यूक्रेनियन, किरघिज, उजबेक, कराकल्पक आदि लोग भी इस प्रान्तमें रहते हैं।

खनिज पदार्थोंकी दृष्टिसे कजाकिस्तान सुसंपन्न देश है। जारशाहीके समय से अब १०० गुना अधिक चीजें उत्पादित होती हैं। इसके अलावे देशमें तरह तरह के बड़े बड़े कारखाने खोले गये हैं जैसे रुई औटनेके कारखाने, चमड़ेके कारखाने शक्कर, तम्बाकू आदिके कारखाने, तरकारी फल, और गोस्तके कारखाने आदि। अब रेलों और पक्की सड़कोंका देशमें जालसा बिछगया है। इस प्रजातंत्रमें कास्पियनसागर, अरब सागर, बाल्टका झील आदि मछली मारनेके बड़े बड़े केन्द्र हैं। औद्योगिक विकासके कारण कजाकिस्तानमें बीसों नये-नये शहर बस गये हैं।

किरघिजिया

यह सोवियत मध्य एशियाके पूर्वमें सोवियत रूस और सिक्यांग (पश्चिमीचीन की सीमाओंपर स्थित है। इस देशमें बहुत से हिमाच्छादित पर्वत कौर ग्लेसियर हैं। विस्तृत पठारों, गहरी धारियों और तेज धारवाली नदियोंसे यह भूभाग भरा हुआ है। यहां दो तिहाई किरघिज लोग बसते हैं। इसके सिवा रुसी, यूक्रेनियन उजबेक आदि लोग भी यहां रहते हैं। यहांकी राजधानी फ्रुंजे है।

पहले यहांकी आबादी घटती जा रही थी पर नयी शासन व्यवस्थाके कारण कुल १२ वर्षों में सन् १९३९ तक देशकी जन संख्या ४५ प्रतिशत बढ़ गयी और ७० प्रतिशत लोग साक्षर हो गये। इतिहासमें पहले पहल देशकी भाषा लिपिबद्ध हुई है।

अंगूर, फर और अखरोट यहां प्रचुर मात्रामें होते हैं। अनेक फलोंके बगीचोंसे देश हरा-भरा बन गया है। नये ढंगसे अनेक प्रकारकी फसलें उपजायी जाती है। लोग खेतीमें अब काफी दिलचस्पी लेने लगे हैं। यहां तेल कोयले, सोने, शीशे, पारे, गंधक चूने, ऐरीमनी आदिकी बड़ी बड़ी खानें हैं। नये नये कल कारखानोंके खुल जानेसे देशकी कायापलट हो गई है।

सोवियत एशियायी राष्ट्रोंकी उन्नति दिन दूनी रात चौगुनी हो रही है। सोवियत यूनियनकी पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा ये राष्ट्र और उन्नत एवं समृद्ध होंगे। क्या भारत इन भागोंकी प्रगति तथा उन्नतिसे सबक नहीं सीखेगा?

रानी बिटिया

लेखक—रामलाल, बी० ए०

वह अकेला था।

सन्ध्या अधिक देर तक न ठहर सकी। अन्धकार मौतके सिपाहीकी तरह बढ़ता चला आ रहा था। चारों ओर मैदानही मैदान दीख पड़ता था, बीचमें जामुन और पलासके बन, नाले और पथरीली जमीनको छोड़ कर किसीकी परछाईं तक न दीखती थी। आमी नदी वेगसे बह रही थी, लोगोंको कहते सुना था—वह नाकों पर है। नाव घाट पर कभी की जा चुकी थी, मल्लाह हुक्का चिलम सम्हाल कर घर निकल गये थे, उस घाट पर लोग दिनमें भी जानेसे डरते थे। उसने आसमानकी ओर देखा, अबाबीलका एक गिरोह उड़ा चला जा रहा था, उसके जीमें जी आया, कामेश्वरने रामका नाम लिया। थोड़ीही दूर पर एक छोटी सी बस्ती थी, डूबतेको तिनकेका सहारा मिल गया।

मकान और झोपड़ियोंके चिराग जल उठे। वह चलता गया, किसकी ताकत थी उसे चलनेसे रोक दे? किसका मजाल था उसे टोक दे?

उसने मनही मन कहा—यदि थोड़ी सी और पी ली होती तो सूनी रात न खटकती। उसका मतलब शराबसे था। उसने देखा गांवमें चहल-पहल है। देव-मन्दिरके काले शरीर पर अभी कलही सफेदी की गयी थी। आज उत्सव हो रहा था। उसने देखा त्रिकोण मण्डप और ठहर गया।—'शराबी मन्दिरमें जा सकेगा, भगवानसे बातें कर सकेगा? दुनियां तो उसे पापी ही कहेगी', ये सवाल उसकी चिन्ताके विषय थे।

उसने कहा—'देवताओंके भी भाग्य फिरते हैं, और सीवानके पत्थर पर बैठ गया।

माघका कड़ा जाड़ा कलेजेको कंपा रहा था, ओसके तूफानी दौड़ेमें बिना ओढ़ने-बिछौनेके बाहर निकलना बला मोल लेना है।....कामेश्वरके हाथपैर ठिठुर रहे थे लेकिन अकड़ कर बैठे रहनेमें ही उसने अपना गौरव और सन्मान समझा।

....देवताकी आरती होने लगी। घण्ट और घड़ियाल बज उठे। 'जय जय सियाराम' की गगन-भेदी ध्वनि कानोंके रास्तेसे मानस लोकमें उतर कर हलचल पैदा करने लगी। उसने कहा—भगवान सबके हैं। पाप और पुण्य अपने विचारों के फल हैं। आत्म सम्मानने कहा—वह भी तो आदमी हैं। सहसा उसे याद आ गया।

जाहिद शराब पीने दे
मसजिदमें बैठ कर।
या वह जगह बता दे,
जहां पर खुदा न हो।

इस तरह शराबकी वकालत करते-करते वह मन्दिरकी पहली सीढ़ी तक आ गया। आंखें चार हो गयीं। मीना नाच रही थी। मन्दिरमें पढ़े लिखे लोग भी थे। जमींदार लीलाधरका आस-पासके जवार में बड़ा नाम और रोब था। हाकिम हुक्काम भी इस उत्सवमें सम्मिलित थे। नाच उतार-चढ़ावपर ही था कि जमींदारके बूढ़े दरवानने कहा — भइया, बाहर खड़े रहनेसे भीतर ही बैठ जाना अच्छा है।' कामेश्वरने उधर कान ही न दिया।..... तबलेकी धीनधीनाहट, मंजीरेकी टनटनाहट और पायलोंके छन-छनन-छूममें उसे उतना ही रस मिल रहा था जितना भक्त भगवानके संकीर्तनमें, चकोर शशिके अनवरत अवलोकनमें, बादल बिजलीके सरस आलिंगनमें और कवि कविता पढ़नेमें पाता है।

मीना कौन है?'

भले घरकी लड़की और नाचनेवाली की सन्धि:सी उसने कामेश्वरके तन-मनपर जादू डाल दिया। वह साहित्य रसिक भी था। ऊंची कक्षामें साहित्यकी और उसकी के सरस स्मरण और शमाके चण्डीदास की मानसिक वेदनाने विकल कर दिया। देवता और उसके बीचमें मीना दीवार सी खड़ी थी। उसने कहा .....इसी तरह महाकवि विद्यापतिने पहले पहल मिथिलाके रमणीय देव-महलमें 'लखिमा' को देखा था, चण्डीदासने रामीके रूप-सागरमें गोते लगाये थे। ..... भीड़ खिसकती जा रही थी। वह गुनगुना रहा था,—

'प्रेम पिरित कै रूप बखनइत
तिले तिले नूतन होइ।'

जानेवालोंमें कुछ लोगोंने कहा कहा वह पागल है। कुछ मनचले, छैल-चिकनियोंने संकेत किया वह मीनापर मरने आया है। .....मीनाने उसे घायल कर दिया था, लेकिन साथ ही साथ जमींदार लीलाधर की लाड़िली कन्याके नयन बाणोंने उठती सी जवानीके जहरके उसपर चोट की।

जाते जाते देवगढ़के जमींदार लीलाधरने कह ही डाला — 'आप बाहर ही खड़े रह गये।' उनके साथ मीना और नीरजा दोनों थीं। उसे ऐसा लगा कि मीना नाचने गानेवाली नहीं है। फिर भी वह उसके लिये कुतूहल ही थी। कण्वके आश्रममें शकुन्तलाने, प्रास्परोके वनवास में मीरान्डाने दुष्यन्त और फर्डीनैन्डका जिस तरह अभिनन्दन किया था, उसी तरह नीरजाने उसके मनको अपने वशमेंकर लिया। उसने अनुभव किया पहली जादूगरनी है तो दूसरी देवी हैं। नीरजाके अगले कदम यही कह रहे थे,

कागदपर लिखत न बनत, कहत संदेश लजात, कहिहै सब तेरो हियो, मेरे हियकी बात। सबके सब चले गये। रह गया जमींदारका बढ़ा दरबान वंशराज। उसने साफ- साफ समझ लिया कि नवागन्तुकने रानी बिटियापर मायाजाल फैला दिया है वह नीरजाको सोलह सालसे जानता चला आया था।

उसने धीरे धीरे कहना आरम्भ किया 'भइया' आज रातको इस गरीबके हीघरपर आराम कर लो।' पुजारी रामदासने भी कनखियोंसे स्वीकृति दे दी। मन्दिरके दरवाजे बन्द हो गये। रातके दस बजे थे। जाड़ेमें भी कभी कभी पश्चिमी हवाके कोप

से बस्ती गोरखपुर और आजमगढ़के जिलोंमें जल-दूतोंकी कृपा दृष्टि हो जाती है।....सबेसे ही बादलोंने आसमानके दरवाजोंसे झांकना आरम्भ कर दिया था। सूरज देवता कहीं छिपे थे और पश्चिमी दिशाके तीखे बाणोंसे जीव-जन्तु सबके सब विकल थे। जमींदार लीलाधरके दरवाजे के ठीक सामने एक छोटा सा बगीचा था। दो चार केलेके पेड़, सात आठ पिछले साल के लगे अमोले, और तेरह-चौदह गमले ही उसकी शोभा बढ़ानेके लिये काफी थे। लीलाधरकी उमर ढल चुकी थी, नीरजा उनकी एकमात्र सन्तान थी, बाग- बगीचों से ही वे पुत्रकी साध पूरी कर लिया करते थे।.... मीना और नीरजा दोनोंने जीवन के सोलह बसन्त देखे थे। आज दोनों बाहर निकलकर बगीचेमें टहल रहीं थीं। बंशराज पहरेपर था। मैंने तो समझा देव लोकसे दो देवियां उतर आयीं हैं' बंशराज ने बड़े प्यारसे दोनोंकी पीठ थपथपा दी। उसका कहना ठीक था दोनों ऐसी लगती ही थीं, रतन कामकी परीक्षा लेनेके लिये दो रूप धारणकर लिये थे। नीली साड़ियां बदनपर मचल रहीं थीं, काले केश पीठपर कटितट तक लटक रहे थे। कपोलोंपर ताजा खून दौड़ रहा था, आंखोंमें मादकता थी।

बंशराज कुछ सोच रहा था।

नीरजाने कहा —'दरवान काका, उदास क्या हो गये।'

मीनाने व्यङ्ग किया, 'घरपर दस दिन से बिना जान- पहिचानका, मेहमान ठहरा है, उसने ही कुछ खरी-खोटी कही होगी।'

'कितना अच्छा फल है !' नीरजाने बात बदल दी

'उसीको तो मैं देख रहा था' बंशराज ने सफेद गुलाब तोड़कर नीरजाके हाथमें रख दिया।

मीनाको फूलका इस तरह तोड़ा जाना अच्छा न लगा। बंशराजने कहा— यह फूल किसी कलीकी याद लेकर ही खिला होगा।

मीनाने कहा, 'कुछ नये मेहमानके सम्बन्धमें भी कथा-वार्ता हो जाय, काका।'

बंशराज कुछ खोया-खोया सा लगा।

'वह तो देवता है' उसने जबानकी लगाम ढीली कर दी।

मीनाने नीरजाकी ओर देखा और झेंपसे निगाह नीची कर ली मानो आसमानसे शशिकी किरण उझक उझककर धरतीपर अपनी विभाका मनोरम विस्तार देख रहो हो। कमी केवल यही थी कि रात नहीं—दिन था।

"मैंने तो उसी दिन कह दिया था कि वह अच्छे घरका है और पढ़ा लिखा तथा सभ्य है।' नीरजाने मीनाका हाथ पकड़ लिया और कहा, 'दरबान काका, मीनाका मेहमानसे परिचय हो सकता है।

मीनाने नीरजाके गालपर हलकी चपत जमाकर कहा; दुनियां इसी तरह अपना मतलब निकालती है।' बंशराजको तो मानों खोया धन मिल गया।

उसने कहा, 'कामेश्वर भी तुम लोगों की बड़ी तारीफ कर रहा था। वह तो बड़े सरकारसे मिलनेवाला ही है।... अब उसके घरपर कोई नहीं बचा है। जब वह तीन सालका था, उसका चाचा उसकी एक सालकी बहिनको लेकर रंगून चला गया गया था और आजतक उसने खोज खबर न ली। बिचारेने अपने पैरपर खड़ा होकर बी० ए० तक पढ़ लिया, विवाह कितने आये लेकिन उधर उसने अभी ध्यान ही न दिया। जमींदारी और खेती-बारी परिवार वालोंने दबा ली। मनिकौरा का ही तो रहनेवाला है। बड़े सरकारसे कुछ जमीन लेकर खेती करनेकी बात सोच रहा है।'

'रामकहानी पूरी हो गयी क्या....'मीना ने चलनेका संकेत किया।

'यह तो बहुत ही अच्छा होगा', नीरजाके सारे शरीरमें बिजली दौड़ गयी।

मीनाने कहा शहरवाले गांवमें आकर स्वच्छ वातावरण दूषित कर देते हैं। केवल खेतीपर ही कमर कसे रहते हैं।

'वह तो देखनेमें बड़े सीधे हैं, पिताजीसे उनकी वकालत अवश्य करूंगी। लेकिन।' 'लेकिन ! रानी बिटिया' बंशराज चौंक पड़ा। मीनाने बात काट दी —'अगर मगर वालोंका कुछ भी ठिकाना नहीं है।'

दोनों हंस पड़ीं।

'रानी बिटिया कितनी भली है !' बंशराज चलते बना। पहरेका समय पूरा हो गया था।

देवगढ़में रहते कामेश्वरको दो तीन साल हो गये। वह जमींदारकी आंखका पुतला हो गया और उसीके कारण बंशराजका भी उस छोटेसे गांवमें काफी सम्मान और पूजा होने लगी। मीना और नीरजा दोनों रात-दिन उसीके सम्बन्धमें बातें करती थीं। गांव तथा अड़ोस-पड़ोसके लोग उन दोनोंपर तरह-तरहकी छींटे उछालते थे। अभी कुछ दिन पहले नीरजाकी बीमारी बढ़ गयी थी, वह उसे लेकर मीनाके साथ दवाके लिये शहर भी गया था, कुछ महीने उन तीनोंने शहरमें ही बिताये थे। कुछ लोग अनुमान भी करने लगे कि मीनासे उसकी शादी हो जावेगी।

रातके दस बज थे। गांवमें लोग आठ नव बजते बजते सो जाते हैं। दिन भरके थके-मांदे मजदूरोंको रातमें ही थोड़ा बहुत आराम करनेका मौका मिलता है। बूंदें पड़ रही थीं। आषाढ़की पहली रात थी। आसमानमें काले-काले मेघ चौकड़ी भर रहे थे, यदि दिन होता तो यह बात समझमें आ जाती कि किसी नये रामगिरि वासीका सन्देश अलका नगरीमें ले जाने की उनमें कितनी उत्सुकता थी। हवा झूम झूम कर महाकवि कालिदासके मेघदूतकी अभिनव भूमिका तैयार कर रही थी।... जमींदारकी बैठकमें एक चिराग टिमटिमा रहा था। लीलाधर चौकी पर मसनदके सहारे उत्तान लेट कर पुजारी रामदासकी बात जो एक सादी कुरसी पर नींदसे मात रहे थे' बड़े ध्यानसे सुन रहे थे।

और महाभारत तथा भागवत पर
ज कुछ न कुछ टीका टिप्पणी होती
लेकिन आजकी बातचीतका विषय
और ही था।

सरकार, रानी बिटियाका इस तरह
और अपरिचित व्यक्तिसे मिलते
रहना अच्छा नहीं है। रही बात
की, उसे भी समझा बुझा दिया
।"

पुजारीजी, जो भी हो, मुझे उसकी
बहुत ही पसन्द है।"

सरकार यह बात तो सोलह आने
है। लेकिन उसमें शराब पीनेकी
खराब है, न जाने वह रात-दिन
शोक-सागरमें डूबा रहता है।
उसे कल ही मन्दिरमें देखा था, वह
चिन्तित सा लगता था!'

जमींदार महोदय कुछ और सुनना
न थे कि नीरजाने भीतरसे आवाज
खाना तैयार है।

दो चार दस रातें इसी तरह बीत
। कामेश्वर भी कुछ कटा-कटा सा
रहने लगा। मीना उससे मिलनेकी
में रहती थी लेकिन कामेश्वरको
जासे ही अवकाश नहीं मिलता था।
धीरे वैमनस्यका बीज बढ़ कर विष-
हो गया। मीनाने कामेश्वरके सम्ब-
तरह-तरहकी बातें लीलाधरके कान
पर दीं लेकिन मनमें वह उसे अपना
देवता समझती थी। वह नहीं
थी कि काकेश्वर नीरजाके हाथोंमें
करे। उसे अपने सम्बन्धमें इतनी
जानकारी थी कि उसके माता-पिता
हैं और वह जमींदारकी रोटी पर
है फिर भी उसने अच्छी तरह समझ
कि वह उसे अपनी लड़कीसे भी बढ़
जानता मानता है। कामेश्वर पर वह
न्यौछावर कर सकती थी। उसे पता
गया था कि गांवमें कामेश्वर अब
दिनों तक न रह सकेगा। इधर
और नीरजा एक दूसरे पर खार
लगीं और उनमें पटती भी कम थी।

एक दिन तो मीनाने जमींदारको शाम होनेके बाद विश्वास दिला दिया कि किस तरह नीरजा और कामेश्वर दोनों बगीचेमें मिल कर बातें करते हैं। मन्दिर को पुजारीने तो दोनोंकी शिकायत करने का ठीका ही ले लिया था और इसी लिये मीनाकी उससे बड़ी पटरी थी। वह उसे लड़केकी तरह मानता था।

नीरजा और मीना दोनोंकी दोनों बदल गयी थीं।

रातके आठ बजे थे। वासन्ती पूनो की चांदनी आसमानसे छन कर देवगढ़के मन्दिरके शिखर पर अपनी पहली किरण उतार रही थी। ऐसा लगता था कि मन्दाकिनी शिवके जटा-जूटमें उतर रही है। प्रकृतिमें अनुपम मादकता थी। नीरजा और कामेश्वर मन्दिरके तीसरे छठ पर बैठे थे, आज उनका मिलन-मन्दिर यही था। जमींदार लीलाधर शिकार पर गये थे और बारह बजेके पहले उनके वापस आनेकी आशा नहीं थी। पुजारी रामदास भी मन्दिरमें नहीं थे। जलघड़िये अपने अपने काममें लगे थे। नीरजा और कामेश्वरके इस तरह मिलनेका यह पहला दिन नहीं था, वे इसी तरह कई बार मिल चुके थे, दोनोंमें पवित्र प्रेमका बीज अंकुरित हो रहा था।

'इस तरह हम लोग रोज मिला करें', कामेश्वरने नीरजाका हाथ अपने हाथ पर रख लिया, उसने कहा—'मैंने शराब तो उसी दिन छोड़ दी जब तुमने मेरे मन-मन्दिरमें प्रवेश किया। शराब-शराब! गांव वालोंने नाकमें दम कर दिया है।'

'आप शराब पीते ही क्यों हैं?'

'क्या शराब पीना पाप है?'

'न पीनेवालोंने तो ऐसा ही कहा है,' नीरजाने गम्भीरतासे कहा।

'लेकिन शराबका प्याला न पीने वालों के अधरोंसे बिना उनकी इच्छाके नहीं लग सकता! और पाश्चात्य साहित्यकार लम्बने कहा है कि किसीको पीनेके लिये विवश नहीं किया जा सकता।' कामेश्वर कुछ कड़ा पड़ गया। उसने कहा—'उमर खय्यामने जिस दिन अपनी जवानीको कद करना चाहा, शराबने ही उसका साथ दिया था।'

'तो आप कैद करनेका सपना देख रहे हैं?' वह चुप थी। फिर नीरजाने कुछ जवाब न दिया लेकिन उसके हाव-भाव संकेत कहते थे कि कामेश्वर ठीक ही कह रहा है।

इतनेमें सीढ़ियोंपर खटपटकी आवाज होने लगी। दोनों उतर ही रहे थे कि मीनाने पुजारी रामदासका हाथ पकड़कर कहा कि बात बहुत बढ़ती जा रही है।

नीरजा और कामेश्वर मन्दिरसे दूर चले गये थे।

कुछ दिनोंके बाद बंशराजने कहा—'भगवानने बहुत अच्छी जोड़ी बनायी है।'....दिनके दो बजे थे। होलीके केवल तीन-चार दिन बाकी रह गये थे। प्रकृतिके नवीन वीनके तारोंका स्वर गुन-गुना रहा था।

'फागुनके दिन चार होली खेल मना रे।' बगीचेमें ही नी जा, मीना तथा सारे परिवारके लोग बैठे थे। कामेश्वरने कहा 'इन हरी-हरी लतिकाओंपर अबीर और गुलालकी सिन्दूरी आभा फूटनेसे जड़ और चेतनमें नया रङ्ग छा गया है।'

मीनाने कहा, इस तरहका अलङ्कार विवेचन देव और मतिरामके साथ उठ गया। अब आप नये अध्यायके पेज न खोलिये।'

इन बातोंसे जमींदारको कुछ आनन्द मिला। लेकिन बंशराजके पहले शब्दवेधी बाण उसके कलेजेको छेद रहे थे। कामेश्वर भी तो उन्हींके टुकड़ोंपर पल रहा था। एक अदने आदमीसे इतने बड़े जमींदारकी शादी हो,—यह असम्भव था।

फिर भी उसने रङ्गमें भङ्ग नहीं करना चाहा। कामेश्वर स्वयं उठ पड़ा। एक-दो तीन, थोड़ी ही देरमें सबके सब उठ गये।.....

....पुजारीने नव बजे रातको आकर कहा 'सरकार वह चला गया।' 'आपने बहुत बड़े इनामका काम किया है।'

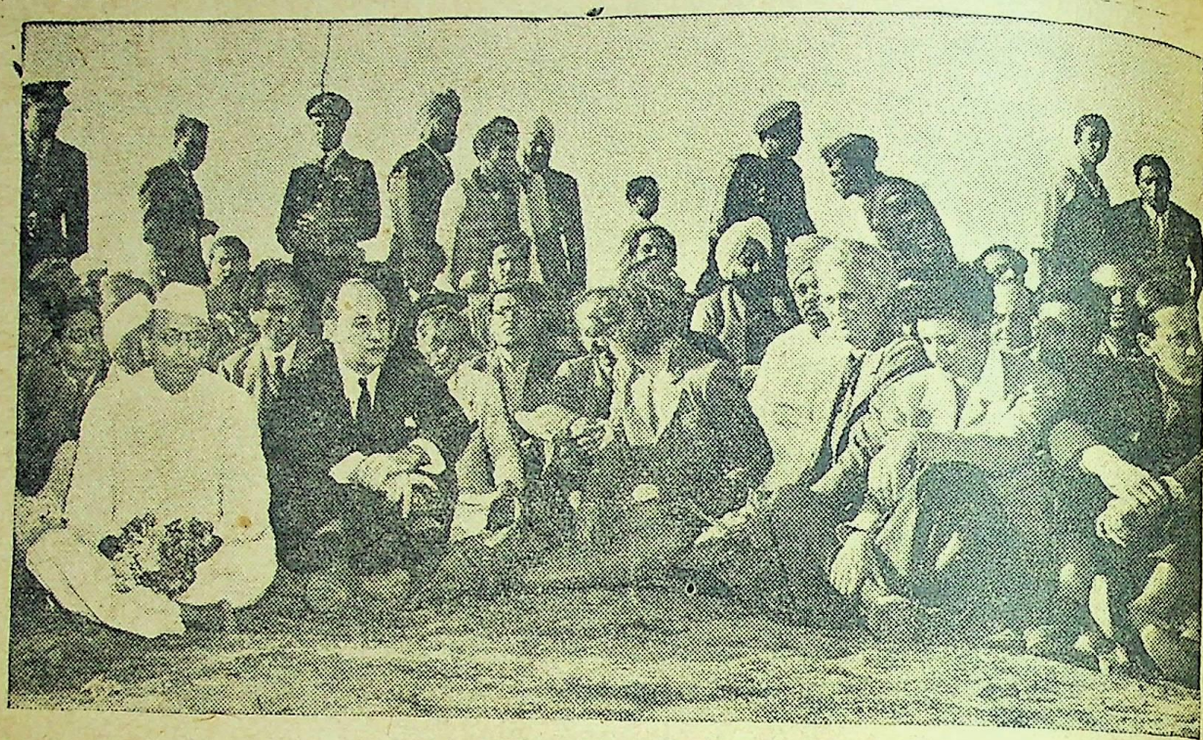

जमुनाके किनारे चिता-दाहके समय बम्बईके प्रधान मंत्री श्री खेरके साथ बैठे हुए जन समूहका एक दृश्य।

मगर स्टेशन उस गांवसे निकट था। गोरखपुरसे रातको एक ही गाड़ी खुलती थी। पुजारीको विश्वास हो गया था कि रात ही की गाड़ीसे कामेश्वर कहीं दूर चला जायगा। उसने नीरजा और मीनासे सम्बन्ध तोड़ लिया। मीना चाहती थी कि वह नीरजासे अलग रहे लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि वह उसे आंखोंसे ओझल करनेके पक्षमें थी।.... मीनाको रातमें ही पता चल गया लेकिन उसने नीरजाको छेडना उचित न समझा।

सबेरा होते ही यह बात सारे गांवमें फैल गया।....नीरजा कामेश्वरके कमरेमें गयीं, वह बाहरकी ही कोठरीमें रहता था। कमरा खाली था मेजपर नीले लिफाफे में उसीके नामकी एक चिट्ठी थी, वह पढ़ने लगी, उसके मस्तिष्कमें आंधी चलने लगी, बगीचेके अमोले तड़-तड़ टूटने लगे वह पढ़ रही थी।

'मैं जा रहा हूं, यह नहीं जानता, किधर, किस ओर, लेकिन बहुत दूर, उस जगरपर केवल मैं रहूंगा और रहेगी तुम्हारी कभी न भूलने वाली याद। मिलना इसीलिये होता है कि फिर मिलना बाकी न रह जाय।'

नीरजाके नयनोंसे मोती झरने लगे। मीना आ गयी, दालानमें ही लीलाधर महोदय कुछ चिन्तितसे बैठे थे। पुजारी रामदास पाठ कर चुके थे।

लोगोंने देखा—वंशराज आ रहा है। वह अपने आपेमें नहीं है।

उसने आते ही लीलाधरसे कहा, सरकार, बहुत बुरा हुआ। एकाएक पुजारीने कहा, 'क्या ?'

"तुम्हारा सिर'

लीलाधर चुप थे। उसने कहा 'यदि मैं जानता कि तुम मीनासे मिलकर उसको निकाल बाहर ही करोगे तो उसे मैं अपने घरसे कभी नहीं जाने देता। हीरा था, हीरा! राजपूतका लड़का था।

लीलाधरने कहा 'राजपूत।'

"हां ठाकुर, वह पड़ोसका ही था, मनिकौराके बड़े जमींदारका बेटा था।'

पुजारी रामदास पीला पड़ गया।

लीलाधर महाशय रामदासकी दशा देखकर और भी घबड़ा गये।

पुजारीने कहा सरकार देर हो गयी वर न मिल सकेगा। मीना मेरी सन्तान नहीं। वह तो कामेश्वरकी ही बहिन है मैंने बना बनाया काम बिगाड़ दिया और फिर उसने नीरजासे कहा, 'बिटिया भूल हो गयी।'

मीना लीलाधरकी ओर देखने लगी उसके मनमें विषाद और हृदयमें आनन्द था।

नीरजाके गुलाबी गालोंपर शयनमर्दन रेखायें अबतक न मिट सकीं।.. रानी बिटियाने शादी न की।

देवगढ़का बिशाल मन्दिर देखते ही दूर देशके राही वेदनाके बोझसे दब जाते हैं और अड़ोस-पड़ोसके लोग कह उठते हैं—'वह रानी बिटियाका मन्दिर है।'

अंग्रेजी चित्रपट

श्री कुमारी मृणालिनी राय लन्दन

लड़ाईसे पहले भी इंगलिस्तानने 'बड कम्पेनियन्स', ब्वैकमेल,'पिगमेलियन, ब्वैक हालीडे,' 'थिंग्स टू कम' आदि कई अच्छी फिलमें बनाई थीं, किन्तु लड़ाईसे पहले अंग्रेजी फिलम-कम्पनियोंका मुख्य ध्येय फिलम बाजारमें अमरीकाका मुकाबला करनेके लिये कम दामोंपर अधिकसे अधिक फिलमें बनानेका था। अच्छी और बुरी फिलम की पहचान रखनेवाले जानते हैं कि इस बातका असर फिलम कलापर क्या होता है। ऐसी फिलमें बनानेवाले अधिकतर हालीवुडके उच्छृङ्खल और सनसनीपूर्ण तरीकोंकी ही नकल करते थे, किन्तु उनमें अधिक सफल न हो पाते क्योंकि हालीवुडकी सनसनीपूर्ण ये फिलमें जीवनकी कितनी ही झूठी और और कृत्रिम झलक क्यों न दें, हालीवुडके लोगोंके पास मनमाना खर्च करनेके लिये पैसे की कमी नहीं है। किन्तु अंग्रेजी फिलमकारोंके पास, विशेषतया पिछली लड़ाईके बाद, इतना पैसा न था कि वे उसे एक एक फिलमपर पानी की तरह बहा सकें। नतीजा यह था कि यद्यपि १९३७ में इङ्गलैंड सालभरमें २२५ के करीब फिलमें बना सका था दुनिया भर और इङ्गलिस्तानके लोग भी अधिकतर अमरीकी फिलमों को ही देखना पसन्द करते थे।

इस महायुद्धका असर अंग्रेजी फिलम जगत्पर कुछ अजीब ही हुआ। लड़ाईसे पहले देशभरमें बाइस स्टुडियो और ६५ साउण्ड-स्टेज थे। लड़ाई शुरू होनेपर देश भरमें केवल नौ स्टुडियों और तीस साउण्ड स्टेज रह गये और १९४२ में केवल साठ फिलमें बनी। बहुतसे स्टुडियो बमबारीसे नाकाम हो गये थे, कुछेक को सरकारने अपने गोदामों और लड़ाईके लिये अन्य उपयोगी काम-धन्धोंके लिये अपने हाथोंमें ले लिया था। मशीनें, कपड़े, रङ्ग फिलमी कारीगर और तो और कलाकार तक मिलना असम्भव था।

किन्तु बमबारी और लड़ाईसे देशमें अन्य कितने ही अन्य परिवर्त्तनोंका असर इङ्गलैंडकी जनताके दिल-दिमागपर हुआ था। दिन रात अपनी आंखोंके सामने सच्च और गहरे सुख-दुःख देखने वाली जनता चित्रपटपर सनसनीपूर्ण और अयथार्थ जीवनके चित्रोंको नापसन्द करने लगी। बमबारी और लड़ाईके कई एक दर्दनाक, भयानक और यथार्थ दृश्यों को देख चुकी जनता, बन्धु-बान्धवों, प्रियजनोंसे मिलन वियोगके हृदयको छू देनेवाले सच्चे दृश्य देख चुकी जनता फिलम-जगतसे अयथार्थ और कृत्रिम न मांग कुछ और मांगती थी वह चीज जो उनके जीवनके अधिक निकट हो, वह चीज जिसमें वे विश्वास कर सकें। जनताकी इस मांगको अंग्रेजी फिलम जगतके कलाकारोंने समझा और लड़ाईके दौरान ही में इंगलेण्डके फिलम जगतमें एक काफी बड़ा परिवर्त्तन आया। विवरणात्मक फिलमोंमें तो इङ्गलैंड पहले ही से नाम पैदा कर चुका है। बल्कि फिलम जगतको विवरणात्मक फिलम तो इङ्गलैंड ही की देन है। लड़ाईसे पहले भी घरोंकी समस्या और उद्योग-धन्धों की समस्यापर तथा 'ड्रिफ्टर्स,' 'जू एण्ड यू,' स्पीड दि प्ले चिल्ड्रन एट स्कूल दि लण्ड-नर्स आदि प्रकृति-निरीक्षण, शिक्षा-संबंधी देशकी जनता की आम जानकारीके लिये हर साल उत्तमसे उत्तम फिलमें बन रही थीं। किन्तु लड़ाईके जमानेमें तो यह फिलमे जनताके प्रतिदिनके जीवनके बिल्कुल करीब आ गयीं। इन फिलमोंने जहां एक ओर इङ्गलैंडके लोगोंको बमोंसे लगी आग बुझाने और आत्मरक्षाके साधन पुनःसिखाये और युद्धमें वीरता दिखानेवाले का कारनामें दिखाकर उनका साहस और धैर्य कायम रखनेकी कोशिश की। दूसरी ओर इन्होंने देशके भिन्न भिन्न व्यवसायमें काम करनेवालोंकी जिन्दगीको उनकी उलझनों, तकलीफों, परेशानियों और उनके काम-काजकी महत्ताको देशकी जनताके सामने सच्चे रूपमें प्रकाशित किया। विवरणात्मक फिलमोंकी एक बहुत बड़ी खूबी यह है कि इन फिलमोंमें भाग लेनेवाले लोग उसी व्यवसाय या उसी परिस्थितिमें काम करनेवाले या रहनेवाले लोग होते हैं जिनके बारेमें यह फिलम बनायी जाती है।

ब्रिटेनकी अत्यन्त मशहूर फिलम स्टार जीन सिमन्स

यह फिलस्तीनकी पियानो बजाने वाली शुलामिथ शाफिर है

कहानी फिल्मोंमें भी इंगलैण्डमें लड़ाईके जमानेमें 'नार्मन कोवार्ड' की 'ब्रीथ एनकाउण्टर' 'इन विछ वी सर्व' 'वे टू दिस्टार्स' 'मिलियन्स लाइक अस' 'पिम्पर्नल स्मिथ' और 'वाटरलू रोड' सी फिल्में बननी शुरू हुई। लड़ाईके जमानेमें जनता और सरकारकी ओरसे जिस प्रकारकी फिल्मोंकी मांग शुरू हुई थी, उन्हें बनानेके लिये अंग्रेजी फिल्म-जगत के लोगोंने जे० बी० प्रीस्टले और डब्ल्यू० एच० आंडेन जैसे लेखकों और कवियों-से लेकर देशके उद्योगों और ललित कलाओंके उत्तम कलाकारोंकी सहायता मांगी थी जिसका परिणाम भी उत्तमही हुआ। अंग्रेजी विवरणात्मक और कहानी-फिल्म आवाज चित्रकला अभि-नय और फिल्म-कलासे सम्बन्धित अन्य पहलओंमें लड़ाईसे पहले बनी फिल्मोंसे कहीं अधिक अच्छी बननी शुरू हुई। अब अंग्रेजी फिल्ममें चाहे वह विवरणा-त्मक फिल्म हो, चाहे कहानी फिल्म काफी हद तक वह पूर्णता, सच्चाई और सौन्दर्य था, जो किसी सुन्दर चित्र या किसी अच्छी कविता या कहानीमें होता है। फिल्म-कलामें इन नये तजुर्बों और उनके उत्तम नतीजोंको देख जे० आर्थर रेंक जैसे फिल्म-मालिको, इंगलैण्डकी फिल्म-कम्पनियोंके डाइरेक्टरों और प्रस्तुत कर्त्ताओंने यह अनुभव किया कि यदि इंगलैण्ड को फिल्म जगतमें अपना कोई विशेष स्थान रखना है, तो वह अपने देशकी जनताके सामने और अन्य देशोंके लोगोंके सामने भी इंगलैण्डकी उत्तम कलाके रूपहीमें रखा जा सकता है। नतीजा यह है कि जहां विवरणात्मक फिल्कोंमें गृह समस्या और औद्योगिक योजनाओंकी समस्याके बारेमे 'लेण्ड आफ प्रामिजेज' आदि उत्तम फिल्में बनी हैं, वहां कहानी फिल्ममें बर्नार्ड शाकी 'सीजर एण्ड क्लियोपेटा' और डिकेसकी 'ग्रेट एक्सपेक्टेशन्श' नोएल कोवार्डकी 'ब्रीफ एनकाउंनटर' 'ग्राहम ग्रीनकी मैन विदिन' वगैरह अच्छी कृतियां भी प्रस्तुत हुई हैं। संगीत नृत्य गायन और अन्य म-नोरजनकी फिल्में भी बनती हैं, किन्तु मै समझती हूं कि इन संगीत नृत्यकी फिल्मोंका स्टेण्डर्ड भी अमरीकी नाचगानकी आम फिल्मोंसे बेहतर ही है।

फिल्मी दुनियांमें नित नये तजुर्बे होते रहते हैं और यह देखनेका अवसर लन्दन से शहरमें, जहां रूस, फ्रांस, हालेण्ड, जर्मनी, नार्वे, चेकोस्लाविया आदि सभी देशोंकी उत्तम फिल्में देखनेका अवसर मिलता है फिल्मको कलाकी दृष्टिसे देखने वाला व्यक्ति नयासे नया तजुर्बा कर सकता है। हालेन्डके प्रसिद्ध फिल्म प्रस्तुतकर्त्ता कार्लाड्रेयरकी बनाई फिल्म 'डेआफ राथ' देखकर यह महसूस हुआ कि फिल्म सुन-नेकी चीज कितनी कम रह गई है और उसकी खूबी, उसका सौंदर्य केवल देखने में ही है। यही चीज मैंने बहुत हद तक अभी हाल ही में बनी अंग्रेजी फिल्म आड मैंन आउट में पाई।

फिल्म—जगत में इंगलैण्ड अब फ्रांस और रूसकी बराबरीका दावा करने लगा है। इसका एक कारण यह है कि यद्यपि इंगलैण्डका फिल्म धन्धा अधिकतर जे आर्थर रेंक जैसे दो-तीन आदमियोंके हाथ में ही है उनके भिन्न भिन्न स्टुडियोमें काम करने वाले डाइरेक्टरों और प्रोड यूसरोंको इतनी स्वतंत्रता है कि वे एक दूसरेसे, हर प्रकारसे उत्तम फिल्म बनानेके मामलेमें होड़ लगाये रहते हैं।

कायदे आजम जिन्ना जो पूर्व बङ्गाल और उत्तर पश्चिम फ्रान्टियरका दौरा करने वाले

विकल !

क्या बताऊं मन, विकल क्यों हो गये।
दो सफल जीवन, विफल क्यों हो गये॥
साधना अपनी अधूरी हो सकी,
अर्चना अपनी न पूरी हो सकी,
सुधि-सुधाके कण, गरल क्यों हो गये।
क्या बताऊं मन, विकल क्यों हो गये॥
फूल खिलनेके प्रथम ही गिर गये,
मन-गगनमें वेदना-घन घिर गये,
प्रकृति-परिवर्त्तन प्रबल क्यों हो गये।
क्या बताऊं मन विकल क्यों हो गये।
आज क्योंकर उर-कमल कुम्हला गये
बिन्दु सिञ्चनके लिये दो आ गये,
इन्दुसे आनन सजल क्यों हो गये।
क्या बताऊं मन विकल क्यों हो गये॥
आज नयनोंकी तरलता खो गयी,
आज वह मादक मृदुलता खो गयी,
आज अवगुण्ठन, अचल क्यों हो गये।
क्या बताऊं मन, विकल क्यों हो गये॥

—शील चतुर्वेदी।

मनुष्यके पास समृद्ध बनाने के लिये अनेकों सुख सामग्री और अगाध सम्पत्ति भले हो हो परन्तु सुन्दर स्वास्थ्य और सम्पूर्ण शक्ति के बिना उसका जीवन दुखमय और कठिन हो जाता है। जीन सोन गोल्ड टानिक पिल्स पुरुष जातिको निर्बलता से बचाकर शुद्ध वीर्य का विकास कर उसमें नवीन शक्तिका संचार कर उन्हें पुष्ट बनाती है। आठ दिन के लिये ४८ गोली की एक शीशीका मूल्य ५) वी० पी० खर्च अलग। परहेजकी आवश्यकता नहीं होती और प्रत्येक मौसम में सेवन किया जा सकता है।

चाईनीज मेडिकल स्टोर स्थापना १९३०

हेड आफिस—२८ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट बंबई

शाखायें—चार रास्ता, अहमदाबाद १२, डेलहौसी स्क्वायर कलकत्ता, नया बाजार, दिल्ली

उच्चतम क्वालिटीकी लीवर घड़ियां

अत्यधिक सस्ती कीमतोंपर स्विटजरलैण्ड की बनी हुई, निहायत सुन्दर और आधुनिक आकार, ठीक समय देनेवाली। हर एक घड़ीकी गारण्टी ३ साल। क्रोमियम केस गोल या चौकोर साइज की १८) सुपीरियर २०) बेस्ट २५) रेक्टंगुलर और टोनिओ आकारकी चित्र जैसी घड़ियां उज्वल क्रोमियम केस, ५ ज्वेल ३८) रोलडगोल्ड ७ ज्वेल ५८) क्रोमियम केस १५ ज्वेल ६५) रोल्ड गोल्ड १० साल की गारंटीका केस ८३)। प्लास्टिक पट्ट सहित। डाक खर्च और पैकिंग माफ।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V.C.)
ऐशबाग — लखनऊ

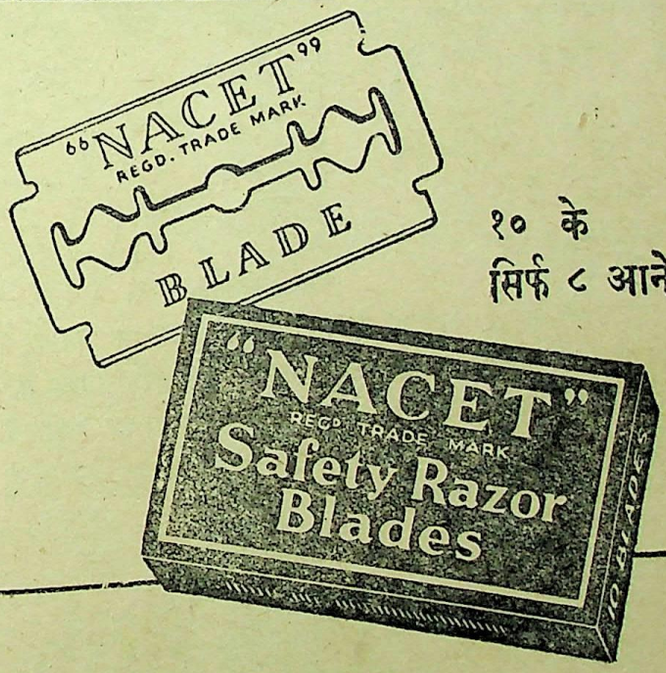

१० के
सिर्फ ८ आने!

"NACET"

"नेसेट"

अल्प मूल्य में परिपूर्ण हजामत देता है!

REGD. NO. C 2229.

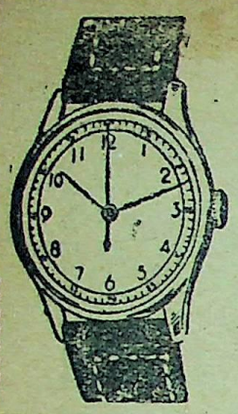

A NOVELTY WATCH
'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable, 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage as. 12. Free fo 2 watches.
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM

MONSOON SETS IN
Anophelis breeds..

यह आश्चर्यजनक औषधि मलेरिया बुखारके लिये रामबाण है अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियासे कष्ट हो तो इसका सेवन करें। यह लाभप्रद एवं कम खर्चीला है।

PANCHATIKTA
Kasaya

KAVIRAJ N. N. SEN & CO. LD.
CALCUTTA

पांव के छाले
और
घाव का दर्द
शीघ्र दूर होता
और
भरता है

जम्बक से लाखों लाखों व्यक्तियोंको चार प्रकारसे आराम मिलता है इस श्रेष्ठ मलहम का विशुद्ध वनस्पति तेल शीघ्र ही लोमकूपोंमें प्रवेश कर थकावट और दर्दको आराम करता, जलन और सूजनको दूर करता है सभी प्रकारके चर्म रोगों और घावोंकी चिकित्साके लिये जम्बक सर्वश्रेष्ठ है—हमेशा एक डिब्बी अपने पास रखें।

जम्बक व्यवहार करें

Zam-Buk

विश्व विख्यात वनस्पति मलहम
पशु चर्बी रहित होने की गारण्टी
एजेण्ट्स : स्मिथस्ट्रीट एण्ड कं० लि० इण्डाली, कलकत्ता

आह: हः
'लालशर' तोमेरे लिये अमृत है

लाल-शर
(लाल शरबत)
बच्चोंको मोटा, ताजा, स्वस्थ और प्रसन्नचित्त रखने की प्रसिद्ध मीठी दवा

सब जगह मिलता है।
डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लि० कलकत्ता

नं० ३

सम्पादक—देवदत्तमिश्र। ७४ घमतला स्ट्रीट, स्थित इलेस्ट्रेड इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

सचित्र

विश्वामित्र

The AIRMAN and his watch!

विमान चालक और उसकी घड़ी—विमान वाहक घड़ीकी उत्तमताके उत्कृष्ट निर्णायक होते हैं। उन्हें विशेष मजबूत, सुन्दर और निर्भरयोग्य तथा ऐसी घड़ी की तलाश रहती है, जो कलाई पर सुन्दरता और मजबूतीसे बांधी जा सके। 'वेस्ट एण्ड' के इन्हीं गुणोंपर विमोहित विमान वाहकोंके कितने ही प्रशंसा पत्र हमारी फाइलकी शोभा बढ़ा रहे हैं

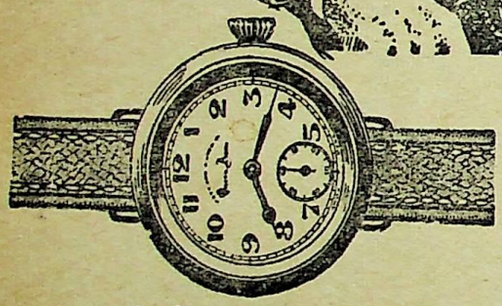

क्वीन ऐनी - क्रिस्टल शेप
निकेल सिलवर, एवर ब्राइट स्टील बंक ... ५२) रु०

एक हवाई आफिसर लिखते हैं—"मेरे एक मित्र, जब कि भारतमें थे, गत सितम्बर या अक्टूबरमें मेरे लिए आपसे एक घड़ी खरीदे थे—मैं बहुत खुश हूं कि यह बिलकुल ठीक चल रही है।"

मांग की अधिकता और अपर्याप्त आयात के कारण हम विज्ञापित सब प्रकारकी घड़ियों की सफाई की गारंटी नहीं दे सकते, तथापि यथा सम्भव कोशिश करते हैं

वेस्ट एण्ड वाच कं०, बम्बई और कलकत्ता

WEST END WATCH Co

BOMBAY • CALCUTTA

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

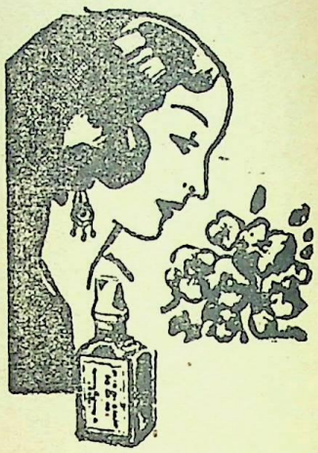

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी हैं। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

फैंसीसिल्कसाड़ी आकर्षकडिज़ाईन

कलापूर्ण ३-४ इञ्च चौडा बार्डर

नं०	७	८	९	५ गज
	१८)	२३)	२८)	"

२) आर्डर के साथ पेशगी बाकी वी०पी० से

थोक व्यापारियों को खास सुभीता

वमाको इन्डस्ट्रीज, जुही कानपुर

देश हितैषी धर्मप्रेमी ध्यान दें

रामायणकी विशारद, रत्न, भूषण आचार्य आदि परीक्षाओंके अपने २ स्थानों पर केन्द्र खोलकर एवं परीक्षायें देकर डिग्री प्रमाण पत्रोंके अतिरिक्त मेडिल पारितोषिक इनामें प्राप्त कर आध्यात्मिक प्रचार करें नियमों के लिये लिखें :—

पता--अ०भा० धर्मग्रन्थ प्रचार समिति मछरया (मिहोना) गवालियर सी. आई

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय

स्थापना १९२५

आसोंदा

१८८८ सुरत

नीलगिरि तेल

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमें बहुत लाभदायक

प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

विश्वामित्र

सम्पादक—

देवदत्त मिश्र

वर्ष—३० संख्या—५९ ता० १० मार्च १९४८ MARCH, 10 1948. मूल्य =) वार्षिक ६)

युगकी मांग

आज ओजका नवीनतम उभार चाहिये !
रक्त-तप्त रक्तकी सशक्त धार चाहिये !
सुव्यक्त धार चाहिये !

अस्त व्यस्त, ध्वस्त, त्रस्त हो रही वसुन्धरा,
ढो रही विनाश और सृष्टिकी परम्परा,
मान मानवोंका आज हो गया है अधमरा,
एक युग हुआ मनुष्य दानवोंसे है घिरा,
अब मनुष्य को पुनीत मुक्ति द्वार चाहिये !
मुक्तिके लिये सशक्त रक्तधार चाहिये !
सुव्यक्त धार चाहिये ।

मति विहीन, गतिविहीन, क्षीणकाय, दीन क्यों ?
गिन रहे हो मौतके दिन एक, दो व तीन क्यों ?
अब उठो जवान हो ! कि बाहुओंको तौल लो,
मीन-मेख छोड़कर स्वराज्य लो न चिन्ह क्यों ?
राष्ट्रके विकासमें न ये विकार चाहिये !
आज तो हमें नये, नये विचार चाहिये !
नये विचार चाहिये !

'नर्म' हों कि 'गर्म' हों, स्वधर्म भूलिये नहीं,
शर्म भूलिये नहीं, स्वकर्म भूलिये नहीं,
मर्म जान जाइये, अधर्म दर्प जानिये,
वर्ण और विवर्णके बिबाद व्यर्थ मानिये,
आज एक सूत्रमें बंधे विचार चाहिये !
आज ओजका नवीनतम उभार चाहिये !
नया उभार चाहिये !

बार बार त्रस्त भारती तुझे पुकारती,
धीर वीर, एक बार, फिर उतार आरती,
कष्ट हों हजार किन्तु आश छोड़ना नहीं,
मारको उतार आज दब रही है भारती,
धारसे उबार, नांव आज पार चाहिये !
आज ओजका नवीन तम उभार चाहिये !
नया उभार चाहिये !

हो रहे विनष्टपर न रुष्ट तुम भी हो सके,
राष्ट्र-भालसे न कष्टके कलङ्क धो सके,
आत्म ओज भ्रष्ट हो गया कि तुष्ट तुम रहे,
किन्तु आज फिर जगी प्रभा न नष्ट हो सके,
जागते रहो ! न नींदका खुमार चाहिये !
आज ओजका नवीनतम उभार चाहिये !
नया उभार चाहिये !

—श्री 'भृङ्ग' तुपकरी

'गांधी तो अमर है'

आचार्य प्रभुदयाल अग्निहोत्री

वज्रपात !
वज्रपात दारुण रे !
दारुण रे महानाश
डोल रहा शीश शीश,
बोल रहा पीस पीस
भैरव दंष्ट्रा कराल,
'रक्त रक्त, उष्ण रक्त।'
मासोंसे कि वर्षोंसे कि युगोंसे शताब्दियोंसे
पीता आ रहा है
तो भी पेट भरता नहीं,
बुझती नहीं है प्यास।
देखो रे, देखो रे !
घूमता है महाकाल
शिवि हो, दधीचि हों कि दार्शनिक सुकरात
मनसूर हों कि खुद ईशपुत्र ईसा हों
रुकता नहीं है वह,
झुकता नहीं हैं वह,
शोणितकी मांग है, शोणितकी मांग है।
गूंज उठा अम्बर है,
कैसा भयङ्कर है ?
सम्हलो रे, सम्हलो रे !
देखो वह आ गया,
अवनीपर छा गया।
कैसा परपंची है ?
मानवका भेष धरे
टूट पड़ा मानवोंमें।
अरे इसे टोको तो।
कोई इसे रोको तो।
देखो मुंह खोल रहा,
बद्ध मुष्टि तोल रहा,
कांप उठा कण कण।
किधर प्रहार किया ?
किस पर वार किया ?
अरे वही मानव यह,
यह महामानव है,
यह अतिमानव है
धर्म द्युतिमान है।
नहीं नहीं,
मानवका बेष धरे यह भगवान है

* * *

क्रूर यह क्या किया ?
रक्त किसका पिया ?
पच यह न पायेगा,
फूट फूट आयेगा।
देख रे,
कालकी, दिशाओंकी शरीरकी कि प्राणकी
भीतियोंको छेद कर,
सौर लोक बेध कर,
देख, वह आ गया।
अस्थि, मांस, शोणितके नागपाश तोड़कर,
आधियोंकी व्याधियोंके ग्रीवाय मरोड़कर
देख फिर जी उठा।
खिल उठा जन जन,
खिल उठा मन मन,
बोल उठा कण कण,
गांधी डरता नहीं,
गांधी मरता नहीं,
गांधी कब मानुष हैं ?
गांधी तो प्रतीक हैं !
सभ्यताका संस्कृतिका,
मानवके मनकी निवासी सुर शक्ति का,
सत्य, शिव, सुन्दर का,
मानवका रूप धरे ईश्वर का,
गांधी अविनश्वर है
गांधी तो अमर है।

* * *

तो भी नभ रोता है,
धैर्य जग खोता है,
गिरते हैं अश्रु टप टप कर।
वेदना के बादलों ने
आशा के सितारे ये,
एक एक लील लिये।
दारुण है अन्धकार,
दारुण पीड़ा प्रसार,
ओर नहीं छोर नहीं,
पूरबसे पश्चिम लों,
उत्तर से दक्खिन लों,
आंसू ही आंसू हैं।
काम सब रुक गये,
झण्डे सब झुक गये,
घोर शोर हो उठा,
प्राण प्राण रो उठा।

* *

नहीं, यह पीड़ा नहीं,
दुर्बल की व्रीड़ा नहीं,
अरे यह श्रद्धा है,
आंसू नहीं, पूजन के हेतु यह जल है,
जीवन के पथका पुनीत सम्बल है।
कौन कहता है आज मानवता मीता है
सौंप गया गांधी जिसे भागवत मीता है ?
हम नहीं भीरु आज, हम न अधीर हैं,
गाण्डीव कर और लक्ष्य भेदी तीर हैं।
क्षण भर का ही मोह लायी यह आंधी है
किन्तु साथ गांधी है
गांधी अविनश्वर है,
गांधी घर घर है।

* * *

माना, यह सत्य है,
भारतीय संस्कृतिके शुभ्र इतिहास में
सवदा को सर्वदा को
जुड़ गया काला पृष्ठ
शुभ्र चित्रपट पर धब्बा है,
सचमुच है निकृष्ट।
कट न सकेगा यह,
फट न सकेगा यह,
किन्तु हम बैठें क्यों ?
क्रोध भरे ऐंठें क्यों ?
भूल से उठा जो पग उसको सम्हाल दें
क्रोधकी दावाग्निपर क्षमाका जल डाल दें।
बापू ने बताया है,
हमको सिखाया है,
असुर को सुर में बदल डालो
कलमष धो डालो,
मन को टटोलो,
देखो और फिर बोलो'
कहीं तुममें भी छिप कर
बैठा तो न दानव है।
व्यर्थ ही न जाय महामानव का बलिदान
हिन्दू 'औ' मुसलमान
मानव हैं, मानव की सन्तान।
भेद, अरे ये तो सब हमने बनाये हैं।
उठो उठो आगे बढ़ो
सीना चीर पत्थरों का
ब्रह्मपुत्र के समान
कलकल गीत से
जग को गुंजा दो
शांति रस बरसा दो
भेद, अन्तर असत्य है
राम नाम सत्य है,
सत्य एक गति है,
सत्य एक मति है,
भावना पुनीता हो,
हाथ चारु गीता हों,
गांधी जन जन में
गांधी मन-मन में
गांधी अविनश्वर है
गांधी तो अमर है

पर हित बस जिनके मन माहीं ॥
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

युद्धकी विभीषिका

साधारणतया इस धारणाने घर कर लिया है कि राष्ट्रोंके बीचमें युद्ध होते ही रहेंगे, इनको मिटाया नहीं जा सकता क्यों कि मनुष्य स्वभावसे युद्ध-प्रिय होता है। कुछ अंशोंमें यह बात सत्य हो सकती है, किन्त प्रत्यक्षमें दिखायी देने वाला यह सत्य वास्तवमें सत्य है नहीं। स्वभाव बनता और बिगड़ता है। अबतकका इतिहास इस बातका साक्षी है कि युद्धको रोकनकी अपेक्षा उसको प्रोत्साहन देने वाले ही प्रयास अधिक किये गये। युग-युगमें सन्तोंने अहिंसाका प्रचार किया किन्तु युद्ध स्थिति उत्पन्न करनेवाली राजसत्ताएं इस प्रचारके प्रभाव में बहुत कम आयीं और युद्ध होते रहे।

युद्धके समर्थक अपनी कुत्सित मनोवृत्तिको छिपानके लिये यह दलील भी पेश करते हैं कि नाना कारणोंसे युद्ध होते हैं और इन सब कारणोंका अस्तित्व मिटाना असम्भव और असाध्य है। किन्तु संसार की अबतक की प्रगति यह बताती है कि असम्भव और असाध्य कुछ भी नहीं है, यदि अधिकारी व्यक्ति उचित और पर्याप्त प्रयास करें। युद्ध नहीं रोके जा सकते, इस मतसे सहमत न होते हुए भी हम देख रहे हैं कि अभीतक दुनियाने ईमानदारीके साथ युद्ध रोकनेका प्रयत्न नहीं किया और उसीका परिणाम है कि अभी युद्ध बन्द हुए चार वर्ष भी नहीं बीते किन्तु १९४८ की युद्धकी विभीषिका दूसरे महायुद्धके आरम्भ होनेके पूर्व १९३९ से भी अधिक घनी, काली और भयंकर है। चकोस्लोवाकिया ही दूसरे महायुद्धका अन्तिम कदम था। १९३९ में हिटलरकी सेना चेकोस्लोवाकियाकी राजधानी प्रगमें घुसी थी। किन्तु इस कार्यको घोर अन्याय मानते हुए भी युद्धके लिये पर्याप्त नहीं समझा गया। कुछ महीने बाद युद्धका विस्फोट पोलैण्डमें हुआ। युद्धकी ओर संसारकी प्रगति ठीक उसी क्रमसे हो रही है, पर इस नाटकके पात्रोंमें कुछ हेर-फर है और भावी रंगस्थल भी इस बार दूसरा ही होगा। दूसरे महायुद्धके समय नाटकका प्रधान पात्र नतूफानी तहलका मचानेवाला हिटलर था। इस बार प्रधान नायक कौन है, धीरे-धीरे दृढ़ताके साथ प्रायः सम्पूर्ण यूरोप पर प्रभाव और आधिपत्य जमानेवाला स्टालिन या पैसेका जाल बिछाकर दुनियाको अपने चंगलमें फंसानेका प्रयत्न करनेवाला ट्रूमैन—यह कह सकना जरा कठिन है। बहर हाल यह तो कहाही जा सकता है कि इस बार युद्धका श्रीगणेश कोई भी क्यों न करे उसका प्रतिद्वंदी दूसरे युद्धके ब्रिटेनके समान दुर्बल, दब्बू, असमर्थ, और साधन शून्य पर मुखापेक्षी न होगा। दोनों अपनी-अपनी प्रचण्ड शक्तिके साथ टकरायंगे और इसलिये इस वारका युद्ध पिछले से कहीं अधिक भयंकर होगा, इसमें सन्देह नहीं है। इस वारके युद्धका रूप पहलेकी अपेक्षा अधिक सीमित हो गया है, इस अर्थ में कि तब युद्धारम्भके समय रूस और अमेरिका दोनों तटस्थ थे। कालान्तरमें जब ये दोनों युद्धमें आये तो एक ही पक्षमें। इस वार किसीके तटस्थ रह सकनेकी गुंजाइश नहीं है।

प्रतिक्रिया शुरू हो गयी है। चेकोस्लोवाकिया कम्यूनिस्ट अधिकारमें चला गया। वाशिंगटनमें इसकी प्रतिक्रिया बड़ी द्रुतगतिसे हो रहीं है। अमेरिका इसे अपने अस्तित्वके लिये चुनौती समझता है और वह इस चुनौतीको दुर्बल ब्रिटेनकी अपेक्षा अधिक मुस्तैदीसे स्वीकार करने जा रहा है। उसकी तैयारियां बहुत पहलेसे आरम्भ हो गयी थीं। यूनान और टर्कीको उसने अपना सामरिक गढ़ बना रखा है। बहुत सम्भव है कि यूनान ही तीसरे महायुद्धका पोलैण्ड बने। किन्तु प्रश्न यह है कि आततायी कौन होगा। स्टालिनको अपने संगठन और आदर्शों पर उतना ही भरोसा है जितना अपनी सैनिक शक्ति पर। इसलिय हम नहीं समझते कि स्टालिन युद्धारम्भ करनेकी उतावली दिखायेगा। क्योंकि उसे सैनिक और असैनिक दोनों क्रांतियों पर विश्वास है और एकके लिये वह दूसरेकी धैर्यपूर्वक तबतक प्रतीक्षा कर सकता है जबतक एकके सभी मार्ग बिलकुल ही अवरुद्ध न हो जायें। अमेरिकाका कूटनीतिक जाल उसकी महत्वाकांक्षाओंको पूरा करनेमें व्यर्थ सिद्ध हो रहा है अतः प्रश्न यह है कि क्या वह उस समय तक धैर्यके साथ यह देखनेकी प्रतीक्षा करता रह सकता है कि धीरे-धीरे सम्पूर्ण यूरोप रूसके प्रभावमें चला गया। शायद नहीं। उसकी सैनिक शक्ति, आर्थिक साधन और सम्पन्नता एवं सर्वोपरि अणुबमकी शक्ति उसके धैर्यके बांधको अधिक दिनोंतक नहीं रुकने दे सकती। और तब बहुत सम्भव है कि अमेरिकाकी ओरसे ही इस बार युद्धकी स्थिति पैदा की जाये।

ब्रिटेन और फ्रांस अमेरिकाके पीछे हैं। किन्तु इस बातकी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि फ्रांसकी सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी कम्यूनिस्ट है। इतना बड़ा विरोधी घरमें रखकर फ्रांस इस युद्धमें अधिक सहायक हो सकेगा, ऐसी आशा नहीं है। तब, एक तरह अकेले ही अमेरिकाको अपने बल पर तीसरा युद्ध लड़ना पड़ेगा और वह इसके लिये तैयार है। चेकोस्लोवाकिया में हुए परिवर्तनके लिये रूसको जिम्मेदार ठहराया गया है और अमेरिकाके नेतृत्वमें ब्रिटेन और फ्रांसने पहली बार रूसके विरुद्ध सम्मिलित प्रतिवाद किया है। वाशिंगटनमें इस बात पर विचार हो रहा है कि इस मामलेमें अब क्या किया जाना चाहिये। बहुत सम्भव है कि युद्धकी ओर पहला कदम रूससे कूटनीतिक सम्बन्ध विच्छेद करके उठाया जाये। दोएकब्रिटेन, फ्रांस, बेलजियम और नेदरलैंडको एक सूत्रमे बांधकर अमेरिका इसी दिशामें अग्रसर हो रहा है।

न मूर्ख हैं न पागल

गत सप्ताह पाकिस्तान पार्लमेण्टमें बजट पर बोलते हुए प्रधान मन्त्री मि० लियाकत अली खांने कहा कि "पाकिस्तान में ऐसा कोई नहीं है, वह झोपड़ेमें रहता हो या महलम, सरकारी नौकर हो या नागरिक, जो युद्ध चाहता है।" हिटलरने एक नयी कूटनीतिको जन्म दिया था। बात वह कहो जो करनेके ठीक विपरीत हो। युद्धकी स्थिति उत्पन्न करनेवाले न मूर्ख होते हैं न पागल। मियां लियाकत अली कहते हैं कि यदि मैं युद्ध चाहूं या वह काम करूं जो युद्धकी स्थिति पदा करे तो मेरी जगह पागलखानेमें होनी चाहिय। दुनिया जानती है कि युद्ध स्थिति उत्पन्न करने वालोंको आज तक कभी पागल खानेमें नहीं रखा गया, उलटे उन्होंन ही उन लोगों को पागल बनाने वाले कैदखानोंमें रखा रखा जिन्होंने सचाई और ईमानदारीके साथ युद्धका विरोध किया। लियाकत अली यह भी कहते हैं कि पाकिस्तान सीमा विस्तार नहीं चाहता। शान्ति और प्रगति चाहता है, और कुछ नहीं। काश्मीरमें अघोषित युद्ध पाकिस्तानकी इसी इच्छाकी प्रतिक्रिया है, सीमा विस्तार उसका उद्देश्य नहीं है। पाकिस्तानके प्रधान मन्त्री खुद तो नहीं पर दूसरोंको पागल अवश्य समझते होंगे। अन्यथा कमसे कम वे दूसरोंके त्याग और बलिदान, संकटों और कष्टोंसे लाभ उठाकर यह कहनेकी हिमाकत न करते कि "बड़ी-बड़ी कुर्बानियोंके बाद हमने जो स्वतन्त्रता पायी है उसकी रक्षाके लिये हम आखिरी दमतक लड़ेंगे।" शायद हिन्दुओंके विरुद्ध घोषित जेहादको वे अपना स्वतन्त्रता-युद्ध कहते होंगे। मुस्लिम लीगी प्रान्तोंमें लीगी सरकारों और अंगरेज अधिकारियोंकी सहायतासे वहांके हिन्दुओंके खिलाफ बोले गये सीधे हमलों और नृशंस कायरतापूर्ण अत्याचारोंको जो व्यक्ति स्वतन्त्रताका युद्ध कह सकता है वह दूसरोंको पागल ही समझ कर ऐसी बात कह सकता है।

पाकिस्तानकी वर्तमान आर्थिक स्थिति जैसी है उसे देखते हुए दबा हुआ असंतोष या विद्रोह किसी समय भड़क उठ सकता है। इसे दबाये रखनेके लिये यह आवश्यक है कि कमसे कम पाकिस्तानको तो किसी बातके पीछे पागल बना रखना चाहिये। पाकिस्तानके प्रधान मन्त्री मियां लियाकत अली खांने वह नुसखा तजवीज किया है। अधिकांश पाकिस्तानी भूखे और अधनंगे तो है ही, पर वे यह महसूस न करें कि उनकी इस हालतके लिये मौजूदा हुकूमतकी जिम्मेदारी भी कम नहीं है। इसीलिये वे फरमाते हैं कि "भले ही पाकिस्तानी भूखे रहें या नंगे, मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि उनकी आजादी उनसे छीन ली जाये।" यह हैं पाकिस्तानी प्रीमियर जो गरीबोंकी सद्वृत्तिको जाग्रत करके अपनी घृणित मनोवृत्ति पर पर्दा ही नहीं डाल रहे उसे चरितार्थ करनेका साधन और सुयोग जुटा रहे हैं। मियां लियाकत अली खां अच्छी तरह जानते हैं कि पाकिस्तानकी स्वतन्त्रता को किसीसे खतरा नहीं है, कमसे कम पड़ोसी भारतसे नहीं। किन्तु वे नहीं चाहते कि पाकिस्तानमें इस सत्य बातका प्रचार हो। इसी कल्पित भयको सामने रख कर वे पाकिस्तानीके शोषणको बलिदानका रूप देकर जारी रखना चाहते हैं।

निजामकी दुरंगी चाल

हम यह बात एक नहीं अनेक वार कह चुके हैं कि निजामको समझौते और वार्तालापके जरिये सीधे रास्ते पर नहीं लाया जा सकता। एक तरफ वह भारत सरकारके साथ वार्तालाप का समय बढ़ाता जा रहा है दूसरी तरफ राज्यमें दमन चक्रकी गढ़ित बती जा रही है। उसकी यह दुरंगी चाल किसके इशारे और सहारे हो रही है, यह सहजही समझा जा सकता है। पाकिस्तान औरसाम्राज्यवादी विदेशी ताकतोंकी रक्षा निजाम हदराबादकी पीठ पर है और जितना विलम्ब होता होगा उतनीही उसकी स्थिति मजबूत होगी। भारतकी सुरक्षा और साम्प्रदायिक एकताके लिये हैदराबाद का यह रवैया खतरनाक होगा। इस समय नागरिक अधिकार, सामाजिक स्वतंत्रता और राजनीतिक सुरक्षा बोलकर कोई चीज हैदराबादमें नहीं रह गयी। हत्तिहादुल मसलमीन रजाकरों के जुल्मोंका कोई ठिकाना नहीं है। इज्जत आबरू, जीवन, धन सम्पत्ति की रक्षा रजाकरकी मर्जी पर है। हत्तिहादुल मुसलमीनने राज्यमें जो पैशाचिक काण्ड मचा रखा है वह चलता रहे और हत्तिहादुल मुसलमीनको संसार दोषी न ठहराये इस दृष्टिसे निजाम सरकारने एक नया हथकण्डा निकाला है। राज्यमें जो उपद्रव हो रहा है उसका दोष कम्यूनिस्टों पर मढ़ा जा रहा है। कम्यूनिस्ट विरोधी भावसे नाजायज फायदा उठानेके इरादे से राज्यम इन नये हथकण्डों पर प्रकाश डालते हुए हैदराबाद राज्य कांग्रसके मंत्री श्री आचार्य कहते हैं कि राज्य कांग्रेस द्वारा परिचालित जन आन्दोलनके प्रति लोगोंकी सहानुभूतिको विकृत करनेके लिये अधिकारियोंने इस मिथ्याका प्रश्रय लिया है। यह स्थिति वांछनीय नहीं है। हैदराबाद की जनता आज लूटपाट, अग्निकाण्ड, बलात्कार और इलाकी शिकार बन रही रही है और हैदराबादकी पुलिस, पलटन और रजाकरोंने मिलकर स्थिति को जहांतक संभव था भयंकर बना दिया। हम जानना चाहेंगे कि आखिर कबतक भारत सरकार इस समझौतेकी बातचीतको ढील देती रहेगी ?

पाकिस्तानका रूप—

जनहितकी भावना जितनी व्यापक, प्रशस्त और भेदभाव हीन होती है शासनमें सुव्यवस्था, शान्ति, सन्तोष और स्थायित्व उतना ही अधिक होता है। इस दृष्टिसे जब हम पाकिस्तानको देखते ह तो ठीक इसके विपरीत स्थिति पाते हैं। जातिगत या धर्मगत भेदभाव तो उसका आधार है ही दलगत राजनीतिक प्रधानता बनाये रखनके लिय मुसलमान और मुसलमानके बीचमें भी संकीर्णता और पाथक्यकी सृष्टि की गयी है और अबतक यह क्रम जारी है।

सीमान्तके गांधी सच्चे अर्थोंमें जन सेवक हैं उनका संगठन खुदाई खिदमतगार, लोक सेवाके लिये बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने वाला संगठन है। गलतफहमियां पैदा करके जितन अधिक काल तक जनताको इनसे दूर रखा जा सकेगा स्वार्थी और सुविधावादी जानते हैं तभी तक वे अपना सार्वजनिक जीवन रख सकेंगें। जन हितकी दृष्टिसे यह गलतफहमी दूर होनी चाहिये। पाकिस्तान पार्लमेण्टम भाग लेनेको खान अब्दुल गफ्फार खांके करांची जानेका एक उद्देश्य इस गलतफहमीको दूर करना भी है। यह बात सही है कि सीमान्तके गांधीने पाकिस्तानकी स्थापनाका विरोध किया था। किन्तु जब वह बन गया तो इस तथ्यकी कोई व्यवहार कुशल राजनीतिज्ञ उपेक्षा नहीं कर सकता। अब्दुल गफ्फार खां एक व्यवहारवादी नेता हैं। वे जानते हैं कि नये राज्यका विरोध करके वे जनताकी सेवा नहीं कर सकते जो उनके जीवनका लक्ष्य है, जिसके लिये उन्होंने जीवन भर कुर्बानियां दीं, कष्ट सहें। किन्तु सुविधावादीका स्वार्थ इसीमें है कि जन साधारणके भीतर उनके प्रति गलतफहमी पैदा करके उनको जहां तक सम्भव हो जन सहयोगसे वंचित रख कर अपना उल्लू सीधा किया जाये। फ्रान्टियरकी सरकार और उसका संरक्षण प्राप्त वहांके समाचार जान-बूझ कर यही गलतफहमी फैला रहे हैं कि खुदाई खिदमतगार और उनके नेता पाकिस्तान के दुश्मन हैं। तथ्य यह नहीं है, यह बताते हुए अब्दुल गफ्फार खां साहब पाकिहतान पार्लमेण्टम कहते हैं कि "पाकिस्तानी शासन को मैं देखता हूं तो पाता हूं कि इसमें और ब्रिटिश शासनमें कोई फर्क नहीं है। ब्रिटिश शासन से भी अधिक आज वहां अनाचार है। शासनकी दृष्टिसे हम अंगरेजोंसे भी अधिक अंगरेज हैं और आज भी हम उसी पुरानी नीति पर चल रहे हैं। जिन अंगरेजोंको हमने फ्रान्टियरसे निकाल बाहर किया था आज फिर हमारे ऊपर बैठे हुए हैं। क्या यही इसलामी भ्रातृत्व और समानता है," जिसकी पाकिस्तानी नेता उठते बैठते दुहाई देते हैं। जातीय और धार्मिक संकीर्णता एवं विद्वेष फैलाकर किसी शासन को अधिक दिनों तक स्थायी नहीं बनाया जा सकता। पाकिस्तानी कहते हैं कि पाकिस्तानको सुदृढ़ और मजबूत बनानेके लिये अभी मुस्लिम लीगकी आवश्यकता है। बादशाह खां (सीमान्त गांधी) अब इसकी आवश्यकता नहीं समझते। यही कारण है कि मुस्लिम लीगमें शामिल होनेकी बात को वे माननेको तैयार नहीं हैं। बंगालके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री शहीद सुहरावर्दी भी ऐसा ही समझते हैं। पाकिस्तान पार्लमेण्टमें उन्होंने भी यह कहा कि पाकिस्तान को मजबूत बनानेके लिये मुस्लिम लीग की जरूरत नहीं है। किन्तु व्यक्ति विशेष या दल विशेषको अधिकारमें रखनके लिये, जिसके सामने जनहितका कोई कार्यक्रम नहीं है, जनहित जिसके लिय गौण है, वह अपनी ताकत और पूंजीको कैसे नष्ट कर सकता है! मुस्लिम लीग, जिसका आधार साम्प्रदायिक हिंसा और घृणा है, आजके पाकिस्तानी नेताओंकी एक मात्र पूंजी है और वे यह भी जानते हैं कि अकेले बहुत दिन तक इस पूंजीकी वे रक्षा नहीं कर सकते। इसीसे उसकी रक्षाकी सहायताके लिये उनको आदरके साथ विदेशियोंको बुलाकर बैठाना पड़ता है। यह है आजके पाकिस्तानका रूप।

'वन्देमातरम्'—

यह शब्द स्वयं एक इतिहास बन गया है। किंतु देखा जा रहा है कि इसे क्रमशः पीछे रेलनेकी कोशिशकी जा रही है। और जुलूसोंमें हर्ष ध्वनि और नारोंके रूपमें, परस्पर अभिवादनके रूपमें वन्देमातरम् का स्थान जय हिंद जिस द्रुतगतिसे ले रहा है उसे देखते हुए इसके आस्तित्व लोपकी अंशका सहज है। उधर राष्ट्रवन्दनाके रूपमें अबतक वन्देमातरम् गाया जाता था। धीरे धीरे इस स्थानसे इसे हटाया जा रहा है। रविबाबूके 'जनगण, मनअधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता' को बंकियबाबूके वन्देमातरम् का स्थान देनेका प्रयास पहलेही से आरंभ हो चुका है। गत सप्ताह भारतीय पार्लमेंटमें एक प्रश्नके उत्तरमें प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने कहा कि राष्ट्रीय गीत का अन्तिम निर्णय करनेके पहले गीतों की वाद्य स्वरलिपि तैयार करके देख लेना वांछनीय समझा गया। इसी उद्देश्यसे टैगोर के 'जन गण मन' की वाद्य स्वरलिपियां विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गयी हैं और कई सैनिक संगीत मंण्डलियों (बैण्ड) से उनका अभ्यास करनेको कहा गया है। यह शंका प्रकट की जाने पर कि क्या वन्देमातम् राष्ट्रीय गीत न रखनेका निश्चय कर लिया गया, पण्डितजी ने कहा कि हरगिज नहीं। कुछ सरकारी समारोहोंमें जनगणमन आरकेस्टामें बजने लगा है, यद्यपि ऐसा कोई सरकारी हुक्म जारी नहीं किया गया। 'जनगणमन' के प्रति किसी असम्मानकी भावनासे नहीं पर वन्देमातरम्के साथ स्वतंत्रता संग्रामका जो इतिहास है उसे देखते हुए हम चाहते हैं कि वन्देमातम्को ही राष्ट्रीय गीतके रूपमें स्वीकार किया जाये। आशा है कि हमारी राष्ट्रीय सरकार जनगण की इस भावना का अन्तिम निर्णय करते समय ध्यान रखेगी।

फिलस्तीनका भाग्य—

संयुक्त राष्ट्र संघ फिलस्तीनको दो भागोंमें विभक्त करनेका फैसला करचुका है। एक भाग अरबोंके और दूसरा यहूदियों के नियंत्रणमें रहेगा। अभी फिलस्तीन पर ब्रिटिशनियंत्रण है। १५ मई से ब्रिटेन पर ब्रिटिश नियंत्रण है। १५ मईसे ब्रिटेन ने अपना शासन और नियंत्रण हटा लेनेका निर्णय किया है। अरब देश इस बात पर तुले हुए हैं कि प्राण रहते फिलस्तीनका बंटवारा नहीं होने दिया जा सकता। उनकी जोरदार सैनिक तैयारी हो रही है। राष्ट्रसंघके सामन यह प्रश्न है कि बंटवारेको कैसे कार्यान्वित किया जाये। अमेरिका बंटवारेके पक्षमें है। यहूदियोंको उससे

प्रोत्साहन मिल रहा है। ब्रिटनकी स्थिति डांवाडोल है। वह खुलकर न अरबोंका समर्थन करता है न यहूदियोंका विरोध। स्थित जटिल देख फिलस्तीन की समस्या को सुलझानेके लिय कोई दूसरा रास्ता निकालनका प्रयास अमेरिका कर रहा है। कहते हैं कि अमेरिकाने सिक्यूरिटी कौसिलके सामने यह प्रस्ताव रखा है कि पांच बड़े राष्ट्रोंकी कमेटी फिलस्तीनके मामले पर विचार करनेके लिये नियुक्त किया जाये और जो फिलस्तीन कमीशन नियुक्त हुआ था और जिसने बटवारेका निर्णय दिया है उसे दफना दिया जाये। सिक्यूरिटी कौंसिल के पांच स्थायी सदस्योंकी इस कमेटीका काम होगा यह देखना कि क्या फिलस्तीन की स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय शांतिके लिये खतरा बन रही है। फिलस्तीन कमीशनके निर्णय को कार्यान्वित करनेका उत्तरदायित्व ग्रहण करनेको पांच बड़ोंको प्रस्तुत न होते देख संभवतः यह रास्ता पकड़ा जा रहा है। समझा जाता होगा कि जबतक फैसलेके साथ पांचों महान स्वयं संश्लिष्ट नहीं होंगे तबतक उनको क्या पड़ी है कि वे दूसरेकी बला अपने सर पर लें। लेकिन ब्रिटेन शायद आज अपनेको इस स्थितिम नहीं पा रहा कि वह अरबोंका खुलकर विरोध करे। इसीसे उसने प्रस्तावित पांच महान कमेटीमें कहने से इनकार कर दिया है। ब्रिटिश औपनिवेशिक मंत्री मि० क्रीक जजोन्सने इसके साथ साथ यह भी स्पष्ट कर दिया है कि अधिक से अधिक अगस्तके बाद अंग्रेजी फौजें फिलस्तीन में नहीं रहेंगी। अमेरिका अभी तक इस बात पर अड़ा है कि वह भी अब भी विभाजन-योजनाका समर्थन करता है। अमेरिका प्रतिनिधि मि० आस्टिन कहते हैं कि फिलस्तीन की समस्याको सुलझानेके लिये राष्ट्रसंघ की साधारण परिषदने विभाजनका प्रतिपादन किया है। अमेरिका इस योजनाका समर्थक है। किंतु म्याऊंके मुंहमें हाथ कौन डाले? अरब मरने मारनेको तैयार हैं। फलतः विभाजन योजनाको कार्यान्वित करनेका अर्थ है संघर्ष। ब्रिटेनने साफ जवाब दिया है। अमेरिका पैसा दे सकता है पर जान देनेको तैयार नहीं है। इसीसे वह कहता है कि विभाजनके लिये सैनिकशक्ति से काम नहीं लिया जा सकता। तब सवाल यह है कि राष्ट्रसंघका फैसला कैसे काममें लाया जाये। दूसरा प्रश्न यह उठता है कि १५ मई को ब्रिटिश नियंत्रण हटा लिये जानेके बाद वहांकी स्थिति क्या होगी? अराजकता उच्छृंखलता और हिंसाकी की प्रचण्डता बढ़ेगी, इसे कौन नियंत्रणमें लायगा? ब्रिटिश सरकारके प्रयत्नोंके बावजूद अभी कम हिंसा नहीं है। अरबों और यहूदियोंके सहयोगके बिना फिलस्तीन संबंधी कोई योजना शांतिपूर्ण ढंगसे कार्यान्वित नहीं की जा सकती, यह अबतक की घटनाओंसे स्पष्ट है। विभाजनके फैसलेसे स्थिति और भयंकर हो गयी है। हमारा तो यह ख्याल है कि विभाजनकी योजनाको दफनाये बिना-समझौतेके अनुकूल वातावरण की सृष्टि नहीं की जा सकती।

पश्चिमी यूरोप सङ्घ—

चेकोस्लोवाकियाके राज-परिवर्तनसे उत्पन्न स्थितिसे पश्चिमी राष्ट्रोंके सामने एक महान संकट उपस्थित हो गया है। रूस का बढ़ता हुआ प्रभाव भय और आतंक फैला रहा है। ब्रिटिश प्रधान मंत्री मि० एटली कहते हैं कि फिर सनिक जर्मनीके पैदा होनेका जबर्दस्त भय है। १९१८ की जैसी स्थिति फिर उत्पन्न हो गयी है। उस समय यह समझा गया था कि संकट मिट गया उसी तरहकी स्थितिका आज फिर सामना है। प्रश्न यह है कि उस समय की गलती आज फिर क्यों दुहरायी जा रही है। उस समय ब्रिटिश और फ्रेंच साम्राज्यवाद ने जिस नीतिको प्रश्रय दिया था आज का डालर साम्राज्यवाद उसीका पोषण कर रहा है। अमेरिका और ब्रिटेनके नेतृत्व पर संसारको विश्वास नहीं रह गया। यूनान हिंदेशिया, हिन्दचीन, फिलस्तीन और दक्षिण अफ्रीकामें प्रचलित वर्णभेदके प्रति संयुक्त राष्ट्रसंघकी नीति ने यह स्पष्ट कर दिया है कि संघके सामने विश्वशांति और सुरक्षाका प्रश्न गौण है। इस स्थितिके लिये जिम्मेदार कौन है? संघ पर एकाधिकार जमानेकी तीन राष्ट्रोंकी मनोवृत्तिने ही इस स्थितिको जन्म दिया है। गत युद्धके कारण जर्जरित राष्ट्रोंको आर्थिक सहायता देने में जिस स्वार्थ और अधिकार नीतिका अवलम्बन किया गया उसका परिणाम है कि संघ रहते हुए भी आज अलग अलग संगठन बनने लगे। पश्चिमी यूरोपके संगठन का प्रश्न उठा। रूसने इसे अपने विरुद्ध समझा और उसने पूर्वीय यूरोपका संगठन कर डाला। शस्त्रास्त्रोंको नियंत्रणम लाने का प्रश्न नये नये अविष्कारोंकी प्रतियोगिता का प्रश्न बन गया। कोई यह नहीं कहता कि हम संघर्ष चाहते हैं फिरभी सब करते वही हैं जिससे शांति दूर, संघर्ष निकट आ रहा है। संभवतः इसी उद्देश्य को लेकर ब्रूसेल्सम पंचशक्ति सम्मेलन हो रहा है। आर्थिक मामलेमें, संयुक्त राष्ट्र-संघके रहते हुए भी दो गुट बन चुके हैं अब राजनीतिके मामलेमें भी वही होन जा रहा है। अमेरिकाके संरक्षण एवं ब्रिटेन और फ्रांसके नेतृत्वम बेलजियम, नेदरलैण्ड और लक्समवर्गको लेकर पश्चिमी यूरोप संघ बन रहा है। यह चेकोस्लोवाकियामें हुए परिवर्तनकी प्रतिक्रिया है। किंतु ये संघ युद्धकी स्थिति निकट लानेके सिवा और क्या कर सकते हैं?

औद्योगिक युद्ध बिराम सन्धि

औद्योगिक क्षेत्रमें शाति रखने और उत्पादन बढ़ानेके उद्देश्यसे तीन सालके लिये जो औद्योगिक युद्ध विराम समझौता हुआ था उसे कार्यान्वित करनेके उपायोंका अवलम्बन करनेके प्रश्नपर विचार करना आवश्यक बताते हुए एक प्रमुख उद्योगपति सर आर्देशिर दलालने यह सुझाव रखा है कि दिल्लीमें एक त्रिदल सम्मेलन होना चाहिये जिसमें सरकार, श्रम और उद्योग धन्धेके प्रतिनिधि भाग लें।

नयाकाश्मीर

जम्मू और काश्मीरके महाराजने इस आशयकी घोषणा जारी की है कि १ मार्च से शेख अब्दुल्ला राज्यके प्रधान मंत्री नियुक्त किये गये। प्रधान मंत्री एवं अन्य मंत्री मिलकर मंत्री सभा होगी एवं सबका संयुक्त उत्तर दायित्व होगा। महाराजा द्वारा नियुक्त एक दीवान भी मंत्री सभाका सदस्य होगा। साधारण स्थिति आते ही शीघ्रसे शीघ्र बालिग मताधिकारके आधार पर मंत्री सभा राष्ट्रीय परिषद संयोजित करेगी। यह परिषद राज्यका भावी विधान प्रस्तुत करेगी। महाराजकी घोषणामें यह आशा प्रकटकी गयी है कि अन्तर्कालीन लोकप्रिय सरकार और निकट भविष्यमें ही पूर्णतया लोकतंत्र वादी विधानके प्रचलित हो जाने से राज्यमें लोगोंके संतोष, सुख, एवं नैतिक तथा भौतिक समृद्धि बढ़ेगी।

नेहरूजीकी घोषणा

गत सप्ताह शुक्रवारको भारतीय पार्लमेंटमें प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने काश्मीर के वैधानिक परिवर्तनोंकी घोषणा करते हुए पण्डिजीने कहा कि बारबार यह कहा जाता है कि शेख-अब्दुल्ला और उनकी पार्टी तो महाराजको की लड़ाई लड़ रहे हैं। यह कहने वालोंका मुंह बन्द कर देनेके इरादेसे महाराजने अपने तमाम शासनधिकारोंको हस्तांतरित कर दिया है और अब वे वैधानिक शासक मात्र रह गये हैं। भारतमें काश्मीर के मिलनेके समय जो संकटकालीन सरकार कायम की गयी थी उसे भंग कर दिया गया और १ मार्चसे एक अन्तरिम सरकार कायम कर दी गयी शेखअब्दुल्ला जिसके प्रधान मंत्री नियुक्त हुए हैं। अन्य मंत्री प्रधान मंत्री के परामर्शसे नियुक्त किये जायेंगे जिनका संयुक्त उत्तदायित्व होगा।

अबतक राज्यकी डोगरा पलटन में केवल डोगरा राजपूत ही लिये जाते थे। डोगरा राजपूत ही शस्त्र धारण कर सकते थे। महाराजने इस प्रतिबंधको भी हटा दिया। महाराजने यह घोषणा की है कि सैनिक और असैनिक सरकारी नौकरीके मार्गमें धर्म या सम्प्रदाय बाधक नहीं होगा। अन्तरिम सरकारका एक काम होगा बालिग मताधिकारके आधार पर राष्ट्रीय परिषदका आह्वान करना जो राज्यके लिये नया विधान बनायेगी एवं उस विधानमें अल्पसंख्यकोंके लिये पर्याप्त संरक्षण रखे जायंगे एवं विवेक, भाषण और सभाकी स्वतंत्रता की गारंटी रहेगी। राष्ट्रीय परिषद ही इस बातका निर्णय करेगी कि राज्य भारतके साथ रहे या पाकिस्तानमें शामिल हो।

मुंहतोड़ उत्तर

पण्डित नेहरूने कहा कि भारत की सीमाके बाहरके आदमी यह अभियोग लगाया करते हैं कि भारतीय संघ एक स्वेच्छाचारी शासककी मदद कर रहा है। यह घोषणा उस अभियोगका मुंहतोड़ जवाब है। आसलीयत तो यह है कि काश्मीरको भारतीय संघमें मिलानेके समय ही भारतने यह आग्रह किया था कि राज्यमें सेना भेजनेके पहले ही राज्यमें फौरन लोकप्रिय सरकार बन जानी चाहिये। आश्चर्य होता है कि यह अभियोग वे लोग लगाते हैं जिन्होंने बराबर स्वेच्छाचारिता का समर्थन किया उनके विरुद्ध जो दो पुश्त से उसका विरोध कर रहे थे। ये लोग आज स्वतंत्रताके समर्थक बन रहे हैं और इनके पीछे है पाकिस्तान जो किसी बातकी जिम्मेदारी नहा लेता लेकिन दूसरोंके संकटसे लाभ उठानेके लिये उतावला हो रहा है।

सिक्यूरिटी कौंसिलसे निराश

हिन्दुस्तानके मामले पर सिक्यूरिटी कौंसिलने जिस तरह विचार किया है उस पर निराशा प्रकट करते हुए पण्डितजीने कहा कि मामले पर विचार फिर आरम्भ होन जा रहा है इसलिय अभी इस संबंधमें मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

काश्मीर आर्डिनेन्स

इस आशयका काश्मीर सरकारने एक आर्डिनेन्स जारी किया है कि राज्यके भीतर या बाहर शत्रुकी सहायता करते पाये जाने वाले काश्मीरियोंकी तमाम अचल सम्पत्ति: जब्त कर ली जायेगी। शत्रुके साथ सहयोग करनेवालोंकी जागीरें भी जब्त हो जायेंगी।

यत्रतत्र

बिहारका बजट

फरवरीके अन्तिम सप्ताहमें बिहार असेम्बलीमें अर्थ सचिव माननीय डा० अनुग्रह नारायण सिंहने १९४८-४९ का बजट उपस्थित किया। बजट नफेका है। चालू सालके लिये आमदनीका तखमीना १६ करोड़ ५८ लाख २४ हजार किया गया था किन्तु आमदनी १ करोड़ ३५ लाख अधिक हुई। खर्चा बजटसे ५६ लाख ३ हजार अधिक होगा। इस तरह चालू सालकी बचत ४ करोड़ २९ लाख ९२ हजार होगी। १९४८-४९ में कुल आमदनी २१ करोड़ ५६ साख ७८ हजार और खर्च २० करोड़ ८ लाख ८० हजार होनेका अनुमान लगाया गया है। इस खर्चमें रिजर्व फण्ड, युद्धोत्तरकालीन पुनर्निर्माण और विकास फण्डको हस्तान्तरित ३ करोड़ २२ लाख ७३ हजार शामिल हैं। प्रस्तावित वर्षके अन्तमें साधारण बचत १ करोड़ १६ लाख होगी, ऐसा अनुमान है।

बंगलाको स्थान नहीं

पाकिस्तान विधान परिषद्में जिस समय यह पास हुआ कि विधान परिषद्की कार्यवाही उर्दू या अङ्गरेजीमें हो उस समय यह प्रयत्न किया गया कि इन दोनों भाषाओंके साथ बङ्गलाको भी जोड़ दिया जाये क्योंकि पाकिस्तानमें बङ्गला भाषियोंकी संख्या अधिक है। पर इस सुझावको ठुकरा दिया गया और पाकिस्तान परिषद्में, इस आशयका जो संशोधन उपस्थित किया गया उसका बंगाली मुसलमान सदस्योंने विरोध किया। बंगालके साधारण मुसलमानोंमें पाकिस्तानके इस व्यवहारसे क्षोभ और असन्तोष पैदा हुआ। इसकी लचर कैफियत देते हुए पाकिस्तान विधान परिषदके एक मुस्लिम सदस्य डा० ए० एम० मल्लिकने यह वक्तव्य दिया कि बङ्गालके मुस्लिम सदस्य अनुशासनकी पाबन्दीसे लाचार थे, क्योंकि मुसलिम लीग पार्लमेण्टरी बोर्ड बङ्गलाका विरोध करनेका बहुमतसे फैसला कर चुका था।

तलाकका अधिकार

मालूम हुआ है कि पश्चिम बङ्गाल सरकार इस आशयका एक कानून बनाने जा रही है कि सभी वर्गोंके हिन्दू कुछ परिस्थितियोंमें तलाक दे सकें। इसी अधिवेशनमें एक बिल व्यवस्थापिकाके सामने आयेगा, ऐसी आशा है। नपुंसकता, पागपन, कुष्ट और कानूनी निर्दयताके आधार पर कोई भी हिन्दू तलाक देने या पृथक् रहनेका अधिकार पा सकेगा। इसके सिवा पांच वर्ष तक प्रतिवादीके जीवित रहनेका कोई सबूत न मिलनेपर, अथवा यदि प्रतिवादीने लगातार तीन साल तक वादीको परित्यक्त रखा है अथवा यदि पतिने किसी दूसरी स्त्रीको उपपति बना रखा है या यदि स्त्री किसी अन्य पुरुषकी उपपत्नी बनी है, या वेश्या जीवन बिता रही है तो उस हालतमें तलाकका अधिकार होगा ?

डा० बेनसका इस्तीफा ?

चेकोस्लोवाकियाके राष्ट्रपति, डा० बेनसने इस्तीफा दे दिया है, इस आशयके समाचारकी पुष्टि नहीं हुई। चेक पार्लमेण्टकी बैठक १० मार्चको बुलायी गयी है। पार्लमेण्टकी बैठकमें प्रधान मन्त्री मो० गोटवाल्ड वैधानिक संकटपर प्रकाश डालेंगे। इस आशयकी अफवाह है कि चेकोस्लोवाकियाके कई प्रमुख नेता लापता हो गये हैं।

जमनादास मेहता फिर गिरफ्तार

बम्बई सरकारके हुक्मसे श्री जमनादास मेहता गत सप्ताह फिर गिरफ्तार कर लिये गये। उनको नजरबन्द रखा गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघपर भारत सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगनेपर ५ फरवरी को मेहता गिरफ्तार हुए थे पर उसी दिन रातमें वे छोड़ दिये गये थे।

चीनमें नये राजदूत

श्री पानीकरने बीकानेरके प्रधान मंत्रित्वसे इस्तीफा दे दिया है क्यों कि वे चीनमें भारतके राजदूत श्री मेननकी जगह नियुक्त किये हैं। श्री मेनन वैदेशिक मंत्रि विभागके कार्य सचिव (सेक्रेटरी) नियुक्त किये गये हैं।

अन्तरौपनिवेशिक समस्या

मालूम हुआ है कि भारत और पाकिस्तानके बीचमें जिन समस्याओंका अबतक समाधान नहीं हुआ उनपर विचार करनेके लिये भारत और पाकिस्तानके प्रतिनिधि ११ मार्चको लाहौरमें मिलेंगे। इस वार्तालापमें शरणार्थियोंकी चल सम्पत्तिको स्थानान्तरित करनेका महत्वपूर्ण स्थान होगा, ऐसा समझा जाता है।

विश्व खाद्य नियन्त्रण

विश्वत सूत्रसे मालूम हुआ है कि अगुई (फिलिपाइन्स) में होनेवाले खाद्य और कृषि सम्मेलनमें भारत, चीन और फिलिपाइन्सके प्रतिनिधि अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य नियन्त्रणकी नीति निर्धारणमें अधिक स्वतंत्रता प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। इनका कहना है कि संसारके चावल का ९० प्रतिशत उत्पादन और व्यय एशियामें होता है। इनका कहना है कि चावल सम्बन्धी नीति निर्धारण करनेका अधिकार अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य समितिसे लड़कर लेना है क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य समितिका नियंत्रण स्टर्लिंग एरियावाले देशोंके हाथोंमें है। ब्रिटिश प्रतिनिधि इसका विरोध कर रहे हैं।

महा गुजरात प्रान्त

प्रयत्न किया जा रहा है कि बड़ौदाको गुजरातमें मिलाकर महा गुजरात नामका एक नया प्रान्त बनानेका। आशा है कि इसी महीनेमें यह काम हो जायेगा। बड़ौदाके प्रधान मंत्री श्री भुआलकर इस सम्बन्धमें सरदार पटेलको बड़ौदा दरबारके विचारोंसे अवगत कराने दिल्ली गये थे। इस सम्बन्धमें गुजरातके अन्तर्गत लखावाड़, राजमीयला, खम्भे धरमपुर, मालनपुर, छोटा उदयपुर एवं अन्य रियासतोंके शासक दिल्लीमें अधिकारियोंके साथ विचार परामर्श कर रहे हैं। मालूम हुआ है कि बड़ौदा नरेश तमाम गुजराती रियासतोंको बड़ौदाके सहित एक राजनीतिक इकाईमें मिलाने और इस इकाई, काठियावाड़ तथा गुजरातमें पड़नेवाले बम्बई प्रान्तके हिस्सेको लेकर एक महा गुजरात प्रान्त बनानेको तैयार हैं।

युद्धकी चर्चा

लन्दनके समाचार पत्रोंमें आसन्न युद्धकी चर्चा हो रही है। वे मजूरदली डेली हेराल्डने पश्चिमी राष्ट्रोंसे युद्धसे बचनेकी अपील की है और रूसके सामने यह प्रस्ताव उपस्थित किया है कि इस सम्बन्धमें राष्ट्रके प्रधानोंका सम्मेलन होना चाहिये। जेकोस्लोवाकियामें हुए परिवर्तन और फिनलैण्डके प्रति प्रदर्शित मनोभाव देखते हुए ब्रिटिश पत्रोंने पहले रूसको यूरोपमें आगे कदम न बढ़ानेकी चेतावनी दी है। इन पत्रोंका कहना है कि स्पेन और पुर्तगालको छोड़ अन्य तमाम देशोंका नियन्त्रण अपने हाथमें लिये बिना रूस माननेवाला नहीं है। रूस जहां है वहीं रुका रहे इस आशयकी चेतावनी रूसको दी जानी चाहिये। एक अखबारने तो यहांतक लिखा है कि अमेरिकाको चाहिये कि वह रूसको चेतावनी ही नहीं यह धमकी भी दे कि अगर न मानोगे तो रूसपर अणुबमोंकी वर्षा होगी।

अनिवार्य सैनिक शिक्षा

समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायणने यह मांग पेश की है कि १८ और १९ के बीचके तमाम लड़कोंको राष्ट्रीय सेनामें अनिवार्य भर्ती किया जाये और इसी उम्रकी लड़कियोंको भी, जो स्वेच्छासे भर्ती होना चाहें, भर्ती करना चाहिये। राष्ट्र-हितके लिये युवक और युवतियोंकी कर्मशक्तिको सुनियंत्रित करने की आवश्यकता है।

पाकिस्तानके यहूदी

करांचीसे इस आशयका समाचार मिला है कि पाकिस्तानमें रहने वाले यहूदियोंने भारत चले जानेका निश्चय किया है और प्रायः दो सौ यहूदी बम्बई पहुंच गये। कहते हैं कि फिलस्तीनके बंटवारेके कारण यहूदियोंके प्रति मुसलमानोंका मनोभाव देखकर यहूदियोंको पाकिस्तान छोड़ देनेका फैसला करना पड़ा है।

महात्मा गांधीकी देन

श्री भगवन्तशरण जाहरी एम० ए०

३० जनवरीकी सन्ध्या विश्वके इतिहास पर वज्रपात बनकर आयी। उसने प्रेम, अहिंसा, शान्ति और सत्यके उपासकोंको अनाथ बना दिया। स्वतन्त्र भारतके एक नागरिकने युगकी मानवताकी छातीमें खंजर भोंक दिया। हमारा ही देश क्या, संसारका बच्चा बच्चा तक स्तब्ध रह गया। हमने अपने मूर्तिमान सौभाग्यका गला घोंट दिया। बापूका निर्माण ही उन तत्वोंसे हुआ था, जो किसी शहीदमें होते हैं।

अमेरिकाकी सुप्रसिद्ध लेखिका पर्ल बकने लिखा है कि उनका दस वर्षका बालक इस संवादको सुन आंखोंमें आंसू भरकर बोला 'मैं सोचता हूं कि किसीने कभी बंदूक बनाना सीखा ही न होता।' एक किसान उनसे कह उठा 'संसारका प्रत्येक व्यक्ति गांधीजीको एक श्रेष्ठ व्यक्ति मानता था। उसने उनको क्यों मार डाला ?'

गांधीजीने हमें सिखाया कि उत्तम पुरुष वह है, जो शत्रुके साथ भी उपकार करे, कांटे चुभोनेवालेके पथमें भी फूल बिछाये। सन् १९०८ में जब उन पर आक्रमण हुआ तब भी उन्होंने इसी ध्येयका प्रतिपादन किया। २० जनवरीको बम फेंकनेवाले व्यक्तिको भी क्षमा कर देनेका आदेश आपने दिया। बापूका आत्म-बल और निर्भयता इतनी ज्वलन्त थी कि यदि हत्यारेकी दृष्टि उनकी पुतलियोंसे टकरा जाती तो वह इतना भीषण कार्य कर न पाता। सन् १९०८ की घटना पर ही यूरोपके पत्रोंने लिखा था कि गांधीजी वे महापुरुष हैं जिनका इतिहास बुद्ध, ईसा और सुकरातके समान ही स्थान लेगा। गांधीजीका जीवन ही त्याग और बलिदानका प्रतीक रहा। वे स्थितप्रज्ञ थे। तरहसे वस्त्र पहिननेको प्राप्त नहीं होता, तब तक मैं स्वल्प वस्त्र धारण करूंगा।

उस समयसे उनके कन्धे उघाड़े रहने लगे और उन्होंने केवल घुटने तक ही वस्त्र धारण किया। जग-हंसाईकी चिन्ता न करके उन्होंने सभी आराम त्याग दिये तथा जितेन्द्रिय बन गये।

जिस बातको वे ठीक समझते थे, उसे किसी भी कारणसे उन्होंने न त्यागा। प्रार्थना-सभामें कुरानकी शरहें पढ़नेका हिन्दुओंने कितना विरोध किया, पर उन्होंने उसे अन्तिम श्वास तक जारी रखा।

एक बार अचानक बापूको सूझा कि परमेश्वरसे नाता बनाये रखनेका मौन ही सबसे श्रेष्ठ मार्ग है। तबसे वह उनके स्वभावका एक अंग बन गया। बापूके उपदेश नीचेके श्लोकमें समाविष्ट हैं:—

अहिंसा १ सत्य२ अस्तेय ३
ब्रह्मचर्य४, असंग्रहः ।५
शरीरश्रम६ अस्वाद,७
सर्वत्र भयवर्जनः ।८
सर्वधर्मी९ समानत्व,
स्वदेशी,१० स्पर्शभावना ।११
ही एकादश सेवाभिः
नम्रत्वे व्रतनिश्चये ।

एक मुलाकातीने बापूसे प्रश्न किया—

गांधीजीने आदर्शोंको जीवनकी नग्न और यथार्थ घटनाओंसे अपनाया। उस अधनंगे फकीरकी ऐसी एक घटना यों है!

एक बार दक्षिण में घूमते-घामते बापू एक ऐसे स्थानमें पहुंचे जो निर्जन और निर्जल था।

उस स्थानमें उन्होंने फटे मैले-कुचैले कपड़ेमें एक अत्यन्त कृश और मलीन अछूत नारीको देखा।

इस अस्वच्छ अछूत नारीको देखकर महात्माजी बहुत व्याकुल हुए उन्होंने और सादर उससे पूछा कि तुम इतनी मैली-कुचैली क्यों हो ?

उस नारीने लज्जासे सिर नीचा कर लिया और बोली "मालिक! गरीबोंकी हालत वे अच्छी तरह नहीं समझ सकते, जो आरामसे रहते हैं। मैं लगातार दस वर्षोंसे इसी धोतीको पहने रहती हूं। यहां पानी न मिलनेके कारण, प्रतिदिन इसे धो भी नहीं सकती।

यदि कभी पानी मिल भी जाता है तब मैं पहिले एक छोरको धोकर पहिन लेती हूं, फिर दूसरा छोर धोती हूं।

यहां पानीके अभावके कारण दिन-रात इसे ही पहिने रहती हूं; इसलिए आप ही बताइये, मैं साफ कैसे रह सकती हूं ?

मेरे ही समान करोड़ों आदमी आधा टुकड़ा पहिने रहते हैं और आधा पेट खाकर मुश्किलसे अपनेको जीवित रख रहे हैं।'

उस अछूत नारीकी दर्दभरी कहानी सुनकर महात्माजी बहुत द्रवित हुए और उन्होंने अपने कन्धेसे चादर उतार कर उसे प्रदान कर दिया।

उस आश्चर्यविमुग्ध नारीसे महात्माजीने कहा 'देवी ! चर्खा काता करो, इससे तुम्हारी सभी दरिद्रता दूर हो जायगी।' उसी समय गांधीजीने यह त लिया कि जब तक मेरे देशके सभी भाइयोंको अच्छी मैं बहैसियत एक ईसाईके अन्तर्राष्ट्रीय शान्तिके काममें किस तरह योग दे सकता हूं। किस प्रकार अहिंसा अन्तर्राष्ट्रीय अराजकताको नष्ट करके शान्ति-स्थापनामें प्रभावकारी हो सकती है ?"

गांधीजीने उत्तर दिया—

एक ईसाईके नाते आप अपना सहयोग अहिंसात्मक मुकाबला करके दे सकते हैं, फिर भले ही ऐसा मुकाबला करते हुए आपको अपना सर्वस्व होम देना पड़े। जब तक बड़े-बड़े राष्ट्र अपने यहां निःशस्त्रीकरण करनेका साहसपूर्वक निर्णय नहीं करेंगे, तब तक शांति स्थापित होनेकी नहीं। मेरे हृदयमें तो आधी सदीके निरन्तर अनुभव और प्रयोगके बाद इतना निःशंक विश्वास है और ऐसा विश्वास आज पहिलेसे भी अधिक ज्वलंत हो गया है कि केवल अहिंसा

ग्रंथ-संरक्षण

भारतीय ग्रन्थ-संरक्षण विभागकी सन् १९४६ की रिपोर्टमें बताया गया है कि इस वर्षमें ग्रन्थ-संरक्षण-विज्ञानके क्षेत्रमें काफी कार्य किया गया। भारत सरकारने इस कार्यके महत्वको देखते हुए इसकी उन्नतिके लिए बहुतसे टेक्निकल व्यक्ति रखनेकी स्वीकृति दी है। भारत सरकार के बहुतसे विभिन्न विभागोंके रिकार्ड राष्ट्रीय ग्रन्थ संरक्षण विभागमें आये।

आलोच्य वर्षमें इस विभागकी संरक्षण शाखामें कुल २,१४,१९४ पृष्ठोंको सुधारा गया। पुराने तथा फटे हुए रिकार्डों को सुधारनेका कार्य काफी मात्राम हुआ। इस कार्यके लिए एक लैमिनेटिंग हाइड्रोलिक प्रेसका आर्डर दिया गया है।

आवश्यक रसायनोंकी कमीके कारण भारतके राष्ट्रीय संग्रहालयकी अनुसंधान प्रयोगशालाओंका कार्य पूरी तरह नहीं हो सका। अब इस प्रयोगशालामें ताड़के पत्तोंकी हस्तलिपियोंको ठीक करनेके एक नये तरीकेकी खोज की गयी है। इसके अनुसार फटे पुराने पत्तोंके दोनों ओर एक प्रकारके रसायनका लेप किया जाता है और बादमें उसको एक नर्म रबड़के रोलर से रगड़ दिया जाता है। इससे वे पत्ते ठीक दशामें हो जाते हैं।

रिकार्ड संग्रहालयों तथा पुस्तकालयों में डी० डी० टी० के उपयोगके सम्बन्धमें में छानबीन की गयी और कुछ दुष्प्राप्य रसायनोंके स्थान पर नीमको उपयोगमें लानेकी सम्भावनाके सम्बन्धमें भी खोज की गयी।

प्रान्तीय तथा रियासती सरकारों,—यूनिवर्सिटियों तथा अन्य संस्थाओं द्वारा चुने गये विद्यार्थियोंको ग्रन्थ-रक्षा एवं तत्सम्बन्धी प्रबन्ध कार्यकी ट्रेनिंग देनेके लिए क्लासें खोल दी गयी हैं। यह विभाग विभिन्न अन्य कार्यालयों तथा व्यक्तियोंको ग्रन्थ संग्रह एवं रक्षणकी वैज्ञानिक विधिके सम्बन्धमें सलाह देता है। इसके अतिरिक्त इंडियन आर्काइव्स' के नामसे एक पत्रिका भी निकाल दी गयी है।

अनुक्रमणिका तथा कलेंडर बनानेके कार्यमें भी यह विभाग संतोषप्रद उन्नति कर रहा है। ईस्ट इण्डिया कम्पनीके कुछ महत्वपूर्ण रिकार्डोंको प्रकाशित करनेकी एक योजनाको स्वीकार कर लिया गया है। थेवेना तथा कारेरीकी यात्राओं संबंधी हस्तलिपियां छपनेके लिए तैयार हैं। अधिकाधिक विद्यार्थी इस विभाग द्वारा दी जनेवाली विभिन्न विषयक अनुसंधान की ट्रेनिंगसे लाभ उठा रहे हैं।

कई अवसरों पर बहुत-से रिकार्डोंका प्रदर्शन किया गया। अक्टूबर १९४६ में नागपुरमें हुई ओरियंटल कान्फ्रेंस द्वारा संगठित की गयी जो प्रदर्शिनीमें वस्तु रसायन एवं पुरातत्व ज्ञान विषयक आवश्यक कागज-पत्रोंका प्रदर्शन किया गया था। बंगालकी रायल एशियाटिक सोसाइटी द्वारा संगठित एक प्रदर्शिनीमें सर विलियम जोन्स के सम्बन्धमें मौलिक लेखोंका प्रदर्शन हुआ।

इस विभागने विदेशी संस्थाओं एवं ग्रन्थ-संरक्षण-कार्यालयोंसे भी शैक्षिक तथा सांस्कृतिक सम्पर्क स्थापित किये हैं। इसके अतिरिक्त आपसमें प्रकाशनों एवं सूचनाओं का आदान-प्रदान भी हुआ है। स्टाफका एक सदस्य वाशिंगटनके राष्ट्रीय संग्रहालय में ग्रन्थ-रक्षा-सम्बन्धी रीतियोंकी ट्रेनिंग लेनेके लिए भी भेजा गया था।

मे है। मानव जातिका उद्धार निहित है। बाइबिलकी शिक्षाका भी सार मुख्यतः यही है।

भारतमे उन्होंने इसी सिद्धांतकी शिक्षा दी कि मनुष्य मनुष्य सब समान हैं। भारतीयको किसी यूरोपीयसे घटकर न मानें। भारत ही नहीं, समस्त एशियाको गांधीजीने राष्ट्रीयता व स्वतंत्रताका सन्देश दिया। अहिंसाके बलसे भारत ही क्या, ब्रह्मा व लंकाको भी उन्होंने आजादी दिलायी। शताब्दियोंका काम बापूने वर्षों, महीनों और दिनोंमें किया। राजनीतिसे परे मानवताके साम्राज्यमें वे अमर है, क्योंकि यह श्लोक बचपनमें ही गांधीजीके मन पर अंकित हो गया था:

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

(यह हमारा है और वह पराया, ऐसा विचार तो छोटे मनके लोग किया करते हैं, उदारचरित्र व्यक्ति तो सारी दुनिया को ही अपना कुटुम्ब मानते हैं।)

देवि !

तुम कितनी त्यागमयी हो देवि !
तुम जिस घरमें जन्म धारण करती हो, जिस गेहमें जीवनदाता मातृ-पितृ हृदय अपने निश्छल, वात्सल्य स्नेह द्वारा, तुम्हें बाल्यावस्थाकी निश्चित सीमा तक आश्रय प्रदान करते हैं।

सीमाको लांघते ही—,

जब तुम्हारी चूड़ियोंकी खनखनाहटमें पग-पायलकी मधुर-रुनझुनमें, मन्दिर-यौवनके प्रथम आकर्षणका संगीत आभासित होने लगता है। जब तुम्हारे नारीत्वका सलज्ज, आदर्श-रूप, घूंघटकी ओटमें मुस्करा उठता है। जब तुम्हारा सिन्दूर-सम्पन्न हो जाता है।

तुम—

एक अपरिचितके पराये-चरणोंमें अपनी भोलेपनकी अर्जित निधिक, सुन्दर बाल्य-स्वच्छन्दताको—यौवनके चिर सांस्कृतिक सूत्रमें बंधवाकर निछावर कर देती हो।

और—

अपने जन्म-सदनसे विलग होकर पराये घरको बसा लेती हो। अपनोंको रुलाकर औरोंको हंसा लेती हो। तुम्हारे इस आत्म-समर्पणकी पवित्र-बेलामें, अपने पराये हो जाते हैं और पराये अपने। मातृ-पितृ-गृह त्याग कर पराये हृदय-मन्दिरमें बसने वाली !

तुम कितनी त्यागमयी हो देवि !

—लाला जगदलपुरी।

बापू

श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

३० जनवरीकी सन्ध्या विश्वके इतिहासमें युगान्तकारी है। महात्मा गांधीके अमर बलिदानसे वह सदा स्मरणीय और पवित्र हो गयी है। उस महान ऐतिहासिक घटनाको हुए एक मास से अधिक हो गया है। पर उस दिन जो दिव्य चमत्कार प्राप्त हुआ, उसकी आभा अभी तक बनी हुई है, उसकी प्रभासे आज भी सारा जग आलोकित है।

गांधीजी वीर मृत्यु चाहते थे,और वह उनको मिली। वे उपवाससे बिस्तरपर पड़े पड़े मरनेको वीर-मृत्यु नहीं मानते थे। 'पर्नकुटी पूनामें उपवासके बाद स्वास्थ्य लाभ करते हुए १९३३ में गांधीजीने एक संध्याको श्री आनन्दसे कहा था :— "पगला कहींका ! तुम इसे (उपवाससे) गौरव भरी मौत समझते हो....उपवाससे मरनेको मैं ऐसा नहीं समझता। उसमें गौरव कहां है ? मगर क्या तुम जानते हो कि मेरी जन्मकुण्डलीमें लिखा है कि बहादुरकी मौत मरूंगा !"

आनन्द—"मगर बापू, उपवास करके इस तरह मरना भी बहादुरकी मौत मरना है। जान-बूझकर तिल-तिल करके मरना आसान बात नहीं है। इसके लिये बड़ेसे बड़े धीरजकी जरूरत है।"

गांधीजी—"नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचता। मेरी मौत या तो फांसीपर चढ़ने से होगी या गोली लगनेसे। और वही सचमुच एक बहादुरकी मौत होगी। बिस्तरपर पड़े पड़े उपवास करनेसे होनेवाली मौत नहीं।"

गांधीजीकी इच्छा पूरी हुई। पर गांधीजीके अन्तिम दर्शन करनेका जिनको सौभाग्य प्राप्त हुआ है, वे क्या महाप्रयाणके भूल सकते हैं ? उस समय भी उससे करुणा क्षमा,दया और प्रेम बरस रहा था। मालूम होता था प्रेम और पवित्र मानवताका मूर्तिमान अवतार गहरी नींदमें सोया हुआ है। प्रेमके मानवने अनेक कल्पनायों की हैं, दया और क्षमाकी अनेक मूर्तियां गढ़ी हैं, पर क्या गांधीसे भी कोई उत्कृष्ट और भव्य मूर्ति गढ़ी जा सकती है ?

भगवान बुद्ध दया और करुणाके अवतार माने जाते हैं। गांधीजी उसके बाद दया और प्रेमके दूसरे अवतार हुए हैं। गांधीजीकी भूत दया मानव तक ही सीमित नहीं थी। वह पशु-पक्षियों और वृक्षों लता गुल्मों तक व्यापक थी। इस दृष्टिसे चम्पारणकी दो घटनाएं अत्यधिक हृदयहारी और हृदयङ्गम हैं।

भगवान बुद्धके जीवनकी एक घटना प्रसिद्ध है। राजा बिम्बिसारकी यज्ञशालामें बलि देनेके लिये यज्ञ-दूभसे बकरा बंधा हुआ था। भगवान बुद्धने उसको छोड़ देने के लिये कहा। मगध नरेशने ऐसा करनेसे इन्कार कर दिया। वे तथागत मौन हो गये। कुछ समय बाद राजा बिम्बिसारको दिखायी दिया कि जिस यज्ञदूभसे बकरा बंधा था, उससे बुद्ध बंधे हुए हैं। यज्ञ करानेवाले पण्डितोंको भी ऐसा ही मालूम दिया। इस चमत्कारसे यज्ञ कराने वाले पण्डित और राजा घबड़ा गये। व्याकुल राजाने बकरेको छोड़ देनेके लिये कह दिया।

गांधीजी ने ऐसा कोई चमत्कार नहीं दिखाया। पर उन्होंने बकरेकी रक्षाके लिये आन्दोलन किया है। देवीके सामने बलि देनेकी सारे देशमें प्रथा है। बिहार इसमें आगे ही है, पीछे नहीं है। इस प्रांत के गांव-गांवमें देवीके सामने पशु बलि दी जाती है। चम्पारण इससे अछूता नहीं है। जब गांधीजी नीलहे गोरोंसे चम्पारणके निरीह किसानोंको मुक्ति दिलाने गये थे उन्हीं दिनोंकी एक घटना है।

एक दिन एक किसान एक बकरेको देवीजीके सामने बलि देनेको ले जा रहा था। गांधीजीको यह बात मालूम न होती। क्योंकि उनको ऐसा दृश्य देखनेकी कल्पना भी नहीं थी। पर बकरेको जलूसमें धूम-बाजेकी ध्वनीसे गांधीजी कुछ चौंके। उन्होंने अपने एक साथीसे पूछा--- यह क्या हो रहा है ? आज किसकी शादी और जलूस !

गांधीजीका वह साथी बिहारका था। उसको मालूम था कि गांधीजी हिंसा नहीं मानते। अहिंसाका उपदेश करते हैं। अतः वह बड़े असमंजसमें पड़ा। वह गांधीजीसे यह कहनेमें अपनेको अममर्थ पाता था। बाजे-गाजेके साथ बकरेको बलिदान देनेके लिये ले जा रहे हैं। पर गांधी जी की जिज्ञासा जान चुकी थी। वे भी चुप लग जानेवाले नहीं थे। कार्यकर्त्ता जानता था कि गांधीजी को उसने यदि खोल कर बता दिया तो बापू और एक बखेड़ा सिर पर ले लेंगे। पर गांधीजी खोद-खोद कर पूछते ही गये। बाजे-गाजेके साथ जलूस निकलनेका वास्तविक कारण जानते ही गांधीजी उठ खड़े हुए। और बोले चलो भाई, वहां चलो ! गांधीजी जलूसमें सम्मिलित होकर माला डाले हुए बकरेके पास पहुंच गये।

बलिदानके लिये देवालय जाते हुए दलके मुखियासे गांधीजी बोले, बकरेका बलिदान आप किस लिए कर रहे हो ? मुखियाने जवाब दिया, देवीके सन्तोषके लिये। 'देवीकी प्रसन्नता और सन्तोषके लिये आपको अधिक से अधिक अच्छी वस्तु उसको अर्पित करनी चाहिए न ?" गांधीजीने उलटे उससे फिर कहा। मुखिया ने झट जवाब दिया 'हां'। गांधीजीने फिर पूछा—

'बकरेकी अपेक्षा मनुष्य श्रेष्ठ है या नहीं ?' इस प्रश्नका भी उसने जवाब 'हां' में दिया। इस पर गांधीजीने पूछा— "फिर इस बकरेकी जगह कोई मनुष्य देवीको क्यों नहीं अर्पण करते ? यदि इस कार्यके लिये तुमको कोई आदमी न मिलता हो, तो मैं स्वतः बलि चढ़ने के लिये तैयार हूं !"

गांधीजी की यह बात सुन कर वह स्तब्ध और सन्न रह गया। जलूसके सब लोग भी हैरान होकर आंख फाड़-फाड़ कर गांधीजीकी ओर देखने लगे। सन्नाटा छा गया। इस स्तब्धता और चुप्पीको

ग्रंथ-संरक्षण

भारतीय ग्रन्थ-संरक्षण विभागकी सन् १९४६ की रिपोर्टमें बताया गया है कि इस वर्षमें ग्रन्थ-संरक्षण-विज्ञानके क्षेत्रमें काफी कार्य किया गया। भारत सरकारने इस कार्यके महत्वको देखते हुए इसकी उन्नतिके लिए बहुतसे टेक्निकल व्यक्ति रखनेकी स्वीकृति दी है। भारत सरकार के बहुतसे विभिन्न विभागोंके रिकार्ड राष्ट्रीय ग्रन्थ संरक्षण विभागमें आये।

आलोच्य वर्षमें इस विभागकी संरक्षण शाखामें कुल २,१४,१९४ पृष्ठोंको सुधारा गया। पुराने तथा फटे हुए रिकार्डों को सुधारनेका कार्य काफी मात्रामें हुआ। इस कार्यके लिए एक लैमिनेटिंग हाइड्रोलिक प्रेसका आर्डर दिया गया है।

आवश्यक रसायनोंकी कमीके कारण भारतके राष्ट्रीय संग्रहालयकी अनुसंधान प्रयोगशालाओंका कार्य पूरी तरह नहीं हो सका। अब इस प्रयोगशालामें ताड़के पत्तोंकी हस्तलिपियोंको ठीक करनेके एक नये तरीकेकी खोज की गयी है। इसके अनुसार फटे पुराने पत्तोंके दोनों ओर एक प्रकारके रसायनका लेप किया जाता है और बादमें उसको एक नर्म रबड़के रोलर से रगड़ दिया जाता है। इससे वे पत्ते ठीक दशामें हो जाते हैं।

रिकार्ड संग्रहालयों तथा पुस्तकालयों में डी० डी० टी० के उपयोगके सम्बन्धमें में छानबीन की गयी और कुछ दुष्प्राप्य रसायनोंके स्थान पर नीमको उपयोगमें लानेकी सम्भावनाके सम्बन्धमें भी खोज की गयी।

प्रान्तीय तथा रियासती सरकारों,—यूनिवर्सिटियों तथा अन्य संस्थाओं द्वारा चुने गये विद्यार्थियोंको ग्रन्थ-रक्षा एवं तत्सम्बन्धी प्रबन्ध कार्यकी ट्रेनिंग देनेके लिए क्लासें खोल दी गयी हैं। यह विभाग विभिन्न अन्य कार्यालयों तथा व्यक्तियोंको ग्रन्थ संग्रह एवं रक्षणकी वैज्ञानिक विधिके सम्बन्धमें सलाह देता है। इसके अतिरिक्त इंडियन आर्काइव्स' के नामसे एक पत्रिका भी निकाल दी गयी है।

अनुक्रमणिका तथा कलेंडर बनानेके कार्यमें भी यह विभाग संतोषप्रद उन्नति कर रहा है। ईस्ट इण्डिया कम्पनीके कुछ महत्वपूर्ण रिकार्डोंको प्रकाशित करनेकी एक योजनाको स्वीकार कर लिया गया है। थेवेना तथा कारेरीकी यात्राओं संबंधी हस्तलिपियां छपनेके लिए तैयार हैं। अधिकाधिक विद्यार्थी इस विभाग द्वारा दी जनेवाली विभिन्न विषयक अनुसंधान की ट्रेनिंगसे लाभ उठा रहे हैं।

कई अवसरों पर बहुत-से रिकार्डोंका प्रदर्शन किया गया। अक्टूबर १९४६ में नागपुरमें हुई ओरियंटल कान्फ्रेंस द्वारा संगठित की गयी जो प्रदर्शिनीमें वस्तु रसायन एवं पुरातत्व ज्ञान विषयक आवश्यक कागज-पत्रोंका प्रदर्शन किया गया था। बंगालकी रायल एशियाटिक सोसाइटी द्वारा संगठित एक प्रदर्शिनीमें सर विलियम जोन्स के सम्बन्धमें मौलिक लेखोंका प्रदर्शन हुआ।

इस विभागने विदेशी संस्थाओं एवं ग्रन्थ-संरक्षण-कार्यालयोंसे भी शैक्षिक तथा सांस्कृतिक सम्पर्क स्थापित किये हैं। इसके अतिरिक्त आपसमें प्रकाशनों एवं सूचनाओं का आदान-प्रदान भी हुआ है। स्टाफका एक सदस्य वाशिंगटनके राष्ट्रीय संग्रहालय में ग्रन्थ-रक्षा-सम्बन्धी रीतियोंकी ट्रेनिंग लेनेके लिए भी भेजा गया था।

में ही मानव जातिका उद्धार निहित है। बाइबिलकी शिक्षाका भी सार मुख्यतः यही है।

भारतमें उन्होंने इसी सिद्धांतकी शिक्षा दी कि मनुष्य मनुष्य सब समान हैं। भारतीयको किसी यूरोपीयसे घटकर न मानें। भारत ही नहीं, समस्त एशियाको गांधीजीने राष्ट्रीयता व स्वतंत्रताका सन्देश दिया। अहिंसाके बलसे भारत ही क्या, ब्रह्मा व लंकाको भी उन्होंने आजादी दिलायी। शताब्दियोंका काम बापूने वर्षों, महीनों और दिनोंमें किया। राजनीतिसे परे मानवताके साम्राज्यमें वे अमर है, क्योंकि यह श्लोक बचपनमें ही गांधीजीके मन पर अंकित हो गया था:

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

(यह हमारा है और वह पराया, ऐसा विचार तो छोटे मनके लोग किया करते हैं, उदारचरित्र व्यक्ति तो सारी दुनिया को ही अपना कुटुम्ब मानते हैं।)

देवि !

तुम कितनी त्यागमयी हो देवि !

तुम जिस घरमें जन्म धारण करती हो, जिस गेहमें जीवनदाता मातृ-पितृ हृदय अपने निश्छल, वात्सल्य स्नेह द्वारा, तुम्हें बाल्यावस्थाकी निश्चित सीमा तक आश्रय प्रदान करते हैं।

सीमाको लांघते ही—,

जब तुम्हारी चूड़ियोंकी खनखनाहटमें पग-पायलकी मधुर-रुनझुनमें, मन्दिर-यौवनके प्रथम आकर्षणका संगीत आभासित होने लगता है। जब तुम्हारे नारीत्वका सलज्ज, आदर्श-रूप, घूंघटकी ओटमें मुस्करा उठता है। जब तुम्हारा सिन्दूर-सम्पन्न हो जाता है।

तुम—

एक अपरिचितके पराये-चरणोंमें अपनी भोलेपनकी अर्जित निधिक, सुन्दर बाल्य-स्वच्छन्दताको—यौवनके चिर सांस्कृतिक सूत्रमें बंधवाकर निछावर कर देती हो।

और—

अपने जन्म-सदनसे विलग होकर पराये घरको बसा लेती हो। अपनोंको रुलाकर औरोंको हंसा लेती हो। तुम्हारे इस आत्म-समर्पणकी पवित्र-बेलामें, अपने पराये हो जाते हैं और पराये अपने। मातृ-पितृ-गृह त्याग कर पराये हृदय-मन्दिरमें बसने वाली !

तुम कितनी त्यागमयी हो देवि !

—लाला जगदलपुरी।

बापू

श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

३० जनवरीकी सन्ध्या विश्वके इतिहासमें युगान्तकारी है। महात्मा गांधीके अमर बलिदानसे वह सदा स्मरणीय और पवित्र हो गयी है। उस महान ऐतिहासिक घटनाको हुए एक मास से अधिक हो गया है। पर उस दिन जो दिव्य चमत्कार प्राप्त हुआ, उसकी आभा अभी तक बनी हुई है, उसकी प्रभासे आज भी सारा जग आलोकित है।

गांधीजी वीर मृत्यु चाहते थे,और वह उनको मिली। वे उपवाससे विस्तरपर पड़े पड़े मरनेको वीर-मृत्यु नहीं मानते थे। 'पर्नकुटी पूनामें उपवासके बाद स्वास्थ्य लाभ करते हुए १९३३ में गांधीजीने एक संध्याको श्री आनन्दसे कहा था :— "पगला कहींका ! तुम इसे (उपवाससे) गौरव भरी मौत समझते हो....उपवाससे मरनेको मैं ऐसा नहीं समझता। उसमें गौरव कहां है ? मगर क्या तुम जानते हो कि मेरी जन्मकुण्डलीमें लिखा है कि बहादुरकी मौत मरूंगा !"

आनन्द—"मगर बापू, उपवास करके इस तरह मरना भी बहादुरकी मौत मरना है। जान-बूझकर तिल-तिल करके मरना आसान बात नहीं है। इसके लिये बड़ेसे बड़े धीरजकी जरूरत है।"

गांधीजी—"नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचता। मेरी मौत या तो फांसीपर चढ़ने से होगी या गोली लगनेसे। और वही सचमुच एक बहादुरकी मौत होगी। बिस्तरपर पड़े पड़े उपवास करनेसे होनेवाली मौत नहीं।"

गांधीजीकी इच्छा पूरी हुई। पर गांधीजीके अन्तिम दर्शन करनेका जिनको सौभाग्य प्राप्त हुआ है, वे क्या महाप्रयाणके भूल सकते हैं ? उस समय भी उससे करुणा क्षमा,दया और प्रेम बरस रहा था। मालूम होता था प्रेम और पवित्र मानवताका मूर्तिमान अवतार गहरी नींदमें सोया हुआ है। प्रेमके मानवने अनेक कल्पनायें की हैं, दया और क्षमाकी अनेक मूर्तियां गढ़ी हैं, पर क्या गांधीसे भी कोई उत्कृष्ट और भव्य मूर्ति गढ़ी जा सकती है ?

भगवान बुद्ध दया और करुणाके अवतार माने जाते हैं। गांधीजी उसके बाद दया और प्रेमके दूसरे अवतार हुए हैं। गांधीजीकी भूत दया मानव तक ही सीमित नहीं थी। वह पशु-पक्षियों और वृक्षों लता गुल्मों तक व्यापक थी। इस दृष्टिसे चम्पारणकी दो घटनाएं अत्यधिक हृदयहारी और हृदयङ्गम हैं।

भगवान बुद्धके जीवनकी एक घटना प्रसिद्ध है। राजा बिम्बिसारकी यज्ञशालामें बलि देनेके लिये यज्ञ-दूभसे बकरा बंधा हुआ था। भगवान बुद्धने उसको छोड़ देनेके लिये कहा। मगध नरेशने ऐसा करनेसे इन्कार कर दिया। वे तथागत मौन हो गये। कुछ समय बाद राजा बिम्बिसारको दिखायी दिया कि जिस यज्ञदूभसे बकरा बंधा था, उससे बुद्ध बंधे हुए हैं। यज्ञ करानेवाले पण्डितोंको भी ऐसा ही मालूम दिया। इस चमत्कारसे यज्ञ कराने वाले पण्डित और राजा घबड़ा गये। व्याकुल राजाने बकरेको छोड़ देनेके लिये कह दिया।

गांधीजी ने ऐसा कोई चमत्कार नहीं दिखाया। पर उन्होंने बकरेकी रक्षाके लिये आन्दोलन किया है। देवीके सामने बलि देनेकी सारे देशमें प्रथा है। बिहार इसमें आगे ही है, पीछे नहीं है। इस प्रांत के गांव-गांवमें देवीके सामने पशु बलि दी जाती है। चम्पारण इससे अछूता नहीं है। जब गांधीजी नीलहे गोरोंसे चम्पारणके निरीह किसानोंको मुक्ति दिलाने गये थे उन्ही दिनोंकी एक घटना है।

एक दिन एक किसान एक बकरेको देवीजीके सामने बलि देनेको ले जा रहा था। गांधीजीको यह बात मालूम न होती। क्योंकि उनको ऐसा दृश्य देखनेकी कल्पना भी नहीं थी। पर बकरेको जलूसमें धूम-धाम और गाजे बाजेके साथ ले जा रहे थे। बाजेकी ध्वनीसे गांधीजी कुछ चौंके। उन्होंने अपने एक साथीसे पूछा— यह क्या हो रहा है ? आज किसकी शादी और जलूस !

गांधीजीका वह साथी बिहारका था। उसको मालूम था कि गांधीजी हिंसा नहीं मानते। अहिंसाका उपदेश करते हैं। अतः वह बड़े असमंजसमें पड़ा। वह गांधीजीसे यह कहनेमें अपनेको अममर्थ पाता था। बाजे-गाजेके साथ बकरेको बलिदान देनेके लिये ले जा रहे हैं। पर गांधी जी की जिज्ञासा जान चुकी थी। वे भी चुप लग जानेवाले नहीं थे। कार्यकर्त्ता जानता था कि गांधीजी को उसने यदि खोल कर बता दिया तो बापू और एक बखेड़ा सिर पर ले लेंगे। पर गांधीजी खोद-खोद कर पूछते ही गये। बाजे-गाजेके साथ जलूस निकलनेका वास्तविक कारण जानते ही गांधीजी उठ खड़े हुए। और बोले चलो भाई, वहां चलो ! गांधीजी जलूसमें सम्मिलित होकर माला डाले हुए बकरेके पास पहुंच गये।

बलिदानके लिये देवालय जाते हुए दलके मुखियासे गांधीजी बोले, बकरेका बलिदान आप किस लिए कर रहे हो ? मुखियाने जवाब दिया, देवीके सन्तोषके लिये। 'देवीकी प्रसन्नता और सन्तोषके लिये आपको अधिक से अधिक अच्छी वस्तु उसको अर्पित करनी चाहिए न ?" गांधीजीने उलटे उससे फिर कहा। मुखिया ने झट जवाब दिया 'हां'। गांधीजीने फिर पूछा—

'बकरेकी अपेक्षा मनुष्य श्रेष्ठ है या नहीं ?' इस प्रश्नका भी उसने जवाब 'हां' में दिया। इस पर गांधीजीने पूछा— "फिर इस बकरेकी जगह कोई मनुष्य देवीको क्यों नहीं अर्पण करते ? यदि इस कार्यके लिये तुमको कोई आदमी न मिलता हो, तो मैं स्वतः बलि चढ़ने के लिये तैयार हूं !"

गांधीजी की यह बात सुन कर वह स्तब्ध और सन्न रह गया। जलूसके सब लोग भी हैरान होकर आंख फाड़-फाड़ कर गांधीजीकी ओर देखने लगे। सन्नाटा छा गया। इस स्तब्धता और चुप्पीको

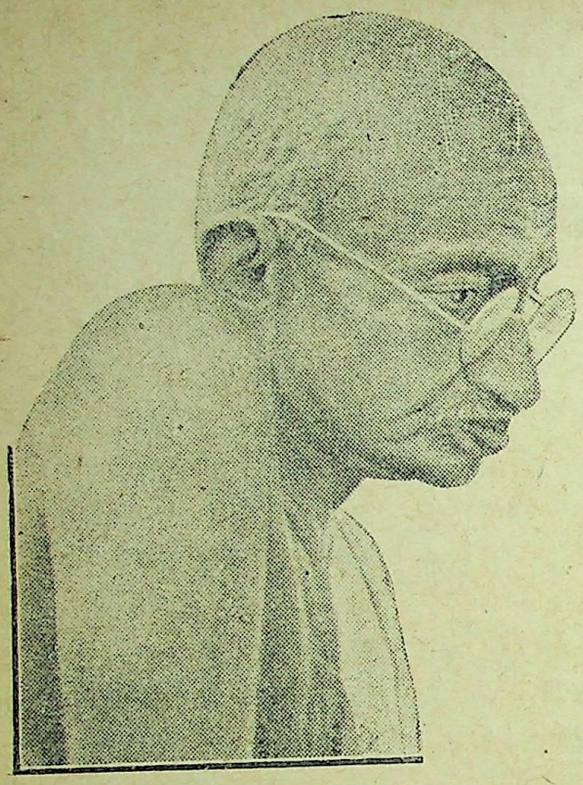

मंग करते हुए गांधीजी फिर बोले:—"भाई! तेरी इच्छा हो, तो तू खुशी खुशी मुझे देवीको अर्पण कर सकता है। बकरी सदृश मूक प्राणीका नैवेद्य देवीको देनेका क्या अर्थ? कम दर्जेकी चीज देवीको देना क्या उसको धोखा देना नहीं? इस धोखेसे कौन सन्तुष्ट होगा?"

गांधीजीका एक हाथ दलके मुखिया के कंधे पर और दूसरा बकरीकी पीठ पर था। मुखिया स्तब्ध विस्मित और गम्भीर खड़ा था। वह समझनेमें असमर्थ था यह क्या हो रहा है। यह आकाशवाणी है या मनुष्यवाणी है। पर गांधी जी शान्त भावसे उत्तरकी प्रतीक्षामें खड़े थे। वह अन्तमें बोला, 'आप जो कहोगे वही करूंगा!" यह सुनतेही गांधी जीने बकरेके गलेमें बंधी डोरी उसके हाथसे ले ली और उसको छोड़ दिया। और मुखियाको देवीके पास ले जाकर बोले, 'आज जगन्माता जितना तुझ पर प्रसन्न होगी, उतनी इससे पहले किसी पर भी प्रसन्न नहीं हुई होगी।"

(२)

चम्पारणकी दूसरी घटना इससे भी अधिक मनमोहक और हृदयग्राही है, साथ ही बोधप्रद भी है। गांधी जीके साथ वहां अनेक मजूर सत्याग्रही थे। उनमेंसे एक मजूर सत्याग्रहीका एक पांव महा- रोगके कारण सूज गया और गिलटी निकल आयी। परपांवके चारों ओर चिंचा लगा लेनेके कारण किसीको वहां जख्म होनेका पता न चला।

एक दिन सायंकाल वह सत्याग्रही जब शिबिर वापस आ रहा था, उसके पांवका वह फोड़ा फूट पड़ा और उससे खून निकलने लगा। अन्य सत्याग्रही जल्दी जल्दी पैर बढ़ा कर गांधीजीके साथ चले गये। पर वह मजूर सत्याग्रही पीछे रह गया। उसकी दीन और पंगु अवस्थाकी ओर किसीका ध्यान नहीं गया।

गांधीजीके मुकाम पर पहुंचनेके बाद सब लोग सायंकालकी प्रार्थनाके लिये उनके चारों ओर जमा हुए, तब सदा पीछे पीछे रहनेवाला वह मजदूर उनको वहां दिखायी नहीं दिया। गांधी जीने उसके बारेमें बहुत विचारा पूछ-ताछ की वह क्यों नहीं आया पर कोई इसका ठीक-ठीक जवाब नहीं दे सका। केवल एक जनने इतना बताया, 'बापू, वह आपके साथ साथ जल्दी जल्दी चल नहीं सकता था, अतः वह पेड़के नीचे बैठा था।"

गांधीजी उसकी बात सुन कर एकदम उठ खड़े हुए और हरीकेन लैम्प लेकर उसकी खोजमें उसी प्रकार चल पड़े, जिस प्रकार राम सीताकी खोजमें निकले थे। वह सचमुच एक पेड़के नीचे पड़ा हुआ आर्त्त वाणीसे 'राम राम' कह रहा था। गांधीजीके हाथके हरीकेनकी रोशनी मुंह पर पड़तेही वह घबड़ा कर बोला, "बापू! बापू!!"

क्या हुआ भाई! तुझे! तुझसे चला नहीं जाता था, तो मुझे क्यों नहीं हांक दी! महात्माजीने उसके शरीपर हाथ फेरते हुए उससे यह पूछा। पर वह निर्वाक था, उसके मुहसे शब्द तक निकले नहीं। उसने केवल अपना हाथ अंगकी ओर लेजाकर बताया पांवसे रक्तगरिते हुए देखकर महारोगके भयसे महात्माजीके चारो ओर खड़े लोग पीछे हट गये।

पर गांधीजीने अपने वदनपर ओढ़ शालको फाड़कर उसके पांवके जख्मको बांधा और उसको अपने कंधेका आधार देकर धीरे धीरे उसके साथ शिविरमें आये वहां पहुंचनेपर गांधीजीने उसके पांवको धोआ, फोड़ेको साफ किया और पट्टी करके उसको अपने पास बिठाकर सायंकालीन प्रार्थना प्रारम्भकी। उस मजूरेके हाथ राम धुनके साथ ताली बजा रहे थे पर उसकी आंखोंसे आंसू बह रहा था।

महामना मालवीयजीने जब यह कथा देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसादके मुंहसे सुनी तब महामना मालवीयजी सहसा बोल उठे गंगापाप शमन करती है, चन्द्रमा ताप शमन करता है, और कल्पवृक्ष मैल दूर करता है यह सच है पर गांधीजी गंगाकी अपेक्षा अधिक पावन, चन्द्रकी अपेक्षा अधिक शीतल और कल्पवृक्षकी अपेक्षा अधिक सामर्थ शाली हैं।

गंगा पापं शशी तापं
दैन्यं कल्पतरु स्तथा।
पापं तापं च दैन्यं च
घ्नन्ति संतो महाशयः॥

साप्ताहिक विश्वामित्र
—: की :—
एजेन्सी
लेकर लाभ उठाइये।

डालर साम्राज्यका प्रसार

लेखक—श्री अयोध्या सिंह

संयुक्त राष्ट्र अमरीकाके जनतन्त्रवादके प्रशंसक हमारे देशमें एक नहीं कितने ही हैं। आये गये उसके जनतन्त्रवादके गुण गाये जाते हैं। इन प्रशंसाओंको सुन ऐसा मालूम होता है कि अन्य साम्राज्यवादी देशोंकी तरह वह भूखा भेड़िया नहीं है। उसका इतिहास उन कलंक कालिमाओंसे मुक्त है जिससे अन्य साम्राज्यवादी देशोंके इतिहास रंगे पड़े हैं। वह दूधका धोया है, अतएव वैसा जनन्त्रवाद हमारे देशके लिये स्पृहणीय है।

अमरीकन इतिहास भी हमारे सामने कुछ ऐसा ही चित्र रखते हैं। बचा चिट्ठा तब खुलता है जब साम्राज्यवादी एक दूसरेकी पोल खोलना शुरू करते हैं, ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर अमरीकनोंके आक्षेपोंसे तंग आकर डालर जनतन्त्रवादके बड़े भारी समर्थक अंगरेज पत्रकार हेराल्ड निकोलसनने १६ सितम्बर १९४६ को रेडियोसे ब्राडकास्ट करते हुए कहा :

संयुक्त अमरीकामें लोग यह भूल जाते हैं कि अमरीका टेक्सास, न्यू मैक्सिको, केलीफोर्निया और खास कर पनाया नहर के नियन्त्रणकी कहानी निश्चित रूपसे साम्राज्यवादसे रंगी है। जब अमरीकनों को यह बताया जाता है, इन्हें बड़ा भारी धक्का लगता है। वे कहते हैं कि यह साम्राज्यवाद नहीं, भाग्यका खेल है। जब मैं संयुक्त अमरीकामें भाषण देता फिरता था, मुझसे अक्सर इण्डियनों भारतीयों) के कत्ले आमके बारेमें कुछ कहनेका अनुरोध किया था। इस प्रश्नको दो सौ बार सुननेके बाद मेरे धैर्यका बांध टूट गया और मैंने बेरुखीसे जवाब दिया, आपका मतलब किन इण्डियनोंसे है—अपने या हमारे ? आप लोगोंने अपने इण्डियनोंको कत्ले आम किया।

अमरीका दूधका धोया नहीं

अमरीकाके प्रसारकी विवेचना हमें इसी निष्कर्ष पर पहुंचाती है कि ऊपरी आवरण हटा देनेके बाद यहां भी वही भूखा भेड़िया नजर आता है जो अपनी क्षुधाकी शान्तिके लिये अपने पड़ोसी, अपने इष्ट मित्र, अपने सम्बन्धी किसीको भी चट कर जानेमें नहीं हिचकिचता। १७७५-८३ के स्वाधीनता-संग्रामके बाद जन्मके समय संयुक्त अमरीकाका क्षेत्रफल केवल ३ लाख ८६ हजार वर्ग मील था। १३० सालके अन्दर उसके ३० लाख वर्ग मीलसे ज्यादा भूमि पर अपना अधिकार जमा लिया। कहा यह गता है कि अमरीकाने तो यह सब भूमि वाजिब दाम पर खरीदी है। पर इस सम्बन्धमें जो आंकड़े प्रकाशित हुए हैं वे इस कथनका पर्दा फाश कर देते हैं। स्वाधीनता संग्रामके बाद एक शताब्दीके अन्दर संयुक्त अमरीकाने भूमि प्राप्त करने में ५ करोड़ डालर खर्च किये। यह धन न्यूयार्कके एक गगन चुम्बी प्रासादकी लागतसे ज्यदा नहीं है। पर इतनेमें संयुक्त अमरीकाने ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जमनी, इटली, जापान और बेलिजियम-सबके सम्मिलित क्षेत्रफलके तिगुनके बराबर भूमि पर अपना अधिकार जमाया और यह भूमि कोई ऊसर या बंजर नहीं। स्पष्ट है कि यह धन भूमिका मूल्य नहीं, जबरन कब्जोको छिपानेकी नकाब मात्र है। इतिहासके पन्ने भी इस बातके साक्षी हैं कि अमरीकाका यह प्रसार शान्तिपूर्ण ढंगसे नहीं हुआ। १९०३ में प्रकाशित संयुक्त अमरीका सेनाका ऐलिटसिक रजिस्टर में १७७५ के बाद संयुक्त अमरीका द्वारा किये गये ११४ युद्धोंकी तालिका है। इन युद्धोमें ८६०० मुठभेड़ हुई। इनमें स्वाधीनता-संग्रामको छोड़ कर बाकी प्रायः सभी युद्ध अमरीकाने अपना साम्राज्य बढ़ानेके लिये किया।

इण्डियनोंका सफाया और सीमा विस्तार

लगभग डेढ़ सौ साल पहले भी संयुक्त अमरीकाकी अधिकांश भूमिके मालिक वहांके आदिवासी इण्डियन थे। पर श्वेतांगोको उनकी भूमिकी जरूरत थी। युद्धोंके जरिये उन्होंने आदिवासियोंको मार भगाया और अन्तमें लगभग नेस्तनाबुद कर दिया। आज प्यूएब्लो जातिको छोड़ अन्य कोई भी इण्डियन वहां नहीं है जहां डेढ़ सौ साल पहले उनके पूर्वज रहते थे। प्यूएब्लो अपनी भूमिमें रह सकें, यह श्वेतांगोंकी मेहरबानीन थी। दरअसल इनकी भूमिमें न तो तेल है और न सोना न कोयला है और न अच्छे चरागाह। इस भूमिपर कब्जाकर श्वेताङ्ग करें तो क्या करें ? ये इण्डियन आज भी श्वेताङ्गों को बड़ी नफरतकी निगाहसे देखते हैं। जब इनके बच्चे स्कूलकी शिक्षा समाप्त कर लेते हैं उनके बड़े बूढ़े उनसे साफ कहते हैं कि अगर तुम श्वेताङ्ग मनुष्य होना चाहते हो तो उनमें जा मिलो। हमारे पास फिर कभी मत आना। पर अगर तुम इंडियन ही बने रहना पसन्द करते हो तो जो कुछ तुम्हें सिखाया गया है, उसे भूल जाओ, इन इण्डियनोंके गावोंमें बिजली, तार, मोटर कुछ नहीं है पर वे श्वेताङ्गोंकी सभ्यताको घृणाकी की दृष्टिसे देखते हैं और आज भी अपनेको उस देशका मालिक समझते हैं।

जिस वक्त संयुक्त अमेरिका स्वतन्त्र हुआ, ओरेगान कैलीफोर्निया, यूटाट अरि-

जोना, यूमेकिसको टेकसास, लूसियाना और फ्लोरिडा आदि पश्चिम तथा दक्षिण के भाग उसके अधिकार में न थे। स्वतन्त्रता संग्रामके बाद काफी लम्बे अरसे तक संयुक्त अमेरिका किसी बड़े युद्धमें नहीं उतरा। इस तथा अन्य कई बातोंने मिलकर अमरीका आर्थिक दृष्टिसे बढ़ाया इस उन्नतिके साथ ही उसने अपने पैर भी पसारने शुरू किये। १८०३ में उसके फ्रांससे तेल, प्राकृतिक गैस, गन्धक के प्रांत लूसियाना(क्षेत्रफल ८२७९०० व० मील) को डेढ़ करोड़ डालरमें खरीद लिया। १८१९में रूई और तम्बाकूके प्रान्त फ्लोरिडा ५८६०० व० मी०)को ५० लाख डालरमें हथिया लिया।

संयुक्त अमेरिकाकी २५ फी सदी रूई पैदा करने, उसके ३६ फीसदी तेल देनेवाला और ७०लाख पशुओंका पालन करने वाला टेक्सास प्रान्त पहले मैक्सिकोके आधीन था संयुक्त अमेरिकाके नागरिक मैक्सिको सरकारकी आज्ञा लेकर इसमें बसे और रोजगार करते रहे। इन लोगोंने जब मैक्सिकोको गृह-कलहके कारण कमजोर देखा मैक्सिकोसे टेक्सासको अलग कर संयुक्त अमेरिकासे मिलाने की मांग की। मैक्सिकोकी सरकार टेक्सासको पूर्ण स्वतन्त्र करनेको तैयार थी, पर—अमेरिकाके साथ मिल जाने देनेको तैयार न था। संयुक्त अमेरिकाकी सरकारने आक्रमणात्मक नीति अख्तियार की और युद्ध ठान दिया।अपने इस कार्यको न्यायोचित साबित करते हुए तात्कालीन राष्ट्रपति पाक १८४५ की २९ अप्रेल को कहा कि मैक्सिकनोंने यूरोपीय देशोंसे मदद की अपील की है, अभी तक वे नहीं आये, पर आ रहे हैं। संरक्षणके बदलेमें वे उस देशमें शक्ति और सत्ताकी मांग करेंगे जिसकी मदद करेंगे। अमेरिका यह बर्दास्त नहीं कर सकता।

क्या ऐसी ही दलीलें आज एक सौ साल बाद साम्राज्यवादी पेश नहीं करते? चेकोस्लोवाकियाको हड़पनेमें क्या हिटलर ने वही नीति अख्तियार न की थी जो संयुक्त अमेरिकाने टेक्सासपर अधिकार जमानेमें की!

१९४८ में सन्धिके अनुसार टेक्सासपर अमरीकाका अधिकार जायज हो गया। इसके अलावा उसे कैलीफोर्निया, यूराल अरिजोना और न्यूमैक्सिकोके प्रांत भी मिल गये। इस ५ लाख २९ हजार बगमील भूमिके लिये अमेरिकाने मैक्सिको को कुल १॥ करोड़ डालर दिये। राष्ट्रपति ग्राण्टने इस युद्धके बारेमें कहा कि "दुर्बल राष्ट्रके विरुद्ध शक्तिशाली राष्ट्र द्वारा छेड़े गये अत्यधिक अन्यायपूर्ण युद्धोंमेंसे भी यह एक है।"

पूर्ण रूपसे साम्राज्यवादी

१८६१-६५ के गृहयुद्धके कारण अमरीकाके प्रसारकी गति रुक गयी। दासताके विरुद्ध संघर्षमें जनवादी शक्तियां बढ़ी और उन्होंने युद्ध समयके लिये राज बढ़ाने वालोंकी आवाजको मन्द कर दिया। पर भूमिको बढ़ाने वाले मिट नहीं गये, वे बने रहे और शक्ति संचय करते रहे। इस बीच एक और भी बड़ा परिवर्तन हुआ। संयुक्त अमरीका कृषि प्रधान देशकी जगह प्रथम श्रेणीका औद्योगिक देश बन गया। १८९० में उसका औद्योगिक उत्पादन ब्रिटेनके उत्पादनसे बढ़ गया। अब अमरीका रूई, गेहूं, ऊन और कोयला तथा तांबाकी जगह बड़ी मात्रामें तैयार माल बाहर भेजने लगा। देशके अन्दर एकाधिकारी व्यवसायियोंका जन्म हुआ। उनकी ताकत बढ़ी और राज्यकी नीतिपर उनका सीधा प्रभाव पड़ने लगा। इससे अमरीका के प्रसारके ढङ्गमें भी परिवर्तन आया।

इसके पहले श्वेतांगोंको बसनेके लिये नयी भूमिकी जरूरत थी। अभीतक यह जरूरत अमरीकाके प्रसारके पीछे कामकर रही थी। पर अब इसका स्थान उद्योगपतियों, बैंकरों और व्यवसायियोंके गुटों के मुनाफेने लिया। अब अमरीकाके प्रसारके पीछे जो शक्ति काम करने लगी वह बसनेके लिये भूमिकी जरूरत न थी, वह थी मुनाफेकी चाह। भूमि हथियानेकी एक हद हुआ करती है, पर मुनाफेकी चाह हद नहीं हुआ करती। अतएव अब डालरके दूसरे देशोंमें जाने, वहांकी अर्थनीति और राजनीतिपर अधिकार जमाने का युग प्रारम्भ हुआ। यानी सक्षेपमें अमरीका साम्राज्यवादी बन गया और महान शक्तियोंकी साम्राज्यवादी प्रतिद्वन्द्वितामें उसने भी हाथ बटाना शुरू किया।

हवाई टापुओंपर अधिकार

साधारणतः हवाई टापुओंको अपने राज्यमें मिला लेनेके समयसे अमरीकाके इस नये युगका आरम्भ माना जाता है। यह पहला अवसर था जब अमरीकाने अपने भरोसे हजारों मीलकी दूरीपर स्थित भूमिपर कब्जा किया हो। संयुक्त राज्य अमेरिकाने एक संधिके द्वारा हवाई टापुओंकी निष्पक्षता और स्वाधीनता मान रखी थी। वहांके धनी लोगके साथ उसका रोजगार चलता था। इस तबकेपर विश्वास था कि अगर हवाई टापू अमरीकामें मिला दिया जाये तो उन्हें आर्थिक दृष्टिसे लाभ होगा। फलतः उन्होंने बगावतका झण्डा खड़ा कर दिया। बगावत शुरू होते ही १८९३ की १६ जनवरीको हनालूलूमें लङ्गर डाले अमरीकन युद्धपोत बोस्टनने अपने नौसैनिकोंको उतार दिया। अमरीकाकी तोपोंकी मददसे मुट्ठी भर लोगोंने राजाको हटा अस्थायी सरकार बना ली और इसके बाद एक घण्टेके अन्दर ही अमरीकाने इस सरकारको मान लिया।

हवाई टापुओंपर जिस प्रकार कब्जा किया गया, उसका ऐतिहासिक महत्व है। स्थान विशेषके लिहाजसे कुछ हेरफेरके साथ यह तरीका कितनी ही बार अपनाया गया और पनामा, हांडूराज, हैइटी, सान डोमिंगो, निकारागुआ, क्यूबा और यहां तक कि मैक्सिको तकने इस 'हवाई' तरीकेका मज़ा चखा।

अमरीकाके जनतन्त्र वादियोंने इस प्रकार अन्य देशको अपनेमें मिला लेनेपर बड़ी आपत्ति उठायी। सारे देशमें इसपर वाद-विवाद प्रारम्भ हो गया, पर अन्तमें १८९४ के जुलाईमें स्पेन-अमरीकाके युद्धके समय अमरीकन कांग्रेसने इसपर अपनी स्वीकृति दे दी।

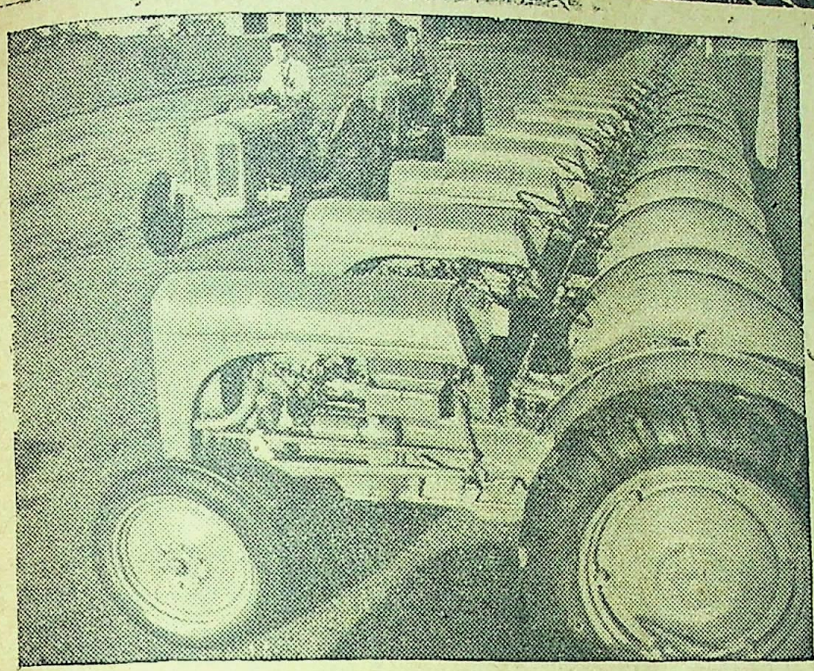

ब्रिटिश ट क्टर—अमरिकाने ५० लाख पौण्डके ब्रिटिश टैक्टरोंका आडर ब्रिटेनके एक फर्मको दिया ह।

फिलिपाइन्स और कैरीवियन समुद्रपर अधिकार

१९ वीं सदीके अन्तमें कमजोर हो जानेके कारण साम्राज्यवादी प्रतिद्वन्दितामें टिकनेमें असमर्थ था। उसके धन-धान्य पूर्ण उपनिवेशोंको छीनकर अपने कब्जेमें कर लेनेकी अमरीकामें ताकत थी। स्पेन अपनी कमजोरी समझता था, अतएव वह क्यूबाको अमरीकके सुपुर्द करनेको तैयार था। लेकिन अमरीका उस कनजोरीको जानता था और इसलिये वह सीधे युद्धपर तुला था। उस वक्त अमरीकाके इसरुखका समर्थन केवल ब्रिटेनने किया। कहा जाता है कि युद्ध शुरू होनेके कुछ ही दिन पहले ब्रिटिश परराष्ट्र सचिवने लन्दन स्थित अमरीकन प्रतिनिधिसे कहा था—'आप हमारा बेड़ा क्यों नहीं मांगलेते औरजल्दी से क्यूबाका मामला तय कर डालें? किसी दूसरे समयमें ऐसी ही भलाई आप हमारे साथ भी कर सकते हैं।' इस अंग्रेजके मस्तिष्कमें बोअर युद्धकी बात चक्कर काट रही थी। उसी दिन ब्रिटिश उपनिवेश मंत्री जोसेफ चैम्बरलेनने संयुक्त अमरीका और ब्रिटेनके बीच कमसे कम महत्वपूर्ण प्रश्नों पर संयुक्त कार्रवाई करनेके समझौतेकी सिफारिश करते हुए कहा—'कंधेसे कंधा मिलाकर हम सारी दुनिया भरमें शांति कायम कर सकते हैं।'

युद्ध खतम होनेपर सन्धिके अनुसार स्पेनने गुआम, पोर्टोरिको और फिलिपाइन द्वीपपुंजोंको संयुक्त अमरीकाको सौंपदिया। इनके लिये क्षति पूर्तिके रूप अमरीकाने स्पेनको २ करोड़ डालर दिये। क्यूबाकी स्पेनके हाथसे मुक्तिकी घोषणा पहले ही की जा चुकी थी।

युद्धके बाद यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि इन जीते हुए भू खण्डोंको क्या किया जाय? १८९८ की २० अप्रेलकोसं युक्त अमरीकाकी कांग्रेसने क्यूबाकी जनताकी स्वाधीनताके अधिकारकी घोषणा की थी। यह घोषणा फिलिपाइन्सऔ पोर्टोरिकोके बारेमें उसी प्रकार लागू होती थी। पर अमरीकन साम्राज्यवादियोंने अपनी कार्रवाईसे यह स्पष्ट कर दिया कि हाथीके खानेके दांत और होते हैं दिखानेके और। उस वक्त अमरीकन साम्राज्यवादियोंका दिमाग किस तरह काम कर रहा था उसका जीता जागता सबूत तत्कालीन राष्ट्रपति मैकिन्लीका अपने मानसिक संघर्षका वर्णन है—

'लगातार कितने ही दिन आधी राततक मैं ह्वाइट हाउसमें रहता रहा और सज्जनों को यह कहते मुझे शर्म नहीं आती कि कई रात मैंने घुटने टेककर सर्वशक्ति सम्पन्न ईश्वरसे प्रकाश और पथ प्रदर्शन की प्रार्थना की। और एक दिन जबकि रात बीत गयी थी, मेरी समझमें यह आया- मैं नहीं जानता कि यह कसे हुआ, पर समझ में आया कि (१) हम उनको फिलिपाइन्स को) स्पेनको वापस नहीं सौंप सकते—यह कायरता और अप्रतिष्ठापूर्ण होगा, (२) हम उन्हें पूर्वमें व्यवस्थामें अपने प्रतिद्वन्द्वी फ्रांस या जर्मनीके हाथ भी नहीं दे सकते, यह खराब और अपने नामपर बट्टा लगानेका काम होगा, (३) हम उन्हें अपने ऊपर नहीं छोड़ सकते वे स्वायत्त-शासनके अयोग्य हैं और शीघ्र वहां उछृंखलता पैदा हो जायगी और स्पेन युद्धसे भी बदतर कुशासन हो जायगा, (४) हमारे सामने सिवा उसके दूसरा रास्ता नहीं कि हम उन सबको ले लें, फिलिपिनोंको शिक्षित बनायें, ऊपर उठायें, सभ्य बनायें और ईसाई बनाकर उन्हें अपना साथी बनायें। इसीके लिये ईसा मसीहने भी जान जान दी थी। और तब मैं सोने गया गहरी नींद सोया।' (साम्राज्यवाद और विश्व राजनीति, पार्कर टामस मून)

पर क्या मैंकिन्लीं यकायक इस निर्णयपर पहुंच गया था? उसके शब्द हमें कुछ ऐसा ही विश्वास दिलाते हैं। पर असलियत वह थी कि मैकिन्लीने आत्मज्ञान ही से विचार विमर्श न किया था, साथ ही अपने परामर्शदाताओंसे भी। इन टापुओंके आर्थिक सामरिक महत्वकी विस्तृत रिपोर्टोंने ईश्वर द्वारा दिखलाये गये रास्तेपर अपनी मुहर लगा दी थी।

पर केवल स्पेनको हटानेसे फिलिपाइन पर अमरीकाका कब्जा नहीं हो सका। १८९८ में फिलिपिनोंके पास २०-३० हजार सेना थी। इसकी बदौलत वे बराबर स्पेनकी सेनाओंका मुकाबला करते रहे। १८९८ की १८ जूनको उन्होंने जनतन्त्रवादी राष्ट्रकी घोषणा की और ६

अगस्तको अपनी नयी सरकार बननेकी सूचना अन्य राष्ट्रोंको दी। उन्होंने अपना प्रतिनिधि मण्डल पेरिसको जहां शांति कमीशनकी बैठक हो रही थी, और वाशिंगटन भेजा। पर उनकी स्वाधीनता स्वीकार करनेकी बात राष्ट्रपति मैकिन्ली को जरा भी पसन्द न थी। उसने अमरीकन सेनाओंके सेनापति जनरल ओंटिसको परिस्थिति सम्भालनेका हुक्म दिया। अमरीकन सैनिकोंने हथियार उठाये और फिलिपाइन द्वीप पुंजों पर दूसरी बार विजय प्राप्त की गयी।

१९०० की ९ जनवरीको सिनेटमें मैकिन्लीके सहायक इण्डियानाके सिनेटर वेवेरिजने जो भाषण दिया था, वह अमरीकन साम्राज्यवादियोंके नग्न रूपमें हमारे सामने ला रखता है। उसने कहा था :—

"फिलिपाइन द्वीपपुंज हमेशाके लिये हमारे हो गये।....और फिलिपाइनके ठीक आगे चीनका असीम बाजार है। हम इनमें से किसीसे भी पैर पीछे न हटायेंगे। हम द्वीपपुंजोंके प्रति अपने कर्त्तव्यसे विमुखन होंगे। हम पूर्वमें अपने अवसरको न छोड़ेंगे। हम अपनी जातिके जो ईश्वरके आधीन विश्व सभ्यताकी सरक्षक है, उद्देश्यकी सिद्धिमें अपने कर्त्तव्यसे विमुख न होंगे।"

उसके एक साल बाद ७ जनवरी १९०१ को फिलिपाइनकी विजय पर बहस के सिलसिलेमें एक दूसरे सिनेटर हेनरी कैबट लाजके अमरीकन साम्राज्यवादियों की महत्वाकांक्षाको और भी स्पष्ट रूपमें प्रकट किया :—

"आर्थिक दृष्टिसे हम उच्च आसन पर बैठे हैं। हम उच्चतर आसनकी ओर बढ़ रहे हैं। आर्थिक शक्तियोंके कार्यकी रफ्तार आप कम सकते हैं, उसमें रुकावट डाल सकते हैं, पर आप उसे एक दम रोक नहीं सकते। आप संयुक्त अमरीकाकी अग्रगतिको नहीं रोक सकते।....अमरीकन जनता और आर्थिक शक्तियां जो सभी बातोंकी बुनियादमें हैं, विश्वकी आर्थिक सर्व श्रेष्ठताकी ओर हमें आगे लिये जा रही हैं।"

हम स्पष्ट देखते हैं कि विश्व पर अमरीकाके प्रभुत्वका स्वप्न देखने वाले वांडेन वर्ग, कोनैली या वाल्टर लिपवमान जैसे व्यक्ति केवल आज ही पदा नहीं हुए, मी पहले मौजूद थे।

कैरी बियन सागरमें संयुक्त अमरीका को स्वार्थकी तुलना अक्सर भूमध्य सागर में ब्रिटेनके स्वार्थके साथ की जाती है। जो महत्व ब्रिटेनके लिये स्वेज नहरका है, वही महत्व अकरीकाके लिये पनामा नहर का है। स्पेन-अमरीका युद्ध समाप्त होनेके

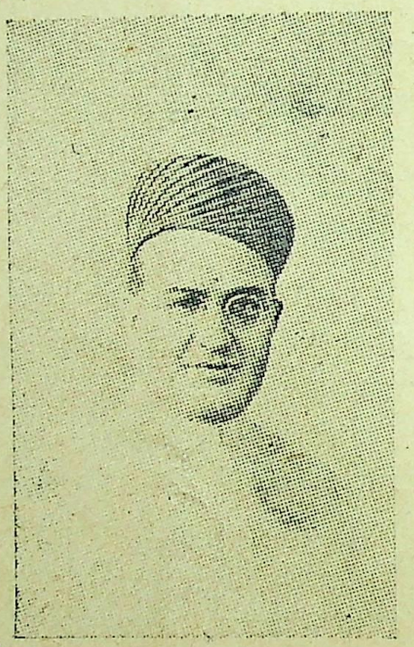

स्वर्गीय देवी प्रसादजी खतान। आप भारतीय विधान बनाने वाली समितिके एक सदस्य और मारवाड़ी समाजके एक विशिष्ट नागरिक थे। गत २७ फरवरीको आपका देहान्त हो गया।

बादसे प्रथम महासमाके खतम होने तक संयुक्त अमरीकाने कैरीबियन सागरके अधिकांश देशों पर अपना राजनीतिक प्रभुत्व कायम कर लिया। १८९८ में उसने पोर्टरिको पर कब्जा किया, १९०१ में क्यूकाके मामलोंमें हस्तक्षेप करनेका हक हासिल किया, १९०३ में पनामाको एक तरहसे अपना अंग बना लिया। १९०७ में सान डोमिंगो पर अपना आर्थिक नियन्त्रण कायम कर लिया, १९०८ में निकारा गुआके राष्ट्रपतिको निकाल बाहर किया, १९१५ में हैइटीमें अपने नौसैनिक भेजे। १९१७ में कई वर्जिन टापुओंको उसने खरीद लिया।

बीसवीं शताब्दीके प्रारम्भमें पनामा कोलम्बिया जनतन्त्रका अंग था। लेकिन संयुक्त अमरीकाके राष्ट्रपति थे यो डोट रूजवेल्टने अंधसागर और प्रशान्तको जोड़ती हुई एक नहर पनामासे होकर निकालनी चाही। यहां भी 'हवाई' तरीके का प्रयोग किया गया। अमरीकन एजेण्टों ने पनामामें क्रान्ति करा दी। अमरीकन अधिकारियोंने इन बाभियोंकी सरकार को मान लिया और इन बागियोंने पलक मारते दस मील दौड़ा रास्ता नहर बनाने के लिये अमरीकाको दे दिया। १९१४ में पनामा नहर तैयार हो गयी और उससे जहाज आने जाने लगे।

अंध महासागरसे प्रशान्त जानेका छोटा रास्ता अमरीकाको मिला जरूरत पर फिर भी यह खतरा था कि कहीं दूसरी शक्तिदोनों महासागरोंको मिलानेवाली दूसरी नहर ननिकाल दे दूसरी नहर निकारा गुआमें हीनिकाली जासकती थी। इस खतरे को दूर करनेके लिये १९१२ में अमरीकाने खले आम निकारा गुआंके निजी मामलों में हस्तक्षेप किया और अपनी कठपुतलियोंको गद्दी पर बैठाया इन कठपुतलियोंने संधि कर अमरीकाको अपने देशकी रेलवें चुंगी और बैंकों तथा नहरके योग्य भूमि का नियन्त्रण सौंप दिया। तबसे अमरीकन सरकार यहां प्रतिक्रियावादियोंको गद्दी पर बैठाये रहनेमें लगी रहती है।

इस प्रकार प्रथम महायुद्ध प्रारम्भ होनेके पहले पूरे साम्राज्यवादीके रूपमें हमारे सामने आता है। डालर साम्राज्य पश्चिममें चीन तक फैल जाती है और दक्षिणमें कैरीबियन सागरके देशों पर अधिकार जमाता हुआ दक्षिणमें अमरीका को अपने चंगुलमें करनेके लिये आगे बढ़ता है। उसके अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों का संघके अन्य महान शक्तियोंकी महत्वाकांक्षाओंसे होता है, अतएव साम्राज्यवादी विरोधों और अन्तमें संघर्षके चक्करमें वह भी आ पड़ता है।

हमारी आर्थिक उन्नतिके कुछ राह

लेखक—प्रो० महेशचन्द्र, प्रयाग विश्वविद्यालय

कलकत्तेकी इस यात्रामें बहुत सी नई बातें मालूम हुईं। ऐसी नयी बातें जिनका हमारी आर्थिक उन्नति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है।

भारत अधिक उत्पादन की समस्या हल करनेका प्रयत्न कर रहा है। आये दिन यह कहा जाता है कि पूंजीपति दोषी है और मजदूर निर्दोषी है। कमसे कम ऐसा कहने वाले लोगोंका एक वर्ग है। पञ्जाबकी चीनी एक मिलके एसिस्टेण्ट मैनेजरने अपने अनुभव बतलाये। उनकी मिलमें पहले मजदूरोंके दो ग्रुप केरियर पर गन्ना डालता था। मिलका उत्पादन उतनाही है परन्तु अब केरियर पर चार ग्रुप काम करते हैं। मजदूरोंको एक काम से दूसरे काममें जानेमें एतराज होता है। यदि कोई मजदूर केरियर पर काम करता है और उसे कोयले ढोनेके काम पर लगाया जाता है तो वह बहाने निकाल कर वहां जानेसे इंकार करता है। जब मजदूर गाड़ियों परसे गन्ने उतारते हैं तब वे अफसरकी आंखसे बचनेके लिये गाड़ियोंके पीछे छिप जाते हैं। मजदूर समय काटना चाहता है। कहावत है कि 'दिन खसा, मजदूर हंसा"। आज प्रत्येक क्षेत्रमें मजदूरोंका यही रवैया हो रहा है। कम उत्पादन की समस्याको हल करनेके लिये हमारी सरकार निम्नतम मजदूरोंकी व्यवस्था कर रही है। परन्तु उसके साथ साथ यह भी जरूरी है कि मजदूरोंकी बढ़ती हुई अक्षमताको भी दूर किया जाय। यदि मजदूर दिलसे काम करने लगे तो बहुत अच्छा हो।

अधिक उत्पादन और अधिक अच्छे उत्पादनके लिये यह भी आवश्यक है कि मिलकी उत्पादन व्यवस्थामें सांख्यिकिक-नियन्त्रण (स्टाफिस्टिफल कण्ट्रोल) को पूरा स्थान दिया जाय। मिलके विभिन्न विभागोंके लिये जो सामान खरीदा जाता है वह अच्छी किस्मका हो। मिलके विभिन्न विभागोंमें जो काम होता है वह खराब न हो। मजदूरोंको जो औजार दिये जाते हैं वह एक स्टैण्डर्डके हो। उन तीनोंके लिये खरीदे सामान, विभिन्न उत्पादन स्टेज पर अधनिर्मित सामान तथा औजारोंके नमूने लेकर जांच करनी चाहिये। इस जांचके लिये सांख्यिकिकों (स्टाफिस्टियन्स) ने जो खोज कर रक्खी है तथा जो नये ढंग ढूंढ निकाले हैं उन्हें पूंजीपति उस पर विश्वास नहीं करते। यही नहीं। कलकत्ता कांफ्रेंसमें प्रस्तुत पूंजीपति प्रतिनिधियोंसे एक प्रश्न पूंछा गया। एक पतला धातुका पत्तर है जिसकी मोटाई दो मिलीमीटर रहती है परन्तु कोई पत्तर ·०१ मिलीमीटरतक कम या अधिक मोटा हो सकता है। यदि ऐसे बीस पत्तर एकके ऊपर एक रक्खे जायं तो बीसोंकी मोटाई ४० मिलीमीटर होनी चाहिये प्रत्येक पत्तरकी मोटाईमें कमी बेशीकी संभावनाके कारण उपर्युक्त ४० मीटरकी मोटाईमें भी कमी बेशी होगी। प्रस्तुत व्यक्तियोंसे यह पूंछा गया कि वे बीसों पत्तरोंकी मोटाइमें ४० मिलीमीटरसे कितना अन्तर सम्भव मांगेंगे। किसी ने कहा 'वही जो इक पत्तर की है,' किसी ने कहा पांच की। किसीने कहा दो मिलीमीटर की। परन्तु सही जवाब कोई नहीं दे सका सही उत्तर सांख्यिकिक (स्टाफिस्टियन्स) दे सकता है। यदि जो पूंजीपति उसकी सलाह लें वे बहुत दिक्कतोंसे बच जाय, सरकारी ईंस्पेक्टर द्वारा ना-पास किये सामानकी मात्रा घट जाये। कमसे कमे अधिक मात्रामें कच्चा माल को खरीदने और अधिक मात्रामें तैयार वस्तु बेचने वाले उत्पादक (पूंजीपति)को यह ढङ्ग अवश्य अपनाना चाहिये।

अस्तु भारत- विख्यात अलम्यूनियम कारपोरेशनके मैनेजरसे एक अति महत्व पूर्ण बात मालूम हुई। उनके कथनानुसार मिलके विश्वविद्यालयके उन ताजे विद्यार्थियोंके कारण, जिन्हें पूंजीपति नौकर रखते हैं, हड़तालें होती हैं। वे शीघ्र उन्नति करनेकी इच्छा वश इन मजदूरोंको हराबाग दिखाते हैं परन्तु वे अपने वादोंको पूरा नहीं कर पाते। फलतः मजदूर हड़ताल कर देते हैं। विद्यार्थियोंको चाहिये कि वे ऐसी मृगतृष्णाको छोड़कर पहले प्रत्येक छोटे बड़े कार्योंको सीखें। मनेजरकी राय बहुत अच्छी है। हमारे विद्यार्थियोंके दिमागमें यह बात अच्छी तरह जम जानी चाहिये। परन्तु इस बातको पूंजीपति वर्ग किसी दूसरे प्रकार रखा करें तो अच्छा हो। अन्यथा मुझे डर यह है कि कम्युनिस्ट नेता भी यही कहने लगेंगे कि हड़तालें हमारे कारण नहीं होती। यह तो नये विद्यार्थी मजदूरोंके उत्तेजना दिलानेका नतीजा है।

अस्तु। हिंदोस्तान डेवेलपमेण्ट कारपोरेशनके अति मिलनसार आस्ट्रियन इञ्जीनियर श्रीयुत ग्लाससे हमको सी अनुभव की बातें मिली। उन्होंने जिस परिश्रमसे अपनी संस्थाकी उन्नति की है वह अनुकरणीय है। उनका यह कहना सत्य है कि हमारे एम० ए० तथा बी० ए० पास विद्यार्थी साफ-साफ एक सा अक्षर और अङ्क लिखना नहीं जानते। उन्होंने पूंजीपतियोंका पक्ष नहीं लिया उन्होंने यह बताया कि हमारे पूंजीपति रूपयेके पीछे अन्धे हो जाते हैं। वे चाहते हैं कि ऐसी मशीन बनो और ऐसी व्यवस्था हो कि एक पैसा लगाया जाय तो तुरन्त एक रूपया बन जाय। यह अति आवश्यक है कि मिल-मालिक अपनी मिलोंमें सांख्यकी सम्बन्धी मामूली आंकड़े एकत्र करें। वे भले ही अभीसे सांख्यकिक नियन्त्रण न अपनावें।

साथ ही यह भी आवश्यक है कि विश्वविद्यालयोंसे निकलनेवाले विद्यार्थी उद्योगधन्धोंसे जानकारी रक्खें। उन्हें यह ज्ञान हो कि वहां किस प्रकारके सांख्यकिक आंकड़ोंकी आवश्यकता होती है। इस हेतु पूंजीपतियोंको चाहिये कि वे अर्थ शास्त्रियोंको ऐसी सुविधायें दे ताकि विद्यार्थियोंको ऐसी शिक्षा दी जा सकें। हम उनके विचारोंसे पूर्ण तया सहमत हैं।

कलकत्तेमें आकर हमने मिल और फैक्टरियोंसे संबधित लोगोंसे तो भेंट करके बहुत कुछ विचारोंका आदान प्रदान किया। इसका श्रेय कलकत्ता नगरको है। परन्तु 'लाइट हाउस' सिनेमामें सर्व प्रथम 'कल्पना' चित्र देखनेके पश्चात

(शेष २०, व पृष्ठ पर)

समाजवाद क्या है ?

श्री श्याम परमार

समाजवाद आजके युगका एक महत्वपूर्ण राजनैतिक प्रश्न बन गया है। ज्यों-ज्यों यह वाद प्रचार पाता गया, इसके सम्बन्धमें अनेक धारणाएं भी प्रकट होती गयीं। यहां तक कि राजनैतिक सिद्धान्तों के प्रकाण्ड विद्वानों तकने इसके प्रति अपने भ्रान्तिपर्ण मन्तव्य प्रकट किये हैं। हियर्नशा जैसे विद्वानने तो यहां तक कह डाला है कि समाजवाद सनकियों और अपराधियोंके आकर्षणकी वस्तु है।

वास्तवमें समाजवादको जहां परिभाषामें बांधनेका प्रयत्न किया है वहां वह सफलतापूर्वक व्यक्त नहीं हुआ। यदि सही मानेमें समझा जाये तो समाजवाद एक जीवित आन्दोलन है। यह एक ऐसा आन्दोलन है जिसका उद्देश्य सबका भला करना है। वह जीवनका एक दर्शन है—एक धर्म है और एक रास्ता है। जनतन्त्र वादकी बुराइयोंके ऊपर हम समाजवादकी कल्पना करते हैं। यह सही कि इस कल्पनाकी पीछे जीवनके विकासकी एक प्रबल आकांक्षा छिपी हुई है। समाजवाद हमें उसी ओर ले जानेका प्रयत्न करता है। समाजवादी सेलरने कहा है कि वह आन्दोलन है जिसका उद्देश्य उत्पादनके साधनोंपर अधिकार करके बहुसंख्यक जनताका भला करना है। इस परिभाषा को हम पूर्ण नहीं कह सकते, क्योंकि इसमें वे सभी बातें हमें प्राप्त नहीं होतीं जो कि समाजवादकी आदर्श कल्पनामें निहित हैं।

गत शताब्दीके मध्य तक समाजवाद एक आदर्श था। किन्तु मोअर, ओवेन, फोरियर और सेण्ट सायमनने समाजवाद वादको राष्ट्रीय धरातलपर उदाहरणों और सिद्धान्तों सहित तौलकर आगे बढ़ा दिया उन्होंने अपनी रचनाओंमें समाजवाद और साम्यवादका भेद करनेका प्रयत्न नहीं किया किन्तु जिस समाजकी कल्पना उन्होंने की वह साम्यवादी ढङ्ग की थी। समाजवादके इस प्रारम्भिक रूपको कार्ल मार्क्स और एञ्जिलने अपने हाथोंमें लेकर उसको राजनीतिक रूप दे दिया है। उन्होंने इसको शोषित जनताका आन्दोलन बनाया और वर्गसंघर्षके अपने दर्शनको दुनियाके सामने रखा। लेकिन अब समाज वाद और साम्यवाद एक ओर, और दूसरी ओर समाजवाद और व्यक्तिवादमें एक प्रकारका संघर्ष चल रहा है। लोग सहसा अब यह नहीं कहते कि समाजके बादके पीछे मार्क्सकी छाया चल रही है।

वर्तमान समयमें समाजवाद क्रमशः अपने असली तत्वोंमें व्यक्त किया जा रहा है, इसमें भी सन्देह है। समाजवाद और साम्यवादमें अधिकांश लोग भेद नहीं समझते, किन्तु इन दोनोंमें बहुत अन्तर है। जहां साम्यवाद जरूरतके मुताबिक उपकरण प्रदान करता है, यहां समाजवाद कार्यकी मात्राके अनुकूल जरूरत पूरी करनेमें विश्वास करता है। समाजवाद व्यक्तिगत सम्पत्तिके पक्षमें है साम्यवाद उसका विरोध करता है। एक विकासवादी है, दूसरा क्रान्तिकारी समाजवाद सरकार के सहयोगकी आशा करता है, साम्यवाद उसको खत्म करनेकी बात करता है। ऐसे अनेक भेद हैं, जिनका लिखना व्यर्थ होगा। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिकाके अनुसार समाजवाद एक नीति या सिद्धान्त है जिसका उद्देश्य केन्द्रीय सरकारकी जनतन्त्रवादी हुकूमतके कार्यों द्वारा उत्पादन और वितरणको ठीक तरीकोंपर अधिकार प्राप्त करना है। इसके लिये तीन मुख्य कार्य समाजवादियोंके सामने हैं। (१) मुख्य - मुख्य कारखानों और जरूरी सेवाओंको जनताके अधिकारमें सौंपना, (२) व्यक्तिगत फायदे की अपेक्षा सामाजिक फायदेका अधिक ध्यान रखते हुए सारी मशिनरीको चलाये रखना, और (३) सेवाओंका रूप समाजोन्मुखी भले की ओर हो। इङ्गलडकी लेबर पार्टीने दूसरे कार्यक्रम रखे हैं, जो अर्थसे अधिक सम्बन्धित है।

आपत्ति की जाती है कि समाजवाद यदि कार्य रूपमें परिणित किया गया तो हर व्यक्तिको सरकारका नौकर बन जाना सोचेंगे तो स्पष्ट हो जायगा कि सरकार समाजका एक अस्त्र जिसके द्वारा स्वयं समाज अपना भला कर सकता है। फिर वह क्यों यह समझे कि सरकार नौकर बन जायगी। वास्तवमें समाजवादके सिद्धांत आशावादी हैं। एक समाजवादी व्यक्ति समाजके परिवर्तन की तीव्र आशा करता है। यह आशा हमें सभी धर्मों और आदर्शों में प्राप्त होती है। ऐसी स्थितिमें सरकारको समाजके भलेका एक जरिया बनाया जाना बुरा क्या है ?

यद्यपि समाजवाद हमारे सामने मूर्तिमान नहीं हो सकता किन्तु यह सत्य है कि उसका आन्दोलन हर राजनैतिक संस्थाके लिये खिंचावका विषय बना रहेगा। पश्चिमी देशोंमें इसने निम्न वर्गीय समाज को एकताके सूत्रमें बांध दिया है। समाजके द्वारा यह स्पष्ट किया जा चुका है भौतिक आवश्यकताओंको पूर्ण किये बिना कोई भी उन्नति नहीं की जा सकती। राजनैतिक जनतन्त्रवाद सामाजिक जनतन्त्रवादके बिना अधूरा है। भारत जैसे देशमें जहां भेदभाव अधिक हैं, इस आन्दोलन का बड़ा महत्व है। समाज आज समझ गया है कि न्यायका स्तर सामाजिक हो, मौजूदा वर्गभेद नष्ट हो और आर्थिक सामाजिक समानता दुनियामें लायी जाय। लोगोंकी इन मांगोंको उचित अर्थोंमें समझा जाये तो विलियम हरकोर्टने ठीक ही कहा है, क्योंकि हम सब उसी समानता को प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रहे हैं।

—o—

हमारी आर्थिक उन्नतिके कुछ रोड़े

(१६ वें पृष्ठका शेषांश)

वहांकी जनताने जो अराष्ट्रीयताका परिचय दिया वह भी बता देना आवश्यक है। खेलके पश्चात राष्ट्रीयतापूर्ण जो गायन हुआ उस समय दो व्यक्तियोंको छोड़कर शेष सारी जनता दरवाजेके बाहर हो गयी थी। बारह दिसम्बरकी बैरकपुरकी भीड़ और तेरह तारीखकी इस घटनामें महान अन्तर है। इसका दोष कलकत्ताको दिया जाय या कलकत्ता वासियोंको ? यदि हम तीव्र आर्थिक उन्नति चाहते हैं तो ऐसी आदतोंको बदलना होगा। (लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

काश्मीरकी समस्या

श्री मोहनसिंह सेंगर

(४)

जहां काश्मीरमें हमने एक ओर वह जन-जागरण देखा, जिसके साये में बार-बार आघात सह कर, साम्राज्य-वादी षड्यन्त्रों और साम्प्रदायिक कठ-मुल्लाओंके भ्रान्ति-प्रचारके धूम्र-जालको दूर हटा कर जन-बल एक ठोसचट्टानकी तरह आततायीके मुकाबलेमें दृढ़तासे अड़ा खड़ा है, वहां दूसरी ओर हमने वह काश्मीर भी देखा, जो अपने कुसंस्कारों, अन्ध परम्पराओं, संकीर्णताओं और अदूरदर्शिताके कठघरेमें बन्द, बाहरकी ताजी हवा और रोशनीसे वंचित रो और सिसक रहा है—वेदना या दर्दसे नहीं, अपने मिटते हुए वैभव और अनीति के प्रासादको ढहता देख कर। यह है सिखों और हिन्दुओंका काश्मीर। नेश-नल कानफरेन्सकी स्वाभाविक प्रगतिसे जैसे वे मनही मन सुखी एवं सन्तुष्ट नहीं! पर साथही वे यह भी समझ बूझ रहे हैं कि जिस डोगराशाही पर उन्हें सिर्फ इस लिये नाज था कि वह 'हिन्दू' है, वह आज अपनेही पापों एवं जुल्म ज्यादतियोंके बोझसे बठी जा रही हैं।

इतिहासकी दृष्टिसे सिखों और हिन्दुओंको काश्मीर पर गर्व होना स्वा-भाविक ही है। काफी लम्बे अर्से तक दोनोंने यहां राज किया है। नील पुराणके अनुसार वर्त्तमान काश्मीर-तराई किसी समय झील थी, जो दक्ष-कन्या सतीके नाम पर 'सतीसर' कहलाती थी। इसीके बीचमें हरमूक पर्वत था, जिस पर हर (शिव) तपस्या करते थे। इस झीलमें अनेक राक्षस विचरा करते थे, जो आसपासके आदमियों एवं ऋषियोंको मार डाला करते थे। जब ब्रह्माके पौत्र कश्यप ऋषि इधर आये, तो वे राक्षसोंके अत्या-चारोंसे बड़े क्षुब्ध हुए। उन्होंने आर्या-वर्त्तके राजा चन्द्रदेवको यहां निमन्त्रित किया, जिसने अपने मित्र नीलनागकी सहायतासे राक्षसोंको पराजित किया (महाभारतसे १००-१५० वर्ष पूर्व) और ब्रह्मावर्त्त (वर्त्तमान कुरुक्षेत्र) तथा आर्यावर्त्त (वर्त्तमान कन्नौज) से लोगों को बुला कर यहां बसाया। २००० ई० पू० तक यहां कोई स्थायी और दृढ़ शासन कायम नहीं हो सका। २५० ई० पू० में अशोककी सेनाओंने इस पर विजय प्राप्त कर इसे अशोकके साम्राज्यमें मिला लिया। तदुपरान्त यहां बौद्ध मतका इस तेजीसे प्रचार हुआ कि ब्राह्मण तक बौद्ध प्रचारक बन गये। कुछ समय बाद इस पर ताजारोंका और फिर कनिष्कका अधिकार हो गया। इसके बाद हूणोंने आक्रमण कर इसे खूब लूटा—सताया। हुएनसङ्गके कथनानुसार हूण-राजा मिहिरगुलने यहां बड़े जुल्म किये। इसके कई वर्ष बाद फिर यहां हिन्दुओंका राज कायम हुआ। इनमें ललितादित्य (७१५-५२ ई०) और अवन्तिवर्मन ८१३-५५) ने काश्मीरकी काफी उन्नति की और यहां अनेक प्रसिद्ध मन्दिर आदि बनवाये। १४ वीं शताब्दी तक यहां हिन्दुओंका राज रहा, जिसके बाद फिर दमरा और तांत्रिय जातियोंके आक्रमण आरम्भ हुए।

१३२२ ई० में जुल्फी कादिर खांने काश्मीर पर हमला किया और भीषण लूट-मारके बाद ५० हजार ब्राह्मणोंको कैदी बना कर ले गया। फिर मोहम्मद गजनवीने हमला किया। १३४१ ई० में काश्मीरकी महारानी कुटारानीने, जिसका पति तातारी-आक्रमणसे भयभीत होकर तिब्बत भाग गया था, अपने मन्त्री शाह मिर्जा द्वारा षडयन्त्र रच कर राज्य पर अधिकार कर लिये जाने और उससे विवाह करनेके कुचक्रको व्यर्थ करनेके लिये आत्म हत्या कर ली। इसके बाद काश्मीरमें शाह मिर्जाके उत्तराधिकारी कई सुल्तानोंका राज रहा। फिर कुछ समय तक चाकों (शिया) का राज रहा। फिर अकबरकी सेनाओंने जीत कर काश्मीरको मुगल साम्राज्यमें मिला लिया। मुगल-शासन में काश्मीरमें शान्ति स्थापित हुई और इसकी काफी समृद्धि भी हुई। १७५० में अफगान शाह अहमदशाह दुर्रानीने इस पर कब्जा कर लिया। १८१९ में रणजीतसिंहकी सेनाने इस पर कब्जा किया। १८४६ में सिखोंको पराजित कर ईस्ट-इण्डिया कम्पनीकी सेनाओंने इसे ७० लाखमें जम्मूके डोगरा-राजा गुलाबसिंहको बेच दिया। गुलाबसिंहकी मृत्यु (१८५७ ई०) के बाद रणबीरसिंहने और उसके बाद प्रतापसिंह (१८८५) ने राज्यमें कई सुधार किये। वर्त्तमान महाराज हरीसिंह (१९२५) का शासन प्रतिगामी और परम्परानुवादी शोषणके सिवा अन्य किसी दृष्टिसे उल्लेखनीय नहीं।

उपर्युक्त विवरणसे हमें दो बातोंका सूत्र मिलता है: पहली तो यह कि कश्यप ऋषि ब्रह्मावर्त्त और आर्यावर्त्तसे जिन ब्राह्मणोंको काश्मीर ले गये थे, वे बौद्ध, अफगान, तातार, सिख, हिन्दू (डोगरा) आदि शासनोंमें भी पुरोहितके रूप में राज-काजसे सम्बन्धित रहे। दूसरी यह कि सिख शासनके समय तथा उसके बादमें जो सिख सैनिक और नागरिक आदि काश्मीर गये, वे वहीं बस गये। इन दोनों जातियोंके लोगोंने न सिर्फ काश्मीरको अपना घरही बनाया, बल्कि पराजित और अधिकारच्युत होने पर भी उस पर अपना विशेष अधिकार समझते रहे। आज भी काश्मीरकी ऊंची और प्रधान नौकरियां ब्राह्मणोंके हाथोंमें हैं तथा पुलिस और सेनामें सिख काफी हैं। इसके विपरीत तातार, अफगान, चाक; शिया आदि मुस्लिम जातियों-ने—जिनके उत्तराधिकारी, गुमास्ते, सैनिक आदि आक्रमणकी सफलताके बाद काश्मीर में ही बस गये—काश्मीर पर आक्रमण कर लूट-मार और अपहरण आदि किया, जिससे हिन्दुओं और सिखोंमें उनके प्रति दुर्भाव और अविश्वास पैदा हो गया। यह दुर्भाव और अविश्वास आज भी किसी हद तक मौजूद है। यह केवल ब्राह्मण और सिख नागरिकों अथवा

अधिकारियोंमें ही हो, ऐसी बात नहीं है, काश्मीरके अनेक राजाओंके आचरणोंमें भी इसकी झलक दिखाई देती है। इस स्थितिमें यदि मुस्लिम-जनतामें जिसकी आबादी ६७ से ९४६ प्रतिशत तक है डोगरा-शासन और उसका बाहन बने हिन्दुओं और सिखोंके प्रति क्षोभ एवं असन्तोष हो, तो आश्चर्यकी क्या बात है ?

तथा कथित कबाइलियोंके आक्रमणोंके दौरानमें हुई लूट-मार, बलात्कार और अपहरणके जो विवरण हमारे सामने आये, उनसे यह स्पष्ट है कि इनके शिकार सिख और हिन्दू ही ज्यादा हुए हैं। पर इसका कारण सर्वथा इतिहासमें खोजना भी भूल होगी। हमें इसके दो कारण बताये गये, प्रथम तो यह कि आक्रमणकारी पूर्वी पंजाब, दिल्ली और जम्मूमें सिखों तथा हिन्दुओं द्वारा मुसलमानों पर हुए जुल्मोंका बदला लेने आये थे। दूसरा यह कि पैसा और जेवर वगैरह (और स्त्रियां भी !) सिखों और हिन्दुओंके पासही ज्यादा थीं। जो भी हो, इससे मुसलमानोंके प्रति हिन्दुओं और सिखोंके दुर्भाव एवं अविश्वासमें वृद्धि ही हुई और कई नेक दिल मुसलमानोंके स्थिति संभालनेके प्रयत्न भी बेकार सिद्ध हुए। यह देखकर कि हम हिन्दुस्थानसे आये हैं और हिन्दू हैं (यद्यपि हमने इस तरहसे न कभी सोचा और न किसीसे कुछ कहा ही), कई हिन्दुओंने हमसे कहा—"आपने यहां कुछ देखा सुना ? इन मुसलमानोंका कोई भरोसा नहीं। ये फिर हमपर राज करनेके स्वप्न देख रहे हैं।" हमारे यह पूछनेपर कि कैसे, हमसे कहा गया—"मुसलमान मुसलमान सब एक सलतनतमें रहना चाहते हैं। ये सिर्फ पाकिस्तानमें शामिल ही नहीं होना चाहते बल्कि इनका खयाल है कि बहुसंख्यक होनेके कारण काश्मीर इन्हें मिलना चाहिये और उसपर इन्हींका शासन होना चाहिये। हम लोगोंकी अब यहां खैर नहीं।" हमारे मुंहसे यही निकला—'अगर वाकई आपकी यहां खैर नहीं और भाग जाना ही आपका एकमात्र कर्त्तव्य है, तब तो भारत-सरकार शायद बेवकूफ है कि काश्मीरको बचानेके लिये ४ लाख रुपये रोज खर्च कर रही है।"

हमें ताज्जुब इस बातपर हुआ कि जो सिख और हिन्दू राज्यकी बड़ी बड़ी नौकरियां हथियाये बैठे हैं और जिन्होंने बहुसंख्यक मुसलमानोंको उनके न्याय अधिकार दिये जानेके बदलेमें उनपर होनेवाली जुल्म ज्यादतियोंका इसलिये समर्थन किया है कि वे विधर्मियोंके साथ हुए हैं, वे ही आज मुसलमानोंकी शिकायतें करते हैं। काश्मीरके महाराजाने वहांकी गरीबीको दूर करने या जनताको नागरिक अधिकार देना तो दूर रहा, उल्टे उसपर नये नये कर लगाये और उन्हें फौजें भेजकर वसूल करवाया ! न मालूम कितने तरहकी बेगारें आज भी बाकायदा ली जाती हैं। कई जगह (उदाहरणार्थ पुन्छके एक गांवमें) तो कहते हैं कि किसी एक व्यक्ति द्वारा कर देनेकी असमर्थता प्रकट की जानेपर डोगरा-फौजने समूचा गांव ही फूंक दिया। ऐसे गांवके मुसलमानोंने यदि कबाइलियोंका साथ दिया या उनके साथ मिलकर हिन्दुओं और सिखोंको लूटा, तो इसमें किसका दोष है ? आखिर मुसलमान भी इन्सान हैं और उन्होंने भी एक अर्से तक काश्मीरपर राज किया है। अगर वे डोगराशाहीकी जुल्म ज्यादतियोंसे नजात पानेका सोचें, तो उसमें अस्वाभाविक क्या है ?

भारतमें जैसी राजनीति मुस्लिम लीगकी रही है, वैसी ही काश्मीरमें अधिकांश हिन्दुओं और सिखोंकी भी रही है। जिस प्रकार भारतमें स्वाधीनताके लिये लड़नेवालोंमें अधिकांश हिन्दू कांग्रेसी ही थे और लीगी उनका विरोध करनेके पुरस्कार स्वरूप सरकारसे कुछ राजनीतिक टुकड़े पा जाते थे, उसी प्रकार काश्मीरमें भी नागरिक अधिकारों एवं जिम्मेदार हुकूमतकी मांग अधिकांश मुसलमानोंने ही की (क्योंकि डोगराशाहीके अभिशापका अधिकांशमें उन्हींको शिकार होना पड़ा है) और हिन्दू तथा सिख (जो अपनी आबादीके अनुपातसे कहीं अधिक नौकरियां हथियाये बैठे हैं) बराबर राजके साथ ही रहे। उन्हें स्वस्थ राजनीतिके अभावमें अपने अधिकारों, सुख, शान्ति और नौकरियोंके लिये किसी संगठित जन-मोर्चेकी बजाय महाराजाकी कृपापर ही अधिक भरोसा था। हमसे कई मुसलमानोंने यह शिकायत की कि यहांके हिन्दू और सिख इसी तरजीहके कारण कभी किसी राजनीतिक तहरीकमें काफी संख्यामें शरीक नहीं हुए। इससे मुसलमानोंका उनके प्रति रोष होना स्वाभाविक ही है। पर जहां-जहां कबाइलियोंका अधिकार हुआ और महाराजाका हाथ हिन्दुओं एवं सिखोंकी रक्षा नहीं कर सका, वहां वे स्थानीय मुसलमानोंकी दयापर ही छूट गये। कुछको इस स्थितिमें अपने जान-मालसे हाथ धोना पड़ा और कुछकी स्थानीय आबादीने अपने प्राणोंको जोखिममें डालकर भी रक्षा की। ऐसे अनेक हिन्दू और सिख, जो कुछ तो मजबूरन और कुछ बादमें स्वेच्छासे मुसलमान हो गये हैं, अब वापस अपने धर्ममें आनेको तैयार नहीं। उन्हें भय है कि गैरमुस्लिम होकर वे अधिक दिन मुस्लिम-गांवोंमें सुरक्षापूर्वक नहीं रह सकेंगे।

काश्मीरके गांवोंकी लूटका वर्णन, जो बहुत कुछ पत्रोंमें आ चुका है, यहां असामयिक ही नहीं अरुचिकर सा भी प्रतीत होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जब कबाइलियोंने मुजफ्फराबादपर आक्रमण किया, तो उनका मुख्य उद्देश्य हिन्दुओं और सिखोंको ही लूटना-मारना था। इसीलिये उनका नारा था 'सरदारका सर और हिन्दूका जर !' हमारे सामने ऐसे दुखद उदाहरण आये, जहां (विशेष तौरपर मुजफ्फराबाद और बारामूलामें) कई स्थानीय मुसलमानोंने लीगी गुर्गोंके बहकावेमें आकर कबाइलियोंका साथ दिया। अनेक स्थानोंमें लूटमें भी वे शामिल थे। लीगके हिमायती जिस डोगरा

शाहीसे मुसलमानोंको उद्धार करनेका दम भरते हैं, उसी डोगराशाहीके टुकड़ोंपर पलनेवाले अनेक लीगी अधिकारियोंने गैरमुस्लिम जनताको लूटने-मारनेकी पाकिस्तानी योजनाकी रूप रेखा बनानेमें मदद की है और हमला होनेपर न सिर्फ स्वयं ही, बल्कि अपने अमलेके हाथ कबाइलियोंके साथ शिरकत भी की है। रेवेन्यू, जङ्गलात और पुलिस विभागोंके अनेक उच्च पदाधिकारियोंको इन जुरमोंमें गिरफ्तार किया गया है। अबतक उनपर कैसा मुकदमा चलाया जायगा या उन्हें क्या सजा दी जायगी इस सम्बन्धमें हमारे सुननेमें विशेष कुछ नहीं आया।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन मुसलमानोंकी संख्या अधिक नहीं है; पर इनके जुरमोंका गुरुत्व काफी बड़ा है। जिन ऊंचे और जिम्मेदार पदोंपर ये थे, उनके अधिकारोंका सर्वथा दुरुपयोग कर और जिस राज्यके टुकड़ोंपर ये चलते रहे हैं, उसकेप्रति नमकहरामी कर इन्होंने काश्मीरके लोगोंमें हिन्दू मुस्लिम विद्वेषका वह जहर भरा है, जिसके दुष्परिणामकी अभी केवल कल्पनाही की जा सकती है। इन्हींके जहरीले प्रचारका फल नेशनल-कान्फ्रेंसको आज भोगना पड़रहा है। जिन स्थानोंको भारतीय सेनाने कबालियोंको भगाकर वापस अपने अधिकारमें ले लिया है, वहां लीगके अनेक प्रचारक हिन्दुओंके वापस बसाये जानेमें तरह-तरहकी बाधाएं खड़ी कर रहे हैं। एक तो लूट-मारके कारण अपने घर-गांव छोड़कर भागे हुए हिन्दू और सिख स्वयं अपने पुराने स्थानोंमें जाकर फिर आबाद होनेको विशेष उत्सुक एवं राजी नहीं; फिर कतिपय मुसलमानोंके रुखसे तो वे और भी अनिच्छा दिखाने लगे हैं। कई जगह स्थानीय मुसलमानोंने अपने हिन्दू और सिख पड़ोसियोंका जो माल लूटा है, वह वापस करनेको वे तैयार नहीं। यदि नेशनल कांफ्रेंस, जो आजकल काश्मीरका अन्तरिम शासन संभाले हुए है, उन्हें लूटका माल लौटानेके लिए मजबूर या राजी करती है,तो लीगकी तरफसे कहा जाता है कि महाराजाके हिन्दू नौकर मुसलमानोंपर असाधारण जुल्म ज्यादतियां कर रहे हैं जिससे मुसलमानोंको काश्मीर छोड़नेपर मजबूर होना पड़ रहा है। पर सचाई यह है कि इन बदमाश और लुटेरे मुसलमानोंके साथ भी नेशनल कांफ्रेंस बड़ी नरमी और समझदारीसे पेश आरही है। हमने जब उसके कुछ मंत्रियोंसे इस रुखके पुनर्आवास व्यवस्थामें बाधक होनेकी बात कही, तो वे बोले कि निःसंदेह इससे पुनर्आवासका कार्य उस गतिसे तो नहीं हो पा रहा जिससे कि होना चाहिये। पर हम मुसलमानोंके साथ इस लिये भी जान बूझकर सख्ती नहीं कर रहे कि कल यदि जनमत-संग्रह हो, तो उन्हें अपने सहधर्मियोंको बरगलाने का यह नया बहाना न मिले! इससे एक ओर जहां हिन्दू और सिख नेशनल कांफ्रेंसकी नीतिसे जरा असन्तुष्ट हैं वहां मुसलमानोंपर कोई खास असर पड़ा नहीं देखा गया। उनकी राजनीतिके पीछे एक शरारत भरी स्वार्थ-नीति है जिसका सचाई, ईमानदारी और भलमंसाहतसे कोई वास्ता नहीं। नेशनल कांफ्रेंसको जिसे एक ओर महाराजाकी संकीर्णताके कारण अभी पूरे शासनाधिकार भी प्राप्त नहीं हैं और दूसरी ओर जनमत संग्रहमें मुसलमानोंके विद्रोहके डरसे उनके साथ जायज सख्ती भी नहीं की जा रही, जिससे हिन्दुओं एवं सिखोंमें असन्तोष ही नहीं, कांफ्रेंसके मुस्लिम-पक्षीय होने तककी बात कही जा रही है। इस समय जिन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ रहा है उनकी बाहरके लोग ठीक ठीक कल्पना भी नहीं कर सकते। आज उसके सामने दो विकल्प हैं। मुसलमानोंपर सख्ती करहिन्दुओं और सिखोंका लूटा हुआ माल वापस दिलाना या काश्मीरको पाकिस्तानमें जानेसे बचाना। पर इसका यह मतलब नहीं कि हिन्दुओं और सिखोंका लूटा हुआ माल मुसलमानोंसे वापस दिलानेकी कांफ्रेंसने कोई चेष्टा ही न की हो। यह माल कबाइलियों द्वारा लूटे गये मालका एक बहुत छोटासा अंश ही था। लोगोंको समझा बुझाकर इसे वापस दिलानेके लिये कांफ्रेंसने स्तुत्य प्रयत्न किया है और इसमें वह सफल भी हुई है। इसी प्रयत्नके फलस्वरूप अब कई स्थानोंपर मुसलमान स्वयं आगे आकर लूटका यह माल लौटा रहे हैं।

काश्मीरसे लौटनेके बाद एक प्रश्न जो अकसर हमसे पूछा गया और आज भी पूछा जाता है, वह यह है कि काश्मीरमें यदि जनमत संग्रह हो, तो वह भारतके साथ रहेगा या पाकिस्तानके साथ ? जो कुछ हमने काश्मीरमें देखा-सुना और लोगोंसे पूछ पाछकी उसके आधारपर हमें तो अधिकांश लोग नेशनल कांफ्रेंस और शेख अब्दुल्लाके पक्षमें ही नजर आये। जैसा कि हम पहले कह आये हैं अर्थनीतिक दृष्टिसे काश्मीरकी अस्तित्व-रक्षाके लिये हिन्दुस्तानके साथ उसका सम्बन्ध रहना जरूरी सा हो जाता है। यह मसला साम्प्रदायिक कदापि नहीं है। पर एक खतरा नजर दिखाई देता है। वह यह कि लीगके गुप्त और प्रकट रूपसे होने वाले जिस प्रचार कार्यका हमें काश्मीरमें परिचय मिला और जिसका उत्तर-पश्चिम सीमा-प्रान्तमें प्रयोग किये जानेकी बात हमने सुनी है, उससे हमारी यह आशंका है कि असत्य और अर्द्ध सत्य द्वारा लीग वाले काश्मीरके भोले भाले लोगोंको धोखा शायद दे सकें। उदाहरणके तौरपर यदि उत्तर पश्चिम सीमान्तकी तरह काश्मीरमें भी वे मतदाताके हाथपर कुरान रखकर उससे कहें कि यह कुरान और नबीको रजील करने वाले काफिरोंके साथ रहना चाहते हैंया अपने हम मजहब पाकिस्तानियोंके साथ; तो ताज्जुब नहीं कि अज्ञ और धर्मभीरु ग्रामीण मुसलमान इस प्रोपेगंडाकी शरारतके शिकार हो जाये साथही हमें यह भी विश्वास है कि नेशनल कांफ्रेंस इस शरारतसे वहांके मुसलमानोंको बचानेकी चेष्टा अवश्य करेगी। इसके लिये कांफ्रेंसके हाथ मजबूत किये जाने चाहिये। और वह तभी संभव है जबकि शासनकी पूरी जिम्मेदारी और पूरे अधिकार कांफ्रेंसको सौंप दिये जायं। आजतो महाराजा और भारत सरकारका मतभेद तथा आशंकाएं इसमें बाधक सिद्ध हो रही हैं। पता नहीं,इनसे वे कब मुक्त होंगे

अधिकारियोंमें ही हो, ऐसी बात नहीं है, काश्मीरके अनेक राजाओंके आचरणोंमें भी इसकी झलक दिखाई देती है। इस स्थितिमें यदि मुस्लिम-जनतामें जिसकी आबादी ६७ से ९४६ प्रतिशत तक है डोगरा-शासन और उसका बाहन बने हिन्दुओं और सिखोंके प्रति क्षोभ एवं असन्तोष हो, तो आश्चर्यकी क्या बात है ?

तथा कथित कबाइलियोंके आक्रमणोंके दौरानमें हुई लूट-मार, बलात्कार और अपहरणके जो विवरण हमारे सामने आये, उनसे यह स्पष्ट है कि इनके शिकार सिख और हिन्दू ही ज्यादा हुए हैं। पर इसका कारण सर्वथा इतिहासमें खोजना भी भूल होगी। हमें इसके दो कारण बताये गये, प्रथम तो यह कि आक्रमणकारी पूर्वी पंजाब, दिल्ली और जम्मूमें सिखों तथा हिन्दुओं द्वारा मुसलमानों पर हुए जुल्मोंका बदला लेने आये थे। दूसरा यह कि पैसा और जेवर वगैरह (और स्त्रियां भी !) सिखों और हिन्दुओंके पासही ज्यादा थीं। जो भी हो, इससे मुसलमानोंके प्रति हिन्दुओं और सिखोंके दुर्भाव एवं अविश्वासमें वृद्धि ही हुई और कई नेक दिल मुसलमानोंके स्थिति संभालनेके प्रयत्न भी बेकार सिद्ध हुए। यह देखकर कि हम हिन्दुस्थानसे आये हैं और हिन्दू हैं (यद्यपि हमने इस तरहसे न कभी सोचा और न किसीसे कुछ कहा ही), कई हिन्दुओंने हमसे कहा—"आपने यहां कुछ देखा सुना ? इन मुसलमानोंका कोई भरोसा नहीं। ये फिर हमपर राज करनेके स्वप्न देख रहे हैं।" हमारे यह पूछनेपर कि कैसे, हमसे कहा गया—"मुसलमान मुसलमान सब एक सल्तनतमें रहना चाहते हैं। ये सिर्फ पाकिस्तानमें शामिल ही नहीं होना चाहते बल्कि इनका खयाल है कि बहुसंख्यक होनेके कारण काश्मीर इन्हें मिलना चाहिये और उसपर इन्हींका शासन होना चाहिये। हम लोगोंकी अब यहां खैर नहीं।" हमारे मुंहसे यही निकला—'अगर वाकई आपकी यहां खैर नहीं और भाग जाना ही आपका एकमात्र कर्त्तव्य है, तब तो भारत-सरकार शायद बेवकूफ है कि काश्मीरको बचानेके लिये ४ लाख रुपये रोज खर्च कर रही है।"

हमें ताज्जुब इस बातपर हुआ कि जो सिख और हिन्दू राज्यकी बड़ी बड़ी नौकरियां हथियाये बैठे हैं और जिन्होंने बहुसंख्यक मुसलमानोंको उनके न्याय अधिकार दिये जानेके बदलेमें उनपर होनेवाली जुल्म ज्यादतियोंका इसलिये समर्थन किया है कि वे विधर्मियोंके साथ हुए हैं, वे ही आज मुसलमानोंकी शिकायतें करते हैं। काश्मीरके महाराजाने वहांकी गरीबीको दूर करने या जनताको नागरिक अधिकार देना तो दूर रहा, उल्टे उसपर नये नये कर लगाये और उन्हें फौजें भेजकर वसूल करवाया ! न मालूम कितने तरहकी बेगारें आज भी बाकायदा ली जाती हैं। कई जगह (उदाहरणार्थ पुन्छके एक गांवमें) तो कहते हैं कि किसी एक व्यक्ति द्वारा कर देनेकी असमर्थता प्रकट की जानेपर डोगरा-फौजने समूचा गांव ही फूंक दिया। ऐसे गांवके मुसलमानोंने यदि कबाइलियोंका साथ दिया या उनके साथ मिलकर हिन्दुओं और सिखोंको लूटा, तो इसमें किसका दोष है ? आखिर मुसलमान भी इन्सान हैं और उन्होंने भी एक अर्से तक काश्मीरपर राज किया है। अगर वे डोगराशाहीकी जुल्म ज्यादतियोंसे नजात पानेका सोचें, तो उसमें अस्वाभाविक क्या है ?

भारतमें जैसी राजनीति मुस्लिम लीगकी रही है, वैसी ही काश्मीरमें अधिकांश हिन्दुओं और सिखोंकी भी रही है। जिस प्रकार भारतमें स्वाधीनताके लिये लड़नेवालोंमें अधिकांश हिन्दू कांग्रेसी ही थे और लीगी उनका विरोध करनेके पुरस्कार स्वरूप सरकारसे कुछ राजनीतिक टुकड़े पा जाते थे, उसी प्रकार काश्मीरमें भी नागरिक अधिकारों एवं जिम्मेदार हुकूमतकी मांग अधिकांश मुसलमानोंने ही की (क्योंकि डोगराशाहीके अभिशापका अधिकांशमें उन्हींको शिकार होना पड़ा है) और हिन्दू तथा सिख (जो अपनी आबादीके अनुपातसे कहीं अधिक नौकरियां हथियाये बैठे हैं) बराबर राजके साथ ही रहे। उन्हें स्वस्थ राजनीतिके अभावमें अपने अधिकारों, सुख, शान्ति और नौकरियोंके लिये किसी संगठित जन-मोर्चेकी बजाय महाराजाकी कृपापर ही अधिक भरोसा था। हमसे कई मुसलमानोंने यह शिकायत की कि यहांके हिन्दू और सिख इसी तरजीहके कारण कभी किसी राजनीतिक तहरीकमें काफी संख्यामें शरीक नहीं हुए। इससे मुसलमानोंका उनके प्रति रोष होना स्वाभाविक ही है। पर जहां-जहां कबाइलियोंका अधिकार हुआ और महाराजाका हाथ हिन्दुओं एवं सिखोंकी रक्षा नहीं कर सका, वहां वे स्थानीय मुसलमानोंकी दयापर ही छूट गये। कुछको इस स्थितिमें अपने जान-मालसे हाथ धोना पड़ा और कुछकी स्थानीय आबादीने अपने प्राणोंको जोखिममें डालकर भी रक्षा की। ऐसे अनेक हिन्दू और सिख, जो कुछ तो मजबूरन और कुछ बादमें स्वेच्छासे मुसलमान हो गये हैं, अब वापस अपने धर्ममें आनेको तैयार नहीं। उन्हें भय है कि गैरमुस्लिम होकर वे अधिक दिन मुस्लिम-गांवोंमें सुरक्षापूर्वक नहीं रह सकेंगे।

काश्मीरके गांवोंकी लूटका वर्णन, जो बहुत कुछ पत्रोंमें आ चुका है, यहां असामयिक ही नहीं अरुचिकर सा भी प्रतीत होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जब कबाइलियोंने मुजफ्फराबादपर आक्रमण किया, तो उनका मुख्य उद्देश्य हिन्दुओं और सिखोंको ही लूटना-मारना था। इसीलिये उनका नारा था 'सरदारका सर और हिन्दूका जर !' हमारे सामने ऐसे दुखद उदाहरण आये, जहां (विशेष तौरपर मुजफ्फराबाद और बारामूलामें) कई स्थानीय मुसलमानोंने लीगी गुर्गोंके बहकावेमें आकर कबाइलियोंका साथ दिया। अनेक स्थानोंमें लूटमें भी वे शामिल थे। लीगके हिमायती जिस डोगरा

शाहीसे मुसलमानोंको उद्धार करनेका दम भरते हैं, उसी डोगराशाहीके टुकड़ोंपर पलनेवाले अनेक लीगी अधिकारियोंने गैरमुस्लिम जनताको लूटने-मारनेकी पाकिस्तानी योजनाकी रूप रेखा बनानेमें मदद की है और हमला होनेपर न सिर्फ स्वयं ही, बल्कि अपने अमलेके हाथ कबाइलियों के साथ शिरकत भी की है। रेवेन्यू, जङ्गलात और पुलिस विभागोंके अनेक उच्च पदाधिकारियोंको इन जुरमोंमें गिरफ्तार किया गया है। अबतक उनपर कैसा मुकदमा चलाया जायगा या उन्हें क्या सजा दी जायगी इस सम्बन्धमें हमारे सुननेमें विशेष कुछ नहीं आया।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन मुसलमानोंकी संख्या अधिक नहीं है; पर इनके जुरमोंका गुरुत्व काफी बड़ा है। जिन ऊंचे और जिम्मेदार पदोंपर ये थे, उनके अधिकारोंका सर्वथा दुरुपयोग कर और जिस राज्यके टुकड़ोंपर ये चलते रहे हैं, उसकेप्रति नमकहरामी कर इन्होंने काश्मीरके लोगोंमें हिन्दू मुस्लिम विद्वेषका वह जहर भरा है, जिसके दुष्परिणामकी अभी केवल कल्पनाही की जा सकती है। इन्हींके जहरीले प्रचारका फल नेशनल-कान्फ्रेंसको आज भोगना पड़रहा है। जिन स्थानोंको भारतीय सेनाने कबालियोंको भगाकर वापस अपने अधिकारमें ले लिया है, वहां लीगके अनेक प्रचारक हिन्दुओंके वापस बसाये जानेमें तरह-तरहकी बाधाएं खड़ी कर रहे हैं। एक तो लूट-मारके कारण अपने घर-गांव छोड़कर भागे हुए हिन्दू और सिख स्वयं अपने पुराने स्थानोंमें जाकर फिर आबाद होनेको विशेष उत्सुक एवं राजी नहीं; फिर कतिपय मुसलमानोंके रुखसे तो वे और भी अनिच्छा दिखाने लगे हैं। कई जगह स्थानीय मुसलमानोंने अपने हिन्दू और सिख पड़ोसियोंका जो माल लूटा है, वह वापस करनेको वे तैयार नहीं। यदि नेशनल कांफ्रेंस, जो आजकल काश्मीरका अन्तरिम शासन संभाले हुए है, उन्हें लूटका माल लौटानेके लिए मजबूर या राजी करती है,तो लीगकी तरफसे कहा जाता है कि महाराजाके हिन्दू नौकर मुसलमानोंपर असाधारण जुल्म ज्यादतियां कर रहे हैं जिससे मुसलमानोंको काश्मीर छोड़नेपर मजबूर होना पड़ रहा है। पर सचाई यह है कि इन बदमाश और लुटेरे मुसलमानोंके साथ भी नेशनल कांफ्रेंस बड़ी नरमी और समझदारीसे पेश आरही है। हमने जब उसके कुछ मंत्रियोंसे इस रुखके पुनर्आवास व्यवस्थामें बाधक होनेकी बात कही, तो वे बोले कि निःसंदेह इससे पुनर्आवासका कार्य उस गतिसे तो नहीं हो पा रहा जिससे कि होना चाहिये। पर हम मुसलमानोंके साथ इस लिये भी जान बूझकर सख्ती नहीं कर रहे कि कल यदि जनमत-संग्रह हो, तो उन्हें अपने सहधर्मियोंको बरगलाने का यह नया बहाना न मिले! इससे एक ओर जहां हिन्दू और सिख नेशनल कांफ्रेंसकी नीतिसे जरा असन्तुष्ट हैं वहां मुसलमानोंपर कोई खास असर पड़ा नहीं देखा गया। उनकी राजनीतिके पीछे एक शरारत भरी स्वार्थ-नीति है जिसका सचाई, ईमानदारी और भलमंसाहतसे कोई वास्ता नहीं। नेशनल कांफ्रेंसको जिसे एक ओर महाराजाकी संकीर्णताके कारण अभी पूरे शासनाधिकार भी प्राप्त नहीं हैं और दूसरी ओर जनमत संग्रहमें मुसलमानोंके विद्रोहके डरसे उनके साथ जायज सख्ती भी नहीं की जा रही, जिससे हिन्दुओं एवं सिखोंमें असन्तोष ही नहीं, कांफ्रेंसके मुस्लिम-पक्षीय होने तककी बात कही जा रही है। इस समय जिन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ रहा है उनकी बाहरके लोग ठीक ठीक कल्पना भी नहीं कर सकते। आज उसके सामने दो विकल्प हैं। मुसलमानोंपर सख्ती करहिन्दुओं और सिखोंका लूटा हुआ माल वापस दिलाना या काश्मीरको पाकिस्तानमें जानेसे बचाना। पर इसका यह मतलब नहीं कि हिन्दुओं और सिखोंका लूटा हुआ माल मुसलमानोंसे वापस दिलानेकी कांफ्रेंसने कोई चेष्टा ही न की हो। यह माल कबाइलियों द्वारा लूटे गये मालका एक बहुत छोटासा अंश ही था। लोगोंको समझा बुझाकर इसे वापस दिलानेके लिये कांफ्रेंसने स्तुत्य प्रयत्न किया है और इसमें वह सफल भी हुई है। इसी प्रयत्नके फलस्वरूप अब कई स्थानोंपर मुसलमान स्वयं आगे आकर लूटका यह माल लौटा रहे हैं।

काश्मीरसे लौटनेके बाद एक प्रश्न जो अकसर हमसे पूछा गया और आज भी पूछा जाता है, वह यह है कि काश्मीरमें यदि जनमत संग्रह हो, तो वह भारतके साथ रहेगा या पाकिस्तानके साथ ? जो कुछ हमने काश्मीरमें देखा-सुना और लोगोंसे पूछ पाछकी उसके आधारपर हमें तो अधिकांश लोग नेशनल कांफ्रेंस और शेख अब्दुल्लाके पक्षमें ही नजर आये। जैसा कि हम पहले कह आये हैं अर्थनीतिक दृष्टिसे काश्मीरकी अस्तित्व-रक्षाके लिये हिन्दुस्तानके साथ उसका सम्बन्ध रहना जरूरी सा हो जाता है। यह मसला साम्प्रदायिक कदापि नहीं है। पर एक खतरा नजर दिखाई देता है। वह यह कि लीगके गुप्त और प्रकट रूपसे होने वाले जिस प्रचार कार्यका हमें काश्मीरमें परिचय मिला और जिसका उत्तर-पश्चिम सीमा-प्रान्तमें प्रयोग किये जानेकी बात हमने सुनी है, उससे हमारी यह आशंका है कि असत्य और अर्द्धसत्य द्वारा लीग वाले काश्मीरके भोले भाले लोगोंको धोखा शायद दे सकें। उदाहरणके तौरपर यदि उत्तर पश्चिम सीमान्तकी तरह काश्मीरमें भी वे मतदाताके हाथपर कुरान रखकर उससे कहें कि यह कुरान और नबीको रजील करने वाले काफिरोंके साथ रहना चाहते हैंया अपने हम मजहब पाकिस्तानियोंके साथ; तो ताज्जुब नहीं कि अज्ञ और धर्मभीरु ग्रामीण मुसलमान इस प्रोपेगंडाकी शरारतके शिकार हो जाये साथही हमें यह भी विश्वास है कि नेशनल कांफ्रेंस इस शरारतसे वहांके मुसलमानोंको बचानेकी चेष्टा अवश्य करेगी। इसके लिये कांफ्रेंसके हाथ मजबूत किये जाने चाहिये। और वह तभी संभव है जबकि शासनकी पूरी जिम्मेदारी और पूरे अधिकार कांफ्रेंसको सौंप दिये जायं। आजतो महाराजा और भारत सरकारका मतभेद तथा आशंकाएं इसमें बाधक सिद्ध हो रही हैं। पता नहीं,इनसे वे कब मुक्त होंगे

कल्पना और आचरण

प्रो. लालजी राम शुक्ल एम. ए. बी.टी.

कल्पनाका आचरणसे घनिष्ट सम्बन्ध है। जिस प्रकारकी कल्पना मनुष्य अपने मनमें बार बार लाता है उसका आचरण उसी प्रकारका हो जाता है। कल्पना बौद्धिक बिचारसे भिन्न बस्तु है बौद्धिक बिचार वाह्य जगत और वास्तविकता से सम्बन्ध रखता है, कम्पना अन्तर जगतसे सम्बन्ध रखती है। उसका उद्गम स्थान मनुष्य का भीतरी मन है। जिस प्रकार बुद्धि के द्वारा मनुष्य वास्तविक जगत के उपयुक्त अपना आचरण बनाने की चेष्टा करता है, इसी प्रकार कल्पना के द्वारा मनुष्य अपने आन्तरिक जीवन से समता स्थापित करता है। कल्पना का प्रधान कार्य अचेतन मन की भावनाओं को चेतना की सतह पर लाना है। पर यदि चेतना की सतह पर आई हुई कल्पनाओं का बुद्धि के द्वारा नियंत्रण न किया जाय तो वे आचरण में अवश्य प्रकाशित हो जावें।

अपनी कल्पना का सुधार करना अपने स्वभाव का सुधार करना है। कल्पना का सुधार कल्पना के दमन मात्र से नहीं होता। दमनसे कल्पना कभी कभी और भी प्रबल हो जाती है। जब कल्पना और इच्छा शक्ति में विरोध हो जाता है तो जितना ही अधिक कल्पनाको दबाया जाता है कल्पना उतनी ही अधिक प्रबल होती जाती है। कल्पना के दबानेसे प्रयत्न से इच्छा शक्ति इतनी निर्बल हो जाती है कि मनुष्य को अपने आप पर विश्वास नहीं रहता और वह जिधर कल्पना ले जाती है उसी ओर बह जाता है। मानसिक रोगकी अवस्थामें कल्पना प्रबल हो जाती है। और इच्छा शक्तिका उसपर नियंत्रण नहीं रहता।

कल्पना में परिवर्तन प्रति अभ्यासके द्वारा किया जा सकता है। कल्पनाओंका स्रोत मनुष्यके भाव हैं। ये भाव मनुष्यके अचेतन मनमें स्थित रहते हैं। भावोंमें परिवर्तन होनेसे कल्पनामें परिवर्तन हो जाता है। जिस व्यक्तिके प्रति हम शत्रुता का भाव रखते हैं उसके सम्बन्धमें अनेक प्रकारकी अभद्र कल्पनाएं हमारे मनमें आती हैं, और जिसके प्रति हमारा मैत्री भाव है उसके सम्बन्धमें कल्याणकारी कल्पनायें हमारे मनमें आती हैं। अपने शत्रुको हम बुरा ही अपनी कल्पनामें देखते हैं और अपने मित्र को भला देखते हैं। ये भाव सदा स्थानान्तरित होते रहते हैं। शत्रुके प्रति सोचे गये अभद्र विचार अपने ऊपर अथवा अपने मित्रके ऊपर आरोपित हो जाते हैं फिर हमारे मनमें अनायास बुरे विचार अर्थात् अपनेही अकल्याणके बिचार आने लगते हैं। हम अपने आपको इस प्रकार निकम्मा बना लेते हैं अथवा आत्म-विनाश कर लेतें।

शत्रु भावनाका बिनाश मैत्री भावना से होता है। जिस व्यक्तिके प्रति हमारा मैत्री भाव है उसके प्रति सदा शुभ कल्पनायें हमारे मनमें आती हैं और हम अनायास उसके प्रति कोई भलाईका काम करने लगते हैं। यदि हम किसी व्यक्तिके मनमें दूसरे व्यक्तिके प्रति शत्रु भावकी उत्तोजना करदें तो थोड़े ही दिनमें उसके आचरण में भी परिवर्तन हो जायगा। भावके बदल जाने पर कल्पना बदल जाती और जब कल्पना बदल जाती है तो आचरण भी बदल जाता है।

मनकी स्वस्थ अवस्थामें हमारी कल्पना हमारे नियंत्रणमें रहती है। हमारी कल्पनायें अभद्र न होकर कल्याणकारी होती हैं मनकी अस्वस्थ अवस्थामें मनकी स्थिति ठीक इसके प्रतिकूल होती है। कल्पनामें सुधार प्रति भावनासे जिस प्रकार होता है इसी तरह उसमें सुधार कल्पनकी शक्तिरचनात्मक कार्य में लगानेसे भी होता है। मनुष्यका मन जब निकम्मा होता है तो उसमें अनेक प्रकारके वितर्क अर्थात् पापकी कल्पनायें आती हैं। इसके प्रतिकार आनापान सति का अभ्यास बताया है। अनापान सति वितर्कों का निरोध होता है पर एस प्रकारके निरोधसे उस मानसिक शक्तिका सदुपयोग नहीं होता जो उन वितर्कोंका कारण है। सम्यग सकल्पसे इस मानसिक शक्तिका शोध होता है। इसके अतिरिक्त सम्यग कायाम और मैत्री भावनाका अभ्यास भी बितर्कोंकी शक्तिका शोध करता है।

मनुष्यको अपनी कल्पनाओंके विषय ने सदा अचेत रहना चाहिगे। अपनी कल्पनाओंके प्रति जागरुक रहना सम्यग स्मृति कहलाता है। अपने मनमें जो व्यक्ति भोग विलासकी कल्पनाएं लाता है, वह भोग विलास करने लगता है। इसी प्रकार जो किसी शत्रुसे बदला लेनेकी कल्पना अपने मनमें बार बार लाता है वह शत्रुसे बदला लेनेके काममें लग जाता है। जब कल्पना प्रबल हो जाती है तो वह इच्छा शक्तिके नियंत्रणके बाहर हो जाती है। अतएव आत्म—कल्याण चाहने वाला व्यक्ति कल्पना पर ऐसा नियंत्रण रखता में जिससे वह किसी शुभ काममें ही अपने आपको लगावे।

मनुष्यके मनके दो प्रबल भाव काम और क्रोध हैं। यही हमारी अधिक कल्पनाओंका संचालन करते है। ये राग और द्वेषके परिणाम हैं। काम भावनासे उत्तेजित कल्पनामें काम विषयके पदार्थ को सुन्दर रूपमें चित्रित करती हैं। मनुष्य पहले कई बार कल्पनामें विषय भोग करता है पीछे वह वास्तविक विषय भोग मे लगता है। यदि कोई व्यक्ति कल्पनामें विषय भोग को वीभत्स रूपमें चित्रित करे तो उसे बिषय भोग करनेकी इच्छा ही न होगी। मनुष्यकी काम वासनाको मारनेके लिये भगवान बुद्धने अशुभ भावनाका अभ्यास बताया है। अशुभ भावना कामके द्वारा उत्तेजित कल्पनाओंको शान्तकर देती है। इससे काम क्रीड़ा करने की इच्छा मर जाती है शरीर की अमंगलताका चिन्तन उसके प्रति हमारे मनमें विकर्षण उत्पन्न करता है। अशुभ भावनाके अभ्याससे सुन्दर पदार्थ असुन्दर दिखाई देने लगता

है। सुन्दरताके प्रति ही मनुष्यके मनमें आकर्षण होता है, असुन्दर पदार्थके प्रति आकर्षण नहीं होता। काम भावसे विमुक्त होनेके लिये शरीर की वीभत्सता पर बार-बार चिन्तन करना और अपनी कल्पनामें उसके असन्दर रूपको देखना आवश्यक है।

जिस प्रकार काम वासनाका प्रतिकार अशुभ भावनासे होता है, क्रोधका प्रतिकार मैत्री भावनासे होता है। अपने शत्रुके सदगुणोंपर विचार करना, उसके कल्याण की इच्छा करना, मैत्री भावनाका अभ्यास है। शत्रुका विनाश चाहना स्वाभाविक है, उसके कल्याणकी इच्छा करना मानव स्वभावके प्रतिकूल है। पर मनुष्यमें अपने स्वभावपर विजय प्राप्त करनेकी भी योग्यता है। मनुष्यका स्वभाव अभ्यासपर निर्भर करता है। मनुष्य अभ्यासद्वारा अपने आपमें चाहे जैसा परिवर्तन कर सकता है। यदि वह चाहे तो सभी संसारको मित्र रूपमें देख सकता है और उनके प्रति मित्र जैसा ही कार्य कर सकताहै। यही मानव जीवनका परम पुरुषार्थ है।

जब मनुष्य पहले पहल किसी विनाश कारी कल्पनाको अपने मनमें लाता है तो उसे आनन्द आता है। यह विनाश कारी कल्पना किसी दूसरे व्यक्तिके प्रति होती है। जब मनुष्य इस कल्पनामें अभ्यस्त हो जाती है तो वह आत्म विनाशका कारण बन जाता है। जिस तरह अमैत्री भावना का अभ्यास करने वाला व्यक्ति दूसरेका बिनाश चाहता है और अपने मनमें अनेक अभद्र कल्पनाये उसके प्रति लाता है वैसे ही ऐसा व्यक्ति अपने प्रति भी अनेक अभद्र कल्पनायें मनमें ले आता है। ये कल्पनायें अब उसके रोकने से नहीं रुकतीं उसकी इच्छाके प्रतिकूल भी वे मनमें आती रहती हैं। कभी-कभी ऐसा व्यक्ति आत्म हत्याकी कल्पना अपने मनमें लाता है। जब ये कल्पनायें प्रबल हो जाती हैं तो वह आत्महत्याभी कर बैठता है। इसप्रकार कल्पनाओंका अनियंत्रण आत्म बिनाश का कारण हो जाता है प्रत्येक अवांछनीय भावनाका निराकरण प्रति भावनासे होता है। जब हमारे मनमें अमैत्री भावनाके अधिक विचार करने लगें तो हमें मैत्री भावनाका अभ्यास करना उचित है। आत्म विनाशके विचारों अथवा कल्पनाओंका निवारण भी मैत्री भावनाके अभ्याससे हो जाता है। यह मैत्री भावनाका अभ्यास दो प्रकारसे होता है, पहले सभी लोगों के प्रति उदारताके भाव मनमें लाना और आपत्तियोंमें पड़े लोगोंकी सहायता करना और दूसरे अपने लिये सभी घटनाओंको शुभ मानना। सभीका कल्याण हो —इस विचार का अभ्यास करना दूसरोंके प्रति मैत्री भावनाका अभ्यास है और जो कुछ भी होता है हमारे कल्याणके लिए होता है इस विचारका आभास करना आत्म-मैत्री का अभ्यास है। जब मनुष्य इस प्रकारके विचारोंमें स्थिर मन हो जाता है ना उसके मनमें अभद्र कल्पनायें नहीं आती हैं आत्मविनाश नहीं करता।

हमारी कल्पनायें किसी भी व्यक्तिके मनमें शत्रुता अथवा मित्रताके भावों को उत्तीजित करती हैं। यदि किसी व्यक्तिका चित्र बनाकर हम उसके विषयमें सदा यह सोचें कि वह भला मनुष्य है तो उसके स्वभावमें अज्ञात रूपसे मौलिक परिवर्तन हो जावेगा, वह नित्य प्रति भला होते जावेगा। इसके प्रतिकूल यदि हम किसी व्यक्तिके विषयमें नित्य प्रति सोचते रहे कि वह बहुत ही बुरा व्यक्ति है तो धीरे धीरे और भी बुरा होते जाता है। हमारे विचार उसके अचेतन मनको प्रभावित करते हैं और जैसा हम बसे हम अपनी कल्पनामें चित्रित करते हैं वह वैसाही हो जाता है इस प्रकार हम अपसी कल्पना से दूसरे लोगोंके विचार और आचरणको भी परिवर्तित कर देते हैं। फिर जैसे विचार हम दूसरे लोगोंके प्रति भेजते हैं, वे भी वैसे ही विचार हमारे प्रति भेजते हैं। यदि हम दूसरे लोगोंके प्रति भले विचार भेजते हैं तो दूसरे लोग भी हमारे लिये कल्याणकारी विचार भेजते हैं। ये विचार हमारे मनमें शुभ भावनायें और कल्पनायें उत्पन्न करते हैं। और इसके कारण हमारे आचरणमें सुधार होता है। इसी प्रकार विनाशकारी विचार दूसरे के मनमें प्रभावित करनेके पश्चात् अपने ही मनको प्रभावित करने लगते हैं। वे वैसे ही विचार दूसरे लोगोंके मनमें हमारे प्रति उत्तेजित करते हैं जैसे हम उनके विषयमें लाते हैं। जैसे हम अपने मनमें उनकी बुरी कल्पना करते हैं वे भी वैसी ही बुरी कल्पना हमारी अपने मनमें लाते हैं। इस प्रकार दोनोंका पतन होता है।

अपनी कल्पनाका सुधार करना अपने जीवनका नव निर्माण करना है। जिस मनुष्यको सहजमें भली कल्पनायें आती हैं वह वास्तविक रूपसे सुखी है। कल्पनाके अनुसार न केवल मनुष्यका आचरण परिवर्तित हो जाता है वरन् उसकी मुखाकृति और स्वास्थ्य भी परिवर्तित हो जाता है। अतएव कल्पनाका सुधारना भारी महत्वक कार्य है।

१६॥) में ज्वेल वाली रिष्ट वाच

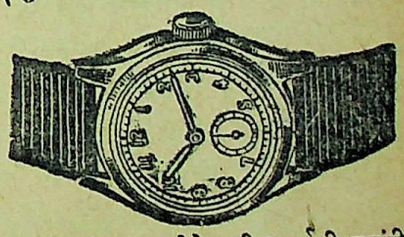

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी
गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)

रक्तेंगुलर कभी या टोनो शेप

क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।

एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

कलाकार कामिनी

ले०—श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी

सारसकी जोड़ीकी भांति वे दोनों साथ-साथ रहते। बाजारमें, सैर-सपाटेमें होटलमें—गरज यह कि जहां देखो दोनों मौजूद। किसी राष्ट्रीय नेताका भाषण हो रहा हो, तो दोनों साथ साथ ही पहुंचते। कहीं कोई कवि सम्मेलन अथवा साहित्य-गोष्ठी हो, तो दोनों उपस्थित। तरुणाईके ज्वार पर दोनों बहे जा रहे थे। एककी पोशाक थी ढीला ढाला पायजामा और ढीला-ढाला ही कुरता। दूसरेकी पोशाक थी दूध जैसी श्वेत साड़ी तथा गहरे नीले, लाल या बादामी रङ्गका ब्लाऊज। सिर दोनों-के खुले रहते। बाल भी दोनोंके काफी लम्बे सजे-संवारेसे लटकते रहते और तरुणीकी गूंथी वेणी उसकी पीठ पर नागिनकी तरह कमर तक लहराती रहती। एक था कवि, दूसरी थी कवियित्री।

जब कभी किसी कवि-सम्मेलनमें इनका कविता-पाठ होता, दर्शक मन्त्र मुग्धसे रह जाते। एक कोयलकी तरह कूकती, तो दूसरा तानसेन प्रतीत होता। तालियोंकी गड़गड़ाहट और 'वाह-वाह' का समां बंध जाता। तरुणकी कविता यदि श्रोताओंको नन्दन-वनमें पहुंचा देती, तो तरुणीकी कविता स्वर्गङ्गाकी लहरों पर बहा देती।

कितने ही साहित्यिकोंको मनही मन इस दम्पति कविके प्रति ईर्ष्या होने लगती। कोई कहता, यह सौभाग्य सभीको प्राप्त नहीं होता। कोई कहता, मेरी पत्नी भी यदि कामिनीकी तरह कवियित्री होती, तो मैं भी कंचन जैसा सुखी होता।

कामिनी और कंचन! कैसा कवि-त्वपूर्ण नाम है। इनका नामकरण जिन पण्डितोंने किया होगा वे सचमुच बड़े विद्वान और भविष्य-पारखी रहे होंगे। लेकिन इस नामकरणमें किसी-किसीको सन्देह होता। कहते, यह नाम पण्डितोंने नहीं इन्होंने स्वयं रखा होगा। जो कुछ भी हो, आज हम लोग एक दूसरेके बहुत निकट हैं। एक दिन था जब ये दोनों ही मेरे यहां मेहमान होकर आये थे। कैसे आये, क्यों आये और परिचयकी परिधिमें मैंने इन्हें कैसे पाया, यह कहानी कहनेके लिये कुछ साल पहलेका तारतम्य छूना होगा।

उन दिनों हमारे शहरमें एक बृहत कवि-सम्मेलनका आयोजन किया गया था। यों तो प्रयागमें चाहे जब और चाहे जहां कवि-सम्मेलन होते रहते हैं, लेकिन वह कवि-सम्मेलन अखिल भारतीय स्व-देशी प्रदर्शनीके तत्वावधानमें आयोजित किया गया था। दूर-दूरसे विख्यात कवि-योंको आमन्त्रित किया गया। स्थानीय कवियों तथा पत्रकारोंसे उनके परिचित कवियोंके नाम पते पूछे गये। मैंने इस अवसरका लाभ उठाते हुए अपनी परिचित सहेली कामिनी और उसके पति कंचनका नाम पता बतला दिया। इस दम्पति कविके यथा समय निमन्त्रण और इण्टर क्लास-का रेल-भाड़ा भेज दिया गया। मैंने भी कामिनीको पत्र लिख दिया कि वह अवश्य आवें।

कामिनीसे मेरा परिचय पत्र व्यवहार की परिधिसे थोड़ासा आगे बढ़ चुका था। दो साल पहले की बात थी। झांसीमें अखिल भारतीय महिला सम्मेलनमें मुझे विशेष निमन्त्रण पर जाना पड़ा था। वहां की कार्यकर्त्रियोंमें कामिनी स्वागताध्यक्षा थी। उसके कवित्वपूर्ण भाषणसे ही मैं उसकी ओर यथेष्ट आकर्षित हो चुकी थी। सम्मेलनके अन्तमें कवियित्रियोंकी एक गोष्टी हुई। उसमें मैंने भी कविता पढ़ी और उसने भी। कविता-पाठका जहां तक सम्बन्ध है, कामिनीकी तुलनामें मेरा कविता-पाठ हुआ नहीं कहा जा सकता। लेकिन अन्य कवियित्रियोंमें मेरे कविता पाठकी जितनी सराहना हुई, उतनी किसीकी नहीं। स्वभावतः गोष्ठीके बाद कामिनी मुझसे बहुत घुल मिल कर मिली। अपने निवास स्थान पर भी मुझे ले गयी। चाय पिलाई और परिचय का सूत्रपात हो गया।

इसके बाद सालमें कामिनीके दो-चार पत्र मेरे पास बराबर आते रहे। मैं भी उसे बराबर उत्तर देती रही। हम दोनोंकी इच्छा थी कि कभी पुनः मिलें, दो चार दिन साथ-साथ रहें और एक दूसरेको अधिक निकटसे देखें समझें।—

ऐसी स्थितिमें अखिल भारतीय स्वदेशी प्रदर्शनीके तत्वावधानमें होनेवाले कवि सम्मेलनमें स्वभावतः मैंने कामिनी-को निमन्त्रित करानेका प्रयत्न किया।

कवि-सम्मेलन जिस दिन था ठीक उसी दिन तीसरे पहरकी गाड़ीसे कामिनी और कंचन प्रयाग आ रहे थे। स्टेशन पर मैं इन दोनोंको लेने स्वयं गयी। मेरे साथ मेरी छोटी बच्ची लता भी थी। लताका बड़ा भाई अपने स्कूलमें था और उसके बाबूजी अपने कार्यालयमें थे। यों लताके बाबूजी भी स्टेशन जा सकते थे। एक मासिक पत्रिकाके सम्पादक हैं वह। समयका बन्धन उन्हें दूसरोंकी तरह नहीं। लेकिन आज उनकी पत्रिकाके प्रकाशित होनेकी तिथि थी। इस दशामें उत्तरदायित्वका प्रश्न उनके सामने था। फिर सन्ध्या समय कार्यालयसे आज उन्हें कुछ जल्दी भी आना था। रातको कवि-सम्मेलनमें हम लोगोंको भी जाना था न! इस दशामें लताके साथ मैं अकेली ही स्टेशन गयी थी।

ठीक समय पर गाड़ी नहीं आयी। दूसरा युद्ध समाप्त हुए लगभग एक साल बीत चुका था। लेकिन युद्ध-जन्य अनेक अभिशापोंकी छाया दुनिया पर अबतक व्याप्त थी। युद्ध-कालमें रेलगाड़ियोंकी

संख्यामें जो कमी कर देनी पड़ी थी, वह अबतक वैसी ही थी। इससे जहां गाड़ियोंमें ठसाठस भीड़ रहती, वहां उनके समय पर पहुंचनेके नियममें भी बड़ा व्यतिक्रम हो चुका था। निर्धारित समयसे ठीक सवा घण्टेके बाद कहीं गाड़ी आयी। इस बीच लताका मिजाज नहीं बिगड़ा यह बहुत बड़ी बात थी। प्लेटफार्मकी चहल पहलमें उसका दिल बहला रहा। खिलौने बेचनेवालोंको वह ध्यान पूर्वक देखती रही। एक बड़ा-सा गुड्डा भी उसके लिये मैंने ले दिया था। इस गुड्डे-को पाकर लता प्रसन्नताका अनुभव करती रही। एक बात और : लताको केले बहुत पसन्द हैं। चार केले मैंने पहलेही उसे ले दिये थे। अपनी पसन्द-की यह चीज पाकर वह और भी अधिक प्रसन्न थी। बीच-बीचमें उसे मैं एक केला दे देती थी। केला खाकर और गुड्डा पाकर लताको गाड़ीके लेट होनेसे कोई झुंझलाहट नहीं हुई।

गाड़ीके पहुंचतेही इण्टर क्लासके डिब्बेकी तरफ मैं बढ़ रही थी। लतामेरी अंगुली पकड़े हुए मेरे साथ साथ चल रही थीं। लेकिन इण्टर क्लासके डिब्बे तक अभी मैं पहुंचने भी नहीं पाई थी कि सेकण्ड क्लासके एक डिब्बेसे कामिनी और कांचन दोनों उतर कर प्लेट फार्म पर कदम रखते हुए मुझे नजर आये। उनके पासमें पहुंचने भी नहीं पाई थी कि कामिनी मेरे पास आ पहुंची और लताको अपनी गोदमें उठाते हुए कहा—'आप इस बच्चीको लेकर घण्टों स्टेशन पर खड़ी रही होंगी बहिन! गाड़ी तो एक घण्टेसे भी ज्यादा लेट है आज। और लताका चुम्बन लेते हुए कहा—बेटी, यह केला मुझे खिलाओगी?

और लताने अपना आधा खाया हुआ केला कामिनीके मुखकी तरफ सच-मुच बढ़ा दिया। कामिनीने भी उस केले-को खाते हुए कहा—'बड़ी रानी बेटी हैं लता!'

अबतक कंचन भी हम लोगोंके पास आ पहुंचे। एक कुली उनका सामान लिये हुए कह रहा था—'जल्दी चलिये साहब!"

'अरे भाई, क्यों जल्दी कर रहा है।' कंचनने कहा—'सामान तो वजनदार है नहीं। रही पैसोंकी बात, सो दो आने तुझे अधिक मिल जायंगे। बस!'

कुली चुप रह गया। दो आने अधिक मिल जानेकी बातसे उसे शायद गहरा सन्तोष हो उठा था।

इसी समय केला बेचनेवाला वहांसे निकला। कामिनीने उसे अपने पास बुलाया और लतासे पूछा—'कितने केले खाओगी बेटी?'

'छः।' लताने कह दिया।

'अच्छा!' कामिनीने कहा और केले वालेसे डेढ़ दर्जन केले खरीद कर लता-को देते हुए कहा—'लो बेटी।'

ढेरसे केले पाकर लता फूली नहीं समायी। मैंने कहा—इतने केले आपने नाहक लिये बहिन!'

'नाहक!' कामिनीने दोहराया—'लता बेटी जितने खाना चाहेगी, खालेगी। बाकी हम लोग खा लेंगे।'

'अच्छा, चलिये चलें।' मैंने कहा, और गेटकी तरफ हम लोग बढ़ चले। गेटके बाहर पहुंच, एक तांगेपर कुलीने सामान रख दिया। कुलीको एक अठन्नी और एक दुअन्नी देते हुए कञ्चनने कहा—'लो भई!' कुली प्रसन्न मुद्रासे चला गया।

तांगेपर हमलोग सवार हुए। तांगा चल पड़ा। राहमें कञ्चनने पूछा—'भाई साहब आफिसमें होंगे?'

'हां, आज पत्रिकाकी प्रकाशन-तिथि है न?' मैंने कहा—'और शामको कुछ जल्दी भी आयंगे। इसीलिये स्टेशन नहीं आये।'

'स्टेशन तो आपको भी नहीं आना था।' कामिनीने कहा—'आजकल गाड़ियां ठीक समयपर नहीं पहुंचतीं। घण्टों विलम्बसे आती हैं। राह देखते-देखते परे-शान हो जाना पड़ता है।'

'और राह नापते नापते आनेवालोंकी क्या हालत होती है, यह न कहेंगी? मैंने कहा—'आप लोगोंको जो कष्ट हुआ होगा, वह मेरी परेशानीसे कहीं बहुत अधिक होगा।' फिर एक क्षण रुककर मैंने कहा—'और, सेकण्ड क्लासमें आने का कारण भी तो मैं समझती हूं, यही कष्ट रहा होगा न!'

'हां, बहिन! कामिनीने कहा—'इण्टरमें आना तो सम्भव नहीं था।'

'खैर!' मैंने कहा—सेकेण्ड क्लास में आपका जो अतिरिक्त खर्च हुआ होगा, वह आपको प्रदर्शनीकी ओरसे मिल जायेगा।

'खर्च मिलने न मिलनेकी हमें चिन्ता नहीं।' कञ्चनने कहा—'आप लोगोंके पास हमें आना था। सोचा, इण्टरका किराया तो हमें मिल ही गया है। अधिक पैसा जो सेकण्डमें देना पड़ा, वह आप लोगोंकी ही खातिर हमने खर्च किया है। इसलिये आपको इस मामलेमें चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं।'

'प्रदर्शिनीके आयोजक गरीब नहीं हैं।' मैंने कहा।

'और आपको मेरा खर्च स्वीकार नहीं।' कामिनीने मुस्कराते हुए कहा।

तांगा जब मेरे घर पहुंचा, तब साढ़े ४ बज चुका था। घरमें पहुंचकर अभी हमलोग बैठने भी नहीं पाये थे कि बड़ा बच्चा स्कूलसे वापस आ गया और उसके बाद ही लताके बाबूजी भी हाथमें गांधी झोला लटकाये आ पहुंचे। आते ही उन्हों ने कहा—'अरे, गाड़ी काफी लेट आयी क्या?'

'हां!' मैंने कहा—'अभी-अभी तो हमलोग आ रहे हैं।'

कञ्चनने दोनों हाथ जोड़कर अभि-वादन किया और मुस्कराते हुए कहा—'आज आपके दर्शन कर बड़ी प्रसन्नता हुई। पत्रों द्वारा आपकी जो निकटता मुझे प्राप्त हो चुकी है, उससे अधिक सुख हुआ आज आपको देखकर।'

'और आप लोग को मेहमानके रूपमें अपने घरमें पाकर आज मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई।' लताके बाबूजीने एक कुरसीपर बैठते हुए कहा—'बहिन कामिनी की सहृदयताका परिचय तो मैं दो साल पहले ही लताकी मांसे पा चुका था। बहुत इच्छा थी आप लोगोंको देखनेकी।'

लेकिन हम लोगोंको आप मेहमान समझ रहे हैं।' कामिनीने कहा—'यह ठीक नहीं। हम तो आपके परिवारके ही सदस्य हैं। क्या आप लोगोंको यह स्वीकार नहीं?'

और, कामिनीकी यह बात सुनते ही मुझे याद आया कि लताका आधा खाया हुआ केला कामिनीने जो बिना किसी हिचकिचाहटके, अभी अभी स्टेशनपर खा लिया था, वह सचमुच आत्मीयता और अपनत्वका ही प्रमाण था। कहा मैंने 'परिवारके सदस्योंकी क्या मेहमानदारी नहीं की जाती बहिन? बहुत दिनोंके बिछुड़े आत्मीय जब मिलते हैं, तब एक दूसरेका जो स्वागत सत्कार किया जाता है, वह भी तो मेहमानदारी ही हैं। इसमें बेजानेकी भावना नहीं रहती।

'हां, मेरा मतलब बिलकुल यही था।' लताके बाबूजीने कहा—'आप लोगोंको अपने परिवारकी परिधिमें देख, सचमुच हमें गर्व है। फिर, साहित्यिक होकर हम लोगोंका परिवार भी तो साहित्यिकोंसे ही भरा-पूरा रहना है न! एक-दूसरेको बेगाना समझकर, हम रहेंगे कहां? हमारा निर्वाह कैसे होगा? हमें अपनापन कहां मिलेगा?'

इसी बीच कञ्चनने अपना सूटकेस खोला और लता तथा हरिके लिये उपहार-में खादीकी बढ़िया फिराक और सुन्दर कुरता सामने रख दिये। कागजके एक बड़े-से पुड़ेमेंसे मेवा निकालकर टेबिल पर रखते हुए कहा—'लता बेटी, देखो ये अंजीर, काजू, किसमिस। खाओगी कुछ? और हरिको बुलाकर कहा—'लो भई, तुम्हारा भी तो हिस्सा है इसमें।'

मैं अब तक चौकेमें जाकर शाक-भाजी बनाने लगी थी। पूड़ी आदि तो पहले ही बनाकर रख ली थी। शाक भाजीके अतिरिक्त चाय भी बनानी थी। चाय मैंने पहले तैयार की और सबके सामनेमें लाकर रख दिया।

चाय पीनेके बाद कंचन और कामिनी ने नहाया धोया। भोजन करते कराते आठ बज गये। नौ बजे तक तैयार होकर हम लोग प्रदर्शिनीके पण्डालमें जा पहुंचे।

उस दिन कवि-सम्मेलन खूब जमा। रातको दो बजे तक कविता पाठ होते रहे। कंचन और कामिनीके कविता पाठने गजबका समां बांध दिया। कई पदक और और पुरस्कार मिले इन दोनोंको।

लेकिन यह सब तो कामिनी और कञ्चनके व्यक्तित्वका एक पहलू ही मैंने अबतक चित्रित किया है। इनका दूसरा पहलू इस कवि सम्मेलनके बाद ही मैं देख सकी और समझ सकी।

कवि सम्मेलनके दूसरे दिन प्रयागमें घूमते-घामनेका कार्यक्रम निर्धारित किया गया। लताके बाबूजी उस दिन कार्यालय नहीं गये। उनकी पाक्षिक पत्रिका प्रकाशित हो चुकी थी। कोई विशेष कार्य नहीं था उस दिन। दिन भर तक लोग घूमते-घामते रहे। सबसे पहले हम लोग त्रिवेणी-स्नान करने गये।

त्रिवेणी से लौटते समय उस किलेमें हम गये जिसमें वह वृक्ष है और अनेक हिन्दू देवी देवताओंकी भग्य मूर्तियां भारतकी प्राचीन कालीन मूर्ति कलाका उत्कर्ष अबतक प्रकट कर रही है। कहते हैं, यह किला महाराज अशोकने बनवाया था। बादमें जब मुगल-सम्राट अकबरका इसन गरपर अधिकार हुआ, तब इस किलेको पुनर्जीवन प्रदान किया गया। आज इस किलेका जो रूप है, वह सम्राट अकबरकी ही देन है। अकबरने इस शहरका नाम प्रयागसे इलाहाबाद कर दिया था, जो अबतक प्रचलित है।

किलेसे लौटकर हम लोग भारद्वाज-आश्रम देखने गये। इसी बीच लताके बाबूजीने कंचनसे कहा—'स्थानीय किसी साहित्यिकसे भी मिलना चाहेंगे कंचनजी?

'नहीं'। कंचनने गम्भीर मुद्रासे कहा।

क्यों'? लताके बाबूजीने साश्चर्य पूछा

मुझे भी कंचनके इस नकारात्मक उत्तरपर बहुत आश्चर्य हुआ। अब तक जितने भी साहित्यिक हम लोगोंके पास आये थे, उनमेंसे प्रायः सभी लोग, स्थानीय साहित्यिकोंसे भेंट करनेका लोभ संवरण नहीं कर पाते थे।

तभी कंचनने कहा—मैं साहित्यिकों से भेंट करना बुरा नहीं समझता भाई साहब। लेकिन अपने परिचयकी परिधिसे मैं इतना विस्तृत करनेका कायल नहीं, जिसका निर्वाह जीवनके अन्त तक न किया जा सके। दस-पांच मिनटके परि-चयको मैं परिचय नहीं मानता। जिन साहित्यिकोंसे इस प्रकार मिलूंगा, वे समझेंगे कि मैं किसी स्वार्थसे ही उनसे मिल रहा हूं। लेकिन आप विश्वास कीजिये, मुझे अपने किसी स्वार्थकी सिद्धि इन लोगोंसे नहीं करनी है। यदि यही सब कर सकता, तो शायद झांसी जैसे साधारण नगरमें एक साधारणसे प्रेसमें नौकरी न करनी पड़ती।

और हम लोगोंने महसूस किया कि सचमुच कंचन-जैसा कलाकार अपने इसी स्वभावके कारण आज पत्र-पत्रि-काओंके पृष्ठों पर प्रायः नहींके बरा-बर दिखता है; इस प्रकारके युग में कंचन जैसे कलाकारका निर्वाह नहीं। लेकिन कंचन इसके लिये दुखी नहीं। वह कहता है, यदि प्रचारके बलपर मैं सामने आया, तो इसका कोई मूल्य नहीं। जबतक प्रचारकोंके हाथकी कठपुतली रहूंगा, तब तक मेरी धूम रहेगी। जिस दिन प्रचारकों की कृपाका पात्र न रहूंगा, उस दिन फिर कौन पूछेगा मुझे?

दो दिन रहकर कंचन और कामिनी वापस चले गये। इस बीच एक दिन जब हम लोग चौकसे लौट रहे थे, तब एक चौराहेपर कंचन अचानक खड़ा हो गया। हमलोग अपनी बातचीतमें इतने मशगूल थे कि कुछ कदम आगे बढ़ जानेपर जब हरिने कहा कि चाचाजी तो पीछे रह गये, तब कहीं इस ओर ध्यान दे सके। घूमकर देखा, तो कंचनको एक भिखमंगेसे बात करते पाया। पास जानेपर पता चला कि वह भिखारी बङ्गालकी तरफसे यहां आया

था। हड्डियोंका ढांचा भर था। आखें उसकी धंसी हुई और गाल पिचके हुए थे। कंचनने अपनी जेबमेंसे दस रुपयाका नोट निकाल उसके हाथोंपर धर दिया और हमलोगोंके साथ चल पडा।

लताके बाबूजीने कहा—'इस तरह भिखारियोंको रुपये लुटाते चलोगे, तो घर पहुंचते-पहुंचते दो-एक हजार रुपयोंकी जरूरत पड़ेगी कंचन जी!'

'एक तो इतना रुपया नहीं मेरे पास कंचनने कहा—'दूसरे, सभी भिखारियों को मैं इस प्रकार रुपया नहीं देना—दे भी नहीं सकता। लेकिन इस भिखारीकी करुण कथा सुन, मैं द्रवित हो गया। कहना था, बङ्गाल के अकालमें उसका पूरा परिवार भूखकी बलिवेदीपर भस्म हो चुका है। दो मासूम बच्चे, फूल-सी कोमल पत्नी, तितली-सी चंचल बहिन सभी चल बसे। वही अभागा बच रहा है। मारा-मारा फिर रहा है। किसीसे अपनी कहानी कहता है, तो उसपर कोई विश्वास नहीं करता। दो दिन से भूखा है।'

'कौन कह सकता है' लताके बाबूजीने कहा 'कि उसकी कहानी सच है? आपने कैसे जाना, वह सच-सच कह रहा है? मांगने की भी कला होती है कंचन जी! आंखोंमें आंसू भर कर उसने कहा और आपने विश्वास कर लिया!

'सन्देह करनेसे तो काम नहीं चलता भाई साहब! कंचनने कहा—प्रत्येक व्यक्ति पर हम सन्देह करने लगें, तब तो इस दुनियामें रहना ही मुश्किल हो जाये। फिर, विश्वास ही तो बहुत बड़ी चीज है न! यदि हम अपनी बातोंसे आपपर विश्वास जमा सके, तो यही हमारी सफलता है; भले ही, हम झूठे हों।'

और जाते समय कामनीने पांच-पांच रुपयेका एक-एक नोट लता और हरिको देते हुए कहा—'लता केला खायगी और हरि अपनी पसन्द की पुस्तकें खरीदेगा।'

बहुत मना किया हमलोगोंने लेकिन कामिनीने ये रुपये वापस नहीं लिये। स्टेशन पर जाकर हमने देखा कि कामिनी और कंचनने इण्टर-क्लासका टिकट लिया है।

मैंने कहा—'इण्टर में तो काफी तकलीफ होगी बहिन!'

नहीं' कामिनी ने कहा—'सेकण्ड का जो किराया आपने दिलाया है, उसमें से आधा तो यहां आनेमें पहले ही हम खर्च कर चुके हैं। अब यहांसे जाते समय इण्टर क्लासका टिकट इसलिये ले रही हूं कि कुछ अतिरिक्त खर्च यहां किया जा चुका है। जितनी चादर हो उतना ही पैर फैलाना ठीक होता है न!'

हमलोगोंको यह समझते देर न लगी कि उस भिखारीको दस रुपये कंचन दे चुका है। लता और हरिको भी दस रुपये कामिनीने दे दिये हैं। यही अतिरिक्त खर्च इण्टर का टिकट लेकर पूरा किया जा रहा है।

कंचन और कामिनी जब चले गये, तब मैंने लताके बाबूजीसे कहा—'देखा, इस कलाकार दम्पति को कितना सहृदय, स्वाभिमानी और सोच-समझ कर खर्च करनेवाला है।'

'पहली दो बातोंपर मुझे गर्व है।' लताके बाबू जी ने कहा—'लेकिन सोच समझ कर खर्च करने की जो बात है वह हमारे कलाकारोंके विकास के लिये बहुत बड़ी बाधा है। भारतमें जन्म लेकर और हिन्दी के कलाकार होकर हमलोगोंको विवश होकर यह करना पडता है। कौन हमारे सुख-दुख की परवा करता है, कौन हमें सहारा देने आगे आता है? और इन चिन्ताओं की परिधिमें घूमते-घूमते कलाकार अपनी कलाका समुचित विकास कर नहीं पाता। कंचन-जैसा प्रतिभा-सम्पन्न कवि एक प्रेसमें अपनी कलम घसीटा करे, यह हिन्दी के भविष्य के लिये कितना विघातक है। लेकिन हमारा समाज और हमारे प्रकाशक कब दूसरेकी परवा करते हैं? कभी करेंगे या नहीं, यह भी एक पहेली है!' मैंने कहा। और, इस दम्पति कविसे अब हम लोगोंकी घनिष्ठता सचमुच एक परिवारके सदस्यों जैसी ही बढ़ गयी है। सालमें एकाध बार हमलोग झांसी जाते और कंचन-कमिनी भी हमलोगोंके पास एकाध बार आजाती हैं।

आजकल इस दम्पति कविके भी दो सनतानें हैं। लेकिन देखती हूं कि परिवार में सदस्योंकी संख्या वृद्धि के साथ-साथ इस दम्पति कविकी सारी मस्ती और स्वच्छन्दता पता नहीं, कहां तिरोहित होती जा रही है!

पिछले महीने हमलोग झांसी गये थे। जब हमलोग इस कलाकारके दरवाजेपर पहुंचे, तो सदाकी तरह एक उल्लाससे उमड़ते हुए-हमलोगोंने घरमें प्रवेश किया लेकिन भीतर जाकर देखा कि कामिनी एक कमरेमें फर्श पर ही एक दरी पर लेटी है। समीप ही उसका छोटा बच्चा सोया हुआ है। हमलोगोंको देखते ही उसके ओठोंपर एक मन्द मुस्कराहट दौड़ गयी। लेकिन उसके ओठ कुम्हलाये हुए थे। चेहरा एकदम उतरा हुआ था। शरीर उसका कृश और अस्वस्थ था। कहा मैंने—'मालूम पड़ता है, कुछ बीमार हो कामिनी!'

हां, बहिन!' उसने दरीपर बैठते हुए कहा—'आपलोग बैठिये तो सही।' और कमरेमें रखी कुर्सियोंकी तरफ उसने संकेत किया।

निकट जाकर मैंने उसका माथा छूकर देखा। वह तवेकी तरह जल रहा था। कहा मैंने—बुखार बहुत तेज है बहिन! तुम लेटी रहो।' फिर एक क्षण रुककर पूछा—और कंचन जी कहां हैं?

'प्रेस गये हैं। छुट्टी बकाया नहीं है। अब छुट्टी लेंगे तो वेतन कटेगा।'

मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि गृहस्थीका चक्कर और जीवन प्रवाहका भंवर जाल इस कलाकार दम्पतिका गला घोंट रहा है। स्वाभिमान और दुनियादारी! कलाकार और जीवनकी परिस्थितियां! भारतीय कलाकारका स्वाभिमान उसे प्रचारके साधनोंसे बहुत दूर पटक चुका है। दुनियाकी परेशानियां उसकी मस्तीका अपहरण कर रही हैं।

दुनियांका क्रम चलता है और चलता है और चलता रहेगा। लेकिन कलाकारों की मिटती हुई प्रतिभा और इनके व्यक्तित्व के बुझते हुए प्रकाशको यह दुनिया बार-बार न पा सकेगी।

दूसरे दिन हमलोग झांसीसे लौट आये। समय नहीं था कि अधिक ठहर सकते। लेकिन कंचन और कामिनीकी चमकती-दमकती और बुझती-सी प्रतिभा के जो दोनों पहलू मैंने देखे हैं, उन्हें कभी भूल नहीं सकती। यह भी नहीं समझ पाती कि इस सबके लिये हमारा भारतीय समाज दोषी है अथवा कलाकार?

सोवियट एशियाका राष्ट्र

श्री जीवन

स्वाधीनता-प्राप्तिके पश्चात् भारत के सम्मुख अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं हैं, जिनका समाधान करना आवश्यक है। 'स्वराज्य'के बाद 'सुराज'का प्रश्न अनिवार्यतः आता है। अपने देशके भीतर बुरी तरह फैली हुई गरीबीको दूर करना और सामाजिक एवं सांस्कृतिक बुराइयों तथा अत्याचारोंसे कराहते हुए देशके हजारों व्यक्तियोंको मुक्त करना राष्ट्रीय सरकारका कर्त्तव्य हो जाता है। इस सम्बन्धमें बाहरी देशोंकी स्थितिका तुलनात्मक अध्ययन करके हम भी बहुत-कुछ लाभ उठा सकते हैं। इस दिशामें सोवियट एशियाई राष्ट्रोंका उदाहरण हमारे सामने है, जहां कभी गरीबी मुंह फैलाये थी, अकालका दौरदौरा था, सामाजिक बुराइयोंका बोलवाला था; पर आज जहांके लोगोंकी जीवनधारा एकदम बदल गयी है और सभी देशकी उन्नति प्रगतिमें लगे हुए हैं।

सोवियट एशिया यूराल्स तथा कास्पियन सागरके पूर्व बेरिंग स्ट्रीटसे लेकर कालासागर तक एशियाके समस्त आर्टिक तटवर्तीय अंचलमें फैला हुआ है। संसारके हरे-भरे भूखण्डोंमें इसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। सोवियट यूनियनके कोई तीन-चौथाई भागोंमें यह भू प्रदेश फैला हुआ है।

सोवियट एशियामें ६ राष्ट्र हैं—अजरबेजान, तुर्कमेनिस्तान, ताजिकिस्तान, उजबेकिस्तान, कजाकिस्तान और किरविजिया, और...ये सभी सोवियट यूनियनके अन्तर्गत स्वेच्छासे सम्मिलित हैं। सोवियट यूनियनमें इन्हें बराबरी का स्थान प्राप्त है।

अनेक इतिहासकारोंने मध्यएशिया को ज्ञानका आदि स्रोत माना है। एक जमाना था, जब इस भूभागके बुखारा, ताशकंद और समरकंद आदि प्रसिद्ध नगरोंके नाम कला-कौशल आदिको लेकर सारे संसारमें मशहूर थे। एक युग था, जब वहां की सिंचाई-व्यवस्था ऐसी सुंदर थी कि मध्यएशियाका महामरुस्थल नखलिस्तानमें परिणत होकर अन्नोंका भंडार हो गया था। यहांके प्राचीन कालीन वर्णनों से साहित्य भरा पड़ा है। बुद्धचरितके लेखक महाकवि अश्वघोषके संबंधमें अनेक विद्वानोंकी सम्मति है कि वह इसी भूभाग के रहनेवाले थे। कनिष्कके बारेमें भी कहा जाता है कि वह कजाखके रहनेवाले थे।

१. अजरबेजान
क्षेत्रफल—३३००० वर्गमील
जनसंख्या—(१९३९) ३२१०००
२. तुर्कमेनिस्तान
क्षेत्रफल—१७१३८४ वर्गमील
जनसंख्या—(१९३९)-१२५४०००
बजट—(१९४५)-५१६२११००० रूबल
ताजिकिस्तान
क्षेत्रफल—५५५४५ वर्गमील
जनसंख्या—(१९३९)-१४८५०९०
बजट—(१९४५)-७००००००० रूबल
उजबेकिस्तान
४.उजबेकिस्तान
क्षेत्रफल—६६३९२ वर्गमील
जनसंख्या—(१९३९)—६२८२४५०
बजट—(१९४५)—२१६१९१८००० रूबल
५. कजाकिस्तान
क्षेत्रफल—१०४७७९७ वर्गमील
जनसंख्या—(१९३९)—६१४५९३७
बजट—(१९४५)—१८८५३३७००० रूबल
६. किरघिजिया—
क्षेत्रफल—७८००० वर्गमील
जनसंख्या—(१९३९ १४५९३०१
बजट—(१९४५)—५६२२९९००० रूबल

सबसे पहले सिकन्दरके आक्रमणसे यह भूभाग श्री विहीन हुआ। तैमूरलङ्ग के निरंतर होनेवाले आक्रमणोंसे इसकी बुरी तरह बर्बादी हुई, पर जैसा कहा जाता है तैमूरने पीछे चलकर इस भूभाग को फिर से आबाद भी किया था। इसके पहले भी यह चंगेज खां की नृशंसताका शिकार हुआ था। और इसके बाद तो व्यापारियोंने इस भूभागके साथ व्यापार शुरू किया और अपना पैर जमाया। जारशाही कब चुप बैठने वाली थी। जारने अनेक मुसलमान अमीरोंको कठपुतली शासकके रूपमें बनाकर काफी पैसे ऐंठे। रूसी जारशाहीके शोषणका शिकार यह भूप्रदेश लालक्रांति तक बना रहा।

रूसी लाल क्रांतिके पहले तक रूसी एशियाके अमीरों, काजियों और मुल्लाओंका बोलवाला था। काजी और मुल्ले अमीरोंकी दलाली के लिये सदा तैयार रहते थे। अमीरोंके बाद राजभक्त छोटे-छोटे जमींदारों (बे) की तूती बोलती थी, जो बड़े ही अत्याचारी और प्रतिक्रियावादी थे।

पर जारशाहीके विरुद्ध की गयी लालक्रांतिकी सफलताके बाद रूसमें समाजवादी शासन आरंभ हुआ और मध्यएशियाके शोषणका भी अंत होकर रहा। यह आश्चर्यजनक बात मालूम होती है कि मध्य एशियाके लोग ही ऐसे थे, जिन्होंने सबसे पहले खूनी-खूंख्वार जारशाहीके खिलाफ बगावत की थी। बोरवारा समरकंद और ताजिकिस्तानके बोल्शेविक क्रांतिकारियोंके प्रबल प्रयास से जारशाहीका जनाजा निकला और जारके इंगितमात्र पर चलनेवाले शोषक अमीर, मुल्ले, पीर और काजी मार भगाये गये। और, आज मुल्लों और काजियोंका नामोनिशान मिट गया है, अमीर सब भाग कर अफगानिस्तानमें व्यापार कर अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं। इस बीच सोवियत एशियाने आश्चर्यजनक उन्नति प्रगति की है जो मानव समाजके लिये गौरव का विषय है।

अजरबेजान

सोवियत यूनियन और ईरानकी सीमा पर यह ट्रांस काकेशियाके पूर्वी भागों में फैला हुआ है। यह खनिज पदार्थोंसे परिपूर्ण है। यहां तेल, लोहा, अलुमूनियम, तांबा, लीड, जिन, गंधक, चूनेका पत्थर और कीमती धातुएं पाई जाती हैं। इसकी राजधानी बाकू है जो तेलके कारखानेके लिये प्रसिद्ध है। इस प्रजातंत्रमें ६० प्रति-

शत अजरबेजानियन रहते हैं। और लोगों में आर्मिनियन रूसी, कुर्द, जार्जियन, टाटार, तालिसी आदि हैं। अजरबेजान प्रजातन्त्रके अन्तर्गत स्वेच्छासे नाखिशेवल, जिसकी राजधानी नाखिशेवन है, और नागोर्नो, जिसकी राजधानी स्टेपेनाकर्त्त है, आ गये हैं। इन दोनों को भी प्रजातन्त्र के नियमानुसार समानता का अधिकार प्राप्त है।

सोवियत यूनियनमें शामिल हो जानेसे यहांके भूखे, नंगे और पिछड़े हुए निवासी अपने राष्ट्रके आर्थिक तथा सांस्कृतिक निर्माणमें जोर-शोरसे लग गये। फलतः जहां पहले घोर अशिक्षा फैली हुई थी, वहां ७३ प्रतिशत जनता सन् १९३९ तक ही साक्षर हो गयी। इस प्रजातंत्रमें अभी प्रायः ५०० से अधिक यूनिवर्सिटी प्रोफेसर तथा वैज्ञानिक अनुसन्धान कर्त्ता हैं। दसों वैज्ञानिक संस्थाएं सोवियट यूनियनकी एकेडमी आफ साइंसकी अजरबेजान शाखाके अधीन काम कर रही हैं।

सोवियट यूनियनके अन्तर्गत बाकूके तेल-उद्योगकी अत्यधिक उन्नति हुई है। द्वितीय विश्व-महायुद्धके पहले ही बाकूके तेल-कूपोंसे प्रति वर्ष २ करोड़ ५ लाख टन तेल प्राप्त किया जाता था। सन् १९१४ के पहले तो इसका एक तिहाई तेल नहीं निकाला जाता था। इधर कृषिकी काफी उन्नति हुई है और आबाद की जानेवाली जमीन २५ लाख एकड़से भी बढ़ गयी हैं।

यह मिस्री कपास पैदा करनेवाला सबसे बड़ा क्षेत्र है। लेनकोरानके उत्तर-कास्पियन तटके समीपवर्ती भागोंमें, जहां, सिंचाई होती है, धान पैदा होता है। कास्पियन सागरमें अनेक मछली मारनेके स्थान हैं, जहां कीमती मछलियां पायी जाती हैं। यहां और भी अनेक बस्तुएं पायी जाती हैं।

तुर्कमेनिस्तान

तुर्कमेनिस्तान ईरान और अफगानिस्तानकी सीमाओंसे सटा हुआ कास्पियन सागरसे आमू नदी तक फैला हुआ है। इसका ८० प्रतिशत भाग कराकुरमकी मरुभूमि है। यहां ५० प्रतिशत तुर्कमेनियन रहते हैं। इनके अलावे रूसी, आर्मेनियन, कजाक,फारसी और उजबेक लोग भी यहां बसते हैं। यहांकी राजधानी अश्काबाद है।

सन १९२४ में तुर्कमेनिस्तान प्रजातन्त्रकी स्थापना हुई। उसके बाद ही शिक्षा-प्रचारका कार्य यहां इतने जोर-शोरसे आरम्भ हुआ कि अब १४०० स्कूल खुल गये हैं, जहां मातृ भाषामें बच्चोंको शिक्षा दी जाती है। यहां ३३ टेकनिकल स्कूल हैं और ४ बड़े कालिजों की स्थापना हुई है। रूसी क्रांतिके पहले यहां सिर्फ ९ डाक्टर थे, लेकिन अब डाक्टरोंकी संख्या एक हजारसे भी अधिक हो गयी है। तुर्कमेनियन भाषामें कोई ४० पत्र-पत्रिकाएं और ७ मासिक पत्र अब निकला करते हैं। घोर देहातों में भी घर-घर टेलीफोन और रेडियो लगे हैं। स्कूलोंकी स्थापना हुई है। यहां ७०० पुस्तकालय और ६०० बाचनालय एवं मनोरंजनालय स्थापित हो चुके हैं। सतरह साल पहले यहांकी राजधानी अराकाबादमें पहले-पहल स्टालिन थियेटर की स्थापना की गयी थी, पर अब इस प्रजातन्त्रमें ३७ थियेटर खुल चुके हैं। देशमें ३०से भी अधिक वैज्ञानिक संस्थाएं खुल चुकी हैं।

विस्तृत मरुभूमिको हरा-भरा बनानेके लिये रूसी वैज्ञानिकोंका प्रयोग जारी है। देशमें आधुनिक ढङ्गकी बड़ी बड़ी नहरें बनायी गयी हैं। कृषिकी उन्नतिके लिये कोशिशें हो रही हैं। सन् १९३७ में ३७५००० एकड़ क्षेत्रमें कपासकी खेती की गयी, जबकि सन् १९१४ में इससे १२० प्रतिशत कम क्षेत्रमें ही कपासकी खेती हुई जबकि सन् १९१३ तक ७५००० एकड़ क्षेत्रमें ही गेहूंकी खेती होती थी।

तुर्कमेनिया रेशमके उत्पादन और कालीन, दरी आदि बिछौनोंके लिये प्रसिद्ध है। यहां अच्छी किस्मके घोड़े पाले जाते हैं। मरुभूमिके कुछ भागोंको चारागाहके कामोंमें लाया जाता है। स्त्रियां कालीन बुनती हैं। भेड़ें भी पाली जाती हैं। इस प्रजातन्त्रमें अंगूर और खजूर खूब होते हैं। रबरकी खेती भी अब की जाने लगी है। यहांसे कपास, रेशम, कालीन, फल और मिट्टीका तेल बाहर भेजा जाता है। खनिज पदार्थोंमें यहां तेल कोयला नमक, गन्धक, पोटास, शीशा सोडियम सल्फेट, पोटास, ब्रोनियम आदि पाये जाते हैं। यहांकी राजधानी अश्काबाद उद्योग और संस्कृतिका बहुत बड़ा केन्द्र हैं। कृषिके अतिरिक्त खाद्य सामग्रीके कारखाने और अन्य उद्योग धन्धे भी पिछले कई सालोंसे बढ़ रहे है। सन् १९२७ से '३९ तक ही देशकी जनसंख्यामें २५ प्रतिशत बृद्धि हुई थी।

ताजिकिस्तान

ताजिकिस्तान सोवियट रूस, अफगानिस्तान तथा पश्चिमी चीनके बीच तानशान पर्वत श्रेणी और पामीरके पठारके सङ्गमपर बसा हुआ है। भारतबर्ष (भारतीय संघ नहीं) की सीमासे कुछ ही मिलोंकी दूरीपर यह स्थित है। एक स्थानपर तो भारतवर्ष और इसकी सीमाओंकी दूरी सिर्फ १० मील ही है। अफगानिस्तानका एक पतला टुकड़ा—नूरिस्तान – सोवियट राष्ट्रको भारतकी सीमासे अलग करता है। चूंकि यह 'संसारकी छत' पामीरकी ऊंची पर्वत श्रेणियोंपर स्थित है, इसलिये सारी भूमि पहाड़ी और ऊंची है। सोवियट रूसकी सबसे ऊंची चोटी स्टालिन गिरि (२४३५९ फीट) और लेनिन गिरि (२३१६३ फीट) यहीं हैं। संसारके सबसे बड़े गलेसियरोंमेंसे एक फेदचेन्को यहीं है जो ४५ लम्बा है। इस प्रजातन्त्रकी राजधानी स्टालिनवाद है।

यहांकी तीन-चौथाई आबादी ताजिक लोगोंकी है। उत्तरी-पश्चिमी भागमें उजबेक रहा करते हैं। इनके अतिरिक्त रूसी खिरगिज तथा ईरानी लोग भी यहां बसे हुए हैं। पामीरके इलाकेमें एक गोर्नी-बदखशां स्वायत्त शासन प्राप्त प्रजातन्त्र है, जो

ताजिकिस्तान प्रजातन्त्रके अन्तगत ही आ गया है। इस सम्बद्ध प्रजातन्त्रकी राजधानी खोरोग है। सन् १९२५ में ताजिकिस्तान स्वतन्त्र राष्ट्र बना और सन् १९२९ में सोवियट यूनियनमें स्वेच्छासे सम्मिलित हो गया।

उजबेकिस्तान

उजबेकिस्तान सोवियट रूस और अफगानिस्तानकी सीमाओंपर सोवियत मध्य-एशियाके मध्यमें ताशकन्दसे लेकर अफगानिस्तानके सरहद बक्ष (आमू दरिया) तक फैला हुआ है। फर्गना की प्रसिद्ध उपत्यका मध्य एशियाकी सबसे बड़ी उपत्यकाओंमेंसे है। इस प्रजातन्त्रके दक्षिण में बुखारा, समरकंद आदि इतिहास प्रसिद्ध नगर हैं। इसकी राजधानी ताशकन्द है, जो मध्य एशियाका सबसे बड़ा नगर है। उजबेकिस्तान प्रजातन्त्रके अंतर्गत कराकल्पक नामक स्वायत्त शासन प्राप्त प्रजातन्त्र है जो आमू दरियाके निचले भागमें फैला हुआ है। इस अधीन प्रजातन्त्रमें कराकल्पक लोग रहा करते हैं। उजबेकिस्तानमें तीन चौथाई आबादी उजबेकोंकी है इसके अतिरिक्त कराकल्पक रूसी तजाक औरकजाक लोग भी रहते हैं।

देशकी आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उन्नतिके लिये भरपूर कोशिशें हुई हैं। सन् १९१३ में जहां यहांकी पूरी पैदावारकी कीमत ३७ करोड़ रुपये थी, वहां १९२६ में ही १५० करोड़ रु० से भी अधिक हो गयी। सोवियत रूसका यह सबसे बड़ा सिंचित प्रदेश है, जहां १९३८ में ७० लाख एकड़ जमीनमें खेती होती थी। देश की उपज बढ़ानेके लिये वैज्ञानिक अनुसंधानोंसे सहायता ली गयी है। यहां भी बड़ी बड़ी नहरोंका निर्माण हुआ है। सन १९४०में स्टालिन ग्रेट फरगना नहर बनाई गयी थी, जिससे १२ लाख ५० हजार एकड़ भूमिमें सीर दरिया से सिंचाई होती है। यह प्रजातन्त्र रूई उपजानेमें सोवियत यूनियन का सबसे बड़ा भाग है। सारे यूनियन का ६० प्रतिशत कपास यहीं उत्पादित होता है। इसके अतिरिक्त ऊन और रेशम पैदा करनेके लिये भी यह प्रजातन्त्र प्रसिद्ध है। चावल, गेहूं, बार्ली, मकई,तेलहन, सूगर, बीट नाना प्रकारके मेवे और फल आदि भी यहां पैदा होते हैं। यहांके पञ्चायती खेतों में इनदिनों कोई १८००० ट्रैक्टर चलते हैं। देशके पशुधन की काफी वृद्धि हुई है। अभी कोई ६ करोड़ घोड़े, ऊंट, भेंड़ें आदि पशु हैं। यहां वाले क्रांतिके पहले खनिज पदार्थोंके बारेमें कुछ नहीं जानते थे, देशमें कल-कारखानेका तो नाम तक न था। किन्तु अब यहां ५१ कपड़े की मिलें हैं। इसके सिवाय कोयलेके कारखाने ट्रैक्टर और मशीनके कारखाने; नाइट्रेट खाद्यके कारखाने, सीमेंट, गंधककी खानों के कारखाने, कागज, चमड़े आदिके कारखाने इत्यादि विशाल कारखाने काम कर रहे हैं। चिर्चकका महान हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन अनेक कारखानोंको शक्ति प्रदान करता है। सभी प्रकारके यातायात के लिये देशमें बड़ी-बड़ी सड़कें बनायी गयी है। यहांकी आधी आबादी खेती, ४ बटा पांच कलकारखाने और २ बटा ३ रेलवे में है। यहां की सभी प्रकार की औद्योगिक उन्नति सन् १९१३ की तुलना में १९३८ तक ही ६ गुनी बढ़ गयी थी और कपासकी उपज पहले से तीन गुनी। यह प्रजातन्त्र मध्यएशियाके प्रजातन्त्रोंमें सबसे अधिक समृद्धशाली है। यहां की कला संगीत और नृत्य आदि सोवियत यूनियनमें खास स्थान रखते हैं।

कजाकिस्तान

कजाकिस्तान सोवियत एशियाके दक्षिणी पश्चिमी भागमें सोवियत और सिक्यांग (पश्चिमी चीन)की सीमाओंपर स्थित है। यह वोल्गासे लेकर अल्ताई और ट्रांस साइबेरियन रेलवेसे लेकर त्यानसान पर्वत माला तक फैला हुआ है। इसकी राजधानी अल्मा अता है। इसकी भौगोलिक स्थिति विषम है। जहां एक ओर इसमें निरंतर हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियां है, वहां दूसरी ओर विस्तृत मरुभूमि भी है। कहीं तो बहुत ही वर्षा होती है, तो कहीं पानी पड़ता ही नहीं। यहां कजाक लोग सबसे अधिक संख्यामें (६०प्रतिशत) बसते हैं। इसके अतिरिक्त रूसी, यूक्रेनियन, किरघिज, उजबेक, कराकल्पक आदि लोग भी इस प्रान्तमें रहते हैं।

खनिज पदार्थोंकी दृष्टिसे कजाकिस्तान सुसंपन्न देश है। जारशाहीके समय से अब १०० गुना अधिक चीजें उत्पादित होती हैं। इसके अलावे देशमें तरह तरह के बड़े बड़े कारखाने खोले गये हैं जैसे रुई औटनेके कारखाने, चमड़ेके कारखाने शक्कर, तम्बाकू आदिके कारखाने, तरकारी फल, और गोस्तके कारखाने आदि। अब रेलों और पक्की सड़कोंका देशमें जालसा बिछगया है। इस प्रजातंत्रमें कास्पियनसागर, अरब सागर, बाल्टका झील आदि मछली मारनेके बड़े बड़े केन्द्र हैं। औद्योगिक विकासके कारण कजाकिस्तानमें बीसों नये-नये शहर बस गये हैं।

किरघिजिया

यह सोवियत मध्य एशियाके पूर्वमें सोवियत रूस और सिक्यांग (पश्चिमीचीन की सीमाओंपर स्थित है। इस देशमें बहुत से हिमाच्छादित पर्वत और ग्लेसियर हैं। विस्तृत पठारों, गहरी धारियों और तेज धारवाली नदियोंसे यह भूभाग भरा हुआ है। यहां दो तिहाई किरघिज लोग बसते हैं। इसके सिवा रूसी, यूक्रेनियन उजबेक आदि लोग भी यहां रहते हैं। यहांकी राजधानी फ्रुंजे है।

पहले यहांकी आबादी घटती जा रही थी पर नयी शासन व्यवस्थाके कारण कुल १२ वर्षों में सन् १९३९ तक देशकी जन संख्या ४५ प्रतिशत बढ़ गयी और ७० प्रतिशत लोग साक्षर हो गये। इतिहासमें पहले पहल देशकी भाषा लिपिबद्ध हुई है।

अंगूर, फर और अखरोट यहां प्रचुर मात्रामें होते हैं। अनेक फलोंके बगीचोंसे देश हरा-भरा बन गया है। नये ढंगसे अनेक प्रकारकी फसलें उपजायी जाती है। लोग खेतीमें अब काफी दिलचस्पी लेने लगे हैं। यहां तेल कोयले, सोने,शीशे, पारे, गंधक चूने, ऐरीमनी आदिकी बड़ी बड़ी खानें हैं। नये नये कल कारखानोंके खुल जानेसे देशकी कायापलट हो गई है।

सोवियत एशियायी राष्ट्रोंकी उन्नति दिन दूनी रात चौगुनी हो रही है। सोवियत यूनियनकी पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा ये राष्ट्र और उन्नत एवं समृद्ध होंगे। क्या भारत इन भागोंकी प्रगति तथा उन्नतिसे सबक नहीं सीखेगा?

रानी बिटिया

लेखक—रामलाल, बी० ए०

वह अकेला था।

सन्ध्या अधिक देर तक न ठहर सकी। अन्धकार मौतके सिपाहीकी तरह बढ़ता चला आ रहा था। चारों ओर मैदानही मैदान दीख पड़ता था, बीच बीचमें जामुन और पलासके बन, पतले नाले और पथरीली जमीनको छोड़ कर और किसीकी परछाईं तक न दीखती थी। आमी नदी वेगसे बह रही थी, उसने लोगोंको कहते सुना था—वह नाकों का घर है। नाव घाट पर कभी की लग चुकी थी, मल्लाह हुक्का चिलम सम्हाल कर घर निकल गये थे, उस मरघट पर लोग दिनमें भी जानेसे डरते थे। उसने आसमानकी ओर देखा, अबाबीलका एक गिरोह उड़ा चला जा रहा था, उसके जीमें जी आया, कामेश्वरने रामका नाम लिया। थोड़ीही दूर पर एक छोटी सी बस्ती थी, डूबतेको तिनकेका सहारा मिल गया।

मकान और झोपड़ियोंके चिराग जल उठे। वह चलता गया, किसकी ताकत थी उसे चलनेसे रोक दे? किसका मजाल था उसे टोक दे?

उसने मनही मन कहा—यदि थोड़ी सी और पी ली होती तो सूनी रात न खटकती। उसका मतलब शराबसे था। उसने देखा गांवमें चहल-पहल है। देव-मन्दिरके काले शरीर पर अभी कलही सफेदी की गयी थी। आज उत्सव हो रहा था। उसने देखा त्रिकोण मण्डप और ठहर गया।—'शराबी मन्दिरमें जा सकेगा, भगवानसे बातें कर सकेगा? दुनियां तो उसे पापी ही कहेगी', ये सवाल उसकी चिन्ताके विषय थे।

उसने कहा—'देवताओंके भी भाग्य फिरते हैं, और सीवानके पत्थर पर बैठ गया।

माघका कड़ा जाड़ा कलेजेको कंपा रहा था, ओसके तूफानी दौड़ेमें बिना ओढ़ने-बिछौनेके बाहर निकलना बला मोल लेना है।....कामेश्वरके हाथपैर ठिठुर रहे थे लेकिन अकड़ कर बैठे रहनेमें ही उसने अपना गौरव और सन्मान समझा।

....देवताकी आरती होने लगी। घण्ट और घड़ियाल बज उठे। 'जय जय सियाराम' की गगन-भेदी ध्वनि कानोंके रास्तेसे मानस लोकमें उतर कर हलचल पैदा करने लगी। उसने कहा—भगवान सबके हैं। पाप और पुण्य अपने विचारों के फल हैं। आत्म सम्मानने कहा—वह भी तो आदमी हैं। सहसा उसे याद आ गया।

जाहिद शराब पीने दे

मसजिदमें बैठ कर।

या वह जगह बता दे,

जहां पर खुदा न हो।

इस तरह शराबकी वकालत करते-करते वह मन्दिरकी पहली सीढ़ी तक आ गया। आंखें चार हो गयीं। मीना नाच रही थी। मन्दिरमें पढ़े लिखे लोग भी थे। जमींदार लीलाधरका आस-पासके जवार में बड़ा नाम और रोब था। हाकिम हुक्काम भी इस उत्सवमें सम्मिलित थे। नाच उतार-चढ़ावपर ही था कि जमींदारके बूढ़े दरवानने कहा — भइया, बाहर खड़े रहनेसे भीतर ही बैठ जाना अच्छा है।' कामेश्वरने उधर कान ही न दिया।..... तबलेकी धीनधीनाहट, मंजीरेकी टनटनाहट और पायलोंके छन-छनन-छूममें उसे उतना ही रस मिल रहा था जितना भक्त भगवानके संकीर्तनमें, चकोर शशिके अनवरत अवलोकनमें, बादल बिजलीके सरस आलिंगनमें और कवि कविता पढ़नेमें पाता है।

मीना कौन है?'

भले घरकी लड़की और नाचनेवाली की सन्धि:सी उसने कामेश्वरके तन-मनपर जादू डाल दिया। वह साहित्य रसिक भी था। ऊंची कक्षामें साहित्यकी और उसकी विशेष रुचि थी। उसे शैवकवि विद्यापति के सरस स्मरण और शर्माके चण्डीदास की मानसिक वेदनाने विकल कर दिया। देवता और उसके बीचमें मीना दीवार सी खड़ी थी। उसने कहा .....इसी तरह महाकवि विद्यापतिने पहले पहल मिथिलाके रमणीय देव-महलमें 'लखिमा' को देखा था, चण्डीदासने रामीके रूप-सागरमें गोते लगाये थे। ..... भीड़ खिसकती जा रही थी। वह गुनगुना रहा था,—

'प्रेम पिरित कै रूप बखनइत

तिले तिले नूतन होइ।'

जानेवालोंमें कुछ लोगोंने कहा कहीं वह पागल है। कुछ मनचले, छैल-चिकनियोंने संकेत किया वह मीनापर मरने आया है। .....मीनाने उसे घायल कर दिया था, लेकिन साथ ही साथ जमींदार लीलाधर की लाड़िली कन्याके नयन बाणोंने उठती सी जवानीके जहरके उसपर चोट की।

जाते जाते देवगढ़के जमींदार लीलाधरने कह ही डाला — 'आप बाहर ही खड़े रह गये।' उनके साथ मीना और नीरजा दोनों थीं। उसे ऐसा लगा कि मीना नाचने गानेवाली नहीं है। फिर भी वह उसके लिये कुतूहल ही थी। कण्वके आश्रममें शकुन्तलाने, प्रास्परोके वनवास में मीरान्डाने दुषयन्त और फर्डीनैन्डका जिस तरह अभिनन्दन किया था, उसी तरह नीरजाने उसके मनको अपने वशमेंकर लिया। उसने अनुभव किया पहली जादूगरनी है तो दूसरी देवी हैं। नीरजाके अगले कदम यही कह रहे थे,

कागदपर लिखत न बनत, कहत संदेश लजात, कहिहै सब तेरो हियो, मेरे हियकी बात। सबके सब चले गये। रह गया जमींदारका बढ़ा दरबान बंशराज। उसने साफ- साफ समझ लिया कि नवागन्तुकने रानी बिटियापर मायाजाल फैला दिया है वह नीरजाको सोलह सालसे जानता चला आया था।

उसने धीरे धीरे कहना आरम्भ किया 'भइया' आज रातको इस गरीबके हीघरपर आराम कर लो।' पुजारी रामदासने भी कनखियोंसे स्वीकृति दे दी। मन्दिरके दरवाजे बन्द हो गये। रातके दस बजे थे। जाड़ेमें भी कभी कभी पश्चिमी हवाके कोप

से बस्ती गोरखपुर और आजमगढ़के जिलोंमें जल-दूतोंकी कृपा दृष्टि हो जाती है।....सबेसे ही बादलोंने आसमानके दरवाजोंसे झांकना आरम्भ कर दिया था। सूरज देवता कहीं छिपे थे और पश्चिमी दिशाके तीखे बाणोंसे जीव-जन्तु सबके सब विकल थे। जमींदार लीलाधरके दरवाजे के ठीक सामने एक छोटा सा बगीचा था। दो चार केलेके पेड़, सात आठ पिछले साल के लगे अमोले, और तेरह-चौदह गमले ही उसकी शोभा बढ़ानेके लिये काफी थे। लीलाधरकी उमर ढल चुकी थी, नीरजा उनकी एकमात्र सन्तान थी, बाग- बगीचों से ही वे पुत्रकी साध पूरी कर लिया करते थे।.... मीना और नीरजा दोनोंने जीवन के सोलह बसन्त देखे थे। आज दोनों बाहर निकलकर बगीचेमें टहल रहीं थीं। बंशराज पहरेपर था। मैंने तो समझा देव लोकसे दो देवियां उतर आयीं हैं' बंशराज ने बड़े प्यारसे दोनोंकी पीठ थपथपा दी। उसका कहना ठीक था दोनों ऐसी लगती ही थीं, रतिन कामकी परीक्षा लेनेके लिये दो रूप धारणकर लिये थे। नीली साड़ियां बदनपर मचल रहीं थीं, काले केश पीठपर कटितट तक लटक रहे थे। कपोलोंपर ताजा खून दौड़ रहा था, आंखोंमें मादकता थी।

बंशराज कुछ सोच रहा था।

नीरजाने कहा —' दरवान काका, उदास क्या हो गये।'

मीनाने व्यङ्ग किया, 'घरपर दस दिन से बिना जान- पहिचानका, मेहमान ठहरा है, उसने ही कुछ खरी-खोटी कही होगी।'

'कितना अच्छा फल है !' नीरजाने बात बदल दी

'उसीको तो मैं देख रहा था' बंशराज ने सफेद गुलाब तोड़कर नीरजाके हाथमें रख दिया।

मीनाको फूलका इस तरह तोड़ा जाना अच्छा न लगा। बंशराजने कहा— यह फूल किसी कलीकी याद लेकर ही खिला होगा।

मीनाने कहा, 'कुछ नये मेहमानके सम्बन्धमें भी कथा-बार्ता हो जाय, काका।'

बंशराज कुछ खोया-खोया सा लगा।

'वह तो देवता है' उसने जबानकी लगाम ढीली कर दी।

मीनाने नीरजाकी ओर देखा और झेंपसे निगाह नीची कर ली मानो आसमानसे शशिकी किरण उझक उझककर धरतीपर अपनी विभाका मनोरम विस्तार देख रही हो। कमी केवल यही थी कि रात नहीं—दिन था।

"मैंने तो उसी दिन कह दिया था कि वह अच्छे घरका है और पढ़ा लिखा तथा सभ्य है।' नीरजाने मीनाका हाथ पकड़ लिया और कहा, 'दरबान काका, मीनाका मेहमानसे परिचय हो सकता है।

मीनाने नीरजाके गालपर हलकी चपत जमाकर कहा; दुनियां इसी तरह अपना मतलब निकालती है।' बंशराजको तो मानों खोया धन मिल गया।

उसने कहा, 'कामेश्वर भी तुम लोगों की बड़ी तारीफ कर रहा था। वह तो बड़े सरकारसे मिलनेवाला ही है।... अब उसके घरपर कोई नहीं बचा है। जब वह तीन सालका था, उसका चाचा उसकी एक सालकी बहिनको लेकर रंगून चला गया गया था और आजतक उसने खोज खबर न ली। विचारेने अपने पैरपर खड़ा होकर बी० ए० तक पढ़ लिया, विवाह कितने आये लेकिन उधर उसने अभी ध्यान ही न दिया। जमींदारी और खेतीबारी परिवार वालोंने दबा ली। मनिकौरा का ही तो रहनेवाला है। बड़े सरकारसे कुछ जमीन लेकर खेती करनेकी बात सोच रहा है।'

'रामकहानी पूरी हो गयी क्या....'मीना ने चलनेका संकेत किया।

'यह तो बहुत ही अच्छा होगा', नीरजाके सारे शरीरमें बिजली दौड़ गयी।

मीनाने कहा शहरवाले गांवमें आकर स्वच्छ वातावरण दूषित कर देते हैं। केवल खेतीपर ही कमर कसे रहते हैं।

'वह तो देखनेमें बड़े सीधे हैं, मैं पिताजीसे उनकी वकालत अवश्य कर दूंगी। लेकिन।' 'लेकिन ! रानी बिटिया ! बंशराज चौंक पड़ा। मीनाने बात काट दी —'अगर मगर वालोंका कुछ भी ठिकाना नहीं है।'

दोनों हंस पड़ीं।

'रानी बिटिया कितनी भली है !'बंशराज चलते बना। पहरेका समय पूरा हो गया था।

देवगढ़में रहते कामेश्वरको दो तीन साल हो गये। वह जमींदारकी आंखका पुतला हो गया और उसीके कारण बंशराजका भी उस छोटेसे गांवमें काफी सम्मान और पूजा होने लगी। मीना और नीरजा दोनों रात-दिन उसीके सम्बन्धमें बातें करती थीं। गांव तथा अड़ोस-पड़ोसके लोग उन दोनोंपर तरह-तरहके छींटे उछालते थे। अभी कुछ दिन पहले नीरजाकी बीमारी बढ़ गयी थी, वह उसे लेकर मीनाके साथ दवाके लिये शहर भी गया था, कुछ महीने उन तीनोंने शहरमें ही बिताये थे। कुछ लोग अनुमान भी करने लगे कि मीनासे उसकी शादी हो जावेगी।

रातके दस बज थे। गांवमें लोग आठ नव बजते बजते सो जाते हैं। दिन भरके थके-मादे मजदूरोंको रातमें ही थोड़ा-बहुत आराम करनेका मौका मिलता है। बूंदें पड़ रही थीं। आषाढ़की पहली रात थी। आसमानमें काले-काले मेघ चौकड़ी भर रहे थे, यदि दिन होता तो यह बात समझमें आ जाती कि किसी नये रामगिरि वासीका सन्देश अलका नगरीमें ले जाने की उनमें कितनी उत्सुकता थी। हवा झूम झूम कर महाकवि कालिदासके मेघदूतकी अभिनव भूमिका तैयार कर रही थी।.... जमींदारकी बैठकमें एक चिराग टिमटिमा रहा था। लीलाधर चौकी पर मसनदके सहारे उत्तान लेट कर पुजारी रामदासकी बात जो एक सादी कुरसी पर नींदसे मात रहे थे' बड़े ध्यानसे सुन रहे थे।

रामायण और महाभारत तथा भागवत पर रोज रोज कुछ न कुछ टीका टिप्पणी होती रहती लेकिन आजकी बातचीतका विषय कुछ और ही था।

"सरकार, रानी बिटियाका इस तरह बाहरी और अपरिचित व्यक्तिसे मिलते जुलते रहना अच्छा नहीं है। रही बात मीना की, उसे भी समझा बुझा दिया जायगा।"

"पुजारीजी, जो भी हो, मुझे उसकी सादगी बहुत ही पसन्द है।"

"सरकार यह बात तो सोलह आने ठीक है। लेकिन उसमें शराब पीनेकी आदत खराब है, न जाने वह रात-दिन किस शोक-सागरमें डूबा रहता है। अभी उसे कल ही मन्दिरमें देखा था, वह कुछ चिन्तित सा लगता था!'

जमींदार महोदय कुछ और सुनना चाहते थे कि नीरजाने भीतरसे आवाज दी-बड़ा खाना तैयार है।

दो चार दस रातें इसी तरह बीत गयीं। कामेश्वर भी कुछ कटा-कटा सा ही रहने लगा। मीना उससे मिलनेकी ताकमें रहती थी लेकिन कामेश्वरको नीरजासे ही अवकाश नहीं मिलता था। धीरे धीरे वैमनस्यका बीज बढ़ कर विष-वृक्ष हो गया। मीनाने कामेश्वरके सम्बन्धमें तरह-तरहकी बातें लीलाधरके कान में भर दीं लेकिन मनमें वह उसे अपना उपास्य देवता समझती थी। वह नहीं चाहती थी कि काकेश्वर नीरजाके हाथोंमें नाचा करे। उसे अपने सम्बन्धमें इतनी ही जानकारी थी कि उसके माता-पिता नहीं हैं और वह जमींदारकी रोटी पर पली है फिर भी उसने अच्छी तरह समझ लिया कि वह उसे अपनी लड़कीसे भी बढ़ कर जानता मानता है। कामेश्वर पर वह कुछ न्यौछावर कर सकती थी। उसे पता चल गया था कि गांवमें कामेश्वर अब अधिक दिनों तक न रह सकेगा। इधर मीना और नीरजा एक दूसरे पर खार खाने लगीं और उनमें घटती भी कम थी।

एक दिन तो मीनाने जमींदारको शाम होनेके बाद विश्वास दिला दिया कि किस तरह नीरजा और कामेश्वर दोनों बगीचेमें मिल कर बातें करते हैं। मन्दिर को पुजारीने तो दोनोंकी शिकायत करने का ठीका ही ले लिया था और इसी लिये मीनाकी उससे बड़ी पटरी थी। वह उसे लड़केकी तरह मानता था।

नीरजा और मीना दोनोंकी दोनों बदल गयी थीं।

रातके आठ बजे थे। वासन्ती पूनो की चांदनी आसमानसे छन कर देवगढ़के मन्दिरके शिखर पर अपनी पहली किरण उतार रही थी। ऐसा लगता था कि मन्दाकिनी शिवके जटा-जूटमें उतर रही है। प्रकृतिमें अनुपम मादकता थी। नीरजा और कामेश्वर मन्दिरके तीसरे छठ पर बैठे थे, आज उनका मिलन-मन्दिर यही था। जमींदार लीलाधर शिकार पर गये थे और बारह बजेके पहले उनके वापस आनेकी आशा नहीं थी। पुजारी रामदास भी मन्दिरमें नहीं थे। जलघड़िये अपने अपने काममें लगे थे। नीरजा और कामेश्वरके इस तरह मिलनेका यह पहला दिन नहीं था, वे इसी तरह कई बार मिल चुके थे, दोनोंमें पवित्र प्रेमका बीज अंकुरित हो रहा था।

'इस तरह हम लोग रोज मिला करें', कामेश्वरने नीरजाका हाथ अपने हाथ पर रख लिया, उसने कहा—'मैंने शराब तो उसी दिन छोड़ दी जब तुमने मेरे मन-मन्दिरमें प्रवेश किया। शराब-शराब! गांव वालोंने नाकमें दम कर दिया है।'

'आप शराब पीते ही क्यों हैं?'

'क्या शराब पीना पाप है?'

'न पीनेवालोंने तो ऐसा ही कहा है,' नीराजाने गम्भीरतासे कहा।

'लेकिन शराबका प्याला न पीने वालों के अधरोंसे बिना उनकी इच्छाके नहीं लग सकता! और पाश्चात्य साहित्यकार लम्बने कहा है कि किसीको पीनेके लिये विवश नहीं किया जा सकता।' कामेश्वर कुछ कड़ा पड़ गया। उसने कहा—'उमर खय्यामने जिस दिन अपनी जवानीको कद करना चाहा, शराबने ही उसका साथ दिया था।'

'तो आप कैद करनेका सपना देख रहे हैं?' वह चुप थी। फिर नीरजाने कुछ जवाब न दिया लेकिन उसके हाव-भाव संकेत कहते थे कि कामेश्वर ठीक ही कह रहा है।

इतनेमें सीढ़ियोंपर खटपटकी आवाज होने लगी। दोनों उतर ही रहे थे कि मीनाने पुजारी रामदासका हाथ पकड़कर कहा कि बात बहुत बढ़ती जा रही है।

नीरजा और कामेश्वर मन्दिरसे दूर चले गये थे।

कुछ दिनोंके बाद बंशराजने कहा—'भगवानने बहुत अच्छी जोड़ी बनायी है।'....दिनके दो बजे थे। होलीके केवल तीन-चार दिन बाकी रह गये थे। प्रकृतिके नवीन वीनके तारोंका स्वर गुन-गुना रहा था।

'फागुनके दिन चार होली खेल मना रे।' बगीचेमें ही नीरजा, मीना तथा सारे परिवारके लोग बैठे थे। कामेश्वरने कहा 'इन हरी-हरी लतिकाओंपर अबीर और गुलालकी सिन्दूरी आभा फूटनेसे जड़ और चेतनमें नया रङ्ग छा गया है।'

मीनाने कहा, इस तरहका अलङ्कार विवेचन देव और मतिरामके साथ उठ गया। अब आप नये अध्यायके पेज न खोलिये।'

इन बातोंसे जमींदारको कुछ आनन्द मिला। लेकिन बंशराजके पहले शब्दवेधी बाण उसके कलेजेको छेद रहे थे। कामेश्वर भी तो उन्हींके टुकड़ोंपर पल रहा था। एक अदने आदमीसे इतने बड़े जमींदारकी शादी हो,—यह असम्भव था।

फिर भी उसने रङ्गमें भङ्ग नहीं करना चाहा। कामेश्वर स्वयं उठ पड़ा। एक-दो तीन, थोड़ी ही देरमें सबके सब उठ गये।.....

....पुजारीने नव बजे रातको आकर कहा 'सरकार वह चला गया।' 'आपने बहुत बड़े इनामका काम किया है।'

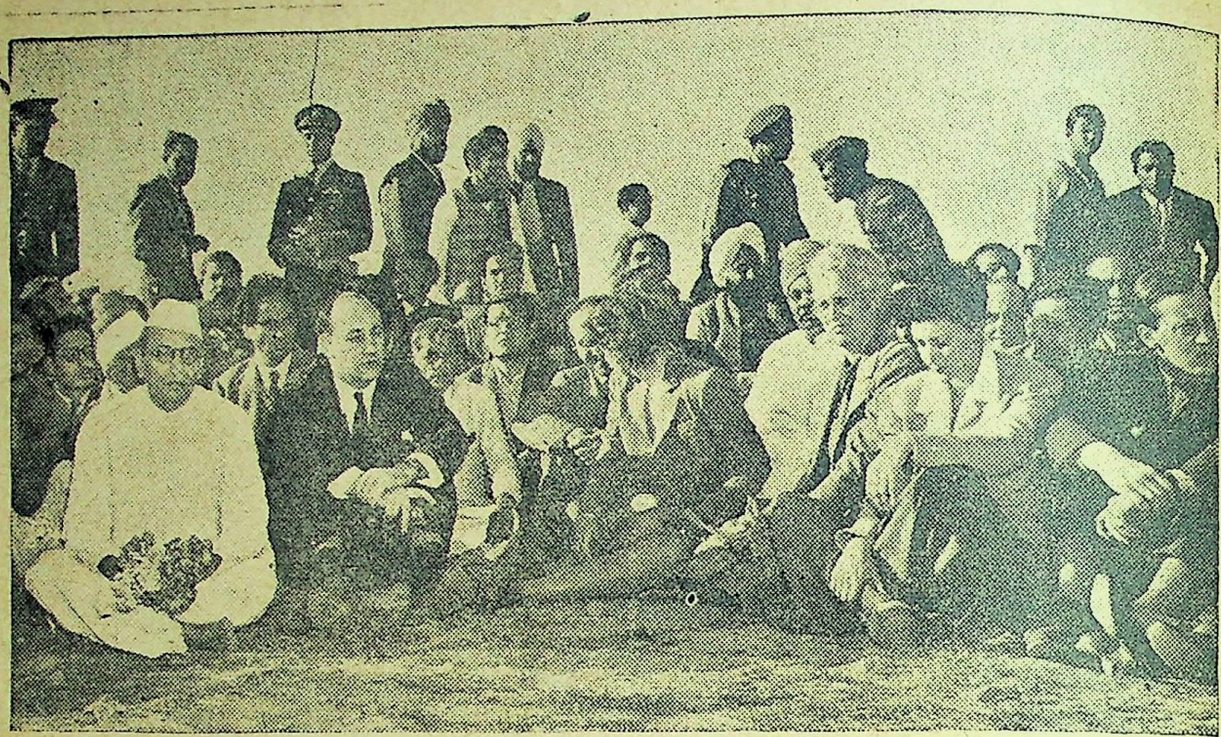

जमुनाके किनारे चिता-दाहके समय बम्बईके प्रधान मंत्री श्री खेरके साथ बैठे हुए जन समूहका एक दृश्य।

मगर स्टेशन उस गांवसे निकट था। गोरखपुरसे रातको एक ही गाड़ी खुलती थी। पुजारीको विश्वास हो गया था कि रात ही की गाड़ीसे कामेश्वर कहीं दूर चला जायगा। उसने नीरजा और मीनासे सम्बन्ध तोड़ लिया। मीना चाहती थी कि वह नीरजासे अलग रहे लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि वह उसे आंखोंसे ओझल करनेके पक्षमें थी।.... मीनाको रातमें ही पता चल गया लेकिन उसने नीरजाको छेडना उचित न समझा।

सबेरा होते ही यह बात सारे गांवमें फैल गया।....नीरजा कामेश्वरके कमरेमें गयीं, वह बाहरकी ही कोठरीमें रहता था। कमरा खाली था मेजपर नीले लिफाफे में उसीके नामकी एक चिट्ठी थी, वह पढ़ने लगी, उसके मस्तिष्कमें आंधी चलने लगी, बगीचेके अमोले तड़-तड़ टूटने लगे वह पढ़ रही थी।

'मैं जा रहा हूं, यह नहीं जानता, किधर, किस ओर, लेकिन बहुत दूर, उस जगरपर केवल मैं रहूंगा और रहेगी तुम्हारी कभी न भूलने वाली याद। मिलना इसीलिये होता है कि फिर मिलना बाकी न रह जाय।'

नीरजाके नयनोंसे मोती झरने लगे। मीना आ गयी, दालानमें ही लीलाधर महोदय कुछ चिन्तितसे बैठे थे। पुजारी रामदास पाठ कर चुके थे।

लोगोंने देखा—वंशराज आ रहा है। वह अपने आपेमें नहीं है।

उसने आते ही लीलाधरसे कहा, सरकार, बहुत बुरा हुआ। एकाएक पुजारीने कहा, 'क्या ?'

"तुम्हारा सिर'

लीलाधर चुप थे। उसने कहा 'यदि मैं जानता कि तुम मीनासे मिलकर उसको निकाल बाहर ही करोगे तो उसे मैं अपने घरसे कभी नहीं जाने देता। हीरा था, हीरा! राजपूतका लड़का था।

लीलाधरने कहा 'राजपूत।'

"हां ठाकुर, वह पड़ोसका ही था, मनिकौराके बड़े जमींदारका बेटा था।'

पुजारी रामदास पीला पड़ गया।

लीलाधर महाशय रामदासकी दशा देखकर और भी घबड़ा गये।

पुजारीने कहा सरकार देर हो गयी। वर न मिल सकेगा। मीना मेरी सन्तान नहीं। वह तो कामेश्वरकी ही बहिन है। मैंने बना बनाया काम बिगाड़ दिया। और फिर उसने नीरजासे कहा, 'बिटिया भूल हो गयी।'

मीना लीलाधरकी ओर देखने लगी। उसके मनमें विषाद और हृदयमें आनन्द था।

नीरजाके गुलाबी गालोंपर शयनमकी रेखायें अबतक न मिट सकीं।... रानी बिटियाने शादी न की।

देवगढ़का बिशाल मन्दिर देखते ही दूर देशके राही वेदनाके बोझसे दब जाते हैं और अड़ोस-पड़ोसके लोग कह उठते हैं—'वह रानी बिटियाका मन्दिर है।'

— —

अंग्रेजी चित्रपट

श्री कुमारी मृणालिनी राय लन्दन

लड़ाईसे पहले भी इंगलिस्तानने 'बड कम्पेनियन्स', ब्बैकमेल,'पिगमेलियन, 'ब्रैक हालीडे,' 'थिंग्स टू कम' आदि कई अच्छी फिल्में बनाई थीं, किन्तु लड़ाईसे पहले अंग्रेजी फिल्म-कम्पनियोंका मुख्य ध्येय फिल्म बाजारमें अमरीकाका मुकाबला करनेके लिये कम दामोंपर अधिकसे अधिक फिल्में बनानेका था। अच्छी और बुरी फिल्म की पहचान रखनेवाले जानते हैं कि इस बातका असर फिल्म कलापर क्या होता है। ऐसी फिल्में बनानेवाले अधिकतर हालीवुडके उच्छृङ्खल और सनसनीपूर्ण तरीकोंकी ही नकल करते थे, किन्तु उनमें अधिक सफल न हो पाते क्योंकि हालीवुडकी सनसनीपूर्ण ये फिल्में जीवनकी कितनी ही झूठी और और कृत्रिम झलक क्यों न दें, हालीवुडके लोगोंके पास मनमाना खर्च करनेके लिये पैसे की कमी नहीं है। किन्तु अंग्रेजी फिल्मकारोंके पास, विशेषतया पिछली लड़ाईके बाद, इतना पैसा न था कि वे उसे एक एक फिल्मपर पानी की तरह बहा सकें। नतीजा यह था कि यद्यपि १९३७ में इङ्गलैंड सालभरमें २२५ के करीब फिल्में बना सका था दुनिया भर और इङ्गलिस्तानके लोग भी अधिकतर अमरीकी फिल्मों को ही देखना पसन्द करते थे।

इस महायुद्धका असर अंग्रेजी फिल्म जगत्पर कुछ अजीब ही हुआ। लड़ाईसे पहले देशभरमें बाइस स्टुडियो और ६५ साउण्ड-स्टेज थे। लड़ाई शुरू होनेपर देश भरमें केवल नौ स्टुडियों और तीस साउण्ड स्टेज रह गये और १९४२ में केवल साठ फिल्में बनी। बहुतसे स्टुडियो बमवारीसे नाकाम हो गये थे, कुछेक को सरकारने अपने गोदामों और लड़ाईके लिये अन्य उपयोगी काम-धन्धोंके लिये अपने हाथोंमें ले लिया था। मशीनें, कपड़े, रङ्ग फिल्मी कारीगर और तो और कलाकार तक मिलना असम्भव था।

किन्तु बमबारी और लड़ाईसे देशमें अन्य कितने ही अन्य परिवर्त्तनोंका असर इङ्गलैंडकी जनताके दिल-दिमागपर हुआ था। दिन रात अपनी आंखोंके सामने सच्च और गहरे सुख-दुःख देखने वाली जनता चित्रपटपर सनसनीपूर्ण और अयथार्थ जीवनके चित्रोंको नापसन्द करने लगी। बमबारी और लड़ाईके कई एक दर्दनाक, भयानक और यथार्थ दृश्यों को देख चुकी जनता, बन्धु-बान्धवों, प्रियजनोंसे मिलन वियोगके हृदयको छू देनेवाले सच्चे दृश्य देख चुकी जनता फिल्म-जगतसे अयथार्थ और कृत्रिम न मांग कुछ और मांगती थी वह चीज जो उनके जीवनके अधिक निकट हो, वह चीज जिसमें वे विश्वास कर सकें। जनताकी इस मांगको अंग्रेजी फिल्म जगतके कलाकारोंने समझा और लड़ाईके दौरान ही में इंगलेण्डके फिल्म जगतमें एक काफी बड़ा परिवर्त्तन आया। विवरणात्मक फिल्मोंमें तो इङ्गलैंड पहले ही से नाम पैदा कर चुका है। बल्कि फिल्म जगतका विवरणात्मक फिल्म तो इङ्गलैंड ही की देन है। लड़ाईसे पहले भी घरोंकी समस्या और उद्योग-धन्धों की समस्यापर तथा 'ड्रिफ्टर्स,' 'जू एण्ड यू,' स्पीड दि प्ले चिल्ड्रन एट स्कूल दि लण्ड-नर्स आदि प्रकृति-निरीक्षण, शिक्षा-संबंधी देशकी जनता की आम जानकारीके लिये हर साल उत्तमसे उत्तम फिल्में बन रही थीं। किन्तु लड़ाईके जमानेमें तो यह फिल्मे जनताके प्रतिदिनके जीवनके बिल्कुल करीब आ गयीं। इन फिल्मोंने जहां एक ओर इङ्गलैंडके लोगोंको बमोंसे लगी आग बुझाने और आत्मरक्षाके साधन पुनःसिखाये और युद्धमें वीरता दिखानेवाले का कारनामें दिखाकर उनका साहस और धैर्य कायम रखनेकी कोशिश की। दूसरी ओर इन्होंने देशके भिन्न भिन्न व्यवसायमें काम करनेवालोंकी जिन्दगीको उनकी उलझनों, तकलीफों, परेशानियों और उनके काम-काजकी महत्ताको देशकी जनताके सामने सच्चे रूपमें प्रकाशित किया। विवरणात्मक फिल्मोंकी एक बहुत बड़ी खूबी यह है कि इन फिल्मोंमें भाग लेनेवाले लोग उसी व्यवसाय या उसी परिस्थितिमें काम करनेवाले या रहनेवाले लोग होते हैं जिनके बारेमें यह फिल्म बनायी जाती है।

ब्रिटेनकी अत्यन्त मशहूर फिल्म स्टार जीन सिमन्स

यह फिलस्तीनकी पियानो बजाने वाली शुलामिथ शाफिर है

कहानी फिल्मोंमें भी इंगलैण्डमें लड़ाईके जमानेमें 'नार्मन कोवार्ड' की 'ब्रीथ एनकाउण्टर' 'इन विछ वी सर्व' 'वे टू दिस्टार्स' 'मिलियन्स लाइक अस' 'पिम्पर्नल स्मिथ' और 'वाटरलू रोड' सी फिल्में बननी शुरू हुई। लड़ाईके जमानेमें जनता और सरकारकी ओरसे जिस प्रकारकी फिल्मोंकी मांग शुरू हुई थी, उन्हें बनानेके लिये अंग्रेजी फिल्म-जगत के लोगोंने जे० बी० प्रीस्टले और डब्ल्यू० एच० आंडेन जैसे लेखकों और कवियों-से लेकर देशके उद्योगों और ललित कलाओंके उत्तम कलाकारोंकी सहायता मांगी थी जिसका परिणाम भी उत्तमही हुआ। अंग्रेजी विवरणात्मक और कहानी-फिल्म आवाज चित्रकला अभि-नय और फिल्म-कलासे सम्बन्धित अन्य पहलओंमें लड़ाईसे पहले बनी फिल्मोंसे कहीं अधिक अच्छी बननी शुरू हुई। अब अंग्रेजी फिल्ममें चाहे वह विवरणा-त्मक फिल्म हो, चाहे कहानी फिल्म काफी हद तक वह पूर्णता, सच्चाई और सौन्दर्य था, जो किसी सुन्दर चित्र या किसी अच्छी कविता या कहानीमें होता है। फिल्म-कलामें इन नये तजुर्बों और उनके उत्तम नतीजोंको देख जे० आर्थर रेंक जैसे फिल्म-मालिकों, इंगलैण्डकी फिल्म-कम्पनियोंके डाइरेक्टरों और प्रस्तुत कर्त्ताओंने यह अनुभव किया कि यदि इंगलैण्ड को फिल्म जगतमें अपना कोई विशेष स्थान रखना है, तो वह अपने देशकी जनताके सामने और अन्य देशोंके लोगोंके सामने भी इंगलैण्डकी उत्तम कलाके रुपहीमें रखा जा सकता है। नतीजा यह है कि जहां विवरणात्मक फिल्कोंमें गृह समस्या और औद्योगिक योजनाओंकी समस्याके बारेमे 'लेण्ड आफ प्रामिजेज' आदि उत्तम फिल्में बनी हैं, वहां कहानी फिल्ममें बर्नार्ड शाकी 'सीजर एण्ड क्लियोपेटा' और डिकेसकी 'ग्रेट एक्सपेक्टेशन्स' नोएल कोवार्डकी 'ब्रीफ एनकाउंनटर' 'ग्राहम ग्रीनकी मैन विदिन' वगैरह अच्छी कृतियां भी प्रस्तुत हुई हैं। संगीत नृत्य गायन और अन्य म-नोरजनकी फिल्में भी बनती हैं, किन्तु मै समझती हूं कि इन संगीत नृत्यकी फिल्मोंका स्टेण्डर्ड भी अमरीकी नाचगानकी आम फिल्मोंसे बेहतर ही है।

फिल्मी दुनियांमें नित नये तजुर्बे होते रहते हैं और यह देखनेका अवसर लन्दन से शहरमें, जहां रूस, फ्रांस, हालेण्ड, जर्मनी, नार्वे, चेकोस्लाविया आदि सभी देशोंकी उत्तम फिल्में देखनेका अवसर मिलता है फिल्मको कलाकी दृष्टिसे देखने वाला व्यक्ति नयासे नया तजुर्बा कर सकता है। हालेन्डके प्रसिद्ध फिल्म प्रस्तुतकर्त्ता कार्लड्रेयरकी बनाई फिल्म 'डेआफ राथ देखकर यह महसूस हुआ कि फिल्म सुन-नेकी चीज कितनी कम रह गई है और उसकी खूबी, उसका सौंदर्य केवल देखने में ही है। यही चीज मैंने बहुत हद तक अभी हाल ही में बनी अंग्रेजी फिल्म आड मैंन आउट में पाई।

फिल्म—जगत में इंगलैण्ड अब फ्रांस और रूसकी बराबरीका दावा करने लगा है। इसका एक कारण यह है कि यद्यपि इंगलैण्डका फिल्म धन्धा अधिकतर जे आर्थर रेंक जैसे दो-तीन आदमियोंके हाथ में ही है उनके भिन्न भिन्न स्टुडियोमें काम करने वाले डाइरेक्टरों और प्रोड यूसरोंको इतनी स्वतंत्रता है कि वे एक दूसरेसे, हर प्रकारसे उत्तम फिल्म बनानेके मामलेमें होड़ लगाये रहते हैं।

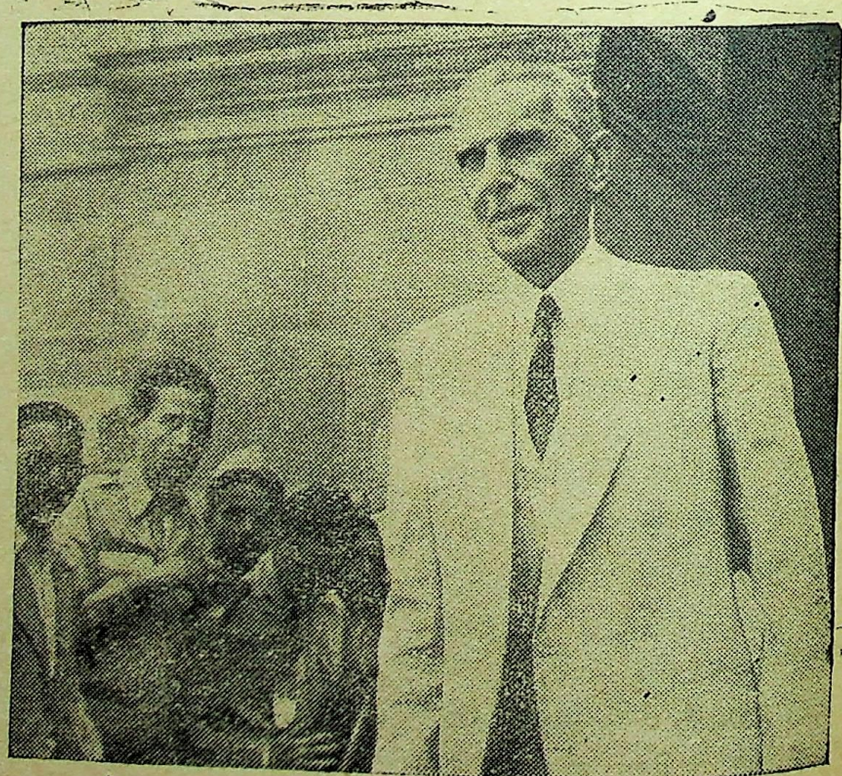

कायदे आजम जिन्ना जो पूर्व बङ्गाल और उत्तर पश्चिम फ्राण्टियरका दौरा करने वाले हैं

विकल !

क्या बताऊं मन, विकल क्यों हो गये।
दो सफल जीवन, विफल क्यों हो गये॥
साधना अपनी अधूरी हो सकी,
अर्चना अपनी न पूरी हो सकी,
सुधि-सुधाके कण, गरल क्यों हो गये।
क्या बताऊं मन, विकल क्यों हो गये॥
फूल खिलनेके प्रथम ही गिर गये,
मन-गगनमें वेदना-घन घिर गये,
प्रकृति-परिवर्त्तन प्रबल क्यों हो गये।
क्या बताऊं मन विकल क्यों हो गये।
आज क्योंकर उर-कमल कुम्हला गये
बिन्दु सिञ्चनके लिये दो आ गये,
इन्दुसे आनन सजल क्यों हो गये।
क्या बताऊं मन विकल क्यों हो गये॥
आज नयनोंकी तरलता खो गयी,
आज वह मादक मृदुलता खो गयी,
आज अवगुण्ठन, अचल क्यों हो गये।
क्या बताऊं मन, विकल क्यों हो गये॥

—शील चतुर्वेदी।

उत्तम क्वालिटीकी लीवर घड़ियां

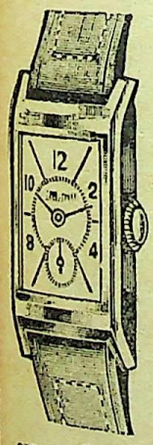

अत्यधिक सस्ती कीमतोंपर स्विटजरलैण्ड की बनी हुई, निहायत सुन्दर और आधुनिक आकार, ठीक समय देनेवाली। हर एक घड़ीकी गारण्टी ३ साल। क्रोमियम केस गोल या चौकोर साइज को १८) सुपीरियर २०) बेस्ट २५) रेक्टंगुलर और टोनिओ आकारकी चित्र जैसी घड़ियां उज्वल क्रोमियम केस, ५ ज्वेल ३८) रोल्डगोल्ड ७ ज्वेल ५८) क्रोमियम केस १५ ज्वेल ६५) रोल्ड गोल्ड १० साल की गारंटीका केस ८३)। प्लास्टिक पट्ट सहित। डाक खर्च और पैकिंग माफ।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V.C.)
ऐशबाग — लखनऊ

मनुष्यके पास समृद्ध बनाने के लिये अनेकों सुख सामग्री और अगाध सम्पत्ति भले ही हो परन्तु सुन्दर स्वास्थ्य और सम्पूर्ण शक्ति के बिना उसका जीवन दुखमय और कठिन हो जाता है। जीन सोन गोल्ड टानिक पिल्स पुरुष जातिको निर्बलता से बचाकर शुद्ध वीर्य का विकास कर उसमें नवीन शक्तिका संचार कर उन्हें पुष्ट बनाती है। आठ दिन के लिये ४८ गोली की एक शीशीका मूल्य ५) वी० पी० खर्च अलग। परहेजकी आवश्यकता नहीं होती और प्रत्येक मौसम में सेवन किया जा सकता है।

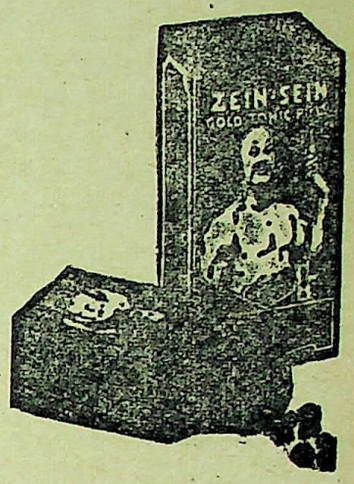

चाईनीज मेडिकल स्टोर स्थापना १९२०

हेड आफिस—२८ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट बंबई

शाखायें—चार रास्ता, अहमदाबाद १२, डेलहौसी स्क्वायर कलकत्ता, नया बाजार, दिल्ली

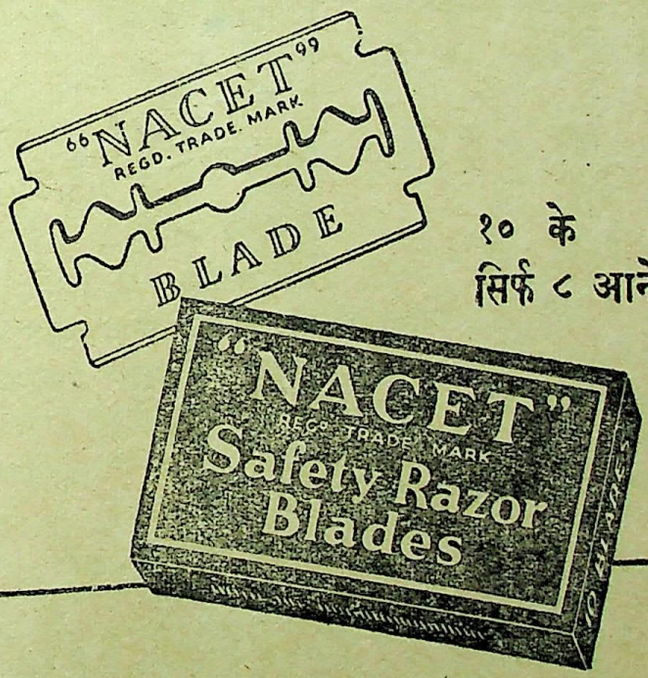

१० के
सिर्फ ८ आने!

"NACET"

"नेसेट"

अल्प मूल्य में परिपूर्ण हजामत देता है!

REGD. NO. C 2229.

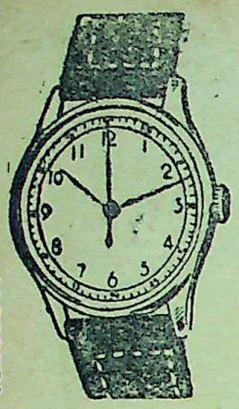

A NOVELTY WATCH 'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage as. 12. Free to 2 watches.
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM

MONSOON SETS IN Anophelis-breeds..

यह आश्चर्यजनक औषधि मलेरिया बुखारके लिये रामबाण है अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियासे कष्ट हो तो इसका सेवन करें। यह लाभप्रद एवं कम खर्चीला है।

PANCHATIKTA Kasaya

KAVIRAJ N. N. SEN & CO. LD. CALCUTTA

पांव के छाले और घाव का दर्द शीघ्र दूर होता और भरता है

जम्बक से लखों लाखों व्यक्तियोंको चार प्रकारसे आराम मिलता है इस श्रेष्ठ मलहम का विशुद्ध वनस्पति तेल शीघ्र ही लोमकूपोंमें प्रवेश कर थकावट और दर्दको आराम करता, जलन और सूजनको दूर करता है सभी प्रकारके चर्म रोगों और घावोंकी चिकित्साके लिये जम्बक सर्वश्रेष्ठ है—हमेशा एक डिब्बी अपने पास रखें।

जम्बक व्यवहार करें

Zam-Buk

विश्व विख्यात वनस्पति मलहम

पशु चर्बी रहित होने की गारण्टी

एजेण्ट्स : स्मिथस्ट्रीट एण्ड कं० लि० इण्टाली, कलकत्ता

अहः हः 'लालशर' तोमेरे लिये अमृत है

लाल-शर

(लाल शरबत)

बच्चोंको मोटा, ताजा, स्वस्थ और प्रसन्नचित रखने की प्रसिद्ध मीठी दवा

सब जगह मिलता है।

डाबर (डा. एस. के. बर्मन) लि. कलकत्ता

नं० ३

सम्पादक—देवदत्तमिश्र। ७४ घमतल्ला स्ट्रीट, स्थित इलेस्ट्रेटड इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

सचित्र

विश्वामित्र

"जुल्फे काश्मीर" हेअर आयल

स्त्रीकी विजय सौन्दर्यमें है और सौन्दर्यका भेद है उसके बाल। **जुल्फे काश्मीर हेयर आईल** स्त्रीके बालोंको घने, लम्बे मजबूत और चमकीले बनानेमें अद्वितीय है। बाजारी तेलों पर धन नष्ट करने की बजाय जुल्फे काश्मीर हेअर आईल सेवन कर। यह एक शताब्दी से भी अधिक ख्याति प्राप्त है, आप सदव इसे ही पसन्द करेंगे।

काश्मीर परफ्यूमरी वर्क्स
कुतुबरोड, दिल्ली

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

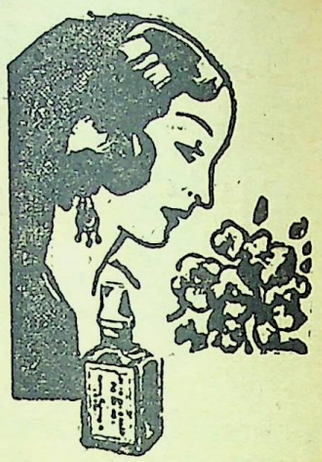

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी हैं। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेको शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

सुई फन-सो (तरल)

पानी की तरह पतली दवाई है और एक शीशी से लगभग ६० बार लगाया जा सकता है। उसके उपयोग के लिये मुलायम ब्रश भी रखा हुआ है। प्रत्येक युवक, अधेड़ और वृद्ध पुरुष के लिये स्तंभन रुकावट को वास्तवमें अक्सीर है। इस दवाई की विशेषता यह है कि इसके उपयोग करने वाले दम्पति को मालूम भी नहीं होता है कि दवा लगाई है इस दवा का नियमित उपयोग करना भी आवश्यक नहीं है परन्तु एक ही शीशी के उपयोग के उपरांत बिना दवा के ही शरीरमें प्राकृतिक शक्ति का संचार होता है। १ शीशीका दाम १२) वी० पी० खर्च अलग।

चाईनीज मेडिकल स्टोर स्थापना १९३०

हेड आफिस—२८ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट बंबई

शाखायें—चार रास्ता, अहमदाबाद १२ डलहौसी स्कायर कलकत्ता, नया बाजार दिल्ली।

विश्वमित्र

सम्पादक—
देवदत्त मिश्र

वर्ष—३० संख्या—५८ ता० ३ मार्च १९४८ MARCH 3, 1948. मूल्य =) वार्षिक ६)

चला गया....

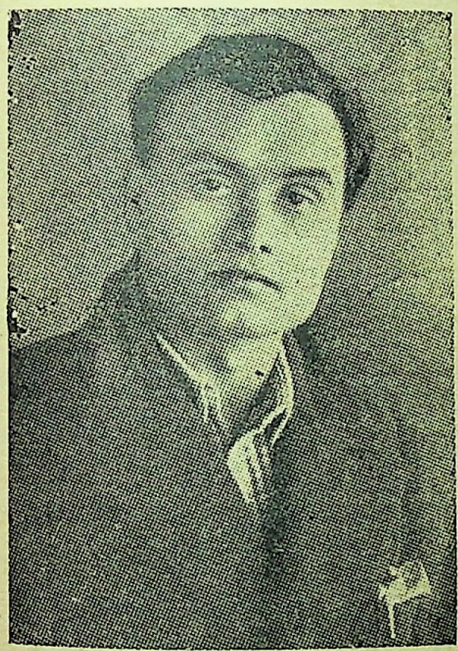

कवि

देवोंका देवत्व बढ़ा पर मनुज भूमिपर रोया !
भू से बिछुड़ा आज मरण सागर पी जाने वाला
चला गया भू से अनयों की मीत ढहाने वाला
चला गया वह पुण्य-परार्थी, आहत जगका त्राता
चला गया मानवताको चैतन्य बनाने वाला
चुक आया था स्नेह व्योमके रवि शशिका—तारोंका
चुक आया था नीर मेघ-मालाओंकी धारोंका
शायद सूख चली थी गगन-शैलजा-अमृत चुका है !
देवोंका देवत्व बढ़ा पर मनुज भूमिपर रोया !
मद-मत्सर-विरहित तेजोमय, जीवन-कला-प्रणेता
चला गया भू से शिवताका—ईश्वरताका नेता
पहले आजादीके सपनेको ध्रुवसत्य बताया
जाता अब हिंसक पशुताको प्राणोंकी बलि देता
रक्त-तृषित भाईको अपना खून पिलाने वाला
इस अध बने राष्ट्रकी जड़में शक्ति सजाने वाला
चला गया—इतिहास न कर सकता था अधिक प्रतीक्षा!
देवोंका देवत्व बढ़ा पर मनुज भूमिपर रोया !
चला गया जिसकी प्रतिमा थी मन्दिरमें मन मनके
चला गया विश्वास बना जो श्वासोंमें जन जनके
चला गया जिसके वन्दनके स्वर स्थिर कभी न होंगे
चला गया जिसकी श्रद्धासे दीप जले तन तनके
चला गया वह विभा खेलती जिसकी किरण-मुखोंपर
चला गया जिसकी करुणा छायी थी जगत-दुखोंपर
चला गया जिसके बलपर जूझा यौवन अचलोंसे !
देवोंका देवत्व बढ़ा पर मनुज भूमिपर रोया !
चला गया सङ्कल्पोंको ही खड्ग बनाने वाला
चला गया मृत मिट्टीसे हुंकार उठाने वाला
चला गया जिसने जनबलका नगपति खड़ा किया था
चला गया वह अबुझ दीप्तिका पर्व बनाने वाला
घट घटमें जिस महासाधनाने अमरत्व जगाया
चला गया जिसने मरघटको अमरावती बनाया
परिक्रमा करतीं गत सदियां लोहूके फलोंसे !
देवोंका देवत्व बढ़ा पर मनुज भूमिपर रोया !

—प्रो० अञ्चल।

श्रद्धांजलि

श्री रामजी शरण सक्सेना

(१) जबकि विजयोन्माद से था एक दिन यह देश मस्त
गर्व से हमने मनाया था अभी १५ अगस्त
एक दिन स्वाधीनता का रुक गया था जब समर
अस्त्र रख कर खोल दी थी जब कि वीरों ने कमर
झांकते थे स्वर्ण युग के स्वप्न जब दृग द्वार से
देश का यह सुख नहीं देखा गया संहार से
अंत आया भी न था स्वाधीनता के वर्ष का
अस्त सहसा हो गया दिन भानु भारतवर्ष का

(२) इस दुखद संवाद से फैली जगत में खलबली
कौन से दृग थे न जिन से अश्रु धारा बह चली
हिन्दुओं के देवता इसलाम के थे वे बली
दीन के आश्रय दलित के भग्न उर की बेकली
विश्व मानव धर्म में उनकी विमल काया ढली
दी उन्हें संसार ने सद्भाव से श्रद्धांजलि
लय हुआ चिर चेतना म प्राण प्यारा हिन्द का
डूब सकता ही नहीं उज्ज्वल सितारा हिन्द का

(३) शक्ति से किस भांति रण में जूझते हैं शक्ति हीन
अस्त्र का किस भांति करते सामना जो अस्त्र हीन
यह वही बतला गये संसार को साधन नवीन
वे अहिंसा के उपासक वे असहयोगी प्रवीन
थी सदा उनके अधर पर एकता की पुन्य बीन
यह उन्हीं ने तो मिलाये थे ध्वजा में रंग तीन
एकता के नाम पर बलिदान देकर चल दिये
एकता ली और अपने प्राण देकर चल दिय

(४) धर्म होकर तर्क थे वे भक्ति होकर ज्ञान थे
विश्व की गति थे सुमति थे जीवका कल्याण थे
देव थे संसार में देवत्व की पहचान थे
बुद्ध थे वे या कि ईसा के पुनर्वलिदान थे
विश्व की वे सम्पदा थे विश्व के वे प्राण थे
किन्तु कहने के लिये इस देश की सन्तान थे
आज दुनिया में तुम्हारे नाम का सम्मान है
तुम हमारे थे हमें इस बात का अभिमान है

(५) यह कि उनकी भावना हिन्दुत्व के प्रतिकूल थी
यह समझना कुछ अभागे हिन्दुओं की भूल थी
मौन को समझा कहां संकीर्ण जग का दृष्टिकोण
व्यक्त करतें हैं अकथ दुःख अश्रु या फिर दीर्घ मौन
थी जगत भर के लिये उनके हृदय में वेदना
स्वत्व था यह जग जिसे समझा किया अवहेलना
बन गई पर भूल ही यह प्रेरणा संहार की
आज भारतवर्ष पर फटकार है संसार की

(६) देश नंगा था उधर कपड़ा न उनके पास था
देश की ही भूख उनका नित्य का उपवास था
एक दिल यह था कि जिसमें दूसरे का दर्द था
और जिसने बध किया है एक वह भी मर्द था
थे न बापू के बदन पर गोलियों के दग्ध दाग़
दीप्त हैं चिर ज्योति के चारों दिशाओं में चिराग़
जो किया है दण्ड उसका हम नियति से पायंगे
कौन सा मुह ले जगत के सामने अब जायंगे

(७) पाशविकता नाचती थी धर्म के मैदान में
रह गई थी आदमीयत ही कहा इनसान में
मृत्यु का अपनी उन्होंने आप आवाहन किया
जो न जीकर कर सके वह आज मर कर कर दिया
ध्वंस सहसा रुक गया संघर्ष पछताने लगा
धर्म का स्वर फिर हमारे कान में आने लगा
पूजता है जग शहीदों के अमर बलिदान को
आज ऊँचा कर दिया इनसान ने इनसान को

(८) स्वर्ग सिंहासन सजा था व्योम में घननाद था
विश्वपति के आगमन से स्वर्ग में आल्हाद था
सिर झुकाया विश्व के हर तख्त ने हर ताज ने
रक्त से आकर स्वयं टीका किया यमराज ने
धूम से मेला लगा फिर आज यमुना तीर पर
आज फिर होली खिली ब्रजधाम के प्राचीर पर
जिन्दगी उनकी सरल शुभ और सुषुमा हीन थी
वीर बापू की हमारे मौत ही रंगीन थी

(९) थी धनन्जय ने सुनी जिसमें कभी रण की पुकार
ले वही गीता किया जिसने अहिंसा का प्रचार
रोम में प्रति रोम में जिसके रमा जग का भला
उस अहिंसा के व्रती पर हाथ हिंसा का चला
जगमगा कर विश्व को व्यक्तित्व के आलौक से
राम रटते चल दिये अविराम पथ क्षय लोक से
कर युगल जोड़े हुए मुख पर क्षमा मन में विनय
आज हिंसा पर हुई सचमुच अहिंसा की विजय

(१०) वे हमारी भाग्य नौका के कुशलतम कर्ण धार
वे हमारी राज सत्ता के सकल सर्वाधिकार
वे हमारे राष्ट्र के रवि राष्ट्र के मन की पुकार
वे नहीं तो आज भारत वर्ष में है अन्धकार
मौत सी छाई हुई ह सुप्त सा है सृष्टिकार
कह रहा है आज सारा देश रोकर बार बार
क्षुद्र मानव देह में अवतार सत्यादर्श के
मौन तुम क्यों हो गये भगवान भारत वर्ष के !

परहित बस जिनके मनमाहीं।
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

विश्वमित्र

अमीरोंका बजट

भारतके अर्थ सचिव श्री षम्मुखम चेट्टीने गत सप्ताह भारत उपनिवेशका पहला सालाना बजट २८ फरवरीको पार्लमेण्टके सामने उपस्थित किया। अर्थ सचिवने बताया कि पिछले महायुद्धने संसारमें जो आर्थिक विशृंखलता और असमानताकी सृष्टि की है संसारका कोई राष्ट्र उससे बचा नहीं, हम भी नहीं बचे। इस साधारण आर्थिक सङ्कटके सिवा हमारी अपनी खास समस्याएं भी हैं। शरणार्थियोंको बसाना, काममें लगाना और उनका पोषण करना, अन्नाभाव-मूल्य, वृद्धि, काश्मीर युद्धादि। गांधीजीकी मृत्यु विश्वकी आर्थिक स्थिति और हमारी अपनी खास समस्याएं देशके सामने जबर्दस्त चुनौती उपस्थित करती हैं और अर्थ सचिवने इस बातकी आशा प्रकट की है कि देश इसका सामना कर सकेगा। इस भूमिकाके साथ १९४८-४९ का बजट पेश किया गया है जिसमें २३०करोड़ ५२ लाख आमदनी और २५० करोड़ ३७ लाखका खर्च तथा २६ करोड़ ८५ लाखका घाटा है। नये टैक्सोंसे जो आमदनी होगी उससे यह घाटा सालके अन्तमें १ करोड़ ९ लाखका रह जायेगा। ऐसी हालतमें अर्थ सचिव कहते हैं कि सबसे बड़ी और पहली आवश्यकता है उत्पादन बढ़ानेकी। अर्थ सचिव यह समझते हैं कि अब घाटेके दिन समाप्त होने जा रहे हैं और यदि प्रत्येक देश भक्त नागरिक अपना कर्त्तव्य करे अर्थात् अधिक उत्पन्न करे, पर्याप्त बचाये, ईमानदारीके साथ सब टैक्स अपनी राष्ट्रीय सरकारको दे और बचतकी इफरात रकम सरकारको कर्ज दे तो वह दिन दूर नहीं है जब भारत एशियाका नेतृत्व ग्रहण करेगा एवं संसारके राष्ट्रोंके बीचमें उसका अधिकार और प्रभावका स्थान होगा। ऐसा कौनहोगा जो देशको समृद्ध समुन्नत और बलशाली न देखना चाहता हो। किन्तु देशका अर्थ व्यापक रूपमें समझा जाना चाहिये। ३५ करोड़की आबादीके देशकी समस्याओंको सर्वोपरि रखकर जब हम बजट पर विचार करने बैठते हैं तो देखते हैं कि देशके उस बड़े भागकी आवश्यकताओंको पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया जिसे हम गरीब देश कहते हैं। उपस्थित बजटको देखकर देशके जन साधारणके मनमें इस प्रश्नका उठना सहज स्वाभाविक है कि यह किसका बजट है? किसके हितोंको ध्यानमें रखकर वह बनाया गया है। देशका हित भारत जैसे देशमें, जहां अमीरी और गरीबीके बीचमें आकाश और पातालके समान अंतर है, कोई अर्थ नहीं रखता तब प्रश्न यह उठता है कि क्या यह बजट इस अन्तरको संकुचित करनेकी दिशामें कोई निश्चित कदम उठाता है और इसका उत्तर शायद निश्चित नकारात्मक होगा। अर्थसचिवका कहना है कि टैक्स लगाते समय उन्होंने इस बातका ध्यान रखा है कि उद्योग धंधे अर्थात पूंजीपतियोंको कुछ राहत मिले और गरीब जनता पर इसका भार न पड़े इसमें सन्देह नहीं कि अमीरोंको राहत मिली, सुपर टैक्स पहले डेढ़ लाखकी आमदनी पर लगता था अब ३॥ लाख पर लगेगा। उन पर कोई नया टैक्स नहीं लगाया गया। उलटे व्यवसाय आय कर आधा कर दिया गया। फलतः घाटेको पूरा करनेके लिये रेलवे आमदनीकी बचतसे ४ करोड़ ५ लाख रुपये इस तरफ लाने गये। यह रेलवे आमदनी गरीबसे गरीबका भाड़ा बढ़ाकर बढ़ायी गयी पर उसका फायदा आज कौन उठा रहा है? इतना ही नहीं। अर्थ सचिवने गरीबकी हालत सुधारनेकी बात तो कही ही नहीं इसलिये उनकी इस ईमानदारी पर हम उनको धन्यवाद देते हैं, पर उनका यह दावा खरा नहीं उतरता कि गरीबको टैक्ससे अछूता रखनेका ध्यान रखा गया है। दियासलाई, तंबाकू व चायपर लगायी गयी ड्यूटीका अधिकांश किसके मत्थे पड़ेगा? भारतके जनसाधारणके बहुत बड़े भागमें चाय और तम्बाकूका प्रचार है। दियासलाई की उपयोगिता किसीसे छिपी नहीं है। बनस्पति तेलपर ड्यूटी लगायी गयी है। इसके दो विपरीत परिणाम होंगे। जनसाधारणके लिये घी और भी दुष्प्राप्य हो जायेगा। इधर जिनका काम घीके बदले बनस्पति तैलसे चलता था उनकी कठिनाई इस महंगाईसे बढ़जायेगी। किन्तु हमें यह न भूलना चाहिये कि इनसबकी ड्यूटी बढ़ाकर हमारे उदार अर्थ सचिवने सुपारीकी ड्यूटी उठा दी है। हमारे अर्थसचिव कितने उदार और निष्पक्ष हैं? यह न कहा जा सके कि बीजनेस प्राफिट टैक्स, सुपर टैक्स घटाकर उन्होंने किसी खास वर्गके साथ पक्षपात किया है, इसीसे उन्होंने सुपारीकी ड्यूटी बिलकुल उठा दी। गरीबको और क्या चाहिये। उसकी रोटी सस्ती नहीं हो सकी, कपड़े सस्ते नहीं हो सके इसका मलाल दूर कर उसे यह समझना चाहिये कि सुपारीका एक टुकड़ा घण्टों मुंहमें रखकर वह भूख और प्यास दोनोंको कुछ देरके लिये तो भुला ही सकता है। फिर उसे शिकायत क्यों? यह गरीबकी बुरी आदत है। उसे इसे छोड़ना चाहिये और गरीबोंके प्रति उन्होंने जो मेहरबानी दिखायी है उसके लिये उन्हें धन्यवाद तो देना ही चाहिये। यह कितना निर्मम और क्रूर व्यंग्य है जन साधारणके दुर्भाग्यपर। कितनी बड़ी रियायत की गयी है गरीबके साथ। लेकिन हम यह क्यों भूलते हैं कि हमारा अर्थसचिव उस वर्गका प्रतिनिधि है जो यदि गरीबके साथ सचमुच रियायत करने लगे तो कुछ दिनमें उसका अस्तित्व ही न रह जाये। अतएव दांत तोड़नेवाली सुपारी खा सकनेकी रियायत देने वाले अर्थ सचिवको देशके गरीबोंकी ओरसे हम एक बार फिर बधाई देते हैं—गरीबोंकी कमाईसे बजटका घाटा पूरा करके अमीरोंको राहत देनेवाला बजट तैयार करके गरीबोंके परमार्थका ध्यान रखनेके लिये!

कोड़ा लो कोड़ा

हर बातकी एक सीमा होनी चाहिये। किसीकी ईमानदारी और सचाईकी परख बातोंसे नहीं उसके कामोंसे की जानी चाहिये। क्या निजाम सरकारकी अबतक की हरकतें यह साबित करनेके लिये पर्याप्त नहीं हैं कि वार्तालापों और समझौतों के द्वारा जहांतक सम्भव हो वह भारत-सरकारको धोखेमें रखकर अपना स्वार्थ सिद्ध करनेकी चाल चल रही है। हैदराबादके वकीलों और उसके एक मन्त्रीके वक्तव्योंसे क्या यह स्पष्ट नहीं हो गया कि निजाम सरकार भारतसे अलग अपनी स्वतन्त्र सत्ता, पाकिस्तानकी नसीहतसे, कायम करनेकी प्रत्यक्ष और गुप्त दोनों ही तैयारियां कर रही हैं। कानूनको निजाम सरकारने उठाकर ताकपर रख दिया है। केवल निजामकी हुकूमतमें ही नहीं पास पड़ोसके प्रान्तोंमें भी निजामी खूंखार गुण्डोंने लूटपाट हत्या और अपहरणका बाजार गर्म कर रखा है। भारत सरकार पर भी हाथ साफ करनेके इरादेसे तैयारी-में लगी सरकारके साथ वार्तालापों और समझौतोंसे क्या और कहां तक लाभ होगा यह सोचनेकी बात है। मद्रास, बम्बई और मध्यप्रान्तके प्रधान मन्त्री और गृह मन्त्री इस स्थितिपर विचार करनेके लिये कुछ दिन पहले दिल्ली पहुंचे थे और भारत सरकारके राज्य सचिव सरदार वल्लभ-भाई पटेलकी अध्यक्षतामें एक सम्मेलन किया था। इस सम्मेलनमें हैदराबादके सरहदी प्रदेशके निकट होनेवाली घट-नाओं एवं अन्य स्थितियोंपर भी विचार विनिमय हुआ। इस सम्मेलनमें श्री मुन्शी भी उपस्थित थे। इस सम्मेलनमें क्या निश्चय हुआ यह तो अभी तक प्रकाशमें नहीं आया किन्तु महात्मा गांधीकी हत्या-के कारण हैदराबाद और भारत सरकारके प्रतिनिधियोंसे होनेवाला जो वार्तालाप स्थगित हो गया था वह फिर आरम्भ हुआ है और इसमें हैदराबादको मदद देनेके लिये उनके अंगरेज सलाहकार सर मौंक-टन पहले ही दिल्ली पहुंच गये थे। मजलिस इत्तिहादुल मुसलमीन जैसी फासिस्ट संगठनकी दबी जबान हिमायत करनेवाले सर मौंकटनके मनोभावोंसे ही यह समझा जा सकता है कि इन वार्तालापोंमें समय नष्ट करनेके सिवा कोई लाभ नहीं। यह बात किसीसे छिपी नहीं है कि मजलिस घृणा और हिंसाके बलपर फलफूल रही है। मजलिसने राज्यमें घोर आतङ्क फैला रखा है। हैदराबादकी पुलिस और फौज-के साथ मिलकर मजलिसका सैनिक दल, जो रजाकर नामसे प्रसिद्ध है, निजाम राज्यमें नाजी लुटेरोंके काले कारनामोंको भी लज्जित कर रहा है। मजलिस हैदरा-बादमें मध्ययुगीय मुस्लिम हुकूमत कायम करनेके लिये निजाम सरकारके प्रत्यक्ष संरक्षणमें काम कर रही है। यह स्थिति कबतक बर्दाश्त की जा सकती है। यदि साम्प्रदायिकताको इस राज्यमें बेलगाम अपना घोड़ा अधिक दिन दौड़ाने दिया गया तो इसकी प्रतिक्रिया हैदराबादमें तो भयंकर होगी ही—क्योंकि राज्यके बहु-संख्यक नागरिक कबतक इस पैशाचिकता को बर्दाश्त करेंगे और मजलिस तथा निजाम दोनों ही के विरुद्ध विद्रोहके लक्षण स्पष्ट होने लगे हैं—भारतमें भी इसकी प्रतिक्रिया कम भयंकर न होगी। ऐसी हालतमें भारत सरकारका क्या कर्त्तव्य होना चाहिये, यह हम अलवर और भरत-पुरमें देख चुके हैं। यदि हैदराबाद सर-कार मजलिसकी उच्छृङ्खलताको नियन्त्रण-में लानेको तैयार नहीं तो भारत सरकार-को स्वयं यह उत्तरदायित्व लेना चाहिये। दब्बू नीतिसे काम नहीं चलनेका। भारत सरकार यदि चाहती है कि देशमें साम्प्र-दायिकताकी आग गृहयुद्धके रूपमें न भड़के तो उसे मजलिस इत्तिहादुल मुसल-मीनके बढ़ते हुए हौसलोंको पस्त करनेके लिये अपने हाथमें कानूनकी लगाम और दमनका कोड़ा उठाना चाहिये? लातके देवता बातसे बशमें नहीं आया करते।

यू० पी० बजट—

हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि युक्तप्रांतीय सरकार इस वर्ष अपनी आम-दनीका प्रायः आधा हिस्सा राष्ट्रनिर्माण कार्योंमें खर्च करने जा रही है। यू०पी०के अर्थ सचिव श्री कृष्णदत्त पालीवाल और खासकर प्रधान मंत्री पंडित गोविन्द बल्लभ पन्तको इसके लिये बधाई है। गत सप्ताह २६ फरवरीको श्री पालीवालने १९४८-४९का बजट व्यवस्थापिका परिषद में उपस्थित किया है। ४ करोड़ ७० लाख का घाटा, दो नये टैक्स—सेल टैक्स और कृषि आयकर, कानपुर, और उन्नाव जिलोंमें मद्य निषेध नीतिका प्रयोग, ४ हजार ४ सौ प्राइमरी स्कूल खोलनेकी व्यवस्था, स्कूलों और कालेजोंमें सैनिक शिक्षाका प्रचलन तथा तमाम नगर क्षेत्रोंमें अनिवार्य शिक्षाकी व्यवस्था आदि बजटकी कुछ उल्लेखनीय विशेषताएं हैं। राष्ट्र निर्माण एवं आर्थिक उन्नतिके कार्य २४ करोड़ एक लाख खर्च किया जायेगा। २ करोड़ १६ लाख रुपये शरणार्थियोंके लिये घर बनने और सहायताके लिये रखे गये हैं। आबपाशी और जलसे बिजली उत्पन्न करनेकी योजनाके लिये १० करोड़ ४१ लाखकी पूंजी लगायी जायगी। चालू सालमें आमदनी ४५ करोड़ और ८७ लाख और खर्च ५० करोड़ ५७ लाख होगा। इस घाटे को पूरा करनेके लिये ही सरकार ऊपर लिखे दो नये टैक्स लगाने जा रही है जिससे पांच करोड़की आमदनी होनेकी आशा की जाती है। इस तरह ४ करोड़ ७० लाखका घाटा पूरा होकर प्रायः ३० लाखकी बचत सालके अन्तमें होगी। अर्थ सचिवने बजट पेश करते हुए बताया कि सेल टैक्स रुपये पीछे एक पैसा सभी वस्तुओं पर लगेगा किन्तु खाद्यान्न, दूध बिजली गुड़ और चीनी पर टैक्स रुपया पीछे एक पाई लगेगा। केन्द्रीय सरकारको जिस अनुपातसे आय कर दिया जाता है उसी अनुपातसे प्रांतीय सरकार कृषि आय कर लेगी।

जूनागढ़—

सत्य जब साथ नहीं देता, स्वार्थ-साधनमें सहायक नहीं होता तो मनुष्य लंगड़े असत्यका प्रश्रय लेता है, मिथ्याको अपना सहायक बनाता है। काश्मीर और जूनागढ़के मामलेमें पाकिस्तानका समर्थन करने वाले अमेरिका और ब्रिटेन भी यही कर रहे हैं। जूनागढ़ और उसके पड़ोसकी ६ रियासतोंमें लोकमत-संग्रहका परिणाम बता रहा है कि मिथ्याके आधार पर खड़ा किया गया पाकिस्तान अब अपनी रक्षाके लिये भी मिथ्यास्त्रसे ही काम ले रहा है? जूनागढ़में भारतीय संघमें सम्मिलित होनेके पक्षमें १ लाख ९० हजार ७७९ विपक्षमें मात्र ९१ तथा अन्य सब रियासतोंमें मिला कर ३१ हजार ३९५ वोटोंमें सिर्फ ३९५ पाकिस्तानके पक्षमें आये। लेकिन इन आंकड़ों का महत्व तो उसके लिये है जो सत्यकी लड़ाई लड़ रहा हो। सिक्यूरिटी कौंसिल में जूनागढ़के प्रश्न पर पाकिस्तानके आरोपोंका उत्तर देते हुए भारतीय प्रतिनिधि श्री वेलोड़ीने कहा था कि मेरा यह दावा है कि अन्तर्राष्ट्रीय शांतिको खतरेकी बात तो बहुत दूर है घरेलू शान्तिको खतरा हो, ऐसी स्थिति भी नहीं है। बुद्धिमानी इसमें है कि जूनागढ़ और अन्य रियासतोंको अपने रास्ते चलने दिया जाये। लेकिन यह किसे समझाया जा रहा है? शान्तिका प्रश्न ही किसके सामने हैं? पाकिस्तान जानता है कि अशान्तिसे ही उसका जन्म हुआ है और अशान्तिही उसे जिलाये रख सकती है। शान्तिको वह अपनी मौत समझता है। अब रह गया संयुक्त राष्ट्र संघ। वह कितना शान्ति प्रिय है क्या यह अब भी किसीसे छिपा है। उनके सामने प्रश्न यह है कि काश्मीरमें ऐसा शासन होना चाहिये जिसे ब्रिटेन और अमेरिका अपने प्रभावमें रख सके। शेख अब्दुल्लाके शासनको किसीका पिट्ठू नहीं बनाया जा सकता, यह ये दोनों राष्ट्र समझते हैं, इसीसे इनको तभी शान्ति मिल सकती है जब काश्मीरसे शेख अब्दुल्लाको हटा कर उनकी जगह कोई पिट्ठू पाकिस्तानी सरकार कायम होगी। अतः सिक्यूरिटी कौन्सिलमें सत्य और न्याय किसीके पक्षमें हो, आंकड़े कुछ भी कहते हों काश्मीरका मामला हो या जूनागढ़का ब्रिटेन और अमेरिका ही समर्थन करेंगे पाकिस्तानका।

पाकिस्तान विदेश है—

भारत सरकारने पाकिस्तानको विदेश घोषित कर दिया है। इस आशयकी प्रेषित विज्ञप्तिमें बताया गया है कि १ मार्चसे कस्टम ड्यूटी लगानेके उद्देश्यसे यह घोषणा की गयी है। विभाजनके समय यह समझौता हुआ था, जिसकी अवधि १५ अगस्त १९४७ से २९ फरवरी १९४८ थी, कि भारत और पाकिस्तानके माल पर, आयात और निर्यात दोनों पर, दोनों देशोंमें कोई कस्टम ड्यूटी नहीं लगेगी। पाकिस्तानने जैसा रवैय्या अख्तियार कर रखा है उसे देखते हुए भारत सरकार की इच्छा रहते हुए भी दोनों देशोंके बीचमें व्यवसाय वाणिज्य सम्बन्धी समझौता नहीं हो सका और इस कारण भारत सरकारको बाध्य होकर यह घोषणा करनी पड़ी कि कस्टम ड्यूटी लगानेके इरादेसे १ मार्च १९४८से पाकिस्तान विदेश समझा जायेगा। रिजर्वबैंकके केन्द्रीय बोर्डने भी यह फैसला किया है कि १ अप्रेल १९४८ से रिजर्व बैंक पाकिस्तानका बैंकर नहीं रहेगा। दोनों देशोंके राजनीतिक सम्बन्ध इतना बिगड़ते जा रहे हैं कि पाकिस्तानके साथ किसी तरह का सम्पर्क रखना संभव नहीं है और यह देखते हुए हिन्दुस्तानसे पाकिस्तान और पाकिस्तानसे हिन्दुस्तान आने जाने वालोंके लिये पास पोर्ट प्रथा यदि शीघ्र ही जारी की जाय तो शायद आश्चर्यकी बात नहीं होगी।

हैदराबादके वकील—

प्रायः सवा सौसे अधिक हैदराबादके वकीलोंने एक संयुक्त घोषणा पत्र हैदराबाद हाईकोर्टके चीफ जस्टिसके पास भेजा है। इसमें वकीलोंने अदालतोंका बहिष्कार और अनिश्चित कालके लिये वकालत करना स्थगित रखनेका अपना संकल्प प्रकट किया है। हैदराबादके एक मिनिस्टर श्री रामाचारने अपने पदसे इस्तीफा देते हुए जो पत्र प्रधान मन्त्री मि० लायकअली और निजामको लिखा है उनसे यह स्पष्ट है कि हैदराबादमें आज कानूनका शासन नहीं है। वहांके हिन्दू अरक्षित और आतंकित अवस्थामें हैं और उनके जीवन, मान, सम्पत्तिकी रक्षा करनेमें वहांकी सरकार असमर्थ है या जानबूझ कर वह नागरिकोंके एक बहुत बड़े हिस्सेके साथ अन्याय करने पर तुली हुई है। वकीलोंने भी अपने पत्रमें इसी बातका संकेत किया है। राज्यमें जो अरक्षित स्थिति उत्पन्न की गयी है राज्यकी पुलिस और फौज जिस तरह लूटमार, हत्या और अपहरणको प्रोत्साहन दे रही है उसे देखते हुए कोई भी स्वाभिमान रखनेवाला व्यक्ति ऐसे शासन के साथ सहयोग कैसे कर सकता है? इस स्थितिके विरुद्ध प्रतिवाद स्वरूप हैदराबादके वकीलोंने अदालतोंका बहिष्कार करने एवं जबतक राज्यमें शान्ति और सुरक्षाकी स्थिति न लौट आयेगा तबतक वकालत बन्द रखनेका निश्चय किया है। वकीलोंका काम कानून और व्यवस्था की रक्षामें सहायता करना है किन्तु राज्य के अधिकारियोंने जैसी स्थिति उत्पन्न कर रखी है उसमें उनके लिये यह सम्भव नहीं था अतः अदालतोंका बायकाट करने के सिवा दूसरा रास्ता न था। हैदराबादके वकीलोंके इस साधु संकल्प और सत्साहसके लिये बधाई।

मौतकी सजा—

बाहरके शत्रुका सामना उतना कठिन नहीं है जितना घरके शत्रुका। इन घरभेदी शत्रुओंके साथ किसी तरहकी मुरौव्वत करनेका अर्थ है अपने अस्तित्वको खतरेमें डालना। काश्मीरमें इस खतरेका सामना करनेके लिये ही यह आर्डिनेन्स जारी किया गया है कि यदि कोई व्यक्ति शत्रुके भेदियेका काम करता, शत्रुके साथ षडयन्त्र करता, भारतीय सेना या राज्यकी सेनाकी गति विधिमें रुकावट डालता

और किसी रूपमें आक्रमणकारी आततायियोंकी मदद करता पाया जायेगा तो उसे मौतकी सजा दी जायेगी। यह आर्डिनेन्स राज्यके सभी नागरिकों पर वे कहीं भी हों, और उन लोगोंपर भी लागू होगा जो २२ अक्टूबर १४४७ के बाद शत्रुके साथ मिलकर काम करनेके अभियोगमें गिरफ्तार किये गये हैं। आज कुछ काश्मीरी पाकिस्तानके साथ मिलकर अपने देशकी जो बर्बादी करनेमें लगे हुए हैं उनके लिये जो भी सजा दी जाये अपर्याप्त है क्योंकि वे सम्पूर्ण देशके विनाश पर तुले हुए हैं अपने निजी स्वार्थके लिये।

चीनमें—

चीनका भविष्य घोर अन्धकारमें है। कम्यूनिस्टों द्वारा उत्पन्न की गयी स्थिति एवं राष्ट्रीय सरकारकी नैतिक दुर्बलतासे अमेरिका नाजायज फायदा उठाना चाहता है। हेनरी वालेसका कहना है कि अमेरिकन सैनिक अधिकारी चीनकी नयी सरकारी सेनाओंको तालीम दे रहे हैं। इतना ही नहीं शाण्टंग प्रान्तमें और फोरमोसा द्वीपमें गुप्त रूपसे अमेरिकन सैनिक अड्डे बनाये जा रहे हैं। प्रेसिडेण्ट ट्रूमैनने उस दिन यह कहा ही है कि बिना हमारी सहायताके चीन कम्यूनिस्टोंसे पार नहीं पा सकता। मि० हेनरी वालेसका यह कहना बिलकुल सही है कि प्रतिगामी सरकारको उस देशकी जनताकी इच्छाके विरुद्ध सैनिक और आर्थिक सहायता भेजनेका अर्थ है प्रतिक्रिया और युद्धका समर्थन लोकतंत्र और शान्तिका नहीं। उधर मास्को रेडियो कहता है कि चीनके गृह-युद्धमें अमेरिकन हस्तक्षेपमें उत्तरोत्तर वृद्धि, क्यूमिण्टांगके लिये नयी जबर्दस्त आर्थिक सहायता, हजारों अमेरिकन सैनिक सलाहकारों और शस्त्रास्त्रोंसे स्वभावतः कम्यूनिस्ट सेनाकी कठिनाइयां बढ़ गयी हैं और उसी तरह अमेरिकन टैक्स दाताका भार भी काफी बढ़ गया है। किन्तु यह हस्तक्षेप गृह युद्धकी गतिको नहीं बदल सकता। लक्षण कुछ ऐसे ही नजर आ रहे हैं।

भारत सरकारका बजट

गत सप्ताह पार्लमेण्टमें भारत सरकार के अर्थ सचिव श्री षण्मुखम चेट्टीने १९४८-४९ के लिये बजट उपस्थित किया। व्यवसाय लाभ कर और सुपर टैक्स घटा दिया गया। चाय काफी सिगरेट, तम्बाकू, दियासलाईकी ड्यूटी बढ़ा दी गयी। पोस्टल और टेलीफोनके रेट बढ़ गये। बजटके आंकड़े इस प्रकार हैं आमदनी २३० करोड़ ५ लाख। व्ययः २५७ करोड़ ३९ लाख। २६ करोड़ ८५ लाखका घाटा रेलवेकी बचतसे ४ करोड़ पांच लाख लेकर २२ करोड़ ३५ लाख रह जायेगा। किन्तु टैक्स घटनेसे ६ करोड़ ४६ लाख आमदनी और घट जायेगी। इस तरह कुल २८ करोड़ ८१ लाखका घाटा पूरा करनेके लिये अर्थ सचिवने सीधे किसीकी आमदनी पर टैक्स न लगा कर अप्रत्यक्ष टैक्स लगाया है। इससे प्रायः सब घाटा पूरा हो जायेगा मात्र एक करोड़ ९ लाख रह जायेगा और इस ओर संकेत करते हुए श्री षण्मुखमने कहा हैं कि आगामी वर्षके बजटमें थोड़ा सा घाटा इस बातका संकेत है कि घाटेके बजटोंके दिन समाप्त करने और हमारी माली हालत संतोषप्रद बनानेका प्रयास किया जा रहा हैं। हमारे आय-व्ययकी स्थिति बहुत मजबूत हैं। हमारे कर्जकी स्थिति उससे भी मजबूत है। देशकी उत्पादन शक्ति प्रचुर है। हमारे साधन उससे अधिक हैं। प्राकृतिक साधन हमारे पास बहुत हैं और हमारी जनशक्ति विराट है। दोनों मिल कर विपुल ऐश्वर्यकी सृष्टि करेंगे जिससे हमारे देशवासियोंका रहनसहन ऊपर उठेगा। हर तरहसे हमारा भाग्य निर्माण हमारे हाथमें है।

बजटकी विशेषताएं

सुपर टैक्स ३॥ लाख सालाना आमदनी पर लगेगा। इससे राजकोषको एक करोड़का घाटा होगा। कारपोरेशन टैक्स दो आनेसे तीन आने कर दिया गया है। इनमें जो कम्पनियां अपना लाभ भारतमें वितरण करती है उनको एक आनेकी छूट मिलेगी। व्यवसाय कर लाभ पौने१७प्रतिशतसे घटाकर१०प्रतिशतकर दिया गया है। वस्त्रपर निर्यात ड्यूटी २५ प्रतिशत कर दी गयी है। हाथके करघोंसे बने वस्त्रोंपर यह ड्यूटी न लगेगी। सुपारियोंपर लगी ड्यूटी उठा दी गयी है। तेलहन पर ८०) प्रति टन वनस्पति तेलोंपर प्रति टन २००) और कच्चे लोहेपर२० प्रति टन निर्यात ड्यूटी लगायी गयी है। मोटरके आयात पर ४५ प्रतिशतसे ५० प्रतिशत ड्यूटी बढ़ा दी गयी है। चायपर दो आना की जगह चार आना पौंड ड्यूटी लगेगी। काफीपर भी इसी तरह ड्यूटी बढ़ा कर चार आना पाउण्ड कर दी गयी है। वनस्पति पदार्थोंपर ५० प्रतिशत ड्यूटी बढ़ा दी जायेगी अर्थात फी हण्डर ७॥) हो

(शेष १० वें पृष्ठ पर)

चेकोस्लोवाकिया—

चेकोस्लोवाकियाको रूसके प्रभावसे मुक्त करके अन्य पश्चिमी राष्ट्रोंकी पंक्ति में खड़ा करनेके इरादेसे जो षड्यन्त्र वहांके शासनको पलटनेके लिये विदेशी सहायतासे किया गया था वह व्यर्थ कर दिया गया और चेकोस्लोवाकिया सम्पूर्णतया कम्यूनिस्टोंके शासनमें चला गया। ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रांसने खिसियानी बिल्लीकी तरह एक सम्मिलित वक्तव्य निकालकर चेकोस्लोवाकियाके कम्यूनिस्टों की निन्दा की है। ये फरमाते हैं कि कम्यूनिस्टोंका इस तरह चेकोस्लोवाकिया पर अपना एक छत्र अधिकार स्थापित कर लेना स्वतन्त्रताके सिद्धान्तोंके अस्तित्वके लिये बहुत बड़ा खतरा है। इसका उत्तर स्वयं एक अमेरिकनने बहुत सुन्दर शब्दोंमें दिया है। मि० हेनरी वालेस कहते हैं कि जबतक अमेरिका अपनी 'बन्दूक व डालर' नीतिसे काम लेता रहेगा तबतक चेकोस्लोवाकियामें जो कुछ हुआ उसकी पुनरावृत्ति होती रहेगी। चेकोस्लोवाकिया का सङ्कट इस बातका प्रमाण है कि सेरका जवाब सवा सेरसे मिलता है।

भारतकी विराट आत्मा

लेखक—आचार्य पं० चन्द्रकान्तजी वेदवाचस्पति गुरुकुल विद्यामन्दिर सूपा

भारतवर्षकी राजधानी दिल्लीका इतिहास शहादतोंका इतिहास है। जिस दिल्लीमें भाई मतिरामका बलिदान हुआ, जिसमें गुरु तेग बहादुरने अपने देहकी राख डाली—जिसमें बन्दा वैरागी? अपने सात सात सौ बहादुरोंके साथ खूनकी होली खेली-जिसमें 'हुतात्मा श्रद्धानन्दजी अब्दुलरशीदकी गोली खाकर शही हुए-उसी दिल्लीमें हिन्दुस्तानकी आजादीके मसीहा, राजाओंके राजा महात्मा गांधी हिन्दू मुस्लिम एकताका मन्त्र जपते हुए एक पागल हिन्दूकी गोलियोंके शिकार हुए-राष्ट्र पितामहके इस करुण अवसानसे हिन्दुस्तान स्तब्ध सा हो गया है-पागल हो उठा है—रो रहा है।

सौराष्ट्रकी जिस वीरभूमिमें योगेश्वर कृष्ण घूमे थे-महर्षि दयानन्दने जन्म लिया था और नरसिंह मेहताने गान गाये थे-उसमें जन्म लेकर कर्मवीर गांधीजीने कर्मयोगकी साधना अफ्रीकामें जाकर शुरू की। महात्मा मोहनदासने सत्याग्रहका अमूल्य मंत्र पाया १९११में। गुरु गोखलेने कहा बुद्धकी करुणा और ईसामसीहके प्रेम राज्यने इस महात्मामें अहिंसात्मक असहयोगका रूप धारण किया। जिस समय इस महावीरने इस भूमि पर पैर रखा-हिन्दुस्तान हिल उठा। लोकमान्यने 'शठंशाठ्य समाचारेत' घोषणा की थी पर महात्माने "असाधुं साधुता जयेत्" का मंत्र जपा-संसारके विजेता नेपोलियन सिकंदर—क्रोमवेल साधन पर बल देते थे पर वीरोंके बादशाह गांधीजी साध्यके धनी थे। महात्मा वज्रसे अधिक कठोर थे और फूलसे अधिक कोमल थे "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि-लोकोत्तराणां चेतांसि कोहि विज्ञातुमर्हति गांधीजी की अहिंसा कायरोंका नहीं अपितु वीरोंका भूषण है। उनका जीवन निर्मलदर्पणके समान स्वच्छ था-बालकके समान निर्दोष था और वीरोंके समान अजेय था। जिस ब्रिटिश सल्तनतकी मददके लिये घर घर भटककर रंगरूटोंकी भरती कराई थी-उसीको महात्माने हंसते हंसते शैतान भी कहा। जिसने अंग्रेजोंको भारत छोड़ोका नारा सुनाया वही आजाद हिंदमें लार्ड माउण्टबेटनको गवर्नर जनरल बना सकता है। सचमुच महात्मा विरोधाभासोंके पुंज थे। वस्तुतः ये अन्दर बाहर एक थे। धर्म और राजनीतिको एक ही सत्यके दो पासे समझते थे। हिंदू संस्कृतिके "ग्रामं जनपदस्यार्थे स्वात्यार्थे पृथवीं त्यजेत्के अमर श्लोकको जपते हुए भारतकी स्वतंत्रताको अहिंसा एवं सत्यकी साधनामें साधक समझते थे-सारी दुनियांके राज्यको आत्माके सामने तुच्छ समझते थे। प्रियतम प्रभुकी प्रेम वीणाके तारोंसे इनकी हृत्तंत्रीके तार ऐसे बज उठे थे कि ये सारे संसारको अपना घर समझते थे "उदार चरितानांतु वसुधैव कुटुम्बकम इसीलिये हरिजनोंकी रक्षामें इस महापुरुषने पूनामें आमरणान्त उपवासोंकी घोषणा करके अपने जीवनकी बाजी लगाई थी—मुसलमान भाइयोंको गले लगानेके लिये महात्माने कायदे आजम जिन्नाके दरवाजेको बारबार खटखटाया और अंतमें हृदयके टुकड़े करके भी पाकिस्तानको स्वीकार किया। यह बात भावी इतिहासका अवश्य कहेगा कि कायदे आजम जिन्नाकी अपेक्षा मुसलमानोंके सच्चे रहबर महात्मा गांधीजी ही थे। कलकत्ता और दिल्लीके आमरणांत अनशन मुसलमान भाईयोंके लिये ही किये गये थे। यह नामुकिन नहीं है कि देहलीमें की गयी सात शतोंने महात्माकी अहिंसक छाती पर हिंसाके ४ दाग दागे थे। मुसलमान भाई जानते हैं कि महात्माजीसे बढ़कर उन्हें गले लगानेवाला हिन्दुस्तानमें और कोई नहीं था। उनकी आंखोंमें हिन्द मुसलमान सिख पारसी सब समाये हुए थे। भारतवर्षकी विराट आत्मा गांधीजी थे। गांधीजीके रोम रोम और अणु अणुसे भारतमाताके कल्याणक मधुर गान निकला करता था। राजाओंके अन्याय—हरिजनों पर अत्याचार—मुसलमानोंके झगड़े सबके सब विराट पुरुष गांधीजीके शरीरके विकार होते हुए भी उनके अङ्गभूत हैं। स्वतंत्र भारतमें ये विकार अपने आप ही मिट जायंगे। संसारने यह अनुभव किया था। जो महात्माजीको खोता है वह हिंदुस्तानको खो रहा है और जो गांधीजीके साथ हैं वह हिन्दुस्तानके साथ हैं। मानो अकेले गांधीजी ४० करोड़के भारतको तोल रहे थे। जैसे हिमालय ऊंचा है वैसे ही महात्माजीका कर्त्तव्य तथा आदर्श ऊंचे थे। यह पृथ्वी पर होते हुए आकाशको छूते थे और आकाशमें उड़ते हुए पृथ्वीको देखा करते थे। व्यवहार और परमार्थका ऐसा प्रेम शायदही किसी मानवमें हुआ!

मट्टीका महादेव-किसी अलौकिक स्पर्शसे सोनेकी मूर्ति बन जाते। ऐसे ही इसका जीवन सत्य और अहिंसाके स्पर्शसे कुन्दन बन चुका था। मानव देहमें देव बननेका सबसे बड़ा आदर्श उदाहरण महात्मा थे।

महात्माजी यज्ञपुरुष थे। इनमें संघटनकी अद्भुत शक्ति थी। बारडोली, खेड़ा, चम्पारनके सत्याग्रह -क्या क्या कहें समस्त हिंदुस्तानका गत २५ वर्षोंका इतिहास इस यज्ञ पुरुषके प्रकाशसे ही जगमगा रहा है। एक एक वर्षमें सौ सौ वर्षोंका सामना करने वाले इस वीरके सामने नेपोलिन सिकन्दर और हिटलर पानी भरते थे। इन्होंने स्वयं अपनेको जीत रखा था अतः ये वीर नहीं महावीर थे, जीवनके क्षण क्षणमें इन्होंने महाभारत लड़े और विजय माल पहिनी थी। यज्ञका मर्म अनासक्ति इनके जीवनका महा मंत्र था। कांग्रेसके सर्वे सर्वा होते हुए भी चार आनेके सदस्य न थे गांधीजी वर्धा होते थे तो हिन्दुस्तानकी आंखें और कान वर्धा लगे रहते थे दिल्ली होते तो दिल्लीपर और पूना होते तो पूनापर। सूर्यकी चारों ओर ग्रह एवं उपग्रहके समान इस महात्माके आसपास हिन्दुस्तान

की समस्त शक्तियांकेन्द्रित हो गई थीं। आजभारत माता अनाथ सी हो गई है, भारतका भाग्य अस्तसा हो गया है। भगवान कृष्णने हिंसा और अहिंसा दोनोका उपदेश किया। भगवानबुद्धदेवने अहिंसाका मन्त्रोचार किया ईसा मसीहने कहा कि कोई एक गालपर मारे तो दूसरा गाल सामने धर दो और महात्माने कहा कि हिंसककी हिंसावृत्ति जब दूर करेंगे तब दुनियांका कल्याण होगा।

परन्तु हाय! आज हमारे कानोंको यह भी सुनना पड़ता है कि पूज्य बापू जो हिंसा वृत्तिको पीते हुए गोलियके शिकार हुए—नहीं नहीं ओठोंकी मुसकानसे हिंसक पर हंस गये अहिंसाकी जय बुला गये। बापूकी चरणधूली लेनेके बहानेसे नीचे झुक कर रिवाल्वरसे गोली चलानेवाले नवयुवक नाथराम गोडसेको हाथ जोड़ कर प्रणाम कर गये। हिंसककी गोलियोंको विजयमाल नहीं नहीं प्रियतम प्रभुका आह्वान समझ कर हंसते अधरोंसे राम राम करते हुए चिरनिद्रामें सो गये।

संसार अपने समयके महापुरुषोंके इतिहासको खूनसे रंगा करता है। लगभग दो हजार वर्ष पूर्व नाजरथके महात्मा ईसामसीहको देशवासियोंने हंसते हुए शूली पर लटकवाया था। २७०० वर्ष पूर्व ईरानने अपने पैगम्बर जरथुस्तको अहुर्णज्दकी पूजा करते हुए कत्ल कर दिया था। लगभग २५०० वर्ष पूर्व यूनानियोंने तपस्वी सुकरातको जहरका प्याला पिलाया था। स्वार्थी संसारने हजरत ईसासे लेकर अब्राहम लिंकनतकके महापुरुषोंको शूली पर चढ़ा कर खुशियां मनायी हैं। करुणाके अवतार बापूकी छातीमें लगी गोलियोंके दाग मानवताका साम्राज्यवादको चैलेंज है। हत्यारेने महात्माको नहीं मारा अपितु अपनेको मारा हैं। हिन्दू धर्मको कलंकित किया है। हिन्दू धर्मकी सफेद चादर पर कीलें गाड़ी हैं। मानवताकी तवारीखमें यह शहादत सोनेके अक्षरोंमें लिखी जावेगी। हुतात्मा बापू तो जीते हुए अमर थे और मर कर भी अमर हो गये हैं। नोआखालीका अकेला राहगीर डांडीके वीर सेनानायक, सेवाग्राम और साबरमतीके संतका देह भलेही यमुनाके राजघाट पर भस्म बन गया हो पर उसकी राखसे वह अखण्ड भारत उत्पन्न होगा जहां शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीयेंगे—हिन्दू-मुसलमान एक दूसरेको गले लगायेंगे अछूत शब्दका नाम न सुनायी देगा।

राष्ट्र पिता! आज तुम्हारी विदाई पर हिन्दुस्तान नहीं सारी दुनियां रो रही हैं। आप एकताके लिये जीये और उसीके लिये मरे। गुरू नानक, गुरू तेगबहादुर, और बंदा वैरागी तुम्हारी शहादत पर मुग्ध हो रहे हैं। सुकरात और हजरत ईसा तुम पर पुष्प वृष्टि कर रहे हैं। महर्षि दयानंद और हुतात्मा श्रद्धानन्द तुम्हें साधुवाद दे रहे हैं। दुनियां भरके शहीद तुम्हारे स्वागतके लिये खड़े हैं। पितामह! तुम्हारा बलिदान हमें यशमय बना दे यही प्रार्थना है।

सूरज डूब गया

मानवता के हरे जख्म का मरहम पोंछ लिया पशुता ने!
जिसके वरद बाहु के नीचे दुनिया में जीवन था निर्भय
जिसका वर्तमान होना ही दुर्ग मनुजता का था दुर्जय
निःसंशय होकर जिसके पीछे-पीछे युग चला आज तक
आज उसीकी ममता के दामनको नोंच दिया शिशुता ने!
और कौन रह गया विश्व-मानव पर मरने-जीने वाला
नीलकंठ सा मंथित जन-मन-सिंधु गरल को पीने वाला
प्रेम-सूत्रमें शान्ति-सुई से गूंथ रहा था हाय, हृदय हार जो
विश्व बाग को उस माली से वंचित हाय किया जड़ता ने!
जगी सृष्टि-वीणा के तारों की झंकार सोगयी सहसा
उगी और उगते ही उदयाचल पर किरण सोगयी सहसा
कमल-पत्र पर वारि-बिन्दु-सा दुनियां में देवत्व दिखा था
युग-युग के तप के दुर्लभ फलको यों लुटा दिया लघुता ने!
जीवन विजित बांधकर जिसको अपनी सीमित आयु-परिधिमें
काल पराजित डाल अमृतको अपने अतल मृत्यु-वारिधिमें
जीवन-मृत्यु रुदन रत दोनों अब विफलता से कातर हो
बापूको युग-युग को मन-मन्दिर में बिठा लिया जनता ने!
अमर-लोक को धरती ने सब से दामी बलिदान दिया है
मन्दिर में मूरत रख कर अपना जीवित भगवान दिया है
मिली स्वर्ग की सुर-वीणा को अपनी बिछुड़ी हुई रागिनी
जगको जयका अश्रु भरा ही गौरव किंतु दिया विभुता ने!

—हंस कुमार तिवारी

(८ वें पृष्ठका शेषांश)

जायेगी। टायर पर भी ५० प्रतिशत ड्यूटी बढ़ जायेगी।

कारखानेकी लागत पर २५ प्रतिशत ड्यूटी सिगरेट पर लगायी गयी है। तम्बाकूके कई किस्मों पर फी पौण्ड नौ आनेसे बारह आने और सस्ती तम्बाकू पर तीन आनेसे चार आने कर दी गयी है। ट्रंक टेलीफोन पर सर चार्ज ४० प्रतिशतसे ६० प्रतिशत बढ़ा दिया गया है। रजिस्ट्री फीस तीन आने कर दी गयी है। सालाना २५ हजार तक आमदनी करनेवाली छोटी कम्पनियोंका इनकम टैक्स आधा कर दिया गया है।

दियासलाई पर पिछले सालके बजटमें ड्यूटी फी ग्रूस २॥ से १॥। कर दी गयी थी। यह ड्यूटी फिर २।) कर दी गयी क्योंकि दी गयी रियायतका लाभ खरीददारोंको नहीं दिया गया। मौत कर लगानेका बिल भी इसी अधिवेशनमें पेश किया जायगा।

औद्योगिक प्रगतिका राष्ट्रीय दृष्टिकोण

लेखक—प्रो० शाह एम० ए०, पी० एच० डी०

स्वतन्त्रताकी ज्वलन्त ज्योति प्राप्त करनेके पश्चात हमारा कर्तव्य ब्रिटिश प्रतिक्रियावादी साम्राज्यशाहीके द्वारा उत्पन्न किये हुए अन्धकारको नष्ट करना हो जाता है। १५० वर्षकी गुलामीने हमारी आर्थिक स्थितिको खोखला बना दिया है और अब हमको ऐसी योजनाओंको तैयार करना है जो राजनीतिक स्वतंत्रताको पूर्णरूपेण सहयोग दे सकें क्यों कि बिना आर्थिक स्वतंत्रताके राजनैतिक स्वतंत्रता असली स्वतंत्रताकी भूमिका ही है। आज हिन्दुस्तानके कोने कोनेमें ऐसी योजनाओंका निर्माण हो रहा है ताकि उत्पादन साधनोंमें वृद्धि हो और भारतवर्ष एक भयंकर अराजकताको लांघ सके।

प्रथम महायुद्धके दुःपरिणामों व रूसकी आर्थिक योजनाओंकी सफलताके कारण इन आर्थिक नीतियोंने साम्राज्यवादी व पूंजीवादी देशोंका ध्यान आकर्षित कर लिया है। द्वितीय महायुद्धने तो आर्थिक प्रगतिकी हद किसी एक राष्ट्र तकही सीमित नहीं रखी है। स्वतंत्रताके पश्चात भारतमें राजनिर्माण और गैरराजनिर्माण योजनाए देशके सामने रखी जा रही है परन्तु इनको निर्माण करने वालोंको कुछ बाधक वस्तुओंको हटा देनी चाहिये ताकि भविष्यमें आर्थिक प्रगति बिना किसी रोड़ेके बढ़ सके।

औद्योगिक प्रगतिकी धीमी चाल

भारतीय आर्थिक स्थिति अभी तक हमारे देशके हितके लिये नहीं बनायी गयी और इस लिये ४० करोड़के हितके लिये कोई काम नहीं किया गया। कृषि पर दबाव ज्यादा होनेके कारण दरिद्रराज फैला हुआ है गरीब, मजदूर, किसानोंका जीवन स्तर गिरा हुआ है और चारों ओर अराजकताका आतंक छाया हुआ है। इनका रामबाण इलाज उद्योगोंका शीघ्र स्थापन ही है परन्तु दुःखके साथ कहना पड़ता है कि पूंजीवादोंकी नजरके नीचे हमारी औद्योगिक प्रगति बहुत हद तक रुकी हुई है और आज हमारे उद्योग मुश्किलसे एक या दो प्रतिशत आबादीको काममें लगा सके हैं। विदेशी व्यापार शक्कर व लोहेके कारखानोंमें प्राप्त हुई सफलता भारतवर्षकी औद्योगिक प्रगतिकी सूचक है। प्राकृतिक साधनोंने तो हिन्दुस्तानकी बहुत सेवा की है परन्तु मानुषिक तरकीबोंने अपना चमत्कार नहीं बताया है। एक बड़े पैमाने पर औद्योगिक कदम बढ़ाया जाय नहीं तो हमारा सर्वनाश हो जायगा।

प्राकृतिक सहारोंकी बरबादी

किसी भी देशके खनिज पदार्थ कृषिपदार्थोंके सदृश फिरसे नहीं रोपे जाते यानी उनकी मदद कुछ हद तक सीमित ही है। हमारे पास भी कुछ चीजोंका स्टाक सीमित ही है जैसे कोयला और हमको इन पदार्थोंका बंटवारा या उत्पादन इस ढंगसे करना चाहिये कि भविष्यमें भी इन वस्तुओंकी कमीके कारण हमारी आर्थिक प्रगति न रुके। भारतीय कोयलेकी कमेटीने कहा है कि अच्छा कोयला प्राइवेट पूंजीपतियोंके हाथमें होनेके कारण बरबाद किया जा रहा है। इसी तरह भीका व मेंगनीज भी बहुत बड़े पैमाने पर बाहर भेजा जा रहा है जब कि ये पदार्थ भारतकी औद्योगिक प्रगतिके लिये आवश्यक हैं।

हरेक राष्ट्रमें औद्योगिक नींव लोहे व बिजलीके बड़े-बड़े कारखानोंसे डाली गयी है परन्तु हमारे देशमें पहले पहल जूट व कपड़ेकी मिलोंका निर्माण हुआ है। इस तरहकी औद्योगिक प्रगति राष्ट्रके लिए हानिकारक हैं। लोहेके कारखाने तो सब उद्योगोंकी कुंजी हैं और इन कारखानोंके बिना कोई दूसरे उद्योगोंकी प्रगति असम्भव है। अतः कुंजी-उद्योगोंका बड़े पैमाने पर निर्माण हो।

उद्योगोंका अप्रकृतिक और संयोगिक स्थापन

उद्योगोंकी सफलताके लिये उनकी अच्छी जगहपर स्थापना होनेकी नितान्त आवश्यकता है। बम्बईमें कपड़ेकी मिलोंका अद्भुत संयोगिक ही है और यही कारण है कि ये मिलें आजकल कई कठिनाइयोंसे घिरी हुई हैं। वैसे देखा जाय तो बंगालमें कपड़ा बहुत बनाया जाता था और वहांका कपड़ा बड़ा अच्छा होता था—अतः बङ्गालका इस क्षेत्रमें पहला हक है। शक्करके कारखानोंका बिहार और संयुक्तप्रान्तमें ही केन्द्रीकरण हो जानेसे राष्ट्रीय नुकसान पहुंचा है। मालको इधर उधर ले जानेमें अड़चनें पड़ती हैं और मालकी बरबादी भी होती है। अतः उद्योगोंका विकेन्द्रीकरण राष्ट्रके लिये हितकर है। सी० पी० व बरा में सब तरहके प्राकृतिक साधनोंके विद्यमान होते हुए भी वह औद्योगिक क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है—राष्ट्रीय सरकारको इन प्रगतिशील प्रान्तोंकी ओर उचित ध्यान देना चाहिये।

विभिन्न उद्योगोंकी भिन्नता तो सबको मालूम ही है और वे किस तरह एक दूसरेका विरोध करते हैं। खादी, हेन्डलूम व मिलके कपड़ोंके परस्पर विरुद्धत राष्ट्रके लिये हानिकारक सिद्ध हुई है। सब क्षेत्रोंमें इस बातको महसूस किया गया है कि प्राचीन उद्योगोंको उत्तेजना दी जाय ताकि गांधीवादी योजनाका निर्माण अच्छी तरह हो सके जो कि हिन्दुस्तानके लिये

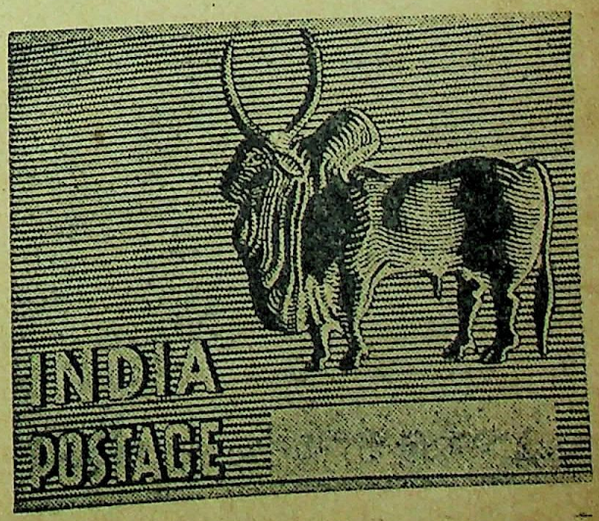

स्वराज्य स्टाम्प। प्रायः १७५०० भेज गये नमूनोंमें स्वीकृत इस स्टाम्पमें यह सांड समृद्धिका प्रतीक है।

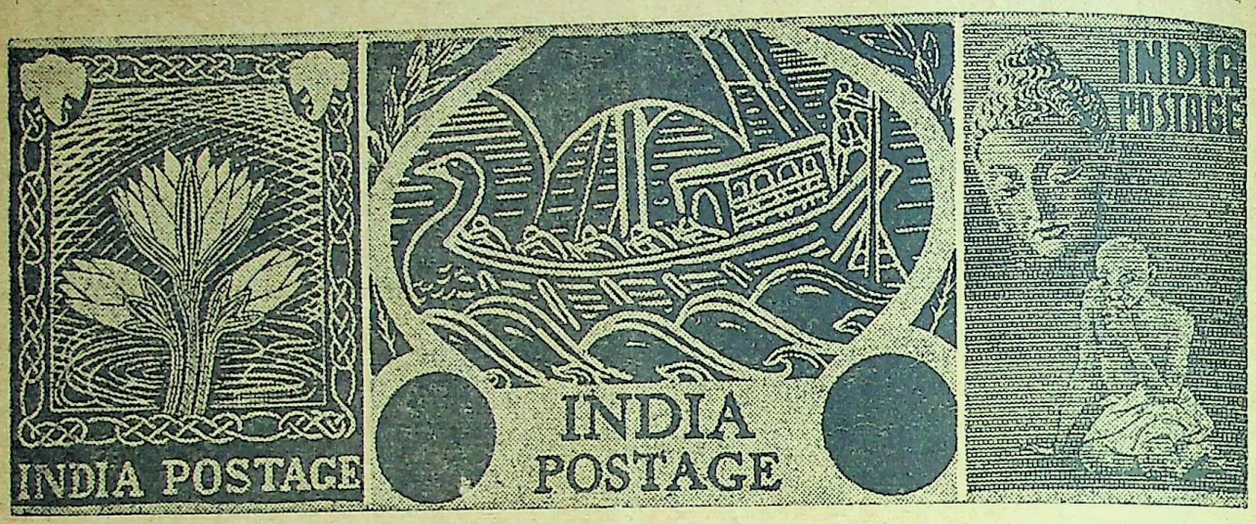

स्वराज्य स्टाम्प—पहला कमल शुद्धता, दूसरा जहाज, तीसरा बुद्ध और गांधी की प्रतिमा है।

हितकर है। आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवालने अपनी एक किताब "गांधीवादी आर्थिक योजना" में छोटे छोटे उद्योगोंके महत्वको स्पष्टतासे साबित किया है। इससे गांवोंकी बेकारी हटेगी, उनका जीवन स्तर ऊंचा उठेगा, आध्यात्मिक व आत्मिक प्रगति होगी तथा पूंजीपतियोंका भयंकर शोषण रुक जावेगा। अतः इन उद्योगोंको राष्ट्रमें एक अच्छा स्थान दिया जाय ताकि बापूका रामराज्य स्थापित हो सके।

उद्योगोंकी कम आयु

हिन्दुस्तानका औद्योगिक व आर्थिक इतिहास बताता है कि उद्योगोंकी प्रगति बहुत मुश्किलोंसे पूर्ण है। कई कम्पनियोंने दिवाला निकाल दिया और कई उद्योग बन्द हो गये। इसका परिणाम यह निकलता है कि एक राष्ट्रीय सम्पत्तिका विनाश होता है और दूसरे पूंजीका विनियोजन करनेवाले कुछ इस क्षेत्रसे पीछे हट जाते हैं और इस तरह उद्योगोंकी प्रगति रुक जाती है। राष्ट्रीय योजनाओंका निर्माण करते समय उद्योगोंकी निगरानीका पूरा ध्यान रखा जाय ताकि भविष्यमें ऐसी आफतका सामना न करना पड़े।

मांग और पूर्तिका सम्बन्ध

कई बार भारतीय उद्योगोंको सिर्फ इसी ही कारण नुकसान उठाना पड़ा कि कभी मांगसे भी ज्यादा मालका उत्पादन किया गया और कभी कम उत्पादन किया गया। अतः मालके उत्पादनका बाजारकी चहल पहलसे गहरा सम्बन्ध रखा जाय परन्तु हिन्दुस्तानमें इस तरहकी कोई कोशिश नहीं की गयी। शक्कर अभिषद और जूट पार्षदने इस ओर कदम उठाया परन्तु उनके कदम न तो राष्ट्रके हितके लिये थे और न उद्योगोंके। क्योंकि पूंजीपति तो हर समय अपने मतलबकी सोचते हैं, चाहे राष्ट्रका नुकसान क्यों न हो रहा हो। जूट परिषदके आधुनिक दृष्टिकोणसे अन्य देशोंने हमारे एकाधिकारको चेतावनी दे दी है और इसी तरह शक्कर अभिषद्के प्राइवेट दृष्टिकोणसे ही शक्करके कारखाने सफलताकी चरम सीमा तक पहुंचने पाये हैं। अतः योजना बनाने वाले अधिकारियोंको राष्ट्रीय उत्पत्तिको अच्छी तरह सोचकर कदम उठाना चाहिये।

केन्द्रीय, प्रान्तीय और विभिन्न रियासतोंकी योजनाओंमें कभी-कभी अन्तर पड़ जाता है। मजदूर नीति, खोज नीति इत्यादि क्षेत्रोंमें प्रान्तों व रियासतों के अलग रुख अपनाये गये हैं। इधर प्रान्तोंमें समाजवाद व राष्ट्रीयवादका नारा गूंज रहा है तो उधर रियासतोंमें पूंजीवाद रोब जमा रहा है क्योंकि निरंकुश राजा प्रगतिशील राष्ट्रीय शक्तियोंको दबानेके लिए शोषणवादी शक्तियोंका सहारा ले रहे हैं।। इसका असर आर्थिक स्थिति पर बहुत पड़ता है। अतः समानान्तर योजनाओंका निर्माण करना ही लाभदायक है।

फिर उद्योगमें पूंजीपतियोंका बोलबाला है। इन्तजाम उन्हींके हाथोंमें है। फिर उनके डायरेक्टर भी उन्हींके दबाव में है। मशीनोंका उपयोग बड़े पैमानेपर नहीं है। छोटी छोटी मशीनोंको काममें लाया जाता है। कोयलेकी खानोंकी लम्बाई व चौराई कम होनेके कारण बड़ी-बड़ी मशीनोंका उपयोग नहीं कर सकते हैं। फिर कारखानोंसे बची हुई चीजोंकी बरबादी होती है! बड़े बड़े कारखाने विदेशियोंके तावेमे हैं। इन सबका नतीजा यह निकलता है कि आर्थिक व औद्योगिक प्रगति रुक जाती है।

अतः भविष्यमें ऐसी योजनाओंका निर्माण करते समय वैज्ञानिक चीजोंको अमलमें लाना जरूरी है। प्रान्तीय व केन्द्रीय प्राधिकारोंको साथमें मिलकर कोई ठोस योजना बनानी चाहिए ताकि पनपते हुए उद्योगोंका भला हो और भविष्यमें उत्पादनकी कभी कमी न हो।

[भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट, वर्धा]

भारतका प्रस्तावित विधान

भारतके नये विधानका जो नया मस विदा प्रकाशित किया गया है उसमें भारत के सभी नागरिकोंको न्याय, स्वतन्त्रता, समानता और बंधुत्वका विश्वास दिलाया गया है। भारतका राज्य सार्वभौम लोक-तंत्रीय प्रजातन्त्र होगा। भारत राज्योंका संघ होगा जिसके अन्तर्गत गवर्नरके प्रांत, चीफ कमिश्नरके प्रान्त, संघमें सम्मिलित रियासतें और अण्डमन तथा निकोबार द्वीप रहेंगे। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि कितने राज्य भारतके अन्तर्गत होंगे।

मौलिक अधिकार

विधानके मौलिक अधिकारोंके अध्यायमें धर्म, जाति या लिंगके आधार पर किसी तरहके भेदभाव, पार्थक्यका स्पष्ट निषेध है। सरकारी नियुक्तियोंमें सुविधाकी समानताकी गारण्टी दी गयी है, अस्पृश्यता उठा दी गयी है और किसी रूपमें इसका चलन गैरकानूनी करार दिया गया है।

नवीन राज्यकी ओरसे कोई उपाधि नहीं दी जायेगी और न इसका नागरिक किसी विदेशी राष्ट्रकी उपाधि ग्रहण करेगा!

प्रस्तावित विधान स्वतन्त्रताका प्रतीक है किन्तु स्वतन्त्रताका अर्थ उच्छृंखलता या बेलगाम नहीं समझना चाहिये। विचार सभा समूह, गतिविधि, आवास और वृत्तिकी स्ततन्त्रता रहेगी। इसका अर्थ यह नहीं है कि मानहानि, बदनामी, द्वेष-पूर्ण प्रचार और राजद्रोहके मौजूदा कानून अथवा सार्वजनिक शान्ति व्यवस्था नैतिकता अथवा स्वास्थ्यके सम्बन्धमें बने कानून उठ जायेंगे या इस तरहके नये कानून नहीं बनेंगे।

हिताहित विवेककी स्वतन्त्रता और धर्म स्वीकार पालन और प्रचारकी स्व-तन्त्रता पर बहुत जोर दिया गया है। प्रत्येक व्यक्ति धार्मिक संगठन, धार्मिक मामलोंके संचालनमें तथा धार्मिक और दातव्य कर्मोंके लिये सम्पत्ति रखने, प्राप्त करने और उसकी व्यवस्था करनेको स्व-तंत्र है। किन्तु राज्य कोषसे किसी धार्मिक शिक्षा या प्रचारकी व्यवस्था नहीं की जायेगी। सम्पत्तिके अधिकारकी गारण्टी भी दी गयी है! सर्वाधिक महत्व वैधानिक उपायोंको दिया गया है। विधान द्वारा प्रदत्त अधिकारोंको कार्यान्वित करने के सम्बन्धमें निर्देश अथवा आदेश जारी करनेका अधिकार सर्वोच्च न्यायालयको दिया गया है।

प्रस्तावित विधान

प्रस्तावना समिति द्वारा प्रस्तुत भारत का प्रस्तावित बिधान, जो विधान परिषदके अध्यक्षको समर्पित कर दिया गया है १८ भागोंमें है। विधानमें ३१५ धाराएं और आठ प्रकरण हैं। प्रस्तावना समितिके सदस्य हैं: डा० बी० आर० अम्बेदकर (अध्यक्ष) सर्व श्री गोपाल स्वामी आयंगर, कृष्ण स्वामी ऐय्यर के०एम० मुन्शी, माधव राव, डी० पी० खेतान और सैयद महम्मद सादुल्ला।

अध्यक्षको रिपोर्ट समर्पित करते डा०अम्बेदकरने यह स्पष्टीकरण किया है कि विधान प्रस्तुत करनेमें समितिने विधान परिषद द्वारा किये गये निर्णयोंके अनुसार चलनेका प्रयत्न किया है। कुछ ऐसे विषय थे जिनमें समितिने कुछ परिवर्तन सुझानेकी आवश्यकता समझी है।

विधानके प्रथम भागमें संघ और उसके प्रदेश और सीमाधिकारका उल्लेख है। भारतके प्रदेशान्तर्गत अण्डमन और निकोबर तथा राष्ट्र द्वारा प्राप्त किये गये अन्य प्रदेश रहेंगे। नवीन राज्योंके प्रवेश, स्थापना और निर्माणकी व्यवस्था भी रखी गयी है।

विधानके दूसरे भागमें नागरिकता और तीसरेमें मौलिक अधिकारोंकी परिभाषाका वर्णन है। चौथे अध्यायमें राज्यनीति निर्धारण सम्बन्धी सिद्धांतोंका उल्लेख है। इसके अन्तर्गत यह व्यवस्था दी गयी है कि जनसाधारणकी उन्नति और समृद्धिको दृष्टि रखकर समाज संगठन और व्यवस्थाके लिये राज्य कतिपय नीति सिद्धान्तोंको मानकर चलेगा। इसके अन्तर्गत यह भी आता है कि सबको काम मिले, शिक्षा मिले और कुछ मामलोंमें सरकारी मदद मिले।

सङ्घशासन

विधानके पांचवें भागमें संघशासन समितिका उल्लेख है। भारतका राष्ट्रपति राज्यका प्रधान होगा। संघके तमाम शासनाधिकार राष्ट्रपतिके हाथमें रहेंगे जिनका प्रकाश और प्रयोग उत्तरदायी मन्त्रियोंके सलाहसे वह करेगा। उसका चुनाव पार्लमेण्टकी दोनों परिषदोंके सदस्यों तथा संघमें सम्मिलित समस्त राज्योंके निर्वाचित व्ययस्थापकों द्वारा प्रति पांचवें वर्ष होगा। एक बार निर्वाचित राष्ट्रपति पुनः एक बार निर्वाचित किया जा सकता है। किन्तु तीसरी बार वह नहीं खड़ा हो सकता। राष्ट्रपतिके निर्वाचनमें उम्मेदवारकी उम्र कमसे कम ३५ वर्ष अवश्य होनी चाहिये और पार्लमेण्टकी छोटी परिषदका सदस्य भी होना चाहिये। विधानके विपरीत आचरणके लिये राष्ट्रपतिके विरुद्ध अभियोग लगाया जा सकता है। विधानमें उपराष्ट्रपतिका स्थान भी रखा गया है। वह राज्यपरिषद-का एक्स आफिसियो (पदेन) अध्यक्ष होगा। उसका चुनाव पार्लमेण्टकी दोनों परिषदोंके सदस्यों द्वारा सम्मिलित बैठक में आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणालीके अनुसार सिंगल ट्रांसफरेबल वोट द्वारा होगा। उसका कार्यकाल पांच साल रहेगा। राष्ट्रपतिका स्थान जब कभी रिक्त होगा उपराष्ट्रपति उस पदपर चुना जायगा। राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपतिके चुनावके सम्बन्धमें उत्पन्न सन्देह या झगड़ेका फैसला सुप्रीम कोर्टमें होगा और उसका निर्णय अन्तिम होगा।

मन्त्रि मण्डल

मन्त्रिमण्डलके सम्बन्धमें प्रस्तावित विधानमें यह कहा गया है कि प्रधान मन्त्री उसका अध्यक्ष होगा जो राष्ट्रपतिको उसके कर्तव्य पालनमें सहायता और सलाह देगा। मण्डल जन प्रतिनिधि सभाके सामने सामूहिक रूपसे जिम्मेदार होगा। भारत सरकारके तमाम शासन सम्बन्धी कार्य राष्ट्रपतिके नामपर यह मण्डल करेगा।

संघशासन-व्यवस्था सम्बन्धी सब बातों एवं कानून बनानेके प्रस्तावोंके सम्बन्धमें यदि राष्ट्रपति कुछ जानना चाहेगा तो उसे यह जानकारी हासिल कराना प्रधान-मन्त्रीका कर्त्तव्य होगा। वर्तमान विधान-में एडवोकेट जेनरलकी जगह एटर्नी जेन-रलकी नियुक्तिका प्रस्ताव भी किया गया है।

संघ पार्लमेण्ट

संघ पार्लमेण्टमें एक अध्यक्ष और दो परिषदें, राज्यपरिषद और जन परिषदके नामसे रहेंगी। राज्य परिषदके २५० सदस्योंमें १५ अध्यक्ष द्वारा मनोनीत किये जायंगे। ये १५ सदस्य साहित्य, विज्ञान कलादिके प्रतिनिधि होंगे। जन परिषदके सदस्य पांच सौसे अधिक न होंगे। इनका चुनाव संघके अन्तर्गत राज्योंमें बालिग मताधिकारके आधारपर होगा। और प्रति साढ़े सात लाखकी आबादीपर कमसे कम एक प्रतिनिधि चुना जायेगा। और प्रति पांच लाखकी आबादीपर एकसे अधिक नहीं चुना जायेगा।

राज्य परिषद कभी भंग नहीं होगी। किन्तु प्रति दूसरे वर्षकी समाप्तिपर प्रायः एक तिहाई सदस्य अवसर ग्रहण करेंगे। जन परिषदकी अवधि पांच वर्ष होगी और इस अवधिके बाद वह भंग समझी जायेगी किन्तु किसी आकस्मिक संकटके समय एक वर्ष तक अवधि बढ़ानेकी व्यवस्था रखी गयी है।

हिन्दी और अंगरेजीमें

संघ पार्लमेण्टका काम हिन्दी अथवा अंगरेजीमें होगा किन्तु जो सदस्य इन दोनों भाषाओंमें अपने विचार सम्यक रूपसे प्रकट नहीं कर सकता उसे परिषद-का अध्यक्ष अपनी मातृभाषामें विचार प्रकट करनेकी अनुमति दे सकता है।

राष्ट्रपति के अधिकार

राष्ट्रपतिको यह अधिकार दिया गया है कि जब पार्लमेण्टकी दोनों परिषदोंके अधिवेशन चल रहे हों उस समयको छोड़ अन्य किसी समय वह आर्डिनेन्स जारी कर सकता है। राष्ट्रपति ये आर्डि-नेन्स अपने मन्त्रियोंकी सलाहसे जारी करेगा और यूनियन पार्लमेण्टकी बैठक पुनः आरम्भ होनेके छै सप्ताह बाद आर्डिनेन्स चालू न रहेंगे।

गवर्नरके प्रान्त

विधानके छठ भागमें राज्योंका, जो गवर्नरके प्रान्त होंगे प्रकरण हैं। प्रत्येक राज्यमें एक गवर्नर होगा और राज्य के शासनाधिकार उसके हाथमें रहेंगे। गवर्नरके चुनावके सम्बन्धमें मसविदेमें दो विधियां सुझायी गयी हैं। पहली विधि विधान परिषदके निर्णयके अनुसार यह है कि गवर्नरका चुनाव उन लोगोंके प्रत्यक्ष वोटसे हो जो राज्यकी व्यवस्था परिषदके साधारण चुनावमें वोट देनेके अधिकारी हैं। दूसरी विधि यह है कि गवर्नरकी नियुक्ति प्रेसिडेण्ट करे। नियम यह होगा कि राज्यकी व्यवस्थापिका परिषद गवर्नर पदके लिये चार व्यक्तियों को, जिनका उसी राज्यका निवासी होना आवश्यक नहीं है, चुन दिया करे और इन्हीं चारमेंसे प्रेसिडेण्ट किसी एकको गवर्नर नियुक्त करेगा। पहली विधिके सम्बन्धमें आपत्ति यह की गयी है कि जनता द्वारा निर्वाचित गवर्नर और व्यव-स्थापिकाके सामने जिम्मेदार प्रधान मन्त्री की एक समान स्थिति संघर्षका कारण होगी जिसके फलस्वरूप शासनमें कम जोरी आयेगी। गवर्नरका कार्य काल पांच वर्ष होगा और विधान भंगके अभि योगमें उसके खिलाफ मामला भी चलाया जा सकता है। डिप्टी गवर्नरका रखना कमेटीने आवश्यक नहीं समझा क्योंके गवर्नरकी मौजूदगीमें उसके लिये कोई काम ही नहीं है। किसी आकस्मिक स्थितिमें गवर्नरके कार्यके लिये व्यवस्था करनेका अधिकार राज्यकी व्यवस्थापिका (अथवा प्रेसिडेण्ट) को दिया गया है। गवर्नरकी एक मन्त्रिसमिति होगी जिसका अध्यक्ष प्रधान मन्त्री होगा। कुछ मामलोंको छोड़ जैसे व्यवस्थापिका

दक्षिण पूर्व एशिया युवक सम्मेलनमें उपस्थित ब्रिटिश प्रतिनिधि।

बुलाने या भंग करने स्टेट पब्लिक सर्विस कमीशनके चेयरमन और सदस्यों तथा आडिटर इनचीफकी नियुक्ति एवं राज्यकी शान्ति और व्यवस्थाको खतरा उत्पन्न होनेकी आकस्मिक स्थिति में विधानको स्थगित रखनेकी घोषणा के अतिरिक्त अन्य सब मामलोंमें गवर्नर अपने मन्त्रियोंकी सलाहसे चलेगा। विधान स्थगित रखनेके अधिकारका प्रयोग दो सप्ताहसे अधिक नहीं कर सकेगा और गवर्नरको इसकी रिपोर्ट प्रेसिडेण्ट को करनी होगी। राज्यके तमाम शासन सम्बन्धी कार्य गवर्नरके नामसे होंगे। गवर्नरके चाहने पर शासन सम्बन्धी आवश्यक बातोंकी जानकारी गवर्नरको कराना प्रधान मन्त्रीका कर्त्तव्य होगा। प्रत्येक राज्यके लिये एक एडवोकेट जेनरल होगा। राज्यके प्रधान मन्त्रीके इस्तीफा देने पर एडवोकेट जेनरलको भी अपने पदसे अवसर ग्रहण करना होगा।

(क्रमशः)

———

जगरनाथकी मुसीबत

श्री नरेन्द्रलालसाह 'जगाती'

कहींपर बैठी नहीं कि नजाकतसे भरी वह अदा दिखलायेंगी कि पूछिये मत, खुदा ने छः नाजुक टांगे क्या बख्श दीं कि अपने बराबर किसीको देखती ही नहीं। आई, बैठी दो अगली टांगे उठीं और उनसे अपना सिर रगड़ना शुरू कर दिया, पतली पतली तो जनाबकी गर्दन बालके बराबर,पर लगा रहता है हर समय रगड़-घिस्सा ही, कोई कहेगा यह इतनी ही, सफाईसे रहती है। मुंहकी सफाईसे छुट्टी मिली तो अगली टांगे अपने यथास्थानपर आई और पिछली दो टांगे उठी, अब देखो पिछले भागमें रगड़घिस्सा हो रहा है, पंखोंको ब्रुश किया जा रहा है, न मालूम किन्हें रिझानेके लिये इन्हें इतने बनाव-शृंगारकी आवश्यकता महसूस होती है।

बदजात इतनी कि दिनमें चैनसे तो सोने दें, कभी नाकके अन्दर घुसेंगी, कभी कानके, मानो इनके ही बापका घर है, हर चीजमें हस्तक्षेप करेंगी। खाना खाने बैठो तो एक तरफसे बिना बुलाये आप भी आकर जीमने लगेंगी। पाखाना करने बैठो वहां भी आकर सूंघने लगेंगी, शरम भी नहीं लगती, किसीसे बातें करो वहां भी शरीफ लोगोंकी तरह आ धमकेंगी। चार भले लोग आपसमें बैठे गपसपकर रहे हैं या ताश खेल रहे हैं या शतरंजकी बाजी बिछी है और लो, कहींसे दो प्रेमी गुंथे हुए बीचमें टपसे आ गिरते हैं, उन बेचारोंकी तो लाजके मारे आंखें झुक जाती हैं और इनकी प्रेमपिपासा तृप्त होती है, अनंगकी इतनी सतायी होती हैं कि हर किसीसे उड़ते उड़ते प्रेम कर लेती हैं और लाज, हया, शरम, शराफत सबकी तिलांजलि दे देती हैं।

ऐसी कोई वस्तु नहीं जहां इनकी पहुंच न हो।

* * *

जगरनाथ इन्टरमीडियेट फाइनलके विद्यार्थी हैं। कोई छः-सात महीने हुए इनका विवाह हुआ। भाग्यवान बहू घरमें आयीं और इनके पिताजीकी तरक्की हो गयी। वह नायब-तहसीलदारीसे तहसील-दार हो कर अपना नया ओहदा संभालने नये शहर पहुंच गये। एक तो इस शहरमें मक्खियोंकी वैसी ही बहुतायत थी, तिस-पर इस हाउस-कन्ट्रोलके जमानेमें इन्हें अपना निवासस्थान घनी बस्तीके बिलकुल नजदीक मिला, थोड़े दिनोंमें जगरनाथकी पत्नी भी अपनी छोटी बहनको साथ लेकर ससुराल पहुंच गयी।

तहसीलदार साहब तरक्कीमें तो अवश्य ही यहां आये किन्तु मालूम पड़ता है गवर्नमेन्टने शायद नायब-तहसीलदारसे तहसीलदार बनने वालोंके लिये यह जगह इसी लिये खास तौरसे तजवीज की कि पुराने तहसीलदार मक्खियोंके डरके कारण यहां रहना पसन्द नहीं करते थे। इक्का दुक्का जो कोई भी यहां आता था, जल्द बदली कराकर यहांसे जान छुड़ाकर निकल भागता था।

हां, तो जगरनाथ इन्टर-मिडियेटका इम्तहान दे कर नववधू मिलनकी खुशीमें दिलमें मीठे मीठे अरमान लिये हुए सीधे यहां पहुंचे। रास्ता स्टेशनसे बाजार होता हुआ इनके घर जाता था। पहले तो जगरनाथ वैसेही तुनुक मिजाज थे उसपर मारे मक्खियोंके दिमाग भन्ना उठा और जैसे-तैसे घर पहुंचे।

* * *

पता नहीं मक्खियोंको नासिकासे खास मुहब्बत क्यों होती है। जैसे मधुकर फूलोंका रस चूसता है वैसे ही मक्खियां नासिकाका रस-स्वादन लेनेमें मर मिटती हैं। आखिर वही हाल हुआ। एक इश्ककी सताई मक्खीने अन्तमें अपने प्यारे जगरनाथकी पतलीसी रसीली नासिकापर इस तरहसे कब्जा जमाया मानो जगरनाथकी नासिकासे कोई बहुत पुरानी आशनाई हो। प्रेमकी रीति ही निराली होती है जगरनाथने भी प्यारका वह हाथ दिखाया कि आंख मारते मारते प्रेम रस हवा हो गया और वह उड़ती नजर आयी। परन्तु दूसरे ही क्षण जरा दो-तीन चक्कर मार कर वह अपनेपर काबू न रख सकी और टपसे जगरनाथकी नासिकापर पुनः चिपट गयी। प्रेमी ही प्रेमीको पहचानता है। इस-लिये प्रेमी जगरनाथने भी पैंतरा बदला और इस निपुणतासे प्यारा हाथ फेंका कि उसे अपनी मुष्टिकामें बन्दी बना लिया, किन्तु थी वह भी घिसी घिसाई, वह मुट्ठी के छिद्रसे हवा हो गयी और...

जगरनाथ मुंह बनाकर टापते ही रह गये। वह प्रेममें फंसी मक्खी पुनश्च अपने यारके यथायोग्य स्थानपर चढ़ बैठी। जगरनाथ साहब खिसियानेसे हो गये और हार खाये प्रेमीकी भांति ऐसा मुंह बनाया कि गणेशको हंसी आ गयी जो यह सब देख रहा था।

"क्यों बड़ी हंसी आ रही है? जगरनाथ झेंप मिटानेको बोला।

"यूं ही तुम्हारी हालत पर तरस आ रहा है।", गणेशने जवाब दिया, "ये मक्खियां देखी?"

"ओफ! नाकमें दम कर देती हैं सालियां।"

'हां यही तो मैं भी सोच रहा था सालियां, नाकमें दम कर देती हैं।"

'दुरुस्त फरमाते हो यार, सालियोंको नेस्त नामूद करनेकी कोई दवा तो बतलाओ फिर?"

'दवा!" कुछ देर सोचनेके बाद गणेश एक दम चुटकी बजाते हुए उछले "मिल गयी, सालियोंको चिपकानेका कागज लाओ और डी० डी० टी० करो और हां! जगरनाथ बाब खास बात तो पूछना ही भूल गया जिसके लिये मैं यहां तक आया, तुम्हारी वो कैसी हैं?"

'कौन?"

'अरे वो ही, सुननेमें आया है कल से कुछ तबीयत नासाज हो रही है।"

हां, आज ठीक है, खाली हेडेक हो रहा था। क्या बताऊं मेरी तो नून, तेल, लकड़ीमें जिन्दगी गुजर जाती है, कभी कुछ, कभी कुछ, तुम ठीक हो जो अभी

मियांसे नाता, जिन्दगीका भोग करते हो भाई।"

इसी बीच कमला एक प्लेटमें मिठाई लेकर आयी और उसका जीजाके सामने प्लेट रखना ही था कि दो-चार मक्खियां चट उड़कर कलाकन्द और मोतीचूरके लड्डुओं पर बैठ गयीं और थोड़ी देर में तो चारों तरफसे भिनभिनाहट शुरू हो गयी। जगरनाथ भन्ना उठ और मक्खियों को उड़ाते हुए बोले, "देखा ? सालियोंकी जात बे औकात होती है।"

यह सुनते ही कमला ठिठक कर रह गयी।

"सही फरमाते हो यार। भला देखिये यह कहांकी शराफत हुई।" गणेशने चुटकी ली।

"तुम तो शराफतकी दुहाई दे रहे हो। लेकिन होतीं इतनी नामाकूल की कि नाकमें दम कर देती हैं।'

"साथ ही चंचल भी।"

"अजी चंचल ! मैं तो कहूंगा दुष्ट इतनी होती हैं कि पल भर तो सुखसे बैठने दें। आरामकी सांस लेने दें। घरमें वही ससुरालमें वही। दिन-रात भिन-भिनाना और पीछे लगे रहना।"

कमलाने यह सुना तो सुन्न रह गयी,।

गणेशने घड़ी देखी और आश्चर्य चकित हो कहा, "दो बज गये ! अच्छा अदाबअर्ज।"

अरे ! बैठो भी। अभीसे कहां चले ?'

"नहीं जनाब, अब एक सेकिन्ड भी नहीं। एकसे दो बजे मिलनेका ऐपौयन्ट मेन्ट था सो बातों ही बातोंमें सब भूल गया। दो यहीं बज गये। "इतना कह गणेश चला गया।

जगरनाथ—"बैठो कमला।"

कमला—बैठो ! हमारा अंगूठा बैठे। क्या मिल रहा है मुझे आपके यहां जो कोसी जाती हूं ? मैं अब कल अपने घर चली जाऊंगी, तब सुखकी नींद सोना" अरे ओ। जल भुन क्यों रही हो, बात क्या हुई ?"

"आप बुरा-भला कहें और मैं खड़ी सुनती रहूं ?"

"मैंने क्या कहा तुमसे, वैसे ही खामुखा नाराज हो रही हो ?"

ओफ ! झूठकी भी हद हो गयी।"

इसी बीच कलाकंदके टुकड़ेके साथ एक मक्खी जगरनाथके मुंहके अन्दर घुसने लगी। 'हट साली बदजात कहीं की।" कहकर जगरनाथने मक्खीको भगानेको हाथ चलाया। चूंकि जगरनाथ का सारा दिमाग मक्खीकी तरफ था, कमला प्लेट उठाने झुकी थी, इसलिये वह हाथ गल्तीसे कमलाके गालमें जाकर पड़ा और वह डरके मारे भाग गयी, कमरेसे बाहर निकलकर ही उसने दम लिया और सोचने लगी "जीजा तो ऐसे थे नहीं, आज इन्हें क्या हो गया जो हाथ छोड़ रहे हैं ? जरूर इनका दिमाग कुछ खराब हो गया है।"

तत्काल कमलाको एक पागलकी याद आ गयी जिसे उसने तीन ही महीने पहले देखा था। वह भी ऐसा ही बकता था। बस चटपट दिमागमें आ गया जीजाका दिमाग खराब हो गया है। फिर अब देरदार तो करनी ही न थी। झट भागती हुई रसोई घरमें पहुंची जहां जगरनाथकी मां पकौड़ियां बना रही थी।

इधर जगरनाथने दरवाजे बन्दकर चिटखनी चढ़ा दी और 'ब्लेकका' जासूसी उपन्यास 'जबरदस्त ठग' पढ़नेमें तल्लीन हो गये।

कमलाने जगरनाथकी मां को झक-झोर कर कहा, "जरा चलकर देखिये तो जीजाको क्या हो गया ?"

मां घबराकर—"क्यों क्या हो गया री ?"

'पता नहीं क्या हो गया ? पागलोंकी तरह बक रहे हैं।

"बक रहा है ! क्या बक रहा है ?"

'ऐसी ही भद्दी भद्दी बे सिर पैरकी बातें।"

"कुछ कह भी तो।"

मां और कमला जगरनाथके कमरेमें पहुंचे तो दरवाजा बन्द था। दरवाजा खटखटाया गया, इतनेमें भीतरसे आवाज आयी खट' और इसके साथ ही जगर-नाथ बोला, "बड़ी मुश्किलसे एक सालीको भगाया तो दूसरी आ जाती है।"

देखिये कान लगाकर सुनिये"कमलाने मां से कहा,

मां ने बड़े ध्यानसे घबड़ाकर दरवाजे पर कान लगाया तो जगरनाथकी आवाज सुनायी देने लगी, "फिर साली आ गयी, इन्होंने नाकमें डोरा डाल दिया, हराम-जादी, दुष्ट, नामाकूल।" इसके साथ हीं चटाचट खटाखट किसी चीजसे मारनेकी आवाज आयी,मां का सन्देह बढ़ा। ईश्वरने सालियोंको न जाने क्यों पैदा किया, पढ़ने भी नहीं देती, कमीनी तंग करती हैं।" फिर चटकी आवाज आयी,"भागती नहीं साली, ऐसे काम नहीं चलेगा। अब आज ही चलकर सालियोंको मारनेकी दवा लाता हूं।"

यह सुनकर मांका सन्देह कुछ पुष्ट हुआ और कुछ कुछ डर भी पैदा हुआ, वह बोली, "जग्गू, दरवाजा खोलना, एक बड़ा जरुरी काम है तुझसे।"

"क्या काम है, वहींसे कह दो।"

"दरवाजा तो खोल तू।"

जगरनाथ उठा तो भन भन करती हुई मक्खियां उड़ने लगीं। एक तो उसके कान के छेदमें जाने लगी। नतीजा यह हुआ वह दरवाजा खोलना छोड़ मक्खियोंका खात्मा करनेमें पिल पड़ा, 'ओफ ! नर्क हो गया नर्क बाबूजीकी भी कहां बदली हुई, जिन्दगी को नर्क बना डाला साली हरामजादियोंने। तीन सालोंसे आज पाला पड़ा, अब तो अभी मारनेकी दवा लाता हूं।"

यह सुनते ही मां और कमलाके होश उड़ गये। अन्दरसे जैसे ही जगरनाथने चिटखनी खोली मांने अशुभ आशङ्काके भयसे वैसे ही बाहरसे चिटखनी चढ़ा दी।

अब जगरनाथ कहां थे, पारा चढ़ गया, जोर जोरसे दरवाजा खटखटाने लगे, "क्या काम है ? दरवाजा खोलो तंग करते हैं।"

'कुछ काम नहीं है जग्गू, बापूजीको आने दे।"

"बाबूजी बापूजी, समझमें नहीं आता खामुखा दूसरेको दिक करते हैं। मैं कह रहा हूं दरवाजा खोलो, मेरा तो काम है।"

"क्या काम है तेरा ?"

"तुमसे मतलब ? बाजारसे मारनेकी दवा और चिपकानेका कागज लाना है, खोलो दरवाजा।"

अब तो मांको पूर्ण विश्वास हो गया कि जगरनाथका दिमाग फिर गया, वह रोते रोते लौट आयी, जगरनाथकी पत्नी देवकी भी पड़ौसीके यहांसे लौट आयी थी, आते ही मांने देवकीको भी जगरनाथके कमरेका दरवाजा न खोलनेका आदेश दे दिया और यह भी बतला दिया कि जग्गू-का दिमाग खराब हो गया है और वह बाजारसे जहर लानेके लिये हठ कर रहा है। यह सुनना था कि देवकी भी रोने लगी, और सब दफ्तरसे बाबूजीके आनेकी प्रतीक्षा करने लगे।

मां सोचती—"हाय राम ! कसी बहू आयी, आते ही मेरे लालको पागल कर दिया। हे ईश्वर, क्या मुझे यह दिन भी देखना था ? बहू बड़ी डायन निकली, ..." नहीं नहीं, बहूका क्या कसूर, मैं फिजूल कोस रही हूं, बहू तो लक्ष्मी है लक्ष्मी, किसी दुश्मनने जादू टोना कर दिया, कौन जन्मका मेरा बैरी निकला मैंने ऐसे कौनसे पाप किये होंगे,"..... "हमारा दुश्मन तो ऐसा कोई नजर ही नहीं आता, मालूम पड़ता है इस सुन्दर जोड़ीको देखकर लोगोंकी नजर लग गयी, डाक्टर-फाक्टरसे कुछ नहीं होगा। 'मक्सू" ओझा बुलाना चाहिये। वही झाड़ कर ठीक करेगा, इसकी और कोई दूसरी दवा नहीं।".....'हे परमात्मन हे भगवान अगर मेरा जग्गू ठीक हो जाय तो मैं सत्यनारायणकी पूजा कराऊंगी,..."

दूसरी तरफ देवकी आंखोंमें अश्रु लिये सोच रही थी—"हे राम मैंने क्या बिगाड़ा तुम्हारा जो तुमने मेरे सिरमें वज्राघात कर दिया ? क्यों तुमने मेरे नाथ को पागल बना दिया ? क्या तुमसे इतना सुख भी नहीं देखा गया ? तुम्हें जरा भी दया न आयी ? फिर क्यों लोग तुम्हें दयासागर, करुणासागर, दुखहर्ता आदि आदि नामोंसे पुकारते हैं ?"....

"नाथ, अब मैं क्या करूं जिन्दा रहकर ? मैं तो तुम्हारे जीते जिन्दगी विधवा बन गयी। हे भगवान तुमने बसा बसाया घर उजाड़ दिया, तुम्हारे हाथ क्या लगा ? तुम्हें क्या सुख मिला, क्या आनन्द मिला ?".....'नहीं नहीं नाथ आप पागल नहीं हुए हैं,".....'क्या आप सचमुच पागल हो गये ? पागल नहीं हुए तो जहर लानेकी क्यों सूझी ? नहीं नहीं, आपने वैसे ही कह दिया होगा, आपको कुछ नहीं हुआ है, आप अच्छे हैं, बिलकुल अच्छे...."फिर यह सब गोलमाल क्यों ? मेरा भाग्य फूटा निकला, सब मेरे भाग्यका दोष है ....।"

कमला गुमसुम बैठी कभी मांको देखे और कभी देवकीको।

इनका तो यह हाल था और उधर जगरनाथ कमरेमें बन्द तड़फड़ा रहा था, मक्खियोंने उसके नाकमें दम कर रखा था, वह कितने ही जोरसे दरवाजा खट-खटाये चिल्लाये किन्तु कोई उत्तरही न दे। अपने ही गुस्सेको वह अपने आप खा रहा था।

साढ़े चार बजे तहसीलदार साहब घर पहुंचे तो जगरनाथकी मां अपना दुखड़ा रोने लगी और बहू अपना। कमला अलग ही गीत गाने लगी, सुनते ही तह-सीलदार साहब भी हक्के-बक्के रह गये और डाक्टरको बुलाने उल्टे पांव लौट पड़े।

डाक्टर आये और दो-तीन तहसी-लदार साहबके पड़ोसी भी। किवाड़ खोला गया तो लोगोंने देखा कमरा धुंवेसे भरा है और बीच कमरेमें एक टीनके पत्तरमें अखबार और फाइलोंसे धुंआ उठ रहा है, जगरनाथकी आंखें लाल हो रही हैं आंसू बह रहे हैं और सिरके बाल अस्त-व्यस्त हो रहे हैं, लोगोंको जगरनाथकी यह दशा और हरकत देख कर अब पागल होनेमें कोई सन्देह न रहा और डाक्टर हाथ पकड़ कर उसे बाहर ले आया।

देवकी जो अबतक घूंघट काढ़े गुम-सुम ससुरके पीछे खड़ी थी, वह सुराई उठा लाई और उसका पानी जलते हुए कागजोंमें उढ़ेल दिया जिससे राख उड़ उड़ कर सबके मुंहमें और कपड़ोंमें चिपकने लगी।

तहसीलदार साहबने डांटके लहजेमें जगरनाथसे पूछा, यह सब क्या हो रहा था जग्गन ?"

जगरनाथने तपाकसे कहा, 'पिता जी, अब मैं यहां एक दिन भी नहीं ठहर सकता, आप जहां थे वहीं अच्छे थे, इन मक्खियोंने तो मेरा जीना दूभर कर दिया है। बाहर जानेका कोई रास्ता न था, न मालूम माताजीने बाहरसे क्यों चिटखनी चढ़ा दी, तब मैं कैसे लाता बाजारसे डी० डी० टी० इन सालियोंको मारनेके लिये, जब ये सालियां किसी तरहसे न भगायी जा सकी तो मैंने धुआं लगानेके लिये जितने कमरेमें अखबार और फायलें थीं सब जला डाले, इसके सिवा मेरे लिये और चारा ही क्या था ?"

यह सुन कर सब लोग हंस पड़े। कमलाका तो हंसते हंसते पेट दुखने लगा, डाक्टर सोचने लगा, इन बेवकूफोंमें मैं भी बेवकूफ बना और इतना समय बर्बाद किया। तत्पश्चात मुसकुराते हुए गम्भीरतासे बोला—"यू आर औल फूल्स"।

तुम सब बेवकूफ हो।

"नोट ऐक्सक्लूडिंग यू सर।"

आप भी बाद नहीं हैं।

जगरनाथने भी हंसते हुए कह दिया।

——

शांति-निकेतन

श्री गिरीन्द्र नाथ शर्मा एम०ए०

कवि-कल्पना कार्यान्वित होनेपर सुन्दर भी होती है और सफल भी। शांति और सुखका समन्वय हो जानेपर इस सफलतामें अधिक सहायता मिलती है! कवि समाजकी संस्कृतिका स्रष्टा है और साथ ही है सरस्वतीका उपासक और प्रचारक भी। रवीन्द्र कवि थे, दार्शनिक थे, साहित्यिक थे, संस्कृतिकी उन्नतिके सहायक एवं मानवताके प्रतीक थे। संसार की शान्तिके लिये उन्होंने शिक्षालयकी आवश्यकताका अनुभव किया और विश्व-भारतीकी स्थापनाका कारण भी यही था। कवीन्द्रकी कीर्ति अमर है विश्वभारती विश्वकी विभूति है, शान्ति निकेतन शान्ति का केन्द्र हैं।

जन-रवसे दूर वीरभूमिकी पवित्र भूमिमें शान्ति-निकेतनकी स्थापना की गयी है। हवड़ासे बोलपुर जानेका भाड़ा साधारण श्रेणीके लिये केवल दो रुपया दो आना है; हवड़ा क्यूल एक्सप्रेस प्रातःकाल ७॥ बजे चलकर लगभग ११॥ बजे वहां पहुंच जाती है। स्टेशनपर विश्व-भारतीकी मोटर रहती है जो यात्रियोंके आने जानेके लिये रखी गयी हैं। मोटरका मार्ग कच्चा तथा धूल धूसरित हैं पर साधारणतः ग्रामकी सड़कोंसे अच्छा ही है।

विश्व-भारतीके द्वारपर पहुंचते ही बंगलामें लिखे दो वाक्य भारतीके आदर्श की ओर संकेत करते हैं। 'भगवान एक हैं" और "चित्तमें आनन्दकी आवश्यकता है।" द्वारके सम्मुख ही अतिथि गृह है, जो महर्षि देवेन्द्रनाथ तथा कवीन्द्र रवीन्द्र का निवास था। कवीन्द्रने यहीं 'गीता-ञ्जलि'की रचना की थी। अतिथि-गृहके द्वारपर एक विचित्र कलापूर्ण पत्थर रखा है; भिन्न भिन्न कोणोंसे देखनेपर उसके भिन्न भिन्न रूप दिखायी पड़ते हैं। किसी प्रकारका निश्चित अर्थ लगा सकना कठिन है और सम्भवतः अबतक कोई उसका तात्पर्य नहीं बता पाया है। अतिथि गृहमें पुरुषों और स्त्रियोंके लिये अलग अलग प्रबन्ध है। अतिथिगृह प्राचीनकालके आतिथ्यका प्रतीक है। उसके व्यवस्थापक एक सरल, सहृदय और शान्त स्वभावके व्यक्ति ह। अतिथिके सुख और स्वास्थ्य-का पूर्ण ध्यान रखा जाता है। प्रातः और सायंकाल जलपान तथा दो पहर और रात्रिमें उचित मूल्यपर समुचित और सुन्दर भोजनका प्रबन्ध है। भोजनालयमें निकेतनकी लड़कियां और लड़के भोजन परोसते हैं, वहांके अन्य सहायक प्रेमपूर्ण शब्दोंसे अतिथिका सत्कार करते रहते हैं। अतिथि कुछ समयके लिये भूल जाता है कि वह घर छोड़कर अन्य स्थानपर आया है।

अतिथि गृहके निकटही ऊंचा चबूतरा है जहां श्री देवेन्द्रनाथ ठकुर १८६१ में रायपुर जाते समय कुछ क्षण बैठे थे और यहींसे विश्व भारतीके निर्माणकी भावना मनमें आई, जिसकी पूर्ति रवीन्द्रने की। कवीन्द्र भी इसी चबूतरे पर शांति लाभके लिये बैठा करते थे और लोगोंको उपदेश दिया करते थे। यहांसे थोड़ी दूर 'रवीन्द्र भवन' है, जहां सुन्दर उपवनमें प्रकृति और कलाके साथही विद्याको भी विचरते पाते हैं। डायन नामक भवनमें कवीन्द्रकी कृतियोंके खोजमें लगे हुए कितने विद्यार्थी शान्ति और अध्ययनमें संलग्न करते हैं। कवीन्द्रके अनेक चित्र, संगमरमरकी मूर्ति,उनकी अन्तिम कविता तथा अनेक अन्य वस्तुएं सुरक्षित की गया है। चित्रकारीमें जिन रंगोंका उपयोग कवीन्द्र करते थे वे सब सुन्दर शीशियोंमें सुरक्षित किये गये हैं। यहीं रवीन्द्रकी कृतियोंके फ्रेंच, लैटिन स्पैनिश, इटैलिएन, जरमन, रशियन, डच तथा अनेक अन्य भाषाओंके अनुवाद रखे गये हैं। बापूने नोआखालीमें बंगला सीखने का प्रयत्न किया था, उनका लिखा हुआ एक पेज जनताके दर्शनके लिये रखा गया है। कवीन्द्रकी डाक्टरेटकी डिग्री, टोपी, कलम हृदयमें भूतके प्रति प्रेम उत्पन्न कर देते हैं। अत्यन्त सुन्दर वस्तु है एक पोस्टकार्ड पर लिखी हुई गीतांजलि। भवनसे लगा हुआ उपवन कवीन्द्रकी कलात्मक भावनाका सहायक है। गांधीजीके रहनेका भवन तथा वह भवन जहां श्री रवीन्द्रने अपना अन्तिम समय व्यतीत किया था निकट ही है।

पाठशाला तथा प्रयोगशालाकी इस शान्तिमें कलाकी सहायता प्राप्त कर सौन्दर्यके विकासमें संलग्न पुरुषों एवं स्त्रियोंको देख प्रसन्नता होती ही है साथही उत्साहका भी संचार होता है। विश्व-भारती संसारसे सम्बन्ध स्थापित करने-की प्रयोगशाला है। देश, विदेशकी पुस्तकें प्रचुर मात्रामें हैं। यहांका पुस्त-कालय एवं वाचनालय पुस्तककी दृष्टिसे वृहत है। लगभग दो लाख पुस्तकोंके बीच विद्यार्थी स्वतन्त्रता पूर्वक विच-रता है और पुस्तक निकालता भी है, पढ़ता है और रखता भी है। स्वावलम्बन और कर्मण्यताकी यह पाठशाला है। फ्रेंच पुस्तकें अधिक मात्रामें हैं।

मिट्टीके बने हुए सुन्दर स्वच्छ तथा हवादार कमरे विद्यार्थियोंके रहनेके लिये बनाये गये हैं।

'शांतिनिकेतन'से दो मील दूर 'श्री निकेतन' है। श्री निकेतनकी शिक्षा व्यवस्था और अनुशासन, शान्तिनिकेतन के समानही है। हस्तकला विभाग, कृषि-विभाग तथा शिक्षा विभागमें विद्यार्थियों-की शिक्षाका प्रबन्ध किया गया है। हस्तकला विभागके संग्रहालय प्रद-र्शन तथा बिक्रीके लिये अनेक प्रकार की वस्तुएं उपस्थितकी गयी हैं। मिट्टीके खिलौने, बर्तन, चमड़ेके बेग, चप्पल, कागज, सूती कपड़े, लकड़ीके सामान, कला एवं कार्यशक्तिका प्रदर्शन करते हैं। रवी-न्द्रनाथजीकी लिखी हुई पुस्तकें भी विक्रय विभागमें रखी हुई हैं। साधारण मिट्टीके बनाये गये बर्तन चीनी मिट्टीके बर्तनोंसे चिकने तथा मजबूत हैं।

कृषि विभागसे सम्बन्धित ग्राम योग विभाग है। ग्राममें शिक्षा औषधि तथा आर्थिक उन्नतिका प्रबन्ध किया गया है। ग्राम पंचायत, ग्राम बैंक तथा ग्राम संस्थाओंका सुचारू रूपसे संघटन किया गया है। कृषि विभागमें जो कुछ उत्पन्न होता है शान्तिनिकेतन भेजा जाता है। श्री निकेतनमें दो मञ्जिला मकान है, ऊपरके भागमें रवीन्द्र रहते थे। उनके कुछ सामान, बिस्तर, चारपाई तथा कपड़े रखे हुए हैं। इन वस्तुओंका पूजन प्रारम्भ न हो जाय इसलिये वे बन्द करके रखी हुई हैं।

शान्तिनिकेतनका चिकित्सा विभाग बृहत् रूपमें है। रोगियोंकी चिकित्साका निःशुल्क प्रबन्ध किया गया है। अस्पतालके दो विभाग हैं, अन्तः एवं बाह्य। कठिन रोगियोंके लिये ३५ शैया हैं।

शान्ति निकेतनका प्रेस पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशनके लिये स्थापित किया गया। कला भवन, संगीत-भवन, चीन-भवन, हिन्दी भवन तथा विनय भवन यहांके प्रमुख विभाग हैं। कला भवनमें चित्रकारी की शिक्षा दी जाती है। कवीन्द्र द्वारा बनाये गये अनेक चित्र कविकी कल्पना और प्रकृति-ज्ञानके द्योतक हैं। श्री नन्द-लाल वसु इस विभागके अध्यक्ष हैं। पूर्वी चित्रकला शान्तिनिकेतनमें प्रोत्साहित हुई है और होती रहेगी। संगीत भवनमें नृत्य तथा गीतकी शिक्षा दी जाती है। बालक और बालिकाएं साथ ही शिक्षा प्राप्त करते हैं। चीन-भवन, चीनी भाषा पर खोज करनेके लिये बनायी गयी है। चीनी पुस्तकोंका इतना बड़ा संग्रह सम्भ-वतः भारतमें अन्यत्र कहीं नहीं। हिन्दी विभागमें सर्ग-साहित्य भाषा-साहित्य एवं विज्ञान- साहित्य पर खोजका प्रबंध है।

शांतिनिकेतनकी नींव स्वतंत्र विश्व-विद्यालयके रूपमें डाली गयी थी। परिस्थि-तियोंसे विवश होकर विश्वविद्यालयका विचार स्थगित कर देना पड़ा है। आशा है निकट भविष्यमें स्वतन्त्र विश्व विद्यालय हो जायगा। यहां लगभग पांच सौ विद्यार्थी हैं, ३०० छात्र, २०० छात्राएं। लगभग ३०० शिक्षक हैं जिनमें कुछ महिलाएं भी हैं।

प्रति कक्षामें १५ छात्र एवं छात्राओं की शिक्षाका प्रबन्ध किया गया है। प्रारंभ से ही साथ शिक्षा प्राप्त करनेके कारण एक स्वाभाविक मित्रता तथा सहायताकी भावना उत्पन्न हो जाती है। छात्र तथा छात्राओंकी शिक्षाके विषयमें साधारण जनतामें जो भावना उत्पन्न हो गयी हैं, उसका प्रक्षालन यहां हो जाता है। छात्र तथा छात्राएं मित्र हैं, सहायक हैं, विद्यार्थी और भारतके भविष्य निर्माता। पाठशाला विभागमें प्रवेश की आयु ६ से १२ वर्ष है। किसी भी देश, प्रान्त, तथा जातिका व्यक्ति प्रवेशका अधिकारी है।

प्रत्येक विद्यार्थी स्वेच्छापूर्वक स्वाव-लम्बन एवं अनुशासनका अध्ययन करता है। प्रातःकाल ४ बजे उठकर नित्यक्रियासे निवृत्त होकर ठीक ६॥बजे प्रत्येक विद्यार्थी प्रार्थनामें उपस्थित हो जाता है। प्रार्थनाके पश्चात् शिक्षा आरम्भ होती है। वृक्षके नीचे बैठकर विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं। वृक्षोंके सुन्दर झुरमुटके नीचे सीमेंट का बना हुआ आसन है और झुरमुट ही उनके भवन। अनुशासन तथा प्रेम, शांति एवं शीतलता वहांके वायुमण्डलमें निहित है। विद्यार्थी और शिक्षकका सम्बन्ध बड़ा ही स्नेह पूर्ण तथा स्वाभाविक है। शिक्षाके पश्चात् विद्यार्थी भोजन करके २ बजे तक आराम करते हैं, खेलते हैं अथवा अध्ययन करते हैं। २ बजेके पश्चात् पढ़ाई आरम्भ होती है। सायंकाल विद्यार्थी संगीत, चित्र, नृत्य, सिलाई, दस्तकारी मिट्टी आदि कार्योंमें भाग लेते हैं, भिन्न भिन्न प्रकारके खेलोंमें भाग लेते हैं।

विश्व भारतीका पाठ्यक्रम सजीव समाज एवं सभ्यताके नियमोंकी शिक्षाको ध्यानमें रखकर निर्धारित किया गया है। पुस्तक पढ़ना ही विद्यार्थियोंका कार्य नहीं, ९ वीं और १० वीं कक्षाओंमें कलकत्ता विश्वविद्यालयका पाठ्यक्रम चलता है। कालेजके विद्यार्थी विश्वविद्यालयकी परीक्षामें सम्मिलित होनेके अधिकारी हैं। विद्यार्थीकी रुचि एवं प्रकृतिके अनुसार ही उसका पाठ्यक्रम नियत होता है। पुस्तककी शिक्षाके साथ ही संसारकी विभिन्न वस्तुओं तथा संस्कृतियोंसे भी परिचय कराया जाता है। विश्व भारतीमें सम्पूर्ण विश्वके संस्कृतिकी आरती होती है। अन्य देशोंके व्यक्तियोंसे सम्बन्ध करना मूलमन्त्र है।

परीक्षा होती है पर अन्य विद्यालयोंकी साधारण परीक्षाकी भांति नहीं। प्रत्येक विद्यार्थी नियम पूर्वक अपना कार्य करता है। शिक्षक उनके अध्ययन कर्मका निरीक्षण करते हैं। प्रत्येक सप्ताह एक सभा होती है, जिसमें विद्यार्थियोंके अध्ययनके विषयमें विचार विमर्श किया जाता है वर्षके अन्तमें परीक्षा तो होती है पर विद्यार्थीकी सफलता इसी परीक्षापर अवलम्बित नहीं रहती, भूतमें ली गयी साप्ताहिक परीक्षाओंके फल को देखकर ही उन्हें अंक दिया जाता है। यह अंक ए बी सी डी ई आदि अक्षरोंमें दिया जाता है। ए अत्यन्त सुन्दर विद्यार्थीको और ई निराशको। विद्यार्थी कलकत्ता विश्वविद्यालयकी परीक्षाओंमें सम्मिलित होकर वहांकी डिग्री भी प्राप्त कर सकते हैं और यदि वे निकेतनकी

डिग्री प्राप्त करते हैं तो उन्हे 'आदि' 'मध्य' और 'अन्त' नामक डिग्री मिलती है ।

शान्ति निकेतनके विद्यार्थी अधिकतर अवंगीय हैं । मद्रासप्रान्तके व्यक्तिही अधिक आकर्षित हुए हैं । शिक्षाका माध्यम बंगला होनेपर भी दूर देशके विद्यार्थी यहां आते हैं । कालेजमें हिन्दी अनिवार्य विषय है । इस प्रकार विद्यार्थी बंगला और हिन्दीकी शिक्षा प्राप्त करते हैं ।

प्रत्येक सप्ताह बुधवारको अवकाश रहता है । गर्मीमें दो मासकी तथा दुर्गापूजाके अवसरपर एक मासकी छुट्टी होती है । इसी अवसरपर विद्यार्थी घर जाते हैं । शिक्षाके समयमें भ्रमणके लिये जाना, नाटक, खलमें भाग लेना साधारण बात है । शान्तिनिकेतनके निकट पान,तम्बाकू तथा अन्य किसी भी मादक वस्तुकी दूकान नहीं है और न कोई विद्यार्थी पान या तम्बाकू खाता ही है ।

शान्ति निकेतनके प्रबन्धके लिये विद्यार्थियोंकी समितियां बनायी गयी हैं । इन समितियोंको पूरी स्वतन्त्रा है । प्रत्येक कार्य भिन्न भिन्न विभागके अधीन है । सेवा विभागका कार्य सेवा करना है । घंटा बजाना, भोजनका प्रबन्ध करना तथा पोसना सेवा विभागके विद्यार्थी करते हैं । किसी प्रकारकी त्रुटि होनेपर विद्यार्थीको दण्ड दिया जाता है, जैसे झाड़ू देना, घर साफ करना तथा अन्य सेवा-कार्य, बहुत ही अधिक अपराधपर विद्यार्थी निकेतनसे हटा भी दिये जाते हैं ।

शान्ति निकेतनके प्रत्येक विद्यार्थीको ५०)से ६०) रुपये मासिक देना पड़ता है । इसमें ४०) केवल भोजनके लिये ही लिया जाता है और स्कूल एवं कालेज फीस तथा अन्य व्यय भी इन्हीं रुपयेमें सम्मिलित हैं । शान्तिनिकेतन, विश्वभारती संसारके सुन्दर शिक्षाकेन्द्रोंमें अद्वितीय है । प्राकृतिक वातावरणमें शिक्षित विद्यार्थी अन्तर्राष्ट्रीय विचार तथा भावना लेकर निकलते हैं । यही है विद्यार्थी जीवन और यही है कविकी कल्पना । यहांका सैनिक अनुशासन, प्राकृतिक सौंदर्य, शान्ति पूर्ण वातावरण स्वच्छन्द वायुमण्डल, मित्रता, प्रेम, मनुष्य के लिए प्रश्न उत्पन्नकर देते हैं । शान्ति-निकेतनमें एक रहस्य है और उसका ही ससारके लिये सुखका साधन ।

The AIRMAN and his watch !

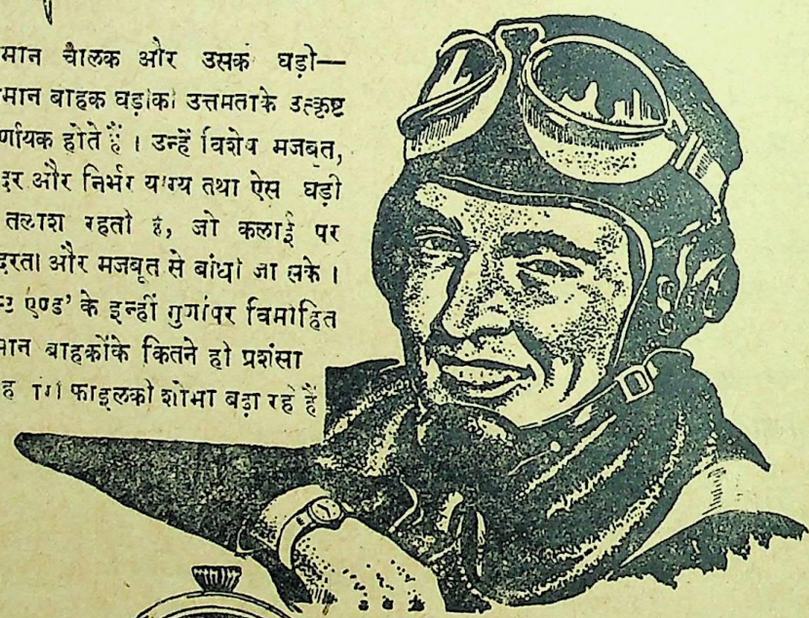

विमान चालक और उसके घड़ी—विमान वाहक घड़ीकी उत्तमताके उत्कृष्ट निर्णायक होते हैं । उन्हें विशेष मजबूत, सुन्दर और निर्भर योग्य तथा ऐसे घड़ीकी तलाश रहती है, जो कलाई पर सुन्दरता और मजबूतसे बांधी जा सके । 'वेस्ट एण्ड' के इन्हीं गुणोंपर विमोहित विमान वाहकोंके कितने ही प्रशंसा पत्र हैं जो फाइलकी शोभा बढ़ा रहे हैं

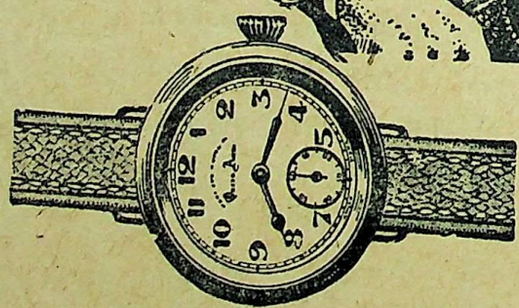

क्वीन ऐनी - क्रिस्टल शेप
निकेल सिल्वर, एवर ब्राइट स्टील बंक ... ५२) रु०

एक हवाई आफिसर लिखते हैं—"मेरे एक मित्र, जब कि भारतमें थे, गत सितम्बर या अक्टूबरमें मेरे लिए आपसे एक घड़ी खरीदे थे—मैं बहुत खुश हूं कि यह बिलकुल ठीक चल रही है ।"

मांग की अधिकता और अपर्याप्त आयात के कारण हम विज्ञापित सब प्रकारकी घड़ियोंकी सप्लाई की गारंटी नहीं दे सकते, तथापि यथा सम्भव कोशिश करते हैं

वेस्ट एण्ड वाच कं०, बम्बई और कलकत्ता

WEST END WATCH Co
BOMBAY • CALCUTTA

भारतके कुछ प्राचीन त्योहार

ले०—डा० जगदीशचन्द्र जैन, एम०, ए०, पी एच० डी०

किसी देशके त्योहारों की परम्परा पर दृष्टिपात कीजिये, उसकी संस्कृति और सभ्यताका चित्र आंखोंके सामने आ जायगा। भारतमें वैदिक कालसे ही अनेक त्योहारोंका चलन रहा है, जब कि समस्त प्रजा क्षण भरके लिये अपने आपको विस्मृत कर आनन्द विभोर हो उठती थी। दुर्भाग्यसे इन त्योहारोंमें से आज अधिकतर नाम शेष रह गये हैं, जो शेष हैं उनकी मर्यादा और परम्परा नष्ट हो गयी हैं। बहुतोंके नामोंमें परिवर्तन हो गया है और बहुतसे नये सम्मिलित हो गये हैं।

प्राचीन ग्रन्थोंमें त्योहारके अनेक नाम बताये गये हैं जैसे क्षण मह उत्सव पर्व, प्रमोद, संखादि आदि। क्षणकी तिथि निश्चित होती है और इस दिन विशिष्ट प्रकारके पकवान (पक्वान्न) आदि बनाये जाते हैं, उत्सवमें ये दोनों बातें नहीं होती। इसके सिवाय, क्षण प्रायः एक दिनके लिये होता है और उत्सव कई दिनों तक मनाया जाता है।

जैनोंके निशीथ चूर्णि नामक ग्रन्थमें निम्न लिखित चार महामहोंका उल्लेख आता है: इन्द्रमह, स्कन्द मह, यक्ष मह और भूतमह। में उत्सव क्रमसे आषाढ़, आसोज, कार्तिक और चैत्र पूर्णिमाके दिन मनाये जाते थे। इन दिनो में लोग खूब खाते-पीते थे और नाच-गानमें मस्त रहते थे। ये उत्सव पूर्णिमाके कई दिन पहले आरम्भ हो जाते थे और पूर्णिमा तक रहते थे। कभी कभी जो खाना-पीना बच जाता था उसे लोग अगले दिन प्रतिपदाको खाते थे, और इस दिन अतिथियोंका विशेष सत्कार किया जाता था, इसलिये प्रतिपदाका दिन भी उत्सवके दिनोंमें गिना जाता था।

इन्द्रमह

वैदिक देवताओंमें इन्द्र सबसे प्रधान देवता माना गया है। इन्द्रकी स्तुतिमें ऋग्वेदमें अनेक सूक्त रचे गये हैं, और उसे वज्रपाणि कह कर सम्बोधन किया गया है। महाभारत और रामायणमें इन्द्रमहका उल्लेख आता है। लार देश (गुजरातमें) श्रावणकी पूर्णिमाको और गौड़ देश (बङ्गाल) में आसोजकी पूर्णिमाको इन्द्रमह मनानेका रिवाज था। कहीं-कहीं वर्षा ऋतु समाप्त होनेके बाद, जब रास्तोंका पानी सूख जाता था, और उन रास्तोंसे सेना कूच कर सकती थी तो प्रतिपदाके दिन यह त्योहार मनाया जाता था।

इन्द्रमह किस प्रकार मानाया जाता था, इसकी कुछ जानकारी जैनोंके उत्तराध्ययन सूत्रकी टीकासे मिलती है। इस ग्रंथ में कांपिल्यपुर (कंपिल, जिला फर्रुखाबाद) के राजा दुर्मुखका उल्लेख आता है, जिसने अपनी नगरीमें खूब ठाटके साथ इन्द्रमह मनानेकी घोषणा की! नागरिकोंने इन्द्रयष्टि गाड़कर, गाजे-बाजेके साथ उस पर श्वेत वस्त्रकी ध्वजा फहरायी उसे क्षुद्र घंटिकाओंसे मंडित किया, सुगंधित मालायें पहनायीं, और नाना प्रकारके फल-फूल लटकाये। तत्पश्चात् नर्तकियोंके नृत्य हुए कवियोंके काव्य-पाठ हुए, लोगोंने नाच-गान किया, जादूगरोंने खेल दिखाये, तांबोल बांटे गये, कुंकुम कपूर जलका छिड़काव किया गया मृदंग आदि बाजे बजने लगे और महादान दिये गये। इस प्रकार सात दिन आमोद प्रमोदमें बीतनेके बाद पूर्णिमा आयी, और इस दिन महोत्सवके साथ पुष्प, वस्त्र आदि से इन्द्रकेतुकी पूजा की गयी।

इन्द्र महोत्सवमें कुल-कन्यायें भी सम्मिलित होती थीं, और इस अवसर पर वे इन्द्र महाराजसे वरके लिये प्रार्थना करती थीं। कहते हैं एक बार कोई राजकुमार भी इन्द्र स्थानमें आया हुआ था उसने कन्याओंको वर प्राप्तिके लिये वरदान मांगते हुए देख उनसे विवाह कर लिया।

बौद्धोंकी धम्मपद अट्ठकथामें हाथमें वज्र धारण किये हुए इन्द्रकी प्रतिमाका उल्लेख आता है।

स्कन्द मह

स्कन्द कार्तिकेय युद्धके देवता माने जाते हैं ये। शिवजीके पुत्र थे, और जब देवताओंका तारकासुरसे युद्ध हुआ तो इन्होंने देवताओंकी सेनाका अधिपतित्व किया था। स्कन्द महाराज रोहितक (रोहतक, पंजाब) के अधिष्ठातृदेवता माने जाते थे। जैन ग्रन्थोंसे मालूम होता है कि महावीरके समय भी स्कन्द पूजा प्रचलित थी। एक बार जब वे साधक अवस्थामें श्रावस्ति (सहेट-महेट) पधारे तो उससमय वहांके लोग स्कन्दकी प्रतिमा को रथमें बैठाकर उनकी सवारी निकाल रहे थे।

मुकुन्द (बलदेव) आदि देवोंकी तरह स्कंदकी प्रतिमा लकड़ीकी बनी होती थी और स्कन्द मन्दिरमें रातभर प्रतिमाके सामने दीपक जलता था।

यक्षमह

भारतमें यक्ष पूजा बहुत प्राचीन समय से चली आती है। उपलब्ध मूर्त्तियोंमें प्राचीनतम मूर्तियां यक्षोंकी ही उपलब्ध हुई हैं। इसके सिवाय, प्राचीन कालमें

भारतके प्रसिद्ध नगरोंमें यक्षायतन (यक्ष मन्दिर बने होते थे। इससे भी यक्ष पूजाका महत्व मालूम होता है। जैनोंके औपपातिक सूत्रमें चम्पा नगरीके पूर्णभद्र नामक चैत्य का वर्णन करते हुए कहा गया है कि यह चैत्य नगरीकी शोभा बढ़ाता था, यह बहुत प्राचीन और सुप्रसिद्ध था, तथा बड़ी दूर-दूरसे लोग इसके दर्शन करनेके लिये इससे वरदान मांगनेके लिये आते थे। आजकल भी बिहार आदिके गांवोंमें यक्ष को गांवका अधिनायक मानकर उसकी मनौती की जाती है, जिससे गांवमें महामारी आदि न फैलने पाये।

प्राचीन कालमें संतानोत्पत्ति, व्याधि शमन आदिके लिये यक्षोंकी आराधनाकी जाती थी धम्मपद अट्ठकथामें श्रावस्तीके महासुवण्ण नामक गृहपतिकी कथा आती है। एक बार महासुवण्ण स्नान करके घर लौट रहा था, रास्तेमें उसने एक बड़ा वृक्ष देखा। गृहपतिके कोई संतान न थी। उसने वृक्षके चारों ओर उसे पताकाओंसे सज्जित कर प्रतिज्ञा की कि यदि उसके संतान होगी तो वह इस वृक्षका महान् सत्कार करेगा। इस सम्बन्धमें हरिणेशमेषीका नाम भी उल्लेखनीय है वैदिक गन्थोंमें इसका उल्लेख मिलता है जैनोंके कल्पसूत्रमें इसी यक्ष द्वारा भगवान् महावीरके गर्भ परिवर्तन किये जानेका जिक्र आता है। मथुरा के जैन शिलालेखोंमें इसे 'भगवा नेमेसो' कहा गया है।

जैन और बौद्ध ग्रन्थोंमें अनेक यक्ष और यक्षिणियोंके नाम आते हैं, जिनके नामसे अनेक कथा-कहानियां प्रचलित हैं। पूर्णभद्र और मणिभद्र दोनों भाई थे? इन दोनों यक्षोंकी पूजा तिब्बतमें आजकल भी प्रचलित है। जैनोंकी पिंड निर्युक्ति टीका में मणिभद्र यक्षका नाम आता है। किसी नगरके बाहर उद्यानमें मणिभद्र यक्षकी देवकुलिका थी। एक बार नगरमें शीतला का प्रकोप हुआ। नागरिकोंने यक्षकी मनौती की और घोषित किया कि उपद्रव शान्त होने पर वे अष्टमी आदि पर्वतिथियों में यक्षकी आराधना करेंगे। उपद्रव शांत होने पर नगरके लोगोंने एक वेतन भोगी ब्राह्मणको यक्ष मन्दिरमें नियुक्त कर दिया और वह मन्दिरकी देख भाल करने लगा। राजगृह राजगिर पटना) में मुद्गरपाणि नामक यक्षका मन्दिर था। इस यक्षके हाथमें लकड़ीकी एक मुद्गर थी, इसलिये यह मुद्गरपाणिके नामसे प्रख्यात था। साकेत (अयोध्या में सुरप्रिय यक्षका आयतन था। इस नगरके चित्रकार इस यक्षको प्रतिवर्ष चित्रित करते थे। किम्वदन्ती है कि जिस वर्ष यक्ष चित्रित नहीं किया जाता था वह नगरमें महामारी फैला देता था। मथुरामें भंडीर नामक यक्ष बहुत प्रसिद्ध था और लोग प्रतिवर्ष उसकी यात्राके लिये जाते थे। यक्षकी स्मृतिमें लोगोंने भडीवट भंडीर चैत्य, भंडीर उद्यान और भंडीरवन नामक स्थान बनवाये थे। भंडीरवटकी पहचान आधुनिक वृन्दावनसे की जा सकती है।

भूत मह

प्राचीन भारतमें यक्षमहकी तरह भूतबलि भी प्रचलित थी। लोग रातको सोने के पहले भूतोंको बलि देते थे। जैन ग्रंथोंमें भूतको वागमंतर या व्यंतरके नामसे भी पुकारा गया है। भृगुकच्छ (भरोंच) में कुण्डलमेण्ठ व्यंतर द्वारा बताये हुए भूत तड़ाग नामक तालाब और तोसलि, (धौलि जिला कटकमें) ऋषिपाल व्यंतर द्वारा बनाये हुए ऋषि तड़ाग नामक तालाबका उल्लेख प्राचीन जैन ग्रन्थोंमें मिलता है। कोई नया मकान बनवाकर उसमें प्रवेश करनेके समय भी व्यंतर देवोंकी आराधना की जाती थी? और ढोल आदि बजाकर उनका सत्कार किया जाता था। भूतग्रहका शमन करनेके लिये गारुडिक (मांत्रिक) लोग भूत विद्याका प्रयोग करते थे, तथा शांतिकर्म और रक्षामण्डल आदि द्वारा भूतग्रहको उतारते थे।

नागमह

इन चारमहामहोंके अतिरिक्त प्राचीन भारतमें और भी देवी-देवताओंके बहुतसे उत्सव मनाये जाते थे। उदाहरणके लिये, नागदेवकी पूजा होती थी जो आज भी नागपंचमीके रूपमें विद्यमान है। मथुरामें नाग देवकी अनेक मूर्त्तियां मिली हैं, इससे पता लगता है कि यह नगर नागपूजाका केन्द्र था। वितस्ता (झेलम) नदीके किनारे काश्मीरमें भी नाग पूजाका प्रचार था। कौटिल्यके अर्थ शास्त्रमें सच्छिद्र नागदेवकी मूर्तिका उल्लेख मिलता है।

जैनोंके ज्ञाता धर्म कथा सूत्रमें नाग-यज्ञका उल्लेख आता है। साकेत अयोध्या) के उत्तर-पूर्वमें नाग गृहमें सर्पकी एक प्रतिमा थी। रानी पदमावती प्रति वर्ष नागयात्राका उत्सव मनाया करती थी। इस अवसर पर समस्त नगरको झाड़ पोंछ कर साफ किया जाता, घर द्वार सजाये जाते, तथा नागगृहके पास एक पुष्प-मण्डप बना कर उसमें फूलोंकी बड़ी बड़ी विशाल मालायें लटकायी जाती थीं। तत्पश्चात रानी स्नान कर अपनी सखियों के साथ नाग मन्दिरकी ओर जाती वहां पोखड़ेमें नहा कर, गीले वस्त्र धारण किये हुए, कमलके फूल तोड़ती, तथा हाथमें फल-फूल और धूपदान लेकर मन्दिरमें प्रवेश करती थी। तत्पश्चात रानी प्रतिमाको साफ करती, और धूप जला कर उसकी पूजा करती थी।

सीतायज्ञ

गृह्यसूत्र, महाभारत तथा रामायणमें सीता पूजाका उल्लेख मिलता है। सीता शब्दका अर्थ हैं हल देवता। रामायणमें कहा गया है कि जनकजीके खेतमें हल चलाते समय सीताका जन्म हुआ था। हलकी पूजा विशेष कर चावल या जौके खेतमें की जाती थी। आजकल भी बहुत-सी जगह हलकी पूजाकी रिवाज है। कहनेकी आवश्यकता नहीं यह रिवाज काफी पुराना है।

संखड़ि या भोज

जैनोंके बृहत्कल्प भाष्यमें संखडि (पालिमें संखति या भोजकी विस्तृत चर्चा आती है। संखडिका त्योहार कभी एक दिन और कभी बहुत दिनोंतक मनाया जाता था, कभी प्रातः कालमें

मनाया जाता था, कभी सन्ध्या समय। ब्रजमण्डलमें इस त्योहारको गिरियज्ञ नामसे पुकारा जाता था। महाभारत तथा हरिवंश पुराणमें गिरियज्ञका उल्लेख मिलता है। इस त्योहारमें लोग सुबह दूध पीकर रहते थे, और रातको भोजन करते थे। लाट देशमें यह त्योहार वर्षा-ऋतुमें मनाया जाता था। संखडिमें लोग यात्रायें भी करते थे। उदाहरणके लिये, तोसपिमें सेजपुर नगरमें ऋषि तड़ाग तालाबके किनारे प्रतिवर्ष आठ दिन तक संखडि मनायी जाती थी। भृगुकच्छमें भूत तड़ाग तालाबके किनारे संखडि मनानेका रिवाज था। इसी प्रकार लोग प्रभास (प्रभास पाटन काठियावाड़) अर्बुद (आबू), आनन्दपुर (वडनगर) के पास बहनेवाली सरस्वती नदीके पूर्वी किनारे, उज्जयन्त (गिरनार, जूनागढ़) ज्ञातृखण्ड (वैशाली नगरीके उपनिवेश कुण्डपुरका एक उद्यान) तथा सिद्धशिला आदि पवित्र स्थानोंमें संखडिका त्योहार मनाते थे। संखडिमें लोग मद्य पीकर रंग-बिरंगे चटकीले वस्त्र पहन कर अपने हाथ और उंगलियो को मटका कर, कामोत्तेजक गीत गाते हुए नाच करते थे। इन दिनोंमें लोग खूब डट कर खाते थे, रातको देरसे सोते थे और सवेरे देरसे उठते थे। संखडिमें पशुओंको मार कर उनका मांस भी पकाया जाता था। इस उत्सवमें बौद्ध, भागवत आदि अनेक साधु-सन्यासी दूर-दूरसे आकर सम्मिलित होते थे, उनमें परस्पर वाद-विवाद हुआ करते थे। किसी निर्दोष स्थान पर संखडिका उत्सव होने परही जैन साधुओंको उसमें सम्मिलित होनेका विधान किया गया है। ऐसे अवसरों पर जैन भिक्षुओंको विष देकर मार दिया जाता था, अतएव उन्हें बहुत सावधान रहनेका आदेश किया गया है। नये घरमें प्रवेश करते समय भी लोग संखडि मनाते थे।

अन्य त्योहार

प्राचीन भारतमें अन्य भी बहुतसे पर्व मनाये जाते थे। कार्तिक महीनेकी पूर्णिमा के दिन कौमुदी महोत्सव मनाया जाता था जब कि स्त्री और पुरुष किसी उद्यान आदिमें जाकर आमोद प्रमोदमें रात्रि व्यतीत करते थे। वाराणसी (बनारस में कामदेवकी आराधनाके लिये मदन त्रयोदसी मनायी जाती थी। सिन्धु नन्दन नगर में सब नर-नारी मिलकर उद्यानिकाका उत्सव मनाते थे। श्रावस्तीमें शाजभंजिका नामक उत्सव मनाया जाता था, जबकी हजारों लाखों नागरिक इकट्ठे होकर साज वृक्षके फूलोंसे क्रीड़ा करते थे। चातुर्मास समाप्त होनेके बाद राजकुमारी आदि बड़े घरोंकी बेटियां चातुर्मासिक मज्जनका उत्सव मनाती थीं। इस उत्सवके दिन राजमार्गपर एक पुष्पमंडप बनाकर उसे बड़ी-बड़ी पंचरंगी मालाओंसे सजाया जाता था, तथा नगरको पंचवर्ण के चावलोंसे मंडित किया जाता था। इसके बाद अंतःपुरकी दासियां राकुमारीको पूर्वाभिमुख आसनपर बैठाकर उसका जलसे भरे कलशोंसे अभिषेक करती और उसे वस्त्राभूषणोंसे सज्जित करती थीं।

सम्पन्न लोगोंकी तरह निर्धन भी उत्सव मनाते थे। घरकी दासियां दासीमह नामका उत्सव मनाती थीं। अनार्य लोग म्लेच्छमह उत्सव मनाते थे, जिनमें बहुतसे द्राविड़ आदि लोग शामिल होते थे।

पुत्र जन्म आदिके उत्सव

प्राचीन कालमें पुत्रजन्मका उत्सव बहुत सजधजसे मनाया जाता था। इस दिन जेलसे कैदी लोग छोड़ दिये जाते थे, बस्तुओंका मोल घटा दिया जाता था, रिण तथा कर माफ कर दिया जाता था, दास लोग दासत्वसे छूट जाते थे, पुलिस जबर्दस्ती घरमें प्रवेश नहीं कर सकती थी, तथा दानशालाओंके दरवाजे खुल जाते थे। पुत्रका जन्म होनेके बाद जातकर्म, जागरिका, चन्द्र सूर्य दर्शन, शुचिकर्म (सूतक) नामकरण आदि विधान किये जाते थे।

तत्पश्चात् एक वर्ष बाद जन्म दिन मनानेका रिवाज था, जिसे संवत्सर प्रति-

दक्षिणपूर्व एशिया युवकसंमेलनमें भाग लेने वाली भारतीय प्रतिनिधि कुमारी किन्ती बू मेला

लेखन कहा जाता था। सगाईको आवाह कहते थे। फिर विवाह होता था कन्याके श्वसुरगृह जानेको प्राकृत में 'आहेण' और पितृगृह लौटनेको 'पहेण' कहते थे। मृत्यु हो जानेपर मृतकृत्य किये जाते थे जिसे 'नीहरण' कहते थे। यदि कोई प्रव्रज्या संन्यास) लेता था तो उसका निष्क्रमण सत्कार किया जाता था, जिसमें राजा भी सम्मिलित होता था।

इसके सिवाय' रथयात्रायें निकलती थीं और बड़े बडे जुलूस चलते थ। गोस्ठियां होती थी, जिनमें नर-नारी सम्मिलित होकर आनन्द मनाते थे। समस्या क्रीड़ाओं में समस्यापूर्ति आदि वार्तालाप होते थे। मद्यपानके लिये पानागार, और जूआ खेलनेके लिये द्यूत स्थान बने हुए थे।

तत्पश्चात उनदिनोंमें बड़े-बड़े युद्धमह टूर्नामेन्ट होते थे, जिनमें मल्ल लोग बड़ी दूर दूरसे आकर सम्मिलित होते थे और पताका जीतकर नाम कमाते थे। अश्वयुद्ध, हस्तियुद्ध उस्ट्रयुद्ध, वृषभयुद्ध, महिषयुद्ध, शूकरयुद्ध आदि युद्ध होते थे जिनमें लोग बहुत रस लेते थे। कुक्कुट और मयूरोंके लड़ानेमें लाखोंके वारे-न्यारे हो जाया करते थे।

———

हंसू या रोऊं

लेखिका—सुश्री राजकुमारी एम० एस० सी०

ह ह हा ! क्या माताका मधुर हास्य तुम्हें सुनायी नहीं देता ? वे कान जो माताका क्रन्दन सुन सुनकर ऊब चुके थे, शायद आज अचानक इस हास्यध्वनिको ग्रहण करनें और मानसपटल पर अंकित करनेंमें असमर्थ हैं। यह वही बादलोंमें छिपी रहनें वाली दामिनी है जिसे देखनेंके लिये तुम लालायित थे। यह वही हंसी है जिसपर तुम लाखों अनमोल जीवन निछावर करचुके हो। सदियोंसे दुःखी जर्जरित मां आज सौभाग्य सिन्दूर पहने तुम्हारे सामनें मुस्करा रही है। आज वह बंधनों से मुक्त है उसकी जंजीरकी कड़ियां बिखरी पड़ी हैं। आज उस बिखरी केशराशिके बजाय गुंथी हुई चोटियां उसके बदन को थपथपा रही है। आंखोंमें रुदनके बदले प्रेमाश्रु भरे हैं, भालपर वही चिर परिचित सिरताज है, पैरोंमें बेड़ियां नहीं नूपुर हैं। प्रतिक्षण अग्रसर होती हुई नूपुरकी ध्वनि भी क्या तुम्हें सुनायी नहीं देती ?

बागको सीचनें वाले माली ! पौधामें अंकुर देख क्या आज तेरे हृदयमें मधुर स्पन्दन नहीं होता ? आशाओंकी क्यारी को खिलते देख क्या तेरी मानसकली खिल नहीं उठती ? अमावसकी रातमें भटकते हुए पथिक बिजलीकी चमकती रेखा क्या तेरे अन्तरमें खुसीकी हिलोर पैदा नहीं करती ? ऐ तपस्वी ! सदियोकी कठिन तपस्याका फल पाकर भी क्या तेरे चेहरेपर प्रसन्नता नहीं खेलती ? देख आंखें खोलकर देख तेरे सुख स्वप्न प्रत्यक्ष होकर तुम्हें बधाई दे रहे हैं। जिस मांके लिये तूनें लाखों कष्ट झेले, जिसकी करुण विवश दशा देखकर तू खूनके आंसू बहाया करता था आज सोलहो शृंगार किये तुझे प्रेमसे निहार रही है, खुशीसे गदगद हो रही है। सुन! तू उसकी हंसी सुन, तेरा अंगअंग हर्षसे रोमाञ्चित हो उठेगा।

हा ! यह मैं क्या सुन रही हूं, आर्त्तनाद! दुःखियोंकी पुकार, बिलखनेकी ध्वनि क्या मेरी हास्य ध्वनि इन सबको दबा न सकेगी ? यह क्या ! यह आर्तनाद, तो क्रमशः बढ़ताही चला आ रहा है। यह रंगमें भंग, कैसा? चिर खोयी हुई स्वतंत्रता के पुनः प्राप्त करनेंके शुभ अवसरपर यह कोलाहल कैसा ? शादीकी मधुर शहनाई के साथ साथ यह मौतका साजो सामान कैसा ? यह करुण क्रन्दन क्यों ? विचित्र विडम्बना है। कुछ समझ नहीं आता। आह ! यह चीखें तो प्रतिक्षण निकट आती प्रतीत हो रही हैं, लो अब तो स्पष्ट सुनाई देनें लगी। और, यह तो नन्हें मासूम बालक की ध्वनि है, अपनी मांको पुकार रहा है। अरे निर्दोष असमझ बालक वही मां जो तेरे एक एक शब्दपर बलिहारी जाती है जो तेरे पुकारनेसे पहले तेरी मदद को पहूंच जाती है आज तेरी पुकार सुननेंमें असमर्थ है अन्यथा वह अचल न रह सकती।

अरे, यह क्या ! यह तो अब किसी अबलाकी हृदय विदारिणी चीख भी साथ साथ सुनायी देरही है — अत्याचार—अबलाओंपर हा! हृदय तू फट क्यों नहीं जाता? माताकी आंखोंके सामने बच्चोंपर घोर संकट ! और वह देखो विचारा सब कुछ लुटाकर आंखोंके सामनें प्रियजनोंका संहार देखकर बैठा सिर धुन रहा है। आज तो मैं बंधनोंसे मुक्त हूं, मेरे हाथ पैर शिथिल क्यों हो रहे हैं। अपनी संतानकी सहायता करनेंके लिये मेरे पास क्या शक्ति नहीं ? अबलाओंकी रक्षाके लिये मेरा हाथ उठता ही क्यों नहीं ?

यह क्या ! मैं क्या सुन रही हूं ? ऐसी स्वतंत्रतासे परतंत्रता ही अच्छी थी' यह कौन कह रहा है ? मेरे सपूत कभी ऐसा नहीं कह सकते निश्चय ही किसी अत्यन्त दुःखियाकी आह है। यह सुनकर मेरा गौरव मिट्टीमें मिल रहा है, लेकिन मैं भी तो अपनी शक्तिको धोखा देते हुए पाती हूं क्यों ? यह हाथ पैर अनेक दिनों पक्षीकी हालत है आजाद रहकर भी उड़ नहीं सकते। सदियोंकी गुलामीनें सब कुछ नष्ट कर दिया है। लेकिन इन सुकुमारियोंपर अत्याचार करने वाला है कौन ! दर्द भरी गगन भेदी पुकारें सुनकर किस निर्दयीकी आत्मा प्रसन्न हो रही है ? आग लगाकर हंसने वाला यह नीरो कौन है ! गगन चुम्बी अट्टालिकाओंको क्षण में भस्मीभूत होते देख स्वर्ग सुख अनुभव करनेवाला निशाचर है कौन? हा ! हन्त ! यह तो भाई ही एक दूसरें का गला काट रहे हैं ! पैशाचिक वृत्तियों का नग्ननृत्य है। किसे बचाऊं और किस के विरुद्ध हाथ उठाऊं। माताका दुर्भाग्य बच्चोंकी बदनसीबी! यह गृहअग्नितो सब कुछ लाकर खाककर देगी। जिस खोई वसीयतको, जिस जन्मसिद्ध अधिकारको तुमने खूनकी नदियां बहाकर प्राप्त किया है'क्या इस चालसे उसे कायम रख सकेंगे उन शहीदोंके खूनसे जिन्होंने इस यज्ञ में अपनी आहुतियां दी तुम होली खेल रहे हो।

यह समय था, यही अवसर था कि आपसके बैरवैमनस्यको मिटाकर तुम एक हो जाते और आगेकी ओर कदम बढ़ाते। आज संसारकी नजरोंमें तुम गिर गये हो, तुच्छ हो। यदि चाहते हो कि तुम भी दुनियांके सामने सिर ऊंचा कर सको तो वक्त है तुम संभल जाओ। तुम्हारी दयनीय दशा देखकर मेरे हृदयका बांध टूटा जा रहा है। दिल चाहता है रोऊं, जी भरकर रोऊं, रोती ही चली जाऊं। लेकिन बन्धनोंसे मुक्त हूं, आजाद चिड़ियां हूं ! हंसू, खश होऊं या तुम्हारी दुर्बुद्धि देखकर रोऊं। हंसू या रोऊं, हंसू या रोऊं। मैं पागल हो उठी हूं, हां पागल ही तो।

मैं बताता हूं दोषी कौन?

ले०— श्री विनायक नानेकर

सुश्री लेखिका विद्यावती वर्मा एम० ए० का 'दोषी कौन' मैंने पढ़ा और उनके प्रश्नका उत्तर देने तथा उनका सन्देह निवारण करनेके लिये म यह लेख लिख रहा हूं। मैंने कभी एक तरफा किसी विषयपर विचार नहीं किया। जब भी कलम चलायी या मुंह खोला तो समस्याके दोनों पहलुओं का पूर्णतः अध्ययन करने के बाद ही। मुमकिन है मेरे लेख सुश्री लेखिकाने विश्वामित्रमें पढ़े भी होंगे। मैं यहां जो कुछ लिखनेको वाध्य हुआ हूं वह सुश्रीजीके एकांगी विचारोंके कारण ही।

ऐसा लगता है कि श्री० विद्यावतीजी वर्मा अपनी जातिके मर्मको समझनेमें बहक गयी हैं। आपने रामायण वगैरह ग्रन्थोंके उदाहरण भी दिये हैं। पर आपके लेखका मुख्य सुर यही है कि 'आधुनिक नारी या स्त्री का निर्माण कर्ता नारी नहीं पुरुष है।'

प्रश्न यह उठता है कि 'आधुनिक नारी क्या है – वह किस चिड़ियाका नाम है? आधुनिक नारी वही है जो आधुनिक शिक्षा, विचार तथा रीति रिवाजोंमें पूर्णतः ढली हो। आधुनिक शब्दसे बहुप्रतिशत अर्थ पश्चिमीय सभ्यतासे होता है और जहां पश्चिमीय सभ्यताका प्रश्न उठता है वहां अनुकरणका समावेश होता है। वह भी अविवेकपूर्ण अनुकरण!

नारी अनुकरण प्रिय होती है और यह उसका जातीय स्वभाव है। श्री वर्मा एम० ए० यदि सूक्ष्म दृष्टिसे एक स्त्रीकी चहल पहल, दृष्टि तथा विचारोंका परीक्षण करें तो उन्हें स्पष्ट हो जायगा कि नारी पुरुषोंको देखनेकी बजाय स्त्रियोंकी ओर ही अधिक देखती है। रास्तेपर किसी स्त्रीको कोई नवीन तरहका वस्त्र या आभूषण पहने देखती है तो उसी तरहके वस्त्र या आभूषणकी उसमें चाह उठती है और उसकी प्राप्तिके लिये अपने पति या पालकपर दबाव डालती है। कभी कभी तो इसके लिये वह जमीन आसमान एक करनेको तैयार हो जाती है। स्त्री हठसे संसार परिचित है। श्रीमतीजीने शायद किसी स्त्रीको अपने पतिके साथ दूकानपर सौदा करते न देखा होगा। यदि देखा होता तो उन्हें मालूम होता कि स्त्री पुरुषको खुश करनेके लिये श्रृङ्गार नहीं करती बल्कि वह अपने वर्गमें अपनी परख तथा पहरावके ढङ्ग की प्रशंसा पानेके लिये ऐसा करती है। अपनी इस सनकके पीछे वह इस बातकी पर्वाह नहीं करती कि उसके माथेपरके सिकुड़ते तिलकके साथ उसके पतिके बैंकका हिसाब भी सिकुड़ रहा है। सुश्रीजीने शायद अपनी चार स्त्रियोंके जमावमें बैठकर उनकी बातें न सुनीं होंगी। यदि सुनतीं तो उन्हें मालूम होता कि दूसरी स्त्रियां जब उसके वस्त्र और पहरावकी तारीफ करती हैं तब उसका चेहरा कितना प्रफुल्लित होता है और मस्तक कितना चढ़ जाता है। स्त्री स्वभावतः ही अनुकरण प्रिय होती है इसका यह स्पष्ट उदाहरण है। वह जो व्रत करती है वह सिर्फ अनुकरण ही है। स्त्री जब भी शिकायत करती है उसकी दृष्टि तीसरे पर रहती है— प्रसादजीकी घरवालीको देखो कैसे कपड़े पहनतीं है और कैसे आभूषणोंसे ढंकी रहती है।— कांतजीको देखो अपनी स्त्रीको कैसे ठाटबाटसे रखते हैं। जो वह मांगती है करते हैं और एक तुम हो, साल भरसे एक साड़ी नहीं खरीदी और न नाककी एक कील। मैकेसे भाईने साड़ी भेजी है तो कभी पहननेका मौका नहीं मिला। कभी साथ घूमने भी तो ले जाते नहीं। इतनी अच्छी साड़ी क्या घरमें पहनकर धुवेंसे काली करूं? कहा भी है खाइये मनभाता, पहिनिये जग भाता।' ऐसी अनेक बातें आप स्त्रियोंके मुंहसे ही निकलती सुनेंगी। यदि स्त्री पुरुषकी मर्जीकी पर्वाह करती तो पुरुषसे उसका कभी झगड़ा ही नहीं होता। पुरुष की जेबको जब आंच लगती है तभी पुरुष आंखें दिखाता है। कौन पुरुष चाहता है कि उसकी अर्धांगी अच्छी, स्वच्छ और सुन्दर न रहे? परन्तु वह परिस्थितिके अनुसार कदम उठाता है। सिनेमा, नाटक वगैरह देखकर स्त्रियां तो और भी आगे बढ़ गयी हैं। विशिष्ठ रङ्गकी या डिजाइन में वस्त्र या आभूषणके लिये स्त्रियोंने कितना आतङ्क मचाया है यह तो शादी शुदा पुरुष ही जानते हैं। इसी हठके कारण कई स्त्रियोंने अपना संसार तक उजाड़ डाला है।

क्या यह नारी, "पुरुषकी मनोवृत्ति" का जीवित प्रतिबिम्ब है? श्री वर्मा एम० ए० को शायद यह मालूम न होगा

कि पुरुष तितलियोंकी ओर घूरते क्यों हैं। पुरुष तभी स्त्रियोंकी ओर घूरते हैं जब वे उनमें कुछ विचित्रताका अवलोकन करते हैं—१० औरतोंकी अपेक्षा उनमें कुछ नवीन तथा बनावटी वस्तु पाते हैं। 'पुरुष वर्ग पाश्चात्य सभ्यतामें ढली कुछ बिनी चुनी तितलियोंके पीछे सुध-बुध खो बैठा है।' यह आक्षेप 'डायरेक्ट' मिथ्या है। उलटा यही देखनेमें आया है कि जब आधुनिक नारी नये वस्त्र परिधान करके बाहर निकलती है तो वही तिरछी नजरोंसे देखती है कि उसकी ओर पुरुष आकर्षित होते हैं या नहीं। उसकी इस प्रवृत्तिके कारण, उसकी इस उच्छृंखलताके कारण पुरुषोंने उलटे नाजायज फायदा अवश्य उठाया है परन्तु उनके मोहके कभी शिकार नहीं हुए। यदि मेरा तर्क मिथ्या प्रतीत हो तो मेरे इन प्रश्नोंका उत्तर दें कि ऐसी कितनी स्त्रियोंने वस्त्र और आभूषण या बाहरी भयके जोर पर अपने विवाह किये हैं? ऐसे कितने प्रेम विवाह हिन्दुस्तानमें सफल हुए हैं? पुरुषने हमेशा स्त्रीकी परख आभूषण या बच्चोंसे नहीं की बल्कि उन्होंने नैसर्गिक सुन्दरता और गुणोंसे की है। आज भी वे शीलवती लड़कियोंके सहचर बननेको आतुर होते पाये जाते हैं। दुष्यन्त और शांतनुके पुराने जमानेके ज्वलन्त प्रमाण हैं। आज भी कितनेही युवक उच्छृंखल और दिखावटी स्त्रियोंसे विवाह करनेमें बिचकते हैं।

* * *

स्त्रियोंने नाक और कान छिदवाये मगर पुरुषोंके कारण नहीं छिदवाये बल्कि नाक और कान छिदवानेकी रीति धार्मिक और साम्प्रदायिक रिवाजोंके कारण प्रचलित हुई। संतान निमित्त मनौतियां भी इस छेदनका कारण हैं। दांत सोना चांदीसे मढ़ना यह या तो शौक था या दांत खराब होनेका सूचक था। जिस तरह नाक कान, हाथ पैर आदि अङ्गोंमें आभूषण पहिने जाते हैं उसी प्रकार दांतोंमें भी सोना मढ़ाया जाने लगा। पुरुषोंने स्त्रियोंको गहने वगैरहके लिये कभी जोर नहीं दिया क्योंकि इसमें उसका ही अधिक नुकसान था। इससे स्पष्ट था कि 'स्त्री ऐसे पुरुषकी अनुवर्तिनी नहीं है जो विलासका दास बनकर कर्तव्य ज्ञानसे शून्य हो गया है।'

समाज एक कसौटी है। वह अच्छ और बुरेकी परख करता है। समाजके मुख है हाथ नहीं है। जो मुंहसे डरते हैं वे उसके शिकार बनते हैं और जो कर्म करना जानते हैं वे प्रशंसाके पात्र होते हैं। स्त्रियों पर जो दबाव समाजने डाले हैं वे उनके भलेके लिये ही हैं। यदि समाज न होता तो स्त्रियोंकी निर्लज्जताकी सीमा नहीं रहती। पाश्चात्य संस्कृति इस बातका सबूत है। वहां मिनट मिनटमें स्त्रियां पतिको बदलती हैं। एक स्त्रीने तो राजपुत्रीका विवाहसमारोह देखनेके लिये अपने प्रतिष्ठित पतिको छोड़ कर राजद्वारके एक सिपाहीसे विवाह कर लिया था। भारतकी प्रतिष्ठा उसके समाजके कारण ही है। यदि दिल न मानता हो तो सिनेमा क्षेत्रमें जाइये, जो समाज बंधन से परे है। आपको मालूम है कि सुरक्षित स्त्रियोंने जबसे उसमें कदम रखा है तबसे वह अधिक बदनाम होने लगा है। फर्क इतना ही है कि पहले सिनेमा क्षेत्रमें वेश्यायें आती थीं आज वह अप-टु-डेट गणिकाओंसे भरा है। जिस तरह कुटुम्ब में बच्चोंकी देखभालके लिये या उन्हें गलत रास्ते पर जानेसे बचानेके लिये पालककी जरूरत होती है उसी प्रकार कुपथ और कुरीतियोंसे बचानेके लिये समाज है। समाजने आज तक किसीको रोका नहीं उलटा कर्तव्यवान की हमेशा तारीफ ही की है—मगर कब? जब उसका नतीजा अच्छा देखा। मगर आधुनिक नारीके पैर उलटे ही पड़ते पाये गये हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि स्त्री हमेशा एक सिरेसे विचार करती है वह कभी दूसरे पहलूका विचार नहीं करती क्योंकि विचार शब्दकी जगह उनके शब्दकोषमें आचार लिखा गया है। अपना लड़का कितना भी कुरूप हो मगर स्त्रीको वह संसारमें सब लड़कोंसे सुन्दर प्रतीत होता है। अपने लड़केको किसीने मारा तो स्त्री हमेशा दूसरेके लड़केको ही दोषी ठहराती है। पति यदि अपने भाई को पढ़ाता है, यदि पालता है तो स्त्रीको कष्ट होता है। तात्पर्य यही कि स्त्रीको अपनी कमजोरी देखनेकी सुबुद्धि ही नहीं होती। वह मूलतः स्वार्थी होती है और अपनी स्वार्थ-बुद्धिके कारण उसने एक घरके अनेक घर किये हैं। उस पर आधुनिक नारी तो जमीनसे दो फुट ऊपर चलती है। उसने दो किताबें क्या पढ़ी हैं, सारा संसार उसे बेवकूफ प्रतीत होता है। उसने कमाई करनी क्या शुरू की है, मानों सारा संसार उसीकी कमाई पर चलता है। वह जो कुछ भी करती है अपनी मर्जीसे और अपने सुखके लिये उसे न किसीकी पर्वाह है न किसीका डर। इसी तरहकी अविचारी, एकांशी प्रवृत्तिके कारण समाजमें कुस्त्रियोंका अस्तित्व नहीं है।

मैं यह भी नहीं कहता कि पुरुष बिलकुल निष्कलङ्क है, धोए हुए चावलकी तरह स्वच्छ हैं। पुरुष भी इस प्रदर्शनका उत्तरदायी है। दोषी कौन, यह बताना कठिन है क्योंकि तनधारी जीवोंमें दोष होतेही हैं—दोष सहने होते हैं। एकको दोषी कहना स्वार्थको अपनाना है। आजकल जो कुछ नजर आ रहा है वह नकल हैं और नकलमें दोष होताही है। नया कुंआ जब खोदा जाता है तब पहले पानी गंदाही निकलता है। अभी किसीको दोषी कहना अधीरताका लक्षण होगा। समय सूचकता और तर्क शक्तिको खोकर जो काम होता है वह निन्दनीय होता है। मनुष्योंमें जब ऊंचे दृष्टिकोणसे विचार करनेकी सुबुद्धि जाग्रत होगी तो यह दोष आपही आप मिट जायगा। इसलिये न तो दोषी पुरुष है न दोषी स्त्री है, दोषी वही हैं जो संकुचित दृष्टिसे एकांगी विचार करते हैं और उसी प्रकार कार्य करते हैं।

जुकामकी कोई औषधि नहीं

प्रो० भगवती प्रसाद श्रीवास्तव

लेखके शीर्षकको पढ़कर आश्चर्य न करिये। यह सोलहो आने सत्य है कि बावजूद पेन्सिलिन और सल्फा सरीखी प्रभावोत्पादक औषधियोंके आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान जुकामको उसकी सामान्य अवधिके भीतर अच्छा कर सकनेके लिये कोई औषधि या टीका ईजाद नहीं कर पाया है, और न अभी तक कोई ऐसी औषधि मालूम की जा सकी है जिसके इस्तेमालसे मनुष्य जुकामसे बच सके।

जुकाम क्षुद्र कीटाणुओं द्वारा उत्पन्न होता है। ये क्षुद्र कीटाणु साधारण कीटाणु (बैक्टीरिया) की अपेक्षा आकारमें बहुत ही छोटे होते हैं—उन्हें सूक्ष्मदर्शक यन्त्र द्वारा भी मुश्किलसे ही देखा जा सकता है। जुकाम उत्पन्न करने वाले क्षुद्र कीटाणुओंके बारेमें पूरी जानकारी हासिल करनेके निमित्त युरोप और अमेरिकामें अनुसन्धान अवश्य किये जा रहे हैं। इन अनुसन्धानोंकी कठिनाइयां इस कारण और भी बढ़ जाती हैं कि क्षुद्र कीटाणु साधारण बक्टीरियाकी भांति अलग स्वतंत्र रूपसे जीवित नहीं रखे जा सकते। अन्य जीवधारियोंके शरीरके अन्दर ही क्षुद्र-कीटाणु पनप सकते हैं। जुकामके क्षुद्र कीटाणु केवल मनुष्यके शरीर-कोषोंमें पनपते हैं—अन्य किसी जीवधारीके शरीरके अन्दर इसका विकास नहीं होने पाता, यहां तक कि बन्दर या चिम्पैंजीके शरीरमें भी नहीं। अतः जुकामके क्षुद्र कीटाणुओंका विस्तृत अध्ययन करनेके लिये प्रयोगके निमित्त मनुष्यको ही चुनना पड़ता है।

सैलिसबरीकी प्रयोगशालामें इस सिलसिलेमें मनोरंजक प्रयोग किये जा रहे हैं। प्रयोगशालासे सम्बद्ध अस्पतालमें १८ और ४० वर्षके बीचकी उम्रवाले व्यक्तियों पर जुकाम सम्बन्धी प्रयोग आजमाया जा रहा है। इन व्यक्तियोंको १० दिन तक अस्पतालके हातेमें बने हुए क्वार्टरमें रहना पड़ता है। प्रयोग जबतक पूरा नहीं हो जाता तबतक अस्पतालके के अधिकारियोंके अतिरिक्त अन्य लोगोंसे ये मिलजुल नहीं सकते। अवश्य इनके क्वार्टर रेडियो आदि भी लगे रहते हैं ताकि इनका मनोरंजन हो सके। प्रातः तथा सायंकाल अस्पतालसे लगे हुए पार्कमें इन्हें घूमने फिरनेकी भी इजाजत रहती है किन्तु इस प्रतिबन्धके साथ कि अन्य व्यक्तियोंसे ये कमसे कम ३० फीटकी दूरीपर रहें।

प्रयोगशालामें पहुंचनेपर उस व्यक्ति की तीन दिनों तक जांच की जाती है—यह देखनेके लिये कि उसे पहलेसे ही जुकाम तो नहीं है। इसके लिये उसके फेफड़ेकी एक्स-रे फोटो भी लेनी पड़ती है। चौथे दिन मुख्य प्रयोग आरम्भ होता है। छोटी छोटी साफ बोतलोंमें पानी भरा हुआ रहता है। इनमेंसे कुछ बोतलोंमें जुकाम केक्षुद्र कीटाणु पड़े रहते हैं। किन बोतलों में कीटाणु हैं किसमें नहीं, इसका पता केवल डाक्टरको रहता है। प्रत्येक व्यक्ति की नाकमें इन बोतलोंके द्रवकी बूंदें डाल दी जाती हैं। अब इसके बाद डाक्टरके सहायक गण इन व्यक्तियोंकी प्रति दिन नियमित रूपसे पूरी जांच करते हैं। स्वयं ये व्यक्ति भी प्रत्येक दिन अपने स्वास्थ्यकी विस्तृत रिपोर्ट लिखते हैं। उन लोगोंमेंसे करीब एक तिहाईको जुकामका आक्रमण हो आता है—इनकी नाक और गलेके मलको एकत्रित करके उससे जुकामके क्षुद्र कीटाणु प्राप्त किये जाते हैं और विभिन्न अवस्थाओंमें उन्हें यह देखनेके लिये रखा जाता है कि उनकी शक्ति कितने समय उपरान्त क्षीण हो जाती है। उदाहरणके लिये इन प्रयोगोंके सिलसिलेमें देखा गया कि यदि उन्हें ४ डिग्री सं० तापक्रमपर रखें तो अन्य पुरुषोंके शरीरमें जुकामके लक्षण उत्पन्न करनेकी इनकी क्षमता ३ दिनों तक बनी रहती है। यदि रीफ्रिजरेटरमें १० डिग्रीपर रखें तो उनकी क्रियाशीलता लगभग महीने भरतक बनी रहती है। यदि रिफ्रिजरेटरमें उन्हें ७६ डिग्रीपर रखा जाय तो पूरे साढ़े चार महीने तक इनकी शक्ति क्षमता अक्षुण्ण बनी रहती है। उनके आकारकी नापके सम्बन्धमें किये गये प्रयोगोंसे पता चलता है कि इंचके लाखवें भागसे भी ये छोटे होते हैं।

शरीरमें जुकामके क्षुद्र कीटाणुके प्रवेश करनेके बाद २४ घण्टेसे लेकर एक सप्ताहके भीतरतक जुकामके लक्षण प्रकट होने शुरू हो जाते हैं। अभी तक डाक्टर ठीक ठीक निर्णय नहीं कर पाये हैं कि विभिन्न व्यक्तियोंपर इन क्षुद्र कीटाणुओंका असर कभी देरमें तो कभी जल्दी ही क्यों प्रकट होता है। इन प्रयोगोंमें यह भी देखा गया कि लगभग ३ प्रतिशत व्यक्ति ऐसे भी निकले जिनके शरीरमें जुकामके क्षुद्र कीटाणुओंके प्रविष्ट करा देनेपर भी उनपर जुकामका आक्रमण नहीं हुआ। अवश्य ही उनके शरीरमें इन क्षुद्र कीटाणुओंके प्रभावको नष्ट करनेकी शक्ति मौजूद थी। यदि डाक्टर ठीक ठीक पता लगा सके कि आखिर वे कौन सी बाते हैं जो शरीरके अन्दर इन क्षुद्र कीटाणुओंके असरको बेकार बना सकती हैं, तो निस्सन्देह वे लोगोंको जुकामकी मुसीबतसे बचनेके लिये सहज उपाय ईजाद कर लेंगे—मानव जातिका वे निस्सन्देह भारी उपकार करेंगे। बाजार में केमिस्टकी दूकान पर मिलनेवाली पेटेन्ट औषधियां इस बातका दावा करती है कि वे जुकामके आक्रमणको रोकनेमें समर्थ होंगी—आप इनके भड़कीले विज्ञापनके धोकेमें कभी मत आइये। आधुनिक औषधि-विज्ञान अभी तक कोई औषधि ऐसी ईजाद नहीं कर पाया है जो जुकामके आक्रमणके असरको वास्तवमें रोक सके।

जुकामसे त्राण पानेके लिये प्रायः पसीना लानेकी युक्तिका सहारा लिया जाता है। गर्म जल पीनेसे या गर्म पानीसे स्नान करनेसे अवश्य आराम मिलता है। जुकामके साथ ज्वरका प्रगट

होना अवश्यही एक अच्छा लक्षण है। इस ज्वरको दबानेका प्रयत्न कभी नहीं करना चाहिये क्योंकि डाक्टरोंका ख्याल है कि थोड़ा ज्वर जुकामकी तीव्रताको रोकनेमें सहायक साबित होता है। प्रायः तो ऐसा भी होता है कि ज्वर तोड़नेवाली औषधियोंके सहारे ज्वरको दबा देने पर लोग जुकामके बावजूद भी अपने साधारण कार्यक्रममें लग जाते हैं—ऐसा करना जुकामके सुधरनेमें बाधा डालता है। अतः पुनः उन्हें बिस्तरकी शरण लेनी पड़ती है।

जुकाममें नाक और गलेकी तकलीफ को कम करनेके लिये गशरे लगानेके निमित्त तरह तरहके द्रव पदार्थ केमिस्टके यहां मिलते हैं। इनका इस्तेमाल कभी कभी यदि किया जाय तो बुरा नहीं किन्तु बार बार इनकी शरण लेनेसे नाकके अन्दरकी कोमल त्वचा क्षब्ध हो जाती है और इस कारण खुश्की भी बढ़ जाती हैं। जिन व्यक्तियोंका रक्तचाप विशेष रूपसे ऊंचा है, उन्हें तो इस ढङ्गके गशरों से खास तौर पर बचना चाहिये।

सारांश यह कि जुकामके लिये डाक्टरों के पास अभी तक कोई औषधि तैयार नहीं हो पायी है। जुकामसे बचनेके लिये हमें स्मरण रखना चाहिये कि शुद्ध वायु सेवन, संतुलित भोजन और स्वस्थ चित्त उत्तम सहायक हैं। अवश्य जो लोग जुकामसे पीड़ित हों, उनके सम्पर्कसे हमें बचना चाहिये। साधारण अनुभव बतलाता है कि अचानक पानीमें भीगनेसे या गर्म कमरेमेंसे बिना पर्याप्त कपड़े पहने बाहर ठण्डमें निकल आने पर जुकामके उभड़नेकी अधिक आशङ्का रहती है। तेज और तप्त हवाके झोंके, धूल तथा अत्यधिक परिश्रम भी प्रायः जुकामके कारण बन सकते हैं।

सम्भव है आधुनिक चिकित्सा विज्ञान निकट भविष्यमें जुकामके लिये रामबाण औषधिका निर्माण कर सके, किन्तु जबतक ऐसी औषधि ईजाद नहीं कर ली जाती, तबतकके लिये हमें निश्चय कर लेना चाहिये कि जुकाम होने पर हम औषधियोंके लिये डाक्टरोंके पीछे न दौड़ें। पर्याप्त विश्रामही जुकामका समुचित उपचार है। प्रकृतिके रास्तेमें रोड़ा अटकाना बुद्धिमानीका काम नहीं है।

— —

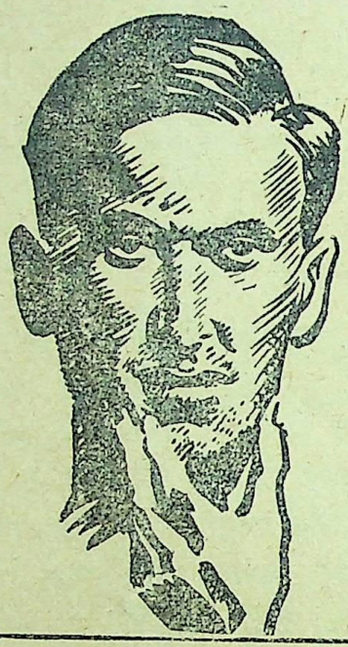

खुरदरे होने के लिये
वह पैसे खर्च करता है...

खुरदरे होने के लिये वह पैसे खर्च करता है... सात में से चार दिन इस व्यक्ति की दाढ़ी खुरदरी रहती है तो भी वह नाई को हफ्ते में तीन हजामतों के लिये ६ आने तक दे देता है।

उसका स्वच्छ चेहरा
उसे लाभप्रद है।

इस व्यक्ति की आकृति सदैव प्रफुल्ल रहती है और वह प्रतिदिन स्वयं "सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडों से हजामत बनाकर पैसे की बचत करता है—एक पैकेट उसके हफ्तों तक चलता है।

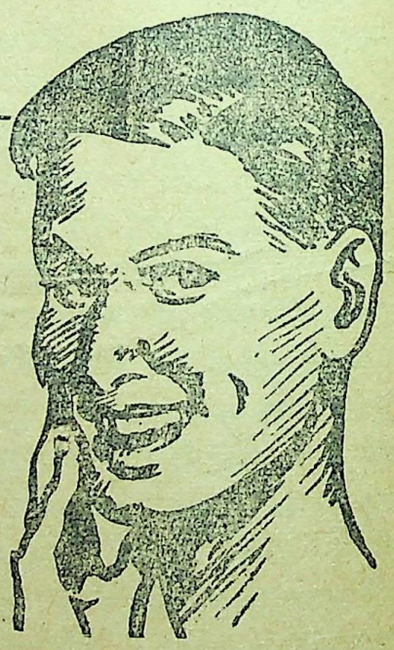

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड सर्वोत्तम इस्पात से तीन स्तरों में बनाये जाते हैं। आपके पैसे की कीमत के वे सबसे तेज ब्लेड हैं— बाजार में उनका सर्वोच्च मूल्य है।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

7 o'clock
SLOTTED BLADES
"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडस्
ब्लेड जो ज्यादा हजामत
और कम खर्चा देते हैं

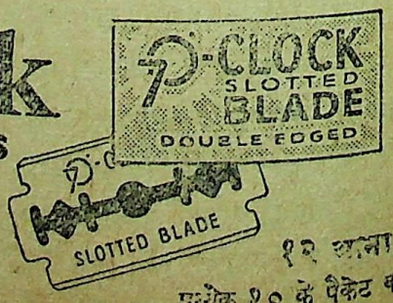

१२ आना
प्रत्येक १० के पैकेट का

काव्यकुञ्जकी कोकिला—

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान

लेखक—प्रो० हरिकृष्ण खरे एम० काम०

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहानकी आकस्मिक तथा असामयिक मृत्युपर केवल हिन्दी साहित्यके क्षेत्रमें ही शोक नहीं छाया है परन्तु मध्यप्रान्तके राजनैतिक क्षेत्रमें भी शोकके बादल छा गये हैं। रविवार, १५ तारीखको वे जबलपुरसे नागपुर मोटरकारपर जा रही थीं, मार्गमें मोटर दुर्घटना होनेके कारण उनकी मृत्यु हुई। अभी हम पूज्य बापूके शोकसे संभल भी न पाये थे कि यह सूचना हमें मिली। श्रीमती चौहानकी अल्पकाल मृत्यु मध्यप्रान्तके लिये एक हृदयविदारक घटना है। यहांके राजनैतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक क्षेत्रोंमें उन्होंने जो प्रगति की वह किसीसे भी छिपी नहीं है।

राजनैतिक क्षेत्रमें वह एम० एल० ए० तो थीं हीं साथ साथ राजनीतिक लड़ाइयों में वे बराबर भाग लेती रहीं। जब भी स्वतन्त्रताका बिगुल बजता वे तिरंगे झण्डेके नीचे, देशके प्रति त्याग तथा श्रद्धा से परिपूर्ण आ खड़ीं होतीं। स्वतन्त्रता संग्राममें वे कभी भी पीछे नहीं हटीं। उन्हें इस देशानुरागके कारण कृष्ण मन्दिरके दर्शन भी करने पड़े।

साहित्यिक क्षेत्रमें वे हमारे सामने वीर क्षत्राणीके रूपमें आतीं हैं। उनकी 'झांसी की रानी' शीर्षक कवितामें नारी जीवनका उत्साह और अभिनन्दन एक साथ ही दर्शनीय है।

'बुन्देलों हर बोलों के मुख
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मरदानी वह तो,
झांसी वाली रानी थी॥

यह कविता देशके हर युवकके मुख पर है। बुन्देलखण्डमें घर घर यह जोशीला गीत सुना जा सकता है।

श्रीमती चौहानकी रचनाओंमें राष्ट्रीयताका उन्मेष विशेष रूपसे है। देशभक्तिके साथ नारीके सरल मनोविज्ञानका सामंजस्य इनकी काव्यगत विशेषता है। क्षत्राणीकी तेजस्वी और आत्मगौरवपूर्ण निर्भीकवाणी सुभद्रा कुमारीके कण्ठसे निकलकर दिग-दिगन्तमें गूंज उठी है। राष्ट्रीय उन्मेषमें शक्ति संचयकर सुभद्राजीने स्वदेश तथा मातृभूमिकी पवित्र वेदीपर उन भावपुष्पोंकी अञ्जलियां भेंट की हैं जो कभी मलिन नहीं हो सकतीं। "उनकी राष्ट्रीय कविताओंने कविताके क्षेत्रमें उस वसन्तका प्रादुर्भाव कर दिया है, जहां कोकिलाओंकी वाणीमें पराधीन देशकी हूक तड़प रही है।"

बीरोंका कैसा हो वसन्त' कवितामें देशके युवकोंसे उनकी विलासिताकी ओर ध्यान आकर्षित करते हुए वे पूछती हैं—

गलबाहें हों या हो कृपाण,
चल चितवन हो, या धनुष-बाण,
हो रस-विलास या दलित-त्राण
अब यही समस्या है दुरन्त,
वीरोंका कैसा हो वसन्त ?

"राष्ट्रीय स्वाभिमानके क्रोड़में मातृत्व की भावना ही श्रीसुभद्रा कुमारीकी प्रेरक शक्ति है। उन्होंने जननी हृदयसे कुछ ऐसी कविताओंकी सृष्टि की है जिनमें अनन्त वात्सल्य है। उन्होंने बाल-जीवनकी उन मधुर क्रीड़ाओंको लेखनीकी नोकमें केन्द्रित कर दिया है, जिनमें वात्सल्य अपनी स्वाभाविक गतिविधिमें निर्झर-की भांति प्रवाहित हो उठा है।"

"बालिकाका परिचय' में वे लिखती हैं।

"प्रभु ईसाकी क्षमाशीलता
नबी मुहम्मदका विश्वास।
जीव दया जिनवर गौतमकी
आओ देखो इसके पास॥
परिचय पूछ रहे हो मुझसे
कैसे परिचय दूं इसका ?
वही जान सकता है इसको
माताका दिल हो जिसका॥

'इसका रोना' कवितामें तो वात्सल्य शब्द शब्दमें माताके अनुरागके साथ है।

तुम कहते हो मुझको इसका
रोना नहीं सुहाया है।
मैं कहती हूं इस रोनेसे
अनुपम सुख छा जाता है॥

सुप्रसिद्ध कवियित्री
स्वर्गीया श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान

'मेरा नया बचपन'में तो वे स्वयं अपनी बालिकाके साथ बालिका बन जाती है और इस भांति अपने बाल्यकालका अनुभव किया :

किये दूधके कुल्ले मैंने
चूस अंगूठा सुधा पिया।
किलकारी कल्लोल मचा कर
सूना घर आबाद किया।

* * *

मैं बचपनको भुला रही थी
बोल उठी बिटिया मेरी।
नन्दन-बन-सी फूल उठी यह
छोटी-सी कुटिया मेरी॥
'मां ओ' कह कर बुला रही थी
मिट्टी खा कर आयी थी।
कुछ मुंहमें कुछ लिये हाथमें
मुझे खिलाने आयी थी॥

* * *

पाया मैंने बचपन फिरसे
बचपन बेटी बन आया।
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर
मुझमें नवजीवन आया।
मैं भी उसके साथ खेलती
खाती हूं तुतलाती हूं।
मिलकर उसके साथ स्वयं
मैं भी बच्ची बन जाती हूं।

'मुकुल' और 'त्रिधारा'में आपकी कविताएं संकलित की गयी हैं। आप सफल कहानीकार भी थीं। 'बिखरे मोती'

(शेष ३६ वें पृष्ठ पर)

गांधीजीका आखिरी वसीयतनामा

[कांग्रेसके विधानके जिस मसविदाका जिक्र आया है, वह नीचे दिया जाता है। गांधीजीके अवसानकी वजहसे यह हिन्दुस्तानकी प्रजाके लिये उनका आखिरी वसीयतनामा बन गया है। — प्यारेलाल]

देशका बटवारा होते हुए भी हिन्दी राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा तैयार किये गये साधनोंके जरिये हिन्दुस्तानको आजादी मिलनेके कारण मौजूदा स्वरूप वाली कांग्रेसका काम अब खत्म हुआ — यानी प्रचारके वाहन और धारासभाकी प्रवृत्ति चलानेवाले तंत्रके नाते उसकी उपयोगिता अब समाप्त हो गयी है। शहरों और कसबोंसे भिन्न उसके सात लाख गांवोंकी दृष्टिसे हिन्दुस्तानकी सामाजिक, नैतिक और आर्थिक आजादी हासिल करना अभी बाकी है। लोकशाहीके मकसदकी तरफ हिन्दुस्तानकी प्रगतिके दरमियान फौजी सत्तापर मुल्की सत्ताको प्रधानता देनेकी लड़ाई अनिवार्य है। कांग्रेसको हमें सियासी पार्टियों और साम्प्रदायिक संस्थाओंके साथकी गन्दी होड़से बचाना चाहिये। इन और ऐसे ही दूसरे कारणोंसे अखिल भारत कांग्रेस कमेटी नीचे दिये हुए नियमोंके मुताबिक अपनी मौजूदा संस्था को तोड़ने और लोक-सेवक-संघके रूपमें प्रकट होनेका निश्चय करे। जरूरतके मुताबिक इन नियमोंमें फेरफार करनेका इस संघको अधिकार रहेगा।

गांववाले या गांववालों जैसी मनोवृत्ति वाले पांच बालिग मर्दों या औरतोंकी बनी हुई हरेक पंचायत एक इकाई बनेगी।

आस-पासकी ऐसी हर दो पंचायतोंकी उन्हींमेंसे चुने हुए एक नेताकी रहनुमाईमें, एक काम करनेवाली पार्टी बनेगी।

जब ऐसी १०० पंचायतें बन जायं तब पहले दरजेके पचास नेता अपनेमेंसे दूसरे दरजेका एक नेता चुने और इस तरह पहले दरजेके नेता दूसरे दरजेके नेताके मातहत काम करें। दो सौ पंचायतोंके ऐसे जोड़ कायम करना तब तक जारी रखा जाय, जबतक कि वे पूरे हिन्दुस्तान को न ढंकलें। और बादमें कायमकी गयी पंचायतोंका हरएक समूह पहलेकी तरह दूसरे दरजेका नेता चुनता जाय। दूसरे दरजेके नेता सारे हिन्दुस्तानके लिये सम्मिलित रीतिसे काम करें और अपने अपने प्रदेशोंमें अलग अलग काम करें। जब जरूरत महसूस हो, तब दूसरे दरजेके नेता अपनेमेंसे एक मुखिया चुनें जो चुननेवाले चाहें तब तक,सब समूहोंको व्यवस्थित करके उनकी रहनुमाई करे।

(प्रान्तों या जिलोंकी अन्तिम रचना अभी तय न होनेसे सेवकोंके इस समूहको प्रान्तीय या जिला समितियोंमें बांटनेकी कोशिश नहींकी गई। और किसी भी वक्त बनाये हुए समूह या समूहोंको सारे हिन्दुस्तानमें काम करनेका अधिकार रहेगा। सेवकोंके इस समुदायको अधिकार या सत्ता अपने उन स्वामियोंसे यानी सारे हिन्दुस्तानकी प्रजासे मिलती है, जिस की उन्होंने अपनी इच्छासे और होशियारीसे सेवाकी है।)

१ हरएक सेवक अपने हाथों कते हुए सूतकी या चरखा-संघ द्वारा प्रमाणित खादी हमेशा पहननेवाला और नशीली चीजोंसे दूर रहनेवाला होना चाहिये। अगर वह हिन्दू है, तो उसे अपनेमेंसे और अपने परिवारमेंसे हर किस्मकी छुआछूत दूर करनी चाहिये और जातियोंके बीच एकताके, सब धर्मोंके प्रति समभावके और जाति, धर्म या-स्त्री पुरुषके किसी भेदभावके बिना सबके लिये समान अवसर और दरजेके आदर्शमें विश्वास रखने वाला होना चाहिये।

२ अपने कार्यक्षेत्रमें उसे हरएक गांव वालेके निजी संसर्गमें रहना चाहिये।

३. गांववालोंमेंसे वह कार्यकर्त्ता चुनेगा और उन्हें तालीम देगा। इन सबका वह रजिस्टर रखेगा।

४. वह अपने रोजानाके कामका रेकर्ड रखेगा।

५. वह गांवोंको इस तरह संगठित करेगाकि वे अपनी खेती और गृह-उद्योगों द्वारा स्वयं पूर्ण और स्वावलम्बी बनें।

६. गांववालों को वह सफाई और तन्दुरुस्तीकी तालीम देगा और उनकी

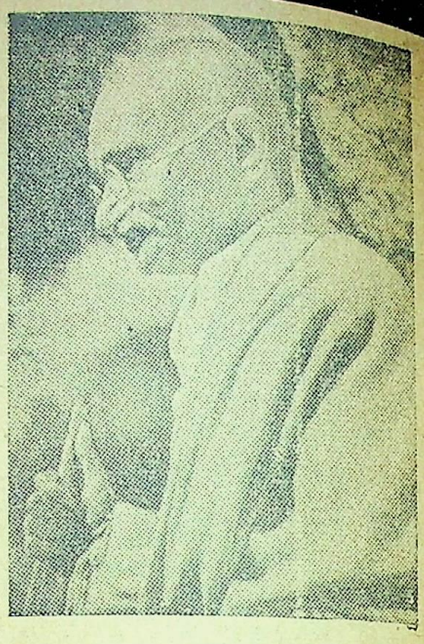

बीमारी व रोगोंको रोकनेके लिये सारे उपाय काममें लायेगा।

७. हिन्दुस्तानी तालीमी संघकी नीतिके मोताबिक नई तालीमके आधार पर वह गांववालोंकी पैदा होनेसे मरने तक सारी शिक्षाका प्रबन्ध करेगा।

८. जिनके नाम मतदाताओंकी सरकारी लिस्टमें न आ पाये हों उनके नाम वह उसमें दर्ज करायेगा।

९. जिन्होंने मत देनेके अधिकारके लिये जरूरी योग्यता अभी हासिल न की हो, उन्हें उसे हासिल करनेके लिये वह प्रोत्साहन देगा।

१० ऊपर बताये हुये और वक्तन-फ-वक्तन बढ़ाये हुये मकसद पूरे करनेके लिये, योग्य फर्ज अदा करनेकी दृष्टिसे, संघके द्वारा तैयार किये गये नियमोंके मुताबिक वह खुद तालीम लेगा और योग्य बनेगा।

संघ नीचेकी स्वाधीन संस्थाओंको मान्यता देगा।

१. अखिल भारत चरखा-संघ
२. अखिल भारत ग्रामोद्योग संघ
३. हिन्दुस्तानी तालीमी-संघ
४. हरिजन सेवक-संघ
६. गोसेवा संघ

संघ अपना मकसद पूरा करनेके लिये गांववालोंसे और दूसरोंसे चन्दा लेगा। गरीब लोगोंका पैसा इकट्ठा करने पर खास जोर दिया जायगा।

———

दुर्भाव

पत्नीजी

(श्रीराम शर्मा 'राम')

नहीं कहा जा सकता कि किस प्रकार—जीवनके किस संस्कारवश—राजीवके मनमें यह विश्वास पैदा हो गया कि उसकी सन्तान ३ वर्षकी लड़की कमला—शुभ नहीं है, अशुभ है, उसके लिये! वैसे तो, यह दुर्भाव कमलाके जन्मसे ही, उसके मनमें बैठ गया था, परन्तु ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, राजीव के मनका यह विश्वास भी दृढ़ होता गया बात यह थी कि जब कमलाका जन्म हुआ, तो राजीव बीमार था। कमलाके जन्म होनेसे चार दिन पूर्व ही बीमार पड़ा और फिर साल भर तक किसी न किसी रोगसे ग्रसित होता रहा! दैवकी बात कि पड़ौसके एक पण्डितसे जब उसने कमलाके ग्रह गोचर दिखाये और कुण्डली बनवायी, तो उसने भी उस नवबालाको माता पिताके लिये शुभ नहीं बताया—विशेषकर पिताके लिये!

यही कारण था कि राजीव जब तब कमलाको देखकर, अपने मनमें उसके प्रति आस्था नहीं पाता—सन्तानके प्रति-एक पिताका भाव! किन्तु मूर्ख तो था नहीं, राजीव, शिक्षित था, भावनाओंसे खेलता था और जितनी भी मानवके मन की गहरी तथा शास्वत अनुभूति उसे प्राप्त हो सकी थी उन्हींके आश्रय पर वह उदार निष्ठ और कर्मचेता मनुष्य बनने का अपनेको चिर-लक्षित और चिर-प्रतीक्षित पाता था। किन्तु विवशता उसकी भी थी,—जैसे वही दुर्बलताओं का केन्द्र—कदाचित इसीसे जब वह अधिक अवश और अपने आपको थकित पाता, तो बलात स्वयंमें खिजकर न सिर्फ अपने आस-पासके एकत्र हुए वातावरण के प्रति अपनेमें उपेक्षा पाता; बल्कि वह अपने आपको भी तिरस्कार और हीन भावके साथ देखता। ऐसी अवस्थामें राजीव दयनीय और निरा अयाचित प्राणी दिखायी देता। उसका मन हाहाकार करता। लगता कि वह किसी दुःखी और पीड़ित मछलीकी तरह अपना सिर उन्हीं लहरोंकी छाती पर पटकता कि जिनकी गोदमें उसका जीवन था,—जीवनका सुख! जिस मोह, ममता और आत्म त्यागकी भावनाको पाये हुए वह पुरुष,—राजीव—अपना जीवन चला रहा था, भले ही परिस्थितियोंके कारण, अपनी आर्थिक हीनता और अनायास प्राप्त हुए द्वन्द्वको लिये वह बोझिल और कठिन बन गया था, परन्तु इसीके साथ यह भी सत्य था कि मरना चाहकर भी, वह मर नहीं रहा था....मरना नहीं चाहता था। जीवन उसे भी प्यारा था। जो खेल, जीवनका जो शेष पथ अभी उसके सामने पड़ा था, उसे पार करना उसके अस्तित्व में डूबना, उसे भी प्रिय था। वह जान कर कि—वहां मौत है—उसका अन्त—फिर भी, उसको वह प्रिय था; वह शेष जीवन पाना अभीष्ट ही था, राजीवको।

किन्तु उस गंगाके जल जैसी पवित्र बालाको जब उसने अशुभ माना; उस रूप में एक कन्याका पिता बनकर भी; यह अपनेको सुरक्षित और शंकाओंसे दूर नहीं पा सका, तो, दीखा कि उसका मानस और अधिक जटिल और कठोर बन गया। उसे शान्ति चाहिये थी, परन्तु उसके स्थान पर तो चिन्ता व्यथा और उत्पीड़ाओंका एक भारी झंझावात ही उसे दिखायी दिया। कन्या क्या मिली उसे कोई श्राप मिल गया। वह बीमार रहा, आर्थिक चिन्ताओंसे परेशान!

इसीको उसने कई बार अपनी पत्नीसे कहा—सच, यह लड़की अशुभ है.... हमारे लिये ही न!

जब तब पत्नीने यह सुना और जाने किस प्रकार, जाने कैसे मनके साथ उसे अपने गलेके नीचे उतार लिया। स्पष्ट ही, उसकी दृष्टिमें अपने पतिके प्रति जो एक जिज्ञासा पैदा हुई, वह परम और सुखकारी नहीं थी। वह दुर्भावनासे भरी थी। परन्तु वह नारी थी,—कन्याका ही एक परिष्कृत रूप, निदान वह चुप थी।

परन्तु जब एक दिन अपेक्षाकृत अधिक गम्भीर बनकर राजीवने पत्नीसे फिर यही कहा, तो तब वह चुप न रह सकी। वह कठोर बन गयी। उसमें एकाएक ही जितनी वेदना पैदा हुई, वह उसकी आंखोंके द्वार पर भी दिखायी दी। बरबस ही, उसकी आखें छलछला आईं।

इतना देखकर राजीवने कहा—'न मालती! पिता मैं भी हूं। मैं भी आत्मा और परमात्माको जानता हूं।'—वह बोला-'किन्तु कौन और कितना शुभ और अशुभ हो सकता है, तुम्हारी तरह ही, इतना भर मैं भी सुनता और मानता हूं।

उसी समय मालतीने छूटे हुए तीरकी तरह, जैसे झुंझलाहट भरे हुए स्वरमें कहा— तो मैं क्या करूं! अशुभ लड़की नहीं, मैं हूं। मैं तो उसकी मां हूं। मैं ही तो उसे नौ मास अपने पेटमें रख सकी हूं।'—उसने अपने मुंह पर आंसू बहाते हुए कहा—'जरा मेरी ओर देखो तो,—मेरे मनकी ओर! तुम जब जब लड़की को अशुभ कहते हो, तो बरबस मुझे लगता कि मेरी छाती पर तुम घूंसा मारते हो, बेदर्द हो···हृदयहीन....

इतना सुनकर राजीवको नहीं सूझा कि वह क्या कहे! मालतीको किस प्रकार सम्बोधित करे। वह खो गया। सन्न रह गया, राजीव! क्योंकि उसे दीखा कि अनायास ही, जैसे बिना विचार किये

ही, कदाचित् उससे ऐसा काम हो गया है कि जो अच्छा नहीं सुन्दर नहीं, अनुभूतिपूर्ण नहीं। उसने मनमें कहा,काश मैं सोच लेता, कि कमलाके लिये कुछ कहना, उसे अशुभ और हीन सन्तान समझना मेरे लिये भले ही ठीक हो पर मालतीके लिये नहीं,—नहीं।

निदान उसी समय, उसने मालतीकी ओर देख कर सदयपूर्ण स्वरमें कहा—तुमने कुछ गलत समझा, मालती! मेरे कहनेका यह अर्थ नहीं,—सच, कदापि नहीं!'—और उसने कहा पर,—पर, मैं सोचता हूं, कमला जबसे आई है, तभीसे मुझे चिन्ता है, रोग है और पैसेका अभाव—'

किन्तु फिर तड़ित भावमें मालतीने कहा, तो मार क्यों नहीं देते! फेंक दो, दरियाकी धारमें! कहते हुए उसने अपनी गरम और लाल हुई आंखोंको राजीवकी ओर उठा दिया।

उन्हें देखते ही, राजीव बोला—ओह तुम नाराज हो! तुम गलत बात ले रही हो।

'और क्या.....?'

मैं कहता हूं, कमला मेरी सन्तान है,—मेराही खून!

यह सुन, मालतीने जाने कितनी ईर्ष्या युक्त और विषैली भावनाके साथ अपने होठोंको फड़फड़ा दिया और नितान्त क्षीणताके साथ अपना मुंह ऊपर अन्तरिक्षकी ओर उठा दिया।

राजीवने फिर कहा 'कमला कन्या है,—देवी!'

'और तुम्हीं देवीको अशुभ कहते हो,—हीन! मालतीने झटकेके साथ अपना मुंह गिरा कर अवरुद्ध स्वरमें कहा।

राजीवने अपना सिर झुका कर कहा—हां, इतना तो कहता हूं, कमला अशुभ है—हमारे लिए हीन! वह बोला-पर दोष कमलाका नहीं, हमारा है,—तुम्हारा और मेरा!—उसने कहा—स्वीकार कर लो न तुम कि हमारा भाग्यही रोता है। भला हमारे घरमें भाग्यकी देवी आये, अन्धेरे घरको प्रकाशमान करती आये, ऐसे भाग्यही कहां हमारे!

मालतीने इतना सुना और गहरी सांस भरनेके साथ अपना सिर झुका लिया।

किन्तु उसी दिन जब रातको कमरेमें राजीव सो रहा था और पासहीके दूसरे विस्तर पर मालती, तो सोते हुए ही, वह एकाएक चौंक कर जाग गया। आंख खोला, तो कमरेमें अन्धेरा था। उसी अन्धकारमें उसने आंख फाड़ कर चारोओर देखा। अनुभव किया कि उसका दिल धड़क रहा था। छातीके नीचे जो वह रक्त-मांससे बना हुआ उसका छोटा सा दिल था, वह जैसे मचल मचल कर, रह रह कर; फड़फड़ा रहा था और बाहर निकल आनेके लिये बेचैन हो उठा था। यह देख, राजीव विचलित हो गया। वह उठ कर बैठ गया। दिल दाब लिया। कमरेकी खुली हुई खिड़कीके बाहर काला काला तारों भरा आसमान था, वह जैसे हंस रहा था और राजीवकी ओर देख ठहाका मार देना चाहता था। उस आसमान पर फैले हुए तारे, कहींसे टूटते और कहीं दूर जाकर लोप हो जाते। कितने सुखी थे वे, कितने प्रसन्न—आह!

उसी समय मालतीके विस्तर पर राजीवकी दृष्टि पड़ी। उसकी एक तरफ पुत्र अनिल सो रहा था और दूसरी ओर पुत्री कमला। बीचमें मालती थी। कितनी सुखी! कितनी निर्द्वन्द्व! मानो जगतकी वह जन्मदात्री,—वह मा—अपने दोनों बच्चों पर हाथ रखे हुए, इस प्रकार उनकी रक्षा कर रही थी कि सच वही थी उनके जीवनकी खेवनहार। उसी पर उत्तरदायित्व था। उन बच्चोंकी वही जगदम्बा थी, वही जननी! वे उसके हृदयके ऐसे दो टुकड़े थे कि जिनको दूर करके वह न जीवित रह सकती थी, न सुखी! बच्ची कमला उससे चिपटी हुई पड़ी थी।

राजीवने देखा कि कितनी छोटी और नन्हीं-सी बालिका थी, वह कमला! कितनी मनोरम और कोमल। उसके छोटे-छोटे हाथ, छोटा सा मुंह, पैर और टांगें,—आह! मुट्ठी भर भी तो देह नहीं उसकी। वह देखने लगा कि कमला सो रही है—आंख बन्द है उसकी। अचेत पड़ी है,—परम विशिष्ट; जगतकी करुणा दया और सदभावनाकी प्रतीक वह छोटी-सी बालिका! उसने चाहा कि उठे और उस कमलाको अपनी गोदमें लेले। उसे अपने गलेसे चिपका ले। बालिकामें जगतके स्वामीकी जो अनिंद्य, अनुपम ज्योति छिप रही है, जो उसे आलोकित कर रही है, राजीव उसीको देखे, उसीको पाये और अनुभव करे।

किन्तु, हाय! उस समय तो राजीवके मनमें जो भूचाल उठ रहा था, वह अब उसके मन और मस्तिष्कको भी चंचल बनाये दे रहा था। अभी-अभी उसने स्वप्न देखा, कठोर, घृणित और दुःसाहसी! वही तो उसके हृदयको कंपा रहा था। मूर्छा बना रहा था, वह स्वप्न! मानो वह उसकी छातीको फोड़ कर बाहर निकलनेके लिये भी छटपटा उठा था।

राजीवने स्वप्न देखा कि उसने मालतीकी आंख बचा कर कमलाको अपने एक हाथमें पकड़ा और ऊपरसे दरियाकी तेज धारमें फेंक दिया। वह बालिका, वह नन्हीं-मुन्नी पल भारतेमें नदीकी छाती पर गेंदकी तरह उछली, चीखी, और क्षण भरमें ही राजीवकी आंखोंके सामनेही, उस नदीके गहरे पेटमें तिरोहित हो गयी। ओह! उसी समय राजीवने अपना सिर पकड़ कर कहा—ओह!

वह साहस नहीं कर सका कि मालती की ओर देखे और कमलाकी ओर। मानो सचमुच ही, वह अपराधी था, खनी घृणित और कायर!

उसी क्षण, उसे याद आया कि कमला उसके पास नहीं आती। गोदमें लेता है,

तो रोती है। और सच ही तो था कि वह जितना प्यार लड़केको करता, लड़की को उतना नहीं।

अनायास ही, यह वैषम्य राजीवकी छातीमें शूलकी तरह चुभने लगा। मानो वह रिस रिसकर किसी फोड़ेकी तरह उसकी छातीके चारो ओर फैल गया।

राजीवने अपनी छातीको दाब लिया। क्योंकि उस समय, वह जितनी वेदना, करूणा और दयाकी याचनासे आविर्भूत हो गया था, उससे, इसके अतिरिक्त और क्या हो सकता था कि वह मर जाये, नष्ट हो जाये राजीव!

लेकिन उसी समय, उसका झुका हुआ सिर ऊपर उठ गया। वह चौंक गया। उसने देखा कि कमला रोती है। और मालती सो रही है। उसने मनमें कहा—मालती कितनी अनजान है अपनी सन्तान के लिये,—कमलाके लिये!' निदान वह उठा। मालतीकी चारपाईके पास जा खड़ा हुआ। उसने कमलाको उठा लेनेके लिये अपने दोनों हाथोंको भी फैला दिया। परन्तु यह भी कितने कौतुक और विस्मय का विषय था कि हाथ बढ़ाकर भी, राजीव लड़कीको उठा नहीं सका। वह अपनी गोदमें कमलाको नहीं ले सका। उस क्षणमें जीवनके उस विशिष्ट, कठोर और अनुपम क्षणोंमें—उसको लगा कि वह अशुभ है, अयोग्य पिता,—वह कमलाको लेनेका हकदार नहीं, किसी पवित्र वस्तुको प्यार करनेका अधिकारी भी नहीं। वह सन्दिग्ध था। उसे अपनेपर सन्देह था, वह भ्रमित। वह भ्रष्ट।

किन्तु कमला तो रो रही थी। मालती सो रही थी। वह जैसे उस दिन जानबूझ कर गहरी नींदमें सो गयी थी। उसी अवस्थामें राजीवने कमलाको उठा लिया।

उसी समय मालतीकी आंख खुली। उसने लैम्पकी बत्ती ऊंची की। तभी आश्चर्यसे, उसने देखा कि राजीव अपने कांपते हुए हाथों में कमलाको लिये खड़ा है। मुंहसे मेरी बेटी, मेरी मुन्नो' कह रहा है और उसे हिला रहा है। किन्तु वह फूट-फूट कर रो रहा है—रोता जा रहा है,—यह रहस्य उस मालतीकी समझमें नहीं आया,—नहीं!

——

प्रभावशाली व्यक्ति

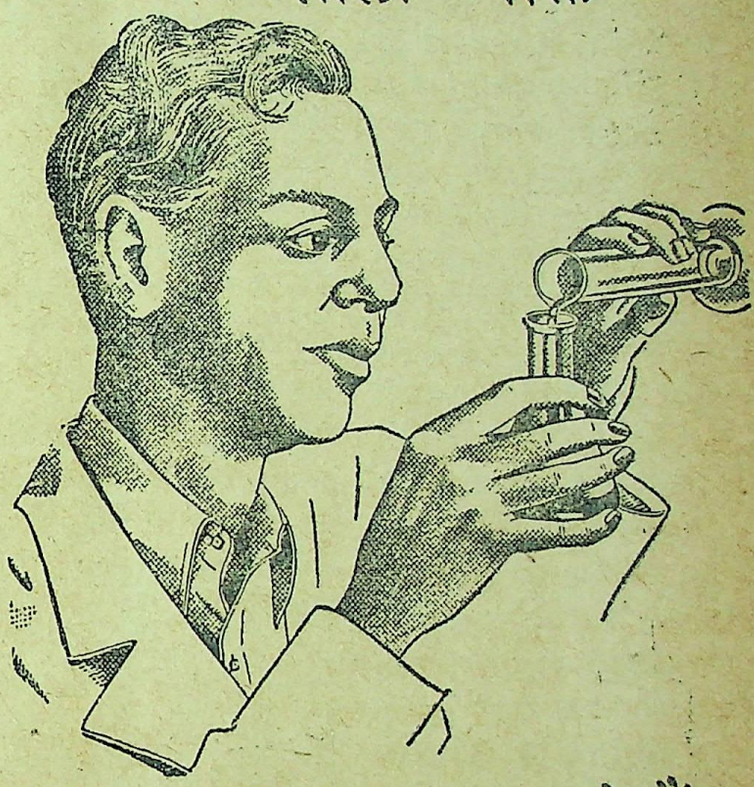

जीलेट से हजामत बनाते हैं।

सफलता कई बातों पर निर्भर करती है और इनमें से स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित आकृति का महत्व कम नहीं है। प्रभावशाली व्यक्ति अपनी दैनिक हजामत के लिये जिलेट ब्लेडों पर निर्भर रहते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि इनसे अच्छे ब्लेड उन्हें संसार में अन्यत्र कहीं नहीं मिल सकते।

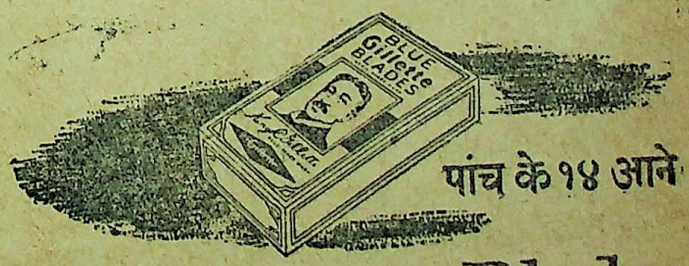

पांच के १४ आने

Blue Gillette Blades
ब्लू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये!

काश्मीरकी समस्या

श्री मोहनसिंह सेंगर

(३)

जिस प्रकार चीन पर हुए जापानके आक्रमणने उसके भीतरी मतभेदोंको भुला कर उसके संगठन एवं राजनीतिक प्रगति को कई कदम आगे बढ़ा दिया, उसी प्रकारका परिणाम काश्मीरमें भी हुआ है। कबाइलियोंके आक्रमणके बाद श्रीनगर में बेगम अब्दुल्लाकी अध्यक्षतामें हुई एक विराट सार्वजनिक सभामें भाषण देते हुए शेख अब्दुलाने कहा—'हम सबको इस बातके लिए कबाइलियोंका मशकूर होना चाहिये कि उन्होंने काश्मीरमें उम्मीदसे भी पहले इनकलाब ला दिया है। यह है एक समाजी इनकलाब और साथ ही घरेलू भी।' अन्तिम वाक्यमें उन्होंने बेगम अब्दुल्लाकी ओर संकेत किया था; जिन्होंने इस संकट कालमें अपने मुल्ककी अधिकाधिक सेवा करनेके लिये बुर्का उतार फेंका था! और बेगम अब्दुल्लाकी देखा-देखी न जाने कितनी काश्मीरी खातूनोंने अपनी इज्जत और जान मालके रक्षार्थ पर्दा छोड़ दिया है। न जाने कितने आदमी अपने काम-धन्धे छोड़कर अपनी मातृभूमिके रक्षार्थ शस्त्र लेकर बाहर निकल पड़े हैं!

सच पूछा जाय, तो काश्मीरमें इनकलाब लानेका मुख्य श्रेय है, शेख अब्दुल्लाको। अपनी लोक प्रियताके कारण शेख साहब समस्त जम्मू,-काश्मीर में 'शेरे काश्मीर' के नामसे ही परिचित हैं। नेशनल-कान्फ्रेंसकी स्थापना कर आपने १९३८ में पहली बार लीगकी संकीर्ण साम्प्रदायिकताको सफल चुनौती दी। कदाचित् इसीलिये आज डोगराशाही के दमन-पीड़नके बावजूद नेशनल कांफ्रेंस जीवित जाग्रत है और मुस्लिम कान्फ्रेंस महाराजाके गुर्गोंकी सहायता एवं लीगकी शह पाकर भी कहीं नजर नहीं आती। शेख साहबका जन्म १९०५ में श्रीनगरसे सात मील दूर सूरा नामक गांवमें हुआ था। अलीगढ़-विश्वविद्यालयसे एम० एस सी० करके लौटनेके बाद आप राजकीय हाई स्कूलमें विज्ञानके अध्यापक हो गये। धीरे-धीरे आपने जनताकी गरीबी एवं गुलामी और निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी शासनके अभिशापको महसूस करना शुरू किया। इसीने मुस्लिम कान्फ्रेंस और जिम्मेदार हुकूमतकी मांगको जन्म दिया। साम्प्रदायिक कठमुल्लाओंसे मतभेद होनेके कारण १९३८ में आपने हिन्दुओं, सिखों और मुसलमानोंके सम्मिलित संगठनके लिये नेशनल-कान्फ्रेंसकी स्थापना की उसकी ओरसे १९४६ में आपने 'काश्मीर छोड़ो'-आंदोलनका सूत्रपात किया। फलतः आप नेशनल-कांफ्रेंसके अन्यान्य नेताओंके साथ जेलमें ठूंस दिये गये और गत अक्तूबर में ही छूटे हैं। शेख साहबने काश्मीर और जम्मूकी पिछड़ी एवं अशिक्षित जनताको जिस खूबीके साथ संगठित किया है, उसे देख स्पर्धा-सी होती है। उनकी व्यापक लोकप्रियताका अन्दाज इसीसे लगाया जा सकता है कि आज कल विवाहोंके अवसरों एवं त्योहारों पर प्रायः उनके प्रशस्ति गीत ही गाये जाते हैं और घर-घरमें उनका नाम एक कुटुम्ब जनके रूप में लिया जाता है।

शेष भारतसे काश्मीरकी राजनीतिक और सामाजिक समस्याएं सर्वथा भिन्न हैं। पिछले ७-८ वर्षोंमें भारतीय-राजनीतिने जिस तेजीसे साम्प्रदायिक रंग ग्रहण किया है वैसी बात काश्मीरमें नहीं हुई। इसका एक प्रधान कारण यह है कि काश्मीरमें हिन्दुओं और सिखोंकी आबादी ७ से १३ प्रतिशत तक है। इतनी नगण्य अल्पसंख्यामें होने सिवाके उनकी कोई ऐसी संस्थाएं नहीं थीं, जिन्हें राजनीतिके नाम पर साम्प्रदायिकताका प्रचार करनेका अवसर मिलता। हिन्दू महासभा या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसी प्रतिगामी संस्थाएं नाम मात्रके लिये हिन्दू-व्यावहारिक दृष्टिसे उनका कोई महत्व नहीं। समूची जनताको—और विशेषतया ग्रामीण जनताको जो नागरिक अधिकार अथवा राजनीतिक जीवनका ककहरा भी नहीं जानती—संगठित कर उत्तरदायी शासनकी मांग करनेका श्रेय नेशनल कांफ्रेंसको है। पर नेशनल-कांफ्रेंस भी भारतकी विभिन्न राजनीतिक संस्थाओंकी तरह केवल सभा प्रदर्शन करने जुलूस निकालने और राजनीतिक आन्दोलन करने वाली संस्था ही नहीं है। उसका जनतासे सीधा सम्पर्क है और वह उनकी रोजमर्रा की समस्याओंको हल करनेकी सतत चेष्टा करती है। इसी कारण कान्फ्रेंसकी प्रतिष्ठा और प्रभाव बराबर बढ़ते रहे हैं। एक ओर अधिकारियोंने उसे नष्ट करनेकेलिये कोई जुल्म ज्यादती बाकी नहीं रखी और दूसरी ओर साम्प्रदायिक कठमुल्लोंने उसे बदनाम करनेको नये-नये असत्यों और भ्रान्तियोंका आविष्कार किया। मुसलमानोंने शेख अब्दुल्ला और नेशनल-कांफ्रेंसके अन्य मुस्लिम कार्यकर्त्ताओंको हिन्दू-राजा और धनिक वर्गका जर खरीद-एजेंट बताकर बदनाम किया और कट्टर हिन्दुओंने मुसलमान होनेके नाते उन्हें साम्प्रदायिक मनोवृत्तिका बताया। सुनी सुनाई बातों पर विश्वास न कर हमने कांफ्रेंसके कार्यों और कर्यकर्त्ताओंको स्वयं काम करते देखा और उन्हें देखकर हमें ऐसा लगा कि यदि भारतमें कहीं कोई विशुद्ध राजनीतिक और गैर साम्प्रदायिक संस्था है तो कांग्रेसके बाद शायद काश्मीरकी नेशनल कांफ्रेंस ही है।

पूर्वी पंजाबके बाद जब दिल्ली और जम्मूमें मुसलमानोंका खुलेआम वध हुआ तो नेशनल कानफरेन्सके दुश्मनोंकी खूब बन आयी। एक ओर तो उन्होंने यह मिथ्या प्रचार करना शुरू किया कि नेशनल कानफरेन्स ही यह सब करवा रही है और दूसरी ओर नेशनल-कानफरेन्स इस साम्प्रदायिक पागलपनसे मुसलमानोंकी रक्षा भी विशेष नहीं कर सकी। ऐसी घटनाओं और भ्रांतिपूर्ण प्रचारके फलस्वरूप कुछ साम्प्रदायिक मनोवृत्तिके मुस-

लमान लीगके समर्थक जरूर हो गये, पर शीघ्रही वे निर्भ्रान्त भी हुए। कबाइलियों के आक्रमणमें हुई मुसलमानोंकी लूट-मार और मुस्लिम लड़कियोंके अपहरणने उनकी आंखें खोल दी। आज बहुसंख्यक मुसलमान हिन्दुओं और सिखोंसे कन्धेसे कन्धा मिला कर अपने मुल्ककी रक्षाके लिये सङ्गठित होकर आगे बढ़ रहे हैं। आज नेशनल-कानफरेन्सके पदाधिकारी बड़ी योग्यतापूर्वक काश्मीरका शासन भार सम्भाले हुए हैं और कानफरेन्सके स्वयंसेवक आत्म-रक्षाके लिये फौजी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

कौमी फौजका उदय

जैसा कि हम पहले बता आये हैं, काश्मीरका संघर्ष केवल फौजी संघर्ष ही नहीं है बल्कि राजनीतिक और सांस्कृतिक संघर्ष भी है। मस्लिम-लीगके प्रचारकोंने पूर्वी पंजाब, दिल्ली, जम्मू और अन्य कई स्थानों पर मुसलमानोंके साथ हुई ज्यादतियोंका बढ़ा-चढ़ा कर ऐसा वर्णन किया कि मुसलमान भड़क जायं। जो कबाइली पकड़े गये हैं, उन्होंने तो यहां तक बताया है कि उनसे उपरोक्त स्थानों पर मुसलमानोंके निःशेष कर दिये जानेकी बात भी कही गयी और इसी आधार पर उनको हिन्दुओंके खिलाफ जेहाद बोलनेके लिये काश्मीर पर हमला करनेको उकसाया गया। इसी तरहकी बातोंसे बरगलाये गये अनेक काश्मीरी मुसलमानोंने कबाइलियोंका थोड़ा-बहुत साथ भी दिया, और बहुतोंने इसी कारण उनका विरोध नहीं किया। इस आत्मघाती खतरेसे जनताको बचानेका एक मात्र उपाय एक ओर उसे इस मिथ्या प्रचारके जहरसे बचाना और दूसरी ओर उसे आत्म-रक्षाके लिये तैयार करना था।

मिथ्या प्रचारके खतरेसे जनताको बचानेके लिये नेशनल कानफरेन्सने एक सांस्कृतिक मोर्चा गठित किया है, जिसमें काश्मीरी और उर्दू भाषाओंके अनेक ख्यातिनामा लेखक और कवि, अभिनेता एवं कलाकारोंने अपना सम्पूर्ण सहयोग दिया है। भोले-भाले काश्मीरी मुसलमानोंको झूठे प्रचार द्वारा किस प्रकार लीगियोंने बहकाया है, लूटका कुछ हिस्सा देकर किस प्रकार उन्हें भ्रष्ट एवं भ्रान्त किया गया है और किसी भी तरह मारे गये किसी मुसलमानकी लाश दिखा कर किस प्रकार उन्हें नेशनल कानफरेन्ससे फोड़नेका शरारत-भरा प्रयत्न किया गया है, इन सबका पर्दाफाश करनेको काश्मीरी और उर्दूमें न जाने कितने लेख, गीत और व्यंग्य लिखे गये हैं। इस मोर्चेका सबसे सफल और महत्वपूर्ण प्रयत्न है 'यह है काश्मीर' नामका नृत्य-गीतमय नाटक। इसमें एक ओर नृत्यों एवं गीतों द्वारा काश्मीरकी सौन्दर्य-श्रीकी झांकी दिखायी गयी है और दूसरी ओर कबाइलियोंके कारनामोंका नग्न रूप दिखाया गया है। इस नाटकने भोले-भाले, अशिक्षित और अन्धकारमें फंसे काश्मीरियोंको निर्भ्रान्त करनेका आशातीत कार्य किया है। थोड़ेही समयमें यह नाटक काश्मीरमें असाधारण रूपसे लोकप्रिय हो गया है। इस मोर्चे पर जो लेखक, कवि और कलाकार इस समय काम कर रहे हैं, उनमेंसे उल्लेखनीय हैं—सर्वश्री आसी, महजूर, अजीज बहरारी, आरिफ, आजाद, प्रो० हाशमी, परदेसी, प्राणकिशोर, पुष्प कैसर कलन्दर, रामानन्द सागर, प्रेमनाथ दर, तालिब, सलाउद्दीन, जियालाल कौल, सोमनाथ दर, साधु, जे० एम० जुत्शी, गौशलाल कौल, सोमनाथ तिक्कू जरगर आदि।

पर नेशनल-कानफरेन्सका सबसे उत्तम, उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण अङ्ग है कौमी फौज। यद्यपि आज कबाइलियोंके खिलाफ भारतीय संघकी सेनाएं लड़ रही है, तथापि इस सत्यसे भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि जनताकी स्थायी सुरक्षा तो आत्म-रक्षाकी उसकी अपनी क्षमता एवं दक्षता परही निर्भर करती है। पर दुर्भाग्यवश पिछली एक शताब्दीके ब्रिटिश शासनने हमें इतना निकम्मा और परमुखापेक्षी बना दिया है कि आज हम चोर डाकू और उद्दण्ड पड़ोसी तकसे अपनी रक्षा करनेके लिये पुलिस अथवा फौज पर ही निर्भर करते है। कदाचित इसी लिये पिछले वर्ष हुए उपद्रवोंमें अधिकांश लोगोंको भागनेके सिवा और कोई चाराही न देख पड़ा। इससे जनताकी नैतिक रीढ़ टूट जाती है और बहादुरोंका मन भी कमजोर हो जाता है। इसी गरजसे नेशनल-कानफरेन्सने कौमी फौजका संगठन किया है। इसमें फौजी कवायद और राइफल चलाना सिखाया जाता है। इसका काम है कानून और शान्तिकी रक्षा करना और वक्त पड़ने पर शत्रुसे लड़ना। और जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं, अधिकारियोंके पलायनके बाद इसके सैनिकोंने श्रीनगर और आसपासके गांवोंमें कानून और व्यवस्थाको बखूबी कायम रखा और किसी प्रकारकी लूटमार नहीं होने दी। दो-एक स्थानों पर इसने कबाइलियोंका मुकाबला भी बड़ी मुस्तैदीसे किया। कबाइलियोंको खदेड़ कर जिन स्थानों पर भारतीय सेनाओंने पुनः अधिकार किया है, वहां जाकर कौमी फौजने अनेक नागरिकोंका लूटका माल स्थानीय व्यक्तियोंसे वापस दिलाने और भागे हुओंको उनके पुराने स्थानोंमें फिर बसानेका काम बड़ी जिम्मेदारी और संयमके साथ किया है।

वास्तवमें कौमी फौजके कार्यका महत्व उसे देख सुनकर ही समझा जा सकता है। भारत के विभिन्न राजनीतिक एवं जातीय संस्थाओंके स्वयंसेवकोंसे यह इस मानीमें भिन्न है कि इसका संगठन संचालन फौजी ढंगपर हुआ है। पर पेशेवर फौजोंसे यह इस रूपमें भिन्न है कि उनकी तरह यह जनतासे बिलकुल अलग और उसपर जुल्म करने वाली सेना नहीं है। अबतक फौज'के नामसे हम उन्हीं सेनाओंसे परिचित हैं, जिनका जनतासे कोई सजीव सम्पर्क नहीं। युद्ध होनेपर वे शत्रुसे लड़ती हैं और शान्तिकालमें जहां तहां होनेवाले उपद्रवोंको दबानेके लिए भेजी जाती हैं। पर कौमी फौज

जनताकी अपनी सेना है, जनतासे उसका सतत सम्पर्क रहता है और जनताकी रोजकी समस्याओंको हल करनेमें सहायक होना ही उसका कार्य है। हर नागरिकके अधिकारोंके साथ उसके कर्त्तव्योंका बोध कराना और मुल्कका एक जिम्मेदार नागरिक बनाना भी कौमी फौजका एक काम है। इसी लिये कौमी फौजके प्रत्येक दस्ताके साथ जहां एक फौजी शिक्षक रहता है, वहां एक राजनीतिक शिक्षक भी रहता है। इसका प्रधान कार्य है कौमी फौजके सिपाहियोंको जनताकी सेनाके मूल सिद्धान्तसे अवगत कराना और उन राजनीतिक एवं सांस्कृतिक हेतुओं एवं मूल्योंसे परिचित कराना, जिनके लिए आज काश्मीरको संघर्ष करना पड़ रहा है।

काश्मीरकी स्त्रियां भी इस कार्यमें वहांके पुरुषोंसे पीछे नहीं हैं! उन्होंने न सिर्फ सांस्कृतिक मोर्चेकी ओरसे होने वाले अभिनय एवं अन्य प्रकारके प्रचार कार्यों में ही आगे बढ़कर हिस्सा लिया है, बल्कि कौमी फौजमें भर्ती होकर फौजी कवायद और राइफल चलाना भी सीखा है। जहांके गुलामी और गरीबीकी चक्कीमें पिस रहे पुरुष ही हाथ या छड़ीतक उठानेका साहस नहीं करते, वहांकी स्त्रियोंको राइफल लिये कवायद या चांदमारी करते देखकर किस दर्शकको आश्चर्य नहीं होगा? काश्मीरी स्त्रियोंपर कबाइलियो द्वारा हुए अत्याचारों एवं उनके अपहरणने इन बहनोंके शत्रुका सामना करनेके निश्चय को और भी बल दिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कौमी फौज और सांस्कृतिक मोर्चेके रूपमें नेशनल कानफरेंसने काश्मीर ही नहीं, समस्त भारतीय जनताके सामने जनताके सम्मिलित संगठनका एक अद्वितीय उदाहरण पेश किया है। जाति और धर्मसे परे इस संगठनने गुलामी एवं पिछड़ेपनसे पस्त जनताको जगाने एवं अपने स्वत्वोंके लिये संघर्ष करनेकी जो सामूहिक प्रेरणा दी है, वह भारतके लिये एक नया सन्देश है। जनताके इस संगठन और संघर्षकी विजय में भला कौन संदेह कर सकता?

(२९ व पृष्ठका शेषांश)

आपकी कहानियोंका संग्रह हैं। सामाजिक क्षेत्रमें भी वे आधुनिक महिला आन्दोलनकी प्रमुख कार्यकर्ता थीं। प्रान्त के महिला उत्थानमें उनका अधिक हाथ रहा है। आज उनके निधनसे हमारे जीवन में एक बहुत बड़ी क्षति हुई है जिसकी पूर्ति होना असम्भव सा प्रतीत होता है।

परिचय—आपका जन्म १९०४ में प्रयागमें हुआ था। आपके पिताका नाम ठाकुर रामनाथ सिंह था। आपके पिता भी संगीत तथा कविताके प्रेमी थे। आप की प्रारम्भिक शिक्षा प्रयागमें ही हुई। कविता लिखना आपने अपने छात्र-जीवनमें ही प्रारम्भ कर दिया था। आप प्रयागके क्रास्थवेट-गर्ल्स कालेजकी छात्रा थीं। कुछ दिनों तक आपने काशीके थियोसोफिकल स्कूलमें भी शिक्षा पाई थीं। आपका विवाह १६ वर्षकी आयुमें ही श्री लक्ष्मण सिंहजी चौहानके साथ हो गया था। आपके पति भी अच्छे कवि तथा कांग्रेसके कार्यकर्त्ता हैं। इसमें सन्देह नहीं कि राजनैतिक क्षेत्रमें इन्हें अपने पतिसे अधिक प्रेरणा मिली थी। आप कुछ दिनों तक झांसीमें गर्ल्स-स्कूलमें अध्यापिकाका कार्य करती रहीं, उसके पश्चात् अपने पतिके साथ ही जबलपुरमें रहकर, राजनैतिक कार्यों में व्यस्त हो गईं। १९४२ के स्वतन्त्रता आन्दोलनमें आपने सराहनीय कार्य किया। आपको जेल भी जाना पड़ा था। इसके पश्चात आप प्रान्तीय धारा सभाकी सदस्या चुनी गई थीं, और प्रान्तकी कई कमेटियोंकी सदस्या भी थीं।

आज उनकी मृत्यु केवल उनके कुटुम्ब के लिये ही दुखदायी नहीं है परन्तु मध्य प्रान्तके लिये तथा हिन्दी साहित्यके लिये एक दुःखपूर्ण घटना है। ईश्वरसे प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्माको शान्ति प्रदान करे। (भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट, वर्धा)

क्या आपकी
यौवन शक्ति
और आकर्षक चेहरा है?

यह ठीक अन्दरूनी सफाई का विषय है—और सोने के समय दो बाइलबीन्स लेने से बढ़कर और कौन-सा सहल उपाय है। वनस्पयहति टानिक-रेचक प्रति दिन आन्तरिक सफाई करता है, रक्तधार को साफ करता है और पचाने के संस्थान को पुष्ट करता है।

बाइलबीन्स कब्जियत, सिर में दर्द, मन्दाग्नि बदहजमी और ऐसी अन्य बीमारियों में भी बहुत ही लाभदायक है।

याद रखिये

BILE BEANS

सुन्दर स्वास्थ्य और जीवनी शक्ति देता है

एजेन्ट्स—स्मिथ स्टेनिस्ट्रीट एन्ड कं० लि०, इन्टाली, कलकत्ता।

प्रतिभा और वृत्ति निर्वाचन

प्रो० जगन्नाथ प्रसाद मिश्र

मानव जीवनकी सफलता-विफलता बहुत कुछ वृत्ति-निर्वाचन पर निर्भर करती है। बहुधा ऐसा देखा जाता है कि प्रवृत्तिके विरुद्ध वृत्ति या व्यवसायका निर्वाचन करके बहुतसे प्रतिभाशाली व्यक्तियोंने अपने जीवनकी उज्ज्वल सम्भावनाओंको नष्ट कर डाला है। किन्तु इसके साथ ही ऐसे दृष्टान्तोंकी भी कमी नहीं है जब कि परिस्थितिके कारण विवश होकर कितनेही नवयुवकोंको अपनी जीविकाके लिये ऐसी वृत्ति ग्रहण करनी पड़ी है जो उनकी प्रवृत्ति या मानसिक झुकावके सर्वथा प्रतिकूल हैं। हमारे देशमें प्रतिभाका इस रूपमें शोचनीय दुरुपयोग विशेष कर देखा जाता है। इस देशमें सब विषयोंकी शिक्षाकी समुचित व्यवस्था न होनेसे छात्रोंको अपनी रुचि और प्रवृत्तिके विरुद्ध शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है और जीविकाके लिये ऐसे व्यवसायोंको ग्रहण करना पड़ता है जिनसे उनकी मौलिक प्रतिभा सर्वथा कुण्ठित हो जाती है। बच्चोंको प्रारम्भिक शिक्षा देते समय उनकी रुचि, प्रवृत्ति या झुकावकी ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता। जिन शिक्षकोंके निरीक्षणमें वे शिक्षा प्राप्त करते हैं उनकी शिक्षा तथा शिक्षा विषयक ज्ञान इतना साधारण होता है कि वे इस बातको समझ ही नहीं सकते कि बच्चेकी प्रवृत्ति और उसका मानसिक झुकाव किस ओर है। इसका परिणाम यह होता है-कि बच्चोंकी बुद्धिका स्वाभाविक रूपमें विकास होने नहीं पाता। प्रवृत्ति या रुचिके विरुद्ध उन्हें ऐसी शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है जिसमें उनका मन बिलकुल लगता ही नहीं। मान लीजिये कि किसी लड़केकी प्रवृत्ति बचपनसे ही संगीत या चित्रकलाकी ओर हैं, किन्तु इन विषयोंकी शिक्षाके लिये समुचित व्यवस्था न होनेसे उसे विवश होकर अन्य विषयोंकी शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है। ये विषय उसके मनके सर्वथा प्रतिकूल होते है। ऐसी स्थितिमें जिसे एक गायक या चित्रकार होना चाहिये था उसे किसी दफ्तरका किरानी बनना पड़ता है। और इस किरानी जीवनमें मन नहीं लगनेके कारण वह सफल नहीं होता और उसकी मौलिक प्रतिभा सदाके लिये कुण्ठित होकर नष्ट हो जाती है। इससे केवल व्यक्तिको ही नहीं बल्कि समाज और राष्ट्र दोनोंको क्षतिग्रस्त होना पड़ता है। हमारे देशमें तो प्रतिभा रूपी कुसुमके इस प्रकार असमयही कुम्हला जानेके कितने दृष्टान्त मिलेंगे।

यहां कुछ ऐसे अंगरेज पण्डितोंके दृष्टान्त दिये जाते हैं जिन्हें अपनी जीवन यात्राके प्रारम्भमें इस लिये अकथनीय दुःख सहन करने पड़े कि उनके अभिभावकोंने उन्हें प्रवृत्ति और रुचिके विरुद्ध वृत्ति ग्रहण करनेके लिये विवश किया। इसके साथ ही कुछ ऐसे दृष्टान्त भी दिये जायंगे जिनसे यह मालूम होगा कि प्रवृत्तिके अनुकूल वृत्ति-निर्वाचन होनेसे जीवन कितना सुखद हो सकता है।

सुप्रसिद्ध अंगरेज नाट्यकार बेन जानसानका जन्म सन् १५७३ ई० के लगभग हुआ था। उसकी शिक्षा-दीक्षा जिस ढङ्गसे हुई, उससे यही कहा जा सकता है कि वह उसके भावी जीवनके सर्वथा अनुकूल थी। आगे चलकर एक कवि और नाट्यकारके रूपमें उसकी जो ख्याति हुई उसके पोषणका बीज उसकी आरम्भिक शिक्षामें ही निहित था। किन्तु विद्याभ्यास समाप्त करनेके बाद उसके पिताने उसे अपने व्यवसाय अर्थात् राजमिस्त्रीके काममें लगा दिया। इस काममें उसका मन बिलकुल नहीं लगता था। जिस व्यक्तिने अपना विद्यार्थी जीवन ग्रीस और रोमके काव्यसाहित्यके अध्ययन और पारायणमें व्यतीत किया था भला उसे ईंट सुर्खी और चुनेका काम कैसे अच्छा लग सकता था। इस जीवनसे ऊबकर उसने पिताके विरुद्ध विद्रोह कर दिया और घरसे भागकर एक सैनिकका जीवन व्यतीत करने लगा। किन्तु यह जीवन भी उसके लिये अनुपयुक्त सिद्ध हुआ। इसलिये वह लन्दन चला आया और एक नाटक कम्पनीमें अभिनेता और नाटक लेखकके रूपमें भरती हो गया। यह कार्य उसकी प्रवृत्तिके सर्वथा अनुकूल था। इसमें उसका मन खूब लगता था। यही कार्य आगे चलकर उसके सुयशका कारण हुआ। यह संभव है कि यदि छात्र-जीवनके बाद ही अपने मनके अनुकूल वह वृत्ति निर्वाचन करता तो उसे कम कष्ट और कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता।

अंगरेज कवि विलियम कूपरका जन्म सन् १७३१ के नवम्बर महीनेमें हुआ था। स्वभावसे यह बहुत ही लज्जाशील और भीरु था। अपने छात्र-जीवनसे ही वह लेटिन भाषामें कविता करने लगा था। किन्तु उसके पिताको यह बिलकुल पसंद नहीं था कि उसका पुत्र साहित्य सेवी बन कर जीविकार्जन करे। उन दिनों साहित्यकी सेवा करके कोई धनार्जन

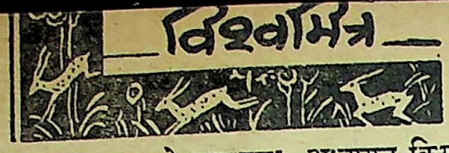

नहीं कर सकता था। इसलिये अपने पिता की इच्छाके अनुसार कूपरको कानून पढ़ना पड़ा। किन्तु कानूनका पेशा उसके मनके अनुकूल नहीं था। कानूनके अध्ययनमें उसका बहुत सा समय व्यर्थ ही नष्ट हो गया। सन् १७५३ में पार्लमेण्टमें एक किरानीकी जगह खाली हुई। इसके लिये कितने ही उम्मीदवार थे जिनमें एक कूपर भी था। उम्मीदवारोंको एक प्रतियोगिता-परीक्षामें बैठना पड़ता था किन्तु इस परीक्षामें बैठनेकी बात सोचकर ही कूपर इतना घबरा गया कि वह विक्षिप्त जैसा हो गया। ८ महीनेके बाद इस रोग से उसकी मुक्ति मिली। इसके बादसे आजीवन उसे समय-समय पर मिर्गी रोगका दौरा होता रहा। आखिर कूपरने सब काम छोड़कर लेखनीकी शरण ली। इस पेशाको ग्रहण करके वह सफल हुआ। उसे धन और सुयश दोनों प्राप्त हुए। यदि उसे कानूनका अध्ययन करने या परीक्षामें बैठनेको विवश होना नहीं पड़ता तो बहुत संभव था कि एक स्वस्थ मनुष्यके रूपमें उसका जीवन व्यतीत होता और उसकी कृतियोंसे अंगरेजी साहित्य और भी समृद्ध होता।

सर थाम्स ब्राउन जन्मसे ही एक साहित्य शास्त्री था। किन्तु उसे चिकित्सा-व्यवसाय करना पड़ता था। इस व्यवसायमें उसे बहुत कम सफलता मिली। आज उसको लोग इसलिये नहीं जानते कि वह एक चिकित्सक था, बल्कि इस लिये कि उसने अपनी रचनाओं द्वारा अंगरेजी साहित्यके भंडारको भरा। यदि उसकी सारी शक्तियां साहित्य सेवामें ही संलग्न होती तो आज हम उसकी कृतियों को और भी उज्वल रूपमें पाते।

अंगरेज कवि गोल्डस्मिथको एक-एक कर कानून, डाक्टरी और धर्म पुरोहितको व्यवसायको ग्रहण करना पड़ा और उसे किसीमें भी सफलता नहीं मिली। आखिर उसने साहित्य देवताकी आराधना आरंभ की और तब वह सफल-काम हुआ और सयशका भागी हुआ। सर वाल्टर स्काटने कानूनका अध्ययन किया और एक कविके रूपमें अपना साहित्यिक जीवन आरम्भ किया। किन्तु उसके भाग्यमें तो एक उपन्यास कार होना बदा था और अन्ततः एक ऐतिहासिक उपन्यास कारके रूपमें ही उसने अमरख्याति प्राप्त की। कीटस् एक जन्मजात कवि था, किन्तु उसे एक चिकित्सकका नाथब बनकर पांच साल तक खटना पड़ा। बादमें चलकर उसे महसूस हुआ कि उसमें अमर जिन्दगीका स्रष्टा बननेकी ईश्वरदत्त प्रतिभा भी मौजूद है।

इन सब दृष्टान्तोंसे यह स्पष्ट है कि किस तरह महान प्रतिभाशाली व्यक्तियोंको अपने जीवनके सुनहले अवसर और अपनी असामान्य शक्तियां इसलिये नष्ट करनी पड़ीं कि उन्होंने वृत्ति-निर्वाचनमें गलती की थी। यदि उन्हें जीवनमें उचित पथ प्रदर्शन मिलता तो आजकी दुनिया उनके बहुमूल्य दानोंसे और भी उपकृत होती। इसलिये महान व्यक्तियोंकी शिक्षा दीक्षा और उनका पालन-पोषण यदि ठीक तरहसे नहीं हो तो इससे केवल उन्हींको नहीं बल्कि सारे समाजके क्षतिग्रस्त होना पड़ता है।

अब हम यहां कुछ ऐसे लोगोंके उदाहरण उपस्थित करते हैं जिन्होंने वृत्ति-निर्वाचनमें भूल नहीं की और जिनकी प्रतिभाका समुचित रूपमें बिकास हो सका।

कवि मिलटनमें बचपनसे ही असाधारण साहित्यिक प्रतिभाके लक्षण प्रकट होने लगे थे। अपने हृदयके अन्तरतममें वह इस विचारका पोषण करने लगा था कि एक कविके रूपमें उसे शाश्वत कीर्ति प्राप्त करनी है। इस दृढ़ धारणाके कारण ही उसने आजीवन साहित्य साधना की और अपने जीवनके महत् उद्देश्यका पूर्ण करके दिखा दिया।

पोप भी अपने जीवनके आरम्भसे ही यह महसूस करता था कि उसे साहित्य की सेवा करके ही जीवन निर्वाह करना है। यही उसके जीवनका पेशा होगा। इस विश्वासके कारण ही वह प्राचीन और नवीन कवियोंकी कीर्तियोंके अध्ययन और मननमें दिनरात लगा रहता और काव्यानन्दमें निमग्न रहता। उसका यह कविता प्रेम इतना बढ़ गया था कि स्कूल के पाठ्यक्रमकी उपेक्षा करके वह अपनी कापियोंको छन्द रचनासे भरा करता। पाठ्य पुस्तकोंके प्रति लापरवाही दिखानेके कारण जब उसके पिताने उसे दण्ड दिया तो उसने पद्यमें ही अपने पितासे क्षमा-प्रार्थना की :—

"Papa Papa Pity Take.
I Shall no more verses make."

क्षमा प्रार्थनाके रूपमें उसके मुंहसे जो ये पद्यबद्ध पंक्तियां निकलीं उनसे उसके पिताको पुत्रकी कवि सुलभ प्रतिभाका परिचय मिला इसके बादसे उसके पिताने उसे अपने राहपर चलने दिया और उसकी काव्यरचनामें किसी प्रकारका हस्तक्षेप नहीं किया। कुछ समयके बाद पोप अपने समयका सर्वप्रधान कवि हुआ। वह आजीवन अस्वस्थ रहा। ऐसी स्थितिमें यदि उसे अपनी रूचिके विरुद्ध कोई पेशा ग्रहण करना पड़ता तो सम्भव था कि उसकी अकाल मृत्यु हो जाती।

वर्डसवर्थ, शेली, बायरन, टेनीसन और गालसवर्दी इन सबको अपने जीवनमें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि वे अपनी रुचि और प्रवृत्तिके अनुसार साहित्य देवताके चरणोंमें अपने जीवनके अर्घ्य प्रदान करते रहे। और वे अपनी अमूल्य साहित्यिक कृतियोंके रूपमें मानव जातिके लिये जो श्रेष्ठ दान छोड़ गये हैं उनसे समग्र साहित्यिक संसार आज अपनेको कितना गौरवशाली मान रहा है।

इसलिये यह आवश्यक है कि राष्ट्रके बालक बालिकाओंकी शिक्षाका भार ऐसे लोगोंके ऊपर हो जो शिक्षाशास्त्र और

बाल मनोविज्ञानके विशेषज्ञ हों और प्रत्येक बालक या बालिकाकी रुचि और स्वाभाविक प्रवृत्तिके अनुसार उसके लिये समुचित शिक्षाकी व्यवस्था और उसे उचित रूपमें मार्ग प्रदर्शन कर सकें। इससे बालक बालिकाओंकी बुद्धि एवं प्रतिभा का सम्यक रूपमें विकास हो सकेगा और वे अपने जीवनमें सफलता और सुयशके भागी होंगे।

बवासीर

खूनी या बादी नई या पुरानी, अन्दरुनी या बाहरी चाहे जैसी बवासीर क्यों न हो उसपर महात्मा-प्रदत्त शक्तिशाली दिव्य महौषधि बवासीर की दवा तुरन्त जादू का सा असर करती है। केवल एक बार के इस्तेमालसे दर्द; खुजली, टीस; सूजन; जलन; मवाद आना खूनका गिरना फौरन दूर होता है। ३ दिन में खराब से खराब बवासीर; नासूर; भगन्दर बिना आपरेशन जड़से शर्तिया आराम होता है। लाखों निराश रोगी इसके व्यवहारसे अच्छे होकर अन्य रोगियों से इसकी सिफारिश करते हैं। कीमत ३॥) साढ़े तीन रुपया-डाक खर्च पृथक।

पता भारत आयुर्वेद आश्रम, (नं० १) कानपुर

फैंसीसिल्कसाड़ी आकर्षक डिज़ाईन

कलापूर्ण ३-४ इञ्च चौडा बाडर

नं०	७	८	९	५ गज
	१८)	२३)	२८)	"

२) आडर के साथ पेशगी बाकी वी०पी० से

थोक व्यापारियों को खास सुभीता

वमाको इन्डस्ट्रीज, जुही कानपुर

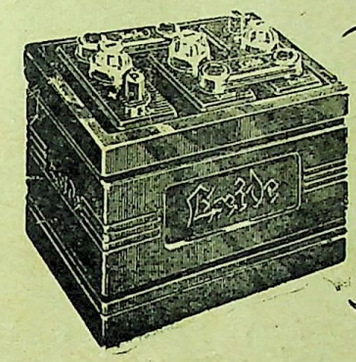

आप इससे अच्छी बैटरी खरीद नहीं सकते कार, टक और बसोंके लिये

एक्साइड बैटरी

Local Agents, Mess. F. & C. IOSLER Ltd.
12, Old Court Houe Sreet, Calcutta.

Ex7668

वेदना निग्रह रस

वेदना निग्रह रस के फायदे

शिर दर्द, कमर दर्द, पेट का शूल, जुकाम, फूडी, मलेरिया और मौसमी बुखार दूर करता है, उलझन परेशानी हटाकर नींद लाता है।

कुंवर आयुर्वेदिक फार्मेसी - कानपुर

A NOVELTY WATCH
'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage As. 12. Free fo 2 watches.
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM

रातको सर्दी लग जाने से ब्रांकाइटीज; प्लीयुरसी; और न्युमोनिया हो सकता है। सावधान रहें, कीटाणुनाशक स्वासदायक पेप्स को टिकिया का सेवन करें। मुंह में पेप्स के घुलने के साथही औषधियुक्त सत्व सीधे फेफड़े तक पहुंच जाता है। इससे स्वांस लेनेमें आराम मिलता है और खांसी दूर हो जाती है और कीटाणु मर जाते हैं।

लीजिये

PEPS

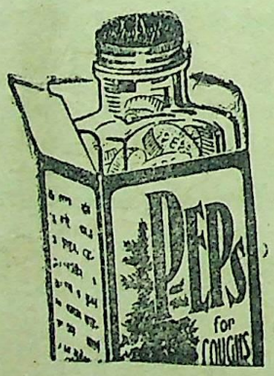

कीटाणु नाशक, स्वासदायक टिकिया

हमेशा साथ रखिये

सभी औषधि विक्रेताओं से प्राप्य

एजेण्टसः—स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट एण्ड कं० लि०, इण्टाली, कलकत्ता

No 4

होमियोपैथिक दवाइयां

प्रति ड्राम =) =)॥ आनाहै। हरएक बीमारियों की दवाइयां मय सेगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। **मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी**

६८ नम्बर छाइब स्ट्रीट, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।

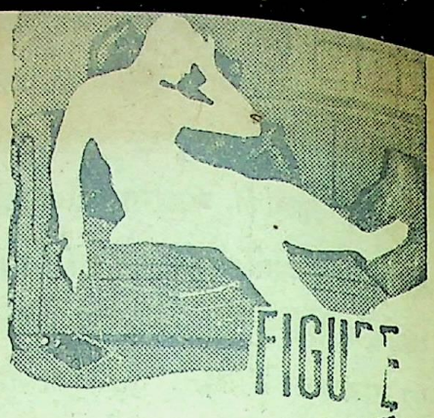

FIGURE WITHOUT LIFE

प्रशंसनीय रक्त परिष्कारक दूषित रक्तसे उत्पन्न होनेवाली सभी बीमारियोंकी अचूक दवा तथा टानिक। सजन, बात, गठिया चर्मरोग, दुर्बलता घाव, फोड़ा फुंसी, गांठोंकी सजन जो रक्तकी कमी या दूषित रक्तसे उत्पन्न होता है।

AMRITABALLI KASAYA
restores vitality & strength

KAVIRAJ N. N. SEN & CO. LTD CALCUTTA.

लाल-शर
(लाल शरबत)
बच्चोंको मोटा, ताजा, स्वस्थ और प्रसन्नचित्त रखने की प्रसिद्ध मीठी दवा

सब जगह मिलता है।
डाबर (डा॰ एस॰ के॰ बर्मन) लि॰ कलकत्ता

सम्पादक—देवदत्तमिश्र। ७४ घमतल्ला स्ट्रीट, स्थित इलेस्ट ड इण्डिया प्र समें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

चित्र

विश्वामित्र

पुस्तकालय
प्रकाश मण्डी

मुंगफली तेल व मुंगफली के लिये नव भारत ट्रेडर्स करनूल (मद्रास प्रेसीडेन्सी) को लिखें। सब प्रकार का आढत का काम सन्तोषजनक रूपसे किया जाता है।

तारकापता "Mahansarka"

ओटो पुष्पबहार

ओटो पुष्प बहार समस्त सुगन्धियों का सम्राट है। इसको लगाते ही आपका हृदय मस्ती की लहरों में खो जायगा। जिधर से आप निकलेंगे, इसकी सुगंध पाकर सबों की नजरें आप पर केन्द्रित हो जायँगी। रूमाल में लगाने से इसकी खुशबू महीनों नहीं जाती। यह सुगंध लगा कर आप जिससे मिलेंगे वह आप से बहुत प्रभावित हो जायगा।

मूल्य प्रति शीशी ॥।) एक दर्जन का ६॥।) डाक खर्च १।)

एक साथ एक दर्जन शीशी मँगाने पर एक जोड़ी हाथ के बटनों का सेट बम्बई फैशन की एक चमकदार अंगूठी एक फैन्सी रूमाल, एक खूबसूरत शीशा मय कंघा इनाम में मुफ्त दिया जायगा।

(यह घोषणा केवल प्रचार के उद्देश्य से की जा रही है।)

पता—इंडिया ट्रेडिंग कम्पनी, कानपुर

उचतम क्वालिटीकी लीवर घड़ियां

अत्यधिक सस्ती कीमतोंपर स्विटजरलैण्ड की बनी हुई, निहायत सुन्दर और आधुनिक आकार, ठीक समय देनेवाली। हर एक घड़ीकी गारण्टी ३ साल। क्रोमियम केस गोल या चौकोर साइज की १८) सुपीरियर २०) बेस्ट २५) रेक्टंगुलर और टोनिओ आकारकी चित्र जैसी घड़ियां उज्वल क्रोमियम केस, ५ ज्वेल ३८) रोलडगोल्ड ७ ज्वेल ५८) क्रोमियम केस १५ ज्वेल ६५), रोल्ड गोल्ड १० साल की गारंटीका केस ८३)। प्लास्टिक पट्टे सहित। डाक खर्च और पैकिंग माफ।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V.C.)
ऐशबाग — लखनऊ

पांच सौ रुपया इनाम

(एक आश्चर्यजनक अद्भुत जादई)

मैस्मरेज़िम और जादू की शक्ति से तैयार की हुई यह अंगूठी अनिष्टकारी ग्रहों का प्रभाव दूर करने में अलौकिक शक्ति का परिचय देती है। इस अंगूठी को पहनने वाला अपनी हर प्रकार की कामना पूरी करने में सफल हो जाता है। प्रेम और मुकदमे में सफलता, स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा कीर्त्ति उसके पांव चूमती है। एक ही रात में इस अद्भुत अंगूठी के गुणों और करामात से प्रभावित होना ही पड़ता है।

एक अंगूठी का मूल्य सिर्फ २)।
एक साथ तीन अंगूठी मंगाने पर ५)।
पेकिङ्ग और डाक खर्च अलग

—: पता :—

महाकाली आश्रम नं० २४७ कानपुर

१६॥) में ज्वेल वाली रिष्ट वाच

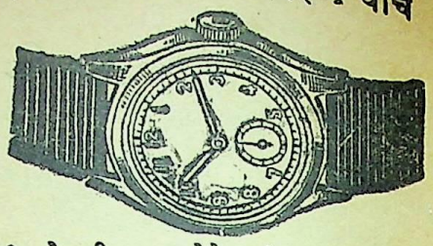

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)

रेक्टंगुलर कर्व्ह या टोनो शेप

क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।

एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

जुल्फे कश्मीर हेयर आयल

स्त्रीकी विजय सौन्दर्यमें है और सौन्दर्यका भेद है उसके बाल। **जुल्फे काश्मीर हेयर आईल** स्त्रीके बालोंको घने, लम्बे मजबूत और चमकीले बनानेमें अद्वितीय है। बाजारी तेलों पर धन नष्ट करने की बजाय जुल्फे काश्मीर हेअर आईल सेवन करें। यह एक शताब्दी से भी अधिक ख्याति प्राप्त है, आप सदव इसे ही पसन्द करेंगे।

काश्मीर कुसुम कुमकुमादि वर्क्स

विश्वमित्र

सम्पादक—
देवदत्त मिश्र

वर्ष—३० संख्या—५७ ता० २५ फरवरी १९४८ FEBRUARY 25, 1948. मूल्य =) वार्षिक ६)

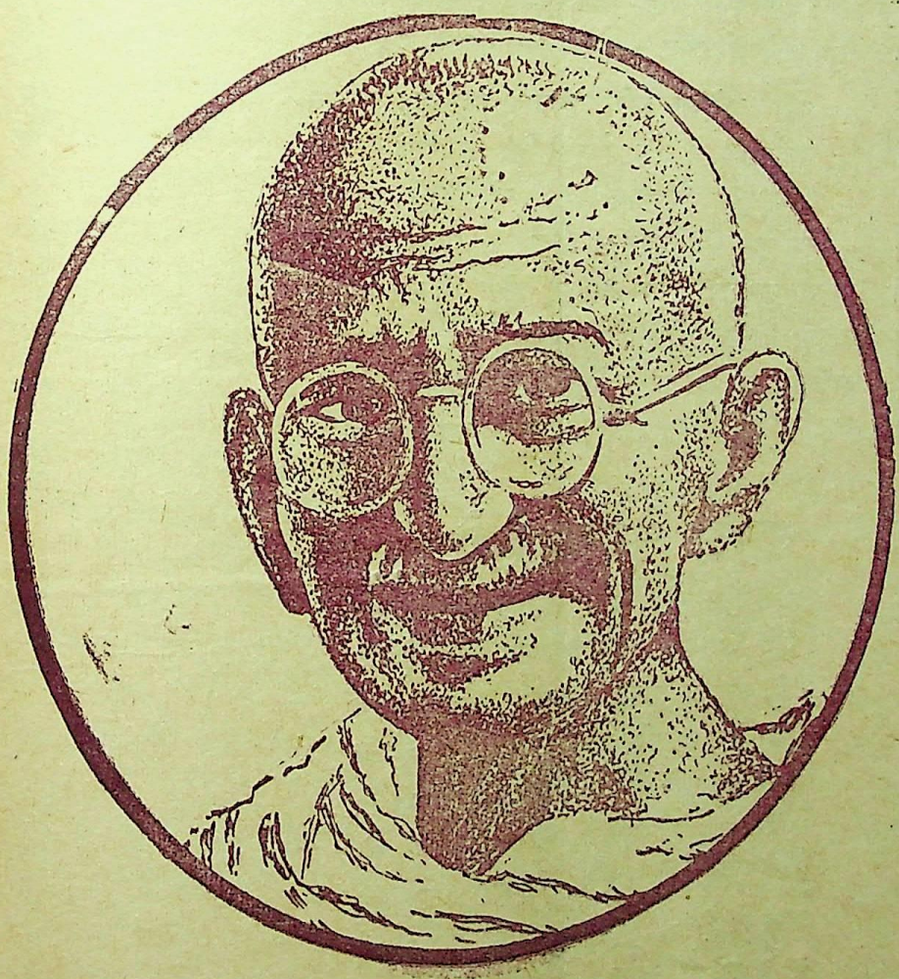

महाप्रयाण

हे दिव्यश्लोक ! हे दिव्य धाम !!
बापू ! लो जन जनका प्रणाम ।
हम रहे देखते खड़े खड़े
आंखोंमें लेकर अश्रु नीर ।
फिर भी यमुना तटपर हमको,
तुम छोड़ चले कितना अधीर ।
भस्म हुआ है आज तुम्हारा,
हे विश्ववन्द्य ! भौतिक शरीर।
पर पा सकता है जगत तुम्हें
भारतके जनका हृदय चीर ।
होगा फिर अवतार तुम्हारा,
आर्यभूमिपर नयनाभिराम ।
हे दिव्यश्लोक ! हे दिव्यधाम !
बापू ! लो जन जनका प्रणाम ।
जीवन भर सत्य अहिंसाके
उपदेश दिये तुमने अनन्त ।
किन्तु अन्तमें हिंसाके ही
तुम लक्ष्य हुए हा हन्त ! हन्त!!
भारतके मानस मन्दिरमें
तुम बने रहो साकेत सन्त
सत्य-अहिंसाके प्रकाशसे
ज्योतिर्मय होगा दिग्दिगन्त ।
अन्धकारमें दिखलायेगा,
नित नूतन पथ नव ज्योतिग्राम ।
हे दिव्यश्लोक ! हे दिव्यधाम !!
बापू ! लो जन जनका प्रणाम ।

—बालकृष्ण पाण्डेय ।

जय हे भारत भाग्य विधाता

तीस जनवरी रक्त उछलकर मानव मुंह पर आया
दानवता खिल उठी,हिल उठी अति मानवकी काया
पांच बजे बुझ गया अचानक राष्ट्रदीप, आंधीका—
वेग हुआ कुछ शांत, सुन पड़ा-अन्त हुआ गांधीका
धरा हो गयी लाल, रक्त चन्दन जन-जनने धारा
तुम तो अमर हो गये बापू, अमर हुआ हत्यारा
स्वर्ग हंसा, चल पड़ा मर्त्य वह मृत्युंजय अभिमानी
धन्य हुआ गो लोक, मिल गई देवोंको भी वाणी
बस मुट्ठी भर हाड़चामके ओ दधीचि, बलदाता
जरा-मरण भव-बन्ध-भीतिसे मुक्त, सत्य, जगत्राता
नित प्रलंब आजानु बाहु वरदान लुटाते अक्षय
तुम सोये पर जाग रहा यह मन्त्र तुम्हारा निर्भय-
नहीं अहिंसा शक्ति हीनता, नहीं क्षमा कायरता
धर्म नहीं है द्वेष, प्रेम ही चिर दिन सत्य, अमरता
अनासक्त, निष्काम कर्म, गीता-वाणी कल्याणी
युग युग पंथ अमर यह होगा, ओ युगके पथ दानी
आज तुम्हारा मरण देखकर जीवन भी सकुचाया
आज देशके कोटि-कोटि कण्ठोंमें जय लहराया
शान्ति-सदन, ओ क्रांति विधायक, शिर दानी निर्माता
जन गन मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य-विधाता

—सर्वदानन्द बर्मा

आज देवता रोये....

आज देवता रोये, शवपर आंसू झरकर फूल बने
विधि-विधान था यही, भला यह कैसे कोई माने
अरे, करमका लिखा यहां कोई बिरला ही जाने
जिस सत्ताका दीप दर्पसे दीप्त यहां जलता था
बापूके प्रकाशमें निष्प्रभ झिलमिल-सा बलता था
बलिपथके पन्थी बढ़ते हैं, आज फूल ही शूल बने
आज देवता रोये, शवपर आंसू झरकर फूल बने
आज अहिंसामें हिंसाका अंकुर फूट पड़ा है
या अपना ही दर्पन अपने पगमें टूट गड़ा है
क्या सम्भव है, इस अंकुरका फल कोई देखेगा
बीज लगाने वालोंकी आंखोंमें जल देखेगा
स्वप्न भङ्ग हो गया देव वह, कब हिंसा निर्मूल बने
आज देवता रोये, शवपर आंसू झरकर फूल बने

—चन्द्रमुखी 'सुधा'

तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ।।

विश्वमित्र

फैसला क्या करेगा !

काश्मीरके भाग्यका फैसला, जिसे फैसला कहा जा सके, वर्तमान संयुक्त राष्ट्रसंघ नहीं कर सकता। न्याय वह कर सकता है जिसमें न्यायकी मर्यादाकी रक्षाके लिये आवश्यकता पड़ने पर स्वयं अपने ऊपर आघात करनेका साहस होता है। माया और मोहके गोरख धंधे में फंसे व्यक्ति,समाज और राष्ट्र या उसके प्रतिनिधि यदि न्याय कर सकते तो आज की दुनियाका ढांचा कुछ और ही होता। सिक्यूरिटी कौंसिलमें काश्मीरके मामले में वही हुआ जिस बातकी हमें आशंका थी। गतिरोधकी स्थिति उत्पन्न हो गयी है और फलतः भारतीय प्रतिनिधि मण्डलके सदस्योंको आगेका मार्ग स्थिर करनेके लिये विचार परामर्श करनेको भारत वापस बुला लेना आवश्यक समझा गया।

सिक्यूरिटी कौन्सिल गत छै सप्ताह से काश्मीरके मामले पर जिस ढङ्गसे विचार कर रही है वह भारतीय प्रतिनिधि नेता श्री गोपाल स्वामी आयंगरके शब्दों में घोड़ेके सामने गाड़ीको रखना है। समझौतेके रास्तेमें जान बूझकर जबर्दस्त रोड़ा रख दिया गया है और उसे हटानेका उत्तरदायित्व अब भारतके कंधे पर रखा जा रहा है। जैसा हम गताङ्कमें कह चुके हैं संयुक्त राष्ट्र संघके कर्त्ता धर्त्ता राष्ट्र अपने भविष्यको दृष्टिगत रखकर इस मामले पर विचार कर रहे हैं। काश्मीरकी समस्या सुलझे या न सुलझे उनके सामने गौण प्रश्न है। भारत की साधुता या न्याय प्रियताका बेजा फायदा उठाकर पावर पालिटिक्स खेलने वाले राष्ट्रोंने जान बूझकर ऐसा रास्ता अख्तियार किया है कि काश्मीरके बहाने भारत और पाकिस्तानके बीचमें कटुता और वैमनस्य बढ़ता जाय एवं इस तरह दोनों राष्ट्रोंको अपने प्रभावमें रखा जा सके। साम्राज्य विस्तार साधुताके बल पर तो हो नहीं सकता। सिक्यूरिटी कौन्सिलने अपने जन्म काल से ही ऐसा रास्ता पकड़ा है कि संकटमें फंसे उसके सदस्योंको जहां तक हो ऐसे दलदलमें फंसा दिया जाये कि उनकी कृपाके बिना वे कभी उबर न सकें। हम जैसा ऊपर कह आये हैं भारतकी साधुताका उसे यह दण्ड मिल रहा है। भारत यदि चाहता तो आत्म रक्षाके लिये वह अकेले ही आततायियों, लुटेरों और उनके सहायकोंसे समझ बूझ ले सकता था। यही उसने नहीं किया और उसकी इसी 'भूल' से जहां तक सम्भव हो नाजायज फायदा उठा लेनेके लिये संयुक्त राष्ट्र संघ प्रकारान्तरसे पाकिस्तानका ही समर्थन कर रहा है। इसीलिये काश्मीरमें युद्ध बन्द होनेके मुख्य प्रश्नको गौण करके पाकिस्तान और हिन्दुस्तानका पचड़ा सामने लाकर खड़ा कर दिया गया है।

काश्मीरके मामलेमें पाकिस्तानने अपना उत्तरदायित्व स्वीकार नहीं किया और उसके प्रति लगाये गये अभियोगोंकी सफाई देते हुए उसने यह कहा है कि काश्मीरकी लड़ाईमें पाकिस्तानका कोई हाथ नहीं है। यह लड़ाई तो काश्मीर वाले ही वहां की वर्तमान सरकारके खिलाफ लड़ रहे हैं। यदि पाकिस्तानके इस वक्तव्यको मान लिया जाये तो शेख-अब्दुल्लाका यह कहना बिलकुल सही है कि "काश्मीरके झगड़ेमें मैं पाकिस्तानको एक फरीक माननेको तैयार नहीं हूं क्योंकि काश्मीर पर चढ़ाईकी कोई जिम्मेदारी वे स्वीकार नहीं करते।" गौरख धंधा तो यह है कि काश्मीरकी मौजूदा स्थितिके लिये किसी हालतमें पाकिस्तान अपनेको जिम्मेदार नहीं मानता पर काश्मीरको पानेके लिये वह उतावला है और सिक्यूरिटी कौन्सिलने उसके इस उतावलेपनको रोकनेके बजाय जहां तक सम्भव था बढ़ा दिया है। इसीलिये काश्मीरियोंके मान सम्पत्ति और जीवन की बर्बादी करने वाले युद्धको रोकना जिसका पहला कर्त्तव्य होना चाहिये था उसने उस रास्ते को छोड़कर काश्मीरके सदियों पुराने इतिहासका अध्ययन करके संघर्षका कारण पहले खोज निकालना आवश्यक समझा और भारतकी इस उचित मांगकी सर्वथा उपेक्षा की कि "सिक्यूरिटी कौन्सिल पहले पाकिस्तान को यह आदेश करे कि तथा-कथित आक्रमणकारियोंको रास्ता, रसद,शस्त्रास्त्र और शरण देना बन्द किया जाये।" किन्तु अन्याय पर तुले हुए विचारकोंको न्यायसे क्या वास्ता ?हम शेख अब्दुल्लाके इस मतसे पूर्णतया सहमत हैं और इसके पूर्व काश्मीरकी समस्या पर प्रकाश डालते हुए यह कह चुके हैं कि सिक्यूरिटी कौंसिल नहीं हमारी शक्ति काश्मीरके भाग्यका फैसला करेगी। सिक्यूरिटी कौन्सिलके सामने काश्मीरके प्रश्नको उपस्थित करना तो मात्र एक साधन था, लक्ष्य तक पहुंचनेका। अन्तमें तो हमारे लक्ष्य और उद्देश्यकी पूर्ति हमारी अपनी ताकतसे ही होगी, संयुक्त राष्ट्र संघके फैसलेसे नहीं।"

हमारी आर्थिक नीति—

देशके मुख्य मुख्य उद्योग धन्धोंके राष्ट्रीयकरणका सिद्धान्त मूलतः कांग्रेसने करांची कांग्रेसमें स्वीकार किया था और तबसे वह बराबर अपनी इस नीतिका स्पष्टी करण करती रही है। जब आज देशके शासनकी बागडोर कांग्रेसके हाथमें आयी है तो उससे राष्ट्रीयकरणकी दिशामें कदम उठानेकी आशा करना स्वाभाविक ही है। उस दिन भारतीय पार्लमेण्टमें, देश समाजवादी अर्थनीति ग्रहण करे इस आशयके काजी करीमुद्दीनके प्रस्ताव पर बोलते हुए प्रधान मन्त्री पण्डित नेहरू ने सरकारकी आर्थिक नीति पर प्रकाश डाला है। कुछ दिन पूर्व आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीकी आर्थिक योजना उपसमितिने—जिसके अध्यक्ष स्वयं पण्डित जी थे—देशके मौलिक उद्योग धन्धोंको समाजके नियन्त्रणमें लानेकी जो सिफारिश कांग्रेसके सामने पेश की है निहित स्वार्थों के बीचमें उसकी अच्छी प्रतिक्रिया नहीं हुई। उस दिन जब पार्लामेण्टमें सितम्बर १९४८ के बाद रिजर्व बैङ्कके राष्ट्रीय करणकी घोषणा की गयी तो

निहित स्वार्थ इसका भी स्वागत नहीं कर सके। अतः यह आवश्यक हो गया कि भारत सरकार इस सम्बन्धमें अपनी नीति स्पष्ट करे। कुछ दिन पहले दिल्लीमें हुए उद्योग सम्मेलनमें जो तीन साला औद्योगिक युद्ध-विराम-समझौता हुआ था उसीसे यह स्पष्ट हो गया था कि सरकार इस समय ऐसा कोई काम नहीं करना चाहती कि देशके उद्योगपति और पूंजीपति खुल्लमखुल्ला उसके सामने कमर कसकर खड़े हो जायं। देशके सामने आज पहली समस्या यह है कि जिस तरह हो उत्पादन बढ़ाया जाये और इसके लिये आवश्यक है कि उत्पादनकार्यमें लगी शक्तियां सम्मिलित रहें। यद्यपि दिल्लीमें हुआ युद्ध विराम-समझौता उद्योग पतियोंको आश्वासन देनेके लियेही किया गया था किन्तु इस वर्गने इसे पर्याप्त नहीं समझा। शायद इसी लिये उक्त प्रस्ताव पर बोलते हुए पण्डित नेहरूको और स्पष्ट शब्दोंमें यह आश्वासन देनेकी आवश्यकता प्रतीत हुई कि "फिल हाल मौजूदा उद्योग धन्धोंके राष्ट्रीयकरणमें—जिनका राष्ट्रीयकरण नितांत आवश्यक है उनके सिवा—हम अपनी शक्ति और साधन नष्ट नहीं करना चाहते। बल्कि हम अपने साधन कतिपय नये उद्योगधन्धोंके निर्माणमें लगायेंगे।" यह कहते समय पण्डितजी इस बातको भूले नहीं कि रक्षा सम्बन्धी तथा मुख्य उद्योगधन्धोंके राष्ट्रीयकरणका सिद्धान्त कांग्रेस स्वीकार कर चुकी है, इसीसे उन्होंने उक्त घोषणा करते समय यह भी कहा कि और मेरा विश्वास है कि कभी न कभी इन उद्योग धन्धोंका राष्ट्रीयकरण तो होगा ही" किन्तु आज देशकी स्थितिको देखते हुए पूंजीवादके साथ नेहरू सरकारको यह समझौता करनेको बाध्य होना पड़ा कि हम तुम्हारी मौजूदा स्थितिमें किसी प्रकारका हस्तक्षेप नहीं करना चाहते। नेहरू सरकारके भीतर प्रतिगामी दलों और निहित स्वार्थोंके प्रतिनिधि जिस परिमाणमें भरे हैं उसे देखते हुए झुकनेके सिवा दूसरा मार्ग नहीं था।

रेलवे बजट—

डा० जान मथाईको इस बातसे प्रसन्नता है कि चालू सालमें वे प्रायः ६ करोड़की बचत कर सकेंगे। किन्तु उन्होंने शायद इस बातपर विचार भी न किया होगा कि दर असल बचतका श्रेय उनके विभागकी योग्यताको नहीं है बल्कि रेलसे यात्रा करनेवालोंकी मजबूरियोंसे नाजायज फायदा उठानेका यह परिणाम है। यह बचत सैलूनोंमे चलने वाले रेलवे अधिकारियोंसे लेकर रेलकी नौकरी करके महल खड़े कर लेने वाले साधारण कोटिके कर्मचारियोंकी कार्यकुशलता और सुव्यवस्थासे यदि की गयी होती तब भी हम उनको बधाई दे सकते थे। किन्तु यह बचत हमारे माननीय मन्त्री इसलिये दिखा सके हैं कि लाखों यात्री गठरियोंकी तरह लदकर रेलयात्रा करते हैं और प्रतिवर्ष हजारों यात्री अपनी मजबूरीसे रेलवे सुप्रबन्ध और सुव्यवस्थाके कारण सदाके लिये मुक्त होकर परम धाम सिधार जाते हैं। तब भला हम उन्हें इच्छा रहते हुए भी बधाई दें तो कैसे दें? किन्तु आजकी अर्थ व्यवस्था तो लाख लाख भारतीयोंकी जानकी तुलनामें बेजा मुनाफाको ही अपना धर्म समझती हैं और तब रेलवे द्वारा होन वाले इस बेजा मुनाफाके लिये अपने कर्मचारियोंकी डा० जानमथाईने यदि भूरि भूरि प्रशंसा की है तो इसमें आश्चर्य क्या? रेलवे मिनिस्टरने १९४८-४९ में १९० करोड़ आय और १४१करोड़ ७५ लाख खर्च दिखाया है। प्रायः ११करोड़ रुपये मूल्य ह्रास और दूसरोंके लिये लाइनोंपर कराये गये कामके दाम चुकानेके कारण बट्टे खाते चले जायंगे। इस तरह कुल आमदनी ३२ करोड़ ४० लाख होगी जिसमेंसे २२ करोड़ ५३ लाख सरकारको व्याजके रूपमें चले जायंगे। इस तरह १९४८-४९ में ९ करोड़ ८७ लाखकी बचत होगी। लेकिन जब हम देखते हैं कि विभाजनके फलस्वरूप इस वर्षके आरम्भमें माल और मुसाफिरसे होनेवाली आमदनीके साथ साथ खर्च भी घट गया है फिर भी रिजर्व फण्डसे अच्छी रकम निकालनी पड़ी है तब दिखायी गयी यह बचत क्या मात्र वाक्जाल नहीं है?

वर्णहीन राष्ट्र—

हमारे देशमें आर्थिक राजनीतिक और सामाजिक असमानताको बनाये रखनेमें समाजके बहुतसे ऐसे संकीर्ण रूप हैं जो प्रकारान्तर और प्रत्यक्ष दोनों तरह परम सहायक हो रहे हैं। इसलिये इस संसारको मानवकी दृष्टिसे सुख शांतिमय बनानेके लिये, जिसमें दुख दैन्य कलह अशान्ति, अभाव और आवश्यकताएं मिट जायें प्रत्येक देशके समाजका सङ्गठन आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक समानताके आधार पर करना नितांत आवश्यक है। इस समानताके मार्गमें बाधक प्रथाओं और रीति रिवाजोंको बिदा करना होगा। भारतीय पार्लमेण्टमें इसी उद्देश्यसे श्री आर० आर दिवाकरने एक प्रस्ताव उपस्थित किया था। इस प्रस्तावमें यह मांग पेश की गयी थी कि 'सरकारी नौकरीमें किसी जाति, उपजाति पन्थ अथवा धर्मका विचार न किया जाये और भविष्यमें किसी सरकारी आवेदन पत्र या सरकारी रजिस्टरमें जाति, उपजाति अथवा पन्थ और धर्मका उल्लेख या दाखिला न किया जाये।" प्रस्तावक महोदयके उद्देश्यसे कोई भी प्रगतिशील व्यक्ति असहमत होही नहीं सकता। शासन सरकारी नौकरियां और अन्य क्षेत्रोंमें जाति, धर्म; सम्प्रदायका भेदभाव मिट जाना चाहिये। हमारे देशकी सरकार भी यही वांछनीय समझती है, यह बात उसके एक मन्त्री श्री गडगिलके इस वक्तव्यसे स्पष्ट है कि '१५ अगस्तके बाद मैं समझता हूं एक जाति और एक धर्मका यह देश हो जाना चाहिये और वह एक जाति भारतीयकी हो और एक धर्म मानवताका हो।' लेकिन रास्ता इतना सहज नहीं है, जितना हम समझते हैं। सरकारके सामने बिदेशी सरकार जो विरा-

सत छोड़ गयी है, अल्पसंख्यकोंके साथ इनसाफ करनेके नाम पर जो अलगाव और पार्थक्य; भेदभाव खड़ा कर गयी ह उसे चुटकी बजाते मिटाया नहीं जा सकता। देशके स्वतन्त्रता आन्दोलनके उग्ररूप पकड़तेही पिछले २५ वर्षोंके ब्रिटिश शासनके अन्तर्गत देशको शतधा विच्छिन्न कर डाला गया। इस तरहकी मिली हुई विरासत पर प्रस्तावके अनुसार एक बारगी कुछ कर डालना व्यावहारिक नहीं है पर सरकारका लक्ष्य वही है। उसने इस दिशामें कदम भी उठा लिया है। श्री गाडगिलका यह कहना सत्य है कि "समय और मनुष्य मिल कर जो कठिनाइयां और उलझनें एकके बाद एक बढ़ाते चले गये हैं उनको एक बारगी साफ नहीं किया जा सकता। हमें हंसते हंसते इन कठिनाइयोंको पार करना होगा। जबतक हमारे पुराने संस्कार बने हैं और डाल दी गयी आदतके मुताबिक जबतक हम चलते रहेंगे जबतक संगठित निहित स्वार्थ हमारे सामने डटे हैं इन भेदभावोंको एक बारगी मिटाना कठिन है। हमें नया दृष्टिकोण बनाना होगा, नया विचार आदर्श सामने खड़ा करना होगा। इस सबमें कुछ समय लगेगा। जबतक हम लोगोंकी आदतें और विचार नहीं बदल देंगे तबतक ये विभेद मिटाये नहीं जा सकते।" हम श्री गडगिलकी इस बातसे सहमत हैं किन्तु साथही यह कहना चाहते हैं कि आदतें और बिचार बदलवानेका काम यदि समय पर ही छोड़ दिया जायेगा तो उनके परिकल्पित वर्णहीन राष्ट्रका दिन तो शायद ही आये क्योंकि वे स्वयं समझते हैं कि निहित स्वार्थ अपनी पूरी मोर्चेबन्दी कर चुके हैं, और तब भला हंसते हंसते सरकारको वे इतनी बड़ी क्रांति करनेका अवसर कब दे सकते हैं? हम चाहते हैं कि हमारी सरकार जैसे मन्दिर प्रवेश एवं अन्य सामाजिक कुरीतियोंके मिटाने में साहससे काम कर रही है वैसा ही साहस वह सांप्रदायिकता और संकीर्णताको प्रश्रय देनेवाली बातोंको मिटानेमें भी दिखाये क्यों कि पूंजीवादके इस गढ़के ढहानेका काम यदि समय पर छोड़ दिया जायेगा तो "एक जाति और एक धर्म" का आदर्श स्वप्नही रह जायेगा।

तटस्थ कौन?

लोकतंत्रपर विश्वास रखने वाला कोई व्यक्ति या दल जनमतकी उपेक्षा नहीं कर सकता और देशके किसी प्रश्नपर मतभेद उपस्थित होनेपर जनताके निर्णयको अन्तिम निर्णय माननेको वाध्य है। भारतके प्रधानमंत्री पंडित नेहरूने पहले ही यह घोषणा की थी कि काश्मीरके प्रश्नपर हम जनमत संग्रहके लिये तैयार हैं और काश्मीर अपनी जनताके फैसलेको माननेको तैयार है। पर दाल भातमें मूसल चन्द की तरह पाकिस्तान कहांसे बीचमें आ टपकता है? हम क्या करते हैं क्या नहीं इसकी छानबीन करने वाला पाकिस्तान कौन? काश्मीर भारतका अंग है। जब तक वहांकी जनता इसके विरुद्ध फैसला नहीं दे देगी तबतक उसकी रक्षाका वैधानिक और नैतिक दोनो दृष्टियोंसे उत्तरदायित्व भारतपर है। शेख अब्दुल्लने ठीक ही कहा है कि काश्मीरमें 'निष्पक्ष सरकारकी मांग अजीब और हैरत पैदा करने वाली है। क्या अमेरिकामें नये राष्ट्रपतिके चुनावके वक्त प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन अपने पदसे हट जायंगे? या प्रीमियर एटली ब्रिटेनमें साधारण चुनावके समय अपनी सरकार भग कर देंगे? बहरहाल वह तटस्थ व्यक्ति कौन है और कहांसे आयेगा? ऐसा कौन आदमी है जिसका झुकाव किसी न किसी तरफ न हो। तब तटस्थ सरकार कोई अर्थ नहीं रखती। महाशक्तियोंकी तटस्थता का नमूना तो देखा ही जा चुका है। जिस सिक्यूरिटी कौंसिलने यूनानकी आजाद सरकारका अस्तित्व तक स्वीकार करनेसे इनकार किया उसीके सदस्य आज कहते हैं कि इस तरहके उपाय काममें लाये जाने चाहिये जिनसे आक्रमण कारियोंको यकीन हो जाये कि जिस उद्देश्यके लिये उन्होंने हथियार उठाया है उसका सम्यक समाधान होगा। क्या इस प्रकारकी बातें कह कर प्रकारान्तरसे काश्मीरके लुटेरोंकी स्थितिपर अन्तर्राष्ट्रीय छाप नहीं लगायी गयी? जिस सिक्यूरिटीकौंसिलने यूनानकी जेनरल मारकोसकी सरकारको बलवाइयोंकी गैर कानूनी सरकार करार दे दिया उसीके सदस्य जब आजाद काश्मीर सरकारकी पीठ ठोंकते हैं तब किसे तटस्थ माना जाये और क्यों माना जाये? सिक्यूरिटी कौंसिलसे लौट आनेके बाद शेख अब्दुल्लाने बड़ी दृढ़ताके साथ काश्मीरके प्रश्नपर प्रकाश डालते हुए यह घोषणा की है कि काश्मीरमें शान्ति स्थापित होते ही मि० जिन्ना चाहें तो खुद आकर देख लें कि उनकी मौजूदगीमें भी एक नहींदसदस बारजनमत गणनासेभी हम हीं जीतेंगे। शेखअब्दुल्लाका यह कहना बिलकुल सही है कि 'हम अगर मजबूत रहेंगें तो काश्मीर स्वतंत्र ही नही भारतका अङ्ग भी रहेगा, लेकिन यदि हम कमजोर होंगे तो संयुक्त राष्ट्र संघका अनुकूल फैसला भी हमारे किसी काम नहीं आ सकता। दर असल सिक्यूरिटी कौंसिलका फैसला तो हमारी मजबूती और कमजोरीपर निर्भर है।"

सोशलिस्टोंकी सफलता—

इस बारका बम्बई म्यूनिसिपल चुनाव अनेक दृष्टियोंसे महत्वपूर्ण कहा जायेगा। चुनावमें पहली बार सोशलिस्ट कांग्रेसके मुकाबले खड़े हुए। १०६ सीटोंमें कांग्रेसने ९५ और सोशलिस्ट पार्टीने ५० उम्मीदवार खड़े किये। कांग्रेसको ४९ और सोशलिस्टोंको २४ सीटें मिलीं। मुस्लिम लीगको ९ शिडयूल कास्ट फेडरेशन और स्वतंत्र रूपसे खड़े होने वालोंको सात सात कम्यूनिस्टोंको पांच और नागरिक चुनावसंघको तीन सीटें मिलीं। कांग्रेस नेता श्री पाटिल सोशलिस्ट नेता श्री अशोक मेहता और कम्यूनिस्ट नेता श्री मीराजकरके नाम निर्वाचितोंमें और बम्बईके वर्तमान मेयर श्री सूबावाला तथा जमानेसे कारपोरेशन

(शेष ९ वें पृष्ठ पर)

यत्रतत्र

अब नेहरूकी बारी—

दिल्ली, बम्बई और पूनामें इस आशयके पोस्टर दीवालों पर चस्पां दिखायी पड़े हैं कि "गांधी खतम हो गया अब नेहरूकी बारी है।" इस दुस्साहसके पीछे क्या हमारे बड़े बड़े कांग्रेस नेताओं उच्च पदस्थ अधिकारियों और सरकारी कर्मचारियोंकी साम्प्रदायिक मनोभावनाके प्रति सहानुभूति और सहृदयता काम नहीं कर रही है? इतना बड़ा बलिदान दे चुकनेके बाद भी अधिकार प्रियताकी भूख अभी नहीं मिटी। अभी हिन्दू राज्यका जिसका अर्थ है जनताका शोषण करने वाले वर्गका राज्य स्पप्न नहीं मिटा और एक बड़े रोड़ाके दूर हो जाने पर भी दूसरा रोड़ा नेहरूजीके रूपमें बना है। इस रोड़ेको हटाना ही पड़ेगा, तभी तो इन दुर्वृत्तोंकी दुराकांक्षा खुल कर खेल सकेगी? हम जानना चाहते हैं कबतक इस दुर्वृत्तताको प्रश्रय दिया जाता रहेगा?

कस्तूर बा दिवस

गत २२ फरवरीको कस्तूर बा गांधीका चौथा निधन दिवस था। भारतीय स्त्रियोंके लिये कस्तूर बा का जीवन आदर्श था। वे आदर्श पत्नी थीं। उन्होंने इस तत्व और मर्मको समझा था कि नारीका पूर्ण विकास पुरुषके साथ निष्ठा और निश्छल सहयोगमें ही है। आजीवन उन्होंने इस तत्वको कार्यमें परिणत करने का सफल प्रयास किया। उनकी इस सेवा परायणता और समर्पण भावने ही उनको अयाचित रूपमें राष्ट्रमाताके उच्च और गौरवशाली स्थानपर बठाया। क्या शील और लज्जाको पुराना संस्कार समझ त्याग करनेवाली, पश्चिमी तितली बनकर फुदकने वाली भारतीय नारियां राष्ट्रमाता कस्तूर बा के आदर्श-जीवनसे सबक लेंगी?

वालेस और ट्रूमैन—

अमेरिकाकी पार्लमेण्टके उपनिर्वाचन में अमेरिकन लेबर पार्टीके उम्मेदवार लियो इजाकसनकी विजयको राष्ट्रपतिके बताया जा रहा है। इजाकसनके मुकाबले तीन उम्मेदवार खड़े हुए थे पर इजाकसन को जितने बोट मिले उतने तीनों मिलकर भी नहीं पा सके। मि० इजाकसनने स्वयं कहा कि यह मि० वालेस और तीसरी पार्टी—जनताकी पार्टी—की विजय है। इस विजयसे आगामी नवम्बरमें होनेवाले चुनावमें प्रेसिडेन्ट ट्रूमैनकी सफलतामें शङ्का प्रकट की जाने लगी है। अमेरिका की तमाम प्रगतिशील शक्तियां और यहूदी मि० वालेसका समर्थन कर रहे हैं। प्रेसिडेण्ट ट्रूमैनकी नीति अमेरिकाको अर्थ सङ्कट और युद्धकी ओर आगे बढ़ा रही है। मि० वालेसके समर्थक कहते हैं कि आज राष्ट्रको विनाशके पथसे हटा कर प्रगतिके पथ पर तभी लाया जा सकता है जब वर्तमान आर्थिक और वैदेशिक नीतिमें क्रांतिकारी परिवर्तन होगा और इसके लिये आवश्यक है कि देशमें पूंजीवादको प्रोत्साहन देने वाले एवं विदेशमें रूसका विरोध करने वाले मार्गका बहिष्कार किया जाये। अतः प्रगतिके समर्थक अगले चुनावमें ट्रूमैनके मुकाबले वालेसका समर्थन करेंगे और यह संघर्ष रूजवेल्ट-वेण्डेलबिल्की संघर्षसे भी अधिक विकट और युगान्तरकारी संघर्ष होगा, इसमें सन्देह नहीं है।

दक्षिणी रियासतें

प्रत्येक अञ्चलकी छोटी छोटी रियासतें संघबद्ध होकर शासन और व्यवस्था की दृष्टिसे अपने निकटस्थ प्रान्तोंमें मिलती जा रही हैं। इस प्रकारकी कितनी ही रियासतें उड़ीसा और मध्यप्रांतमें मिल चुकी हैं एवं काठियावाड़की प्रायः ४४० रियासतें नवानगरके जामसाहबके नायकत्वमें एक संघसूत्रमें बंध गयी है और समूचे सम्मिलित प्रदेशका नाम सौराष्ट्र रखा गया है। राजपूतानाके छोटे छोटे राज्योंको बड़े राज्योंमें मिला देनेकी योजनापर विचार हो रहा है। मध्यभारत की रियासतोंको एक संघमें मिलानेकी योजना भी बन रही है। ग्वालियर, इन्दौर और झबुआके प्रतिनिधि मध्य भारतकी अन्य रियासतोंसे बातचीत कर रहे हैं और बुन्देलखण्डकी रियासतोंको छोड़ इन सबका एक संघशासनसूत्रमें बंध जाना दक्षिणकी रियासतोंके शासक भी, कोल्हापुर और दो या तीन छोटी रियासतोंको छोड़, बम्बई प्रान्तके प्रधान मन्त्रीसे मिले और विचार विनिमयके बाद इन लोगोंने अपने अन्तर्गत प्रदेशोंको बम्बई प्रान्तमें शामिल कर देनेके घोषणापत्रपर हस्ताक्षर कर दिये। बम्बई प्रान्तमें शामिल होनेवाली इन पन्द्रहों दक्षिणी रियासतोंने भारत सरकारको पूरी सत्ता, अधिकार और शक्ति समर्पित कर दी है। अपने अपने राज्यका शासन भार भी शासकोंने भारत सरकारको हस्तान्तरित कर दिया है। उक्त समझौतेमें सम्मिलित रियासतोंके नाम ये हैं: अक्कलकोट, औंध, भोर, अमखण्डी, आथ, कुसण्ड, वाड (बड़े छोटे दोनों) फलता, मुधोल, मीरा दोनों, राम दुर्ग, सांगली सबनूर और वाडी।

कोल्हापुर, अञ्जीरा और सावन्त वाडी रियासतें नहीं शामिल हुईं।

पश्चिम बंगालका बजट

गत सप्ताह पश्चिम बङ्गालकी व्यवस्थापिका परिषदमें अर्थसचिव श्री नलिनी रञ्जन सरकारने १९४८-४९ सालका बजट पेश करते हुए यह आश्वासन दिया है कि यद्यपि बजट में एक करोड़का घाटा है किन्तु सामने उपस्थित संभव-साधनोंसे यदि तत्काल उचित ढङ्गसे काम लिया जाये तो भविष्य आशा जनक है, यह निस्संदेह कहा जा सकता है कि बजटमें ३१ करोड़की आय और ३२ करोड़का खर्च दिखाया गया है। सवाल है संभव साधनोंका योग्य संचालन। आप कहते हैं कि बजटमें उल्लिखित योजनाओंको यदि हम सफलता पूर्वक कार्यमें परिणत कर सकें तो प्रांत की उन्नति और विकास सुनिश्चित है। आपने यह आश्वासन भी दिया है कि ऐसी किसी नीतिको प्रोत्साहन न दिया जायगा जिसके फलस्वरूप सम्पत्ति कुछ थोड़ेसे भाग्यवानोंके हाथोंमें संचित हो और इस तरह धनी अधिक धनी और गरीब अधिक गरीब हो। इसके लिये जनसाधारणके रहन सहनका स्तर ऊपर उठाना होगा। बजटमें शिक्षा स्वास्थ्य और कृषिकी उन्नतिके लिये अपेक्षाकृत

अधिक व्यवस्थाकी गयी है। जमीन्दारी प्रथा तोड़नेके लिये योजना तैयार करने की व्यवस्था भी की गयी है। आवपाशी और कृषिके लिये पहलेसे अधिक रकम रखी गयी है। कहते हैं कि यह बजट साधारण जनकी आवश्यकताका ध्यान रख-करतैयार किया गया है। यह तो समय ही बतायेगा कि इसमें कहां तक तथ्य है।

एशिया युवक सम्मेलन

कम्यूनिस्टों द्वारा आयोजित दक्षिणपूर्व एशिया युवक सम्मेलनका अधिवेशन गत सप्ताह वृहस्पतिवारको कलकत्तेमें आरम्भ हुआ। कलकत्तेके मेयरने सम्मेलनका उद्घाटन किया प्रधान मन्त्री पण्डित नेहरूके इस संदेशके साथ कि "मैं आशा करता हूं दक्षिण पूर्व एशियाके युवक एक दूसरेके निकटसे निकट सम्पर्कमें आयेंगे और इस तरह एशियामें लोकतन्त्रीय स्वतन्त्रताका विस्तार करनेमें सहायक होंगे।

अधिवेशन सात दिन तक होगा। दक्षिण पूर्व एशियाके प्रतिनिधियोंके सिवा दर्शकके रूपमें जुगोस्लाविया, कनाडा, फ्रांस आस्ट्रेलिया और रूसके प्रतिनिधि भी आये हैं। आरम्भमें दो प्रस्ताव पास हुए। एकमें गांधीजीको और दूसरेमें स्वतंत्रता के लिये शहीद होने वाले युवकोंकी स्मृतिमें श्रद्धा प्रकट की गयी।

सम्मेलनके दूसरे दिन सोवियट प्रतिनिधिने स्थायी स्वतन्त्रता और सुखद भविष्यके लिये लड़ने वाले सभी देशों के प्रगतिशील युवकोंका समर्थन करने का वचन दिया।

नैपालमें वैधानिक सुधार—

इसप्रगति और विज्ञानके युगमें कोई राज्य सदियों पुराना शासन प्रणालीपर नहीं चलसकती इसे सम्बन्धित वर्ग जितना शीघ्र समझलें अच्छा है। नेपाल प्रगतिकी दृष्टिसे अंधकारका गढ़ अबतक अभेद्य रहा है। किन्तु संसारमें फैले हुए प्रकाशकी छिटफुट किरणें यत्रतत्र नेपालमें भी पहुंच ने लगी और उसीका परिणाम है कि प्रधान मंत्री पद्मशम शेर बहादुर राणाने वहां कुछ वैधानिक सुधारों की घोषणाकी है। इनको पर्याप्त तो किसी हालतमें नहीं कहा जा सकता किन्तु इस शुमारेके लिये राणा बधाईके पात्र हैं। जो वैधानिक सुधार घोषित किये गये हैं उनकी रूपरेखा इस प्रकार हैं

(१) मौलिक अधिकारोंकी स्विकृति जिनमें बोलने या करने, धर्म तथा प्रेस आदिकी स्वतंत्रता शामिल है। २) वयस्क मताधिकार (३) पंचायतोंकी स्थापना ४) निर्वाचित एवं नामज सदस्यों द्वारा बनेहुए केन्द्रमें दो सभा वाली व्यवस्थापिका सभा (५) मंत्री मडलमें निर्वाचित सदस्य भी रहेंगे(६) प्राचीन हिन्दू पंचायत प्रणाली के आधारपर स्वतंत्र न्यायालय ७) शासन सम्बधी समितियोंका निर्माण, ८ पब्लिक सर्विस कमीशनकी स्थापना।

घोषणाके अवसरपर ७ राजबंदियोंको मुक्त किया गया।

बापूको पाकिस्तानकी श्रद्धांजलि

पाकिस्तान पार्लमेण्टका पहला अधिवेशन मि० जिन्नाकी अध्यक्षतामें गत सप्ताह २३ फरवरीसे आरम्भ हुआ। शपथ ग्रहण कार्य समाप्त होनेके बाद महात्मा गांधीकी मृत्युपर शोक प्रकट किया गया और परिषद् के नेता प्रधान मन्त्री मि० लियाकत अली खांने प्रेसिडेण्टसे अनुरोध किया कि वे समवेदना और गम्भीर शोक का सन्देश भारतके निवासियोंको तथा गांधीजीके परिवारको भेजें। मि० जिन्ना ने कहा कि इस महान पुरुषके सम्मानमें जो कुछ श्रद्धांजलिके रूपमें कहा गया है उसके साथ मैं पूर्ण सहमत हूं। वे अपने कर्त्तव्यका पालन करनेमें मरे। उनकी मर्मान्तक मृत्यु उसपर हम कितना ही खेद प्रकट करें या निन्दा करें निस्सन्देह महान् मृत्यु है क्योंकि वे अपना कर्तव्य करते हुए मरे।"

———

(७ वें पृष्ठका शेषांश)

के होते चले आने वाले सदस्य श्री जमना दास मेहताके नाम पराजितोंमें उल्लेखनीय हैं। पहली बार इस वर्ष वालिग मताधिकारके आधार पर चुनाव हुआ फलस्वरूप वोटरोंकी संख्या पहलेकी २ लाख ६७ हजार के मुकाबले इस बार ९ लाख ५० हजार थी। चुनावमें कांग्रेस और सोशलिस्टोंकी सफलता अनुपातकी दृष्टिसे प्रायः बराबर हैं। पाटिल-पटेल गुटके पूरी ताकत लगानेके बावजूद कांग्रेसके मुकाबले सीमित साधनों और शक्तिके साथ सोशलिस्टोंकी यह सफलता क्या इस बातका संकेत नहीं दे रही कि साम्प्रदायिक और पूंजीवादी मनोवृत्ति वाले नेताओंका कांग्रेस पर बढ़ता हुआ प्राधान्य और नियन्त्रण जन साधारणको कांग्रेससे दूर कर रहा है?

दामोदर प्रदेश बिल—

भारतकी पार्लमेण्टमें गत सप्ताह 'दामोदर प्रदेश कारपोरेशन बिल" पास हो गया। इसका उद्देश्य है नदीमें आये दिन आती रहती बाढ़ोंको रोकना आबपाशी बढ़ाना, जल वितरणकी व्यवस्था करना। इसके पानीसे बिजली पैदा करके दामोदर प्रदेशसे लेकर जहांतकका अंचल इस क्षेत्रके अन्तर्गत लाया जा सकता है वहां तक बिजलीकी मददसे तरह तरहकी आर्थिक योजनाओंको प्रोत्साहित कर लोगोंकी साधारण रहन सहनके स्तरको उन्नत करना, इस बिलका उद्देश्य है। इस योजनामें ५५ करोड़ रुपये खर्च होंगे। देशकी गरीबी मौलिक समस्या है जिसे मिटाना हमारी सरकारका पहला कर्त्तव्य है। इस योजनाकी परिकल्पना इसी हेतु की गयी है और भारतीय पार्लमेण्टमें कहा गया है कि देशकी गरीबी मिटानेके लिये आजके पूर्व कभी ऐसा कदम नहीं उठाया गया। इस बिलको पेश करनेवाले मिनिस्टर श्री गडगिलका विश्वास है कि इस योजनाके फलस्वरूप उन्नति और समृद्धिका प्रभात सिर्फ बङ्गाल और बिहारमें ही नहीं उदय होगा बल्कि उन्नतिके संक्रामक होनेके कारण दामोदर और हुगली नदीसे निकलकर उन्नति इस महान देशके सभी अञ्चलोंमें फैल जायगी और वह दिन दूर नहीं है जब हमारा देश सचमुच जैसा हम राष्ट्रीय गीतमें गाते हैं 'सुजलाम, सुफलाम मलयज शीतलाम्' बन जायगा।

कोमिण्टर्नका पुनर्गठन

श्री रामशरण सिंह

१९४२ के आखिरी दिनोंमें जिस समय हिन्दुस्तानके सामने जीवन-मरणका प्रश्न उपस्थित था, द्वितीय महासमर एक निर्णायक मोड़ ले रहा था। लोग रोज समाचारपत्रोंमें हिटलर द्वारा मास्को पर अधिकार कर दिये जानेकी खबरकी प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। एक बार फिर मानवताने बर्बरतापर विजय पायी। जिस भीषण सर्दीने रूसमें नेपोलियनके दांत खट्टे कर दिये थे, उसीसे हिटलरका भी पाला पड़ा। १९४२-४३ के जाड़ोंमें सोवियटकी लाल सेनाने सोवियट भूमिको जर्मन दस्युओंसे मुक्त करना शुरू किया। दुनियां भरकी जनतान्त्रिक शक्तियों और खुद अपने देशोंकी जनताके दबावके फलस्वरूप अमेरिका और ब्रिटेनने 'दूसरा मोर्चा' खोलकर पश्चिमसे जर्मनोंपर आक्रमण किया, हालां कि ऐसा उन्होंने तभी किया जब लालसेनाने सोवियट भूमिके अधिकांश हिस्सोंसे हिटलरी फौजको खदेड़ दिया था। लेकिन साम्राज्यवाद और पूंजीवादके कट्टर दुश्मन सोवियट रूसके साथ इनकी मैत्री इतनी जल्दी कैसे पट जाती! सोवियटके राजनीतिज्ञों और दुनियां भरकी कम्युनिस्ट पार्टियोंको मित्रतापूर्ण वातावरण तैयार करनेके लिये, या यों कहिये कि ब्रिटेन अमेरिकाको खुश करनेके लिये, कुछ उठा नहीं रखा। कम्यूनिस्टोंके सामने पितृभूमि सोवियट रूसकी रक्षाका प्रश्न सर्वोपरि था और इसके लिये उन्होंने उपनिवेशों और परतन्त्र राष्ट्रोंके जन आन्दोलनोंको दबानेमें साम्राज्यवादियोंका जी खोलकर साथ दिया। 'हिन्दुस्तानमें भी अगस्त क्रांतिका विरोधकर उन्होंने अपने 'एकमात्र मार्क्सवादी' होनेका सच्चा स्वरूप जनताके सामने रख दिया। गरज कि सोवियट रूसकी इस मनुहार नीतिको सफल बनानेमें दुनियां भरकी कम्यूनिस्ट पार्टियोंने जी जानसे सहायता की। उन्हें किसी कीमतपर, चाहे वह मार्क्सवादकी तिलाञ्जलि देकर ही सही, ब्रिटेन अमेरिकाको खुश रखना था। ऐसी ही परिस्थिति थी जब १५ मई १९४३ को माइ ल स्टालिनने अपने नये मित्रोंकी शङ्का दूर करनेके लिये थर्ड इण्टरनेशनल या कोमिण्टर्नको भंगकर देनेकी घोषणा कर दी। अमेरिकाके कम्यूनिस्ट नेता अर्ल ब्राउडरने तो यहांकी कम्यूनिस्ट पार्टीतकको भंग कर दिया। जैसे बड़े देवता, वैसी बड़ी भेंट।

परिस्थिति बदली

लेकिन यह सब आखिर कबतक चलनेको था? युद्धके दौरानमें समान शत्रुको परास्त करनेकी बात थी, इसीलिये जो अन्तर्विरोध चल रहा था वह सामने नहीं आया क्योंकि हिटलरकी विजयका अर्थ न केवल सोवियट रूस बल्कि ब्रिटेन-अमेरिकाका भी खात्मा होता। ब्रिटेन तो करीब-करीब जर्जर हो ही चुका था। लेकिन युद्ध बन्द होते ही, विशेषकर जब जूटके मालको बांटनेकी बारी आयी, मित्र राष्ट्रोंमें फूटके स्पष्ट लक्षण दिखाई पड़ने लगे। उधर सोवियट रूसका प्रभाव सारे यूरोपपर जोरोंसे पड़ रहा था। युद्ध खतम होते ही फ्रान्समें जो आम चुनाव हुए उसमें फ्रेंच पार्लियामेण्टमें कम्यूनिस्टोंके सबसे अधिक उम्मीदवार (१४७ चुने गये। युगोस्लावियामें तो मार्शल टीटो बहुत पहले ही कम्यूनिस्ट आन्दोलनको बहुत प्रबल बना दिया था और बादमें वही वहांके सर्वेसर्वा बने। इसी तरह जब पोलैण्डमें वहांकी भगोड़ी सरकार लन्दनमें ही थी, पोलैण्ड वासियोंने सोवियट रूसकी मददसे अपनी नयी सरकार बना ली। रूमानियाका भी यही हाल हुआ। इटलीमें भी कम्यूनिस्टोंका बड़ा जोर बढ़ा और वहांकी सरकारके महत्वपूर्ण विभाग कम्यूनिस्टोंको मिले। चेकोस्लोवाकियामें भी इसी प्रकार कम्यूनिस्टोंका प्रभाव पड़ा। जर्मनीके जिस हिस्सेमें सोवियट रूसका आधिपत्य हुआ उसमें भी कम्यूनिस्टोंने वहांकी एक दूसरी राजनीतिक पार्टीको जो वस्तुतः उन्हींके इशारों पर चलनेवाली थी प्रोत्साहित किया। उधर ग्रीसमें जर्मन फौजोंके हटनेके बाद जो जनतान्त्रिक आन्दोलन हुआ उसे ब्रिटिश और अमेरिकन सेनाने दबानेमें कोई कसर उठा नहीं रखा। ग्रीसके आन्दोलन कारियोंको सोवियट रूसकी अप्रत्यक्ष सहायता प्राप्त थी और सोवियट राजनीतिज्ञ खुले आम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनोंमें ग्रीससे ब्रिटिश अमेरिकन फौज हटानेकी मांग कर रहे थे। फिर ईरानके तेलका प्रश्न था जिसके लिये ब्रिटेन और अमेरिका दोनों प्रयत्नशील थे। इस दृष्टिसे भी ग्रीस पर और मध्यवर्ती देश टर्की पर उनका प्रमुख बना रहना अत्यावश्यक था। ईरानमें भी सोवियतका प्रभुत्व बढ़ रहा था और अजरबैजन प्रान्तमें जो शासन-उत्क्रांति हुई थी वह स्पष्टतः सोवियत-प्रेरित थी। ब्रिटेनको अपने पूर्वी साम्राज्यकी भी फिक्र थी और वह किसी प्रकार भूमध्यसागरसे स्वेजनहर तथा हिन्दुस्तान तक अपना मार्ग सुरक्षित रखना चाहता था। सोवियत रूस ब्रिटेन-अमेरिकाके मार्गमें बड़ा रोड़ा था।

ब्रिटेन-अमेरिकामें प्रतिक्रिया

उस बदली हुई परिस्थितिकी प्रतिक्रिया ब्रिटेन और अमेरिकामें हुई। ब्रिटेन और अमेरिकाके थैलीशाहोंके आसन हिल उठे। उनके प्रतिनिधि चर्चिल-बाण्डेनबर्गकी एक बार फिर बन आयी। अमेरिकामें तो डेमोक्रेटिक पार्टीके अपदस्थ हो जाने की बातें की जाने लगीं। यही हालत ब्रिटेनकी थी। चर्चिलने यूरोप और अमेरिकाके कई देशोंका दौरा किया और इस लाल खतरेसे बचनेके लिये समस्त संसार की अंग्रेजी भाषा भाषी जनताके संगठन पर जोर दिया। उन्होंने चारों तरफ घूम घूम कर प्रचार किया कि 'पाश्चात्य जन तन्त्र' खतरेमें पड़ गया है इसकी रक्षा होनी चाहिये। सोवियत रूस भी चुपचाप बैठा नहीं था उसने उठ कर इस साम्राज्यवादी प्रचारका उत्तर दिया। मार्शल स्टालिनने स्पष्ट शब्दोंमें कहा कि चर्चिल तृतीय महायुद्ध की तैयारीके लिये सचेष्ट हैं। इसी प्रकार सिनेटर बाण्डेनबर्गके प्रचारोंका भी उत्तर मास्को रेडियोने दिया। सोवियत रूसकी ओरसे अमेरिकाके डालर साम्राज्यवादका भंडाफोड़ किया गया। सोवियतके एक राजनीतिज्ञने तो यहां तक कह डाला कि अमेरिका तृतीय महायुद्धकी तैयारीके लिये अभीसे सारी दुनियामें अपने हवाई अड्डोंका जाल बिछा रहा है और एटम बमके रहस्यको गुप्त रखनेका उसका यही मकसद है।

जर्मनीके ब्रिटिश-अमेरिकन क्षेत्रोंका आर्थिक-संगठन

यह तो हुआ इसका प्रचारात्मक पक्ष। ब्रिटेन और अमेरिकाने अमली क्षेत्रमें अपनी इस नीतिको बरतनेका प्रथम प्रयास यों किया कि आर्थिक मामलोंमें जर्मनीके ब्रिटिश और अमेरिकन क्षेत्र एकमें मिला दिये गये। युद्ध जर्जर जर्मनीमें सोवियत रूसके बढ़ते हुये प्रभावको रोकनेके लिये ब्रिटिश अमेरिकाका यह पहला प्रयास था। जर्मनोंकी टुटी हुई आर्थिक जिन्दगीको अनुप्राणित करनेके घोषित उद्देश्यके अन्दर एक दूसरी ही चाल चली जा रही थी जिसका जिक्र अभी-अभी जर्मनीके सोवियत-अधिकृत क्षेत्रके सेनापतिने अपने एक बयानमें किया है। संभवतः अन्तिम परराष्ट्र सचिव सम्मेलनके ठीक पहले इस कथनका क्या अर्थ है? सोवियट सेनापति ने कहा है कि अमेरिका और ब्रिटेन जर्मनी में अपने अधिकृत क्षेत्रोंको युद्ध अड्डा बना रहे हैं जिसका प्रारम्भ उन्होंने उक्त दोनों क्षेत्रोंका आर्थिक-संघटन करके किया है।

ट्रूमन सिद्धान्त

ब्रिटेन और अमेरिकाके द्वारा अधिकृत जर्मन क्षेत्रोंके आर्थिक संघटनके बाद ही अमेरिकन कांग्रेसमें प्रेसिडन्ट ट्रूमनने एक महत्वपूर्ण घोषणा की जो 'ट्रूमन सिद्धान्त'के नामसे प्रसिद्ध हैं। उसके अनुसार अमेरिका युद्ध जर्जर यूरोपका त्राता बन गया। ट्रूमनने यूरोपके उन सारे राष्ट्रों को आर्थिक सहायता देनेकी घोषणाकी जिनकी आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो रही थी। असलमें उस उदारताका मकसद यूरोपमें सोवियत रूसके बढ़ते हुए प्रभावको रोकनाथा। ग्रीस-सरकारको तो अमेरिकाने इसलिये कर्ज दिया कि वहांके जनतांत्रिक आंदोलनको दबाया जाय ताकि ब्रिटिश और अमेरिकन फौजें वहां बनी रहें। सहायता भी चुनकर ऐसे ही देशोंको दी गयी जिनसे किसी न किसी प्रकार अमेरिकाके स्वार्थ-साधन होनेकी सम्भावना थी। इस प्रकार की सहायता पानेवालोंमें ग्रीस टर्की फ्रांस और इटली थे जहां कम्युनिज्मका बढ़ता हुआ प्रभाव रोकना सबसे जरूरी था।

मार्शल योजना

लेकिन इतनेसे अमेरिका सन्तुष्ट नहीं हुआ। वह तो डालरके बलपर सारे योरोप को खरीद लेना चाहता था। इसी बीच अमेरिकामें रिपब्लिकन दलका जोर काफी बढ़ रहा था और १९४६ में जो आम चुनाव हुए उसमें रिपब्लिकन दलका कांग्रेसमें बहुमत हो गया। गर्म अफवाह थी कि सिनेटर बाण्डेन वर्ग परराष्ट्र सचिव होनेवाले हैं। यद्यपि ऐसा नहीं हुआ लेकिन तत्कालीन परराष्ट्र सचिव श्री जेम्स ब्रायन्स को पदत्याग करना पड़ा और अमेरिकन सेनाके युद्धकालीन चीफ आफ स्टाफ तथा चीनमें अपने कृत्योंके लिये प्रसिद्ध श्री जार्ज मार्शल नये परराष्ट्र सचिव हुए। चीनी इनकी आर्थिक योजनाका फल अभी तक भुगत रहे हैं। हां, तो उन्होंने ५ जुलाई १९४७ को हार्वर्ट विश्वविद्यालय में दिये गये एक भाषणके सिलसिलेमें यूरोपके युद्ध जर्जर देशोंको सहायता देनेकी घोषणा की जो 'मार्शल-योजनाके नामसे' पर्याप्त ख्याति पा चुकी है। वस्तुतः मार्शल योजनाके ही जवाबमें सोवियत रूसके नेतृत्वमें कम्यूनिस्ट इन्टरनेशनल या कोमिन्टर्नका पुनर्गठन हुआ! उक्त योजनाके अनुसार ब्रिटेन फ्रांस, इटली, लक्जेमबर्ग, बेलजियम, टर्की, ग्रीस नार्वे, स्वीडेन, डेनमार्क और हालेण्ड आदि योरोपके १६ राष्ट्रोंने अमेरिकाके एक समझौतेपर हस्ताक्षरकिया जिसका उद्देश्य यूरोप देशोंको आर्थिक दिवालियापन और अकालके प्रकोपसे बचनेके लिये अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग कायम करना बताया गया। लेकिन अमेरिकाकी इस उदारताका असली उद्देश्य सोवियतके विरुद्ध यूरोपमें डालरके बलपर अपना आर्थिक और राजनैतिक प्रभुत्व कायम करना था इस योजनाके अनुसार कोई यूरोपीय देश आत्म निर्भर नहीं हो सकता था। अमेरिकाने डालर इसी शर्तपर दिये हैं कि सम्बन्धित राष्ट्र उनसे अमेरिकाका ही बना हुआ माल खरीदें। कोई उस पूंजीसे ऐसा नया उद्योग नहीं खड़ा कर सके ताकि अमेरिकन बाजारपर कोई आंच आवे।

इस योजनाको पूर्वी यूरोपके कई देशोंने, जो सोवियतके प्रभाव में थे, नहीं माना। वे थे स्वयं सोवियत रूस, पौलैंड जुगोस्लाविया, बल्गेरिया, अल्बानिया और चेकोस्लोवाकिया जिन्होंने आगे चलकर कम्यूनिस्ट इण्टरनेशनलका पुनर्गठन किया। इस प्रकार यूरोप स्पष्टतः दो प्रभाव क्षेत्रों में बंट गया।

छोटी असेम्बली और वीटोका प्रश्न

इस प्रकार सोवियत रूस और ब्रिटेन अमेरिकाके बीच तनाव बढ़ता ही गया। यह और तीव्र हो गया जब अमे-

रिकाके परराष्ट्र सचिव श्री जाज मार्शलने संयुक्त राष्ट्र संघमें छोटी असेम्बली योजना, रखी। इस योजनाका उद्देश्य वीटो-प्रयोगके अधिकारको रद्द करना था। सोवियत रूस तो संयुक्त राष्ट्र संघमें था अतएव वहां अपने प्रतिकूल किये गये निर्णयोंको रद्द करनेका एक मात्र अस्त्र 'वीटो' उसके पास था जिसे वह ग्यारह बार इस्तेमाल कर चुका था। ब्रिटेन-अमेरिका सोवियत रूसकी इस अड़ंगेकी नीतिसे परेशान थे और झख मारकर श्री मार्शलको 'छोटी असेम्बली-योजना' का प्रस्ताव रखना पड़ा जो स्वीकृत हो गया। यही कम्यूनिष्ट इण्टरनेशनल या कोमिण्टर्नके पुनर्गठनका तात्कालिक कारण हुआ क्योंकि सोवियत रूसके पास अब वैसा कोई प्रभावकारी अस्त्र नहीं रह गया जिससे वह अपनी रक्षा करता।

कोमिण्टर्नकी स्थापना

उन सब कारणोंसे विवश होकर विगत अक्तूबरके प्रारम्भमें सोवियट संसारके नेतृत्वमें यूरोपके ९ देशोंके कम्यूनिस्ट पार्टियोंने पोलैण्डकी राजधानी वारसामें एक सम्मेलन बुलाया जिसमें कम्यूनिस्ट इण्टरनेशनलका पुनर्गठन किया गया, यद्यपि 'कम्यूनिस्ट इण्टरनेशनल' या 'कोमिण्टर्न' नाम जान बूझकर छोड़ दिया गया। ये ९ देश थे—सोवियट रूस, पोलैण्ड, बल्गेरिया, युगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया रूमानिया हंगरी, इटली और फ्रान्स। जैसा कि घोषणापत्रमें कहा गया है 'यह सङ्गठन उपर्युक्त देशोंकी कम्यूनिस्ट पार्टियोंके कार्योंमें सम्बद्धता लानेके लिये सूचना केन्द्रका काम करेगा। इसकी कार्यकारिणीके सदस्य शामिल होनेवाले ९ देशोंकी कम्यूनिस्ट पार्टियोंकी केन्द्रीय समितिके प्रतिनिधि रहेंगे और इसका सदर दफ्तर युगोस्लावियाकी राजधानी बेलग्रेडमें रहेगा।" घोषणापत्रमें आगे कहा गया है, "साम्राज्यवादी और पूंजीवादी ताकतोंने दुनियांको दो खेमोंमें बांट दिया है। यूरोपकी जनतान्त्रिक ताकतोंका यह कर्तव्य है कि वह अमेरिकन साम्राज्यवादके प्रहारको नष्ट करनेके लिये समस्त महाद्वीपको तैयार करे।" उसी घोषणापत्रमें संयुक्त राज्य अमेरिकाको आक्रमणकारी राष्ट्र कहा गया है और उसपर चीन, इण्डोनेशिया और दक्षिण अमेरिकाके देशोंको आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिसे गुलाम बनानेका इल्जाम लगाया गया है। इतना ही नहीं, आगे चलकर घोषणापत्रमें यह भी कहा गया है कि अमेरिका जर्मनी और जापानको शक्तिशाली बनानेके लिये प्रयत्नशील है, ताकि वे उसकी 'यूरोप और एशियामें साम्राज्यवादी नीतिको सफल बनानेमें सहायक हो सकें।

कोमिन्टर्नका पुनर्गठन करके सोवियट रूसने यूरोपमें अमेरिकाकी चालबाजियोंको नाकामयाब करनेका पहला कदम उठाया है। अबसे ब्रिटेन-अमेरिका और सोवियट में समझौता होनेकी अन्तिम आशा भी जाती रही। उधर अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांसकी सरकारोंने यूरोपीय सहायता योजना कार्यान्वित करनेका अपना दृढ़ निश्चय प्रकट किया है। रूसके कार्योंसे अमेरिकाको कोई आश्चर्य नहीं हुआ बल्कि उसे तो यूरोपमें अपनी अर्थनीतिको चलानेका अच्छा मौका मिल गया। दुनिया भरमें अमेरिकाके प्रचारक घूम घूम कर यही प्रचार कर रहे हैं कि हम तो आर्त यूरोपकी रक्षा करना चाहते हैं और सोवियट रूस हमारे मार्गमें तमाम बाधायें डाल रहा है।

पूर्वी देशोंका कोमिण्टर्न

विगत २० नवम्बरको रायटरने संवाद भेजा है कि उत्तरी पूर्वी एशियाके कुछ देशोंने भी नया कोमिण्टर्न स्थापित किया है। इसे सोवियट रूसकी अन्तर्राष्ट्रीय नीतिका एक भाग ही समझना चाहिये। इस नये कोमिण्टर्नमें बाह्य मंगोलिया, चीन तथा कोरिया शामिल हैं। जापानकी कम्यूनिस्ट पार्टीके प्रतिनिधि यद्यपि अन्य कारणोंसे नहीं पहुंच सके लेकिन कुछ जापानी कम्यूनिस्ट और युद्धबन्दी व्यक्तिगत हैसियतसे उक्त सम्मेलनमें उपस्थित हुए थे जो हार्बिनमें हुआ था।

अभी कुछ दिन हुए रायटरके राजनीतिक संवाददाताने एक दूसरा महत्वपूर्ण समाचार भेजा था। तदनुसार पूर्वी यूरोपमें बल्गेरिया और यूगोस्लावियाको मिलाकर ९ करोड़ आबादीकी एक नयी सोवियट भूमि बनानेकी बात चल रही है और इस सम्बन्धमें बेलजियमके प्रधान मन्त्री डिमिट्रोव (जो विघटित थर्ड इण्टरनेशनलके भी प्रधान मन्त्री थे) और युगोस्लावियाके सर्वेसर्वा मार्शल टीटो मो० स्टालिनसे मन्त्रणा कर चुके हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि दुनियां तेजीसे दो महान गुटोंमें विभक्त होती जा रही है जिनमें एकका प्रतिनिधित्व तो अमेरिका करता है और दूसरेका सोवियट रूस। पहला जहां 'पाश्चात्य जनतन्त्र'की दुहाई देकर सारी दुनियापर अपने आर्थिक जाल बिछाना चाहता है, वहां दूसरा कम्यूनिज्मके सुनहले स्वप्नका वर्जन करके जनतन्त्रके आधारभूत सिद्धान्तोंको सदा के लिये दफना देना चाहता है। हम समाजवादियोंका रास्ता जो जनतान्त्रिक समाजवादकी स्थापना करनेके लिये कृत सङ्कल्प हैं, निश्चय ही बीचका होगा। इस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिये समस्त संसारके समाज वादियोंका एक अन्तर्राष्ट्रीय संघटनका होना अत्यन्त आवश्यक है। इस सम्बन्धमें प्रारम्भिक कदम उठाया जा चुका है जिसका वर्णन हम अपने अगले लेखमें करेंगे।

———

ऐतिहासिक बलिदान और काली शक्तियां

लेखक—श्री मन्मथ नाथ गुप्त

महात्माजी के निधनसे भारतीय राजनैतिक गगनमें जो शून्यता उत्पन्न हो गयी, वह कुछ दिनों तक उनकी अन्त्येष्ठिक्रिया आदिके शोरसे दबी सी रही, पर श्रद्धाञ्जलियों तथा अन्त्येष्ठिक्रियाकी खबरोंमें न्यूनताके साथ साथ अब हम धीरे धीरे हृदयंगम करते जा रहे हैं कि शून्यता कितनी बड़ी है। इस बाहरी शून्यताकी करनेके साथ साथ हम एक प्रकारकी भीतरी शून्यताका भी अनुभव करते जा रहे हैं, क्योंकि हम देख रहे हैं कि जिन आदर्शों को लेकर उनका बलिदान हुआ है, वे अब भी हमसे उतने ही दूर हैं, जितना पहले थे। हम अत्यन्त दुखके साथ इस बातको हृदयंगम कर रहे हैं कि उनके महान बलिदानसे भले ही सामयिक रूपसे उदात्त भावनाओंका उफान आ गया हो, पर परिस्थिति विशेष कुछ नहीं सुधरी है।

पहले हम उनकी हत्या पर दो चार शब्द कह कर इस सम्बन्धकी परिस्थिति का स्पष्टीकरण कर लें। जिस व्यक्तिने या व्यक्तियोंके समूहने उनकी हत्या की, उन्होंने यही समझ कर यह किया कि महात्माजी हिन्दू हित हननमें लगे हुए हैं, इस कारण उनके जीवनका अन्त कर दिया जाना चाहिये। इस प्रश्नके बहुत विस्तृत पहलू हैं, पर उन पर न जाकर बिलकुल संकीर्ण साम्प्रदायिक दृष्टिसे भी देखा जाय तो ऐसे लोगोंका यह विश्वास बिलकुल गलत था।

मैं धार्मिक रूपसे प्रश्नों पर विचार करनेका आदी नहीं हूं, पर वैसा करने पर भी मैं तो यही देखता हूं कि राममोहन, दयानन्द केशवचन्द्र, विवेकानन्द इन सभी सुधारकोंसे गांधीजीका दान सामाजिक धार्मिक क्षेत्रमें भी अधिक रहा। इनमेंसे किसी सुधारक पर समाजवादी मानदण्ड का प्रयोग करने पर एक ही नतीजा निकलेगा, इसलिये विशेष कर गांधीजी पर इसके प्रयोगकी कोई आवश्यकता नहीं है। मोटी दृष्टिसे देखने पर तो यही पता लगेगा कि प्रत्येक क्षेत्रमें सामाजिक सुधार को उन्होंने अपनाया, और वे अपने पहले के धार्मिक सुधारकोंसे श्रेष्ठ हैं।

यह इसलिये बहुत ही आश्चर्यकी बात है कि धर्म विरोधी होनेके कारण याने हिन्दू हित हननके अपराधमें उनको कुछ लोगोंने दोषी समझा। आश्चर्य इसलिये और भी है कि ऐसे लोगोंको यह दिखाई नहीं पड़ा कि हिन्दुओंमें ऐसी बहुत सी प्रतिक्रियावादी शक्तियां तथा विभूतियां मौजूद हैं जिनके कारण हिन्दू धर्मका और मानवताकी मौलिक क्षति हुई है, और होती रही है, पर उनको अपने तमंचेका निशाना न बनाकर इन लोगोंने गांधीजी को अपना निशाना बनाया।

मन्दिर प्रवेश

उदाहरणार्थ मन्दिर प्रवेश याने अछूतों के लिये मन्दिर प्रवेशका आन्दोलन एक ऐसा आन्दोलन है, जिसका उद्देश्य यह है कि कमसे कम देव पूजनके क्षेत्रमें कथित अछूत और उच्च जातिके हिन्दू एक सतह पर आ जायं। यदि मुझसे पूछा जाय तो मैं इस आन्दोलनको विशेष महत्व देनेके लिये तैयार नहीं हूं क्योंकि इसमें वैषम्यका जो असली आधार है, तथा शोषणका जो असली रूप है उस पर दृष्टि न जाकर दूसरी तरफ दृष्टि जाती है, पर जो लोग मन्दिर मानते हैं, तथा मन्दिरोंमें जानेको महत्व देते हैं, उनके लिये यह आन्दोलन महत्वपूर्ण है। मन्दिरोंमें जानेमें विश्वास करें या न करें, पर यह तो मानना ही पड़ेगा कि किसी भी व्यक्तिके लिये यह बहुत अपमानजनक है कि जब वह उस बातको मानता है, तो भी उसे इस कारण एक मकानमें जानेसे रोका जाय कि वह एक विशेष जातिका है।

अभी हमारी आंखके सामने की घटना है कि उड़ीसाके कांग्रेस जनोंकी यह हार्दिक इच्छा थी कि गांधीजीके श्राद्ध-दिवस पर जगन्नाथका प्रसिद्ध मन्दिर अछूतोंके लिये खोल दिया जाय। पर मन्दिरके अधिकारी बराबर इसका विरोध करते रहे। बहुत सालोंसे गांधीजी इस मतका प्रचार करते आ रहे थे कि सब मन्दिर हिन्दू मात्रके लिये खुल जाना चाहिये। पर प्रतिक्रियावादी मन्दिरके अधिकारियोंने बराबर इसका विरोध किया! कई मन्दिर महात्माजीकी चेष्टा तथा दबावके कारण खुल गये, पर बहुतसे मन्दिर अब भी नहीं खुले हैं।

मैं इस सम्बन्धमें अधिक ब्यौरेमें न जाऊंगा, पर बहुतसे विद्वानोंका यह मत है कि असलमें जगन्नाथका मन्दिर बौद्धों का था जो जातिपाति नहीं मानते थे। कुछ लोगोंका तो यहां तक कथन है कि यह मन्दिर इससे भी पुराना है अर्थात् अनार्यों के समयके किसी देवताका आर्यीकरण करके जगन्नाथकी सृष्टि हुई। कुछ भी हो जगन्नाथ हिन्दुओंका एक ऐसा तीर्थ है जहां कोई छुआछूत नहीं है। श्री चैतन्य से इसका सम्बन्ध है जिनके निकट छूत अछूत, उच्चवर्ण निम्नवर्ण सब बराबर थें, और जो सबको समान रूपसे गले लगाते थे। इस प्रकार कई परम्परायें ऐसी थीं, जिनके कारण जगन्नाथका मंदिर सबके लिये खुला होना चाहिये था।

पर सदियोंसे जगन्नाथका यह मंदिर सवर्ण हिन्दुओंके जगतके नाथका निवास रहा है। मैं पहले ही मंदिर प्रवेशके विषयमें अपना वक्तव्य स्पष्ट कर चुका हूं, पर क्या संकीर्ण धार्मिक दृष्टिसे सोचने पर यह बात सही नहीं पायी जाती कि अछूतोंके साथ सदियोंसे जो इस प्रकारकी ज्यादतियां की गयी हैं उन्हींके कारण ये लोग बराबर हिन्दू धर्मसे निकलते चले गये हैं। फिर महात्माजीके हत्यारेका क्रोध ऐसे लोगों पर क्यों नहीं गया। यह बात सही है कि महात्माजी ने परिस्थितियोंकी मजबूरीके कारण, इन परिस्थितियोंमें उनका निजी मतवाद भी है, पाकिस्तानको स्वीकार कर लिया, पर यह जो सैकड़ों वर्षोंसे विशेषकर अछूत और कथित निम्न जातिके लोग मुसलमान इसाई होते चले आ रहे थे इसके लिये कौन लोग जिम्मेदार थे? क्या इस प्रकारके कट्टर लोगोंके कारण ही यह परिस्थिति उत्पन्न नहीं हुई कि जिन्ना ऐसे नेताका उपद्रव सम्भव हुआ, और पाकिस्तानके लिये एक आधार मिल गया।

जिन लोगोंने क्रोधके आवेशमें हिताहित ज्ञान त्याग दिया, उन्हें यह सोचना चाहिये था कि कौन सी शक्तियां ऐसी हैं। जिनके कारण हिन्दू धर्मकी जड़े बराबर उखड़ती ही गयी हैं। क्या उन्होंने ऐसी शक्तियोंसे लोहा लिया, या लेनेकी चेष्टा की?

विभाजन अनिवार्य था

जो होना था सो तो हो चुका पर मैं इन गड़े मुर्दोंको इसलिये उखाड़ रहा हूं कि यह बिलकुल स्पष्ट हो जाय कि इनके दुष्कृत्यका किसी प्रकार कोई संकीर्ण धार्मिक आधार भी नहीं है। कुछ यह समझते हैं कि किसी भी हालतमें देशका धार्मिक विभाजन जरूरी था या अनिवार्य था, पर मैं यह समझता हूं कि नेताओंकी जिस प्रकारकी नीति थी, उसमें यह अनिवार्य था। कट्टरसे कट्टर हिन्दू नेताको भी इन परिस्थितियों में आत्म समर्पण करना पड़ता केवल समाजवादी नेतृत्वसे ही देशका धार्मिक विभाजन बच सकता पर यह बात दूसरी है। इसे मैं यहीं पर छोड़ता हूं।

जिन लोगोंने महात्माजीकी हत्या की या करवायी अब कई दिन हो गये क्या उन्होंने जिस स्वर्गकी आशा करके यह कुकृत्य किया था, वह कहीं दिखाई पड़ रहा है? मैं तो जहां तक चर्मचक्षुसे देख रहा हूं, उनका यह स्वर्ग अब भी उतना ही दूर है, नहीं वह और भी दूर हो गया है। महात्माजी राष्ट्रके असली नेता थे इस बातको मानते हुए भी यह कहना ठीक न होगा कि महात्माजीके स्वप्निल आदर्शों पर केन्द्रीय सरकार चल रही थी।

दो धाराएं

स्वयं महात्माजीमें भी दो धारायें थीं, एक स्वप्निल और दूसरी व्यवहारिक। स्वप्निल आदर्शोंका प्रचार करते हुए वे हर मौके पर सत्य और अहिंसाका पालन होना चाहिये यह नारा लगाते थे, पर व्यावहारिक क्षेत्रमें वे भारतीय राष्ट्रकी सशस्त्र सेना रखनेकी नीति का समर्थन करते थे, यहां तक कि उन्होंने काश्मीरमें जो लड़ाई हो रही है, उसका समर्थन किया। उनके जीवनके इन दोनों पहलुओंको वे एक विशेष तरीकेसे निभाते थे। कभी इस पर जोर देते तो कभी उस पर। शुद्ध अहिंसाकी दृष्टिसे काश्मीरकी लड़ाईमें किसी भी पक्षका समर्थन नहीं हो सकता, क्योंकि शुद्ध अहिंसाके सिद्धान्तमें यह देखा नहीं जाता कि कौन सा पक्ष न्याय पक्ष है और कौन सा पक्ष अन्याय पक्ष और शुद्ध अहिंसामें यह माना नहीं जाता कि न्याय पक्षको आक्रमणकारी अन्याय पक्षके विरुद्ध बल प्रयोगका अधिकार है।

यदि ऐसा महात्माजीका मत होता, तो उनमें और क्रान्तिकारियोंमें कोई फरक न होता, जो यह मानते हैं कि उद्देश्यके अनुसार साधन बुरा या अच्छा होता है। फिर भी यह एक सर्वविदित बात है कि महात्माजीने बराबर काश्मीरके युद्ध का समर्थन किया है।

अब रही यह बात कि काश्मीरमें जो युद्ध हो रहा है उसमें यथेष्ठ कड़ाई से काम न लेकर ढिलाईसे काम हो रहा है सो इसके लिये उस बूढ़े महात्मा पर जिम्मेदारी कैसे आ सकती थी? वे कोई युद्ध विद्याके विद्वान नहीं थे, और न वे बैठकर युद्धको चला रहे थे जैसे कि चर्चिल या रूजवेल्ट ने चलाया था। काश्मीरके लोगोंसे मिलकर मुझे यह व्यक्तिगत तजुर्बा हुआ कि उन लोगोंका यह ख्याल था कि काश्मीर में युद्ध ढिलाईसे चलाया जा रहा है। इस बातको सच मान लेने पर भी किसी प्रकार दोष गांधीजी पर नहीं आ सकता था, यह काम तो दूसरोंका था।

सुरक्षा कौंसिलमें

अब कोई यह कहे कि सुरक्षा कौंसिल के सामने काश्मीरकी समस्याको ले जाकर जिस प्रकारकी भद्द हुई उसके लिये गांधीजी जिम्मेदार थे, तो यह भी गलत होगा। गांधीजी क्यों सभी बड़ेसे बड़े व्यक्ति अलग अलग विषयोंमें विशेषज्ञोंके द्वारा परिचालित होते हैं। जैसा ये लोग कहते हैं अक्सर वैसा ही होता है। यदि इन लोगोंने गलती की, या विभागके जो नेता थे, वे नातजर्बेकार थे, तो इसके लिये किसी दूसरेको जिम्मेदार करना कहां तक उचित होगा यह विचार्य है।

हमारे नेताओंमें जो लोग अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिको लेकर आलोचना आदि करते थे, वे केवल किताबी रूपमें ही समस्याओंको लेकर चलते थे, अब उनको इन विषयोंमें निकटसे तजर्बा हो रहा है कि सुरक्षा कौंसिल या अन्य कोई अन्तर्राष्ट्रीय संस्था हो, इन सब संस्थाओंमें जो लोग अपने राष्ट्रका प्रतिनिधि होकर आते हैं वे कोई धर्म करने नहीं आते, बल्कि अपने राष्ट्रके स्वार्थ किस बातमें है इस बातको देखने आते हैं। वे लोग प्रत्येक विषय पर इसीके

अनुसार राय देते हैं। यही तो रोना रूस का है, जिसे हमारे कुछ नेता समझ नहीं पा रहे थे और श्रीमती विजय लक्ष्मी ने तो इस सम्बंधमें एक भावुकतापूर्ण व्याख्यान ही दे डाला था, पर अब उम्मीद की जा सकती है कि हमारे नेता अन्तर्राष्ट्रीय जगतके रूपको कुछ कुछ समझ पा रहे होंगे।

इस प्रकार जिस दृष्टिसे भी देखा जाय महात्माजी पर जिन लोगोंने हमला किया उन्होंने अत्यन्त गलत धारणावश किया। महात्माजी एक महात्मा होनेके अतिरिक्त एक व्यावहारिक नेता थे। सच तो यह है कि अपनी व्यावहारिकताके कारण ही महात्माजी इतने प्रसिद्ध हुए नहीं तो आज भी भारतमें गांधीजीसे बढ़कर सत्य और अहिंसाके प्रतिपादक हिमालयकी गुफाओंमें बहुत पड़े हुए हैं। पता नहीं ये लोग कहां तक अपने परलोक की सिद्धि कर रहे हैं, पर इनसे एक कौड़ी भी लोक कल्याण नहीं हो रहा है।

महात्माओंसे ऊंचे

महात्माकी व्यावहारिकता ही उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी जिसके कारण वे महात्मा होते हुए भी महात्माओंसे ऊंचे थे। उनकी इस व्यावहारिकताके कारणही आज लोग इनका अभाव इतना अनुभव कर रहे हैं। और इनके हत्यारोंने इसी मद पर उन्हें दोषी पाया। बात यह है कि उन्होंने अपने स्वप्निल क्षेत्रसे जो कुछ कहा, उसीको इन लोगोंने महत्व दिया व्यावहारिक क्षेत्रमें सत्य और अहिंसाकी तरफ न ताकते हुए काश्मीरके युद्धका समर्थन कर रहे थे, इस बातको ये लोग सम्पूर्ण रूपसे भूल गये। कहा जा सकता है कि जब वे व्यावहारिक क्षेत्रमें ऐसा कर रहे थे, तो मुंहसे ऐसा क्यों कह रहे थे? यह उनका अपना निजी तरीका था, इस तरीकेसे किसीको जितना भी विवाद हो, वह करे, पर जब इस तरीकेसे असली काममें कोई बाधा नहीं पड़ती थी और बराबर फौजपर फौज काश्मीरमें भेजी जा रही थी, पाकिस्तानमें जो अत्याचार हो रहे थे उनका प्रतिवाद किया जा रहा था, जो लोग पाकिस्तानसे आ रहे थे, उन्हें बसानेकी चेष्टा जारी थी, तो फिर रोषकी कोई बात मालूम नहीं होती।

तब हत्या क्यों हुई?

यह बात जरूर है कि जिन्नाकी रायसे और कदाचित मददसे जिस प्रकार पश्चिमी पाकिस्तानको हिन्दू और सिक्खों से पाक करना जारी था उस प्रकारसे भारतीय यूनियनको मुसलमानोंसे पाक करनेका कार्यक्रम नहीं चलाया जा रहा था। कट्टर साम्प्रदायिक दृष्टिसे शायद यही एक शिकायत है जिसपर आकर संकीर्ण लोग डट जांय। हां जरूर गांधी जी ऐसा करना नहीं चाहते थे। पर इसके लिये सारी जिम्मेदारी उनपर थोपना बिलकुल गलत होगा, क्योंकि यही नीति सारी कांग्रेसकी है, तमाम क्रांतिकारियोंकी है, सब समाजवादियोंकी है।

यदि इस कारण गांधीजीकी हत्या हुई है कि उन्होंने भारतीय यूनियनमें मुसलमानोंका कत्लेआम क्यों नहीं करवा डाला, तो इसके लिये एक व्यक्तिको मारनेसे कुछ फायदा न होगा न हो सकता था। भारतके सभी बुद्धिमान लोग इस बातको समझते हैं कि सभी मुसलमान जो आज भारतीय यूनियनका अजान दे रहे हैं, वे, विश्वास योग्य नहीं हैं, उनमेंसे बहुतेरे जिन्नाको ही आज नेता मानते हैं, और पाकिस्तान रेडियोपर ही चलते हैं। इनपर निगरानी रखना, या इन्हें किसी जिम्मेदारीके पदपर न पहुंचने देना, यह बात और है, पर उनको खतम कर देना यह नैतिक या किसी भी दृष्टिसे उचित नहीं है। क्या जो लोग ऐसा चाहते हैं, वे इस बातको भूल गये कि पण्डित नेहरू, मौलाना आजादसे लेकर पन्तजी तथा अन्य सभी जिम्मेदार लोगोंने ऐसे मुसलमानोंको जो अपनेको पाकिस्तानी समझते हैं, बार बार यह नहीं कहा है कि ऐसे लोगोंके लिये भारतीय यूनियनमें कोई जगह नहीं है? क्या ऐसा यह कहनेके तुल्य नहीं है कि आप बाइज्जत यहांसे तशरीफ ले जाइये। इससे अधिक और एक सभ्य सरकार क्या कर सकती है? ऐसे लोगोंमें जो लोग क्रियात्मक रूपसे जहर फैलानेमें, हथियार बटोरनेमें या अन्य किसी प्रकारसे भारतीय राष्ट्रकी जड़ खोदनेमें काम करते हुए पाये जा रहे हैं, वे गिरफ्तार भी किये जा रहे हैं। और इससे अधिक क्या हो सकता है

ये प्रतिक्रियावादी

हमने इस विषयमें विस्तारके साथ इसलिये आलोचना की है कि केवल शतमुख होकर गांधीजीकी भावुकतापूर्ण प्रशंसा करनेसे हम उन शक्तियोंसे पेश नहीं पा सकते, जो गांधीजीकी दुखद मृत्युके लिये जिम्मेदार हैं। जहर फैलाने वाली साम्प्रदायिक संस्थाएं गैरकानूनी करार दी गयी हैं पर केवल इतनेसे ये प्रतिक्रियावादी शक्तियां कब्जेमें नहीं आ सकतीं। विचारधाराके क्षेत्रमें इन्हें बिलकुल पराजित करना पड़ेगा। इन्हें यह प्रमाणित कर दिखाना पड़ेगा कि जिस संकीर्ण उद्देश्यको लेकर ये चले हैं, उनकी भी तो पूर्ति नहीं हुई, बल्कि उनके लिये भी खराबी आ गयी।

हम रातोरात हृदय परिवर्तनकी नीति में विश्वास नहीं करते। ऐसा तो केवल नाटकोंमें ही हो सकता है। हम इस वास्तविकताको मानते हैं कि जिस व्यक्ति या व्यक्तिसमूहके हृदयपरिवर्तनसे कुछ काम बन सकता था, उन जिन्ना तथा उनके दलके कार्यमें कोई परिवर्तन नहीं है। महात्माजीकी शहादतपर जिन्नाने जो वक्तव्य दिया है, उसीसे यह स्पष्ट था कि वे अपने उसी सिद्धान्तपर डटे हुए हैं कि महात्माजी एक हिन्दू नेता हैं। अवश्य पाकिस्तानके अन्य नेताओंने बहुत सी ऐसी बातें कहीं, जो बड़ी आशावर्द्धक हैं, पर हम इस वास्तविकताके प्रति भी अन्ध नहीं हैं कि इन लोगोंने जो कुछ कहा, उसका मूल्य बहुत कम है क्योंकि जिन्नाने जो कुछ कहा वही अन्ततक चलेगा, दूसरोंकी बातें बिलकुल नहीं चलेंगी।

विशेष परिवर्तन नहीं हुआ

इसी अर्थमें हमने इस लेखके आरम्भ में कहा कि गांधीजीकी शहादतसे परि-

(शेष १६ वें पृष्ठपर)

कांग्रेसका नया विधान

देशकी परिवर्तित स्थितियोंको देखते हुए कांग्रेसके विधानमें परिवर्तन आवश्यक हो गया था और इस प्रश्नपर प्रायः दो वर्षोंसे विचार हो रहा था। आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीने सिपारिशकी है कि निम्नलिखित मौलिक सिद्धांतोंके आधारपर कांग्रेसका नया विधान बने।

उद्देश्य— भारतीय राष्ट्रीय महासभा का उद्देश्य भारतके निवासियोंकी उन्नति और हित करना तथा सुविधा, एवं सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकारों की समानताके आधारपर भारतमें एक राष्ट्रमण्डल (कामन वेल्थ) की स्थापना करना है जिसका लक्ष्य परस्पर सहयोग पूर्वक विश्वशांति और बन्धुत्वके लिये प्रयास करना होगा।

मताधिकार— कांग्रेसके उद्देश्योंसे सहमत कोई भी व्यक्ति, जिसकी उम्र कमसे कम १८ वर्षकी होनी चाहिये, प्रारम्भिक कांग्रेस पञ्चायतके चुनावमें भाग ले सकता है।

पंचायत— गांवमें अथवा गांवोंके समूहमें अथवा नगरके एक हिस्सेमें प्राथमिक कांग्रेस पंचायत होंगी। इन पंचायतोंके प्राथमिक चुनावके लिये देशको उपयुक्त अंचलोंमें विभक्त किया जायेगा और प्राथमिक पंचायतोंके निर्वाचित सदस्योंकी संख्या पांच सौ निवासियोंपर एक सदस्यके अनुपातसे होगी। पंचायतकी सदस्य संख्या पाँचसे कम किसी हालतमें न होगी।

प्राथमिक पंचायतके चुनावमें खड़े होनेवाले उम्मेदवार निम्नलिखित शर्तोंका पालन करेगा — वह हाथसे कते सूतकी खादीके कपड़े पहननेका आदी हो, मद्यपी न हो किसी रूप या हालतमें वह अस्पृश्यता न मानता हो। अन्तर-साम्प्रदायिक एकतामें उसे विश्वास हो और सब धर्मोंका सम्मान करता हो। जाति, धर्म अथवा लिंगके बिना किसी प्रकार भेद भावके सबके लिये सुविधाकी समानतापर उसका विश्वास होना आवश्यक है।

प्राथमिक पंचायतकी सदस्यताका शुल्क सालाना एक रुपया होगा। प्राथमिक पंचायतके चुनावमें उम्मेदवारको एक रुपया शुल्क देना होगा। सफल उम्मेदवारोंको उस वर्षका सालाना चन्दा नहीं देना होगा जिस वर्ष वे निर्वाचित होंगे।

प्रतिनिधि निर्वाचन— प्राथमिक पंचायतोंके सदस्य कांग्रेसके प्रतिनिधि (डेलिगेट) चुनेंगे। यही प्रतिनिधि प्रांतीय कांग्रेस कमेटीके सदस्य होंगे। ये प्रतिनिधि जिला और तालुक कांग्रेस कमेटियोंके भी एक्स आफिशियो (पदेन) सदस्य होंगे।

प्रत्येक प्रांतके डेलीगेटोंकी संख्या उस प्रांतकी आबादीके प्रति एक लाखपर एक डेलीगेटके अनुपातसे होगी।

कार्यकारी सदस्य — कार्यकारी सदस्य वह समझा जायेगा जो निम्नलिखित शर्तोंका पालन करेगा। (१ स्वभावतः वह हाथसे कते सूतकी बनी खादी पहननेका आदी हो और मद्यपी न हो। किसी रूप या हालत में अस्पृश्यता न मानता हो। अन्तर-साम्प्रदायिक एकता पर विश्वास और सब धर्मोंका सम्मान करता हो। बिना किसी जाति, धर्म या लिङ्ग भेदभावके वह सबके लिये समान सुविधा और स्तरपर विश्वास करता हो। (२) कांग्रेस द्वारा समय समय पर निर्धारित किसी न किसी राष्ट्रीय अथवा रचनात्मक कार्यमें वह नियमित रूपसे अपना कुछ समय देता हो और आवेदन पत्रके साथ उसे इस आशयके घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करना होगा।

केवल कार्यकारी सदस्य ही सभी कांग्रेस कमेटियोंके चुनावमें उम्मेदवार हो सकेंगे किन्तु यह नियम प्राथमिक कांग्रेस कमेटीके लिये नहीं लागू होगा। उसके लिये वांछनीय योग्यताकी परिभाषा ऊपर प्राथमिक कांग्रेस पंचायतके अन्तर्गत की जा चुकी है।

किसी निर्वाचित कांग्रेस कमेटीका सदस्य—प्राथमिक कांग्रेस पंचायत का सदस्य भी इसमें आ जाता है—किसी ऐसी अन्य राजनीतिक पार्टीका सदस्य नहीं हो सकता जिसकी सदस्यता, विधान और कार्यक्रम पृथक हैं।

प्राथमिक कांग्रेस पंचायत और अन्य कांग्रेस कमेटियोंकी अवधि तीन सालकी होगी।

रियासतें—जो रियासतें भारतीय संघमें शामिल हो गयी हैं कांग्रेस संगठनकी दृष्टिसे उनका वही दर्जा होगा जैसा भारतके अन्य सभी हिस्सोंका होगा। इन रियासतोंको या तो नये प्रांत मान लिया जायेगा या मौजूदा प्रांतोंके साथ, कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी जैसा उचित समझेगी, मिला दिया जायेगा।

प्रांत—कांग्रेसका कार्य क्षेत्र भारतीय संघ होगा और निम्नलिखित उसके प्रांत होंगे: अजमेर-मेरवाड़, आंध्र, बिहार, पश्चिम बंगाल, आसाम, बम्बई (शहर) दिल्ली, नागपु, गुजरात, पूर्व पञ्जाब कर्णाटिक, तामिल नाद, केरल, संयुक्त प्रांत, महाकोशल उत्कल, महाराष्ट्र, विदर्भ और वे रियासतें जो पृथक कांग्रेस प्रांत मानी जायेंगी।

वार्षिक अधिवेशन—कांग्रेस अधिवेशन प्रति वर्ष होगा। निम्नलिखित स्वायत्त अधिकार प्राप्त संस्थाएं कांग्रेसके अन्तर्गत समझी जायेंगी (१ अखिल भारत वर्षीय चर्खा संघ (२) अ० भा० ग्राम उद्योग संघ (३) हिन्दुस्तानी तालीमी संघ (४) हरिजन सेवक संघ (५) गो सेवक संघ। द्रष्टव्य: कांग्रेस कमेटियों और कांग्रेस पचायतोंके लिये कार्यक्रम कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी द्वारा निर्धारित किया जायेगा।

(१५ वें पृष्ठका शेषांश)

स्थिति कुछ विशेष बदली नहीं है। हां बहुतसे हिन्दू जो बिना सोचे समझे अति साम्प्रदायिकताकी लहरमें बहे चले जा रहे थे वे कुछ ठिठक कर सोचने लगे हैं। यह एक बहुत बड़ा लाभ है बशर्ते कि पाकिस्तान इस असरको स्थायी होने दे। बड़ी मुसीबत तो यह कि मोक्ष तथा आध्यात्मिकताके क्षेत्रमें भले ही खुद सुधरनेसे जग सुधरता हो पर व्यावहारिक क्षेत्रमें दूसरे पक्षका भी सुधरना आवश्यक है।

यदि यह कहा जाय कि दूसरा पक्ष कभी सुधरेगा नहीं, वह ज्यादतियां करता जायगा और साम्प्रदायिकता बढ़ती जायगी तो इस प्रकार फुटकर खून करनेसे या फुटकर खून न करने देनेसे रुष्ट होनेपर काम न चलेगा।

आर्थिक संकटसे बचनेका अमरीकाका प्रयास

लेखक—श्री अयोध्या सिंह

राकफेलर मोर्गन कुनलोमब मेलां दुपों आदि अरब पतियोंके देश संयुक्त राष्ट्र अमरीकामें आर्थिक संकटकी बात साधारणजनोंको अजीबो गरीब लग सकती है। पर ऐसे लोग भूल जाते हैं कि पूंजीवादी व्यवस्था में —देखनेमें वह चाहे कितनी मजबूत हो समय-समय पर तथाकथित अतिरिक्त उत्पादनका संकट आया करता है, पूंजीवादी व्यवस्था और आर्थिक सङ्कटमें चोली दामनका सम्बन्ध है। स्वयं संयुक्त राष्ट्र अमरीका में ऐसे सङ्कट १९२०,१९२९ और १९३७ में आये। दस साल बाद आज फिर वही सङ्कट मुंह बाये अमरीकन पूंजीपतियों को निगलने चला आ रहा है।

आर्थिक संकट क्यों और कैसे ?

पर यह सङ्कट कैसे पैदा हुआ है ? यह सब जानते हैं कि दूसरे महा समरमें संयुक्त अमरीकाको कोई बड़ी क्षति नहीं हुई। एक तो वह युद्ध क्षेत्रसे बहुत दूर था, इसलिये उसपर बमबाजी तक न हुई। दूसरे युद्धके अन्तिम वर्षके पहले उसने बड़े पैमानेपर अपनी सेनाएं मैदानमें कभी नहीं उतारी। फलतः उसकी जन क्षति भी बहुत कम हुई। सारे युद्धकालमें उसके दो लाख बासठ हजार आदमी मारे गये, जबकि उसी कालमें अमरीकामें ३ लाख ५५ हजार आदमी दुर्घटनाओंके शिकार हुए। इनसब कारणों से युद्ध कालमें अपना उत्पादन और धन बढ़ानेका उसे सुनहरा मौका मिला। १९३९के उत्पादनको १०० मान लेनेपर उसके कारखानोंका उत्पादन १९४२ में १९२ १९४३ में २३७, १९४४ में २३१ और १९४५में १९७ था अर्थात युद्ध कालमें संयुक्त अमेरिकाके कारखानों का उत्पादन लगभग दूना हो गया था। यही हालत राष्ट्रकी आयकी भी हुई। बैंकोंमें जमा धनमें ६१ अरब डालर और सेविंगस बैंकमें जमा धनमें २२ अरब डालरकी वृद्धि युद्धकालमें हुई। पर यह धन था किसका ? युद्धकालमें किसने मुनाफा लूटा ?

संयुक्त अमरीकाके मजदूर संगठन औद्योगिक संघ सम्मेलन सी० आई० ओ० के मुख पत्र 'इकानामिक आउटलुकने १९-४६ के अन्तमें लिखा कि १९४२ ४५ के कालमें संयुक्त अमरीकाके व्यवसायी गुटों की औसत वार्षिक आयकर देनेके पूर्व १९-३६-३९ के कालकी औसत वार्षिक आयकी चारगुनी और कर देनेके बाद अढ़ाई गुनी थी। अटलांटिक रिफाइनिङ्ग कं० दि लांग-वेल लुम्बर कं०,पाउड्रेल और एलेग्जेण्डर और मोटांग कं० नामक चार कम्पनियोंने कर देनेके बाद ३००-८०० प्रतिशत मुनाफा कमाया, अन्य ९ कंम्पनियोंने दो सौ तीन सौ प्रतिशत, १४ कम्पनियोंने १००-२०० सौ प्रतिशत और २३ कंपनियों ने बीससे सौ प्रतिशत मुनाफा कमाया।

कुछ व्यवसायी गुटोंके युद्ध कालके मुनाफे पत्रोंमें प्रकाशित हो चुके हैं। दि वेस्टिङ्ग हाउस इलेक्ट्रिक एण्ड मैन्युफैक्चरिङ्ग कम्पनीने १९४२में सत्तर करोड़ नब्बे लाख, १९४४में ८३ करोड़ साठ लाख डालर कमाये। दि हेनरी जे० काइजर कम्पनीने अपने शिपयार्ड में कुल एक लाख डालर लगाये, पर मुनाफा लूटा चार करोड़ चालीस लाख डालर।

युद्धोत्तरकालके बाजारमें क्षणिक गर्मी क्यों ?

इसमें कोई शक नहीं कि युद्धके खतम होनेके बाद अमरीकाका घरेलू बाजार गर्म रहा। ऐसा क्यों हुआ ? इसका कारण यह था कि युद्ध कालमें संयुक्त अमरीकाका उत्पादन बढ़ा अवश्य, पर वह इतना काफी न था कि सामरिक और नागरिक दोनों आवश्यकताओंकी पूर्ति कर सकता। इसलिये दैनिक आवश्यकताओंकी वस्तुओंका उत्पादन या तो एकदम रोक दिया गया था या बहुत कम कर दिया गया था। फल यह हुआ कि लड़ाईके खतम होने पर दैनिक आवश्यकताकी चीजोंकी बड़ी मांग बनी रही। इस मांगने संयुक्त अमरीकाके घरेलू बाजारको गर्म कर दिया। १९४७ के ग्रीष्ममें वस्तुओंका मूल्य युद्धके पूर्व कालका दूना था। इसी सालमें सरकारके मूल्य नियन्त्रणको हटाते ही मूल्यमें ३३ प्रतियोंके मूल्यमें तो ५० प्रतिशत। पर क्या यह गर्मी स्थायी रह सकी ?

बाजारमें गर्मी आनेके साथ साथ एक बात और हुई। युद्ध कालमें अतिरिक्त समय काम करनेके कारण जो आमदनी हो जाया करती थी, वह अब न रही। जनसाधारणकी कुल आमदनी कम पड़ गयी। एक ओर दाम चढ़ गये और दूसरी ओर आय कम पड़ गयी। इससे जनसाधारणकी क्रय क्षमता पूर्ववत न रह सकी। ऐसी परिस्थितिमें यदि बाजारमें मन्दीकी हालत पैदा हो जाय तो आश्चर्य क्या ? यह परिस्थिति तथाकथित अतिरिक्त उत्पादनके संकटको अमरीकाके पास ला रही है। अमरीकन पूंजीवादी अर्थ शास्त्री यह सपने देख रहे थे कि युद्ध कालमें जो धन बैंकोंमें गया हुआ है, उसकी मददसे जनसाधारणकी क्रय क्षमता को काफी अरसे तक कायम रखा जा सकेगा और रोजगार अच्छी तरह चलेगा। किसी आर्थिक संकटका सामना न करना पड़ेगा। पर वस्तु स्थितिने उनकी इस आशा पर पानी फेर दिया। देखा यह गया कि जनताके अधिकांशकी बचत बहुत कम रही है और वह भी अब करीब करीब खर्च की जा चुकी है। फेडरल रिजर्व बोर्डके चेयरमैन मेनिनर एस० इक्लेसने पिछले जूनमें बतलाया कि अमरीकनोंका अधिकांश अपनी बचत खर्च कर चुका है। दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं खरीदनेकी क्षमता उसके पास नहीं है और अब उधार ले लेकर काम चला रहा है। दैनिक आवश्यकताकी वस्तुओंके उधार पर बिकनेके आंकड़े बड़े महत्व पूर्ण हैं। १९४५ के अन्तमें उधार बेची गयी वस्तुओंका मूल्य ६॥ अरब डालर था १९४७ के मार्चमें यह १० अरब और मईमें १० अरब ७० करोड़ डालर हो गया। ये आंकड़े भावी संकटके सूचक हैं।

औद्योगिक उत्पादनके आंकड़े भी इस बातको स्पष्ट बतलाते हैं कि संकट नजदीक आ रहा है। १९३५-३९ के उत्पादनको १०० मान लेने पर १९४५ का उत्पादन, २०३ था, पर इसके बाद यह

क्रमशः कम पड़ता गया १९४७ के पहले तीन महीनोंमें यह १८९ था, जूनमें १८४ और जुलाईमें १७८।

वस्तुओंके मूल्यने अभी गिरना शुरू नहीं किया। जिस दिन तेजीके साथ मूल्य का गिरना शुरू होगा, उसी दिनसे अतिरिक्त उत्पादनका संकट आरम्भ हो जायगा। फिलहाल जो चीज संयुक्त अमरीकाको इस संकटसे बचाये रख रही है वह है आयातसे ज्यादा निर्यात। वह अपना माल दूसरे देशोंको बड़े पैमाने पर दे रहा है पर उनसे खरीदता बहुत कम है। इससे अमरीकन जनसाधारणकी जरूरतकी चीजें बाहरसे नहीं आ पाती और वस्तुओंकेदामोंमें गिरावट नहीं आती। १९४६ में अमरीकाने ९ अरब डालरसे ज्यादाका माल बाहर भेजा लेकिन बाहरसे केवल उसकी आधी कीमतका माल मगाया। १९४७ के पहले चतुर्थांशमें ३॥ अरबका माल बाहर भेजा और मंगाया १॥ अरबका, १९४७ मईमें १ अरब ४० करोड़का माल भेजा मंगाया केवल ५० करोड़का

संकटसे बचनेसे प्रयासः

जब घरमें माल नहीं खपता तो बाहर बाजार खोजो; अपना माल वहां खपाओ; अपने यहां मूल्य न गिरने पाये इसके लिये विदेशी मालको न आने दो; संक्षेपमें अमरीकन नीतिका यही सार है। पर इस नीतिने भी एक बड़ा संकट पैदाकर दिया है चूंकि अमरीका खरीदता बहुत कम है! इससे अन्य देशोंके पास डालर की कमी आ गयी है। डालर न होनेसे अमरीकन माल खरीदा जाय तो कैसे? सोनेके बदलेमें डालर मिल सकते हैं, पर पर्याप्त मात्रामें डालर खरीदानेके लिये इतना सोना किसके पास है? फलतः ब्रिटेन, फ्रांस, मेक्सिको और यहां तक कि कनाडाको भी मजबूर होकर कम माल खरीदना पड़ रहा है।

अमरीकन उद्योगपति आज अपना निस्तार मार्शल योजनामें देख रहे हैं। इसीलिये वे और उनके पत्र उसका गुण गान जोर शोरसे कर रहे हैं; अमरीकन सरकारकी नकेल आज पूरी तरह उन बड़े बड़े उद्योगपतियोंके हाथमें है। इस सकारके जरिये वे अपना माल अथवा डालर अन्य देशोंकी सरकारको देंगे। उनकी सरकार ऐसे देशकी ही सरकारों को उधार माल अथवा डालर देनेको तैयार होगी, जो राष्ट्रीयकरण जैसी खतरनाक योजनाको छोड़ देगी और राष्ट्रीयकरण तथा इसी तरहकी अन्य खतरनाक बातों के हिमातियोंकी आवाज कुचलनेको तैयार होगी। संक्षेपमें उधार खाता केवल उन्हीं देशोंके साथ चलेगा जो अपने यहांके जनवादी अन्दोलनको नेस्त नाबूद करनेको तैयार होंगे। और इस सुकार्य (!) में मदद पहुचानेके लिये अमरीकन डालर और सेना है ही। अमरीकन उद्योगपति अपने अस्तित्व और भविष्य के लिये जनवादी आन्दोलन—किसान मजदूर, छात्र और युवा आंदोलनको सबसे ज्यादा खतरनाक समझते हैं। अतएव एक ओर वे अपने यहां हर्टले-टैक्ट जैसे काले कानूनोंको पासकर जनवादी आन्दोलन कुचल रहे और भावी संकट कालमें जो शक्तियां उनको खतम कर सकती हैं, उन्हें मटियामेट करनेकी चेष्टा कर रहे हैं। दूसरी ओर वे अपना बाजार अन्य देशोंमें सुरक्षित रखने और डालर साम्राज्य कायम करनेके लिये अन्य देशोंके प्रतिक्रियावादियोंको अपने यहां जन आंदोलन कुचलनेमें धन और सेना से मदद दे रहे हैं। अमरीकन उद्योग पति आज साफ शब्दोंमें जनवादी राष्ट्रों और जनवादी आन्दोलनके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर रहे हैं।

मार्शल योजनामें दो बड़ी सुविधाएं अमरीकन उद्योगपति देखते हैं। एक तो उनका धन कभी मारा न जायगा। अगर कहीं मारा गया तो अमरीकन सरकार के जरिये अमरीकन जनताको चुकाना पड़ेगा। दूसरा इसके जरिये अन्य देशोंकी सरकारोंकी नकेल अपने हाथमें रख सकेंगे और बाजार पर कब्जा जमाये रखनेके लिये वहांकी सरकारका हाथ में रहना अत्यन्त आवश्यक है।

पर क्या मार्शल योजना संकट दूर रख सकेगी?

अमरीकाके अर्थशास्त्रियों और राजनीतिज्ञोंका ख्याल है कि मार्शल योजनाके अन्तर्गत उधार डालर अथवा माल देकर संयुक्त अमरीका जो अभी माल बाहर जाता है उससे पचास अरब ज्यादाका माल हर साल बाहर भेज सकेगा। पर क्या इससे भावी संकट दूर रखा जा सकेगा?

इस सम्बन्धमें साम्यवादी अर्थशास्त्री ई० वर्गाका मत बहुत महत्वपूर्ण है। आंकड़ोंको पेश करते हुए उन्होंने दिखलाया है कि १९२०के संकटमें संयुक्त अमरीकाका उत्पादन१३प्रतिशत कम पड़ा, १९२९ के संकटमें ४६ प्रतिशत और १९३७के संकट में ३६ प्रतिशत। हम यह भी मान लें कि इस बारका संकट पहले संकटों जैसा भयंकर न होगा-यद्यपि वस्तु स्थिति इसके विपरीत संकेत करती है—और उत्पादन केवल १५ प्रतिशत कम पड़ेगा। पर आज कल संयुक्त अमरीका का कुल उत्पादन लगभग २ अरब डालरका है! अतएव उत्पादनमें १५ फी सदी कम पड़नेहैं मानी होंगे ३० अरब डालरका उत्पादन कम पड़ना और मार्शल योजनाके अन्तर्गत लगभग ६ अरबका ही माल बाहर भेजा जा सकेगा। उत्पादनको कम न पड़ने देनेके लिये बाकी लगभग २४ अरब डालरका माल कहां जायगा? इस प्रकार वर्गाके मतानुसार मार्शल योजना पर लगायी गयी आशाएं बालकी नींव पर खड़ी हैं। मार्शल योजना भी अमरीकन उद्योग पतियोंको आर्थिक संकटसे न बचा सकेगी। उन्हें इसके मुखमें पड़ना ही पड़ेगा। बहुत कुछ संभावना है कि यह संकट उन्हें भी अपने साथ ले जाय। इसीलिये आज वे बहुत हाथ पांव मार रहे हैं।

———

बात एक बड़े परिवार की है

—श्री शम्भुनाथ सकसेना

यह एक बड़ा घराना है। लक्ष्मी उस घरमें आठों पहर नृत्य करती है, धन और गौरवसे प्रमोदित अहम्मन्यताका वहां के वातावरणमें प्राधान्य हैं। उस परिवार का हरेक सदस्य रुपयेके बल अपने को श्रेष्ट समझता है और दूसरेको नीची नजरसे देखता है। उस परिवारकी नारियां बिचित्र हैं, दिन रात उनका काम दूसरों की निन्दा करना, ईर्षालु भावनासे आपस में व्यंङ्गोक्ति करना विलासमें डूबी रहना है। परिवारके संचालनकी बागडोर स्व-र्गीय... अमुक श्री के लड़के की बहूके हाथों में है, जो कि विधवा हैं। इन बहूजी के चार लड़के हैं। सबसे बड़े लड़केको फालिज मार गया है और बोलनेमें जुबान लड़खड़ाती है, ठीक तरहसे वह बात नहीं कर सकता। दिन रात उसका काम सिग-रेट पीना और निकम्मे लोगोंकी संगतिमें बैठ कर बातें करना है। उससे छोटा विचित्र प्रकृतिका लड़का है। सबसे कम बोलता है, सबसे अलग रहनेका प्रयत्न करता है, सबसे अधिक गुस्सावर है लेकिन ऊपरसे समुद्र-सा शान्त बना रहता है। तीसरा लड़का स्वस्थ है, हंसमुख है, सुन्दर और आकर्षक है। दूसरोंको उससे बातचीत करनेमें आनन्द आता है। चौथा लड़का एकदक अपंग है। शरीर उसका लुंज है और वह ठीकसे बात भी नहीं कर सकता। अपने अन्दरकी भावनाओं को व्यक्त करनेमें वह असमर्थ है। सांके-तिक भाषामें, कुछ हाथ और मुंहसे मुद्राएं बनाकर वह अपने विचार व्यक्त करना चाहता है लेकिन दूसरे उसे बहुत कम समझ पाते हैं। पागलोंकी तरह विस्फारित नेत्रोंसे वह अपने सामने वालोंकी तरफ देखता है और उस समय दूसरोंको ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह कुछ कहना चाहता है लेकिन वह क्या कहना चाहता है इसे कोई नहीं समझ पाता।

आजसे सात वर्ष पूर्व परिवारकी संचालिका बहूजीने इस अपंगका विवाह अपने विनोदके लिये एक दस वर्षकी भोली भाली लड़कीसे कर दिया था! जिसके लिये गुड़ियाका खेल सर्व प्रिय था और मिठाई उसके लिये जीवन-निधि थी। एक गरीब परिवारमें वह पैदा हुई थीं, जहां भर पेट दोजून उसे भोजन भी प्राप्त नहीं था। उस समय वह यह नही जानती थी कि विवाह किसे कहते हैं और इस पवित्र सम्बन्धके प्रति उसका उत्तरदायित्व क्या है? विवाह उसने एक खेल समझा था और वह खिलौनेकी तरह ही खेली थी। लेकिन आज वह सत्रह वर्ष की है। यौवनने उसे विवेक दिया है—सोचनेकी बुद्धि दी है और वह वेदनासे भर गई है। पर पहले जब मैंने उसे देखा था तो ऐसा लगा जैसे वह कोई ऐसा व्यक्ति चाहती है जिससे कि वह बात कर सके—उम्रके साथ साथ जो नई नई भावनाएं दरियाकी मौजों सी उसके अन्दर उठती हैं, उन्हें वह किसीके सामने व्यक्त करें और दूसरा उन भावनाओंको समझनेकी चेष्टा करे! उस समय मैंने यह भी महसूस किया था कि जिस श्री सम्पन्न वातावरणमें वह पल रही है, वह उसे रूचिकर नहीं है। और इस कारण उसकी अन्तर्वेदना बढ़ती जा रही हैं, लेकिन सम्भावना उसके भी व्यक्तीकरण की उन परिस्थितियोंमें नहीं थी। कल तक जो विलास-प्रिय सामग्रियां अज्ञानके कारण उसके लिये सर्वप्रिय थीं यौवनकी दहलीज पर पैर रखते ही वे उसके लिये भार स्वरुप हो गई थीं।

और इस परिवारकी इस बहूके विषय में अभी अभी शहरमें यह समाचार बिजलीकी त्वरित गति-सा कौंद गया है, कि अमुक परिवार की बहू न कद और जेवर लेकर घरके मोटर ड्राइबरके साथ भाग गई है। शहर भरमें इस समाचारको लेकर उसकी आलो चना और प्रत्यालोचनाकी प्रवृति पारे-सी ढुलकती फिर रही है। जितने मुंह हैं उतनी बात हैं उतने ही विचार हैं।। कुछ लोगोंका विचार है कि बहूने बड़ा बुरा काम किया। इतने बड़े परिवारकी नाक नीची कर दी। ऐसी भी क्या जवानी जिसमें अपना बुरा-भला न सोचा जा सके? कमसे कम लोक-लाज और समाज की तो चिन्ता की होती। और बहूके विषय में अन्तिम-निर्णय देते हुए वे कह देते हैं कि वह पतिता थी—कुलटा थी। कुछ दूसरे लोग हैं जो अमीरीकी भावनासे प्रभावित हैं और समझते हैं पारिवारिक श्रेष्टताके लोग ही लोक-लाजके लिये अपने जीवनकी आहुति दे सकते हैं — अनौचित्यसे किन्हीं भी परिस्थितियोंमें वे ही बच सकते हैं। वे लोग वाणीमें व्यङ्गका मिश्रण कर कहते हैं —आखिर वह थी किस घर की। जिस घरमें खानेके लिये अन्न नहीं और पहिननेके लिये पर्याप्त कपड़े नहीं। बड़ोंकी इज्जत क्या समझती —परिस्थिति लोक-लाजसे भला उसे क्या काम?

लेकिन मैं उस परिवारकी इन छोटी बहूजीके विषयमें इस प्रकार नहीं सोच पाता। जब मैं उनके विषयमें सोचता हूं तो करूणा और दयासे भावात्मक उन बहूजीका चेहरा मेरे सामने आ जाता है माना कि जिस वातावरणमें वे गत सात वर्षोंसे पल रही थीं उसमें आर्थिक कोई अभाव नहीं था। खाने-पहिननेकी कमी नहीं थी, नौकर थे सवारीके लिये मोटर थीं बग्घियां थीं और सभी वे साधन परि-वारमें उपलब्ध थे जिन्हें संयुक्त रूपमें 'अमीरी कहते हैं। लेकिन नारीके लिये अमीरी और उससे लगे हुए अपरिमित साधन ही तो सब कुछ नहीं है। इनके अलावामी वह कुछ चाहती और उन भावों को लेकर अपने अन्दर अभाव अनुभव करती है। नारी चाहती है कि उसके जीवन में एक ऐसा व्यक्ति अवश्य हो जो उसकी बात समझ सके समय आनेपर उसके दुख में सक्रिय हाथ बटा सके। नारी भावना कल्पनाकी मूर्ति है और उन भावना और कल्पनाओंको वह कोई सहयोगी लेकर चिन्तन करनेके लिए सदैव यत्नशील रहती है। ममत्व प्रधान और प्रकृतिकी ओरसे ही 'सिरजनहार' होनेके कारण उसके लिये पुरुषके सम्पर्ककी भावना प्राकृतिक है। वह अपने सहयोगके लिये— जीवनको गति-शील बनाये रखनेके लिये निरन्तर ऐसे

पुरुषकी चाह करती है जो शरीर और मन से स्वस्थ हो उसकी कल्पनाओंका पूरक हो। पुरुष, नारीके अन्तर्निहित अभावोंका एक व्यापक पूरक है बिना उसके उसका जीवन खोखला और नीरस है। ठीक यही बात पुरुषके साथ है। पारिवारिक -जीवन की संयुक्त संज्ञा ही स्त्री और पुरुषसे बनती है। एकके अभावकी पूर्ति दूसरेसे होती है। और तब यदि नारीको मात्र बिलासिनी या जेवर- जवाहिरातका गुलाम समझकर उसके अभावोंकी अवहेलना कर अजायबघरका खिलौना बनाया जाये, तो वह-कैसे ऐसे जीवनसे संतुष्ट रह सकती है —कैसे इस अभावके रहते जीवित रह सकती है।

मैं सोचता हूं—उन बहूजीको ऐसा ही उस परिवारमें खिलौना बना लिया गया था। परिवारकी संचालिकाके मस्तिष्कमें अहम्मन्यया और यथार्थसे अपरिचित रहनेके कारण कभी यह विचार भी नहीं आया था कि इस मनोरञ्जनके लिये किये यत्नका का क्या परिणाम होगा ? वे समझती थीं कि विलास और अमीरीके व्यापक साधन छोटीबहूको कभी सेक्स सम्बन्धी विचार ही पैदा न होने देंगे। लेकिन जो प्राकृतिक है वह सत्य और नित्य है।। उन्होंने यह जानते हुए भी कि उनका लड़का पंगु, अयोग्य और निरा मिट्टीका लोंदा है एक नारी जीवनको समाजके प्रतिबन्धों में बांधनेका असफल प्रयत्न किया। लेकिन वह उनका भ्रम था। उस भ्रमकी क्षति छोटी बहूजी क्यों उठातीं ? और इन विचारोंको सामने रख कर मैं छोटी बहूजीको दोषी नहीं ठहरा पाता। दोष परिवारकी सञ्चालिकाका था जिसके कारण परिवार नामपर धब्बा लगा।

——

गीत

विरह के श्यामल घनों से घिर गया आकाश मेरा !

१

ज्योति फूटी थी न रवि की
फैल पाई थी न लाली !
इस हृदय के गहन नभ में
भर न पाई थी उजाली !
चहकते उन पक्षियों के
साथ मन बोला नहीं था,
सांझ के झुट पुट तिमिर में खो गया उल्लास मेरा !
विरह के श्यामल घनों से घिर गया आकाश मेरा !!

२

साध की कलियों ! खिलो मत
बंद ही रहना पड़ेगा !
मधुर बचपन में तुम्हें
हिमवात यह सहना पड़ेगा !
मत्त हो कोयल न मन की
कूक पायेगी कभी भी;
आज पतझर बन गया प्रारम्भ से मधु मास मेरा !!
बिरह के श्यामल घनों से घिर गया आकाश मेरा ॥

३

प्राण की अवशेष आहो
पलक के सपनो मनोहर !
आज से रहना पड़ेगा
बन तुम्हें उर की धरोहर !
सोचता था कट सकेंगे
शीघ्र ही बन्धन दुखों के,
किन्तु दृढ़तर हो गया है और भी दुख—पाश मेरा !!
बिरह के श्यामल घनों से घिर गया आकाश मेरा ॥

४

आज जीवन की घड़ी हैं
उस कठिन युग की निशानी !
मैं न जिसको काट पाया
रह गयी केवल कहानी !
इन निराशा के क्षणों में
मिट चुकी आशा सुनहली,
किन्तु अब भी मिट न पाया मिलन का विश्वास मेरा !!
बिरह के श्यामल घनों से घिर गया आकाश मेरा ॥

—गंगा प्रसाद श्रीवास्तव 'नलिन'

बापू

पण्डित जवाहर लाल नेहरू

१९१६ का साल था। कोई ३२ साल से ऊपरकी बात है। तब मैंने बापू-को पहले पहल देखा था, और तबसे तो एक पूरा युग बीत गया है। लाजमी तौर पर हम बीते हुए जमानेकी तरफ देखते हैं और बेशुमार यादें ताजा हो जाती हैं। हिन्दुस्तानके इतिहासमें यह कितना अनोखा जमाना रहा है। सारे उतार चढ़ाव और हारजीतवाली उस सच्ची कहानीने वीर रसके काव्यका अनोखा रूप ले लिया है। हमारी मामूली जिन्दगियोंको भी रोमांचक कल्पनाके प्रकाशने छुआ, क्योंकि हम उस जमानेमें जिये, और हिन्दुस्तानके महान नाटकमें कम या ज्यादा हमने अपना पार्ट अदा किया।

यह जमाना सारी दुनियामें लड़ाइयों, क्रान्तियों और हिलानेवाली घटनाओंका जमाना रहा है। फिर भी हिन्दुस्तानकी घटनायें उनसे बिलकुल अलग और साफ दिखायी देती हैं क्योंकि वे बिलकुल दूसरी ही सतहपर हुई थीं। अगर कोई बापूके बारेमें काफी जाने बिना इस जमानेका अध्ययन करे, तो उसे ताज्जुब होगा कि हिन्दुस्तानमें यह सब कैसे और क्यों हुआ। इसे समझाना कठिन है। बुद्धिके ठण्ढे प्रकाशकी मददसे यह समझना भी कठिन है कि हममें से हरएक मर्द या औरतने जो कुछ किया, वह क्यों किया। कभी कभी यह होता है कि एक व्यक्ति या एक राष्ट्र भी किसी भावना या जोश में बह कर एक खास ढंगका काम करता है—कभी कभी ऊंचा और तारीफके लायक काम करता है, अक्सर नीचा और बुरा काम करता है। लेकिन वह जोश और वह भावना थोड़े समय बाद खतम हो जाती है और व्यक्ति जल्दी ही कर्म और अकर्म की अपनी मामूली सतहपर लौट आता है।

इस जमानेमें हिन्दुस्तानके बारेमें सिर्फ यही ताज्जुबकी बात नहीं थी कि सारे देशने एक ऊंची सतहपर काम किया, बल्कि यह भी थी कि उसने इतने लम्बे अरसेमें लगातार कम या ज्यादा उसी सतहपर काम किया। वह सचमुच तारीफ के लायक काम था। इसे तब तक आसानी से समझाया या समझा नहीं जा सकता, जब तक हम उस अचरजमें डालनेवाले व्यक्तिकी तरफ नहीं देखते, जिसने इस जमानेको बनाया है। एक बड़ी भारी मूर्ति की तरह बापू हिन्दुस्तानके इतिहासकी आधी सदीमें पांव फैला कर खड़े हैं। वह बड़ी भारी मूर्ति शरीरकी नहीं, बल्कि मन और आत्मा की है।

हम बापूके लिये शोक करते हैं और अपने को अनाथ महसूस करते हैं। लेकिन उनके तेजस्वी जीवनको देखते हुए शोक मनाने को है ही क्या? सचमुच दुनियाके इतिहासमें बिरले ही मनुष्योंके भागमें यह बदा होगा कि वे अपने ही जीवनमें इतनी बड़ी कामयाबी देख सकें। बापू हमारी कमजोरियों और त्रुटियोंके लिये दुःखी थे और हिन्दुस्तानको और ज्यादा ऊंचाई पर न ले जानेका उन्हें अफसोस था। उस दुःख और अफसोसको हम आसानीसे समझ सकते हैं। फिर भी कौन कह सकता है कि उनका जीवन असफल रहा? जिस चीजको उन्होंने छुआ, उसे कीमती और गुणवाली बना दिया। जो काम उन्होंने किया, उसका काफी अच्छा नतीजा निकला—हालांकि शायद उतना बड़ा नहीं जितने की वे आशा करते थे। हम पर यही छाप पड़ती थी कि वे जो कोई काम हाथमें लेंगे, उसमें सचमुच असफल हो ही नहीं सकते। गीताके उपदेशके मुताबिक वे फलकी इच्छा न रखते हुए स्थितप्रज्ञकी तरह उदासीन रह कर काम करते थे। इसलिये कामका फल उन्हें मिलता ही था।

कठिन कामों, हलचलों, और एकसी प्रवृत्तिवाले सामान्य जीवनसे भिन्न अनेक साहसोंसे भरी हुई उनकी लम्बी जिन्दगी में बेसुरा राग शायद ही कभी सुनायी पड़ता था। उनकी सारी विविध प्रवृत्तियों में ज्यादा ज्यादा मात्रामें एकरसता आती गयी और उनके मुंहसे निकलनेवाला हर एक शब्द और हर एक चेष्टा इसमें ठीक तरहसे जम गयी थी, और इस तरह बेजाने ही वे पूरे कलाकार बन गये, क्योंकि उन्होंने जीनेकी कला सीखी थी, अगरचे जीवनका जो ढङ्ग उन्होंने अख्तियार किया था वह दुनियांके ढङ्गसे बहुत भिन्न था। इससे यह बात साफ हो गयी कि सत्य और अच्छाईकी लगन, दूसरी चीजोंके अलावा, जीवनमें कैसी कलात्मकता प्रदान करती है

जैसे जैसे वह बूढ़े होते गये, उनका शरीर उनके भीतरकी शक्तिशाली आत्मा का सिर्फ एक वाहन जैसा दिखाई पड़ने लगा। उनकी बात सुनते हुए या उनको देखते हुए लोग उनके शरीरको भूल जाते थे और इस लिये जहां वे बैठते थे, वह जगह मन्दिर बन जाती थी, और जहां वे चलते थे, वह पूजा का स्थान बन जाता था।

उनके अवसानमें भी एक अनोखी भव्यता और कलापूर्णता थी। उन जैसे व्यक्तिके लिये और उनकी जैसी जिन्दगी के लिये हर दृष्टिकोणसे वह एक योग्य अन्त था। सचमुच उस मृत्युसे उनके जीवनका सबक ऊंचा उठ गया। मौतके समय वे अपनी शक्तियोंसे भरपूर थे और प्रार्थनाके वक्त उनकी मृत्यु हुई, जब कि बेशक वे मरना पसन्द करते। दो फिरकों के बीच एकता कायम करनेके लिये वे शहीद हुए। इसके लिये उन्होंने हमेशा काम किया था और खास करके पिछले एक या ज्यादा बरसोंसे तो उन्होंने इसके लिये लगातार मेहनत की थी। वे अचानक मर गये, जिस तरह कि सभी लोग मरना चाहेंगे। उनके बारेमें शरीरके घुलते जाने या लम्बे अरसे तक बीमार रहनेकी कोई बात ही पैदा नहीं हुई। ज्यादा उम्रमें इन्सानकी याददाश्तमें जो कमी आ जाती है, वह भी उनमें नहीं आयी। तब हम क्यों उनके लिये शोक करें? हमारी यादमें वे उस 'गुरु'की तरह हमेशा रहेंगे जिनके डग अन्ततक फुर्तीले रहे, जिनकी मुस्कान दूसरोंके ओठोंपर मुस्कान ला देती थी और जिनकी आंखों से हंसी छलकी पड़ती थी। उनकी शारीरिक और मानसिक शक्तियां अचूक थीं। अपने जीवन और मृत्यु दोनोंमें उनकी शक्तियां अपनी चरम सीमा पर पहुंची हुई थीं। वे हमारे मनमें और जिस युगमें हम रहते हैं, उसके मनमें अपनी ऐसी तसवीर छोड़ गये हैं, जो कभी मिट नहीं सकती।

(शेष २८ वें पृष्ठ पर)

अपने अनुयायियोंका उठाने वाले नेता

डा० कैलाश नाथ काटजू

गांधीजीमें ऐसी कौनसी विशेषता थी जिसके कारण वे ईश्वर प्रिय थे। कुछ लोग इसके उत्तरमें यह कहेंगे कि इसका कारण उनकी चतुर्मुखी प्रतिभाशक्ति थी। सचमुच ही यह ठीक है। लगभग ३० वर्ष तक वे भारतमें राष्ट्रीय आन्दोलन करते रहे और इतने समय तक कांग्रेसके पथ प्रदर्शक रहे। वे एक महान समाज सुधारक थे। स्त्री स्वातन्त्र्य और हरिजनोद्धारके लिये उन्होंने घोर प्रयत्न किये। अछूतोंके लिये वे अछूत थे। अपनी एक असाधारण प्रारम्भिक शिक्षा प्रणालीसे उन्होंने अशिक्षाओंको दूर करनेके लिये एक आन्दोलन चलाया अखिल भारतीय चर्खा संघ, अखिल भारतीय गृह उद्योग संघ और हरिजन सेवक संघके संस्थापक और अध्यक्ष थे। माता कस्तूरबाकी स्मृतिमें राष्ट्रने उनको १५० लाख रुपये अर्पित किये और वे स्वयं कस्तूरबा कोष ट्रस्टके बोर्डके अध्यक्ष की हैसियतसे सम्पूर्ण भारतमें उसकी गतिविधियोंका सञ्चालन करते थे। बम्बईमें उन्होंने एक प्राकृतिक चिकित्साशालाकी स्थापना की। वे एकपत्रकार थे। वे एक लेखक थे! वे एक ऐसे वक्ता थे कि पर्वत भी विचलित हो उठते थे। उन्होंने जो-जो कार्य किये उनमें जीवन फूंक दिया। निश्चय ही उनके बहुपक्षीय कार्य क्षेत्रके सम्बन्धमें कुछ कह सकना असम्भव है। संसार यह कहेगा कि एक ऐसा व्यक्ति था जो अविश्रांत रूपसे निरन्तर प्रदीप्त होनेवाले नक्षत्रके समान था। गांधीजी अपने कार्यको आराधनाके समान मानते थे। बीमारी, उपवास तथा स्वास्थ्य सुधारके दिनोंके अतिरिक्त उन्होंने कभी कामसे छुट्टी नहीं मनायी। उन्होंने दिवस, सप्ताह और वर्ष काम करनेमें व्यतीत कर दिये जैसे कि काम ही उनके लिये आरामकी चीज हो। प्रतिदिन वे लोगोंसे मिलते थे, आगन्तुकका स्वागत करते थे, बहुसंख्यक पत्रोंको पढ़ते और उत्तर देते थे, लेख लिखते थे, प्रार्थना सभामें भाषण करते थे! कई बार वे सम्पूर्ण भारतमें घूम चुके थे। लोग उनकी कार्यप्रणाली एवं सुन्दर स्वभावके सम्बन्धमें कहेंगे!

वे सौजन्यके दूत थे, किन्तु आचरणके सम्बन्धमें कोई भी समझौता करनेको तत्पर न थे, फिर भी क्षमाशील एवं विश्वास पूर्ण थे और जीवनकी उत्फुल्लता, और, सौन्दर्य और सु परिहास उनमेंसे प्रस्फुटित होता था। उनकी विजयी मुस्कान और प्रसन्नतापूर्ण हंसी सब प्रकारके दुःखोंको दूर कर देती थी। जहां भी वे रहते थे वहां शांति और सन्तोषका साम्राज्य छा जाता था और अपने महान कार्यभार को वे पुष्पके समान वहन करतेथे। हम भारतीयोंको कभी कभी अनियमित जीवन वाला कहा जाता है किन्तु गांधीजीका जीवन बहुत नियमित था।

लोग उनके जीवनको तपवाला जीवन कहेंगे। यह एक ऐसा पुरुष था जो विश्वके सम्पूर्ण सुखोंसे बचता रहा। उनकी तपस्या सचमुच अद्वितीय थी और साधारणतम भोजनपर उन्होंने अपने आपको सबल बनाये रखा।

आधी शताब्दी तक उनके सत्यके प्रयोग, अहिंसामें उनके अगाध विश्वास और राजनीतिमें भी बुराइयोंसे दूर रहने की उनकी भावनाके सम्बन्धमें लोग जोर देंगे। उन्होंने राजनीतिमें आध्यात्मिक भावनाका समावेश किया। उनका यह विश्वास था कि जो चीज एक व्यक्तिके लिये अच्छी है वह राष्ट्रोंके लिये भी अच्छी और करने योग्य है। जब विश्वासमें हिंसा का सागर उमड़ता था तो वे उसमें चट्टान के समान अडिग रहे और उनकी यह विशेषता समयके साथ साथ सम्पूर्ण पश्चिमी संसारमें अधिकाधिक मानी जायगी। ऐसा ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण मानवता महान सङ्कटके समीप है और गांधीजीका सन्देश मनुष्यकी संतप्त आत्मा के लिये एक अमृतके समान है।

यह सब सत्य है किन्तु मैं यह कहूंगा कि लाखों व्यक्ति गांधीजीको उस स्नेह-स्निग्ध के कारण याद करेंगे कि जो कि उन्होंने प्रदान किया। वे बच्चोंके प्रति प्रेम रखनेके लिये प्रसिद्ध थे। सब जातियोंके

लेखक

हजारों धनी और निर्धन व्यक्ति उनको अपने पिताके समान मानते थे। वे अपनी कठिनाइयां, सुख और दुखके क्षणोंमें उनका आश्रय लेते थे और उनमें निश्चय पितृत्व की भावना पाते थे। बीमारीमें एक चिकित्सकके रूपमें वे उनकी देखभाल करते थे अपने पारिवारिक झंझटोंमें वे उनसे सलाह लेते थे और यदि सम्बन्धित व्यक्ति सर्व प्रथम उन्हें तत्ससम्बन्धी सूचना नहीं देता था तो वे बुरा मानते थे। अपने संसार व्यापी कार्य होते हुए भी कोई सलाह मांगनेवाला ऐसा पत्र नहीं था जिसका कि उन्होंने उत्तर नहीं दिया। उनकी सहानुभूति तार द्वारा, पत्र द्वारा अथवा किसी व्यक्तिके द्वारा प्राप्त होती थी। इन सब लाखों व्यक्तियोंके लिये गांधीजी हमेशा विद्यमान थे और मेरे लिये यह कहना कठिन है इनके जीवन और चरित्र पर उनका कितना स्थायी प्रभाव था। यह एक ऐसा नेता था जिसने अपने सब अनुयायियोंको उच्चतम नैतिक स्तर पर पहुंचाया और निश्चय ही वर्षों तक कांग्रेस का सहयोग होनेके साथ साथ चुपचाप सत्यता, अहिंसा, आस्था और देशभर के प्रति प्रेमका पक्षपाती रहा। मैं और लाखों अन्य व्यक्ति अपने इस पिताके निधनपर शोक मनाते हैं। हम सचमुच अनाथ होनेका अनुभव करते हैं।

गांधीजी गीताके आदर्श कर्मयोगी थे और दुखी लोगोंके प्रति उनके हृदयमें महान दया थी। जैसे जैसे शताब्दियां गुजरती जायंगी गौतम बुद्ध और जीसस क्राइस्टके समान उनका प्रभाव बढ़ता जायगा और सारे विश्वके पुरुषों और स्त्रियोंके हृदयको पवित्र करेगा। वन्दे मातरम् जय हिन्द

साम्प्रदायिक एकता

श्री महेन्द्र सेन

भारत वर्षमें हिन्दू-मुस्लिम प्रश्नपर बहुत कुछ वाद-विवाद होता रहा है और होता रहेगा। क्योंकि अभीतक हिन्दू-मुस्लिम प्रश्नपर कोई भी निर्णय नहीं हो सका है।

वास्तवमें मुसलमानों द्वारा फैलायी हुई साम्प्रदायिकता तथा अन्य जातियोंके प्रति प्रस्तारित घृणासे भारतवर्षको कितनी महान् हानि हुई है यह अब कुछ कहनेकी बात नहीं है। हमारी कमजोर नीतिके कारण ही वास्तवमें उनको इतना अनिष्ट करनेका दुःसाहस हो सका है। और आज मातृभूमिके दो टुकड़े हो गये हैं। निकट भविष्यमें भारत सुखचैनसे रह सकेगा। इसमें भी आज सन्देह होने लगा है।

अतएव भविष्यमें हम जो भी नीति ग्रहण करें, बहुत ही सोच समझकर ग्रहण करनी चाहिये और उसमें विशेष ध्यान इस बातका रखना चाहिये कि फिर ऐसा कोई अवसर भारतवर्षके इतिहासमें न आ पाये जैसा कि इस बार आया।

यदि गहराईसे विचार किया जाय तो इस साम्प्रदायिक विषकी जड़ हमारे धार्मिक अन्तरभेद नहीं अपितु सांस्कृतिक सामाजिक तथा ऐतिहासिक अन्तरभेद हैं। यदि केवल धार्मिक ही कारण होते तो आज केवल हिन्दू-मुसलमान ही नहीं जैन, बौध ईसाई, पारसी, हिन्दू, तथा मुसलमान सभी एक दूसरेके लहूके प्यासे होते! परन्तु वस्तुस्थिति इससे कुछ भिन्न है। केवल हिन्दू मुस्लिम ही अधिक आपसमें लड़ते हैं।

प्रत्येक विवेक पूर्ण व्यक्ति यह अवश्य स्वीकार करेगा कि प्रत्येक व्यक्ति विशेषको अपनी ईश्वरोपासना करनेका अपना ही ढंग निर्धारित करनेका पूर्णाधिकार है। और यह बिलकुल व्यक्तिगत बात है। इसलिये इसमें लड़ाई, झगड़ेका कोई स्थान नहीं। परन्तु व सभ्यता और संस्कृतिमें अन्तर होता है, हमारे सामाजिक दृष्टिकोण में भिन्नता होती है हमारी ऐतिहासिक परम्परा भिन्न होती है, तभी राष्ट्रमें साम्प्रदायिकताके विषका बीजारोपण होता है।

अपने राष्ट्रको हम चाहे भारतीय कहें, चाहे हिन्दू कहें अथवा इण्डियन नेशन कहें, या और भी किसी नामसे सम्बोधित करें, इस पर वादविवाद करना सर्वथा व्यर्थ हैं। हमें तो उसकी परिभाषा पर ध्यान देना है और राष्ट्रकी परिभाषा अर्थात राष्ट्रीय कौन हो सकता है इस पर विचार करना है।

जिस प्रकार जैन सम्प्रदायके सारे रीति रिवाज एक होते हुए भी उनके ईश्वरोपासनाका निराला ढंग है, बौद्धोंके साथ भी यही बात है। हम जानना चाहते हैं कि जैसे पारसी इस देशकी सभ्यता तथा संस्कृतिको अपनाते जाते हैं उसी प्रकार क्या मुसलमान भी इस देशके रहन सहनको अपनानेको तैयार हैं? हम पूछते हैं कि क्यों नहीं वे भारतके उज्ज्वल इतिहासके राजनीतिक तथा सामाजिक नेताओंको अपना नेता मानते? इसमें किस प्रकार उनका धर्म रुकावट पैदा करता है?

> साम्प्रदायिक वैमनस्यकी जड़ हमारी धार्मिक भिन्नता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक तथा ऐतिहासिक भिन्नता है।

सच्चा राष्ट्रीय वही हो सकता है जो किसी भी देशकी, भाषा, संस्कृति, सभ्यता इतिहास अपनाये और उस देशके मान बिन्दुओंका सम्मान करनेकी आदत डालें। जबतक इनमें भिन्नता रहेगी उस समय तक उसका गैर होना दूर नहीं हो सकता।

भारतीय संस्कृति, सभ्यता, इतिहास अर्थात हिन्दू संस्कृति, सभ्यता, इतिहास वास्तवमें एक ही बात है। परन्तु इसको नाम कुछ भी दें, हमारे देशमें यही प्रधान है। और यह सब इतनी उच्च कोटिकी हैं कि इसको अपनानेमें कोई संकोच नहीं होना चाहिये। बढ़ा भारत जिस संस्कृतिके कारण जगत् गुरु था वह समय बहुत दूर नहीं गया है और फिर एक बार उसी सभ्यताका प्रस्तार करके भारत-सन्तान सारे संसारको शांति और सुखका दिव्य सदेश दे सकती है इसमें भी कोई संदेह नहीं है। अतएव किस प्रकारसे इस राष्ट्रका प्रत्येक नागरिक इस संस्कृतिको अपनाये यह प्रश्न रह जाता है और सब इसको अपनायेंगे तभी एकता सम्भव है अन्यथा नहीं।

यदि मुसलमान नमाज पढ़ें, कुरान पढ़ें परन्तु हिन्दीमें मस्जिदमें जांय; अपने त्योहार मनायें परन्तु अपने नाम हिन्दी नाम रखें; हिन्दी भाषाका प्रयोग करें, हिन्दुओंकी तरह रहें, हिन्दुओंकी भांति रस्मो रिवाज रखें, भारतीय इतिहास के उज्वल कर्मठोंको उसी आदरकी दृष्टिसे देखें जिस प्रकार हिन्दू मानते हैं। तो फिर जिस प्रकार अन्य सारे सम्प्रदाय एक हो गये हैं उसी प्रकार मुसलमान मुसलमान ही रहते हुए भी भारत वर्षके सच्चे राष्ट्रीय बनकर इस महान राष्ट्रमें समाकर एक रूप हो सकते हैं।

उदाहरणार्थ--मुसलमानोंके विवाह बिल्कुल हिन्दुओंकी भांति हो सकते हैं केवल वेदमन्त्रोंके स्थान पर कुरान शरीफकी आयतोंका उच्चारण किया जा सकता है और वह भी हिन्दीमें।

हां उनकी शव-दाहकी विधि यथावत् रह सकती है और वह कब्र बना सकते क्योंकि अग्नि संस्कार करनेसे उनके धार्मिक विश्वास पर आघात होता है। (मुसलमान संप्रदायका विश्वास है कि कयामतके दिन सारे मुरदे खड़े हो जायंगे और उनका न्याय खदाके सामने होगा)

यदि ऐसा हो जाय और ऐसा होनेमें उनका धर्म किसी भी प्रकारसे उनके मार्ग में बाधा नहीं डालता तो मुसलमान, जैन, बौद्ध पारसी इसाई वैदिक सनातन वैष्णव ब्रह्म अथवा अन्य सम्प्रदाय मिल कर जो भी राष्ट्र निर्माण होगा निश्चय ही एक अखण्ड, तेजस्वी तथा शक्तिशाली राष्ट्र होगा, इसमें संदेह नहीं। फिर उस राष्टको हम हिन्दू राष्ट्र कहें, भारतीय कहें, इण्डियन नेशन कहें इस पर निर्णय करना कोई महत्वपूर्ण प्रश्न नहीं रह जाता।

महात्मा गांधी और गणेशशङ्कर विद्यार्थी

लेखक—श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

एक दिन महात्मा गांधीजी एक हिन्दू भाईको समझा रहे थे, हमारी अहिंसा किसी अशक्त, निराधार, और डरपोक लोगोंकी अहिंसा नहीं है, यदि है तो उसकी कोई कीमत नहीं गिननी चाहिये "अशक्तः सहजः साधु" अर्थात् असमर्थ तो मजबूरन साधु होता ही है, लेकिन हम तो अहिंसाके सिपाही हैं जो मौका आने पर कट भी जायेंगे।

हमें तो गणेशशंकर विद्यार्थी बनना चाहिये। गणेशशङ्करकी तरह आप एक एक आदमी अपना अपना अलग शान्ति दल बना सकते हैं? लेकिन सवाल यह है कि विद्यार्थीकी तरह ऐसे कितने आदमी हैं। गणेशशङ्करने अहिंसाकी सेवाका एक बहुत ऊंचा आदर्श हमारे सामने रख दिया, वह भले ही मर गया लेकिन उसकी आत्माहुति व्यर्थ नहीं गई है, उसकी आत्मा मेरे दिल पर काम करती रहती है, मुझे जब उसकी याद आती है, तो उससे ईर्ष्या होती है, इस देशमें दूसरा गणेशशंकर क्यों नहीं पैदा होता है? हम थोड़ी देरके लिये मान सकते हैं कि उसकी परम्परा समाप्त हो गई, लेकिन वह इतिहासमें अमर हो गया। उसकी अहिंसा सिद्ध अहिंसा थी, उसीकी तरह. कुल्हाड़ीके प्रहार सहते हुए मैं शान्तिपूर्वक मरूं, तो मेरी अहिंसा भी सिद्ध होगी। मेरा भी यही सुख स्वप्न है कि मैं उसीकी तरह मरूं, एक तरफ से एक मनुष्य मुझ पर कुल्हाड़ी चला रहा हो, दूसरी तरफसे दूसरा बरछी मार रहा हो, तीसरा लाठी मार रहा हो, और चौथा लात घूसे बरसाता जाता हो, ऐसी अवस्थामें भी मैं खूब शान्त रहूं और लोगोंसे शान्त रहनेको कहूं और खुद हंसता हुआ मरूं ऐसा भाग्य मैं चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि मुझे ऐसा मौका मिले और आपको भी मिले। गणेशशङ्करको ऐसा ही मौका मिला था, इसीलिये उसकी याद आने पर ईर्ष्या होती है। क्यों नहीं मुझको वह मौका मिलता? गणेशशङ्करके जीवनसे अहिंसाका पाना सीखो देखो, कितनी बहादुरीसे हंसते हुए बिना खाये पीये अपने भाइयोंके हाथसे उसने मृत्यु पाई, इसी तरहकी लड़ाई हमें अंग्रेजों और गुण्डों बदमाशोंसे लड़नी है यदि हमारी ऐसी तैयारी नहीं है, तो आप अहिंसाकी पुकार करके घर आदि छोड़कर भागें नहीं, बल्कि आप शस्त्र बलसे उनका मुकाबला करके अपनी मां बहनोंकी रक्षा करें, परन्तु मैं मार्ग है, वहां सर्वोत्तम सरल साधन अपने दुश्मनोंसे बचनेका है, मुझे तो रह रहकर गणेशशङ्करकी याद आती है। उसीका आदर्श मैं आप लोगोंके सामने हमेशा रखता हूं, इसे समझो, हिन्दू मुसलमानोंकी सच्ची सेवा गणेशशङ्करकी तरह करना है। यही रास्ता दोनोंको एक दिन मिला दे सकता है और एक दूसरेको भाई बनानेमें मदद दे सकता है।" (विशाल भारत' अक्तूबर १९४१)

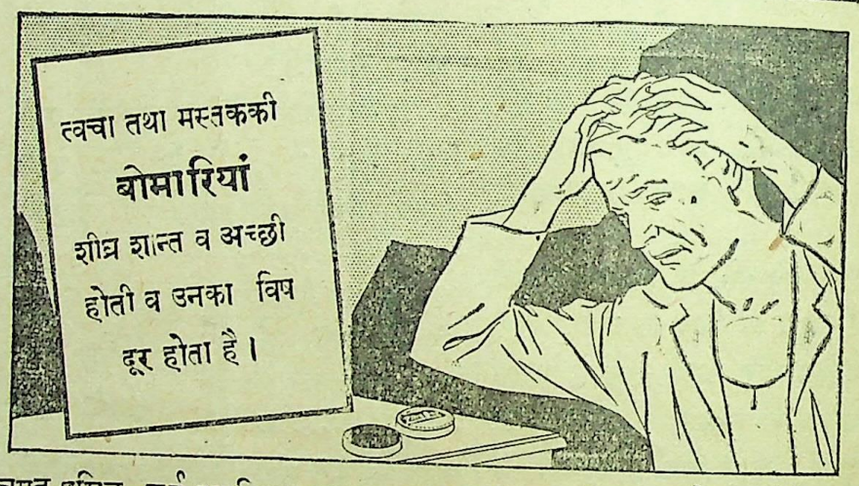

जगत् प्रसिद्ध चर्म-अपवित्रता-नाशक मलहम 'जम्बक' का प्रयोग कीजिए। 'जम्बक' में पड़े जड़ी-बूटीके शुद्ध तेल कष्ट तथा जलन कम करते, आक्रमणकारी कीड़ोंको नष्ट करते, विषयुक्त मवाद सुखा देते और इस प्रकार साफ तथा सुरक्षित तरीकोंसे रोग हटाते हैं। चमड़ा शीघ्र नीरोग व पूर्ण हो जाता है।

फुन्सी और दिदोरेसे लेकर लाल चिकोते, खाज व पांवके घावों तक सभी चमड़ेकी तकलीफों व रोगोंके लिए 'जम्बक' श्रेष्ठ दवा है।

पशु चर्बी रहित
होने की गारण्टी

ज म्ब क

व्यवहार करें

Zam-Buk

विश्व विख्यात
वनस्पति मलहम

एजेण्ट्स: स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट एण्ड कं० लि० इण्टाली, कलकत्ता

नं०

महात्मा गांधीकी देन

श्री भगवन्तशरण जौहरी एम० ए०

३० जनवरीकी सन्ध्या, विश्वके इतिहास पर वज्रपात बनकर आयी। उसने प्रेम, अहिंसा, शान्ति और सत्यके उपासकों को अनाथ बना दिया। स्वतन्त्र भारतके एक नागरिकने युगकी मानवताकी छातीमें खंजर भोंक दिया। हमारा ही देश क्या संसारका बच्चा बच्चातक स्तब्ध रह गया। हमने अपने मूर्तिमान सौभाग्यका गला घोंट दिया। बापूका निर्माण ही उन तत्वों से हुआ था जो किसी शहीदमें होते हैं।

अमेरिकाकी सुप्रसिद्ध लेखिका पर्ल-बकने लिखा है कि उनका दस वर्षका बालक इस संवादको सुन आंखोंमें आंसू भरकर बोला 'मैं सोचता हूं कि किसीने कभी बन्दूक बनाना सीखा ही न होता' एक किसान उनसे कह उठा 'संसारका प्रत्येक व्यक्ति गांधीजीको एक श्रेष्ठ व्यक्ति मानता था। उसने उनको क्यों मार डाला ?'

गांधीजीने हमें सिखाया कि उत्तम पुरुष वह है जो शत्रुके साथ भी उपकार करे, कांटे चुभोनेवालेके पथमें भी फूल बिछाये। सन १९०८ में जब उनपर आक्रमण हुआ तब भी उन्होंने इसी ध्येय का प्रतिपादन किया। २० जनवरीको बम फेंकनेवाले व्यक्तिको भी क्षमा कर देनेका आदेश आपने दिया। बापूका आत्म-बल और निर्भयता इतनी ज्वलन्त थीं कि यदि हत्यारेकी दृष्टि उनकी पुतलियोंसे टकरा जाती तो वह इतना भीषण कार्य कर न पाता। सन १९०८ की घटनापर ही यूरोपके पत्रोंने लिखा था कि गांधीजी वे महापुरुष हैं जिनका इतिहास और स्वर्गमें बुद्ध, ईसा और सुकरातके समान ही स्थान होगा। गांधीजीका जीवन ही त्याग और बलिदानका प्रतीक रहा। वे स्थितप्रज्ञ थे।

गांधीजीने आदर्शोंको जीवनकी नग्न और यथार्थ घटनाओंसे अपनाया। उस अधनंगे फकीरकी ऐसी एक घटना यों है।

एक बार दक्षिणमें घूमते घामते बापू ऐसे एक स्थानमें पहुंचे जो निर्जन और निर्जल था।

उस स्थानमें उन्होंने फटे मैले-कुचैले कपड़ेमें एक अत्यन्त कृष और मलीन अछूत नारीको देखा।

इस अस्वच्छ अछूत नारीको देखकर महात्माजी बहुत व्याकुल हुए और उन्होंने सादर उससे पूछा कि तुम इतनी मैली कुचैली क्यों हो ?

उस नारीने लज्जासे सिर नीचा कर लिया और बोली "मालिक! गरीबोंकी हालत वे अच्छी तरह नहीं समझ सकते जो आरामसे रहते हैं। मैं लगातार दस वर्षोंसे इसी धोतीको पहने रहती हूं। यहां पानी न मिलनेके कारण, प्रतिदिन इसे धो भी नहीं सकती।

यदि कभी पानी मिल भी जाता है तब मैं पहिले एक छोरको धोकर पहिन लेती हूं फिर दूसरा छोर धोती हूं।

यहां पानीके अभावके कारण दिन-रात इसे ही पहिने रहती हूं इसलिये आप ही बताईये, मैं साफ कैसे रह सकती हूं ?

मेरे ही समान करोड़ों आदमी आधा टुकड़ा पहिने रहते हैं और आधा पेट खाकर मुश्किलसे अपनेको जीवित रख रहे हैं।'

उस अछूत नारीकी दर्द भरी कहानी सुनकर महात्माजी बहुत द्रवित हुए और उन्होंने अपने कन्धेसे चादर उतारकर उसे प्रदान कर दी।

इस आश्चर्य विमुग्ध नारीसे महात्माजीने कहा 'देवी! चर्खा काता करो, इससे तुम्हारी सभी दरिद्रता दूर हो जायेगी।' उसी समय गांधीजीने यह व्रत लिया कि जबतक मेरे देशके सभी भाइयों को अच्छी तरहसे वस्त्र पहिननेको प्राप्त नहीं होता, तबतक मैं भी स्वल्प वस्त्र धारण करूंगा।

उस समयसे उनके कन्धे उघाड़े रहने लगे और उन्होंने केवल घुटनेतक ही वस्त्र धारण किया। जग हंसाईकी चिन्ता न करके उन्होंने सभी आराम त्याग दिये तथा जितेन्द्रिय बन गये।

जिस बातको वे ठीक समझते थे उसे किसी भी कारणसे उन्होंने न त्यागा। प्रार्थना सभामें कुरानकी शरहें पढ़नेका हिन्दुओंने कितना विरोध किया पर उन्होंने उसे अन्तिम श्वास तक जारी रखा।

एक बार अचानक बापूको सूझा कि परमेश्वरसे नाता बनाये रखनेका मौन ही सबसे श्रेष्ठ मार्ग है तबसे वह उनके स्वभावका एक अङ्ग बन गया। बापूके उपदेश नीचेके श्लोकमें समाविष्ट हैं:—

अहिंसा१ सत्य२ अस्तेय३
ब्रह्मचर्य४, असंग्रहः ।५
शरीरश्रम६ अस्वाद,७
सर्वत्र भयवर्जनः ।८
सर्वधर्मी९ समानत्व,
स्वदेशी,१० स्पर्शभावना ।११
ही एकादश सेवामः
नम्रत्वे व्रतनिश्चये ।

एक मुलाकातीने बापूसे प्रश्न किया "मैं बहैसियत एक ईसाईके अन्तर्राष्ट्रीय शान्तिके काममें किस तरह योग दे सकता हूं। किस प्रकार अहिंसा अन्तर्राष्ट्रीय अराजकताको नष्ट करके शान्ति-स्थापना में प्रभावकारी हो सकती है ?"

गांधीजीने उत्तर दिया—

एक ईसाईके नाते आप अपना सहयोग अहिंसात्मक मुकाबला करके दे सकते हैं, फिर भले ही ऐसा मुकाबला करते हुए आपको अपना सर्वस्व होम देना पड़े। जबतक बड़े-बड़े राष्ट्र अपने यहां निःशस्त्रीकरण करनेका साहसपूर्वक निर्णय नहीं करेंगे तबतक शांति स्थापित होनेकी नहीं। मेरे हृदयमें तो आधी सदी के निरन्तर अनुभव और प्रयोगके बाद इतना निःशंक विश्वास है और ऐसा विश्वास आज पहिलेसे भी अधिक ज्वलंत हो गया है कि केवल अहिंसामें ही मानव जातिका उद्धार निहित है। बाइबिलकी शिक्षाका भी सार मुख्यतः यही है।

भारतमें उन्होंने इसी सिद्धान्तकी शिक्षा दी कि भारतीय भी मनुष्य मनुष्य सब समान हैं। इसको किसी यूरोपीयसे घटकर न मानें। भारत ही नहीं समस्त एशियाको गांधीजीने राष्ट्रीयता व स्वतन्त्रताका सन्देश दिया। अहिंसाके बलसे भारत ही क्या, ब्रह्मा व लङ्काको भी उन्होंने आजादी दिलायी। शताब्दियोंका काम बापूने वर्षों, महीनों और दिनोंमें किया। राजनीतिसे परे मानवताके साम्राज्यमें वे अमर हैं क्योंकि यह श्लोक बचपनमें ही गांधीजीके मनपर अंकित हो गया था

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम ।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

(यह हमारा है और वह पराया, ऐसा विचार तो छोटे मनके लोग किया करते हैं, उदार चरित्र व्यक्ति तो सारी दुनिया को ही अपना कुटुम्ब मानते हैं।)

चीनके गृह-युद्धकी परिस्थिति

लेखकः—श्रीचन्द्रोदय दीक्षित

चीनके गृह युद्धकी स्थिति कम्युनिस्टों के तथा कथित ६ आक्रमणके बाद बहुत ही चिन्ताजनक हो गयी है। राष्ट्रीय सरकारकी स्थिति बिगड़ती चली जा रही है। पिछले वर्षकी तुलनामें राष्ट्रीय चीन की इस वर्ष दशा बहुत ही खराब हो चुकी है। यद्यपि राष्ट्रीय सरकारकी सेनाओंने गत मार्चमें शांसी प्रांतसे कम्युनिस्ट सेनाओंको निकाल दिया था लेकिन उससे कम्युनिस्टोंको विशेष हानि नहीं हुई थी और वे पड़ोसके प्रान्तोंमें चले गये थे जहां पर उन्होंने नवीन क्षेत्रोंपर अपना अधिकार जमा लिया था। इसी प्रकार शटङ्ग पर भी राष्ट्रीय सरकारी सेनाओंकी जीत हुई थी पर अधिक टिकाऊ नहीं रही। यद्यपि इन विजयोंसे सरकारी सेनाओंके अधिकारमें शिङ्गताओं शिनान रेलवे और चेफू तथा विहैवी नामक बन्दरगाह आ गये थे। कम्युनिस्ट सेनायें पहाड़ोंमें चली गई थीं और कुछ कियांग्सूके दक्षिणकी ओर चली गई थीं। ल्यूपोचेंगके अधिनायकत्वमें कम्युनिष्ट सेनायें राष्ट्रीय सेनाओंको चीरती हुई होनान, अहनवी औरइपेके पूर्वी क्षेत्रों तक पहुंच गई। ये सेनायें आज यांग्सी नदी के तटपर खड़ी हुई हैं। कम्युनिस्ट सेनाओं के एक भागने यलो नदी (पीली नदी को पार कर लिया है और हेनानके पश्चिममें फैल रही है। पेकिङ्ग हान्को रेलवेपर भी कम्युनिस्टोंका अधिकार हो गया है इसके साथ ही टिन्स्टी पुकाओं रेलवेके एक अंशपर कम्युनिस्टोंका अधिकार हो गया है।

मन्चूरियाकी स्थिति और भी खतरनाक हो गयी है। सरकारी अधिकार केवल रेलके किनारेके क्षेत्रोंमें रह गया है। इसके साथ ही कुछ क्षेत्रोंमें मुकडेन, चंगचुन किरिन, इङ्गकाओ अन्टङ्ग चिनचाओंमें राष्ट्रीय सरकारका अधिकार है। मुकडेन और चङ्गचुनपर कम्युनिस्टोंका दबाव निरन्तर बढ़ता जा रहा है। दक्षिणी मंचुरियाके किरनि चङ्गचुनमें राष्ट्रीय फौजों की हालत बहुत ही नाजुक हो गयी है। रेलवेलाइनपर भी कम्युनिस्टोंका अधिकार आरम्भ हो गया है। चाहार और स्यूयानमें राष्ट्रीय सेनाओंका सुदृढ़ अधिकार है। गत वर्ष कलगानपर अधिकार हो जानेके बादसे राष्ट्रीय सेनाओंने कम्युनिस्टोंको निरन्तर पीछे ढकेल दिया है। उत्तरी चीनमें केवल कुछ ही रेलवे ऐसी कही जा सकती हैं जहांपर नियमित रूप से राष्ट्रीय सरकारके अधीनमें काम होता है। यह रेलवे शंघाई-नानकिङ्ग रेलवे, पेकिंग, कलगान, पावटाओं शन्हाईक्वान रेलवे हैं। इनमें भी कभी-कभी कम्युनिस्टों के आक्रमणसे अव्यवस्था हो जाती है। दूसरी सभी रेलवे या तो कम्युनिस्टों द्वारा बरबाद कर दी गयी हैं अथवा उन्हींके अधिकारमें चल रही हैं।

राष्ट्रीय मुद्रा

चानके गृह युद्धके कारण चीनकी राष्ट्रीय मुद्राकी बड़ी दुर्गति हो गयी है उसका मूल्य दिन प्रति दिन गिरता जा रहा है। इसकी विनिमय दर एक अमरीकी डालरके लिये १३००० चीनी डालर गत वर्षकी जनवरीमें थी। अक्तूबरमें वह दर ८० हजार से भी ऊंची हो गयी। इस गम्भीर स्थितिके साथ ही साथ राष्ट्रीय सरकारकी वैदेशिक नीतिमें भी दृढ़ता आ गयी है। कुछ समय पूर्व तक यह कहा जाता था कि वह अपनी वैदेशिकनीतिमें सभी शक्तिको प्रसन्न रखना चाहती हैं। अब वह बात नहीं है। अमरीकाकी नीतियोंका वह समर्थन करती है। अमरीकाकी ओर उसके इस झुकावका सूत्रपात जनरल वेडमेयेरके मिशनके समयसे होता है। जनरल वेडमेयरने राष्ट्रीय सरकारको अमरीकाकी सहायताका आश्वासन दिया लेकिन इसके साथ ही अमरीकाकी कुछ शर्तें भी सामने आ गयीं। चीनकी राष्ट्रीय सरकारको इस समय दो प्रधान खतरोंका सामना करना पड़ रहा था। एक ओर उसके अस्तित्वको कम्युनिस्ट शक्ति नष्ट कर देना चाहती थी और दूसरी ओर उसका सम्पूर्ण आर्थिक ढांचा नष्ट हो चुका था। वह बगैर बैसाखीकी सहायतासे खड़ा नहीं रह सकती थी। अमरीकाकी सहायतासे

चीनके कम्यूनिस्ट नेता

उसे अपनी जीवन-रक्षामें बहुत सहायता मिलनेकी आशा हुई।

चीनकी कोमितांग दलमें भी ऐसे लोगोंकी कमी नहीं थी जो अमरीकाकी सहायतासे सशङ्कित थे। वे कम्युनिस्टोंको नष्ट करनेके लिये स्वयं वैदेशिक शक्तिके गुलाम बन जानेके विरोधी थे। इसके विपरीत राष्ट्रीय सरकारके वे पूंजीवादी और औद्योगिक वर्गके लोग थे जो अमरीकाकी सहायताको स्वीकार कर लेने के पक्षमें थे। अन्तमें विजय इस विचारके लोगोंकी ही हो गयी और चीनने अमरीका की गुलामी स्वीकार करके उसकी आर्थिक और फौजी सहायता लेना स्वीकार कर लिया। चीनके यह पूंजीपति अमरीकासे समझौता करके यह आशा कर रहे थे कि जापानके आर्थिक क्षेत्रमें उन्हें भी हिस्सा मिलेगा। लेकिन अब तो यह भी स्पष्ट हो गया है कि जापानमें अमरीका अपने नियन्त्रणमें वहांके आर्थिक ढांचेको बड़ी मजबूतीसे खड़ा कर रहा है और साथ ही वह चीनमें राष्ट्रीय सरकारको उतनी सहायता नहीं दे रहा है जितनी उनकी ओरसे मांगी गयी थी। सम्भवतः यही कारण है कि चीनके उप-राष्ट्रपति डा० सनफोने यह घोषणा की थी कि यदि अमरीकाने चीनको पूरी सहायता न दी तो चीनको रूससे समझौता करना पड़ेगा। इस बातसे अमरीकामें भी चीनके प्रति रोष प्रदर्शन हुआ है। हो सकता है इस बातसे दोनों देशोंकी गलतफहमी बढ़ जाय। चीनकी राष्ट्रीय सरकारने डा०

(शेष २८ वेंपृष्ठपर)

बापूबिनसूनासेवाग्राम

श्री उमाशङ्कर शुक्ल

गांधीके कारण गत ग्यारह वर्षोंसे सेवाग्रामको बहुत महत्व प्राप्त हो गया है। जब जब देश पर संकट आया—सेवाग्रामके संत महात्मा गांधीने उसे अपने ऊपर झेला और मार्ग प्रदर्शन किया। कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक निर्णय करने का सौभाग्य इस पुण्य भूमिको प्राप्त हुआ है। सन् १९४२के 'अगस्त प्रस्ताव'की रूप रेखा यहीं बनीं थी सर स्टेफोर्ड क्रिप्सने आश्रमवासियोंके साथ बैठकर यहीं भोजन किया था देशके चोटीके नेता बापूसे परामर्श करनेके लिये यहीं दौड़े आते थे और राष्ट्रमाता कस्तूरबाकी स्मृतिमें 'कस्तूरबा ट्रस्टका'महोत्सव यहीं हुआ था। सेवाग्रामकी ओर हिन्दुस्तान की ही नहीं सारी दुनियाकी आंखें लगी रहती थीं क्योंकि विश्वका महापुरुष यहीं बैठकर अपनी सधना करता था पर आज बापूके न रहनेसे सेवाग्राम अनाथ हो गया है। अब वहां न चहल पहल दिखाई देती है और न कोई विशेष उत्साह ही नजर आता है—पर बापूने सेवाग्राममें रहकर जो कुछ किया है—उसकी झांकी आज भी सेवाग्राममें अभी दिखाई देती सेवाग्राम अभी भी अपना महत्व सजाये हुए है

सेवाग्राम स्वयं स्मारक है

उस दिन जब मैंने आश्रमके मैनेजर श्री चमनलाल भाईसे पूछा कि बापूकी स्मृतिमें क्या कुछ सेवाग्राममें बनेगा—तो उन्होंने उत्तर दिया कि बापूकी स्मृति तो सेवाग्राम ही है। सेवाग्रामसे बढ़कर बापू की स्मृति और क्या हो सकती है। श्री चमनलाल भाईके कथनमें सत्यता है। सेवाग्रामका महत्व तो अब दिन दिन बढ़ेगा और इसमें कोई सन्देह नहीं कि सेवाग्राम कुछ समयमें तीर्थ स्थान बन जायगा। देश विदेशके लोग हिन्दुस्तान अब तक ताजमहल देखने आते थे—पर अब वे सेवाग्राम बिना देखे न लौटेंगे। सेवाग्रामकी मिट्टीमें बापूने वह गुण पैदा कर दिया है जो कोटि कोटि मानवोंमें सदैव प्रेरणा, स्फूर्ति व बल प्रदान करता रहेगा।

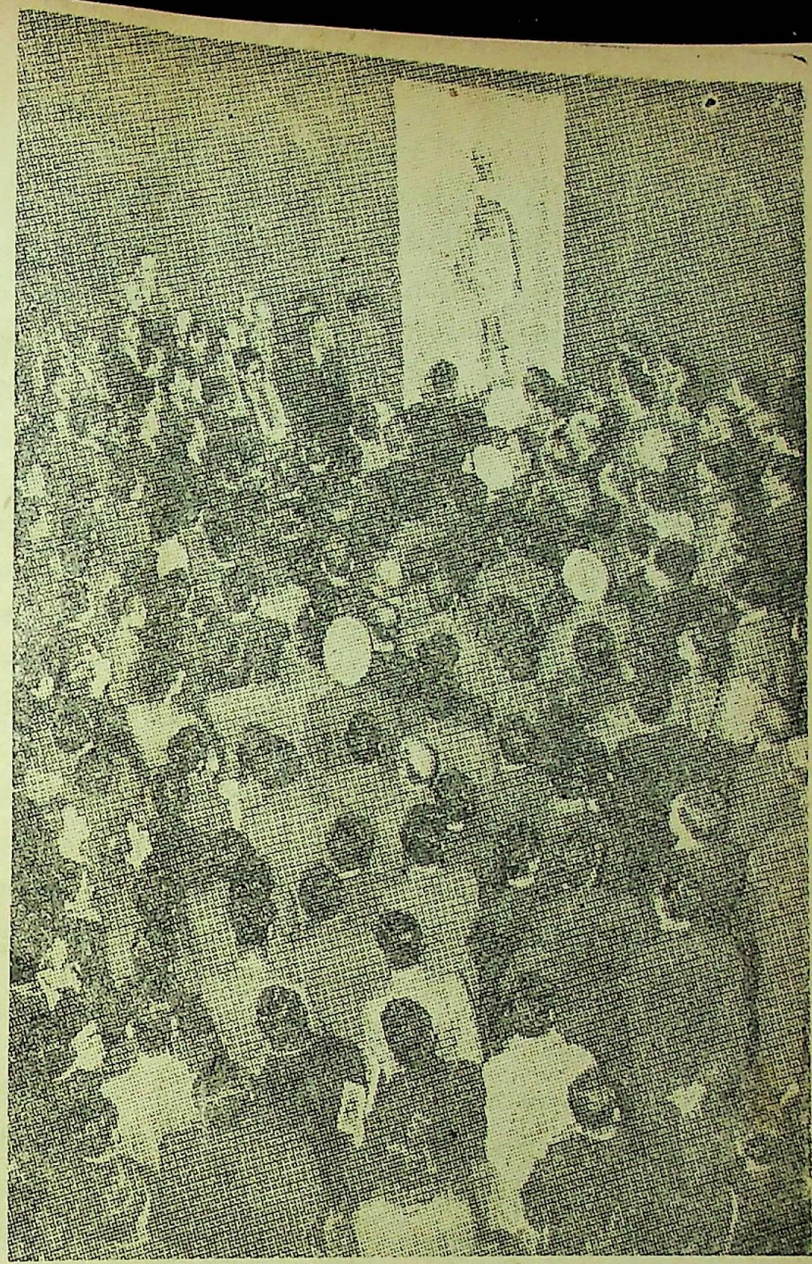

सात समुन्दर पार लन्दनमें बापूके लिये विराट शोक सभा

रचनात्मक कार्यकी महत्ता

यहां पर जो संस्थाएं कायम की गई हैं वे हिन्दुस्तानका मार्ग प्रदर्शन करेंगी। ये संस्थाएं जनताकी सेवा तथा देशकी उन्नतिके लिये गत दस वर्षोंसे कार्य कर रही हैं। रचनात्मक कार्यका बहुत ही महत्व है और इससे देशकी प्रगतिमें बहुत सहायता होती है। इसलिए महात्मा गांधी रचनात्मक कार्यपर जोर देते रहे हैं। उस दिन जब मैं सेवाग्रामके आचार्य आर्यनायकम्से बापूके निधन पर कुछ कहनेके लिये कहा तो उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा कि गांधीजीका अगर सच्चा स्मारक कोई हो सकता है तो वह रचनात्मक कार्यक्रम ही है।

आज बापू हमारे बीच नहीं हैं—पर उन्होंने अपने जीवन कालमें जो कार्य किया है वह प्रकाशस्तंभका काम भविष्य में देगा। गांधीजीने अपने जीवनमें इतना काम किया है कि उसकी तुलना किसीसे नहीं की जा सकती। वे जगत को सत्य और अहिंसाका सन्देश देते रहे। शत्रुओंको भी उन्होंने अपना मित्र समझा और उन्हें प्रेमसे जीता। दुनियाके इतिहासमें बापूकी अहिंसाका अपना एक विशेष स्थान होगा।

प्रकाशकी खोजमें

सेवाग्राम भविष्यमें संसारको अलौकिक प्रकाश देगा। गांधीजीके साथ ही साथ वह भी अमर हो गया। गांधीजी सबके अपने थे। वे जब कभी भी किसी से बात करते तो ऐसा मालूम होता था कि बापू उसे बहुत चाहते हैं। अनुभवकी अग्नि परीक्षामें वह न राजनीतिज्ञ थे न

सुधारक न दार्शनिक थे, न आचार शास्त्री बल्कि इन सबका मिश्रण थे। वे मानवीय स्वतन्त्रताके महान रक्षक थे, गांधीजी आध्यात्मिक शस्त्रोंका प्रयोग करते थे। भारतमें सबसे बड़ी शांति रक्षिणी शक्ति वही थे।

उन्होंने समय समय पर लोगोंको सन्मार्गकी ओर प्रेरित किया उनका हर कार्यसेवाकी भावनासे ओत प्रोत था—स्वार्थकी उसमें गन्ध तक नहीं होती थी। गरीबोंके तो वे त्राता ही थे। हमेशा गरीबोंका ख्याल रखते थे। एक बारकी बात है वर्धासे सेवाग्राम तक मोटर सर्विस शुरू होने वाली थी—उससे तांगे वालोंके रोजगारको धक्का लगनेकी सम्भावना हुई। तांगे वालोंने बापूके पास अपनी आवाज पहुंचायी कि बापूजी मोटर सर्विस बन्द करवाइए अन्यथा हम भूखों मर जायंगे। फल यह हुआ कि मोटर सर्विस नहीं शुरू हुई

हमारा कर्तव्य

सेवाग्रामका वातावरण बिलकुल शांत है। हर आश्रमवासीके चेहरेपर उदासीनता झलक रही थी पर प्रभु इच्छा—उसे कौन रोक सकता है। हमारा कर्तव्य आज यही है कि हम गांधीजीके बताये हुए मार्ग पर चलें। उन्होंने जो पथ निर्धारित किया है—उस पर चलनेमें ही हमारा कल्याण है।

वहांकी समस्त संस्थाएं यद्यपि बापूके अभावको महसूस करती हैं पर बापूने अपने जीवनमें स्फूर्ति व बल इन संस्थाओंमें भरा है—उससे उत्साहित होकर वे अपना कार्य करेंगी। चर्खा संघ खादी प्रचार कार्यमें दत्तचित्त है तो गो सेवा संघ गोवंशकी उन्नतिके लिये प्रयत्नशील है। हिन्दुस्तानी ताजीमी संघ देशके गांवोंमें बुनियादी शिक्षाका प्रचार करनेमें व्यस्त है तो अखिल भारत ग्राम सुधारके कार्योंमें भिड़ा है।

सेवाग्राम उस प्रकाशकी खोजमें है जो बापूने उसे बताया था और वह सदा शान्ति, अहिंसा, सत्य व न्यायके पथ पर चलकर सारे जगतमें प्रकाश फैलायेगा।

बापू

(२१ वें पृष्ठका शेषांश)

वह तसवीर कभी धुन्धली नहीं होगी। मगर उनकी सिद्धि इससे बहुत ज्यादा है। उन्होंने हमारे मन और आत्माके तत्वोंमें प्रवेश करके उन्हें बदला है और उनको नये ढङ्गसे तैयार किया है। गांधी-युगकी पीढ़ीका तो अन्त हो जायेगा मगर गांधीका वह असर बना रहेगा और हर आनेवाली पीढ़ीको प्रभावित करता रहेगा, क्योंकि वह हिन्दुस्तानकी आत्माका एक अङ्ग बन गया है। जब इस देशमें हम रूहानी तौरपर कङ्गाल होते जा रहे थे, बापू हमें समृद्ध और बलवान बनानेके लिये हमारे बीचमें आये। और जो ताकत उन्होंने हमें दी, वह एक दिन या एक बरसकी नहीं है, बल्कि उससे हमारी राष्ट्रीय विरासतमें हमेशाके लिये भारी वृद्धि हो गयी है।

बापूने हिन्दुस्तानके लिये, दुनियाके लिये हम गरीबोंके लिये भी बहुत बड़ा काम किया है और उन्होंने उसे आश्चर्यजनक रीतिसे अच्छा किया है। अब हमारी बारी है कि हम उन्हें या उनकी यादको धोखा न दें बल्कि अपनी पूरी योग्यताके साथ उनके कामको आगे बढ़ाते रहें और जो प्रतिज्ञाएं हमने जितनी बार ली हैं, उन्हें पूरा करें। (हरिजनसेवकसे)

———

चीन गृह युद्धकी परिस्थिति

(२६ वें पृष्ठका शेषांश)

सनफोके वक्तव्यके सम्बन्धमें स्वीकृति अथवा अस्वीकृति पूर्ण कोई वक्तव्य नहीं दिया है। डा० सनफोका वक्तव्य उनकी व्यक्तिगत राय हीं समझी जानी चाहिये।

चीनकी आन्तरिक स्थिति भी बहुत ही बिगड़ गयी है। एक ओर देशके समस्त आर्थिक जीवनपर गिने पूंजीपतियोंका अधिकार है। उनकी वैयक्तिक पूंजी दिनरात बढ़ती चली जा रही है और दूसरी ओर वहांके नागरिकोंकी स्थिति भयावह हो गयी है! चीनकी राष्ट्रीय सरकारको उन शक्तियोंका सहयोग नहीं मिल रहा है जो स्वयं कम्युनिस्ट विरोधी होते हुए भी उदारवादी प्रजातान्त्रिक दृष्टिकोणके समर्थक हैं। चीनकी राष्ट्रीय सरकार आज आर्थिक और राजनीतिक दोनों ही क्षेत्रोंमें असफल सिद्ध हो रही है। एक ओर बावजूद अमरीकासे धन और अस्त्रशस्त्रोंकी सहायताके वह कम्युनिस्ट सेनाओंको पराजित करनेमें ही असफल नहीं वरन स्वयं पराजित होती जा रही है और दूसरी ओर आन्तरिक समस्याओंको सुलझानेमें भी सर्वदा असफल रही है। यही कारण है कि चीनी जनतापर उसका प्रभाव कम होता जा रहा है और उसके सहयोगसे भी वह वंचित होती जा रही है।

———

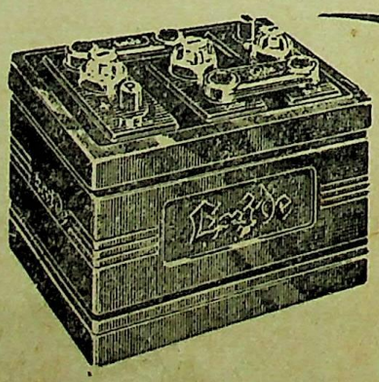

अन्त तक अच्छा कामदेनेके लिये बनायी गई

Exide

बैटरियां

कार, ट्रक और बसोंके लिये

Local Dealers :—Messrs. F. & C. OSLER Ltd.
12, Old Court House Street, Calcutta.

Ex769B

सहानुभूति

प्रो० देवी दयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

जुआ खेलते समय जबतक खिलाड़ी अपनी बाजी जीत लेनेका संयोग पाता है, तबतक उसकी मुद्रापर जितनी प्रसन्नता रहती है, उससे कहीं अधिक निराशा उस समय छा जाती है जब वह कोई बड़ा-सा दांव हार जाता है। हिंगतेङ्ग जब एक हजारसे अधिककी बाजी हार गया, तो उसके मुंहपर मुर्दनी छा गयी। लेकिन निकट बैठे बैजूने पता नहीं किस सहानुभूतिसे भरकर पांच सौ रुपयेके नोट हिङ्गतेङ्गके हाथपर धर दिये और कहा—'एक बार और दांव लगाइये।

हिङ्गतेङ्गकी आंखें चमक उठीं। इस अपरिचित व्यक्ति की इस सहानुभूतिसे वह भर उठा। लेकिन दांव लगानेकी उत्सुकतामें वह बिना किसी आभार प्रदर्शन के जुएकी मेजके पास जा पहुंचा और बाजी लगा बैठा। मौकेकी बात कि उसका दांव ऐसा लगा कि न केवल उसका खोया हुआ एक हजार उसे मिल गया, बल्कि डेढ़-दो हजार रुपयेका उसे अतिरिक्त लाभ हो गया।

रुपये समेटकर वह बैजूके पास गया और उससे अनुरोध किया कि इस सहायताके प्रतिदानमें बैजू उसके निवास-स्थान तक जाने और एक दावत स्वीकार करने की कृपा करे।

इस अनुरोधके सिलसिलेमें बैजूको जब यह पता चला कि हिङ्गतेङ्गके पास देश विदेशकी नाचनेवाली लड़कियोंका एक बड़ा दल है, तब उसे यह समझते देर न लगी कि जिस रेस्तरांमें लड़कियोंका मोहक नृत्य वह अभी अभी देख चुका है उनमेंसे अनेक लड़कियां इसीके दलकी होंगी। फौजमें काम करनेवाले बैजू जैसे सैनिकके लिये यह आकर्षण कम नहीं था। वह सहर्ष हिङ्गतेङ्गके साथ रेस्तरांसे निकल उसके निवास स्थानपर जा पहुंचा।

हिङ्गतेङ्गने बैजूको शानदार दावत दी। जिन दो लड़कियोंने भोजन आदि परोसा उनमें एक चीनी और दूसरी ईसाई थी। रेस्तरांमें इन दोनोंका नाच बैजू अभी अभी देख चुका था। इनमेंसे चीनी लड़कीके अप्रतिम सौन्दर्य और नृत्य कौशलसे बैजू बहुत प्रभावित हो चुका था।

भोजन समाप्त हो जानेपर हिङ्गतेङ्ग और बैजू एक एक कोचपर आरामसे जा बैठे। तभी एक प्रौढ़ चीनी इस कमरेमें आया और हिङ्गतेङ्गके कोचके पास ही एक छोटा—सा स्टूल रखा, फिर उसपर चांदीका एक खास तरहका हुक्का-सा रख दिया—ऐसा हुक्का जिसकी चिलम बहुत ही छोटी थी। सटक (नली) के स्थानपर इसमें चांदीके तारोंकी ही एक छोटी-सी नली लगी हुई थी, जो काफी लचकीली थी।

बैजू यह सब देख रहा था, लेकिन कोई बात स्पष्टरूपसे उसकी समझमें नहीं आ रही थी। यदि यह हुक्का है, तो इसकी चिलम इतनी छोटी क्यों है? हुक्केकी चिलममें आध पाव नहीं, तो छटांक भर तम्बाकू तो रखी ही जाती है। लेकिन इस चिलममें तो शायद तोला भर भी तम्बाकू न अंटेगी। और, इसकी नली भी इतनी छोटी और पतली है कि हुक्केकी तरह इसके द्वारा धूम्रपान कैसे किया जाता होगा?

वह प्रौढ़ चीनी कमरेसे बाहर चला गया। हिङ्गतेङ्ग कोचपरसे उठा। शीशम की मेजके पास गया। उसकी दराजमेंसे चांदीका एक डिब्बा निकाला। और कोच पर जाकर फिर बैठ गया। चांदीके डिब्बे मेंसे उसने काली काली चमकीली-सी कोई चीज निकाली और उस चांदीके हुक्केकी छोटी चिलमपर उसे रख दिया। फिर बैजूकी तरफ देखते हुए लड़खड़ाती सी हिन्दुस्तानीमें उसने कहा—'आप कभी अफीम पिया?'

'अफीम!' बैजूने दोहराया। उसकी बलवती जिज्ञासाका समाधान शायद हो चुका था। हिङ्गतेङ्ग जो देखनेमें तिब्बती प्रतीत होता था, लेकिन जिसका नाम चीनवालोंकी तरह ही था, शायद चीनवालोंके सम्पर्कमें आकर अफीमका धूम्रपान करनेका आदी हो गया था। एक क्षण रुककर बैजूने कहा—'यह तो जहर है जहर! इसका धूम्रपान कैसा?'

'आप नईं जानता।' हिङ्गतेङ्गने अपनी टूट-फटी सी हिन्दुस्तानीमें ही कहा—'इसका धूम्रपान भौत मजा देता। इसको पीकर नाच-गाना बिहतर दीखता, मौज उड़ाता, खूब पैसा कमाता। जहर नईं होता। आप डरता? हम रोज पीता मौज उड़ाता।' और अफीम सुलगाकर धीरे धीरे कश लेने लगा वह नाक मुंहसे उसका धुआं उड़ाने लगा।

और, बैजूको जाने क्या सूझा कि वह भी अपनी इच्छा प्रकट कर बैठा—'अच्छा मैं भी इसका धूम्रपान करूंगा। देखना चाहता हूं इसका लुफ्त।'

'जरूर। नाच गाना भौत उमदा लगता।' हिङ्गतेङ्गने कहा और चीनी बोलीमें किसीको जोरसे पुकारा।

वही प्रौढ़ चीनी फिर हाजिर हुआ। हिङ्गतेङ्गने उसे कुछ आदेश दिया। उसने दो तीन मिनटके भीतर ही एक छोटा सा स्टूल और दूसरा छोटा सा हुक्का बैजू के कोचके पास रख दिया लाकर। हिङ्गतेङ्गने स्वयं उठकर थोड़ी सी अफीम इस दूसरे हुक्केकी चिलममें रख दी और उसे सुलगा दिया। फिर बोला—'आप इसको पीना। अभी गाना शुरू करता।'

बैजूने हुक्केकी नली अपने ओठोंसे सटा ली, और अफीमके धूम्रपानका स्वाद लेने लगा। पहले कशके साथ थोड़ी सी खांसी आयी, लेकिन कुछ ही सेकण्डोंमें शान्त हो गयी। कहा बैजूने—'बुरा नहीं है। यह धूम्रपान, बल्कि अच्छा ही कहना चाहिये। लेकिन इस पीकर यदि मैं बेहोश हो गया तो?'

'तो हम तुमको फेंक नईं देगा सड़क पर।' कहा हिङ्गतेङ्गने—सो जाना यहीं।' दूसरे ही क्षण हिङ्गतेङ्गने चीनी बोलीमें ही कुछ आदेश सा दिया और तत्काल कमरे के दरवाजेके निकट ही किसी वाद्य स्वर लहरीका कम्पन प्रारम्भ हो उठा।

बैजू जिस संगीत और नृत्यके लिये इतनी देरसे बेचैन हो रहा था, आखिर उसका श्रीगणेश देख बहुत प्रसन्न हुआ। अफीमकेधूम्रपानका हलका सा नशा उसे अब प्रभावित करता जान पड़ा। वाद्ययन्त्रों की सुरीली झनकार इन्द्र दरबारकी किसी अप्सराकी वीणाके तारोंसे जैसी झनझनाती प्रतीत हुई। वह उत्सुकतासे उस अप्सराको देखनेकी प्रतीक्षा करने लगा।

इसी बीच वही अप्रतिम चीनी लड़की इस कमरेमें आकर नाचने लगी, जिसका नाच रेस्तरांमें देखकर बैजू आत्मविभोर हो उठा था और जिसने अभी अभी भोजन परोसा था। उसके साथ तो वह ईसाई लड़की भी दिलरुबा बजा रही थी, जो चीनी लड़कीके साथ परोसनेका कार्य सम्पन्न कर चुकी थी।

दिलरुबाके तारोंसे संगीतकी लहरें फूट रही थीं और चीनी तरुणीके पायल झमझम कर नृत्यका अपूर्व समा बांध रहे थे।

अफीमका धूम्रपान कर नृत्य तथा संगीतके इस आलममें बैजू सपनोंकी दुनियामें खो गया। तरुणीका लचीला गौर गात नृत्यकी विशेषताओंको समेट कर ऐसा लग रहा था, मानो इन्द्र-दरबार की ही कोई अप्सरा इस भूतलपर उतर आई हो। तरुण नर्तकीने चीनी गीत भी गाया। उस गीतको बैजू तनिक भी नहीं समझ सका, लेकिन नर्तकीके कोकिल-कण्ठसे निःसृत मादक स्वर उसे बड़े मोहक लगे।

नाचते-नाचते सहसा वह चीनी तरुणी फर्शपर बैठ गई। पायलका झमझम स्वर और दिलरुबाके तारोंकी झनझनाहट भी बन्द हो गई। तीव्रतासे नाचते नाचते शायद वह थक गई थी।

बैजू ने हिंगतेंगकी तरफ देखते हुए कहा—'बहुत खूब! गजबका नाच है। अब इन्हें आराम करने दें।'

चीनी तरुणीने तिरछी चितवनसे बैजूको एक बार देखा, उसके ओठोंपर स्मितकी एक रेखा एक क्षणके लिये खिंच गई और मिट भी गई।

'हां अब तुम आराम कर सकता।' हिंगतेंगने नर्तकी को आदेश दिया और एक कोचकी तरफ संकेत किया।

चीनी तरुणी अपने मालिकका संकेत पाकर कोच पर जा बैठी। ईसाई तरुणी शायद दिलरुबा रखनेके लिए उस कमरे से बाहर चली गई।

'मैंने इनका सुन्दर नृत्य अबतक नहीं देखा था।' बैजूने नर्तकीकी प्रशंसा की।

'और अफीमका धूम्रपान कैसा लगा?' हिङ्गतेङ्गने प्रश्न किया।

'ओह। जीवनमें आज पहली बार अनुभव किया है। बहुत मादक बहुत मजेदार!'

'हम पहले बोला।' हिङ्गतेङ्गने कहा—'अफीम पीना भौत अच्छा। इसको पीकर नाच-गाना भौत उमदा लगता। चीनमें सब आदमी पीता। कवि इसको पीकर कविता लिखता, गीत लिखता। जब जो पीता, अपनेको बादशाह समझता।'

'आप ठीक कह रहे हैं।' बैजूने कहा—मुझे भी बड़ा अच्छा लगा। अब नींद आ रही है।

हां....नीं....द।' और यह कहते-कहते बैजू कोचपर ही लुढ़क गया।

चीनी तरुणीने बैजूके निकट जाकर उसे ध्यानसे देखा, फिर हिङ्गतेङ्गकी तरफ मुखातिब होकर कहा—'अफीमका नशा आ चुका है। इसके पहले शायद इन्होंने कभी अफीमका धूम्रपान नहीं किया।'

'आने भी दो!' हिङ्गतेङ्गने कहा—'तुम क्यों फिक्र करता।' फिर एक क्षण रुककर कहा—'समझा! इसने तुमको खुश कर लिया।'

'खुश करनेकी तो कोई बात नहीं। चीनी तरुणीने कहा—'यह है हिन्दुस्तानी और मैं एक चीनी लड़की। जब मेरे देश में तरुणोंका अकाल पड़ जायगा, तब भले ही किसी गैर देशके तरुण द्वारा खुश होनेकी बात मुझमें देखी जा सके। लेकिन मानवताके नाते किसी भी व्यक्तिके प्रति सहानुभूति दिखलाना हमारा धर्म होना चाहिये।'

'हम जानता है लड़की! तुम भौत अच्छा हिन्दुस्तानी बोल सकता। तुमको वह ईसाई लड़की सब पढ़ा-सिखा दिया।

पर तुम इस तरह किसी अजनबीपर प्रेम करना नहीं मांगता।'

'आप इसे प्रेम कह सकते हैं, लेकिन मैं इसे सिर्फ सहानुभूति कहती हूं। फिर आपको तो इस व्यक्तिने आज रेस्तरांमें ढेर-सा रुपया भी दिया था। यदि यह रुपया न देता तो हजारोंकी रकम आपको हरगिज नसीब न होती।'

'ऊंह! पांच सौ रुपया इसने दिया।' हिङ्गतेङ्ग बोला—'इसके पास मौत रुपया हय। मुफ्तका रुपया मिलता इसको। फौजमें काम करता। रुपयोंके लिये दूसरों का सिर काटता, अंगरेजोंकी मदद करता—उन अङ्गरेजोंकी जो दुनियाको गुलाम बनाकर रखना मंगता। हम नफरत करता इससे।'

'सबकी स्थिति एक-सी नहीं होती।' चीनी तरुणीने कहा—'परिस्थितियोंसे मजबूर होकर ही आदमीको बहुत से काम करने पड़ते हैं। मुझे ही लीजिये। आज मैं मनोरंजन करनेवाली एक नर्तकीका काम कर रही हूं। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि मैं सदा यही काम करती रहूंगी। नहीं, यह सम्भव नहीं। मैं अपनी स्थिति सुधरते ही चीन चली जाऊंगी और अपने देशके लिये ही कुछ करूंगी, अपने देशके ही किसी तरुणका घर बसाऊंगी। ऐसी दशामें इस तरुणके प्रति आपको कोई गलत धारणा नहीं बनानी चाहिये। पता नहीं, किन परिस्थितियोंमें पड़कर इसे फौजमें काम करना पड़ा हो। आप इसका कोई अहित न करें, यही मेरी प्रार्थना है।'

'तुम क्यों इतना डरता? हम इसका क्या बिगाड़ता?'

'आप इसका कुछ न बिगाड़ें, यही मैं चाहती हूं।' चीनी तरुणीने कहा—'बिगाड़ सकनेका जहांतक सम्बन्ध है, आप इसकी बेहोशीमें बहुत कुछ बिगाड़ सकते हैं। दो-चार घटनाएं मैं अपनी आंखों देख चुकी हूं न! इसी प्रकार अफीमका नशा कराके आपने दो-चार अमरीकनों और अंग्रेजोंकी जो दुर्गति की थी, वह क्या था। बेचारे फौजी! आये थे नृत्य और संगीतका मजा लेने आपके घर, लेकिन गये यहांसे फकीर होकर। उन लोगोंका सारा रुपया पैसा छीनकर और बेहोशीकी हालतमें उन्हें हुगलीके किनारे फेंककर आपने जिस कठोरता, दानवताका परिचय दिया है उसे मैं भूल नहीं सकती।

तुम शोख लड़की! हिंगतेंग आंखें तरेरते हुए बोला—'मौत बात करता हय।' फिर कुछ नर्म पड़ कर, शायद अपने स्वार्थका ख्याल कर कहा 'तुम नहीं जानता, हम तुमको मौत चाहता। इसलिये तुम इतना बात करता।'

'नहीं, मैं आपकी कृपाका बेजा फायदा नहीं उठाना चाहती। मैं तो मानवताके नाते दूसरोंसे घृणा न करनेकी ही बात कहती हूं।'

उन अंगरेज-अमरीकन फौजी लोगका हम मरम्मत किया। क्यों किया? तुम नहीं जानता, ये लोग हम सबको गुलाम समझता। आदमी नहीं समझता। यहांकी औरतोंको खेलका सामान समझता। हम इसीका जवाब दिया।'

जवाब देनेका आपका तरीका गलत है। नशेमें या नींदमें किसीको हानि पहुंचाना कायरता है, बुजदिली है।'

'तुम कहता, बदला नहीं लेना—सोते में, नशेमें बदला क्यों लेता। बुजदिल हम।' शायद हिङ्गतेङ्ग पर तरुणीकी बात असर कर चुकी थी।

'हां, बुजदिली है।' तरुणीने कहा—'चेतन अवस्थामें ही हमें किसीको सबक देना चाहिये। अच्छा, तो मैं इस फौजीको कोच पर आरामसे सुला दूं?'

'जरूर सुला दो और नशा हटने पर इसे यहांसे विदा कर दो।' और हिङ्गतेङ्ग उस कमरेसे हट गया—शायद आराम करने चला गया।

चीनी तरुणीने एक मुलायम और बड़ासा तकिया कोच पर रख दिया और वैजूको आहिस्तेसे उसपर लुढ़का दिया। वैजू नशेमें था और खुर्राटे भर कर सो रहा था बेखबर।

—०—

आलोकदानीका प्रयाण

दिग्भ्रान्त तिमिरसे ग्रस्त मनुज-समुदाय चाहता था प्रकाश
क्रन्दन करता था हृदय मूढ़ मायाके कर्दममें निराश।
साधक! तुमने अपने जीवनको बना दिया आलोक-दीप
निष्कम्प शिखा जिसकी सैव भीषण झंझानिलके समीप।
उस दीपवर्त्तिकाका प्रकाश सह सका नहीं पागल मानव
विस्मृत कर अपना लक्ष्य चरम पीकर मायाका मृदु आसव।
गिर गया मृत्तिका-दीप धरापर किन्तु वर्त्तिका बुझी नहीं
वह उठी बहुत ऊपर अम्बरमें अब जलती है और कहीं।
रोते पृथ्वीके अधिवासी अपना प्रकाश-दाता खोकर
गतज्योति मृत्तिका-दीप देख है कांप रहा पीड़ित अन्तर।
पर दूर कहीं नीलाभ गगनमें मुसकाता वह ज्योतिर्धर
स्थितप्रज्ञ पुरुष, वह योगिराज, वह गुणातीत, वह लोकोत्तर।
वह अनासक्त, वह विजितात्मा, कर तपमय निज पार्थिव प्रवास
है चला गया प्रभुके समीप कर छिन्न देह-बन्धन सहास।
देखें, सन्तप्त मनुजताका प्रशमित होगा अब कब क्रन्दन
कब टूट सकेंगे जाति-वर्गके द्वेषभावके ये बन्धन।
तुम डाल गये उपदेश यही झोलीमें मानवकी उदास
जीवनका लक्ष्य नहीं पार्थिव साम्राज्य-भोग, वैभव-विलास।

—श्री सत्यनारायण शर्मा

काश्मीरकी समस्या

श्री मोहन सिंह सेंगर

(२)

बेहद गरीबी और परले सिरेकी गुलामीके बावजूद काश्मीरके लोग हमें भारतके अन्य भागोंके निवासियोंकी अपेक्षा काफी भिन्न दीख पड़े। कलकत्ता, नोआखाली, बिहार, दिल्ली और पञ्जाबके साम्प्रदायिक दङ्गोंकी भीषणताके बाद यहां ८०—९० प्रतिशत मुसलमानोंके बीच हिन्दुओं और सिखोंको निर्द्वन्द्व विचरते देखकर हमें कम आश्चर्य नहीं हुआ। इस सङ्कटके समय भी हमने काश्मीरियोंके चेहरोंपर वही संजीदगी संयम सहिष्णुता, धैर्य एवं मुस्कराहट देखी, जो शान्ति-कालमें होनी चाहिये। उन्हें देखकर ऐसा जान पड़ता था मानो कोई गहन गम्भीर सागर केवल ऊपरसे ही लहरोंके कारण अस्थिर एवं चञ्चल है।

एक दिन शामको बारातके एक जुलूस को रोशनी तथा गाजे बाजेके साथ जाते देखकर हमने हंसीमें कहा—'यहां अभी भी शादियां इस धूमधामसे होती हैं ?'

हमारे एक काश्मीरी साथीने बताया कि अभी तो क्या जब कबाइली श्रीनगर के हवाई अड्डेसे केवल ३ मील दूर रह गये थे और उनके गोले गोलियोंकी आवाज श्रीनगर तक सुनाई देती थी, तब भी शादी-समारोह इसी तरहसे हो रहे थे।

काश्मीरकी वस्तुस्थिति जाननेके लिये हमने यह तय किया कि हम सिर्फ सरकारी अधिकारियों या नेशनल कानफरेंस के व्यक्तियों द्वारा ही वहांका हाल नहीं जानेंगे बल्कि जन-साधारणसे मिलकर उनके विचार एवं प्रतिक्रिया जानेंगे।

विभिन्न जातियों एवं श्रेणियोंके लोगोंसे मिलकर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि काश्मीरका सवाल साम्प्रदायिक कदापि नहीं सौ फीसदी अर्थनीतिक मात्र है। इस समय काश्मीरमें लगभग ३५० जातियां हैं, जिनमेंसे १५१ हिन्दू-मुसलमानोंकी सम्मिलित जातियां हैं। इनमेंसे कौन कौन हिन्दूसे मुसलमान बनीं और कौन कौन मुसलमानसे हिन्दू यह कहना आज कठिन है। इनकी भाषा वेश-भूषा संस्कृति सामाजिक नियम-क्रम और परम्पराएं एक सी हैं। बहुत सी जगहोंमें तो हिन्दुओं और मुसलमानोंके इबादतगाह भी शामिल ही हैं। इसीलिये यहां सम्प्रदायों अथवा अल्प एवं बहुसंख्यकोंका प्रश्न भी नहीं है।

काश्मीरकी आबादी ४० लाखसे कुछ ऊपर है। इस आबादीका दशांश रेशम ऊन चमड़ा चांदी लकड़ी और सलमे-सितारेकी दस्तकारीसे ही अपनी गुजर-बसर करता है। इसके द्वारा तैयार की हुई चीजोंका बाजार एक दीर्घकालसे भारतमें ही है। कदाचित इसीलिये देशके विभाजनके बाद भी काश्मीरके बहुसंख्यक मुसलमान भारतके साथ ही अपना राजनीतिक सामाजिक और व्यापारिक सम्बन्ध बनाये रखनेको उत्सुक हैं। वे बखूबी जानते हैं कि न पाकिस्तानमें उनकी दस्तकारियोंके लिये बाजार हैं और न वह उन्हें बदलेमें आवश्यकताकी अन्य चीजें ही दे सकता है। इसके पीछे कोई भी राजनीतिक या साम्प्रदायिक हेतु नहीं है। पर जो बाहरी लोग काश्मीर की इस वस्तुस्थितिसे परिचित नहीं हैं उन्हें धोखा देनेके लिये मुस्लिम लीगके प्रचारकोंने इस प्रश्नको साम्प्रदायिक रङ्ग देनेकी कुचेष्टा की है।

ब्रिटेन और अमरीकामें गला फाड़-फाड़ कर उसके प्रचारक चिल्ला रहे हैं कि स्वतन्त्र काश्मीर आन्दोलन' काश्मीरके मुसलमानोंको प्रतिगामी एवं अविकसित डोगरा शासनसे मुक्त करनेके लिये है। काश्मीरके लोगोंकी जो स्थिति हमने देखी और उनके जबानी जो कुछ सुना, उससे यह निर्विवाद है कि उनकी गरीबी की बहुत बड़ी जिम्मेदारी उत्तरदायित्वशून्य डोगरा शासन पर है। यह भी सत्य है कि डोगरा शासनको चन्द स्वार्थी, संकीर्ण कोई काश्मीरी नहीं चाहता। पर मुस्लिम लीगके आन्दोलनका इससे दूर दराजका भी कोई सम्बन्ध नहीं, यह निम्न बातोंसे स्पष्टतया सिद्ध होता है—

(१) यदि यह आन्दोलन वास्तवमें जनतन्त्रवादी राजनीतिक आन्दोलन होता, तो केवल मुसलमानोंके लिये ही क्यों ? और फिर इसमें वे हिन्दू और सिख भी क्यों शामिल नहीं, जो डोगरा शासनके खिलाफ वर्षोंसे लड़ रहे हैं ?

(२) यदि इसे मुसलमानोंकी मुक्ति का ही आन्दोलन माना जाय तो जिन निरीह निःसहाय मुसलमानोंको इसका शिकार होना पड़ा है, जिनकी बहू-बेटियों को बेइज्जत किया और भगाया गया है, वे क्या समझेंगे ?

(३ यदि यह आन्दोलन डोगराशाहीके खिलाफ है तो उसकी शिकार निरीह-निःसहाय जनताको लूटने, मारने और उसकी बहन-बेटियोंको क्यों उड़ाया गया है ?

(४) यदि यह काश्मीरी मुसलमानों का मुक्ति आन्दोलन है, तो क्या कारण है कि इसमें लड़नेवाले अधिकांश गैर काश्मीरी पठान, अफरीदी, बलूची और जेहलुमकी तरफके पञ्जाबी मुसलमान हैं ?

काश्मीरके भुक्तभोगी मुसलमानोंके मुंहसे ही हमने सुना कि आक्रमणकारी सबके सब गैर काश्मीरी हैं और उनका मुख्य ध्येय है काश्मीरियोंकी धन-सम्पत्ति लूटना और लड़कियों एवं स्त्रियोंको बेइज्जत करना तथा भगा ले जाना। इन्हींके मुंहसे हमने यह भी सुना कि इन निर्मम लुटेरोंका जो पहला धावा हुआ उसमें इनका नारा था 'सिखका सिर और हिन्दूका जर।' पर इनके बादके धावोंमें यह नारा भुला दिया गया और हिन्दू मुसलमानोंको समान रूपसे लूटा मारा गया और उनकी जवान बहू-बेटियोंका अपहरण किया गया। इस समय श्रीनगर और जम्मूकी जेलोंमें जो युद्ध बन्दी हैं, वे सबके सब गैर काश्मीरी कबाइली हैं। उन्होंने बयान दिये हैं कि पीर मनकीशरीफ और मुस्लिम लीगके

दूसरे एजेण्टोंने उन्हें यह कह कर कि इस्लाम खतरेमें है, हिन्दुस्तानके काफिरों के खिलाफ जेहाद बोलनेपर मजबूर किया। उनसे कहा गया कि दिल्ली और पञ्जाबमें मुसलमानोंका खात्मा कर दिया गया है। इसका बदला लेनेके लिये उन्हें उकसाया गया और प्रलोभन दिया गया बेशकीमती लूट और खूबसूरत छोकरियोंका।

डोगराशाहीऔरजनशक्तिकासंघर्ष

काश्मीरपर हुआ कबाइलियोंका यह आक्रमण कोई आकस्मिक घटना नहीं है। इसके पीछे डोगराशाही और जनशक्तिके बढ़ते हुए प्रभावके संघर्षकी एक दिलचस्प अन्तर्कथा है। गत १५ अगस्तको भारत स्वतन्त्र हुआ—हिन्द और पाकिस्तान दो डोमीनियन (उपनिवेश) घोषित हुए और साथ ही काश्मीर ब्रिटिश अधीनतासे मुक्त हुआ। पर भारतीय संघमें काश्मीर इसके पूरे २॥ महीने बाद शामिल हुआ, जबकि कबाइलियोंका आक्रमण हुए ७२ घण्टे बीत चुके थे और उन्हें रोकना अकेले महाराजाके लिये सम्भव न था। तब प्रश्न यह उठता है कि इन २॥महीनोंमें वे और लीग क्या करते रहे ?

एक वाक्यमें इसका उत्तर यह है कि दोनों ही अपने अपने संकीर्ण स्वार्थोंके लिये जनता और हिन्दको धोखा देनेका षड्यंत्र रचते रहे। एक ओर तो महाराजा जनशक्तिके बढ़ते हुए प्रभावसे अपने प्रभुत्वके ह्रास होनेकी आशंका कर रहे थे और अपने सिरपरसे ब्रिटिश सत्ताका रक्षात्मक हाथ उठ जाने तथा कांग्रेसके सत्तारूढ़ हो जानेसे बुरी तरह आतङ्कित थे। दूसरी ओर हिन्दुस्तान पर फिर राज करनेका स्वप्न देखनेवाले पाकिस्तान के शेखचिल्ली अधिकारी काश्मीर-सी सोने की चिड़िया—जिसका शान्ति-कालमें आर्थिक और युद्ध कालमें स्थिति वैशिष्ट्य (काश्मीर अफगानिस्तान, रूस, चीन और तिब्बतकी सीमाओंसे मिलता है)का अपरिमित महत्व है—पानेका लोभ संवरण न कर सके। फलस्वरूप जिन्नाके प्राइवेट सैक्रेटरी खुर्शीद अहमदको गुप्तरूप से श्रीनगर भेजा गया। इसने एक ओर तो महाराजाको पाकिस्तानमें शामिल होने से होनेवाले लाभोंके सब्जबाग दिखाने आरम्भ किये और दूसरी ओर मुसलमानोंमें साम्प्रदायिक जहरका संचार कर हिन्दू-राजाके खिलाफ आन्दोलन करनेको उकसाना शुरू किया। यह वही साम्राज्यवादी नुस्खा था, जिसे लीग सफलतापूर्वक भारतमें काममें ला चुकी थी। प्रतिगामी महाराजाकी संकीर्ण स्वार्थ-वृत्ति ने लीगको अपने जहरीले प्रचारका केवल अवसर ही नहीं दिया; बल्कि पर्याप्त साधन सुविधा भी दी।

महाराजाके इस रुख और लीगसे अपवित्र गंठ-बन्धन करनेका एक खास कारण था। काश्मीरको जम्मूके डोगरा राजा गुलाबसिंहने १८४६ में अंगरेजों से ७० लाख रुपयोंमें खरीदा था। इसके बादसे उसके उत्तराधिकारी इसे अपनी बपौती समझकर मनमानी ढङ्गसे राज करते आये थे। १९३० में शेख अब्दुल्लाने पहले-पहल मुस्लिम कानफरेंसकी स्थापना कर निरंकुश डोगराशाहीको जनताकी ओरसे चुनौती दी। १९३१ में इसके द्वारा की गई मांगोंके उत्तरमें महाराजाने सांप्रदायिकताका भूत खड़ा करना चाहा, जिसके परिणाम स्वरूप बहुत-सा अनावश्यक रक्तपात हुआ। अन्तमें ग्लैंसी-कमीशनकी नियुक्ति हुई और उसकी जांचके फलस्वरूप इसकी बहुत-सी मांगें महाराजाको माननी पड़ीं। इस सफलतासे मुस्लिम कानफरेंस के प्रभाव-प्रतिष्ठामें आशातीत वृद्धि हुई और जनताका बहुत बड़ा भाग उसके झण्डे के नीचे सङ्गठित हुआ।

अबतक कांग्रेसकी तरह लीग भी रियासतोंके मामलोंमें हस्तक्षेप न करने की नीतिको मानती आयी थी। पर मुस्लिम कानफरेंसके बढ़ते हुए असरको देखकर बहुतसे लीगियों और लीगके एजेण्टोंके मुंहमें पानी भर आया। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने शेख अब्दुल्लाको अपने हाथका कठपुतला बना कर मुस्लिम कानफरेंसको हथियाना चाहा। पर इसमें वे सफल नहीं हुए। तब लीगियोंने कानफरेंसमें घुसकर गड़बड़ करनी शुरू की। साम्प्रदायिकताके जहरीले प्रचारको रोकना आसान न था। राजनीतिके नामपर कुछ साम्प्रदायिक कठमुल्लाओंने कानफरेंसमें घुस कर उसे एक दम संकीर्ण सांप्रदायिक बना देना चाहा। इससे कुण्ठित होकर शेख अब्दुल्लाने १९३८ में कानफरेंसके इन प्रतिगामी कट्टरपंथियोंसे अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया और अपने हिन्दू, सिख और मुसलमान साथियोंको लेकर 'नेशनल कानफरेंस' की नींव डाली। इसकी मांग थी उत्तरदायी शासनकी स्थापना। एक ओर लीगियोंको शेख अब्दुल्लाका यह रवैया पसन्द न आया और दूसरी ओर महाराजाको भी। फल यह हुआ कि नेशनल-कानफरेंसको मिटानेके लिये डोगराशाही और प्रतिगामी साम्प्रदायिक कठमुल्लाओंका संयुक्त मोर्चा बन गया।

१९३९ में दूसरा महायुद्ध छिड़ जाने के कारण नेशनल कानफरेंस अपने आंदोलनको विशेष व्यापक रूप न दे सकी। युद्धकी समाप्तिके कुछ समय बाद १९४६ में शेख अब्दुल्लाने इसकी ओरसे 'काश्मीर छोड़ो' आन्दोलनका श्रीगणेश किया। महाराजा और उनके उद्धत मन्त्री रामचन्द्र काकको मानो मुंहमांगी मुराद मिल गयी और उन्होंने नेशनल कानफरेंसके प्रमुख नेताओंको जेलमें डाल दिया। इस अवसर पर शेख अब्दुल्लाकी पैरवीको काश्मीर गये पं० जवाहरलाल नेहरूके प्रवेश निषेध और गिरफ्तारीकी हिमाकत सभीको मालूम है। एक ओर महाराजाने नेशनल-कानफरेंसका दमन किया और दूसरी ओर लीगी एजेंटोंको मुस्लिम-जनताके प्रतिनिधि स्वरूप अधिकाधिक अहमियत देनी शुरू की। १५ अगस्तको जब भारत आजाद हो गया, तो महाराजा और उनका गुमराह प्रधान मंत्री काक एक ओर तो काश्मीरके स्वतन्त्र (?) होने की दुहाई देते रहे और दूसरी ओर चुप-

चाप लीगसे एक ऐसे 'सम्मानपूर्ण अस्थायी समझौते' की चेष्टा करते रहे जिससे कि डोगराशाही बदस्तूर कायम रखी जा सके। पर पाकिस्तानकी स्थापनाके बाद लीगका रुख कड़ा हुआ और दूसरी ओर भारत सरकार भी काश्मीरसे भारतीयसंघ में शामिल होनेके बारेमें हां या ना में जवाब चाहने लगी। महाराजा अभी कोई अन्तिम निर्णय नहीं कर पाये थे कि लीग ने उनपर दबाव डालनेके ख्यालसे काश्मीर पर कबाइलियोंका हमला ही करवा दिया। अब महाराजाके लिये कोई चारा न था। उन्होंने स्थितिकी खराबीकी सारी जिम्मेदारी रामचन्द्र काकपर थोपकर उसे बलि का बकरा बनाया और नेशनल कानफरेंस के नेताओंको रिहाकर भारतीय संघमें शामिल हो गये।

इन सब बातोंपर जरा बारीकीसे विचार करनेसे स्पष्ट हो जाता है कि महाराजाने जो कुछ किया, वह घटनाओं के दबावके कारण मजबूरन ही—स्वेच्छा से या प्रसन्नता पूर्वक नहीं। इसका एक बड़ा सबूत हमें काश्मीरमें ही यह मिला कि यद्यपि नामके लिये अस्थायी रूपसे शासनका भार नेशनल कानफरेंसके नेताओंको सौंप दिया गया है, पर असली शासन महाराजाके जीहुजूरोंके हाथोंमें ही है। इस प्रकार काश्मीरमें इस समय एक तरहसे दोहरा शासन चल रहा है। उसकी खराबियों और खामियोंका यहां विस्तार से जिक्र करना तो अप्रासङ्गिक होगा, पर एकाध बातका उल्लेख करना जरुरी है। हमें यह सुनकर सखेद आश्चर्य हुआ कि जब श्रीनगरके राजकीय अस्पतालमें भारतीय सेनाके घायल सैनिक अथवा आक्रान्त स्थानोंके घायल व्यक्ति पहुंचे, तो कई घण्टों तक उनकी किसीने खोज-खबर ही न ली! इतना ही नहीं, इनकी सेवा-सुश्रूषा और हौसला-अफजाहीके लिए नेशनल-कांफ्रेंसकी ओरसे जो स्वयं-सेविकाएं भेजी गयीं, उनकी उपस्थिति पर भी डाक्टरने आपत्ति की! आज जब काश्मीर जीवन और मरणके संघर्षमें संलग्न है शासनकी यह शिथिलता एवं निकम्मापन कितने अक्षम्य एवं जोखिम भरे हैं यह बतानेकी जरूरत नहीं। पर इसका इलाज क्या है?

काश्मीरकी यह विनाश-लीला प्रतिगामी महाराजा और लीगकी दुरभिसंधि का दुष्परिणाम है, यह तो आज वहां का बच्चा-बच्चा कहता है। पर इसमें एक तीसरे शक्तिका भी हाथ है। यद्यपि श्रीनर और जम्मूकी जेलोंमें जो युद्ध-बन्दी हैं, उन्होंने इस सम्बन्धमें कोई उल्लेखनीय बात नहीं बताई, तथापि उनके साथ ही पकड़े गए नवीनतम युद्ध-यंत्रों, ७-८ दर्जन ट्रकों और युद्ध-संचालनके विवरणसे स्पष्ट है कि इसके पीछे पाकिस्तानसे भी बड़ी किसी तीसरी शक्तिका गुप्त हाथ है। 'डेलीमेल' और 'टाइम्स' में छपे विवरणोंसे तो अवकाश-प्राप्त अमरीकन तथा ब्रिटिश सेनाध्यक्षों द्वारा तथा कथित कबाइलियोंकी सेनाका संचालन होना भी जाहिर है। 'स्टेटस्मैन' के संवाददाताका कहना है कि पाकिस्तानी सेनाका एक जनरल इसमें शामिल है। और पाकिस्तानी प्रचारक न केवल भारतमें ही बल्कि लेक सक्सेस तकमें गला फाड़-फाड़ कर कहते हैं कि पाकिस्तान कबाइलियोंको किसी प्रकार, की मदद नहीं देरहा।

काश्मीरके लोगोंसे जब हमने 'आजाद काश्मीर आन्दोलन' और उसके संचालक सरदार इब्राहीम खांके बारेमें पूछ-ताछकी तो अधिकांश मुसलमानोंने बड़े व्यंग्यके साथ कहा—'यह मुजफ्फराबाद, उड़ी, बारामूला वगैराके मुसलमानोंसे चलकर पूछिए जिनका सब कुछ लुट गया है और जिनकी बहन-बेटियां बलात्कार एवं अपहरणका शिकार हुई हैं! जब काश्मीरी जनता डोगराशाहीसे मुक्त होनेका आन्दोलन कर रही थी, तो सरदार इब्राहिम खांका कहीं नाम भी सुनाई नहीं दिया और आज वे हमें गोलों, गोलियों और हथ गोलोंसे आजाद कराने चले हैं!, कुछ ऐसा ही हाल मुस्लिम कान्फ्रेंसका भी है। उसमें सिर्फ चन्द पढ़-लिख मुसलमान हैं, जो अपनी महत्वाकांक्षाके लिए लीगके हाथकी कठपुतली बने हुए हैं।

महाराजाकी शह पाकर कई मुस्लिम अधिकारियोंने न सिर्फ नेशनल-कांफ्रेंसके खिलाफ प्रचार ही किया, बल्कि लीगी एजेंटोंके जहरीले प्रचारमें भी शिरकत की। हमें भुक्त भोगी काश्मीरियोंसे पता-चला कि काश्मीर पर हुए आक्रमणमें इनका पूरा हाथ था। इन्हें उसका पहलेसे पता था। इनमेंसे बहुतोंने अपने नाते रिस्तेदारोंको जम्मू और श्रीनगरसे बारामूला या मुजफ्फराबाद बुला लिया था। ऐसे कई पत्र पकड़े भी गये हैं। हमला होने पर महाराजाके टुकड़ों पर पले इन नमक हराम अफसरोंने हमलावरोंका साथ दिया, उन्हें चुन-चुन कर हिन्दुओं और सिखोंके घर बताये और कई जगह तो लूटमें भी शिरकत की। इनमेंसे बारामूला का पुलिस-सुपरिन्टेण्डेंट और जंगलात अफसर श्रीनगर जेलमें बैठे अपने ऊपर चलनेवाले मुकदमोंकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। इन शरारती अफसरोंके जहरीले प्रचारके कारण कई गांवोंके अपढ़ और नासमझ मुसलमानोंने भी हमलावरोंका साथ दिय और लूटमें शिरकत की। हमें कई ऐसे गांवोंका हाल भी मालूम हुआ जहां आक्रमणकारी तो बिल्कुल पहुंचे ही नहीं और स्थानीय मुसलमानोंने ही वहांके हिन्दुओं एवं सिखोंको लूटा-मारा!

——

साप्ताहिक विश्वमित्र
—: की :—
एजेन्सी
लेकर लाभ उठाइये।

स्वतंत्र लंकाका इतिहास

ले० - श्री परिपूर्णानन्द वर्मा

बापूके निधनके शोकमें हम एक घटनाको उचित महत्व देना भूल गये और वह है लंकाकी स्वाधीनता। एक सप्ताह हुए हमारा अंग तथा पड़ोसी लंका स्वाधीन हो गया सन् १८०२ से ब्रिटिश दासतासे पीड़ित यह टापू स्वतंत्र हो गया।

हम इसे लंका तथा सिंहलद्वीप-दोनों ही कहते हैं चूंकि यह किसी समय भारत का ही एक प्रांत था तथा समुद्र भी बीच में नहीं था, अतएव इसकी नसोंमें हमारा रक्त दौड़ रहा है भौगोलिक उथल पुथलके कारण जब बीचमें समुद्रकी पेटी आगयी फिर भी यह हमारे अधीन रहा, हमारी सभ्यता तथा संस्कृतिमें पनपता रहा रावण ने यहां पर एक स्वतंत्र राज्य स्थापित करनेकी चेष्टाकी पर रामने वैसा न होने दिया लंका विजय कर उन्होंने अपने प्रतिनिधि विभीषणको वहां पर शासक नियुक्त किया।

द्वीप का नाम

हमारे संस्कृत साहित्यमें इसका नाम सिंहल द्वीप है। बाल्मीकिने लंका नाम भी बतलाया है। अब लंकावासी भी अपने टापू को लंका कहने लगे हैं अतः यहां प्राचीन नाम उपयुक्त होगा। हमारे सिंहलद्वीपनामसे ही, पुराने जमानेके मुस्लिम व्यापारियोंने इसका नाम सेरेनदीब रखा उसीसे पुर्तगीज ने जेलान नाम समझा और यह जेलान ही इसका वर्तमान अंग्रेजी नाम सीलोन बन गया रोमन तथा यूनानी पंडित इसे तप्रोबेन (तपोबन) कहते थे। पौराणिक नाम लंका ही है।

जनसंख्या तथा धर्म

छोटासा टापू यह सुदूर उत्तरसे दक्षिण २७२॥ मील लम्बा तथा १३७॥ मील चौड़ा है। चौड़ाई पूरे टापूके बराबर नहीं है सबसे अधिक विस्तृत भागकी चौड़ाई दे दी गयी है क्षेत्रफल २५,४८१ वर्गमील यानी आयरलैंडका पांच बटा छः भाग है।

सन् १९२७ में इसकी जनसंख्या कुल ५१२५,००० थी सन् १८५७ में आबादी केवल १७ लाख थी पर सन् १९४६ की गणनाके अनुसार आबादी ६७,०० ००० है सन १९३१ से १९४६ के बीचमें आबादी २५,५ प्रतिशत बढ़ी है इस आबादीमें लगभग ३२ लाख बौद्ध, ११ लाख हिन्दू, चार लाख मुसलमान, तथा शेष ईसाई हैं ईसाईयोंमें भी कई सम्प्रदाय के हैं जैसे रोमन कैथोलिक, ऐंगलिकन, वेसलियन, इत्यादि

कृषि तथा शिक्षा

टापू कृषि प्रधान है पहाड़ियोंपर ५००० फीट ऊंचाई तकके जंगल साफ कर खेती होती है कुल मिलाकर लगभग ११,७४,-००० एकड़में खेती होती है खेतीका विस्तार तथा तुलनाके लिये निम्न मान-चित्र पर्याप्त होगा।

कितने एकड़में खेती होती है

उपज	१९२६	१९४६
चाय	४,४२,०००	५,५५,४३२
रबर	४,७५,०००	३,८७,०४६
नारियल	६,००,०००	२,५४,५४२
चावल	८३४,०००	ज्ञात नहीं
कोको	२५,०००	९,९९१

प्रकट है कि खतीमें गत २० वर्षमें कोई प्रगति नहीं हुई है खनिज पदार्थों में कुछ लोहा इत्यादि भी मिलता है।

शिक्षाकी कोई विशेष प्रगति नहीं है फिर भी, शिक्षाका औसत भारतसे कहीं अधिक है लगभग ३०० अंग्रेजी स्कूल तथा १५० देशी स्कूल हैं जिनमें १ लाख विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं २५ प्रतिशत विद्यार्थी लड़कियां हैं।

भाषा

लंकामें भारतीय काफी हैं मजदूरी पेशाके लिये ही लगभग दस लाख मद्रासी बसे हैं इसीलिये सिंहली भाषा बोलनेवाले दो तिहाई तथा एक तिहाई तामिल बोलने वाले हैं सिंहली भाषा हमारी प्राचीन बाली भाषासे बहुत कुछ मिलती जुलती है।

व्यापार

लंकाका टापू कृषिजन्य व्यापार पर निर्भर करता है भारतसे ही काफी व्यापार होता है पिछले महायुद्धके पूर्व लंकाका ६७ प्रतिशत आयात देशमें आने वाला व्यापार ब्रिटिश साम्राज्यके अन्तर्गत देशोंसे होता था ३३ प्रतिशत और देशोंसे अपने निर्यात बाहर माल भेजनेका व्यापार भी ६५ प्रतिशत साम्राज्यके अन्तर्गत तथा ३५ प्रतिशत अन्य देशोंसे करता था भारतसे बहुत ज्यादा व्यापार न हो सकने का कारण यह है कि जो माल लंका बाहर भेज सकता है, वह बहुत कुछ भारतमें भी पैदा होता है फिर भी, सन १९४३ में उसने भारतसे १,८,५ ५,४०,००० रुपयेका तथा ११,७८,१८,०००) रुपयेका माल सन

१९४७ के ग्यारह महीनो में मंगाया सन १९४७ में उसके समूचे आयातमें भारत का भाग १३.७३ प्रतिशत था सन १९४३ में ४४.७७ प्रतिशत था। सन १९४३ में उसने हमारे देशको ३,५,१,९५, ०० रुपयेका माल तथा सन १९४७ में ३ २,-८,६० ००० रुपयेका माल भेजा यानी अपने समूचे निर्यातका क्रमशः ६.५५ तथा ४.३५ प्रतिशत। इससे यह स्पष्ट है कि भारतके हाथसे धीरे धीरे लंकाका बाजार छिनती जा रहा है और उसका स्थान और विदेशी व्यापारी ग्रहण कर रहे हैं यह प्रश्न काफी ध्यान देने योग्य है। साथ ही ध्यान देने योग्य है हमारे दस लाख भारतीयोंका भविष्य जो लंकामें बस गये हैं तथा जिनमें ६,५ लाख खेतीके काममें लगे हैं स्वतंत्र लंकाको हमारे इन भाइयोंके अधिकार सुरक्षित रखने चाहिये।

राजनैतिक इतिहास

प्राचीन सिंहल नरेशोंकी राजधानी राजरता नामक स्थानमें थी, वहांसे हट कर अनुरुद्धपुरमें हुई, कहते हैं कि महाभारतकालमें यह नगर बसा था। ईसासे ३०० वर्ष पहले इसी अनुरुद्धपुरके सिंहल नरेशके पास सम्राट अशोकके पुत्र महेन्द्र बौद्ध धर्मका सन्देश लेकर पहुंचे थे। मगधके बोधिवृक्षकी शाखा यहीं अनुरुद्धपुरमें ईसासे २८८ वर्ष पूर्व आरोपित हुई थी। इस प्रकार वहांका बोधिवृक्ष २२०० वर्ष पुराना है, सिंहलमें सबसे प्रसिद्ध नरेश दितिगमनु हो गये हैं जिन्होंने ईसासे १९० वर्ष पहले अपना उदार तथा प्रसिद्ध शासन स्थापित किया था, इसके बाद यहां कई राजघराने हो गये। छोटे छोटे राजा आपसमें लड़ने कटने लगे। सिंहल द्वीपकी बड़ी जर्ज्जर अवस्थाके समय सन १६०२ में डचोंने लङ्काके पूर्वी तटपर पैर रखा और कैंडीके राजाने उनका स्वागत किया, पूर्तगीज इसके पहले ही आ चुके थे। सन् १६५८ तक डचोंने पूर्तगीजोंको मार भगाया और टापूके [illegible]मी बन बैठे। सन् १७६३ से अंग्रेजोंने इस टापूको हड़पनेका प्रयास किया पर सन् १७९५ के पहले सफलता नहीं मिल सकी। सन् १७९८ से यहां ब्रिटिश शासन आरम्भ हुआ। पहले तो यह टापू मद्रास द्वारा ही शासित होता था पर सन् १९०२ से यह अलग उपनिवेश बना दिया गया।

राजनैतिक बिकास

शुरू शुरूमें गवर्नर सब कुछ होता था। बादमें वह कुछ लोगोंको अपना शासन सलाहकार बनाकर नामजद कर लेता था। सन् १९१० में इसकी पहली व्यवस्थापक सभा बनी जिसमें दस सदस्योंमेंसे ४ शिक्षा द्वारा निर्धारित मताधिकारसे चुने जाते थे। सन् १९२४ में जो विधान बना उसके अनुसार लेजिस्लेटिव कौंसिलके ४९ सदस्योंमेंसे २९ चुने जाते थे, गवर्नरकी शासन परिषदमें दो एक गैर सरकारी सदस्यको छोड़कर शेष सदस्य सरकारी होते थे। पर लङ्कावासी इससे घोर असन्तुष्ट थे। उनका आन्दोलन जारी था। इसीलिये डोनोमेयर कमीशन बैठा। इसने जो रिपोर्ट दी उसके अनुसार ६१ सदस्योंकी कौंसिल बनी जिसमेंसे ५० सदस्य बालिग मताधिकारसे चुने जाते थे। साम्प्रदायिक चुनाव बन्द कर दिया गया। इसी कौंसिलमेंसे सात सदस्योंकी शासनकारिणी परिषद बनती थी।

सन् १९३१ के इस शासन विधानमें भी बड़े दोष थे। शासन भार भी अधिक खर्चीला हो गया था। लङ्कावासी आन्दोलन करते रहे। लार्ड सोलवरीकी अध्यक्षतामें दूसरा जांच कमीशन नियुक्त हुआ। इसने सन् १९४५ में अपनी रिपोर्ट दे दी। मौजूदा शासन विधान सन् १९४६ के मई महीनेमें ऐलान कर दिया गया। पर इसके अनुसार सिद्धान्ततः शासनकी जिम्मेदारी ब्रिटिश पार्लमेण्टरी की रखी गयी। लङ्कावासी यह स्वीकार करनेको तैयार नहीं थे। बातचीत चल रही थी और तबतक श्री डी० एस० सेनानायककी अध्यक्षतामें अन्तरिम सरकार स्थापित कर दी गयी। अन्तमें निश्चित शासन विधान बन गया। लङ्काका शासन ब्रिटिश पार्लमेण्टकी जिम्मेदारी न रहा। समूचा अधिकार टापूकी सरकारको दे दिया गया। वैसी ही सन्धि की गयी जैसी कनाडा आस्ट्रेलिया आदि के साथ व्यापार तथा विदेशी सम्बन्धके भी अधिकार प्राप्त हो गये। लङ्का ब्रिटिश साम्राज्यका एक स्वतन्त्र सदस्य हो गया। व्यवस्थापक महासभामें १०१ सदस्य होंगे। जिनमें ९५ चुने जायंगे और ६ सरकार मन्त्रिमण्डल द्वारा नामजद होंगे। राजपरिषदमें ३० सदस्य होंगे। इनमेंसे १५ तो व्यवस्थापक महासभा द्वारा चुने जायंगे और शेष सरकार द्वारा मनोनीत होंगे। लङ्काकी स्वतन्त्रताकी यही रूपरेखा है।

आर्थिक स्थिति

टापूकी आर्थिक स्थिति ठोस है। यह उसके आय व्ययके ब्यौरेसे ही प्रकट हो जाता हैं। बजटमें वर्षोंसे घाटा नहीं रहा। कभी नाममात्रका घाटा रहा, उपयोगी कार्य भी हो रहे हैं, और बचत भी हो जाती है। यह बड़ी सराहनीय बात है। ऐसे बजट बिरले ही देखनेको मिलेंगे :—

वर्ष	आमदनी रुपयोंमें	खर्च
१९३५-३६	१०२-७७१	११० ९१८
३८-३९	११६-९२८	१२७-०५१
४०-४१	१३२-४२७	१२७-३४५
४१-४२	१५८ ८०४	१५३-२९८
४२-४३	२००-००७	१८५-००९
४३ ४४	२५०-५६५	२१०-६८१
४४-४५	३०३-९०३	२५४-३९७

इस सराहनीय आर्थिक स्थितिको देखते हुए यह कहना पड़ता है कि लङ्काका भविष्य बहुत उज्ज्वल है। प्रधान मन्त्री सेनानायक बड़े योग्य व्यक्ति है, पर व्यवस्थापक सभामें उनका बहुत बड़ा बहुमत नहीं है। ९५ चुने सदस्योंमें ४२ उनके दलके हैं सबसे बड़ा विरोधी पक्ष स्वतन्त्र दल है जिसके २१ सदस्य हैं। लङ्काकी स्वाधीनतापर हमें बड़ा हर्ष तथा सन्तोष है।

———

महात्मा गांधीको कवियोंकी श्रद्धांजलि

गांधी-दर्शन-सूत्रावली

सबसे ऊपर सत्य है, इससे उच्च न ईश,
सदा सत्यको खोजिए, झुका भीतिका शीश ॥१॥
सत्य अहिंसा एक हैं, हैं दोनों अविभाज्य,
दोनों संस्थापित करें, जगमें शांति, सुराज्य ॥२॥
जो डरता भगवानसे, सबसे करता प्रीति।
उसके हित जीवित रहे, नहीं मृत्युकी भीति ॥३॥
भक्ति अहिंसा की करे, रख पूरा विश्वास।
व्यक्ति वही संसारमें, सच्चा ईश्वर-दास ॥४॥
अर्थ अहिंसाका सदा, है व्यापक शुचि प्रेम,
रक्षक मानव जातिका, सर्वोपरि व्रत-नेम ॥५॥
आत्म-शुद्धि, प्रभु-प्रार्थना, निम्न-वासना मुक्ति।
सत्याग्रहकी नींवकी, हैं आवश्यक शक्ति ॥६॥
वाणी ना समझा सके, सत्य, अहिंसा, प्रीति।
इनकी जाग्रतिके लिये, विनय एक ही रीति ॥७॥
प्रकृति मानवी मूलतः, सदा रहे समकक्ष।
अत्याचारी अन्तमें, झुकते प्रेम समक्ष ॥८॥

—'भृङ्ग' तुपकरी

वे अमर हैं।

कौन कहता है कि बापू मर गये जगको रुलाकर
वे अमर हैं, साम्प्रदायिकता मरी है तिलमिलाकर।

मत कहो, अब विश्व-मानव हो गया है चिर-अनाश्रित,
मत कहो, निद्रित हुए बापू, सदा हैं वे अनिद्रित,

मत कहो गांधी मरे, आंधी चली, बदली घिरी है,
मत कहो जगमें अन्धेरा छा गया, बिजली गिरी है

देखता है जग कि सूरज बुझ गया है मुस्कुराकर,
किन्तु अनगिनती दियोंको रोशनी देकर जलाकर।

दीप युगकी आत्मामें जल रहा है औ जलेगा,
दीप उनका स्नेह पाकर पल रहा है 'औ' पलेगा।

सत्यका दीपक भला कब बुझ सका है जो बुझेगा,
कौन सा अन्याय है जो जूझकर इससे बचेगा।

हां मगर वह एक सूरज बुझ गया है मुस्कुराकर,
रोशनी दी है दियोंकी अनगिनत जिसने जलाकर।

—'भृङ्ग' तुपकरी

बापू बन्दना

जय जय बापू,
जय जय देव!
तुम एक भाव;
तुम एक भेद
जै जै बापू,
जय जय देव!
तुम शान्ति-सनातन
अमर-सुचेतन,
तुम सुन्दर-शिव-सत्
आत्म-निवेदन,
तुम राष्ट्र-पिता तुम विश्व-बन्धु
तुम सर्व-भेद तुम सर्व-ज्ञेय
जय जय बापू;
जय जय देव!

तुम सर्वज्ञाता; हिन्द-विधाता
एक वन्द्य तुम विश्व-सुनाता
स्वयं अहिंसा आत्म ज्ञान
स्वयं ध्येय-मानव सुजान

तुम एक प्राण तुम एक ध्यान
तुम कोटि कोटिमें भास-मान
दो शक्ति और वरदान देव
भारत-काया-छाया त्वमेव!

जय जय बापू!
जय जय देव।

—शकुन्त गौतम

महाप्रयान

महाप्रयान हुआ बापू का
भाग्य हमारा फूटा !
भारतके नभका उज्ज्वलतम
ध्रुव-तारा यह टूटा !

आकस्मिक है बज्रपात यह
भारत के अन्तर पर !
भारत-मां का एक लाडला
क्रूर मौत ने लूटा !

शोकाकुल जन-जन भारत के !
प्रानों में कोलाहल !
अन्तर में आंधी नयनों में
छाये आंसू छल छल !

चले गये हे राष्ट्र देवता
भारत के प्रांगन से !
चले गये मानव महान हे
भारत के आंगन से !

विमल सत्य का तोड़ दिया है
किसी क्रूर ने तारा !
छुपा लिया है मृत्यु-राहु ने
चांद देश का प्यारा !

चांद अहिंसा श्री महान तुम
भारत के अम्बर में !
आशा के आलोक मधुर थे
नर नर के अन्तर में।

अमर हमारे भाग्य बिधाता !
अमर हमारे नायक
अमर हमारे पावन बापू !
सत्य अहिंसा गायक

तोड़ लिया है किसी क्रूर ने
फूल 'हिंद का सुन्दर !
मानवता का अमर पुजारी,
दया-क्षमा से मृदुतर !

निर्बल जन के एक सहारे !
देव बने हरिजन के
धर्म-गुरु तुम, राष्ट्र-गुरु तुम,
गुरुदेव जन-जन के !

विमल ज्ञान हे ! अटल सत्य हे !
शुद्ध-बुद्ध अभिनव हे
राष्ट्र-प्रान हे ! मनुज श्रेष्ट हे।
पैगम्बर मानव के।

कैसे भूल सकेंगे बापू
सेवा अथक तुम्हारी !
तड़प रहे तेरी बिछुड़न में
भारत के नर-नारी !

जाना चाहा चले गये तुम
मेरे नायक गुरुवर !
उपदेशों की सुखद सुरभि पर
फैलेगी वसुधा पर

ज्योति अमर तुम पावन गांधी !
व्याप्त रहे कण-कण में !
सत्य-अहिंसा-विमल मन्त्र से
भारत के प्रांगन में !

—श्री अवधेश कुमार एम. ए.

हे बापू

आज आप कहां गये ? भारत जैसी पुण्य भमिको त्याग आज आपने किस ओर प्रस्थान किया ? देशको बिलखता छोड़ आप किस मार्ग की शरण ली ?

राष्ट्रपिता ! अपने राष्ट्रको अकेला छोड़ इतना शीघ्र चले जानेका अभी अवसर न था। आपने तो संसारमें सत्य और अहिंसाके शस्त्र देकर मानव जातिको आध्यात्मिक उन्नत करनेका बीड़ा उठाया था। क्या वह कार्य अभी समाप्त हो गया ? यदि नहीं तो यह छल कैसा ! सत्य अहिंसाके एक मात्र पुजारी ! आपके अवसानके साथ साथ उस ज्योतिका भी अन्त हो गया जिस ज्योतिसे समग्र संसार ज्ञान प्रकाश ले रहा था। अब सर्वत्र अंधेरा ही अंधेरा है।

—गिरीश

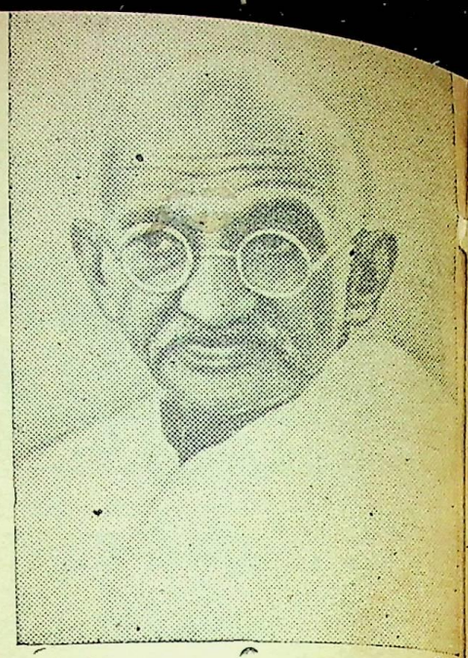

'अब हम उपसागर छोड़कर भरे समुद्र में फेंके जा रहे हैं। ध्रुवतारेको छोड़कर हमारा कोई रौनक नहीं। वह ध्रुवतारा हाथ का ग्रामोद्योग है। अब हमारा क्षेत्र सातसे चौदह साल के बालक नहीं हैं लेकिन मां के पेटमें पैदा होते हैं वहांसे लेकर मरते हैं वहां तक, हमारा अर्थात् नयी तालीमका क्षेत्र है। इसलिये हमारा काम बहुत बढ़ गया है। लेकिन काम करनेवाले तो वही रहे।"

"इसकी हम परवाह न करें। हमारा सच्चा साथी सत्यरूप ईश्वर है। वह हमको कभी धोखा नहीं देगा। वह सत्य हमारा साथी तभी बन सकता है, जब हम किसी की परवाह न करके उस सत्यपर डटे रहेंगे। उसमें न आडम्बरको जगह है, न अहंकार-को, न रागक्रोध को। हम सब देहातियोंके शिक्षक बनते हैं, याने देहातियोंके सच्चे सेवक बनते हैं। इसमें इनाम काम है तो वह हमारे दिलका साक्षी, बाहरका कोई नहीं। सत्यकी खोजमें हमें साथी मिले तो भी सही, न मिले तो भी सही।"

यह नयी तालीम पैसों पर निर्भर नहीं है। नयी तालीमका खर्च तालीमसे ही निकालना है, भले कैसी भी टीका हो। मैं जानता हूं कि सच्ची तालीम स्वाश्रयी है।

मो० क० गां ?

सेवाग्राम
जनवरी १९४५

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय

स्थापना १९२६

आरोग्य

१८६६ छाप

नीलगिरि तेल

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमें फायदेमंद

प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

फैशनेबिल कपड़ों

आकर्षक डिजाईन

नं०	७	८	९	५ गज
	१८)	२३)	२८)	"

२) आर्डर के साथ पेशगी

बाकी वी० पी० से

थोक व्यापारियों को खास सुभीता

भारत इन्डस्ट्रीज, जुही-कानपुर

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

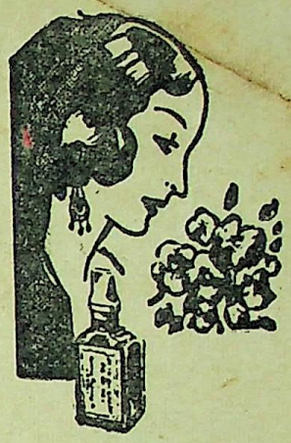

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी हैं। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेको शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

प्रभावशाली व्यक्ति

जीलेट से हजामत बनाते हैं।

जब एक व्यक्ति का व्यवसाय उसे अनेक व्यक्तियों के सम्पर्क में लाता है तो स्वच्छ और अच्छी तरह हजामत बनाया हुआ चेहरा आवश्यकता हो जाता है। यही कारण है कि लाखों प्रभावशाली व्यक्ति संसार के सर्वोत्तम हज़ामत बनाने के साधन जिलेट का प्रयोग करते हैं।

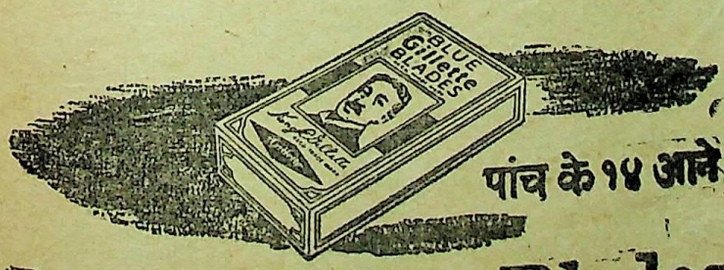

पांच के १४ आने

Blue Gillette Blades

ब्ल्यू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये।

लाइसेन्स की आवश्यकता नहीं

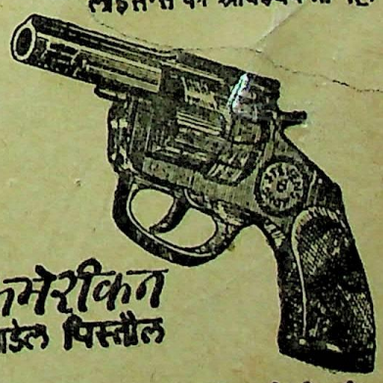

अमेरिकन माडेल पिस्तौल

[illegible]

REGD. NO. C 2229.

A NOVELTY WATCH
'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable, 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage As. 12. Free fo 2 watches.
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM

जिन पुरुषोंकी बचपनमें बुरे रास्ते पर और समझ आने पर भी विलास में आसक्ति रखनेसे नसोंमें नर्बलता आ गई हो जिनके लिये सर्वश्रेष्ठ औषधि खानेके लिये विचार में न हो। उनके लिये उत्तम से उत्तम दवा केवल मालिस द्वारा प्रयोगिता यह मलहम है। कारण कि इसके एकमात्र प्रयोग करने से नसें मजबूत व सख्त अवश्य हो जाती हैं। युवक, अधेड़ और वृद्ध सबको ही इससे फायदा पहुंचता है। एक शीशीका मूल्य ५) वी० पी० खर्च अलग।

चाइनोज मेडिकल स्टोर स्थापना १९३० शाखायें—चार रास्ता, अहमदाबाद १२, डल-हौसी स्क्वायर कलकत्ता, या बाजार, दिल्ली

आँख है तो जहान है

आंखके बिगड़ जानेसे मनुष्य-जीवन ही बेकार है। ड़े ही अथक परिश्रम द्वारा भीमसेनी कपूर आदि जङ्गली जड़ी-बूटियों से तैयार किये हुए जगत-प्रसिद्ध **भीम सेनी** सुरमा इस्तेमाल करें। इससे आंख की लाली, सूजन, पानी बहना, जाला मांड़ा, फूली, संमलबई, रतौंधी, दिनौंधी, पड़वाल, चकाचौंध तथा मोतियाबिन्द बिना आपरेशन दूर होता है। लाखों आदमियोंने परीक्षाएं की हैं। प्रतिदिन नियमित रूपसे लगानेसे बुढ़ापे तक आंख की रोशनी बनी रहती है। कीमत १॥), तीन शीशियां ४)।

पता—भारत आयुर्वेद आश्रम, दरशापुरवा (नं० ३) कानपुर

MONSOON
SETS IN
Anophelis breeds..

यह आश्चर्यजनक औषधि मलेरिया बुखारके लिये रामबाण है अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियासे कष्ट हो तो इसका सेवन करें। यह लाभप्रद एवं कम खर्चीला है।

The PANCHATIKTA *Kasaya*

KAVIRAJ N. N. SEN & CO. LD.
CALCUTTA

अहः हः
'लालशर' तो मेरे लिये अमृत है!

लाल-शर
(लाल शरबत)
बच्चोंको मोटा, ताजा, स्वस्थ और प्रसन्नचित्त रखने की प्रसिद्ध शीशी दवा

सब जगह मिलता है।
डाबर (डा. एस. के. बर्मन) लि. कलकत्ता

सम्पादक—देवदत्तमिश्र। ७४ धर्मतला स्ट्रीट, [illegible] इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा [illegible]

सचित्र

चित्रमित्र

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

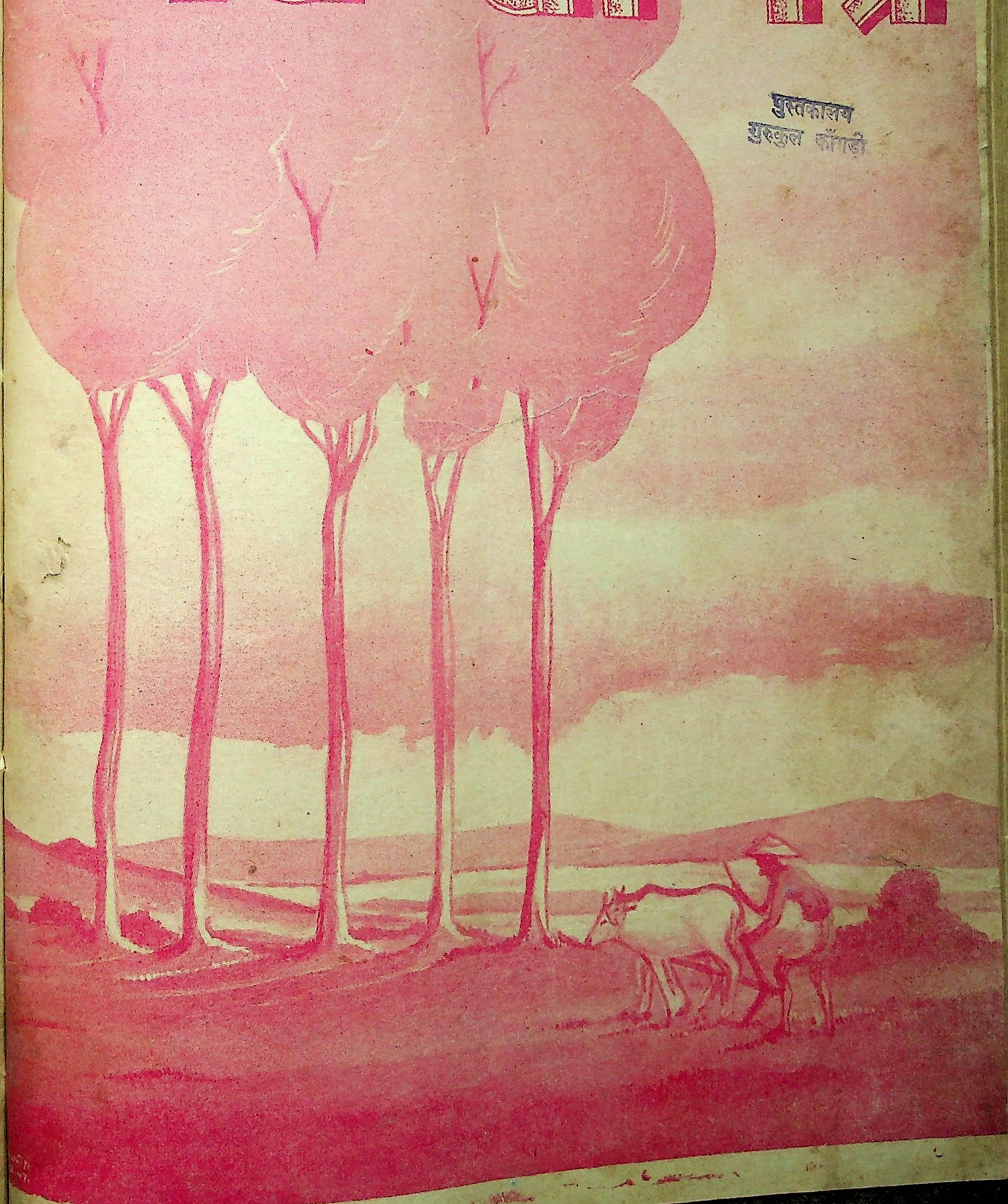

एक श्रद्धांजलि—

हमको उनका कार्य करना है

—श्री कमलनयन बजाज

पूज्य बापू तो गए ! लेकिन जिस तरह वह गये हैं उसमें हमारे लिए शर्म और कलंक का धब्बा रह जाता है बापू ईश्वरको मिलनेके लिए ही जा रहे थे, लेकिन भगवान ही दौड़कर उनको लेनेके लिये आ गया। एक नहीं तीन गोलियोंके शिकार वे बने। भगवान नहीं चाहता था कि वह किसी प्रकार कष्टमें रहें। जिस तरह भगवानने गजको ग्राहसे छुड़ाया उसी तरह दौड़कर बापूको भी उसने भौतिक कष्टोंसे मुक्त कर दिया। बापूको भी यह महान यात्रा एक न दिन करनी ही थी। उनके लिए यह पार्थिक बंधनोंको एक सर्वोत्कृष्ट विकार रहित पवित्र से पवित्र जरिया साबित हुआ।

१९४२ के 'भारत छोड़ो संग्रामको जब उन्होंने उठाया उस समय उनके विचार करीब करीब निश्चित से हो चुके थे कि यदि उनको सरकार ने पकड़ा तो पकड़ने के समयसे ही वह बिना अन्नजलका उपवास शुरू कर देंगे। इस तरह करनेमें धार्मिक; आध्यात्मिक दृष्टिसे कोई दोष न रह जाय इसके लिए उन्होंने पूज्य विनोबा, किशोर-लाल भाई, महादेव भाई आदिको एक जगह इकट्ठा कर सेवा ग्राममें अपनी कुटिया में ही विचार विनिमय शुरू किया। पूज्य महादेवभाई तो इसकी कल्पनासे ही परेशान थे। बापूकी मौतकी वह किसी रूपमें कल्पना ही नहीं कर सकते थे, विचार तो दूर रहा। उनसे बोलते नहीं बनता था। उनका शरीर थर थर कांपता था और कल्पना मात्रसे ही जो उनकी आंतरिक वेदना थी वह चेहरे पर स्पष्ट दिखलाई देती थी, लेकिन उनके मुंहसे बोली नहीं निकलती था। पूज्य किशोरीलाल भाईने कई बार घंटों तक बापूसे जिरहकी और इस महान और अंतिम बलिदानका कदम बापू उठावें। इसकी उन्होंने पूरी चेष्टा की। उनका हृदय रोता था। उनकी हमेशाकी जो आध्यात्मिक शक्ति थी वह पूज्य बापूजीके साथ जिरह करनेमें पिघलती सी दिखायी दे रही थी। आसपासमें हम लोग बैठे थे और हमारे हृदय कांप रहे थे। सबलोगोंको यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि पूज्य बापू को यदि ये लोग न मना सके तो बम्बईकी अगस्त वाली कांग्रेस महासमितिकी बैठक के बाद वह सेवाग्राम नहीं लौट सकेंगे।

इसी वातावरणके बीच पूज्य विनोबाजी आते दिखाई दिए। सब लोगोंकी नजर उन पर ही थी। सारे सेवाग्राममें निस्तब्ध शांति सी छा रही थी। सभी लोगोंको लग रहा था कि विनोबा ही शायद बापूको रोक सकें। बिनोबा आये। बापूनेथोड़ी प्रस्तावना के साथ अपने विचार उनके सामने दोहराये और पूछा कि इस तरहका कदम उठाने में कोई धार्मिक, आध्यात्मिक या अन्य किसी प्रकारका दोष तो नहीं आता है ? पूज्य बापूका असली जोर इस बात पर था कि दुनियामें जब हिंसाका वातावरण इतना प्रबल है और दूसरे सारे मार्ग हमारे लिए क्षीण हो गयें या अन्य किसी प्रकार का चारा हमारे लिए न रह गया ऐसे ही समय में जो अहिंसाका पुजारी है उसकी असली और अंतिम परीक्षाका वह समय आ गया और जब तक हिंसाके प्रतिरोधमें सच्चा और पवित्र अहिंसक खूनका बदला न दिया जाय तो वह अहिंसा कायरताकी मौतसे मर जायगी।

पूज्य विनोबाने देशकी और दुनिया की उस समयकी स्थितिको ख्यालमें रखकर बापूके विचार एक स्थितयज्ञकी तरह सुन रहे थे। जब बापू बोल चुके तब उन्होंने इतना ही कहा, मुझे इसमें किसी प्रकारका दोष दिखाई नहीं देता, इतना ही नहीं, लेकिन खास परिस्थितियोंमें अहिंसाके पुजारीके लिये इस तरहका बलिदान देना कर्त्तव्य हो भी सकता है। लेकिन उसके लिए लिए स्थिति और समय परिपक्व हो चुका है या नहीं इसका अंतिम निर्णय व्यक्ति स्वयं कर सकता है। पूज्य बापूने विनोबा की बात सुनकर कहा कि अभी कोई जल्दी नहीं है और दो चार रोज आप विचार करना चाहें तो कर सकते हैं और उसके बादमें आवश्यक समझें तो मुझसे दुबारा मिलें। पूज्य विनोबाने इतना ही कहा कि मेरे लिए इस पर सोचनेका कुछ नहीं रह रह जाता। और जिस तरह आये थे उसी तरह उठकर पौनारकी तरफ चल पड़े। पूज्य बापू और शायद विनोबाजीके मन में आनन्द समाया हुआ था। लेकिन सारे सेवाग्राममें सन्नाटा सा छा गया। महादेव भाई निस्तब्धसे हो गये। भयंकर चिंता के कारण उनकी सूरत डरावनी सी लगने लगी। उनके पास किसीको जाते नहीं बनता था। पूज्य किशोरीलाल भाई एक व्याकुल पंछीकी तरह व्यथित थे। पूज्य कस्तूरबा ने एक शब्द भी नहीं कहा। एक वीर नारी की तरह सारे वार्ता लापको वह सुनती रहीं। उनकी आंखोंसे अश्रुओंकी धार निकल पड़ी। फिर भी वह विचलित नहीं दिखाई दीं।

इस घटनाके कुछ ही दिनों बाद भगवान रमण महर्षिने पूज्य बापूको एक संदेश भिजवाया जिसमें कहा कि ईसा को क्रास पर चढ़ना पड़ा और उनके शरीरको कुसी फिकेशनकी यातना भोगनी पड़ी; लेकिन आप उनसे भी महान हैं और इतने ऊपर उठ चुके हैं कि यह आवश्यक नहीं होना चाहिये कि आप अपने शरीरको किसी प्रकार भी कष्ट दें। इसके बाद ही पूज्य बापू बम्बई चले गये। सेवाग्राम व वर्धाकी हजारों आत्माओंने अपने दिलसे शायद उनको अंतिम विदाई दी। परंतु माहादेव भाईके सतत प्रयत्नसे पूज्य बापूका उपवास ९ अगस्तको पकड़े जानेके साथ शुरू नहीं हुआ और खासकर महादेव भाईके ही आग्रहसे पूज्य बापूने वाइसरायको जो पत्र लिखा उसका जबाब आने तक वह एक दफा टल सा गया। परंतु फिर भी पूज्य बापूका उपवास करनेका आग्रह देखते हुए वह बहुत ही व्याकुल रहे होंगे, क्योंकि सात या आठ अगस्तको पूज्य महादेव भाई से जब मेरी बात हो रही थी तो निश्चित रूपसे उन्होंने मुझसे यह कहा कि "कमल

(शेष ३७ वें पृष्ठपर)

विश्वामित्र

वर्ष—३० संख्या—६० ता० १७ मार्च १९४८ MARCH 17, 1948. मूल्य =) वार्षिक ६)

गीत

यदि मैं होता घन सावन का।
पिया पिया कह मुझको भी पपिहरी बुलाती कोई,
मेरे हित भी मृगनयनी निज निज सेज सजाती कोई,
निरख मुझे भी थिरक उठा करता मन-मोर किसी का
स्याम-संदेशा मुझसे भी राधा मंगवाती कोई,
किसी मांग का मोती बनता ढल मेरा भी आंसू,
मैं भी बनता दर्द किसी कवि-कालिदासके मनका !
यदि मैं होता घन सावन का !!

आगे आगे चलती मेरे ज्योति परी इठलाती,
झांक कली के घूंघट से पीछे बाहर मुस्काती,
पवन चढ़ाता फूल, बजाता सागर शंख विजय का,
तृषा तृषित जगकी पथ पर निज पलकें पोंछ बिछाती,
झम-झूम निज मस्त कनखियों की मृदु अंगड़ाई से—
मुझे पिलाती मधुवाला मधु यौवन आकर्षण का !
यदि मैं होता घन सावन का ॥

प्रेम-हिंडोले डाल झुलाती मुझे शरीर जवानी,
गा-गा मेघ मल्हार सुनाती मुझको विरह - कहानी,
किरन कामिनी भर मुझको अरूणअलिंगनमें अपने
अंकित करती भाल चूम चुम्बन की प्रथम निशानी,
अनिल बिठा निज सुरभि-पंख पर मुझे वहां ले जाती-
खिलकर जहां न मुरझाता है विरही फूल मिलन का !
यदि मैं होता घन सावन का !!

खेतों खलिहानोंमें जाकर सोना मैं बरसाता,
मधुबन में बनकर बसंत मैं कलियोंमें झिप जाता,
ढहा बहाकर मन्दिर, मस्जिद, गिरजे और शिवाले-
मजहब से ऊपर दुनिया की धरती एक बनाता,
कोयल की बांसुरी बजाता आमोंके झुरमुट में-
सुन जिसको शरमाता सांवरिया बृन्दा बन का !
यदि मैं होता घन सावन का ॥

जीवनकी दोपहरी मुझको छू छाया बन जाती,
सांझ किसी की सुधि बन प्यासी पलकोंमें लहराती,
द्वार-द्वार पर, डगर-डगर पर दीप जला जुगनू के-
सजल शरबती रात रूप की दीपावली मनाती,
सतरंगी साया में शीतल उतर प्रभात सुनहला-
बनता कुंद कटाक्ष कली की खुली धुली चितवन का !
यदि मैं होता घन सावन का !!

बिहग-बालके चपल परों में कंचन बन बसाता मैं,
उरोमार सा अंग-अंग पर मुग्ध के हंसता मैं,
मदिरालय में मदिर नशा बन प्याले में ढल जाता,
बन अनंग अंजन अलसाई आंखोंमें अंगता मैं,
स्वप्न नयन में, सिहरन तनमें, मस्ती मनमें बनकर
अमर बनाता एक क्षुद्र क्षण में इस लघु जीवन का ।
यदि मैं होता कघन सावन का !!

जब मैं जाता वहां जहां मेरी निष्ठुर वह सुन्दर-
सांझ-सितारा देख रही होगी बैठी निज छत पर,
पहले गरज घुमड़ भय बन मनमें उसके छिप जाता
फिर उमंग बन बहता तनमें रिनझिम बरस-बरस कर
गोल कपोलों पर बरसा कर प्रथम बूंद वर्षा की,
याद दिलाता मिलन प्रात वह प्रथम-प्रथम चुम्बन का !
यदि मैं होता घन सावन का !!

—श्री 'नीरज'

तृप्ति और अतृप्ति

—:※:—

तृप्तिकी साधन है
अतप्तिका संसार क्या है ?

(१)

कुसुम-सा जीवन हमारा
एक क्षण खिल मुस्कराया,
एक क्षण पिकके स्वरोंमें
स्वर मिला कुछ गीत गाया;
जा सकी उस पार ध्वनि
या बीच ही से लौट आयी,
था छिपा आह्वान जिसका-
पास वह मेरे न आया;
कर सके संधान स्वर
वह शक्ति उसमें ही नहीं है
या कि यह भी वासनाका रूप था,
फिर प्यार क्या है ?
तृप्तिकी है साधना,
अतृप्तिका संसार क्या है ?

(२)

किस नयनका जल चुराकर
मेघ रिम-झिम है बरसाता,
किस अधर का स्पर्श पाकर
वायु उपवनमें सिहरता,
कौन सी गति है रुदन औ
हास, दोनों में मिली है,
कौनसी है शक्ति भरती
प्राणमें रह-रह विकलता;
अधरके उल्लास उड़-उड़
नयनमें जाकर झलकते,
हृदयके निःश्वास रह-रह मिट रहे,
रस धार क्या है ?
तृप्तिकी है साधना,
अतृप्ति का संसार क्या है ?

(३)

बादलोंमें तम भरा है
तो वहीं बिजली चमकती,
हृदयमें आकाशके रह-
रह कभी वह तड़त उठती,
गोदमें अपने लिये सागर
सरिता-सर और निर्झर,
[illegible]

है न पलभर प्यास बुझती,
प्यासमें किसको भला
पहिचान अमृत और विषकी,
खा लिया अंगार, चातकका,
कहो आहार क्या है ?
तृप्तिको है साधना,
अतृप्ति का संसार क्या है ?

(४)

गुन चुका हूं मैं बहुत
दुःख सुख धराकी धूप-छाया,
जो रहा दुःख से घिरा उसने
सुखों का मूल्य पाया,
किन्तु मैं कैसे करूं विश्वास
जिसने जन्म से ही—
तृप्तिकी ही साधना में
पूर्ण निज जीवन गंवाया,
सुख कभी मिलता नहीं
वह कल्पना है भ्रांति मनकी,
दुःख रहित इस विश्व में,
सुखका कहो आधार क्या है ?
तृप्ति की है साधना,
अतृप्तिका संसार क्या है ?

—श्री कृष्णरत्न गुप्त

प्रणय—गीत

मैं उसे कैसे भूलाऊं ?
है प्रवाहित प्रणय-तरणी, क्यों न इस को तट लगाऊं ।
मैं उसे कैसे भुलाऊं ?

शांत सागर की सतह है !
क्रोड़ में भी तो विरह है ।
झेलने झंझावतों को,
हृदय में विस्तृत जगह है ।
बढ़ रहा जो प्रणय-अंकुर फिर उसे मैं क्यों मिटाऊं !
मैं उसे कसे भुलाऊं !

झूमती हैं विटप लतिका ।
हंस रही हैं मृदुल कलिका ।
प्रकृति का प्रति,-रूप पावन,
हो रहा नर्तन अनिल का,
प्रणयके अभिनव-गगन में धवल मंजुल दीप्ति पाऊं !
मैं उसे कैसे भुलाऊं !

दीर्घ आशा ले खड़ा हूं ।
कठिन-पथ में भी बढ़ा हूं ।
एक नव दुनिया बसाने,
प्रणय-पथ में चल पड़ा हूं ।
मधुर-वीणा के स्वरों से-क्यों न जग को मैं गुंजाऊं ?
मैं उसे कैसे भुलाऊं !

रत्न कुमार 'रत्न'

पर हित बस जिनके मन माहीं ॥
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

विश्वामित्र

शिक्षा योजना

गत जनवरी महीनेमें अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलनका उद्घाटन करते हुए भारतके शिक्षा मंत्री माननीय मौलाना अबुल कलाम आजादने प्रत्येक शिक्षित नरनारी से यह अपील की थी कि "कमसे कम दो वर्षके लिये शिक्षकका काम करना पवित्र राष्ट्रीय सेवा समझनी चाहिये।" इस संबंध में माननीय शिक्षा मंत्रीने यह सुझाव रखा था कि छात्र हो या छात्रा यदि मैट्रिकका प्रमाणपत्र पानेके पूर्व एक वर्ष और बी०ए के पूर्व दो वर्ष शिक्षणका काम करें तो हमारे उद्देश्यके लिये बहुत बड़ी तादादमें शिक्षक मिल जायं।"अभी गत सप्ताह भारतीय पार्लमेंटमें शिक्षा विभागके वजट पर बहसके दौरानमें आलोचकोंको उत्तर देते हुए मौलाना अबुल कलाम आजादने जो शिक्षा योजनाकी रूप रेखा उपस्थित की उसका सारांश यह है कि जल्दीसे जल्दी भारतको पुर्ण शिक्षित बनाना है। ब्रिटिश शासनने यदि अपने उत्तरदायित्वका पालन किया होता और देशको शिक्षित बनानेका प्रयास, एक सरकारको जसे करना चाहिये, उचित ढंगसे करता तो आज जो अनर्थक और विनाशक कितनी ही समस्याएं हमारे सामने उपस्थित हैं शायद न होतीं। और इसीलिये ब्रिटिश सरकार ने इस तरफ जहांतक संभव था उपेक्षासे काम किया। साम्प्रदायिकताके प्रचार और विभाजन नीतिमें अशिक्षाने ब्रिटिश सरकार को शायद सबसे अधिक सहायता पहुंचायी है। यही कारण है कि शिक्षा विस्तार को अत्यन्त मन्दगतिसे आगे बढ़ाया गया।

आज स्थिति बिलकुल उलटी है। सरकारकी बागडोर जनताके प्रतिनिधियोंके हाथोंमें है। शिक्षाके मार्गमें जितनी बाधाएं हैं उन सबको दूर करके देशमें साहित्य, कला-कौशल और विज्ञानकी शिक्षाको अधिकाधिक प्रसारित करना उसका प्रथम कर्त्तव्य है। इसमें धन और जन दोनोंकी आवश्यकता है। सरकारका कर्त्तव्य है कि इस काम के लिये, भलेही अतिरिक्त कर लगा कर, वह पर्याप्त धनकी व्यवस्था करे। जनाभाव के लिये माननीय शिक्षा मंत्रीने जो उक्त सुझाव दिया है उसे काममें लाया जाना चाहिये। हमें विश्वास है कि सरकारकी इस योजना को कार्यान्वित करनेके लिये जनाभावकी शिकायत न होगी। विशेषज्ञोंका कहना है कि भारतमें इस समय शिक्षाकार्यमें जितने अध्यापक लगे हैं उनसे पांचगुना अधिक शिक्षकोंकी आवश्यकता है। इस समय मौजूदा स्कूलों में प्रायः ४ लाख अध्यापक हैं। सार्जण्ट महोदयने अध्यापक तैयार करने की जो योजना उपस्थित की थी उसके अनुसार तो शायद ५० वर्षके भीतर भी हम इस देशको शिक्षित नहीं बना सकते। और इतने दिनों तक रुक नहीं सकते। कमसे कम समयमें हमें देशको पूर्ण शिक्षित करना है। पांच साल अधिकसे अधिक दस वर्ष इस काम के लिये पर्याप्त हैं। यह काम दो ही तरहसे हो सकता है। मौलाना साहबने जो सुझाव रखा है उसे हम स्वतः स्वेच्छासे काममें परिणत करें या फिर सरकारको इस संबंध में कानून बना कर प्रत्येक मैट्रिकुलेट और बी० ए से क्रमशः एक और दो वर्ष शिक्षक का काम लेनेको वाध्य होना पड़े। हमारा ख्याल है कि सरकार योजना लेकर जब देशके सामने आयेगी तो उसे शिक्षकोंकी कमी नहीं रहेगी, यह हम इस बातका ध्यान रख कर कहते हैं कि देशको शिक्षाके अतिरिक्त और भी कितने ही महत्वपूर्ण कार्यों के लिये जनशक्तिकी आवश्यकता है।

बुनियादी, अनिवार्य और टेकनिकल शिक्षाके संबंधमें बहसके दौरानमें और जनवरीमें हुए शिक्षा सम्मेलनमें शिक्षा मंत्री के विचारोंसे हम पूर्णतया सहमत हैं। किन्तु शिक्षाके माध्यमके संबंधमें हम उनसे सहमत नहीं हो सके। आप कहते हैं कि प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाके संबंधमें तो दो मत नहीं है। किसीको इस पर आपत्ति नहीं है कि इन दोनों विभागोंमें मातृ भाषाके माध्यमसे शिक्षा दी जानी चाहिये। मतभेद उपस्थित होता है विश्वविद्यालयकी शिक्षको लेकर। मौलाना साहबका इस संबंध में यह मत है कि कम से कम पहले पांच वर्ष तक मौजूदा माध्यममें परिवर्तन न होना चाहिये और अंगरेजीको ही माध्यम बने रहने देना चाहिये। इस संबंधमें सदा छिद्रान्वेषी वृत्ति रखने वाले दबी जवान यह कहते सुने जाते हैं कि मौलाना साहबका यह अंग्रेजी मोह उनका हिंदी द्रोह तो नहीं है! हम जानते हैं कि मौलाना साहब इन क्षद्रतिक्षुद्र विचारोंसे बहुत ऊपर उठे हुए हैं। उनको इस बातका भय है कि उच्च शिक्षाके क्रम में आकस्मिक इतना बड़ा परिवर्तन शिक्षा प्रणालीको कहीं भंग न कर दे। किंतु इस निरर्थक भयको उन्हे दूर करके साहसके साथ हिन्दीको माध्यम बना कर शिक्षाकी योजनाको कार्यान्वित करना चाहिये। हिन्दीमें वह शक्ति है कि वह उपस्थित आवश्यकताकी पूर्त्ति कर सकती है।

स्वतन्त्र सार्वभौम प्रजातन्त्र--

देशके एक वर्गके भीतर यह संदेह काम कर रहा है कि भविष्यमें भारतको ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलके अन्तर्गत रखनेका प्रयास किया जा रहा है। देशके भावी रूपके संबंधमें आरंभमें ही में विधान परिषद आसाम दे चुकी है। उसका अन्तिम निर्णय विधान परषद ही कर सकती है। इस संबंध में अन्य किसी विभागमें अन्य या व्यक्तिके किसीके साथ विचार विनिमय करने या किसी नतीजे पर पहुंचनेका कोई प्रश्न ही नहीं उठता। भारतीय पार्लमेंटम इस संबंध प्रकट किये गये सन्देहका समाधान करते हुए प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि "अन्तिम निर्णय कुछ भी हो। मैं तो समझता हूं यह बिलकुल निश्चित है कि भारत सम्पूर्णतया स्वतंत्र, और सार्वभौम प्राजातंत्र होगा, उसे आम राष्ट्र समूह

(कामनवेल्थ) कहें राज्य कहें या जो चाहें कहें।" हमारे सार्वभौम प्रजातंत्रकी वैदेशिक नीति क्या होगी। यह जाननेको हमसे अधिक उत्सुक होंगे वे देश जो भारत जैसे विराट शक्तिशाली राज्यकी वैदेशिक नीतिकी उपेक्षा नहीं कर सकते। छोटे-छोट देश यदि आशा भरी दृष्टिसे भारतके नेतृत्वकी ओर देख रहे होंगे महाशक्तिशाली भी उसका सहयोग पानेकी अपनी लालसा छिपाय नहीं रख सकते। आज संसारका नेतृत्व करने वाले उसे गलत रास्ते पर ले जा रहे हैं भारत यह महसूस कर रहा ह। अतः उसकी वैदेशिक नीतिका आधार संसारको सही रास्ते पर ले चलनेका होना जचाहिये। स्वभावतः तब वह आजके किसी गुटके साथ अपने को पूर्णतया मिला नहीं सकता। वह गुट अमेरिका हो या रूस का। पण्डित नेहरू का इस संबंधम यह कहना बिलकुल सही है कि "हम एक महान राष्ट्र और एक बहुत बहुत बड़ी ताकत हैं। ऐसे भी हो सकते हैं जो स्वभावतः ऐसी कोई चीज होते देखना पसंद नहीं करेंगे जिससे हम मजबूत हों।" अतः वैदेशिक नीति निर्धारित करने के संबंधम हमें इन सब बातोंका ध्यान रखना होगा। भारतके परराष्ट्र सचिव पण्डित नेहरू इस सब तथ्यों और परिस्थितियोंको को दृष्टिगत रखत ठीक ही कहते हैं कि "अवसरवादिताकी दृष्टिसे भी स्पष्ट, सच्ची स्वतंत्र नीति ही सर्वोत्तम ह।" इसके साथ साथ पण्डित जीने यह भी स्मरण कराया है कि हम लोकतंत्रके, स्वतंत्र सार्वभौम भारतके समर्थक हैं। अतः स्वभावतः हमारी नीति इस आदर्श और सिद्धांतके प्रतिकूल नहीं हो सकती। सच्ची लोकतंत्रीय भावना और विचारके प्रतिकूल, जिसमें केवल राजनीतिक ही नहीं आर्थिक लोकतंत्र भी शामिल ह,—किसी बातका 'विरोध करना हमारा कर्त्तव्य होना चाहिये। ऐसी कोई नीति जिसकी प्रतिक्रिया राजनीतिक एवं आर्थिक लोकतंत्रके विरुद्ध होगी। उसका प्रतिरोध किया जायेगा। दूसरे शब्दोंमें यह कहना चाहिये कि तानाशाही पैदा करने वाली किसी प्रणालीको प्रोत्साहन देनेवाली नीतिका समर्थन नहीं किया जा सकता पण्डित नेहरूके नतृत्वमें स्वतंत्र सार्वभौम प्रजातंत्र राज्यकी नीतिका यही आधार होगा।

लागका फैसला—

गत सप्ताह मद्रासमें भारतीय मुस्लिम लीग कौंसिलकी बैठक हुई। हम नहीं कह सकते कि इसे कौंसिल की बैठक कहना कहांतक विधान संगत होगा; क्योंकि कौंसिलके २५८ सदस्योंमेंसे मात्र २०उपस्थित थे। शायद कोरमके नियमकी जानबूझ कर उपक्षा की गयी। अस्तु! यद्यपि भारतके शान्ति प्रिय मुसलमान नहीं चाहते कि मुस्लिम लीगका अस्तित्व रखा जाये किन्तु सांप्रदायिकता, घृणा और प्रतिहिंसा ही जिनकी ताकत है वे कैसे इस संगठनको तोड़ जानबूझकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारें। फलतः इन लोगोंने यह फैसला किया कि भारतीय संघमें "मुसलमानोंके धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक हितों को देखनेके लिये" मुस्लिम लीगको जीवित रखना आवश्यक है। सांप्रदायिकताको किसी न किसी रूपमें जीवित देखनेकी इच्छा रखने वाले इस फैसलेसे मन ही मन प्रसन्न हुए हैं और उनमें एक कलकत्तेसे निकलने वाला अंगरेजोंका अखवार 'स्टेट्समैन' है। जबसे भारतका विभाजन हो गया है इस पत्रकी धूर्तता चरम सीमाको पहुंच गयी है। इसके सम्पादकीय लेखोंका यदि जोड़ निकाला जाये तो महीन समालोचक देखेगा कि इसने सदा कांग्रेसको बदनाम किया है। काश्मीरके मामलेमें हैदराबाद और जूनागढ़के मामलेमें इसने बराबर, किन्तु बड़ी धूर्तताके साथ, कांग्रेस को दोषी ठहरानेका छिपा प्रयास किया है। लीगके फैसलेके मामलेमें भी अपने बचावके लिये पहले ही से सुन्दर भूमिका बांध चुकनेके बाद यह साम्राज्यवादी पत्र कहता है कि वाजिब बात तो यह है कि "यह याद रखना चाहिये कि पाकिस्तानमें कांग्रेस भी तो भंग नहीं की गयी। साथ-साथ यह भी है कि परिस्थितियोंने उसे भी कांग्रेसको "साम्प्रदायिक बना दिया है।" कितना शरारतसे भरा सुझाव है इस गोरे पत्रका। बहरहाल स्वयं विवेकशील और प्रगतिशील मुसलमानोंने ही इस फैसलेका विरोध किया है और इसके विरोधमें तत्काल मद्रास के ही असेम्बलीके नौ मुस्लिम लीगी सदस्योंने लीगकी तमाम सदस्यताओंसे इस्तीफा दे दिया। मुसलमान जगह-जगह इस फैसले के विरुद्ध असंतोष जाहिर कर रहे हैं। युक्त प्रांतकी लीग असेम्बली पार्टी पहले ही भंग कर दी गयी थी और उसके नेता श्री लारीने युक्त प्रांतीय व्यवस्थापिका परिषद्में म्यूनिसिपल बिल पर विचारके समय संयुक्त निर्वाचनका विरोध करते हुए यहां तक कहा कि हम संप्रदायोंके नाम पर संरक्षित सीटें रखनेके पक्षमें भी नहीं हैं। इससे यह स्पष्ट है कि मुसलमान यह समझने लगे हैं कि उनका हित किधर है। साम्प्रदायिकताको भारतमें अब प्रश्रय नहीं दिया जा सकता इस बातको मुसलमान समझ लें। साम्प्रदायिक राजनीतिक संगठन, वे किसी धर्मके मानने बाले हों, देशकी स्वस्थ प्रगति और विकासमें बाधक हैं अतः राष्ट्र उनको बर्दाश्त नहीं कर सकता। भारतके मुसलमान इस बातको समझ लें। अब तो देशसे साम्प्रदायिकताको मिटानेमनको सहायक होना चाहिये। यदि वे ऐसा नहीं करेंगे और अब भी दुराग्रह या किसी दुरभि सन्धिवश लीगको जिलाये रखकर फिर कुछ खुराफात करनेकी सोच रहे हों तो उनको समझ लेना चाहिये कि वे अपने हाथों अपनी कब्र खोद रहे हैं।

प्रथम भारताय पात—

इस देशमें अंगरेजोंके आनेके बाद राजनीतिक स्वतंत्रताके साथ-साथ धीरे-धीरे प्रायः सभी कला कौशलोंका लोप होता गया और इन लुप्त उद्योगोंमें भारत की जहाजरानी भी थी। हर्षकी बात है कि

उनके यहांसे विदा होते ही धीरे-धीरे हमारे लुप्त कला कौशलोंको फिर जीवन प्राप्त होने लगा और इसका प्रथम ऐतिहासिक निदर्शन गत रविवार १४ मार्चको विजगापट्टममें देखा गया। भारतके प्रथम प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने भारत भूमिमें भारतीय श्रम और पूंजी द्वारा प्रस्तुत प्रथम भारतीय पोतका जल सन्तरण समारोह अपने कर कमलोंसे सुसम्पन्न किया। यह ८ हजार टनका जहाज है जिसे सिंधिया कम्पनीने अपने विजगापट्टम कारखाने में तैयार कराया है एवं यह समुद्रों एवं सागरों तथा महा सागरोंकी यात्रा कर सकता है। इसका नाम रखा गया है 'जल उषा'। जहाजरानीका देशकी औद्योगिक उन्नति और विकासके साथ कितना घनिष्ट सम्बन्ध है यह आजके जमानेमें किसीको बताने की आवश्यकता नहीं है। यही कारण है कि अंगरेजोंने पहले हमारे इस उद्योग-धन्धेको भी अन्योंकी भांति चौपट किया और बादमें जब धीरे-धीरे यहांका समुद्री व्यापार पूर्णतया विदेशी कम्पनियोंका एकाधिकार बन गया तो भारतीयोंके लाख प्रयत्न करने पर भी उनको इस व्यवसायमें ब्रिटिश सरकारकी ओरसे किसी तरहकी सुविधा नहीं दी गयी। इतना ही नहीं जहां तक सम्भव था जहाजरानीके धन्धेको भारत में न बढ़ने देनेकी चेष्टा की गयी। किन्तु भारतके स्वतन्त्र होनेके साथ-साथ वह कला कौशल और विज्ञानके सभी क्षेत्रोंमें अपना कदम आगे बढ़ा रहा है। 'जल उषा' के जल प्रवेश समारोहके अवसर पर इस सम्बन्धमें भारत सरकारकी नीति पर प्रकाश डालते हुए नेहरूजीने इस नये उद्योग-धंधेको सब तरहसे प्रोत्साहन देनेका आश्वासन दिया है। आपने ठीक ही कहा है कि देशके विकासके साथ इस धंधेका इतना महत्वपूर्ण सम्पर्क है कि सरकार इसे अपना उद्योग-धंधा समझकर इसकी उन्नति के लिये प्रत्येक सुविधा देनेको वाध्य है। देशको संसारके प्रमुख उद्योगशील राष्ट्रोंकी प्रतिद्वंद्विताका सामना करना है, यदि उसे प्रथम कोटिका राष्ट्र बन कर रहना है। अतः इसे उद्योगके रूपमें विकसित करनेके साथ-साथ हमें जलशक्ति अर्थात् नौ सैनिक शक्ति भी बढ़ानेकी परम आवश्यकता है। इसी बात को ध्यानमें रखकर पण्डित नेहरूने देशके युवकोंसे नाविक जीवन अपनानेकी अपील की है। पण्डितजी कहते हैं कि "इस विजगापट्टम बन्दरगाहमें हम केवल जहाजरानी नहीं आरम्भ कर रहे, बल्कि यह स्मरण रखना चाहिये कि विजगापट्टम एक महत्वपूर्ण नौ सैनिक अड्डा भी है, भारतके पूर्वी तटमें यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण है और मैं इसे नौ-सैनिक दृष्टिसे प्रथम कोटिका नौ सैनिक अड्डा बनाना चाहता हूं। मैं चाहूंगा कि हमारे नौजवान जल सेनाके विभिन्न विभागोंमें शामिल हों।" देशको प्रथम श्रेणीकी शक्ति हमारे नौजवान ही बना सकते हैं और हमें विश्वास है कि वे किसीसे पीछे नहीं रहेंगे।

उत्पादनका प्रश्न --

हमारा देश अमित साधनों और सूत्रों के रहते हुए भी गरीब है। उत्पादन सीमित है। अमीर और गरीबके बीचमें अन्तर आज पहलेसे अधिक है। असन्तोष और बेचैनी का दायरा क्रमशः विस्तृत और उग्र होता जा रहा है। श्रमिका असंतुष्ट हैं क्योंकि उनका पेट नहीं भरता, कपड़े नहीं मिलते विलास और मनोरंजन तो दूर है। धनिकों का पेट भरा हुआ है, घर भरा हुआ है, सब तरहसे भरे पूरे हैं फिरभी उनको असंतोष है क्योंकि लक्षाधीश कोट्याधीश बनना चाहता है, कोट्याधीश अरबपति। फलतः इन भूखों और भरेपूरोंकी रस्साकशीमें उत्पादनकी गतिमंद पड़ गयी है और समस्या का वास्तविक समाधान हो या न हो उद्योग-धंधोंके राष्ट्रीयकरणकी मांग घर घर पहुंच गयी है और जन साधारणका यह विश्वास हो गया है कि जब तक उद्योगधंधे राष्ट्रीय नियंत्रणमें नहीं लाये जायेंगे तबतक देशकी आर्थिक समस्याओंका समाधान संभव नहीं है। देशके नेताओं और राजनेताओं का यह मत है कि इस समय सबसे पहली आवश्यकता है उत्पादन बढ़ानकी। अभी उस दिन उद्योग सचिव डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जीने कहा कि "उत्पादन करो या मरो।" आपने औद्योगिक शांति और देशकी तमाम शक्तिको उत्पादनोंमें लगानकी आवश्यकता बताते हुए कहा है कि "अन्यथा हमारी तमाम आशाएं और महत्वाकांक्षाएं मिट्टी में मिल जायेंगी।" यहांतक तो हम उनके साथ सहमत हैं। किंतु हम देखते हैं कि वर्तमान नाजुक स्थितिसे देशके कुछ नता भी नाजायज लाभ उठानेके लोभको संवरण नहीं कर पाते इसीसे स्वल्प उत्पादनकी पूरी जिम्मेदारी वे श्रमिक वर्गके मत्थे ही मढ़ते हैं और उन्हीं को दबान एवं सारा दोष उन पर ही लादने का प्रयत्न करते हैं। कुछ नताओंकी यह मनोवृत्ति सबसे ज्यादा उत्पादनके मार्ग में बाधक है। यदि उनका दृष्टिकोण धूमिल न होता और उनके न्यायकी तुला एक ओर कुछ झुकी न होती तो उत्पादनके रास्तेमें इतनी कठिनाइयां न दिखायी देतीं। कहावत है कि मरेको मारे शाहमदार। मरनेकी बात कहने वाले यह भली भांति जानते हैं कि देशमें विकराल आर्थिक कठिनाई आने पर भी धनिकोंके मरनकी नौबत तो कभी आनको नहीं है, मरेंगे गरीब और इसी स्थितिके कारण आज उनको ही सब तरफसे दबाया जा रहा है। लेकिन निम्बू को उस हद तक दबाना अच्छा है जबतक रस निकलेमात्रा अधिक हो जानेसे कड़वाहट पैदा होगी और तब रस भी अखाद्य हो जायगा।

हिमालयके चित्रकारसे भेंट

अन्यत्र प्रकाशित उक्त शीर्षक रचना के लेखक हैं, श्री क्षितीश वेदालंकार। सतीश वेदालंकार भूलसे छप गया है। पाठक कृपया इसे नोट कर लें। सं० वि०

अन्तर्राष्ट्रीय

पचास साला संधि–

यूरोप दो भागोंमें विभक्त हो गया। पूर्वीय यूरोप समाजवादी रूसके प्रभावमें आ गया। पश्चिमी यूरोपने समाजवादसे बचनेके उद्देश्यसे अपना एक संघ बनाया है। इसमें ब्रिटेन, फ्रांसके अतिरिक्त बेलजियम, लक्सम बर्ग और नेदरलैण्ड सम्मिलित हैं और अमेरिका इस संघका संरक्षक है। इन पांचो राष्ट्रोंने मिलकर गत सप्ताह एक पंच राष्ट्र सम्मेलन किया जिसमें एक पचास साला सन्धि पत्र तैयार हुआ है। यह रक्षात्मक योजना है किन्तु सोवियट अंचल इसे अपने विरुद्ध युद्धकी तैयारी समझता हैं। कहते हैं कि जो पैक्ट बना है उसमें सेनाओंके पुनर्संगठन और शस्त्रीकरण का ध्यान रखा गया है। सोवियट सरकार के मुख पत्र इजवेशियाका कहना है कि यूरोपकी शान्तिके विरुद्ध षड्यन्त्र ब्रूसेल्समें रचा गया है।

मसारिकको आत्म हत्या

चेकोस्लोवाकियाके परराष्ट्र सचिव डा० मसारिककी आत्महत्या यूरोपकी गत सप्ताहकी एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना है। चेकोस्लोवाकियाके वर्तमान कम्यूनिस्ट शासनके विरोधियोंका कहना है कि कम्यूनिस्टी शासनतंत्रमें कैदीका सा जीवन बितानेकी अपेक्षा डा० मसारिक ने आत्महत्या द्वारा ऐसे जीवनका अन्त कर डालना ही श्रेयस्कर समझा। कम्यूनिस्ट प्रधान मंत्री गोटवाल्ड कहते हैं कि डा० मसारिक चेकोस्लोवाकियाकी वर्तमान स्थितिसे पूर्ण सन्तुष्ट थे और मृत्युके पहले उनके अन्दर जरा भी निराशा बेकसी या निरुत्साहका भाव कभी नहीं देखा गया। बहरहाल वास्तविकता कुछ भी हो जिन परिस्थितियों में दुर्घटना हुई है उसकी प्रतिक्रिया अच्छी नहीं होगी यह चेकोस्लोस्लोवाकियाके बाहर रहने वाले कम्यूनिस्ट विरोधी चेकोंकी प्रतिक्रियाओंसे स्पष्ट है।

रूसकी नीति–

ब्रिटिश पार्लमेंटकी लार्ड सभामें वैदेशिक स्थिति पर विचार के दौरानमें लार्ड-सेलिसबरीने कहा था कि रूसकी नीति नये रंग रूपमें बहुत ही भयंकर दिखायी दे रही है। आज रूस के भाग्य विधाता हिटलरी रंगढंग अख्तियार कर रहे हैं। जर्मनीने आस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकियाको जिस तरह हड़प लिया था रूसने भी उसी तरह बुलगेरिया, रुमानिया चेकोस्लोवावाकिया, पोलैण्ड और हंगरीको अपने फंदे में कस लिया है। सारे यूरोपको खतरा उपस्थित है। ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका रूस की मौजूदा नीतिको सम्पूर्ण विश्व शांति के लिये खतरनाक बता रहे हैं और समझते हैं कि अब अधिक इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। उपेक्षा तो कभी नहीं की गयी पर बात यह है कि यूरोपमें राजनीतिक शतरंजके खेलमें अबतक पश्चिमी राष्ट्र बराबर मात पर मात खाते रहे और पहले पहले संपूर्ण यूरोप बादमें पश्चिमी यूरोप को संपूर्णतया अपने प्रभावमें रखनेकी इनकी चालोंको रूस व्यर्थ करता गया। स्थिति अब जहां आकर पहुंची है युद्धके विना इस बातका फैसला हो नहीं सकता कि संसार में पूंजीवाद राज्य करेगा या समाजवाद। दूसरे शब्दोंमें यह कहना चाहिये कि अमेरिका ब्रिटेन और फ्रांस कम्पनीका शासन रहेगा या रूसका। चेकोस्लोवाकियामें पूर्ण कम्यूनिस्ट शासन हो जानेसे अमेरिका और ब्रिटेनकी रही सही आशाओं पर पानी फिर गया है, इसीसे यह कहना पड़ता है कि किसीके न चाहते हुए भी युद्ध हो कर रहेगा। यूरोपमें रूस और पश्चिमी राष्ट्रोंके बीच में युद्ध की स्थितिमें यूनान और टर्कीका कितना महत्व है यह इसीसे समझा जा सकता है कि अमेरिकन पार्लमेंटसे राष्ट्र-सचिव मि० मार्शल और रक्षा सचिव मि० फोरस्टलको यह कहना पड़ा है कि यदि यूनान और टर्कीको अमेरिकन सैनिक सहायता नहीं दी जायगी तो देश स्वतंत्र नहीं कर सकते। इन दोनों देशोंके लिये तोपों, विमानों एवं अन्य शस्त्रोंस्त्रों पर खर्च के लिये पार्लमेंटसे २७ करोड़ ५० लाख डालर मांगे गये हैं। इस संबंधमें यह याद रखना चाहिये कि गत वर्ष अमेरिका इन दोनों देशोंकी मददके लिये ४० करोड़ डालर दे चुका है। इससे यह स्पष्ट है कि युद्ध अब अति संन्निकट है और यूनान तथा टर्कीको यूरोपमें अपना सैनिक आश्रयस्थल बनाकर युद्धकी प्रतीक्षामें अमेरिका पूरी तैयारी कर रहा है।

एण्टार्कटिक.

पिछलेकुछ दिनोंसे एण्टार्कटिकाकेकुछहिस्सों पर सार्वभौम अधिकारको लेकर स्थिति दिनों दिन बिगड़ती ही जा रही है। कूटनीतिक हलचल अब सैनिक गतिविधिमें परिणत हो रही है। दक्षिणी ध्रुवके इस अंचलके इर्दगिर्द तीन महा देश––दक्षिण अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया–आते हैं। ये तीनों महादेश एण्टार्कटिका नामसे परिचित प्रदेश पर अपने अपने सार्वभौम अधिकार का दावा कर रहे हैं। इन दावा करनेवालों में ब्रिटेनभी है और उसका दावा अन्य करणों के साथ यह भी है कि पहलेही से इस प्रदेश पर उसका अधिकार है। दक्षिण अमेरिकाके पूर्वमें फाकलैण्ड द्वीपके अतिरिक्त दक्षिण जार्जिया द्वीप, आर्कनीज और शेटलैण्ड द्वीप पर ब्रिटेनका अधिकार है। ये सब द्वीप समूह एक दूसरेसे लगे हुए हैं। इन द्वीपोंके पूर्व भाग आबाद हैं और एण्टार्कटिकाके अत्यन्त निकट हैं। इन सब बातोंके कारण

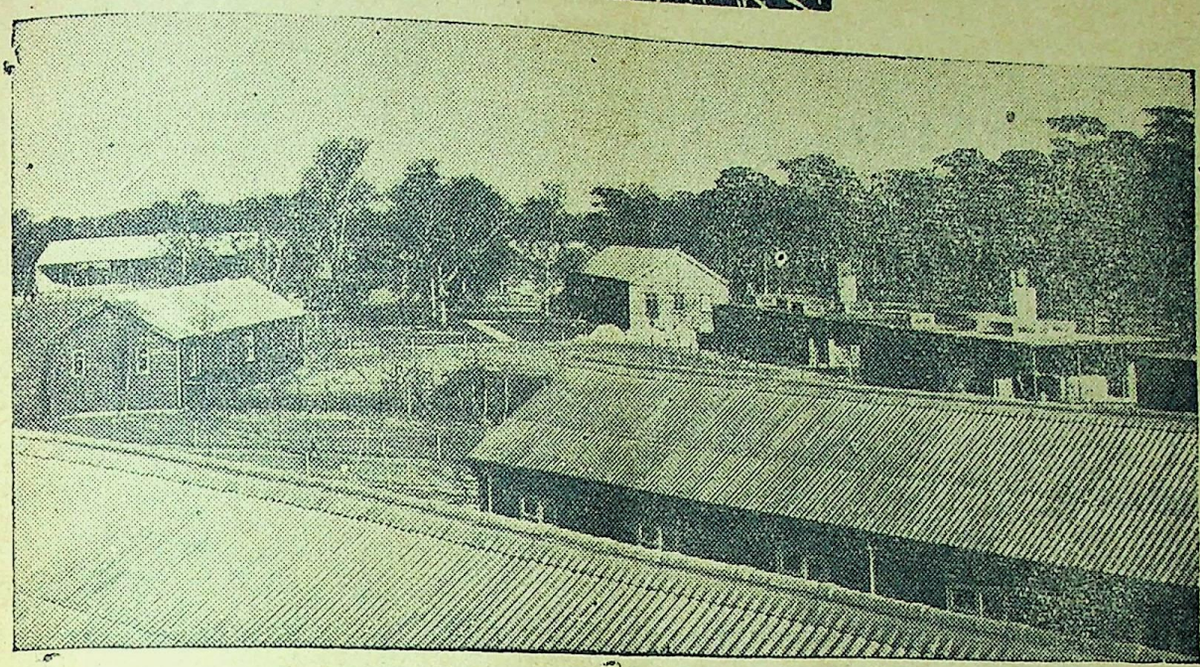

इस वष लन्दनमें अन्तर्राष्ट्रीय क्रीड़ा प्रतियोगिता (ओलिम्पिक) होने जा रही है । खेलोंमें भाग लेनेवालोंके लिये रिचमण्ड पार्कमें कैम्प बन रहे हैं । उसीका यह एक दृश्य है ।

ब्रिटेन इस प्रदेश पर अपना राजनीतिक अधिकार समझता है । आबादीकी दृष्टिसे एण्टार्कटिकाका विशेष महत्व या मूल्य नहीं है क्योंकि यद्यपि इसका क्षेत्रफल ६० लाख वर्गमील हैऔर संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपके सम्मिलित क्षेत्रफलके समान है किन्त आबादीके योग्य नहीं है । यह संसारमें सबसे ऊंचा प्रदेश है । समुद्री सतहसे ६ हजार फीट अधिक इसकी ऊंचाई है । शीत भी यहां सब स्थलोंसे अधिक है अर्थात् आर्कटिक से भी यह ठंढ़ा है । इसके कितने ही पर्वत शिखर १० हजार फीटसे अधिक ऊंचे हैं । जमीनमें उर्वरा शक्ति नहींके समान है । अतः इस प्रदेशका स्थल भाग मनुष्य आबादी के लिय सर्वथा अनपयुक्त है । लेकिन इसके इर्द-गिर्दके समुद्र कीमती ह्वेल एवं अन्य मछलियोंसे भरे हुए हैं । समुद्री पक्षी भी बहुत मात्रामें हैं जिनकी आजके विज्ञान युगको बहुत आवश्यकता है । १९४६ ,में एडमिरल बियार्डने एण्टार्कटिका प्रदेशकी यात्रा करके यह पता लगाया कि वहां ऐसे स्थल भाग भी हैं जो बर्फसे मुक्त ह । निर्झर जल स्रोत भी हैं । इससे संसारने यह जाना कि आदमी बस सकते हैं । यह मालूम होने पर अन्य देशोंके अन्वेषक भी अपनी बढ़ती हुई आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिये अतिरिक्त प्रदेश खोजनेके इरादेसे वहां पहुंचे । इस तरहके अभियान दल भेजने वालोंमें दक्षिण अमेरिकाके देश भी थे । अर्जेण्टिना का दल भी पहुंचा था । दक्षिण अमेरिकाका वह हिस्सा जहां चाइल और अर्जेण्टिना हैं अन्य महादेशोंकी अपेक्षा एण्टार्कटिकासे सर्वाधिक निकट हैं । एल डोरेडोका पता लगनेसे गौतमालाकी दिलचस्पी भी इधर बढ़ी । फलतः ब्रिटेन और गौतमालाके बीचमें संघर्ष खड़ा हो गया है । एण्टार्कटिकाको ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत करनेका प्रयास ब्रिटेनको करते देख अन्य दक्षिणी अमेरिकन राज्योंकी भी इस ओर चिन्ता और दिलचस्पी बढ़ी । दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया भी कूदे और एण्टार्कटिकाके निकट के कुछ द्वीपों पर अपना अधिकार कर लिया । आस्ट्रेलिया और अफ्रीकाकी ये हरकतें ब्रिटेनकी सहायक हुईं । न्यूजीलैण्ड भी एण्टार्कटिकाके निकट है । इन्हीं सब बातों से ब्रिटेन और लैटिन अमेरिकन देशोंके बीचमें संघर्ष ठन गया है ।

भारतकी पुरातन धारणाएं

१२ वें पृष्ठका शेषांश

के लिये गधे पर बठाते हैं । सोमदेवकी संस्कृत भाषामें चीतेकी खालमें गधेकी कथाका वर्णन मिलता है ।

कई देशोंमें सिंहके बजाय बाघको महत्व दिया जाता है । प्रत्येक शिकारी एक बाघको मार डालनेके बाद यह जानता है कि बाघके चुराये हुए पंजे और बालों के गुच्छोंसे उसे सावधान रहना चाहिए क्योंकि वे वशीकरणके काममें लाये जाते हैं । जिस प्रकार किसी बीमारी, मौत, दैत्य अथवा किसीकी कुदृष्टिको हरण या वशमें करनेके लिये औषधियों अथवा वशीकरण मन्त्रोंका उपयोग किया जाता है—उतना ही कीमती वशीकरण मन्त्र यह भी है । शरीर पर बांधनेके गण्डे और अजीब प्रकार की पहननेकी हंसुली जिसे 'सामरोख' कहा जाता है—बड़े कीमती जन्त्र या गण्डे माने जाते हैं । इनमें विषका हलका असर करने की भी शक्ति होती है ।

विश्वमित्र

भारतकी पुरातन धारणाएं

लेखक--श्री गजानन बर्मा विशारद

आजके सभ्य समाजमें कुछ पिछड़े हुये लोगोंके जो सांस्कृतिक विचार और अपढ़ ग्रामीण जनताके पुराने कला कौशल के आधारपर जो रीति-रिवाज, प्रथाएं और मूढ़ विश्वास हैं वे उनकी पुरातन धारणाएं मानी जाती है। ये धारणाएं प्रायः स्वतंत्र रूपसे प्रत्येक देशमें समय-समय पर प्रकट हुई है। लोगोंमें इन रिवाजोंका आदान प्रदान हुआ है। कुछ लोगोंका मत है कि संसारकी प्रथाओं तथा धारणाओंका मूलरूप में जन्म भारतवर्ष में अधिक हुआ है। कुछ लोग मानते हैं कि इनका जन्म अटलांटिस में हुआ है। अधिकांशमें इस सिद्धान्त पर यह मत स्थिर होता है कि भारतवर्षको इनकी उत्पत्तिका ठेका नहीं था वरन् इस देश पर वाह्य आक्रमणकारियोंके समय समयके प्रभावोंके कारण ये धारणाएं यहां अपरिमित रूपसे प्रचलित हुई हैं। उदाहण के लिये इस्लाम धर्म अपने साथ कई प्रथाएं और विश्वास यहां लाया जो आज तक प्रचलित हैं। आमतौरपर यह माना जाता है कि भातवर्ष और पूर्वी देशोंके मूलसार पर आजकी पश्चिमी कथाओंका जन्म हुआ था।

ये धारणाएं पारस्परिक सहानुभूति, छूतछात, जादूटोना, और धर्मके मल आधार पर गहराईके साथ संबंधित हैं। नीचे दिए हुये उदाहणोंसे यह बात स्पष्ट रूपसे जानी जा सकेगी।

इस लेखमें प्रत्येक तरहकी धारणाओं के संबंधमें विस्तृत रूपसे लिखना असंभव है। लिखने की कठिनता विषयमें नहीं बल्कि उसके चुनावमें है; और न यह ही संभव है कि कुलकी अपेक्षा अधिक उदाहरण दिये जांय।

सब देशके प्राचीन विश्वासोंमें सूर्य की महत्ता अधिक है। विलायतमें आज भी भोजनका टेबल पर मदिराकी बोतल इस प्रकार घुमाई जाती है जिस प्रकार सूर्य घूमता है। आयर्लेण्डमें जब कोई व्यक्ति कबरिस्तानमें घूमता था तो यह प्रथा थी कि वह सूर्यके साथ-साथ जितना संभव हो उतना घूमे। उसका दाहिना हाथ उस चक्करके मध्यकी तरफ होता था। भारतवर्ष में अग्निके चारों ओर इसी प्रकारका चक्कर लगाया जाता है। दूल्हा और दुलहिन शादी के मंडलके मध्यवाले खम्भेके चारों ओर सूर्यके मार्गका अनुसरण करते हुए चक्कर लगाते हैं। दुलहिन अपने पतिके घर जाने के बाद-इस विश्वास पर कि सूर्यमें उसको गर्भवती करनेकी शक्ति है--नित्य प्रति सुबह उदय होने वाले सूर्यका दर्शन करती है। विलायतमें भी इसी विश्वासपर यह कहा जाता--"वह पत्नि सुघखी है जिस पर सूर्यकी कृपा है।" सब देशोंकी धारणाओं में सूर्यकी इस शक्तिपर विश्वास बतलाया जाता है कि कोई वस्तु सूर्यको अर्पण करने से यह आशय प्रकट होता है कि किसी अज्ञात मित्रको बुलाया गया है। पश्चिममें सूर्य की व्यापक दृष्टिपर भी विश्वास किया जाता है कि सूर्य सारे विश्वको अपनी असंख्य दृष्टियों (रश्मियों) से देखता है। कुदृष्टि और उसको हरण करने वाली अनेकों औषधियोंके बारेमें पूर्वी देशोंमें आम तौरपर विश्वास प्रचलित है।

चन्द्रमा भी आश्चर्यजनक विश्वासों एक लाभदायक साधन है। भारतवर्ष में सूर्यके समान चन्द्रमा भी सदासे एक देवता माना गया है; क्योंकि यह स्वर्गके निवासियोंका देव ही नहीं जो किसानों और उनकी खेतीपर अपनी कृपा दृष्टि रखते हैं वरन् सूर्यनारायण, चन्द्रमा, धरतीमाता, गंगामाता आदि की उपासना एक आदि कालसे की जाती है। पश्चिममें यह विश्वास प्रचलित है कि चन्द्रमा एक पुरुष है जो किसी अपराध,-जैसे चोरी या खूनकी सजा के रूपमें अपनी पीठ पर लकड़ियोंका एक गठ्ठा लिये हुये घूमता है।

हिंदुस्तानके कुछ भागोंमें चन्द्रमाको "शशधर" कहा जाता है। दूसरे स्थानों पर यह विश्वास प्रचलित है कि चन्द्रमा एक बार गौतमकी पत्नि अहिल्यासे प्रेम करने लग गया था। ऋषिने अपनी पत्निको श्राप दिया और वह पत्थरकी मूर्तिमें बदल गयी। बादमेंऋषितने अपनी चरणापादुका चन्द्रमाकी तरफ फेंक जिससे चन्द्रमामें एक काला धब्बा लग गया जो अबतक है। चन्द्रमाके क्षय होनेकी बहुत सी कथाएं मिलती हैं। बम्बईमें यह धारणा है कि एक दिन गणेश अपने वाहन मसक (चूहे) परसे गिर पड़े। यह देख चन्द्रमा हंसा इस पर गणेशजीने क्रुद्ध हो कर क्रुद्ध होकर संकल्प किया कि चन्द्रमाको फिर कभी कोई नहीं देख सकेगा। इस पर चन्द्रमाने गणेशजीसे क्षमा मांगी और गणेशजीने यह बात मान कर कहा कि उनके जन्मदिवस गणेश चतुर्थी (भादो मास) को केवल एक दिन चन्द्रमा कलंकित रहेगा। चन्द्रमामें बीमारियोंके हरण करनेकी भी शक्ति है अतः उसकी उपाधि है--"औषधि संबंधी पौधोंका स्वामी।"

लगभग प्रत्येक देशमें यह विश्वास है कि चांदनी रातमें दैविक और रहस्यमय रोगोंको दूर करने वाली शुद्ध औषधियों का चयन करना चाहिये। विलायतमें लोग दूजके चन्द्रमाको देखना ठीक नहीं समझते; अतः वे दूरबीन पर एक चादीका टुकड़ा लगा लेते हैं जिससे चांद्रमाकी झलक दिखाई न दे सके। तब वे नयी ऋतुके लिए एक दूसरेका अभिनन्दन करते हैं। मुसलमान लोग सालके बाद नए चन्द्रमाके दिन अपने मकानके दरवाजे पर बकरीका खून छिड़-

कते हैं। चन्द्रमाको आदर देने का एक विश्वास यह भी माना गया है कि चन्द्रमा पित्र (मृत व्यक्तियों) का निवास स्थान है। ग्रीसमें चन्द्रग्रहणको रोकनेके लिये इस प्रकार पुकारनेकी प्रथा है--"चांद ! मैं तुम्हें देख रहा हूं" हिंदुस्तानमें यह धारणा है कि चन्द्रको ग्रहण करने वाला व्यक्ति राहू है। एक अपराधमें राहूको दण्ड दिया गया था-इसी प्रतिशोधमें अवसर पाकर वह चन्द्र और सूर्यको निगल गया था। ग्रहण लगना अशुभलक्षण है। एक गर्भवीत हिन्दू स्त्री ग्रहणके समय काम नहीं करती है; क्योंकि उसकी यह धारणा रहती है कि उसके गर्भ का बालक बिगड़ जायगा। ग्रहणके समय कोई भी हिंदू न खाता है, न पीता है। इसी प्रकारके मत मुसलमानोंमें भी प्रचलित हैं। हिंदुओंमें सबसे अधिक प्रभावशाली विश्वास यह है कि किसी पवित्र नदीमें स्नान करनेसे ग्रहण और उसकी पीड़ाएं मिट जायेंगी। संगीत और जोरकी आवाज राहूको डराती हैं।

सारे भारतवर्षमें भूमिकी पवित्रता पर पर विश्वास किया जाता है। मरते समय मनुष्यको अन्तिम बार जमीन पर लिटाया जाता है और पैदा होते वक्त माता अपनी संतानको जमीन पर लिटाती है। पश्चिम में भूमिको बीमारियोंसे मुक्त करनेका साधन माना जाता है। आयर्लेण्डमें लोग किसी पादरीकी समाधिसे एक चिमटी धूल लेकर उसे पानीमें मिला कर पीते हैं। अफ्रीका और अन्य देशोंमें मिट्टीके लेप जख्म पर लगानेमें विश्वास किया जाता है। हिंदू लोग अपने बर्तनोंको साफ करनेके लिए शुद्ध मिट्टीका उपयोग करते हैं। जैन लोग स्मशान से मुर्दा फूंक आने पर मिट्टीसे अपने हाथोंको धोते हैं और मृत्युकी अपवित्रता मिटानेके लिये स्नान करते हैं। पारसी लोग विपत्तिसे बचनेके लिये अपने नाखून पर मिट्टी लगाते हैं। यही धारणा यूरोप में भी है। मुसलमानोंमें मृतपुरुषको गाड़ने के लिए मुहावरा है जिसे "मिट्टी देना" कहते हैं। यूरोप में किसी मृतमित्र या रिश्तेदार कफन पर मुट्ठी भर कर मिट्टी फेंकना पवित्र कार्य माना जाता है। यही प्रथा कई हिंदुओं और यहूदियोंमें भी है।

पानीको भी पवित्र माना गया है इसी-लिए पवित्र नदियोंमें स्नान करनेका बड़ा महत्व है। सभी पानी पवित्र नहीं होता। वेतरारी नदी (मृत्यु की नदी) जो उड़ीसा प्रांतमें है, भयप्रद है। कर्मनाशा नदी जो संयुक्त प्रांतके कुछ भागमें से बहती है-उसमें स्नान करनेसे अथवा उसे छू भर लेनेसे वह अच्छे कर्मोंका नाश कर देती है। पानीके विषयमें इसी प्रकारकी धारणाएं यूरोपमें भी हैं। एक आस्ट्रियन कथाके आधारपर यह बात प्रचलित है कि सब नदियों का उद्गमस्थान एक राक्षसकी पत्निके आंसू हैं। जेस्ट रमामोरम में एक नदी एक मुर्दसे निकली है। सारे संसारमें नदी, झील, तालाब और कुंएके विषयमें कई कथाएं हैं। भारतवर्षमें बरसातके लिये जोकुछ किया जाता है वैसाही यूरोपमें भी होता है। सन् १८७३-७४ वाले गोरखपुरके आकालके समय रात्रिको स्त्रियां हल लेकर नग्न रूप इधर उधर गयी थीं। इसी प्रकार २० वर्ष बाद मिरजापुर जिलेमें भी स्त्रियोंने नंगी अवस्थामें रातके समय खेत जोतो ताकि इन्द्रदेव (वर्षाका स्वामी) उन पर दया करके पानी बरसाए। सर्विया निवासियोंमों अना-वृष्टिके समय एक लड़कीको फूलोंसे सजाया जाता है और उसके शरीर पर बना दी जाती है। बादमें वह घर घर नाचती फिरती हैं और प्रत्येक घरकी स्त्री उसके ऊपर पानी ऊड़ेलती है। गोड़ जातीमें भी मसेन को वर्षा तुका स्वामी माना जाता है। एक मानरून खतम होनेके बाद एक त्योहार पर दो खम्भे खड़े किए गए जिनके दोनों सिरों पर से बीचमें एक रस्सी बांधी गई; इन खम्भों पर रस्सियों द्वारा लड़के चढ़े और फिर वे खम्भों पर यह आशय बतलाते हुए लटक गए मानो पानी बरस रहा है। कुआंमें बरसातके लिए लोग एक ब्राह्मण को लाकर उसे नदी अथवा तालाबमें खड़ा करते हैं। उसका काम सिर्फ इन्द्रदेवके नाम को दुहराना होता है। दक्षिण भारतमें कुछ लोग एक बांस पर एक मेंढकको मुंह खोल कर लटका देते हैं जिससे इन्द्रदेव उन पर दया करें और वर्षा होवे। थाल जातिमें स्त्रियां और लड़कियों अपने हाथों में तीर-कमान लेकर नाचती और गाती हुई बाहर जाती हैं अ घ्र किसी दूसरे गांवकी भेंसको घेर कर माता काली के सामन उसका बलिदान करती हैं।

पंजाबमें गांवकी लड़कियां पानी में कीचड़ को मिलाकर खिड़कीमेंसे नीचे सड़क पर से गुजरनेवाली किसी अभागी बुढ़िया पर ऊंड़ेलती है। बरसातके शुरू में किसी बूढ़ी स्त्रीको फव्वारेके नीचे इस आशयसे बैठाया जाता है ताकि बरसात बन्द न होवे। कुछ पत्थरों की भी पूजा की जाती है। इन पत्थरों पर ऐसा विश्वास किया जाता है कि इनको पूजनेसे पानी बरसेगा। यूरोपका एक उदाहरण है कि जब प्रार्थना कही जाती थी तब नवरी स्थित सेण्ट पीटरकी प्रस्तर मूर्तिको एक नदीमें ले गये थे। उसी उद्देशके लिए पत्थर का एक क्रास इयोनामें उपयोगमें लाया गया था। हिन्दुस्तान में भगवान बुद्धका अवशेष भी इसी उद्देशको बतलाता है। बिहारमें एक पवित्र पत्थरको पानीके बर्तन में रखा जाता है (समोआ) में जब अधिक वर्षा हुई थी- एक पत्थर जिसे वर्षाके देवता का प्रतीक माना था-वर्षाको रोकनेके उद्देशसे अग्निके पास रख कर गर्म किया गया था।

विलायतमें बच्चे इस प्रकार चिल्लाते हैं--"हे ! वर्षा तुम स्पेन चली जाओ; अब किसी दूसरे दिन आकर बरसना।" "मद्रासमें यह प्रथा है कि किसी बदसूरत बूढ़ी विधवा स्त्रीको-जो कभी कभी नंगी अवस्थामें भी होती है-नचाया जाता है ताकि देवता इन्द्र उससे नाराज होकर होकर पानी बरसाना बन्द कर दे। कुआंमें किसी कुत्तेके कानमें गरम तेल डाला जाता है जिससे वह कुत्ता रोने लग जाय और इस पर देवता इन्द्र उस पर दया करके पानी बरसाना बन्द कर दे।

ओलोका गिरना जो कि एक प्राकृतिक नियम है-यह विश्वास किया जाता है कि

कि ओले गिरानेका काम किसी राक्षस द्वारा किया जाता है। ओले गिरना बन्द हो इसके लिए कई षड्यंत्रोंका वर्णन भी मिलता है। कुमाऊंमें लोग ओलेकी तरफ थूकते हैं। या एक कुल्हाड़ीका मुंह उस गिरते हुए ओलेकी तरफ जमीन पर रखते हैं ताकि गिरते हुए ओले कट ज जाये। मुल्तानमें लोग ओले इकट्ठे करके उनको तोड़ डालते हैं।

इन विश्वासोंमें तूफान भी एक सफल साधन है। आयलरलैण्डमें लोग जादूगरों के साथ राक्षसों और मृतोंको नाचते हुए देखते हैं। लिस्टोवेलमें एक बूढ़ी स्त्रीने धूलके बादलोंकी तरभफ घास फेंका था। बम्बईमें तूफानको लोग बगल्या, भूताल्या अथवा देवका प्रकोप कहते हैं।

मरोक्कोमें जब किसी हबशीका सिर दर्द करता है तो वह किसी भेड़ या बकरी को इतना मारता है जब तक कि बेहोश होकर जमीन पर न गिर जाये। सिरका दर्द तब उस जानवरको चला जाता है। रोममें बुखारसे पीड़ित रोगीके नाखून काटे जाते हैं और उन पर किसी पड़ोसीसे मोम लेकर लगा दिया जाता है; इससे पड़ोसीको बुखार आने लगता है और पहले रोगीका बुघार कम पड़ने लग जाता है। केशायरमें शरीर पर उठने वाले मससे बचनेके लिये उन पर सुअरके मांसका टुकड़ा रगड़ना पड़ता है--बादमें एक जंगली वृक्षकी छालको लम्बे बल काट कर उसमें वह मांसका टुकड़ा रख देते हैं जिससे ये मस फिर उस वृक्षको पैदा होते हैं। बरखम स्टेड और हरफर्ड शायरमें कुछ ओकके वृक्ष शीतज्वरको मिटानेके लिये उपयोग में आते हैं। रोगीके बालोंका एक गुच्छा ओकके वृक्षसे बांध दिया जाता था और फिर एक जोरका झटका दिया जाता था जिससे शीत ज्वर ओकमें चला जाता था और रोगी अच्छा हो जाता था। हिन्दुस्तान में शीतलासे पीड़ित व्यक्तिका छाला एक मिट्टीके बर्तनमें रखकर उसे ऐसी सड़क पर गाड़ा जाता है जहां चौराहा हो। जो व्यकित उस स्थान पर पैर रखता है, बीमारी उस पर चली जाती है और पहला रोगी ठीक हो जाता है। यह बिलकुल न्यायोचित है क्योंकि कोई भी व्यक्ति इस प्रकार बीमारी प्राप्त कर सकता है, परन्तु इस प्रकार किसी व्यक्तिको बीमारीमें डालकर शीतलाके रोगसे मुक्ति पाना बड़ी दुष्टताका काम है। एक रोगी किसी जानवर या पंछीको अपने बिस्तर पर रखता है फलस्वरूप उस जानवरको रोग लग जाता है और रोगी अच्छा होने लग जाता है। चौपायों (गाय, बैल वगैरह) की बीमारियोंमें किसी भेंस का चमड़ा कोई मेमना, घास या सिरास वृक्षकी डालियोंको दूसरे गांवकी सरहदमें फेंक दिया जाता है--इससे यह विश्वास किया जाता है कि इन वस्तुओंके साथ बीमारियां दूसरे गांवमें चली जाती हैं। इन कारणोंसे कई बार दंगे फसाद भी होते हैं।

हिन्दुस्तानके विश्वासोंमें यहूदियों का बलिदानका बकरा एक आम विश्वास है। प्रायश्चितके दिन जो ७ वें महीनेका दसवां दिन होता है--यहूदियोंका सबसे बड़ा पादरी एक जीवित बकरेके सिर पर अपने दोनों हाथ इजराएलीटीके प्रति पापों का प्रायश्चित करते हुए रखता था। ऐसा करनेसे ये पाप उस पशु पर मढ़ दिये जाते थे और उसे अरण्यबनमें भेज दिया जाता था। आसाममें गेरोकी पहाड़ियोंके गेरो निवासियोंमें सालमें एक बार बकरेका बलिदान किया जाता है और एक महीने बाद किसी बन्दर या चूहे की भी इसी प्रकार मौत होती है। इस प्रकार इन प्रतिनिधि बनाये हुये जानवरोंकी मौतसे आने वाले सालकी मुसीबतों और बीमारियोंसे लोग मुक्त हो जाते हैं। इसी प्रकार वर्षमें एक दिन पश्चिमी हिमालयमें हूहरके भोतियास लोग एक कुत्तेको भंग या किसी मादक वस्तु द्वारा उसे नशीला बनाकर, खूब मिठाई खिलाकर गांवमें उसकी सवारी निकाल कर उसे स्वतन्त्रतासे छोड़ देते हैं। बादमें वे उसका पीछा करते हुए उसे लकड़ियों और पत्थरोंसे यह विश्वास करते हुए मार डालते हैं कि इस वर्ष कोई बीमारी या आपत्ति इस गांवमें नहीं आवेगी।

सब देशोंमें जानवरोंकी पूजाका भी महत्व है। ऐसी पूजा दो प्रकार की होती है। एक तो यह कि जानवरोंकी पूजा की जाती है इसलिये वे न तो मारे जाते हैं और न खाये जाते हैं--दूसरी वह जिसमें उनकी पूजा इसीलिये होती है कि वे मारे और खाये जाते हैं। हिन्दू लोग गायकी पूजा करते हैं परन्तु वे उसे न मारते हैं और न खाते हैं। दक्षिण भारतके टोड़ लोग कुछ अंशों तक भैंसको पवित्र मानते हैं। नियमानुसार वे भैंसका मांस नहीं खाते। वर्षमें एक बार गांवके सब युवक लोग एक बछड़ेको मारने और खानेके उत्सवमें शरीक होते हैं। टोड़ लोगोंके एक पवित्र वृक्षकी बनी हुयी एक गदासे वह बछड़ा मारा जाता है। अश्व पूजा भारतवर्षमें बहुत प्रसिद्ध है। खास तौर पर पश्चिम भारतमें यह अधिक प्रचलित है। इसमें अश्वका बलिदान किया जात है। अश्वको अत्यन्त ही शुद्ध और भाग्यवान पशु माना जाता है। कुछ राजपूत भील 'घोड़ देव' नामक देवताकी पूजा करते हैं। यह पत्थरका बना हुआ घोड़ा होता है। गुजरातमें साधुओंकी समाधि पर कपड़े के घोड़े चढ़ाये जाते हैं। कुनबी लोग दशहरे के दिन अपने घोड़ेको नहलाते हैं, उन्हें फूलोंसे सजाते हैं और उनके लिये एक-एक भेड़का बलिदान करे उसका खून घोड़ों पर छिड़कते हैं। शीतलाका वाहन गदहा माना गया है। पूर्व वैदिक कालमें गधोंके प्रति अनादरकी भावना जाग्रत हुई होगी अतः मुहम्मद साहबने कहा कि--"सब आवाजोंमें गधेकी आवाज सबसे अशुभ है!" भोजन करतेके बाद आलस्य मोड़ने से यह विश्वास किया जाता है कि खाया हुआ अन्न गधेके पेटमें जायेगा! भारतवर्षमें गधेकी पूजा शीतलाके रोगसे सम्बन्धित है। इन धारणाओंमें गधोंका काफी वर्णन है। महाजनोंमें अग्रवाल लोग गुप्त रूपसे दुलहनको देवीकी आराधना करने

शेष ६ व पृष्ठपर देखिये

हिमालयका चित्रकार सभट

श्री शतीश देवालंकार

सन १९४३ के जुलाईके महीनेकी बात है। एक बार कुल्लू जानेका पुनः अवसर हाथ आया। पहुंचनेसे पहले ही मनमें निश्चय कर लिया था कि इस बार महान कलाकार रोरिकके दर्शन अवश्य करने हैं। इससे पूर्व भागदौड़के कारण यात्राका यह महत्व-पूर्ण अंश अपूर्ण ही रह गया था। सात दिनका प्रोग्राम बनाकर गये थे। एक दिन इसी प्रयोजनके लिये रिजर्व रख लिया।

हिमालय महान् है। हिमालयकी कल्पना हिमालयका चित्र और हिमालय सम्बन्धी कविता सभी महान् हैं। परन्तु सबसे महान् है हिमालयका दर्शन। संसारके सबसे ऊंचे, सबसे महान्, सबसे भव्य इस पर्वत-राजकी पुत्र-पुत्रियां की तरह विभिन्न श्रृंखलाओंके रूपमें जो अपना निसर्ग-सुन्दर, उच्च-उदार, हिम-अटल अन्तर प्रकट हुआ है वह बिना प्रत्यक्ष दर्शन किये कल्पनामें आ ही नहीं सकता। इस महान् नगाधिराज का साक्षात् करने पर ही इस बातका कुछ-कुछ आभास होता है कि सौन्दर्य रहस्यमय क्यों है और क्यों प्रकृति जन-जीवनसे परे —एकान्तमें ही अपना श्रृंगार करती है। विभिन्न प्रकारकी वृक्षावलि, रंग-विरंगे वन्य पुष्प, लता-वितान, कलकल छलछल करते जल प्रयात, पहाड़ी निर्वर, उच्चवन्य मार्ग, और इन सबके ऊपर प्रकृति की एका-न्तिकताका गहरा आवरण—("तुम मेरे पास होते ही जाओ जब और कोई नहीं होता"—की अनुभूति-सी होती है—) इन सबके संयोगसे मनमोहक सौन्दर्य कहांसे आ टपकती है यह तो मनो विज्ञानकी खाल खींच कर भी शायद ही बताया जा सके, परन्तु इतना निर्विवाद रूपसे कहा जा सकता है कि संस्कृतके महाकवि कालिदासने अपने अमर काव्योंमें स्थान-स्थान पर जो हिमालय के सौन्दर्यकी मग्ध होकर चर्चा की है, वह अकारण नहीं है।

काउण्ट निकोलस रोरिकने कदाचित महान् हिमालयकी इसी सौन्दर्य प्रेरणासे अनुप्राणित होकर ही कुल्लूकी उपत्यका कुल्लूकी उपत्यका—देवताओंकी घाटीमें —नगर नामक स्थान पर अपना वास-स्थान और 'सरस्वती कला भवन' बनाया और भारत भूमिको अपनी मातृभूमिका-सा मान दिया।

प्रो० निकोलस रोरिक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार थे। कलाके वर्तमान जगत्में 'सन्त कलाकार' के रूपमें इनका स्थान अद्वितीय है। जारके समय रूसमें गवर्नमेण्ट आर्ट कालेजके वर्षों अध्यक्ष रहे और मैक्सिम गोर्की द्वारा आयोजित 'वर्ल्ड आर्ट कांग्रेस' के अध्यक्ष। रूसी रंगमंच पर सामूहिक नृत्यके लिये जो डिजाइन रोरिक ने प्रस्तुत किये वे ही रूसी जनतामें इनको अमर करनेके लिये पर्याप्त थे। परन्तु प्रथम महायुद्धके पश्चात् रूसमें जब क्रांतिकी आग सुलगी तो 'बुर्जुग' लोगोंके प्रति विद्रोह की भावनासे भरी जनता की मनोवृत्तिके कारण इन्हें अमेरिक जाना पड़ा। न्यूयार्क में 'रोरिक म्यूजियम' के नामसे जो कला-केन्द्र स्थापित हुआ वह न केवल इनके चित्र प्रेमियोंका अपितु पश्चिम जगत्के समस्त संस्कृति साधकोंका तीर्थ स्थान बन गया। अमेरिकामें रोरिकको 'सौन्दर्यका सहस्र-जिह्व गायक' कहा गया और कहा गया —"बाइबिलके यूसाकी तरह यह बहु-मुखी प्रतिभा वाला व्यक्ति उत्तरीय ज्योति नीलम-श्वेत फनकी ओर अपनी भुजायें फैलाये हुए है।"

पिछले २४ सालसे नगरमें रहते हुए कलाके क्षेत्रमें रोरिकने जो साधना की है उसके कारण उनको 'पर्वत गुरु' के नामसे याद किया जाता है।

रोरिक केवल चित्रकार ही नहीं हैं। एक अन्वेषक और पुरातत्वके रूपमें इन्होंने तिब्बतके सुदूर प्रदेशों और लाहौल और स्पिती की यात्रा की है—यह ऐसा भू भाग है जिसके विषयमें दुनियाको बहुत कम जानकारी है। अब यह प्रदेश 'रोरिक प्रदेश' के नामसे पहचाना जाता है। तिब्बतकी यात्रा करते हुए एक बार चीनी तुर्किस्तान साथियोंके साथ गिरफ्तार भी कर लिये गये। हिमालयके अन्तर्वर्ती प्रदेशमें लगभग दस हजार मीलकी यात्रा करके रोरिकने 'देवतात्मा नगाधिराज' के लगभग ४०० चित्र बनाये हैं।

भारतीय विचारधारासे रोरिक को बचपनसे ही प्रेम रहा है। अपने पिताकी बैठकमें लगे हुए एक चित्रसे रोरिकको शैशवावस्थामें बड़ा प्रेम था। पीछे बड़े होने पर उन्हें पता लगा कि यह चित्र कंचन जंघा की है, तो भारत और हिमालयके प्रति उनकी प्रीति बढ़ चली। 'गायत्री' नाम की एक पुस्तक भी लिखी है।

संस्कृतिक क्षेत्रमें रोरिक कलाकार, लेखक, दार्शनिक और पुरातत्वज्ञके रूपमें एक अविश्रान्त कार्यकर्ता रहे हैं। एक जगह के अध्यात्मवादी स्वयं द्रष्टा हैं वे। कलाके माध्यमसे संसारके समस्त देशों और समस्त जातियोंमें सद्भावना उत्पन्न करना उनका उद्देश्य रहा है। इसी सिलसिलेमें कला और संस्कृतिकी समस्त संस्थाओंकी अन्त-र्राष्ट्रीय रक्षाके एक 'रोरिक पैक्ट' बनाया गया जिस पर २१ देशोंने हस्ताक्षर किये हैं। गुरु देव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी, और श्री जगदीशचन्द्र बसु उसके समर्थन-कर्ताओंमें हैं। हिन्दुस्तानमें उस ऐक्टके प्रतिनिधि सर षणमुखम् चेट्टी, श्री अमर नाथ झा और श्री विजय लक्ष्मी पण्डित हैं।

* * *

सो इस महान् व्यक्तिके दर्शनके लिये "४३ की जुलाईके अन्तिम सप्ताहमें एक दिन (किस दिन—यह अब बताया नहीं जा सकता, क्योंकि डायरी पाकिस्तानमें ही रह गयी है) हम कुल्लूके सुलतान बाजारसे मोटर पर सवार हुए। १२ मील पर कट-राईं है। मार्गमें दूर-दूर तक सीढ़ीनुमा हरे-हरे खेतोंमें सिर पर लाल कपड़ा बांधे ये पहाड़ी तरुणियां ऐसी लगती हैं जैसे हरी मखमल पर वीर-बहूटियां चली जा रही हों। व्यास नदी के किनारे-किनारे सघन वृक्षोंके वनप्रांतसे लगी सड़क--पता ही नहीं लगा कि मोटर कब कटराईं पहुंच गयी। यहांसे दो मील दूर हलकी-हलकी चढ़ाई लिये नगर है। इस प्रदेश की अदालत भी नगरमें ही है इसलिये किसी-किसी दिन

लोगोंका अच्छा यातायात रहता है। पैदल चलते-चलते कोई चालीस मिनट लगे होंगे कि नगर आ गया। बस्तीके ऐन शुरू में ही अदालत है। देहात छिटपुट बस्ती पहाड़के पार्श्वमें कहीं-कहीं छितरी पड़ी है। बस्तीके अन्तमें है रोरिक निवास। एक तरफ गहरी घाटी है, दूसरी तरफ एक छोटी-सी पहाड़ी वक्ष ताने गर्वसे खड़ी है। सामने दूर हिमसे आच्छादित पर्वत श्रृंग हैं। पीछे उन्मुक्त आकाश। निवासके लिये ऐसे सुन्दर स्थानके चुनावको देखकर ही मैं सोचता हूं कि यह भी कहीं धरतीके फलक पर अंकित रोरिक निर्मित चित्र ही तो नहीं है! जरा देखो तो सही—हरे पेड़ोंके झुरमुटमें यह लाल बंगला! थोड़ा-सा और पीछे हटकर देखो तो साक्षात् चित्र जैसा ही लगता है!

प्राइवेट सेक्रेटरीसे भेंट हुई। उन्हें 'परिचय पत्री' दी। मैं दफ्तरमें बैठा चारों तरफ आंखें दौड़ाकर प्रत्येक वस्तु देखने लगा। देखा प्रत्येक चीज कलापूर्ण है। सामान्य डाकके कार्डों पर भी रोरिककी तूलिका द्वारा चित्रित एक नयनाभिराम चित्र छपा हुआ है। दृष्टि वहीं जाकर अटक गयी। पता नहीं, कब तक अटकी रहती। इतनेमें ही आवाहन हुआ। मैं ससम्भ्रम-सा सेक्रेटरीके पीछे-पीछे चला।

लकड़ीके बने साथके बंगलेमें एक ओर की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। कुछ कदम बाद ही स्वप्न लोक आरम्भ हो गया। सीढ़ियों की रेलिंग पर और पार्श्व की दीवारों पर बहुमूल्य कालीन टंगे हुए हैं—पता नहीं कौन-कौनसे देश के। इनमेंसे अधिकांश पर की गयी चित्रकारीसे तिब्बती कलम का परिचय मिलता है।

—इतनेमें ही मुझे ख्याल आया कि अभी कुछ दिन पहले पं० जवाहरलाल नेहरू जब इस 'देवताओंकी घाटीमें' आये थे तो रोरिकके अतिथि बने थे। उस दिन सारा नगर सजाया गया था, सारा मार्ग सजाया गया था और जब मि० स्वेतो स्लाव (प्रो० रोरिकके पुत्र) से किसी पहाड़ीने पूछा था—"यह सजावट कैसी?" तो स्वेतोस्लावने तत्काल उत्तर दिया था—"जानते नहीं, आज हिन्दुस्तानका सबसे बड़ा आदमी हमारा अतिथि बनकर आ रहा है।" इस उत्तरमें ही पं० नेहरूके प्रति रोरिक परिवारका प्रेम प्रकट होता है।

साथ ही ख्याल आया कि वह विश्व का महान् राजनीतिज्ञ, यह विश्वका महान् कलाकार—ये दोनों महान् जब एक साथ बैठे होंगे तो वह कैसा स्वर्गीय दृश्य होगा। सम्भव है कि जिस कमरेमें इन दोनों महान पुरुषोंने बैठकर वार्तालाप किया होगा उसी कमरेमें मुझे भी बैठाकर वार्तालाप करनेका अवसर मिले।

—कि इतनेमें ही सीढ़ियां समाप्त हो गयीं। सामने क्या देखता हूं—दुमंजिले पर यह छोटा-सा कमरा चन्द्र शाला-सा, नीचे कालीनका फर्श, चारों ओर दीवारों पर भी जैसे कालीनोंका कोटिंग, कमरेका वातायन खुला हुआ—सामने तनिक दूर क्षितिजके पास पर्वतके हिम श्रृंग—सूर्य की किरणोंमें चमकते हुए। और उस वातायन के सामने बैठे ऋषि-कल्प रोरिक—सफेद कोट, सफद पैण्ट, सफेद जुराब और एकदम काला जूता—सब चमकते हुए। हां सफेद दाढ़ी और प्रोफेसोरियल टाइपका खल्वाट सिर!

इधर उधरकी बातचीतके पश्चात् चित्रकलाकी चर्चा चली। उनके वे चित्र जो कभी-कभी पत्र-पत्रिकाओंमें देखेथे उनकी प्रशंसाके सिवाय और बातचीतमें कह ही क्या सकता था। एक कलाका महान् आचार्य और एक कलाका विनम्र विद्यार्थी! फिर अध्यात्मवादकी चर्चा चली—वेद, दर्शन, उपनिषद् सभी की। हां, उपनिषदों से इस महान् कलाकारको गहरा प्रेम है। चर्चा करते हुए प्रत्येक शब्दसे प्राचीन भारतीय आदर्शोंके प्रति गम्भीर श्रद्धाकी भावना प्रकट होती है।

कोई विशेष प्रश्नावलि तैयार करके गया नहीं था। केवल मात्र दर्शन की ही अभिलाषा थी। बिना प्रयोजनके किसी का समय यों ही अतिवाहित करनेका लाभ क्या? आखिर भेंटका उपसंहार करते हुए निवेदन किया—"मेरे सथियों के नाम कोई सन्देश दीजिये!" —यह कह कर डायरी आगे बढ़ा दी।

"जिस मार्ग पर तुम चल रहे हो उसी पर बढ़े चलो।"—महान् कलाकारने डायरीमें लिखा।

कला और ज्ञानके उपासकोंके लिये इससे अच्छा सन्देश और हो भी क्या सकता है?

जब विदा होकर चलने लगा तो हाथ मिलानेका अवसर आया। मैंने श्रद्धासे अपने दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम किया और कहा—

"हमारा भारतीय शिष्टाचार यह है कि जब किसी वयोवृद्धका आदर करना होता है तो करबद्ध होकर प्रणाम करते हैं। और आप न केवल वयोवृद्ध हैं, अपितु कला वृद्ध भी!"

और तब उस कला-वृद्धके प्रशस्त मुखमण्डल पर जो स्मितकी शुभ्रता चमक उठी उसे देखकर लगा कि वातपनके बाहर क्षितिज पर जो शुभ्र हिमराशि बिछी है वह इसी हास्यकी छाया है या शायद यह हास्य ही उस हिम-राशिकी छाया हो!—

———

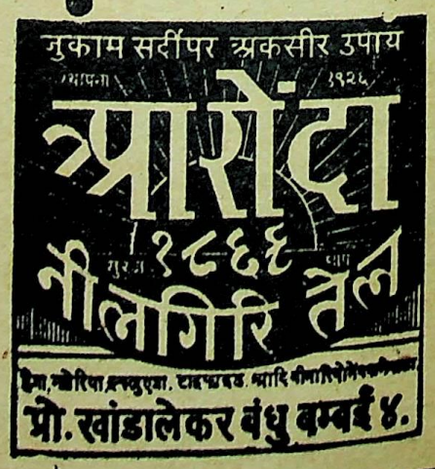

बापूकी 'आत्म-कथा' से

(महात्मा गांधीकी 'आत्मकथा' के निम्नलिखित अंश काफी दिलचस्प हैं, अतएव हम यहां उद्धृत किये जाते हैं।)

अपने एक रिश्तेदारके साथ मुझे सिगरेट पीनेका चस्का लग गया। पैसे हमारे पास थे ही नहीं। दो में से किसीको भी यह तो नहीं मालूम होता था कि सिगरेट पीनेमें कुछ फायदा है या उसकी गंध में कुछ स्वाद है; पर इतना जरूर मालूम हुआ कि केवल धुंआ फूंकनेमें ही कुछ आनन्द है। मेरे चाचाजीको सिगरेट पीनेकी आदत थी। और उनको तथा औरोंको धुंआ उड़ाते देखकर हमें भी फूंक लगानेकी इच्छा हुआ करती। पैसे थे ही नहीं, इसलिए चाचाजी के पीकर फेंके हुए सिगरेटके टुकड़े चुरा-चुराकर हमलोग पीने लगे।

परन्तु ये टुकड़े भी हर वक्त नहीं मिल सकते थे और उनसे बहुत धुंआ भी नहीं निकलता था। इसलिए हम नौकरके पैसोंमेंसे एक-एक दो-दो पैसे चुराने और बीड़ी खरीदने लगे। पर यह दिक्कत थी कि उन्हें रखें कहां? यह तो जानते ही थे कि बड़े-बूढ़ोंके सामने बीड़ी-सिगरेट पी नहीं सकते। ज्यों-त्यों करके दो चार पैसे चुराकर कुछ सप्ताह काम चलाया। इसी बीच सुना कि एक किस्मके पौधे (उसका नाम भूल गया) के डंठल बीड़ीकी तरह सुलगते हैं। हम उन्हें ला-लाकर पीने लगे।

पर हमें सन्तोष न हुआ। यह पराधीनता हमें खलने लगी। बड़े-बूढ़ोंकी आज्ञा के बिना कुछ भी नहीं कर सकते, यह दिन नागवार होने लगा। अन्तमें उकताकर हमने आत्म-हत्या करनेका निश्चय किया।

परन्तु आत्म-हत्या करें किस तरह? जहर लावें कहांसे? हमने सुना था कि धतूरे के बीज खानेसे आदमी मर जाता है। जंगल में घूम फिर कर बीज लाये। शामका समय ठीक किया। केदारजीके मन्दिरमें जाकर दीपकमें घी डाला, दर्शन किया और एकांत ढूंढा, पर जहर खानेकी हिम्मत न होती थी। 'तुरन्त ही प्राण न निकलें तो? मरने से आखिर क्या लाभ? पराधीनतामें ही क्यों न पड़े रहें?' ये विचार मनमें आने लगे। फिर दो-चार बीज खा ही डाले। ज्यादा खानेकी हिम्मत न पड़ी। दोनों मौत से डर गये; और यह तय किया कि रामजी के मन्दिरमें जाकर दर्शन करके खामोश हो रहें और आत्म-हत्याके खयालको दिल से निकाल डालें।

तब मैंने समझा कि आत्म-हत्याका विचार करना तो सहल है; पर आत्म-हत्या करना सहल नहीं। अतएव जब कोई आत्म-हत्या करनेकी धमकी देता है, तब मुझ पर उसका बहुत कम असर होता है, अथवा यह कहूं कि बिल्कुल ही नहीं होता तो हर्ज नहीं।

आत्म-हत्याके विचारका एक परिणाम यह निकला कि जूठी सिगरेट चुराकर पीनेकी, नौकरके पैसे चुरानेकी और उसकी बीड़ी लाकर पीनेकी टेव छूट गयी। बड़ा होनेपर भी मुझे कभी बीड़ी पीनेकी इच्छा तक न हुई। और मैंने इस टेवको जंगली, हानिकारक और गन्दी माना है। पर अब तक मैं यह नहीं समझ पाया कि बीड़ी सिगरेट पीनेका इतना जबर्दस्त शौक दुनियाको आखिर क्यों है? रेलके जिस डिब्बेमें बहुतेरी बीड़ियां फूंकी जाती हों, वहां बैठना मेरे लिए मुश्किल हो पड़ता है और उसके धुंएसे मेरा दम घुटने लगता है।

सिगरेटके टुकड़े चुराने तथा उसके लिए नौकरके पैसे चुरानेसे बढ़कर चोरी का एक दोष मुझसे हुआ है, और उसे मैं इससे ज्यादा गम्भीर समझता हूं। बीड़ीका चस्का तब लगा, जब मेरी उम्र १२-१३ साल की होगी। शायद इससे भी कम हो। दूसरी चोरीके समय १५ वर्ष की रही होगी। यह चोरी थी मेरे मौसेरा भाईके सोनेके कड़े की। उन्होंने २५) के लगभग कर्जा कर रखा था। हम दोनों भाई इस सोचमें पड़े कि यह चुकावें किस तरह। मेरे भाई के हाथमें ठोस कड़ा था। उसमें से एक तोला काटना कठिन न था।

कड़ा कटा। कर्ज चुका, पर मेरे लिए यह घटना असह्य हो गयी। आगेसे कदापि चोरी न करनेका मैंने निश्चय किया। मनमें आया कि पिताजीके सामने जाकर चोरी कबूल कर लूं। पर उनके सामने मुंह खुलना मुश्किल था। यह डर तो न था कि पिताजी खुद मुझे पीटने लगेंगे, क्योंकि मुझे याद नहीं पड़ता कि उन्होंने हम भाइयोंमेंसे किसीको कभी पीटा हो। पर यह खटका जरूर था कि वह खुद बड़ा सन्ताप करेंगे, शायद अपना सिर भी पीट लें; तथापि मैंने मनमें कहा—'यह जोखिम उठा कर भी अपनी चुराई कबूल कर लेनी चाहिए, इसके बिना शुद्धि नहीं हो सकती।'

अन्तमें यह निश्चय किया कि चिट्ठी लिखकर अपना दोष स्वीकार कर लूं। चिट्ठीमें सारा दोष कबूल किया था और उसके लिए सजा चाही थी। आजिजीके साथ यह प्रार्थना की थी कि आप किसी तरह अपनेको दुःखी न बनायें और प्रतिज्ञा की थी कि आगे मैं कभी ऐसा न करूंगा।

पिताजीको चिट्ठी देते हुए मेरे हाथ कांप रहे थे। उस समय वह भगन्दरकी बीमारीसे पीड़ित थे। अतः खटियाके बजाय लकड़ीके तख्तों पर उनका बिछौना रहता था। उनके सामने जाकर बैठ गया।

उन्होंने चिट्ठी पढ़ी। आंखोंसे मोती के बूंद टपकने लगे। चिट्ठी भींग गयी। थोड़ी देरके लिए उन्होंने आंखें मूंद लीं। चिट्ठी फाड़ डाली। चिट्ठी पढ़नेको जो वह उठ बैठे थे, सो फिर लेट गये।

मैं भी रोया। पिताजीके दुःखको अनुभव किया। यदि मैं चितेरा होता तो आज उस चित्रको हूबहू खींच सकता! मेरी आंखोंके सामने आज भी वह दृश्य ज्यों-का-त्यों दिखाई दे रहा है।

इस मोती-बिन्दुके प्रेमबाणने मुझ बींध डाला। मैं शुद्ध हो गया।

*

सुबह मैं काशी उतरा। मैं किसी पण्डे के यहां उतरना चाहता था। कई ब्राह्मणों ने मुझे चारों ओरसे घेर लिया। उनमें से जो मुझे साफ-सुथरा दिखायी दिया, उसके घर जाना मैंने पसन्द किया। मेरी पसन्दगी ठीक भी निकली। ब्राह्मणके आंगनमें

विश्वमित्र

गाय बंधी थी ! घर दुमंजिला था । मुझे ऊपर ठहराया गया । मैं यथाविधि गंगा स्नान करना चाहता था और तब तक निराहार रहना था । पण्डेने सारी तैयारी कर दी । मैंने पहलेसे कह रखा था कि १।) से अधिक दक्षिणा मैं नहीं दे सकूंगा, इसलिए उसी योग्य तैयारी करना । पण्डेने बिना किसी झगड़ेके मेरी बात मान ली । कहा—'हम तो क्या गरीब और क्या अमीर, सबसे एक ही सी पूजा करवाते हैं । यजमान अपनी इच्छा और श्रद्धाके अनुसार जो दे दे, वही सही ।' मुझे ऐसा नहीं मालूम कि पण्डेने पूजामें कोई कोर-कसर रखी हो । बारह बजे तक पूजा-स्नानसे निवृत्त होकर मैं काशी विश्वनाथके दर्शन करने गया, पर वहां जो कुछ देखा, उससे मनमें बड़ा दुःख हुआ ।

सन् १८९१ ई० में जब मैं बम्बईमें वकालत करता था, एक दिन प्रार्थना-मन्दिरमें 'काशी-यात्रा' पर एक व्याख्यान सुना था । इससे कुछ निराशा के लिए तो वहींसे तैयार हो गया था; पर प्रत्यक्ष देखने पर जो निराशा हुई वह तो धारणासे अधिक थी । एक संकरी फिसलनी गलीसे होकर जाना पड़ता था । शांतिका कहीं नाम नहीं । मक्खियां चारों ओर भिनभिना रही थीं । यात्रियों और दुकानदारोंका हो-हल्ला असह्य मालूम हुआ ।

जहां मनुष्य ध्यान एवं भगवच्चिंतन की आशा रखता हो, वहां उनका नामो-निशान नहीं; ध्यान करना हो तो वह अपने अन्तरमें ही कर सकते थे । हां, ऐसी भावुक बहनें मैंने जरूर देखीं, जो ऐसी ध्यान-मग्न थीं कि उन्हें अपने आस-पास की कुछ खबर ही न थी; पर इसका श्रेय मन्दिरके संचालकोंको नहीं मिल सकता । संचालकोंका कर्त्तव्य तो यह है कि काशी विश्वनाथके आस-पास शांत, निर्मल, सुगंधित, स्वच्छ वातावरण—क्या बाह्य और क्या आन्तरिक—उत्पन्न करें, और उसे बनाये रखें; पर इसकी जगह मैंने देखा कि वहां गुण्डे लोगोंका, नये-से-नये

(शेष १८व पृष्ठपर)

संसारमें गांधी तो अमर होके रहेगा

किस शानसे दुनियांसे सरे शाम सिधारा
हा डूब गया देशकी किस्मतका सितारा
गांधीको तो मरना था बहर तौर गवारा
हमदर्दको क्या सोचके बेदर्दने मारा
आकाशमें रोते हुए निकले हैं जो तारे ।
गांधीकी चिता जलती है जमनाके किनारे ॥

फिरता रहा दर-दर वह मुहब्बतका भिखारी
दुनियां उसे कहती थी अहिंसाका पुजारी
उपदेश इसी बातका हर सांसमें जारी
ले दे के उसे देशकी चिन्ता थी यह भारी
क्या उसकी तरह कोई भला काम करेगा ।
दुनियांमें जमानेमें न ये नाम करेगा ॥

आज उसके लिये फूटके रोता है जमाना
मशहूर हुआ चारों तरफ ऐसा फिसाना
बापूके लिये मौतने ढूढ़ा यह बहाना
दिल्लीमें बनाया गया गोलीका निशाना
मरनेका बहुत उसके असर होके रहेगा ।
संसारमें गांधी तो अमर होके रहेगा ॥

इलजाम किसीपर कभी धरते नहीं देखा
सच बात पर उनको कहीं डरते नहीं देखा
नफरतसे भी नफरत कभी करते नहीं देखा
यूं हमने किसी औरको मरते नहीं देखा
देता था मुहब्बतका वह पैगाम हमेशा ।
दुनियांकी भलाईसे रहा काम हमेशा ॥

—श्री 'विस्मिल' इलाहाबादी ।

बापू ?

बापू, तुम तो संसारी थे, भगवान न बनना था तुमको
इस दानवताकी दुनियामें इन्सान न बनना था तुमको

१

बापू रूप आके, तन मनमें समाके हाय,
फिर कैसे हमसे बिछुड़के चला गया !
प्रेम-पालनेमें पाल, प्रेम ही पढ़ाया सदा,
आज वही झटसे झगड़के चला गया !
भूलसे भी भूलता रहा नहीं जो सपनेमें,
आंखें फेर शानसे अकड़के चला गया !
चन्दन समान भाग्य भालपर शोभता था,
चन्दनकी चितापर चढ़के चला गया !

२

साधू, संत, योगी, यती, ऋषि मुनि, महात्मा था,
साधक, तपस्वी, देवता कि अवतार था ?
करामाती जादूगर, सिद्ध या सयाना, पीर,
दरवेश औलिया, फकीर, कल्पकार था ?
सेवक, सिपाही बनिया, किसान, मजदूर,
भिक्षुक, जुलाहा, कोल, भङ्गी परिवार था !
ज्ञानवीर, भक्ति वीर, प्रणवीर, रणवीर,
धर्मवीर, कर्मवीर, वीरोंका शृङ्गार था !

३

शिशुता, सुलभ, मृदुहासमें सम्मोहन था,
कर्मकी कठोरतामें चेहरा चट्टान था।
सुकुमार सुमन-सौरभ-सा स्वभाव, शील,
प्रण हठी हृदय हिमालय समान था।
निर्मल-नयन नेह चुम्बक-चमत्कार,
पर, भ्रू की भंगिमामें प्रलय तूफान था।
अर्द्ध नग्न, क्षीणकाय, वयोवृद्ध मानुसमें,
देवलोक-दुर्लभ महानसे महान था।

४

राजाओंका राजा महाराजाओंका महाराज,
चक्रवर्ति चूणामणि, शूर सरदार था।
मानवता-नाव भव-भंवरमें भंस रही,
पार करनेका एक दिव्य पतवार था।
भारत विधाता, विश्वप्रेम-मन्त्रदाता, त्राता
शान्तिरूपमें अनूप क्रांतिकी उभाड़ था।
दानवता हार, बार बार खाती थी पछाड़,
एक मुठ्ठी हाड़में विराट-सा पहाड़ था।

५

जबसे बसुन्धरामें सृष्टि रचना हुई है,
आंखसे न देखा, किसीने न सुना कानसे।
ब्रह्मकी न चाँह, परवाह स्वर्ग मुक्तिकी न,
भक्त भगवान हो रम गया जहानसे।
तीन लोक तारिणी त्रिवेणी आज तर गयी,
भारत विभूतिकी विभूतिके भसानसे।
ऐटम बम अणु, परमाणुमें विखरके,
घुल मिल गया जल, थल, आसमानसे।

६

सत्यता, हरिश्चन्द्र, पौरुष परशुराम,
ध्रुव-प्रह्लादकी अचलता सुहाई थी।
दृढ़ता दधीचिकी, औ त्याग शिविके समान,
तपबल विश्वामित्र, राम वीरताई थी।
बुद्धका वैराग्य और ईसाका परोपकार,
नीति नटवरसी निपुणता लखाई थी।
नानक, कबीर ज्ञान, साधुता मुहम्मदकी,
बापूकी बनाबटमें विधिकी बड़ाई थी।
—'नटवर'।

(१६ व पृष्ठका शेषांश)

बापूकी आत्म कथासे

तर्जकी मिठाई और खिलौनोंका बाजार लगा हुआ था।

मन्दिर पर पहुंचते ही मैंने देखा कि दरवाजेके सामने सड़े हुए फूल पड़े थे और उनमें से दुर्गन्ध निकल रही थी। अन्दर बढ़िया संगमरमरी फर्श था। उस पर किसी अंध-श्रद्धालुने रुपये जड़ रखे थे, और उनमें मैला-कचरा घुसा रहता था।

मैं ज्ञान-वापीके पास गया। यहां मैंने ईश्वरकी खोज की, पर मुझे न मिला। इससे मैं मन ही मन घुट रहा था। ज्ञानवापीके पास भी गन्दगी देखी। भेंट रखनेकी मेरी जरा भी इच्छा न हुई, इसलिए मैंने तो सचमुच ही एक पाई वहां पर चढ़ायी। इस पर पण्डाजी उखड़ पड़े। उन्होंने पाई उठाकर फेंक दी और दो चार गालियां सुनाकर बोले—"तू इस तरह अपमान करेगा तो नरक में पड़ेगा!"

मैं चुप रहा। मैंने कहा—"महाराज, मेरा तो जो होना होगा वह होगा; पर आपके मुंहसे हल्की बात शोभा नहीं देती। यह पाई लेना हो तो लें, वर्ना इसे भी गंवायेंगे।"

"जा, तेरी पाई मुझे नहीं चाहिए।" —कहकर उन्होंने और भी भला बुरा कहा। मैं पाई लेकर चलता बना। मैंने सोचा कि महाराजने पाई गंवायी और मैंने बचा ली। पर महाराज पाई खोनेवाले न थे। उन्होंने मुझे फिर बुलाया और कहा —"अच्छा रख दे, मैं तेरे जैसा नहीं होना चाहता। मैं न लूं तो तेरा बुरा होगा।"

मैंने चुपचाप पाई दे दी और एक लम्बी सांस लेकर चलता बना। इसके बाद भी दो-एक बार काशी विश्वनाथ गया; पर वह तो तब, जब 'महात्मा' बन चुका था।

एक क्रान्तिकारी निर्णय

श्री सव्यसाची

विचार केन्द्रका वृत जब सीमित और संकीर्ण हो जाता है, उसकी व्यापकता धीरे-धीरे, मिटते-मिटते उसी जपह तक रह जाती है जहांसे उठता है, आर्थात्-केन्द्र विन्दु ही जन उसकें बृतकी परिधि रह जाता है तब शनः शनैः विचार कविचार में, सत्य या सत्यमें दल जाता है अन्तमें कुविचार ही विचारएवंअसत्य ही सत्यका रूप ले लेता है। मानव समाजका विकास इसी प्रणालीसे हुआ। एक मानव समाज सहस्र रूपमें बदला। देश,धर्म, जाति व्यवसाय के रूपमें एक मानव समाजके सहस्त्रों भेद, विभेद, उपभद, अन्तर प्रत्यन्तर पड़ते चले गये और इन भेदादि भेदोंने उसे इतना संकुचित, सीमित, और संकीर्ण बना दिया कि हम ही जग हैं, यह उसका आदर्श, सिद्धांत विचार सब कुछ बन गया। उसकी समाज नीति, राजनीति, अर्थनीति इसी सिद्धांत को केन्द्र-विन्दु मान कर रचित, संयोजित और कार्यान्वित होने लगी। अपनेही को सबका केन्द्र मान कर जब हम अन्य तमाम बातों पर विचार करने लगे तब सत्यका रूप विकृत होने लगा। धार्मिक सामाजिक आर्थिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सभी मामलों में हम अन्तव्यापिक केन्द्रसे हट कर इसी संकीर्ण, अपनेही आपमें समाहित केन्द्रके मानने वाले बन गये। हमारी संस्कृतिमें घुन लग जाने, उसमें विकार पैदा हो जाने का यही मौलिक कारण है। इसका परिणाम जितना भयंकर होना चाहिये था वही हो रहा है और अभी यह भयंकरता कितना विकराल रूप धारण कर सकती है, यदि हमने अपना यह रवैया न बदला, शायद हम आज उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। प्रथम युद्ध की भयंकरता की पहले किसने कल्पना की थी। दूसरे युद्धने जब इस समय तक की संसारकी तमाम भयंकरताओंका रंग फीका कर दिया तब फिर संसारको अवाक् स्तब्ध-भीत रह जाना पड़ा। आगेकी बात हम अभीसे क्या कहें ? और इस सबके मूलमें वही हमारा संकीर्ण दृष्टिकोण है। प्रत्येक देश अपनेको विश्वका केन्द्र विन्दु समझकर सब मामलों पर विचार करता है।....हम आज संसारकी वस्तुस्थिति पर विचार करने नहीं बैठे। संसार पर व्यापक दृष्टि डाल सकनेमें हम आज असमर्थ हैं, क्योंकि हम स्वयं वसुधैव कुटुम्बकम् के उदात्त एवं सर्वहिताय सिद्धांतको भूल बैठे। हमारे समाज पर अन्योंके संकीर्ण एवं विकृत सिद्धांतोंकी प्रतिक्रिया हुई उस पर हम फिर कभी विचार करेंगे। अस्तु ! अपने समाज की वर्तमानकी स्थितिसे हमें असंतोष है, किंतु हम निराश नहीं हैं। यह बात सही है कि हम वर्गावर्ग जाति उप जातिके भेदोंके घनें अंधकारमें फंसते चले गये हैं किंतु हमारे हाथ उस प्रकाशसे कभी खाली नहीं रहे जो हमें इस अंधकारसे निकाल कर फिर मानव कल्याणके सत्य पर लाकर खड़ा कर सबके वेद वेदान्त, गीता उपनिषद, रामायण महाभारत, का चिरदिव्य प्रकाश राम, कृष्ण, बुद्ध, शंकर, गोस्वामी तुलसीदास रासानुज, चैतन्य, दयानन्द और विवेकानन्द हमारे बीच फैले हुए घोर अंधकारमें हमें दे गये हैं और महात्मा गांधी अपनी ऐसी साधनासे उस प्रकाशकी ऐसी अमर ज्योति जला गये हैं कि निराश होनेकी कोई बात बात ही नहीं है। हम इस ज्योतिके सहारे स्वयंको संकीर्णताके अंधकारसे निकाल कर विश्वको भी अंधकारसे निकालनेमें उसके परम सहायक हो सकते हैं। आवश्यकता है, केवल उस ज्योतिसे अपने भीतरकी कालिमा को प्रकाशमें बदलने की। करवट बदलअगंड़ाई लेकर उठ खड़े होनेकी आवश्यकता है। हम इतना दुर्वल भी नहीं हैं कि यह हम न कर सकते हों। राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रमें समाजको बदलनकी कोशिश के साथ साथ धार्मिक या आधिक उदात्त शब्दों में सांस्कृतिक क्षेत्रमें भी हमें क्रान्तिकारी विकास की रूपरेखाको सामने रखकर अपने साथ साथ समाजको ले चलनेकी आवश्यकता है। इस दिशामें हम जितनी द्रुतगति किन्तु दृढ़ताके साथ आगे बढ़ सकेंगे उतनाही शीघ्र अर्जितकी गयी राजनीतिक स्वतंत्रताको हम आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रतामें परिणत कर सकेंगे। यह कदम उठाने और बढ़ानेमें देशका कानून हमारा सहायक होगा, यह वर्णावर्ण, अस्पृश्यादि के भेदभाव मिटानेके संबंधमें कानून बनाने के होने वाले प्रयासों और हमारे भावी विधानमें नागरिकके मौलिक अधिकारकी की गयी परिभाषासे स्पष्ट है।

राजनीतिक स्वतंत्रताके साथ-साथ हमारे ऊपर बहुत बड़े-बड़े उत्तरदायित्व भी आये हैं। इन उत्तरदायित्वोंका जितनी सुन्दरताके साथ निर्वाह किया जायेगा हम अपनी स्वतंत्रताको उतनेही अच्छे ढंगसे जन हिताय कामनमें ला सकेंगे। हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सुधारक समझे जाने वाले व्यक्तियोंने ही नहीं साधु सन्तों, मर्माचार्य, मठाधीशों और महन्तों, पण्डितों और शास्त्रियोंने भी इस उत्तरदायित्वकी पवित्रता और महानताको समझा या परिस्थितियोंने समझनेको वाध्य किया है। जाति-पांतिके भेदभाव कभी हिंदू जातिके विकासमें भलेही सहायक रहे हों किंतु आज तो स्पष्ट उनसे समाजका, देशका अहित हो रहा है। हिंदू जातिको यह समझाने और समाझकर उसके उसके अनुसार चलाने का कार्य जितनी सुगमताके साथ साधु, सन्यासी, आचार्य, पण्डित और महन्तादि कर सकते हैं, दूसरे न कर सकेंगे, इसीलिये इनका सहयोग प्राप्त करना वांछनीय समझा गया। श्रद्धय पुरुषोत्तम दास जी टण्डनने इसका बीड़ा उठाया और गत अर्द्धकुम्भीके समय त्रिवेणीके तट पर उन्होंने एक पुनीत आयोजन भारतीय सांस्कृतिक सम्मेलन के रूपमें किया। इस सम्मेलनमें देशके साधु सन्यासी, धर्माचार्य, महात्मा और महन्त एकत्र हुए और यह निर्णय किया कि समाज को रूढ़ी और संकीर्णताके बंधनोंसे मुक्त किया जाना चाहिये तभी हिंदू जातिका कल्याण हो सकता है। इस सम्मेलनने जन्मना वर्ण व्यवस्थाके साथ साथ आर्य समाजके प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित कर्मणा वर्ण व्यवस्था कोभी विहित और व्यवहारिक घोषित किया। निसंदेह यह एक युगान्तर कारी निर्णय है। किंतु यह निर्णय करकेही हम अपने कर्त्तव्यकी इतिश्री

यदि समझ लेंगे तो इसका परिणाम भी वही होगा जो आर्य समाजके इस सिद्धांत का हुआ। टण्डनजी कर्मठ और धुनके पक्के नेता हैं। साहित्य सम्मेलनके क्षेत्रका उनका कार्य समाप्त हो गया। हिंदी राष्ट्रभाषाके पद पर आसानी होने जा रही है अब वे उसके तथा उसके साहित्यको विकासका कार्य अपने उत्तराधिकारियों पर छोड़ इस क्षेत्रमें उसी तल्लीनताके साथ लगें। देशका कानून इस काममें उनका सहायक होगा। वर्णावर्ण के भेदभावको मिटा कर समाजको नया रूप देनेका कार्य टण्डनजी जसे तपस्वी और मनस्वी कार्यकर्त्ताओं द्वारा ही सम्पन्न हो सकता है वर्णावर्णका भेदभाव मिटाकर ही धार्मिक क्षेत्रमें हम समाजको नवीन रूप में संगठित कर सकते हैं। यह माना कि जन्मना वर्ण व्यवस्थाको मिटानेका विधान नहीं किया गया, किन्तु कर्मणावर्ण व्यवस्था के सिद्धान्तके कार्यान्वित होनेसे जन्मना वर्ण व्यवस्थाके विषदन्त आपसे आप टूट जायेंगे। अतः उस विवादमें जानेकी आवश्यकता नहीं है। हमें भय हो रहा है कि कहीं यह भी बहुतसे समाजोपयोगी विधानों और निर्णयोंकी भांति कागज तक ही सीमीत न रह जाये। इस निर्णयको कार्यान्वित करने लियेके निश्चित योजना और ठोस कार्यक्रम देशके सामने उपस्थित किया जाना चाहिये। योजनाको पूरा करनेके लिये धन और जन दोनों की आवश्यकता है। महात्मा गांधीकी स्मृति रक्षाके लिये जो विराट धनराशि एकत्र की जा रही है, अच्छा हो यदि उसका उपयोग जातिपांति मिटाने के लिये निर्मित योजनाको कार्यन्वित करनेमें किया जाये। गांधीजी स्वयं कर्मणा वर्ण व्यवस्था के मानने वाले थे, अतः इस सिद्धांत के आधार पर समाजका पुनर्संगठन करके हम स्मृतिकी रक्षा करनेवाले सिद्ध होंगे। हमें विश्वास है कि श्रद्धेय टण्डनजी समाज के आचार्योंका निर्णय प्राप्त करके ही शांत हो कर बैठने वाले नहीं हैं और शीघ्रही इस संबंधकी योयजनाके साथ देशका तूफानी दौरा करते हुए देखे जायेंगे।

पुण्यात्मा के निधन पर

बुझ गया दीप भी आज निर्वाण का !

(१)

बुझ गया दीप सहसा तिमिर हो गया !
पाप की रातमें सूर्य भी खो गया !
मुसुकुराती चली घन तमिस्त्रा गहन,
मूर्च्छना में निखिल विश्व भी सो गया !
हर - हराता प्रभंजन प्रलय का चला,
उड़ गया स्नेह अंचल मनुज - त्राण का !!
बुझ गया दीप भी आज निर्वाण का !!

(२)

उठ गया स्नेह अंचल, धरा मृत हुई !
सत्य की गति अडिग लड़खड़ा हत हुई !
शांति के स्वर्ग में छा गयी कालिमा,
ज्योति संसार की भी दिवंगत हुई !
क्रूरता मुक्त हो कर उठी नृत्य जब
ग्रस लिया राहुने शशि--जगत्प्राण का ॥
बुझ गया दीप भी आज निर्वाण का !!

(३)

क्रम जगत का गगन का विश्रृंखल हुआ !
दृढ़ हिमालय हिला, शोक-विह्वल हुआ !
गोद सूनी हुई मां शिथिल-अंगिनी,
अश्रुमय जान्हवी का विमल जल हुआ !
नभ कंपा, टट जब ध्रुव सितारा गया,
मिट गया स्वप्न भी सृष्टि निर्माण का !!
बुझ गया दीप भी आज निर्वाण का !!

(४)

आज तुम लुट गये लुट गयीं सिद्धियां !
लुट गयीं देशकी वे सकल ऋद्धियां !
तुम गये साथ गौरव पुरातन गया,
तुम गये साथ में सब गयीं वृद्धियां।
पाप की राह में पुण्य भी लुट गया,
लुट गया भक्त भी हाय भगवान का !!
बुझ गया दीप भी आज निर्वाण का !!

(५)

आज सूनी प्रभा - हत धरा शेष है !
शेष है क्षत विक्षत सी दया शेष है !
है पड़ी आह भरती अहिंसा कहीं
नीर दृग में, हृदय में व्यथा शेष है !
ईश ! प्रहलाद की ले चढ़ी होलिका,
रिक्त था कोष क्या अब कृपा-दान का ॥
बुझ गया दीप भी आज निर्वाण का !!

--गंगा प्रसाद श्रीवास्तव 'नवीन'

गांधीजीके अंतःकरणका विराट समन्वय

श्री रतनलाल जोशी एम० ए०

गांधी मूलतः कर्मयोगी थे और लोक संग्रह उनकी प्रेरणा थी। भक्तोंके भगवान में उन्हें गोस्वामी तुलसीदासजीके राम ही सर्वोपरि प्रिय थे। पुरुषोत्तरामके आदर्श को ही वे जन-जनमें मूर्त देखना चाहते थे। उनकी भक्तिका रूप भागवत पुराण-निर्धारित भक्तिकी परिभाषासे सादृश्य रखता है। शांडिल्य-सूत्रके 'निरतिशय और 'परानुरक्ति' के बजाय उन्हें भाग वत का' 'अहेतुक्य व्यवहिता या भक्तिः

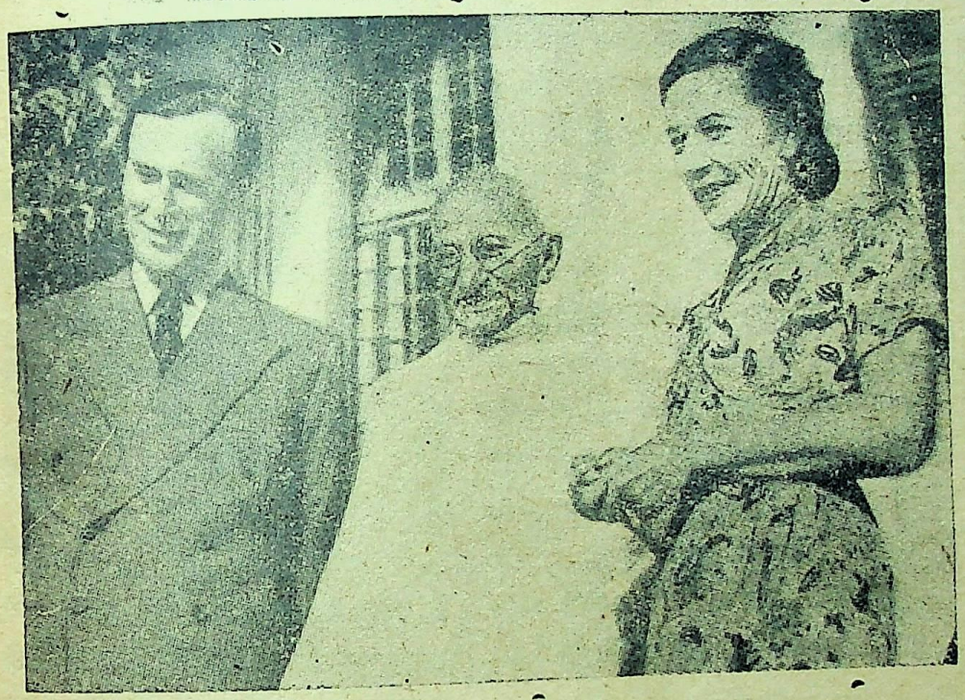

पुरुषोत्तमे" सिद्धांत ही स्वीकार था। उनके अनुसार भगवद्-प्रेम निरतिशय ही नहीं वरन निर्हेतुक, निष्काम और निरन्तर भी होना चाहिये। 'अनाशक्ति योग' के नामसे उन्होंने श्रीमद्भागवद् गीताकी जो टीका लिखी है उसमें स्थान-स्थान पर इस मनोवृत्तिके प्रमाण मिलते हैं। ईश्वरमें उनकी अगाध श्रद्धा थी और जीवनमें किसी भी क्षण वह विचिलित नहीं हुई। उनका ईश्वर सत्य-स्वरूप, प्रेम-स्वरूप और दया-स्वरूप है। संसारके सारे क्रिया-व्यापारों में परमात्माका स्नेह-स्फुरण है :—

"मेरे लिये परमात्मा सत्य है, प्रेम है। नीति-शास्त्र और सदाचरण भी ईश्वर ही है और निर्भीकता भी ईश्वर है। परमात्मा इन समस्त प्रकाश और जीवनका स्रोत है; लेकिन वह इन सबसे ऊपर, इन सबसे परे है। हमारी चेतना भी परमात्मा ही है और यहां तक कि नास्तिकका नास्तिकवाद भी वही है। अपने असीम प्रेम-प्रसार में वह नास्तिकका भी पोषण करता है।"

साधनाका शूलपथ

हमारे युगके ध्वस्त विश्वासोंके सामने गांधीजी यही संदेश लेकर आये। वे युगावतार थे और उनके व्यक्तित्वमें भूत, भविष्यत और वर्तमान तीनोंका समन्वय अपनी पू ता तक पहुंचा हुआ था। उन्होंने मनुष्यके प्रकृत रूपको उसके आस-पासके आवरणोंसे मुक्त करके देखा और सारे मानव-समाजके सामने भी उसकी यही सजीव तस्वीर रक्खी है। लेकिन इस दिशामें उन्होंने जितनी तत्परता दिखलायी उसका आधार ऊपरी ज्ञान या आकर्षक उपदेश नहीं था बल्कि साधनाका वह शूल-पथ था जहां अभी तक किसीने जानेका साहस नहीं किया था। वस्तुतः यह कार्य किसी साधारण व्यक्ति के सामर्थ्य का नहीं था। युगोंसे मानवता अपने परित्राणके लिये जिस व्यक्ति का आ वान कर रही थी उसके सिवाय दूसरा व्यक्ति इतना महाप्राण और निर्भीक हो ही कैसे सकता था? यही कारण है कि गांधीजीकी ईश्वरानुभूति अपने समयमें प्रचलित प्रणालियोंसे सदैव भिन्न रही। थे वरन् प्रवाहके स्रष्टा और पोषक थे। लोकमान्य तिलकने १९१६ में लखनऊ-कांग्रेसमें, इसलिये कहा था कि गांधीजीके उद्गारोंमें ऊपरसे अत्यधिक सारल्य है किन्तु उनके भीतर जो असाधारणत्व सन्निहित है वह कुछ और ही सूचित करता है। यदि लोकमान्यका अकाल-अवसान नहीं होता तो वे इस असाधारणत्वकी चरम चरम सीमा देख सकते!

रोगका निदान

इस सत्य-दर्शनके निमित्त गांधीजीने जब अपने जीवनकी प्रयोगशालामें अनुसंधान प्रारम्भ किया तो प्रारम्भिक प्रयोगों से ही उन्हें ज्ञात हो गया कि इस पथका सबसे प्रथम और प्रबल शत्रु अहंकार है। सत्य-दर्शनके प्रयत्नोंके बिना जीवनको वे भार स्वरूप मानते थे। मृत्युके भयको वे 'सबसे बड़ी मूर्खता' समझते थे। ऐसी परिस्थितिमें उनके लिये अहंकारके साथ संघर्ष छेड़नेके अतिरिक्त अन्य कोई रास्ता नहीं था। संघर्षसे उन्हें कभी भय नहीं अनुभव हुआ। पराजयसे उनका उत्साह शिथिल होनेके बजाय और उत्तेजित ही होता था। संघर्ष भी उनका अपने ही ढंगका होता था। शत्रुका विनाश उन्हें मान्य नहीं था। उसका रूपान्तर ही उन्हें अभीष्ट था। अतः हठयोगीकी निर्दयताके साथ उन्होंने अहंकार का दमन नहीं किया बल्कि विनय और सहिष्णुताके भावोंसे उसे स्थानापन्न कर दिया। असल बात यह है कि अहंकारका पूर्ण विनाश नहीं किया जा सकता क्योंकि वह हमारे व्यक्तित्वका मूलाधार है। सांख्य-योगमें ब्र मांडके वंश-वृक्षके जिन अंग-प्रत्यंगों का वर्णन है उनमें अहंकारका स्थान ही सबसे महत्वपूर्ण है। उसे दबा दिया जाता है किन्तु इससे समस्या स्थायी रूपसे हल नहीं हो सकती। समस्याका सच्चा हल तो गांधीजीकी ही प्रणाली है जिसमें निषेध नहीं वरन् रचनात्मकताके साथ अहंकार का रूपान्तर किया जाता है।

ज्ञान और कर्म

श्रुति की घोषणा, 'ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः' (ज्ञान बिना मुक्ति नहीं) कई सदियोंसे हमारी आध्यात्मिक परम्परामें प्रति ध्वनित होती आयी है। यह घोषणा असंख्य अनुभवोंका

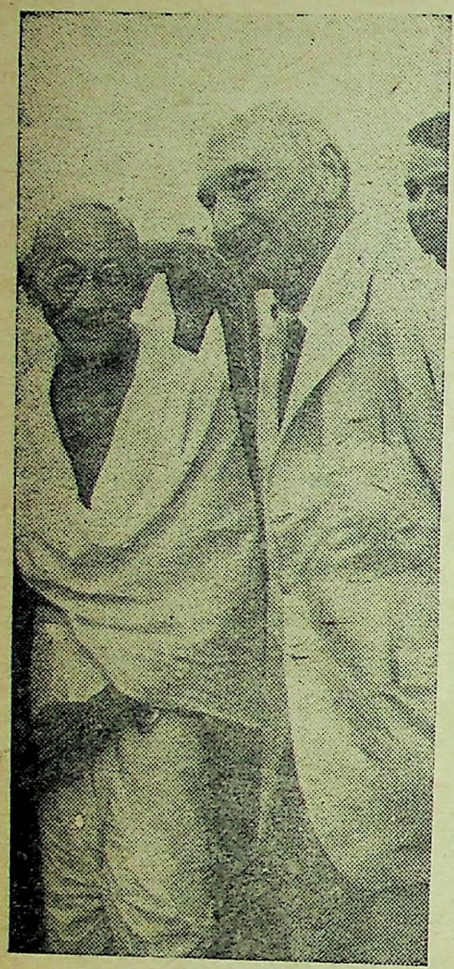

निष्कर्ष है । ज्ञानसे ही जीवनके विविध संतापोंका नाश होता है । गीताकारने ज्ञान को अग्नि रूप निरूपित किया है:—

यथै धांसि समिद्धोऽग्नि र्भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ।

—गीता अ० ४ श्लो० ३७

अर्थात्, "हे अर्जुन, प्रज्वलित अग्नि जैसे लकड़ियोंको भस्म कर देती है, वैसे ही ज्ञानाग्नि समस्त कर्मोंको भस्मीभूत कर देती है ।"

कर्मोंके भस्मीभूत होनेका अभिप्राय कर्मोंमें आसक्तिका परिहार है । कर्मोंके साथ आसक्तिका सहयोग होनेसे कर्म बंधन स्वरूप हो जाते हैं । क्योंकि आसक्तिसे दृढ़तर बंधन संसारमें और कोई नहीं है । आसक्तिको गांधीजीने अहंकारकी अर्धांगिनी बताया है । उनकी दृष्टिमें अहंकार इतना भयप्रद नहीं है जितनी आसक्ति है । विनयके शस्त्रसे वे अहंकारको पराजित कर लेते हैं किन्तु आसाक्तिके जटिल पाराके मुक्त होनेके लिये वे एक नहीं अनेक जन्मोंकी व्यवस्था निर्धारित करते हैं । 'अनासक्ति योग, की संज्ञा उन्होंने गीता को इसीलिये दी है कि गीताका मूल प्रयत्न आसक्तिके सम्मोहनका उन्मूलन करना ही है ।

अविचलित निर्भीकत।

आध्यात्मिक भीतिका लौकिक पक्ष भी गांधीजीकी विवेक दृष्टिसे ओझल नहीं हुआ था । क्योंकि वे लौकिक और लोकोत्तर में कोई अन्तर नहीं देखते थे । दोनोंको बिंब-प्रतिबिंबवत् मानते थे । बीसवीं सदी का बड़ासे-बड़ा दार्शनिक उनके साथ तर्क नहीं कर सकता था; किन्तु उनकी साधना की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि कोरे तर्क या शुष्क बुद्धिवादका स्वामित्व उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया । यही कारण है कि उन्होंने लोक क्षेत्रपर लोकोत्तरको अवतीर्ण किया है । लोकपक्षमें भयके विषाक्त प्रभावसे वे परिचित थे, किन्तु शापेनहावरकी भांति उन्होंने पराजय स्वीकार करते हुये नैराश्य और विषादकी शरण नहीं ली । अपने अन्तरकी आध्यात्मिक उर्वरता पर उन्हें पूरा विश्वास था । गीता और उपनिषदके महान् सागरोंसे उन्होंने काफी मंथनके बाद रत्न निकाल ही लिये:—

"भयमात्र हमारी कल्पना की सृष्टि है । धन, परिवार और शरीरमें से ममत्व का निवारण कर देनेके बाद भय कहां रह जाता है ? 'ते न त्यक्तेन भुंजीथाः' यह रामबाण वचन है । कुटुम्ब, धन, देह आदि जैसे हैं वैसे ही रहेंगे; किन्तु उनके प्रसंग की कल्पना हमें बदल देनी होगी । ये 'हमारे' नहीं, मेरे नहीं, ईश्वरके हैं । मैं भी उसीका हूं । मेरा अपना इस जगतमें कुछ भी नहीं है । फिर मुझे भय किसका हो सकता है ? उपनिषत्कारने कहा है कि 'उसका त्याग करके उसे भोगो ।' अर्थात् हम उसके मालिक न रह कर रक्षक बन जावें । जिसकी ओरसे हम रक्षा करते हैं वह उनकी रक्षाके लिये हमें आवश्यक शक्ति और साधन देगा । जीवनके सारे भयोंको जीतनेका एकमात्र उपाय तो यही है कि हम स्वामित्व या अधिकारका भाव मिटा कर रक्षक या सेवक बन जावें । हमें तो शून्यवत् और यंत्रवत् हो जाना चाहिये । शक्ति प्राप्त करनेका साधन तो यही है—वह शक्ति जिससे हमें सत्यनारायणके दर्शन मिल सकेंगे ।"

इन उद्गारोंसे स्पष्ट हो जाता है कि गांधीजीका मूल लक्ष्य मनष्यको मोह

के दलदलसे बाहर निकालना है । हमारी समस्त आध्यात्मिक परम्परामें मोहको ही दुःखका परम कारण माना है और मोहसे मुक्त हो जानेकी स्थितिको ही मोक्ष-पद की स्थिति स्वीकार की गयी है । मोह-मुक्ति के लिये हमारे यहां दो मार्ग हैं—निर्गुण और सगुण । निगुण मार्ग शुष्क ज्ञान पर आधारित संन्यासका मार्ग है । सगुण मार्ग भक्ति मार्ग है जिसमें सांसारिक वस्तुओं के मोहको भगवानकी अनुरक्तिसे स्थानापन्न किया जाता है । गांधीजीने सगुण मार्ग को ही अपनाया है और सांसारिक पदार्थों की आसाक्तिको ईश्वरानुरक्तिसे स्थानापन्न किया है । उनका भगवान शरणागतवत्सल है जो अपने शरणागतोंकी निरन्तर रक्षा किया करता है । गाधीजी उसके हाथोंमें अपने आपको यंत्रवत् मानते हैं:—

"मिट्टीका अस्तित्व जिस प्रकार कुम्हारके हाथोंमें है उसी प्रकार मेरा अस्ति-

त्व भी परमात्माके हाथोंमें है; वह जैसा चाहता है मुझे बनाता है ।"

मन, वचन और कर्म

गीताकारने कर्मयोग को अनिवार्य सिद्ध किया है । कर्मोंकी उत्पत्ति प्रकृति से है और परवश होकर जीवको कर्म करने ही पड़ते हैं । प्रकृति की इच्छाके प्रतिकूल जाना असम्भव है । सत्य तो यह है कि जीव किसी भी कालमें क्षणमात्र भी बिना कर्म किये नहीं रह सकता । ऐसी परिस्थितिमें गीताकारकी चेतावनी पूरी तरह सही है कि कर्मोंके त्यागसे न तो नैष्कर्म्य प्राप्त होता है और न आत्म-साक्षात्कार ही होता है । इस प्रकृत नियम की अवहेलना करने वाले व्यक्तिको 'मिथ्याचारी' कहा गया है । गीताकारने जब ये उद्गार प्रकट किये थे तब हमारे समाजमें इस प्रकारके मिथ्या चरणका रोग काफी फैला हुआ होगा । अन्यथा गीताकारको इतनी कठोर शब्दावलीके प्रयोग करनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती । गौतम बुद्धने भी अपने समयकी सामाजिक व्यवस्थामें इस विषका संचरण देखा था । अतः उनकी वाणीसे इस हठवाद के प्रति निन्दा सूचक शब्दोंका व्यक्त होना स्वाभाविक ही है । कबीरने 'कथनी और करनी' के भेदकी जो मार्मिक व्याख्या की है उसका उद्देश्य भी दम्भाचरणकी भर्त्सना ही है । तुलसीकी साधनाने तो सिया राममय सब जग जानी' की अनुभूतिके उच्चतम श्रृंग पर प्रतिष्ठित होकर मन, वचन और कर्मके भेदको ही समाप्त कर दिया था । गांधीजीने भी जब भारतको अपने सत्यान्वेषणकी प्रयोगशाला बनाया तो इस विकारके दमनकी समस्या उनके सामने भी आयी ।

हमें अपने अतीतके गौरव पर अभिमानका अनुभव होता है, किन्तु हमारे अभिमानका भाव अहंकारके संकुचित छिलके से कभी बाहर निकल कर यह खोजनेका प्रयत्न नहीं करता है कि अतीतके उस स्वर्ण गौरवकी वास्तविक बुनियाद क्या है ? जिस अतीत कालीन भारतीय संस्कृतिको आज भी मानवता श्रद्धानत होकर सम्मान प्रदान करती है उसके केन्द्रस्थ सत्यके अन्वेषणका क्या कभी हमने ईमानदारीसे प्रयत्न किया है ? आज भी जब कि हमारे हाथ युगावतारकी नृशंस हत्यासे रुधिर-स्नात हैं तब भी क्या हम अपने अन्तःकरणका परीक्षण कर रहे हैं ?

ये प्रश्न हमारे सामने चुनौतीके रूपमें हैं और यदि हम अपने कर्मों द्वारा उनका समुचित उत्तर नहीं देंगे तो गांधीजीकी स्मृतिमें हमारी आंखोंमें छलके आंसुओंके मूलमें कोई सच्चाई नहीं है ! हम दम्भसे अभीतक मुक्त नहीं हो पाये हैं !

गांधीजीने आजन्म हमारे सामने यही प्रश्न पेश किया था कि हमारी अमर-प्राण संस्कृतिकी बुनियाद क्या है ? क्योंकि संस्कृतिके मूलगत सत्यकी अनुभूति हुए बिना उसके प्रवाह को आगे बढ़ाना असम्भव है । हमारी गतिमें यही दोष था । गांधीजी युग निर्माता थे । अतः उनकी दृष्टिमें हमारा यह अभाव एकदम आ गया और उन्होंने हमारे अहंकारी और मोहाध दृष्टिकोणको बदलनेका इतना प्रबल प्रयास किया कि प्राण भी होम दिये !

खांसी आपको निर्बल बनाती है और प्रदाहित झिल्ली बड़े आसानी से प्लुरिसी और न्युमोनिया के कीड़ों का शिकार बनाती है । कोटाणु नाशक स्वांसदायक पेप्सकी टिकिया का सेवन करें ।

मुंहमें पेप्स के घुलनेके साथ ही औषधियुक्त सत्व सीधे फेफड़े तक पहुंच जाता है । इससे खांसी दूर हो जाती है, प्रदाहित झिल्ली मुलायम हो जाती है । कफ ढीला हो जाता और रोग कोटाणुओंसे रक्षा होती है ।

लीजिये

PEPS

कोटाणुनाशक सांसदायक टिकिया

हमेशा अपने पास रखिये ।

सभी दवाखानों में मिलता है

एजेण्ट्स :—स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट एण्ड कं० लि०
एण्टाली, कलकत्ता

पूंजीवादी पार्लमेण्टी हुकूमतपर लेनिन

श्री बी० मेमोरी वस्की एम० एम मी०

सोवियट राज्यके विधाता लेनिनने सोवियट शासन प्रणालीकी बहुतही अच्छी वैज्ञानिक व्याख्याकी है। उन्होंने कहा है कि सोवियट राज्य नये ढंगका राज्य, नयी और ज्यादा अच्छे ढंगकी व्यवस्था है, जो पूंजीवादी प्रजातंत्र से बिलकुल जुदा है।

दुनियाको नयी लड़ाई की आगमें में झोकनेका मंसूबा रखने वाले आज गला फाड़-फाड़ कर कह रहे हैं कि सोवियट प्रणाली प्रजातंत्री नहीं है और अपनेको यूनियनके खिलाफ प्रजातंत्र के 'रक्षक' बता रहे हैं। लेकिन यह फरेब नया नहीं। याद रहे कि तीस साल पहले ब्रिटेन, फ्रांस और अमरीकाके साम्राज्यवादियोंने बच्चा सोवियटका गला घोटनकी कोशिश की थी और उस वक्त भी कहा था कि हम प्रजातंत्र को बचा रहे हैं। लेकिन प्रतिक्रियावादी धनी राजनीतिज्ञोंने कभी यह नहीं बताया कि जिस प्रजातंत्रकी वे रक्षा कर रहे हैं, वह आखिर है क्या। वे पूंजीवादी प्रजातंत्रको ख्याली दुनिया की एक अजीबसी चीज बताते हैं, "खलिस प्रजातंत्र" जो श्रेणियों से बहुत ऊंच हैं।

लेनिन ने इस 'खालिस प्रजातंत्र' की बखिया उधड़ दी है। उसने कहा है कि यह अवैज्ञानिक प्रतिक्रियावादी बेहूदगी है जिसका मतलब है मजदूरोंको धोखा देना। अगर हमन अपनी अक्ल नहीं गंवा दी है और अगर हम इतिहासके साथ मजाक नहीं करना चाहते, तो यह साफ है कि जबतक समाजमें श्रेणियां हैं, 'खालिस प्रजातंत्र'की चर्चा नामुमकिकन है, किसी खास जमाव के लिये प्रजातंत्र कहा जा सकता है। "खालिस प्रजातंत्र" एक झूठा नारा है जो नरम विचार वाले मजदूरोंको मरवानेके लिये बलके करते हैं।"

पूंजीवादी प्रजातंत्र एक खास श्रेणीकी हुकूमत होती है। उसके इस रूपको छिपाने के लिये और जनताको भरमानेके लिये पूंजीवादी सिद्धांतके समर्थक भरसक कोशिश करते हैं जिससे एक खास श्रेणीकी हुकूमत बनायी रखी जा सके। "जो लोग स्वाधीनता, समानता और प्रजातंत्रका खुलासा न कर मोट तौर पर इनकी चर्चा करते हैं" उन्हें पाखण्डी और झूठ बताते हुए लेनिन ने कहा है कि "जनताको धोखा देनेके लिये ऐसा किया जाता है। हम मजदूरोंसे कहते हैं कि इन झूठोंका पर्दाफाश कर दो, इन अंधों की आंखें खोल दो, उनसे पूछो—

"सामता (बराबरी) किसमें और किसकी?"

"किस कौमकी किस कौमके साथ?"

"किस श्रेणीकी किस श्रणीके साथ?"

"आजादी किसकी गुलामीसे या किस श्रेणीकी गुलामी से?"

"किस श्रेणीकी आजादी?"

"जो शख्ससे सवाल उठाये बिना इन सवालोंके सामने रखे बगैर इन सवालों को छिपाने और भ्रम पैदा करनेके खिलाफ आवाज उठाये बगैर राजनीति, प्रजातंत्र, स्वाधीनता, समाधान और सामान्यवाद की बातें करता है, वह कमकरोंका सब से दुश्मन है, वह भेड़की खालमें भेड़िया है, मजदूरों और किसानोंका सबसे बड़ा दुश्मन है, वह जमींदारों, जारों और पूंजीपतियों का गुलाम है।"

पूंजीपति प्रजातंत्र जबान से तो सभी आदमियोंकी बराबरीका दावा करता है, मगर असलमें कौमों, श्रेणियों, औरतों-मर्दों को छोटा-बड़ा बनाये रखनेका ही हामी है। वह इस छोटाई-बड़ाईकी बुनियाद, चीजें तैयार करनेके साधनों और औजारों पर व्यक्तिका मालकाना और पूंजीवादी लूट खसोट (शोषण) को बचाता है।

स्टालिनका कहना है कि "पूंजीवादी प्रणाली अटल है। इन विधानोंकी बुनियाद ही पूंजीवादके सिद्धांतों पर होती है अर्थात् जमीन, जंगलों, कारखानों और पैदावार के दूसरे साधनों पर व्यक्तिका अधिकार है, एक आदमी दूसरे आदमीका शोषण कर सकता है और शोषण करनेवाला और शोषित होनेवाला दोनों रहेंगे एक तरफ समाजके बहुसंख्यक मेहनत करने वालोंका कल क्या होगा, इसका ठीक नहीं, दूसरी तरफ मुट्ठी भर काम न करनेवालोंके लिये सारे मजे इत्यादि। इन्हीं पर वे विधान खड़े रहते हैं और कानूनके जरिये इनको बचाते हैं।

लेनिन और स्वालिनने दिखला दिया है कि जबतक श्रेणियोंकी आर्थिक (माली) छोटाई-बड़ाई बनी रहेगी, तबतक सच्ची राजनीतिक बराबरी हो नहीं सकती। पूंजीवादी समाजमें मेहनत करने वालोंके राजनीतिक हक धोखाधड़ी हैं। मालिक और मजदूर, जमींदार और किसानमें सच्ची बराबरी हो ही नहीं सकती, अगर पहले के हाथमें धन-दौलत और कानून है, दूसरा इनसे मोहताज है, अगर पहला शोषक और दूसरा शोषित है।

लेनिनने बतलाया है कि पूंजिवादी पार्लमेंटों प्रजातंत्रोंमें राज्यका ढांचा ऐसा रहता है जिससे यह धोखा बना रहे कि जनता को राजनीतिक हक मिले हुएहैं, लेकिन सच तो यह है कि वह ढांचा जनताको हुकूमतमें हिस्सा लेनेसे रोकता है, और पूंजीपतियोंका एक छत्र राज्य कायम रहता है। संपत्ति, स्त्री पुरुष, निवास स्थान, शिक्षा आदि गुणोंको लेकर मत देनेका अधिकार सीमित किया जाता है। इसके अलावा चुनावोंमें तरह-तरहके जाल फरेब होते हैं। यह सब पूंजीपतिका अधिकार बरकरारकें ही लिये किया जाता है।

पूंजीवादी पार्लमेंट बड़े पूंजिपतियों के हाथका औजार है। पार्लमेंटकी ओटमें वे देश पर हुकूमत करते हैं।" मजदूर पार्लमेंट के काममें भाग नहीं लेने पाते। (पार्लमेंट पूंजीवादी प्रजातंत्रकी किसी भी गुत्थीको नहीं सुलझाती। ये गुत्थियां फाटकाबाजार और बैंक अपने ढंगसे हल करते हैं।) परंतु मजदूर अच्छी तरह जानते और देखते हैं कि पूंजीवादी पार्लमेंट उनकी शत्रु है।" पूंजीपतियोंके हाथमें मजदूरोंको दबाने का हथियार है। मुट्ठी भर शोषक वर्गकी चीज ह।"(लेनिन)

राजनीतिक प्रचारके साधनों, अखबारों, रेडियो, सिनेमा इत्यादि पर भी बड़े पूंजीपतियोंका कब्जा रहता है। पूंजिवादी देशोंमें "अखबारोंके जरिये प्रचार करनेकी स्वाधीनता" सिर्फ पूंजिपतियोंको रहती है जिनके पास अखबार निकालने या अखबारों को घूस देनेके लिये पैसे होते हैं। लेकिन लेनिन ने लिखा है कि "सारी दुनियामें जहां भी

पूंजीपति हैं, वहां अखबारोंके जरिये प्रचार की आजादी अखबारोंको खरीदने, लेखकोंको खरीदने घूस देकर या खरीद कर जनमत तैयार करनेकी ही आजादी है और यह सब पूंजीपतियोंके भलेके जनमत तैयारकी ही आजादी है और यह सब पूंजीपतियोंके भले के लिये किया जाता है। यह सचाई है। इसे कोई काट नहीं सकता।"

पूंजीवादी पार्लमेंट वाले प्रजातंत्रोंमें स्वाधीनता और समानता मुठ्ठी भर शोषण करने वालोंको मिली है। पूंजीवादी प्रजातंत्र हमेशा थोड़े लोगोंके लिये रहेगा, एक धोखे की टट्टी होगा, मायाजाल होगा, धोखाधड़ी होगा, धनियोंके लिये स्वर्ग और गरीबोंके लिये फंदा और मायाजाल। लेनिनने कहा कि "बोलशेविक सिद्धांत, सोवियटका सार यह है कि राज्यकी ताकत मजदूर जमातके हाथ रहे, शोषित जनताके हाथ में रहे और पूंजीवादी प्रजातंत्रकी मक्कारी और धोखाधड़ीका भंडाफोड़ किया जाय और जमीन, कारखानों व मिलों परसे व्यक्तियोंका मालिकाना खत्म किया जाया।"

अक्तूबरकी साम्यवादी क्रांतिने पैदावारके साधनों और औजारों परसे व्यक्तियोंका मालिकाना खत्म कर दिया और उनको जनताके हाथ में दे दिया। इस तरह एक आदमीके जरिये दूसरे आदमी के शोषणकी बुनियाद ही खत्म हो गयी। इतिहासमें पहली दफे जनताके हाथमें हुकूमत की बागडोर आयी। सोवियट जनता की सरकार है। जनता सरकारके हर काम में सीधे हाथ बटाती है।

सोवियत प्रणालीमें स्टालिन विधान के जरिये प्रजातंत्रको खुलकर फलने-फूलने को मौका मिला। सोवियट यूनियनकी सबसे बड़ी पंचायतसे से लेकर गांवों और शहरोंकी पंचायतों तकका निर्माण चुनाव से होता है और चुनावमें सभीको वोट देने का बराबर हक है। सभी बालिग वोट देते और खास बात यह है कि चुने जानेके बाद भी मेम्बर अपने मतदताओंके प्रति जिम्मेदार हैं। अगर किसी भी समय मतदाता सोचें कि उनका चुना हुआ मेम्बर उनकी मर्जीके मुताबिक काम नहीं करता, वे उसे हटा सकते हैं।

सोवियट प्रजातंत्रके बारेमें लेनिन ने कहा कि सोवियट राज्यमें स्वाधीनता सिर्फ नामके लिये नहीं रहती (जैसा पूंजीवादी प्रजातंत्रमें होता ह)। ऐसी हालत पैदा करनी चाहिये जिससे जनता स्वाधीनता का भोग कर सके। स्टालिन विधानमें, सोवियट प्रजातंत्रका पूरा विकास हुआ। विधानमें नागरिकोंके अधिकारोंकी सिर्फ घोषणा नहीं की जाती, बल्कि ऐसी हालत पैदाकी जाती है जिससे जनताको ये अधिकार मिलें। दुनियामें अकेला स्टालिन विधान ही इसकी घोषणा करता है कि हर नागरिकको काम पानेका हक है और अर्थ संकट व बेकारीकी संभावनाओंको दूर कर यह तय कर देता है कि हर आदमी काम पायेगा ही। हर आदमी को शिक्षा पाने, आराम करने और बुढ़ापेमें खोलकर आराम घर बना कर और बुढ़ापे लिये पेंशनका इन्तजाम कर ऐसी हालत - पैदाकी गयी है कि हर आदमी इन अधिकारोंका भोग कर सके। जनताके हाथमें छापाखाने, कागज, इमारतें वगैरह देकर यह तय कर दिया गया है कि जनताको सचमुच लिखने, बोलने और अपने विचार व्यक्त करनेका हक है। इससे साफ पता चल जाता ह कि सोवियट प्रजातंत्र मामूली ढंगका, हवामें उड़ने वाला प्रजातंत्र नहीं बल्कि साम्यवादी प्रजातंत्र है।

सोवियट प्रजातंत्र इसलिये भी बड़ा है कि यह सिर्फ देशोंकी बराबरीकी घोषणा नहीं करता, बल्कि आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रमें देशोंकी छोटाई-बड़ाई दूर कर सच्ची बराबरी का दरवाजा खोल देता है। लेनिन और स्टालिनने कौमोंकी बराबरीकी जो नीति बनायी उसकी बदौलत जारकाल के पिछड़े देश भरेपूरे सोवियत प्रजातंत्र बन गये। वे अपने अधिकारोंको पूरे तौर पर काम में ला सकते हैं। सोवियट राज्य और साम्यवादी अर्थनीति और संस्कृति के बनानेमें पूरा हिस्सा ले सकते हैं। "सोवियट राज्य प्रणाली ऐसी है जिससे कौमों के सवालको, कौमोंके आपसी संबंधोंके सवालको ऐसे अच्छे ढंगसे हल किया गया है जैसे ढंगसे किसी भी बहुत कौमों वाले मुल्कोंमें हल नहीं किया।" (स्टालिन)

सोवियट प्रजातंत्रकी अगुवई करने वाली कम्यूनिस्ट पार्टी है। साम्यवादको कामयाब बनानेके लिये कम्यूनिस्ट पार्टी ने जो संग्राम किया, उसमें सोवियटकी सारी जनताको अपने झण्डेके नीचे ला खड़ा किया। सोवियतकी पंचायतोंके चुनावों के वक्त कम्यूनिस्टों और गैर कम्यूनिस्ट जनता ने स्टालिन मोर्चा बनाया था। उसकी कामयाबीसे पता चलता है कि बोलशेविकपार्टीका जनतासे कितना नजदीकी संबंध है।

सोवियट यूनियनकी सबसे बड़ी पंचायत और दूसरे सोवियट प्रजातन्त्रोंकी पंचायतोंके चुनावोंमें ९९ सैकड़ा मत देने वालोंने स्टालिन मोर्चेको वोट दिये। इससे पता चलता है कि सोवियट जनतामें कैसी राजनीतिक इकाई है, सोवियट प्रजातन्त्र में कितनी ताकत और जान है, सोवियट राज्य कितना मजबूत और अटूट है।

लेनिनने कहा है कि "ऐसे राज्यको कभी हटाया नहीं जा सकता, जिसके अधिकांश मजदूर-किसानोंने समझ लिया है, महसूस कर लिया है और देख लिया है कि यह राज्य, सोवियट राज्य उनका है, वह ऐसी चीजके पहरेदार हैं जिसकी जीतसे उनको और उनके बच्चोंको वह सब कुछ भोगनेको मिलेगा, जो कुछ भी आदमीकी मेहनत मशक्कतसे तैयार होगा, संस्कृतिके सारे भोग उनको और उनके बच्चोंको मिलेंगे।"

क्या झारखण्डको अलग प्रांत बनाना युक्ति संगत है ?

लेखक—श्री सुबोध मिश्र

कुछ लोगोंकी धारणा है कि झारखण्ड शब्दका प्रचार आदिवासी महासभाके संगठनके बादसे हुआ है। आदिवासी महासभा छोटनागपुर डिवीजनके पांचों जिले—रांची, हजारीबाग, पलामू, सिंहभूमि और मानभूमि तथा संथाल परगना जिलेको बिहारसे अलग कर एक नया प्रांत बनाना चाहती है और सुगमताके लिये इन छटों जिलोंका नाम 'झारखण्ड' रक्खा है। किन्तु इस धारणामें भूल है। इन छटों जिलोंका झारखण्ड नाम अति प्रचीन है। सम्राट जहांगीरने अपने संस्मरणमें लिखा है कि "ई वलायत तरबा सुबा बिहार वो पटना अस्त" अर्थात् यह अंचल बिहार और पटना प्रांतके अन्तर्भुक्त है।

इतिहासका अन्वेषण करने वालों को इस बातका भी पूरा प्रमाण मिला है कि मौर्य्य कालमें भी इस अंचलका नाम यही था।

झारखण्डके अधिवासी

अस्तु, इस लेखमें यह विचार करना है कि यहांके अधिवासी कौन-कौन हैं।

सन् १९४१ में जो मनुष्य गणना हुयी उसके संबंधमें बहुतोंकी आपत्ति है कि उसमें आदिवासियोंकी सख्या जानबूझ कर बढ़ा दी है, किंतु यदि १९४१ की गणना को ही सत्य मान लें तो भी उपर्युक्त छः जिलोंकी आवादी ९७५०८४६ है, जिनमें आदिवासी ४४५११० हैं। अर्थात् झारखण्ड में आदिवासियोंकी संख्या ४५॥ (साढ़े पैंतालीस) प्रतिशत है। अतः संख्याबलके आधार पर झारखण्डको अलग प्रांत बनाने की मांग कोई तथ्य नहीं रखती।

मानभूमि पलामू, और हजारीबाग जिलोंमें गैर-आदिवासियोंकी ही संख्या अधिक है। हजारीबागमें आदिवासी २७ प्रतिशत, पलामूमें ३५। (सवा पैंतीस प्रतिशत) मानभूमिमें ३३। (सवा तैंतीस) प्रतिशत हैं।

रांची जिलेमें और सिंहभूमि जिलेके सदर सवडिवीजनमें तथा संथाल परगना जिलेके दुमका, राजमहल, जमताड़ा और पाकुड़ सवडिवीजनोंमें आदिवासियोंकी संख्या अधिक है।

रांची जिलेकी जन संख्या १६७५४१३ है जिनमें ११७३१४२ आदिवासी हैं। अर्थात् ७० प्रतिशत।

सिंहभूमि सदर सवडिवीजनकी आवादी ६११३१५ है जिनमें आदिवासी ४४२०१८ है अर्थात् ७२ प्रतिशत।

दुमका सवडिवीजन की आवादी ५०९५२३ है जिनमें आदिवासी ३४५२२२ अर्थात् ६७॥ प्रतिशत हैं।

जमताड़ा सवडिवीजन की आवादी २७१८८८ है जिनमें आदिवासी १४६१९३ हैं, अर्थात् ५३॥। प्रतिशत।

राजमहल सवडिवीजनकी आवादी ३५५९९५ है जिनमें आदिवासी १८८६६५ हैं, अर्थात् ५३ प्रतिशत।

पाकुड़ उबडिवीजनकी आवादी २७९३३९ है, जिनमें आदिवासियोंकी संख्या १७४९८७ है, अर्थात् ६२॥ प्रतिशत। इसका अर्थ यह हुआ कि जिन अंचलों में आदिवासियोंकी अधिक संख्या है उन सबमें कुल मिला कर, ३७०३४७३ लोग हैं, जिनमें २४७०२२७ अर्थात् ६६॥ प्रतिशत आदिवासी हैं और १२३३२४६ अर्थात् ३३॥ प्रतिशत गैर-आदिवासी हैं।

उपर्युक्त विश्लेषणके संबंधमें यह स्मरणीय है कि कोई प्रांत यदि किसी जाति की बहुसंख्याके आधार पर बन तो जिन अंचलोंको मिलाकर एक प्रांत बने ऐसे अंचलोंका एक साथ होना आवश्यक है। अतः रांची जिला और सिंहभूमिके सदर सवडिवीजनको मिलाकर ही एक प्रांत बन सकता है। संथाल परगनाके जिन चार सवडिवीजनोंकी चर्चा ऊपरकी गयी है वे दूर पड़जाते हैं और बीचमें हजारीबाग और मानभूमिके जिले आ जाते हैं। एक बात और विचारणीय है कि जमताड़ा और राजमहलमें आदिवासियों और गैर-आदिवासियोंकी संख्या बराबरी पर है अस्तु इन्हें 'आदिवासिस्तान' में शामिल नहीं किया जा सकता। अगर आदिवासी महासभा की मांग मान भी ली जाये तो केवल रांची जिला और सिंहभूमि सदर सवडिवीजन को मिलाकर एक प्रांत बन सकता ह, और बहुत आग्रहसे, पलामू जिलेका लेतेहार सबडिवीजनका कुछ भाग भी इसमें जोड़ दिया जा सकता है तो यह प्रांत एक ऐसा प्रांत बनता है जो अलग प्रांतकी हैसियतके लिये बहुत ही छोटा होगा। इतने छोटे अंचलको एक प्रांतका रूप देना हास्यास्पद ही नहीं, शासनकी दृष्टिसे असम्भव भी होगा। और ऐसी अवस्थामें इस प्रांतको झारखण्ड नहीं कहा जायगा क्योंकि यह यह झारखण्डके छटों जिलोंमें केवल डेढ़ जिलोंका ही प्रांत होगा। अस्तु, क्या मि० जयपाल सिंह इस डेढ़ चावलकी खिचड़ी को पका सकेंगे ?

आदिवासियोंका प्रचार-भेद

यह विचार भी आवश्यक है कि जिन लोगोंको १९४१ की जन गणनामें आदिवासी कहा गया है वे सभी आदिवासी नहीं हैं। भुइयां, खेतैरी, नगेसिया-किसान, थारू, गोड़ैत, चेरो, भोगता इस तरहकी अनेक अन्य जातियोंको आदिवासी कहना अन्याय है। गैर-आदिवासी बिहारी कहनाही युक्ति संगत है। यदि ऐसी गैर-आदिवासी बिहारी जातियोंकी संख्या अलग कर दी जाये तो १९४१ की जन गणनामें बताई हुई आदिवासियोंकी आवादी और भी कम ही जायगी। आदिवासियोंमें क्रिस्तान और संसार दो प्रकारके लोग हैं। आदिवासी महासभामें क्रिस्तानोंकाही बहुतायत है किंतु जन संख्या में संसार ही अधिक हैं। १९४१ की जन-गणनामें मजहबोंके आधार पर आदिवासियों की गिनती नहीं की गयी थी अस्तु १९३१ की जन-गणनाको देखना आवश्यक है। इस गणनाके अनुसार छोटानागपुर और संथाल परगना अर्थात् झारखंडमें ३३७१२८९ आदिवासी मान लिये गये हैं और इन आदिवासियोंमें १९२२२७९ 'सरन-

धर्म' मानते हैं और ११५५३०० हिंदू धर्म को माननेवाले हैं और केवल २९३७०८ ही क्रिस्तान हैं।

अस्तु, स्पष्ट है कि क्रिस्तानोंकी संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम ह किंतु, पादरियोंकी दया से, अधिक पढ़े-लिखे होनेके कारण क्रिस्तानोंकी आवाज ऊंची है और चूंकि आदिवासी महासभामें क्रिस्तानोंके ही संख्या अधिक ह, क्रिस्तान आदिवासियों के पढ़े लिखे होनेके कारण, आदिवासी महासभा जोड़ पकड़ गयी है। गैर क्रिस्तान आदिवासियोंका संगठन अभी हालमें ही आरम्भ हुआ है और विद्याकी कमीके कारण इसे सबल होनेमें अभी देर लगेगी।

आदिवासियोंमें अनेक जातियों हैं जिनमें संथाल, उरांव और मुंडा जातिके लोगोंकी संख्या अधिक है।

झारखंड और संथाल

झारखण्डमें संथालोंकी संख्या १२७-५७१६ है जिनमें ७५४८०४ संथाल परगनामें रहते हैं। ये संथाल कहां तक "आदिवासी" अर्थात् संथाल परगनेके पुराने रहने वाले हैं इसका पता संथाल परगना जिलेके 'गजेटियर' से चलेगा जिसके पृष्ठ ५१ में लिखा है कि ये लोग सन् १७९० और १८१० के बीच बंगालके वीरभमि जिलेसे आकर संथाल परगनामें बसे। बहुसंख्याके हिसाब से संथालोंके बाद उरांव जातिके लोगोंका नम्बर है। ये लोग द्रावड़ी हैं और इनकी कुल संख्या झारखण्डमें ५२४६४२ है जिसमें ४४०१०० केवल रांची जिलेमें रहते हैं। रांची जिलेके 'गजेटियर' के पृष्ठ ७२ और ७३ से पता चलता है कि ये लोग शाहाबाद जिलेके रोहतास इलाकेसे आकर रांची जिलेमें बसे हैं। यह सर्वविदित है कि मुसलमानोंने सन् १५३९ में रोहतास पर कब्जा किया। उरांव लोग उसके बादही रांची जिलेमें आये इसलिये उनको झारखण्डके पुराने रहनेवाले के अर्थमें, आदिवासी मानना कठिन है। सिंहभूमि जिलेमें 'हो' जातिके लोगोंकी तादाद बहुत बड़ी है। जन-गणनाके अनुसार इनकी संख्या ३०११५८ ह और यह सिंहभूमि जिलेके कोलहान नामक स्थान में ही ज्यदा रहते हैं। किंतु इनको भी सिंहभूमिका पुरातन आदिवासी कहना कठिन है। सिंहभूमि जिलेके 'गजेटियर' से पता चलता है कि यह जिला पहले आर्य हिंदुओंके हाथ था पीछे जैन-श्रावकोंके हाथ चला गया जो १४ वीं या १५ वीं सदीमें आये। 'हो' जातिके लोग इसके बाद सिंहभूमिमें गये।

अस्तु, उपर्युक्त विवेचनसे पता चलेगा कि कि 'आदिवासी'-शब्द केवल राजनैतिक दृष्टिसे व्यवहुत होता है। आदिवासी का यथार्थ अर्थ--पुराना अधिवासी नहीं रह जाता। मुंडालोग कबसे यहां बसते हैं इसका ठीक-ठीक पता नहीं किंतु इन्हें पुरातन अधिवासी--आदिवासी मानने में कोई बाधा-आपत्ति नहीं हो सकती!

अब तनिक भाषाकी दृष्टिसे भी झारखण्डपर विचार कीजिये। झा खण्डके आदिवासियोंमें अनेक भाषायें प्रचलित हैं यथा--कुरुख, मुंडारी, संथाली इत्यादि। १९३१ की मनुष्य गणनाके अनुसार हजारीबाग जिलेमें केवल ८॥ प्रतिशत लोग आदिवासी भाषा बोलते हैं। रांची जिलेमें ५२॥ प्रतिशत, सिंहभूमि ५५॥ प्रतिशत, पलामू जिलेमें ८॥ प्रतिशत, मानभूमिमें १४ प्रतिशत और संथाल परगनेमें ४१॥ प्रतिशत। यदि सब जिलोंको मिलाकर देखा जाये तो झारखण्डमें केवल ३०॥ प्रतिशत लोग आदिवासी भाषामें बोलते हैं और संथाल परगनाको छोड़कर केवल छोटनागपुर परही विचार किया जाये तो केवल २७ प्रतिशत लोगही आदिवासी भाषामें बोलते हैं। झारखण्डमें वस्तुतः हिंदी बोलने वालोकी ही संख्या अधिक है।

उपर्युक्त विवेचगोंसे पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं कि पुराने-आदिवासी, जन संख्या और भाषाके आधार पर झारखण्ड को अलग प्रांत बनानेकी मांग--जो आदिवासी महासभाकी ओरसे बार-बार दुहराई जाती है और जिसके लिये सीधे हमलेकी धमकी दी गयी है, वह कहांतक युक्ति संगत है।

ब्रिटेनका रुख क्या होगा?

सुरक्षा परिषदमें काश्मीर पर बहस आरम्भ हो गयी है पर अभी यहां इस बात का कतई इशारा नहीं मिल रहा है कि सुरक्षा परिषदमें ब्रिटिश शिष्टमण्डल क्या रुख ग्रहण करेगा। यहांके प्रेक्षकोंका कहना है कि सुरक्षा परिषदका पहला काम यह होगा कि इस अवकाशके बाद भारतीय शिष्टमण्डल भारत सरकारसे बातचीत करके क्या कहता है और कुछ नयी बात कहता है तो उसके संबंधमें पाकिस्तानी शिष्टमण्डलके क्या विचार हैं।

इसलिए परिषदको काश्मीरके प्रश्न पर फिरसे विचार करनेसे पूर्व यह जान लेना परमावश्यक है कि भारतीय और पाकिस्तानी शिष्टमण्डलोंके विचार क्या हैं?

अब यह प्रत्यक्ष हो गया है कि अब इस मामलेको हल करनेमें जल्दी और न्याय करनेकी आवश्यकता है। यह दोनोंही डुमीनियनोके पक्षमें है कि अब लड़ाई आगे न चलती रहे। इसके साथ ही सुरक्षा परिषद का सम्मान भी दांव पेंच पर लगा हुआ है। यहां लोग न तो करश्मीर समस्याके हल होनेके बारेमें आशावादी है न निराशावादी।

सुरक्षा-परिषद चाहे जो भी कदम उठाये, पर यह साफ ह कि ऐसे प्रस्ताव तैयार किये जायं, जिन पर भारत तथा पाकिस्तान दोनों सहयोग देनेको तैयार हों।

विदेशी मामलों पर लिखने वाले मास्कोके पत्र 'न्यू टाइम्स' पिछले बार भारत का पक्ष लेकर प्रचार किया था। पर जब भारतीय शिष्टमंडल भारत चला गया था तो उसने बन्द कर दिया था। अब लेकसक्सेसमें फिरसे प्रश्न पर विचार शुरू होने पर उसने अपना कार्य आरंभ कर दिया है।

'न्यूटाइम्स' पत्रने सबसे बादके संस्करण में लिखा है कि ब्रिटेनकी मजदूर सरकार की नीति यह है कि काश्मीर उनके हाथ में रहे और काश्मीरकी समस्या उलझी रहनेमें ही ब्रिटिश सरकारका लाभ है।

सोवियट जीवन की झांकी

सोवियट लिथुआनियाकी राजधानी विल्नियसमें नया रूसी नाट्य मंच बना है जिसके द्वार पर रूसी और लिथुआनी भाषामें लेनिनके ये शब्द खुदे हैं—"कला जनताकी चीज है"। सोवियटके विभिन्न नगरोंमें ४० नये रंगमंच बन रहे हैं। इनमेंसे एक फ्रुंज (किरगीज प्रजातंत्र) में गान नाट्य मंच होगा जिसमें १००० श्रोता बैठ सकेंगे, एक कला भवन फिलीनेफ (मोल्मावियां प्रजातंत्र) में एक संगीत हास्य मंच होगा (लतलिया प्रजातंत्र) में और एक संगीत नाट्य मंच पेत्रोजावोद्स्क (कारेलो-फिनिश प्रजातंत्र) में बन रहा है। लड़ाई के बाद जो पांच सालकी योजना बनी है, उसमें नाटक घर बनवानेका भी इन्तजाम है। सोवियटमें इस समय प्रायः ८०० नाटक घर हैं।

*

लेनिनग्राडके पासकी पुलकोवो वेधशाला जो लड़ाईके समय नात्सियों द्वारा बरबाद कर दी गयी थी, बन गयी है और उसका काम बढ़ाया जा रहा है। पृथ्वीकी अपनी धुरी पर घूमनेकी गतिका निरीक्षण होने लगा है। डी० मक्सुतोफ और एन० योनोमारेफ द्वारा बनाया सूर्य देखनेका दूरबीन लगाया जा रहा है। समय देखनेका काम हो रहा है।

*

सोवियट यूनियनमें २२ संगीत विश्वविद्यालय और संगीतकी ऊंची शिक्षा देने वाले स्कूल, १११ विशेष संगीत स्कूल और ४५० संगीत स्कूल हैं जिनमें दस और सात सालकी शिक्षाका पाठ्यक्रम है। इनके अलावा ६० संगीत अजायबघर, ५९ मधुर संगीतालय, ४४ संगीत व्याख्यान घर और ५ संगीत विश्वविद्यालय हैं।

*

उजबकका सरकारी विश्वविद्यालय बने २० साल हुए। इस बीच यहांसे ११०० ग्रैजुएट निकले हैं। १९१७की अक्तूबर क्रांतिके पहले मध्य एशियामें ऊंची शिक्षा देनेके लिये एक भी स्कूल न था। उजबेकिस्तानके सिर्फ १॥ सैकड़ा लोग पढ़ना- लिखना जानते थे।

*

सोवियटकी निर्माण विद्या परिषद (घर बनानेकी विद्या पर गौर करने वाली संस्था), मास्कोके जलसेमें उसके सभापति बी० वेसनिनने एक लेख सोवियटकी घर बनानेकी समस्या पर पढ़ा। दुनियामें यही अकेली संस्था है जो घर बनानेकी कठिन से कठिन पहेलियों पर विचार करती है। इस परिषदके नीचे वैज्ञानिक ढंगसे खोज करनेके लिये छः संस्थाएं, सात प्रयोगशालाएं, एक अजायबघर और एक वैज्ञानिक पुस्तकालय है।

*

कुल सोवियट मजदूर यूनियनकी केन्द्रीय कमेटीके पास स्वास्थ्य सुधार घर और आराम घर हैं जिनमें १२०००० आदमी रह सकते हैं। चालू सालके भीतर और आराम घर बनवाये जायंगे जिनमें २० हजार आदमी और रह सकेंगे। लेनिनग्राड इलाकेका मशहूर स्वास्थ्य सुधार घर सेस्त्रोरेत्स्क ठीक किया जा रहा है। कैस्पियनके किनारेका एक बहुत ही अच्छा स्वास्थ्य सुधारपरके अजरबैजान प्रजातंत्र तेलके कारबारमें लगे मजदूरों और इंजिनियरोंको दे दिया जायगा। अर्मीनिया प्रजातंत्रके लिये सेवान झील की ऊंची पहाड़ी पर अरामघर बनवाया जायगा।

*

सोवियटके प्रसिद्ध लेखक स्वर्गीय अलेक्सेई ताल्तायकी कांसेकी प्रतिमा लेनिनग्राडके एक कारखानेमें ढाली गयी है। प्रतिमा जी० मोतोविलोफ नामके मूर्तिकार ने बनायी है। यह स्मारक मास्कोमें बनेगा। इस कारखानेमें इस साल ४० बड़ी प्रतिमाएं ढाली जायंगी। एक होगी मास्कोको बसानेंवाले पूरी दो गोरुफीकी इनका स्मारक राजधानीके केन्द्रके एक स्क्वायरमें बनेगा।

*

रूसी संघके सभी भागोंमें जाड़ेके खेलोंकी होड़ शुरू हुई है। बर्फ पर चलना हाकी, जिम्नास्टिक, बास्केट बाल, वालीबाल, मुक्काबाजी, शतरंज इत्यादिमें होड़ होगी। नगरों, इलाकों और सूबोंके खलोंकी होड़ों में जीतने वाले करीब ४००० खेलाड़ी सबसे बड़ी होड़में जो मास्कोमें होगी, भाग लेंगे।

*

उचतम क्वालिटीकी लीवर घड़ियां

अत्यधिक सस्ती कीमतोंपर स्विटजरलैण्ड की बनी हुई, निहायत सुन्दर और आधुनिक आकार, ठीक समय देनेवाली। हर एक घड़ीकी गारण्टी ३ साल। क्रोमियम केस गोल या चौकोर साइज की १८) सुपीरियर २०) बेस्ट २५) रेक्टंगुलर और टोनिओ आकारकी चित्र जैसी घड़ियां उज्वल क्रोमियम केस, ५ ज्वेल ३८) रोलडगोल्ड ७ ज्वेल ५८) क्रोमियम केस १५ ज्वेल ६५) रोल्ड गोल्ड १० साल की गारटीका केस ८३)। प्लास्टिक पट्ट सहित। डाक खर्च और पैकिंग माफ।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V.C.)
ऐशबाग — लखनऊ

सोवियत संघकी नारियां

लेखक—महेन्द्र त्रिवेदी

रूस आजके प्रमुख देशोंमें माना जाता है। रूसकी प्रमुखताकाप्रधान कारण वहां की नारियां हैं। इस मतको रूसके नेताओं ने समय-समय पर प्रकट किया है। रूसके नेताओंने नारीके महत्वको समझ कर ही समय-समय पर वैधानिक अधिकारों द्वारा नारी और पुरुषमें समानताको प्रवेश कराया है।

प्राचीन कालमें यहां वे सब दोष लगभग थे, जो आज हम अपने देशमें पाते हैं। यहां नारियां एक प्रकारका पर्दा करती थी जिसे 'परेन्ज'के नामसे पुकारते हैं। यह 'बुर्के' से भी अधिक कष्टदायक होता था। यह घोड़ोंके काले बालोंसे बनाया जाता था, यह खूब गरम एवं स्वास्थ्यके लिये हानिकारक होता था। जहा नारियों की दशा इतनी बुरी थी, वहां उनके राजनैतिक, सामाजिक अधिकारोंकी कल्पना व्यर्थ ही होगी। पुत्रीका जन्म तो दुर्भाग्य माना ही जाता था किन्तु स्त्रीकी मौत पर भी दुःख प्रकट नहीं किया जाता था। यह समाजकी दशा थी, इस घनघोर अन्धकार से निकल कर आज वहां की नारियांविश्व का पथ प्रदर्शन कर रही है।

रूसकी महान क्रांतिके बाद रूसके नेताओंने यह भली भांति समझा कि लाल नवम्बर क्रांतिमें वहां की मूक नारीका भी हाथ था। इसके परिणाम स्वरूप सोवियत संघके विधान की १२२ वीं धारामें महिलाओंको पुरुषोंके समान पूर्ण अधिकार दिये गये। इनको सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक सब प्रकारकी पूर्ण स्वतन्त्रता भी दे दी गयी। इसी धारामें महिलाओंके लिये प्रसूति अवकाश आदि भी दे दिये गये।

इसी विधानकी धारा १३७ में यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि नारियोंको पुरुषोंके समान ही मत देने एवं चुनावमें खड़े होनेका पूर्ण अधिकार है।

इन नियमोंकी प्रतिक्रियामें भी विशेष देर नहीं लगी। दस वर्षके अन्दर ही महिलाओं ने देशके सब भागोंमें प्रवेश किया और देशमें नव-जीवन उत्पन्न किया।

सन् १९२८ से ३७ तक काम करने वाली महिलाओंकी संख्या ३ लाखसे ९ लाख तक पहुंच गयी। नारियोंने अपने काम में भी प्रगति की घरों खेतों, दफ्तरों सबमें प्रवेश किया। यह प्रगति बढ़ती गयी और सन् १८३६ में ३९ प्रतिशत महिलाएं सोवियत संघमें काम करने लगीं, अन्तमें १५० प्रतिशत दूकानोंमें २०० डाक्टर एवं शिक्षा विभागमें काम करती थीं। नारियोंने विज्ञान में भी प्रगति की।

कारखानोंमें तो इनकी संख्या इतनी बढ़ी कि लेनिनग्राड्के जूतेके सबसे बड़े कारखानेमें ६०० प्रतिशत महिलाएं काम करती थीं।

महिलाओंकी इस प्रगतिको देख कर, सोवियत सरकारने बच्चोंके अस्पताल एवं शिशुओंके रखनेके अनेक स्थान बनाये, जहां महिलाएं अपने बालकको सुरक्षित रख सकें और देशका भविष्य भी सुदृढ़ हो सके। सन् १९३७ में लगभग २६ लाख बच्चे इन साधनों द्वारा रखे जाते थे। महिलाओंको जिनके बालक छोटे होते हैं उन्हें हर तीसरे घण्टेके बाद अपने बालकोंको सम्भालने की छुट्टी मिलती है, जब वे बच्चोंको दूध आदि पिलाती हैं। खेतीके समय अधिक नारियां काम करती हैं, इसलिये इन स्थानों में बच्चोंकी संख्या भी बढ़ जाती है।

सोवियत संघमें लगभग सभी सात घण्टे काम करते हैं। कहीं-कहीं महिलाओं के लिये घण्टे भी होते हैं।

जब रूसकी नारीका जीवन अन्धकारमें था उस समय रेलोंमें महिलाओंका कोई स्थान नहीं था, किन्तु क्रांतिके बाद वहां ४०० स्टेशन मास्टर महिलाएं हैं। लगभग १४०० असिस्टेण्ट स्टेशन मास्टर हैं। इसी प्रकार हजारों महिला अन्य स्थानों पर काम करती हैं।

आजके सोवियत संघमें नारी, इंजिनियर, पायलेट, वैज्ञानिक और वैधानिक सब कुछ हैं।

लगभग एक लाख बत्तीस हजार डाक्टर रूसमें हैं, उनमेंसे आधी महिलाएं हैं।

हमें विचार करना है कि वहांके नारी जीवनमें यह महान् परिवर्तन क्यों हुआ? इसका मुख्य कारण यही है कि देशके कर्णधारोंने आवश्यकताको पहचाना और नारी को आगे बढ़ाया। आज हमारे देशमें कर्णधारोंने तो महिलाओंको उन्नत करना तय किया है किन्तु नारी आज भी सजग नहीं हैं। इन आकड़ोंको देखकर ज्ञात होता है कि हमारा भी देश एक दिन आगे बढ़ेगा।

विवाह जो समाजका मुख्य अंग है, इसमें पूर्णतया दो व्यक्तियोंका प्रेम सम्बन्ध माना जाता है, लगभग अधिकांश विवाह कोर्टमें ही होते हैं। अवैधानिक विवाह लगभग नहीं होते हैं, क्योंकि विवाहमें व्यक्तिगत स्वतन्त्रताका पूर्ण ध्यान रखा जाता है।

रूसमें आज ६२ प्रकारकी जागृति है, हम कई बातोंमें उस महान् देशका अनुकरण करते हैं यदि हमारी बहनें और सरकार इस नारी जागृतिमें भी इस महान् देश की योजनाको अपनायें तो शायद हम कई सरोजिनी, विजयलक्ष्मी और हंसा मेहता पा सकेंगे।

आज हमने भी केन्द्रके मन्त्रीपदसे लेकर राजदूत, गवर्नर, धारा सभाओं आदि सबमें महिलाओंको बिठा कर विश्व में शानदार काम किया है, किन्तु प्रश्न यही है कि इसके बाद भी हम इस कामको इतने शानके साथ कर सकेंगे या नहीं?

भारतके पुनर्निर्माणके समय हमें सब देशोंका चिन्तन कर अपना सुदृढ़ और अद्वितीय मार्ग निकालना है।

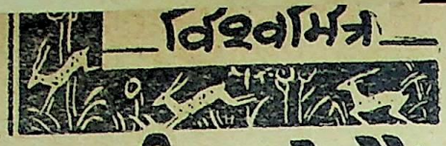

दयालदादा बम्बई जाते हैं

श्री विनायक नानकर

तुम्हारी बम्बईको कोहनीसें प्रणाम। क्या बड़ी बड़ी इमारतें हैं ! एक एक इमारत पांच पांच तल्ले। ऊपर-नीचे करते करते तो मेरी जान जानेकी नौबत आ गई। पांच तल्ला चढ़ते-चढ़ते हमारे पंच-प्राण मुंहको आ जाते हैं। तेरा घर ढूढ़ते ढूढ़ते तो मैं थक गया। जिस किसीके घर गया, बाहर। मालूम होता है इन बम्बई वालोंको बाहरकी हवा लग गई है।

दमयन्ती दयाल दादाकी बातें सुन हंसने लगी। इतनेमें नाईको देख उसने कहा "दादा नाई आया है।"

"नाई कौन ? यह तो हजाम है।" दादाने नाईको देख कहा। नाईने इस पर कहा "मैं हजाम नहीं, नाई हूं।"

"हाथमें बेग लेकर ही कोई डाक्टर नहीं बनता। तू हजाम ही है। अच्छा चल जल्दी कर" दयाल दादा अपनी बात पर अड़े रहे। "दादा बम्बईमें बाल बनाने वालेको नाई कहते हैं, हजाम नहीं कहते।"

—नाईने अपना सामान खोलते हुए कहा।

"मुझे बाल बनवाने नहीं, बाल कटवाने हैं; इसलिये मैं तुझे हजाम ही कहूंगा। हजामत करने वालेको हजाम नहीं कहते तो क्या निजाम कहते हैं ? क्या शहर है ? यहां आदमी बाल बनाते हैं और औरतें बाल कटवाती हैं।"

"मालूम देता है कि दादा नये-नये ही बम्बईमें आये हैं ?" नाईने कहा। "नया-नया नहीं हूं; मुझे यहां आये ३६ घंटे हो गये और मेरी दमयन्ती यहीं पढ़ती है। वह मुझे पत्रमें बम्बईके बारेमें लिखा करती है, इससे मैं बम्बईके लिये काफी पुराना हो चुका हूं।"

"दादा, इन छत्तीस घंटोंमें आपने और क्या बम्बईमें देखा ?" "कल सिनेमा देखने गया था अपने पुराने मित्र कालूरामके साथ। वहां जब पहुंचा तो चारोंतरफ अंधेराही अंधेरा था। हमारी तरफ लोग अंधेरोंमें इधर-उधर नहीं घुसते; इससे मैंने समझा कि हमलोग गलतीसे किसीके घरमें घुस आये हैं। मगर कालूकाका साथ थे इससे मैं चुप रहा कालूकाकाने कहा, "अंदर चलिये," और मैं डरते-डरते कालूकाकाके पीछे हो लिया। एक जगह कालूकाका बैठ गये और मुझे भी बैठनेको कहा। मैं जो बैठने लगा तो नीचे कुछ मुलायम लगा। मैंने कालूकाका से कहा, "यहां कुछ मुलायम लगता है कालूकाका बोले 'यहां ऐसी ही मुलायम कुर्सियां होती हैं।' अरामसे बैठ जाओ। मैं जो बैठा तो एक पतलीसी आवाजमें कोई बोला, "आ कौन छे, माणस जोईने बेसतो न थी ?" वह एक मोटी पारसी स्त्री थी। मैं उसीके ऊपर बैठ रहा था। मैंने कहा, "मैं तो देख कर ही बैठा करता हूं; परन्तु यहां अंधेरेमें कुछ नहीं सुझ रहा है। माफ करना बहन।!' इस पर उस पारसी स्त्रीने जो अपनी टांग उछाली तो मैं सीधा उछल कर दूसरी कुर्सीमें जा फंसा। नाईने अपनी हंसी दबाते हुए पूछा, "दादा, सिनेमा कैसा था, पसंद आया या नहीं ?"

"सिनेमा क्या था मेम और साहबका नाच ही था। कभी हाथ ऊपर कभी टांग ऊपर और चार बातें हुई नहीं सो लगे एक दूसरेसे मुंह लगाने। उनका यह नाच और रंग देखनेके बाद मेरी समझमें आया कि सिनेमामें अंधेरा क्यों किया जाता है।"

"मगर मेम और साहब जो कुछ अंग्रेजी में बोल रहे थे वहतो आपअच्छी तरह समझ गये होंगे ?" नाईने कुछ और मनोरंजक बातें जाननेकी इच्छासे पूछा।

"समझनेके लिये उसमें क्या है ? इन अंग्रेजोंको अंग्रेजी साफ बोलना आता ही कहां है। ऐसे बोलते हैं मानों मुंहमें कुछ ठूंस हुआ हो। मैं तो कहूंगा कि हम हिंदुस्तानी जितनी साफ अंग्रेजी बोल लते हैं उतनी यह अंग्रज नहा बाल सकते। मेरे अनुभव की बात है कि मैं इस दमयन्तीको कालेजमें दाखिल कराने गया। कालेजका प्रिंसिपल एक अंग्रेज था। वह मुझसे अंग्रेजीमें बोलने लगा और मैं भी उसके प्रश्नोंका अंग्रेजीमें उत्तर देने लगा। मगर मजा यह देखनेमें आया कि मेरा बोला हुआ एक-एक शब्द वह समझ गया परन्तु उसका बोला हुआ एक एक शब्द मेरी समझमें आया हो तो कसम है। तब वह देने लगा मुझे गाली। मैंने कहा, 'साहब गाली देनेकी क्या बात है, साफ कबूल क्यों नहीं करते कि आपको अंग्रेजी बोलना ही नहीं आती। तब लगा वह दांत दिखाने। फिर सिनेमा के संवाद मेरी समझमें कैसे आ सकते हैं ? परन्तु लोग ऐसी तालियां पीट रहे थे और ऐसे हंस रहे थे मानों उनकी समझमें सब कुछ आ ही रहा हो—बदमाश। मेरा तो विश्वास है कि यह लोग अंग्रेजोंको हंसते हुये देखकर खुद भी हंस रहे थे ताकि उन पर कोई न हंसे। नकलची थे सब ! हमारे सरीखे असली प्रेक्षक तो वहांकी ठंडी हवा और नरम कुर्सी पाकर आरामसे ऊंघ रहे थे।"

"अच्छा दादा ! हो गया काम—निकालिये पैसे।" नाईने अपना सामान समेटते हुए कहा।

"अभी पूरा काम तमाम कहां हुआ है, बगल बाकी है।" "हम बम्बईके नाई बगल नहीं बनाते।" "यदि तू बगल नहीं बनायगा तो पैसे देनेके लिये हम भी बगल ऊपर कर देंगे।" दमयन्तीने मामला बिड़ते देख कहा, "दादा हुज्जत क्यों करते हैं उससे. दे दीजिये न पैसे !"

"तू चूप रह। हजामतमें स्त्रीयोंको अपनी टांग न अड़ानी चाहिये। बम्बईके लोगोंने सर पर हाथ फिरवाकर इन हजामों को सरपर चढ़ालिया है मगर मैंने तो इन हजामपट्टीकरनेवालोंकोबगलमें लियेफिरता हूं। बोल,बनाता है बगल कि उठाऊं मुगदल ?"

नाईने लाचारी देख बगल बनाई और पैसेले अपना छुटकारा किया ।

नाईके चले जानेके बाद दमयन्तीने कहा, "दादा मैंने तो तुम्हें घर का अचूक पता दिया था फिर आप कालूरामकाकाके घर क्यों गये ? यदि आनेके दिन एक कार्ड ही डाल देते तो मैं तुम्हें लेने स्टेशन पर आ जाती ।"

"मैं यदि चिट्ठी लिख देता तो मैं यह मजा कैसे पाता ? मैं देखना चाहता था कि बम्बईवाले कितने गहरे पानीमें हैं और तू भी उनके साथ है या नहीं ।"

"जब बोरी बंदर पर आप उतरे होंगे तो चकरा गये होंगे, ?" 'बोरी बंदर क्या ? क्या वहां बंदरोंको बोरेमें भर-भर कर चने खिलाये जाते हैं ? दमयन्तीने हंसते हुए कहा "नहीं दादा, वह तो यहांके एक बड़े स्टेशनका नाम है ।"

"इस बम्बईके नाम भी एक से एक विचित्र हैं । कल मैं धोबी तालावका नाम सुनकर वहां गया । सोचा था शामके वक्त तलाव पर शांतिसे बैठूंगा परन्तु वहां जब पहुंचा तो वहां तलावका नामोनिशांन था । बड़ा धोखा हुआ मुझे । क्या अजीबो गरीब नाम रखे हैं जगहोंके—पायधुनी, खड़ा पारसी, नल बाजार, भेंड़ी बाजार, चोर बाजार, वांदरा, लालबाग, भरचा-धक्का—ये सब नाम सुनकर मेरी तो फजीहत हो जाती है क्योंकि नामके अनुसार मैं यदि वहां जाऊं तो न जाने क्या हो । धोबीतलावसे निराश हो मैंने फाकलेंड रोडकी ओर जानेका इरादा किया । सोचा था कि एक अंग्रेजके नामकी सड़क है तो जरूर वहां कुछ नई चीजें देखनेको मिलेंगी मगर वहां पहुंचा तो कुछ और ही तमाशा देखनेको मिला । पिंजरोंमें बैठी काली-काली औरतें लोगोंको बुला रही थीं और न जाने लोग भी क्या-क्या उनसे बोल रहे थे । मैंने समझा यह मनुष्योंका चिड़िया घर होगा । मगर जब मुझे सच्ची बात मालूम हुई तो ऐसा भागा कि घरमें आकर ही दम लिया । अच्छा हुआ जो कोई जान पहचानका आदमी वहां न मिला वरना वह जरूर मनम कहता कि बुड्ढेको भी बम्बईकी हवा लग गई है । नाममें कुछ नहीं है, कहते हैं वही ठीक है । लोगोंके नाम भी विचित्र हैं,—सेठ, मास्टर भाग्या राम, लाल जैसे बम्बईमें लोग अपने, बच्चोंका नाम ही नहीं रखते । मैंने किसी को नामसे पुकारने नहीं सुना । जो देखो वह 'स् स् स्' कह कर बुलाता है । क्या, यह आदमियोंको बुलानेकी रीति है ? हमारे इधरतो तक जनावरोंको नामसे बुलानेकी चाल है, मगर बम्बईके लोग तो नामसे पुकारनेमें नई बहुकी तरह शर्माते हैं । आदमियोंको देखो तो हमेशा भागते ही नजर आते हैं मानों उनके पीछे कोई भूत लगा है । पहिले रोज जब मैं यहां आया तो घर पूछने लगा तो एकने कहा, "रेस का टाईम हो गया है फुर्सत नहीं है । दूसरेसे पूछा तो उसने कहा कि सिनेमाका शो शुरू हो जायगा खड़े रहनेकी फुर्सत नहीं । तीसरेसे पूछा तो उसने ऐसा मुंह बनाया मानों किसीने कड़वे नीमका पाला उसके उसके मुंहमें ठूंस दिया हो । कहने लगा, आपने सर्वनाश कर दिया, अब मेरा आंकड़ा नहीं लगेगा । यह सब देखकर मेरा मिजाज ऐसा बिगड़ गया कि जी में तो आया था कि अपना डंडा उठाकर इसका खोपड़ा रंग दूं ।"

"आपने यहांके वाहनोंका मजा नहीं देखा होगा; चलिये आज आपको वह मजा भी दिखा दूं ।"

"तू बताने चली है मुझे ? इन छत्तीस घंटोंमें मैंने जितना देखा है और जितना अनुभव किया है उतना तो बम्बई वालोंने भी नहीं देखा या अनुभव किया होगा । अकेले घूमनेमें यही तो मजा है ! बम्बईमें आकर मुझे तो विश्वास हो गया है कि ब्रह्म-

YOUR ALLY AGAINST THE HEAT

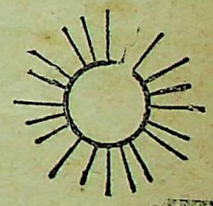

गर्मी के विरुद्ध आपका सहायक

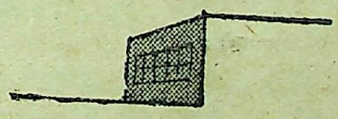

गर्मीके दिनोंमें टाटाके ओडीकोलोनकी एक शीशी हर समय साथ रखें । चाहे आप घरमें हैं या दफ्तरमें, बाजारमें या सिनेमामें ।

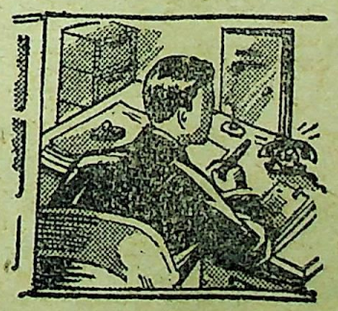

इसकी ठण्डक और तेज सुगन्धिसे और थोड़ेसे बिन्दुओंको माथेपर लगानेसे आपकी दिन भरकी थकावट दूर होगी । यह गर्म जलवायुमें लाभदायक है ।

टाटाका

ओडी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

देवने मनुष्यका 'प्लान बनानेमें गलती की है क्योंकि मनुष्यकी दोनों आंखें एक ही ओर उसने बनाई हैं। मेरा ख्याल है कि उसे कभी रीगल सिनेमा या सेंडहर्स्ट रोडका निरीक्षण करनेका अनुभव नहीं हुआ होगा। दोनों आंखें एकही बाजू और और एकही सतह पर बनानेसे मनुष्यकी कैसी फजीहत होती है यह उसे क्या मालूम। नीचे केलेके छिलकों पर पैर पड़नेका डर ऊपरसे कचरा, जलती सिगरेट या थूक गिरनेका डर, आगेसे मोटर-ट्रामके नीचे-दबनेका डर तो पीछेसे ही ट्राम-बस ऊपरसे निकल जानेका डर। मैं तो अपनी पगड़ी पर हाथ देकर रास्तेसे चलता हूं ताकि विश्वास हो कि सर सलामत है।"

"और अभी बम्बईमें दंगा नहीं है वरना पीछेसे छुरेका डर और जेबको पाकिटमारों का डर भी मनुष्योंको लगा रहता है। बंबई में आकर जो अपनी जेब और जान बचा कर वापस सही सलामत चला जाय उसे भाग्यवान् समझना चाहिये।" दमयन्ती ने भी बम्बईकी विशेषतामें जोड़ लगाया।

"कालूराम का साथ उस रोज का रानीबाग देखने जा रहा था; परन्तु ट्राम मिलेगी तो वह भी नहीं। जो भी आली थी वह गचागच भरी हुई। इन बम्बई वालों को खुली तरह रहनेकी आदत ही नहीं है। जहां भीड़ होगी वहीं दौड़कर जाते हैं। न जाने इन्हें धक्का खानेकी आदत है या धक्के देनेका शौक है? आखिरको कालूराम काका निराश हो बोले, "ऐसी मुसीबत है बम्बई में! चढ़नेको ट्राम और रहनको मकान यहां मिलना बड़ा कठिन है। आपको मिलेंगे क्या तो कदम-कदम पर होटल, गली-गलीमें गुंडे और जगह-जगह औरतें!' भगवान जाने जब ये औरतें हमेशा बाहर-बाहर रहती हैं तो घर का काम काज कौन करता है?"

"दादा, बम्बईमें बहू बननेके बजाय (नौकर) घाटी बनना फायदेका है क्योंकि पैसेका पैसा मिलता है और खुशामद ऊपर से। महीनेमें दस दिन तो वह गायब रहता है। बहानेकी कुछ कमी नहीं—आज मां 'सिक' है तो कल गांववाला आया था तो परसों हड़ताल थी। फिर भी दबाव इतना कि जो थोड़ा भी उसे डांटा तो 'साहब माझा हिसेब करा' कहकर इस्तीफा पेश।" "जब औरतें अपना काम छोड़ने लगीं तो वे जरूर करेंगे ही। स्त्रियां स्वतंत्रताके लिये लड़ती हैं—मूर्ख हैं। अपने पासकी स्वतन्त्रता।

प्रभावशाली व्यक्ति

जीलेट से हजामत बनाते हैं।

कोई भी प्रभावशाली व्यक्ति सुव्यवस्थित आकृति की विश्वासपात्रता स्वीकार नहीं कर सकता यदि वह अच्छी तरह हजामत बनाई हुई नहीं हो। प्रभावशाली व्यक्ति जिलेट से ही हजामत बनाते हैं क्योंकि उन्हें अनुभव द्वारा ज्ञात हो गया है कि उनके पैसे के पूरे मूल्य के अनुसार जिलेट ही उन्हें सर्वश्रेष्ठ हजामत देते हैं।

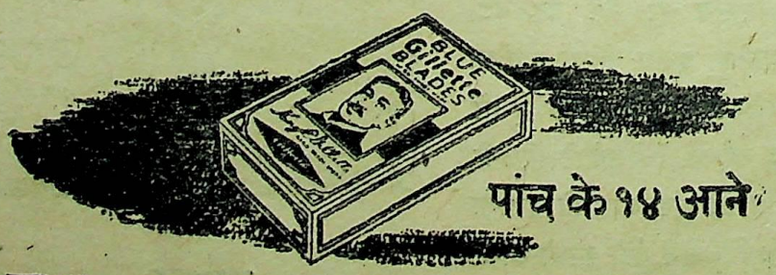

पांच के १४ आने

Blue Gillette Blades

ब्लू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये!

छोड़कर बाहरकी स्वतत्रताके पीछे भागती हैं इससे बड़ी नादानी और क्या हो सकती है ? अरे तुम औरतोंको इतने नखरे करने की जरूरत क्या है ? ब्लाउजकी बांही नहीं, गले पर कपड़ा नहीं, पीठ पर डेढ़ गजकी पूंछ और बाल देखो तो कटे हुवे ! माथे पर टीका देखो तो राई इतना, गालों पर सुफेदी और ओठों पर रंग--तुम्हारे इस ढंगको देखकर ही तो पुरुष तुम्हारी तरफ देखते हैं। अरे तुम्हारी क्या शादियां नहीं होतीं या तुम्हारे इस रंग.ढंगसे तुम्हें अच्छे मर्द मिलते हैं ? उलटा लोग तुम्हें उच्छृङ्खल समझ नाजायज फायदा उठानेका प्रयत्न करते हैं फिर चिल्लाती हो कि पुरुष हमारी ओर घूरते क्यों हैं--पुरुष मतलबी होते हैं--पुरुष निर्दयी होते हैं-वगैरह वगैरह । जो मूर्ख बन सकता है उसे ही दुनियां मूर्ख बनाती है। बस अब मैं कुछ नहीं सुननेका । चल कर मेरे साथ चलनेकी तैयारी ।"

"दादा, आप यदि मेरे ऊपर ऐसी जबरदस्ती करेंगे तो मैं समुद्रमें जान दे दूंगी' दमयन्तीने दादाको काबूमें करनेकी युक्ति सोची । "तेरे ऊपर जबरदस्ती करनेको क्या अब जवान हूं या गुंडा हूं ? समुद्रमें कूदकर जान दे दूंगी ? तुम नवजवान इसके सिवाय और कर ही क्या सकते हो ? परीक्षा में न पास हुए अफीम मोल लेने चले; नौकरी नहीं मिली, रेल की पटरी पर सोने चले; झगड़ा हुआ तो चले कुंएमें में कूदने और प्रेम भंग हुआ तो चले आत्महत्या करने । तुम नवजवान जिन्दगी पानेके लिये बिलकुल नालायक हो । अरे फिर मरनेके लिये जन्म ही क्यों लेते हो ? खबरदार, कभी मरनेका नाम लिया तो-मेरी लड़की है तू । जान गई तो भी आत्महत्या नहीं करना, समझी ? चल, जल्दी कर चलनेकी तैयारी । "मेरी परीक्षा जो है ?" दमयन्तीने दूसरा बहाना ढूंढ़ा । "गोली मार इस परीक्षाको । मैंने कर ली है तेरी परीक्षा । अब घर लेजाकर एक बार बधू परीक्षामें पास हो गयी कि मेरी जानमें जान आयेगी । चल,करती है तैयारी कि उठाऊं डंडा । इस डंडाराजके प्रताप से बहरे भी सुनने लगते हैं और गूगे भी बोलने लगते हैं फिर टांग वालोंको चलाना कोई कठिन काम नहीं ।"

कर्त्तव्य

श्री कमलेश्वर

"आह बहिन..तुमने मुझे गलत समझा" पेटके घावको दबाता हुआ कराहता यादव रामचन्द्र बोला ।

"गलत समझा सैनिक ?" वह बोली

"हां बहिन..आह..गलत..आह "

वह बोला क्षीण स्वरमें पैर फड़फड़ाता हुआ.."हां..गलत..मैं तुम्हारी रक्षाके लिये आया था' ।'

"शत्रु सैनिकसे रक्षाकी आशा..कल्पना कोरी कल्पना, असत्य ! संसार कहता है कि मरतेमनुष्यके अधरों पर सत्य रहता है, परंतु तुम मरते समय भी असत्य बोल रहे हो..तुम नीच हो...काफिर"

"परंतु इन काफिरोंके छत्रपतिका यही आदेश है..बहिन आह...यही आदेश है..क्या सुना नहीं तुमने..आह"

"असत्य बोलते तुझे लज्जा नहीं आती !

"अच्छा यही सही..बहिन..आह" वह बोल पाया किसी प्रकार

"नीच" कहकर उसने दूसरी छुरी भोंक दी उसके सीनेमें..एक भीषण चीत्कार निकला उस मुखसे..परंतु वह फिर चिल्लाया "मीनाजी सावधान मीनाजी..इसके तन से हाथ न लगाना..यह पाप होगामीनाजी कर्त्तव्यसे विमुख न हो..मीनाजी..मीनाजी.. यह आज्ञाका उलंघन होगा यह उज्जवल चन्द्र मुखपर ग्रहणकी काली छाया होगी.. आह नीच मीनाजी कहते-कहते वह एक बार उठा..धावोंको दवाये..एक हाथसे तलवारकी मूंठ पकड़ी..मीनाजी, पर वार करना ही चाहता था कि घावसे रक्त का निर्झर फूट पड़ा..वह गिर पड़ा.. परंतु फिर चीखा--"मीनाजी..कलंक कलंक..मीनाजी "तभी दूसरा घाव भी फूट पड़ा..दो फुव्वारे छूट पड़े उसकी देहसे.. लाल लाल रक्त के; जो दूर तक पृथ्वीको रंगते हुये वह बड़ बड़ाया--कर्त्तव्य विमुख हो गये..कर्त्तव्य.."और तभी उसका सिर झटकेके साथ गिर पड़ा एक ओर देह निप्राण होकर कम्पन रहित सी पड़ी रह गई.....

* * *

वीजापुर पर आक्रमणकी तैयारी हो रही थी..एक शिविरमें बठे सामन्त सेनापति विचार-विमर्शमें तल्लीन थे..समय हो रहा था गुप्त सभा का, पास ही एक गुप्त गुफा थी..प्रकाश दृष्टिगोचर हो रहा था उसमेंसे, पासही जंगली वृक्ष खड़े थे.. वनस्पति भी बढ़ रही थी लम्बी लम्बी ..उस गहन बनके मध्यसे एक पतलीसी टेड़ी-मेड़ी पगडंडी गयी थी दूर तक..और जो जाकर विलीन हो गई थी जंगल के वक्षस्थल में,

सब सचेत बैठे थे..टप टप..टप की ध्वनिने उन्हें आकर्षित किया, धीरे-धीरे अश्व टापोंकी ध्वनि निकट आती गई.. थोड़ी देर में ही अश्व आकर रुक गये उस वनस्थली में..सैनिक चारों ओर से घेर कर खड़े हो गये, छत्रपति उतरे एक घोड़ेसे से, उतर कर गुफाकी ओर चल दिये । उनका अनुसरण करते ज्ञात स्थानकी ओर सेनापति तथा सैनिक बढ़ चले भीषण सी गुफा थी.. टेड़ा-टेड़ा गोल आकार सा दरवाजा था.. पत्थरोंकी ऊंची नीची कटावसे पता चलता था कि कितने कठिन हैं वह पत्थर, गुफाके मुख पर ही एक पत्थर पर बाघ चर्म विछा था, उसी पर शिवाजी बैठ गये सैनिकोंका समूह भी अभ्यस्त सा अर्ध चंद्राकार में बठ गया, तो शिवजी बोले-- "वीरों ! आप लोगोंकी क्या इच्छा है ?

"जो छत्रपतिकी इच्छा..भवानीकी आज्ञा" मीनाजी बोल उठे ।

"कदाचित् ऐसी ही आशा सदव रही है तथा आज भी है मीनाजी" छत्रपति बोले

"यह तो प्रत्येक सनिकका धर्म है छत्रपति" यादव रामचन्द्र बोला ।

"यादव ! तुमसे भविष्यमें बहुत आशायें हैं ऐसा ही उत्तर तुम्हें शोभा देता है" शिवाजी कहते गये--"अच्छा तो वीरो ! महाराष्ट्रीय संभलो ! अभी तक हमने छोटे-छोटे राज्य सर किये, परंतु अब वीजापुरके नवाब मुल्ला अहम्मदको ठीक करना है..उसके राज्यमें पिसती प्रजाका भार उठाना है उद्धार करना है..उसके पास अतुल धनराशी है

जिसके कारण हमारे आर्थिक संकट यथेष्ट समयके लिये दूर हो जायेंगे तथा वीजापुर जैसी भूमिको भी हम यवनोंके पंजेसे मुक्त कर सकेगें वीरों ! तुम मां के सच्चे सपूत हो..तुम पर देशगकी कीर्ति है...तुम्हारे कार्यों से जननीकी ख्याति है, तुम्हारे आचरण पर देशका उत्थान-पतन है, वीरों ! युद्ध धर्म युद्ध हो..कर्त्तव्यके समक्ष दूसरे हितको स्थान न देना, इच्छा .. मनुष्यको कर्त्तव्यच्युत करनेमें कभी नहीं ठिठकती, इच्छा के वशीभूत न होना, वीरों !- कर्त्तव्यके समक्ष यदि इच्छाको प्रोत्साहन दिया तो भूल होगी सैनिकों ! गुरुतर मूल, इच्छा लिप्त रहनेमें यदि विरुद्ध फल मिला तो क्लेश होता है,. क्षोभ होता है...और वही मनुष्यको उत्साह हीन कर कायर बना देता है...कर्त्तव्यको महत्व देना । कर्त्तव्य करके मिलने वाला संतोष हानिमें भी सांत्वना प्रदान करता है, परन्तु इस युद्धमें मैं तुम्हारे साथ न रह पाऊंगा, तुम्हारे साथ तुम्हारे कुशल सेनापति आवाजी सोमदेव होंगे, सह सेनापति वीररत्न मीनाजी होंगे, अन्तिम चेतावनी यही है कि अपने नियमों का पालन करना, स्त्रियोंका आनादर न हो, धर्म-स्थलों पर अत्याचार नहीं वीरों ! विजय अपनी है...स्मरण रखना—धर्म है तुम्हारी तलवारकी मूंठ तथा कर्त्तव्य ! तेज तीखी तलवारकी धार..जिसपर अभी तक चले हो और अब चलना है ।"

"छत्रपति महाराज शिवाजीकी जय" के घोषसे वनस्थली गूंज गई सैनिकों के अपनी तलवारें माथे से लगाकर नियमों पर चलनेका आश्वासन दिया, फिर गूंज उठा घोष–छत्रपति महराज शिवाजी की जय" और शिवाजी अश्वको ऐड़ लगा विलीन हो गये उस पगडंडीकी राह घने वन में—

वीजापुर पर आक्रमण हो गया, नवाब की सेना जी खोल कर लड़ी एक वार दूसरा दृश्य उपस्थित हो गया, प्रथम तो सेना भी अधिक थी दूसरे मराठोंकी सेनाने तो ओरसे आक्रमण किया अलग - चर दौड़ कर वनस्थलीमें पहुंचा, घोड़ा रोक कर आगे बढ़ा, आवाजी सोमदेव बैठे थे गुफामें चरने प्रवेश किया—"छत्रपति महराज शिवाजी जय"

"क्या समाचार है चर ?"

"श्रीमंत अधिक सेनाकी आवश्यकता है, पांसा पलटता-सा दीख पड़ता है"

"तो मैं, अभी प्रबन्ध करता हूं ।"

"श्रीमंत सैनिक तो अपने लड़ रहे हैं परन्तु नवाबकी सेना अधिक है क्षति भी अपनी नहीं है ।"

"अच्छा हम प्रबन्ध करते हैं ।"

तुरही बज गई, बचे हुए सैनिक एकत्रित हो गये तत्काल ही गुफा के सामने, तो आवाजी बोले—"वीरों ! अधिक वीर पुत्रोंकी आवश्यकता है, समझलो, हमें इस नवाब की नवाबी समाप्त करना है...यह मुगल साम्राज्यवादका एक अंश है, हमें साम्राज्यवाद समला नष्टकरना है, अपनी लड़ाई मूगलोंसे हीं वरन्न मुगल साम्राज्यवादसे है जहां प्रजा पिसती है तथा नवाब आनन्द करते हैं..किसी धर्म विशेष अथवा सम्प्रदाय से अपना वैर नहीं मनुष्य मनुष्य है चाहे किसी धर्मका अनुयायी हो, हमें अब वीर सैनिकोंकी आवश्यकता है जो प्रत्यावर्तन करना चाहते हों, । वो यहीं रहे..समय कठिन है ।"

"इस प्रकार हम लोगोंका अपमान करनेका अधिकार आपको भी नहीं सेनापति जी" एक सनिक बोला ?

"सत्य वीरों, तुम धन्य हो..यही एक सैनिकका अभिमान है ।"

युद्धका पांसा पलट चूका था, मराठों की विजयी सेना उछलती फिर रही थी दूर पथ पर कुछ शाही पालकियां चली जा रही थी, रेशमी वस्त्रसे ढकी, संरक्षण के लिये प्रत्यक पालकीके साथ आठ सैनिक थे, बड़ी तेजीसे बढ़ी जा रही थी वह, इतने में ही घोड़ा दौड़ाते हुए कुछ मराठे आ पहुंचे पास ।

"डोलियां रोको" एक चिल्लाया ।"

"डोलियां नहीं रुकेगी" एक मुगलने उत्तर देकर अपनी कमरसे तलवार खींच ली...सबकी तलवारे खींच गई..डोलियां बढ़ रही थी ।"

'तड़ तड़ा तड़' डोलियां टूट गई. तीन शेष थीं

"देखते क्या हो उन्हें भी तोड़ो ।"

"उसमें स्त्रियां है सेनापति जी !"

"नहीं इन स्त्रियोंके वेषमें शाही खजाना है उनमें, यही साम्राज्यवाद की निशानी है ...धन..लूटो..लूटो..लूटो इन्हें लूटो..जो मिले लूटलो" इतना कह कर आवाजी सोमदेव घोड़ेको ऐड़ लगा भगा गये ।

(अपूर्ण)

फैंसीसिल्कसाड़ी
आकर्षकडिज़ाईन

कलापूर्ण ३-४ इञ्च चौड़ा बार्डर

नं०	७	८	९	५ गज
	१८)	२३)	२८)	"

२) आर्डर के साथ पेशगी बाकी वी०पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता
बमाको इन्डस्ट्रीज, जुही कानपुर

बच्चों का डर

शंकर बी० ए०, आरोग्य
मंदिर गोरखपुर

लगभग सभी बच्चे किसी न किसी चीजसे डरते हैं, यदि न भी डरते हों तो भी कुछ अज्ञान माता पिता उसमें किसी झूठ भयकी प्रतिष्ठा कर देते हैं। उनकी दलील होती है कि बच्चेको किसी से तो डरना चाहिये नहीं तो वह बिगड़ जायगा। इनके लिये तो मुझे सिफ इतना ही कहना है कि आप बहुत बड़ी भूल करते हैं। लेकिन सच-मुच यदि बच्चे किसी चीजसे अपने आप डरते हैं तो उस चीजसे उनके डरको दूर करनेकी कोशिश करनी चाहिये। 'इससे क्या डरते हो, यह भी कोई डरनेकी चीज है।' इस तरह कहनेसे काम नहीं चलेगा, डरनेकी कोशिश करनी चाहिये। 'इ[illegible]।' इस तरह कहनेसे काम नहीं चलेगा, यदि आप उस पर दबाव डालेंगी तो वह और भी बुरा होगा। इससे बच्चेके कोमल मन पर परोक्ष रूपसे जो चोट पहुंचती है, वह उसके उचित विकासमें बहुत बाधक होता है।

मान लीजिए आपका बच्चा अन्धेरे में नहीं सोना चाहता, उसे अन्धेरेमें डर लगता। तो आप क्या करेंगी? यही न कि आप उसे जबर्दस्ती थपकियां दे देकर सुलानेकी कोशिश करेंगी और वह भी बेचारा चिल्लाता-चिल्लाता सुबकियां लेने लग जायगा और अन्तमें मजबूर होकर सो ही जायगा। लेकिन आपको पता नहीं कि आपने बच्चेके साथ अपने अज्ञानमें कितनी बड़ी भूल की। उचित तो यह था कि आप अन्धेरेमें एक दीपक या मोमबत्ती जला देतीं। धीरे-धीरे वह अपनी अन्धेरेके भय को समझने और भूलने लगता। लेकिन हुआ क्या? आपके जबर्दस्ती सुलानेसे उसे अन्धेरेसे डरना तो दूर रहा उसमें अपनी जबर्दस्ती और डांटका एक नया भय और उत्पन्न कर दिया और उसका अन्धेरेका भय भी और मजबूतीसे उसमें जमता गया। उसके अर्धचेतन मस्तिष्ककी पलकोंमें वह भविष्यमें सचेतन अवस्थामें किसी भयानक रूपमें जागृत होनेको बन्द हो गया।

यदि आप स्नायु रोगसे पीड़ित युवा स्त्री पुरुषोंके बचपन की घटनाओंका पता लगावें और अत्यन्त सूक्ष्म रूपसे उनकी छान-बीन करें तो आप देखेंगे कि बचपन की कितनी बड़ी-बड़ी भूले हैं जो उस समय उनके अर्धचेतन मस्तिष्कम दब गयी थी अब सचेतन अवस्थामें ऊपर उठ आयी हैं।

बच्चेका अंधेरेका भय जरा-सी रोशनी कर देने मात्रसे दूर हो सकता है। नहीं तो आप उसके लिये जितनी परेशानी प्रगट करेंगे, बच्चेके लिये उतना ही बुरा होता जायगा। उसके निरर्थक भयको अनुचित महत्व मिल जायगा और बच्चेके हृदयम उसका स्थायी वास होने लगेगा। मैंने [illegible] छोटेसे अनुभवसे जाना है कि बच्चेके भय को लेकर अधिक भूल बांचनेकी जरूरत नहीं केवल जया सी अकलमन्दीसे उसके लिये कुछ कर देने भरकी जरूरत है।

कुछ बच्चे कुत्ते, बिल्ली, चिड़िया आदि छोटे-छोटे न डरनें वाले जानवरोंसे डरते हैं। मान लीजिए कोई बच्चा कुत्तेसे डरता है अगर माता पिता मूर्ख हुए तो बारबार उसके पास कुत्तेको घसीट कर लायेंगे और इस गलत तरीकेसे बच्चेके भयको दूर करना चाहेंगे। ऐसे माता पिता से हमारी प्रार्थना होगी कि वे अपने बच्चे पर दया करें जरा अकलसे काम लें। क्यों न उसके लिये आप एक छोटा-सा टामी खरीद देते हैं। आपने देखा होगा कितने बच्चे जानवरोंके बच्चोंको बड़े प्रेमसे पालते हैं, उनका कान पकड़ते हैं, उनके पीछे दौड़ते हैं, उनके दांत गिनते हैं। जानवरोंके बच्चों की तरह उन बच्चोंके मनमें बचपनकी उछल-कूद और चुल-बुलाहट होती है और इसलिये उन्हें वे और भी अच्छे लगते हैं। मैंने अपने पास पड़ोसके कितने बच्चोंको देखा है जो कुत्ते, बिल्ली और बकरीके बच्चेको गोदमें लिये फिरते हैं, उनके कान पकड़ते हैं, घूमते हैं, प्यार करते हैं और अपने साथ खिलाते हैं सुलाते हैं। ज्यों-ज्यों वे बड़े होते हैं उन्हें देखकर खुश होते हैं, उछलते हैं, कूदते हैं और उसे बड़े गर्वसे देखते हैं। इस तरह बच्चेके सुकुमार ज्ञान तंतुओंका विकास होगा और वे उस तरहके किसी भी जानवरसे न डरेंगे।

कुछ बच्चे जरा सी चोट लग जाने पर घाव हो जाने या खून निकल आनेसे बड़ी जोरसे चिल्ला पड़ते हैं। इसलिये नहीं कि उसे बहुत जोरकी चोट लगी होती हैऔर दर्द होता है। बच्चा घाव और खूनको देख-कर डर जाता है। कुछ बच्चे तो वैसी चोटों की कुछ परवाह नहीं करते उन पर धूल छोड़ देते हैं और फिर खेलने लगते हैं उन्हें याद भी नहीं रहता कि उन्हें चोट लगी है।

लेकिन अगर कोई बच्चा रोने ही लगता है तो यह क्या कि आप उसकी हंसी उड़ाने लग जायं। आप उसके पास पहुंची नहीं कि वह चुप हुआ, उसे जरा-सी सांत्वना और प्यार की जरूरत होती है। आपने देखा होगा कि कि जब बन्दरिन या हरिनीके बच्चोंको चोट लग जाती है उनकी मां उन्हें अपने गोदसे चिपका लेती हैं और उनके बच्चे उस चोटको भूल जाते हैं। ऐसा आपको कुत्ते, हरिणी ही नहीं बहुतसे जानवरोंमें मिलेगा। लेकिन ऐसा भी नहीं होना चाहिए कि आपका प्रेम निःसीम हो, और आप उसकी जरा सी चोटको देखकर बुरी तरह घबरा जायं। आपकी मुद्राको देखकर बच्चा और जोर-जोरसे रोने लगेगा। उस वक्त सबसे पहली जरूरत यह होती ह कि उसके डरकी चीज उसका घाव और उससे निकलने वाला खून दूर कर दिया जाय। बड़ी शांति और धीरजसे उसे ठंडे पानीसे धोइये अथवा गीले पानीकी गद्दी घाव पर रख कर किसी कपड़ेसे बांध दीजिये देखिये बच्चा चुप हो जायगा। —उसे मालम हो जायगा कि खूनसे बहुत डरनेकी जरूरत नहीं। यह तो जल्द बन्द हो गया। धीरे-धीरे उसके ज्ञान तंतओंके विकासके साथ वह ऐसी चोटोंकी परवाह करना भूल जायगा। लेकिन अगर आपने अपनी बहादुरीमें आकर यह कहा—"अरे जरा सी चोट लग गयी तो क्या हुआ, इसमें इतने रोने चिल्लानेकी क्या जरूरत।" और आप उसकी चोटको वैसे ही छोड़ दें तो उस शरीरकी चोटसे कहीं अधिक गहरी और स्थायी चोट उसके कोमल मन पर पड़ेगी। आपको तो खुद अपने दिन प्रतिदिनके अनुभवोंसे सबक लेना चाहिए। मैंने कितने माता पिताको कहते सुना है कि—"बच्चेको जिस चीजके लिये मना किया जाता ह उसकी ओर उतना ही आकर्षित होता है।" ऐसा क्यों होता है कभी आपने सोचा है। आपका बच्चेको किसी चीज से मना करना, उस चीजको महत्व देना है और बच्चेमें उस चीजके प्रति एक कौतूहलकी जागृति करना है जो बच्चेको उसकी ओर बार-बार आकर्षित करती है। यदि आप उसे ही उसके सामने खोलकर स्पष्ट रूपसे रख दें तो उसके लिये उसका कोई महत्व नहीं रह जायगा। बच्चेके सामने किसी चीजके छिपानेसे उन पर क्या असर पड़ता है यह स्वयं ही एक विनय है यह कभी बच्चोंकी शिक्षाके अन्तर्गत लिखूंगा।

बच्चोंके इन डरोंमें तो वस्तुतः कुछ सत्यता होती है लेकिन उनके कल्पित भय का क्या कारण होता है। अक्सर बच्चे सोये-सोये चौंक उठते हैं और रोने चिल्लाने लगते हैं। आप कहते हैं सपनेमें डर गया। सोचिये तो बच्चेको जिसे अभी किसी तरह की चिन्ता नहीं उसे कैसा सपना और कैसा डर। स्वप्न तो वह, मान लीजिये, देख भी सकता है लेकिन उसमें डरकी तो कोई वस्तु नहीं होनी चाहिए।

आप बच्चोंको सुलानेके लिये उनके पास बैठ जाती हैं या लेट जाती हैं और उसे कोई कहानी कहने लगती हैं—परियों की राजाओंकी, राक्षसों की। इस तरह के कल्पित जगत की कहानियां कहती हैं ताकि बच्चा सुनता सुनता सो जाये। और सचमुच बच्चा सो तो जाता है लेकिन आपने उसे जो कहानी सुनायी है उसमें आपने राक्षसकी भयानकता का वर्णन किया है। बच्चा जागृत अवस्थामें उसे चुप-चाप सुनता रहा, आपके रहते उसे कोई डर नहीं मालम हुआ लेकिन अर्ध जागृत अवस्थामें वही राक्षस उसकी कल्पनामें स्वप्नके रूप में दिखायी दिया और वह डर कर बुरी तरह कांप उठा।

बच्चोंका स्वभाव ही है शरारत करना। अगर वे अब शरारत न करें तो फिर कब करेंगे अभी तो उनमें बचपन है। लेकिन आप उसकी शरारतोंको ठीक नहीं समझतीं और उन्हें रोकनेके लिये उसे किसी विशेष व्यक्ति या पुलिस आदिसे डरा देती हैं। बच्चेके भलाईके लिये आपकी यह हिदायत उसके भविष्यके लिये खतरा उपस्थित कर देती है। उसका यह पद स्थायी भयका रूप ले लेगा और उसके विकासका मार्ग धीरे-धीरे बन्द होता जायगा। एक छोटा सा उदाहरणमें—मान लीजिए आपका बच्चा खो गया। पुलिसको वह मिला। पुलिस उससे उसके घरका नाम पता पूछेगा लेकिन आपका बच्चा जिसे आप हमेशा पुलिस से डराती आयी हैं पुलिसको देखते ही खूब जोर-जोरसे चिल्लायेगा। क्योंकि वह समझेगा कि पुलिस उसे पकड़ने आया है।

शर्माना बच्चोंके डरका दूसरा रूप है। इसे आप असामाजिकता कह सकते हैं। बच्चोंका सामाजिक होना जरूरी है। हर एकसे उनको मिलना जुलना चाहिए। कुछ बच्चे तो हर एक से बड़ी आसानीसे मिलते-जुलते हैं लेकिन कुछ दूसरोंको देखते ही मुंह बन्द कर लेते हैं; ऐसे भय मिश्रित शर्मसे दुबक जाते हैं कि उनकी जबान ही नहीं खुलती।

ऐसे बच्चों पर जहां आप दबाव डालना शुरू करेगी, वे उनसे और दूर हटते जायंगे। हां मैं आपकी कठिनाई और आपकी चिंता को समझ रहा हूं। आपने अपनी बेटीको इतनी कलाएं सिखायीं, लोगोंमें उठने-बैठने और बातचीत करनेके कायदे सिखाये लेकिन वे ही किसी अतिथिके आने पर कोनेमें दुबक जाती हैं। लेकिन याद रखें कोनमें दुबक जाती हैं। लेकिन याद रखें आपको यह बेटी डर नहीं रही है उसे अपनी कला प्रदर्शनमें शर्म लग रही है। इसके साथ लाग डाट रखनेकी जरूरत नहीं इससे बच्चीका शर्माना कभी न दूर होगा। उसे प्यार और स्नेहसे बुलाइय और अतिथि से उसका परिचय कराइये। उसकी थोड़ी प्रशंसा कीजिये। यदि शुरूमें बच्ची कोई गलती भी कर बैठे तो उसके लिय उस पर बिगड़िये मत। धीरे-धीरे उसका शर्माना अपने आप खतम ही जायगा और तब उससे ऐसी गलतियां कभी न होंगी।

इसलिये बच्चोंके डरसे बहुत डरने की जरूरत नहीं, डर तो तब है जब आप स्वयं डरती हैं।

———

एक श्रद्धांजलि

(दूसरे पृष्ठका शेषांश)

यह कैसे हो सकता है कि बापूकी मृत्युको मैं देख सकूं ? जमनालालजी तो चले गये लेकिन हम कम्बख्त हैं जो ऐसे दिन देखने को रह रहे हैं। आठ ही रोजके भीतर १५ अगस्त १९४३ को महादेव भाई अपने बापू को हमेशाके लिए छोड़कर चल बसे। यह उन्हींका पवित्र बलिदान था जिसके कारण उनकी अंतिम इच्छाओंको ख्याल में रखते हुए बापूका जो निर्जल और अमर्यादित उपवास उसी समय होने वाला वाला था वह एक बारगी टल गया और और जब आया भी तो मर्यादित रूपमें आकर ही वह रह गया। महादेव भाईने अपना बलिदान देकर देश और दुनिया को एक बारगी बापूकी जिंदगी बख्शी।

चारों तरफ हिंसाका वातावरण जब बापू देखते थे तो उनकी असीम वेदना होती थी। अपने सारे उपायोंको आजमाने के के बाद भी जब हिंदू मुसलमान भाइयों के बीचकी कटुता कम न हो सकी। तो वह एक प्रकारसे निराश व दुःखी रहते थे। ईश्वरसे कई बार उन्होंने प्रार्थनाकी होगी कि 'हे भगवान, यदि हिंदू और मुसलमान इसी तरह लड़ते रहें तो तू मुझे जल्दी उठा ले। इस तरह की अमानुषिक घटनाओं का मुझे साक्षी मत रख। इतना ही नहीं बल्कि उनकी आंतरिक वेदनाका अंदाज हमें इससे मिलता है कि एक बार तो शाम की प्रार्थनामें बैठी हुई जनतासे भी उन्होंने यह विनयकी कि वे सब भी भगवान से यही प्रार्थना करें कि ऐसी स्थितिमें वह उनको उठा ले। भगवान अपने भक्तोंकी सुनता है और बापूको अपनी गोदमें लेने के लिए प्रार्थनाके स्थान पर ही वह उन्हें लेने आ गया।

हिन्दू मुसलिम एकताके अभावमें बापूने जीनेकी अभिलाषा भी छोड़ दी थी। जिस एकताके लिए उन्होंने जिंदगी भर प्रयत्न किया उसीके लिए अपना बलिदान देकर उसे अमर कर गये। उनका हिंदू मुसलिम एकताका आखरी अमर मंत्र यह है—

ईश्वर अल्ला एक ही नाम।
सबको सन्मति दे भगवान॥

लाखों करोड़ोंने इस मंत्रका अपने हृदयसे उच्चारण किया। सांप्रदायिक वैमनस्यका जहां तक सवाल है वह आज की ही बीमारी नहीं है। आज यदि सांप्रदायिक वैमनस्य राजनैतिक आधार को लिये हुए है तो पहले वह धार्मिक आधार को लेकर रहता था। श्री शंकराचार्य और रामानुजाचार्य जैसे दिग्गज संत हमारे देशमें पैदा नहीं होते तो वैष्णव और शैवमें उसी तरह की कटुता चली आई होती, जैसी कि आज हिंदू और मुसलमान भाइयोंमें दिखाई देती है। वैष्णव और शैवके पारस्परिक वैमनस्य इतने बढ़ चुके थे कि एक दूसरेके धार्मिक जुलूसों पर अन्य पंथी लोग घृणित पदार्थ फेंकते थे और उनको घृणित दृष्टि से देखते थे। ऐसे वैमनस्य पूर्ण वातावरण के बीच दोनों धर्मावलंबी दिग्गजोंने समाजके सामने एक सुलझा हुआ रास्ता रखा जिसके फलस्वरूप आज सारे भारत वर्ष में शिव और विष्णुके मंदिर साथ साथ दिखाई देते हैं और आज इन धर्मावलंबियोंमें किसी प्रकारकी भी धर्म विशेषके कारण कटुता नहीं पाई जाती। हिंदू धर्म और संस्कृति और सभ्यता इसके प्रबल और व्यापक रहे हैं कि उनमें अन्य धर्मावलंबियों और उनकी संस्कृति और सभ्यता का पूरी तरह से समय समय पर समावेश होता गया है।

भारतवर्षमें वैष्णव और शैवके अलावा सिख जैन और बौध भी हैं लेकिन इन सबका हिंदू धर्ममें समावेश होता है। हिंदुस्तान के बौद्धोंका हिन्दू धर्ममें समावेश हो गया है लेकिन चीन और जापानका बौद्ध हमको कुछ अलग जान पड़ता है। इसी तरह पूज्य बापूके पवित्र बलिदानने और उनके आखिरी एकताके मंत्रने भारतवर्षके हिंदू मुसलमान को आज नहीं तो भविष्यके लिए तो निश्चित रूपसे एक कर ही दिया है। भारतका मुसलमान भारतके बौद्धकी तरह ही हिंदू धर्म में खप जायगा।

पूज्य बापूके जीवनके अनेक कार्यों के साथ उनके जीवनके दो मुख्य कार्य हैं—देशके लिये राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्ति और हिंदू मुसलिम एकता। इनमेंसे एक तो वह जीतेजी ही कर गये और दूसरा कार्य मरते मरते कर गये। बापू गये तो क्या हुआ ? वह जाते ही। लेकिन अपने साथ वह ले ही क्या गये ? उनका सारा कार्य और उनका आशीर्वाद तो हम सबके लिए छोड़ गये। बापूको हम उनके कार्यमें या ढूंढ़ने पर अपने दिलोंमें ही पा सकते हैं। वह हमसे प्रेम करते थे; हम उनसे प्रेम करना सीखें। उनसे प्रेम करनेका मतलब अहिंसा और सत्यसे प्रेम करना है, भगवान से प्रेम करना है। वह अपना कार्य कर गये, हमको उनका कार्य करना है।

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजो सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भोनी हैं। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेको शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

अमर-यात्रा

श्री विजय कुमार मुन्शी साहित्यरत्न, बी० ए० एल, एल० बी

जब ३० जनवरीकी भोली सांझ, जिसकी सुनहली किरणोंको समेटती ढल रही थी उसी समय विश्वकी महान आत्मा अमर चिरतंन निर्वाण-पथ पर पग धर रही थी। विश्व-इतिहासमें मानवताके जीवन पर आज एक अभिशापकी कहानी लिखी गयी है।

पूज्य बापूके महाप्रयाणका व्यथा-सिक्त समाचार कुछ ही क्षणोंमें विश्वके कोने-कोनेमें अनन्त वेदना और उदासी का प्रेरक बन गया। हिन्दके प्रधान मन्त्री के शब्दोंमें महात्माजीके जीवनकी अमर चिरतंन-ज्योति बुझी नहीं है, वह युग-युग तक मानवका पथ निर्देश करती रहेगी।

यों राष्ट्रका भरोसा राष्ट्रके पापोंके कारण छिन गया। राष्ट्रने मानवताकी विरासत को नष्ट कर दिया। आज मानवता विधवा हो गयी है। एक सांसमें उनका जीवन था:—

२ अक्टूबरको पोरबन्दरमें जन्म हुआ। सितम्बर १८८७ में वे लन्दन शिक्षा प्राप्त करनेके लिये गये। बैरिस्टर बनकर चार वर्ष पश्चात् लौटे, दक्षिण अफ्रीका गये। यहींसे उनके जीवनके त्याग और साधनका मार्ग प्रशस्त है। १८३० के १२ मार्चको साबरमतीका संत समुद्रकी ओर गतिमान हुआ। ६ अप्रैल १८३० को उन्होंने नमक का ढेला उठाया, शक्तियां कांप उठी, जेलों में जवानी जाग उठी!

१९३१ में राउण्ड टेबिल कान्फ्रेंसका अभिनय हुआ। वे लन्दन गये। लन्दनका भौतिक जीवन इस तपस्वीकी साधनासे प्रभावित हुआ। १९४२ में 'भारत छोड़ो' का अमर आन्दोलन। वे आगाखां महलमें बन्दी बने। उपवास किया। सन् १९४७ में कलकत्तामें उपवास किया। सन् १९४८ में फिर उपवास। ये दोनों उपवास हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिये किये गये। जनवरी ४८ में किसीने उनपर बम फेंका। वे बचे। फिर जनवरी ३० की भूखी सांझ आयी। मानवने मानवताके अमर पुजारी, अहिंसा और प्रेमके महादेवका अपमान किया। उस मानवने गांधीजीके शरीर पर ही तीनों गोलियां नहीं दागी किन्तु मानवताके प्राणोंमें असंख्य घाव कर दिये हैं। वातावरण रो पड़ा। मानवता कराह उठी। स्वरोंमें भग्नता भर गयी।

जीवन-पथ पर साधकोंकी एक श्रृंखला है। और महात्माजी उसी अमर श्रृंखला की वह अमर कड़ी थे जिन्होंने युगके तूफान को, विषाक्त ज्वालामुखी शक्तियोंको अपने पलकोंमें बन्द किया था। आज इस देशमें वे शक्तियां बिखर गयी हैं जो न केवल समाज एवं देशके लिये, अपितु विश्वके लिये अनिष्टकारी सिद्ध होंगी। महात्माजी का प्राण-त्याग जीवनके सौन्दर्यका त्याग है, आत्माकी अमरताकी कहानी है। उनका जीवन कर्ममय-गीत था। उनकी आत्मा कर्ममय होकर स्वयं गीता बन गयी है। इस महापरीक्षामें हमें अपना आत्मबल नहीं खोना है। बिरला-गृहसे यह किसका शव जन सागरके बीच जा रहा है? यह मानवताका नाश जा रहा है! यह विश्व का कल्याण जा रहा है! क्या अमर आत्मा का यह अमर त्याग मानवताको पथ भ्रष्ट होनेसे बचा सकेगा?

ता० ३० जनवरी ४८ की भोली सांझ! तू कलंकिनी बन गयी है। तूने सांझकी फीकी किरणोंके साथ विश्वके सौभाग्यको बुझाने का प्रयास किया है!

स्व० बापूका महा-प्रयाण विश्वके लिये युग-युग तक एक अभिशाप बना रहेगा। आने वाली पीढ़ियां सुकरात, लेनिन, इब्राहिम लिंकन, महात्मा ईसा, श्रद्धानन्द और स्वर्गीय म० दयानन्दके साथ अब मानवता के महादेव, जीवन सत्यके चिरतंन प्रकाश, अहिंसा और प्रेमके आदर्श पूज्य बापूको भी याद कर जार-जार रोती रहेगी। हमारी अकर्मण्यता पर हमारी आंखें झुक जायेंगी, हमारे महापापका प्रायश्चित मानवताके पीड़ित और शोषित प्राण युग-युग तक करते रहेंगे। हमने शोषित जनताके प्राणोंको रौंदा है हम सम्भवतः विश्वके इतिहासमें क्रूरता और बर्बरताके लिखे जानेवाले लाल इतिहासमें सबसे आगे बढ़ गये हैं!

मैं देख रहा हूं कि शाश्वत संगीतकी अमर ध्वनियां उन्मुक्त वातावरणको सदा सर्वदा मुखरित करेंगी, मैं देखता हूँ महात्मा बुद्धकी प्रबुद्ध सचेतन आत्माका दिव्य-आलोक सदा भासमान रहेगा! भारत बड़भागी था कि महात्मा गांधी भारतमें जन्म ले मानवताकी धरोहर, मानवताके प्राण बन कर अणु-अणुमें समा गये और वही भारत हतभागी है कि उसने दिव्य तेज पुञ्जके शाश्वत प्रकाशको बुझा कर मानवता के जीवनमें गहरा व्याघात किया! परमेश्वर करे कि बापूके जीवनके पुण्य-श्लोक सृष्टिसे शाश्वत और अमर हों!

गांधीजीका जीवन-दर्शन

गांधीजीका जीवन-दर्शन प्रकृति और जीवन-सा व्यापक और विशाल है। गांधीजी के जीवन दर्शनसे हमारा तात्पर्य जीवनकी उन मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक मनोवृत्तियोंसे है, जो जीवनको भौतिकवाद के धरातलसे ऊपर उठाकर, आत्माके उज्ज्वल प्रकाशके प्रदेशमें ले जाती हैं। गांधीजीका जीवन-दर्शन, कबीरका रहस्यवादी जीवन दर्शन है। गांधीजीका जीवन-दर्शन, ईसाके

महा-मानवताके सिद्धांतसे परिवेष्टित है। गांधीजीका जीवन-दर्शन, गीताके कर्मयोग से शक्ति और प्रेरणा ग्रहण करता है। गांधीजी का जीवन दर्शन आत्मानुभूतिके वे सरस स्वर हैं जहां शरीरकी अस्थिरता आत्मिक प्रकाशकी चिरतंन ज्योतिमें अपनेको गलानेकी प्रेरणा ग्रहण करते हैं। गांधीजीके जीवन-दर्शनके तीन तत्व हैं:— सत्य, प्रेम और अहिंसा। ये तत्व मानवताके आधारभूत सिद्धांत हैं।

गांधीजीके सत्य-जीवन दर्शनकी मनोवैज्ञानिक भूमि प्रेम और अहिंसा है। गांधीवादका राज प्रसाद सत्य, प्रेम और अहिंसा की नींव पर खड़ा है। गांधीजीका प्रेम व्यापक है। गांधीजीका सेवासे तात्पर्य जीवनका सदुपयोग है। गांधीजीके प्रेम-चक्रसे समस्त विश्व परिचलित हो— यह उनका जीवन दर्शन है। गांधीजीका सत्य जीवनको सबल प्रदान करता है।

गांधीजीकी अहिंसा कायरता नहीं है। वह मनके अजस्त्र शक्ति-प्रवाहके द्वारा शारीरिक बलको पराजित करना चाहती है। इसी मनकी शक्तिकी जीतमें गांधी-वादी जीवन-दर्शन की जीत है। गांधीजी की अहिंसा जीवन दायिनी शक्ति है। वह हमारी आत्माको बल प्रदान करने वाली है। आत्माका बल ही गांधीवादी जीवन दर्शनका आधारभूत सिद्धांत है। गांधीजी की अहिंसा आध्यात्म और जीवन-सत्य की वह मीमांसा है जहां मानवताकी दैवी प्रतिमाके सम्मुख पाशविकता या असत् मनोवृत्तियां अपने घुटने टेक देती हैं। गांधीजी का सत्य, चिरतंन, शाश्वत सत्य है जिसमें आत्माकी चिरंतन-ज्योति सदा सुलगती रहती है। गांधीजीका प्रेम मानवताकी महाकायाको अपनी बाहोंमें थाम कर उसे प्रेमसे गले लगाना चाहता है। गांधीजीका जीवन-दर्शन जो समस्त विश्व पर छा गया है उसका एकमात्र कारण यही है कि वह निष्क्रिय नहीं है। वह भगवान कृष्णके कर्मयोगसे जीवन-विकासके लिये प्रेरणा और आत्मोन्नतिके लिये शक्ति ग्रहण करता है। गांधीजी का जीवन-दर्शन आदर्शोन्मुखी तभी प्रतीत होता है जब हम आत्मोन्नति को नहीं समझ पाते या नहीं समझना चाहते और गांधीवाद जीवन-सत्यको आचरण में उतारना नहीं चाहते। यदि मानवीय शक्तियों और प्रेरणाओंका हम उचित मूल्यांकन करें तो गांधीवादी जीवन-दर्शन जीवनोन्मुखी है। वह न केवल जीवन शक्तियों को ऊपर उठाता है किन्तु वह हमारी आत्मा को एक चिरतंन ज्योतिके दर्शन प्राप्त करने के लिये बाध्य करता है।

गांधीजीका जीवन दर्शन आत्माके अस्तित्वको मान कर चलता है। आत्माके अस्तित्वसे तात्पर्य है कि विश्व या ब्रह्माण्डकी अखण्डतामें गांधीजी का अपार विश्वास है, वे आत्माको शाश्वत मानते हैं। वे आत्मा के अमर-संगीतके गायक हैं। वे युग-युग तक जीवन-सत्यसे भटकने वाली मानवता का पथ प्रदर्शन करते रहेंगे!

जब हम गांधीजीके जीवन-दर्शन को इतना व्यापक मानते हैं तो उनका स्वयं का जीवन भी व्यापक होना चाहिये। जब जीवन दर्शन पूर्णरूपेण आत्मोन्मुखी बन जाता है तो जीवनकी मान्यताएं अथवा गोपनीयता नहीं रह जाती। शरीर आत्मोत्सर्गका प्रथम सौपान बन जाता है। गांधीजी ने इस शरीरके महत्वको समझा ही नहीं, अपितु उसका अनुभव किया है उसको जीवनमें आचरित किया है। गांधीजीका जीवन व्यष्टिसे ऊपर उठता हुआ समस्त विश्व-जीवनमें आत्म सात् हो गया है। व्यक्ति जब अपने में विश्वको आत्मसात् कर लेनेकी क्षमता प्राप्त कर लेता है तो वह अवतार युग पुरुष या विभूति कहाता है। हमारे गांधी इसी कारण, ईसा, सुकरात, लिंकन, दयानन्द आदि मानवताके उपासकोंमें अपने जीवनकी विशेष महत्ताके लिये स्थित हैं। वे स्वयं कहते हैं, "मेरा जीवन खुली पुस्तक है उसमें कोई भेद नहीं और मैं रहस्यको प्रोत्साहन भी नहीं देता। सत्य ही परमात्मा है और उसीके निर्देशसे हमारा पथ प्रदर्शन होता रहे यही मेरी कामना है।"

यह प्रश्न भी प्रस्तुत किया जा सकता है कि उनके जीवनकी जागरुकता इतनी व्यस्ततासे पूर्ण थी तो आत्माके अमर संगीत को, जो उनके जीवन-दर्शनका मूल आधार है वे कैसे सुना करते थे? जब आत्माके शाश्वत संगीतको मानव सुन लेता है तो जीवन भले ही कर्मपथ पर अनासक्त-भाव से अपने प्रगतिके चरण धरता रहे किन्तु आत्माका संगीत अनवरत रस संचार किया करता है। महात्माजीसे किसीने पूछा:— "तुम प्रचण्ड आंदोलन करते हो। कितनी है तुम्हारी हलचलें और कितनी हैं उन पर होने वाली टीका-टिप्पणियां! यह सब करते हुए तुम्हें कैसा लगता है? उन्होंने उत्तर दिया: अन्तरमें तानपूरा छिड़ाही है'।"

गांधीजीके जीवन दर्शनका यही रहस्य है। गांधीजीका जीवन दर्शन राममय है, कर्ममय है। उन्होंने गीताके कर्मयोगसे दीक्षा ली है। इसी कारण उनका अपना व्यक्तित्व एवं अपनी कर्मण्यता है। वे जीवन को परमेश्वरकी देन समझते हैं। वे ईश्वर की वाणीको सुनते हैं, अन्तरके बताये पथ पर पग धरते हैं। विश्वकी आलोचना समालोचनाके बन्धनसे उनका जीवन मुक्त है। वे जीवन-दर्शनके महान वैज्ञानिक हैं। उनके जीवन-दर्शनके अन्वेषणने पथ भ्रष्ट, भस्त और सन्तप्त मानवताको शक्ति और चेतना प्रदान की है। वे कहते हैं:—

"मैं आत्माकी अमरता पर विश्वास करता हूं। जीवनके सागरमें हम सब विन्दु-मात्र हैं और जीवनकी वास्तविकता ही सत्य है, आत्मा है, परमात्मा है!"

१६॥) में ज्वेल ली रिष्ट वाच

स्वीस मेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्षकी गारंटी
गोल या स्क्वायर शेप १६॥), सुपिरियर-२०॥)
फ्लाट शेप क्रोमियम केस— २५)
फ्लाट शेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल क्रोम केस— ३८)
फ्लाट शेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड— ७५)
रक्रेंगुला कभी या टोनो शेप
क्रोमियम केस—४२), सुपिरियर—४५), रोल्ड गोल्ड ६०) रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल युक्त ९०) अलार्म टाइम पीस-कीमत-१८)२२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेनेसे माफ।
एच० डेभीड० एण्ड कं० (V)
पो० बक्स नं० ११४२४ कलकत्ता

शक्ति जिसकी आपको आवश्यकता है

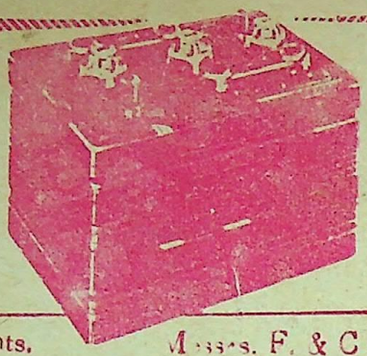

एक्साइड

बैटरियां, कार, लारियां और बसों के लिये

Local Agsnts. Messrs. F. & C OSLER Ltd.
12, Old Court House Street, Calcutta.

Ex 767

A NOVELTY WATCH
'CENTRO' (WITH CENTRE SECOND)

Very Strong, Durable. 'Accurate Timekeeper' long lasting life time machine, white chromium case with red centre second looks very nice when taking round of the dial in a minute, even a second can be counted by this watch, with a plastic strap & velvet box.

PRICE Rs. 30/- Postage as. 12. Free fo 2 watches
ORIENT WATCH SYNDICATE, Sec. (14) DUMDUM

जिन पुरुषों ने बचपनमें बुरे रास्ते पर और समझ आने पर भी वलास में आसक्ति रखनेसे उनमें नर्बलता आ गई हो जिनके लिये सर्वश्रेष्ठ औषधि खानेके लिये विचार में न हो। उनके लिये उत्तम से उत्तम दवा केवल मालिस द्वारा प्रयोगता यह मलहम है। कारण कि इसके एकमात्र प्रयोग करने से नसें मजबूत वसख्त अवश्य हो जाती हैं। युवक, अधेड़ और वृद्ध सबको ही इससे फायदा पहुंचता है। एक शीशीका मूल्य ५) वी० पी० खर्च अलग।

चाइनाज मेडिकल स्टोर स्थापित

शाखायें—चार रास्ता, अहमदाबाद १२, [illegible] आफिस २८ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, [illegible] हौसी स्क्वायर कलकत्ता, [illegible] बाजार, दिल्ली

होमियोपैथिक दवाइयां प्रति डाम =) =)॥ आनाहै।
हरएक बीमारियों की दवाइयां मय सैगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८ ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी
६८ नम्बर ताइब स्ट्रीट, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।

सम्पादक—देवदत्तमिश्र। ७४ धर्मतला स्ट्रीट, स्थित इलेस्ट्रेटेड इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

MONSOON
SETS IN
Anophelis breeds..

यह आश्चर्यजनक औषधि मलेरिया बुखारके लिये रामबाण है अगर आपके परिवारमें किसी को मलेरियासे कष्ट हो तो इसका सेवन करें। यह लाभप्रद एवं कम खर्चीला है।

PANCHATIKTA
Kasaya

KAVIRAJ N.N. SEN & CO. LD.
CALCUTTA

'लालशर' तोमेरे लिये अमृत है!

लाल-शर
(लाल शरबत)
बच्चोंको मोटा, ताजा, स्वस्थ और प्रसन्नचित्त रखने की प्रसिद्ध मीठी दवा

सब जगह मिलता है।
डावर (ए·एस·के·बर्मन) लि· कलकत्ता

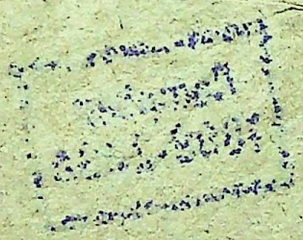

Compiled
1999-2008